मम्मा की सभी मुरली की बुक

अनुक्रमांक   page

01.सर्वव्यापी का ज्ञान - 13-04-65	0006
02. याद की यात्रा - 18-04-65	0023
03. कर्म - अकर्म और विकर्म का ज्ञान - 19-04-65	0038
04. कल्प वृक्ष का ज्ञान - 25-04-65	0059
05. 84 जन्मो की कहानी	0069
06. आत्मा और परमात्मा में अंतर और परमात्मा का कर्तव्य	0091
07. आत्मा और परमात्मा की पहचान और विश्व इतिहास भूगोल	113
08. दुखों का करण क्या है	0131
09. गति और सद्गति	0152
10. ग्रहस्थ आश्रम जीवन	0178
11. कर्मभोग समापत करने की विधि	0203
12. कर्मों की गति	0221
13. महिमा थोड़ी ही होगी - गीत - अश्मिता बहेन	0239
14. मुक्ति या जीवनमुक्ति पाने की विधि	0242
15. परमात्मा और धर्मात्मा में अंतर और उनका कर्तव्य	0276
16. परमात्मा का परिचय	0308
17. रचना या रचैता का ज्ञान	0340

18.	सतयुग का स्थापक कौन है	0358
19.	सौभाग्यशाली बन्ने की विधि - 2	0371
20.	विनाश से पहले पूरा वर्सा लेने की विधि और भगवान की श्रीमत क्या है	0393
21.	श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान - 23-04-65	0411
22.	संदेश-मोहिनी बहेन -23-06-65	0436
23.	अलंकारधारी बनने के लिए मायाजीत कैसे बने	0446
24.	चढ़ती कला और उतरती कला	0460
25.	ज्ञान क्या है और ज्ञान दाता कौन है	0492
26.	कर्मों की गहन गति	0509
27.	मुक्ति और जीवनमुक्ति पाने की विधि - ट्रांस	0522
28.	ओ मीठे मीठे मां - गीत	0551
29.	परमात्मा और धर्मात्मा में अंतर और उनके कर्तव्य	0553
30.	परमात्मा का कर्त्तव्य - 2	0583
31.	परमात्मा का कर्तव्य और मनुष्य का मत	0593
32.	परमात्मा का परिचय - 1	0616
33.	पुरुषार्थ और प्रालब्ध	0647
34.	रचना और रचयिता का ज्ञान - 2	0670

35. रचना और रचयिता का ज्ञान - 1 0683

36. सतयुग का स्थापक कौन है 0714

37. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान - 1 0746

38. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान - 2 0762

39. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान और परमात्मा से सर्वो सम्बन्ध 0783

40. याद की यात्रा 0797

41. मामा का विशेषता - राजू भाई - 24-06-05 0811

42. दुखों का कारण क्या है - 02 - 25-04-65 0827

43. सौभाग्यशाली बनाने की विधि - 19-04-65 0845

44. अलंकारधारी बनने की विधि 0866

45. अमृत वेला का महत्तव 0885

46. बाबा सूरज मामा चंदा - गीत बीके सतीश भाई द्वारा 0900

47. बाप से वर्सा लेने की विधि - 1 0903

48. बाप से वरसा लेने की विधि 0915

49. बाप शिक्षक और सद्गुरु से वर्ष लेने की विधि 0936

50. भक्ति और ज्ञान 0952

51. ब्राह्मणों का कर्तव्य 0970

52. दुखों का कारण क्या है - 1 0999

53.	गृहस्थ में रहते कमलपुष्प समान जीवन	1011
54.	गृहस्थ में रहते कर्मों को अच्छा बनाने की विधि	1028
55.	जगधम्बा प्यारी - गीत	1046
56.	मन की शांति	1051
57.	माया जीत कैसे बने	1066
58.	मुक्ति जीवन मुक्ति	1086
59.	परमात्मा का कर्तव्य	1102
60.	पुरुषार्थ और प्रालब्ध	1111
61.	रचना और रचयिता का ज्ञान	1120
62.	सद्गुरु से वर्ष लेने की विधि	1140
63.	श्रेष्ठ चारे बन्ने का ज्ञान - 1	1157
64.	श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान - 2	1176
65.	सुख और शांति	1192
66.	विनाश से पहले पूरा वर्षा लेन की विधि और भगवान की श्रीमत क्या है	1202
67.	याद की यात्रा - यज्ञ इतिहास	1217

01. सर्वव्यापी का ज्ञान

14 अप्रैल।

कोई नहीं मानते हैं कि परमात्मा कोई है, परंतु कई हैं, परन्तु जो मानते हैं, उन्हों को यह भी जानना जरूरी है कि पहले पहले परमात्मा क्या है, क्योंकि उनका भी यथार्थ नॉलेज होना चाहिए। एक परमात्मा की ही विषय है, जिसके लिए अपने संसार में कहे हां, सभी तरफ जिसके लिए अनेकानेक बातें हैं। कोई परमात्मा के लिए कुछ बतलाते हैं, कोई परमात्मा के लिए कुछ। कोई कैसा, कोई कैसा। जो अगर मानते हैं तो फिर उसके लिए अनेकानेक विचार हैं। अभी यह भी समझने की बात है कि जो चीज है, और मानी जाती है तो उनकी नॉलेज भी जरूर होनी चाहिए। अगर कई उनके लिए विचार है तो यह भी समझना चाहिए कि यह भी कोई मूंझी हुई बात है क्यों एक चीज के ऊपर इतने विचार क्यों होने चाहिए। एक आदमी है यह फलाना है, जैसा है जो है उसके लिए सबके पास एक ही होना चाहिए भाई यह लव जी है, इसका ऑक्यूपेशन क्या है, यह कौन है, यह क्या करता है, तो उनका एक ही सबके पास नॉलेज होना चाहिए न यानी उनका परिचय ऐसे तो नहीं कहेंगे ना कोई कहेंगे नहीं जी ऐसा नहीं है यह ऐसा नहीं है एक ही चीज के लिए इतने विचार क्यों होना चाहिए। जो अगर है इतने विचार तो यह समझना चाहिए उस बात में कोई रोला है। यानी यानी उन बात में यथार्थ जाना नहीं गया हुआ है। अब यह

भी समझने की बात है कि जिस विषय के ऊपर, परमात्मा की जानकारी के विषय के ऊपर कितना अनेकानेक विचार है अभी इसकी जानकारी यथार्थ कौन देवे यहां आखर(आखिर) भी वह कौन है इसलिए उनकी जानकारी के लिए खुद ही आना पड़ता है स्वयं परमपिता परमात्मा को जो अपनी आकर करके जानकारी देता है, कि मैं कौन हूं। इसीलिए उसने कहा है कि जब जब ऐसा अधर्म, यानी इस चीज का अज्ञान हो जाता है कि मनुष्य ना मुझे जानते हैं ना अपने को जानते हैं। क्योंकि अपने को भी जानेंगे कैसे मेरे द्वारा ही उन्हों का नॉलेज यानी अपने का यानी मनुष्य का का भी नॉलेज, मनुष्य को अपना पता भी मेरे द्वारा पढ़ने का है और मेरा पता भी मेरे द्वारा। क्योंकि मेरा तो कोई क्रिएटर नहीं है ना जो मेरा पता दे। अगर मेरा भी क्रिएटर, मेरा भी क्रिएटर अगर क्रिएटर के ऊपर क्रिएटर है तो आखिर तो कोई रहेगा जिसका कोई क्रिएटर नहीं है तो उसको ही तो गॉड कहेंगे ना इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं वह हूं जिसका कोई क्रिएटर नहीं है। तो मैं तो क्रिएटर किसका हूं मनुष्य आत्माओं का। आत्माएं भी वास्तव कर कर करके अनादि हैं कोई उनका भी कोई क्रिएटर नहीं है। परंतु फिर भी कहा जाता है कि मनुष्य आत्माओं का क्रिएटर गिना जाता हूं, इसी ख्याल से कि मैं आकर करके आत्माओं को अपनी कंप्लीट प्यूरीफाइड स्टेज जो है, उसी पर ले आता हूं। तो प्यूरीफाइड बनाना आत्माओं को यह मेरा काम है, इसीलिए मैं क्रिएटर गाया हुआ हूं। बाकी ऐसे नहीं है कि कभी आत्माएं भी नहीं है आत्मा भी इम्मोर्टल चीज है परमात्मा भी इम्मोर्टल चीज है, लेकिन यह दोनों ही अनादि हैं। तो दोनों अनादि

अविनाशी होने के नाते, जैसे परमात्मा का कोई क्रिएटर नहीं है वैसे आत्माओं का भी कोई क्रिएटर नहीं है, वैसे तो इस मनुष्य सृष्टि का भी कोई क्रिएटर नहीं है यानी मनुष्य भी अनादि हैं तो ऐसे तो कोई चीज का कोई क्रिएटर हुआ ही नहीं परंतु फिर भी जो उसको क्रिएटर कहा जाता है वह उसी नाते कहा जाता है कि वह आकर करके हम मनुष्य आत्माओं को, हमारी जो कंप्लीट स्टेज है जिसको प्यूरीफाइड स्टेज कहा जाए. उसी पर ले आता है। इसीलिए हमारे में पुरीफिकेशन भरने के कारण उनको उनका क्रिएटर कहा जाता है कि मनुष्य के जीवन की जो स्टेज कंप्लीट है उसी पर मनुष्य आत्मा को ले आता है। तो इसी नाते उनको कहा ही जाता है न्यू वर्ल्ड का क्रिएटर। वैसे वर्ल्ड तो अनादि है ऐसे नहीं कि कभी वर्ल्ड है ही नहीं वर्ल्ड अनादि है। परंतु वह आकर करके मनुष्य को इसी तरीके से नया बनाता है। यह पुराने हो गए हैं ना अभी देखो अभी हम सब यह ओल्ड हो गए हैं पुराने उनका मतलब ही है आयरन एजेड वर्ल्ड। अभी-अभी है इसको कहा ही जाएगा पुरानी दुनिया तो हम सब अभी पुराने तमोप्रधान हो गए हैं। अभी बाप आकर करके फिर हमको सतोप्रधान बनाते हैं इसलिए उनको कहा जाता है नई दुनिया अथवा नई दुनिया का क्रिएटर। बाकी ऐसे नहीं दुनिया ही नहीं है। तो यह भी चीजें समझने की है कि उसको क्रिएटर इसी नाते कहा जाता है। परंतु यह समझना कि जो परमात्मा इसी सभी बातों का जो यथार्थ नॉलेज है वह वहीं आ कर के देते हैं इसीलिए इस सभी बातों का निर्णय, यथार्थ परमात्मा क्या है और हम मनुष्य आत्माएं क्या है और यह मनुष्यों की सृष्टि का चक्कर भी कैसे चलता है इन्हीं सभी बातों की यथार्थ

नॉलेज, वो नॉलेज फुल गॉड ही जो है ना वह आकर करके देते हैं। इसीलिए उनको नॉलेज फुल भी कहते हैं, क्रिएटर भी कहा जाता है और हिंदी में भी कहते हैं पतित को पावन करने वाला, दुखहर्ता सुखकर्ता, यह सभी महिमा उनको दी जाती है। अभी जिसको दी जाती है उसको भी समझना चाहिए ना वह कौन सी चीज है उनको भी कहेंगे सुप्रीम सोल वह भी सोल है। अभी उनको जो कई समझते हैं सर्वव्यापी, अभी सोल को तो सर्वव्यापी कह नहीं सकते हैं ना। यह भी चीज समझने की है कि वह कौन सी चीज है जैसे हम आत्मा है तो आत्मा अपने शरीर में हर एक की आत्मा अपने अपने शरीर में अपनी अपनी आत्मा है ऐसे नहीं है कि सब की आत्मा एक ही है। अगर एक ही आत्मा होती तो सबके संस्कार, सब की एक्टिविटी एक ही हो जाती परंतु नहीं, जितने मनुष्य हैं उतनी आत्माएं हैं तो आत्माएं कहेंगे सोल्स। यानी बहुत जितने मनुष्य दुनिया में जितनी संख्या है इतनी आत्माएं हैं तो यह भी समझने की बातें हैं। एक आत्मा तो नहीं है ना तो परमात्मा भी जो चीज है वह भी तो सोल ही है ना तो सोल जिस चीज को कहा जाता है और उनका है भी वो शास्त्रों में भी है की ज्योतिर्लिंगम आकारी जिसका यादगार अपने अनुभव के आधार पर चित्र भी निकाला हुआ है तो परमपिता परमात्मा जिसको कहा जाता है, यह कहा ही जाता है उस सुप्रीम सौल को। तो निराकार परमात्मा जिसको कहें जिसकी प्रतिमा भी हमारे भारत में भी यह शिवलिंग की जो प्रतिमा है वास्तव कर कर के, ये जो रामेश्वर की आप लोगों ने मूर्ति देखी होंगी, राम बैठकर करके भी शिवलिंग का पूजन कर रहा है और कई चित्रों में आप

देखेंगे सभी देवताएं भी शिवलिंग के आगे रिस्पेक्ट में खड़े हैं अथवा हाथ जोड़कर करके। तो इससे यह निर्णय होता है सभी का ऊंचे में ऊंचा जो है वह वो ही परमपिता परमात्मा है तो यह प्रतिमा जो है शिवलिंग की यह उसी परमपिता परमात्मा की है। तो उनको ही कहा जाता है सुप्रीम सौल अथवा निराकार परमात्मा। तो वह भी तो आकार में है ना जिसको निराकार कहा जाता है उसका मतलब यह नहीं है कि उनका कोई अपना रूप या अपना कोई भी आकार नहीं है नहीं! उसको भी कहेंगे यह यहां तो बड़ा दिखाया हुआ है नहीं तो इसको स्टार लाइट कहो... बिंदी जैसे बिंदी होती है ना तो तो उनको एकदम तो उनको कॉल परंतु ज्योतिकार। परंतु वह भी चीज है ना ऐसा तो नहीं है कि ज्योति कोई फर्टाइल है फैली हुई चीज है जो सब में सर्वव्यापक होंगी नहीं फैली हुई कोई चीज नहीं है जो सब में अंदर हो बाहर भी हो जैसे कई समझते हैं कि परमात्मा वह चीज है जैसे सब में व्याप्त है सब में व्यापक कैसे, सोल कैसे सब में भला व्यापक होंगी। होंगी तो भी सोल है ना तो परमात्मा भी तो सोल है परंतु उनको परम आत्मा सुप्रीम सौल कहा जाता है, तो वह चीज सब में व्यापक की तो चीज ही नहीं है ना। तो यह सभी बातें समझने की है कि वह कोई व्यापक चीज होने की चीज नहीं है पर ऐसे कह सकते हैं हां सब उनको याद करते हैं याद सब उसमें याद सब में व्यापक है वह बात अलग है बाकी यह चीज सब में व्यापक है यह चीज व्यापक कैसे हो सकती है इसलिए जो कई समझते हैं परमात्मा सर्वव्यापी हैं। पहले तो यह व्यापक होंगा ही कैसे यह चीज कैसे व्यापक होंगी बताए तो सही ना कोई बाकी परमात्मा कोई ऐसी तो चीज नहीं है ना जो

जो ऐसी फर्टाइल चीज हो फैली हुई जैसे कई समझती है जैसे आकाश है ना अंदर भी है बाहर भी है वह आकाश की तरह से फैली हुई कोई चीज है। परंतु नहीं ऐसी कोई चीज नहीं है वह उनको कहा जाता है अखंड ज्योति तत्व, जिसको इंफिनिट लाइट कहा जाता है, जिसमें यह निराकार परमात्मा भी और हम सब सोल्स रहते हैं जैसे इस घर में हम सब मनुष्य रहते हैं तो हम घर तो नहीं है ना हम सब मनुष्य रहने वाले इसी घर में रहते हैं। इसी तरह से अखंड ज्योति तत्व में जिसको इंफिनिट लाइट अंग्रेजी में कहा जाता है, उसमें यह सोल सुप्रीम सौल भी और सब हम आत्माएं रहती है। लेकिन हम जो रहने वाली चीज है वह तो सोल है ना भले सोल भी ज्योति रूप है ज्योति परंतु लिंग आकारी यानी उनको कहेंगे वह बिंदी वह अपना संस्कार हर एक के संस्कार रूप आत्मा है। तो इसीलिए वह सब फैली हुई चीज में या फैलाओ में आने वाली तो चीज ही नहीं है न इसीलिए यह जो कहीं मानते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी है और एक तो वह चीज नहीं है व्यापक होने वाली और दूसरी उसके व्यापक होने का कोई महत्व नहीं है। अगर व्यापक है तो व्यापक होकर करके हमारे लिए क्या उसका महत्व है हमारे पास व्यापक होते हम दुख अशांति में भी हैं। व्यापक होते आज हमारी दुनिया में कई अधर्मों के काम भी हो रहे हैं तो क्या परमात्मा के व्यापकता के होते भी और हमारी जीवन गिरती रहे या हमारे से कोई ऐसे अकर्तव्य काम होते रहे और हम दुख अशांति में आते रहें यह क्या हुआ उसका व्यापकता का क्या महत्व हुआ। तो मैं तो आज कोई बड़ा आदमी भी कहाँ हाजिर होता है ना कोई भी देखो हमारा प्राइम मिनिस्टर था तो आकर के हाजिरी में ऐसे

बड़े आदमी मे, कोई भी ऐसा काम उल्टा हो जाता है तो कहते भाई तुम्हारी हाजरी में तो और हमारा देश या हमारी जनता ऐसी दुखी है तो आपका प्राइम मिनिस्टर बनना या ऐसे होने से फायदा ही क्या है तो अगर हमारा परमात्मा जो है ही सुखदाता, वह अगर ओमनीप्रेजेंट होता और सब में व्यापक होता तो यह सोचने की बात है कि उसकी प्रजेंट में और हम ऐसे दुख और अशांति तो उसकी प्रजेंट से फायदा ही क्या हुआ। सब तो उसको कहते जैसे कोई यहां काम नहीं करते तो सब उसको कहते प्राइम मिनिस्टर को आओ उतरो उतरो देखो वो प्राइम मिनिस्टर कहते अरे अभी तुम अब संभाल नहीं सकते हो तुम जनता की सेवा ठीक नहीं कर सकते हो तो उतरो उतरो, तो अभी अगर गॉड ओमनीप्रेजेंट है और हम ऐसे दुख और अशांति में पड़े हैं तो उसको भी कहना चाहिए ना कि तुम प्रेजेंट रह कर करके या तुम्हारे हाजरा हजूर होते तुम्हारे हमारा क्या फायदा करते हो इससे तो तुम ना होता तो अच्छा होता। तुम्हारी हाजिरी में और हम ऐसे दुखी और अशांत मनुष्य और हमारे करतूत और ही बुरे जिसको आज कहते भी हैं कि भ्रष्टाचार दुनिया हमारा आचरण इतना बिगड़ता जाए और हमारी दुनिया इतनी दुखी होती जाए तो फिर गॉड के ओमनीप्रेजेंट होने का फायदा ही क्या है तो एक तो उनका फायदा ही नहीं है और दूसरी कोई ऐसी चीज भी नहीं है जो वह चीज बैठकर करके सब में व्यापक रहे। इसीलिए यह भी बातें समझने की है कि जिसको परम आत्मा कहा जाता है वह सोल है। उनका अपना नॉलेज फुल जिनमें अपने सभी हम आत्माओं का नॉलेज है कि हम आत्माएं कैसे ऊपर थी यानी ऊंची थी, ऊपर का मतलब ऐसे नहीं है कि हम अपनी

लाइफ में ऊंचे थे और फिर कैसे गिरे हैं, यह सारा हमारे कर्मों के चक्कर का जो है यह सब इसके पास नॉलेज है। इसीलिए उसको नॉलेजफुल कहा जाता है और वह अपने टाइम पर आकर करके नॉलेज देते हैं। और फिर आकर के हम मनुष्य आत्माओं को नॉलेज के थ्रू वह हमारे में ताकत भरते हैं, जिससे हमारे जीवन को सुख और शांति प्राप्त करते हैं हम। और यह कराने वाला निमित्त बनता है। तो इनका कल्प यह हो गया ना और इनका जो अपना संस्कार है नॉलेज देना और सब का नॉलेज इनके पास रहना, तो वह तो कोई चीज है ना। ऐसे नहीं कहेंगे कि कोई फर्टाइल या फैली हुई कोई चीज है, या सब में व्यापक कोई चीज है। अगर व्यापक होती तो सब इसके गुण वाले जैसा परमात्मा का गुण है तो सभी पास गुण होने चाहिए गुण कहा जाता है नॉलेज को तो फिर सब नॉलेज फुल हो जाने चाहिए। बाकी वह व्यापक हो करके बैठ करके क्या करता है हां? उनके व्यापक होने का कोई तो फायदा या कोई तो गुण चलना चाहिए न। तो जबकि वह चीज है ही नहीं तो कैसे हम उनको कैसे कह सके कि वह ओमनीप्रेजेंट है इसीलिए ऐसा कहना और ही परमात्मा की ग्लानी करनी है। अगर हम उनको ऐसे समझे कि हां वह हाजरा हजूर है या वो ओमनीप्रेजेंट है, वह व्यापक है तो उनकी व्यापकता से हमें क्या फायदा है। नहीं, हमारे हर एक में अपनी अपपनी आत्मा व्यापक जरूर है लेकिन लेकिन हम अपनी आत्मा में भी अभी तमोप्रधान है यानी आत्मा हमारी भी अभी तमोप्रधान है इसीलिए हम अपनी आत्मा में भी अभी तमोप्रधान होने के कारण ही हमारे कर्तव्य अथवा करतूत जो है ना, वह उल्टे चल पड़े हुए हैं, इसीलिए हम दुख और अशांति में

हैं। वहां तो कोई परमात्मा के ओमनीप्रेजेंट या उनके व्यापक होने के की कोई बात ही नहीं रही ना। यह तो हर एक के कर्म के हिसाब हैं। हर एक अपनी अपनी आत्मा अपने-अपने हिसाब जो कुछ बनाया है उसी का अपना नतीजा भोग रही है। इसमें उनके ओमनी प्रजेंट होकर के रहने का भी क्या मतलब है या क्यों रहे। रहने की तो कोई बात ही नहीं। कई तो यह समझते हैं वो ही तो कोई चैतन्य सत्ता है न यह जो हमारा हाथ भी चलता है ना, पैर भी चलता है या हम बोलते हैं, अगर वह परमात्मा ना होता तो यह चैतन्यता ना होती। तो इसीलिए कई समझते हैं कि वह चैतन्यता परमात्मा की है, परंतु ऐसी बात नहीं है, चैतन्य तो आत्मा भी है ना। आत्मा को भी कहा जाता है सत चित्त आनंद स्वरुप, यानी वह भी चैतन्य है, परंतु वह चैतन्य तो आत्मा देखो अपना शरीर से जब भी आत्मा निकल जाती है, एक शरीर आत्मा छोड़ती है दूसरा लेती है, वो डेड बॉडी पड़ी हुई है, क्या निकल गई? आत्मा निकली ना। तो आत्मा को चैतन्य कहेंगे ना, ऐसे थोड़ी कहेंगे परमात्मा निकल गया, कहेंगे आत्मा निकल गई। तो आत्मा में भी अपनी चैतन्यता तो है ना, जो शरीर में थी तो शरीर के द्वारा आत्मा बोलती थी और चलती थी यह सब होता था। जब भी आत्मा निकल गई तो वह बॉडी पड़ी है तो फिर कुछ रहा चलती फिरती हाँ बॉडी तो कुछ नहीं हिलेंगी न हाँ वह आत्मा निकल गई तो आत्मा निकल गई कहेंगे ना। उसने जाकर के फिर जो शरीर लिया फिर वह चलना फिरना शुरु करेगा। तो यह सभी चीजें समझने की है कि आत्मा भी अपने गुण में चैतन्य है। ऐसे नहीं कहेंगे सिर्फ परमात्मा चैतन्य है, आत्मा भी तो चैतन्य है ना तो आत्मा में भी जो

अपनी चैतन्यता की सदा है तो वह तो चलना फिरना है हर एक वो आत्मा की चैतन्यता से बाकि ऐसे नहीं कहेंगे कि कोई परमात्मा है तभी चलता फिरता है। अगर परमात्मा ना होता तो चलते फिरते कैसे, तो चलने फिरने के लिए कोई परमात्मा की वह चैतन्यता मानना, परमात्मा को चैतन्य इसी तरीके से मानना यह भी रॉन्ग है। तो यह सभी चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझना है कि परमात्मा वास्तव करके क्या है, भले हमारे भारत में उसकी प्रतिमा की यादगार पूजा भी मानी जाती है परंतु यथार्थ रीति से ना जानने के कारण यह इतनी शिवलिंग की क्यों महिमा है, क्यों यह सभी चित्रों में भी दिखलाया हुआ है कि देवता ने भी उनका इतना रिस्पेक्ट करते हैं तो जरूर देवताओं से भी कोई ऊपर है ना। तो देवताओं से ऊपर कौन है? यह जिसने बैठकर करके मनुष्य को देवता बनाया। बाकी ऐसे नहीं है कि देवताओं ने कोई बैठकर करके उनका कोई पूजन किया यह तो चित्रकारों ने चित्र पीछे बनाए हैं। यह तो चित्रकारों ने बनाए बाकी ऐसा नहीं है कोई सामने बैठ कर के इनका पूजन किया है परंतु ऐसा राम, ऐसा कृष्ण जैसे मनुष्य जो थे देवताएँ है वह कैसे बने थे? इन परमात्मा ने आकर करके यह प्यूरीफाइड बना कर करके ऐसा ऐसा मनुष्य को पावन बनाया हा फिर उनकी यादगार में चित्रकारों ने बैठकर करके यह चित्र बनाएं। बाकी ऐसे नहीं है कि उन्होंने बैठकर करके कोई उन्हों को पूजा है तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझने का है, कि परमात्मा क्या और हम आत्माएं क्या और हम आत्माएं कैसे नीचे आती हैं अर्थात तमोप्रधान बनती हैं और फिर हम आत्मा को ही सतों प्रधान बनने का है। बाकी उसी परम आत्मा को,

सुप्रीम सोल को न ये तमोप्रधान बनता है न इनको सतोप्रधान बनने की कोई बात है यह एक ही सोल है जो जन्म मरण रहित होने के कारण इनको नीचे ऊंचे होने की कोई बात ही नहीं है इसीलिए इनकी महिमा है कि ऊंचे ते ऊँचा भगवन, यानी हमारे को भी ऊँचे में ऊंचा आ करके बनाते हैं मनुष्य को, जिसके ऊपर कोई मनुष्य है ही नहीं। देखो ऊँचे ते ऊँचे मनुष्य कौन से हैं? देवताएं। तो ऐसा सबसे ऊंचा मनुष्य बनाना ये किसने बनाया? इसने, परमात्मा ने। तो मनुष्य को भी ऊँचे ते ऊँच बनाने वाला यह सबसे ऊंचे हो गया ना, इसलिए इनकी महिमा है कि ऊँचे ते उंचा भगवन तो भगवान ही मनुष्य को ऊंचा बनाएगा। मनुष्य मनुष्य को ऊंचा नहीं बना सकता। तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझने का है इसीलिए परमात्मा जो चीज है ना, वह इन्हीं को ही कहा जाएंगा। अभी यह चीज तो कोई सर्वव्यापी या सब में कैसे आएंगी, जैसे सोल सब में कैसे आएंगे? सोल आएगी तो फिर हर एक आत्मा अपने अपने कर्म के हिसाब से एक शरीर छोड़ेंगी, दूसरा लेंगी, बाकी ऐसे तो नहीं कहेंगे ना कि सभी के में एक ही सोल है, नहीं। न सबकी सबकी अपनी अपनी सोल है, जो इतनी सब सोल हैं न सबकी अपनी अपनी सोल है देखो इनकी आत्मा का अपना कर्म का हिसाब तुम्हारी आत्मा का अपना कर्म का हिसाब। अभी तुम शरीर छोड़ करके दूसरा लिया, तीसरा लिया या कुछ भी है तुम्हारी आत्मा के अपने कर्मो के हिसाब से तुमने अपने शरीरों को लिया एक छोड़ करके दूसरा। तो हर एक आत्मा का अपना अनेक जन्मों के खाते का अपना हिसाब किताब हुआ ना। इसमें सब में एक ही साथ, एक टाइम पर, एक ही एक ही आत्मा सब में

व्यापक, वो तो बात ही नहीं है। तो जैसे आत्मा व्यापक बात नहीं है, वैसे इसको भी व्यापक होने की तो कोई बात ही नहीं है न। और ना कोई व्यापक होने से कोई महत्वता निकलती है कि भाई व्यापक होने से कोई फायदा मिलता है। फायदा क्या मिलेगा? तो यह सभी चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझना है, क्योंकि यह तो बातें ऐसी है कोई एकदम जहां एक ही टाइम पर समझाई नहीं जा सकती। यह तो बहुत अच्छी तरह से कोई बातें बैठकर करके कुछ टाइम देकर करके सुने, तभी इन बातों को कोई अच्छी तरह से समझ सकता है। तो इसके लिए चाहिए टाइम और इसको अच्छी तरह से, ये कोई ऐसे क्लासों में भी समझाने की चीज नहीं है तो कोई अकेले आकर करके और अच्छी तरह से इन बातों के ऊपर सुने और समझे फिर कोई बात ना समझ में आए तो पूछ भी सके, यहां क्लास में तो कोई पूछ नहीं सकते हैं ना, क्योंकि उसमें सब का टाइम खराब होगा। तो यह सभी बातें भी अच्छी तरह से समझने के लिए जरा कोई टाइम अच्छी तरह से दे करके सुने और सबझे तो बहुत अच्छी तरह से समझ सके। यह जो हम बहुत काल से बातें सुनते हैं आए है, सिर्फ उसी के आधार पर समझना कि ये बहुत काल तो हम परमात्मा को सर्वव्यापी मानते आए हैं और बहुत काल से हम ऐसे ही कहते आएं हैं तो उसकी माना वही बातें सत्य होंगी, नहीं यह जो हम बहुत काल से सुनते आए यह मनुष्य के द्वारा सुनते आए हैं। यह हमारे वेद, शास्त्र, ग्रंथ आदि भी जो हैं, वह भी तो मनुष्यों ने लिखा है इसीलिए ये सभी हैं मनुष्यों की मत, अभी हमको मिल रही है स्वयं परमपिता परमात्मा की मत वो क्या समझ आता है अपने लिए तो उनकी बात

को भी समझना चाहिए ना। क्योंकि यथार्थ अपना नॉलेज यही देंगे, इसलिए अभी यह क्या समझाता है और क्या बतलाता है कि मैं क्या हूं और तुम मनुष्य भी क्या हो, तो उन्हीं बातों को भी सुनना समझना चाहिए बाकी जो हम जो सुनते चले आए हैं न तो इसीलिए ये नही है कि बहुत काल फिर चली आई है बहुत इसीलिए वह सत्य होंगी, नहीं। परमात्मा ने तब क्यों कहा कि जब जब ऐसा अधर्म यानि अज्ञान होता है तभी मैं आता हूं तो इस के पहले वेद शास्त्र ग्रंथ भी थे ना। तभी तो अर्जुन को कहा ना कि ये सभी अध्ययन करने से मेरी प्राप्ति नहीं होगी, तब तो कहना इन सब को भूलो और अर्जुन के ही मिसाल में है न गीता में है की यह सब जो तुमको गुरु आदि सभी जो तुम्हारे पढ़ाने वाले हैं जिसने तुमको पढ़ाया है इन सभी को भी भूलो कहा ना, उसमें तो कहा है मारो। यह द्रोणाचार्य भीष्म पितामह आदि आदि जो तुम्हारे गुरु खड़े हैं, इन सब को मारो, परंतु मारो कोई हिंसा के लिए तो नहीं भगवान कहेंगे ना कि इन सब का गला काटो। उनका मतलब यही था की इन सब को भूलो, जो तुमको उन्होंने पढ़ाया, सिखाया तो इन गुरुओं को भी भूलो और यह मामा चाचा काका बाबा इन्हों को भी भूलो और जिन्होंने भी जो भी अभी तुम्हारे यह रिश्ते हैं इनको भूल कर करके अभी मेरे से अपना रिश्ता जोड़ो। अर्थात मनमना भव गीता में भी है ना। मन को अभी निरंतर मेरे में लगाओ। बाकी यह सभी बाते तू भूल जा। क्यों भूलवाई? क्योंकि वह सभी बातें मनुष्यों की थी। मनुष्यों ने बैठकर करके सुनाई थी, इसीलिए बाप ने समझाया कि वह मनुष्य की बुद्धि है अभी मेरी बुद्धि जो है ना वह तो सबसे श्रेष्ठ है ना। और यह यथार्थ मेरी बुद्धि तुमको

नॉलेज दे सकेंगी, मनुष्य की बुद्धि तुमको यथार्थ नहीं देंगी। इसीलिए कहा उन सब बातों को भूल कर के अभी जो मैं सुनाता हूं उन्ही बातों को सुन और उसी को सुनकर उसी पर अभी चल तो तू अपने स्वर्ग का अधिकार पा सकेगे। तो ये जो अभी अपन सुन रहें हैं न ये कोई मनुष्य की मत नहीं है। हम कोई मनुष्य के द्वारा नहीं सुन रहे हैं। यह भी कोई भूल ना करें हम को कोई दादा नहीं सुनाते हैं क्योंकि बहुतों ने सुना है दादा का नाम, इसीलिए बतलाया जाता है कि हमको कोई नॉलेज देने वाला दादा नहीं है। दादा को भी नॉलेज देने वाला यह है। तो इसने ही बैठकर करके ये नॉलेज दिया है। अपना परिचय और हम सारे मनुष्य सृष्टि के चक्कर का यह नॉलेज यह स्वयं उसी परमपिता परमात्मा ने बैठकर करके समझाया है जब दाता दादा भी समझ रहे हैं और हम भी सब समझ रहे हैं और उन्ही के द्वारा इसी सभी बातों को जानकर करके और दूसरों को भी सुनाया जा रहा है तो यह नॉलेजी अपनी मनमत या अपनी कोई कल्पना नहीं है, यह उनकी यथार्थ जानी जाननहार और जिसको ही नॉलेजफुल कहा जाता है वह बैठकर करके समझा रहा है अभी इसको भी समझाने के लिए ओर्गंस तो चाहिए न इसलिए वह आकर करके टेंपरेरी मुख का आधार लेकर कर के और सुनाते हैं बाकी सुनाने वाला यह है। तो ये सभी चीजों को भी अच्छी तरह से समझना है की यथार्थ नॉलेज क्या है और परमात्मा क्या है। इस चीज को सर्वव्यापी कहना यह बड़ी भारी भूल हो जाती है और ना ऐसी चीज है जो सर्वव्यापी हो सके, ना उनकी क्वालिफिकेशन है इसके व्यापकता होने से, फिर तो सभी मनुष्य में वह क्वालिफिकेशन की व्यापकता में आनी चाहिए परन्तु कहाँ है? यह

तो मनुष्य और ही डिसक्वालिफाइड बनते जा रहे हैं। अगर यह सब में व्यापक है तो फिर इनकी व्यापकता का महत्व क्या हुआ। यह सब सभी चीजों को जो अभी जब मनुष्य भी कोई रहता है जिगर इसी स्थान पर तो उनको उनको भी खींचा जाता है कि भाई आपकी हाजिरी में यह काम ऐसा नहीं होना चाहिए। तो हमारे इतने परम पूज्य परमात्मा अभी हाजरा हजूर तो इसकी हाजिरी में क्यों ऐसी हमारी दुनिया ऐसी गिरती आई है। फिर तो उनके होने से हमारी दुनिया ऊँची ऊँची चलनी चाहिए, परंतु ऐसे नहीं। तो यह सभी बातें समझने की, इसीलिए बाप कहते हैं मैं जभी आता हूं, तो मैं आकर करके दुनिया को ऊँचा उठाता हूं, मैं एक ही बार आता हूं और एक ही टाइम आता हूँ और वाही टाइम आकर कर में दुनिया डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन का काम करता हूँ। तो उसके कर्त्तव्य करने का तो बहुत महान महिमा है न। ऐसे नहीं है कि उनका कर्तव्य कोई सदा ही चलता रहता है। कई ऐसे समझते हैं की उनका काम तो सदा ही है। ये सब जो कुछ चल रहा है न यही तो परमात्मा की सकाश से चल रहा है लेकिन यह सकाश थोड़ी है जो हम दुःख और अशांति, जहा हमारी दुनिया दुःख और अशांति में, और इतनी अपने आप विष्ठा आचरण में चलती जा रही है तो उसमे उनकी व्यापकता रखना तो गोया ये तो उनकी इन्सल्ट करना है न। तो ये साडी चीजों को समझना और यथार्थ अपने पिता को जब तलक न जाने तब तलक हमारा योग हमारा कनेक्शन उस बाप से हो नहीं सकता। क्योंकि हम परमात्मा कोई देवता को भी नहीं कह सकते।राम क्रिशन आदि को भी परमात्मा नहीं कह सकते हैं, उन्हों को भी देवता कहेंगे वो तो मनुष्य

जो देव्ताएं थे, जो क्वालिफाइड मनुष्य थे वो थे, बाकि परमात्मा तो इनको कहेंगे न। तो ये सभी चीजों को समझने का है इसीलिए परमात्मा का ऑक्यूपेशन और देवताओं का ऑक्यूपेशन ये सभी बातों को समझना चाहिए। ऐसे नहीं है सब मिल मिलकर करके एक ही एक हाँ, परमात्मा भी एक ही एक, देवता भी एक ही एक, मनुष्य भी एक ही एक, सब एक ही एक थोड़े ही है, मिनिस्टर भी एक ही एक, गवर्नर भी एक ही एक सब एक ही एक एक ही एक सब में, सब का ऑक्यूपेशन, सब की पोजीशन, सब का कर्त्तव्य अपना अपना है इसीलिए देवताओं का कर्त्तव्य अपना और परमात्मा का कर्तव्य अपना और सभी का अपना अपना समझना ही चाहिए सबको ,इलाकर के एक करने से, ये ही देखो ईसिस कारन से ही तो हम आज भूल के कारण ही तो दुखी हें है न। तो इन सभी बातों को अची तरह से समझना है और समझ कर करके यथार्थ रीती से अगर उससे हम कनेक्शन जोड़ेंगे न तभी हमको उनला यथार्थ बल मिलेंगा। तो ये सभी चीजें समझने की। अच्छा अब टाइम हुआ है इसीलिए क्लास बंद करते हैं लेकिन इन बातों को , ये ऐसी विषय है जिसके उपर तो बहुत टाइम हाँ..समझने की बात होती हैं क्योंकि बहुत काल से ये बातें चली आई हैं न तो इतनी जो बातें चली आई हैं उसको फिर परमात्मा राइट वे कैसे समझाते हैं तो उन बातों को भी तो समझने का टाइम चाहिए। तो इसीलिए कोई नए आए हुए हों, तो उन्हों प्रति राय है कुछ टाइम देकर करके सुनेगे आकर करके समझेंगे तो अची तरह से समझ प् सकेंगे, अच्छा दो मिनट साइलेंस ।उससे रिलेशन जोड़ कर करके हम याद रखें की उससे हमारा क्या रिलेशन है अभी

प्रैक्टिकल में उसके साथ रिलेशन है की हम उसकी संतान हैं, प्रैक्टिकल में और उनका जो फरमान है टू बी होली योगी अर्थात पवित्र रहो और फिर मेरे साथ, मुझे याद भी करो। याद करने का क्यों फरमान है क्योंकि हमारे पर जो पापों का बोझ है पहले का चढ़ा हुआ उसको उतरने के लिए। कहा भी है गीता मैं की पापों को नष्ट करना, मेरा योग ही पापों को दग्ध कर सकेंगा। तो मेरा(परमात्मा) योग तो उनको याद रखें, उनको भी जान कर करके ऐसे नहीं की कोई भी रूप से याद करें जैसे भी करें, नहीं। यथार्थ मैं जो हूँ जैसा हूँ मुझे जान कर कर यथार्थ रीती से जो मुझे याद करते हैं वो मुझे यथार्थ पातें है अथवा मेरे द्वारा यथार्थ जो प्राप्तियां हैं वो प्राप्त कर सकते हैं अच्छा।

02. याद की यात्रा

रिकॉर्ड:-

इस पाप की दुनिया से..........

सुना गीत में की इस पाप की दुनिया से और कहीं ले चल। अभी कहां चले? ठिकाने का भी तो मालूम होना चाहिए ना कि और कहां चलने का है। यह तो हो गई पाप की दुनिया। इस दुनिया को ही कहेंगे पाप की दुनिया, पाप की दुनिया कोई और नहीं है। जिसमें अभी है इसको कहा ही जाएगा पाप की दुनिया। पाप से ही दुख होता है इसलिए इसको कहा ही जाएगा दुख की दुनिया, अशांति की दुनिया। तभी तो आज हमारी दुनिया में विश्व शांति, वर्ल्ड पीस यह चाहते हैं ना। देखो यह वर्ल्ड पीस का अक्षर भी तो इधर है न भाई वर्ल्ड पीस होनी चाहिए, विश्व शांति होनी चाहिए। तभी तो विश्व शांति के लिए यहां धर्म सम्मेलन आदि आदि कहीं यह सब उपाय करते हैं। तो उसकी माना हमारी विश्व अशांत है। उसका मतलब ही है विश्व अशांत और दुखी है। तो विश्व में हो गई ना यह सारी, तो उसको ही तो कहेंगे ना पाप की दुनिया। तो अभी कहते हैं पाप की दुनिया से और कहीं ले चल। अभी किधर चले हां? और ठिकाने का भी तो मालूम होना चाहिए कि और कौन सा ठिकाना है जहां सुख और शांति है। तो कई जो समझते हैं कि कोई दुनिया. स्वर्ग या कोई ऐसी दुनियाएं हैं जहां

जाना है सुख शांति में, नहीं। दुख और शांति को भी इस दुनिया में आना है, लेकिन आए कैसे। वो समझने की बात है कि वो कैसे बने। बनना इस दुनिया में है दुनिया यह एक ही है, बाकी इस दुनिया का परिवर्तन होने का है। तो परिवर्तन कैसे आवे उसके उपाय का नॉलेज होना चाहिए। तो वो बैठ कर करके परमात्मा अभी समझाते हैं क्योंकि यह हमारे पास जो समझ है वो समझ कोई हमारी कल्पना नहीं है या अपने मन की कल्पनाएं से नहीं समझी हुई बात है। यह तो जो जानी जाननहार, सर्व समर्थ जिसको निराकार परमपिता कहा जाता है और जिसको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है वो बैठकर करके अभी समझा रहे हैं। तो वो समझाते हैं कि किस कारण से तुम्हारे पास दुख अशांति भी आई है। ऐसे नहीं कि यह सदा ही कोई दुनिया दुख अशांति की है, दुख अशांति भी इस दुनिया में आई है। अभी फिर आई चीज को फिर लौटाओ। अभी उसको कैसे लौटाओ फिर सुख शांति को लाओ, उसका बैठ कर कर के उपाय समझाते हैं कि यह हुआ है तुम्हारे पाप कर्म से। दुख जो हुआ है वो तुम्हारे पाप कर्म से हुआ है और पाप तुमसे हुआ है विकारों के कारण। अभी विकारों को नष्ट करो तो पाप होना बंद हो जाएगा। और पाप ना होने से फिर दुख नहीं होगा। तो दुख और अशांति को अगर मिटाना है तो खाली सम्मेलन या और कोई उपाय करने से नहीं होगा, जब तलक इन विकारों को नाश नहीं किया गया है तब तलक हमारे पाप कर्म बंद नहीं होंगे। और जब तलक वो हमारे पाप कर्म बंद नहीं हुए हैं तब तलक हमारे पास सुख नहीं हो सकता है। तो हमारे पास सुख शांति आएंगी तभी जब हम अपने कर्मों को स्वच्छ बनाएं। तो उसी स्वच्छ

को कैसे बनाएं उसकी बैठकर करके यह अभी शिक्षा बाप दे रहा है कि किस तरह से अपने कर्मों को स्वच्छ बनाओ। तो वो बनाएंगे न तभी हमारी दुनिया जो है ना सुख और शांति वाली होंगी। तो अभी यह जो गीत में सुना ना ले चल तो ले चलने का है कि अभी यह पाप की दुनिया से अथवा दुख की दुनिया से तो सब थके हैं ना देखो तो थके है ना कि थके नहीं हो? की पसंद है ये दुनिया? बहुत थके हैं तो अगर थके हो और चाहते हो कि हम सुख शांति की दुनिया अथवा सुख शांति में रहे तो उसके लिए फिर हमको यह जो दुख अशांति का कारण है उसको नाश करना पड़ेगा। इसीलिए कहता है परमात्मा भी अभी उसमें हमको मेरे को उसमें मदद करो क्योंकि तुम्हारे कर्म के भ्रष्ट होने के कारण ही तो दुख अशांति हुआ है ना। तो अगर तुम सुख शांति चाहते हो तो फिर अपने कर्मों को बदलाव अभी। तो उसमें हां फिर अभी पुरुषार्थ करने का है ना और उसी पुरुषार्थ करने के लिए कोई भी ऐसी डिफिकल्ट बात नहीं है। उसके लिए कोई साधन करना है कोई क्रियाएं हैं या कुछ उसके लिए कोई ऐसी बात है जो हम कर ना पा सके ऐसी कोई भी बात नहीं है, सिर्फ थोड़ा समझना है कि हम जो भी सारा दिन अपने कर्म करते हैं उसी कर्मों को पांच विकारों के संग से ना करें, उससे अपने को बचाते रहना है इसीलिए अपने को सच-सच वैष्णव रखना है तो विकारों से वैष्णव रखने का है वो कई वैष्णव रहते हैं ना, वो समझते हैं कि हम वैष्णव कुल के हैं। वो समझते हैं कि हमारा कोई को कपड़ा ना छुएं। हम किसी के ऐसा ना हो या कोई समझते हैं कि हाँ हम खानपान के वैष्णव हैं, परंतु वो तो ठीक, परंतु साथ है जब तलक विकारों का है, वैष्णवपन अर्थात

विकारों को आत्मा छुए नहीं ऐसा अपना परहेज रखने की तो वो परहेज ही हमको जो है ना वो ऊंचा उठाएंगे इसीलिए अपना अभी पुरुषार्थ है विकारों से वैष्णव अथवा विकारों का व्रत। वो जो व्रत भी रखते हैं ना तो हमको सच-सच व्रत किसका रखने का है विकारों का। यह पांच ही विकार है जिससे ही हम दुख उठाते हैं इसलिए अभी विकारों का व्रत, विकारों से वैष्णव, क्योंकि आत्मा को विकारों ने ही मैला बनाया है तो वो मैल जो चढ़ी है विकारों की चढ़ी है ना बाकी और कोई चीज की मैल थोड़ी है यह विकारों की। तो अभी हम को स्वच्छ भी होना है तो इस मैल को निकालना है। अभी उसी मेल के निकालने के लिए यह ज्ञान और योग है उसको कहा गंगा नहाने से या पानी में नहाने से कोई मैल वो विकारों कि नहीं धोई जा सकती है। उसको धोने के लिए तो फिर हमको ज्ञान और योग का बल चाहिए इसलिए बैठकर करके अभी यह ज्ञान और योग। योग का मतलब ही है उस परमपिता परमात्मा को याद करना। योग का मतलब यह नहीं है की आसन लगाना या कोई किसी मूर्ति का बैठ कर कर के ध्यान करने का है नहीं। यह है हम को चलते-फिरते, खाते-पीते उस परमपिता परमात्मा की याद रखनी परंतु वह भी याद तभी हो सकेंगी जब पहले पहले उनका परिचय होना चाहिए। पहली तो बात यह समझने की कि परमात्मा क्या है क्योंकि परमात्मा कई जो समझते हैं कि सभी जो रूप है वह परमात्मा के हैं परंतु नहीं, परमात्मा जिसको निराकार कहा जाता है, उस निराकार का भी ज्ञान होना चाहिए कि निराकार परमात्मा कौन सी चीज है। तो निराकार परमात्मा कौन सी चीज है वो तो हमारे पास इस भारत में उसकी

प्रतिमा की भी मानता है जिसको शिवलिंग कहा जाता है। परंतु कई इस शिवलिंग की प्रतिमा का भी अर्थ नहीं समझते हैं। वह तो समझते हैं शिव और शंकर जो है न वो एक ही है, वह जो आकार का भी देते हैं ना वो जो जताएं वताएं, सांप वांप पड़ा हुआ होता है मूर्ति दिखलाते हैं। परंतु वास्तव कर करके परमात्मा जिस को कहा जाता है वो उस निराकार को, जो शिवलिंग की प्रतिमा है आप लोगों ने देखा होगा वह रामेश्वर का भी एक मूर्ति दिखलाते हैं या कई मूर्तियों में ऐसा भी है कि सभी देवताए जो है ना वह शिवलिंग के आगे हाथ जोड़कर करके खड़े हैं। उसमें कृष्ण राम आदि सब ब्रह्मा विष्णु शंकर सभी देवताओं आ जाते हैं जो शिवलिंग कि बैठकर करके मान्यता करते हैं। तो उससे सिद्ध होता है कि सभी देवताओं के ऊपर भी वह निराकार परमात्मा है जिसी का मान्यता देवताएँ भी करते हैं। तो यह समझने की बातें हैं कि हमारा परम पूज्य परम पिता जिसको कहा जाता है वह सबका पिता देवताओं का भी पिता उसे निराकार परमात्मा को कहेंगे। तो वह जो शिवलिंग की प्रतिमा है असल में यह यादगार है उसी निराकार परमात्मा की। तो वह निराकार परमात्मा जिसको ज्योतिर्लिंगम कहा जाता है अथवा ज्योति रूप परंतु वो लिंग आकारी है या स्टार लाइक बिंदी है एकदम छोटी सी। तो यह सभी चीजें समझने की है कि उसी निराकार परमपिता परमात्मा जो हम आत्मा ही वैसे निराकार है आत्मा को भी तो इस आंखों से नहीं देखा जाता है ना। यह तो शरीर है जो शरीर आंखों से देखा जाता है लेकिन आत्मा को तो इस आंखों से नहीं देखा जाता है तो उसको भी निराकार कहेंगे। निराकार का मतलब यह नहीं है कि जिसका कोई

आकार नहीं है कई ऐसे समझते हैं जिसका कोई शेप ,कोई आकार कुछ है ही नहीं उनका परंतु नहीं निराकार का मतलब ही है कि हां यह मनुष्य जैसा उसका शेप और शक्ल नहीं है, बाकी उनका अपना आकार अथवा ज्योति रूप निराकार जिसको कहा जाता है वह है तो जरूर ना। ऐसे बिना आकार या बिना कोई हां रूप की कोई चीज है ही नहीं यह जो आवाज है ना हम जो बोलते हैं तो इसका भी रूप है, अगर इसका रूप नहीं होता ना तो लंदन में बोलते हैं हम गीत गाते हैं रेडियो के जरिए यहां जो सुनते हैं, नहीं तो सुन नहीं सके तो उनका भी रूप है जिसको अंग्रेजी में वेब्स कहते हैं तभी तो वह इंस्ट्रूमेंट के जरिए उसको कैच कर सकते हैं ना। वहां बोलते हैं वो आवाज को कैच करते हैं तो आवाज का भी तो रूप है न तो आवाज का इन आंखों से दिखाई नहीं देता अभी हम बोल रहे हैं ये क्या चीज आवाज है जो आपके कानों तक आ रहा है आप देखते हो इस आंखों से? t3ो इस आंखों से तो इस दुनिया की भी कई चीजें नहीं देखी जा सकती तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसका कोई रूप ही नहीं है। रूप है लेकिन इस नजर से वह बड़ा सूक्ष्म है इसलिए इस आंखों से नहीं देखी जा सकती, परंतु हां वह परमात्मा तो और ही सूक्ष्म चीज है ना इसीलिए इस आंखों से भले नहीं देखी जा सकती है, दिव्य दृष्टि से देख भी सकते हैं परंतु वह दिव्य दृष्टि से देखा है। उस चीज का ज्ञान होना चाहिए। तो यह चीजें समझने की है जिसको परमात्मा कहा जाता है निराकार और जिसकी यादगार हमारे भारत में मानी पूजी भी जाती है, परंतु कई इस बात को जानते नहीं है कि यह किस की मान्यता है। वह राम-राम का रामेश्वर का भी चित्र है तो राम भी

देखो उसको बैठ कर के उनका पूजन कर रहा है तो इसका मतलब है कि उससे भी ऊपर कोई है ना तो यह है वह अथॉरिटी सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा की जिसको ही परमात्मा कहा जाता है। तो अभी यह समझना है तो उनको भी यथार्थ विधि से समझ करके उसके साथ भी हमारा कौन सा रिलेशन है, जैसे हर एक देखो हम लौकिक रीति से लौकीक का मतलब है जो जन्म देने वाले माता-पिता हैं तो हाँ उनके बच्चे कहकर करके उनको पिता कहते हैं क्योंकि उसने उसको पैदा किया है तो यह भी समझने की बात है कि आत्मा का जो पिता है वह उसी परमपिता परमात्मा को कहेंगे, इसी हिसाब से हर एक के दो बाप है एक शरीर का पिता जिसको हर एक ने अपने अपने पिता से जन्म लिया है और दूसरा है आत्मा का पिता तभी उसी पिता से भी रिलेशन होना चाहिए जिससे ही हमारे सदा सुख की प्राप्ति का कनेक्शन है। तो अभी उसी बाप से कैसे रिलेशन, तो रिलेशन कहो, कनेक्शन कहो या योग कहो बात एक ही है परंतु वह योग, योग कोई दूसरी ऐसी चीज़ नहीं है उसको याद रखने का है। इसलिए हम योग अक्षर को निकाल कर के अगर याद अक्सर कहे तो और अच्छा सिंपल है, नहीं तो योग से कई समझते हैं वह योग शायद कोई आसन लगाना है या कोई ऐसा हटयोग व प्राणायाम या कोई ऐसी बात है, क्योंकि योग आश्रम और बहुत योग के नाम पर बहुत स्कूल और यह सभी चीजें खोली हुई है ना, इसलिए यह समझते हैं कि योग शायद कोई ऐसी बड़ी चीज है परंतु वास्तव में करके योग का मीनिंग है याद, और याद का मतलब ही है जैसे देखो कॉमन भी किसी का किसी प्रति लगन होती है, प्रेम होता है तो देखो तो वह

याद आती है ना चीज। तो यह हमको उसको याद रखने का है। चलते फिरते, खाते पीते वास्तव करके योग इतनी इजी चीज है। याद के लिए क्या बेठ करके कोइ आसन थोड़ी किसको याद रखना होता है तो आसन लगा के बैठना थोड़ी होता है या कोई याद के लिए कोई हठयोग या कोई प्राणायाम, नही, याद जिसकी होती है जिसकी तरफ लगन होती है, काम भी करो लेकिन उसकी लगन उधर चली जाएंगी। तो यह है उसको याद रखने की बात परंतु वह याद आवे कैसी ऐसी लगन बैठे कैसे उसके लिए इन बातों को समझना है कि उनको और मेरा क्या कनेक्शन है। तो वह कनेक्शन को जब समझेंगे उसकी उसके रिलेशन को समझेंगे और उससे वह बैठेगा कि वह हमारे क्या को क्या देने वाला है, उससे हमें क्या प्राप्त करना है तो फिर हां उनकी तरफ हमारी लगन बढ़ेंगे और उसी आधार पर उस चीज की याद रहेंगी। तो यह सभी चीजों को समझना है और उसी याद रखने का भी क्या कारण है कि क्यों हम उसको याद रखें उसका भी फरमान है गीता में भी कहा है ना मनमना भव, निरंतर मुझे याद करो उसने भी कहा है स्वयं परमात्मा ने कि मुझे याद करो। क्यों कहा है कि मुझे याद करो? क्योंकि मुझको याद करने से तुमको वह शक्ति मिलेंगी, वह बल मिलेगा जो तुम्हारे ऊपर पापों का बोझ है वह तुम्हारे पाप दग्ध होंगे। यह जितने गीता के भी वर्सेस है कि मुझे याद करने से तुम्हारे पाप दग्ध होंगे अर्थात नाश होंगे। तो पापों को नाश करने के लिए उसको याद रखने का है। तो इसीलिए बाप कहते हैं कि यह एक तो मुझे जानो, समझो मेरा परिचय, मैं क्या हूं और फिर मुझे याद रखो तो इससे तुम्हारे पाप भी नाश होंगे और तुम

अपने कर्मों में श्रेष्ठ भी रहेंगे। दूसरा फिर पवित्र भी रहो अर्थात बी होली एंड बी योगी अर्थात अपने को पवित्र भी रखो, पवित्र का मतलब ही है पांच विकारों से कोई कर्म मत करो तो उनको कहेंगे बी होली एंड बी योगी तो मुझे याद करो तो उस से क्या होगा कि याद करने से कि जो पहले किए हुए विक्रम है अर्थात पाप का बोझा है वह भी तुम्हारा नाश होगा क्योंकि हमारे जीवन में दो कर्मों का चलता है एक जो किया है वह पातें हैं दूसरा फिर बनाते भी जाते हैं जो पाना है, इसीलिए एक कर्म किया हुआ नतीजे में आ रहा है दूसरा नतीजा बना रहे हैं तो हमको दोनों तरफ को संभालना है। जो किया है वह भी अच्छा नहीं किया है क्योंकि हम पाप कर्म करते ही आए हैं तो वह भी तो हमारे सिर पर बोझा है ना। अभी दूसरा फिर हमको कर्म अपने स्वच्छ बनाने हैं जिससे हमारे कोई कर्म ऐसे ना बने जो हमारा कोई कर्म का खाता उल्टा जमा हो जाए इसलिए उसमें भी हमको खबरदार रहने का है। तो एक है प्लस दूसरी है - माइनस समझा ना वह जो मैथमेटिक्स का हिसाब होता है तो न तो एक है कर्म खाता जो हमको माइनस करना है, काटना है अर्थात हमने जो जोड़ा है वह उल्टा जोड़ा है अभी दूसरा जो जोड़ते जा रहे हैं उसमें संभलना है कि हमारा कोई बुरा खाता ना जुटे। तो एक प्लस को संभालना है एक माइनस करना है। तो अभी माइनस वह कैसे होवे, वह होंगा बी योगी, याद करने से हमारा पिछला जो माइनस का खाता है वो माइनस होंगा और बी होली यानी पवित्र रहने से फिर हमारा खाता जो है वह बुरा ना बनेगा क्योंकि विकारों के संग से हम कोई बुरा काम नहीं करेंगे इसी से हमारा नतीजा यह होगा कि हमारे कर्म श्रेष्ठ रहेंगे। तो इसलिए

परमात्मा का फरमान है कि अपने को, अपने कर्मों को अच्छी तरह से समझ कर करके यह कर्म की फिलॉसफी कहो या कर्म की थ्योरी कि तुम्हारे कर्म का खाता कैसा चलता है उसको कैसे बनाओ, उसको ठीक रीति से बनाने के ज्ञान को समझो। तो अभी यह बैठ कर करके शिक्षा देते हैं कि तुम्हारे बनते तो रहते ही है। एक भोगते रहते हो और दूसरा बनाते रहते हो तो क्यों नहीं तुम अपना कर्म को स्वच्छ बनाओ जिसके आधार से तुम सदा सुख को प्राप्त करो। तो वह कैसे करो और किस तरीके से करो उसका बैठकर करके ये डिटेल समझाते हैं जिसको फिर लेकर करके अपने को स्वच्छ रखने का है। तो यह सभी ये चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से समझने का है। क्योंकि यहां कोई यह कामन सत्संग या कामन कोई चीज नहीं है बस आया दो भजन सुना या कोई दर्शन करना है या कोई देखने की चीज है या कोई दर्शन वर्शन की बात नहीं है, यहां तो है कॉलेज है अथवा स्कूल है जैसे स्कूल कॉलेज में जाते हैं बच्चे तो पढ़ने जाएंगे ना तब तो उस डिग्री को लेंगे बाकी ऐसे नहीं है कि टीचर को देखने जाएंगे, दर्शन करने जाएंगे या देखेंगे। देखने से, कोई डॉक्टर को देखने से कोई डॉक्टर थोड़ी हो जाएगा नहीं पढ़ना होता है नॉलेज को समझ कर करके उस डिग्री को तभी प्राप्त करेंगे। तो यह भी पढ़ाई है यह भी समझने की बात है बाकि खाली देखने से कुछ हां देखने के लिए तो भगवान के सामने हो जाए न तो भगवान में देखो अर्जुन के सामने भगवान था ना गीता में, गीता का यह जो बनाया हुआ है उसके देखो अर्जुन के सामने भगवान था, लेकिन सामने होते भी उसको ज्ञान देना पड़ा न। भगवान को भी डायरेक्ट ज्ञान देना पड़ा समझाना पड़ा तब

तो देखो सर्व शास्त्र शिरोमणि गीता, वो शास्त्र गीता जो बनी है वह वर्संसअ की बनी है न। तो भगवान को भी वर्संस बोलना पड़ा ना, समझाना पड़ा। बाकि ऐसे नहीं कि अपने दर्शन से कहा तेरा बेड़ा पार है नहीं। वह तो सामने खड़ा था, खड़ा होते भी उसको ज्ञान देना पड़ा ना तो ज्ञान बिना गति नहीं है। ऐसा नहीं कहा जाता है दर्शन बिना गति नहीं है तो ज्ञान चाहिए, ज्ञान का मतलब ही है समझ तो यह बातें समझने की है और समझ कर कर के अपने प्रैक्टिकल लाइफ में लाने की बात है। तो वह प्रैक्टिकल में कैसे लाएं और प्रैक्टिकल उसकी प्रैक्टिस कैसे करें यह सभी सिखाया जाता है यहां यहां परिवार के परिवार हैं। ऐसे नहीं कि बड़े कुटुंब के कुटुंब है, फैमिली के फैमिलीज हैं जो अपना स्त्री, पति, बाल बच्चे सब अपनी जीवन को घर गृहस्ती में रह करके और कैसे अपनी गृहस्थी को आश्रम अथवा गृहस्थ को धर्म, कहा भी जाता है ना गृहस्थ धर्म, गृहस्थ आश्रम लेकिन अभी आश्रम कहां है हां अभी धर्म कहां है अभी तो अगर गृहस्थ को कहा जाए अधरम तो कह सकते हैं क्योंकि विकारों का है ना। तो यह चीजें समझने की है कि हमारी जो प्राचीन गृहस्थ आश्रम की प्रवृत्ति थी वह कैसे बने उसी चीज को बनाया जाता है। तो उसके लिए यह सभी बातें समझने की है और समझ कर कर के प्रैक्टिकल उसी चीज को कैसे लाना है लाइफ में वह लाइव बनाने की बात है। बाकी यहां कोई कामन तरह से आया, दो भजन सुनाया या कुछ देखा उससे कोई लाभ की बातें इस तरीके से नहीं है। यह स्कूल इसीलिए इसको नाम ही है ईश्वरीय विश्व विद्यालय, देखो बाहर बोर्ड पर भी है ना तो यह विद्यालय है परंतु किसका? ईश्वर का, क्योंकि यहां पर

पढ़ाने वाला स्वयं परमपिता परमात्मा स्वयं पढ़ा रहा है हम सभी स्टूडेंट्स है। हम को पढ़ाने वाला वह निराकार है जो बैठकर करके पढ़ाता है और नॉलेज देता है कि कैसे हम अपने कर्म को, क्योंकि कर्म की गति को शिवाय परमात्मा की और कोई समझाए नहीं सकता है। मनुष्य तो सभी कर्म के चक्कर में है ना, वह तो सभी कर्म के भोग में है इसीलिए जो कर्म अकर्म विकर्म से अलग है ना वही तो समझा सकेगा लेकिन कर्म की गति क्या है बाकी तो सभी मनुष्य कर्म की गति के चक्कर में हैं इसीलिए जो चक्कर में है वह नहीं समझा सकेंगे। जो फक्र से बाहर हैं वही तो समझा सकेंगे ना इसीलिए वह बाप जो कर्म की गति से बाहर है वो कभी ना कभी न दुर्गति में आता है ना उनको सद्गति चाहिए। वह तो सद्गति और दुर्गति से अलग है बाकी हम मनुष्य दुर्गति में भी आए हैं देखो पाप की दुनिया तो देखो हम पाप में आ गए हैं ना। अभी हम को ही फिर पुण्य आत्मा बनकर करके और सद्गति को प्राप्त करना है तो सद्गति क्या है वह भी तो समझना है ना। तो यह सभी चीजों को समझना है कि सद्गति भी जीवन में है, ऐसे नहीं कि जीवन से बाहर है जैसे कई समझते हैं ज्योति ज्योत समाना है या कहां हमको जाकर करके बैठ जाना है नहीं, दुनिया यही है इधर ही आना है परंतु वह दुनिया सद्गति की थी, अभी यह दुनिया है दुर्गति की। इसीलिए गीतों में भी देखो आता है ना अभी ले चल अर्थात हमको उसी दुनिया में अथवा उस दुनिया को अभी ले आ, जिस दुनिया में हम सदा सुखी थे तो दुनिया थी सुख की भी दुनिया है। ऐसे नहीं है कि सुख कोई ज्योति ज्योत समाना में है, नहीं सुख की भी दुनिया थी जैसे दुख की दुनिया

है तो हमारे जीवन में हमको सुख था। और सुख ऐसा था जिसमें कभी कोई दुख नहीं था जिसको यह कहते हैं कि यहाँ एवर हेल्दी, एवर वेलदी, फॉरएवर हैप्पी। क्योंकि कई बिचारी यह भी नहीं समझते हैं कि सुख हमको हो भी कैसे सकता है, सुख और दुख का भी अर्थ समझना चाहिए न की हमको दुख क्यों है जीवन में। आज हमारे जीवन में अगर रोग नहीं होता, हमारे संसार में अकाल मृत्यु नहीं होती, निर्धनता नहीं होती, यह लड़ाई झगड़े नहीं होते, फिर तो संसार अच्छा है ना। यह लड़ाई झगड़े की बातें ना होती, यह सब हंगामे न होते और ना हमारे पास अकामें मृत्यु आता, हम अपने टाइम पर शरीर छोड़ते और शरीर लेते और कभी कोई रोग आदि होता ही नहीं, न ये डॉक्टर्स, न ये हॉस्पिटल यह सब चीजें होती ही नहीं और यह सभी निर्धनता आदि की बातें भी नहीं होती, सब अपने खाने पीने में अच्छे सुखी होते, सबको अपने सुख के साधन कंप्लीट पूरे होते, राजा प्रजा सब सुखी होते फिर तो संसार अच्छा है ना। फिर तो नहीं कहते ना संसार में दुख है। तो दुख के कारण तो यही है ना तो मनुष्य को समझना चाहिए कि हम काले संसार में दुख का कारण कौन सा है। दुख का कारण है यह लोभ, अकाले मृत्यु, निर्धनता, लड़ाई झगड़ा, यह सभी जितने भी दुख के कारण। अभी यह कैसे निकले, तो हमको है हमारे संसार से उन चीजों को निकालने का प्रयत्न सोचना। बाकी ऐसे नहीं है कि संसार से ही हम चले जाएं, इसका मतलब यह नहीं है कि संसार में सदा ही यह चीजें हैं। यह रोग आदि अकाल मृत्यु यह सब पीछे आया है, नहीं तो हम कभी अकाले नहीं मरते थे, कभी हमारे पास रोग आदि नहीं होता था, कभी यह निर्धनता, धन नहीं,

खाने पीने के लिए मनुष्य मोहताज यह सभी बातें थी नहीं। हमारी प्रकृति पूरी दासी थी, हम हमको सब सुख थे। कभी यह अर्थक्वेक्स नहीं होती थी, कभी यह फ्लड्स नहीं होता था, यह सभी बातें होती ही नहीं थी, लेकिन आज सब कुछ होता है। मनुष्य को हर चीज से भी दुख हो रहा है क्यों दुख हो रहा है क्योंकि मनुष्य कर्म भ्रष्ट है ना तो हम को समझना चाहिए तो हमारे दुख के कारण कौन से हैं। तो यह भी चीजें समझ नहीं है ना बाकी ऐसे नहीं कि खाली दुख सुख, हम को समझना चाहिए कि दुख होता ही क्यों है और किस कारणों से दुख है तो दुख है इस कारण से। अगर यह चीजें हमारी दुनिया में नहीं होती हम अपने मरने जीने में भी समर्थ होते जैसे सांप होता है ना एक खाल उतारता है दूसरी खा लेता है, वैसे टाइम पर हम कपड़े पुराने उतारते हैं नए-नए पहनते हैं तो हमारे शरीर उतारने पहनने का हमारे में बल था, बाल युवा वृद्ध जब स्टेज पूरी होती थी तो हम टाइम पर अपने शरीर को अपने आप छोड़ते थे और नया शरीर लेते थे, लेकिन आज नहीं है, अभी बैठे हैं अभी-अभी मर गए, कोई ऐसा एक्सीडेंट हो जाते हैं कई कैसा भी अकाल मृत्यु होता है ना, तो बाप कहते हैं यह जीवन तुम्हारा जीवन है तुम्हारे पास लेकिन जीवन के सुख के साधन तुम्हारे पास नहीं है क्योंकि तुमने अपने कर्मों से वो साधन को भ्रष्ट बना दिया है। इसीलिए बाप कहते हैं अभी अपने कर्मों को श्रेष्ठ करो तो फिर तुम्हारे जीवन में सदा सुख रहेगा। तो वह कैसे रहे उसका बैठकर करके तरीका समझाते हैं। तो अभी इसी बातों को तो प्रैक्टिकल समझना है और प्रैक्टिकल उसकी प्रैक्टिस में आकर करके अभी उसका क्या उपाय करना है वह सभी बातें समझ

कर के अपने जीवन में लानी है। तो यह तो अभी थोड़े टाइम ही है क्योंकि कभी-कभी नए आते हैं ना तो थोड़ा डीटेल्स ऐसी ऐसी बातें समझानी पड़ती हैं क्योंकि उन्हों को पता होना चाहिए की लाइफ की ऍम क्या है, परंतु उसके लिए फिर भी कहेंगे कि कुछ टाइम दे करके आकर के सुनेंगे तो अची तरह से समझ पा सकेंगे। अच्छा दो मिनट साइलेंस... अभी टाइम हो गया है।

03. कर्म - अकर्म और विकर्म का ज्ञान

रिकॉर्ड:-

भोलेनाथ से निराला गौरी नाथ से निराला...........

ओम शांति।

अपने परम पूज्य बाप के द्वारा, अभी कर्म की गति, अर्थात कर्म, अकर्म और विक्रम, इसकी यथार्थ नॉलेज मिल रही है यह भी एक समझने की बात है, कि कर्म की नॉलेज सिवाय परमात्मा के और कोई समझा भी नहीं सकता है। क्योंकि मनुष्य जो है, सभी मनुष्य आत्माएं कर्म के चक्कर में है। क्योंकि वो कर्मों की स्टेज्स में आने वाली हैं। हर आत्मा को अपने कर्म की स्टेज्स में आना ही है। गोल्डन सिल्वर कॉपर एंड आयरन। सतो रजो तमो यह हर एक को पास करना है सब आत्माओं को कोई भी हो। देवताएं भी देखो अभी तमो में है ना सब, सबकी आत्माएं अपने स्टेज्स में पास होने की है इसलिए सभी आत्माएं जो कर्म के गति में सद्गति फिर दुर्गति इस सभी चक्कर में, इसलिए जो खुद गति में सद्गति से दुर्गति में चल रहे हैं सिर्फ दुर्गति से सद्गति में चलते हैं फिर जो उसी चक्कर में चलते हैं वह उस नॉलेज को दे नहीं सकते। हां इनकी यथार्थ नॉलेज की सद्गति और दुर्गति ये मनुष्य के कर्म का जो स्टेज्स हैं वह कैसे

चलता है यह सब शिवाय उसी परमपिता परमात्मा के जो कर्म के इसी सभी कर्म अकर्म विकर्म के खाते से अलग है, वह समझाए सकता है कि कर्म का क्या स्टेज्स है। इसीलिए इसकी नॉलेज इसका यथार्थ ज्ञान शिवाय परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता है पहली पहली बात तो जो रोज के सुनने वाले हो उनकी बुद्धि में यह बहुत अच्छी तरह से हो जानी चाहिए, कि यह नॉलेज इन बातों की सिवाय परमात्मा के और कोई दे भी नहीं सकता है। तो यह तो समझने की बात है, इसलिए देखो गीतो मैं भी तो आते हैं ना, उनको ही याद करते हैं गीतों में भी, क्या? कि तुमने जो तो जोग जगाया, देखो गीत में भी कहा ना, वह दूसरा ना कोई अर्थात और कोई जगा नहीं सकता है। तो यह सभी चीजें हमारे पास इसकी नॉलेज और उसके साथ जो योग है अथवा उसकी याद, यह सभी जो बातें हैं वह सिवाय उसके ही और कोई करा नहीं सकता है। यह मनुष्य की बात है ही नहीं। मनुष्य को तो करना है ना तो जिनको करना है वही सिखाएं यह कैसे हो सकता है नहीं। अभी हमको डॉक्टर बनना है तो हमको डॉक्टर जो कि मैं नहीं हूं, तब तो बनेगा ना जो कि बना हुआ है वह हमको बनाएगा। बाकी ऐसे थोड़ी डॉक्टर ही डॉक्टर बनेगा, फिर तो बनने का क्वेश्चन नहीं है ना। तो हमको कर्म की गति अथवा नॉलेज सिखाएगा वह, जो आप सिखाने वाला है ना, हम तो सीखने वाले हो गए ना, सब मनुष्य। तो वह मनुष्य जो सीखने वाले हैं, जो कर्म की गति की स्टेज को पहुंचने वाले हैं वह कैसे सिखाएं सकेंगे। वह जानते भी नहीं है और पहुंचे हुए ही नहीं है जो पहुंचे हुए देवताएं भी हों न वह भी नहीं सिखा सकते हैं। हमको देवताएं भी यह ज्ञान नहीं सिखा सकते।

तो जब फिर देवता है तब तो फिर ज्ञान को देने की या लेने की जरूरत नहीं है, उसी टाइम तो दुनिया ही स्वर्ग है तो जब मनुष्य देवताएँ है, पूर्ण जिसकी कंप्लीट स्टेज है तब भी उन्हों को हां, ज्ञान देने की एक तो बात ही नहीं है और उनको भी देने का है ही नहीं। उनके पास भी ये की तुम्हारे कर्म कैसे, क्योंकि उसी समय उन्हीं बातों जानकारी रहने की जरूरत भी नहीं है और ना रहती है, ना उन को देना पड़ता है। वो भी देवताओं के पास भी, जिन्होंने ज्ञान सुनकर करके जो देवता बने, अभी यह हम ज्ञान सुनते हैं ना, सुनकर के इससे क्या बनेंगे? देवता। तो जो हम देवता बनते हैं, उन्हों के पास फिर भी यह ज्ञान जो है ना अभी, जिससे हम बन रहे हैं, वह ज्ञान की जरूरत नहीं रहती है तो उन्हों को भी ज्ञान देने की जरूरत नहीं रहती है यानी उन्हों के पास भी यह ज्ञान नहीं रहता है। तो फिर बाकी जो मनुष्य पीछे हैं, उन्हों के पास ज्ञान कहां से आया। जिन्होंने ज्ञान से सिद्धि जो पाई, उन्हों के पास ही ज्ञान नहीं रहा तो बाकियों के पास ज्ञान कहां से आया। तो ज्ञान जो चीज है, जो समझ है जिस चीज की हमको जरूरत है, वह सिवाए परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता तो पहले तो बुद्धि में यह चीज आई है कि ये जो कई समझते हैं, फलाना भी यही समझाते हैं फलाना भी यही समझाता है, वह भी यही ज्ञान देता है, फलानो ने भी ऐसा ही ज्ञान दिया था, विवेकानंद ने भी यह समझाया, उसने भी यह समझाया, यह बात जो है वह किसी ने नहीं समझाई, पहले तो यह बात बुद्धि में आनी है कि यह बात जो है जो यथार्थ हमारे कर्म की अथवा हमारे गति, सद्गति, दुर्गति यह नॉलेज जो है यथार्थ, वो सिवाए परमात्मा के और कोई दे नहीं

सकता इसी की ही महिमा आप औरों ने की है, जैसे गुरु नानक देव ने भी उस परमात्मा की महिमा की, की उसके ज्ञान, उसके कर्तव्य निराले। तुम्हरी गत मत तुम ही जानो, तो देखो गाया न, कि तुम्हारी गति करने की जो मत है नॉलेज ज्ञान, मत का मतलब क्या, ज्ञान तो उसका ज्ञान भी तुम ही जानो ऐसा नहीं कहा कि तुम्हारी गति सद्गति करने कीमत जो है मैं जानू ना कहा तुम ही जानो तो तुम्हारी गत तुम्हारी मत, यानी गति सद्गति करने की भी जो ज्ञान है, मत है वह तुम ही जानो। तो तुम ही जानो तो बताएगा भी वही ना। तो यह तो चीज बुद्धि में हो जानी चाहिए कि यह नॉलेज, इस चीजों का शिवाय परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता। अभी वह क्या समझाता है उसी बातों को समझना है कि ऐसे नहीं है जैसे कई समझते हैं कि भाई आत्मा निर्लेप है। कई समझते हैं कि नहीं, आत्मा को कोई लेप छेप नहीं लगता। नहीं, आत्मा न्यारी का मतलब यह नहीं है की आत्मा लेप छेप से न्यारी है नहीं, शरीर से अलग है, चीज अलग है परंतु उसका मतलब यह तो नहीं है ना अपने लेप छेप से वह न्यारी है या शरीर भोगता है। भोगता शरीर नहीं है, शरीर के सहयोग से, संबंध से भोगती आत्मा है। महसूस करना.. अगर आत्मा ना होती, शरीर खाली पड़ा है, डेड बॉडी पड़ी है, तो कुछ भी करो तो फील होंगा? तो भोगने वाली चीज चली गई ना, तो ऐसे नहीं कहेंगे कि कोई आत्मा नहीं भोगती। आत्मा है इसमें तभी हम को दुख महसूस होता है, अगर शरीर में आत्मा ना होती फिर उसको कुछ भी करोफिर इसको कुछ नही करो, फिर इसको फील होगा? नहीं, नहीं होगा ना। तो उसका मतलब है भोगने वाली जो है, महसूस करने

वाली जो है, वह आत्मा है। और बनाती भी अपने कर्मों का हिसाब जो है ना, वह आत्मा बनाती है, इसीलिए आत्माये अपने कर्मों का हिसाब लेकर करके, दूसरे शरीर में भी जाती है। देखो कोई दुख भोगना है किसी को, छोटेपन में ही बच्चा जन्मता है, कोई लूला बेचारा कोई लंगड़ा, कोई समझो कोई दुख है शरीर का या ऐसे कोई कनेक्शंस में आता है जिसको छोटेपन से ही दुख देखना है भला यह कहां से हुआ? जरूर है कोई कर्म का हिसाब, उनका आया है जन्म से ही जो उसको मिला तो कहां से मिला? आत्मा अपने कर्म का हिसाब ले आई ना, जिसके आधार से उसका जन्म वहां बना, उसका शरीर ऐसा बना या उनके जो भी सरकमस्टेंसस है वह ऐसे बने। आत्मा को ही कहेंगे ना वह हिसाब किताब आत्मा के साथ रहा, तो आत्मा ही अपने कर्म के हिसाब को भोगने के लिए वहां गई या जहां भोगना पड़ा वहां आई। तो आत्मा को ही कहेंगे ना लेप छेप लगा इसलिए यह तो चीज बुद्धि में रखनी है कि हम जो कुछ करते हैं वह हम आत्मा ही भोंगते हैं, लेकिन भोगने की फीलिंग सिवाए शरीर के न होने कारण शरीर में जभी आते हैं तभी फील होता है, भोगना पड़ता है। तो शरीर के संबंध से आत्मा भोगती है बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्मा नहीं भोगती है शरीर भोगता है, भोगती आत्मा है। अगर शरीर भोगता है तो फिर जभी डेड बॉडी पड़ी है, उसको भोगाओ हाँ, कुछ दुःख करो या कोई तकलीफ उसको मिलें वो उसको कुछ फील थोड़ी होगा, तो यह सभी चीज समझने की है कि भोगने वाली आत्मा है जो शरीर के साथ में, फिर जहां शरीर में आती है तो वहाँ वह फील अथवा दुख जो भी है होता है एक बात यह भी बुद्धि में रखने की है की आत्मा निर्लेप नहीं

है, इसीलिए हम को कर्म के ऊपर पूरा अटेंशन देना पड़ता है। दूसरे जो समझते हैं कि भाई आत्मा निर्लेप है खाओ पियो मौज करो जो कुछ करना है कुछ नहीं, क्योंकि तुम्हारा मन जाता है ना, वह समझते हैं मन जाता है विषयों के ऊपर तो फिर खाली मन को बैठकर के ऐसे ही करें, इसीलिए कर क्यों नहीं लेवें। मन तो जाता है ना परंतु नहीं हम करते हैं वो तो विकर्म बनेगा न। हमारे हाथ है या जो भी हमारा कर्म हो चुका वह हमारे विक्रम के खाते में आ चुका, इसीलिए हम को उसके ऊपर कंट्रोल रखना है ना। जब तक हम विक्रमों को बंद ना करें तो हमारा पाप जो जमा होता जाता है वह जमा होने से छूटेगा नहीं। तो हमको अपने पाप के जमा किए हुए खाते को बंद करना है तो जब तलक हम विक्रम खाते को बंद ना करें ना, तब तक हमारा जमा हुआ आप आप जो जमा करते जा रहे हैं वह बंद नहीं होगा। एक तो पहले की किए हुए पापों का भी सर पर बोझ है। इसी के कारण हमारे पास यह दुख और अशांति, जो भी जीवन में रोग आता है, यह कहां का कर्म है? जो किये हैं वो भोंगते हैं एक तो पहले का ही बोझ है, अभी जो हम करते हैं उसका भी हमारा पाप ना बन जाए इसीलिए हम को विकारों के सहयोग से अथवा उसके संबंध में कोई ऐसा कर्म नहीं करना है। ऐसे नहीं है कि हमारा मन जाता है इसीलिए करते रहे, मन जब भी आपे ही ठीक हो जाएगा,.... मन कब तलक ठीक होगा ही नहीं जब तलक हम करम करते रहेंगे, हमारा विकर्म खाता बनता रहता है और हम विकारों को अपने काम में लगाते रहते हैं तो हमारा मन तब तलक सीधा होगा भी नहीं। क्योंकि मन को छूट तो मिल गई ना कर्म करने की। वह

चलता रहता है फिर मन हटेंगा कहां से, तो यह जो कइ समझते हैं कि नहीं सुनते सुनते हां, कभी ना कभी मन जो है वह ठीक हो जाएगा, ऐसे तो सुनते सुनते कितने काल से सुनते आए, आज थोड़ी सुनते हैं। यह सत्संग है, यह कथाएं है, यह बातें हैं, यह वेद है, यह शास्त्र हैं, यह ग्रंथ है ये कोई आज के थोड़ी ही है, यह तो कई युगों से सुनते आये हां, 2 युग से द्वापर एक से हम सुनते हैं लेकिन सुनते सुनते हमारा वह विक्रम खाता सिवाय मिटने के और ही बढ़ते चले आए हैं ना कि कॉपर से आयरन एज हो गई है हम और ही नीचे गिरते चले आए हैं लेकिन हमारे वह पाप कर्म का जो कुछ है वह छूटा तो नहीं है ना। तो यह सभी चीजें समझने की है, किसी तरीके से हमारा भाई ये आस्ते आस्ते से सुनते सुनते हो ही जाएगा, सुनते सुनते से नहीं होगा, यह जब तलक जिससे हमारा पाप बनता है उसको जब तलक हमने ब्रेक नहीं दिया है तब तलक हमारी जो कुछ है वह पाप मिटेंगे नहीं ना, इसीलिए तो बाप कहते हैं एक तो तुम पर पहले से ही बोझा है, चढ़ाते आए हो तो वह भी तुम्हारा पाप कटे इसीलिए तो कहता हूं मुझे याद करो तो याद से तुमको पावर मिलेगा उस पापा को नाश करने के लिए। दूसरे तुम पाप ना बनाओ जमा ना करो उसके लिए फिर कहते हैं कि पवित्र रहो ये तुम्हारे विकारी संग का कोई ऐसा विकारों के संग में कर्म ना होवे जिससे तुम्हारा विक्रम बने। विक्रम का मतलब यह है की विकार के संबंध में हम जो भी कार्य करते हैं काम वश क्रोध वश लोभ वश मोह वश और पहला तो यह देह अभिमान है जिसको हम विकार कहेंगे, इसके बस में जो भी हम कर्म करते हैं वह हमारा विक्रम बनता है, इसीलिए बाप कहते हैं

अभी विकारों के संग का कोई कर्म मत करो जो तुम्हारा विक्रम खाता बने तो एक तो खाते को भी बंद करना है दूसरा जो खाता बंद चूका हुआ है उसको भी मिटाना है इसीलिए तो कहते हैं ना मुझे याद करो तो वह तेरा मिटेगा और पवित्र रहो तो तेरा बनेगा नहीं। दोनों बाजू की बैठकर करके हमको सावधानी देते हैं, तो वह हमको रखने की है इसीलिए हमको अपने कर्मों को पवित्र रखने का जरूर धारणा रखने की है। बाकी ऐसे नहीं है कि मन, मन तब तलक सीधा होगा ही नहीं, मन में तो पहले से ही वह पाप का बोझा चढ़ा हुआ है ना। हमारी मन बुद्धि अभी मैली हुई पड़ी है। अभी वह मेल जब तलक एक तो मेल पहले से ही चढ़ी हुई है और दूसरी मैल को भी अभी हम कर्म करते रहेंगे उसको हम ब्रेक नहीं देंगे तो और मैल चढ़ती जाएगी फिर वह समझेगा भी नहीं कभी, उनमें समझ बैठेंगी ही नहीं, वह जो हमारी सत्यता की पावर है वह उनके ऊपर काम करेंगी नहीं तब तलक जब तलक हमारी वह जो कुछ मैल चढ़ी हुई है वह साफ ना होती जाए तो उसके साथ-साथ साफ होती जाए और जो हम सुनते भी जाते हैं उससे तो हम को साफ बनाते जाए। सुनते हैं साफ करने के लिए न तो वह हमको करना है ना, वह हमको कर्म से करना है। तो हमारा है सारा मदार कर्म के ऊपर। हमारे जीवन का एक क्षण क्षण जो चलता है न वह हमारा कर्म से बनता बिगड़ता सब उससे चलता है ना। हम जो करते हैं यह बोलते हैं इससे हमारा क्या बनता है हम अच्छा बोलेंगे अच्छा बनेगा। अभी हम कोई बुरा काम करते हैं हम समझते हैं कि नहीं यह खान पानी या ये जो कुछ भी, अगर हम समझेंगे की नहीं इसमें कुछ है नहीं, ऐसे ही मन जाता है तो खा लेवे

हाँ, तो ऐसे तो खा लें, नहीं हम समझते हैं कि खाने से हमारी वो मन की मैल एक तो पहले से ही चढ़ी हुई है बाकी भी इसी खानपान से हमारे को वह नहीं आएगा ये भी परहेजें तो सब है ना, जैसे डॉक्टर होता है दवाई भी देंगे परहेज भी देंगे वो ऐसे थोड़ी है कि परहेज उस टाइम न रखेंगे तो कभी रखेंगे हाँ? दवाई जैसी बीमारी भी वैसी, जभी रोग है उसके लिए ही तो है ना, उसी टाइम तो हमको परहेज रखनी है ना बाकी ऐसे थोड़ी कहेंगे की आपे ही हो जाएंगे, तो परहेज नहीं तो क्यों है दवाई भी करेंगे परहेज भी रखेंगे भाई खट्टा ना खाओ मीठा ना खाओ फलाना ना खाओ परहेज रखें, तो बही ये भी तो परहेज है ना उन को शुद्ध करने के लिए हमको यह सभी परहेज रखनी पड़ेगी, उसके लिए हमको विकारों का साथ नहीं लेना पड़ेगा। बाकी ऐसे नहीं है कि वह हम लेते रहे आपे ही आप होगा आपे ही कैसे होगा? हम कोई परहेज ना रखें अपने आप ही होगा ऐसे ठीक हो जाएगा नहीं। डॉक्टर जिस समय रोग है, जिस समय दवाई देता है उसी समय परहेज भी देता है ना यह परहेज रखनी है तब तो हम उसी रोग से मिट कर करके अपना जो निरोगता है उसको पा सकेंगे। तो यह भी चीज है कि हमारे ऊपर जो मैंल चढ़ी है उनको साफ करने के लिए हमको इन बातों को ब्रेक देनी पड़ेगी बाकी हां इतना है की कर्म में नहीं आने का है । मनसा कहां उल्टे तरफ चलती है तो उनका कोई दोष नहीं बनता है, कर्म हम कर लेंगे ना उल्टा, तो उसका दोष बन गया, लेकिन मन में जो उल्टे विचार चले तो पाप बन नहीं गया परंतु हाँ फालतू मन जो है ना वह वेस्ट जाता है न फिर उसी वेस्ट को फिर सेट करने के लिए उसकी याद में लगाना है कि उसके याद से

हम को बल मिलेगा तो वह भी काम हो जाएगा न। इसीलिए बाप कहा है कि मन को भी वेस्ट ना करो उसको भी मेरी याद में लगाओ तो उस याद से भी तुमको ताकत मिलेगी बाकी तुम्हारा विक्रम तो नहीं बनेगा ना लेकिन तुम कर्म करते चलेंगे कामवश क्रोध वश लोभ वश वो तो तुम्हारा खाता तो बनता चलेगा ना। तो खाता जो जमा होता जाएगा वो तुमको आगे बढ़ने नहीं देंगा इसीलिए हम को यह कर्म की जो फिलोसोफी है अथवा कर्म की जो नॉलेज है कि कल कर्म अकर्म विकर्म यह कैसा बनता है कर्म तो है ही। मनुष्य जो कुछ करते हैं जनरल वह कर्म तो चलने का ही है लेकिन अभी कर्म को चाहे भी विकर्म बनाएँ चाहे कर्म का खाता हम श्रेष्ठ बनाएं अभी। अभी हमको सतकर्म करना है उससे हमारा श्रेष्ठ बनेगा जिस सत्कर्म से अथवा श्रेष्ठ कर्म से फिर हमारे कर्म अकर्म रहेंगे। अकर्म का मतलब है कोई भी हमारे विकारी खाते का कर्म ही नहीं है इसीलिए हम कोई भी दुख को नहीं पाते हैं। तो वह सतयुग की बात जभी हम देवी देवताएँ हैं तो उनका क्या कहेंगे कर्म अकर्म है अभी जो हम करते हैं वह हम सत्कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म करते हैं और पहले जो करते थे वह हमारे विक्रम है। तो हम पहले कर्म को विक्रम मिलाते थे अभी हम कर्म को सत्कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म मे लाते हैं जिसके आधार से फीर हमारे कर्म जो है ना वह अकरम रहेंगे फिर हमको सत्कर्म करने की भी दरकार नहीं रहेंगे क्योंकि अब हमारा कर्म सुकर्म है यानी कोई कर्म का खाता नहीं है हम जो बनाया है अभी वह भोंगते हैं सदा सुख का इसीलिए फिर हमारा कर्म जो है ना वह अकरम रहता है यानी कोई खाता नहीं। तो यह सभी चीजें समझने की है तो अभी

हमको अपना सत्कर्म यानी स्वच्छ कर्म करने का है तो स्वच्छ कैसे करेंगे। वही हमको जो कर्म करते हैं वह स्वच्छता के साथ करना है यानी विकारों के संबंध में नहीं करना है तभी तो हमारे कर्म स्वच्छ होंगे ना तो उस कर्म की जो ताकत है वह हमारी मेल को धोती जाएगी, साफ करती जाएंगे अगर हम कर्मों को ताकत में ना लाएंगे तो हमारे की मैल कैसे उतरेगी। वह उतरेंगी नहीं तो हम आगे बढ़ेंगे नहीं। तो यह सभी चीजें समझने की है कि हमारे पर जो कीचड़ चढ़ी है अथवा जिसको माया कहा जाता है उसकी जो किचड चढ़ी है उनको साफ करना है ना। तो वह मैल उतारने के लिए हमको जरूर है जिससे मेल चढ़ी है वही काम हम फिर करते रहेगे तो मैंल उतरेगी कैसे? उनको उतारने के लिए जरूर है कि उन कर्मों से संभलना है और जो चढ चुकी है उसको भी उतारना है। उसके लिए फिर कहते हैं मुझे याद करो। अभी याद करोगे यह जो कहा जाता है मन को मेरे में टिकाओ अथवा मन मना भव् निरंतर मुझे याद करो इसकी सहज रीती बैठ कर कर के बाप समझाते हैं कि किस तरह से मेरे में मन लगाओ। अभी देखो काम तो करना है ना ऐसे तो नहीं है सब छोड़-छाड़ कर बैठ जाना है मन लगाने के लिए एक कोठरी में हां, जहां कुछ छोड़ छाड़ के सब बैठ जाना है। ऐसी बात नहीं है हमको कर्म तो करना ही है लेकिन कर्म करते भी हम योगी रहे अर्थात मन उसमें टीका रहे, उसकी याद में रहे, उसकी बैठ कर के यह सहज रीती से प्रैक्टिस बताते हैं कि चलो तुम देखो भले देखो देखना तो है ही तो देखते तो क्या भी देखो? तुम्हारी बुद्धि में क्या होना चाहिए, देखो अभी हम हैं ना, हम आपके सब के तरफ देख रहे हैं, लेकिन हमारी

बुद्धि में रहना क्या है कि हम क्या देखते हैं, यह सब आत्मा है अभी हमारी दृष्टि जो है हमारी नजर में जो है कि यह सब आत्माएं हैं तो हम देखते हैं तो किस को देखते हैं, आपके तरफ देख रहे हैं तो हम आपको देखते हैं कि यह आपकी बॉडी है यह तिल्ली है हां भाई पता है हमको चलो हम देखते हैं परंतु हम देखते हुए भी हम आपको क्या देखते हैं यानी आत्मा। यह तिल्ली क्या है यह कौन सी चीज है? आत्मा है ना, यह आत्मा ने यह शरीर धारण किया है फिर शरीर और आत्मा के ऊपर यह नाम रखा हुआ है परंतु हमने देखा किसको? आत्मा को। तो हमने आँख से क्या काम लिया? हम आपसे बात करते भी हमारा ध्यान है आत्मा से, यह आत्मा सुन रही है, ऐसा ऐसा कर रही हैं, कानॉ से सुनती है, इस ऑर्गन से कौन सुन रही है आत्मा सुन रही है, तो हमारे ध्यान में आत्मा है। तो आत्मा ध्यान होने से हमारे को ख्याल में आएगा तो यह भी तो उसी बाप का बच्चा है है ना, यह भी उसका बच्चा है मैं भी उसका बच्चा हूं हम एक ही बाप के बच्चे हैं परंतु हां इन बेचारे को आत्मा को अभी वह भूल गया है कि हम कोई उस बाप के बच्चे हैं। अभी इसको यह रोशनी देने की है, पहचान देने की है कि तू उस बाप का बच्चा है अभी तू उस बाप को याद रख। तो हमारी बुद्धि में वह चीज आएंगे ना, आत्मा निश्चय होने से हमारी बुद्धि परमपिता परमात्मा के संबंध में आएंगे इसीलिए देखने समय भी सुनने समय भी बात करने के समय भी अभी हम बोल रहे हैं तो हम अपने लिए भी क्या समझेंगे कि हम आत्मा बोलती हैं, इस मुख के द्वारा। इन मुख से हम समझाते हैं लेकिन बोलती कौन हैं मैं आत्मा और यह सुनती कौन है यह आत्मा सुनती

है। तो हमारा बोलना सुनना, सुनाना, हाथों से भी करना, अभी हम हाथ से लिखते हैं, ये हाँथ से रसोई पकाते हैं या कोई भी काम करते हैं तो हमारी बुद्धि में क्या होगा कि इस ऑर्गन से हम आत्मा यह लिखाते हैं, ऑफिस में बैठे हैं, दफ्तर में बैठे हैं कोई काम करते हैं तो हमारी बुद्धि में यह है कि इस ऑर्गन से हम आत्मा यह लिखा रहे हैं। तो हमारी बुद्धि में आत्मा निश्चय है और फिर हम बोलते हैं या या कुछ भी करते हैं तो हमारी बुद्धि में है कि हम आत्मा बोलती हैं। तो आगे जो अपने को बॉडी समझते थे, मैं फलाना हूं फलाना हूं या वह दिल का अभिमान आता था वह बदलकर करके अभी आत्मा का अभिमान आएगा यानि शुद्ध अभिमान उसको कहेंगे इसको कहा जाता है देही अभिमानी। देहि माना आत्मा और देह माना शरीर। तो अभी हम होते हैं देही अभिमानी यानी आत्मा अभीमानी, आत्मा अभिमानी माना शुद्ध अभिमान, हमको शुद्ध है कि हमें उस बाप का बच्चा हूं हम सब आत्माएं उसकी संतान है परंतु हां इन बिचारी आत्माओं को अभी वह पता नहीं है हमारा फर्ज है उनको बता देना। तो हमको यह आएंगे कि वह घृणा नहीं आएंगे की नहीं यह आत्मा यहां ऐसी है ऐसी है नहीं हम समझेंगे है तो उसका बच्चा ना परंतु बेचारे को हाँ पता नहीं है उनको वह खबर देनी है इसीलिए हमारी वह दृष्टि रहने से हमको वह प्रेम रहेगा उस दृष्टि रहने से हमारा कोई ऐसा उल्टा काम नहीं होगा क्योंकि हम एक ही बाप के बच्चे हैं और वह बाप हमारा एवर प्योर है, हम आत्माएं भी फर्स्ट प्योर हैं पीछे इम्प्योर हुआ है तो हम हमारी ओरिजिनल जो स्टेज है ना वह पवित्र है इसीलिए हम को अपनी ओरिजिनल स्टेज पकड़ने की है कि हम जो असल में चीज हैं

वही हमको हो करके रहना है तो हमारी बुद्धि उसी बातों में चली जाएगी आत्मा का निश्चय से, इसीलिए हमारा जो बर्ताव चलेगा ना वह उसी तरीके से चलेगा उसमें किसी को हम दुख देवें या किसी हमको अभिमान आवे यह ऐसा वो ऐसा नहीं हम हैं तो एक ही बाप के बच्चे हैं न तो यह भी तो आत्मा ही है परंतु इन बेचारे खाली पता नहीं तो उनको उनको पता देना है ना। अच्छा इसने मुझे दो गाली भी दे दी किसी ने दे दी तो हमको क्या आएगा उसी समय ये किसने दी गाली? है तो यह भी आत्मा परंतु इस बिचारी आत्मा के संस्कार जो है ना वह अभी थोड़े मेले हैं तो हमारा काम है उसकी मेल को उतारकर करके उनको भी इस बात की रोशनी देना कि तुम्हारे कोई पाप ना बने ऐसा तुम काम मत करो। तो हमारी बुद्धि में वो चीज आएंगी कि इसको उसी चीज की रोशनी देवे बाकी ऐसे नहीं की इसने दो गाली दी तो उसको हम चार गाली देंवे। या दों के हम चार बोले 4 के हम आठ बोले, नहीं। वह बोलेंगे तो हमारा खाता बन जाएगा, हमारा विकर्म बन जाएगा इससे क्या होगा? हमारे पर और ही मैल चढ़ती जाएगी और हम और ही पाप के भागी होते जाएंगे तो हमारा जो भी एक्शंस है इसी धारणा से जिसको सौल कॉन्शियस कहा जाता है अभी इसको कहा जाता है सौल कॉन्शियस की हम आत्मा है दूसरे को भी देखते हैं आत्मा है कोई दूसरे से रोंग एक्शंस का बर्ताव भी होता है तो भी हम समझते हैं हैं वह भी आत्मा परंतु इनको पता नहीं है कि मैं कोई आत्मा हूं पता होता तो यह रॉन्ग एक्शंस में एक्ट नहीं करता, ऐसा नहीं बोलता, ऐसा कुछ नहीं करता तो हमारा काम क्या है उसको पता देना। चलो पता नहीं दे सकता वह नहीं मानता है या

कोई नहीं भी सुनता है तो चलो मैं तो अपनी खबर में रहू ना मैं तो अपने पते में रहूं मैं तो अपने को सौल कॉन्शियस मे रखु कि मैं तो आत्मा हूं ना यह भी है, परंतु विचारे के संस्कार इसके ऊपर वो मैल चढ़ गई हुई है ना इसीलिए बेचारा उसके बस में वह कुछ कर देता है या कह देता है लेकिन उसके साथ हम क्यों करें हम अगर कहेंगे तो हमारा खाता बन जाएगा ना। तो इसी इसी तरीके से अपने को बुद्धि में रखने से इसको कहा जाता है हम देखो टीके पड़े हैं ना इसको कहेंगे मन को उसमें ठिकाना यानि किस में टीकाना आई एम आत्मा, आई एम सोल, सन ऑफ सुप्रीम सौल। तो जितना हम बुद्धि को इसी में स्थिर रखेंगे तो हमारा एक्शन हमारा बर्ताव हम जो आपस में भी चलेगा वह चलेगा जिसमें हमारा कोई ऐसा विक्रम अथवा कोई पाप का कर्म ना हो इसीलिए बाप का फरमान है कि बच्चे अशरीरी रहो, यानी अपने को शरीर मत समझो। अशरीरी का मतलब है आत्मा, अशरीरी है ना आत्मा का असर ही तो नहीं है ना, वह अशरीरी है वो तो आत्मा जो चीज हो अपने को वह समझो। तो वह समझ कर करके सारा दिन जो बर्ताव चलता है उस में रहकर करके अगर बर्ताव करेंगे तो तुम्हारा बर्ताव भी जो है ना वह प्योर होंगा इमप्योर नहीं नहीं होगा, इसी से तुम्हारे कर्म अभी श्रेष्ठ बनते रहेंगे और तुमको बाप की भी याद रहेंगे गॉड कॉन्शियसली रहेंगे। सौल कॉन्शियस भी यानी मैं आत्मा और फिर परमपिता परमात्मा की संतान हूं तो गॉड कॉन्शियस भी रहेंगे। तो आत्मा सौल कॉन्शियस होने से गॉड कॉन्शियस रहेंगी और यह रहने से फिर तुम्हारे से कोई ऐसा उल्टा काम नहीं होगा तो सेफ्टी हो गई ना। तो यह है कि जैसे पहले अपने

को समझती थी मैं फलानी हूं हर वक्त समझ में आता है ना, बच्चों से बात करेंगी या जो भी संबंध में जो भी काम काज तो मैं फलानी हूं फलाने की बच्ची हूं, फलाने की स्त्री हूं, फलाने की मां हूं तो बुद्धि में तो सभी चीजें आती है ना। अभी है कि मैं आत्मा हूं, अभी अपने बुद्धि को उसमें ठिकाना है तो कहते हैं ना मन को टिकाऊ तो मन को कैसे ठिकाना है यानी मन को अभी इसी में रखना है कि मैं सोल हूं हर वक्त अपने को सोल समझ कर कर के बर्ताव में चलना है ऐसे नहीं है सोल समझने से हमारा बर्ताव नहीं चलेगा। जैसे हम अपने को बॉडी कौनसेस में चलते थे न, अभी बॉडी ना समझ कर करके अपने को आत्मा समझना है यानि वह चीज समझने की है आत्मा। बस वह समझ कर कर के बर्ताव में चलो तो वह समझने से हमारी बुद्धि जो है ना वह ऊपर रहेंगे, ऊपर का मतलब है ऊँची स्टेज पर, ये आत्मा तो फर्स्ट प्योर है ना उसे आत्मा

की स्टेज्स ख्याल में आएंगे तो आत्मा फर्स्ट प्योर थी, अभी ये इम प्योर हुई है, अभी फिर हमको जो है वो प्योर स्टेज जो है वह पकड़ने की है हम प्योरतो एवर प्योर गॉड की हम संतान हैं, तो बुद्धि मैं यह सब बातें रहने से फिर हमा जो एक्शंस है ना वह सब ठीक रहेंगे, कोई हमसे कोई उल्टा काम नहीं होगा तो यह है चलते-फिरते खाते भी इसके लिए हमको चुप करके बैठने की तो कोई बात ही नहीं है ना। इसके लिए कोई हमको एक कोठरी में बैठ कर के कोई ध्यान करना या कोई मूर्ति सामने रख कर के उनका बैठकर कंसंट्रेट करना है, नहीं। हमको अपने को उसी आत्मा निश्चय में अपने को रखना है ध्यान अपना अटेंशन जो है ना तो उसमें रखने का है कि अपने को

आत्मा समझ कर करके फिर बर्ताव में चलना है तो बर्ताव चलते हम सौल कॉन्शियस रह सकते हैं ऐसे नहीं है सौल कॉन्शियस रहने के लिए हमारा बर्ताव बंद हो जाएगा नहीं, या हम कुछ ना करें बैठ जाएं नहीं करते भी हम आत्मा है यह अपने को निश्चय रखने का है, तो यह है चीज जिसका प्रैक्टिस हर वक्त घर में कामकाज करते जहां भी हो उधर रखने का है, अभी हम भी हैं हम भीहैं हम भी किसी अवस्था का अपना अभ्यास रख रहे हैं। यही तो अभ्यास है ना कि हम आत्मा है, बोलने के समय हमारा भी ध्यान, हम अपना ध्यान किस में रखेंगे कि हम आत्मा है तो उसी बाप की संतान लेकिन बाप ने जो नॉलेज सुनाया है वह अभी सुन कर कर के हम इन्हों को सुनाते हैं तो हमारे बुद्धि में यह सब बात है परंतु घड़ी घड़ी थोड़ी इनका बैठकर सुनाएंगे लेकिन हमारी बुद्धि में जैसे वह हमारी धारणा अथवा स्टेज उसी में रहने की या उसको हमको रखना है तो यह तो अंदर की है ना तो अंदर को हम को किस स्टेज में रखना है हमारे बुद्धि की स्थिति कहां रखने की है तो जैसे पहले आगे मैं फलानी हूं फलाने की लड़की हूं अथवा फलाने की हां मैं औरत हूं वह देख कर अभिमान आते थे कोई बोलता था तो हां हां मेरे को क्यों बोला उसने हां तो वह देह का अभिमान। अभी है कि हम उसके बच्चे हैं, चलो यह भी तो है उसका बच्चा है माफ कर दो बेचारे को पता नहीं है चलो दो गाली दे दिया तो हमारा क्या बिगड़ा, बिगड़ा तो उसका बिगड़ा जो करेगा सो पाएंगे इसीलिए हम उसका क्यों अपने पर लगाएं नहीं तो देह अभीमान आ जाएगा ना। तो इसने कहा तो फिर हम को भी आएंगे इसने ऐसा करा तो हम क्यों ऐसा, फिर इसने कहा तो फिर हम क्यों ऐसा, फिर ऐसा

हम और हम और तुम हम और तुम तो उसी में तो बात ही और हो जाती हैं और इसमें क्या आएगा कि नहीं है बिचारी यह भी आत्मा और ही तरस पड़ेगा परन्तु इन बिचारी को पता नहीं है इसीलिए इसनें अपना बाप बना लिया हमारा काम है इसको भी इससे छुड़ाना अगर छुड़ा सकते हैं हमारे में समर्थ ही है तो। परंतु समझो नहीं सुना सकते तो मैं ही फस जाऊं इसलिए मैं क्यों फसूं मैं तो अपने को सेफ रखूं न चलो उनको नहीं बचा सकता हूँ तो अपने को तो बचाऊँ ना वास्तव में बचाना चाहिए परंतु समझो हमारे में इतनी हिम्मत नहीं है वह हमारी ना मानेगा या जो कुछ भी है तो चलो उनको हमको कुछ नहीं है तो हम अपना तो कुछ करें ना, तो हम क्यों अपना बिगाड़े हम क्यों उस में आकर करके उसके प्रति घृणा या उसके प्रति कुछ रखें जिससे फिर हमारा ही विक्रम बने या उस में आकर के हम कुछ बोले या कुछ करें तो वह हमारा विक्रम हो जाएगा ना तो यह सभी चीजें हैं जो अपने पास रखने की है अभी इसको कहा जाता है सौल कॉन्शियस बाकी सौल कॉन्शियस कोई और चीज तो नहीं है ना उसके लिए कोई हमको बस कोई बैठ कर के कोई मूर्ति का ध्यान लगाने का है, बैठना है, वह कोई ध्यान कोई आंखों में कोई चीज का रूप रखकर करके थोड़ी बैठ कर के ध्यान करने का नहीं। हर वक्त अपना अटेंशन यह हम उनके बच्चे हैं और हम आत्माएं हैं और यह आत्माएं हम अभी लास्ट स्टेज पर आई अभी हम को ऊंचा जाना है ना तो यह भी हमारी बुद्धि में है हमको अपनी वो स्टेज पकड़ने की है जो फर्स्ट हम थे फर्स्ट हम प्योर थे पीछे इन्फ्यूर हुए हैं तो फिर ओरिजिन हमको फिर ओरिजनल अपनी जो फर्स्ट स्टेज है उसको पकड़ना है तो पकड़ने

का है तो हमको प्योर रहना है ना हमको कोई भी इंप्योरिटी का काम नहीं करने का है। हमको कोई भी अपना ऐसा विक्रम नहीं बनाने का है। तो यह सभी बातें बुद्धि में आएंगी। तो उससे हमारे एक्संस जो है वह चेंज में चलेंगे पवित्र चलेंगे और उससे हमारी पवित्रता के आधार हमारी जीवन आगे बढ़ती चलेंगे तो इसको कहा जाएगा सोल कांसेस चलते फिरते खाते। तो यह हम चलते भी रह सकते हैं ऐसे नहीं कि हम चलने से बैठ जाएं तभी हो सकेगा नहीं चलते फिरते बोलते भी सौल कॉन्शियस कि अभी हम बोलते हैं यह सोल कांसेस यानी हम आत्मा बोल रही हैं यह हमारी बुद्धि में रहने का है। तो यह हर वक्त बुद्धि में इसी अवस्था को रख कर कर के इनको कहेंगे आत्मा निश्चय बुद्धि या देही अभिमानी या सोल कोंइसिअस गॉड कॉन्शियस तो यह दो चीजें बुद्धि में होने की है की आत्मा तब तो फिर परम आत्मा भी याद रहेगा ना, ऐसे नहीं की मैं फलाना हूं देहधारी तो फिर नहीं उसका संतान हूँ न तो फिर उसका संतान मैं कौन? उसका संतान मैं कोई बॉडी कांसेस वाला थोड़ी हूँ उसका संतान मैं सोल, तो वो बुद्धि में सोल आएंगी न। तो बाप और उसकी संतान में आत्मा ये अपनी बुध्ही में हर समय समझ कर करके हमें हर वर्ताव में चलना है तो हर बर्ताव में ऐसी अवस्था में चलने से फिर हमारा एक्शंस जो होंगा न वह रॉयल होगा, रॉयल का मतलब है प्योर और प्योरिटी तो रॉयल्टी है ना। हम देवताओं को इतना मानते हैं यह क्या है? उसमें क्या रॉयल्टी है? यह प्योरिटी की ही तो रॉयल्टी है ना। तो यह प्योरिटी के एक्शंस हमारे रहेंगे। इसी से फिर हमारे कोई कर्म ऐसा विक्रम नहीं बनेगा तो खाता भी सेफ रहेगा हमारी जो ख़ुशी है हम बढ़ते जाएंगे हमारे

एक्शंस राइट होने से हमारे में ताकत आती जाएंगे एक्संस में वह भी हमको परहेज भी साथ साथ रखने से वह बल भी मिलता जाएगा ना अगर परहेज ना रखेंगे तो बल कहां से मिलेगा फिर हमारा रोग निवारण कैसे होगा तो रोग निवारण के लिए हमको यह परहेज और यह दवाई हां यह सब लेनी पड़े ना तो यह ज्ञान भी लेना है जो हमारे को दवाई का काम करती है उसके साथ फिर जो धारणाएं हैं वह परहेज के रूप में धारण भी करनी पड़ेगी न तब तो हमारी जो कुछ है हमारा रोग बाकी हम ऐसे ही चलते रहें खाली सुनते रहने से क्या होगा तो सुनते सुनते तो बहुत काल हो गया हां आपे ही होगा आपे ही नहीं होगा ना। हमको कर्म बदल करना है बदली करना है कर्म ।कर्मों को जब तलक चेंज नहीं किया है तब तलक हमारे एक्शंस वही चलेंगे तो हमारा विक्रम का खाता पाप तो बनता चलेगा ना। फिर पाप बनता चलेगा तो फिर आपका बोझा भी चढ़ता चलेगा तो हमारे एक्शंस चेंज होने चाहिए फ़ौरन इसीलिए देखो बाप यहाँ प्रैक्टिस कराते हैं ना की जल्दी से जितना... इसलिए बतलाते हैं कि नहीं अभी दुनिया ही ऐसी आने की है जिसमें अभी ना करेंगे तो कभी करेंगे, अभी सांस निकल जाए शरीर छूट जाए तो फिर क्या ले जाएंगे, तो करना है ना अभी इसलिए हमको फौरन अपने एक्शन को बदली करनी है। इसीलिए ऐसी पवित्रता के ऊपर यहाँ पांचों विकारों के ऊपर यहां फोर्स दिया जाता है और कोई सत्संग में इसी तरीके से भले कहें निर्विकार ही रहो परंतु हाँ आशते अश्ते, थोड़ा-थोड़ा कर कर कर के वह थोड़ा-थोड़ा करके आशते आस्ते कर कर करके इसी तरीके से देखो आज कई काल हो गया है फिर क्या होता है तो बाप तो आकर करके

इन बातों से बिल्कुल छुड़ाने के लिए ही आते हैं ना क्योंकि वो ले जाते हैं प्रैक्टिकल वो सतयुगी सतोप्रधान दुनिया में ले जाते हैं तो उनको तो फॉरेन ही यहां पाँचों विकारों से छुड़ाकर करके हमारे कर्मों को श्रेष्ठ बनाना जिसमें फिर श्रेष्ठ पद पाएंगे यह सभी चीजों को भी समझना है अच्छी तरीके से बाकी सौल कॉन्शियस तो यह ऐसा नहीं है कोई आंखें बंद कर कर कर के या कोई किसका ध्यान करना है या कुछ नहीं, चलते फिरते अपने को आत्मा समझना है अभी यह नहीं समझना है नहीं। मैं आत्मा ने यह शरीर लिया है मैं आत्मा तो यह अपनी बुद्धि को बदली करना है आत्मा में लगाना है वैसे हम बॉडी अपने को समझते थे मैं फलानी हूं वह देह का अभिमान, अभी मैं आत्मा। दादा अभी बाप दादा तो समझते जाते हो ना तो बाप दादा और मां के मीठे मीठे बहुत अच्छे सपूत बच्चों के याद प्यार और गुड मॉर्निंग अच्छा।

04. कल्प वृक्ष का ज्ञान

रिकॉर्ड:-

दुनिया रंग रंगीली बाबा दुनिया रंग..........

ज्ञान... सृष्टि रूपी वृक्ष को अभी जान गए हो ना अच्छी तरह से, क्योंकि यह मनुष्य सृष्टि वृक्ष वैरायटी है। अनेक धर्म और अनेक ही, हर एक धर्म का हर एक का अपना अपना। तो यह सब वैरायटी संसार कहा जाता है इसको। एक ना मिले दूसरे से। तो यह संसार अभी वृद्धि को पाकर कर करके अभी, फिर है वृद्धि भी तो कम होंगी ना। कोई चीज बढ़ती है तो फिर उसकी एंड भी होनी है। ऐसे नहीं है कि वृद्धि होते होते होते होते वृद्धि ही चलती रहेगी, नहीं। जो चीज बढ़ती है उसको फिर घटना भी है। तो यह मनुष्य सृष्टि रूपी सारी चक्कर को अभी बुद्धि में समझा है। और अभी जानते हैं कि यह भी वृद्धि को पाया हुआ वृक्ष, अभी इसकी एंड जाएगी। ऐसे नहीं है कि अभी और आगे वृद्धि होती चले नहीं। अभी वृद्धि को पा चुका है अभी इसका अंत होकर करके फिर नई दुनिया कहो या फिर वह सुख की दुनिया कहो जिसमें फिर संख्या थोड़ी। अभी जभी वृद्धि को पाता है तो संख्या बहुत है। अभी जभी वृद्धि को पाना होता है तो दुख भी वृद्धि को पाता है। जब संख्या थोड़ी है जिसको सतयुग कहा जाता है तब फिर ऐसा नहीं कहेंगे कि उसी टाइम है फिर सुख की दुनिया है। तो फिर यह सभी चीजें अभी बुद्धि में हैं इसीलिए अभी यह वृद्धि को पाया

हुआ, दुखों को ही बढ़ने का है लेकिन यह जब वृद्धि पूरी होंगी तो यह दुख का भी अंत का समय पूरा रहेगा। और फिर सुख की दुनिया और उसमें जरूर है जो इतने धर्मों की और इतनी संख्या की वृद्धि जो पीछे पीछे हुई है तो जरूर है कि यह इतने अनेक धर्म भी तो फिर नष्ट होंगे ना। फिर इसके नाम निशान नहीं होंगे तो यह सभी चीजें कैसी वृद्धि को पार्टी है। ऐसे नहीं कहेंगे कि शुरू से ही सब कुछ है नहीं नहीं। अगर शुरू से ही सब कुछ तो फिर अपना अपना टाइम नहीं देते। देखो जैसे क्रिश्चियनिटी है तो उसका भी तो टाइम है ना, कि भाई इसको 1965 वर्ष हुए अभी तो जरूर है शुरू जो चीज हुई है इतने वर्षों से फिर उसका कुछ टाइम भी होगा जहां पूरा होगा। ऐसे नहीं की चली है तो चलती ही रहेंगी या कहेंगे शुरू से ही है सब, नहीं। सब शुरू से होते तो उसका अंदाजा क्यों करते, ऐसे नहीं कहेंगे कि दुनिया की शुरुआत 1965 बरस से हुई है, दुनिया को तो कहते हैं ना बहुत काल हुए, लेकिन यह धर्म का टाइम है भाई यह क्रिश्चियनिटी कब से चालू हुई? भाई इतने टाइम से, यह बुद्धिस्म धर्म कब से चालू हुआ? भाई इतने टाइम से, यह इस्लामी धर्म कब से हुआ? भाई इतना टाइम, तो टाइम है ना उनका। तो इसका मतलब है उसके पहले यह चीजें नहीं थी, तो यह जो चीजें नहीं थी, हुई है फिर इसको ना भी होना है ना। ऐसे नहीं है कि है तो फिर चलेंगे, नहीं। जैसे शुरू हुई है वैसे उसको पूरा भी होना है। तो फिर पूरा होने का भी तो समय होगा ना। फिर टाइम होगा तो यह सभी चीजें बुद्धि में है कि तुम का टाइम भी अभी आकर करके पूरा हुआ है, और सबका एक साथ टाइम पूरा होता है। ऐसे नहीं है कि इस्लामी धर्म का पूरे

होने का अपना टाइम है, पूरा होना एंड सब की है, लेकिन शुरू होना अपने अपने टाइम पर है जैसे वृक्ष का, इसीलिए इसकी सृष्टि की मनुष्य सृष्टि की खुशामद वृक्ष के साथ क्योंकि वृक्ष में जैसे डाल-डाल टालियां अपने अपने टाइम पर आती हैं परंतु वृक्ष की सारी की आयु पूरी होंगी तो एक साथ हो जाएंगे। सब डाल टाल टालिया या जड़ जो भी है सब फाउंडेशन सबका एंड होगा तो एक साथ होगा और शुरू होगा तो अपने अपने समय पर होगा। इसलिए गीता में भी इस मनुष्य सृष्टि की खुसाबत वृक्ष के साथ की गई है, इसीलिए की गई है कि जिस तरह से वृक्ष की उत्पत्ति अपने अपने टाइम पर यानी उनकी वृद्धि जो होती है अपने अपने समय पर वृद्धि, एक साथ नहीं होती ऐसा नहीं कि सारा ही झाड़ जो है एक साथ निकल आता है, नहीं। पहले जड़ पीछे डाल पीछे टाल पीछे टालियां, टाइम, अपने अपने समय पर, फिर एंड होती है एक साथ। क्योंकि वृक्ष की आयु पूरी होंगी तो साथ में होंगी ऐसे नहीं की टाल की यहाँ, टालियों की वहां, नम्बरवार ऐसे होंगी, न। एक साथ होंगी। तो यह सभी चीजें भी बुद्धि में रखने की है कि यह मनुष्य सृष्टि का भी उत्पत्ति या उनका कहै वृद्धि होना और फिर उसका अंत होना यह उसी तरीके से हैं जैसे वृक्ष का है। इसीलिए वृक्ष के साथ उसका यहां भी अपना दिखलाया हुआ है वृक्ष का झाड़ के ऊपर की वृद्धि ऐसे होती है जैसे वृक्ष की होती है और एंड भी जैसा वृक्ष का होता है। तो एक ही साथ तो अभी यह आकर कर करके सारा मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष मानो जड़जड़ी भूत हुआ है अभी इसकी एंड। तो इसीलिए फिर एक साथ सबका सभी धर्म सभी जो कुछ है अभी सबकी एंड। और सभी धर्म वाले भी मानते हैं

देखो मुसलमान भी अपने कयामत को मानते हैं, वह भी समझते हैं अभी हमारा कयामत का समय है। और अंग्रेज लोग, यह क्रिश्चियन लोग भी मानते हैं अपना सिग्रीकेशन तो वो भी समझते हैं उनके भी हिसाब से अभी उनका टाइम है। वह अपना बतलाते हैं 2000 बरस की, तो हमारी भी क्रिश्चियनिटी का टाइम इतना है तो उसमें बाकी देखो थोड़ा टाइम। और हिंदू भी प्रलय नाम का लेते तो है लेकिन वह प्रलय समझते हैं एकदम प्रलय हो जाएंगी, प्रलय का मतलब यह नहीं है कि एकदम से नाश हो जाएंगे नहीं। यह सृष्टि कभी बिल्कुल नष्ट होती ही नहीं है। मनुष्य सृष्टि अनादि है बाकी इसी तरह से वृद्धि को पाती है और इसी तरीके से फिर कम पड़ती है। तो अभी वृद्धि को पाकर करके अभी आप पूरी हुई है बाकी भी जो थोड़ा बहुत वृद्धि को, अभी देखो स्पीड चल रही है ना वृद्धि की बहुत तेजी से जितना भी बाकी पा रही है। पाने की है वह पा रही है बाकी हां एंड भी निशानी भी आ गई है कि अभी दुनिया का अंत आ चुका है। तो निशानियां सब खड़ी है, दिखाई पडती है ना अच्छी तरह से कि अभी नजर नहीं पड़ती है? की दुनिया के एंड कि ये निशानियां है और इधर हमारी वृद्धि का भी अंत का समय का अभी टाइम आकर करके पहुंचा है। तो यह सभी नजर पड़ती है ना अच्छी तरह से? या अभी नहीं समझ में आता है कि नहीं यह तो दुनिया का चला ही आया है, वैसे ही चलता चलेगा नहीं। यह दुनिया का भी चेंज होने का है। दुनिया तो चलती चलेंगे ऐसे नहीं दुनिया नहीं होंगी लेकिन दुनिया का परिवर्तन बाहर ही है अभी। तो यह सभी चीजें बुद्धि में रखने की है उस अनुसार अभी क्या होने का है उसके लिए हमको क्या करने का है, वह उपाय

बैठकर करके अभी बाप समझाते हैं। जो कहा है कि मैं आता हूं सत्य धर्म स्थापन करने के लिए तो बाप ने कौन सा धर्म स्थापन किया, यह कोई जानता नहीं है। भले भारतवासी गाते हैं गीता में कहते भी हैं अब आया है अधर्म नाश करके सतयुग स्थापन करने परंतु कोई बता थोड़ी सकता है कि भगवान ने कौन सा धर्म स्थापन किया है। अगर पूछा जाए कि भाई क्राइस्ट में कौन सा धर्म स्थापन किया तो बहुत बता भी देंगे हां भाई क्रिश्चियन धर्म तो इसने स्थापन किया तो भाई बुद्ध धर्म बुद्ध ने स्थापन किया इस्लामी धर्म फलाने स्थापन किया अपने धर्म स्थापक का नाम बताएंगे लेकिन परमात्मा ने जो कहा कि मैं आकर करके धर्म स्थापन करता हूं उसका नाम क्या है कोई बताए, लेकिन जानते नहीं हैं। अभी अपन समझते हैं कि हां, उसने यह देवी देवता धर्म की स्थापना की तो देवी-देवता धर्म किसने स्थापन किया? उसे हम परमपिता परमात्मा ने आकर कर कर के देवी-देवता धर्म स्थापन किया और उसी टाइम पर ही दुनिया स्वर्ग थी। दूसरे जो भी धर्म आए हैं तो दुनिया स्वर्ग तो नहीं है ना, तो स्वर्ग का टाइम है जब देवी-देवता धर्म था और परमात्मा ने आकर करके वह धर्म ही स्थापन किया है और धर्मों का नष्ट। तो जरूरी है कि विनाश करें तभी तो हां स्थापना और यह काम उनका ही हो सकता है। इसीलिए उसको लिब्रेटर कहा जाता है वो एक है बाकी जो भी धर्म स्थापक हैं उनको लिब्रेटर नहीं कहा जाता क्योंकि वह कोई वापस नहीं ले जाते हैं वह तो आते हैं संख्या को बढ़ाते हैं। वह आने से उन्हों की संख्या बढ़ती है और बाप आता है तो संख्या को है वापस ले जाता है सबको और फिर वह बाकी संख्या उनकी जनरेशन जो होती हैं जो सदा

सुखदाई बनती है। तो यह हिसाब भी सारा समझना है। समझने का हे बहुत वर्ल्ड की सारी जेनरेशंस कैसे चलती है और यह कैसे उत्पत्ति होती है इसका एंड कैसे होता है अभी कौन सा टाइम है तो यह अभी वह चेंज आने का समय है। सब धर्म पहले नहीं थे, फिर तो नहीं होंगे ना फिर भी तो अपने टाइम पर फिर क्राइस्ट आएगा, फिर यह क्रिश्चियनिटी स्थापन करेगा लेकिन अभी ना होवे तभी तो फिर अपने टाइम पर होना तो यह वर्ल्ड हिस्ट्री रिपीट भी होती है अपने अपने टाइम प|र फिर सबको आना है, यह रिपीट भी कैसे होती है और इसका शुरू होना हर एक चीज का अपना अपने टाइम पर पूरा होना है तो यह सारी हिस्ट्री को समझना है। तो वर्ल्ड की हिस्ट्री को भी समझना है उनके साथ इंडिविजुअल हम आत्मा का भी सारा चक्कर कैसे चलता है इन सब बातों को समझना है। बाकी ऐसे नहीं है कि बस आया, गया, खाया पिया चलो तो यह सारा जन्म यह चलता ही रहता है, नहीं। यह सभी हिसाब से ऐसी बातें कैसे चलते हैं उनके हिसाब को भी समझता है ना। इसीलिए बाप बैठकर करके समझाते है। इसको भी समझाने की जरूरत क्यों है? क्योंकि इसके जानने से हमको पता चलता है कि हमारा सबसे श्रेष्ठ धर्म अथवा हमारा सबसे श्रेष्ठ कर्म की प्रारब्ध कौन सी है। तो तभी तो मालूम पड़ता है ना, कि सब श्रेष्ठ धर्म कौन सा था। भाई वही देवी देवता उनके कौन से लक्षण हैं? वह कौन आ करके बनाता है? उसके लिए क्या पुरुषार्थ रहा है? वह बैठकर करके बात समझाते हैं, अभी हम उसका सौभाग्य पाते हैं। हम कोई यहां क्रिस्टन बनने के लिए नहीं है, हम कोई और नहीं, हम वही सौभाग्य पाने के लिए जो सत्य धर्म परम पिता

परमात्मा ने स्थापन किया है, वह अभी अपना काम कर रहा है, यह कोई धर्म स्थापित मनुष्य का काम नहीं है यह परमपिता परमात्मा का, वह आकर करके जिसने आकर करके दुनिया के ऊपर एक धर्म और एक राज्य बनाया है और बाकी राज्य और धर्म सब नष्ट किए यह उनका अभी काम चल रहा है। तो यह बुद्धि में होना चाहिए कि यह अभी कार्य उनका हो रहा है, जो अथॉरिटी है, जिसको ही वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। वह अथॉरिटी का काम और वही अभी वापस ले जा रहा है। जो इस संख्या को ले जाएगा ना आत्मा भी तो इम्मोर्टल है ना, नहीं तो आत्माएं किधर जाएंगे। इतनी आत्माएं आई है, तो फिर अपने ठिकाने पर भी तो जाएंगे ना जहां से आई हैं। तो उसको घर भी पहुंचाना है ना, पहुंचाएगा कौन? पहुंचाने वाला वह है, इसीलिए परम परमपिता परमात्मा के द्वारा, उनके द्वारा और कोई पहुंचा ही नहीं सकता क्योंकि उनके लिए, ले जाने के लिए पावरफुल सोल चाहिए ना, तो सबसे है सुप्रीम सौल इसलिए उनको ही वापस ले जाना है। तो इसीलिए आकर करके बाप फिर जिस को ही गति सद्गति अभी बहुत थोड़े समझते है की गति सद्गति भी किसको कहा जाता है। अभी गति सद्गति का मतलब ही है कि आत्माओं को वापस ले जाना तो देखो वापस ले जाते हैं और फिर अपने अपने टाइम पर अपने अपने समय पर आएंगे नंबर वार। परंतु पहला नंबर उन्हों का है इसीलिए नंबर पर आने के लिए पहले नंबर में देखो यह पुरुषार्थ कर रहे हैं। और अच्छी तरह से पुरुषार्थ में लगे हो ना? अपना समझते हो ना हम किस लिए यह पुरुषार्थ कर रहे हैं? जिसके ऊपर मनुष्य के लिए कोई पुरुषार्थ है ही नहीं ऊंचे में

ऊंचा पुरुषार्थ मनुष्य के ऊंचे में ऊंचा बनान यह है उस परमपिता परमात्मा का काम। तो इसीलिए देखो बाप हमको ऐसा मनुष्य बनाता है, हां.. है तो मनुष्य ऐसे नहीं कि मनुष्य के बनाने का मतलब है हमारा ना काम ना करो, यह बनाता है नहीं। लेकिन हमारी स्टेज वह ऊंची बनाता है ऐसा। इसीलिए कहते हैं मैं मनुष्य को देखो ऊंचे में ऊंचा बनाता हूं। बाकी ऐसे नहीं हमारी आंखें ,कान, नाक यह बैठ कर के बनाता है मिट्टी से। जैसे समझाते हो गोता बनाया फिर स्वस्तिका बनाया, नहीं। हम एकदम गोते हो गए ना, खाली हो गए एकदम। हमारे से वह निकल थी बल। अभी बाप आ कर करके फिर बल डालता है जिससे हमारी लाइफ फिर वह ऊंची बनती है। तो ऊंचे में ऊंचा मनुष्य, इस मनुष्य के ऊपर कोई ऊंचा है ही नहीं इसलिए आपको वह बनाता है जो मनुष्य में ऊंचे में ऊंचा मनुष्य। सबसे ऊंची मनुष्य कौन से? यही जिसमें एवर हेल्दी वेल्थी एवर वेल्दी। कभी कोई यहां दुख है ही नहीं। कभी चलते हो उधर, हां? यह ख्याल पक्का है ना? तो पक्का ख्याल रखो। इरादा मजबूत रखो। और अंत मती हो गति जैसा.... जैसा इरादा वैसी वैसी यहां कहा जाता है अंत मत सो गति ऐसी... । ऐसी गति को पाएंगे तो ऐसे अपना धारणा बनाते रहो। और उसके लिए अपना यह पुरुषार्थ है, अथवा करम है करम करना है। ड्रामा पर मूंजने का नहीं है, कर्म करना है बाकी ड्रामा तो समझा है ना नंबरबार यह कहेंगे ड्रामा। इसको क्यों, नाटक है जैसा यह जैसा खेल है। शुरू कैसा होता है पूरा कैसा होता है बीच में बाय प्लांट्स कैसे आते हैं, कहानी एक ही है शुरू से लेकर करके भारत का प्राचीन जो धर्म था जब गिरता है तो पीछे दूसरे दूसरे धर्म आते हैं तो उसको

नाटक एक ही है। जैसे कहानी होती है ना, कहानी एक ही होती है, एक राजा यह है, फिर वह राजा का कैसे राजाई चली गई, फिर पीछे दूसरों ने आकर करके उसके ऊपर विन किया ऐसे कहानी में चलता है ना। तो यह भी ऐसे पहले पहले हमारा एक राज्य एक धर्म था जब उसकी पावर कम हो गई तो फिर और दूसरे धर्म आए, फिर उनकी कुछ पावर ने काम किया बस ऐसे ही चलते चलते चलते फिर अंत आती है। फिर सभी धर्मों का भी एंड होता है। फिर बाप आ कर करके फिर वही प्राचीन स्थापना आदि सनातन धर्म की स्थापना करते हैं। तो कहानी उनकी है और बीच में यह सभी बाय प्लॉट आते हैं तो नाटक हो गया ना, ड्रामा हो गया। और फिर पूरा हो करके फिर रिपीट होता है, इसीलिए और को कहते हैं कि यह बना बनाया है परंतु बना बनाया जिस नियम से हैं हमको तो उस नियम पर चलना है ना। वह करना तो अपना कर्म है ना, वह खाली नाटक समझना है बुद्धि में। बस ऐसा नाटक है बाकी ऐसे नहीं कि उसमें करना एक्शन, एक्टर में तो हम को आना है तो वह अपना कर्म हमको करना ही है। हमको अपना सारा मदार उसी के ऊपर रखने का है अच्छा भोग है इसीलिए टाइम थोड़ा बचाना पड़ेगा ना, अब एक्टर्स हैं लेकिन इस एक्टर का ड्रामा कहां से शुरू होता है, कहां पूरा होता है वह एक्टर्स को मालूम तो होना चाहिए हमारा पार्ट क्या है, हम क्या बने हुए थे, अब कहां पहुंचे हैं, यह सभी बातों का नॉलेज होना चाहिए ना। तो बैठ कर करके अभी समझाते हैं, बाप भी अभी है, गोप गोपियां भी अभी हैं, और अपना सौभाग्य भी बाप से ले भी अभी रहे हैं। तो उसमें भी हमें अपने की कोई कमी नहीं डालने की पूरा अटेंशन देना है पूरा पुरुषार्थ

करना है। क्या है तो यही है बाकी हां थोड़ी-थोड़ी तकदीर है, कि धनवान बना तो क्या बना, थोड़ा एक बार तो क्या हुआ। कंप्लीट तकदीर, तो तकदीर तो तदबीर, कैसा? ख्याल ऐसा ही किया है ना? पक्का? तो इस निश्चिता से और दृढ़ता से हटना नहीं है, और इसमें पूरा फिर चलना भी है। उस बनने के लिए, उस पाने के लिए, जो कुछ करना है वह तो करके रहना पड़ेगा ना। तो अपनी शक्ल दिखलाई है, तो यहां वह बनने का पुरुषार्थ रख रहे हैं? कैसे? रख रहे हो ना अच्छी तरह से? अच्छा बाप को याद करते हो ना अच्छी तरह से? और दादा दादा को समझा है ना अच्छी तरह से? बापदादा और मां की मीठे मीठे... मीठे होना? की कड़वी? पक्का? मीठी... ? अच्छा.... ऐसे मीठे मीठे शिकायत है सपूत बच्चों प्रीत याद प्यार और गुड मॉर्निंग और सब टाइम गुड रखने का पूरा पुरुषार्थ रखते हो ना? कोई माया बेड का संग नहीं करना। संभल के रहना। ना कोई क्रोध, ना लोभ, ना मोह, ना अहंकार। अहंकार की तो हां., पहले ही खबरदारी रखने की है। इसीलिए इन सब बातों को संभालते रहना।

कोई भी ऐसा, इनका माया का संग नहीं करना है। इसी संग से बचते रहना ,तो बचते रहते हो ना, (किसी ने कहा नहीं लोभ होता है) अरे क्यों? लोभ होना है शुद्ध, बाकी शरीर निर्वाह अर्थ तो काम करना ही है ना?

05. 84 जन्मों की कहानी

ओम शांति ।

थोड़े देवताओं के नाम हैं, इसको कहा जाता है प्राय लोप। यानी जैसे के लोप ही है, परंतु थोड़ा, भाई थोड़ा इसके चिन्ह है बाकी प्राय लोप। प्राय का मतलब है थोड़ा कुछ है, बाकी तो लोप ही हैं। तो बाप कहते हैं थोड़ी निशानियां बाकी रहती हैं बस । इनकी प्रैक्टिकल बायोग्राफी यथार्थ सभी बातें वो तो सब गायब है ना । देवताओं की भी गायब है, तो बिल्कुल गायब हो जाती हैं बहुत पलट जाती हैं, प्रैक्टिकल तो रहता ही नहीं है, परंतु जिन्हों को भी याद करते हैं उनके भी जीवन का पूरा पता नहीं रहता है इसी को कहा जाता है प्राय लोप । खाली नाम मात्र चित्र है बस । चित्र भी कोई ओरिजिनल तो नहीं है खाली नाम मात्र है । तो कहते हैं बाकी नाम मात्र जैसे जाकर के रहते हैं, तभी मैं आता हूं और आकर करके फिर उसकी स्थापना करता हूं । तो यहां ही सब हुआ है ना काम, इधर, इसीलिए भारत का नाम और इधर ही वर्ण आदि और यह सभी बातें इधर ही मानी जाती हैं । तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझना है और समझ कर करके अभी यहां हम उसी सौभाग्य को पा रहे हैं। तो अपने पास नशा होना चाहिए कि यहां ऐसी ऊँच प्राप्ति के अधिकारी हम बनते हैं। तो देखो यह सौभाग्य है ना ऊंचा । तो अपने में उसका शुद्ध नशा.... कि हम ऐसे बेहद बाप के हक को, हम ही पाने वाले हैं और अभी बाप

डायरेक्टली हमको यहां ब्रह्मणों को रच कर कर के अभी पढ़ा भी रहे हैं, समझा भी रहे हैं और साथ-साथ वह हक जो है वो हमें दे रहे हैं । तो ब्राह्मणों को अपना तो ब्राह्मणों को अपने ब्राह्मणपन का भी नशा रहना चाहिए और कितने ब्राह्मण पवित्र और शुद्ध हैं वह अपनी पवित्रता सबसे श्रेष्ठ है । देखो ब्राह्मणों को बडा अपना नशा रहता है हां वह समझते हैं कि नहीं हम बड़े,..... परंतु वह कहां से पकड़ा है? इधर से ।, अभी अपना बाप ने आकर करके हमको..... यह तो अभी परमात्मा ने, जो अपनी डायरेक्ट पहली पहली संतान जो रची है वह हम हैं ब्राम्हण । तो पहली पहली संतान को नशा होना चाहिए न, कि हम डायरेक्ट परमात्मा की पैदाइश है एकदम । इतनी परमात्मा की पैदाइश, इतनी पवित्रता, इतना अपना रॉयल्टी, इतनी सब बातों की मर्यादा, किस की मर्यादा? पवित्रता की मर्यादा ।, इसी सभी बातों को बहुत अच्छी तरह से अपनाना है, इसीलिए इसी कुल का बहुत नाम है ना । तो अपना कुल बहुत ऊंचा है, इसीलिए उस ऐसे ऊंचे कुल वाले बच्चों को, अपने कुल का, अपने खानदान का, अपने बाप का, ध्यान रखने का है और अपने एक्टिविटी अपनी धारणाओं के ऊपर भी अच्छी तरह से अटेंशन देकर करके अभी बाप से ऐसा जो कुछ पाने का है, वह पाना है तभी तो पूरा ले सकेंगे ना । तो यह है अपने अंदर में रखने की बाते हैं । कोई ऐसे भी नहीं है कि नशा है तो कोई बाहर से हम अपना कुछ नशा दिखाएं, हां, नहीं यह अंदर की बात है, अंदर में खुशी रहेगी कि अपना अभी देखो हम किसकी संतान और कौन बनते हैं तो हां, हमारी अभी चढ़ती कला है, उतरती कला अभी पूरी हुई अभी हमारी चढ़ती कला है । तो उसी समय बाबा आ कर करके

हमको देखो यह सभी नॉलेज देते हैं तीनों कालों की । इसीलिए त्रिकालदर्शी, हम भी अभी मास्टर त्रिकालदर्शी हां, बाप त्रिकालदर्शी हैं तो हम भी तो कम नहीं है ना, हम भी उनके बच्चे अभी मास्टर त्रिकालदर्शी यानी तीनों कालों को जानने वाले हम भी बनते हैं ना । जब बाप बैठ कर करके हमको तीनों कालों की,... तीन काल का..... तीन काल क्यों कहा है? चार काल नहीं कहा, पांच काल नहीं कहा, काल का मतलब है समय । तो हमको तीन काल का बैठ कर करके नॉलेज यहाँ.... क्योंकि तीन समय का चेंजेस है, कहते हैं कि हम आदि आत्माएं शुरू शुरू से निराकारी दुनिया से आती है तो पहला समय वह है जहां से हम आत्माएं आती है भाई निराकारी दुनिया से । फिर आती है इधर कॉरपोरियल, इसमें फिर हम बहुत से बहुत 84 जन्म जन्मों का चक्कर चलते हैं । चलते हैं तो 84 जन्म पूरे करते हैं, फिर हम वापस जाते हैं तो मध्यकाल हो गया हमारा यह जन्मों का । आदिकाल हो गया निराकारी दुनिया से आने का, हम निराकार है तो आदी हमारी शुरु, आत्मा की आदी की हम आदि निराकारी है, पीछे मध्य में जन्मों में आते हैं यह पुनर्जन्म का हमारा चक्कर है । फिर वह पूरा हो करके फिर हमको अंत जहां से आए हैं फिर वहां जाना है । तो आदि मध्य अंत तो यह सभी है कि फिर हमको पार्ट पूरा कर करके जाना है । तो आना भी है, आना भी है फिर जाना भी है । और मध्यकाल में हम पुनर्जन्म । तो यह हुआ आत्माओं का आदि, मध्य, अंत तो तीन काल आत्माओं का । अगर फिर जन्मों का लेंगे तो जन्मों की आदी फिर सतयुग से, की हमारे पहले पहले जो जन्म हैं वह आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र है, तो आदी फिर वहां

से । वह हो गई सृष्टि की आदि, वह हो गई आत्माओं की आदी । सृष्टि की आदि लेंगे तो कहां से लेंगे देवताओं से, तो पहले पहले हम देवता, पीछे किस तरह से यह सभी वर्णों का चक्कर लगाते, अभी फिर मध्यकाल फिर कहेंगे जब हमारे में फिर भी विकारों की चेंज आती है तो वह फिर हुआ जन्मों का मध्य । तो जन्म का आदि कहेंगे देवता पहले पहले, पीछे फिर हमारे भाई माया आती है पांच विकार आते हैं तो फिर हमारा मध्य वहां से शुरू । फिर अंत होता है जभी फिर भी विकारों के इस बंधन से छुटकारा पाकर करके फिर जाते हैं । तो यह हुआ जन्मों का आदि, मध्य, अंत और वह हुआ आत्मा का आदि, मध्य, अंत । इसीलिए कहते हैं त्रिकाल यानी तीनों कालों का जन्मों की भी तीन काल का और आत्मा के भी तीन काल का । की आत्मा पहले नंगी है यानी कि शरीर नहीं है, फिर के शरीरों के जन्मों में आती है फिर हां उन्हीं शरीर के जन्म के बंधन से भी छुटकारा पा करके फिर जाती हैं यह तीम काल आत्मा का और वह जन्मों का तीन काल । तो कहते हैं तीनों कालों का सृष्टि के भी और आत्मा के भी मैं जानता हूं फिर बच्चों को सुनाता हूं । तो फिर बच्चे भी जानते हैं तभी हम भी मास्टर त्रिकालदर्शी बने हैं ना । बाप ने बुद्धि में नॉलेज दी है की बच्चे अभी यह लास्ट चोला है, लास्ट जन्म है अंतिम । इसीलिए कहते हैं मैं आता ही अंत के समय हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारा बुद्धि योग निकलना बड़ा मुश्किल है । तो ऐसे भी नहीं है कि बीच में आऊँ की अभी थोडे जन्म पड़े हुए हो, नहीं । मैं आता ही लास्ट में हूं, तो वैसे भी तुम्हारा अभी लास्ट है छूटना ही है । परंतु क्यों नहीं अपने हिम्मत और पुरुषार्थ के बल से

छोड़ते हो । तो बुद्धि योग बल से छोड़ेंगे तो फिर तुमको उससे ऊँच प्राप्ति होगी इसीलिए कहते हैं बच्चे अभी देह सहित देह के सर्व संबंधों का अभी बुद्धि से आसक्ति हटाओ । तो बुद्धि योग बल से छोड़ेंगे, तो फिर तुमको उससे ऊँच प्राप्ति होगी । इसीलिए कहते हैं बच्चे अभी देह सहित देह के सर्व संबंधों का अभी बुद्धि से आसक्ति हटाओ । यह कैसे हटाओ? जबकि अभी तुम्हारा 84 जन्मों का चक्कर पूरा हुआ है ना, यानी सभी जन्मों का, तो अभी जन्मों का चक्कर पूरा हुआ है तो बाकी तुम बुद्धि से क्यों नहीं निकालते हैं । इसीलिए बाप कहते हैं, तू ना भी निकालेंगे, तो भी तेरा पूरा हुआ है अब तो तुमको ले ही जाना है अब मुझे । परंतु अगर बुद्धि से पहले से ही करेंगे तो इसका तुमको फायदा मिलेगा । इसीलिए कहते हैं अपनी आसक्ति ममत्त्व तू इससे निकाल । यह तो है रावण के राज्य का प्रॉपर्टी, यह सब पुरानी उसकी है ना । उसके कर्मों के हिसाब से, विकारों के कर्मों के हिसाब से बने हुए हैं । इसीलिए कहते हैं उसकी यह प्रॉपर्टी है ना, यह देह भी उसकी अभी है, उनको दे दे, तुम चलो मेरे साथ, मैं उनका हूं, जिनका हूं बाप करते हैं अभी मेरे साथ चलो । तुम मेरी प्रॉपर्टी हो, यह (देह और उसके सम्बन्ध) उनकी प्रॉपर्टी है रावण की, यह दे दो उसको । उसमें तुम अपनी आसक्ति ना रखो । अब आप कहते हैं अभी यह देह जो रावण की प्रॉपर्टी है या उसके कर्मों के हिसाब से, विक्रमी खाते के कर्म के हिसाब से बना है, तो जो उसके हिसाब से बना है, तो वह हिसाब खाता उसको दे दे । तुम तो मेरी प्रॉपर्टी हो ना तो अब मेरे साथ चल । तो अभी बाप कहते हैं बच्चे तो मेरे साथ चल तो इसीलिए बुद्धि अपनी इस से निकाल इससे

ममत्व को निकाल दें, यह उसकी प्रॉपर्टी है यह देह के सब संबंध, ये तेरी देह और देह के संबंध, यह सब उनके हैं (रावण के) तो अभी उनसे अपना ममत्व को निकाल । यह सब उनकी प्रॉपर्टी से जो इतना समय खाया है उसका हां परंतु उसे नतीजा तो तुमको दुखी ही भोगना पड़ा । इसीलिए कहते हैं अभी वह देह सहित, यह देह के यह जो संबंध है ना, ये विकारी खाते के हैं, इस सभी खाते से दे दे रावण को । वह भी खत्म होने का है उसका राज्य यह सब उसे छोड़ दे उसको अभी । अभी तो जहां की है वहां की अपनी प्रॉपर्टी वह बना । वह बनाएंगे, मेरे खाते में आएंगे, तो मैं फिर तुम आत्माओं को जो फिर तेरा, तेरा खाता बना करके दूंगा, वह सुख का संबंध तुमको दूंगा, वो सुख के शरीर तुम को मिलेंगे ना, फिर सदा सुख के । रावण के खाते के मिले हैं, पराया खाता है ना तो पराया खाता तो उससे देखो दुख मिला है तो यह रावण के खाते के बने हुए हैं शरीर । वह मेरे खाते के बने हुए हैं अभी मेरे बनेंगे तो फिर मेरा खाता तुम बनाएंगे, फिर मेरे खाते से जो तुम खाते पीते रहेंगे और देह के संबंध भी रहेंगे सदा सुख के । कभी उसमें रोग नहीं होगा, कभी कोई दुख नहीं होगा, कभी अशांति नहीं होंगी इसीलिए बाप कहते हैं यह सब अभी पुराना, यह रावण का खाता, रावण की प्रॉपर्टी हो गई वह दे दे उसको, छोड़ दे अभी । उसकी क्या करेंगे? इसने तो तुमको दुख दिया है ना, तो उससे अपनी आसक्ति अभी निकाल दे । अभी मेरी प्रॉपर्टी तुम बनो और मेरी प्रॉपर्टी से तुमको जो शरीर, सब, सारी दुनिया देह के सुख के संबंधी जो मिलेंगे स्त्री पति सभी राजा, प्रजा, सभी जो भी समबन्ध मिलेंगे न सभी सुख के मिलेंगे । रावण के संबंध देखो कैसे

हैं दुःख के, लड़ते झगड़ते, प्रजा प्रजा पर फलाना उसके उपरसब लड़ते झगड़ते रहते हैं बाप बेटा भी लड़ता है, स्त्री पति भी लड़ते हैं, जो भी हैं जो राजा बन के नेता है बैठे हैं सब लड़ते झगड़ते रहते हैं आपस में, नेता नेताओं से लड़ते हैं, नेता प्रजा से लड़ते हैं, प्रजा उनसे लड़ती है सब लड़ते ही रहते हैं कोई है, सारा दिन देखो समाचार, मारामारी, लड़ाई झगड़े, फलाना फलाने यह सब देखो क्या लगा है । तो कहते हैं देखो ये रावण का राज है ना । बाप कहते हैं इनका सब छोड़ो संग जी अभी तुमको दुख देने वाले सब है । इसीलिए कहते हैं उससे आसक्ति तोड़ो। अभी अपना मन मेरे से लगाओ तो मेरे राज में आ जाएँगे और मैं जो तुम्हारा भी अपना संबंध बनाता हूं इसमें देखो कितना सुख है तो मेरी प्रॉपर्टी में सुख है ना । रावण की प्रॉपर्टी में दुख है तो अभी दे दो उसको । छोड़ो आसक्ति, अब चलो मेरे साथ, अब मैं फिर जो तुम्हारा बनाऊंगा तो सदा सुख का । क्या? राय पसंद है ना, तो फिर चलो । अब उनके साथ संबंध जोड़ो, वह कहता है रिलेशन मेरे से जोडो और फिर मेरे रिलेशन से तुमको जो अपना रिलेशन भी बनेगा ना, देह का वह भी अच्छे बनेंगे । तो पहले मेरे से रिलेशन जोड़ो तो देह के रिलेशन भी तुमको अच्छे मिलेंगे । अभी मेरे से रिलेशन तोड़ा है, रावण से विकारों से रखा है, तो विकारों के रिलेशंस जो भी है वह सदा दुख के, तुमको दुख ही देंगे । और देख ही रहे हो दुखी ही पाते आए हो ना तभी तो मुझे याद करते हो । शुरू से आया रावण और शुरू से मुझे याद करना शुरू किया । भक्ति चली तभी थोड़ा भी रावण का पांव चला ही उसने अभी पाँव ही रखा तो तो तुमने मुझे याद करना शुरू किया । परंतु उसी समय थोड़ा दुख

था, पहले थोड़ा उसका भभका था, अच्छा तुम को सुखी रखा उसने, पीछे तो अभी उसकी भी ताकत चली गई है ना तो अभी दुख होता जा रहा है । इसलिए बाप कहते हैं पुकार तो तुम उसी टाइम से ही शुरु कर दी पर उस समय उसका पहला समय था तो कुछ सुख था परन्तु अभी तो उसका सार निकलता गया उसकी भी ताकत अभी, वह जो थोडा सुख था वो उसकी चली गई । बाकी हाँ भभका उसका जोर है अभी साइंस फलानी वो सब वो नहीं समझते हैं अभी अंत है वो समझते हैं सब कुछ अभी ही तो मिलना शुरू होता है, अभी तो दुनिया का पता चला है, अभी तो दुनिया खोज ली है, अभी तो दुनिया क्या है उसका मालुम पडा है, वो सब समझते हैं अभी तो दुनिया को भोगने लगे हैं इसलिए समझते हैं, आज देखो एयरोप्लेन फलाना ये, वो, हाँ हवा में उड़ते हैं ये करते हैं अभी तो सबके ऊपर राज करना शुरू करते हैं चाँद के उपर सूर्य के ऊपर, हवा के ऊपर पानी के ऊपर सब के ऊपर अभी तो राज करना शुरू करते हैं वो समझते ऐसे है परन्तु नहीं, बाप कहते हैं, ये तो सब तुम्हारे आर्डर में चलने वाले हैं, लेकिन वो कैसे चलेंगे जब तुम अपने कायदे पर अथवा अपनी धारणाओ के ऊपर, जो तुम्हारी श्रेष्टता है उसके ऊपर आएँगे । तो ये तो सब तुम्हारे सब सेवाधारी अपने आप तुम्हारे आर्डर में काम करेंगे । तो ये सभी चीजे बैठकर करके बाप समझाते हैं तो ये सभी बुद्धि में रखने की है की हम बाप से सभी, वो गीत भी है न एक... तो ये सब की वाघे मेरे हाथ मे होंगी चाँद की सूरज की ये सब की वाग्हें तेरे हाँथ में होंगी पृथ्वी की आकाश की सब तेरे हाँथ में । तो देखो ये सब वाघें अभी हाँथ में मिलती हैं न । एक पृथ्वी एक आकाश

तो उसमें एक राज्य, एक धर्म, बहुत हैं तो देखो टुकड़े टुकड़े कर दिया है न, प्रथ्वी एक लेकिन उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं, आकाश एक उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं, क्योंकि बहुत हो गया है इसीलिए बाप कहते हैं एक तो एक में एक ही होने से सदा सुखी रहेंगे, इसीलिए कहते हैं देखो सबकी बाधे तेरे हाथ में दे दी है, तो ये है अभी अपने हाथ मेंतो यह सभी चीजें अच्छी तरह से समझने की है। इसलिए बाप बैठकर करके अच्छी तरह से यह सभी बातें बुद्धि में डालते हैं। और कैसे अपनी दुनिया को पूरा सुखी बनाओ, अपने दुनिया से पूरा सुख लो उसी सभी बातों की पूरी तरकीब देते हैं। बाकी तो दुनिया की सब सजावट है, यह चांद, सूर्य, सितारे यह कोई दुनिया नहीं है, दुनिया एक है यह तो उनके लिए सब सजावट है, जैसे एक घर है ना देखो तो इसमें बिजली है, इसमें सजावट होती है जो अच्छा साहूकार आदमी है तो अच्छा फर्नीचर, सजावट सब रखेंगे और इसी तरह से जितना जितना होता है यह भी ऐसा ही है। जितने हम.... देखो पहले सतयुग है अच्छे हम है तो हमारे घर की भी सजावट अच्छी है पक्की अच्छी, वनस्पति अच्छी, पशु अच्छे, जो भी वृक्ष आदि सब फल फूल सब हमको अच्छे अच्छे तो उसी टाइम हा, ये तो बत्तियां हैं चाँद और ये सब हाँ तो रौशनी है ये न होता तो दिन और रात ये सब कैसे होता, तो ये सभी घर की सजावट है, बाकि ये नहीं की वो घर है, घर तो यही है, तो वर्ल्ड जो है उसमे जो है ... जैसे हर में बाकि सजावट होती है फर्नितुरे होते हैं न यहाँ ये सब इसी तरीके से ये सब चाँद सूरज सजावट हैं बाकि ऐसे नहीं की इसमें कोई दुनियाएं हैं, या इनमें कोई दुनिया चलती है या कोई मनुष्य रहते है नहीं , ऐसा नहीं

ये तो बिचारे खोजते खोजते इनकी दुनिया ही ख़तम हो जाएंगी ना बस इनका नतीजा ये ही है बाकि ये नहीं की इनमें कुछ खोज पाना है या कोई दुनिया इनको मिलनी है है ही नहीं तो मिलेंगी कहा से? तो ये सभी चीजें अच्छी तरह से समझने की है जो बाप बैठ कर कर के समझाते हैं और इसका सारा चक्कर कैसे चलता है अपना टाइम का और इसी टाइम का होकर के गिर कैसा रिपीट होता है ये सब बातें समझने की है की हूँ बा हूँ सबकी लिए इनका फिर हूबहू रिपीट होता है इसिलए कहते है न ये तुम और हम अभी भी हैं फिर भी होंगे परन्तु कभी ? 5000 वर्ष के बाद फिर हूँबहू। देखो ये आज का हूबाहूँ जो हम एक एक अक्षर कहती हैं और ये भी फिलोसोफी बड़ी दीप है जिसको समझना है की हूँ बा हूँ फिर वो ही रिपीट होता है तो हूबहू ये जैसे ये हमारा ये हाँथ ,ये जैसा भी रखा है इसी टाइम पर फिर 5000 वर्ष बाद ये ऐसा ही रहेंगी, इसका ज़रा ऐसा ऐसा थोडा भी फरक नहीं होंगा, परन्तु कई बिचारे इसमें मुझते है की ऐसा कैसे वाही चीज कैसे बनेंगी परन्तु ये जैसे ड्रामा शूट किया हुआ होता है न, फिल्म अगर चलेंगी तो जिस टाइम चलेंगी जो सीन होंगी उसमे किसी का हाँथ ऐसे चला तो भी उसी टाइम पर फिर हूँबहूँ ऐसा ही रिपीट होंगा, क्योंकि एक बार शूट हो गई न, तो ये अपने टाइम पर फिर उसका हूँबहूँ चलेंगा उसका ज़रा भी फरक नहीं। ये सभी बातें समझने की हैं इसमें बड़ा दीप बुद्धि चाहिए और बहुत इसमें गुह्यता भी परन्तु ये बातें जो पुराने हैं न उन्हों को समझाने की, अगर नयों को समझाएंगे न देखना उसका माथा खराब हो जाएंगा, समझेंगा अगर हूँ ब हूँ तो फिर अभी हम गिरा है तो फिर भी गिरेंगे हूँ ब हूँ गिरेंगे तो फिर अभी हम

चढ़े ही क्यों, वो तो ये सोचेंगा उनको ये नहीं आएंगा....वो कहेंगा अभी हा हम गिरे हैं फिर अभी हम पुरुषार्थ करें फिर भी अगर गिरना है तो गिरे ही रहे, गिरे ही पड़े रहे अच्छा है, ये नहीं ख्याल करेंगे के नहीं, अरे भाई जीवन में मनुष्य कभी ये सोंचता है की अच्छा अभी मैं मरुंगा ही, मरना तो है ही तो उसके लिए कुछ न करू बैठा है, बस मरना है मरना है खाली ये सोंचता रहे, मरना ही है तो न कुछ कमाऊं न खाऊ, अ पढू न कुछ लिखू न कुछ करूँ बस, ऐसा कोई मनुष्य करता है ? भाई मरना तो है न, न , मालूम कल को मर जाऊ, कल को मर जाऊ कल को मर जाऊ करते कोई बैठ जाता है ? नहीं , करते तो सब हैं पढूंगा, लिखूंगा, शादी करूंगा, बच्चे पैदा करूंगा, ये करूंगा वो करूंगा, तो मनुष्य ये सोंचते और करते हैं न, बैठे थोड़ी रहते हैं । तो जैसे एक जीवन जो अकाले मृत्यु की है तो उसको भी मनुष्य ऐसा न समझ करके की मै कहीं कल को न मर जाऊ, इसीलिए कोई कुछ न करे, ये तो बात सही नहीं है न तो ये सोंच की हा कल को फिर गिरना है इसीलिए कुछ न करे ये तो बात ही नहीं है न तो ये सोंचना की हाँ फिर कल को गिरना है इसिस्लिये कुछ न करें ये कोई समय थोड़ी है नहीं अभी तो चढने का टाइम है न तो अभी तो चढ़ जाए न । चढ़ कर कर के चढ़ाई का मजा ले ले न । अब तो जो कुछ अपनी चढ़ती कला का टाइम है उसका आनंद ले लें । बाकि ये चक्कर है उसको चक्क्कर को तो चलना ही है, इसलिए उसका मतलब ये थोड़ी है की गिरना है तो गिरे ही रहे, गिरे ही रहे तो९ फिर गिरे ही पड़े होंगे यानि फिर तो चढ़ने का कभी चांस उसको मिलेंगा ही नहीं कल्प कल्प का चांस उसको बैठेंगा न । ऐसा

आना भी उसी की बुद्धि में है जिसको गिरने के समय ही आना है वो गिरा ही रहा न, सदा जब गिरने का टाइम होंगा न तभी आएंगा जब गिरने का टाइम होंगा तब आएंगा तो गिरा ही रहा न तो ऐसे करने वाले फिर पुरुषार्थहीन फिर गिरे ही पड़े रहेंगे यानि जब दुनिया के गिरने का टाइम होगा तब गिरने वाली दुनिया में ही आएँगे, इस रावन वाली दुनिया में वो राम वाली दुनिया ,इ नहीं आएँगे वो तो गिरा ही पडा न, मानों उसने अप्पना लक नूंध ही ऐसा लिया वो गिरा ही पड़ा रहा, वो सदा ही गिरा ही रहा, तो उसने अपना गिरा ही बना लिया, परन्तु नहीं, हमको अपना जभी है चढ़ने का चांस, और चढ़ने का चांस अभी हमरा पूरा है, और हम इतना भाग्य अपना बना सकते है तो क्यु नहीं बनाएं, क्यों हम अपना गिरने में रखे क्यों नहीं चढ़ने में रखें,तो ये तो अकल की बात है न । इसलिए बाप कहते है बच्चे अकल्मन्द बनों ऐसे नहीं ही की.कोई.... ये बातें भी बहुत गुह्य हैं । जो जो अच्छी तरह से समझते जाते हैं, उन्हों को समझाते हैं तो आप पुराने हो, अब यंग्लोर कितने बरस का है ? 10 बरस का । 10 बरस का देखो 10 बरस का कोई कम थोड़े ही है 10 बरस के देखो बूढ़े हो गए । बूढ़े का मतलब है ये संगम की आयु बहुत छोटी है इस संगम की आयु में तो 10 बरस कोई कम नहीं है । इसमें 10 बरस में तो बहुत आगे बढ़ने चाहिए लाइट बहुत रहनी चाहिए । तो इतना तेज होना चाहिए तो ऐसे जो यहाँ हैं तो उन्हों को थोडा ये बातें समझाई जाती हैं नहीं ओ नयों के लिए तो उसका माथा चक्कर में आ जाए, उसका उलटा कोई ले सकते हैं इसिलए कभी नयो को ये बाते नहीं समझनी चाहिए । नयों को भी कैसी वातें समझानी चाहिए, क्या

समझाना है उसको तो खाली बाप का रिलेशन समझाओ, नए के लिए । तो उसको ये बहुत बातें भी समझाने की नहीं हैं ड्रामा वगेरह का ये सब कोइ बातें कोई नहीं देनी हैं, सिवाए बाप से रिलेशन के क्योंकि उसका तो अभी रिलेशन बाप से टूटा हुआ है न, उसको जुटाने की उसको हिंट देने की है, की तुम्हारा रिलेशन उस बाप से होना चाहिए वो हमारे पिता हैं, पिता से तो फिर पुत्र का सम्बन्ध होना चाहिए न, वो सम्बन्ध कहाँ है फिर? पिता है तो तुमको क्या उससे मिलना हैं, वो मालूम होना चाहिए तुमको, की क्या उससे लेना है तो उसको टेम्पटेशन बैठेंगी न की बाप से कुछ मिलना है । बस मिलने की बात तो आजकल कोई सुनता है, मिलना है तो झट पकड़ लेंगा, खाली मिलने की बात ही बताओ किसको हाँ । परन्तु क्या है ये मिलना ज़रा इस आँखों से नहीं देखते हैं न तभी फिर बिचारे ही जाते हैं वो समझते हैं जैसे नए पैसे हाँथ में कोई मिले न तो देखो फिर कैसे पकड़ लेंगे, सब छोड़ के बैठ जाएँगे, परन्तु अभी तो वो नए पैसे की तरह तो चीज नहीं है न । ये तो है भविष्य प्रालब्ध, इसीलिए कहते हैं नहीं बच्चे, अभी तुमको जोड़ना है और मिलना तो तुमको भविष्य जेनेरेशंश में हैं न। परन्तु करना तो अभी है न । अभी न करेंगे तो मिलेंगा कैसा? इसलिए बाप कहते हैं अभी मेरे से रिलेशन जोड़ो और जोड़ करके अभी जैसे मैं कहूं, वैसे करो । फिर करने का नतीजा तुमको जरूर मिलेगा । तो ये सभी चीजें समझने की होती है और समझ कर कर के बाप से अ अपना अधिकार पाने का है । तो ऐसे बाप से पूरा पूरा जोड़ना है । और कभी भी कोई नए को ऐसे नहीं समझाना है कि भक्ति मत करो, ये न करो क्योंकि ऐसे भी न हो कि

ना भगत रहे ना ज्ञान प्राप्त करें और ही नास्तिक हो जाए, न इधर का न उधर का कहते हैं न धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का । ये कहावत है की ना इधर का बने ना उधर का बने और ही नास्तिक हो जाए। तो ऐसा भी नहीं किसी को कहना है की ये नहीं करना है, भक्ति नहीं करो, माला नहीं फेरो, ये नहीं करो, नहीं अच्छी बात है न फिर भी उलटी सीधी पर, फिर भी भगवान् का नाम लेते हैं न फिर भी उलटा ही सही परन्तु उसको कहना नहीं है की ये छोडो, हाँ विकारों के लिए कह सकते है की छोडो, कहते हैं ना, भाई कि यह विकार, यह काम, यह क्रोध, लोभ, मोह, इन्हीं को छोड़ो, यह छोड़ने की चीजें हैं बाकी उसको कहो की माला सिमरना, यह सब करना छोड़ो, नहीं वह अपने आप, जब समझ आ जाएंगे ना। देखो हम सब भी करते थे ऐसे थोड़ी है हम भी यह ठाकुरों का पूजन, यह सब जो भी होता है, घर में तो देखते थे अपने मां-बाप को, बड़ों को, वह हम भी करते थे, सब करते थे ज्वेल्लेरी बजाते थे, उनको कपडे पहनते थे, खिलाते पिलाते थे, रखते भोगते फिर खा जाते थे अपन, वह समझते थे अच्छा अच्छा कभी उनको बनाकर खिलाते थे, फिर समझते थे कि यह भोग तो फिर हम ही खाएंगे ना, अच्छा-अच्छा खिलाते थे परंतु फिर खा तो हम ही जाते थे तो यह तो सब करते थे लेकिन जब समझ आ गई तो कहते हैं यह तो गुड़ियों का खेल है । गुड़िया होती है ना, बच्चे होते हैं छोटे-छोटे, फिर गुड़िया बनाते हैं, गुड़िया समझते हो? डॉल्स । तो डोल्स बनाते हैं फिर डोल्स की आपस में शादी कराते हैं फिर डॉल्स को खिलाते हैं, फिर डोल्स का सब करते हैं तो अभी जभी बड़े हुए हैं तो ज्ञान आया है, तो लगता है

यह डॉल का खेल है, हा ये तो जैसा डॉल्स हैं । तो इसको कहते ही है आईडीअल्स परसती, तो देखो यह डॉल्स है ना । तो अभी देखो ये बहुत बंगाली लोग हैं ना ये डॉल्स बनाते हैं । यह सरस्वती की, यह सब गुड़िया बहुत ही बनाते हैं । जब नवरात्र होते हैं देवियों का, नवरात्रि में बहुत देवियों का अच्छी अच्छी बनातें हैं, फिर उनको सात रोज पता नहीं, नो रोज कितना, ये इनका बहुत पूजन करते हैं, कपडे पहनाते हैं उसको भेंट वेंट बहुत खिलाते पिलाते हैं अच्छी तरह से, घर घर जा कर कार के अच्छी तरह से, हरी बोल करते है बहुत अच्छा । उसको बनाया भी, उसको उत्पत्त भी किया, घर को वो तोड़ फोड़ के बनाया भी और फिर उसको खिलाया पिलाया उसको पालना पोसना भी अच्छी तरह से फिर पलना पोषण करके उसको विनाश भी कर देते है । तो फिर तो बडे भगवान् तो खुद हो गए न, वो भगवान् की डॉल्स बना कर के भगवान् को पैदा भी किया भगवान् को पाला भी और भगवान् को डूबोया भी, तो बाप कहते हैं इसको कहा जाता है आइडल परश्ती । परन्तु अभी में आ कर कर के समझाता हूँ की..... चलो फिर भी ये आइडल्स से यानी की डॉल्स से खेलते हैं न तो फिर भी ठीक है, कोई भी करते हैं की भाई ये गणेश है ये हनुमान ये डॉल्स है, फिर भी कम से कम भावना शुद्ध तो उसमें रखते हैं न उसके लिए वो कम से कम थोडा बहुत शुद्ध रहेंगे, शुद्ध विचार रखेंगे, ये फिर भी अच्छा है, नास्तिक से ये डॉल्स से खेलना अच्छा है जो कुछ न कुछ उससे अच्छे तो रहेंगे न, इसीलिए कहते हैं की किसी को ऐसे नहीं कहना है,..ये तो समझाई जाती है बात जो समझते जा रहे है उन्हों के लिए, बाकि कभी भी कोई नए को ऐसा नहीं कहना है की

नहीं ये आइडल परश्ती है या ये डॉल्स हैं वो तो फिर बिगड़ पड़ेंगे, कहेंगे हाँ हमारे देवता को तुम ऐसे कहते हो हाँ ? लाठी लगाने में देर नहीं करेंगे तो सब संभालना, ये बातें भी बतला देते है ज़रा ख्याल से..... कभी कभी कोई आते हैं न यहाँ भी जोश में आ जाते हैं वो सर्विस के जोश में, परन्तु नहीं पहले तो विकारों का हाँ जो गन्दगी पहले है पहले तो वो छुडानी है, ये फिर भी पूजने में लगे हुए हैं तो फिर भी कुछ न कुछ तो उससे तो अच्छे रहेंगे न, वो तो विकार तो बिलकुल गंदा तो पहले बिलकुल ये गन्दी चीज छुडानी है, जब वो छूट जाएंगी, समझ जाएंगे उसको वो आ जाएँगे समझ में की ये सब वेस्ट ऑफ़ टाइम वेस्ट ऑफ़ मनी ये सब है, उसमें देखो उसमें कितना खर्चे करते हैं इन सब बातों के ऊपर। तो बाप कहते हैं की ये सब चीजे फिर अपने आप ही छूट जाएंगी, परन्तु पहले जो सुनाने की है, रहने के लिए जो चीज हैं वो ये विकारों की है की जिसने गन्दा बनाया है , जिसने जीवन बर्बाद किया है पहले तो उन्हों को इन बातों पर रौशनी देने की है और बाप से रिलेशन जुटाना है और पवित्र रहने के लिए उन्हें धारणा देनी है। समझा, तो ये भी पॉइंट्स आप लोगों को क्यों दी जाती हैं, की किसी के साथ में आप लोगों की बात चीत तो चलती है न तो क्या पहले समझाना चाहिए, इसी के लिए, ऐसे नहीं है की ये साब ज्ञान की बातें सब उस पर ऐसे ही डाल देना है तो उसका माथा फिर खराब हो जाएंगा इसलिए क्या पहले समझाना चाहिए, पहला लेसन कौन सा है, पीछे बाद में जितना पढता जाएंगा अगर छोटे यानि पहले लेसन वाले को हम बड़ी बात सुनाएंगे तो उसका तो माथा ही खराब हो जाएंगा न फर्स्ट क्लास वाले को यानी जो क्लास पहला

है, उस वाले को अगर हम सातवीं क्लास का बैठकर करके बातें सुनाएंगे तो वो बिचारा बच्चे क्या समझ सकते हैं, समझे न, नहीं ? और ही माथा उसका खराब हो जाएंगा , ऐसे नहीं की ऊपर वाले की बात नीचे वाले को लेना चाहिए नहीं लेसन बाए लेसन । इसीलिए नए को हमें इस बाप का नोलेज देना है क्योंकि वो ही तो रिलेशन जरुरी है और फिर पवित्र रहने का की हां भाई पवित्र रहे तभी उससे रिलेशन जुट सकेंगा। इसीलिए कभी भी, यहाँ भी समझाने वाले हैं न कभी नए नए तो ऐसे कभी भूल न कर देना हाँ की किसी को कह दे की क्या करते हो, भगवान् ऐसा नहीं हैं, उन्ही पूजन या भक्ति के उपर का कुछ भी ये उसको हटाने की बात नहीं कहनी है, तो अपने आप जभी आ जाएँगे समझ में तो फिर बतलाएंगे जैसे बच्चा होता हैं न छोटा , छोटेपन में डॉल्स का खेल करते हैं जब बड़े होते हैं न तो इनसे खेलना बच्चों का अपने आप छूट जाता है ,छोटे होते हैं तो खिलोनो से खेलते हैं जब बड़ा हो जाता है तो उसका खिलोनों का खेल अपने आप छूट जाता है। ये खिलोने का खेल अपने आप छूट जाएंगा, बड़े होते जाएँगे समझ आती जाएंगी खेल अपने आप छूट जाएंगा। और छूटने का है, देखो छूट ही जाता है न। फिर आकर के वो चेतन्य डॉल्स खेलने का आता है की की इसको चेतन्य डॉल बनाएं,यानि चैतन्य में देवता बनाएं, वो नहीं की वो डॉल्स हम पत्थर की बना करके ये करें लेकिन चैतन्य डॉल्स देवता बनाएं, देवी बनाएं फिर वो खेलने का सौंख आ जाता है न तो जिन्हों को चेतन्य का सौंख बैठेंग वो जड़ से बैठ कर कर के खेलेंगे ,नहीं ! फिर वो सौंख चला जा है। फिर आता है की मनुष्य को देवता बनाएं । नारी को देवी बनाएं, नर

को देवता बनाएं तो ये डॉल्स प्रेक्टिकल चैतन्य में, इन्हों को देवी देवता बनाएं तो फिर हा उन्ही से ये संसार हो जाए तो कितना सुख का हो जाए फिर ये सौंख आ जाता है न। अभी भी आप देखो तो ये खेल करते हैं परन्तु कौन सा खेल है अभी हाँ ? ये ज्ञान का है , ज्ञान का यानि की हमारे में अभी ये सौंख आया है की नहीं नारी को देवी बनाएं नर को नारायण , नारी को लक्ष्मी बनाएं। सच सच बनाएं वो तो खाली लक्ष्मी या नारायण या गुडिया बनाए कर कर के, फिर आपस में करते है शादी । वो तो जड़ की बनाते हैं न अभी इन्हों को चैतन्य बनाएं । तो ये खेल अच्छा या वो खेल अच्छा ? तो जभी समझ आ जाती है न फिर वो सौंख आ जाता है की हा बनाएं । परन्तु जब वो इतना ऊंचा बड़ा होंगा न इतना बनाने की भी हिम्मत चाहिए किसको समझाने की भी सब बातें चाहिए तो जब आ जाती हैं तो अपने आप उसी में बिजी हो जाते हैं। बाकि तब तलक किसी को कहना नहीं ये सब बात, सभी के ख़याल में होवे की कभी कोई ऐसी मिस्टेक कर न बैठे। तो इसी लिए ख्याल में दी जाती हैं । अच्छा चलो अभी टाइम हुआ हाँ आज छुटटी वुट्टी तो नहीं है, फिर सभी ये धारणा में चलने वाली हैं माताएं? ,सुनीता कभी खिलाया है तुमने? ये तो ब्राह्मणी है न यहाँ की टीचर । अच्छी है और ये यहाँ की बैंगलोर की सौगात है नहीं, हा? बेंगलोर वालों ने दी है सेवा के लिए। इसका पिताजी नहीं आया है शायद आज, तो देखो ये भी सेवा के लिए, सच्ची रूहानी सर्विस के लिए, तो ये भी महादान है,अभी किसको शादी करा देते थे, बेचारी हाँ जाकर के अभी दो चार बच्चे पैदा हो जाते बस उसी मैं जीवन निकल जाती, परन्तु ये फिर देखो यहाँ माताएं कितने

बच्चों की माताएं बनकर के... ये है दैवीय सर्विस, ईश्वरीय सर्विस जिससे कितनी जनता का सुख हो जाता है, तो ये तो अच्छी है और बाप कहते है बच्चे वैसे भी ये एक जन्म तो पवित्र रहना ही है। इससे तुमको बल मिलेंगा योगी रहेंगा इसमें फिर अपनी क़ुअलिफ़िकतिओन्स भी रखने की है धारणा, इतना फिर इसका स्टेटस भी जितना जितना फिर इसका स्टेटस बनेंगा,तो ये फिर अपनी अपनी धरनों को रखते और फिर चलना , और अपने को लायक बनाना, ये फिर हर एक का इंडीविजुअली अपने पुरुषार्थ के ऊपर है। तो ये रखना है हाँ हर एक जो करेंगा सो पाएँगा । अभी करना और फिर हर एक का अपना अटेंशन है न तो अपने क्वालीफिकेशनस में धारणा में ले आना।सविता भी बेंगलोर का कितना शो करती है क्या तमिल है? तेलगु है ?तेलगी अच्छा ये तेलगु है तो देखेंगे तेलगु को अबकी नाम बाला करेंगी। अच्छा तुम्हारे लिए तो रहना चाहिए एक रह गया (अम्मा के लिए है) नहीं कोई बात नहीं तो यह सब चीजों को बैठ कर करके समझने का है, तेलुगू तमिल कंगी वह भी इन सब का नाम वाला करना है ना। तो ऐसा बाप दादा और मम्मा की मीठे मीठे और सबूत बच्चों को याद प्यार और गुड मोर्निंग। तो बाप कहते हैं देखो क्या कर दिया, नहीं तो असूल में ओरिजिनल बात है विकारों की बल(बलि) । यह है अपना जीवन का बल, जीवन कौन सा? यह विकारी जीवन। तो देखो ये जीवन किसको उपर बल चढ़ाई है ? परमातमाँ के ऊपर शिव के ऊपर। बल चढ़े हैं, शिव काशी हाँ, वो बल चढ़ने का तो हम शिव के ऊपर बल चढ़े हैं असूल काली के ऊपर बल। वो कहा है न माताओं के ऊपर , अभी बाप कहते हैं की बल दो ये

निमीत्त बनीं हैं न। तो वो माताओं का भी रख दिया है काली का। तो यह सभी असल में चीजें अभी की है देखो, अभी की बात है न बल चढ़ना परमात्मा ने आ कर के विकारों से छुड़ाने की अभी यह सब युक्ति बतलाई है न। तो बल चढ़ना वो भी अभी की बात है अभी कि यह देखो यादगार, तो कैसी शक्लें रख दी है क्योंकि यह शक्ल तो नहीं रख सकते हैं न । यह शकल भी कैसे रखें ये फोटो भी कैसे रखे इसीलिए वो न इधर का ना उधर का, वो एक भयंकर काली की या दुर्गा को बहुत बहुत भुजाएं दे कर के, ये सब इन्हों का शक्ति का बल का कि हां भाई इन्होने बैठकर करके इन्होने जो काम किया है। तो यह सभी चीजें हैं अभी की। तो देखो ये बब्राह्मणियों का चित्र जो अभी का है, ये ब्राह्मण है न हम अभी। तो अभी ब्राह्मणियोंका चित्र और देवियों का , देवता फिर सतयुग के हुए जैसे लक्ष्मी उसको ब्राह्मणी नहीं कहेंगे, लक्ष्मी सतयुग की है उसको देवी और हम सरस्वती अभी भाई सरस्वती दुर्गा काली ये सब अभी की हैं तो यह सभी बातें अभी समझने की है ना कि अभी का कर्तव्य और वह फिर भविष्य परालब्धदेवता बनने का तो ये डिफरेन्स है तो ब्राह्मणियों का भी पूजन है यानी उसका भी रखते हैं परंतु उसके शरीर तो यह नहीं पूजे जा सकते न क्योंकि ये शरीर तो विकारी हैं न, वो कैसे फोटो में रखेंगे इसीलिए उनके अभी अजीब से अजीब से और चित्र बना रखे हैं अलंकार के रूपों में तो ये सभी चीजों ऐसे तो देखो कृष्ण के भी चित्र बनाएं जो जो अच्छे अच्छे एक्टर्स देखते हैं न अच्छे अच्छे शकल देखते हैं उसका ऐसे थोड़ी ओरिजनल कृष्ण का कोई फोटो है कृष्ण देखो कई फीचर्स वाला कृष्ण है नहीं तो होंगा तो एक आध ही न तो

एक ही फोटो रखे न परन्तु जो जो जिसका जिसका अच्छा देखेंगे न कोई एक्टर का कोई एक्ट्रेस का रख देंगे उसमे। नहीं तो कृष्ण का देखो लक्ष्मी नारायण का देखो कितना, कितना, एक ही कृष्ण है परन्तु उनके फीचर्स, भले छोटेपन में बडेपन में फर्क पड़ता है परन्तु फिर भी बड़े भी देखेंगे न समे अपना अपना अपना है। तो होंगा तो एक आध ही न, नाप तो एक जैसा ही होंगा न नाप तो, आँखे तो एक जैसी ही होंगी न ऐसे थोड़ी इसका फोटो निकालो करके कितने भी फोटो निकालो, शकल तो ऐसे ही निकलेंगी न, करके छोटेपन में बडेपन में थोडा बहुत फर्क होंगा। परन्तु श्री कृषन का तो देखेंगे कहाँ कैसा कहाँ कैसा, कोई कैसे फीचर्स वाला एक शकल थोड़ी है तो क्यों ? ओरिजनल तो नहीं है न जिसका कोई लड़के का, अच्छी देखा तो देवी बना दिया उसको या कोई एक्टर है या एक्ट्रेस का देखा अच्छा वो लगा देते हैं । बाकी तो कोई ओरिजनल तो नहीं है न, तो बाप बैठ करके समझाते है की वो तो जो ओरिजनल कृष्ण का फोटो या ओरिजनल ये सभी वो तो ओरिजनल उन्हों को अपना ही था न तो सभी चीजों को भी बैठकर कर के ये तो चित्रकारों ने फिर नैथ्लकर कर के अपने अपने ढंग से ये सब बनाएं हैं तो ये सभी चीजें हैं जिसको अच्छी तरह से समझने का है । तो बाप बैठकर के तो ये चित्रकारों की चित्र जो बनें हैं उनका भी क्या है ये बैठकर कर के समझाते हैं और मैंने कैसे किया है वो प्रेक्टिकल कैसे हुआ है वो बैठ कर कर के समझाते हैं तो ये देखो अभी प्रेक्टिकल। तो बाप ने कैसा काम किया है ये कैसा काम हुआ है जो बैठ कर करके बाप अभी समझाए रहे हैं। तो इसमें भी अभी कोई मूंझने की तो बात नहीं है न

, कैसे आया तन में ? क्या हुआ तो सम्ह्झाते है अभी इसी तन को भी कहा देखो बैल बनाया कहाँ कुछ किया, कहाँ कुछ किया , कहाँ कुछ किया देखो ।तो वो क्यूंकि उनको कहा न गौशाला खोली है तो गौशाला में तो बैल भी चाहिए गैया भी चाहिए न तो फिर ये बैल और गैय्याँ और ये सब चीजें रख दी हैं। परन्तु कोई गौशाला कोई इन्हुमन गौशाला थोड़ी खोली है। ये गौशाला जिनमें मातें कन्याएं, और पुरुष सब हैं तो ये सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं मैंने कैसे प्रेक्टिकल काम किया है और उस प्रेक्टिकल काम का कैसे शास्त्र कैसे ग्रन्थ उसमे कैसे बातें लगाईं हैं, चित्रों में कैसे बातें लगाईं हैं तो फरक पड गया है तो इसी फरक् के कारण मूंझ गए हैं। तो बाप आकर कर के कहते है तो फिर इसी मूंझी बात को मैं फिर सुलझाता हूँ । तुम मूंझ जाते हो मैं आकर के हूँ।

मम्मा मुरली मधुबन

06. आत्मा और परमात्मा में अंतर और परमात्मा का कर्तव्य

रिकॉर्ड :

छोड़ भी दे आकाश सिंहासन

परमपिता परमात्मा, अभी उसको जानते हो ना, कि हमारे परम प्रिय, परम पिता परमात्मा। परमात्मा अक्षर सीधा कहने से परमात्मा, परंतु परम आत्मा... अगर उसको यानि शब्द को अलग करेंगे तो फिर परम आत्मा। यानी है वह भी आत्मा परंतु परम, जैसे आत्मा में कहा जाता है कि भाई यह महान आत्मा फिर मिलाकर कहेंगे महात्मा, तो फिर उसका है तो सही महान आत्मा, पुण्य आत्मा, पाप आत्मा, देखो आत्मा के ऊपर सब आता है ना, महान भी आत्मा फिर पाप भी आत्मा तो पाप भी आत्मा के ऊपर लगता है। पुण्य आत्मा वह पुण्य करती है तो पुण्य का भी आत्मा। तो यह आत्मा के ऊपर ही पाप, पुण्य लगता है और उसी हिसाब से फिर वह महान आत्मा या पाप आत्मा बनती है। परंतु उसको कहेंगे एक ही सोल जिसको कहा ही जाता है सुप्रीम सौल अंग्रेजी में भी। उसको फिर हिंदी में कहेंगे परम आत्मा। परम आत्मा बहुत नहीं है, महान आत्माएं बहुत कह सकते हैं, भाई महान आत्माए । परमात्माए बहुत नहीं। परमात्मा एक सबसे ऊंचे से ऊंचा। तो यह भी चीज समझने की है कि परमात्मा भी है

आत्मा परंतु उसको परम कहते हैं इसी हिसाब से कि हम सब आत्माओं में अथवा आत्माओं से उनका जो कुछ पार्ट है आत्मा में, वह भिन्न है। हम आत्माओं का भी भिन्न-भिन्न है, एक ना मिले दूसरे से देखो मिलता है? अगर सब कोई का मिले ना तो फिर शक्ल एक जैसी हो, सब कुछ एक जैसा हो, नहीं परंतु कोई कभी ऐसा देखा जिसका सब कुछ एक जैसा होगा, नहीं! भले कहीं कभी दो बालक इकट्ठे भी जन्मते है ना, शक्ल में थोड़ी मुसाबत होती है, परंतु तो भी संस्कारों के हिसाब से कुछ ना कुछ फर्क तो जरूर रहता ही है इसीलिए हर एक आत्मा का भिन्न-भिन्न पार्ट है ही, लेकिन आत्माओं में यह जरूर है कि सबका फिर जन्म मरण में आना है फिर भले कर करके कोई बहुत में बहुत आत्माएं 84 जन्म, फिर कोई 80 जन्म कोई 70 जन्म कोई नंबरवार जन्मों का फर्क, यह इतनी बातें हो सकती हैं लेकिन जन्म मरण में तो आती है ना, हां। तो यह सभी बातें बैठकर करके बाप समझाते हैं। तो आत्माएं सब आती है जन्म मरण में, लेकिन मैं ही एक हूं जो जन्म मरण रहित गाया जाता हूं इसीलिए कि मेरा आना जो है ना वह मनुष्यों की आत्माओं के सदृश्य नहीं है, वह अपने कर्म से जन्म मरण में आती हैं, मैं जो हूं ना वह इस तरह नहीं आता हूं, मैं आता तो प्रकृति का, कोई के शरीर का आधार लेकर करके। आ कर के फिर नॉलेज सुनाता हूं। तो मेरा आना, मेरा पार्ट बजाना और ढंग से हो गया ना सबसे। इसीलिए सब बात में मेरा कर्तव्य भी सब आत्माओं से महान है, भले क्राइस्ट

आया, बुद्ध आया, सब आया, यह भी आत्माएं आई जिनको धर्म पिताएँ कहा जाता है, यानी धर्म का स्थापक, यानी धर्म का क्रिएटर, यानी धर्म अपना जैसे क्राइस्ट धर्म का क्रिएटर कौन हुआ? भाई क्राइस्ट, इसीलिए उसको कहेंगे धर्म पिता, यानी धर्म का रचता, लेकिन दुनिया का रचता नहीं कहेंगे उसको, धर्म का रचता तो क्रिएटर, किसको कहेंगे धर्म के रचयिता को नहीं कहेंगे, क्रिएटर वर्ल्ड का क्रिएटर तो फिर उसको कहेंगे ना, इसी नाते उसका काम सब में भिन्न हो गया। इसीलिए उनको गॉड या परमात्मा यह सब कहने में आता है। तो यह सभी चीजें समझने की है कि उस परमात्मा का सभी आत्माओं से भिन्न पार्ट कैसे हैं। तो यह सभी चीजें बैठ कर कर के खुद ही वह परमात्मा समझाते हैं, तभी तो देखो गीतों में कहते हैं ना कि तू आ, रूप बदल के आ, बुलाते हैं उसको कि आ अभी। आकाश सिंहासन छोड़....अभी आकाश में नहीं रहता है, परंतु ऊपर है ना बिचारे ऊपर का नॉलेज तो जानते नहीं है कि वह कहां रहने वाला है, परंतु रहने वाला है ब्रह्म महतत्व में, यह भी समझने की बात है जैसे हम आकाश तत्व में, इस इधर में हम मनुष्य रहते हैं लेकिन आकाश के पार जिसको ब्रह्म तत्व कहो या अंग्रेजी में उसको कहा जाता है इंफिनिट लाइट। तो इन्फिनेट लाइट में, जिसको फिर हिंदी में कहा जाता है अखंड ज्योति, तो उसमें फिर आत्मा और परमात्मा का निवास है, जिसको ब्रह्मांड भी कहे यानी ब्रह्मांड में यह जो अंडे सदृश्य स्टार लाइक हुए बिंदी लाइक कहो, यह आत्माएं और परमात्मा

निवास करते हैं इसीलिए उसको कहते हैं निराकारी दुनिया कहो, ब्रह्मांड कहो या उनको अंग्रेजी में भी कहते हैं इनकॉरपोरियल वर्ल्ड। तो यह सभी चीजें समझने की है कि हां वह आत्मा और परमात्मा का निवास, अभी कहते हैं तू आ रूप बदल के यहां आएगा कारपोरियल में, तो जरूर कारपोरियल फॉर्म लेगा ना, इसीलिए उनको रूप बदलना पड़ेगा तो कहते हैं अभी आ, जैसे हम आत्माएं भी निरंकारी से यहां इस कारपोरियल में आया करती हैं अभी हम तो फस गए सब, अभी तू आ, तू आ कर कर के हम सभी को छुड़ा, क्योंकि बंधन मुक्त करना माया की बॉन्डेज से यह तुम ही छुड़ा सकते हो इसीलिए उसे बुलाते हैं कि तू आ, इस माया की बाँडेज से हमें छुड़ा। तो अभी छुड़ाने वाले को कहते हैं तू आ, अभी रूप बदलकर के, यहां आएगा तो ऐसे ही आएगा ना कारपोरियल में तो उसको भी कारपोरियल बनना पड़ेगा ना। यहाँ कैसे निराकार आत्मा क्या करेंगे नहीं, उसको भी कॉरपोरियल फॉर्म लेना पड़ेगा इसीलिए कहते हैं रूप बदल निराकार से साकार बन, शरीर को धारण करके तुम भी यहां आकर करके और हमारा अभी यह काम कर, क्योंकि समर्थ तो वही है ना, सर्वशक्तिमान। अभी हमारी तो शक्ति चली गई, हमारे में तो वह शक्ति रही नहीं, हमको तो माया ने पकड़ लिया। तभी बाप को कहते हैं कि अभी आ, हमको आकर के दुख और अशांति से छुड़ा। इस माया की बॉन्डेज से छुड़ा तो हम इस माया की बॉन्डेज से छूटें। तो अभी बाप आकर करके कहते हैं, की अभी आया हूं, बुलाते तो थे

भक्ति मार्ग में... की आ.. आ.. ये देखो भक्ति मार्ग के गीत है ना.. तो अभी यहां मैं जो आया हूं गाया भी है कहा भी है कि जब जब ऐसा टाइम होता है तब तब ही मैं आता हूं, बाकी ऐसा नहीं कि मेरा पार्ट हमेशा ही चलता है जैसे कई समझते हैं कि परमात्मा का पार्ट,.... इस यदा यदा का फिर कहीं अर्थ ऐसे भी,.....कई गीताओं में भी ऐसे ही शायद अर्थ..... किन्होने बैठ करके एसा स्वीकार किया है... उन्होंने ऐसा समझते हैं कि यदा यदा ही धर्मस्य का अर्थ है की जब जब अधर्म होता है तो उसका मतलब है की जहां जहां, जिस जिस में, सर्वव्यापी जो बनाया न...वो कहेंगे जहां जहां, जिस जिस में अधर्म यानी पाप कर्म का होता है जभी, तभी तभी मैं आकर करके उसमें, फिर वह जो जागृति कुछ आती है या ले आता हूं तो मैं आकर के वह करता हूं क्योंकि सर्वव्यापी बनाया है ना परमात्मा को तो उसके काम को भी सर्वव्यापी रखेंगे ना वो। भाई टाइम है परमात्मा का, एक ही समय है जिस टाइम पर आकर करके,.... अधर्म का भी एक ही टाइम है ऐसे नहीं है कि जभी जभी, जहां-जहां, जिसमें जिसमें जिसमें अधर्म होता है तब तब मैं आकर करके उसमें उसमें वह जागृति लेता हूं तो वह तो जब भी, जहां, जिसमें,... वह तो चलता ही रहा परंतु नहीं, बाप कहते हैं मैं तो दुनिया का क्रिएटर हूं ना इसीलिए मेरा काम है कि जब दुनिया अधर्मी बनती है तब आकर करके मैं अधर्मी दुनिया का नाश करता हूं, एक आदमी के अधर्म की बात नहीं है, कभी किसका अधर्म नाश करूं, कभी किसका अधर्म नाश करूँ, कभी

किसका करू, ऐसे तो मेरी करते करते करते करते कभी दुनिया धर्म आत्माओं की बने ही नहीं। उसकी माना सदा ही दुनिया अधरमियों की ही रहेंगी, ऐसे ही हो जाएगा ना कि कभी किसका, कभी किसका, तो इसका मतलब है अधर्मी भी चले आएँगे और दुनिया भी अधर्मी रहती चलेंगी। परंतु नहीं यह भी सब चीजें समझने की है की दुनिया भी कोई टाइम में धर्मात्मा है। यानी धर्म आत्माओं की दुनिया, जिसको ही तो स्वर्ग कहते हैं ना। यानी स्वर्ग अक्षर जो आता है हेवेन, तो हेवन वर्ल्ड को कहा जाता है, ऐसे नहीं कि एक मनुष्य हेवेन में हो तो साथ दूसरे हेल में हों। हेल एंड हेवेन एक साथ तो नहीं,.. एक मनुष्य की तो बात नहीं है ना, हेवन वर्ल्ड है, हेल वर्ल्ड है, तो उसकी माना यानी सब हेल में ही होंगे ना, ऐसे थोड़ी कहेंगे कोई हेल में, कोई हेवेन में उसको हेल् कहेंगे ना कि.... । हेल वर्ल्ड से ताल्लुक रखने की चीज आती है शब्द और हेवेन भी वर्ल्ड से। तो हेवेन्ली वर्ल्ड कहेंगे , हेवेन वर्ल्ड, उसको कहा भी जाता है हेवेन्ली गॉडफादर। तो देखो यह सभी चीजें हैं, कई इनका अर्थ समझते हैं हवेली गॉडफादर का मतलब वह भी हेवेन में रहता है ना इसीलिए हेवेनली है अरे हेवेन में रहता है तो रहने दो, हमारा क्या करता है? नहीं! वह हमारे लिए हेवेन बनाता है जो हम हेल में है ना। ऐसे थोड़ी हम हेल में और वह हेवेन में ही बैठा हो और हम हेल में ही पड़े रहे। ऐसा कभी बाप देखा, जो बाप कहे मैं तो अपना मौज करता रहूं और बच्चे दुखी रहे, क्या भी रहे, नहीं! बाप कहता है मैं बाप ही तभी हूं तुम्हारा, जभी कि

तुम्हारे लिए ही तो मैं सुख बनाता हूं। मैं तो हूं ही दुख सुख से न्यारा, इसीलिए मैं दुख में आता हूं, ना मेरे लिए सुख की बात है न दुःख की । दुख में जो आते हैं उन्हों के लिए सुख की बात है। हेल में जो है उनके लिए हेवेन की बात है। मैं न हेल में आता हूं ना हेवेन की मेरे लिए बात है, लेकिन हेवेन मैं बनाता हूं इसीलिए मुझे कहते हो हवेली गॉडफादर यानी हेवेन के बनाने वाला। बाकी ऐसे नहीं हेवेन में बैठने या हेवेन को भोगने वाला नहीं है। हेवेनली गॉडफादर का अर्थ ही है हेवेन को बनाने वाला यानी हेल की दुनिया से हेवेन की दुनिया बनाया है इसिस्लिये उसको कहते हैं... बनाने वाला हैं न और काम, कर्तव्य के ऊपर,.. बाकी वह कहे की मैं बैठा हूं हेवेन में, मेरी महिमा है, तो तू बैठा है तो क्या है हां? बैठा है तो बैठने दो हम तो हेल में पड़े हैं, खाली तुम्हारे लिए गाते रहे भाई तुम तो हेवेन में बैठा है तो क्या? तू हेवन में बैठा रहे और हम हेल...... ऐसे बाप को तो कोई पूछे भी नहीं, पूछेगा कोई? अभी यहां पर भी हां लौकिक रिश्ते में भी कोई बाप बैठा हो और बच्चे को ना पूछे तो कहेंगे कि तू बैठा है सुखी तो हमारे लिए क्या किया? नहीं, परंतु उसने हमारे लिए कुछ किया है, तब तो हम उसे याद करते हैं ना। तो उसने किया है, काम किया है। क्या काम किया है कि हमारे लिए हेवेन बनाया है अपने लिए नहीं। अपने लिए तो उन को न हेवेन की न हेल की जरूरत है। तो जहां हेल है वहां ही हेवेन है तो हेल एंड हेवेन इस दुनिया में कॉरपोरियल वर्ल्ड में हम मनुष्यों के लिए बात है। बाकी वह तो बनाने

वाला है ना इसलिए कहते हैं कि मैं आता हूं तुम्हारा काम करने के लिए, अपनी निराकारी दुनिया से उतरता हूँ। अवतरण गाते हो ना मेरा कि अभी अवतार ले, अभी उतर तो मुझे कहते हैं उतर,... तो कहां से उतरूँ? अवतार का मतलब ही है अवतरित यानी उतरन। अभी कहां से उतरूँ तो जरूर कोई मेरी जगह है ना अगर सर्वव्यापी बैठा होता तो मैं तो उतरा ही बैठा हूं, वहां फिर उतरने की क्या बात है? फिर अवतरित हो कहने की क्या बात है? फिर अवतार क्यों मानते हैं? नहीं, अगर मैं बैठा ही हूं सर्वव्यापी तो बैठा ही हूं ना और मेरे बैठे हुए तुम बच्चे दुखी होते जाओ होते जाओ बच्चे तो मेरे बैठने का भी कोई महत्व नहीं है। आजकल भी कॉमन तरह से कोई मिनिस्टर अपनी पोस्ट पर बैठा हो और कोई जनता को दुख होता है तो कहते हैं भाई तुम्हारे बैठे हम दुखी हैं, तुम्हारे बैठने का फायदा ही क्या है? भाई उठ, उतरो,...देखो नेहरू को कहते हैं ना जभी कुछ होते हैं हंगामें तो कहते हैं तुम्हारे रहते ये सब हो रहा है भाई तुम उतरो और बहुत नारे लगाते थे क्यों? तेरे बैठे हम इतने दुखी हैं, तू तेरी प्राइम मिनिस्टर होने का फायदा ही क्या है। तो उसी आधार से कुछ ना कुछ थोड़ा थोड़ा थमते थमते,... तो यह सब हमारे,.. हम जनता दुखी बैठी हैं तो ऐसे होता है ना। तो यह भी बाप बैठा हो सर्वव्यापी और हम उसके बैठे-बैठे दुखी होते जाएं तो हम तो उसको कहेंगे की उतरो उतरो, जानते हो कि वह बैठा ही क्यों है? यहां यह तुम्हारे बैठने से फायदा ही क्या है? हम दुखी होते जाएं और तू बैठा सर्वव्यापी, ये

देखता ही रहता है क्यों बच्चे तुम्हारे दुखी होते ही जाते हैं और दुखी बढ़ते जाते हैं फिर तेरे बैठने का फायदा ही क्या है? तो जब भी कॉमन में भी कोई सीट किसी को मिलती हैं और वो उस सीट का काम नहीं करता है तो उसको कहते हैं कि उतरो उतरो तब भगवान् इतनी सीटें लेकर बैठा हुआ है सबका तो खाली देखने के लिए, यहां बच्चे दुखी होते रहे और सबकी सीट में बैठा है, बैठा है सीट में अंदर बाहर क्या करता है? हम दुखी होते रहते हैं, इसीलिए कहते हैं देखो मेरी यह इंसल्ट करते हैं तो जानते नहीं हो कि मैं बैठा नहीं हूं। मैं बैठा होता और तुम दुखी होते? कभी नहीं! मेरे बैठे और बच्चे दुखी हों ये तो इम्पॉसिबल। मैं तो जभी आता हूं तभी तो देखो तुम्हारी दुनिया सुख की बनाता हूं, मेरी प्रेजेंसी में देखो ये दुनिया सुख की बनता हूँ तभी तो देखो तुम याद करते हो अभी तू प्रेजेंट हो,... अवतरित का मतलब ही है प्रेजेंट हो तो फिर तुम कैसे समझते हो की मैं ओमनी प्रेजेंट हूँ ? अगर ओमनीप्रेजेंट होता तो तेरे पास दुख अशांति या ये पाप कर्म सभी यह बातें होती ही नहीं पाप कर्म है तो फिर दुख भी है इसीलिए यह सभी अभी है माया जिनको विकार कहेंगे तो अभी ये तेरे में मया सर्वव्यापी है सबमें मैं थोड़ी, मैं तो आता हूं तुमको इस तुम्हारे दुख से छुड़ाने के लिए अथवा इस माया की बोंडेज से छुड़ाने के लिए ऐसा नहीं है कि सब में,.. सबका स्थान मेरा स्थान है, नहीं, मैं ऐसी चीज नहीं हूं। जैसे तुम आत्मा को भी अपना अपना शरीर है ना, ऐसे थोड़ी ही आत्मा सब में बैठी हो। है? तुम आत्मा सब में हो?

तुम अपने शरीर में हो, तो तुम अपने शरीर में हो, तुम अपने शरीर में हो। हर एक आत्मा को अपना शरीर है। अपने अपने शरीर के कर्म के हिसाब में,.... भले एक शरीर छोड़े फिर दूसरा लिया फिर तीसरा लिया ऐसे कई शरीर लेते हैं लेकिन वह आत्मा का अपने शरीर का हिसाब है ना। ऐसे तो नहीं है ना की एक ही आत्मा सभी में है? नहीं! एक ही आत्मा है आत्मा हर एक की अपनी-अपनी है और अपने अनेक जन्मों का अपना उनका पार्ट है। इसी तरह से बाप कहते हैं मेरा भी तो अपना पार्ट है ना, ऐसे थोड़ी सब का जो पार्ट है वह मेरा पार्ट है तो यह सभी चीजें बैठकर करके समझाते हैं इसलिए कहते हैं यह जो सर्वव्यापी की बात है ना यह बेचारे ना जानने के कारण कि भाई परमात्मा क्या है, क्या है वह न जानने के कारण उन्होंने कह दिया की सब परमात्मा है न जाना ना, कोई चीज नहीं जानी जाती है तो क्या कहते हैं की हाँ समझो यही समझ लो, तो उन्होंने भी ऐसा तुक्का लगा लिया की हाँ ये सब परमात्मा समझ लो ।अभी सब परमात्मा क्या? कीड़े मकोड़े फलाना फलाना, पत्थर पत्थर में, वो न जानने के कारण वो कहते हैं सब में परमात्मा है तो कण-कण में परमात्मा है, पत्थर पठार में परमात्मा है इसीलिए देखो सर्वव्यापी बात नहीं कितना रोड़ा कर दिया । बाप कहते हैं मुझे देखो तुमने कण-कण, पत्थर पत्थर,... अपने लिए तो फिर भी रखा 84 लाख योनियों में,.. चलो भाई जनावर, पशु, पक्षी,.. । मुझे तो 84 लाख से भी बाहर ले गए । कण कण कण कण और सब ज़रा ज़रा गिनती

करो तो कितने हो जाएंगे हां 84 लाख से भी ज्यादा हो जाएंगे कर दिया एकदम, धकेल दिया सबमे पीस दिया एकदम अपने लिए फिर भी अंदाज रखा 84 लाख, है तो 84 लाख भी नहीं । 84 जन्म है तेरे बहुत में बहुत । परंतु अपने लिए फिर भी 84 लाख कहते हो आत्मा के लिए और परमात्मा के लिए तो फिर कण कण कण कण गली गली में मेरे लिए तो एकदम मुझे तो सब में ढकेल दिया एकदम । इसीलिए देखो बात लाया था एक आर्य समाजी ही मिला था उसने कहा नहीं परमात्मा सर्वव्यापी है तो यहां पर एक ब्रम्हाकुमारी मिली थी । उसने पूछा था, बातचीत हुई थी की सर्वव्यापी है तो सब में? कहा सब में एकदम? विष्टा में भी? हा कहा हां विष्टा में भी परमात्मा, देखो कहते हैं विष्टा में भी परमात्मा परन्तु याद क्यों करते हो? कहा ये बस इसको याद रखने का है, वो तो कोई भी चीज आगे रख कर के याद करो, जभी सबमे है तो देखो ख़ास बात तो रही नहीं न। तो देखो कितने मूंझे पड़े हैं बड़े बड़े विद्वान । बड़े बड़े आचार्य, बड़े बड़े पंडित देखो सब मूंझे पड़े हैं । परमात्मा के विषय के ऊपर बेचारे कैसे जान सकते हैं इसीलिए परमात्मा कहते हैं मेरी विषय जो है न, मेरी विषय कोई मनुष्य नहीं जान सकता है । मेरी विषय के ऊपर में ही आकर के समझाता हूँ। और मेरे पास ही नोलेज है । में क्या हूँ और उसके साथ फिर तू क्या है क्योंकि तू तो मेरी क्रिएशन है न, ऐसे थोड़ी है की मैं तेरी क्रिएशन हूँ, तू मुझे जानेंगा, नहीं । क्योंकि क्रिएटर ही तो क्रिएशन को जानेंगा न। बाप ही तो बच्चे को

जानेगा ना। इसीलिए बाप मैं हूं और मेरा तो कोई बाप है ही नहीं। इसीलिए मैं अपने को भी और तेरे को भी,... तुझे भी मैं जानूंगा इसीलिए तेरा परिचय और मैं अपना परिचय खुद आ करके देता हूं। तो मेरी विषय और तेरी विषय पर और कोई समझा नहीं सकता है। इसीलिए तेरी विषय पर तू ही समझाए नहीं! तू तो क्रिएशन है ना। तेरा क्रिएटर,.... जैसे बाप अपने बच्चे का पूरा यथार्थ बातों का समझा सकते हैं इसीलिए जैसे कैसे जन्मा लय हुआ वगैरा सब बातों का,...तो इसीलिए बाप कहते हैं यह सभी में,.. तुम्हारी भी बातें और अपनी भी बातें,.. मैं समझाता हूं, इसीलिए क्रिएटर ही मैं हूं और मैं ही जानता हूं। और तुम गाते भी ऐसे हो कि हां तू जानी जाननहार है, नॉलेज फुल है, यह सभी महिमा मेरी करते हो ना। नॉलेज फुल सब थोड़ी होंगे, अगर सर्वव्यापी है तो सब नॉलेज फुल। उनके गुण भी सब में होने चाहिए न, बाकी बैठा है गुण है ही नहीं? बैठ के क्या करता है? परमात्मा अवगुणी थोड़ी है की भाई सब में बैठा हो, और सब मनुष्य एसे चोर चकार यह सब करें तो यह क्या यह सब अवगुण क्या? यह मनुष्य? नहीं तो फिर परमात्मा है तो फिर वह गुण भी होने चाहिए ना। परमात्मा बैठकर क्या करता है इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यह सभी बातें समझने की है मैं अभी नहीं हूं । इसमें माया 5 विकार प्रवेश है तेरे में। की मैं नहीं हूं मैं तो आता हूं, मैं आकर करके तुमको ज्ञान देता हूं। ऐसे भी नहीं कि मैं सभी को अपने अंदर से ज्ञान दे दूंगा, ऐसा भी नहीं समझना है कि मैं आऊंगा तो सभी में प्रवेश होकर

के अंदर अंदर में, सर्वव्यापी होकर ज्ञान दूंगा, नहीं! मैं आता हूं, मैं ज्ञान देता हूं इसीलिए तो भगवानुवाच हैं न, देखो शास्त्र है ना यादगार है तो भगवान ने वाच किया है, बोला है। उसने बोलकर नॉलेज सुनाया है ऐसे नहीं अंदर अंदर से सुनाया है। तो उस यादगार से कि भगवान का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ है उसकी यादगार भी दिखाते हैं कि उसने बोला। अगर बोला नहीं होता, अंदर अंदर से होता तो प्रेरणा का क्या बनता? प्रेरणा से थोड़ी शास्त्र बनता है। यह प्रेरणा क्या? क्राइस्ट ने प्रेरणा से बोला क्या? फिर बाइबल कैसे बना? बोला न, बाइबल बोलकर बना, नॉलेज समझाया। जो कुछ जो समझाया जो कुछ किया उसका उन्होंने भाई बैठकर की बाइबिल बनाया। तो जैसे जो जो भी धर्म स्थापक आए, जो जो भी उन्होंने वर्शस बोले तो वर्सेस बोले ना, बोला। बाकी अंदर अंदर से प्रेरणा या सर्वव्यापी हो कर करके अंदर अंदर से उसको अच्छा कर दिया तो अच्छा कर दिया तो फिर उसके लिए शास्त्र, यादगार या भगवानुवाच या इतनी ज्ञान की बैठकर करके बातों का तो कोई बात ही नहीं है ना। तो यह सभी चीजें बैठकर करके बाप समझाते हैं। इसीलिए कहते हैं अभी मेरी भी बात है, मैं भी आऊंगा समझाने के लिए तो मुझे भी कहां से तो समझाना पड़ेगा ना, तो समझाने के लिए बोलना पड़ेगा, नहीं तो कैसे समझाऊं? समझाने के लिए आंखों से तो नहीं समझाऊंगा न क्या, कैसे क्या समझाऊंगा? वह तो बोलना पड़ेगा ना, समझानी तो देनी पड़ती है ना, अभी टॉपिक, नोलेज देनी पड़ती है तो टीच करना पड़ेगा ना, समझाना

पड़ेगा, डायरेक्टली नॉलेजल देनी पड़ती है तो टीच करना पड़ता है ना। तो ये भी तो मैं टीचर बनकर के करके आकर के टीच करूँगा न बाकी समझाऊंगा कैसे? क्या आंखों से या अंदर अंदर से या क्या करू, कोई तरीका बताओ,... कोई राय दो की क्या करूं। तो समझाऊंगा तो जरूर बोल कर समझाऊंगा और दूसरे कोई समझाने का और कोई तरीका तो होता ही नहीं है और समझाना होता ही है बोलने से। और बोलने के लिए जरूर मुझे मुख लेना पड़ेगा बाकी आकाश के ऊपर से बोलूं या अंदर अंदर से बोलूँ, अंदर अन्दर से क्या बोलूँगा? अन्दर से बोलना नहीं होता है। बोलना ऐसा होता है फिर उसको सुनना होता है फिर उसको धारण करना होता है। कोई भी टीचिंग्स ऐसी ही होती है तो मैं टीच करता हूं ना। अंदर अंदर की तो बात ही नहीं। वह समझते हैं कि अंदर अंदर आवाज आती है, अंदर अंदर बोलते हैं किसी के विचारों को, कुछ अन्दर वो बोलते हैं विचार आया था, नहीं वो तो स्र्धि बात है और जो शाश्त्र भी बनाया है तो भगवान् ने सामने बैठकर के सुनाया है न। अन्दर अन्दर से अर्जुन को प्रेरणा हुई है क्या? बैठकर के अंदर अन्दर से आवाज दी है क्या? नॉलेज दिया न, वो तो बड़े करके फॉरेन में बनाया है शाश्त्र तो भाई एक अर्जुन को थोडी दिया वो तो उसने स्कूल जैसे बकायदे जैसे नर नारियों का समझाना होता है समझाया। तो ये सारी चीजे, जो रोज के आने वाले हो समझते हो, तो क्योंकि ये बहुत कालों की सर्वव्यापी की बात बुद्धि में पड़ी हुई है न तो इन सब बातों को अच्छी तरह से समझना है। वो

तो गीत भी कहते हैं न की आ तो वो ओमनीप्रेजेंट नहीं है न ओम्निप्रेसेंत माना वो तो फिर आ खा से आए? जब प्रेजेंट बैठा है फिर आए क्यों ? फिर तो आने की बात ही नहीं, उसको कहते हैं आ तो उसकी माना नहीं है तो बरोबर बाप कहते हैं मैं आता हूँ तभी आ कर करके तुम्हे ये नॉलेज देकर के तुम्हारी दुनिया सुख शांति की बनाता हूँ । तो ये सभी बातें समझने की हैं जोअब कहते हैं की अभी मैं आया हूँ न अभी मैं आया हूँ तो मेरी टीचिंग्स लो न। तो मेरी टीचिंग्स लो, उसको सुनो और फिर उसको अमल में लाओ प्रेक्टिचा में जो कहता हूँ। ऐसे नहीं की खाली सुनने की ही हैं प्रेक्टिकल में लाना जो कहता हूँ वो करो, करो फिर तुम स्वर्ग के अधिकारी बनेंगे और ऐसे सुख को पाएँगे ठीक है न। तो अभी उसको अमल में लाने के लिए अथवा प्रेक्टिकल में लाने के लिए क्रिएशन करना है। है सारा मदार प्रेक्टिकल लाइफ के ऊपर। लाइफ में क्या लाना है उसका भी डिटेल्स समझाते रहते हैं। अच्छा आज गुरूवार है इसीलिए थोडा टाइम उसको भी देना है तो फिर आप लोगों को कोई छुटटी वुट्टी तो नहीं होंगी देरी होंगी । अच्छा ये सभी बातों को समझ कर कर के अपना पुरुषार्थ ऐसा रखो । जो बाप का फरमान है जो बाप की आज्ञा है उसका पालन करो आगया और फरमान का तो मालुम है न बी होली बी योगी, शोर्ट में इतना कहेंगे इसका टॉपिक ले करके इसका विस्तार करेंगे की होली कैसे योगी कैसे तो फिर उसका विस्तार भी है परन्तु रोज सुनते समझते हो होली कैसे योगी कैसे बस उसे प्रेक्टिकल लाइफ

में उस चीज की धारणा करो। उसको कहते भी हैं होली फादर, पवित्र बनाने वाला , बनाने वाला है न तभी उसके टाईटलस हैं ये हेवेनलीगॉड फादर, नॉलेजफुल ओसियन ऑफ़ नोलेज, तो ये सब महिमा है उसकी उसके कर्तव्य की बाकि अपने लिए जानता हो अपने लिए हेवेन में बैठा हो, अपने लिए ये सब हो तो हमारा क्या है, कोई बैठा है खाली और हम उसकी महिमा करे, हमारे लिए कुछ करता है तभी महिमा है। वैसे कॉमन तरह से भी मनुष्य मनुष्य के लिए कुछ करते हैं,...भाई गाँधी ने हमारे लिए कुछ किया , देश के लिए कुछ भाई जनता के लिए किया तभी तो हम कहते हैं भाई गांधी ऐसा था वैसा था उसकी महिमा, तो जब कुछ करते हैं तभी उसकी महिमा है न, तो भगवान् ने भी कुछ किया होगा तभी तो उसकी महिआ है न, ऐसे ही थोड़े तो ये सभी चीजों को अच्छी तरह से समझना है और समझ कर कर के अपने बाप से अभी वो वर्सा पाना है। वर्सा पाना है, ये तो बुद्धि में हैं न हर एक के दो बाप हैं , तीन बाप भी कह सकते हैं। किस हिसाब से ? बताओ गोविन्द किस हिसाब से तीन बाप है। दो तो नहीं हैं। तीन, तीन बताओ कैसे हैं ? नहीं दादा को भी अभी ब्रह्मा रखेंगे न। देखो एक तो है आत्मा का पिता वो तो है निराकार परमात्मा, दूसरा तो शरीर का पिता, और तीसरा ब्रह्मा नई ह्यूमेनिटी तो उनको भी रख सकते हैं जैसे वो धर्म के पिताएं हैं न। जैसे क्राइस्ट आया, अपना अपना धर्म क्रिएट किया तो अभी यह है न्यू ह्यूमैनिटी का, इसको, मनुष्य को रखा ना। तो इसके द्वारा

ब्रह्मा तन से आ कर करके यह ब्रह्मन क्रिएट किया। तो उसी हिसाब से तो कहेंगे ना, वह बाप और वह दादा उसको फिर ग्रेंडफादर कहेंगे। तो हमको वर्सा मिलता है ग्रेंडफादर का। पोत्रे का हक़ होता है न, हाँ पोत्रे का दादे के उपर होता है, दादे की मिलकियत के उपर। तो हमारा दादा हो गया, ग्रेंडफादर उसको कहेंगे और वो फादर। क्योंकि वो आ करके उनके द्वारा न्यू ह्यूमेनिटी का यह रचना रचते हैं। तो मनुष्य रखा तो उसको ऐसे कहेंगे, ब्रह्मा को भी कहते हैं ना, ब्रह्मा अभी क्रिएटर परंतु क्रिएटर उसको कहेंगे वर्ल्ड का परन्तु उनके द्वारा न्यू ह्यूमेनिटी का आरंभ कराते हैं इसीलिए उसको फादर...वो ग्रेंड फादर, दादा तो उसी हिसाब से कहेंगे की भाई हाँ हम दादे का वर्सा लेते हैं बाकी याद उनको दादे को करना है क्योंकि वर्सा तो उनसे लेना है याद उसको करना है। ये सभी थोड़ी बातें हैं जो आते हो रोज ये ज्ञान ऐसे हैं चिट चेट जैसे, बड़ी रमणीक बातें हैं मीठी बातें हैं , उनमें भी कोई मूंझने की नहीं हैं परंतु यह समझना है कि किस हिसाब से । अच्छा ये बोम्बे। अच्छा ये बोम्बे और पूना, अभी संगम हैं न। बोम्बे जाना है पूने से विदाई लेनी है। आज लास्ट गुरुवार है तो संगम बिठाया है। अच्छा चलो याद करो। चलो का मतलब है टांगे से नहीं चलने का है उसे याद करो बुद्धि को अभी उधर लगाओ, बाप की याद में। तो उसी याद में रहने से फायदा है फिर बाबा इनका जिसका भी होंगा, हो सकता है कभी किसका भी रथ खींच सकता है। रथ क्या यानि इनको दिखएंगा दिल रुपी दर्पण में कहीं खींच के नहीं ले

जाएंगा। यहीं हैं, परन्तु इसको दिल रुपी दर्पण में जैसे बतलाया न आगरे का ताज देखो दिल्ली का उसमे.....बाबा हमको दिखाई दे कुछ दिखाने का होंगा तो जिसका पार्ट है। देखो आपको मालूम हैं न हमें कोई इसका एक्सपीरियंस नहीं है लेकिन हम जानते हैं और ये कोई नई बात यहाँ नहीं है भक्ति मार्ग में भी बहुत जाते हैं, कोई ऐसे होंगे जिन्हों को अपना अनुभव भी होंगा बहुत जाते हैं कृष्ण के.... अब विदाई लेना, आज लास्ट जैसे बतलाया ना आगरे का ताज देखो दिल्ली का जगह दूर-दूर बनी है तो दिखाएंगे कुछ आने कारुवार है न अब कहना पुणे वालों के लिए कुछ भी, कोई डायरेक्शन तो कोई आप लोगों का भी कोई मेसेज वेसेज हो तो बतादो कोई आस पास कुछ या कुछ, बाकी तो फरमान का मालूम ही हैं, जो जितना धारण करेंगा पालन करेंगा, वो अपना कल्याण करेंगा। अच्छा चलो गो सून,...हाँ? (याद प्यार देना है) हाँ क्यों नहीं याद प्यार तो देना ही है और एसा तो उनके धाम तक भागना है, पुरुषार्थ में अपने को उसके धाम तक पहुंचाना का ऐसा लायक ओने को बनाना है और ऐसा पुरुषार्थ तीव्र अपना रखना है। अच्छा अच्छा तो पुरुषार्थ रखेंगे वो आगे आगे फिर आते जाएँगे, पुरुसर्थ से आगे आना है न, अच्छा चलो अभी टाइम होते हैं और लो का मालूम हैं, आप लोग खेल पाल में जुट जाएँगे हम तो यहाँ झुटका खाएंगे, न तो आप तो मजे में, आप तो देखते रहेंगे हम तो भाई देखते कुछ नहीं हैं आप तो खेल में आए खाली अपना आए रिस्पेक्ट देके जैसे कोई खिलाता है न, उसको नहीं हाँ, ऑफर की

जाती है न, ये रि स्पेक्ट उसको याद कर करके इसमें फायदा ही है कोई नुक्सान तो है नहीं, वो बतलाता था न हमारा वो राम की हम खाने पर बैठते हैं तो उसको याद करते हैं की हाँ तुम देते हैं तो हम करते हैं याद कर कर के तो ये रिस्पेक्ट है ।और उसको याद करके खाने से क्या होता है की हाँ उस खाने का भी हमको ताकत मिलती है खली हमारा खून नहीं बनेंन्गा, लेकिन रूहानी भी बल, वो कहते हैं न की विचारों के ऊपर भी कहां पान का असर पड़ता है, जैसा अन्न वैसा मन, तो हम उस बाप की याद से उस अन्न को पवित्र बना कर करके खाते हैं तो उसका बल हमारे आत्मा को भी मिलता है जिससे तो हम प्योरीफाईड बनते हैं। तो ये सभी बातें हैं जिसको समझना है, मूंझना नहीं हैं, चलो, श्वेद, तुम्हारे बाजू मे बिठाए हैं इसलिए थोड़ा वो भी खिचेंगी, थोड़ा हम भी बाबा को कहेंगे की बाबा इनको थोडा घुमाव फिराओ। कोई बात नहीं, ये माया का देश है न कोई ओना तो नहीं है तो कहते हैं उड़ पंछी यहाँ से। ये पराया देश है, ये अपना नहीं है अपना तो स्वर्ग धाम, और शांति धाम । कल पूंछा था न गति सद्‌गति । एक गति धाम अर्थात शांति धाम दूसरा सद्‌गति धाम अथवा स्वर्ग। तो अपने धाम हैं वो, ये तो है ही दुख्धाम ये पराया ये माया का ये रावण का है हाँ तो ये पराया है न अपना नहीं है अब इस परे देश से अभी उड़ पंछी, अभी चलो अपने देश, तो आना अभी देश का ले चलने वाला अभी आया है ये अपर्य है ये रावन का है देश अभी इससे थके हैं थके हो न ? तो अभी चलो अभी उडो। उडो उडो

।(गीत बजता है) जोगिया कोई कफनी नहीं ये ही ज्ञान की योग की जो धारणा रखी है, माया से अपने को, जो अपने देश का वेश है । अपने देश का वेश कौन सा है? बताओ, हमारे बहादुर शेर बताओ, हमारे देश का वेश कौन सा है ? वो ही कौनसा ? वो ही कौन सा ? वो ही कौन सा ? अपने देश का वेश कौन सा है ? अपना हाँ, अपना कौन ? ये अपना कौन कहती है ? आत्मा, आत्मा के देश का वेश कौन सा है? परमात्मा तो परमात्मा है, अपना वेश कौन सा है ? अपना वेश माना हम आत्मा नंगी आई थी, उस समय शरीर तो नहीं था न पहले, तो कहते हैं नंगा आए नंगा जाना है तो अभी यानी प्लेन हो जाओ आत्मा जैसे प्लेन, शरीर से डीटेच हो जाओ। तो अपना जो देश का वेश है न अभी उसी वेश में आ जाओ, ये वेश उतारो, इससे डीटेच हो जाओ ये तो यहाँ लिया न, परन्तु यहाँ पहले अच्छा था, अभी लेते लेते लेते लेते ये शरीर भी हाँ पुराना हो गया, देखो दुःख रोग जितना सब ये सब, अभी कहते हैं इससे डिटेच हो जाओ और फिर मेरे देश में चलो, जैसे नंगे थे प्लेन हो जाओ, आत्मा प्लेन पीछे फिर आएँगे तो तुमको शरीर भी जो मिलेंगा न इस देश का वेश, ये है इस देश का वेश शरीर , उस देश का तो वेश नहीं है न , उस देश का प्लेन आत्मा अभी कहते हैं उस देश का हो जाओ। अपने को ऐसा समझो जैसे नंगे आए थे अभी ऐसा, अपनी बुद्धहि उसमे रखो तो अंत मति सो गति फिर जब आएँगे तो शरीर भी अच्छा मिलेंगा, ठीक है न। तो अभी अपने शांति धाम, पहले तो शांति धाम जाना है न, पीछे

सुख धाम। पहले कहाँ जाएँगे शांति में या सुख में ? कैसे ? कैसे ? नहीं अपना जो देश है पहले पहले जाना है शांतिधाम में यानी पहले आत्मा हो जाना है न, आत्मा के धाम में जाना है पीछे फिर आत्मा आ करके सुखधाम यानी शरीर फिर लेंगे जो सतयुग में, उसको फिर सुखधाम कहेंगे। वो पीछे लेंगे अभी तो पहले जाना है न वापस जहां से आए हैं अपने घर को, स्वीट होम को। तो वो स्वीट होम जहां हम साइलेंस में आत्माएं हैं तो हमको उधर जाना है तो पहले शांतिधाम जाना है यानि वाया शांति धाम से फिर सुखधाम आएँगे। अभी आते हो तो जैसे होता है न अभी बोम्बे से जाना है हमको इसी तरह से वाया शांति धाम से फिर जाएँगे सुखधाम। तो वाया होना है। शांतिधाम वाया करना है, हिसाब हैं सब हाँ ये सब चिट चेटहै परन्तु ज्ञान है इन सब में। आज आगे बैठा है न बहादुर शेर तो इसीलिए ....क्या है जीवन लाल है क्या, अच्छा.. । कैसे राम चन्द्र? ये तो देखो शांतिधाम का बहुत अच्छा निवासी है । यहाँ बैठे बैठता है... शांतिधाम... । तो ऐसे बैठे हुए आएँगे जरूर सुखधाम में, सुखधाम में भी आएँगे न? हाँ रामचंद्र जी? खाली मुक्ति तो नहीं चाहिए न? जीवन्मुक्ति भी चाहिए न ? वो तो है, वो तो जन्मसिद्ध अधिकार है। पक्का है। कई कहते हैं हम खली मुक्ति में बैठे रहें, आएं नहीं फिर, परन्तु आना भी जरुर है। उसी के पीछे होकर पहले क्यूँ नहीं आएं, जीवन मुक्ति के टाइम ये तो अकाल की बात है न, उतरना ना तो जरूर है, पीछे जभी दुनिया पुरानी होए, नए घर का क्यों नहीं सुख

लेवें, अभी हमारा बाप, हमारा तुम्हारा सबका बाप, अभी अपना बाप है ऐसे कहें,.. तो हम सबका पिता अभी आया है, और अभी हमारी दुनिया सुख की बनाता है, इसीलिए कहते हैं पहले चलो मेरे धाम, जहां से आए थे, तब तलक यहाँ सफाई हो जाएगी। ये सब डिस्ट्रक्शन से सब साफ़ सूफ हो करके, फिर अच्छा यहाँ हो जाएंगा फिर आकर करके तुम अच्छी दुनिया का सुख पाना। अभी चलो, जाना तो सबको है वैसे भी ले तो जाऊंगा। परन्तु अभी आया हूँ मेरे से चलने में, कोई फ़िक्र नहीं होंगी, चल पड़ेंगे। इसीलिए कहते हैं अभी मेरे साथ चलो। में जो ये ज्ञान और योग की धारणा कराऊँ, उसी धारणा से आराम से चलेंगे। तो अच्छी बात है न बाप अच्छी राय देते हैं, और अच्छा साथ देता है, मदद करता है, खाली कहते हैं थोड़ी हिम्मत करो। हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा। तो करना चाहिए न, कैसा पारसी बाबु ? हाँ बराबर, ये जहाँगीर शेर, सबको चलना है हाँ, कोई भी हो, सबका बाप आया है हाँ, इस्लामी, बुद्धिज़्म सभी का सबका।

07. आत्मा और पमात्मा की पहचान और वर्ल्ड हिस्ट्री जियोग्राफी

रिकॉर्ड :-

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो.............

परमपिता परमात्मा, यह जो भी गीतों में महिमा आती है यह उस एक की है। एक का मतलब वह एक है । मनुष्य आत्माएं बहुत हैं और परमात्मा परम पिता एक है इसीलिए यह महिमा है एक की और उसी की ही महिमा, एक की जो है वह कोई मनुष्य को नहीं दी जा सकती, क्योंकि मनुष्य की महिमा अलग। कंप्लीट मनुष्य की, कंप्लीट मनुष्य की महिमा अलग और परमात्मा की महिमा अलग। कंप्लीट मनुष्य को क्या कहेंगे? सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम यह आदि आदि। यह सभी महिमा किसको देंगे? मनुष्य को। परमात्मा को सर्वगुण संपन्न नहीं कहेंगे, क्योंकि वह कभी अवगुण में नहीं आता है। इसीलिए जो अवगुण में आता है, उसको सर्वगुण संपन्न की महिमा दी जा सकती है जभी सर्वगुण है। वह सर्वगुण और अवगुण से दोनों से अलग है परमात्मा। इसके फिर अपने गुण हैं। इसको फिर क्या कहेंगे, परमात्मा की महिमा क्या है? उनकी फिर है पतित को पावन करने वाला। उसको कहते हैं ओसियन ऑफ नॉलेज। देखो यह महिमा है ना परमात्मा की, यह मनुष्य को नहीं कह सकते हैं। ओसियन ऑफ नॉलेज या नॉलेज

फुल, यह महिमा परमात्मा की है मनुष्य को नहीं दी जा सकती। तो उनका देखो महिमा अलग है ना परमात्मा की। उसको कहेंगे ओसियन ऑफ नॉलेज सुख का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर। उसकी महिमा ऐसी है शांति दाता, सुख दाता, दुख हर्ता सुख कर्ता यह महिमा है परमात्मा की। महिमा के गुण, परमात्मा के गुण और हो गए है ना उनके। अब यह मनुष्य को नहीं कह सकते हैं दुखहर्ता सुखकर्ता यह मनुष्य को नहीं कहेंगे फिर। मनुष्य के तो दुख हरने वाला है ना और फिर उन को सुखी बनाने वाला परमात्मा है और वह सुख दुख में आने वाला है तो जो आने वाला है वह मनुष्य ही कैसे दुखहर्ता होइंगा, इसीलिए मनुष्य की महिमा अलग परमात्मा की महिमा अलग। तो यह समझने की बात है इसलिए मनुष्य को और परमात्मा को एक कर देना, जो आत्मा की महिमा वो ही परमात्मा की महिमा अथवा आत्मा और परमात्मा एक कर देना यह रोंग हो जाता है। तो यह सब समझने की है, जो कई समझते हैं कि आत्मा को परमात्मा हो जाना है, ज्योति में लीन हो करके या परमात्मा से मिलकर के परमात्मा हो जाना है तो यह समझने की बात है कि अगर आत्मा को परमात्मा हो जाना है तो उसकी माना परमात्मा आत्मा से बनता है क्या? ये तो भी समझने की बात है ना। अगर ऐसे माने की आत्मा परमात्मा हो जाएंगी तो मानो आत्मा भी फिर परमात्मा से बना है। परमात्मा ही आत्मा हुआ है, फिर आत्मा को ही परमात्मा होना है अगर ऐसा हुआ है तो ऐसा भी होना पड़ेगा ना। एक ही बात हुई। परन्तु ऐसा तो नहीं है की परमात्मा कोई आत्मा बना है तो परमात्मा आत्मा नहीं बना है जो आत्मा को परमात्मा बनना हो,

तो यह समझना है ऐसे नहीं की आत्मा परमात्मा हो सकती है, परमात्मा आत्मा नहीं हो सकता है। अगर आत्मा परमात्मा हो सकती है तो परमात्मा भी आत्मा बना है, मतलब यह तो समझने की यह भी बुद्धि और विवेक की बात है ना। तो कई समझते हैं कि आत्मा परमात्मा हो सकती है लेकिन परमात्मा आत्मा नहीं हो सकता है। अगर नहीं हो सकता है तो फिर आत्मा भी परमात्मा नहीं हो सकती है। फिर तो यह भी मानना चाहिए कि आत्मा भी परमात्मा नहीं हो सकती है। तो यह सभी चीजें समझने की है ना इसलिए आत्मा परमात्मा नहीं हो सकती है, और ना परमात्मा कोई आत्मा हुआ है। आत्मा अलग है और परमात्मा एक ही सुप्रीम सौल, उनका कर्तव्य और उनकी जो कुछ है अपना वह गुण वह अलग है। बाकी मनुष्य अपने स्टेटस में, अपने स्टेज में ऊंचे उठते हैं जिसका गोल्डन, सिल्वर, कोपर, आयरन एजज यह सभी स्टेटस मनुष्य आत्मा के लिए। परमात्मा सतो, रजो, तमों इन्हों में नहीं आता है, वह तीनों से ऊपर है। वह एवर सतो, क्या कुछ तो कहेंगे ना एवर रजो तो नहीं कहेंगे, एवर तमों तो नहीं कहेंगे, अच्छी बात का गोल्डन एज। उनकी सदा एवर प्योर, एवरीथिंग एवर में आएंगी उनके लिए, क्योंकि वह गोल्डन, सिल्वर, कॉपर एंड आयरन ये सब मनुष्य आत्मा के लिए स्टेजेस हैं। तो जो स्टेटस में आने वाले हैं वो परमात्मा को उसके साथ मिलाया नहीं जा सकता है, न वो उसमें मिल सकती है। उसकी क्वालीफिकेशंस अलग और उनकी परमात्मा की क्वालिफिकेशन अलग हो गई न, तो हर एक की बायोग्राफी अलग हो गई न, हर एक की बात को समझना चाहिए ना। तो आत्मा की बायोग्राफी, परमात्मा की

बायोग्राफी समझना चाहिए । फिर आत्मा शरीर के साथ जब मनुष्य बनती है उसकी बायोग्राफी फिर समझनी चाहिए कि सब में उत्तम मनुष्य कौन थे? भाई उत्तम मनुष्य जिनके शरीर भी पवित्र थे और आत्मा की पवित्र थी तो जरूर उनको ही उत्तम रखेंगे ना, तो वह कौन से मनुष्य थे? वर्ल्ड हिस्ट्री में ऐसे कोई मनुष्य हो करके गए हैं, जिनकी आत्मा भी पवित्र हो और शरीर भी पवित्र हो, ऐसी कोई मनुष्य हैं? अभी तो नहीं कहेंगे हां, इस टाइम शरीर भी पवित्र और सन्यासी भी मिलेंगे भले उनकी आत्मा कुछ पवित्र हो लेकिन फिर शरीर पवित्र नहीं है क्योंकि शरीर विकार से पैदा हुआ है, शरीर को रोग होता है तो क्या शरीर सन्यासी बीमार नहीं पड़ेंगे? हां वह तो कोई कर्म का हिसाब है ना। तो इससे सिद्ध होता है कि यह शरीर पवित्र नहीं है। आत्मा भले हां कुछ उनका पवित्रता का आधार लेने से, कुछ उसमे पवित्रता का है। तो यह आत्मा पवित्र और शरीर पवित्र ऐसे कोई मनुष्य वर्ल्ड हिस्ट्री में कभी हुए हैं, आज तो नहीं है परंतु कभी हुए हैं तो हाँ, उन्हों की हिस्ट्री मिलती है, यह उच्च देवताएँ जिन्हों की है जीवन की महिमा, वह सदा सुखी थे कैसे ? हेल्थ, वेल्थ उन्हों के पास सब कुछ था, एवर हल्दी थे वेल्थी थे, कहते हैं ना भाई वह जमाना था, कभी होगा कि नहीं था, कभी अकाले नहीं मरते थे कब उन्हों में पावर था तो यह पावर था कीन्हों के पास? इन्हों के जीवन से यह कुछ इशारे मिलते हैं की इन्हों के जमाने में ऐसा सुख शांति का था। जभी तो देखो मंदिरों में पूजे जाते हैं, नहीं तो अगर वह अपवित्र होते तो उनको मंदिरों मैं क्यों उसके यादगार क्यों रखे है? हैं तो वो भी मनुष्य, मंदिरों में उसकी जड चित्र क्यों पूजे जाते हैं, हम

क्यों नहीं पूजे जाते हैं, हम क्यों उनको पूजते हैं, तो हम पूजने वाले हो गये वो पूज्य हो गये, कोई तो डिफरेंस है न। वो डिफरेंस कौन सा था ?उनके शरीर भी पवित्र थे आत्मा भी पवित्र थी, इसीलिए उनकी यादगारे पूजी जाती हैं। लेकिन थे तो चैतन्य न, प्रैक्टिकल लाइफ वाले थे। तो यह मनुष्य स्टेटस है कि मनुष्य इतना ऊंचा था तो अभी बाप कहते हैं की मनुष्य इतना ऊंचा,और फिर ये देखो मनुष्य की डिग्री नीचे चली आई है तो यह है आत्मा भी अपवित्र, शरीर भी अपवित्र, अभी यह हुआ मनुष्य की नीचे की स्टेज। तो अभी नीचे से फिर ऐसे पतित मनुष्यों को परमात्मा आ करके फिर आत्मा को पवित्र बनाते हैं उसके आधार से फिर शरीर भी पवित्र, जेनरेशंस में प्राप्त करते, सदा सुख पाते रहेंगे, उसका अभी मानो ये सप्लिंग इसमें लगा रहे है। अभी तो शरीर अपवित्र है, लेकिन ये आत्मा का सप्लिंग प्यूरिटी का लगा रहे हैं, जिसके आधार से फिर ये जेनरेशंस चलेंगी तो ये सभी चीजों को समझना है, जो बैठ कर कर के बाप मनुष्य की बायोग्राफी और परमात्मा अपनी बायोग्राफी समझाते हैं, उसमें फिर हर एक की ब्रह्मा क्या, विष्णु क्या शंकर क्या, राम कृष्ण आदि सब की बायोग्राफी, यह लक्ष्मी नारायण की बायोग्राफी। ये लक्ष्मी नारायण किसने बनाया, कैसे बने, तो यह सभी बातें बाप बैठकर करके समझाते हैं कि यह इनकी यानी कोई अगले जन्म में इन्होंने जरूर कोई अच्छे कर्म किए होंगे तब तो ऐसा जनम मिला न तो इनका अगला जन्म कहां होगा, यह तो सतयुग के किंग एंड क्वीन हो करके गए हैं लक्ष्मी और नारायण, तो इसका अगला जन्म कहां होगा, यह भी देखो विवेक से सोचने की बात है, हम जरा क्वेश्चन पूछते हैं हां,

की देखो जरा यह तो हुआ सतयुग का, फर्स्ट मैन हां, न्यू मैन कहो, न्यूमैन जिसको किंग एंड क्वीन कहें सतयुग का। तो सतयुग तो इन मनुष्यों से शुरू हुआ लेकिन इन्होंने जो कुछ पुरुषार्थ किया होगा न, वह जरूर इनके पहले किया होंगा न तो वह कभी किया, वह समय कौन सा होगा? (किसी ने कहा कलयुग अंत में) हां कलयुग का अंत में, तो जरूर कलयुग अंत में इन्होंने यह पुरुषार्थ कर करके अपने कर्मों को ऊँच बनाया, फिर जो जन्म लिया वह फिर उनको उससे सतयुग आरंभ रहा, गोल्डन एजड वर्ल्ड। तो उन्होंने जरूर पुरुषार्थ कलयुग के अंत में किया ना, तो यह देखो अभी वह कलयुग का अंत है। अभी जो हम यह पुरुषार्थ कर रहे हैं और परमात्मा हमसे करा रहा है तो यह मानो अभी यह सेपलिंक इसी, ऐसे मनुष्य बनने की लग रही है। फिर इनके बाद यह दुनिया, इसलिए परमात्मा कहते हैं जभी इन्हो की दुनिया आने का टाइम होता है, तब आकर करके गोल्डन एजड वर्ल्ड कि में यह स्प्लिंग लगाता हूं, तो मानो अभी यह किंगडम बनने का ये अभी का हो रहा है, तो अभी इस द्वारा, परमात्मा द्वारा हेवेनली किंगडम कहो या हेवेन कहो हेवेन तो हेवेन, ऐसा तो नहीं ना, कोई तो उसमें राजधानी, और कोई तो कुछ तो चलेंगा ना, तो वर्ल्ड का सिस्टम होगा, ऐसे ही थोड़ी, ऐसे ही बस चल पड़ेंगे नहीं, तो कहते हैं यह किंगडम देवी देवताओं की, उसी से फिर यह हेवेन दुनिया जो है वह चलती है तो ऐसे मैं मनुष्य की अभी दुनिया बना रहा हूं। कैसे बनाता हूं उसका ये देखो अगला जन्म, कलयुग के अंत में। तो यह सभी चीजों का भी समझना है। तो इनकी बायोग्राफी ये परमात्मा बैठकर के समझाते हैं। फिर 14 कला फिर त्रेता वंश में, तो उनको

14 कलां ये 16 कला पीछे कलाए कम पड़ती जाती हैं फिर द्वापर से नीछे नीचे, अभी तो कोई कला नहीं रहीं है, सब कला काया निकल गई है न हाँ देखो। अब तो मनुष्य का कोई बल नहीं रहा है ना, तो यह सभी चीजें बैठकर करके बाप बैठकर करके...इसी तरह से फिर ये क्राइस्ट बुद्ध जो भी आए उन्हों की भी बायोग्राफी क्या है, यह फिर अपना अपना धर्म स्थापन करने वाले हैं। यह आए हैं तो ऐसे नहीं है कि दुनिया को कोई बैठकर करके नहीं नई दुनिया बनाने वह अपना अपना नया धर्म जैसे क्राइस्ट आया तो उसने एक नया धर्म स्थापन किया, कौन सा क्रिश्चियन धर्म, भाई बुद्धा आया तो उसने अपना नया धर्म स्थापन किया जो धर्म था नहीं उसको बैठ कर कर के, बुद्ध धर्म के नाम से चला तो इसी तरह से वह धर्म स्थापक, वह धर्म स्थापक हो गए और परमात्मा को धर्म स्थापक ना कह करके वह तो नई दुनिया स्थापित, तो नई दुनिया स्थापित गॉड को कहेंगे और दूसरे जो आए मैसेंजर्स पैगंबर जो भी आए उन्हों का काम क्या रहा? अपना अपना धर्म स्थापन करना तो अपना मत, अपना धर्म आकर के स्थापन किया तो उनकी बात अलग हो गई। उन्होंने आकर के नई दुनिया नहीं बनाई, उन्होंने अपना अपना नया धर्म बनाया, तो यह सभी चीजें तो उन्हों की बायोग्राफी को भी समझना, भाई उन्हों का काम और परमात्मा का काम। परमात्मा सभी धर्म नष्ट कर करके और एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की दुनिया बनाना, दाता सबका। तो इसीलिए ये बैठकर करके बाप सारी बायोग्राफी समझाते हैं और समझा कर करके और कहते हैं अभी कौन सा टाइम है, उसके मुताबिक अभी क्या करना चाहिए। तो यह भी सभी चीजें समझने की

है ना अभी हमको समय देखना है टाइम भी देखना है कि इस टाइम अनुसार ये अभी वो टाइम है, जिस टाइम को कहा जाता है, अभी हमारा बहुत जन्मों का चक्कर यह पूरा होता है अभी फिर नया चक्कर, अच्छा नया जनरेशन शुरू होती है। उसके लिए बाप कहते हैं अभी नई जनरेशन के लिए अपना नया कलम अपना अथवा सेपलिंग लगाओ इसीलिए प्योर रहना जरूर है। बिना प्योरिटी के तो प्योर सेप्लिंग लगेगा ही नहीं ना इसीलिए बाप कहते हैं अब यह फिकर ना करो कई क्वेश्चन उठाते हैं ना की अच्छा अगर प्योर रहेंगे तो दुनिया कैसे चलेंगे। अगर सब पवित्र रह गए तो दुनिया कैसे, तो परमात्मा कहते हैं कि दुनिया का अभी जाने का, यह भी दुनिया को पता नहीं है कि कहां करनी है इसलिए ये अभी विचार मत करो कि दुनिया कैसे चलेंगे, दुनिया का मालिक मैं हूं या तुम हो हां, मुझे पता है दुनिया कैसे चलेगी, तो मैं अभी दुनिया का सेप्लिंग लगाता हूं, अभी सेप्लिंग लगाने में मदद करो अर्थात प्योरिटी की हेल्प दो तो प्यूरिटी के बल से अभी प्योर दुनिया की जेनेरेसंस चले, बाकी अभी उसकी मदद दो, अभी इसका नहीं है की यह दुनिया कैसे चलेगी, तो तुम जो दुनिया की वृद्धि करते आए हो तो वो तो देख लो न अभी तंग पड़ गए हो संभाल नहीं सकते हो इसिलिये कहते हैं इनका ख्याल नहीं करो अभी तो कहते हैं, अभी तो मौत है अभी तो डिस्ट्रकशन है। इस पुरानी ओल्ड वर्ल्ड का डिस्ट्रक्शन है इसीलिए अभी तुम जितना पैदा करेंगे, नहीं तो मैं डिस्ट्रक्शन में खत्म कर दूंगा, इसीलिए अभी उसकी हेल्प नहीं चाहिए अभी हमको चाहिए प्योरिटी की हेल्प। तो मुझे अभी मददगार बनो प्यूरिटी में, तो प्यूरिटी का फाउंडेशन मजबूत हो जाए

उसी बल से, फिर प्योरिटी की जनरेशन जो चलेगी जो वह नेचुरल जैसे अभी इंप्योरिटी नेचुरल है वैसे फिर प्योरिटी नेचुरल चलेंगी। तो उससे वह संतान और उससे जो वृद्धि रहेंगी वह प्योरिटी के पावर से, जिसको कहा जाता है योग बल और अभी यह है भोग बल, कंट्रास्ट है ना योग बल का और भोग बल का। वह संतान उस पावर से थी तो इसीलिए यह बैठ कर कर के बाप सारी बायोग्राफी समझाते हैं और समझा कर करके अभी कहते अभी कौन सा टाइम है उसके मुताबिक अभी क्या करना चाहिए। तो यह सभी चीजें समझने की है ना, अभी हमको समय देखना है, टाइम भी देखना है कि इस टाइम अनुसार, अभी वो टाइम है, जिस टाइम को कहा जाता है अभी हमारा बहुत जन्मों का चक्कर यह पूरा होता है अभी फिर नया चक्कर अथवा नइ जनरेशन शुरू होती है उसके लिए बाप कहते हैं नई जनरेशन के लिए अपना नया कलम अथवा सप्लिंग लगाओ प्यूरिटी का, इसलिए प्योर रहना जरूर है, बिना प्योरिटी के तो प्योर सप्लिंग लगेगा ही नहीं ना इसलिए बाप कहते हैं अब यह फिकर ना करो कई क्वेश्चन उठाते हैं ना की अच्छा अभी प्योर रहेंगे दुनिया कैसे चलेगी, अगर सब पवित्र रह गए तो दुनिया कैसे? तो परमात्मा कहते हैं अभी दुनिया का यह विचार नहीं करो। अभी तो दुनिया को घटाने है कम करनी है इसीलिए यह अभी विचार मत करो दुनिया कैसे चलेंगे, दुनिया का मालिक मैं हूं या तुम हो, मुझे पता है दुनिया कैसे चलेंगी, तो मैं अभी दुनिया का सप्लिंग लगाता हूँ। अभी सप्लिंग लगाने में मदद करो, अर्थात प्यूरिटी की हेल्प दो। तो प्यूरिटी के बल से अभी प्योर दुनिया की जेनेरेशंस चलेंगी। अभी उसकी मदद दो बाकि अभी इसका नहीं है की

यह दुनिया कैसे चलेगी, ऐसे तो तुम दुनिया की वृद्धि करते आए हो वह तो देख लिया ना अभी तंग पड़ गए हो, संभाल नहीं सकते हो इसिलिये कहते हैं इनका ख्याल नहीं करो। अभी तो कहते हैं, अभी तो मौत है अभी तो डिस्ट्रकशन है। इस पुरानी ओल्ड वर्ल्ड का डिस्ट्रक्शन है, इसीलिए अभी तुम जितना पैदा करेंगे, नहीं तो मैं डिस्ट्रक्शन में खत्म कर दूंगा, इसीलिए अभी उसकी हेल्प नहीं चाहिए, अभी हमको चाहिए प्योरिटी की हेल्प। तो मुझे अभी मददगार बनो प्यूरिटी में, तो प्यूरिटी का फाउंडेशन मजबूत हो जाए। उसी बल से, फिर प्योरिटी की जनरेशन जो चलेगी जो वह नेचुरल, जैसे अभी इंप्योरिटी नेचुरल है, वैसे फिर प्योरिटी नेचुरल चलेंगी। तो उससे जो संतान और उससे जो वृद्धि रहेंगी, वह प्योरिटी के पावर से, जिसको कहा जाता है योग बल और अभी यह है भोग बल, कंट्रास्ट है ना, योग बल का और भोग बल का। वह संतान उस पावर से थी इसीलिए संतान ऊंची थी और संतानों में बल था, ताकत थी, इसीलिए शांति और सुख था अभी है नहीं, क्योंकि अभी भोग बल से विकारों से,... इसलिए बाप कहते हैं अभी इनको कण्ट्रोल करो, ये विकारी दुनिया की वृद्धि चाहिए ही नहीं, तो फिर अभी इसको कण्ट्रोल करो, अभी प्यूरिटी को अपनाओ और अपना कर करके प्यूरिटी का फाउंडेशन मजबूत करो, अभी इसका हमको मदद चाहिए, तो अभी जो गॉड हुकुम करें, परमात्मा कहे मानना चाहिए ना, बाप का फादर का, हुक्म मानना चाहिए। वह इसमें, यह नहीं है कि परमात्मा यह दुनिया कैसी चलेगी, वह कहेंगे दुनिया मेरी है या तेरी है? तुमको क्यों चिंता हुई है दुनिया कैसे चलेंगी, वह मैं जानता हूं अभी दुनिया को ट्रांसफर करना है। अभी

मुझे ट्रांसफर करने में मदद करो, तो अभी मैं ट्रांसफर करता हूं ना, यह बदलता कैसे हूँ, नया सप्लिंग,..तो अभी उसमे मदद करो प्यूरिटी का बल, तो अभी वह बल उसको दो, बाकी यह जो तुम्हारी विकार की और इम्पुरिटी से दुनिया को चलाया, पैदा किया है, वह तो अभी देखो, हां दुख की है ना, इसको तो अभी मुझे डिस्ट्रक्शन करना है, तो वह होगा तभी जब तुम्हारा प्यूरिटी का बल होगा इसीलिए बाप कहते हैं अभी उसने मदद करो, अभी ये फ़िक्र न करो की कैसे, अभी तुम्हारी वृद्धि का टाइम पूरा हुआ, अभी उसी को खत्म करके अभी मैं नया सप्लिंग लगाता हूं। अभी उसी में हेल्प करो, तो नए सप्लिंग में पहले आत्मा प्योर चाहिए ना। तो उसमें प्योरिटी में आओ, पीछे तुम्हारा जो शरीर प्यूरिटी आत्मा वाली को मिलेंगा न, वो शरीर जो रहेंगा, पैदा होंगा, वो शरीर भी पवित्र। अभी तो जो तुम पैदा करेंगे न, फिर इम्प्योर शरीर पैदा करेंगे, फिर आत्मा भी इम्प्योर, तो यहाँ इस दुनिया में हमको अभी वृद्धि नहीं चाहिए, अब तो जो न्यू जेनेरेशंस चालू रहेंगी, अभी उसके लिए पहले ये जन्म तो कम्पलीट प्योर रहो न, उसके लिए तो सप्लिंग के लिए तो कम्पलीट प्योर। इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे अभी वह चिंता ना करो कि कैसे दुनिया चलेंगे, अभी नई सेपलिंग लगाने का भी फिक्र रखो और उसके लिए अपने को बी प्योर एंड बी योगी। सीधी बात है इसीलिए बस अब बाप कहते हैं बच्चे अभी इसी बात को साफ समझ कर के अभी उसकी धारणा में तो, टाइम कौन सा है तो जेसा जो टाइम होता है वैसा काम करना होता है ना। अभी वक्त कौन सा है टाइम कौन सा है तो उसी टाइम को देख कर के काम करो। अभी टाइम सेप्लिंग लगाने का है तो

सप्लिंग लगाओ। अभी टाइम वृद्धि करने का नहीं है तो वह काम भी नहीं होगा और खाली पीली तुम्हारा मुफ्त में वह वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ मनी, वेस्ट ऑफ़ एनर्जी सब वेस्ट जाएंगे जो इसी तरह अपना यह कर रहे हो। अभी अपना जो टाइम और जो कुछ भी है अभी अपना इस चीज में दो और उसी से अपना न्यू जेनेरेशन के अपना प्रालब्ध बनाओ। तो इसीलिए बाप कहते हैं अभी चेंज करो। लाइफ को अभी मेरे में, उसमें गीता में भी कहा न, अभी मेरे से तुम अपना सम्बन्ध रख के अब जैसे मै कहूँ, वैसे चलो अभी मेरे होकर के रहो तो इसीलिए बाप कहते हैं अभी मेरे हो कर के रहो, जैसी मैं मत दूं उसी पर चलो, और कोई तुमको डिफीकल्टी नहीं है ये नहीं कहता हूँ की घर बार छोड़ के आ या अपना सब कुछ छोड़ के आ न, वह तो अपना करना ही है शरीर निर्वाह अर्थ, घर का आदि का जो भी कामकाज है, चलो बाकी अपनी अब प्योरिटी से कैसे करो, वह तुमको मैं सिखाता हूं, उसको सीख कर करके प्योरिटी के साथ अपना वह काम करना है। तो उससे क्या होगा तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ रहेंगे और उसी श्रेष्ठ कर्म से फिर तुम्हारी प्रालब्ध श्रेष्ठ ही श्रेष्ठ रही। तो यह है सारी वर्ल्ड की बायोग्राफी तो कैसे आदि होती हैं, फिर कैसे अंत होती हैं, अभी उसके अनुसार अभी क्या करना चाहिए, इसीलिए बाप कहते हैं सब की बायोग्राफी को समझो उसके साथ अभी वर्ल्ड की बायोग्राफी का कौन सा टाइम है और मेरा उसमें क्या हाँ मेरी भी बायोग्राफी चाहिए, मैं क्या काम करता हूं इसी सभी बातों को समझ करके अभी मुझे उसने मददगार बनो। बनेंगे जैसे गांधी जी को जिन्होंने मदद किना हां, बिचारे देखो कितने जेल खाए, कितनी सजाएं खाई, कितने

कष्ट सहे आज देखो अशोका होटल, फलाना फलाना कितने उनका रिटर्न भोग रहा है ना, जिन्होंने कुछ किया। इसीलिए बाप कहते हैं अब मुझे भी जो हेल्प करेंगे तो फिर मैं अपनी राजधानी जो हेवेन बना रहा हूँ उसमें तुम फिर हां राजे महाराजे बड़े बड़े स्टेटस प्राप्त करना । अभी पूरे रहेंगे मददगार तभी ना, तो उसकी मदद क्या है? उसकी मदद की ये है की प्योरिटी में, उसको तो मदद दुःख हड़ताल, पिकेटिंग , सत्याग्रह आदि आदी में अभी यहां बाप कहते हैं प्योरिटी की मदद करो, विकारों की हड़ताल करो, विकारों के ऊपर अपना कंट्रोल रखो, इससे अपनी हड़ताल करो, इससे अपनी पिकेटिंग करो, इससे अपना जो कुछ इससे करो। तो अभी इन विकारों से हम अपना काम नहीं चलाएंगे। तो यह देखो ये अभी हमारी दुश्मन हो गए ना, तो जैसे वह दुश्मनों की सभी बातें अपने को कंट्रोल रखते थे, तो यह हमारे पांच विकार हमारे शत्रु, तो कहते हैं इन शत्रुओं से अपने को संभालो, अब हम इन से अपना सहयोग नहीं रखेंगे, अब इन से अपना संबंध नहीं रखेंगे, यह हमारे दुश्मन हैं। तो अभी दुश्मनों से,.. सच्चे दुश्मन तो यह है ना। इसी दुश्मनों से सब दुश्मन बनते हैं, आज दुनिया एक दो का दुश्मन है किस कारण? यह लोभ हैं, आज यह लोभ ना होता तो यह लड़ाई झगड़े किस कारण होता? तो लोभ हैं ना, यह मेरा, यह मेरा, यह मुझे आकाश का टुकड़ा ज्यादा चाहिए, मुझे पानी का टुकड़ा चाहिए, मुझे पृथ्वी का टुकड़ा चाहिए, यह टुकडे टुकडे बॉर्डर्स के ऊपर सारा दिन देखो कितने झगड़ते हैं, पृथ्वी मेरी वो पृथ्वी मेरी, मेरी मेरी मेरी तो देखो ये टुकड़े टुकड़े के ऊपर, देखो ये लड़ाइयां है ना। तो यह सब क्या है यह लोभ, यह अहंकार, यह

अभिमान यह सभी बातें। तो यह पांच विकार ना होता तो यह सभी ना होते। तो देखो आज यह सब हाल है इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे मैं ऐसा एक आकाश एक पृथ्वी, उसके बीच में एक राज, तब तो सुखी रहेंगे ना। टुकड़े-टुकड़े करेंगे तो फिर,.... एक घर में अगर पार्टीशंस का बॉर्डर लगा कर करके देखो एक घर में 4 बच्चे हो बाप को और चारों बच्चे अपने पार्टीशन लगा कर कर के अपना अलग अलग करें तो उस घर में क्या हाल हो जाएगा, सारा दिन झगड़ा ही होता रहेगा। मेरा बच्चा मेरा बच्चा फलाना फलाना फलाना सारा दिन झगड़ा हो जाए ना, क्या होगा इसीलिए बाप कहते हैं घर एक है और तुम ये पार्टीशंश और बॉर्डर सबमे बॉर्डर, आकाश में भी बॉर्डर, पानी के ऊपर भी बॉर्डर, तुम्हारा जहाज हमारे पानी के अंदर आएगा हम डुबो देंगे, तुम्हारा एरोप्लेन हमारे आकाश में आएंगे हम गिरा देंगे, यह देखो क्या है हमारा आकाश हमारा आकाश, हमारा पानी हमारा पानी, हमारी पृथ्वी हमारी,... पृथ्वी तो सब की है, हम सब एक ही बाप के बच्चे हैं एक पृथ्वी एक आकाश उसमे हमारा हिल मिलकर करके होना चाहिए, परंतु आज दुनिया में देखो कितने वृक्षांश है कितनी जातियां और कितनी वैरायटी है अफ्रीकन काले काले काले काले, चीनी देखो चीने मीने मीने मीने, सब वेरायटी और वो देखो यूरोपियन गोरे गोरे गोरे गोरे सब हाँ, तो सबकी वेरायटी तो इसीलिए कहते हैं की संसार में देखो कितनी क्रिएशन है हाँ, अब ये वेरायटी इतनी आपस में मिलकर के एक होना, कितना इम्पॉसिबल है हाँ, कैसे ये रंग भेद फलाना भाषा, भेद फलाना ये सब ,मिलकर के, हर एक का कहां पान आहार व्यवहार सब अलग अलग पहरवेश सब अलग अलग सब

मिलकर के वो कहेंगे हम तो सब काले काले एक ही जैसे हैं तुम गोरे गोरे गोरे भगवान् ने ही तुमको खुदा ने ही अलग रचा है, तो सब देखो वेराइटी वेराइटी, परन्तु बाप कहते हैं की नहीं ये सब वेराइटी पीछे हुई हैं, नहीं तो पहले एक ही वेराइटी थी न, एक राज एक धर्म ये सब था ही नहीं, क्रिस्चियेनिटी पीछे रही। ये सब पीछे पीछे आए हैं न । तो बुद्ध जैन ये सब। तो बाप इसीलिए कहते हैं अभी फिर इनका मैं एंड करता हूँ ये आए हैं पीछे इसकी एंड तो होंगी न । फिर इसीलिए फिर आदि सनातन ही पहला देवी देवता धर्म था अब उसकी फिर सप्लिंग लगा रहा हूँ, फिर एक धर्म एक राज्य फिर उसमे संसार सदा सुखी रहेंगा, इसके लिए ये तय्यरियाँ इसीलिए मनुष्य समझते हैं डिस्ट्रक्शन टलेंगा या नहीं टलेंगा। ये भावी बनी हुई है। ये कुछ नेचुरल केलेमिटीस से, और कुछ इसी एटॉमिक बम आदि इन्ही सब चीजों से और कुछ सिविल वोर के जरिया, तब तो इतना बना पड़ा है संख्या भी कम पड़े न, और कोई रास्ता नहीं है । संख्या को भी कम करने का है। कितनी बिचारे बर्थ कण्ट्रोल, कितने बिचारे तरीके भले क्यों न निकाले परन्तु ये इसी तरीके से कहा तक कहो क्या हो सकेगा। इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे ये सब इसका प्लेन मेरे पास है। वो तुम्हारे फाइव इयर्स प्लेन और ये सभी बातें हाँ तो चलते चलते बिचारे इतना माथा पिट्टी करते इतना तक करते आए हैं परन्तु बाप कहते हैं मेरा प्लान क्या है कहते हैं न बन्दे के मन में एक फिर साहेब के मन में दूसरी, फिर उसी साहेब के मन में क्या है और हम बन्दों के तो वो ही अपना अपना। तो अभी साहेब के मन का काम चलेंगा या बन्दों का? अभी साहेब का,.. वो साहेब के मन में क्या है

और बन्दे के मन में क्या है, तो बन्दे के मन में एक हैं, साहेब के मन में दूसरी है तो वो किस तरह से प्लानिंग को, वर्ल्ड के प्लेन को चेंज कर करके वो क्या वर्ल्ड बनाना चाहता है और हमारे पास पूर्ण सुख शान्ति कैसे आएंगा अभी उसी प्लेन का एक्ट चलेंगा, तो गॉड की एक्ट तो वो कैसे चलेंगी और उससे हम सदा सुखी कैसे बनेंगे वो बैठ कर के समझा रहें हैं, अभी उसके प्लेन को काम होना ही है उस भावी को कोई टाल नहीं सकते। उसके लिए गॉड भी कहते हैं की मैं भी क्या कर सकूंगा वो है, वो होना ही है लेकिन उसके लिए अभी तुमको क्या करना है वो करो। तो क्या करना है उसी का हमको मिल रहे हैं डाएरेक्शन्श। अभी उसी डाएरेकशंश को अमल में लाना है। तो बी प्योर एंड बी योगी, तुम्हारे लिए ये तुम हो जाओ बस तुम्हारा अपना काम करो, में अपना काम करूंगा। फिर तुम्हारी दुनिया सुखी बनेंगी तो सुख लेना, उसमे क्या है, सुख ही चाहते हो न, शान्ति ही चाहते हो न बस उसी तरीके मिलेंगी इसका और कोई,..अगर और किसी को और गॉड को भी राय देवे हाँ कोई प्लेन आवे तो बतावे की एसा न करो तो इसी तरीके कोई और विचार हो तो तरीके से,.. गॉड अथोरिटी है वो अथोरिटी इसी तरीके न करे, ऐसा करे कोई बताओ क्या हो सकता है। इसीलिए बाप कहते हैं नहीं बच्चे मैं जानता हूँ इसीलिए मेरे लिए ही कहा हुआ है जब जब अधर्म होता है तब तब मैं आता हूँ अधर्म विनाश और धर्म स्थापना का कार्य मेरे पर सौंपा हुआ है सदा के लिए। मैंने कहा है जब जब ये होता है तब तब मैं आता हूँ। ये कार्य मेरा ही है इस कार्य को और कोई कर नहीं सकता। ये कार्य मेरे से होना है और उसी के लिए ही मेरी महिमा है, मुझे याद

करते हैं की अभी तेरा काम आ गया है। हम तो सब कर करके थक गये, सब बिचारे कर करके हां जितना बिचारे बनाने की करें उतना और ही बिगडती जाती है। और इसीलिए कहते है हम तो थक गये, अभी तू आ। अब तेरा बल काम करेंगा, हमारा नहीं करेंगा। इसीलिए बाप कहते हैं अभी आया हुआ हूँ अब धेर्य धरो। आ चुका हूँ, परन्तु अभी मुझे भी मदद करो न। मुझे मदद क्या करते तो अपने लिए ये मेरा कोई बिगड़ा है घर, बिगड़ा भी तेरा घर है में भी तेरे घर को बनाने लिए आया हूँ, मेरा घर तो बड़ा साइलेंस वर्ल्ड है, वहां तो कोई बिगाड़े की बात ही नहीं हैं। बिगड़ा हैं तेरा कार्पोरिअल वर्ल्ड , मैं भी आया हूँ तेरे घर को सुधारने के लिए, तो तू अपने घर सुधारने की मदद नहीं करेंगे, मुझे अपने सुधार के लिए तो अपने सुधार के लिए अथवा अपने सुख शांति पाने के लिए ये खुद के लिए हैं न, कोई हम परमात्मा के लिए थोड़ी मेहरबानी करते हैं उसके लिए तो नहीं है न। करते हैं तो अपने लिए करते हैं। तो अपने लिए करने के लिए पूरा पुरुषार्थ रखना ही चाहिए। तो ये है सब चीजों को समझना और समझ कर कर के बाप से अपना पूरा अधिकार लेना। अच्छा अभी टाइम हुआ है हाँ, जैसे ये टाइम भी देखा जाता है न भाई टाइम हुआ है तो अभी बेहद का भी टाइम पूरा हुआ है हाँ उस घडी को भी देखते रहो की अब घडी में कितना बजा है। देखो घडी में कितना बज गया। घडी लगाईं है न, ये इसमें काँटा लगाया है, की घडी का अभी टाइम बड़ा कलयुग का अभी थोडा है अभी गोल्डन एज आए अभी घडी में बहुत थोडा टाइम है। ये लास्ट जन्म है बेहद घडी का, इसीलिए इसमें काम करना है तो ये अभी ये सोंच के अपना पुरुषार्थ रखो तो वो बेहद की

घडी जैसे ये घडी देखते हो तैसे वो बुद्धहि से वो भी देखते रहो की अभी कितना बजा है अब टाइम निकट है।

मम्मा मुरली मधुबन

08. दुखों का कारण क्या है

रिकार्ड:-

तेरे द्वार खड़ा भगवान..........

ये हम बच्चों का बेहद का बाप, दर्द जानकर करके उसका इलाज करने के लिए आया है, आया है ना। हमारे पास कौन सा दर्द है । दर्द का मतलब है दुःख अशांति । आज की दुनिया में दुःख अशांति है ना । तो दुःख अशांति क्यों है, किस कारण है, उसी दुःख अशांति के दर्द को जानने वाला एक ही है । क्योंकि उसके पास ही इलाज है । वही हमें सदा सुख और शांति देने वाला बाप है । इसीलिए उसे कहते हैं सुखदाता, शांतिदाता तो उस दर्द को भी तो वही जानेगा ना। मनुष्य इसका इलाज नहीं कर सकेंगे। मनुष्य टेंपरेरी सुख शांति, टेंपरेरी के लिए कुछ थोड़ा बहुत मिल जाए वह बातें अलग है, लेकिन यह सदा काल की, सदा काल का मतलब ही है की फोर जनरेशंस, आदि मध्य अंत, आदि मध्य अंत का भी मतलब है शरीर लेते, शरीर में रहते, शरीर छोड़ते सदा सुख, उसको कहा जाता है सदा का सुख । तो ऐसा सुख फोर जनरेशंस के लिए सिवाय परमात्मा के और कोई नहीं दे सकता है । इसीलिए बाप कहते हैं कि तुम्हारे इस दर्द को कि तुम्हारी यह दुःख अशांति क्यों आई है तुम्हारे पास, किसने तुम्हारे को यह

दर्द दिया है वह मैं जानता हूँ । मैंने नहीं दिया है यह भगवान के लिए ऊपर रख लेते हैं ना भगवान ने ही ये किया है, भगवान ने ही दुःख दर्द दिया है, वो कहते हैं मैं कैसे कर सकता हूँ, मैं कैसे बच्चों को दर्द दूँगा । ऐसे कोई बाप देखा कभी कि बच्चों को दुखी करे । जब ये लौकिक बाप भी कभी बच्चों को दुखी नहीं कर सकता है मैं तो परलौकिक बाप हूँ तो परलोकिक बाप कैसे बच्चों को दुःखी करेगा तो आप भी तो बाप हो । देखो कितने बाप यहाँ बैठे हैं, आप कभी अपने बच्चों को दुःखी करेंगे, करते हो? अपनी तरफ से कोशिश नहीं करेंगे दुखी करें । हाँ कर्म के हिसाब से किसी को दुःख होगा तो उसमें आप क्या करेंगे । आप तो और ही कोशिश करेंगे, बीमार पड़ेगा बच्चा इलाज करेंगे, कोई दुःख आएगा उसके निवारण का यत्न करेंगे बाकी ऐसे तो नहीं कि बाप बच्चे को दुःख देगा । तो जबकि लौकिक बाप भी, शरीर का जन्म देने वाला पिता भी कभी अपने बच्चे को दुःख देने का सोचता नहीं है । वह सदा यही सोचता है कि बच्चा सुखी बने, बच्चा लायक बने, बच्चा होशियार हो, सदा सुखी रहे ऐसे ही बाप की भावना रहती है ना । तो जभी शरीर के जन्म लेने वाले पिता भी ऐसी भावना रखते हैं तो वह तो हमारे रूहानी आत्मा का रूहानी पिता है, उसको ही कहा जाता है सच्चा पिता, वह हमारे परम पिता हम को कैसे दुःख देगा । तो वह दुःख नहीं देता है । यह हम को दुःख अथवा दर्द किसने दिया है, माया ने । अभी तो वह बुद्धि में आ गई है ना बात की हम को यह दुःख दर्द किसने दिया, माया ने । माया कौन है

अभी जान गए हो ना अच्छी तरह से । माया का अर्थ भी अच्छी तरह से बुद्धि में आ गया है ये फाइव वाइसेस इसको कहेंगे माया । माया कोई शरीर को नहीं कहेंगे, माया कोई प्रकृति तत्वों को नहीं कहेंगे, पाँच प्रकृति तत्व अलग चीज है उनको माया नहीं कहेंगे । कई उनको माया समझते हैं कि जो भी इन आँखों से देखते हैं ना यह शरीर देखते हैं इस आँखों से यह भी माया और जो भी कुछ इन आँखों से दिखाई पड़ता है संसार का यह सब माया है इसीलिए कई इसको ऐसा समझते हैं कि कहीं ऐसा कोई ठिकाना हो जो इस शरीर में ही ना आवें । ऐसा कहीं लीन हो जाएँ जहाँ से लौटे ही नहीं, ऐसे-ऐसे उपाय बिचारे सोचते हैं परंतु यह बात नहीं है । यह शरीर कोई माया नहीं है । शरीर में तो देवता है भी थे । शरीर तो भगवान भी लेता है तभी तो उसका अवतरण गाया जाता है ना, तो उसको भी प्रकृति का आधार लेना पड़ता है तो आत्मा को भी शरीर का आधार लेना ही पड़ता है । तो वह तो बात ही नहीं है, इसको माया नहीं कहेंगे । माया एक अलग चीज है वह कौन सी है यह फाइव वॉयसेस । तो यह पांच विकार माया है । यह कोई ऐसी जरूरी चीज नहीं है की इनके बिना हमारा जीवन नहीं है या इनके बिना हमारी दुनिया नहीं चलेंगी, यह तो हमारे दुःख के ही कारण है । जब से माया का टाइम आया, राज चला तब से दुःख होना शुरू हुआ । बढ़ते-बढ़ते आज देखो यह रावण राज, वो रावण बढ़ता जाता है, वो रावण को बढ़ाते उसकी ऍफ़ईजी को जलाते हैं ना बड़े बड़े, तो अभी वह बरस-

बरस जलाते हैं । बाप कहते हैं कि बरस-बरस जलाते रहते हैं परंतु जलता नहीं है पाँच विकार जलते नहीं है । वह तो बरस-बरस जलाते रहते हैं, परंतु नहीं यह तो प्रैक्टिकल जलाना है ना अर्थात पाँचों विकारों को खत्म करना है इसीलिए कहते हैं इसको नाश करने के लिए मैं जानता हूँ कि इसको कैसे नाश करो । तो इसका उपाय मैं आकर के बतलाता हूँ तो अभी उपाय बुद्धि में अच्छी तरीके से आ गया है ना कि इसका उपाय कौन सा है । उपाय भी सहज है इसके लिए कोई हठयोग, प्राणायाम चढ़ाना या कोई भी कुछ भी नहीं, बड़ा इजी कि बस उस बाप के हो जाओ, जैसे लौकिक तरीके से भी कोई धनवान हो और धनवान कहे कि मुझे बच्चा नहीं है मेरा बच्चा बनो तो बस जिस समय बच्चा बना तो वह भी धनवान हो जाएगा ना । बच्चा भी कहेगा मैं भी लखपति । बस कोई लखपति का बच्चा बना तो वह भी उसी सेकंड कहेगा मैं भी लखपति क्योंकि मैं भी लखपति तो देखो सेकंड में कोई गरीब का बच्चा, साहूकार का गोद का बच्चा, अडॉप्टेड चिल्ड्रन बनने से वो भी लखपति । तो बाप कहते हैं कि बच्चे मैं भी तो तुम्हारा असली पिता हूँ ना । तुमने मेरे से रिश्ता, रिलेशन छोड़ दिया है, अभी फिर मेरे से रिलेशन रखो । मेरे बच्चे बनने से, जो मेरी प्रॉपर्टी है उसका तू भी हकदार हो जाएगा और ऐसे हकदार बनने से तू सदा सुख शान्ति को प्राप्त करेंगे । क्योंकि मेरा तो हक तुम को सुख शांति का मिलेगा न, मेरा कोई दुःख का थोड़ी है सुख का है इसीलिए कहते हैं अभी मेरे से रिलेशन रखो । अभी

रिलेशन रखने में कोई देरी है कि उसके लिए हठ योग प्राणायाम यह सब करना । रिलेशन का मतलब ही है कि अभी बाप का होकर के चलो तो फिर बाप देखो एवरप्योर है ना तो हमें प्योर होकर चलना चाहिए ना । तो बाप क्या है बाप की क्वालीफिकेशंस कौन-कौन सी हैं तो बच्चे की क्वालीफिकेशंस कौन सी होनी चाहिए तो हम बाप को देखें और फिर अपने को देखें तो फॉलो करे ना कि हमारा बाप है एवरप्योर है तो हम इम्प्योर से प्योर तो होएं ना । तो हमको भी ऐसा ही बाप के समान अथवा बाप से जो कुछ बल मिलता है उसी को धारण करने का है तो यह सभी चीजें हैं जो बुद्धि में रख कर के और अपनी धारणा को आगे बढ़ाना है, अभी इसमें क्या डिफिकल्टी है, कुछ भी नहीं । बाप क्या मेहनत देगा कि बच्चे हठयोग करो, आसन लगाओ, कमर सीधी करके बैठो यह करो वह करो, बाप क्या डिफिकल्टी देगा । बाप तो कहते हैं बच्चे बुद्धि तेरी टेढ़ी हो गई है उसको सीधा करो , उसको अपना मेरे में लगाओ । यह बुद्धि तेरी टेढ़ी हो गई है किधर हो गई है माया की तरफ चली गई है अथवा पाँच विकारों की तरफ चली गई है, अभी उधर से बुद्धि को निकाल करके, वह गीता में भी कहा है ना, देह सहित देह के सब संबंधों से बुद्धि हटा कर करके, यह विकारी जो भी कुछ देह है और विकारी देह का संबंध है, इन सब से बुद्धि हटा करके अभी मेरे से लगाओ तो खाली बुद्धि को हटाओ ना, कहा ना मनमनाभव, तो मनमनाभव का अर्थ क्या, कि मन को मेरे में लगाओ । तो उधर से मन को निकाल कर

के मन को मेरे में लगा । तो खाली मन को बदलना है ना, उधर से निकालकर उधर लगाने की बात है । बाकी इसमें आसन या कमर या कोई प्राणायाम इन्हीं सब बातों की हठ योग साधना की कोई बात नहीं है । तो बाप कहते हैं मेरा योग, जिस योगबल से मैंने तुमको इतना ऊँच बनाया और यह तुम्हारे दुःख दर्द नाश किए, वह देखो कितना सहज है तो अभी यह सहज ज्ञान और सहज योग जिसको राजयोग कहने में आता ही है तो इसका अपना पूरा पुरुषार्थ रखते और बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने का पुरुषार्थ रखो । और बाप अपनी भी बायोग्राफी बहुत सहज समझाते हैं, उसको भी समझने में कोई ऐसी कठिनाई नहीं है । बाप कहते हैं मैं तो निराकार हूँ लेकिन मैं आकर के जो कर्तव्य करता हूँ तो मैं कैसे कर्तव्य करता हूँ तो वह भी तो मेरी बायोग्राफी समझो ना कि मेरे कर्तव्य क्या है । तो कर्तव्य की दुनिया यही है मुझे भी कर्तव्य करने के लिए इस दुनिया में आकर के करना पड़ेगा, ऐसा नहीं कि ऊपर बैठकर करूँ, ऊपर तो है ही साइलेंस, मैं भी सोल साइलेंस, उधर ऊपर की तो बात ही नहीं है ना । मुझे भी आकर के काम करना है । मेरी भी जो महिमा है ज्ञानदाता, ज्ञान का सागर तो इस दुनिया की बात है ना, जहाँ अज्ञान है तो मैं वहां आ करके ज्ञान दूँगा ना तो उसके लिए तो मुझे आना पड़ेगा ना मनुष्य को समझाने के लिए तो समझाने के लिए मुझे शरीर लेना पड़ेगा ना, कैसे समझाऊं, नहीं तो कोई रास्ता बतलाओ, भगवान को राय दो कैसे समझाएं, उनका कोई और तरीका आता है

किसको तो बताओ । नहीं, सिवाय हम मनुष्य को समझाने के लिए क्योंकि उसको हमको समझाना है ना, हम बेसमझ बन गए हैं तो हम को समझाने के लिए भी तो मनुष्य चाहिए ना । हम को समझाने के लिए कोई कच्छ अवतार, मच्छ अवतार वह कैसे समझाएंगे, उसमें आए तो कैसे समझाएं । हम मनुष्यों को समझाना है ना, बेसमझ हम बने हैं, हमारी बेसमझी से तो हमारा सब कुछ खत्म हो गया है । इसीलिए बाप कहते हैं तुम ऊँचा बनो फिर तो तुम्हारी सारी प्रकृति ऊँची बन जाएगी इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे तुमको ही तो समझना है ना, तो तुम्हारे समझाने के लिए भी तो मुझे तुम्हारे जैसा बनना पड़ेगा ना यानि मनुष्य तन का आधार लेना पड़ेगा ना इसीलिए मनुष्य का आधार लेकर आता हूँ और आता हूँ उसी तन में जिसका नाम रखता हूँ ब्रह्मा तो उसमें भी कोई मूंझने की बात नहीं । कई बिचारे मूंझ जाते हैं कि ब्रह्मा में परमात्मा आता है, यह कैसे, तभी किस में आवे, कैसे समझावे यह भी तो बड़ा क्वेश्चन है ना । वह जो सुप्रीम सोल नॉलेजफुल है तो भला वह नॉलेज कैसे देवें । बिना ओरगंस के तो बोलना तो आत्मा बिना शरीर के तो बोल नहीं सकती है ना । आप भी आत्मा शरीर के आधार से बोलती हो ना, अगर आत्मा निकल जाए तो फिर आत्मा बोलती है? ना आत्मा बोलती है ना शरीर बोलता है । दोनों अलग होते हैं तो ना शरीर काम का है ना आत्मा काम की है । जब आत्मा शरीर का साथ लेती है तब तो देखो आत्मा जीवात्मा बनती है , जीव कहा जाता है शरीर को, बॉडी को

और आत्मा आत्मा । तो जभी जीवात्मा यानी दो, जीव और आत्मा, शरीर और आत्मा मिलते हैं तभी देखो हाँ बोलते हो, चलते हो, सब कुछ करते हो तो दोनों का इकट्ठा होना चाहिए ना, तो आत्मा अलग शरीर अलग तो दोनों काम के नहीं, ना ही आत्मा कुछ अकेली बिना शरीर के क्या करेगी और ना शरीर कुछ कर सकता है, शरीर डेड बॉडी पड़ी है कुछ करती है नहीं करती है वह काम की है नहीं तभी तो उसको जला देते हैं या कब्रदाखिल कर देते हैं जो आपने रसम के मुझ में तो दो का चाहिए ना । तो परमात्मा को भी अगर नॉलेज देना है तो कैसे देंगे उसको भी तो शरीर चाहिए ना । अभी वह किसका शरीर लेवे तो यह भी समझने की बात है ना, वह भी फैसला होना चाहिए ना कि भाई किसका शरीर लेवे । तो वह कहते हैं मैं आता ही हूँ अधर्म के टाइम पर जभी पतित दुनिया है तो पतित दुनिया में मुझे कोई श्री कृष्ण जैसा सर्वगुण संपन्न, सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी शरीर कैसे मिलेगा, ऐसे मनुष्य ही नहीं है ना । आता ही हूँ यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, कि जब जब धर्म की हानि है तो उसी समय में ऐसे धर्मात्माएं देव आत्माएँ सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण है ही कहाँ, वही तो बोलते हैं मैं बनाने में आता हूँ ना, ऐसे मनुष्य तो मैं बनाने आता हूँ ना, तो जो चीज में बनाने आता हूँ वह चीज पहले कैसे होगी? होंगे ही नहीं ना ऐसे मनुष्य, इसीलिए मैं आऊँगा तो मुझे कौन सा शरीर मिलेगा जरूर पतित दुनिया में पतित शरीर वाला ही मिलेगा न इसीलिए मैं आता हूँ इसमें

और उसका नाम रखता हूँ ब्रह्मा और उसको भी बैठ के पावन बनाता हूँ उसके साथ फिर दूसरों को भी पावन बनाता हूँ । तो उस मनुष्य को भी पवन बनाता हूँ जिसके तन में आता हूँ, उनकी भी तो आत्मा है ना अपनी, उसको भी प्यूरीफाइड बनाता हूँ, उसके साथ-साथ दूसरों को भी प्यूरीफाइड बनाता हूँ फिर ये इजी है न समझने में उसमें मूंझने की भी कोई बात नहीं है क्योंकि वो परमात्मा भी तो सोल है ना जैसे कहीं आपने देखा होगा इम्प्योर सोल किसमें आती है जिसको भूत कहते हैं । कोई देखे हैं, कोई पढ़े होंगे कि किसमें इम्प्योर सोल भूत प्रवेश करते हैं, बोलते हैं । तो जैसे इमप्योर सोल प्रवेश करती है, वैसे ही यह प्योर सोल एवरप्योर तो यह भी प्रवेश करके फिर आ करके नॉलेज बतलाते हैं । जब इमप्योर सोल प्रवेश कर सकती हैं तो क्या प्योर और वह भी एवरप्योर वह नहीं कर सकता है, क्यों नहीं कर सकता है । इसीलिए बाप कहते हैं मैं आता हूँ और आकर के ये नॉलेज देता हूँ लेकिन ये शरीर मेरा नहीं है । मैं टेम्पोरेरी शरीर का आधार लेता हूँ । शरीर तो उसका है न, जिस आत्मा का शरीर है । मैं खाली टेंपरेरी लोन पर, किराए पर समझो, लोन पर समझो, उधार थोड़े टाइम के लिए लेता हूँ और उसी उधार का उसको फायदा देता हूँ की यह नॉलेज जो सुनाता हूँ तो वह भी आत्मा सुनती है कानों के द्वारा, वह भी तो बैठी है ना आत्मा, मैं भी हूँ । मैं सुनाता हूँ इस ऑर्गन से वह इस ऑर्गन से सुनती है, उसी में ही । फिर मैं सुनाता हूँ वह भी सुनती है और दूसरे भी तुम भी, तुम आत्माएं सब इन

ओरगंस के थ्रू, कान के थ्रू सुनते हो । इसमें मूंझने की क्या बात है । नहीं तो परमात्मा कैसे सुनावे, कोई बतलाए दूसरा कोई बुद्धि में किसको आता हो तो सुनाए कि वह कैसे सुनाएं । ऊपर से आकाशवाणी की तरह, वह समझते हैं ऊपर से ऐसे ही आवाज करें, ऊपर से कैसे आवाज करेगा, क्या आवाज कैसे ऊपर से आएगा । ऊपर से कैसे, आवाज तो मुख से होगा ना । तो इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे इसी सभी बातों को समझो, इसमें मूंझने की कोई बात ही नहीं है । तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए कहते हैं मैं उसी तन में आता हूँ और उसका भी हिसाब समझाते हैं कि यह आत्मा वो ही है जो पहले पहले से श्री लक्ष्मी श्री नारायण जिसको कहेंगे वही फिर अपना 84 का चक्कर पूरा करके, अभी यह फिर इसका वह 84वां जन्म है । तो यह लास्ट बर्थ है किसका, श्री नारायण का जो सर्वगुण संपन्न था, वह सतयुग त्रेता द्वापर जन्म काटते अभी ये कलयुग में यह उसका 84वां जन्म । तो अभी उसके 84वें जन्म में आ करके उसकी आत्मा को भी प्यूरीफाइड बनाता हूँ जो जा करके फिर श्री नारायण बनती है भविष्य में और फिर जो दूसरे भी जो सुनते हैं वह भी उसी प्रालब्ध को पाते हैं तो यह तो सीधी बात है यह सारा चक्कर है ना जिस सभी बातों को समझना है । तो यह बातें समझने की है अभी ऐसे भी नहीं कि विष्णु के शरीर में आवे या शंकर के आए क्योंकि शंकर तो है ही आकारी उसको तो यहाँ मनुष्य चाहिए ना, शंकर तो इधर का है ही नहीं, वह तो है आकार जो सिर्फ

अभी विनाश के लिए ये उनका विनाश का रूप दिखाते हैं और विष्णु तो है ही साक्षात्कार, ये चार भुजा वाला कोई मनुष्य होता ही नहीं है, यह सिर्फ साक्षात्कार में यह सिंबल साक्षात्कार होता है दो भुजा नारी की दो भुजा नर की कि तुम ऐसे देवी-देवता बनते हो । एम एंड ऑब्जेक्ट का साक्षात्कार बाकी यह है मनुष्य क्योंकि आप देखेंगे चित्रों में भी ब्रह्मा को दाढ़ी दिखलाते है, उसको नहीं दिखलाते हैं तो उसको थोड़ा ह्यूमन का निशान देते हैं । आप देखेंगे ना वह ब्रह्मा की दाढ़ी का दिखलाते हैं । कहाँ क्लीनसेव भी रखते होंगे, कहाँ दाढ़ी भी रखते हैं लेकिन विष्णु और शंकर को कभी दाढ़ी नहीं देते हैं तो उसको ह्यूमन की कुछ निशानी देते हैं तो उसका माना है प्रजापिता ब्रह्मा, ना कि प्रजापिता विष्णु या प्रजापिता शंकर । प्रजापिता ब्रह्मा तो वह हुमन तो इसीलिए बाप कहते हैं मुझे ह्यूमन में आना है जिसका मैं नाम रखता हूँ ब्रह्मा क्योंकि उसके द्वारा न्यू ह्यूमेनिटी अथवा न्यू जेनरेशंस का आरंभ करता हूँ इसीलिए ब्रह्मा द क्रिएटर, यानी ब्रह्मा से नई रचना रचवाता हूँ इसीलिए उसका नाम ब्रह्मा रखता हूँ और ब्रह्मा तो वैसे हर एक बाप है ना वह अपने घर का ब्रह्मा है, ऐसे कहने में आता है । अर्थ के हिसाब से तो सब ब्रह्मा है जिस तरह बाप जो घर का है स्त्री को ले आया फिर बच्चे पैदा किए तो घर का ब्रह्मा हो गया है क्योंकि क्रिएटर हो गया न । क्रिएटर को ब्रम्हा कहा जाता है बाकी ब्रह्मा कोई तीन मुख वाला तीन सिर वाला या ऐसी ऐसी बातें जो बना दिया है शास्त्रकारों ने और चित्रकारों ने वह कोई

बात नहीं है तो यह सभी चीजों को समझना है । वह जो त्रिमूर्ति सुनाया ना अभी त्रिमूर्ति माना ब्रह्मा विष्णु शंकर यह तीन है ना तो उन तीन को मिलाकर वह तीन सिर दे दिए हैं तो उनको समझा ब्रह्मा तो ब्रह्मा को तीन सर रख दिया तो ब्रह्मा त्रिमूर्ति कर दिया है । अभी परमात्मा है निराकार और वह आया है ब्रह्मा तन में, वह बात ना समझने के कारण वो ब्रह्मा को वो तीन सर लगा दिए हैं और त्रिमूर्ति है परमात्मा यानी तीनो रूपों से ब्रह्मा विष्णु शंकर से यह डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन और फिर जिस दुनिया की कंस्ट्रक्शन करता है उसकी पालना भी यह एम एंड ऑब्जेक्ट यह बैठकर के बाप ने समझाया है तो बातें ऐसी हैं लेकिन इन बातों को यथार्थ रीति से ना समझने के कारण बिचारों को फिर इन सभी बातों में जैसे आया जिसको तो उसमें भी कोई मूंझने की बात नहीं है । अभी फिर भी कोई बात नहीं समझ में आती है किसको कोई नए हैं तो फिर आकर करके समझना चाहिए । बाकी इसमें भी कोई ना होना चाहिए कि इसको क्यों ब्रह्मा बनाया है । ब्रह्मा तो ऐसे तो हर एक ब्रह्मा है वह अर्थ समझना है ना ब्रह्मा का अर्थ क्या है । ब्रह्मा कहा जाता है क्रियेटर को तो ऐसे घर का क्रिएटर तो ऐसे तो हर एक बाप है ही परन्तु ये है न्यू ह्यूमैनिटी का क्रिएटर इसी मनुष्य तन में आकर कि परमात्मा मनुष्य के द्वारा क्रिएट कराएगा ना ह्यूमैनिटी को ह्यूमन के द्वारा ही करेगा ना इसीलिए परमात्मा उसमें आ करके यह प्योरिटी का नॉलेज देता है इसीलिए उसको कहते हैं मुख वंशावली ।

मुख वंशावली का यह अर्थ यह नहीं है कि मुख से आदमी निकल आए वो कई ऐसे समझते हैं की ब्रह्मा के मुख से आदमी निकले हैं, मुख से आदमी कैसे निकलेगा? नहीं, मुख वंशावली का मतलब है मुख से जो नॉलेज सुनाई प्योरिटी का । तो अभी देखो हम मुख वंशावली है ना परंतु हम मुख से थोड़ी निकले हैं । नहीं, मुख वंशावली माना जो मुख द्वारा परमात्मा ने नॉलेज सुनाया उसकी धारणा से हम प्योर बने हैं तो अभी प्योरिटी की जनरेशंस में चलेंगे तो हमने प्योरिटी कहाँ से ली? मुख द्वारा नॉलेज से, इसीलिए हम प्योरिटी की संतान हो गई ना यानी प्योरिटी में आने वाले तो वो हो गई मुख वंशावली नॉलेज यानी जिस मुख से परमात्मा ने नॉलेज सुनाया नॉलेज से हम प्योर होकर के प्योरिटी के जनरेशन्स में चलते हैं तो मुख वंशावली का अर्थ यह है परन्तु वो न समझने के कारण कई समझते हैं की मुख से आदमी शायद निकले हैं इसीलिए ऐसी ऐसी बातें बहुत शास्त्रों में रखी हैं । वो कहते हैं कि एक वह था करण वो कानों से निकला था । वह करण कानों से निकला वो मुख वंशावली का अर्थ समझे की मुख से आदमी निकले । वह कहते हैं एक उसका नासिक का उसने छींकी तो उससे आदमी निकल आया ऐसी-ऐसी शास्त्रों में बातें लगाई हुई है परंतु ऐसे नहीं है कोई नाक से निकलेगा या कान से निकलेगा या मुख से, नहीं, इन सभी का अर्थ है तो यह सभी बातों को बैठ कर के बाप समझाते हैं बाकी कैसे और क्या यह सभी यथार्थ बातें अभी बाप समझाते हैं जिसको समझ कर

के और प्रैक्टिकल लाइफ को बनाना है । तो अभी समझ गए हो ना सभी बातों को यथार्थ क्या है और यथार्थ हमारे जीवन के लिए क्या है इन सब बातों की रोशनी बैठकर के बाप देते हैं उसी को ले करके अपना पुरुषार्थ ऐसा रखने का है बाकी इसमें कुछ मूंझने का नहीं है अच्छा कुछ सुनाना था शायद इस बच्ची को ।

यह आप लोगों को इंग्लिश में समझाएंगी, देखो छोटी है और देखो बातें बड़ी सुनाएंगी कहते हैं ना मुख छोटा बात बड़ी तो आप लोगों को बड़ी बड़ी बातें वर्ल्ड हिस्ट्री एंड ज्योग्राफी समझाएंगी,

He has jyotirlingam form. He lives in incorporial world. He is blissful, knowledgeful and peaceful. he create three deities. they are Brahma, Vishnu and Shankar. Through Subway deity Brahma and human Braham, God Shiva blesses knowledge, wisdom, divine law, virtue and Yoga of Geeta Fame and bliss for establishing sovereignty of satyugi world of complete purity, peace and prosperity, that is Jeevan Mukti. This is Vishnu. Through subway deity Vishnu God Shiva sustains satyugi and Tretayugi jeevanmukt Deity world called Heaven. Shri Lakshmi and Shri Narayan and Shri Sita and Shri Rama are the most most prominent sovereigns. This is Shankar. Through Subway Deity Shankar God Shiva destroys The Kalyugi

irreligious unlawfull world of many violent sovereignties called hell. For destroying mukti International and civil war and natural calamities are their means. This is the Kalpa of Five Thousand Years. There are five yugas in this Kalpa. They are satyug Tretayug, Dwaparyug, Kalyug and Sangamyuga. इशारा इधर करो समझाओ उधर, सामने देखती रहो, हाँ इधर इशारा कर कर के दिस इज सतयुग, दिस इज सिल्वर, हाँ ऐसे ऐसे समझाओ शाबाश There is only one deity dynasty of complete purity peace and prosperity. This is Ibrahim, Buddha and Christ. These are three world. This is Incorporeal world, This is Subtle world and This is Corporial world and These are Brahma Kumaris. They are sitting in Yoga. यू आर, तुम भी है न, ब्रह्माकुमारीज में तुम है की नहीं ? कहो वी आर सिटींग, हम ब्रह्माकुमारी हैं कहो वी ब्रह्मकुमारीज आर सिटींग We are BrahmaKumaries sitting in Yoga. we have taken the sovereignty of half Kalpa. This is Laxmi Narayan. this is golden age and this is silver age Sitaram. There is only one deity dynasty of complete purity peace and prosperity. This is sixteen degree power and this is fourteen degree power. This is the copper age. यू आर सिक्सटीन डिग्री पावर में जाएँगी या थर्टीन में ? in

copper age first we are worshipping God shiva after that we are worshipping all the deities islaamic dynasty by Ibrahim 2005 years ago. This is Buddha. Buddhist dynasty by Buddha 2500 years ago. This is Christ. Christian dynasty by Christ 2000 years ago. This is shankaraacharya, sanyas dynasty by Shankaracharya 1500 years ago and This is Iron Age. There are so many days and sins. And this is The Brahma. Last 84th birth of human brahma. After the distruction this brahma will be first Prince of satyuga. that is Shri Krishna. These are the Russians and Americans. They are fighting for the hell. Look this stands for Europian ministers one another in an International atomic war ये सभी पूंछते हैं की ये दो बिल्ले के रूप में क्यूँ रखे हैं, एक कहानी है बहुत मशहूर की दो बिल्ले आपस में लादे थे और मक्खन बीच में बन्दर खा गया था । वह दो बिल्ले कहीं से मक्खन ले आए थे और आपस में लड़ने लगे । उनमें एक बन्दर चालाक था उसने कहा आओ हम तुमको एक तरीका बताएँ तो तराज़ू लेकर के तौलता गया और थोड़ा थोड़ा दोनों से निकाल के खाता गया-खाता गया सारा मक्खन उसका चांट गया तो इसी तरह से वो कहानी बड़ी मशहूर है न तो इसी का उस पर रखा हुआ है । तो इसी तरह से वो बीच में मक्खन खा जाता है जैसे

मिच्नु । international atomic war Mahabaharat 5000 years ago this is the rosary of 108 pearls. Almighty god shiva non violens army of bharat mother shakties which transforms the iron age irreligious world into golden age viceless world by means of the might of godly knowledge, yoga and supreme purity. कांफ्लुएंस नहीं समझाया संगम वाला । सेप्लिंग की बात तो समझाई ही नहीं जो जरूरी है । अभी सेप्लिंग लगती है वो सेप्लिंग तो बतलाई नहीं एंड ऑफ़ ओल्ड वर्ल्ड बेगिनिंग ऑफ़ न्यू वर्ल्ड end of old world amd beginning of new world this is sangamyuga and this is the golden yug . बहुत अच्छा ताली बजाओ । अच्छा भाई, इसने क्वेश्चन पूँछा, नहीं इसको पूंछना था । अच्छा, अच्छा इन दोनों कुमारियों को फिर कुछ सौगात देनी पड़ेगी, सुनाया है । अच्छा क्या सौगात लेंगे 16 डिग्री ? अच्छा, वह तो तुम जितना अपने को अच्छा बनाएंगे और धारणा रखेंगी अच्छी-अच्छी तो फिर जरूर । अभी अच्छी है । ले सकती हैं और लेने को अच्छा पुरुषार्थ रखती है कैसा ? ठीक है ना । यह भी अच्छी है, इसका नाम क्या है? वीणा, यह तो है ही सरस्वती की वीणा तो बजेंगी । अच्छा आप लोगों का टाइम हुआ है इसीलिए दो मिनट साइलेंस । साइलेंस का मतलब अपने बेहद बाप को याद करो, आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल , ऐसा अपनी बुद्धि को हर वक्त की हम उस बाप के बच्चे हैं ऐसा समझ के हर

वक्त रहो और इस बॉडी से डिटेच ऐसे समझो काम करते हो तो भी ऐसे समझो कि मैं हाथों से लिखवाता हूँ लेकिन कौन आत्मा मैं इस ऑर्गन से बोलता हूँ कौन आत्मा इस ऑर्गन से सुनता हूँ कौन आत्मा तो हर वक्त सुनने के समय-समय ऐसे समझो कि आई एम सोल इससे सुन रहा हूँ आई एम सोल इससे बोल रहा हूँ आई एम सोल इससे देख रहा हूँ यह खिड़कियाँ है तो ऐसे अपने को हर वक्त काम करते भी अपने को आत्मा कोन्सिअस अथवा सोल कॉन्शियस और गॉड कॉन्शियस समझने से तो क्या होगा हमसे कोई ऐसा बुरा कर्म नहीं होगा और इससे हम अच्छे बुरे कर्मों से भी बचे रहेंगे और फिर गॉड की याद भी रहने से और हमारे वो योग अग्नि से पाप भी दग्ध होंगे तो डबल फायदा मिलेगा । यह प्रैक्टिस चाहिए, अभी यह जो सुनाया ना इसकी प्रैक्टिस चाहिए । हर वक्त अपने को सोल कॉन्शियस और गॉड कॉन्शियस रखकर करके चलना । किस तरह से चलना है इसी तरह से, देखो, ऐसा नहीं है देखना नहीं है आँखें बंद करना है देखो परंतु देखते भी क्या देखो यह भी सोल है आई एम सोल ये भी सोल । अभी इन खिडकियों से हम किसको देखते हैं भले देखने में यह बॉडी आती है परन्तु हमारा ध्यान अटेंशन सोल के ऊपर है यह भी सोल है हम और यह एक ही बाप के बच्चे हैं परंतु इन बिचारे को पता नहीं है अभी इसको पता देना है अथवा पता है तो ये भी भाई यह भी बाप को जानकर के अपना हक ले रहे हैं हम भी उससे अपना हक ले रहे हैं इसी-इसी तरीके से बुद्धि में ऐसा रहना

चाहिए इसको कहा जाएगा सोल कोन्सिअस । बाकी ऐसे नहीं है कि मन को एकदम जैसे कंट्रोल करना है कल बताया था जैसे कई बिचारे हठ बैठते हैं वो चीजें नहीं है यह हमको ज्ञान सहित तो इसका है कि कर्म करते भी सोल कोन्सिअस तो ऐसे अपनी बुद्धि को रखने का है । (म्यूजिक बजा माता ओ माता) तो समझते तो हो ना । परमात्मा का ओक्युपेशन परमात्मा की बायोग्राफी क्या है देवताओं की क्या है । तो मनुष्य देवता हो सकता है, मनुष्य परमात्मा नहीं हो सकता तो यह समझना है हमको कोशिश रखने की है मनुष्‌य से देवता बनने की । देवता का मतलब ही है क्वालिफाइड । कौन सी क्वालीफिकेशंस श्रेष्ठ है? सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकारी । तो इसीलिए हमें कोशिश वह करने की है जिसमें आत्मा भी प्योर और शरीर भी प्योर और बाकी वह तो एवर प्योर है । वह तो गॉड इज वन तो हमको कोशिश कौन सी करनी है क्या बनना है वह एम एंड ऑब्जेक्ट का भी नॉलेज होना चाहिए ना । तो यह सभी समझने की बातें हैं जिसको समझ कर के अपना कोशिश अथवा अपना पुरुषार्थ ऐसा रखना है । अच्छा, आप लोगों का टाइम होता है । हम तो बैठे हैं, हम तो कहेंगे बैठे रहो पर आप लोगों को जाना है तो अच्छा (मम्मा टोली देते हैं) अच्छा ये पारवती ये लो, बैकुंथ्मान ये लो, हाँ बैकुंठ का गोला । पूर्णिमा हाँ । और ये हमारी कौन है दुर्गा हाँ दुर्गा । जानकी । अच्छा वो जानकी पकड़ो हाँ । नहीं तो झोली खोलो । देखो झोली है न, वो खोलो उसमें सहज हो जाएगा । श्यामलमा, ये पकड़ेंगी

? बेबी हाँ बेबी बेबी तो कैंच करने में ये तो स्कूल में ले लेते हैं । तुमको , तुम ठहरो । ये कौन है जमुना । सबका हो गया ? अभी बाकी है , अभी बाकि है ये कविता हाँ अंगना को भी मिला । लो सुंदरी । रचना । तुम और हम बच गए है । जमुना को भी । करुना । तुम और हम बच गए हैं न । अच्छा लो । सबको मिला ? अच्छा । देखो । इसका अर्थ है सृष्टि का गोला । बिना प्योरिफिकेशन के ये गोला तो नहीं मिलेगा न । ये सिंबॉलिक लेना । अच्छा , अपने नयों की ज़रा खातिरी करते हैं । तो देखो ये फिर नए हैं न ये रहेंगे फिर ख्याल रहेगा । डबल ये इन एडवांस । तो ये है इन एडवांस कि हमको आगे जाना है तभी तो इनको रहेगा न कि मम्मा ने हमको आगे बिठाया, काहे के लिए बिठाया । टोली मिली ? हाँ इन्हों को ढक दो । दो का । प्रवृत्ति का तो दो का ही है न । ये हमारे इनको दिया , इसको मिला ? अच्छा ये बेबी को भी दूसरा ये मालती को भी । अच्छा , नहीं पॉवर तो अभी ज्ञान से ही लेना है इससे नहीं । ऐसा नहीं समझना ये खाने से पॉवर आ जाएगी । पॉवर तो फिर भी ज्ञान और योग से ही लेना है । इसीलिए तो फिर धारणा रखनी पड़ेगी न । किचडा इधर नहीं छोड़ के जाना है । इधर रख दो किचड के लिए ।अच्छा । अच्छा अभी जो नए हैं न फिर उन्हों के साथ कभी पिकनिक । पुराने किधर गए, पुरानों ने खाया है न ? नहीं मम्मा, पुरानों ने भी नहीं खाया है । अच्छा नहीं खाया ? तो एक पिकनिक रखना । बाहर कहाँ चलेंगे । बाहर तो देखो दुनिया की आवाजों से

दुनिया की निगाहों से हम दूर हैं न । हम कहते हैं यहाँ की दुनिया की कैसी भी आवाजों से दूर दूर ले चल । तो यहाँ कोई जंगल तो है नहीं, जहाँ एकांत हो तो अपना मजा भी हो । यहाँ तो देखो दुनिया की घमसान में तो इसीलिए घर में अच्छा है । (बहन- जंगल तो हैं बहुत, मंगल मानेंगे वहां (हंसी में) । अच्छा वो फिर देखेंगे लेकिन इन्हों को । एक ही वक़्त करें जिसमें सभी फिर आ जाए । अच्छा वो तो फिर देख लेंगे लेकिन एक बार इन्हों को ये भोजन खाने, जितना खाएँगे न, जैसा अन्न वैसा मन तो उधर फिर इनको पिकनिक कराना है । अच्छा बहुत अच्छा , कुछ भी सिंधी हो पंजाबी हो हम सब एक ही बाप के बच्चे हैं उसी को समझना है और अभी बाप के उपर हक़ लगाना है अभी हैं उसके पोत्रे, पौत्रे बनने से वर्सा मिलता है ग्रेंड फादर की प्रॉपर्टी का । तो पौत्रा बनेगा तभी जब ब्रहमावंशी बनेगा । वैसे तो सब उसके बच्चे हैं । तो बच्चे तो है ही परन्तु उसमें वरसे की बात नहीं । पौत्रा बनेगा तो वर्सा मिलेगा इसीलिए जब ब्रहमा बीच में आता है तब है पौत्रे की बात तो ब्रहमा वंशी बनेगा ब्राहमण बनेगा तब है पौत्रे की और वर्से की बात नहीं तो वैसे तो बच्चे सब हैं उसके शिव वंशी तो सब है । ब्रहमावंशी जब तलक न बने न तब तलक पौत्र न बने और पौत्रा न बने तो वर्सा न मिले । अच्छा ऐसा बाप दादा और माँ के मीठे मीठे और बहुत अच्छे सपूत, सयाने और समझदार बच्चों प्रति यादप्यार और गुड मोर्निंग ।

09. गति और सद्गतिi

ओम शांति ।

.....करने वाला... वह तो हो ही नहीं सकता है, इसीलिए यह सभी चीजें बहुत समझने की बात है। सद्गति, दुर्गति मनुष्य के लिए करने वाला अलग। सद्गति देवताओं को, तो देवताएं किस को सद्गति दे नहीं सकते हैं, भले सद्गति वाले हैं परन्तु वो दे तो नहीं सकेंगे न! वो तो सद्गति को पा रहें हैं, भोग रहे हैं जीवनमुक्त में हैं, लेकिन वो दे नहीं सकते हैं, देंगे तो परमपिता परमात्मा, जो दुर्गति सद्गति से अलग है। तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए कोई देवताएं भी किस को सद्गति दे नहीं सकते हैं तो मनुष्य की क्या बात रही, सो भी आसुरी संप्रदाय। आज के संसार के मनुष्य, जिसको कहा ही जाता है संसार को कलह्युगी, तमोप्रधान, दुर्गति वाला संसार। उसी संसार के मनुष्य कैसे दे सकते हैं, नहीं दे सकते ना... जभी सतयुगी मनुष्य, देवताएं, सद्गति पाए हुए, वह भी किस को सद्गति नहीं दे सकते हैं, यानी न तो उस समय टाइम है न किसको जरूरत है सद्गति देने की क्योंकि कोई दुर्गति वाले है ही नहीं और देने का मनुष्य का है ही नहीं इसीलिए वह भी नहीं दे सकते हैं तो फिर आज की दुर्गति दुनिया वाले कैसे किस को सद्गति देने की दावा कर सकते

हैं, क्योंकि सद्‌गति के लिए तो फिर आदि मध्य अंत का सब का नॉलेज चाहिए ना। तो वह नॉलेज अभी मिलती है परमात्मा के द्‌वारा और हम ब्रहमण जानते हैं कि अभी बाप के द्‌वारा समझा है, तो हम ब्राम्हण किसको गति सद्‌गति दे सकते हैं परंतु हम कोई देने वाले अभी बने हैं जबकि बाप के द्‌वारा, तो दाता तो एक हो गया ना। हम भी तो उनके द्‌वारा पाया है, पाकर के, नॉलेज को समझ कर के फिर दूसरों को गति सद्‌गति दिलवाने का मार्ग बता सकते हैं। लेकिन हमको बताने वाला भी वो रहा ना, तो मुख्य तो वही हो गया ना। हम भी तो अनजान में थे ना, ऐसे तो कहेंगे ना, हम भी तो शूद्र से ब्राम्हण बने हैं ना, तो यह सभी चीजों को समझना है, इसीलिए खाली अंधविश्वास में तो...... विश्वास रखकर करके चलने की बात नहीं है। यह बुद्धि, विवेक से, अनुभव से समझने की बातें हैं इसीलिए अपना है अनुभव और विवेक के आधार पर। बाकी ऐसे नहीं शत शत शत शत । तो अभी यह तो समझा है, की ऐसा बाप अभी बेहद का मिला है तो ऐसे बाप से अभी पूरा पूरा वर्सा पाने का.. इसका अविनाशी वर्सा, अविनाशी बाप से अविनाशी वर्सा, यानी जिसमें अल्पकाल का कोई यानी दुख की प्राप्ति नहीं है। सुख जन्मते, शरीर में होते, शरीर छोड़ते सदा सुख। ऐसे सुख की प्राप्ति वाला जो वर्सा है ना उसका पाने का पूरा पूरा अपना पुरुषार्थ रखते रहना। तो अभी बुद्धि में पुरुषार्थ और प्रालब्ध यह सभी। तदबीर और तकदीर, तदबीर समझते हो? तदबीर का मतलब है, पुरुषार्थ, तकदीर का मतलब है प्रालब्ध।

तो अभी दोनों बुद्धि में अच्छी तरह से हैं, एम तो मिली हुई है क्लियर। अभी उस पर काम करना तो अपना काम होगा ना अभी। ऐसे तो नहीं हमारा काम भी वह करें, तो हम ऐसे ही बन जाएं हैं? नहीं, हमको करना पड़ेगा और करना भी हर एक को अपना अपना है पड़ेगा। जो करेगा सो पाएगा, इसीलिए गीता में भी है कि जीवात्मा अपना शत्रु अपना मित्र, जैसे करेगा सो पाएंगे, ना करेंगे ना पाएंगे तो मित्र और शत्रु हुआ न, अभी क्या बनना है? शत्रु तो नहीं बनना है ना। शत्रु तो बने थे, देखो शत्रु बने ना अपने, जो दुख और अशांति भोगी। अभी बाप कहते हैं अपने मित्र बनो, तो अपने साथ भी मित्र बनने का बाप बैठ कर करके सिखलाते हैं इसीलिए कहते हैं सच्ची मित्रता भी कैसे करनी होती है वह भी मैं सिखाता हूं, नहीं तो तब तलक एक दो के ऊपर कोई मित्रता जानते ही नहीं है। वह तो समझते हैं, स्त्री समझती है कि हां पति की हम बड़े अच्छे हैं, उनके आज्ञा में.... फलाने फलाने। पति भी समझ लेते हैं हम बाल बच्चों का, स्त्री का सबका अच्छा करते हैं। ये फिर विकारों से हानि करते हैं । यह कोई जानते थोड़ी है इसकी हानि हो रही है। इस हानि को कोई महसूस नहीं करते हैं और जानते ही नहीं है। नहीं तो देखो यह भी पति पत्नी के विकार का संबंध, विकारों से एक दो का हानि करते हैं। एक दो का गला काटते हैं जैसे की एक दो का मानो हानि करते हैं ना, लेकिन इस हानि का किसको पता थोड़ी है की यह हानी है, यह हम नुकसान करते हैं। एक दो का यह जीवघात करते हैं जैसे की। तो

अभी तो पता रहा हैं ना यह घातक है । हम आत्मा की हानि यहां से होती है तो अभी इस हानि से बाप ने आकर करके बचाया है। इस महापाप करने से अभी बाप ने आकर करके बचाया है, तो अभी पुण्य आत्मा बनना है ना। पुण्य आत्मा बनेंगे तो फिर तभी तो पुण्य आत्माओं की प्रालब्ध सदा सुख की पाएंगे। पुण्य आत्मा एक ही देवताओं को कह सकते हैं। महान आत्मा भी एक देवताओं को कह सकते हैं। इस टाइम कोई महान आत्मा है ही नहीं। नाम तो बहुत रखाते हैं महात्मा, साधु फलाने इधर। परंतु महान आत्मा देवताएं हैं, जिनकी आत्माएं कंप्लीट प्यूरीफाइड थी। उन्ही को हक है महान आत्मा जिनके शरीर भी पवित्र, आत्मा भी पवित्र और तभी तो प्रारब्ध भोगते थे ना, पवित्रता के बल से तो उन्हों को कह सकते हैं, तो महान आत्मा अगर कहैं तो उन्हों को। बाकी कोई मनुष्य को इस दुनिया में अभी कह नहीं सकते हैं। महान माना जिसके ऊपर फिर कोई आत्मा महान हो ही ना। देवताओं के ऊपर कोई महान आत्मा है नहीं। देवताओं के ऊपर तो वो परमात्मा तो वह तो परमात्मा है ना, बाकी आत्माओं में महान तो वह है, देवताएं, जिसके ऊपर फिर कोई मनुष्य आत्मा महान नहीं है जिसकी ऊपर कोई मनुष्य नहीं है, तो मनुष्य की कंप्लीट स्टेटस और कंप्लीट स्टेज जो है, वह देवता। तो कंप्लीट को ही महान कहेंगे ना। तो यह अभी बाप बैठकर के समझाते हैं बच्चे अभी मैं तुमको अभी ऐसा बनाता हूं, ऊंचे में ऊंचा मनुष्य जिसके ऊपर फिर कोई मनुष्य भी ना हो। तो मैं तुमको ऐसा मनुष्य

बनाता हूं ऊंचे में ऊंचा, क्योंकि मैं ऊंचे में ऊंचा हूं ना। तो जैसा बाप वैसे बच्चे। बच्चों को भी तो ऊंचे में ऊंचा बच्चा बनाएगा ना ऐसा । तभी तो बाप की महिमा है ना ऊंचे ते ऊंचा भगवन यानी की हम सब को ऊँच में ऊँच बनाता है बच्चों को। तो ऐसे बाप की स्टेटस, ऐसा दूसरा तो बाप, लौकिक करके किसको इंजीनियर बनाएगा, बैरिस्टर बच्चों को बनाएगा, डॉक्टर बनाएगा, बस न और कोई स्टेटस बस ना, इतना न। अभी यह तो अब बाप हमको क्या, राजाओं के राजा सो भी सतयुगी महाराजा जिनके ऊपर कोई है नहीं। और जहां कोई दुख है ही नहीं। इधर तो बनाएंगे तो कोई डॉक्टर बनाएगा बच्चे को, परंतु क्या फिर डॉक्टर को नही बेचारे को कुछ हो जाएगा तो बाप भी क्या करेगा या वह डॉक्टर भी क्या करेगा? दूसरों का इलाज करेगा, लेकिन अपना कोई कर्म की ऐसी है तो फिर क्या करेंगे? इलाज करते भी कोई बात ऐसी हो जाएगी, तो कहेंगे न की तकदीर, किस्मत तो फिर किस्मत वाली बात आ गई ना। तो वह किस्मत कहां से बनी ऐसी. तो यह सभी चीजें बैठकर करके बाप समझाते हैं बच्चे वो बनाने की फुल पावर जो है न वह मैं देता हूं और समझाता हूं कि किस तरह से कैसी बनाओ तो अभी जभी वह बनाने की तरकीब, बनाने का पूरा लक्ष्य का पता चला है तो उसको पकड़ते और अपना पुरुषार्थ रखते रहना। अच्छा आज तो छुट्टी का दिन है ना। अभी बेंगलुरु में आए, देखो कितना हो गया.. ढाई तीन पोना तीन मास कुछ हो गए हैं। अच्छा तो अभी इतना समय रहे, अभी इतना समय में आप लोगों का

खजाना, पॉकेट, यह बुद्धि रूपी पॉकेट तो भरा अभी.... तो गाय होती है ना गाय देखी वह गऊ वह घास खा लेती है। एक बार तो खा लेती है, पीछे बैठकर करके उसको फिर उगारती है। उगारने का कुछ आप लोग अपनी भाषा में कहते होंगे कुछ तो उसको फिर उगारती है। तो आप लोगों ने अभी ढाई मास में जितना भी घास तो खा लिया ज्ञान का, अभी इसको उगारना है। तो इससे फिर ताकत बनेगी फिर दूध बनेगा, तो गाय में दूध बनता है ना, आप तो दूध पीते हो ना, हाँ.. तो अभी ये तुम बनाएंगे हर एक इंडिविजुअली। अपने में इसको जितना मंथन करेंगे इसको बैठकर के एकांत में उसको फिर इसको प्रैक्टिकल में लाना, तो जितना होगा फिर आप लोग भी हां दूसरे को दूध देंगे, कोई एक दो की हानि नहीं, यानि सुख देंगे, सुख लेंगे। खुद भी सुखी रहेंगे और दूसरों को भी सुख देंगे, शांति देंगे और सुख देंगे। और तो आपका कोई काम रहा ही नहीं। किसको दुख देने का तो अभी रहा ही नहीं। सुख और शांति देना' सुख और शांति में रहना तो यह है फिर। लोग कहेंगे कि हाँ फिर गौ दूध देती है। इसीलिए बाबा कहते हैं ना जो दूध देने वाली अच्छी कोई गाउ होती है, आध सेर भी देती है दस सेर भी देती है। कोई गौ होगी तो एक सेर भी देंगी वो भी देंगी। वो भी डिफरेंट होता है न। तो देखो आप लोगों को कौन सी गउ बननी चाहिए। 10 सेर वाली हाँ। तो ऐसा गौ बनना है जो अच्छा दूध दे, भला दूध दे। जो जैसे-जैसे होंगी गौ तो उसको कहेंगे महारथी गौ और जो कम देंगी उसको क्या कहेंगे, घोड़े सवार, नंबर नीचे नीचे।

इसीलिए अब बनना है तो अच्छी भटानी गौ जो अच्छी तरह से, खुद भी हरी-भरी रहे दूसरों को भी हरा भरा करें। तो ऐसे हरा भरा बनाने का अपना पुरुषार्थ अच्छी तरह से रखना और ऐसी सर्विस में लगे रहने का प्रयत्न करना। अभी देखो बेंगलुरु को अभी तो एक कोने में हो जैसे की । अभी बेंगलुरु को भी पता नहीं है, कभी-कभी ऐसे भी आते हैं बेचारे उन्हों को जैसे मालूम ही नहीं है कि कोई ब्रह्माकुमारी आश्रम है तो अभी बेंगलुरु में ही वह बात फैली नहीं है। तो अभी आप लोगों को ऐसी सर्विस करनी हैं कि कम से कम बेंगलुरु निवासियों को इन चीज का अच्छी तरह से परिचय दे देना है, फिर भले कोई गाली देगा, कोई इंसल्ट करेगा, कोई कुछ कहेगा तो उसमें देह अभिमान नहीं रखने का है। यह तो थोड़ा सुनना सहना पड़ता है परंतु हां फिर भी देख करके, ऐसे नहीं हैं कि..... कहते हैं कि पात्र को देना है जो पात्र नहीं है... यह गीता में भी है कि मेरा ज्ञान पात्र को देना। पात्र माना जो लायक हो, जो सुने जिसको जिज्ञासा हो, जिसको जिज्ञासा ना हो, जबरदस्ती देंगे तो जबरदस्ती देने वाले के ऊपर भी बड़ा दोष चढ़ता है इसीलिए कहते हैं मेरे ज्ञान का ऐसा काम ना कर जो तिरस्कार करें, कराओ मत। हाँ कोई करते हो और अनायास कुछ हो जाता है वह बात एक अलग है, लेकिन ऐसा नहीं है कि जानबूझ ऐसे को दो, ऐसे से डिस्कस करो या कुछ जिसमें फाल्ट हो, तुम्हारा भी समय जाए, ऐसा नहीं। बाकी हां कोशिश रखनी है कि अपना फर्ज है चीज जब हमारे पास है तो दूसरों को मालूम हो। नहीं तो टाइम

आएगा ऐसा जो कहेंगे आप लोगों को, अरे! आप लोगों को मालूम था, तो आप तो हमारे देश के हो, हमारे जात के हो, आप लोगों ने हमें क्यों नहीं बताया कि परमात्मा आया है और यह विनाश होने का है। यह सब बातें ऐसी हैं आप लोगों ने हमें क्यों नहीं सूचना दी पहले से। तो फिर वो दोष लगा देंगे। वह कथा भी है एक ऋषि का तो सबको निमंत्रण मिला था वो एक भागवत में है, फिर एक ऋषि को पता नहीं चला था, पीछे जब ये हुआ तब उसने कहा क्यों हमें निमंत्रण नहीं मिला, हमें नहीं बुलाया गया। तो ऐसा ना हो ना कि पीछे कोई उलाहना मिले। फिर ऐसा कहेगा कि क्यों हमें पता नहीं दिया कि परमात्मा आया है और अभी यह टाइम विनाश का है। तो जब भी टाइम आएगा तो फिर दुनिया की आंख खुलेगी। लोग मानेंगे कहेंगे यह तो आप पहले से ही कहते थे। यह तो बात अभी देखने में आ रही है तो पीछे अटेंशन जाएगा, जब थोड़ा हाहाकार का थोड़ा समय भी नजदीक पड़ेगा ना, तो फिर लोगों की जरा आंख नजर में आएंगे ज्ञान, परंतु उस टाइम कुछ कर नहीं पा सकेंगे क्योंकि नाजुक समय आ करके पड़ेगा। उसी टाइम किसी को आ करके सुनना करना बड़ा मुश्किल क्योंकि जब भी कोई हाल देखो अभी कोई इन चीजों पर घमासान हुआ फिर मारामारी फिर कौन कोई घर से निकले जभी पाकिस्तान और इसका हुआ था तो कोई घर से निकल सकते थे? जब कोई ऐसी हालत होती है ना, तो बड़ा मुश्किल हो जाता है। तो यह भी सभी चीजें हैं तो जिस टाइम कुछ होगा उस टाइम तो कुछ

कर नहीं सकेंगे। करना है पहले करना है, इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यही टाइम है आप लोगों का जो भी तरह से इस ज्ञान को ले सकते हो कर सकते हो। देखो हम भी इधर बेंगलुरु तक पहुंच सकते हैं नहीं तो ऐसा समय आएगा हम तो क्या, परंतु हम तो क्या मुरली भी नहीं आ सकेंगे पोस्ट भी बंद हो जाएगी। कोई टाइम ऐसे भी नाजुक पड़ जाते हैं तो रास्ते रेलवे पोस्ट सब। तो यह भी फिर उसका भी ना मिलेगा मुरली तो ऐसे नहीं कि अवस्था ही खराब हो जाएगा। अभी यह नहीं , ऐसी नहीं कच्ची अवस्था। इतनी मजबूत रखनी है कि कैसे भी समय आए जो धारणा बनाई है वह धारणा बनी रहे तो यह सभी आप को इन एडवांस में यह बातें समझाई जाती हैं कि ऐसे ऐसे समय आने के हैं कि आप कभी आप लोगों को मुरली नहीं मिलेगी कितने कितने रोज और हां हां यह सब होंगा तो आप लोगों को बताते हैं। ऐसे नहीं है कि मुरली ना मिले, आप क्लास में ना आ सको, कोई कारणवस तो ऐसी अवस्था एकदम। वो जो है सोडा वाटर, वो बतलाया ना सोडा वाटर, का सोडा चढ़ती है तो फां...हा फिर फ़िस्स होती है तो एकदम ठंडी हो जाती है । एसा नहीं होना चाहिए, नहीं तो उसको कहेंगे ये तो सोडा वाटर वाला जोश था एकदम, शमशानी वैराग वो मसानी में जाते हैं न, मसाना समझते हैं न? शमशान में, जभी शमशान में जाते हैं तो थोड़ा वैराग आता है, की भाई क्या हुआ कैसे मर गया क्या हुआ थोडा सा वैराग अभी कुछ करेंगे हम। कुछ मसाने से बाहर आया ना, वह तो बस फिर वहां की वहां रही फिर खत्म हो

जाती है। तो ऐसा वैराग नहीं चाहिए थोड़े समय के लिए और फिर सोडा वाटर हो जाए। नहीं, इसको स्थाई बनाना है जो कुछ करने का है करके रहना है। तो ऐसी ऐसी बातों को अच्छी तरह से रखते अपना पुरुषार्थ अच्छा बनाने का यह अपना ध्यान रखना है। और ऐसे पुरुषार्थ करने वाले ही अपना कुछ अच्छा बना सकेंगे, पा सकेंगे और अपने लिए करने का है। बाकी तो आप लोगों को बाप जो अभी टीचर है, सतगुरु है, अभी बाप है उनकी तो जितनी फर्ज अदाई है और पार्ट है वह तो अपना देता ही रहेगा। उसको बजाना ही है, उनको तो अपना कंप्लीट देकर के ही जाना है। परंतु उसका भी लिमिट है, ऐसे नहीं जहां हम भी ढीले ढीले चलेंगे तो हमारे लिए बैठ जाएगा, हमारे लिए थोड़ी बैठेगा, उसका टाइम है। वह उतना टाइम अपना सर्विस कर कर करके अपना काम पूरा... उसी के अंदर हमको बनना है। बाकी ऐसे नहीं हम ढीले ढीले चलेंगे तो वह बैठ जाएगा हमारे लिए। गाडी थोड़ी हमारे लिए रुकेंगी, हमको तो गाड़ी के टाइम पे पहुंचना है न। गाड़ी हमारे लिए थोड़ी रुकेंगी की आए नहीं है पैसेंजर तो हम बैठ जाए, नहीं उसको तो टाइम पर जाना ही है। तो यह भी ऐसे ही है तो हमको टाइम का ख्याल रखना है कि भाई गाड़ी का यह टाइम है हमको पहुंचना है, कि हां फिर गाड़ी भी हमारा ख्याल रखेंगी, की हमको रखना है ना जिनको चढ़ना है। तो यह भी हम गाड़ी में बैठते हैं ना तो अपना ख्याल रखना है। ऐसे ना हो कि कहीं गाड़ी छूट जाए। तो एक ख्याल रखने का है। देखो यह भी गाड़ी कहां चलती है

यह मुक्ति जीवनमुक्ति धाम। यात्रा की गाड़ी निकालते हैं ना ट्रेन निकलती है यात्रा की तो यह अभी हमारी बाबा ने सच्ची यात्रा की गाड़ी निकाली है। तो यह है यात्रा की गाड़ी जिसमें हम बैठे हैं हां। तो टिकट तो ले लेनी है, नहीं तो बुक हो जाएंगी, तो बुकिंग ऑफिस ही बंद हो जाएंगी तो कहेंगे अभी to-late। तो ऐसे भी ना हो जाए इसीलिए बाप कहते हैं अपना उसमें बैठ तो जाओ, पीछे अपनी अपनी ताकत बनाओ। कोई फर्स्ट क्लास पैसेंजर, कोई थर्ड क्लास पैसेंजर, कोई एयर कंडीशन, कोई कैसा तो जितना जितना धनवान होगा ऐसा ऐसा करेगा। तो इस ज्ञान में भी जितना जितना होगा ऐसे ऐसे टिकट लेंगा। तो अभी अपने को साहूकार बनाओ और एयर कंडीशन, फलाने जो बड़े-बड़े टिकट हो वह ले सको। तो अभी ऐसा, परंतु ऐसे भी नहीं है कि ले तो रहे हैं एयर कंडीशन नहीं तो फिर गाड़ी में भी न चढ़े, गाडी में तो चढ़े पहुँच तो जाएंगे न, चल तो जाएंगे ना। पीछे करके, उधर पीछे करेंगे तो पीछे नंबर में आ जाएंगे जो बड़े-बड़े उतरेंगे तो उसको जरा सत्कार मिलेंगे अच्छी तरह से। फर्क तो पड़ेगा परंतु फिर भी सतयुग की उसमे तो चले जाएंगे ना, इसीलिए तो भी ऐसा भी कोई ख्याल ना करें चलो थोड़ा ही सही इसमें भी राजी हो जाए, न कोशिश कभी बड़ी करनी चाहिए तो यह सब चीज है, इसीलिए ऐसा पुरुषार्थ अपना करते और अपने को आगे बढ़ाने का अच्छा-अच्छा रखते रहना। बाकी बैंगलोर निवासी तो बहुत दिखाई पड़ा। रिजल्ट भी बतलाया था ना अच्छे पुरुषार्थी हैं परंतु अभी थोड़ा.... बतलाया ना वह

एकदम पूरा जोश और होश वाला काम अभी चलाना चाहिए। अभी अच्छी तरह से सर्विस करने की है क्योंकि हम तो इतनी अपनी भाषा नहीं समझा सकते हैं। आप लोग तो भाषा जानते हो, तो यहां माताएं भी हैं अच्छी-अच्छी, उन्हों को भी थोड़ा खड़ा होना चाहिए और गोप भी हो मेजोरिटी यहां गोपों की है माताएं शायद भाषा के कारण इतनी आगे नहीं बढ़ती हैं, परंतु हां थोड़े खड़े हो जाएंगे भाषा समझाने वाले तो फिर एक दो में आप लोग हेल्प कर सकेंगे और अपने जो है जात के, उन्हीं की आप सेवा करेंगे। तो सच्ची सेवा है ना, तो अभी आप लोग को रखना चाहिए जब जवाबदारी अपने पर, रिस्पांसिबिलिटी कि जो चीज हमारे को मिली है, हम अपने देशवासियों को अथवा उनको कहते हैं ना चैरिटी बिगिंस एट होम। तो अभी पहले अपने जो है उन्हों को देना और फिर आगे भी बढ़ना, तो ऐसा ऐसा कोशिश करो। और अपना इसमें तो और कुछ नहीं है काम अच्छा। अब 8 घंटा अपने सर्विस में देते हो लौकिक। 24 घंटे हैं सारे दिन में तो अभी 16 घंटे रह जाते हैं उसमें भी 8 घंटे चलो नींद करो, आराम करो, दूसरा करो जो कुछ करना है सोलह घंटा छोड़ देते हैं, 8 घंटा सर्विस का, 8 घंटे सोया, तो भी 8 घंटे बचेंगे, अच्छा 8 घंटे नहीं तो भी चलो 4 घंटे तो दो, इतना तो भला करो। तो 4 घंटे में भी कितना काम हो सकता है। कहते हैं घड़ी, आधी घड़ी, आधी की पुनः आधी इतना भी काम दो तो भी बहुत काम हो सकता है। समझा। तो ऐसा कुछ करो और थोड़ा बहुत अपना तो इससे देखो बल मिलेगा। यह जीवन भी अच्छी रहेगी

और बाकी शरीर निर्वाह का काम तो करना ही है। यह तो आपको नहीं कहते कि सन्यास हो कि मुआफिक की छोड़ो, बच्चे। रचना रची है उनको संभालना है, अपना शरीर भी निर्वाह करना है। कर्मयोगी है ना, कर्म तो करना ही है पेट के लिए, रोटी के लिए तो काम करना ही है तो यह तो बात कोई कहते भी नहीं है कि छोड़ो। करो, परंतु टाइम जाया बहुत जाता है। अगर कोई अच्छा टाइम को चलाने वाला हो तो बहुत टाइम निकाल सकते हैं, तो इसी तरीके से अपना ख्याल रखते और अपना पुरुषार्थ रखते रहो और इसी में अपना बनाना है, बाकी तो देखो बहुत झंझटों में, घर गृहस्ती सिर्फ इतना नहीं है। बहुत झंझटों में मनुष्य अपना टाइम वेस्ट करते हैं, वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी और वेस्ट ऑफ मनी। अभी तो बाबा ने आकर करके सब वेस्टेज से बचाया है, तो अभी देखो कितने आप लोगों के फालतू खर्च होते होंगे सिगरेट, पिक्चर, फलाना, फलाना कितने हैं, खाना-पीना, फालतू इधर। अभी देखो आप लोगों को अब खर्चे का बचाव् मिला है। इसमें अपना जीवन भी अच्छा जिस्मानी भी रुहानी भी और सब में फायदे ही फायदे हैं, तो यह तो फायदे की नॉलेज है ना किस को नुकसान पड़ा है क्या कुछ? नहीं, अगर कुछ कोई बीमार पड़ा होगा, कुछ हुआ होगा तो भी अपने कर्मों का, उसमें कोई ज्ञान का कसूर थोड़े ही है, वह तो होता ही रहते हैं जिसका अपने कर्म का, तो भी ज्ञान से तो और बल मिलता है शांति मिलती है। कोई भी ऐसी बात आती है तो बहुत मन को शांति रहती है। और कोई भी उसमें और ही

सूली से काँटा समझना चाहिए तो यह तो कोई नुकसान की तो बात नहीं है फायदा ही फायदा है। तो ऐसी बातों को, सभी बातों को, सो भी कंप्लीट फायदा मनुष्य के लिए जो है वह मिलता है, उसको लेने का पूरा पुरुषार्थ रखकर करके, अपने को आगे बढ़ाओ ठीक है ना। अच्छा अब बजाओ गीत। अभी गीत तो बजा ही नहीं, हमने ऐसे ही शुरु कर दिया, (किसी भाई ने कहा) वो बहन आये हैं (मम्मा ने कहा) इसको बताना है कुछ? हां बताना है (मम्मा ने कहा) तो आओ, हां इधर इधर आओ ऊपर, तो आओ... यह तो हमारा रोज फ्लावर... देखो यह आप लोगों की टीचर.. इंग्लिश में.. समझाने वाले हैं और अच्छी हैं इसीलिए नहीं तो इसको लंडन तैयारी कर रहे हैं भेजने के लिए परन्तु कहते हैं फिर बेंगलोर वाले कहते हैं की बेंगलोर में एक तो एक तो भाषा की पहले ही है फिर भी ये ये इंग्लिश वगेरह समझा सकती हैं तो अभी फिलहाल रोंक रखा परंतु कभी फिर भेज देंगे इसके लिए लन्दन से बुलावा आ रहा है कि कोई भेजो, कोई भेजो कोई उधर है दो-चार जो अच्छी-अच्छी समझे हुए हैं, परंतु वो समझते हैं कि थोड़ा यह की कुछ अच्छी आएगी तो हम लोगों को भी रहेंगा, दूसरों को भी करेंगी तो बुला रहे हैं। परंतु देखेंगे तब तलक आप लोग रेडी हो जाएं फिर ये इंग्लिश भी चली जाएंगी फिर आप कैसा होंगा ? इंग्लिश, तमिल, तेलुगू, कनाडा, यह सब तैयार हो जाओ और माताएं वाताए भी, यह हमारी लक्ष्मी, अरे इसको तो सीखते अभी कितने साल हो जाएंगे इनमें से कोई तैयार हो जाए इसमें से। दादा है दादा भी करेगा

परंतु यह तो जानते हैं ना जो जानने वाले हैं उनको इजि है नॉलेज को धारण करके सुनाना है तो इन लोगों को खड़ा होना चाहिए। अभी यह अच्छी तरह से हो जाए फिर यहां वालों को हम दूसरी जगह भेज देंगे फिर यहाँ वाले यहाँ का सर्विस के सेंटर संभालो। ऐसे खड़े हो जाओ अपनी माताओं वाताओं को लाओ मैदान पर। देखो इंद्रा नेहरू वो विजयलक्ष्मी देखो है ना वो नेहरु की फैमिली के, उनकी ओरतें भी बहुत अपना सर्विस में, अपने देश सेवा में हिरी हुई है ना तो उसको बच्चे नहीं थे क्या, इन्द्रा नेहरु को बछ्हे भी हैं दो, फिर बच्चे हैं तो बच्चे होते क्या देश की सेवा नहीं करती है? ऐसे थोड़ी है दो बच्चों के कारण, खाली हम अपनी जिंदगी, वो कहेंगी दो बच्चों में अपनी जिंदगी दे उससे हम लाखों की सेवा करें वह अच्छा, वो बच्चे को तो चलो बोर्डिंग में रखाया किसी तरीके से हो सकता है उनका काम भी चलाएं और ऐसा नहीं है उनको कहते हैं कि बच्चे छोड़ो, यह तो बात नहीं है ना, परंतु सारी जिंदगी उसमें ही बस खत्म करना, वह थोड़ी बात है। कुछ जिंदगी को आगे भी करना चाहिए, अपनी सेवा में सफल करनी चाहिए जीवन। यह भी सेवा है ना। देश की सेवा है, तभी तो उन्होंने तन, मन, धन, देखो सैक्रिफाइस कर करके देश की सेवा करी। वो हद की सेवा यह तो और बड़ी सेवा है उससे, उससे तो कुछ नहीं हुआ। बिचारा गांधीजी रामराज्य रामराज्य कहते-कहते बेचारा नेहरू भी गए, गांधी भी गए वह तो राम राज्य नहीं और रावण राज्य और ही रावण राज्य बनता रहा अभी भ्रष्टाचार फलाना फलाना

कितना माथा खोटी कर रहे हैं। तो इसको भी सेवा समझते हैं परन्तु इसका कोई फल नहीं निकल रहा है। अभी यह तो फल मिलने वाली है, इसका तो फल प्रत्यक्ष है। तो बाप कहते हैं कि ऐसी सेवा करने के लिए तो माताओं को आना चाहिए मैदान पर, गोपों को आना चाहिए, उसमें तो बड़ी उमंग से। तो अभी ऐसी अपना पुरुषार्थ अच्छा रखते चलते रहो, अच्छा शाबाश। बोलो.. इंग्लिश बोलेंगे ना? हाँ चलो.... We from Bangalore centre deeply dipress to express our heart pulse separation of our beloved mamaji.... after being in our company for over 40 days we honestly request our gratitude towards exposition of godly knowledge which we will remember forever and put in practice also

अच्छा यह है.... प्रत्यंगना कि हम रहेंगे। अच्छा है, यह भी रखना अपने पास हर एक को, यह भी हर एक के लिए है और यह तो जो करता है सो पाता है। कोई करे प्रत्यंगना कहे या ना कहे। कहने की भी बात नहीं है प्रैक्टिकल करने की बात है और जो करेगा सो पाएंगे तो कर कर कर के रहने का है और कर कर करके अपना पाने का है। हमको भी तो प्रैक्टिकल पाना है हम ही मांगते हैं हमको मिले न प्रैक्टिकल, तो हम भी करें ना प्रैक्टिकल, बाकी कहेंगे खाली कहते रहें और मिले हमको प्रैक्टिकल, ऐसा कोई होंगा? मांगते प्रैक्टिकल है कि हमारे जीवन में सुख शांति चाहिए तो हम करें भी जीवन से ना

प्रैक्टिकल। बाकी खाली कहते रहे कि हां, महिमा करते रहे भगवान की,. कीर्तन गाते रहेंगे., वह करते रहेंगे तो खाली कहने से क्या हो जाएगा। हम भी प्रैक्टिकल करें, हम भी करें तो हमको भी प्रैक्टिकल मिलेगा तो ऐसी बातें हैं ना। तो अभी बाप से पूरा पूरा वफादार, वफादार समझते हो ना? हम उनके कहे प्रमाण जो बाप कहते हैं एसा चलना आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार, उससे सच्चा रहना वफादार का मतलब उनसे सच्चा रहना बाप से। और उसके फरमान पर रहना और अपने लिए ही है, उससे सच्चा रहना माना अपने आपसे सच्चा रहना, उसे झूठा बन्ना अपने से झूठा बना तो उनसे झूठा बैठ कर क्या करेंगे? वह तो धर्मराज के डंडे में अच्छी तरह से समझ ही जाएँगे। हां तो इसलिए बाप तो कहते हैं मेरे से झूठा बन करके तुम्हारा क्या बनेगा, अपने लिए नुकसान करेंगे, मेरे लिए तो कोई नुकसान नहीं पड़ेगा ना, इसलिए अपना नुकसान ना करना है, ऐसा अपना ध्यान रख कर के, अपना पुरुषार्थ करना है । अच्छा आज छुट्टी तो नहीं होगी और स्टेशन के ऊपर भी आप लोगों को बता देते हैं, बहुत तकलीफ नहीं लियो। हम तो यहां मिले अभी स्टेशन पर दो-चार मिनट और मिलेंगे, परंतु बिचारे बहुत भागदौड़ करेंगे, तकलीफ करेंगे, खर्चा करेंगे, यह करेंगे, कोई नहीं, कभी भी बाबा मम्मा बहुत शो पसंद नहीं करते हैं, समझते हैं? (भाई ने कहा) ... बोले थे पानी रखने के लिए आपके लिए, मम्मा के लिए पीने के लिए। (मम्मा ने कहा) हां वह तो बात है, परंतु हम एक बात बतलाते हैं की कभी भी, देखो

हम आते हैं फिर पुणे जाते हैं ना उसके लिए पहले लिख दिया कोई फूल नहीं, कोई घमाशान नहीं। कोई स्टेशन पर तकलीफ नहीं हम घर में आकर पहुचेंगे, अपना घर है न हाँ ? तो कभी माँ बाप बच्चों के पास आते हैं कभी बच्चे माँ बाप के पास आते हैं, अभी तो अपने घर ही है ना। तो कभी मम्मा बाबा जाते हैं बच्चों के पास, कभी फिर बच्चे माउंट आबू पर माँ बाप के पास जाते हैं। तो बच्चों का आना, बच्चों के पास जाना इसमें तो कोई शो की बात नहीं है और ही हम हैं इनकॉग्निटो एकदम गुप्त, अपना कोई बाहर का शो नहीं, वो महात्मा जी जाता है या कोई देवी जी जाती हैं या कोई माताजी जाती है तो हार पहनाओ यह करो वह करो, कोई बाहर का शो नहीं, इनकॉग्निटो एकदम । हम हैं ही गुप्त, बाप भी हमारा गुप्त, हम बच्चे भी उनके गुप्त तो हमारा काम भी गुप्त देखो भगवान् का कितना गुप्त काम है तो हम इनकॉग्निटो है ना, इसलिए इन्कोग्निटो वॉरियर्स। तो अपना कोई इस में अहंकार, अभिमान तो रखने की है नहीं बात, शो रहे हैं। यह भी कभी-कभी थोड़ा सर्विस के लिए भाई फंक्शन, फलाने इकट्ठे करना। अभी देखो यह मम्मा आई तो पहले दिन इतना भीड़ रख दिया, यदि इतना बेठने वेठने का नहीं परन्तु हाँ सर्विस के लिए, किसको बुलाया किया, सर्विस का नहीं तो अपने लिए हमारा कोई स्वमान हो या इन बातों का नही,.. ये सब सर्विस के लिए दूसरों को कौन सा हम एडवांटेज लेवें, किस तरह से दूसरों को लगाएं की यह चीज क्या है। तो ऐसे ऐसे मौके का फायदा लेते है की उन्हों

की बुद्धि में कुछ बैठे दुसरे के फायदे के लिए, दूसरों का जीवन बनाने के लिए, बाकि इसमें कोई अपने स्वमान की, इनकी ये तो बातें है ही नहीं, इसीलिए अपना सब बातों का हम क्योंकि निरहंकारी बाप है ना तो हम बच्चे भी निरहंकारी। तो निरहंकारी और फिर निर्वेरी, किसी से बैर नहीं। तो हमको भी ऐसा ही निर्वेरी, निर्भय। निर्भय, कोई भय नहीं, हम किसी से भय खाने वाले नहीं हैं। अरे पांच विकारों के ऊपर ही हम डालने वाले हैं बाकी भय किस से खाने का है। तो नहीं, हमको अपना रहना चाहिए, अपना विश्वास, अपने पर फेथ, दृढ़ता रहनी चाहिए हम किस के संतान हैं, कौन हैं। तो ऐसे जो मजबूत है ना, जिसके पांव अंगद के माफिक मजबूत हैं, ऐसे नहीं ऐसे हिले, वह अंगद का मिसाल है ना, अंगद ने कहा कथा है शास्त्र में तो उसने कहा हमारा कोई पाव हिलाकर तो दिखलाएं तो अंगद के मुताबिक एकदम, हम कभी नहीं हिलेंगे, तो ऐसा खड़ा रहना है तो हम कोई टांग को नहीं खड़ा करने का है, यह बुद्धि को मजबूत उसी के याद में, उसी के फरमान में उन्हीं के बातों के ऊपर चलने पर, ऐसा रहना है तो कोई हिला के तो दिखला यहां से, किसकी मजाल नहीं हां अभी। तो ऐसा मजबूत और स्थिर रहने का है समझा। अच्छा चलो हां 2 मिनट बजाओ, बाकी तो चिट्ठी पत्र सब लिख सकते हो। कोई को मना नहीं है अब समझा दिया है। सब बच्चे प्रिय है। मां-बाप को चिट्ठी लिखना, बच्चों को कभी कोई मना नहीं है। बच्चे सो हो सच्चे सो हो सपूत सो हो, फिर तो उसके मां-बाप भी खुश होंगा हां किसका पत्र

आया अरे सपूत बच्चे का आया है तो मां-बाप भी कितने खुश। तो भी कहते हैं कुछ भी हो, कोई भूल भी हो जाए, कोई भी हां कोई कामवश, कोई क्रोध वश कोई कुछ भी डालने से धर्मराज बाबा के आगे तो फिर उसका भी आधा हो जाता है लेकिन उसके साथ सच्चा रहना क्योंकि हमको उससे ही तो तो प्राप्त करने का है ना तो इसिस्लिये ऐसे रहने से आप लोगों की उन्नति रहेगी तो इसीलिए कोई भी डायरेक्शंस, कोई भी बात में मूंछों नहीं। कुछ भी है पूछ सकते हो बाकी अपनी बुद्धि भी तो मिली है ना अभी ऐसे नहीं कि छोटी-छोटी बात पूछना है बाबा यह कैसे, बाबा उठू कैसे बाबा बैठे कैसे , बाबा कहेंगे बच्चा है, क्या है उठूं कैसे बैठू कैसे ऐसे थोडा थोडा थोड़ी, वो तो उतना अकाल तो अपना भी है न। कभी भी कोई ऐसी बात पूँछ सकते हो। तो ऐसे बात पूँछ करके अपना रास्ता क्लियर रखना है, बाकी तो टीचर्स भी आप लोगों की बहुत अच्छी है और आप लोगों को हर तरह से मदद देने वाली हैं। इसीलिए उनसे भी आप लोग बहुत बातों को सहज कर सकते हो परंतु कोई ऐसी बात है तो मां बाप से भी कोई मना तो है ही नहीं। इसीलिए ऐसे मतलब अपना कैसा भी जीवन बनाते चलो और आपस में भी कोई भाव स्वभाव, कभी भी कोई बात को देखकर के कभी भी अपना हानि नहीं करना है, किस किस का देखा, किसने कुछ अपना भाव स्वभाव दिखलाया, तो क्या जो करेंगा सो पाएँगा , हमारा क्या उसमें बिगड़ा जो करता है वो उसका इसमें हम क्यों आपस में एक दो की करें की ये ऐसा वो वैसा

ऐसा ऐसा किया ये हम क्यों करें। तो ऐसा ऐसा समझकर करके अपने को ठीक रखना है, कभी भी एक दो के स्वभाव में, टीचर की भी कोई भूल देखो किसकी भी देखो चाहे कोई स्टूडेंट की कोई भी बात का, कभी एक दो में उसका नहीं आना है, हमको अपना गुण लेना है, हमको जिस बात से काम है... और बाप कहते हैं ऑलवेज सी फादर, फॉलो फादर आप मुख्य वो रखो बाकी तो हर एक से गुण ग्रहण करना है। तो ऐसी ऐसी बातों का रख करके चलेंगे ना तो बेडा पार हो जाएंगा समझा इसीलिए अब देखेंगे की बेंगलुरु की कैसा खुशबू आती है, रिटर्न क्या मम्मा को आता है ऐसे नहीं की हम जाए तो फिर देखेंगे अभी। अच्छा अभी तो हम पूने जा रहे हैं, वहां तो होंगे कुछ टाइम, पीछे फिर जहां-जहां जाएंगे वह प्रोग्राम तो आप लोगों को मालूम पड़ता ही जाएगा। मुरली तो आती ही है। चिट्ठी पात्र आते रहेंगे। सब समाँचार मिलता रहेगा। दादियाँ आप लोगों को सुनाती रहेंगी। (एक भाई बोले) मम्मा आपका मुरली जल्दी से भेजना । हां जल्दी से बिलकुल जल्दी से। अच्छा इतना तो फर्क पड़ता है ये डायरेक्ट....वो तो ज़रा कागज़ पर लिखेंगा, ये होंगा पोस्ट होंगा तो थोड़ी पारुखी हो जाती है न। एक रोटी होती है वो (आंच से) उतरती है और खाया जाता है, गरम गरम का स्वाद होता है और वो ज़रा थोड़ी रखी हुई थोड़ी ज़रा फर्क तो पड़ता ही है न (एक भाई ने कहा वहां जो लोग लिखता है उन लोग को कहें) हाँ उन लोग को भी कहेंगे। अभी आप जैसे हमारे पास चुस्त आएँगे न तो फिर काम लेंगे मधुबन में

अच्छी तरह से। अच्छा चलो दो मिनट टाइम हुआ है (म्यूजिक बजा) अच्छा टोली दो । गाडी शायद खड़ी हो गई है क्या? गाडी खड़ी हो गई है। (गाना बजा - रुक जा रात ठहर...) ये स्वर्ग की बादशाही उनका गोला कैंच करना, तो हम अभी कैंच करते हैं बाप से अपना वर्सा एते हैं, तो ये है वरसे का गोला, इसको संतरा नहीं समझो। इसको समझो जैसे उसको देखो कैंच किया है न बदलता है की हाँ मैं अभी स्वर्ग का इसका हिस्सा... आया हुआ हूँ अभी मेरी राजधानी है तो ये अपने स्वर्ग का गोला है। यही तो मक्खन चोर है न। यही तो चुराने की है। अच्छा ये गोपिनाथ ये तो आगे बैठे हैं, ये हमारे शिवराम, लो परमधाम, ये हमारे कौन है, नए आयें हैं शायद, अच्छा, बच्चे हैं न देखो बच्चों से तो खेलना भी होता है, ये तो अपना घर का है , दूसरे सत्संगों में तो कहेंगे वो तो कहेंगे भाई परसाद है हाँ, ये तो बच्चों से तो अपना, अपना तो है ही फैमिली, ये तो है ही रूहानी फैमिली, इसको कहते हैं डिवाइन फैमिली तो अपना है ही फैमिली संबंध, अपना कोई गुरु और साधु संत दूसरा थोड़ी है, उसमें तो बड़ा...यह है प्रैक्टिकल लाइफ से रिस्पेक्ट देना, बाकी तो बच्चे घर में होते हैं, जो जाके बाप की मूंछ भी पकड़ेंगे, और दाढ़ी भी पकड़ेंगे, नहीं हां.. बच्चे होते हैं तो क्या , अगर दूसरा कोई मूंछ में हाथ डाले उसके ऊपर तो केस कर देंगे, एसा एसा दूसरा कोई डालेगा तो इन्सल्ट का केस हो जाए और बच्चा मूंछ को पकड़ेगा तो उसको और ही कहेंगे बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा बच्चा एसा एसा करेंगा तो होता है न । तो

देखो बाप की उसने, मूछ में बच्चा हाथ डाले तो बच्चा बच्चा कहेगा जैसे और ही प्यार करेगा और दूसरा कोई डालें तो इन्सुल्ट का केस है। यहां तो अपना फैमिली है ना, तो इसमें कोई इंसल्ट का उनका नहीं परंतु बच्चा बच्चा भी होना चाहिए ना। सपूत बच्चा होगा, प्यारा लगेगा। उसको तो आंखों पर बिठाएंगे सर पर चढ़ाएंगे ऐसा बच्चा भी बनना है ना, ऐसे नहीं बच्चा ऐसा हो जो मूंछ पकड़ते रहे खाली। ऐसे भी नालायक बच्चे होते हैं ना, जो बाप की भी दम निकाल देते हैं। ऐसा तो नहीं बनना है ना, वह सपूत सपूत। तो लवली कोई बच्चे होते हैं लवली फादर भी होते हैं बड़े लवली रमणीक रहते हैं घर में बच्चों से । तो अपना बाबा भी बहुत रमणीक है न, लवली बेलवेड फादर। आते हैं जिस रथ में वो भी अनायास रथ भी ऐसा लेते हैं अनुभवी , एक्सपीरियंस हैं उन्हों को भी । बहुत लवली ये देखो बाप भी हाँ यह देखो बाप भी निमित्त किसको बनाया है। अच्छा लो गोपीनाथ,... सुरेंदर , यह हमारे प्रोफ़ेसर कैसे हैं, अभी डबल प्रोफेसर, रूहानी और जिस्मानी दोनों बनने का है और अच्छी तरह से इसको लेते और दूसरों की हां अभी आपको बेंगलुरु की बहुत अच्छी संदली में जो भी भाषा हो आपकी उससे सर्विस करना है अभी टीचर्स से अच्छी तरह से गाइडेंस लेते और अच्छी तरह से, फिर आना माउंट आबू हम तो सब को निमंत्रण दे रहें हैं अच्छी तरह से, अच्छा कुछ करके आएंगे, तो बाबा कहेंगे ये बच्चा बहुत अच्छा काम करके आया है। नेचुरल है जो बच्चे अच्छे होते हैं तो बाप की निगाहों में अच्छा ही

होता है यह तो लॉ है। तो ऐसे ऐसे अच्छी तरह से, अच्छे बनकर करके और अच्छी तरह से आएँगे तो और अच्छा वहां रहेंगा बाकी तो जो करता है अपना ही करता है, ऐसा ऐसा अपना रखते रहना। हमारी धनलक्ष्मी, यह हमारा बैकुंठ है, यह हमारा रंगनायक पकड़ेंगे ? आएंगा ? ये हमारा शांति स्वरूप राजपूत और कौन है, लो धर्मराज। (हाँथ उठाओ) यह पपैय्या पपिय्या पपिय्या पपोईया पकड़ो अच्छा ये उपर यह कौन है हमारा, देखो ये कौन सी बैकुंठ की बादशाही लेना ग्लोब। ये हाँथ से छूट नहीं जाना चाहिए । ये तो भले छूट जाए लेकिन वो न छूटनी है न। आप पकडिये ये दूसरा नया। हमारी भी एक्सरसाइज होती है न। ये हमारा दादा है जो हाँ पकड़ना, गोप पीछे हैं पकड़ना माताएं तो नहीं इतना । हा भाई बादशाही लेना है सी कौन सी टीम लेना है तो लो यहां से सूट नहीं जाना चाहिए होना तो चाहिए ना आप पकड़िए यह दूसरा नया हमारा है उसको पीछे कौन बैठा है उसको भी दो लो श्याम सुंदर। अच्छा वो हमारा दुसरा जो आते हैं पकडिये। ये हमारा राजगोपाल । अच्छा जयकिशन । ये हमारा बैकुंठनाथ, बैकुंठनाथ नाम है न । अच्छा कोई बात नहीं कोई बात नहीं । ये हमारा जो आया है ये हमारा राम कृष्ण। डबल मिल गया ? अच्छा कोई नहीं राम किशन डबल नाम रखा है न । अच्छा और किशको नहीं मिला है हाथ उठाइए बीच में हमारे कृष्णामूर्ति, ये हमारा श्याम सुंदर और कौन रहा, किसको नहीं मिला ? भूषण, और किसको नहीं मिला हा कौन है, किसको नहीं मिला हाँ ये लो पकड़ो। और

किसको नहीं है इधर। (किसी ने कहा श्री राम का बाप, सभी हँसे) और किसको नहीं बस... ? बच्चा है इसको हम देते हैं और दूसरा कौन है किसको नहीं मिला , और किसको नहीं बस, आपको तो जरूर ये तो हमार्रे नजर में है। अच्छा अभी माताएं देखें, ये तो ज़रूर तुम ये तो सीखी होंगी। लो माताजी हम आपको दे रहें है आपको तकलीफ पड़ेगी, हा आपको दे रहे हैं ये हमारी माताजी। अच्छा आलोक देखे.. वाह। लक्ष्मी, अच्छा बहुत अच्छा। रोजी रोज फ्लावेर, ये हमारी ....अच्छा मीठा है न बहुत ? सभी हाँ देखो हमने अभी नहीं खाया है न.... अच्छा मेहनती है हाँ, ...यहीं मेहनत कर लिया ऐसा नहीं कहा की हम वहा लेंगे जमा करो। अच्छा ये तुम कहाँ हैं बुलाओ सबको बुलाओ । अच्छा बाप, बाप भी गोल है बिंदी बिंदी एकदम और सृष्टि भी गोल है और आत्मा भी गोल है और यह चक्कर भी गोल है। सब गोल अभी ....भी गोल। गोल कहता है अभी चलो सभी अब बेग बेग्गेज सब गोल करो अभी, हाँ देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध से अभी अपनी बुद्धि को हटाओ। अभी गोल हो जाती है। अब सब गोल करो गोल का मतलब है अभी सब को चलना है यहां के पुराने देह सहित देह के सर्व संबंधों को अभी छोड़ो उसको गोल करो अभी बेग बेग्गेज उठाओ चलना है उधर। उसको कैसे उठाना है हाँथ में नहीं उठाके चलना है अब अपने कर्मों से भरना है। वो भर कर करके आत्मा को ले जाना है। तो अब सब आत्मा में प्योरीफाइड कर करके भरना है, तो कैसे प्योरीफाइड करना है वो सब आपको मालूम पड़

चुका है। अच्छा बाप दादा और मां के मीठे मीठे बहुत सपूत बच्चों प्रित और ऐसे सावधान जो अच्छी तरह से रह कर करके चल रहे हैं ऐसे बच्चों प्रित याद्प्यार और गुड मोर्निंग।

10. ग्रहस्थ आश्रम जीवन

रिकॉर्ड:-

जाग सजनिया जाग, नवयुग आया आया सजनिया, जाग सजनिया जाग.......

ओम शांति, कौन कहता है जाग सजनिया जाग ? बुद्धि में है ना कि जगाने वाला एक ही बेहद का बाप है । उसको साजन भी कह सकते हैं क्योंकि हम सब सजनिया या भक्तियाँ कहो या आत्माएं कहो, उनको याद करते हैं, तो इसी हिसाब से हम सब याद करने वाले सजनिया और उनको याद करते हैं तो वो हो गए साजन । तो अभी वह बाप उनको बाप भी कहें, तो अभी बाप कहता है कि अभी जागो । उसका मतलब है कहां सोए हुए हैं? सोए हुए को ही तो जगाया जाता है ना । तो अभी सोए हुओं को आकर के बाप जगा रहा है । कैसे सोए हुए हैं, वह बैठ करके समझाते हैं । ऐसे नहीं हैं कि जागे बैठे हो । नहीं! जगाना और सोए किसमें हैं वह चीज बैठकर के समझाते हैं कि जो तुम्हारा जन्म जन्मांतर का सदा काल का सुख था और जो प्राप्ति थी वह खो बैठे हैं और खो कर के अपने दु:ख के जन्मों में अभी चल रहे हो तो जैसे उस सुख से तो सो गए हो ना । पता ही नहीं है कि हमारा कोई सदा काल का भी सुख था, जिस सुख

में हम सदा सुखी थे । तो उसको भूल गए हो अर्थात उससे सो गए हो । जानते ही नही हो, ना अपने सुख को जानते हो, ना सुखदाता बाप को जानते हो कि हम को बाप के द्वारा क्या वर्सा मिला था और उसमें हम कितने सुखी थे इन बातों को नहीं जानते हो तो उसका मतलब उसको भूल गए हो या उनसे सो गए हो । अभी फिर बाप आ करके उस नई दुनिया की जागृति दे रहा है । कहा ना नवयुग आया है, तो अभी यह नया युग कहो । अभी यह पुराना युग, कलयुग को पुराना युग कहेंगे ना, सतयुग को नया युग कहेंगे । तो अभी नया युग आ रहा है अर्थात नई दुनिया आ रही है । अभी यह पुरानी दुनिया खत्म होती है और नई दुनिया आ रही है । तो बाप कहते हैं अभी फिर से जागो, वो ही नई दुनिया अथवा सुख की दुनिया अभी फिर से आ रही है, लेकिन उसके लिए अभी तुम को क्या करना है, वह उठकर करो । तो अभी जगा रहा है वो ही करने के लिए कि नए युग के लिए अथवा नई दुनिया के लिए क्या करना है, वह करना तो अभी है ना तो उसी का सेपलिंग अथवा कर्म श्रेष्ठ की प्रालब्ध, अभी लगानी है । तो अभी लगाएंगे तभी फिर प्रालब्ध को पाएंगे, इसीलिए बाप कहते हैं जागना तो अभी है ना, ऐसे नहीं है पीछे जागेंगे नहीं! अभी जागना है । अभी कर्म को श्रेष्ठ बनाना है । जिस श्रेष्ठ कर्म के आधार से फिर अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध को पाना है । तो अभी कहते हैं अपने कर्मों को अच्छा बनाने का पुरुषार्थ रखो । यही लास्ट जन्म है । तुम्हारे पुराने जन्मों का यह लास्ट जन्म है । इसमें ही तुम अभी

अपने कर्मों को श्रेष्ठ करके उसका जो सैपलिंग अथवा फाउंडेशन लगाएंगे उसके आधार से फिर तुम नए युग अथवा अथवा नई सतयुगी की दुनिया के सुख को पाएंगे । वो सैप्लिंग लगाना तो अभी है ना । काम अभी करना है, पीछे काम नहीं करना है पीछे तो खाना है, प्रालब्ध प्राप्त करने की है । जो करेंगे सो पाएंगे लेकिन करना तो अभी है ना । तो अभी क्या करना है उसकी बैठ करके यह नॉलेज अथवा शिक्षा दे रहे हैं । तो अभी वह शिक्षा जो रोज आकर अच्छी तरह से समझते हो कि अभी उसके लिए क्या करने का है । हमारा यह जन्म जन्मांतर जो उल्टा हुआ वह किस बात से बिगड़ा और किस कारण से हम दु:खी हुए, वह अभी बुद्धि में है, कारण का पता है दु:ख का कारण कहाँ से हुआ । दु:ख का कारण कोई परमात्मा ने नहीं दिया । हम अपने भूल के कारण दु:खी हुए हैं । वह भूल कौन सी हुई है, वह भूल आ करके करेक्ट कराने के लिए अभी बाप उसकी रोशनी दे रहा है । तो वह रोशनी देता है बाकी ऐसे नहीं है कि कोई चमत्कार दिखाए या कोई लाइट या कुछ, नहीं! यही ज्योत जगाना अर्थात इस बात की आ करके रोशनी देते हैं कि तुम्हारे में कौन से कारण से दु:ख आया है । वह कौन सी भूल हुई है वह भूल को आकर करके करेक्ट कराते हैं । वह परमात्मा ने आकर के भूल को करेक्ट कराया अर्थात उस बात की रोशनी दी है । नॉलेज को भी रोशनी कहा जाता है ना जैसे डॉक्टरी नॉलेज से डॉक्टर बन जाते हैं तो देखो यह डॉक्टरी नॉलेज डॉक्टरी की रोशनी हो गई ना, जिससे पता चलता है इसको

क्या हुआ है उसको कैसे ठीक करना है, फिर उसको कैसा बनाना होता है । तो इन सब बातों की रोशनी बाप दे रहे हैं, यानी नॉलेज, नॉलेज को रोशनी भी कहा जाता है, बाकी रौशनी का अर्थ यह नहीं की रोशनी देखेंगे । कई समझते है, साक्षात्कार होता है या फिर रोशनी या लाइट का थोड़ा कुछ देखते हैं तो समझते हैं कि यह हमने रोशनी पा ली, परंतु यह रोशनी पाने का मतलब यह नहीं है कि हमने वो कुछ देखा तो बस हमने वो पा लिया, नहीं! यह तो है नॉलेज, नॉलेज को रोशनी कहा जाता है । तो उस बात का नॉलेज मिलता है अथवा रोशनी मिलती है की यह बात कैसे है कैसे बनती है कैसे चलती है अर्थात इस बात की हमको रौशनी है । पर रोशनी का मतलब यह तो नहीं ना कि कुछ चीज देखी तो बस हमने वो रोशनी पा ली, नहीं! नॉलेज होनी चाहिए । तो इसी तरह से बाप भी आकर करके हमको, हमारे बिगड़ने का और फिर बिगड़ी हुई बात को सुधार कैसे करना है इन सब बातों की रोशनी देता हैं । तो रोशनी नॉलेज से देंगा ना बाकी रोशनी कुछ दिखाएगा थोड़ी । नहीं, नॉलेज से देगा । तो उसने भी आकर के नॉलेज दी है, शिक्षा दी है, समझाया है क्योंकि हमारी कोई भूल हुई है तो उस भूल के ऊपर समझाया जाता है, भूल के ऊपर कुछ दिखाया तो नहीं जाएगा ना या रोशनी दिखाएगा या कुछ साक्षात्कार कराएगा तभी कोई समझेगा कि हां भई ये कुछ है, नहीं! उसके लिए नॉलेज चाहिए, शिक्षा चाहिए। तो हमारी भूल हुई है और हमारे कर्म भी भूल से भ्रष्ट हुए हैं यानी भूल के कारण, तो ये सब

ऐसे ही नहीं है, हम भ्रष्ट बने हैं कोई भूल के कारण, अभी श्रेष्ठ भी बनेंगे उस भूल को करेक्ट करने से, बाकी ऐसे नहीं है कुछ देखने से । तो इसलिए कई जो यह इच्छा रखते हैं कि साक्षात्कार हो या हम कुछ देखें तो देखने से तो कोई भूल थोड़ी करेक्ट हो जाएगी । भूल करेक्ट होगी समझ से करेक्ट, उसके लिए समझ चाहिए । और भूला जाता है कोई भी बात में मनुष्य तो बेसमझी से भूला जाता है । कोई बात की बेसमझी से भूल हो जाती है, फिर उसी भूल को करेक्ट करने के लिए उसी बात की फिर समझ लानी होती है । बाकी ऐसे तो नहीं है ना, कुछ देखने से कोई भूल करेक्ट होगी । तो यह भी चीजें समझने की है कि हमारी भी कोई भूल रही है, जिससे हम अपने कर्मों में भ्रष्ट हुए हैं और भ्रष्ट कर्मों के कारण ही दु:खी हुए हैं तो हमारे दु:ख का कारण भूल है, अभी उसी भूल को करेक्ट करने के लिए फिर बाप को भी ज्ञान देना पड़ेगा ना यानि समझ । तो समझाने के लिए तो उसको जरूर कोई कॉलेज या स्कूल की तरह से बैठ के समझाना होगा । जैसे कोई भी बात समझानी होती है तो जैसे डॉक्टर बनाना होता है तो डॉक्टरी कॉलेज है, उसमें बैठ कर के नर अथवा नारियों को वह शिक्षा दी जाती है जिससे वो डिग्री लेते हैं अर्थात वो डॉक्टर या इंजीनियर या बैरिस्टर उस नॉलेज से बनते हैं । तो इसी तरह से परमात्मा को भी आकर के इस चीज का नॉलेज देना पड़े न । तो नॉलेज भी इसी तरीके से देंगे ना, उसके लिए और क्या तरीका हो सकता है । मनुष्य को समझाना और उसी स्टेज पर लाना

उसके लिए तो इसी तरीके से समझाना होगा ना । इसीलिए देखो इसको कोई कॉमन सत्संग नहीं कहा जाता है जैसे और सत्संग में बस आया, खाली सुना, चलो हम दर्शन किया या दो वचन सुना, बस सुन कर चले गए, यह वह चीज नहीं है । यह तो स्कूल अथवा कॉलेज की तरह से चीज है जैसे डॉक्टरी कॉलेज में कोई जाएगा तो डॉक्टर बनके निकलेगा ना । वह डिग्री पा के निकलेगा, इसी तरह से यह भी वह चीज है जहां हम आ कर के वह पा करके ही रहेंगे, बाकी ऐसे नहीं कि आए खाली सुन के चले गए । नहीं! यह प्रैक्टिकल लाइफ बनाने की कॉलेज समझो । यह प्रैक्टिकल जीवन में हमारे जीवन का आदर्श क्या है, उसी चीज को पाके कैसे रहना है, उसकी प्रैक्टिकल में प्रैक्टिस कराई जाती है । तो यहां प्रैक्टिकल प्रैक्टिस मिलती है कि घर गृहस्थ में रहकर के अपने प्रवृत्ति का जो आदर्श है वह कैसे बनाएं, क्योंकि हमारे प्रवृत्ति का आदर्श बहुत ऊंचा है और अनादि प्रवृत्ति है । अनादी कोई सन्यास तो नहीं है ना । वह जो सन्यास मार्ग है तो उनको तो ऐसे नहीं कहेंगे ना कि वह सन्यास मार्ग कोई यथार्थ मार्ग है, नहीं! हमारा नर और नारी दोनों अनादि हैं और उस अनादि दोनों को पवित्र प्रवृत्ति में कैसे चलना है, उन्हीं को ही ऊंचा आदर्श कहेंगे इसीलिए गीता में भी कर्म योग को श्रेष्ठ रखा गया कर्म सन्यास से । वास्तव में कर्म सन्यास अक्षर भी जो है वह रॉन्ग है क्योंकि कर्मों का सन्यास होता ही नहीं है । सन्यास भी जो सन्यासी करते हैं ना, वह घर गृहस्त का सन्यास करते हैं लेकिन कर्म

का सन्यास नहीं करते हैं । फिर भी जाकर करके वेद पढ़ना, शास्त्र पढ़ना, ग्रंथ पढ़ना, पढ़ाना यह भी कर्म हो गया ना तो कर्म का संन्यास नहीं हुआ, हां बाकी ऐसे कह सकते हैं कि घर बार का सन्यास । तो घर बार का संन्यास माना कर्म का सन्यास तो नहीं हुआ ना । फिर भी यह कर्म छोड़ के थोड़ा दूसरा कर्म जाकर करते हैं । कर्म बिना तो कोई रह नहीं सकता है इसलिए कर्म सन्यास अक्षर भी कह नहीं सकते क्योंकि कर्मों का सन्यास हो ही नहीं सकता है । जो भी कुछ करना है वह कर्म ही है ना, चलो वेद, शास्त्र पढना या हठयोग या प्राणायाम जो भी जा कर के करते हैं, यह भी तो कर्म ही है ना । तो कर्म के बिना तो मनुष्य रह नहीं सकता है इसीलिए कर्म का सन्यास होता ही नहीं है । हां बाकी उसको कहेंगे जो घर बार छोड़कर चले गए या घरबार का सन्यास, परंतु वास्तव में हमको पवित्र बनने के लिए कोई घर बार के सन्यास की दरकार नहीं है । वह तो हमारे सामने अपने जो पूजनीय देवताएं हैं उनका भी आदर्श है, वह भी घर बार वाले थे ना लेकिन उन्हों को हम क्यों कहते हैं पवित्र, तो इसका मतलब घर बार में भी पवित्र थे और इसीलिए हमारी प्रवृत्ति का नाम भी है देखो है ही "गृहस्थ आश्रम", कहते हैं ना ग्रहस्थ को कहा जाता है- गृहस्थ आश्रम और गृहस्थ धर्म खास हमारे भारतवासी । देखो अपने गृहस्थ और प्रवृत्ति के ऊपर कैसे अच्छे नाम पड़े हुए हैं कि गृहस्थ को गृहस्थ आश्रम और गृहस्थ धर्म । तो धर्म और आश्रम का नाम दिया जाता है । धर्म किसको कहा जाता है जहां

पवित्रता की बात होती है । आश्रम किसको कहा जाता है - आश्रम में कोई खराबी या विकारों का या ऐसा कुछ भी । आश्रम माना जहां शांति या सुख की या पवित्रता की बातें होती हैं । आप कहेंगे कि हम कोई फलाने आश्रम में जाते हैं तो आश्रम नाम सुनेगा तो सुनने से ही समझेगा कि आश्रम में जरूर कोई शांति की या कोई अच्छी बातें चलती होंगी । आश्रम में कोई खराब बातें या कुछ दूसरी बातों का तो नहीं होता है ना । तो हमारा गृहस्थ ही आश्रम था । हमारा गृहस्थ ही धर्म था और नासे मैं भी कहते हैं ना धर्मपति, धर्मपत्नी नासे में भी आता है ना धर्मपति और धर्मपत्नी । धर्मपति और धर्मपत्नी, तो धर्म का नाम आता है ना । अभी कहाँ है धर्म का संबंध, पति पत्नी का नाता अभी धर्म का कहां है? अगर धर्म के बदले अधर्म का शब्द कहा जाए तो कह सकते हैं क्योंकि अभी विकारों का संबंध है इसीलिए हमारी प्रवृत्ति का जो इतना नाम अच्छा था और प्रवृत्ति का जो आदर्श था वह तो अभी नहीं रहा है ना, इसीलिए बाप कहते हैं कि तुम्हारा जो भी प्रैक्टिकल लाइफ का प्रैक्टिकल जो तुम्हारा आदर्श था और जिस को ही कहा जाता था कि प्रेक्टिकल नेचर । कई मनुष्य समझते हैं कि नहीं यह तो विकारों में चलना और पति पत्नी का संयोग अथवा पति पत्नी का संबंध यह है ही विकारों से चलने का तो फिर बाप कहते हैं नहीं, पति पत्नी को गाया ही जाता है धर्मपति और धर्मपत्नी । पति पत्नी का संबंध बड़ा ऊंचा है और पवित्र नाते का है, लेकिन वह आज पवित्रता का बल नहीं है इसीलिए वह विकारों में जा

कर के अपना जो प्रवृत्ति की जो रचना है वह रखते हैं या उनमें जो कुछ चलता है उससे वो दुःख अशांति पाते रहते हैं , नहीं तो प्रवृत्ति का अर्थ, आदर्श बहुत ऊंचा है । नर नारी बहुत ऊंची चीज है और उनका संबंध भी, यह रिलेशन भी बहुत ऊंची चीज है, परंतु उस रिलेशन को कैसे निभाया जाए, किस तरह से उसमें चला जाए वह तुम लोगों को आता नहीं है ना, इसीलिए बाप कहते हैं कि यह सभी आकर करके मैं अक्ल सिखलाता हाँ क्योंकि तुम्हारा विकारों ने अक्ल जो है न वह छीन लिया है अथवा खत्म कर दिया है । तुमको आता नहीं है कि आपस में, इन सभी रिलेशंस में भी रहते कैसे चलना होता है क्योंकि तुमने मेरे से रिलेशन कट कर दिया है ना । बाप से रिलेशन कट हो गया है तो फिर तुम्हारे भी रिलेसंस जो है न, वह बिगड़ गए हैं । पति-पत्नी होकर रहना नहीं आता है तुमको, बाप बेटा होकर के रहना नहीं आता है, राजा प्रजा होकर रहना नहीं आता है, सभी रिलेशंस तुम्हारे बिगड़ गए हैं और सभी रिलेशंस में तुम एक-दो को दु:ख देते और लेते रहते हो, क्योंकि मेरे से रिलेशन जो है वह तुम्हारा अभी कट है इसीलिए तुमको वह बल अथवा वह ताकत आ नहीं सकती है कि तुम्हारे सदा सुख के जो आपसी के रिश्ते रिलेशंस है मनुष्यों का आपस का, वह तुम्हारे सदा सुख के कैसे रहें, वह रह नहीं सकते हैं । इसीलिए बाप कहते हैं कि अभी पहले तुम मेरे से रिलेशन जोड़ो । मेरे से जोड़ो तो मेरे से तुमको ताकत मिलेगी । वह ताकत तुम लोगों को आने से फिर तुम लोग अपने आपस के जो

रिलेशन है, तुम आत्माओं का, वह सदा सुख का रहेगा । अभी वह हो गया है सदा दु:ख का । एक दो को दु:ख ही देते हो तो दु:ख का ही है ना । देखो अकाले मरना, रोगी होना, देखो स्त्री को कुछ होगा तो क्या पति को दु:ख नहीं होगा? पति को कुछ होगा तो स्त्री को दु:ख नहीं होगा? तो यह तो है ही दु:ख के कारण ना । तो यह सभी जो यह एक-दो को दु:ख देना या दु:ख का होना, यह सभी कर्म के हिसाब से हो गया ना । तुम्हारा कर्म का खाता या ये सभी जो दु:ख के खाते बने हैं, तो तुम एक दो को दु:ख देने और लेने में इसीलिये आए हो क्योंकि तुम्हारे में अभी वह रिलेशंस निभाने की पूरी ताकत नहीं है, इसीलिए बाप कहते हैं कि वह ताकत मेरे रिलेशन से मिलेगी । मेरे से तुम्हारा क्या रिलेशन है वह अभी तुम नहीं जानते, तो जब तलक उस चीज को नहीं जानो और उस चीज के रिलेशन में ना आओ तब तक तुम्हारे भी जो रिलेशंस है न उसकी तुम्हारे में अभी ताकत नहीं है जो एक-दो से तुम सुख का बल ले सको, दुःख ही देने की बातें आती हैं इसीलिए बाप कहते हैं अभी मेरे से रखो, तो फिर तुम्हारे संबंध भी जो है ना, वह सदा सुख के रहेंगे । वह प्रवृत्ति ऐसी थी, ऐसे नहीं है कि प्रवृत्ति है ही नहीं या यह संसार है ही नहीं, जैसे कई समझते हैं, नहीं! ये संसार है, यह रिलेशंस भी अनादि हैं । ऐसे नहीं कहेंगे नर नारी कभी थे ही नहीं, अनादि है, लेकिन उन्हों का संबंध जो अभी बिगड़ गया है एक-दो को दुःख देना और यह सभी कारण बन गए हैं, यह क्यों बना? यह दू:ख कहां से बीच में आया? इन

रिलेशंस में दु:ख कहां से आया? यह रिलेसंस में दु:ख आया हमारे विकारी खाते के कारण, तो विकार जो बीच में आए न उन्होंने हमारा खाता, हमारा रिलेशंस यह सब दु:ख के कर दिए हैं इसीलिए बाप कहते हैं इनको बीच से निकालो । जिस चीज ने तुम्हारे रिलेशंस में दु:ख पैदा किया है तो दु:ख पैदा करने वाली जो चीज है न उनका नाश करो । यह कोई मैंने नहीं पैदा किया है, यह तो तुम्हारे विकारों ने पैदा किया । विकारों के कारण तुम्हारे रिलेशंस, तुम्हारे कर्म का खाता जो है ना, वह सारा दु:ख का हो गया है इसीलिए अभी इस चीज को निकालो तो फिर तुम्हारा सब सुख का हो जाएगा, परंतु निकले कैसे? बात है कि निकले कैसे, इसीलिए कहते हैं अभी मेरे से अपना रिलेशन जोड़ दो तो ताकत मिलेगा, उसके लिए पावर चाहिए । तो मेरे पावर से अथवा मेरे बल से ही तुम्हारे विकार जो हैं ना जो पाप बनाते हैं.., यह कई नहीं समझते हैं कि विकारों से ही पाप बनता है, पाप कहां से बनता है और पाप का नतीजा ही दु:ख है । यह तो भले कई समझते भी हैं कि पाप मत करो, लेकिन यह पाप होता कहां से है उनका भी तो पता होना चाहिए कि पाप कौन कराता है । पाप कराते हैं यह विकार, ये मोहवश यह भी पाप है, क्रोधवश यह भी पाप है, लोभवश आदि ये जो पांच विकार हैं यही तो पाप बनाते हैं, इन्हीं विकारों से जो हम कर्म करते हैं वह पाप के नतीजे में जाता है इसीलिए बाप कहते हैं कि अभी ये पाप ना बनाओ, तुम्हारा पाप ना बने तो उसके लिए इन विकारों को नष्ट करो । तो वो बैठ करके इस

चीज की रोशनी देते हैं की यही कारण है इसी कारण को मिटाने से फिर तुम्हारे रिलेशन, तुम्हारे संबंध सदा सुख के होंगे । तो वह चीज बैठकर के समझाते हैं इसके लिए रोशनी देगा ना, यह रोशनी है ना, अभी पता चलता है ना कि भाई किससे हमको दु:ख मिला है । तो जो दु:ख देने वाली चीज है उसको तो जल्दी से खत्म करो, इसके लिए थोड़ी ऐसे कहना चाहिए कि आहिस्ते आहिस्ते, धीरे-धीरे पुरुषार्थ करेंगे ना, थोड़ा थोड़ा करके करेंगे ना, जल्दी कैसे होगा, आदि ऐसा थोड़ी कहेंगे- भाई जो चीज दु:ख दे रही है उसके लिए तो यही कहेंगे न भाई इसे जल्दी से जल्दी ख़त्म करो । देखो आप डॉक्टर के पास जाते हो कोई बीमारी दु:ख होता है तो कहते हैं न की इलाज करके जल्दी से उसको खत्म करो, यही चाहेंगे न जल्दी से कैसे उसको ठीक करें । उसको थोड़ी कहेंगे आहिस्ते, आहिस्ते, धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, नहीं! जब यह पता चला है कि इसी के कारण दु:ख है तो उसमें काहे के लिए कहते हो कि आहिस्ते-आहिस्ते क्योंकि वह चीज आपको बहुत प्रिय लग रही है ना । वह विकार बहुत काल के चले होने के कारण वह अभी छोड़ना पड़े तो उसमें कहते हैं कि आहिस्ते आहिस्ते परंतु यही तो चीज है जिसने हमको हमारे अनेक जन्मों से दु:खी किया है तो दु:ख वाली चीज को तो झट से काट फेंक देना चाहिए ना । जबकि अभी पता चला है और ऐसी भी चीज नहीं है कि जिससे हमारा काम नहीं चले । क्या क्रोध के बिना काम नहीं चलेगा ? हां.. मुन्नीलाल... लोभ के बिना काम नहीं चलेगा? कई समझते हैं

लोभ नहीं करेंगे तो फिर हम कमाएंगे कैसे, कई समझते हैं मोह नहीं करेंगे तो बच्चे कैसे संभालेंगे, कई समझते हैं कि क्रोध नहीं करेंगे तो आज की दुनिया में काम कैसे चलेगा । इसीलिए समझते हैं इन सब के बिना काम नहीं चलेगा और काम के बिना फिर बच्चे संतान कैसे पैदा होगा । वो समझते हैं भगवान के पैदा करने का काम, भगवान के चलाने का काम इन सभी विकारों से ही चलने का है इसीलिए समझते हैं कि यह विकारी सत्ता है, परंतु नहीं, यह विकार ही है जिससे हम गिरे हैं । कोई यह सत्ता नहीं है । वो हमारी पवित्र दुनिया भी चली हुई है जिसमें हम पवित्रता के बल से संतान भी पैदा रहा है, पवित्रता के बल से संतान की परवरिश भी हुई है, पालना भी हुई है । हमारा संसार पवित्रता के संबंध में चला हुआ है तो ऐसे नहीं कहेंगे कि हाँ पवित्रता के बिना संसार कैसे चलेगा । तो यह सभी चीजें बहुत अच्छी तरह से समझने की है इसीलिए कई जो समझते हैं कि विकारों से ही काम चलने का है, यह रॉन्ग है तो इसीलिए बाप कहते हैं की ये जो विकार हैं यह पहले से नहीं है, ये पीछे हुए हैं । मैंने पहली- पहली जो दुनिया बनाई थी, जिसकी मैं बैठकर कभी शिक्षा देता हूँ, मैंने उसी चीज को बनाया था, जो निर्विकारी कहा जाता है, जिसको अंग्रेजी में भी कहते हैं वाइसलेस । देखो दो अक्षर है ना वाइसलैस और विषियश, तो जरूर है कि वाइसलेस का मतलब है निर्विकारी । पांच विकारों को भी अंग्रेजी में फाइव वाइसेस कहते हैं न तो वह है ही वाइसलेस, तो वाइसलैस को ही तो निर्विकारी कहेंगे

ना, बाकी ऐसे थोड़ी ही निर्विकारी का कोई दूसरा कोई मीनिंग है । कई समझते हैं निर्विकारी की मीनिंग ही दूसरी है, इसीलिए वह समझते हैं कि यह पांच विकार, ये विकार थोड़ी ही हैं । ये काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि यह विकार थोड़े ही हैं, यह तो नेचर है, यह तो चली आई है इनके बिना संसार कैसा । परंतु नहीं, वह है ही वाइसेस । वाइसेस कहा ही इनको जाता है और अंग्रेजी में भी कहते हैं वाइसलेस, उसको ही तो निर्विकारी कहते हैं । तो उन वायसेस का ही तो नाश करना है ना । तो जब तलक उनका नाश ना हो तो निर्विकारी कैसे हों । तो ऐसे नहीं है कि इनके बिना संसार नहीं चलेगा या संसार चलाने की कोई यही अपनी सत्ता है, नहीं! और उसी चीज से हम दु:खी हुए हैं, दु:ख का कारण ही यही हैं । तो बाप बैठ कर के वह चीज निकाल कर देते हैं कि तुमको दु:खी किसने बनाया, तुम्हारा पाप कौन बनाता है और पाप कराने वाली कौन सी चीज है, अभी इनको छोड़ो तो पाप छूटे, बाकी ऐसे नहीं है कि तुम कहेंगे कि हम किसी का गला थोड़े ही काटते हैं, हम किसको दु:ख थोड़ी ही देते हैं, हम कोई झूठ थोड़े ही बोलते हैं, तो हम तो कोई पाप करते नहीं हैं लेकिन अभी सब झूठ बोलते हो । बाप तो ऐसे कहेंगे ना, कैसे झूठ बोलते हो क्योंकि तुम को पता नहीं है की व्हाट ऍम आई , तुम्हें इसका नॉलेज नहीं है कि मैं कौन हूँ, मेरा पिता कौन है, हमारा क्रिकेटर कौन है, और मुझे करना क्या चाहिए, इन बातों की जो यथार्थ नॉलेज है वह तुम्हारे पास नहीं है । तुम सत्यता को नहीं

जानते हो इसलिए तुम ड्रुथ को जानते नहीं हो तो फिर जो कुछ चलते हो वह सब झूठ चलते हो । इसीलिए बाप कहते हैं देखो हो एक ही कि मैं आत्मा हूँ लेकिन अपने को समझ बैठे हो कि आई एम बॉडी परंतु तुम बॉडी नहीं हो, तुम सोल हो । तो देखो यह भी झूठ हो गया ना, हो एक चीज और समझते हो अपने को दूसरी चीज, ये कितना भारी झूट है । हो आप अगर लव जी और अपने को दूसरा समझते हो कि नहीं मैं दूसरा हूँ तो यह भी तो चोरी करना हुआ ना, हैं एक चीज और समझना अपने को दूसरी चीज, हो सोल और अपने को समझते हो बॉडी तो इस जैसी और चोरी कौन सी है? और ऐसी चोरी की हो सोल और अपने को बॉडी समझकर के चलने वाला फिर क्या कहेंगे, वह फिर और दूसरों को भी चोरी सिखाएगा और दूसरों से भी ऐसे ही संबंध में चलेगा बॉडी कॉन्शियस में, नहीं तो रहना चाहिए सौल कॉन्शियस और जिसको सौल कॉन्शियस और गॉड कॉन्शियस कि हम आत्मा हैं और उसी परमपिता परमात्मा की संतान है तो दोनों बुद्धि में चाहिए ना कि हमारा पहला रिलेशन उसके साथ है । तो जब तलक अपना रियलाईजेशन नहीं है तो फिर वह कैसे रहेगा कि हम किसकी संतान है । अपने को सोल ही नहीं समझेंगे तो सोल परमात्मा की संतान है यह भी बुद्धि में नहीं आएगा और उसका रिलेशन नहीं रहेगा तो वह ताकत भी नहीं रहेगी जिससे हम आत्माओं आपसी का जो रिलेशन है, वह सुख का रहे, इसलिए बाप कहते हैं कि देखो कितने झूठे हो । और अपने को समझते हैं कि हम बड़े सच्चे हैं

की हम किसी को धोखा नहीं देते । ये तो अपने को ही धोखा दे रहे हो । एक के बदले दूसरा मान के बैठे हो, यह तो बड़े ते बड़ा धोखा है । अपने को भी धोखा है और फिर ऐसे चलते हैं तो दूसरे को भी धोखा ही देते हो । यही है एक-दो का घात करना । फिर इसी तरह चलके जो तुम विकारों के वशीभूत होकर चलते हो, वह फिर घात करते हो, एक-दो की हानि करते हो, उससे आत्मा निर्बल बनती जाती है, तो किसको निर्बल बनाना, किसको कमजोर बनाना, किसका घात करना, यह भी तो घात हुआ ना । नाश करते हो ना, यह तुम मानो अपनी आत्मा की हानि करते हो । अपनी भी हानि करते हो और दूसरे की भी हानि करते हो, तो यह घातक ना बने तो क्या बने, यह पाप ना हुआ तो क्या हुआ । यही तो पाप है ना, तो तुम्हारा यह जो पाप हो रहा है, ये तुमको पता ही नहीं चलता है, बाकी तुम बाहर से समझते हो कि हमने किसी का तो गला तो काटा ही नहीं है, हमने किसी का खून तो किया नहीं, हमने किसी से झूठ तो बोला ही नहीं, हमने किसी की कोई हानि तो की ही नहीं है, परन्तु जो इतनी बड़ी हानि कर रहे हो, इतना नुकसान कर रहे हो अपना भी और दूसरो का भी, इसी से तुम अपने पर पाप का भागी बनते जाते हो लेकिन इसका तुमको पता नहीं चलता है । इसी कारण ही तुम अपने कर्म में दु:खी होते आए हो । यह दु:ख कैसे बनता आया, अगर तुम्हें पता होता तो थोड़ी बनाता, कोई दु:ख बनाएगा अपना? नहीं! सब सुख के लिए कर्म बनाने में लगे हुए हो, लेकिन बन नहीं पाता है । क्यों नहीं

बन पाता है, क्योंकि तुम्हारे अनजानाई से जो है ना, उल्टे कर्म होते रहते हैं और तुम्हारा दु:ख का कारण बनता जाता है इसीलिए बाप कहते हैं अभी इन्हीं बातों को समझो और समझ करके जहाँ से तुम्हारा दु:ख बनता रहा है, उसको अभी बंद करो और फिर तुम अपने कारण को सुधार करके अपने लिए सुख बनाते चलो, तो कैसे चलो वह बैठ करके सिखाते हैं । अभी इसमें तो बहुत ही सीधी, सहज और सिंपल बात है इसमें कोई मूंझने की या कोई संशय लाने की बात नहीं है । कईयों को जो संशय आ जाता है कि यहाँ घर गृहस्थ आदि ये सब छुड़ाया जाता है, कोई छुड़ाने की थोड़ी ही बात है यह तो और ही घर-गृहस्थ को सुधारने की बात है । हमारी जीवन और घर गृहस्थ जो सदा सुख का रहे, वह कैसे रहे, उसको ही तो बनाया जाता है ना । हमारे पास देखो आदर्श ही यह है प्रवृत्ति का, कि हम क्या बनाते हैं, यही तो एम रखी है कि हमको यही तो बनाना है । अगर हमको घर गृहस्ती छुड़ाना होता तो यह घर गृहस्थ का आदर्श क्यों रखा है, यही तो लक्ष्य है कि घर गृहस्थ ऐसा बनाओ इसीलिए कहते हैं अभी यह दु:ख की दुनिया अथवा यह दु:ख का घर- गृहस्थ जो बना चुके हैं, अभी उसका कैसे सुधार हो, उस बिगड़ी को कैसे संवारों इसीलिए कहते हैं इससे अभी मन को हटा करके अभी इसमें मन रखो तो कहा जाता है ना अंत मते सो गति इसीलिए अभी यह चीज कैसे बने, उसे बनाने का ही तो यह प्रयत्न सिखाया जाता है ना । इसीलिए कई ऐसे जो मिसअंडरस्टैंड करते हैं की यहाँ घर-गृहस्थ को छुड़ाया जाता है, यहाँ

अपने प्रवृत्ति का कुछ नहीं रख सकते यह सब रॉन्ग है । यहाँ है ही आदर्श प्रवृत्ति का और प्रवृत्ति का ही जो संपूर्ण कंप्लीट आदर्श है वह कैसे बने, वो ही तो चीज बनवाई जाती है न, और वो बनाने वाला भी परमात्मा है, वो कहते हैं ना, परमात्मा ने यह संसार बनाया, परमात्मा ने नर और नारी को रचा, ऐसे कहते हैं ना । तो परमात्मा ने कैसे रचा वह भी समझना है ना । परमात्मा ने ऐसे थोड़ी रचा है कि तुम महादु:खी रहो और ऐसे ही रहो, नहीं! परमात्मा ने जो चीज रची, वह बड़ी अच्छी रची, वह कैसी रची, वह बैठ करके समझाते हैं कि हमने ऐसी रची और तुमने उसको क्या बना दिया है । देखो तो सही, क्या बन गये हो, अपने से ही देखो । अपने जीवन से देखो कि क्या बन गए हो - दु:खी, रोगी, अकाले मृत्यु और यह संसार के कई दु:ख, ये सब मैंने थोड़ी बनाए । इसीलिए बाप कहते हैं मैंने क्या बनाया - नर और नारी । तुम्हारे संसार, तुम्हारे रिलेशंस यह सब मैंने कैसे बनाए वो बैठकर के समझाते हैं, देखो यह रिलेशन है ना । यह प्रवृत्ति तो दिखलाते हैं न नर नारी दोनों रिलेशन में खड़े हैं । ये ऐसे नहीं अलग - अलग हैं तो नर-नारी को पति पत्नी, ये संबंध दिखलाते हैं कि पति-पत्नी हैं तो जरूर बच्चे भी होंगे, तो फिर रिलेशन से रजा-प्रजा आदि सारा संसार होगा ना । तो इससे सिद्ध होता है संसार पूजा जाता है । बाप कहते हैं तुम्हारा संसार क्या था बड़ा पूजनीय था, अभी देखो क्या हो गए हो । दु:खी, कंगाल, मोहताज, अभी मरो तो मरो, रोगी बनो तो रोगी बनो, मनुष्य क्या कर सकते हैं, कुछ कर

सकते हो? फिर देखो मनुष्य कितना अपना अभिमान रखते हैं । कि हाँ हम यह बड़े फर्ज अदा करते हैं, भाई ग्रहस्थ के भी तो फर्ज अदा करने हैं न । अभी ग्रहस्थ के फर्ज अदा न करेंगे तो क्या करेंगे । कौन कहता है कि फर्ज अदा न करो, परन्तु फर्ज पालने की ताकत कहाँ है अभी । अभी बाप बैठा है, बच्चे को कुछ होगा, बाप क्या कर सकता है, कुछ करेगा? कुछ नहीं कर सकते हो । भले चलो धन होगा, पैसा होगा करके कुछ उसका इलाज करेंगे बस ना, परंतु कोई कर्म का ऐसा कड़ा हिसाब है कि सब कुछ होते भी कुछ नहीं बन पाता है, फिर क्या करेंगे? फिर कहेंगे ना किस्मत । तो फर्ज हुआ ये? जो किस्मत पर आखिर बात लगानी पड़े अथवा हमारे कर्म या इनकी किस्मत, ऐसा कहना पड़े तो उसको क्या कहेंगे, यह थोड़ी फर्ज हुआ । वह तो फिर किस्मत के वश हुआ ना । जो कर्म किए उसके वश है तो फिर कहेंगे ना जो कर्म किया है उसका पाना है तो फिर क्यों कहते हो कि ये हमने फर्ज किया । फर्ज तो वह है जो अपने बच्चे को, अपनी जो भी ड्यूटी है उसमें पूर्ण चला सको परंतु चलाने की ताकत कहाँ है अभी? तो वह ताकत नहीं है ना, तो बिना ताकत के अभिमान रखना कि हम फर्ज अदा कर रहे हैं, तो फर्ज अदा होता ही कहाँ है । स्त्री के बैठे पति चला जाता है फिर यह कहाँ है फर्ज, नहीं तो लॉ नहीं है । वो हमारी जीवन का लॉ था, कभी स्त्री के बैठे पति नहीं जाता था यानी स्त्री विडो नहीं हो सकती थी, कभी विडो का शब्द था ही नहीं । लेकिन आज कहाँ है, उसको ताकत कहाँ है यह सब

मरना जन्म लेना कोई अपने वश में है? है ही नहीं, इसका कुछ हम कर ही नहीं सकते हैं । तो यह हमारी बेबसी । जीवन हमारी लेकिन जीवन में हम बेबस हैं । जीवन को हम अपने तरह से और अपने सुख के पूरे साधन की तरह से नहीं चला सकते हैं, नहीं तो यह जीवन हमारा सुख का साधन है ना । जीवन काहे के लिए है, जीवन मुक्ति के लिए है न, जिसमें कोई दुःख का नाम निशान ना हो, लेकिन अभी है कहाँ? यही बैठ कर के बाप समझाते हैं जो तुम्हारी लाइफ है, लाइफ पाकर के तुम सदा सुखी रहो उसके लिए है, लेकिन अभी ऐसा तो नहीं है न कि सुखी हो इसमें, इसीलिए कहते हैं कि वह चीज जो मैंने बनाई थी, वह ऐसी बनाई थी । उसमें कोई दुःख नहीं था, लेकिन अभी तो दुःख आ चुका है न , तो वह तुम्हारी भूल है इसीलिए कहते हैं कि मैं आ करके उसकी रोशनी देता हूँ. जगाता हूँ इसीलिए कहता हूँ कि जागो सजनिया, अभी कुछ आंख खोलो कि तुम कहाँ ये भूल से अपना दुःख का सब बना करके और उसमें सो गए हो । अभी जागो, अभी नवयुग आता है अभी फिर से ऐसी नई दुनिया बनने का टाइम आया हुआ है तो अभी जाग करके उसके लिए तैयारी करो और उसके लिए अपना पुरुषार्थ रखो । अभी यह बैठ कर के समझाते हैं तो ये तो अच्छी बात है ना इसको क्या कहेंगे, घर गृहस्थ बिगाड़ना है ? यह तो और ही हमारे घर गृहस्थ में बल यानि ताकत, शक्ति जिसको कर्मश्रेष्ठ की धारणा कहा जाए वो बैठकर करके बाप देता है, इसमें और तो कोई बात ही नहीं है । तो यह चीज समझनी

है परंतु कई बहुत ना समझने के कारण, मिसअंडरस्टैंड होने के कारण कई समझते हैं कि यहाँ शायद कुछ ऐसा सिखाया जाता है परन्तु नहीं यहाँ ऐसी कोई बात नहीं है । यहाँ सिखाया ही यह जाता है कि अपने घर गृहस्त को और ही सुख के सम्बन्ध से चलाओ लेकिन उसमें ताकत आनी चाहिए ना । यह भी कर्म के हिसाब से सब चलता है ना, कोई पति बना, कोई पत्नी बना, कोई बाप बना, कोई बेटा बना, यह सब क्या है - कर्म का हिसाब है ना, तो कर्म के हिसाब में ही बल भरो, जो तुम्हारे कर्म का खाता अच्छा चले । यह तो और ही कर्मों के खाते को सुधारने की सीख है, बाकी इसमें और तो कोई बात ही नहीं है । हाँ वह सन्यास जो है जिसमें घर बार छोड़कर जाते हैं वह तो सीधा ही घर बिगाड़ने की बात है । वह तो घर छोड़ कर चले जाते हैं उसमें तो और ही घर बिगड़ता है । वहाँ तो पति घर छोड़ कर चला जाता है क्योंकि पुरुषों के लिए है ना, नारियों के लिए नहीं है, खाली पुरुषों के लिए है । वह तो सीधा ही घर बिगाड़ना है , अब पुरुष चला जाए तो बिचारी नारियों का हाल क्या रहेगा । वह तो सीधा घर बिगाड़ने वाली चीज है क्योंकि पुरुष ही तो घर का मेन है ना, घर वाले कमाई खाए तो कहाँ से? अगर नारी चली जाए तो पुरुष के लिए नारियां तो बहुत हैं, एक छोड़ेगा दूसरी ले लेगा, लेकिन अपने हिंदू रिवाज के अनुसार पुरुष चला जाए, बेचारी हिंदू नारी के लिए ये तो है नहीं की जाकर के दूसरा करे । यह सन्यास उस ढंग से तो घर को और ही बिगाड़ने वाला हुआ न, कि पुरुष चला जाए तो बेचारी

नारी क्या करे । संन्यास, जो की और ही घर बिगाड़ने वाला है उसकी तो बहुत मान्यता या महिमा करते हैं, उनकी बहुत इज्जत करते हैं , उन्हों को तो कोई भी देखेंगे तो नमन करेंगे तो उनकी इज्जत करते हैं फिर ये तो और ही बाप बैठकर के अपनी पवित्र प्रवृत्ति का आदर्श सुनाते हैं - कैसे दोनों पवित्र रहकर के चलें क्योंकि दोनों को हक़ है, दोनों ही तो आत्माएं हो न और उसी बाप की संतान हो । तो तुम दोनों को हक़ है ऐसे नहीं उस आत्मा को हक़ नहीं है, नहीं! उसको भी हक़ है तुम को भी हक़ है और तुम दोनों ही इम्प्योर हुई हो और दोनों को ही पवित्र होना है । ऐसे नहीं की एक इम्प्योर हो एक प्योर हो, ऐसे रहेंगे फिर संसार कैसे चलेगा । ये अगर प्योर बैठी है, तुम भी प्योर बनो, नहीं तो दूसरा कहा जाएँगे । जब तलक दोनों न प्योर बने तो संसार स्वर्ग कैसे हो सकेगा । इसीलिए देखो तुम्हारे उस संन्यास से कोई संसार स्वर्ग तो नहीं होता न । इसीलिए बाप कहते हैं की में आता हूँ दोनों को बनाने के लिए, और उसी से ही तो घर गृहस्थ स्वर्ग बनेगा और कहा भी जाता है घर घर स्वर्ग, तो घर घर स्वर्ग ऐसे होगा न, बाकी घर- घर स्वर्ग ऐसे थोड़ी होगा । घरबार छोड़ के चले जाएंगे तो फिर स्वर्ग कैसा, तो घर घर को स्वर्ग बनाना है न । तो घर-घर कैसे स्वर्ग बने, उसकी ये प्रेक्टिस बाप प्रेक्टिकल में बैठ के बाप अभी कराते हैं । तो इन्हीं सब चीजों को समझना है इसीलिए ऐसे जो मिसअंडरस्टैंड करते हैं न की घर बार यहाँ छुड़ाया जाता है, वो मिसअंडरस्टैंड मत करो, यहाँ लाइफ की एम क्या है, वो बनाई

जाती है तो यहाँ की भी एम को समझना चाहिए । परन्तु कभी नए-नए आते हैं, कभी कोई आते कभी कोई आते हैं तो ऐसे भी धोखा आ जाता है तो फिर दूसरे की सुनी सुनाई बातों से काफी मिस अंडरस्टैंड हो सकते हैं । जो सयाने होते हैं न, वो कहते हैं हम अपने आँखों से देखें, हम अपने कानों से सुनें तभी उसे कर सकें धारणा । तो समझदार का काम है हर बात को अच्छी तरह से देख, समझ और फिर उस बात के राईट और रोंग को समझना चाहिए और यहाँ जो भी आप अनुभव सुनते हो न, तो बताते हैं की बुराइयां निकलती जाती हैं और अच्छाईयां आती जाती हैं तो अच्छाई बनाने के लिए, अच्छा जीवन बनाने के लिए और घर गृहस्थ ही अच्छा बनता है न, तो अच्छा बनाने में क्या बुराई है । उसकी माना ही है की आज कल बुराई मनुष्य से छूटती नहीं है और हम समझते हैं की नहीं! यहाँ ऐसा क्यों ? ऐसे बुराइयों में फंस गए हैं की बुराई छोड़ने का उनका जी नहीं चाहता है, विकार छूटते नहीं है और फिर समझते हैं की यहाँ विकारों को क्यों छुड़ाया जाता है, विकार तो नेचर हैं, विकार तो सदा से चले आए हैं, इतने तो उसमें फंस गए हैं । परन्तु नहीं, ये कोई सदा वाली चीज नहीं है । सदा की होती तो फिर हम देवताओं को क्यों कहते निर्विकारी । हम महिमा भी करते हैं सर्वगुण संपन्न 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, तो निर्विकारी शब्द किसके लिए हैं? खाली कहने के लिए ? कुछ करने के लिए हैं न । अगर भरोसे वाली जीवन है, कल को मर जाएं पॉसिबल है. अभी कुछ हो जाए जाएं

पॉसिबल है परन्तु तो भी मनुष्य चलता ऐसे है, ये करूंगा, वो करूंगा, शादी करुगा, बच्चे पैदा करूंगा, कमाऊंगा, पढ़ूंगा, चलता तो ऐसे है न । देखो छोटा बच्चा है तो भी कहेगा मैं पढ़ूंगा, मैट्रिक पास करूंगा, कोलेज पास, फिर डॉक्टर बनूंगा, फिर ये करूंगा सोंच के चलता है न । छोटे से ही सोंच के चलता है, वो ख्याल नहीं करता है कल को मर जाऊं, इसीलिए मर जाऊं इसीलिए कुछ न करू, पता नहीं कल मर जाऊं, तो कुछ करू ही नहीं, ऐसा कोई करता है ? कोई नहीं करता है । हो सकता है, पॉसिबल है तो पॉसिबल होते भी कोई चलते तो ऐसा नहीं है न । चलते ऐसे हैं जैसे की हमको बैठना है, कई युगों तक ऐसे चलता है, ऐसा समझते हैं तो चलना तो ऐसे हैं । फिर इसमें क्यों ऐसा? इसमें भरोसा है और गैरेंटी हैं बाप की हाँ तुमको मिलना है और अवश्य ये चीज आने की है, तो जो गैरन्टी वाली चीज होती है, जो समझते हैं की नहीं, ऐसा क्यों करें, फिर भी गिरना है, फिर भी फंसना है तो फिर फंसे ही रहें , करें ही क्यों तो ये देखो, इसको क्या कहेंगे, महामुर्खता, मूर्ख तो पहले ही हैं परन्तु ये समझ कर के फिर कई समझते हैं की हम छूटें ही क्यों, फिर भी फंसे ही पड़े रहें, फिर ही फंसना होगा तो फंसे ही पड़े रहें, तो यह क्या मूर्खता न हुई तो क्या हुआ? इसीलिए बाप कहते हैं, ऐसे महामूर्ख मत बनों, आज सन्डे है इसीलिए आप सबका, ऐसे मीठे मीठे बहुत सपूत, समझदार और जो गुनग्रहण अर्थात गुण ग्रहण करने वाले हैं, अच्छी बात ग्रहण करनी चाहिए, कोई बात अयोग्य हो तो उसको छोड़ देना चाहिए, ऐसे

जो अच्छे बच्चे हैं, समझदार उन बच्चों याद प्यार और गुड मोर्निंग और गुड डे ।

11. कर्मभोग समाप्त करने की विधि

एक दु:ख होता है जो हम कर्म भोगनाएं भोगते हैं, उसी दु:ख से तो छूटना है ना । यह जो गीत है, यह भी समझने का है । ऐसे नहीं है कि कांटो से क्या डरेंगे तो इसका मतलब है कि हम पांच विकार और दु:ख से क्या डरेंगे, नहीं! यह दु:ख तो हमें भोगना ही है ना, हाँ उसी से अपने को छुड़ाने के लिए कोई कष्ट भी उठाना पड़े तो उसी कष्ट से क्या डरेंगे, समझा । जैसे गीता में भी कहा है ना, कि अभी जो तुमको अमृत लगता है वह अंत में जहर है, उसी जहर से तो डरना चाहिए ना और जो अभी तुमको जहर लगता है या कठिन लगता है वह अंते अमृत है तो उस जहर से नहीं डरना है क्योंकि इसमें अंते सुखदाई है समझा । पहले डिफिकल्ट लगता है, परीक्षाएं आती हैं, थोड़ा बहुत सितम सहन करना पड़ता है, वह तो जो भी आए हैं उन्होंने भी तो कष्ट सहन किए हैं ना लेकिन वो कष्ट और वो जो हम अपने दु:ख में कष्ट भोगते हैं उसमें फर्क है ना । गांधी था, गांधी को गोली लगी, कष्ट तो है लेकिन यह कष्ट तो उसका अपना हो गया ना । भाई देश की सेवा के लिए, तो देश के लिए जिसमें उसने अपना जीवन जितना भी सफल किया तो कहेंगे ना की उसके सदके उसकी जान भी गई या कोई सितम सहन किया तो कोई बड़ी बात नहीं । तो यह कष्ट और वह कष्ट में जो हम दु:ख भोगते हैं, उसमें

और उसमें फर्क है ना । तो यह जो गीत है इसका भी अर्थ समझना है की कांटो से क्या डरेंगे, तो ऐसे नहीं है की इसमें यह तकलीफ है, इसमें यह मुसीबत, इसमें यह सितम सहन करने से डर के हम ऐसे ही रह जाएं, नहीं! इसमें तो हमको हिम्मत रखनी चाहिए । अगर इसके लिए हमको कुछ सहन भी करना पड़े तो मैदान पर आना है क्योंकि इससे तो हमारी जीवन बनती है ना । दूसरी तरफ देखो हद की सेवाओं में भी जान देते हैं, गांधी ने जान दी ना परवाह नहीं की । चलो कहा जाग जाएंगे बहुत परंतु वह हद का काम रहा, उससे कोई कंप्लीट प्राप्ति तो नहीं रही ना । तो जब कोई हद की सेवा में भी इतना रखते हैं ये तो फिर कम्पलीट प्राप्ति है न । इसके लिए अगर थोड़ा बहुत गाली खानी पड़े, सुनना पड़े, कोई कष्ट सहना पड़े, दुनिया कुछ बुरा भला करें या कुछ भी सहन करना पड़े तो उस से नहीं डरना है । समझा! तो यह बातें भी समझने की है, बाकी ऐसे नहीं है कि दु:ख आए तेरा भाड़ा मीठा लागे । ऐसे बहुत है ना वो कहते हैं क्या ऐसे ही चढ़ना है दु:ख आया, रोग आया, यह आया नहीं! उसका उपाय है तो क्यों नहीं लेना चाहिए । उसी से हम छूट सकते हैं, उसके लिए अगर हमको कुछ सहन करना पड़े तो फिर दूसरी बात है तो यह सभी चीजें समझने की है । बेचारे कई इन बातों का ज्ञान ना होने के कारण ऐसे समझ लेते हैं कि दुःख तो ईश्वर ने दिया है ना, तो उसको भी मीठा समझ के भोगना चाहिए, फिर चाहे सुख दे, चाहे दु:ख दे वह भक्ति मार्ग में इन्होंने फिर यह मार्ग दिखला दिए हैं

तसल्ली देने के लिए की देखो ये दु:ख आया है अगर उसको दु:खी होकर भोगेंगे तो फिर दु:ख ही होगा इसीलिए ईश्वर ने अगर दु:ख भी दिया है तो चलो यह भी मीठा है, भार थोड़ा हल्का हो जाएगा तो इस तरह दिल को थोड़ी तसल्ली में लाने के लिए, भार हल्का करने के लिए , टेंपरेरी तरीके बैठकर के बनाए है परंतु ऐसे तो नहीं ना, उसका कोई भाड़ा है, उसने कोई हम को दु:ख दिया है या उसने कोई हमको दु:खी बनाया है जो हम उसका दिया हुआ दु:ख समझ करके मीठा कह के भोगें, नहीं! ये दुःख है तो हमारे कर्म का परिणाम और हमारे भी उल्टे कर्मों का नतीजा है तो उस को तो हम को सुधारना चाहिए ना, परंतु उसको सुधारने का नॉलेज नहीं है ना कि किस तरह से उसको सुधारें इसीलिए जब दुःख आया है तो उसका भाड़ा फिर मीठा करके भोगते हैं की दु:खी होकर के भोगे इससे अच्छा तो ईश्वर का दिया हुआ है, ये समझ कर उसको भोगने में जरा ठंडा रहेगा, भोगना तीखा नहीं लगेगा इसीलिए कहते हैं ईश्वर ने दिया है, बस तो ईश्वर का दिया हुआ है तो अच्छा या बुरा, ऐसा समझकर के बुरे को भी अच्छा समझ कर चलेंगे । इसी तरह टेंपरेरी अपने मन को शांति लाने के लिए करेंगे तो यह हो गए अल्पकाल की शांति के तरीके, लेकिन बाप तो हमको बैठकर के सिखाते है की बच्चे प्रैक्टिकल सदा काल के लिए तुम्हारे पास शांति और सुख आवे, वह किस तरीके से आएंगे, उसी बातों को समझो । वो तो कहते हैं ना की यह दुःख मेरा नहीं है, यह तो तेरा है इसको तू समझ और समझ कर करके ऐसे कर्म को

मत बना, जिससे तेरा दु:ख बनता है। तो यह बनता है पांच विकारों से, माया के संग से । अभी तो टोटल ही उसका संग छोड़ दो, ऐसा नहीं थोड़ा संग करो थोड़ा छोड़ो नहीं, टोटल ही उसका संग छोड़ दो, हैंड्स अप, सरेंडर, माया का एकदम संग छोड़ दो जिससे बनता ही दु:ख है । ऐसे नहीं माया से कुछ सुख बनता है नहीं! उससे बनता ही दु:ख है तो इसीलिए दु:ख का तो संग छोड़ देना चाहिए ना । इसीलिए बाप कहते हैं उसका संग छोड़ो और मेरा संग पकड़ो तो मेरे से तो कोई ऐसा नहीं है कि थोड़ा दु:ख हो थोड़ा सुख नहीं! मेरे से तो है ही सुख, मैं तो सदा सुख देता हूँ ना, मेरे को कहते ही हो सुखदाता तो अभी मेरा संग पकड़ो । जब भक्ति मार्ग में भी जाने ना जाने बिना भी तू मेरा संग पकड़ते हो, तो भी मैं तुमको अल्पकाल भी सुख देता हूँ । मैं देता हूँ, माया नहीं देती है सुख । वह ऐसा नहीं समझना है भक्ति मार्ग में यह माया सुख देती है, वह भी सुख जो है भक्ति में भी मैं ही देता हूँ क्योंकि तुम ईश्वर अर्थ करते हो ना । चलो भले कोई गरीब को दान करता है लेकिन अंदर में तो यह है ना कि गरीब को दूंगा तो भगवान राजी रहेगा, फिर भगवान हमको आशीर्वाद करेगा, भगवान कुछ देगा, अंदर में तो वही आता है ना, तो करते गरीब को है लेकिन अंदर याद में भगवान की आती है कि भाई गरीब की मदद करेंगे तो भगवान कुछ अच्छा करेंगे हमारा । कोई रोगी की सेवा करेगा - तो करेंगे तो मनुष्य की, रोगी की, परंतु अंदर में आएगा कि रोगियों की सेवा करने से भगवान हमारा भी कुछ अच्छा

करेगा, कभी रोग नहीं देगा या कुछ हमारा भला करेगा । करेगा कौन - परमात्मा आता है ना बुद्धि में । सो हो गया की करते हम मनुष्य के लिए हैं लेकिन ईश्वर अर्थ तो हम भी ईश्वर को डायरेक्ट में याद करते हैं । डायरेक्ट करते मनुष्य से हैं, परंतु इनडायरेक्ट ईश्वर आता है, तो परमात्मा भी इनडायरेक्ट हमको रिटर्न करता है, चाहे मनुष्य के थ्रू, चाहे किसी के द्वारा धन की प्राप्ति होती है, चलो किसी गरीब को धन से मदद की तो दूसरे जन्म में धन मिल जाएगा, ऐसा होगा कुछ रिटर्न हो ही जाती है । जैसे रोगी का किया है, गरीबों की सेवा किया, ऐसे बहुत हॉस्पिटल्स खोलते हैं । बहुत स्कूल खोलते हैं यानी विद्या का दान तो दूसरे जन्म में क्या होगा उसको बड़ी विद्या मिलेगी, बड़ा डॉक्टर, इंजीनियर का पद पा लेगा, विद्या का दान किया है ना तो उसको दूसरे जन्म में कुछ स्टेटस अच्छी मिलेगी, धन दान किया है तो कोई धनवान के घर में जन्म मिलेगा, कोई रोगियों की सेवा की है तो चलो दूसरे जन्म में हेल्थ अच्छी मिलेगी तो इसका रिटर्न होता है लेकिन करते तो ईश्वर अर्थ है ना । इनडायरेक्ट तो बुद्धि में ईश्वर आता है ना परंतु करते मनुष्य के साथ हैं, तो फिर इनडायरेक्ट ईश्वर उसको देता है मनुष्य के थ्रू । वह भी मनुष्य के थ्रू ईश्वर को याद करते हैं ईश्वर भी मनुष्य के थ्रू उसको देता है, इसी तरह से वह भक्ति मार्ग चला, इनडायरेक्ट वे में । अभी बात कहते हैं डायरेक्ट, अभी तो मैं आया हुआ हूँ ना डायरेक्ट, तो यह अभी तुम्हारा संबंध मेरे से डायरेक्ट है इसीलिए अभी डायरेक्ट मेरे से सदा सुख की

प्राप्ति करने की है और किस तरह से, वह बैठ कर के वह सारी बातें समझाते हैं तो हमारा उनसे डायरेक्ट है । अभी कोई इनडायरेक्ट मनुष्य के थ्रू नहीं है, नहीं! डायरेक्ट, अभी हमारा कनेक्शन है डायरेक्ट बाप से । यह ज्ञान मार्ग डायरेक्ट मार्ग है, भक्ति मार्ग इनडायरेक्ट मार्ग है तो डायरेक्ट और इनडायरेक्ट भी तो समझना है ना । बाप आ करके भी ज्ञान भी डायरेक्ट देता है किसके थ्रू तो मिल ही नहीं सकता है । मनुष्यों के द्वारा जो मिला उसको ज्ञान नहीं कहेंगे इसीलिए कहते हैं वह तो भक्ति हुई लेकिन ज्ञान देता ही मैं हूँ ना, ज्ञानदाता ही मैं हूँ । ज्ञान सागर भी हूँ तो ज्ञान दाता भी मैं ही हूँ ना । ऐसे तो नहीं की खाली ज्ञानसागर मैं हूँ, ज्ञानदाता मनुष्य हैं, नहीं! सागर भी मैं हूँ, अथाह ज्ञान भी मेरे पास है तो दाता भी मैं मैं हूँ । यह सभी चीजें समझने की है ना । ऐसे नहीं है कि खाली अपने लिए ज्ञानसागर हूँ, मैं अपने लिए ज्ञान रख कर क्या करूंगा, मुझे कोई अज्ञान थोड़े ही है जो मैं ज्ञान रखूं, ज्ञान में अपने पास रख कर कोई फायदा तो दूंगा तभी तो मेरे पास ज्ञान का भी कुछ नाम होगा ना । हम अपने लिए रखे खाली जानता रहूँ के की यह चोर चोरी करता है, यह खूनी खून करता है, खाली मैं जानता रहूँ तो मेरा क्या फायदा हुआ, या चोर का भी क्या फायदा हुआ । चोर फिर भी चोरी करता ही रहेगा, मैं खाली जानता रहूँ, मैं अंदर सबका जानता हूँ, नहीं! यह चोर है, यह खूनी है, यह करता है, यह बुरा करता है, खाली मैं देखता रहूँ और जानता रहूँ तो उसमें चोर का भी फायदा क्या हुआ

और मेरा भी फायदा क्या हुआ, खाली सारा दिन मैं यही सोचता रहूँ ऐसा नहीं है । मैं जानता हूँ उसी जानने का फिर फायदा देता हूँ, फायदा देता हूँ तभी तो तुम मुझे याद करते हो, गाते हो हे भगवान तू ऐसा है, तू ऐसा है मेरी महिमा करते हो तो जरूर मैंने तुमको जरूर कुछ दिया है, तुमने मेरे से कुछ पाया है, तभी तो मेरी इतनी महिमा करते हो न । कभी भी कोई मनुष्य भी मनुष्य से कुछ लेते-पाते हैं तभी तो एक-दो की महिमा होती है ना, भाई गांधी था क्यों उसका इतना मान है, उसने हमारे लिए कुछ किया तभी तो उसकी हम इतनी महिमा करते हैं ना, नहीं तो उसने हमारे लिए कुछ नहीं किया होता तो हम उसको याद क्यों करते, उसका गान क्यों गाते, उसकी महिमा क्यों करते तो एक दो के प्रति कोई कुछ करता है तभी उसकी महिमा है तो परमात्मा को भी सभी याद करते हैं, प्यार करते हैं, प्रेम करते हैं और जब भी दु:ख आता है तभी याद करते हैं तो जरूर है कि उसने हमारे दु:ख के समय पर कोई ऐसी सहायता की है, तब तो हम उसको याद करते हैं कि अभी तुम हमारे सहायक हो, और गाते भी ऐसे हैं कि सहाय हो । यही अभी सहायता की जरूरत है, अभी मनुष्य की सहायता से काम नहीं चलेगा, अभी मनुष्य की सहायता नहीं चल पा सकेंगी तब फिर मुझे याद करते हो, और ऐसा होता है, देखो जब सब से दिल हट जाती है ना तो भगवान को याद करते हैं, कोई से काम नहीं होता है, बाप से, भाई से , इधर से, उधर से तो फिर भगवान याद आता है, कहते अभी तू ही है, सब से जब

नहीं बनती है या फिर ऐसी कोई बात होती है तो फिर भगवान याद आता है तो उसकी माना ही है कि हमारी किसी से ना प्राप्ति रही तब फिर भगवान के द्वारा प्राप्त हुआ है तब तो वो याद आता है । तो एक ही वह सहारा है इसीलिए बाप कहते हैं की तुम मनुष्यों को मनुष्य के द्वारा वो चीज जो डायरेक्ट भगवान् से मिलने की है वो नहीं मिल पाती है इसीलिए फिर तुम मुझे याद करते हो, मैं आता हूँ । आता हूँ तो अभी मैं आया हुआ हूँ, अभी डायरेक्ट, तो ये अभी ही डायरेक्ट इसीलिए बाप कहते हैं अभी मैं डायरेक्ट तुमको यह सब समझा रहा हूँ और तुम भी मेरे से अभी संबंध, रिलेशन डायरेक्ट जोड़ और जोड़ कर करके अभी मेरे से जो डायरेक्ट प्राप्ति है वो मेरे से लो । वह लेना चाहिए ना तो यह बुद्धि में आनी चाहिए की यह हमारा कोई मनुष्य के द्वारा नहीं है, मनुष्य के द्वारा माना ऐसे नहीं समझना ब्रह्मा के द्वारा हमको मिलता है, नहीं! ब्रह्मा भी उसी से लेता है ना । वह तो फिर सिर्फ ओरगंस का टेंपरेरी परमात्मा सहारा लेता है बोलने के लिए बाकी सुनाते तो वह है ना ऐसे नहीं ब्रह्मा सुनाते हैं, ब्रह्मा के थ्रू मींस है इसके ओरगंस का आधार ले करके सुनाता है, तो वह है ना नॉलेजफुल जो गॉड है वह सुनाता है और उसके साथ वह ब्रह्मा भी सुनता है, उसकी भी सोल है ना ब्रह्मा की, वह भी सुनती है और हम भी सुनते हैं । हम भी तो आत्माएं सुनते हैं ना, यह कौन सुनता है आत्मा सुनती है तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं जैसे तुम भी शरीर के द्वारा आत्माएं सुनती हैं

वैसे जिस शरीर में मैं आता हूँ उसको कान भी है ना, तो कानों से वह आत्मा सुनती है मुख से मैं आत्मा बोलता हूँ । दो सोल हैं ना, दो आत्माए हैं ना तो एक ऑर्गन में ले लेता हूँ, लेकिन किसी टाइम वह भी बोलता है किसी टाइम में भी बोलता हूँ, ऐसे भी नहीं कि सारा समय मैं बोलता हूँ, चलो घंटा डेढ़ मुरली चलाई बाबा ने तो ऐसे भी नहीं है घंटा डेढ़ घंटा बाबा ने ही बोला, शिव बाबा ने ही बोला, नहीं! कभी बीच में ब्रह्मा भी बोलते हैं जैसे हम आत्माएं भी बोल सकती है ना । अभी देखो मम्मा की आत्मा या जो भी टीचर्स हैं वह बोलती हैं ना तो जैसे वो बोलती हैं वैसे ब्रह्मा भी तो बोल सकता है ना, ऐसे थोड़ी है कि बस ब्रह्मा के तन में वही बोलेगा ब्रह्मा अपना भी तो नॉलेज जो धारण किया है वह सुना सकते हैं ना जैसे हम भी धारण करके सुनाते हैं । तो इसी तरह से डबल सोल सुनाते हैं परंतु यह समझना है कि कौन सी पॉइंट बाबा सुनाते हैं कोई नई बात होगी तो वह सुनाएगा, क्योंकि नई तो वही सुनाएगा ना, हम सुनी हुई सुना सकते हैं, तो हम सुनाएंगे सुनी हुई भले थोड़ा अपना विचार सागर मंथन भी करेंगे, कुछ ढंग से सुनाएंगे बस इतना भर लेकिन बातें तो उसकी द्वारा मिली ना, जानकारी तो उनके द्वारा मिली न जैसे - परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, यह नई बात है, यह जानकारी कहाँ से मिली - परमात्मा से, यह थोड़ी हम जानते थे, अभी बाकी समझाना है कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, हाँ उसने फिर विचार सागर मंथन हम कर सकते हैं कि अच्छा भाई यह आदमी को कैसे समझाएं, इसके

बुद्धि में ये बैठा हुआ है की परमात्मा सर्वव्यापी है, इसका यह कैसे निकाले, उसकी तरकीब हम विचार सागर मंथन कर के अपने विचार से सुना सकते हैं, ऐसा हो सकता है लेकिन यह परमात्मा सर्वव्यापी है हमें थोड़ी पता था, यह तो उसने बदलाया ना, इसी तरह से जो नई बात है, नई पॉइंट है वो बाबा देगा । कभी तरकीब भी नई समझाएगा, कभी नई बात भी देगा, कभी हम भी तरकीब निकालते हैं - तो यह तो होता है, तो ब्रह्मा में भी ब्रह्मा की सोल और शिव बाबा की सोल, तो दो है ना, फिर कभी वह भी सुनाते हैं और वो भी सुनाएंगे, एक ही टाइम एक पॉइंट वह सुनाएगा तो दूसरी पॉइंट वह भी सुना देगा, वह भी कम थोड़ी है वह भी सुनाएगा, तो यह सब होता है परंतु यह ऐसी बात है जो देखने से समझ में नहीं आएगी, हाँ हम सुनेंगे बाबा के मुख से मुरली वैसे समझ में नहीं आएगा की यह शिवबाबा बोलता हैं या यह ब्रह्मा बाबा बोलते हैं, कौन बोलते हैं परंतु हाँ यह यह नॉलेज से, बुद्धि से समझा जाता है कोई देखने में कुछ नहीं आएगा । कई नए आते हैं वो समझते हैं शायद दिखाई पड़ेगा अभी शिव बाबा बोलते हैं कि ब्रह्मा बोलते है, वह देखने लग पड़ते हैं परंतु वह देखने की कोई चीज नहीं है ना जो दिखाई पड़ेगा, नहीं! यह बुद्धि से समझने की बात है । हम परमात्मा को भी देखने से नहीं समझते हैं बुद्धि से समझते हैं ना, ज्ञान करके, नॉलेज से, ज्ञान से, अगर ज्ञान नहीं है तो बतलाया ना इस चीज का हमको ज्ञान नहीं है तो भले जितना भी देखो इसको लेकिन हमको यह नॉलेज नहीं है काहे

के लिए यह चीज है तो क्या करेंगे । कोई गाँव वाले हैं बेचारे कभी उन्होंने यह देखा ही नहीं है, कोई गांवडे वाले हो जिन्होंने कभी यह टेप, ये मशीन आदि न देखी हो उसके आगे जाकर रख दो तो वह कहेगा पता नहीं यह क्या चीज है, पता ही नहीं होगा ना तो उसको थोड़ी वैल्यू होगा इसका । इसी तरह से पहले नॉलेज चाहिए ना कि भाई ये क्या है, इसकी वैल्यू क्या है, इससे क्या प्राप्त होता है, तो उसका कदर रहेगा, उसका पता रहेगा तो इसी तरह से पहले ज्ञान । तो हम भी परमात्मा को पहले ज्ञान से जानते हैं, वह अपना परिचय देता है कि मैं क्या हूँ, कैसा हूँ तभी लेकिन देंगे, ऐसे तो बहुत आत्मा का, परमात्मा का साक्षात्कार तो भक्ति मार्ग में भी करते हैं फिर क्या हुआ तो साक्षात्कार से सिर्फ काम नहीं चलता है ज्ञान चाहिए ना । इसी तरह से बाप कहते हैं कि यह सब बातें ज्ञान से जानी जाती हैं सिर्फ देखने से या साक्षात्कार से पता नहीं लगता है लेकिन बुद्धि से समझा जाता है कि यह बात ऐसा लगता है की शिव बाबा का बोला हुआ है , यह ब्रह्मा का है इस तरह समझी जा सकती है तो यह सभी चीजें बहुत समझने की है और समझ करके और फिर धारण करने की है तो अभी बैठकर के बाप समझाते हैं कि अभी मेरा तुम से डायरेक्ट रिलेशन, संबंध है । अभी मैं डायरेक्ट सुनाता हूँ, तुम भी मेरे से डायरेक्ट रखो । अभी किसी मनुष्य के थ्रू तो नहीं है ना हमारा, अभी है डायरेक्ट इसीलिए हमारा लेना-देना डायरेक्ट उसके साथ है जो हम करते हैं, अभी उनके साथ करते हैं, तन से, मन से, धन से,

अभी उनके साथ करते हैं । उनके साथ करते हैं तो उनके द्वारा डायरेक्ट करने में फायदा है, इनडायरेक्ट में भी हमको कुछ ना कुछ फायदा मिल ही जाता था अभी तो डायरेक्ट करते हैं तो उसका और ही इंटरेस्ट ज्यादा मिलेगा ना । 1 का 10 गुना 100 गुना 1000 गुना ज्यादा मिलेगा क्योंकि डायरेक्ट उसका हम संबंध जोड़ करके उसके साथ सौदा डायरेक्ट करते हैं, तो अभी हम सौदा डायरेक्ट करते हैं, एक्सचेंज करते हैं और बाप कहते हैं बच्चे पुराने दो और नए लो इसलिए सब एक्सचेंज, बॉडी एक्सचेंज, आत्मा भी इमप्यूरीफाइड से प्योरीफ़ाइड हो जाती है । सब, उससे हमको सारा संसार एक्सचेंज में मिलता है तो अभी उसकी एक्सचेंज में लेना देखो वह तो बड़ा धनी कहो, क्या कहो, धनी भी क्यों करें उसके पास तो सब अथाह है न इसीलिए उसके पास सब अथाह है और उसी से हम लेते हैं तो हम कितने भरपूर हो जाते हैं, इसीलिए कहते हैं झोली भरते हैं ना कि भगवान दो परंतु इस झोली में नहीं यह हमारा झोला है ना, बुद्धि झोला है ना, उसमें नॉलेज भरते हैं, उसी से फिर हम आत्माएं सदा सुख की प्रालब्ध लेते हैं । तो आत्मा का झोला यह नहीं है, यह तो शरीर का झोला है । आत्मा का झोला बुद्धि है जिस बुद्धि में हम संस्कार भरते हैं, जो संस्कार भर के जाते हैं फिर वो संस्कारों की प्रालब्ध लेते हैं, अभी उसमें भरना है ना । आत्मा में मन, बुद्धि जो है उसी में सब भर के ले जाना है । तो आत्मा में कैसे भरा जाता है वह बैठ कर के बाप अभी समझा रहे हैं कि इतनी छोटी सी आत्मा में

देखो कितना सब 84 जन्मों का पार्ट और कितना यह सब भरा है, देखो है तो छोटा सा न । वो देखो कहते हैं न ये एटॉमिक बोंब्स आदि ये क्या हैं बिलकुल जरी कण , है क्या? इतनी है, बिल्कुल छोटी लेकिन पॉवर देखो उसकी कितनी है जैसे कि इतनी छोटी सी वह पावर है वैसे ही आत्मा भी है इतनी छोटी सी, लेकिन बड़ी पावर है जिसमें इतने सब जन्मों का कितना पार्ट चलता है । तो बाप बैठकर के अभी समझाते हैं कि बच्चे की यह अभी आ करके तुम्हारा लास्ट जन्म का हिसाब रहा है, अभी इसमें फिर तुम्हारे नए जन्मों सारा खाता भरना है, वह कैसे भरता है फिर अभी नया खाता को बैठकर के बाप सिखलाते हैं कि कैसे भरो । भरो तो ऐसा भरो जिसमें तुम सदा सुख पाते चलो । अभी फिर अपने को नया भरने का है तो अभी यह सब अपने को पुराना एक्सचेंज करके नया लेना है तो अभी एक्सचेंज सौदा है ना, वो एक्सचेंज सौदे करते हैं ना बहुत कि पुराने बर्तन लेते हैं नए देते हैं कई एक्सचेंज सौदे होते हैं न तो यह भी एक्सचेंज सौदा है इसीलिए कहते हैं ये देह सहित सभी सम्बन्ध जो कुछ है ये पुराना मुझे दो मैं तो मैं देह और देहं सहित सर्व सम्बन्ध नए दूंगा । तो ऐसा सौदा करने में कोई नुकसान है? बड़ा फायदा है, तो इसीलिए ऐसे फायदे को पाने के लिए आगे बढ़ना चाहिए इसमें नुकसान ही क्या पड़ता है । यह एक्सचेंज सौदा है तो एक्सचेंज करो । इस पुराणी देह में रखा ही क्या है रोगी, दु:खी, यह फलाना यह फलाना, देखो अकाले मृत्यु, हम अगर इस देह से ममत्व निकाल

करके और देह सहित देह के सर्व संबंध से ममत्व निकाल के अभी हम बाप के हो जाएंगे तो फिर हमको देह भी अच्छी मिलेगी और फिर हमको सर्व संबंध भी अच्छा मिलेगा । देखो लक्ष्मी नारायण का संबंध कितना अच्छा है । ऐसा संबंध मिले, पति पत्नी और बाप बेटे और सभी ऐसे, तो ऐसे संबंध मिले तो अच्छा है ना । जिसमें हम सदा सुखी रहेंगे, इसमें तो दुखी ही सुख है न । राजा प्रजा सब सम्बन्ध अच्छा हो जाएगा ना । ऐसे मनुष्यों की हम राजा प्रजा होकर के सुख पाएं तो देखो कितना अच्छा सुख हो जाएगा, इसमें कभी ऐसा होगा कि कभी अन्न नहीं मिलेगा, कभी कोई दु:ख होगा या ऐसी बातें होंगी, ऐसा कुछ नहीं होगा । कुदरती अपदाएं भी कंट्रोल में, यानि वह भी सतोप्रधान, कोई कभी ऐसा नहीं की फ्लड्स हो जाए, फिर हमारा अन्य चला जाए नहीं! कभी नहीं, ऐसी सतोप्रधान होने और इसकी ताकत से प्रकृति भी हमारी पूरी सर्विस करती है क्योंकि हमारे कर्म श्रेष्ठ की प्रालब्ध रहती है ना तो इसीलिए बाप कहते हैं देखो तुम्हारे सब संबंध कितना अच्छा बनाता हूँ, सब सुख हैं तुमको कोई लड़ाई नहीं, कोई झगड़ा नहीं, कोई अशांति नहीं, कोई दु:ख नहीं । कोई दु:ख ना हो तो यह अच्छा है ना, ऐसे नहीं थोड़ा सुख हो फिर दु:ख हो, फिर सुख हो फिर उसमें तो सुख लगता ही नहीं है ना ।धं होगा फिर कोई शरीर का रोग होगा तो कोई सुख लगेगा थोड़ी, धन होते फिर दु:खी होगा । अच्छा धन होगा कोई बच्चा ऐसा नालायक होगा तो फिर भी दु:खी, हर तरह के तो दुःख जाते हैं ना तो बाप कहते हैं

बच्चे मैं तो अभी तुमको सब कंप्लीट देता हूँ, जिसमें तुम सदा सुखी रहो कोई भी दु:ख की बात नहीं, कोई चिंता नहीं, कोई फिकरात नहीं, मरूँगा, कुछ करके जाऊं या अपना दिवा जगाऊँ या आपना कुछ करके जाऊं यह भी चिंता नहीं । फिर कर्म श्रेष्ठ की जन्म जन्मांतर की प्रालब्ध है । उसमें यह भी नहीं कि हम कुछ करके जाऊं, अभी तो बहुत जन्मों का बनाया है ना, वह चलता रहता है खाते रहते हो तो उसमें वह भी चिंता नहीं, तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि एक ही बार मैं तुम्हारा इतना बना देता हूँ और इतना बल देता हूँ कि जिसमें तुम बहुत जन्मों तक खाते और आराम से चलते रहो, सब तरह से । तो यह सब इतना फायदा मिल जाए तो अच्छा ही है ना तो ऐसे फायदे का भी काम अथवा ऐसा सौदा करने में फिर थोड़े ही ढीला रहना चाहिए । नहीं! उसमें सुस्त रहना चाहिए कि यह एक्सचेंज सौदा सबसे अच्छा है इसलिए परमात्मा को सौदागर भी कहते हैं, रत्नागर भी कहते हैं, जादूगर भी कहते हैं देखो कितना बड़ा जादू है ना इसका, क्या से क्या बना देता ,है कहते हैं जादूगर कागज के नोट बना देता है तो और पत्थर से पैसे बना देते हैं ऐसी कई चीजे एक्सचेंज में बना देते हैं तो यह बाप कहते हैं देखो मैं तुम पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बना देता हूँ, क्या से क्या बना देता हूँ, तो ये जादूगरी हुई ना, सच्ची जादूगरी तो यह है प्रैक्टिकल, वह तो टेम्परारी और उससे क्या है, अगर ऐसे को ऐसे कोई साहूकार बने, कागज से पैसे बना लेवे तो फिर करो सिर गवर्मेंट तो उसको अच्छा फायदा रखें,

सभी जादूगरों को इकट्ठा कर देवे और कह देवे कि हमारे लिए पैसा बना कर दो, काम चलता रहे परंतु ऐसा तो नहीं चलता ना, तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप से अच्छी तरह से समझाते हैं कि बच्चे ये प्रैक्टिकल तुम्हारा जो बनता है वो सदा सुख पाने के लिए तो अभी सदा सुख पाने की जो चीज मिली है उसको लेकर के और बाप से अपना सदा सुख प्राप्त करना है तो ऐसे पुरुषार्थ में लगे रहो । इसमें कोई भी सुस्ती नहीं, कोई गफलत नहीं, कोई ठंडा पुरुषार्थ नहीं, तेज पुरुषार्थ । यह रफ्तार तेज चलनी चाहिए, ये अपना ध्यान रखना चाहिए और अपने में कोई खामी हो क्रोध की लोभ की मोह की काम की, जो भी खामी हो, खानी समझते हो ना, जो भी अपने में बुराइयां हो, वो बुराइयां निकालनी चाहिए, अपने में रखनी नहीं चाहिए । अगर कुछ वीकनेस हो, नहीं निकल सकती है तो फिर उसका श्रीमत लेनी चाहिए । तो फिर उसकी राय मिलेगी की इस खामी को तुम कैसे दूर करो, जैसे कोई पेशेंट होता है तो डॉक्टर से कोई दवाई मिलती है, परंतु फायदा नहीं पड़ता तो फिर डॉक्टर को बताने से फिर एक्सचेंज कर देगा ना दवाई, तो अच्छा भाई तुमको इससे तुमको फायदा नहीं हुआ तो अभी चलो तुमको एक्सचेंज करके देते हैं, चलो लिक्विड से नहीं फायदा हुआ तो चलो इंजेक्शन देते हैं, इंजेक्शन से नहीं हुआ तो चलो यह दूसरी दवाई, तो यह एक्सचेंज करेगा तो दूसरी कोई मिल जाएगी, फिर फायदा तो उसी से ही मिलना है न और तो कहाँ से मिलेगा नहीं चलो यह डॉक्टर छोड़ो दूसरा डॉक्टर लें । उसमे तो बहुत

डॉक्टर्स हैं एक छोड़ेगा चलो दूसरे से ले लेगा, इधर तो है ही एक, इसका इलाज करने वाला ही एक है और अथॉरिटी वही है उससे ही होने का है, ऐसे नहीं कि होने का नहीं है, होने का भी उससे ही है परंतु कोई उससे अच्छी तरह से अपना इलाज लेवे ना इसीलिए बाप कहते हैं कि देखो सब, मुक्ति भी मैं देने वाला हूँ, जीवनमुक्ति भी मैं देने वाला हूँ दोनो मैं देने वाला हूँ चलो मुक्ति चाहो तो भी मेरे से तो उसे मेरे से ही फायदा मिलेगा न इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे अभी मेरे से संबंध जोड़ने से तुमको फायदा ही फायदा है, नुकसान की तो बात ही नहीं है, थोड़ा भी तो भी फायदा है, बहुत तो फायदा ही है, तो फायदा तो मेरे से ही मिलना है न इसीलिए फायदा क्यों नहीं लेते हो, उसमें ढीले नहीं, उसमें पुरुषार्थ ढीला नहीं रखने का है, तो यह सभी चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से समझते और अपने पुरुषार्थ को आगे रखने का है, इसको कहेंगे पुरुषार्थी, बाकी ऐसे नहीं है कि हम पुरुषार्थ तो थोड़ा बहुत तो करते ही रहते हैं नहीं! करना तो फिर जितना लेना है वह अपना एम रखना चाहिए हमें लेना इतना है, माल इतना है, उसमें से हमको को लेना है, ऐसे नहीं थोड़ा लिया, यह भी अच्छा, नहीं लेना तो जितना है, उसमें से हमको लेना चाहिए ना, जभी चांस है इतना लेने का तो क्यों नहीं लेवें तो उसको कहेंगे यह लेने वाला अच्छा है बाकी जरा सा ले लिया तो क्या हुआ, वह भी कहेंगे अरे माल इतना है तुम लेते इतना हो , अरे शायद तेरे किस्मत में नहीं है, उस समय ऐसा कहने में आता है किस्मत में नहीं है, तुम

कोई कमबख्त हो तुम्हारे आगे इतना वक्त आया और तुमने लिया इतना, तो कहेंगे अरे तुम्हारी तो शायद किस्मत में नहीं है ,ऐसा कहा जाता है न, तो अभी बाप हमारे सामने इतना लाया और हम उससे इतना ज़रा सा लेंगे तो क्या कहेंगे कमबख्त तो ऐसा थोड़ी बनना चाहिए, लेना तो पूरा लेना और लेना ही चाहिए, ऐसा भी नहीं है कि लेना तो पूरा लेना नहीं तो नहीं लेना, कई फिर ऐसे भी महामूर्ख निकलते हैं इसको फिर कहेंगे महामूर्ख मूर्ख तो पहले ही हैं, जो समझते हैं इतना सा लेवें उससे तो अच्छा है न लेवें, ऐसे तो नहीं है न मूर्ख तो पहले ही हैं की हम मया के संग मैं खो बैठे हैं परंतु मिली हुई चीज को भी कहें चलो इतना नहीं तो थोड़ा भी , वो भी तो ठीक है परंतु बाप फिर समझाते हैं इतने में खुश नहीं होना है तो न महामूर्ख बोलो ना कमबख्त बनो समझा ऐसा भी नहीं बनना है इसीलिए अपनी समझ को अच्छी तरह से रख कर के और अपना पुरुषार्थ करो ऐसे पुरुषार्थ करते आगे बढ़ते चलो अच्छा आप लोगों का टाइम हुआ है, चलो आज देखो बाबा की टोली आई है मालूम है बाबा ने टोली भेजी बेंगलुरु वासियों के लिए दिल्ली से, दिल्ली से एक आया है वह भोग ले आया है तो देखो बेंगलुरु वासियों को बापदादा कितना याद करते हैं कितना प्यार करते हैं आप लोगों के लिए टोली भेजी है इसीलिए आज हम खिलाते हैं आप लोगों को बाबा की टोली है ना बाबा ने प्यार से भेजी है फिर हम भी प्यार से खिलाएंगे ना आज हम खिलाते हैं, ठीक है न, चलो

12. कर्मों की गति

रिकॉर्ड :-

छोड़ भी दे आकाश सिंहासन इस धरती पर आजा रे

यह गीतों में किस को याद करते हैं, किस को पुकारते हैं कि आकर के ज्योत जगा । परमात्मा को ही तो पुकारते हैं ना । तो इससे सिद्ध होता है कि हमारा अंधकार मिटाने वाला एक ही है इसीलिए उनको याद करते हैं कि अंधकार मिटा आकर के और सर्व शास्त्र शिरोमणि गीता में भी भगवान के वर्शन हैं यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत की जब जब अधर्म होता है, तब तब मैं आकर के अधर्म नाश और धर्म की स्थापना और अंधकार नाश और और रोशनी आ करके देता हूँ, जिससे मनुष्य सदा सुखी बने । तो यह भगवान ने भी दावा रखा है कि मैं आकर के करता हूँ और मनुष्य भी तो उसको ही पुकारते हैं कि तू आ अभी तेरा काम है, अभी मनुष्य सब कुछ कर के थक गए हैं । मनुष्य के प्रयत्न करते-करते उसकी जो रिजल्ट है वह तो आज हमारी दुनिया में हम देख रहे हैं । मनुष्यों के प्रयत्न ने जो संसार बनाया है, कोशिश करते आए हैं, कोशिश की जो रिजल्ट है, वह तो अपने अनुभव में है, सामने है, कोई छुपी हुई थोड़ी है, सामने ही है कि मनुष्य ने संसार को बदलने की कोशिश तो रखी है । देखो

संसार में कितने प्रयत्न है , चाहे संसारी पदार्थों के भी अनेक प्रयत्न है, आज देखो साइंस, यह संसारी पदार्थों की इन्वेंशन है ना, तो देखो उनमें भी दुनिया कितनी ऊंची जा रही है और कितना सूर्य, चाँद तक पहुचने की कोशिश करते हैं कि मनुष्य की लाइफ को कहाँ कुछ सुख की कुछ मिल जाए, पीछे उधर जाकर के प्लाट ले कर के बैठे, चाहे इधर उनका कुछ मिले । बिचारे कोशिश करते हैं कि क्या है, परंतु इन सभी सांसारिक पदार्थों में इतनी आगे बुद्धि जाते भी, और ईश्वरीय मार्ग के भी अनेक मार्ग हैं और कई सब कोशिशें वेद, शास्त्र, ग्रंथ, पुराण, गुरु, महात्मा, पंडित, आचार्य आदि आदि महामंडलेश्वर, आदि आदि देखो कितने-कितने सब हैं, यह सब उपस्थित हैं, लेकिन इतने सब होते भी और संसार की इतनी स्पीड, पदार्थों की बातें आगे जाते भी, लेकिन हमारी लाइफ तो देखो, लाइफ को अगर ऐसे कहेंग कि हम नीचे ही गिरते जा रहे हैं, तो यह मालूम करता है कि हमारे लाइफ की जो चीज है संपूर्ण सुख शांति की वह कोई और देने वाला है । वह कौन देने वाला है इसीलिए देखो उसको पुकारते हैं कि अभी तू आ और तू उस चीज की रोशनी दे कि हमारे लाइफ को, हमारे सुख के जो साधन हैं, वह हमें कैसे प्राप्त हो । आज क्या नहीं मनुष्य कर बैठे हैं, कितनी इंवेंशंस है देखो सब कुछ करते हैं, लेकिन आज फिर भी देखो, अपना ही भारत आज अन्न के लिए, सब चीजों के लिए मोहताज है ना । यहाँ दिनों दिन देखो जितना बिचारे कोशिश करते हैं, इधर संख्या बढ़ती जाती है, इधर उसके लिए खाना, कपड़ा,

लत्ता सब पूरा करना, सब कितनी मुसीबतें खड़ी हो गई है आज दुनिया के सामने और यह सब बातें होती चली आई है और चलती जा रही हैं और भी आगे । तो देखो मनुष्य की कोशिश से हमारी लाइफ की अगर देखें तो लाइफ और ही अशांत और दुःख के नीचे चली जा रही है तो और चीजें भले ऊंची होती जा रही है लेकिन लाइफ तो नीचे चली जा रही है ना । है सब लाइफ के लिए लेकिन लाइफ को वह अभी लगता नहीं है तो यह सभी समझना है की आखिर हमारे लाइफ के लिए क्या चीज है । इसीलिए वह लाइफ की चीज कहते हैं ना लाइफ दाता, जीवनदाता परमात्मा है, तो जो जीवन दाता है वही तो हमको अपने जीवन का पूरा-पूरा भेद भी समझाएगा और जीवन के साधन तुमको कैसे प्राप्त होवें उसका क्या तरकीब है, वह समझा सकता है इसलिए बाप कहते हैं इन चीज की देने वाला भी मैं हूँ, समझाने वाला भी मैं हूँ, क्योंकि समझ से देता हूँ, ऐसे नहीं की ऐसे-ऐसे दे दूँगा, नहीं ऐसा नहीं है कि मैं सब कुछ ऐसे ही माल-मकान सब बनाकर ऐसे ही दूंगा, नहीं! समझ दूंगा, उसी समझ से चलना है तुमको, फिर चल करके अपने कर्मों से बना करके, फिर कर्मों के बल से तुम सब अपना यह चीजें प्राप्त करेंगे । कर्म के आधार पर है ना । लाइफ का आधार कर्मों के ऊपर हैं । तो तुम्हारी बनेंगी यह सब चीजें कर्म के आधार पर । आज कर्म भ्रष्ट है दुनिया तो दुनिया के रिजल्ट देखो, कारण यही है कि दुनिया आज कर्म भ्रष्ट है । कर्म की श्रेष्ठता का पता नहीं है दुनिया को कि कर्म हमारे श्रेष्ठ

कैसे हो तो आज हमारा आचरण आज हमारा कर्म आज हमारी जीवन के भ्रष्ट होने के कारण उनका नतीजा हमारे सामने है इसीलिए हमारे में अशांत और दुःख बढ़ता जा रहा है क्योंकि हमारे कर्म श्रेष्ठ नहीं है। भले यह कर्म कर्म करते हैं ऊंचे-ऊंचे चांद में सूर्य में पहुंचना, परंतु इसको थोड़ी श्रेष्ठ कर्म कहेंगे यह तो खोज है, यह सब चीजें तो खूब आगे-आगे चलती जाती है, इसीलिए मनुष्य समझते हैं कि आज मनुष्य की बुद्धि बहुत बड़ी है। तो यह सभी चीजें हैं जिसको समझना है कि हमारी वो ऊँचाई जो है ना, जीवन की वह तो रही नहीं है। तो इसमें तो बहुत कुछ पा रहे हैं, लेकिन लाइफ में आज हमारे कर्मों की गिरावट है तो हमारे जीवन की अशांति और दुःख का कारण है हमारे कर्म। तो कर्म कि हमें नॉलेज चाहिए, तो इसकी नॉलेज और इसकी समझ, इसकी रोशनी इसीलिए परमात्मा को याद करते हैं की इस की रोशनी, यह अंधकार, की हमारे कर्मों में क्या अंधकार है, क्या हम गलत कर्म करते हैं, जिसका नतीजा हम चाहते तो कुछ और है, लेकिन मिलता कुछ और रहा है, यानि दुःख और अशांति, इसीलिए हमारे कर्मों में कौन सी गलती है, जिस गलती से हम दुःख भोग रहे हैं, वो हमको पता होना चाहिए। इसका पता हमारे को आज वेद, शास्त्र, ग्रंथ, पुराण है सब रौशनी के लिए बहुत माल रखे हुए हैं, परंतु उससे अभी तक भी इतने यज्ञ, वेद, शास्त्र आज के थोड़े ही हैं यह तो परंपरा से चले आए हैं, बहुत काल से ये चीजें हैं, कोई आज नहीं बनी है, यह तो बहुत काल से हैं चीजें हैं, तो यह बहुत काल की चीजें हैं,

परंतु हमारी बहुत काल से जीवन और ही गिरती चली जा रही है, तो इनका पूरा पता होना चाहिए ना, तो आखिर भी हमारी जीत बनाने की कौन सी चीज है इसीलिए उनको याद करते हैं की तू ही बनाने वाला वह चीज, तुम्हारे पास ही है उसकी लाइट, उसकी रोशनी, उसकी नॉलेज तुम्हारे पास है, इसीलिए उसको कहते हैं नॉलेजफुल । क्योंकि काहे का नॉलेज फुल है वह, हमारे कर्म गति का कैसे बनाओ, उसके लिए तुम को मेरा नॉलेज चाहिए और मेरा बल चाहिए । मेरे बल के बिना तुम्हारे कर्म जो है ना वह श्रेष्ठ नहीं हो सकते हैं, इसीलिए अभी तुम कैसे मेरे से बल लो, वह बैठ कर के खुद सिखा रहा है । यह कॉलेज उसकी है, जिसमें आए हो, परंतु बेचारे बहुत नए है ना, वह जानते नहीं है कि हम कहाँ आए हैं, वह तो समझते हैं कि जैसे की कई और आश्रम हैं, कई संस्थाएं हैं, वह संस्थाएं आश्रम तो बहुत काल से चली आई है । यह संस्था अभी परमात्मा ने खोली है , इसको संस्था नाम ना कहे तो अच्छा है, क्योंकि संस्था रहने से समझते हैं कि जैसे दूसरी भी संस्था है, यह भी ऐसे ही कोई दूसरी ब्रह्माकुमारी नाम की संस्था खुली है, परंतु नहीं! ये उन्हीं परमपिता परमात्मा ने, यह कॉलेज खोला है, इनके बहुत स्थान पर शिक्षा के केंद्र हैं, जहाँ बैठ कर के यह नॉलेज परमात्मा की दी जा रही है । वह बैठ करके अभी रोशनी दे रहा है, वो कहा है न यदा-यदा जब-जब अधर्म होता है, तब मैं आता हूँ, तो अभी वो आए हैं तो आ कर के यह अभी रोशनी हम सब बच्चों को हम उनकी संतान हैं ना, तो

संतान को दे रहे हैं और दुखी हो गए हैं तो बाप को तरस पड़ेगा ना तो भी कहते हैं कि जब दुखी ऐसे होते हैं तब मैं आता हूँ तो अभी आए हैं और आकर के यह उसने कॉलेज खोला है । कॉलेज कहो, विद्यालय कहो, यूनिवर्सिटी कहो, स्कूल कहो, जो कुछ कहो, हॉस्पिटल कहो इसको जो भी कहो यह हॉस्पिटल है ना, निरोगी बनाने की सदा के लिए एवर हेल्दी । वह हॉस्पिटल नहीं रोगी का इलाज कर देंगे लेकिन रोग तो रह ही जाते हैं ना, एक रोग जाएगा, दूसरा आएगा, दूसरा जाएगा तीसरा आएगा, ऐसे थोड़े है की ऐसा ईलाज हो, जिससे हमारी दुनिया से रोग ही निकल जाए । नहीं! जितनी इन्वेंशन, जितनी दवाइयां बढती जा रही हैं, उतने रोग भी नए-नए निकलते जा रहे हैं, बिचारे डॉक्टर्स का सारा दिन ढूँढ़ते निकल जाता है यह रोग का क्या इलाज है, वह रोग का क्या इलाज है । एक रोग का इलाज निकालते हैं तो दूसरा कोई रोग खड़ा हो जाता है, दूसरा करते तो फिर तीसरा कोई खड़ा हो जाता है । अभी देखो उनमें ही बिचारों का माथा थक जाता हैं, तो अभी वह तो कहते हैं रोगों को निकाले लेकिन रोगों की जड़ निकल जाए न, जो हमारी दुनिया में रोग ही ना हो । ना रोग हों, न डॉक्टर्स हों, न हॉस्पिटल हों, न चोरी हों, न चकारी हों, तो फिर हमारे लिए न कोर्ट होगा, न जज होगा, न वकील होगा । काहे के लिए होनी चाहिए, चोरी ही ना होनी चाहिए, तो यह चीजें कोई जरूरी तो नहीं है ना, इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं तुम्हारे लिए ऐसी दुनिया रचता हूँ, जिसमें तुमको काल भी ना खा सके । अभी देखो

काल भी आ जाता है न, अकाले मृत्यु होती है, तुम्हारे पास काल भी ना आवे, वह भी तुम्हारे दुनिया में नहीं आ सकता है क्योंकि तुम्हारा शरीर तुम्हारे कंट्रोल में होगा यानि जब टाइम हो बाल, युवा, वृद्ध तुम्हारे पास बल हो , लेकिन आज कहाँ है वह बल, मरो तो मरो, रोगी बनो तो रोगी बनो, मनुष्य कुछ कर सकता है? बेबस है ना । तो बाप कहते हैं कि देखो, लाइफ तुम्हारी, परंतु तुम्हारी लाइफ तुम्हारे कंट्रोल में नहीं है । लाइफ तुम्हारी लेकिन लाइफ में तुम बेबस हो । जो कुछ होए, तुम कुछ नहीं कर सकते हो, भले कोई धनवान होगा, बीमार पड़ेगा करके थोड़ा इलाज करेगा न, फिर भी कुछ ऐसा कर्‌म का है, उससे कुछ बनता नहीं है तो क्या करेगा कहेगा हाय! तकदीर, हाय! किस्मत, हाय! कर्म, बस, ऐसा कह करके बैठेगा और क्या कहेगा । परंतु नहीं, हमारी लाइफ के कर्म की जो पावर थी, जिसको स्प्रिचुअल पावर कहा जाता था और जिसके नाम से यह भारत में प्राचीन नाम है ना, प्राचीन योग का और प्राचीन ज्ञान का भारत का यह नाम मशहूर है, भारत का ज्ञान, भारत का योग यह बातें इसी पर मशहूर है, क्योंकि परमात्मा ने आकर के जो ज्ञान और योग दिया था, उससे भारत स्वर्ग बना था । उससे मनुष्य की लाइफ ऊंची बनी थी, इसीलिए ज्ञान और योग का नाम है जिस नाम को लेकर के बहुतों ने बैठ कर के ज्ञान के कई पुस्तक बनाए हैं, शास्त्र बनाए हैं, ग्रंथ बनाए हैं लेकिन वह तो शास्त्र और ग्रंथ ज्ञान के नाम के ऊपर बनाए हैं, भाई ज्ञान बड़ा ऊंचा, तो बड़े-बड़े शास्त्र बनाए हैं,

बड़ी-बड़ी चीजें, परंतु वह प्रैक्टिकल चीज तो एक ही के पास है ना । नाम तो मशहूर हो गया है कि भाई ज्ञान और योग, परंतु वह दिया किसने, वह दिया परमात्मा ने । ओरिजिनल ज्ञान, ओरिजिनल नॉलेज जो है वह परमात्मा के पास है क्योंकि नॉलेजफुल वो हैं इसीलिए परमात्मा ने सुनाया वह नॉलेज जो ओरिजिनल है मनुष्य के लिए, पूरी रोशनी और उस रोशनी से उनकी पूरी लाइफ बने, तो वो रौशनी तो मैंने आकर के सिखाई है ना, इसीलिए मेरी शिक्षा का देखो शास्त्र यादगार है । परंतु वह यादगार है, लेकिन जो मैंने ओरली समझाया और जो ओरिजिनल आकर के नॉलेज दी वह तो नॉलेज मेरे पास है ना, इसीलिए मैंने कहा है कि यदा यदा जब-जब अधर्म होता है, तब-तब ही मैं आता हूँ, मैं आकर के सुनाता हूँ, ऐसे नहीं कहा कि मैं किसी के द्‌वारा सुनावाता हूँ, नहीं! मैं खुद आता हूँ, मैं आ करके यह नॉलेज देता हूँ, क्योंकि वह नॉलेज मैं ही दे सकता हूँ । मेरी नॉलेज और कोई दे नहीं सकता है । मनुष्य के द्‌वारा वह नॉलेज समझाई नहीं जा सकती है, इसीलिए उसने अपनी दरकार दिखलाई, इसीलिए भारत में ज्ञान का और योग का यह सब नाम मशहूर है, जिसको फॉरेन देश वाले भी सुनते हैं तो उनको योग की अट्रैक्शन होता है कि वह योग भारत का प्राचीन योग कौन सा है, क्योंकि उसी से भारत अथवा दुनिया स्वर्ग बनी थी । जब भारत स्वर्ग था, तो दुनिया स्वर्ग थी, आज भारत नीचे है तो सारी दुनिया नीचे है इसीलिए प्राचीन भारत का जो नाम है उसी कारण नाम है, क्योंकि परमात्मा ने आकर

के इस दुनिया को स्वर्ग बनाया था । तो अभी फिर से वह चीज बनने का यह अभी कॉलेज समझो, स्कूल समझो, यह है उनका । वह सिखा रहे हैं । अभी उसमें तो आ करके सीखना पड़े ना । समझना पड़े इन बातों को । यह तो खाली लेक्चर से या भाषणों से समझने की चीज नहीं है । यहाँ तो आ कर के नॉलेज लेना पड़े, जैसे कोई भी स्कूल में जाएगा तो ऐसे थोड़ी खाली लेक्चर से पढ़ेगा । उसको अच्छी तरह से पढ़ना है, समझना है अच्छी तरह से स्टडी करना है तो हर एक के ऊपर ध्यान दिया जाता है, तो यह भी इसी तरीके से स्कूल है । यह ऐसा नहीं है कि भाई हमारे बहुत आए, बस सुन कर चले गए, किसी ने सुना, क्या धारण किया, पता ही नहीं, नहीं! यहाँ एक-एक का पता निकालना पड़ता है की हर एक ने समझा, प्रैक्टिकल चलते हैं उस पर, अपने घर गृहस्थ में रहकर के वो धारणा करते हैं, अपने कर्मों को श्रेष्ठ रखते हैं तो इस चीज के लिए स्कूल की तरह से चाहिए ना । बाकी तो ऐसे नहीं है ना कि खाली बस आया सत्संग सुना, गया, कौन आया कौन गए, बस उसी से तो कोई मतलब नहीं होता । तो यह कोई कॉमन संत्संग नहीं है । यह है सत का, सत जो है ना, गॉड, उसी का अभी संग मिल रहा है क्योंकि ट्रुथ को जानने वाला एक ही है इसीलिए गॉड को कहते हैं गॉड इज ट्रुथ । इसका मतलब बाकी जो कुछ है न, वह सब अनट्रुथ, यानी झूठ सुनाने वाले इसीलिए कहते हैं, ट्रुथ को वही जानता है, यथार्थ क्या है, व्हाट ऍम आई यानी हम क्या हैं, गॉड क्या है, यह हमारी सारी दुनिया का चक्कर कैसे

चलता है, इन सब बातों की यथार्थ नॉलेज जो है, वह गॉड के पास है । इसीलिए ही कहा जाता है, गॉड इज ड्रुथ, यानी ड्रुथ को गॉड जानता है और कोई नहीं जान सकता है । तो जो जानता है वही तो सुनाएंगा ना कि जानेगा वह, सुनाएंगे मनुष्य । नहीं! जो जानेगा वही सुनाएगा, इसीलिए उनको कहते हैं कि मैं आता हूँ, तो अभी वह सुना रहे हैं तो उसको सुनना है और उसी यथार्थ चीजों को अपने पास प्रैक्टिकल में ला करके और अपने को प्रैक्टिकल में ऐसा लायक बनाना है । तो ऐसा बनाने के लिए क्या करना है, कैसे करना है, तो ये सभी बातों को फिर डिटेल से समझना है । उसके लिए चाहिए टाइम, तो वह तो फिर आएंगे क्योंकि आज कुछ नए भी आए होंगे, सन्डे है तो नए भी आते हैं, तो यह सभी ख्याल में बातें दी जाती हैं कि यह समझने का है, बाकी ऐसे नहीं है कि खाली गया, दो वचन सुना या दर्शन किया, उससे काम हो जाता है , यह तो बहुत काल की टेव पड़ी हुई है ना । गया , ब्लेस लेना, आशीर्वाद लेना, दया करो, कृपा करो, आशीर्वाद करो, तो आशीर्वाद दया कृपा कोई ऐसे नहीं होती है, खाली ऐसे-ऐसे किया हो गया बस उससे काम हो जाए । अगर ऐसा ईजी है की ऐसे होने से काम हो जाए तो फिर क्या है । भले अल्पकाल के लिए किसी ने कुछ कह दिया, चलो तुमको पुत्र होगा, फिर क्या, चलो पुत्र भी हो गया, फिर क्या हुआ । पुत्र वाले हैं तो क्या सुख हो गया? सुखी हो गया क्या ? पुत्र वाले तो बहुत हैं । धनवान हुआ, हमारे को धन मिला, कहते हैं न धनवान भव, पुत्रवान भव, भले अल्पकाल के लिए

कुछ मिल भी जाए, वो तो है देखो धनवानों का हाल, अच्छी तरह से गवर्नमेंट भी उनके पीछे लगी है, यह तो है तो सभी बातें हैं, धन वालों का हाल देखो, उनका हाल देखो, सबका हाल देखो, तो इससे क्या है, बिचारों का धन है तो धन संभालना ही मुश्किल हो गया है, तो ये तो सभी देख रहे हैं ना, तो इसमें तो अशांति ही अशांति है । यह सब अशांति के कारण हो गए हैं ना । वह हमारी जो एवर हेल्दी, एवर वेल्दी एवर हेप्पी की जो लाइफ थी वह कहाँ है तो यह सभी चीजें समझने की है कि इनका हमें अभी, यह अल्पकाल की पुत्रवान भव, आयुष्मान भव, नहीं! हमको एवर सब बातें एवर की चाहिए जिसमें हम सदा सुखी भी रहे । वह जो सुख की चीज है उन सभी बातों को समझना है वह कैसे । जो हमारे पूज्य देवताएं थे, देखो उस जमाने में ऐसे थोड़ी था । धन था तो धन से पूरा सुख था । अविनाशी धन था और जो हमको लाइफ भी थी तो पूरी सुखी थी । जो चीज थी, उसके साधन सुख के पूरे थे ना । आज है तो भी दुःख है, ना है तो भी दुःख है, दुःख ही दुःख है । नाम ही दुःख है, दूसरी कोई बात ही नहीं है । है तो भी दुःख, ना है तो भी दुःख, मतलब दुःख ही है । क्यों है? तो यह कारण समझना है कि आज लाइफ को क्या चाहिए । क्या खो गई है चीज, कौन सी चीज की हमारे पास कमी है जिसके आधार से हमारे को आज दुःख ही दुःख खड़ा है, तो वह है हमारा कर्म भ्रष्ट । इसीलिए इन सब का हम सुख भी तभी पा सकते हैं, जब हमारे पास कर्म की श्रेष्ठता हो, तभी भोग सकेंगे ना ।

श्रेष्ठता है नहीं तो किस बल से भोगेंगे । भोगेंगे नहीं ना और उल्टा दुःख मिलेगा तो यह सभी चीजें सब बातों को समझना है और उसी श्रेष्ठ कर्म करने के लिए अभी क्या करना है, उसी का नॉलेज, उसी का ज्ञान लेना है इसीलिए ज्ञान का नाम मशहूर है, कहते हैं भाई भारत का प्राचीन योग, भारत का ज्ञान । कई तो समझते हैं कि क्या भारत में ही यह बातें हैं कर्म अच्छा, दूसरे देश में तो सब खाते-पीते, ईट एंड ड्रिंक, फलाने फलाने, उसमें लगा करके बस अपना जीवन चलाएं । वह समझते हैं, परंतु नहीं, हमारा प्राचीन भारत ही जो है न, इसका नाम क्यों बाला है इसीलिए कि इसमें वह प्राचीन शक्ति थी, बल था, लेकिन आज नहीं है । इसीलिए क्योंकि यह भारत स्वर्ग था, तो दुनिया सारी स्वर्ग थी, इसमें पावर था लेकिन आज वह चीज नहीं है परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि खाली भारतवासी ही ज्ञान का नाम लेते हैं । खाली भारतवासी ही योग का नाम लेते हैं । भारतवासी खाली भगवान का नाम लेते हैं, दूसरे देश तो ना भगवान को नाम लेते हैं और ही सुखी हैं, क्योंकि उनके पास धन और माल है और ही सुखी हैं । भाई अमेरिका है फलाने हैं, वो कई ऐसे हिसाब लगाते हैं, परंतु नहीं, भले तो भी उनके पास वह पीस ऑफ माइंड नहीं है । भले धन हैं पर उनसे पूँछों रोग है, बीमारी है, ये है वो है, क्या यह सब अशांति के कारण नहीं है । तो ऐसा नहीं है परंतु यह सब में प्राचीन जो बल था एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, एवर हैप्पी, वह जो प्राचीन बल था, वह तो वहाँ नहीं है ना दूसरे देश में । यह भारत की थी, लेकिन

भारत में भी आज नहीं । था जरूर, बाकि ऐसे नहीं है लाइफ कोई हमारी ऐसे ही है इसीलिए बेचारे कई समझते हैं बस, शरीर में आना ही दुःख है, तो शरीर में आवे ही क्यों, बैठ जाए वहाँ, उनके पास इसीलिए बेचारे बहुत पूंछते है की यहाँ क्यों आवें । उन्होंने बहुत जेनेरेशन्स से देखा है, आज थोड़ी ही देखते हैं, एक जन्म थोड़ी देखा है बहुत जेनरेशंस देखा है, हमारे दादा, परदादा, फलाने फलाने सब दुखी होते आए हैं । इसीलिए कई समझते हैं कि हम लाइफ में ही क्यों आवे । वहीं बैठे रहे उनके पास इसीलिए कहते हैं कि कोई और ठिकाना है जो ज्योति ज्योत में समाय बैठे रहें या कोई ऐसा कोई कोना हो जहाँ बैठे रहे, इधर उतरे ही नहीं शरीर में क्योंकि उतरे इसमें और शरीर में दुःख पाएं तो अच्छा है शरीर में ना आए, क्योंकि उन्होंने शरीर देखा ही दुःख का है ना । इनको यह पता नहीं है कि हमारा आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र के साथ हमारा जनरेशंस यहाँ चली हुई है, और उसमें हम सदा सुखी थे । तो यह पता ना होने के कारण कि हमारे लाइफ की स्टेज कौन सी है, हमारे लाइफ की स्टेटस कौन सी है, इन सब बातों की एम एंड ऑब्जेक्ट का पूरा पता ना होने के कारण बिचारे ने सुना है, वह भी सुना है, किन्होने में सुना दिया है, ऐसा कोई विद्‌वान पंडित आचार्य ने ऐसी बात सुना रखी है कि भाई एक ऐसा भी कोना है, जहाँ जाके वहाँ समा जाएंगे, जहाँ ज्योति ज्योत में समा जाएँगे, फिर निकलेंगे ही नहीं, किसी ने सुना रखा है इसीलिए वह समझते हैं, वो अच्छा है, क्योंकि यहाँ तो दुःख है

ना इसीलिए वहाँ ही बैठे रहें इसलिए उसका क्या कोशिश है, उसका क्या प्रयत्न है, क्या पुरुषार्थ है तो उसमें जाकर बस बैठ जाए, परंतु नहीं हमारा है की हमको लाइफ में आना है और आना है परन्तु लाइफ में हमारी स्टेज है, ऐसे नहीं है कि ऐसी लाइफ है, नहीं, हमारी जनरेशंस बहुत सुख की चली हुई है, लेकिन वह कैसे चली हुई है, वो किसने बनाई, उसके लिए तो उसको याद करते हैं इसीलिए कि अभी तू आ, वो रोशनी दे, अभी हम बहुत अंधकार में आ गए हैं । जितनी हम रोशनी में जा रहे हैं देखो हमारी आज बुद्धि खुल गई है परंतु वह रोशनी और ही अन्धकार में ले जाती है जितना जाते हैं और ही डिस्ट्रक्शन की चीजें बनती जाती हैं । हां आज यह एटॉमिक पावर आदि यह सब इतना मनुष्य के द्वारा खोज की गई, लेकिन वह मनुष्य का ही नाश करने के लिए खड़ी हो गई है । यह चीजें, मनुष्य सुख के लिए बनाते जाते हैं परंतु, मिलता उलटा उनसे दुःख ही है, इसको कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि, यह कहावत है बड़ी मशहूर तो जभी विनाश का काल आता है ना तो बुद्धि से काम उल्टा ही होता है तो है सुख की चीजें परन्तु उसका उपयोग जो है न उल्टा किया है, आज यह एटॉमिक पावर यह सब चीजें जो है, नहीं तो इनको सीधे तरीके से कहाँ लगाएं तो यह सुख के साधन बन सकते हैं परंतु उसकी बुद्धि उस तरीके का काम नहीं करेगी अभी । उनकी बुद्धि काम यह करेगी कि इससे नाश कैसे करें क्योंकि यह है ही विनाश काले विपरीत बुद्धि न । विपरीत बुद्धि का मतलब है अभी परमात्मा

के साथ प्रीत नहीं रही है उससे विपरीत है उससे कट ऑफ़ हैं रिलेशन । उसके विपरीत बुद्धि है विनाश का काल है तो उससे विपरीत बुद्धि होगी ना, उससे प्रीत नहीं है । अब जब प्रीत बुद्धि है तो फिर देखो उससे प्रीत बुद्धि, इसीलिए कहते हैं अभी मेरे से प्रीत रखो, अर्थात मेरे से योग रखो । प्रीत कहो या योग कहो बात एक ही है तो मेरे से प्रीत रखो, मेरे से योग रखो तो फिर प्रीत बुद्धि से कन्स्ट्रशन, अभी देखो उससे कंस्ट्रक्शन का काम प्रीत बुद्धि से करा रहे हैं और विपरीत बुद्धि से डिस्ट्रक्शन काम करा रहे हैं तो दोनों चाहिए ना काम भी दोनों है न विनाश स्थापना तो कंस्ट्रक्शन और डिस्ट्रक्शन तो अभी दोनों कहते हैं प्रीत रखो तो नई दुनिया का कंस्ट्रक्शन होगा, विपरीत बुद्धि से फिर डिस्ट्रक्शन तब तो दुनिया का यह प्रॉब्लम सोल्व होगा न । अगर डिस्ट्रक्शन ना हो तो सोल्व कैसे हो सकेगा, यह सब जो जनसंख्या बढ़ती जा रही है, खाने के लिए नहीं है आज सब मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं यह बढ़ता रहेगा कैसा होगा अभी इसको कौन हल करे । मनुष्य बिचारे थक गए, बिचारा गांधी कोशिश करते करते गाँधी चला गया, नेहरू कोशिश करते नेहरु चला गया और भी आएंगे चलते रहेंगे लेकिन आकर के भी क्या करेंगे । हमारा खाना पीना और सब जरूरतें बढ़ती जाती है, आखिर क्या होगा तो इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे अभी इस दुनिया का हाल अभी मैं आकर के संभालता हूँ । इसकी वाघें अभी मैंने हाँथ में ली हैं कंट्रोल, अभी मनुष्य के कंट्रोल में आने की चीजें नहीं है यह तो लड़ झगड़ कर आपस में सब खत्म

इसीलिए अभी मैंने पकड़ा है तो मैं आकर के अभी ये सेप्लिंग कंस्ट्रक्शन की गुप्त रीती से लगा रहा हूँ । वो कहते हैं अभी हम को कंट्रोल पकड़ना चाहिए, जब देखते है ना कि बच्चे आपस में लड़ते झगड़ते ऐसे हो जाते है तो फिर बड़े खड़े हो जाते हैं, अभी सबसे बड़ा वह है ना, तो अभी वो आ करके, यदा यदा ही धर्मस्य, जब जब ऐसी अधर्म का टाइम आता है, वह कहते मैं कोई परमधाम रूप में या कोई सजे सजाए में या कोई मैं ऐसा चमत्कार दिखाता हूँ, ऐसा नहीं है मैं आता हूँ गुप्त, मेरा काम चलता ही गुप्त है, यह शास्त्रों में भी है गुप्त का इसीलिए महत्व है दान भी गुप्त, क्यों महत्व रखा है इसीलिए क्योंकि परमात्मा गुप्त आया है ना, उसने जो काम किया है पतितों को पावन बनाना, बड़े गुप्त तरीके से तो यह अभी उसका गुप्त काम चल रहा है तो आपको बतलाते हैं अभी उसका पूरा फायदा लेना और लाभ लेना, यह तो फिर आप लोगों का काम है । अच्छा अभी टाइम हुआ है, आज आए भी कुछ सवेल हैं इसीलिए छुट्टी भी थोड़ा सवेल ही लेनी चाहिए । अच्छा, दो मिनट साइलेंस । साइलेंस का मतलब है हम असल में साइलेंस है फिर टोकी में आए हैं, अब फिर अपने साइलेंस देश को याद करो क्योंकि अभी वहाँ चलना है, पीछे फिर टॉकी वर्ल्ड में आएंगे परंतु यह प्योर वर्ल्ड होगी, अभी इम्प्योर है, समझा । आना है, परंतु प्योर बन करके, फिर शरीर भी प्योर, पीछे हम सदा सुखी होंगे । अच्छा । (रिकॉर्ड बजा छोड़ भी दे आकाश सिंहासन) यह जीवन की नैया बीच भंवर में आ गई है ना,

नॉलेज इज माइट वो देखो डॉक्टरी नॉलेज, नॉलेज तो बहुत है ना, एक नॉलेज थोड़ी ही है, वैसे तो हद के नॉलेज बहुत है ,परंतु यह ज्ञान जिसका नाम है ज्ञान, वैसे कॉमन अर्थ है उसका समझ, ज्ञान का माना ही समझ, परंतु समझ बहुत प्रकार की है, डॉक्टरी इंजीनियरी बेरीस्टरी हर तरह की समझे हैं, लेकिन ज्ञान जिसके ऊपर है कि भाई ज्ञान बिना गति नहीं है, वह कौन सी समझ है, वह यह कि हमारे अपने जीवन का यह पूरा समझ होना चाहिए अर्थात हमको अपने कर्मों का पूरा नॉलेज होना चाहिए तो कर्मों की नॉलेज का, उसको कहा हुआ है ज्ञान, कर्म की गति परमात्मा ही समझा सकते हैं और कोई मनुष्य नहीं क्योंकि मनुष्य तो कर्म की गति के चक्कर में है ना, वह नहीं समझा सकते हैं । कर्म की गति को जानने वाला वही है जो हमारी दुर्गति और सद्गति गति की गति को जानता है । यह दुर्गति में कैसे आए, हम तो सब दुर्गति में आ गए हैं ना लेकिन हम दुर्गति वाले कैसे जान सकेंगे अपने को या हमारे करम गति को । नहीं, हमारी कर्म गति को जो हम दुर्गति में आए हुए हैं उसको जानने वाला वो ही होगा जो गति दुर्गति से ऊपर है, वही जान सकता है इसलिए उनको आ करके समझाना पड़ता है । उसी का नाम ज्ञान है इस चीज का कि जिससे हमको अपने कर्मों का नॉलेज जिससे हम अपने कर्मों को वो नॉलेज पाकर के ऊंचे कर्म बनाएं, जिस नॉलेज की फिर माइट प्राप्त रहेगी कर्म श्रेष्ट की, उससे फिर हम अपना प्रालब्ध यूज़ करें, जिससे फिर हमको सब सुख मिलेगा अच्छा । अभी उसी

नॉलेज की ये कॉलेज है समझा, मनुष्य को ऊँच स्टेटस अथवा सदा सुख प्राप्त करने की स्टेटस कैसे प्राप्त हो, उसका यह कॉलेज । अभी उसमें जो पढ़ेगा, वह स्टेटस पाएगा । जो पढ़ेगा नहीं, वह कैसे पाएगा, तो पढ़ना है ना आ करके यह समझो ।

13. महिमा थोड़ी ही होगी माँ की जितनी की जाए

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कही जाए,

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कही जाए,

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी की जाए,

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी की जाए

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कही जाए

महिमा थोड़ी ही होगी, चाहे जितनी की जाए

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी की जाए

ओ मां... ओ मां... ओ मां... ओ मां....

सब ने कहा मां शारदा भी प्रभु महिमा ना गा सकती

हमने कहा प्रभु वाणी भी मां का पार न पा सकती

सब ने कहा मां शारदा भी प्रभु महिमा ना गा सकती

हमने कहा प्रभु वाणी भी मां का पार न पा सकती

वंदे मातरम कहकर वह भी मां के गुण गाए

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी भी गाएं

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी भी गाएं

चाहे जितनी लिखी जाए चाहे, जितनी कही जाए

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी की जाए

जिसको मंदिर में पूजा, जिसको पर्वत में ढूंढा,

उसने मां बन के अपनी हमको ही पाला पोसा

जिस को मंदिर में पूजा. जिसको पर्वत में ढूंढा,

उसने ही मां बन कर अपनी, हमको ही पाला पोसा

साक्षात्कारों वाली देवी, साक्षात हम पाए

महिमा थोड़ी ही होगी मान की जितनी भी गाएं

महिमा थोड़ी ही होगी, माँ की जितनी भी गाएं

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी भी गाएं

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कहीं जाए

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी की जाए

वीणा वादिनी, हंस वाहिनी, ज्ञानदायिनी मां तुम ही

दुर्गुण हरनी मां दुर्गा हो, शक्ति दायिनी मां तुम ही

वीणा वादिनी, हंस वाहिनी, ज्ञानदायिनी मां तुम ही

दुर्गुण हरनी मां दुर्गा हो, शक्ति दायिनी मां तुम ही

तुलना किससे करें तुम्हारी, किसकी उपमा दी जाए

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी की जाए

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी की जाए

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कहीं जाए

चाहे जितनी लिखी जाए, चाहे जितनी कहीं जाए

महिमा थोड़ी ही होगी, मां की जितनी की जाए

महिमा थोड़ी ही होगी मां की जितनी की जाए

ओ मां... ओ मां... ओ मां... ओ मां...

14. मुक्ति और जीवन मुक्ति पाने की विधि

रिकॉर्ड:-

जाने ना नजर पहचाने जिगर यह कौन है जो दिल पर छाया......

ये जाने ना नजर, पहचाने जिगर- ऐसी कौन सी चीज है । ऐसी कौन सी चीज है, जिसको नजर नहीं देख सकती लेकिन जिगर, जिगर कहो या बुद्धि कहो, कोई चीज तो बुद्धि से पहचानी जाती है ना, तो बुद्धि पहचानती है अथवा बुद्धि से जाना जाता है, आँखों से देखा नहीं जाता है । ऐसी कौन सी चीज है हमारे जीवन लाल जी? परमात्मा । हाँ, परमात्मा । हमारा परमपिता, परमात्मा, जो इन आँखों से नहीं देखा जाता लेकिन बुद्धि से जाना तो जाता है ना, पहचाना तो जाता है ना । आत्मा भी ऐसी चीज है, हम भी ऐसी चीज हैं । आँखों से नहीं देखी जाती हैं लेकिन बुद्धि से जानी जाती हैं । तो परमपिता परमात्मा और हम आत्मा ऐसी चीज हैं कि जिसको आँखों से नहीं देखा जा सकता । आत्मा को भी आँखों से नहीं देखा जाता है लेकिन बुद्धि से जाना जाता है कि हाँ, हम आत्मा हैं और सो भी परमपिता परमात्मा की संतान हैं ठीक है ना । अभी बाप ने बैठ करके यह बुद्धि दी, उसको पहचानने की राइट बुद्धि भी अभी उसने ही दी है, आत्मा ने बुद्धि नहीं दी है इसीलिए आत्मा की भी पहचान परमात्मा ने दी है। इसीलिए

पहचान देने वाला वह बाप हो गया, क्योंकि आत्मा आत्मा को ना आत्मा की पहचान, ना परमात्मा की पहचान दे सकती हैं। क्यों भला , इसका भी कारण क्या है कि हम सब आत्माएं जो है ना, हम सब अभी आयरन एजेड अथवा तमोप्रधान, लास्ट स्टेज पर हैं। तो यह भी सृष्टि का जो चक्र है ना, इस राज को भी समझना है कि यह सभी आत्माओं का लास्ट स्टेज है सबका है । इस समय कोई भी नहीं कहेंगे कि कोई आत्माएं पवित्र हैं । भले कोई अच्छी आत्माएं हैं जिनको पाप आत्माओं के भेंट में पवित्र कह सकते हैं लेकिन पवित्रता की जो कंप्लीट स्टेज है ना उसके भेंट में नहीं कहेंगे कि वह पवित्र हैं । जो कंप्लीट स्टेज की पवित्रता है वह अभी नहीं है इसीलिए पवित्रता जिस चीज को कही जाए उसका मतलब ही है कि कोई भी पांच विकार या माया का बंधन ना हो। लेकिन अभी सभी आत्माओं को बंधन तो है ना । मानो मिसाल के तौर कोई सुनने वालों में यह विचार भी उठ सकता है कि भाई आज बहुत अच्छे सन्यासी , साधू कई हैं, भई पवित्र गिने जाते हैं, जो बिचारे एकदम जानते ही नहीं हैं, मानते ही नहीं हैं परमात्मा को, जिनके कोई कर्म ही अच्छे नहीं हैं, उनके भेंट में तो फिर भी अच्छे कहेंगे जरूर। इसमें कोई बात नहीं है परंतु फिर भी, जो पूर्ण पवित्रता की स्टेज है, उसके भेंट में तो कहेंगे ना कि उतने नहीं है, देखो सन्यासी है भला फिर तो क्या शरीर को रोग होगा तो यह भी तो कोई कर्म का हिसाब है, तो समझेंगे कि उसकी आत्मा में विकारी दुनिया के कर्म का भी कोई हिसाब है या

कोई भी शरीर छोड़ेंगे तो कहाँ जन्म लेंगे, इसी विकारी दुनिया में तो जन्म लेंगे न, तो इसमें जो भी हैं, भले पवित्र आत्माएं भी हैं परंतु कहेंगे वह आत्माएं सब जो हैं वह है अपवित्र । अपवित्र किस भेंट में कि कुछ ना कुछ पवित्रता का उनमें है, कर्म का हिसाब है, जब है तभी तो फिर यहाँ अपवित्र दुनिया में है ना, तो फिर कुछ शरीर को होगा या शरीर छोड़ेंगे तो भी फिर भी विकारियों के घर में जन्म लेंगे, कहाँ जाएंगे? जन्म लेने के लिए तो जरूर कोई विकरो से ही जन्म लेंगे, विकारी कुल में जन्म लेंगे । तो यह भी तो सब का हिसाब किताब है ना, तो कहेंगे ना विकारी संबंध का कोई हिसाब किताब है तो यह सभी बातें समझाई जाती हैं । अभी सब जो भी हैं ना, सब आत्माएँ कहा जाएंगी तमोप्रधान बाकी पवित्र आत्मा जिनकी भी हमारे पास हिस्ट्री है, यह देवताएं, वह ना शरीर वश लेते थे, ना कोई जीवन में विकारों के कर्म का हिसाब किताब भोंगते थे । उनके पास कोई विकारी खाते की भोगना नहीं थी ना तो वह आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र । हाँ सन्यासी साधू कहेंगे उनकी आत्मा पवित्र जरूर है लेकिन शरीर तो पवित्र नहीं है ना, शरीर तो फिर भी विकारी चीज का और फिर भी उसी कारण कुछ ना कुछ रोग आदि रहता है, तो कोई कर्म का हिसाब है ना तो यह सभी चीजें समझने की हैं कि इस समय कंप्लीट जो पवित्रता है ना, स्टेज वह कोई की भी नहीं कही जा सकती है इसीलिए बाप कहते हैं कि वह जो स्टेज है पवित्रता की जिसमें सदा सुख हो, कोई भी विकारी खाते का हिसाब किताब होगा

ही नहीं, ऐसी जो स्टेज है ना, वह मैं आकर के बनाता हूँ इसीलिए कहते हैं उसकी परिचय और ऐसी स्टेज बनाना यह भी मैं आत्मा को सिखाता हूँ और मेरा भी जो परिचय है कि मेरे से तुम क्या पावर लो वह भी मैं आ करके समझाता हूँ । तो बाप कहते हैं तेरा परिचय और तेरी कम्प्लीट स्टेज कौन सी है, उसको कैसे प्राप्त करो, यह दोनों ही बातें मैं समझाता हूँ, यानी तेरा भी परिचय मेरा भी परिचय बाप कहता है । तो दोनों का परिचय मैं दे सकता हूँ । बाकी आत्मा कंप्लीट परिचय नहीं दे सकती है, ना कंप्लीट बना सकती है । तो यह सभी चीजें भी समझने की है, इसीलिए कहते हैं मेरा परिचय मैं आकर के देता हूँ तो अभी देखो परिचय , बाप भी परिचय देता है नॉलेज देता है । बाकी ऐसे नहीं की हम देखें । कई यह आस रखते हैं न की हम उसका साक्षात्कार करें देखें, तो बाप कहते हैं कि नहीं, इन आँखों से तो यह कोई देखने की चीज नहीं है न। चलो दिव्य दृष्टि से देखो भी, परंतु फिर भी क्या होगा, देखा परन्तु फिर भी उसका परिचय तो चाहिए ना, हम अगर कोई चीज देखें, जैसे ये रखा है हमारे आगे, हम देख रहे हैं लेकिन हमको इसका नॉलेज नहीं होगा की ये क्या करने की चीज है, इसमें आवाज भरना है या पता नहीं इसमें कुछ करने का है, उसका कुछ मालूम ना होगा, कुछ ज्ञान ना होगा तो काम में आ सकेगी चीज? आएगी ही नहीं । इसका नॉलेज चाहिए कि यह कैसे यूज़ की जाती है । इससे क्या फायदा लेना होता है । यह कैसे काम की चीज है, यह क्या है। जब ज्ञान होगा उस

चीज का तभी हमारे पास उसकी वैल्यू है तो परिचय, नॉलेज, बाकी देखने से तो कोई ऐसा नहीं है कि देखने से कुछ हो जाएगा इसीलिए बाप कहते हैं देखने से मेरे भी देखने से क्या होगा, मेरे भी देखने के बाद भी तुमको उस चीज का ज्ञान चाहिए ना तो ज्ञान माना ही परिचय, नॉलेज, समझ । तो यह सारा मदार हो गया नॉलेज के ऊपर, परिचय के ऊपर । अभी बाप कहते हैं मैं तुमको अपना पूरा पूरा परिचय, नॉलेज दे रहा हूँ कि मैं क्या हूँ, मेरा कर्तव्य, मेरा नाम, मेरा रूप , मैं किस धाम का निवासी हूँ , तुम भी किस धाम की निवासी हो, कहाँ से आती हो और तेरा भी कैसा स्टेज बाय स्टेज यह सारा चक्कर चलता है, वह बैठ करके समझाता हूँ । तो अभी तेरा भी चक्कर का चढ़ती कला पूरा हुआ, अभी उतरती कला भी पूरा होने पर है । अभी फिर से चढ़ती कला की बारी है तो उतरती कला, चढ़ती कला , यह सभी हिसाब समझने हैं। चार युगों में दो युग है चढ़ती कला के दो युग उतरती कला के। उतरती कला को भक्ति मार्ग कहेंगे और भक्ति मार्ग जब शुरू होता है तो उतरती कला भी शुरू होती है इसीलिए उतरती कला शुरू होती है तो उसको कहेंगे तो सही ना उतरती कला। तो भक्ति मार्ग हो गया उतरती कला और वह हो गया चढ़ती कला तो यह हिसाब है सारा चक्कर का । इसमें भी किसी को मूंझने की बातें नहीं है कि नहीं भाई भक्ति उतरती कला कैसे, नहीं! यह भी समझना है कि भाई गति सद्गति और दुर्गति, तीन स्टेजिस हैं आत्मा की। गति किसको कहेंगे? जो रोज समझते हैं वो समझते

हो गति किसको कहेंगे? अच्छा पूछे , सेठ जी आप बताइए गति माना? जी? जी? नहीं, अभी गति किसको कहं, चलो हम पूँछते हैं जैसे पूरा पूरा ख्याल में आए । हमारे शंख जी बताओ, गति? मुक्ति को, मुक्ति माना? बैकुंठ में जाना, स्वर्ग में जाना , अच्छा । चलो और हमारे, यह तो रोज नहीं आते हमारे बहन जी, आते हैं रोज? आप बता सकते हैं? जो जीवन में नहीं आवे, उसकी गति हो गई । अच्छा, अच्छा । और कौन है देखें माताओं में से पूछे, देखें, देखें हमारी सीता, आप बताइए, गति माना? इसने तो काम ही पूरा कर दिया, अच्छा। हमारी राधे, आप सुनाइए, गति का माना? वह तो ठीक है, तो गति किसको कहते हैं, गति और सद्गति में कुछ फर्क है? शांति धाम में बैठना उसको गति कहते हैं और सद्गति? अच्छा। तो सद्गति माना जीवन में आकर के जो हमारी सतयुग की स्टेज है । जीवन में मुक्त यानी जीवन में दुःख से मुक्त और गति माना दुःख और सुख से मुक्त। जहाँ हम आत्माएं निराकारी दुनिया में रहती हैं । ये जो हमारे वेंसी लाल हैं, वेंसी लाल नाम है ना? इसने कहा कुछ ठीक कि गति माना जो जीवन से मुक्त हो यानी जब आत्मा अभी पार्ट में नहीं आई है, वह सदा नहीं होता है ऐसा की सदा कोई आत्माएं वो पार्ट में नहीं आती है, उसको आना है परंतु कुछ टाइम नहीं आती है, हर एक आत्मा का आपको कल भी बताया था ना हमारे राम चंद्र जी ने कि कुछ टाइम वो आत्माएं वेट करती है, जब तलक नीचे पार्ट हो । तो जब तलक पार्ट नहीं है नीचे, ऊपर है

आत्माएं, निराकारी दुनिया में, तो उसको कहेंगे गति । गति माना दुःख सुख से न्यारे । और फिर जब सुख में आती हैं यानी आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र. जिसको स्वर्ग कहते हैं । गति को स्वर्ग नहीं कहेंगे गति है साइलेंस वर्ड, शांति धाम, निराकारी दुनिया । उसको निराकारी दुनिया को स्वर्ग नहीं कहेंगे, वह माना आत्मा दुःख सुख से न्यारी हो करके जब तलक पार्ट नीचे नहीं है तब तलक वेट करती है। तो उतना समय उनको गति कहेंगे । फिर सद्गति जब जीवन में आती है तो पहली पहली सद्गति की स्टेज है यानी जीवन में मुक्त । उसका मतलब ही है दुःख जीवन में नहीं है, दुःख की सभी बातों से मुक्त तो उनको कहेंगे सदा सुख तो वह हो गई जीवनमुक्ति । उसको स्वर्ग कहेंगे, ये यहाँ की बात है ना, कारपोरियल वर्ल्ड कि जहाँ जीवन में आ करके सदा सुखी तो उसको कहेंगे स्वर्ग, और जब दुःख सुख से भी न्यारा उसको कहेंगे गति और दुर्गति जो हम फिर जीवन में दु:खी तो जीवन में दु:खी, उसको दुर्गति कहेंगे और जो जीवन में सुखी, उसको सद्गति कहेंगे और जीवन से जब तलक पार्ट नहीं है उसको गति कहेंगे । तो यह हर एक आत्मा का पार्ट है, कुछ टाइम जितना टाइम वहां है, अभी तक नीचे पार्ट नहीं है तो वह गति, पीछे सद्गति । पहले आती है तो सद्गति, हर एक का भी अंदाज है ना पार्ट का, कोई बहुत समय, कोई कम समय, जैसा कल भी समझाया था ना कोई सतयुग से कोई पीछे आती हैं कोपरएज, कोई कलहयुग में पीछे उतरती हैं तो उनका फिर अपना-अपना टाइम है परंतु आना

फिर सबको लास्ट स्टेज तक है तो यह सभी हिसाब समझने का है । तो यह कहेंगे ना कि पहले गति, पीछे सद्गति, पीछे दुर्गति तो यह सभी का ऐसा चक्र चलता है , लास्ट में सब आ करके दुर्गति में पहुंचती हैं । पीछे भले उसकी स्टेज में फर्क है कोई दुर्गति में भी कोई कुछ अच्छे हैं, कोई दुर्गति में बहुत नीचे हैं, परंतु कहेंगे तो अभी सब जो हैं ना यह विकारी माया के बंधन में सब हैं, कोई थोड़ा है, कोई बहुत है । जैसे सन्यासी साधू, भल, चलो उसकी आत्मा कुछ पवित्र है, परंतु फिर भी माया का बॉन्डेज तो है ना कुछ ना कुछ । हाँ भाई शरीर को रोग होता है या कोई भी कर्म का कुछ होता है । बैठे हैं इस विकारी दुनिया में तो माना विकारी दुनिया का कुछ ना कुछ खाता जरूर है । तो इसको कहा ही जाता है विकारी बंधन में, यानी दुःख के बंधन में तो दुःख का खाता कुछ ना कुछ है तो यह सभी चीजें जरा थोड़ी समझने की हैं कि ये सारी सृष्टि का भी जो नियम है तो कैसे फिर चढ़ती कला फिर ये उतरती कला । अभी उतरते उतरते सभी जो आत्माएं हैं ना, अभी लास्ट स्टेज में है इसीलिए उसको कहेंगे अभी दुर्गति में । तो जभी भक्ति शुरू होती है, तभी दुर्गति का टाइम शुरू होता है तो टाइम शुरु हुआ है ना फिर वो टाइम चलता चलता चलता देखो द्वापरकाल से भक्ति शुरू होती है और द्वापरकाल से ही माया का आना शुरू होता है । सतयुग, त्रेता में माया नहीं है, यानी पांच विकार । पीछे माया आती है तो मानो दुर्गति शुरू होती है । तो दुर्गति शुरू होती है और उसकी एंड होती हैं तो यह टाइम कहेंगे कि

भक्ति के आधार से कुछ ना कुछ मनुष्य चलते रहते हैं, परंतु यह टाइम ही है द्वापर से फिर कलयुग होना, तो कहेंगे ना दुर्गति का टाइम है । तो इसी हिसाब से कहा जाता है कि ये भक्ति तो वो साइड ही है , दो युग जो है द्वापर और कलहयुग वो दुर्गति के हैं और सतयुग और त्रेता जो हैं न वो सद्गति के हैं तो यह हिसाब से समझने का है । इसी में कोई ऐसे नहीं कि कभी-कभी हम जैसे कह देते हैं ना, भाई भक्ति तो दुर्गति । कई समझते हैं कि भक्ति को दुर्गति कहा जाता है । नहीं! भक्ति को दुर्गति नहीं कहेंगे । भक्ति का टाइम ही जो है ना वह जब भी दुर्गति का टाइम है तभी हमारा द्वापर से कलयुग होना ही है । तो हमारा उस समय उतरती कला का टाइम है, पीछे फिर चढ़ती कला का टाइम आता है तो सतयुग और त्रेता फिर हम चढ़ते हैं तो यह हिसाब समझने की है यह तो उस झाड़ में बहुत अच्छी तरह से समझाया हुआ है कि दो युग चढ़ती कला के जैसा नार होता है ना, आप लोगों ने वो किज्डी का नार देखा होगा, तो नार में आधा साइड जो है न, वो किंजडियाँ भर करके ऐसी चढ़ती है, फिर आधा समय उतरती हैं तो किन्ज्डीया धीरे-धीरे खाली होती जाती हैं । खाली हो कर के फिर लास्ट में बिल्कुल खाली हो जाती हैं । तो यह भी सृष्टि का एक नार है, चक्कर है । इसको चक्कर में भी लगाया हुआ है ना तो यह भी चक्कर है । इस हिसाब से चक्कर है कि यह आधा समय चढ़ती है, अभी देखो हम भरपूर हो जाते हैं और भरपूर हो करके अभी चढ़ते हैं और फिर आधा कॉपर

एज से हम उतरना शुरू करेंगे तो उतरते उतरते तो भक्ति भी उसी टाइम चलती है लेकिन हमको वह कला में उतरते उतरते चढ़ना है सो थोड़ा भक्ति के सहारे थोड़ा-थोड़ा धीमे धीमें उतरते हैं , नहीं तो भक्ति भी ना हो ना तो बिल्कुल नास्तिक हो जाएं, हम बिल्कुल जल्दी उतर जाएं परंतु उसके आधार से कुछ ना कुछ थोड़ा-थोड़ा थमते थमते चलते हैं तो यह सभी थमाने की थोड़ी थोड़ी हैं । परंतु उतरते जरूर है क्योंकि यह दो युग है ही उतरने के । तो यह हिसाब भी समझना है जैसे मकान पुराना होना शुरू होगा तो पुराना होता चलेगा ना । ऐसे तो नहीं ना पुराना नया हो जाएगा । नया होंगा, फिर पुराना होगा, फिर तोडेंगे, फिर बनाएंगे तब फिर नया होगा, लेकिन पुराना हुआ तो भले उसको थमाने के लिए मरम्मत भी करेंगे, परंतु मरम्मत से नया तो नहीं हो जाएगा ना, उनको कहेंगे कुछ मरम्मत कर करके उसको थमाते थमाते चलाते हैं तो भक्ति माना थमाते थमाते कुछ ना कुछ अच्छे-अच्छे कर्मों से चलाना परंतु उसका पुराना होना तो चलता रहेगा न । ऐसा तो नहीं मकान मरम्मत से नया हो जाएगा, नहीं! उसकी पुरानी कंडीशन चलती चलेगी । जब फिर तोड़कर के नया बनाएंगे तो नया कहेंगे फिर यही हिसाब को समझने की बातें हैं ना । तो यह भी सृष्टि का भी हिसाब है । इन सभी बातों को समझना है इसीलिए इन बातों को भी जितना जितना अभी बाप बैठकर के समझाते हैं ना, तो समझाते रहते हैं कि देखो यह समझने की सब बातें हैं कि हमारा आधा समय कैसा है, इसीलिए देखो यह सब रंग दिया है ना । यह

कलयुग यह कॉपर यह सिल्वर यह गोल्डन । अभी गोल्डन एंड सिल्वर इसको कहेंगे सद्गति और यह है दुर्गति का टाइम यानी हमारी उतरती कला है । दो युग हम उतरते हैं तो अभी उतरते उतरते देखो फिर अब गति में जाएंगे, वापस जाएंगे उसको फिर गति कहेंगे, सुख दुःख से न्यारे, फिर आएंगे तो फिर सद्गति में, इसीलिए यह सभी हिसाब समझने का है तो भक्ति कहाँ से शुरू होती है कॉपर एज से, यहाँ तो सतयुग त्रेता में भक्ति की जरूरत नहीं है ना । यहाँ से तो भक्ति शुरू होती है लेकिन कलहयुग से ही चलता है क्योंकि ऐसा नहीं है कि भक्ति होने से हम फिर वापस घर आ जाएंगे सद्गति में, नहीं! हम तो नीचे चलते चलते फिर वापस जा कर के, फिर यहाँ आएंगे यह चक्कर का नियम है । ऐसे नहीं है जैसे बतलाया ना, मकान कोई मरम्मत से नया हो जाएगा, नहीं! टेंपरेरी भल कुछ थमा दें, परंतु पुरानापन तो चलता ही रहेगा ना, तो ये सभी थोड़ी चीजों को समझना है । इसी तरह से यह सृष्टि का भी एक नार की तरह से, इसको कहा जाता है किंजड़ी का नार । यह जो सभी बनाए हुए हैं ना, देखो कई नार स्वास्तिका के रूप में भी होते हैं, जैसे स्वास्तिका होते हैं ना, स्वस्तिका देखे हैं ना, वह गणेश के पुजारी निकालते हैं, तो यह सारा चक्कर है अर्थात आधा समय कैसे सुख का, आधा समय दुःख का । दो युग सुख के हैं सुख में भी फर्क है सतयुग का सुख ऊंचा त्रेता में दो कला का थोड़ा-थोड़ा आस्ते आस्ते आस्ते, परंतु है सुख का । ऐसे नहीं है कि कम माना उसमें दुःख आ जाता है, नहीं उसमें दुःख

का नाम निशान नहीं है । फिर त्रेता के बाद में द्वापर से दुःख का राज्य शुरू होता है तो पहले थोड़ा, फिर आस्ते आस्ते बढ़ता जाता है, पीछे कलयुग आ करके होता है तो यह देखो चक्कर में, इसीलिए तो यह नारा ऐसा चलता है और भी जो है न, यह देखो उतरती कला जो है ना, वो उतरती उतरती उतरती अभी आकर के पूरी हुई है, अभी फिर चढ़ती कला, तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझना है की अभी हम उतरती कला के लास्ट में है, अभी हमारी यह चढ़ती कला जिसमें अभी हम चढ़कर के अथवा हमारी आत्मा अभी उसी तरफ जाती है, तो यह सभी हिसाब को बातों को समझना है इसीलिए कहेंगे तो सही ना, जब भक्ति मार्ग शुरू होता है तो उस टाइम दुर्गति है, यानी मनुष्य की दुःख की अवस्था है । दुर्गति का दूसरा कोई अर्थ नहीं है, माना हमारी जो सुख की स्टेज है वह नहीं है हमारी दुःख की स्टेज है । तो वह टाइम दुःख का है इसलिए दुःख को हम कुछ ना कुछ थमाने के लिए यह भक्ति या थोड़ा बहोत कुछ फलाना इनका कुछ ना कुछ इस प्रकार की सुख की प्राप्ति करते हैं वह अल्पकाल की होती हैं और यहाँ हो गया सदा काल की जो फिर बाबा हमारी गति करके फिर हम को दुःख से छुड़ाते हैं तो गति और दुर्गति देने वाला हो गया परमात्मा तो यह चीजें भी समझने की है गति माना निराकारी दुनिया में जहाँ हम आत्माएं जाती हैं, वहां ना दुःख ना सुख उसको कहेंगे गति और फिर सुख में आते हैं तो स्वर्ग कहेंगे, वैकुंठ स्वर्ग सुख को कहेंगे और हमारी गति निराकारी दुनिया को वैकुंठ नहीं

कहेंगे तो निराकारी दुनिया को बैकुंठ नहीं, स्वर्ग नहीं कहेंगे स्वर्ग माना जहाँ सुख है तो स्वर्ग ही इधर है दुनिया में और वह निराकारी दुनिया उसमें कोई स्वर्ग नहीं कहेंगे तो ये इन अक्षरों को भी समझना है स्वर्ग माना निराकारी दुनिया में जहाँ हम आत्माएं जाती हैं वो स्वर्ग नहीं है, तो यह भी हिसाब समझना है उसको निराकारी दुनिया साइलेंस वर्ल्ड कहेंगे, इनकॉरपोरियल वर्ल्ड, तो इनकॉरपोरियल वर्ल्ड को स्वर्ग नहीं कहेंगे । सब कहते हैं स्वर्ग की दुनिया में जब यहाँ हम जीवनमुक्त हैं तो यह भी सभी बातें समझनी है, ऐसे नहीं कि मुक्ति जीवन मुक्ति एक ही बात है गति सद्‌गति एक ही बात है । मुक्ति माना मुक्त यानी पार्ट से ही मुक्त और जीवन मुक्ति माना जीवन में दुःख से मुक्त, तो फर्क है ना वह शरीर से यानी पार्ट ही नहीं है पार्ट से ही मुक्त है और वह जीवन में दुःख से मुक्त उसको कहेंगे जीवनमुक्त और फिर जीवनबंध, जीवनबंध माना दुर्गति । जीवन हमारी बंधन में, कर्म के चक्कर में चलती है, अभी देखो कर्म के बंधन के चक्कर में है ना, तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझना है । यह हिसाब है सारा संसार का, हमारे सारे चक्र का जिसको जानना है । बाप कहते हैं अभी देखो तुम्हारा कौन सा अभी स्टेज आने का है । अभी तो सभी को गति में जाने का है यानी मुक्त होना है । अभी तो सब का पार्ट पूरा होता है सद्‌गति, दुर्गति अभी सब पूरा हुआ अभी तुमको मुक्त होना है अर्थात अभी जाना है अपने उस धाम, जहाँ से नंगे आए, कहते हैं न नंगे आए और नंगे

जाना है यानी आत्मा कहाँ से आई, पहले शरीर नहीं था तो जब आई थी जैसे शरीर नहीं था फिर वह हो करके जाना है इसीलिए कहते हैं इससे डिटेच हो जाओ । यह देह सहित देह के सर्व संबंधों से डिटैच हो जाओ क्योंकि यह अभी शरीर तुम्हारे ये पांच विकारों के हिसाब से बने हुए हैं न, अभी तो इससे डिटेच हो जाओ । फिर डिटेच हो करके फिर जो तुम शरीर लेंगे ना वह तुमको फिर सदा सुख के शरीर मिलेंगे इसीलिए बाप कहते हैं अभी जैसे नंगे आए वैसे नंगे जाना है यानी प्लेन आत्मा होकर जाना है इसलिए अपना देह सहित देह के सर्व संबंधों से अपनी बुद्धि हटाओ, यह है उसका फरमान इसीलिए बाप कहते हैं अभी इसी फरमान को समझ कर के अभी उसका पुरुषार्थ रखो तो अभी हमारा पुरुषार्थ, जिसको कहा है ना गीता में भी की अशरीरी हो जाओ तो गीता में भी अक्षर है कि अशरीरी हो जा, अशरीरी का मतलब है तू असल में आत्मा शरीर धारण करने वाली है ना, पहले पहले तो तुम अशरीरी थी ना यानी शरीर नहीं था पीछे शरीर लिया है तो अभी फिर से अशरीरी हो जा यानी शरीर से डिटेच हो जा । तुम पहले से ही डिटेच हो जाएंगे तो तेरी बुद्धि शरीर से निकल जा करके अशरीरी अवस्था में रहेगी तो फिर अंत मते सो गते ऐसी अवस्था को जाकर के पाएंगे । कहा भी जाता है ना अंत मते सो गतें तो अभी बुद्धि तू वहाँ लगा, अंत मति सो गति की, कि मैं प्लेन था यानी मैं आत्मा, अभी मुझे फिर प्लेन हो करके जाना है अर्थात इस शरीर से डिटेच, तो अपनी आशक्ति इस शरीर से इन सब

निकाल । कहा ना इससे ममत्व निकाल अपने को अशरीरी समझ । यह मामा, काका, चाचा, बाबा यह देह के संबंध से भी बुद्धि हटा । यह सब से बुद्धि हटा करके मन को मेरे में लगा । क्यों कहा, मनमनाभव है न गीता ना, मनमनाभव तो मध्याजी भव अर्थात निरंतर मन को मेरे से लगाने से तुम फिर जाकर के ऐसा जो शरीर है जो सुख का है ना, वह प्राप्त करेंगे तो यह सभी हिसाब बैठ कर के अभी तुम शरीर भी सुख का कैसे लो वह तभी लेंगे जब अभी शरीर से डिटेच हो जाएंगे । इस शरीर से डिटेच हो जाओ तो फिर तुम को शरीर पीछे जो मिलेगा ना वह सदा सुख का मिलेगा क्योंकि यह दुःख के बंधन से तेरी बुद्धि निकल जाएगी तो यह सभी बैठकर के नॉलेज बाप समझाते हैं कि अभी तुम्हारा क्या स्टेज है । तो इन्हीं सभी बातों को भी अच्छी तरह से समझना है यह समझने की नॉलेज है जिसको समझना है बात में, बाद में किसी को कहना नहीं है ऐसे भी देखो बहुत यहाँ कहते भी हैं कि कभी भी किसी को ऐसे मत कहो कि हां भाई यह भक्ति मत करो, नहीं! ऐसा कभी किसी को नहीं कहना, ऐसे भी ना हो की भक्ति भी छोड़े ज्ञान भी ना ले सकें, वह तो नास्तिक हो जाएगा तो किसको नास्तिक थोड़ी बनाना है । नहीं! नास्तिक से तो भगत अच्छा, परंतु फिर भी कहा हुआ है ना, भक्ति से ज्ञान श्रेष्ठ है परंतु किसी को ऐसा नहीं कहना है कि तुम भक्ति ना करो क्योंकि बुरी बात के लिए किसीको रोक सकते हैं कि यह क्रोध मत करो, विकारों में मत जाओ, वह तो बुरी बात है ना तो बुरी बात के लिए

हम छुड़ा सकते हैं बाकी अच्छी बात क्यों छुड़ाएं, जब समझ आ जाएगी ना अपने आप इस अच्छाई से फिर ये अच्छाई है, श्रेष्ठ है उसको पकड़ेंगे तो अभी छोटे बच्चे जो हैं ना, छोटे बचपन की जो है ना, वह अपने आप छूट जाएंगे । बच्चा होता है ना तो छोटेपन में खिलौने से खेलेगा पर जब समझ आती जाएगी तो वह छोटेपन के खेलपाल अपने आप छूट जाएगा तो हमारे में भी ज्ञान नहीं था तो हमारे में भी यह छोटापन था, हम वो ही ठाकुर, खिलौने आदि भगवान के ले करके उसको कपड़ा पहनाना, खिलाना, ये करना जैसे बच्चियाँ होती हैं ना गुड़ियों का खेल करते हैं तो जैसे ज्ञान नहीं था तो यह था । अभी समझ में आई है तो हम कहते हैं हम खुद चैतन्य में प्रैक्टिकल में देवता बने ना । अभी खाली यह थोड़ी है कि उनका बुत लेकर के उनको बैठ करके उनकी पूजा करें वो तो जैसे गुड़ियों का खेल हो गया । उसको कहते हैं आइडल परस्त, अंग्रेजी में भी करते हैं, तो कहते हैं आइडल परस्त । प्रैक्टिकल में तुम देवता बनो तो यह है कि जब वह स्टेज बनें न, तो वो सब अपने आप छूट जाएगी बाकी किसी को कहना नहीं है कि यह ना करो । फिर भी अच्छा जाकर के कोई बुराई काम करे तो इससे तो अच्छा है ना फिर भी भगवान का किसी न किसी तरीके से उल्टा की सीधा फिर भी कुछ ना कुछ उसका बैठकर के करता है ना तो नास्तिक से तो अच्छा है ना, भाई बुरे काम करने से तो अच्छा है ना इसीलिए कभी भी किसको ऐसा नहीं कहना की यह भक्ति छोड़ो, इससे तो कुछ नहीं है । नहीं! हम

कहते हैं, ऐसा कभी भी समझाने में यह बहुत समझाया जाता है कि कभी भी किसी को भक्ति छुड़ाने नहीं है, तब तलक वह अपने आप समझ में आए । जब आएगा ना तभी हमारा वह छोटेपन की बातें जो है ना वह अपने आप छूट जाएंगी क्योंकि समझ आ गई ना की अभी हमको कौन सा कर्म करना है । हमारा कर्म है अपने जीवन को बनाना, दूसरों के जीवन को बनाना । हां वही टाइम हम किसके जीवन को बनाएं, चैतन्य में उसको प्रैक्टिकल देवता बनाएं तो वह श्रेष्ठ काम है ना तो वह जब समझ आएगी तो अपने आप आ जाएगी ना । बाकी किससे वह छुड़ाना बेचारा वह भी काम ना कर सके और वह भी छोड़ देवे तो नास्तिक हो जाएगा ना, इसीलिए कभी भी किसी से ऐसा नहीं छुड़ाना है । हां बाकी भी विकारों के लिए तो कहेंगे ना भाई यह भी गंद है इससे तुम्हारा विक्रम बनेगा इसको छोड़ो । बाकी भक्ति के लिए किसको नहीं कहेंगे कि छोड़ो । वो तो जितना जितना ज्ञान की पराकाष्ठा बढ़ती जाएगी ना, वो अपने आप जो कुछ छोटेपन के हैं वह अपने आप छूटता जाएगा जैसे बच्चे का छोटापन जितना जितना समझ में आता जाएगा, उतना छोटापन अपने आप छूटता जाता है । तो यह भी सारी चीजें समझने की है कि इसीलिए यह भी सब बातें अपने पास रखने की है, अभी यह तो सब हुआ ज्ञान जो बुद्धि में रख कर के अपने ज्ञान से अपने को कैसे ऊंचा रखना है और अपने कर्मों को कैसे अच्छा बनाना है, लेकिन फिर अपनी धारणाएं भी तो अच्छी करने की है ना । ऐसे नहीं है कि खाली हमको पंडित

बनना है, खाली दूसरों को बैटरी कहने का है, नहीं! हमको यह तो अपनी प्रैक्टिकल जीवन के ऊपर भी अटेंशन देना है तो हमारी धारणाएं भी बहुत अच्छी होनी चाहिए । हमारे कर्म भी बहुत अच्छे होने चाहिए । हम कहते हैं, हम पांच विकारों को जीतते हैं । अभी बाप आया है और हमको आकर के पांच विकार यानि माया के ऊपर जीत पहनाते हैं तो माया माना विकारी. माया कोई शरीर तो नहीं है ना, माया कोई इन आँखों से जो देखते हैं ये धन सम्पत्ति उसको माया नहीं कहेंगे, माया माना विकार, धन-संपत्ति तो देवताओं के पास भी थी, परंतु विकार नहीं थे तो उसका मानो उनके पास माया नहीं थी । माया माना ऐसा नहीं कि उनके धन-संपत्ति नहीं थी, तो उसकी माना धन सम्पत्ति को माया नहीं कहेंगे । तो उन्हीं बातों को समझना है । तो हमाको छोड़ना है विकारों को, फिर उन्ही विकारों पर अटेंशन होना चाहिए कि हमारे में कोई ऐसा भूत तो नहीं है, यह भूत है ना, तो यह भूत एकदम तो अभी इन भूतों को निकालना है तो अभी देखो काम , वह भी इतनी बड़ी बात नहीं है वह तो ब्रम्हचर्य का तो बहुत लोग पालन करते हैं, ऐसे भी करते हैं । भले यहाँ ज्ञान में नहीं आते हैं, बहुत हैं जो ब्रह्मचारी रहते हैं । वह तो गांधी जी का भी एम था, बहुत अभी है जो गांधीजी के मानने वाले वो ब्रह्मचारी रहते हैं । बड़े-बड़े मिनिस्टर हमारे से मिलते हैं ना तो वो कहते हैं, हम गांधी के समय से ब्रह्मचारी हैं तो ऐसे तो बहुत है जो अपने को ब्रह्मचारी कहते हैं तो यह भी कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन साथ-साथ

दूसरे भी विकारों के ऊपर अटेंशन तो देना है ना । तो देखो क्रोध अभी यह भी बहुत भारी भूत है न, अभी क्रोध यह भी तो देखो हम अपना भी हानि करते हैं, अपना भी जी जलता है, दूसरों का भी जलाते हैं, होता है ना ऐसे, तो यह है एक-दो को दुःख देना । तो एक दुःख होता है लाठी मारना किसका खून करना कर्म से, परंतु यह कुवचन किसी को बोलेंगे या कुछ भी ऐसा उल्टा-पुल्टा कहेंगे तो वह भी हमने जैसे किसी के ऊपर जैसे वह हाँथ से लाठी मारनी है यह मुख से लाठी मारनी है, तो यह भी तो विकर्म हो गया ना । तो हमको अपने वचनों के ऊपर, बोल के ऊपर भी अटेंशन देना है कि हमारा बोल किसी को कोई दुःख तो नहीं देता है । तो एक है हाँथ से भाई मैंने मारा थोड़ी, मैंने खून थोड़ी किया, मैंने कोई पाप थोड़ी किया परंतु यह जो वचन से, जबान से मारा, किसी को दुःख दिया तो यह भी तो दुःख हो गया ना, तो दुःख हो गया ना तो इसका भी हमारे ऊपर पाप चढ़ा इसीलिए हमको किसी को ऐसा वचन नहीं बोलना है जिससे किसको दुःख हो, अपनी तरफ से अपने को कोशिश में रखना है हां कोई बेसमझी से किसमें दुःख है कोई बात है समझो, वह दूसरी बात है लेकिन हम जिसको कहे क्रोध तो आकर के हम उसमें कुवचन बोलें वह तो बात नहीं होनी चाहिए ना और भले कोई हमारे ऊपर कोई भी अपकार करें लेकिन हमको अपकारी के ऊपर उपकार करना है । हमारा काम क्या है कहते हैं ना कर भला तो हो भला यह कहावत बहुत कॉमन है कि कर भला तो हो भला । हम

किस का भला करेंगे तो हमारा भला होगा इसमें हमारा क्या बिगड़ेगा, इसीलिए ऐसा आबकारी के ऊपर उपकार करना, यह धारणा होनी चाहिए और किसी के प्रति भी हमको कोई कुवचन या कोई भी ऐसा बात बोलना नहीं है । हम इस जवान के ऊपर बहुत अटेंशन से जो भी वचन कहना है वह बहुत सरल रखना चाहिए, ऐसी कोई नहीं कि कम ज्यादा जैसे आवे वह बोल देवें, उससे कोई दूसरे को नुकसान हो जाए तो देखो उसके नुकसान का हमारे ऊपर भी लगेगा । जैसे हम कहते हैं कि फायदा भी हम को मिलता है, कोई की अच्छी सर्विस करते हैं, तो भाई उसका फायदा मिलता है, कोई डिश सर्विस करेंगे किसको हानि पहुंचाएंगे तो उसका नुकसान भी तो मिलेगा ना कि नुकसान नहीं मिलेगा? मिलेगा, तो यह भी सभी चीजें हैं जिसमें हम को बैठ कर के हर बात में समझ रखनी है । अपने एक एक अक्षर के ऊपर, बोल के ऊपर अटेंशन देना है कि मेरे बोल से कोई को दुःख तो नहीं पहुंचता है इसीलिए अपने बोल के ऊपर, अपने इन सभी बातों के ऊपर अटेंशन । तो इसको कहेंगे यह सभी भी सीखना है ना । तो ऐसे क्रोध में टेम्पर लूज हो करके या हम किसी के लिए कुछ भी कह दें या किसको कोई दुःख की बात पहुंचा दें, नहीं! अभी तो नॉलेज है ना समझ मिली है, तो यह सब जो यहाँ आते हो, क्योंकि आते हो, आप लोग शिक्षा ले रहे हो, तो हक़ हक है इन सभी बातों का समझाने का, तो यह सभी चीजें धारणाओं में रखनी है, तो यही बातों के लिए तो यहाँ आते हो ना, बाकी ऐसे नहीं है कि यहाँ खाली

आओ, घंटा आधा टाइम दिया, फिर जैसे हो वैसे ही रहो, नहीं, तो फिर आने का फायदा ही क्या है? फायदा यही है कि इन पांच विकारों को कैसे जीते । तो इसके ऊपर ध्यान रखना चाहिए, परंतु ऐसे नहीं हमारा स्वभाव है, हमारी आदत है, या हमारा ऐसा है, नहीं! उस आदत के ऊपर तो अपना कंट्रोल देना है ना, तो अटेंशन देना है और अटेंशन के लिए युक्ति भी बाप बतलाते हैं कि बच्चे कैसे अटेंशन रखो, हर वक्त अपने को सोल कॉन्शियस रखो, आत्मा निश्चय रखो कि आई एम सोल, यह तो इजी है ना । सोल समझने से सुप्रीम सौल भी याद रहेगा । बाप कौन सा, सोल का बाप कौन होगा? जैसे अपना बाप हो तो बच्चा भी कहेंगे, वह भी मनुष्य है ना, तो याद रहेगा कि बाप है तो जरूर बाप के संबंध में बच्चा आएगा । यह समझेगा कि मैं बच्चा हूँ, बच्चा किसका हूँ बाप का । तो बच्चा है तो बाप जरूर याद आएगा । बच्चा और बाप, बाप और बच्चा, बच्चे बाप से संबंध रखते हैं, बाप बच्चे से । बच्चा अक्षर फिर निकलेगा कहाँ से, भाई बच्चा हूँ तो बाप से ही तो बच्चा कहने में आता है ना । तो जरूर बाप आएगा, आत्मा माना ही परमात्मा जरूर याद आएगा कि मैं आत्मा उसी की संतान हूँ, तो अपने को पहले वह निश्चय रखने का है । तो यह है युक्तियां अपने को कैसे विकारों से छुड़ाकर रखें, यह युक्तियां है तो अपने को सौल कॉन्शियस रखो मैं आत्मा हूँ, देखो भी ऐसा कुछ होता है मानो कोई ने हमको दो गाली दे दी समझो कुछ बुरा कह दिया, तो हम क्या समझेंगे है तो बिचारी यह भी आत्मा यह

कोई दूसरी चीज थोड़ी है, यह भी आत्मा है, अच्छा! उसने मुझे कहा, तो अभी क्या हुआ वैसे भी कहते हैं, सन्यासी अभी लगा तुमको? कहाँ लगा ? तुमको किधर लगा बताओ, कुछ नहीं, वो तो आवाज, हवा में उड़ गया, परंतु सन्यासी भी ऐसे ऐसे मिसाल देते हैं, परंतु अपने पास तो रियल ज्ञान है कि चलो इसने कहा, तो आकाश तत्व से आवाज कहा, लेकिन कहा किसने ? आत्मा ने कहा । अभी आत्मा जो करती है, सो पाती है, हम क्यों अपने सिर पर इसका लेकर के अपना विकर्म बनाएं, अगर एक वचन से हम भी दो कुछ बुरा कह देंगे तो हमारा विक्रम बन जाएगा । हमारा तो काम है इसनें भी जो भी विकर्म बनाएं, इसको भी प्यार से उसी विक्रम से बचाएं, कोशिश करें तो हमारा फर्क पड़ेगा ना, इससे हमारी भावना शुभ आएगी कि नहीं इन बिचारे का भी कल्याण करें, जो कर सकते हैं तो । तो कर सकते हैं तो करें, तो अगर करने की भी हिम्मत नहीं है तो मैं अपना कोई वचन दे करके इनका हानि तो ना करू ना, या अपनी हानि तो ना करू ना । तो क्या होगा कि हर वक्त ख्याल रहने से कि यह भी आत्मा है, मैं भी आत्मा हूँ, यह ध्यान रहने से आत्मा का जो ज्ञान है ना, वह बुद्धि में रहेगा की ये आत्मा के संस्कार है । अभी उसके संस्कार के साथ शुद्ध मेरा संस्कार, मुझे तो शुद्ध रखना है न । मुझे थोड़ी असुद्ध संस्कार में आना है तो मैं फिर आत्मा अशुद्ध संस्कार में आऊंगी तो मेरा विकर्म बन जाएगा, तो वह आत्मा की सारी नॉलेज रहेगी ना बुद्धि में, तो हम अपने विक्रम बनाने से बचे रहेंगे । तो यह

बुद्धि में हर वक्त रहना चाहिए कि अपने को आत्मा निश्चय । तो यह देखो युक्ति हो गई ना अपने को विकर्म से बचाने की । तो कोई भी बुरा काम हम हाँथ से भी कोई बुरा काम ना करें, मुख से भी कोई बुरा काम ना करें । मुख भी विकर्म में आ गया तो फिर तो विकर्म बन गया । बाकी मन से किसी के उल्टे संकल्प चलते हैं उसका विक्रम नहीं बनता है, उसी टाइम हम बाप को याद करें लेकिन हां वेस्ट तो गया ना , परंतु विक्रम से तो पहले बचाना है बुद्धि को और कर्म को । मुख चला तो खाता बन गया । उल्टा बोला तो उल्टे का, सुलटा बोला सुलटे का, खाते में तो आ गये न । तो बचना है, इसीलिए ज़रा सहनशील, यह भी गुण है ना निर्भयता, गंभीरता और हम देखो कितने बड़े बाप के बच्चे हैं, बड़े शानदार बाप के बच्चे हैं ना, तो हमारा बोलचाल बड़ा रॉयल और उसी शान से, देखो जो शान वाले बच्चे होते हैं ना, कितने शान से उनके बोलचाल रहते हैं तो वह तो है बाहर की जिस्मानी मेहनत, अपने पास तो रूहानी है ना कि हम आत्मा उसी परमपिता परमात्मा की संतान हैं । हमारा बोल कैसा होना चाहिए, हमारी चाल कैसी होनी चाहिए, हम कितने रॉयल होने चाहिए तो अपनी फिर रॉयल्टी वह भी रखनी चाहिए ना, रूहानी, श्रेष्ठ रॉयल्टी । तो यह भी सभी बात अपने ध्यान रखने का है इसीलिए कोई को भी, किसी भी तरह से हमारे से दुःख पहुंचे । ऐसा कुछ बोलना करना नहीं चाहिए, कोई भूल भी हो जाए ना, तो कह दो आई एम सॉरी इसलिए इनके ऊपर भी अभी पूरा अटेंशन होना चाहिए कि

ऐसा कोई बोलचाल ना होना चाहिए और समझो कोई ने बोला भी तो दूसरे को क्या समझना चाहिए, क्योंकि यहाँ आते तो हो ना सब, समझो किसी ने कोई कैसा कुवचन बोल भी दिया, तो भी उनको फील नहीं करना चाहिए । उसको फिर देह अभिमान कहेंगे, हमारे को फील हुआ उसने ऐसा क्यों कहा, तो फील हुआ तो माना उसका मतलब उस समय आत्मा निश्चय नहीं है ना । क्यों फील किया, फील कौन करती है आत्मा, पर उसी समय आत्मा को ख्याल नहीं है कि मैं किसकी संतान हूँ । अगर यह ज्ञान होता तो वह फील नहीं करता, तो उसको कहेंगे देह अभिमान । अपने को समझते हैं मैं ऐसा हूँ, इसने क्यों कहा, तो इसने और मैं, वह हो गया बॉडी कोनसिअस हूं तो वह बॉडी कोन्सिअस की वजह से फील हुआ फिर वह देह अभिमान आने से फिर या तो उससे रूठ जाएंगे या फिर एक का दो अक्षर बोल देंगे, कोई ऐसी-ऐसी बातें हो जाती है ना, तो यह सभी जो बातें हैं इन सबका कारण है देह अभिमान । बोलना भी देह अभिमान से, फील होना भी देह अभिमान से, है तो सब देह का अभिमान ना । तो बाप कहते हैं बच्चे इससे डिटेच हो जाओ । देह का अभिमान छोड़ो । अब देही यानि आत्मा का अभिमान रखो यानि मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ, शुद्ध अहंकार रखो, यह अशुद्ध सब छोड़ो । तो अभी छोड़ना चाहिए ना उसको, इसीलिए इन सब बातों की भी धारणा अच्छी, बुद्धि में रखनी चाहिए । ये खाली सुनने का तो ज्ञान नहीं है ना प्रैक्टिकल, तो सारा दिन अपना चार्ट रखो कि मैंने आज किसके साथ कुछ ऐसा

कुवचन तो नहीं बोला । मेरे से आज के दिन में कोई ऐसी भूल तो नहीं हुई, क्रोधवश या लोभवश या मोहवश या कोई भी विकारवश हुई तो नहीं, तो यह सभी अपना अटेंशन रखना चाहिए और अपने में फिर अच्छी तरह से वो धारणा रखनी चाहिए की मैं ऐसा कोई काम ना करूं, किसी को दुःख ना दूँ । तो यह अपना सारा चार्ट रखना है, इसको हम कहते हैं दिनचर्या । यह सब चार्ट रखना चाहिए अच्छी तरह से । तो फिर क्या है की ऐसा ऐसा करके धारणा बनेगी, नहीं तो अगर धारणा का पूरा ख्याल नहीं होगा तो फिर हमारे वही कर्म चलते रहेंगे, तो हम फिर आगे तो नहीं बढ़ पा सकेंगे न, तो यह सभी चीजों का पूरा अटेंशन अपने में रखना चाहिए और उस अटेंशन से अपने को चलाना चाहिए, तो यह सभी बातें हैं जिससे हमारा खाता रोज का बनता है । देखो हमारा रोज का खाता क्या बना । रोज का खाता हमारा अच्छा क्या हुआ, बुरा क्या हुआ तो जैसे वह खातेदार होते हैं ना दुकानदार, हमारा जमा क्या हुआ, खर्च क्या हुआ, देखते हैं रोज, तो आप भी अपना रोज का पोतामेल देखो कि हमारा कितना खाता मिटा, कितना खाता बना, जो बना वह अच्छा बना फायदे में बना या नुकसान में बना या घाटे में बना । देखना चाहिए ना तो अपना चार्ट हमें यह रोज का हर एक को रखना चाहिए, कोई विकारवश क्रोधवश, लोभवश, मोहवश ऐसा तो कोई काम नहीं हुआ तो अपने को संभालना चाहिए । ऐसी संभाल करने से ही हम कुछ आगे बढ़ेंगे और बढ़ कर के कुछ पाएंगे । और फिर भी देखो सब आते हैं तो भी हमें फिर कहा

जाता है ऑलवेज सी फादर, हमको जहाँ से शिक्षा मिल रही है, फिर कोई की ऊंची नीची बात में हमको नहीं फंसना है । पुरुषार्थी हैं ना सब, स्टूडेंटस में कोई नीचा भी है, कोई ऊंचा भी है तो इसमें हम कहें कि उसने ऐसा क्यों किया, ये इतने गर्व से आता है तो उसको देख कर के हम जो पढ़ाई ले रहे हैं बाप से उसको हम छोड़ देवें या उससे अपना हाँथ हटा देंवें तो वह नुकसान हमको पड़ेगा ना । ऐसे थोड़ी है कि हुआ आपस में कुछ और रूठ जाएं हम पढ़ाने वाले से, उससे क्यों रूठे, अभी स्टूडेंट्स होते हैं आपस में कोई बात में टक्कर हो जाए, अगर स्कूल या टीचर को छोड़ देगा तो क्या होगा । वहां स्कूल छोड़ेगा दूसरा स्कूल ले लेगा, यहाँ तो पढ़ाने वाला परमात्मा का एक ही स्कूल है, छोड़ेगा तो कहाँ जाएगा, इसीलिए यह सभी जो ख्याल आता है ना, यह नहीं होना चाहिए । ऐसे नहीं है कि चलो आपस में किसी भी बात में किसी ने कुछ कहा या कोई ऐसी बात की टक्कर हो गई तो उसमें टक्कर करके हम उसी का हाँथ छोड़ दें और अपनी जो पढ़ाई है यह जो शिक्षा है जिससे हमारी इतनी उन्नति है उसको अगर हम छोड़ेंगे तो नुकसान किसको होगा? छोड़ने वाले को होगा ना इसीलिए यह भी समझ है कि किया आपस में और हाँथ छोड़ा उसका, तो उसमें उसने क्या गुनाह किया या उसको क्या फर्क पड़ेगा । पढ़ाई छोड़ा तो नुकसान तो उसने अपना किया ना, तो अपना नुकसान करना यह भी तो समझ की बात नहीं है ना, तो यह सभी बातें हैं जो समझनी चाहिए कि चलो आपस में कोई बात की अनबन या समझो

कोई ऐसी बात हो जाती है, यह भी हम समझते हैं कि चलो कोई कर्म का हिसाब है इसके साथ तो कभी-कभी कोई बात में समझो, कोई टक्कर भी पड़ जाए, परंतु उसके कारण हम पढ़ाई छोड़ दें, या रूठ जाएं या कोई रूठ करके पढ़ाई और उसका संग छोड़ दें, जिस संग से हम इतनी उन्नति चाहते हैं, उसमें नुकसान तो अपना होगा ना, तो ऐसे ऐसे नुकसानों से अपने को बचाना चाहिए, तभी हम अपना सौभाग्य पा सकेंगे, हमको जो चीज लेनी है, हमारा अटेंशन उसमें होना चाहिए । हमारा काम क्या है हम वह गुण ग्रहण करें, हम वह चीज लेवें बाकी जो है जो किसका हमको अच्छा नहीं लगता है, छोड़ दो, दूसरे का किचड़ा हम अपने पॉकेट में अपनी बुद्धि में क्यों डालते हैं । अपना पॉकेट क्लियर रखो, साफ रखो । कोई का किचड़ा है तुम क्यों उठाते हो । चलो वह भी बिचारे किचड़े को निकालने के लिए मेहनत करते हैं, जो करेगा सो पाएगा हम दूसरे का किचड़ा खाली पीली क्यों डालें उसका ध्यान नहीं करो, तो यह समझ होनी चाहिए ना, ताकि जो घड़ी-घड़ी बात की इसने ऐसा कहा, इसने ऐसा हुआ, हमको फील हुआ यह हुआ तो फिर ऐसे फील करने, देह अभिमानी होकर रहेंगे तो फिर आगे भी तो नहीं बढ़ सकेंगे ना, तो यह सभी देह का अभिमान है तो उसको कहा जाएगा देह का अभिमान कि मैं फलाना हूँ, यह तो भूल गए कि मैं आत्मा हूँ । परमपिता परमात्मा की संतान हूँ यह तो भूल गया ना । मैं फलाना हूँ, कोई ने मुझे ऐसा कहा, इसने ऐसा कहा यह तो देह का अभिमान

हुआ ना । इससे कोई भी विकर्म विनाश नहीं हुए और पाप बनते चलेंगे । तो यह है सभी पाप बनाने की बातें और पापों से छूटने की बात तो यह है कि हमको देही अभिमानी यानी आत्मा निश्चय और हम परमपिता परमात्मा की संतान । हम काहे के लिए किसी का यह सब किचड़ा अपने पास डालें तो उसी में हम साफ होते जाएंगे और साफ होते साफ होते निकल पड़ेंगे बाहर किचड़े से एकदम । नहीं तो उसमें किचड़ा और जमा होता जाएगा और दु:खी होते जाएंगे । तो यह भी सभी चीजें हैं ना इसको अच्छी तरह से समझना है तो यह है शिक्षाएं, जिसको फिर अपने पास अच्छी तरह से रखना है और इसी से तो अपने को बनाना है ना । बाकी तो ज्ञान समझा, चलो ज्ञान भी किसी को कोई समझा जाएगा, लेकिन प्रैक्टिकल धारणा चाहिए ना, देह अभिमान छूटना चाहिए, अशुद्ध अहंकार है ना यह पहला पहला, वह तो निकालना चाहिए और उसके साथ सभी विकारों के ऊपर अटेंशन रखना चाहिए । तो यह सभी चीजें हैं जिस को अच्छी तरह से धारणा में लाना चाहिए । यह क्रोध भी एक बहुत बड़ी है, दिनचर्या का भी पालन कर जाएंगे लेकिन क्रोध की है ना उसमें भी पूरा अटेंशन चाहिए क्योंकि यह उससे नुकसान बहुत करते हैं अपना भी और दुसरे का भी । देखो क्रोध आएगा कोई को तो पहले अपना जी जलेगा, अपने अंदर होगा, फिर दूसरे को ठोकेंगा, फिर उसका भी जी जलाएगा । तो अपना भी जलाना दूसरे का भी जलाना फायदा ही क्या है । तो यह हानि है तो यह हानिकारक जो बातें हैं ना उससे छूटना चाहिए ।

यह पाप है तो यह सभी पाप कर्म से अपने को बचाना है, तभी तो हम पापों से मुक्त होंगे ना, नहीं तो पाप बनाते जाएंगे, सो भी ज्ञान में होते अगर पाप बनाते हैं तो उसका 100 गुना 10 गुना ज्यादा दंड पड़ता है । समझदार अगर कोई बुरा काम करेगा ना, तो समझू के ऊपर उसका दंड ज्यादा है । जो है ही बेसमझ तो कहेंगे, ये है ही बेअकल बिचारे, इसको पता नहीं है तो इसके लिए इतनी कोई बात नहीं है, लेकिन समझदार के लिए तो सजा है ना बहुत, तो समझदार को तो और ही खबरदार रहना चाहिए । तो अभी आप समझदार बनते हो ना समझदार के बच्चे समझदार हो, तो अभी जब समझ मिली है तो खबरदार रहना है, परंतु इसका मतलब यह नहीं है, कि इससे तो समझ ना लें तो ही अच्छा है, नहीं! बेसमझ है तो इसमें तो पापों में पड़े ही रहेंगे ना । वह तो धर्मराज के डंडे खाने ही रहेंगे खाते ही रहेंगे, तो खाने से क्या फायदा है? फायदा थोड़ी है । न पद मिलेगा गोत्रे भी खाते रहेंगे, और इसमें हम गोत्रे से भी छूट सकते हैं, पद भी अच्छा, स्टेटस भी अच्छा । इससे तो फायदे की बात लेनी चाहिए ना । तो यह सभी चीजें हैं जो अपने पास अच्छी तरह से रखो और धारण करो और जो-जो बुरी-बुरी आदत हो ना, वह निकालो । किसमें विशेष क्रोध होता है, किसमें विशेष काम विकार होता है, किस में विशेष लोभ होता है किसमें कोई बातें होती हैं, पांचों विकारों में से, तो अपने में जो विशेष हो ना तो वह निकाल देना चाहिए जल्दी से । विशेष चीज तो निकाल देनी चाहिए, यह तो सीधे-सीधे विकार हैं ना,

वह निकाल देना चाहिए टोटल कट ऑफ । और उसमें फिर यह सभी शिक्षा मिलती है कि ये सब बातों को जितना जितना रखेंगे उतना-उतना तुम्हारी बुद्धि स्वच्छ रहेगी और योग अच्छा बैठेगा, ज्ञान अच्छा बुद्धि में बैठेगा । अगर यह सभी विकार होंगे तो ज्ञान योग नहीं बैठेगा । योग लग नहीं सकेगा तो और ही पाप नाश नहीं हो सकते तो यह सभी चीजें हैं, जिसको अच्छी तरह से बुद्धि में रखते अपना पुरुषार्थ रखने का है । तो यह भी धारणा की पॉइंट लेनी पड़ती है कि जब आते हो तो अपने को कैसा स्वच्छ और कितना अपने को बनाना है गुणवान, तो यह भी तो सभी धारणा रखने की है ना । और यही हमारी प्योरिटी है । प्योरिटी का मतलब ही क्या है, इन्हीं को तो निकालना है न, इसी से तो प्योर बनते हैं ना, इमप्योरिटी तो यही है ना । बाकी इंप्योरिटी थोड़ी है कि किसी के कपड़े धोये नहीं, साफ नहीं या नहाया नहीं या यह किया । नहीं! यही तो इम्पुरिटी, आत्मा को इम्प्योर बनाने की यही तो चीजें हैं, उससे हमको साफ रखना है अपने को । इसीलिए कहते हैं रोज ये ज्ञान स्नान करो । इस स्नान से बुद्धि सारा दिन रिफ्रेश रहेगी, अटेंशन रहेगा कि आज सुबह को क्या सुना । आज हमको क्रोध नहीं करना है, आज कोई मोह में या लोभ में या कोई भी विकारवश हमको नहीं जाना है तो अटेंशन रहेगा इसीलिए फिर जोर दिया जाता है, भाई रोज आओ जैसे वो स्नान आदी रोज होता है । इसीलिए सुनेंगे तो रिफ्रेश रहेंगे । अगर कोई नहीं आएगा ना, अरे! तीन-चार दिन भी कोई देख ले न आएगा तो बुद्धि एकदम

हो जाएगी, पलट जाएगी, तो इसीलिए कहा जाता है ना जैसा संग वैसा रंग । कोई देख लेवे चार-पांच रोज ना आए ना, तो वह जो आनंद है ना, वह जो रिफ्रेश रहता है, उमंग अपने जीवन में तो ठंडा पड़ जाएगा इसीलिए इस संग की भी जरूरत है, तो रखना चाहिए । बाकी कोई के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ देना या संग छोड़ देना, यह तो अपना नुकसान है ना । जो करेगा सो पाएगा हमको तो अपना फायदा लेते चलना । बाकी कोई सोचे कि मैं घर बैठे फायदा ले लूंगा, इंपॉसिबल है ऐसा । क्योंकि हमारे पास अनुभव है ना, जब तलक संग नहीं है ना वो, ऐसे बहुत कहते हैं पर घर रहकर के, परन्तु ऐसे कोई करके तो दिखाए । भाई घर में ऐसे ही रहे, बड़ा मुश्किल है संग जरूर चाहिए । और गाया भी है ना, जैसा संग वैसा रंग, इसीलिए कहा हुआ है तो संग का भी तो प्रभाव पड़ता है ना । तो यहाँ है ही पांचों विकारों को छुड़ाने का कोर्स, क्योंकि माया से छुड़ाने आता है ना । बाप आ करके कंप्लीट पवित्र बनाता है तो इसीलिए यहाँ इन सब बातों पर जोर दिया जाता है और उन्हीं के छूटने से ही तो हम अच्छे बनेंगे ना । बाकी धीरे-धीरे आस्ते आस्ते आस्ते आस्ते करते-करते तो देखो काले पड़ते गए, सांवरे एकदम, अभी तो गोरे होना हैं ना एकदम, सांवले से बिल्कुल गोरा । बाकी देखो हमें सुंदर से श्याम बनने में तो आधा कल्प लगा, हम श्याम बनते आए । श्याम माना काला, आस्ते आस्ते काला होते होते अभी तो बिल्कुल ब्लैक हो गए हैं । भले शरीर से गोरे हो लेकिन हो तो गए ना काले यानी आत्माएं

इम्प्योर । भले आज शरीर से हम गोर हैं परंतु देखो शरीर में रोग आदि यह सब कर्म की भोगना, माना खाते में तो गिरे । वह तो सबसे ठन्डे मुल्कों में रहते हैं तो इससे तो स्किन साफ है तो क्या हुआ, गोरापन थोड़ी है वह । गोरा माना एवर हेल्दी, एवर वेल्थी, एवर हैप्पी, वह कहाँ है, वह तो नहीं है ना । तो यह सभी चीजों को समझते अपने पुरुषार्थ को ऐसा करो, समझा । अभी ऐसे ऐसे बनेंगे, अच्छे-अच्छे खुशबूदार तो बाप भी कहेंगे ऐसे फूलों की खुशबू लेना अच्छा है तो खुशबूदार बच्चे बनना है ना । खुशबू माना यह गुणों की खुशबू, इससे खुशबू आएगी तो बाप भी अपने गले की माला उसको बनाएंगे । वह कहते हैं ना जैसे वैजयंती माला, रुद्राक्ष माला तो हम तो रुद्र की माना आत्माओं की वैजयंती जो विजय प्राप्त करके जीवनमुक्ति की माला भी है ना वह, देखो हम जीवन मुक्ति की भी स्टेज को प्राप्त करते हैं और वह है आत्माओं की आत्माओं में भी हम नंबर आगे, तो बाप कहते हैं अपने को आगे करो रुद्राक्ष माला में भी आगे करो तो वैजयंती माला में भी आगे करो और अपने को ऐसा लायक बनाओ, तो बनाना चाहिए ना । तो खुशबूदार बच्चों को बाप भी अपने गले लगाएगा अर्थात अपने समीप करेगा । कैसे हमारे वादुसेन जी, वाद में चलना है अभी घाटे में नहीं चलना है, घाटे का दिन पूरा हुआ अभी, अभी हमारे को अपना वृद्धि करना है ठीक है न । उसी लिए अपनी वृद्धि में लगे रहो । कैसे हमारे, इनका नाम क्या है हमारे, अर्जुन ? नही, तुम्हारे पीछे, बाबूराम । अच्छा बाबूराम ।

देखो नाम भी बाबूराम, सच्चा सच्चा बाबूराम बनना है । राम निराकार परमात्मा को कहा जाता है ना, अभी बाप तो वह है लेकिन मास्टर को भी कहते हैं ना फलाना भाई इसका बच्चा है तो मास्टर फलाना तो वो भी अभी उसका भी सच्चा सच्चा बच्चा बनना है । बहुत अच्छा है, अच्छा अभी टाइम भी हुआ है आप लोगों को थोड़ा टाइम पर छोड़ते हैं, बच्चों के इम्तिहान वगैरह हैं शायद और थोड़ा अपने घर गृहस्थ को भी संभालना है । घर का भी संभालना है, ऐसे तो नहीं ना, दोनों काम करना है परंतु श्रेष्ठ कर्म से चलना है । वो कॉमन ग्रहस्ती तो चलाई वो तो जनावर पशु पक्षी भी चलाते हैं, लेकिन अपने कर्म को श्रेष्ठ रख कर के चलाना, तो कर्म श्रेष्ठ को भी सीखना है न, समझना है कि सबसे श्रेष्ठ कौन सी चीज है । उसी को लेकर के चलने से हमारी प्रवृत्ति का आदर्श ऊंचा रहेगा तो वह भी बनाना है ना । अच्छा ऐसा बाप और दादा जो बैठकर के हमको आदर्श सिखलाते हैं की किस तरह से मनुष्य को क्या करने का है तो ऐसा अपना आदर्श बनाना है तो बाप और दादा और माँ के मीठे मीठे बहुत अच्छे सपूत ऐसे समझदार और सयाने और कोई भी पाप कर्म ना करने का अपना पूरा दृढ़ता रखना चाहिए ऐसे जो बच्चे हैं, ऐसे बच्चों के प्रित याद प्यार और गुड मॉर्निंग और गुड डे, गुड इवनिंग ये भी टाइम गुड रखने का ख्याल रखना है । ये जो बेड माया बैठती हैं न उससे संभलना है । अभी बेड है तो गुड नाम भी है, पीछे गुड बेड दोनों ही नाम नहीं होगा सतयुग में । हम अपने को गुड रखें तो हम

कोई बेड थोड़ी हैं जो अपने को गुड रखें । वहाँ तो हैं ही गुड, उसमें यह ख्याल नहीं रखना पड़ेगा, अभी खयाल रखना पड़ता है क्योंकि अभी माया का राज है ना । अभी पिछाड़ी है उसकी और उसका फोर्स भी है इसीलिए संभालना है और सारा दिन अपना जो अच्छे हैं न वो रखो अपने पास डायरी, चार्ट, याद का भी जो टेम्प्रेचर है ना, उसको भी देखना है सारा दिन में कितना अपने परमपिता परमात्मा को याद किया और सारे दिन कौन सा कर्म हमने रॉन्ग किया, कौन सा राईट किया, वह नोट रखना चाहिए तो ध्यान रहेगा कि फिर हम ऐसा न करें, तो ये सब चीजें अच्छी तरह से निकाल दिया ना अच्छा चलो ।

15. परमात्मा और धर्मात्मा में अंतर और उनका कर्तव्य

रिकॉर्ड :-

मेरा छोटा सा देखो ये संसार है.....

बेहद के बाप ने अभी बुद्धि में यह नॉलेज दिया है, जो है ही नॉलेज फुल, उसने ही बैठ करके समझाया है कि तुम आत्माएं, वह आत्माओं से बात करता है कि तुम आत्माएं असल में क्या थी, इसका मतलब हो गया की अभी कुछ और हो गई हो । तो आत्माओं की भी स्टेजिस बदलती है, ऐसे नहीं कहेंगे की आत्मा सदा से एक ही स्टेज में है, आत्मा भले अनादि है परंतु उसकी स्टेज बदलती है। स्टेज का मतलब ही है, जैसे जैसे समय बीतता जाता है तो उनकी स्थिति बदलती जाती है। तो आत्मा की स्थिति जरूर बदलती है लेकिन वैसे आत्मा अविनाशी, अनादि हैं, बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि उसकी स्थिति भी अविनाशी अनादि है, नहीं! बदलती है, क्योंकि अभी बदली कौन है? आत्मा बदली है। ऐसे नहीं कहेंगे कि शरीर बदला है, नहीं! शरीर का आधार भी तो आत्मा से है ना इसीलिए आत्मा जैसा कर्म करती है, वैसा पाती है तो करने वाली रिस्पांसिबल वह है। तो अभी बाप उनसे बात करते हैं, यह तो अभी बुद्धि में सब की है कि हां! अपने आत्मा का पिता परम पिता है। उनको कहते भी है परमपिता, परम आत्मा ।

तो पिता जो कहते हैं तो जरूर हम उनके पुत्र ठहरे । ऐसे नहीं है वह पिता हम भी पिता, नहीं! आत्मा अगर परमात्मा कही जाए तो फिर आत्मा ही परम पिता भी कहें, परंतु नहीं! पिता कहा जाता है तो पिता माना पिता और पुत्र के रिलेशन में पिता कहने में आता है । हम अगर सब पिताएं हैं तो फिर पिता भी कहें क्यों, जरूर पिता और पुत्र दो चीज, पिता कहने का संबंध भी पुत्र से बनता है और पुत्र के संबंध में ही पिता का संबंध आता है । उनको कहा ही जाता है परमपिता परमात्मा तो अभी वह बाप बैठकर के समझाते हैं, कि अभी तुम्हारी जो स्थिति है और जो पहले स्थिति थी, उसमें फर्क है, अभी मैं आया हुआ हूँ उसी फर्क को फिर मिटाने के लिए । ऐसे नहीं है कि आत्मा को बनाने के लिए तुम्हारे में जो फर्क आया है तुम्हारी स्थिति जो बदली है उसको फिर बदलने के लिए, तो वो बैठकर के बाप अभी नॉलेज देते हैं कि वह कैसे बदलेगा, समझ से, वो समझ देकर के समझाते हैं कि तुम्हारी असूल जो ओरिजिनल स्टेज थी, अभी उसी को पकड़ । कैसे पकड़, वो पकड़ाने का ज्ञान भी दे रहे हैं, बल भी दे रहे हैं कि मुझे याद कर तो तुम्हारे को श्रेष्ठ कर्म करने का बल आएगा, नहीं तो तुम्हारे से कर्म श्रेष्ठ नहीं रहेंगे । कई है ना, जो कहते हैं कि हम चाहते हैं कि यह अच्छा काम करें, लेकिन पता नहीं फिर क्या है, कि हमारा मन फिर उस तरफ लग जाता है, अच्छे तरफ लगता नहीं है क्योंकि हमारे में अच्छे कर्म करने का बल नहीं है, हमारी स्थिति अभी तमोप्रधान होने के कारण वह तमो का अभी

प्रभाव जोर से है इसीलिए वो हमको दबाता है तो इसीलिए उस तरफ जल्दी बुद्धि चली जाती है और अच्छे तरफ बुद्धि जाने में रुकावट आती है । तो इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे अभी वो रुकावट तेरी दूर होवे, वह कैसे होवे, उसी के लिए कहते हैं अभी मेरे से योग अथवा मेरी याद रख और मेरी इस नॉलेज की समझ से, जो मैं समझ देता हूँ, उसी आधार से यह अपना जो पाप का भी बोझा है और जो बंधन है, जो तुमको रूकावटे आती हैं उससे अपना रास्ता साफ़ करते चलो तो फिर तुम्हारे श्रेष्ठ कर्म करते चलने से तुम्हारी वह सतो प्रधानता की पावर रहेगी और उसके आधार से फिर तुम उस स्थिति को प्राप्त करेंगे जो तुम्हारी असुल है तो अभी यह नॉलेज उन्हों की बुद्धि में है जो रोज आते हैं की अभी हम उस बेहद के बाप से क्या प्राप्ति करते हैं और उस प्राप्ति के आधार से ही फिर जैसी आत्मा वैसा शरीर फिर जैसा शरीर और आत्मा यानी मनुष्य वैसा फिर संसार भी होता ही है । तो यह सभी चीज बुद्धि में रखने की है कि अभी ऐसा संसार, एक दो आदमी की बात नहीं है, ऐसा संसार अभी वह परमपिता परमात्मा बनाते हैं । वह है ही, गाया भी जाता है ना, उसको कहा भी जाता है क्रिएटर और कहा भी जाता है वर्ल्ड क्रिएटर यानि दुनिया का रचता परंतु ऐसा नहीं है कि दुनिया कभी है ही नहीं, जो बैठकर के बनाते हैं, लेकिन ऐसी और इस तरीके से दुनिया बनाता है तो वो दुनिया का मालिक है ना, उनका है ही एक्ट दुनिया बनाने का पार्ट । दूसरे कोई का भी ये पार्ट नहीं है जैसे

क्राइस्ट आया तो ऐसे नहीं कहेंगे उसने कोई दुनिया बनाई, वह धर्म बनाने वाला, उसने अपना नया धर्म स्थापन किया । बुद्ध आया तो भी उसने अपना नया धर्म स्थापन किया इसी दुनिया में लेकिन दुनिया को बदलना और दुनिया बनाना यह हो गया काम उसका जिसको वर्ल्ड क्रिएटर, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी उसको कहा जाता है तो यह भी समझना है कि उनका कर्तव्य और उनका जो करना है, वह सभी आत्माओं से भिन्न है लेकिन काम वैसे ही है, जैसे आत्माएं भी अपना अपना कर्तव्य आ करके करती हैं, वैसे ही परमात्मा भी अपना कर्तव्य एक बार इस मनुष्य सृष्टि में आकर के एक्ट करते हैं तो उसका भी एक्ट है एक बार का, बाकी तो हर एक आत्मा का अपना एक्ट चलता है, ऐसे नहीं कहेंगे कि यह सभी परमात्मा का एक्ट चलता है, यह हर एक आत्मा का अपना अपना कर्म का खाता चलता, जो करती हैं सो पाती हैं, उसमें फिर कई अच्छी आत्माएं भी हैं जैसे भाई क्राइस्ट, बुद्ध और इस्लामी धर्म स्थापन करने वाले या और जो - जो भी अच्छे आए उन्होंने फिर अपना अपना धर्म स्थापन किया, भाई गांधी आया, फलाना आया तो वह भी अपने अपने काम कर्तव्य करने का अपना पार्ट प्ले करते हैं इसी तरह से सब, हर एक । जैसे आपका । आपका भी बहुत जन्मों का यानि जितने भी जन्म हुए, तो वह जन्मों का आत्मा का अपना पार्ट है एक शरीर छोड़ा दूसरा लिया, दूसरा छोड़ा, तीसरा लिया, जितने भी जन्मों का हिसाब होगा, हर एक का अपने-अपने जन्मों का जो हिसाब होगा वो आत्मा पार्ट बजाती है ये आत्मा

में सारा रिकॉर्ड भरा हुआ है अनेक जन्मों का जो वह प्ले करती है, तो यह है प्ले करने का स्थान इसीलिए इसको नाटक भी कहते है ड्रामा भी कहते हैं, इसमें एक बार परमात्मा का भी एक्ट है इसीलिए उसके एक्ट की महिमा सबसे ऊंची है । इसी नाटक में, उसका जो एक्ट है यहां, वह सबसे ऊंचा होता है । ऊंचा किसमें है कि वह आकर के हमारी दुनिया को बदलते हैं लेकिन किस युक्ति से बदलते है, आत्माओं को कैसे फिर बदलाते हैं जिसके आधार से ही शरीर और फिर शरीर और आत्मा के आधार से फिर सारी सृष्टि का परिवर्तन होता है , सब चीजें समझाते हैं । यह है उसका काम इसीलिए इसको कहा ही जाता है कर्मक्षेत्र ये है ही कर्म का क्षेत्र जिसमें हर एक मनुष्य आत्मा अपना अपना पार्ट प्ले करती है, परंतु मेरा पार्ट सबसे भिन्न है । मैं कोई आ कर के मनुष्यों के मुआफिक अपने कर्म के हिसाब से पार्ट नहीं बजाता हूँ, लेकिन मेरा फिर हिसाब ऐसा है, है तो मेरा भी पर मेरा इस आधार पर है कि मैं आत्माओं के सदृश्य जनम मरण में आऊँ या मैं आत्माओं के सदृश्य कर्म का खाता उल्टा बनाऊं, नहीं! मेरा पार्ट ही ऐसा है जिसमें सिर्फ आ करके मैं आत्माओं को लिब्रेट करता हूँ इसलिए नुझे लिब्रेटर भी कहते हैं, बंधन से छुड़ाने वाला, तो कैसे छोड़ता हूँ किस तरह से इसको फिर गति सद्‌गति , मोक्ष आदि ये नाम दे दिए हैं । तो कहते हैं मैं आ करके छुड़ाता हूँ, तो देखो यह छुडाते हैं न माया की बोंडेज से, माया का बंधन जो चढ़ा है, उससे बैठकर के प्यूरीफाइड बनाते हैं और कहते हैं मेरा काम यह

है कि आत्माओं को माया की बोंडेज से छुड़ाकर फिर ले जाना । तो यह भी सारी सृष्टि के जो आनादि नियम और कायदे हैं वह भी तो समझना है ना ये किस तरह से हैं और हमको सृष्टि से भी दिखाई पड़ता है । सृष्टि की संख्या भी हमको दिखाती हैं कि यह मनुष्य सृष्टि की वृद्धि ऐसी भी नहीं है कि बढ़ती है तो फिर बढ़ती चलती है फिर वह भी टाइम जरूर है कि जब यह कम होती है । तो यह सभी चीजें ऐसे नहीं कि बढ़ती है तो बढ़ती ही है, नहीं! फिर इसका स्टेज आता है जो फिर कम होती है । तो इस सृष्टि में हर चीज का नियम है जैसे देखो यह मकान है, पहले भाई बना होगा तो उसको कहेंगे ना नया, तो नया है तो ऐसे भी नहीं की फिर झट से बस एकदम जल्दी से पुराना हो जाएग, नहीं! पुराने होने में समय लगता है । पहले नया है फिर पीछे बहुत धीमे - धीमे नयापन थोड़ा छूटता जाएगा, फिर जब पुराने की भी कंडीशन शुरू होगी फिर ऐसे नहीं झट से , नहीं! धीरे-धीरे पुराना होते- होते बिल्कुल जड़जड़ीभूत अवस्था अपने टाइम पर हो जाएगी । तो हर चीज को, अपने जीवन से भी देखो, जीवन का भी नियम है शरीर का, भई पहले बाल, ऐसे नहीं कि बाल से झठ वृद्ध हो जाएगा, नहीं! पहले बाल, फिर किशोर अवस्था वो होता है न बल से थोड़ा बड़ा, तो किशोर, फिर युवा अवस्था, फिर युवा की भी स्टेज बढ़ेगी, फिर वृद्ध , फिर वृद्ध भी जल्दी नहीं फिर वृद्ध भी होते होते फिर बिचारे जड़जड़ीभूत । तो यह सभी चीजों का भी हर बात का बढ़ना और उसकी एंड होना, यह भी सभी नियम हैं ना । इसी तरह

से यह सृष्टि की भी जो जनरेशंस हैं न, उनका भी ऐसा नियम है । हर चीज बढ़ती है, फिर कैसे घटती है इसी तरह से यह भी हमारी, यह तो हुआ एक शरीर का लेकिन यह फिर हमारे अनेक जन्मों का भी ऐसा है । पहले हमारे जन्म अच्छे रहेंगे जो भी आत्मा आती है, देखो क्राइस्ट आया तो पहले उनका पावर जो था वो ऊंचा था फिर पीछे वह भी आत्मा जन्म लेती गई, ऐसे नहीं वह आत्मा चली गई नहीं! वो आत्मा फिर जन्म लेती लेती फिर उसका दूसरा जन्म फिर तीसरा जन्म फिर चौथा फिर जहां तक भी क्रिशच्येनिटी है वह जन्म में है, वह जन्म लेते लेते लेते लेते फिर उसकी भी स्टेज है न कम होती जाती है, इसी तरह से यह जन्मों की भी फिर स्टेज है, एक जीवन की भी स्टेज है तो फिर जन्मों की भी स्टेज है, वह फिर जेनरेशंस भी जो चली, इसी तरह से सभी धर्मों का भी फिर स्टेज है, पहला जो धर्म है सबसे ताकत वाला, फिर पीछे आस्ते आस्ते जो आते हैं कम - कम - कम -   कम ताकत, क्योंकि इसी तरीके से ये धर्मों की भी फिर वृद्धि होती है । तो हर चीज में अपना अपना नियम है- धर्मों का बढ़ना, धर्मों का चलना, जेनरेशंस में हरेक का चलना, हर एक बात का कैसे नियमों से चलते हैं इन्हीं सभी बातों को भी समझना है तो इसी हिसाब से फिर यह सभी बातों का भी एक बार बाप कहता है मेरा भी उसमें पार्ट है जो मैं आ कर के फिर सबको, क्योंकि वो फिर पावरफुल सोल चाहिए ना बस मैं भी वो सोल हूँ, मैं भी कोई गॉड कोई दूसरी चीज नहीं हूँ, मैं भी तो सोल ही हूँ परंतु मेरा

काम जो है ना बहुत बड़ा और ऊंचा है इसीलिए मुझे गॉड कहते हैं या मुझे लिब्रेटर कहते हैं, देखो लिब्रेटर कोई मनुष्य नहीं हो सकता है, मनुष्य आते हैं, भले दूसरा भी, जैसे क्राइस्ट आया तो अपनी जनसंख्या को भी ले आया, जिससे फिर क्रिश्चियनिटी बढ़ी यह संख्या बढ़ी ना, तो उनका काम है ले आना, बाकी वापस ले जाना ये फिर उनका काम नहीं है इसीलिए यह है उस सुप्रीम सोल का काम, तो उसका भी सोल का काम है ना, इसीलिए कहते हैं मेरा जो काम है तो मैं भी गॉड, कोई दूसरी चीज नहीं हूँ लेकिन मेरा कर्तव्य दूसरा है, मेरा काम दूसरा है इसीलिए मेरे कर्तव्य के ऊपर मैं गॉड हूँ । गॉड वैसे कोई दूसरी चीज नहीं है । जैसे ही तुम आत्मा हो वैसे मैं भी हूँ। जैसे आपका बच्चा है, वह भी तो मनुष्य ही है, आप भी तो मनुष्य हो, उसमें तो कोई फर्क नहीं है ना । मनुष्य का भी बच्चा भी मनुष्य ही होगा ना । तो वह परम आत्मा यानी आत्मा ही हूँ, तो जैसी मैं हूँ वो भी वैसा ही है उसमें कोई फर्क नहीं है लेकिन हां, कर्तव्य में बहुत बड़ा भारी फर्क है इसीलिए कहते हैं मेरा जो कर्तव्य है वह सब से भिन्न है, इसीलिए धर्मस्थापक जो धर्म स्थापन करने वाले पिताएं हैं जैसे क्राइस्ट बुद्ध इन धर्म पिताओं से भी, परमपिता, मुझे कहते ही हैं परमपिता परमात्मा, वह हो गए धर्म पिताएं यानी धर्म के स्थापक । मैं धर्म का स्थापक नहीं हूँ । मैं कोई हद का एक धर्म आकर के स्थापन करूं वह नहीं हूँ । मैं आकर के धर्म स्थापना की दुनिया स्थापन करता हूँ तो मेरा काम सबसे बड़ा हो गया ना, मैं दुनिया का

क्रिएटर हो गया ना । यानी वह हो गए धर्म के क्रिएटर, जैसे क्राइस्ट को कहेंगे धर्म का क्रिएटर, क्रिश्चियनिटी का क्रिएटर तो क्रिश्चियनिटी धर्म का क्रिएटर क्राइस्ट और बुध धर्म का क्रिएटर बुद्ध इसी तरह से हुआ न । गुरु नानक देव सिख धर्म का क्रिएटर, ऐसे कह सकते हैं लेकिन एक हद का धर्म हुआ लेकिन वह हो गया दुनिया । दुनिया का क्रिएटर क्योंकि सारी दुनिया को चेंज में अथवा किस तरीके से वह लाते हैं तो उसका भी काम हो गया ना जैसे वह आत्माएं अपना काम अपने समय पर करती हैं, वैसे ही परमात्मा बाकी कहते है मैं भी आत्मा ही हूँ, मैं गॉड कोई और चीज हूँ या परमात्मा कोई दूसरी चीज है लेकिन नहीं! मैं भी आत्मा ही हूँ लेकिन मेरा कर्तव्य विशाल है, मेरा कर्तव्य महान है, मेरा कर्तव्य जो है सबसे भिन्न है निराला है इसीलिए फिर कहते हैं ना, तेरे काम निराले, तो निराले कैसे की जो भी धर्म स्थापक हैं, जो भी काम करने वाले हैं उन सब से काम से मेरे फर्क है इसीलिए मुझे गॉड कहते हैं कि भाई तेरा तो काम अथॉरिटी का है कि हाँ तुम कैसे दुनिया को बदलते हो तो उसका भी काम है । तो यह सभी चीजों को भी समझना है इसीलिए उसको गॉड कहते हैं और उसका शक्तिशाली काम है इसीलिए उनको सर्वशक्तिमान कहते हैं । शक्तिशाली क्यों उनका काम है - तो यह काम की सभी आत्माओं को लिब्रेट करना, माया की बॉन्डेज से छुड़ाना और फिर नई दुनिया का बैठ कर के सेपलिंग लगाना और यह परिवर्तन लाना, यह सब करना इसीलिए उस को अंग्रेजी में भी कहते

हैं हवेनली गॉडफादर । देखो कहते हैं ना तो हेवेन स्थापक । वो जैसे क्राइस्ट को कहेंगे क्रिश्चियनिटी का फादर, गॉडफादर नहीं करेंगे उसको कहेंगे क्रिश्चियनिटी का फादर । उसको कहा जाता है हवेली गॉडफादर, क्यों कहते हैं क्योंकि हेवेन का स्थापक वह है तो हेवेन वर्ल्ड हो गई ना । हेवेन को एक धर्म तो नहीं है ना । हैवल हो गई वर्ल्ड, हेल है वर्ल्ड तो वह वर्ल्ड का स्थापक हो गया और वर्ल्ड में एक धर्म एक राज्य था । तो वर्ल्ड यानी सारी वर्ल्ड तत्व आदि सब चेंज में आ गए ना इसीलिए बाप कहते हैं वह है हवेली गॉडफादर अंग्रेजी में भी कहते हैं, बाकी ऐसे नहीं हेवेन में रहता है । कई ऐसे समझते हैं उसको हेवेनली गॉडफादर इसीलिए कहते हैं कि वह हैवेन में बैठा है । बैठा है तो क्या है? बैठा है तो बैठने दो, उसके बैठने से हमारी महत्वता या उनकी महत्वता क्या हुई, वह बैठा है तो वो बैठा है ना, हमारा क्या किया? हम क्यों उसको कहते हैवेनली गॉडफादर । अरे! तू बैठा है और हम यहाँ हैल में पड़े हैं, तू बैठा है तो क्या बड़ाई की? नहीं! उसने हमारे इस हेल को हेवेन बनाया है इसलिए हम उसकी महिमा करते हैं । तो उसकी महिमा भी हमारे पास क्यों है, यहां महिमा है ना तो इधर महिमा क्यों है, इधर उसकी उपमा क्यों होती है इसीलिए होती है क्योंकि यहां उसने कुछ काम किया है और महिमा हमेशा उसकी होती है जिन्होंने कुछ काम किया है । भाई गांधी ने हमारे देश के लिए हमारी जनता के लिए हमारे लिए कुछ काम किया । जो जो भी हिस्ट्री आती है, जिन्हों के भी हिस्ट्री में नाम है काम के ऊपर है,

अगर उन्होंने कोई काम नहीं किया होता तो वह हिस्ट्री में नाम नहीं आते कि भाई इसने ऐसा किया, इसने ऐसा किया, इसने देश को ऐसे किया, उसने यह राजाई ली, फलाना फलाना जो भी हिस्ट्री रही है । तो हिस्ट्री बनती ही है उनके कर्तव्य पर । तो भगवान की भी हम जिसको भगवान कहते हैं - परमात्मा, उसकी भी जो हिस्ट्री आती है, वह भी उसकी कर्तव्य के ऊपर है, परंतु उसका कर्तव्य जरूर कोई सबसे इतना ऊंचा है इसीलिए तो उसको गॉड, क्रिएटर, हेवेनली गॉडफादर, अंग्रेजी की भाषा वाली अंग्रेजी में भी उसकी महिमा करते हैं और सब उसकी महिमा करते हैं । खुद धर्म स्थापक भी जो है न, उन्होंने भी उसकी महिमा की करी । तो यह सभी चीजें भी समझने की है उसके कर्तव्य काम की महानता सबने गाई है । खुद जो धर्म स्थापन करने वाले क्रिश्चियनिटी के, बुद्धिज्म के सबने उसकी महिमा गाई है । फिर भले किसने कह दिया बस जैसे बुद्ध ने कहा की सत्य ही परमात्मा है जिसको जिस तरह से आया, परंतु कोई चीज आगे रखी ना, परंतु वो बिचारे यथार्थ बात को सभी तो जान नहीं सके ना कि यथार्थ बात क्या है, इसीलिए बाप कहते हैं कि यथार्थ हूँ क्या, मैं सत्य हूँ, गॉड इज ट्रुथ है तो ट्रुथ क्या चीज, ट्रुथ किसमें हूँ, तो वह भी समझने की बात है कि गॉड इज ट्रुथ क्या है । बाकी ऐसा नहीं है कई जैसे समझते हैं कि गॉड इज ट्रुथ माना जो सच बोलते हैं न वही गॉड है इसीलिए वह समझते हैं कि सच बोलना बस यही गॉड है, गॉड कोई और चीज नहीं है, परंतु सच बोलना ही गॉड है । परन्तु नहीं!

गॉड इज ड्रुथ का मतलब ही है की गॉड ने हीं आ करके इन बातों की सच्चाई जो है वह बताई है, इसीलिए कहते हैं गॉड इज ड्रुथ यानी गॉड ही ड्रुथ बतलाता है आकर के, उसने ही सच्चाई बताई इसीलिए देखो उसके अक्षरों में भी आता है नॉलेज फुल, तो फुल तो जरूर है कि कोई नॉलेज का फुल है ना उसके पास । देखो कहा जाता है ओशियन ऑफ नॉलेज, ओशियन ऑफ ब्लिस । देखो, उसकी महिमा में अंग्रेजी में भी तो ऐसे ही आता है, कभी भी कोई कॉमन बात भी होती है तो कहते हैं गॉड नोज, कि ईश्वर जानता है तो उसकी माना उसके कुछ जानने की बात है ना, जो ऐसी कोई बात होती है जो हम नहीं जानते हैं तो कहते हैं गॉड नोज तो उसकी माना कोई जानकारी, जानकारी जानने वाली चीज है । तो यह भी समझने की बात है वो कौन सी जानकारी है । ये नहीं है कि हाँ भाई उसने चोरी की तो गॉड नोज । भले वह जानता सब कुछ भी है, परंतु उसकी महिमा जो है ना वह हमारे उसी पर है कि हमारी दुनिया में हम ऊंचे कैसे थे और यह दुनिया में नीचे कैसे गिरे, कैसे अब चढ़े, इन सब बातों का, हमारे सारे सृष्टि चक्र का यह जो हम नीचे हो गए हैं, अब ऊंचे कैसे होंगे ये सभी बातों को वह जानता है इसीलिए कहते हैं यह सब बात गॉड नोज, मनुष्य नहीं, मनुष्य की थोड़ी बात आती है कि मनुष्य नोज, नहीं! गॉड नोज, गॉड के लिए कहते हैं तो जरूर है कि उनके पास जानकारी सबसे ज्यादा है । मनुष्य वह चीजें नहीं बता सकते हैं जो उनको बतानी है इसलिए तो उनको कहते हैं गॉड नोज ऐसे थोड़ी

कहते हैं मनुष्य के लिए, तो यह सभी चीजें इसी परमात्मा की महिमा जो आती है न उसी ढ़ंग से आती है उसी तरीके से आती है जो मनुष्य से भिन्न है, क्योंकि उनका सबसे जाननां भी भिन्न है, मनुष्य हद की चीजों की जानकारी रख सकता है, ऐसे हिंदी में भी कहते हैं कि मनुष्य अल्पज्ञ है और परमात्मा को कहा जाता है सर्वज्ञ, जिसको अंग्रेजी में नॉलेजफुल कहते हैं यानी फुल, सब जानता है और हिंदी में कहेंगे सर्वज्ञ यानी सर्व का ज्ञाता अथवा जानने वाला । तो वह सब जानता है और मनुष्य के लिए कहेंगे अल्पज्ञ यानी हद की तो यह सभी चीजें मनुष्य के लिए अल्पज्ञ हो गया उनको थोड़ी कहेंगे कि वह ट्रुथ को जानते हैं, नहीं! जो सर्वज्ञ है वही ट्रुथ को जान सकता है क्योंकि वह सब जानता है इसीलिए यथार्थ बातों की नॉलेज जिसके पास होगी तो देगा भी तो वही ना, खाली उसको अपने जानने के लिए है क्या, कि खुद बैठ कर के जाने । खुद जाने तो हमारा क्या हुआ उसमें । खुद जानता हो अपने लिए तो हमारा क्या है उसमें, जानने दो । नहीं! परंतु उसके जानकारी से हमें कोई फायदा मिला है । हमारे ऊपर उसके जानने का, उसका जो भी महिमा है, कुछ काम किया हुआ है, उसकी क्वालिफिकेशंस ने हमारे पर कुछ काम किया है, तभी तो हम उस की क्वालिफिकेशन गाते हैं ना । कोई मनुष्य के गुण है जैसे हमारे लिए अभी देखो भाई फलाना है, यह गुप्ता जी है, अच्छा आदमी है, हमारे लिए कुछ भी, किसके लिए भी, या अपने बच्चों लिए या जिसके भी लिए ये - ये अच्छे - अच्छे काम किये, तो किये

हैं किसके प्रति, तभी तो उसकी महिमा होती है ना, तो भगवान की भी जो इतनी महिमा गाते हैं उसने भी तो कुछ हमारे लिए, हमारे प्रति कुछ किया होगा तब ना । बाकी उसकी अपने लिए ही महिमा है, जानता है अपने लिए, गॉड है अपने लिए, फलाना है अपने लिए, तो अपने लिए है तो हमारा क्या जाए? हम क्यों उसको गाते हैं? हम क्यों महिमा करते हैं और उसके पीछे पड़ते हैं? जब भी कुछ हमको होता है तो उसके लिए ही तो कहते हैं कि हे भगवान अभी तू यह कर, कहते हैं ना - अभी खैर कर, रहम कर, अभी यह मेरा दु:ख दूर कर, तो हम मांगते हैं ना, तो उसकी माना हमारे लिए करने के लिए उसके साथ कोई संबंध, कोई हमारा रिलेशन तो है ना, तो हम याद उसको इस तरीके करते हैं की जैसे उसने कभी कोई हमारे पर एहसान किया है, अगर कभी किया ही नहीं हुआ होता अपने लिए ही सब कुछ होता तो हम खाली पीली क्यों उसके लिए इतना माथा कुटी और उसके लिए इतना सब करते । तो हमारे दिल में जो आता है और वो दिखलाते भी हैं की जभी कोई मनुष्य किसी के प्रति कुछ करता है ना, किसी के प्रति, कभी कोई मुसीबत के समय कोई मदद करता है या कोई ऐसी जरुरत पर साथ देता है तो उसके लिए दिल में आता है ना कि इसने मेरे साथ ऐसी मुसीबत के समय पर मेरी हेल्प की थी । तो उस हेल्प का कितना रहता है कि इसने मेरे समय पर मेरी बड़ी सहायता की थी, समय पर मेरी रक्षा की, समय पर इसने मेरी बहुत मदद की तो उसका दिल में प्रेम रहता है तो परमात्मा के प्रति भी

ऐसा ही प्रेम आता है कि उसने हमारी समय पर कोई ऐसी मदद की है, जभी होता है की चलो हमारे लिए बैठा तो है न, चलो दूसरा कोई न होगा परमात्मा तो बैठा है न , दिल में ऐसा आता है तो जरूर है की उसने हमारे ऐसे समय पर कोई सहायता की है, तो की ना । हमारे रिलेशन में उसका कुछ ऐसा काम चला हुआ है , ऐसा दिल में लगता है तो यह भी बातें समझने की है कि उसने कब किया, ऐसे नहीं है कि ऐसे कॉमन उसका कभी किसका कुछ अच्छा हो गया तो ये भगवान् ने किया, भगवान् ऐसा ही करता रहता है । नहीं! उसका बड़ा काम है, वर्ल्ड का काम है, वह कहते भी हैं मैं दुनिया को ऐसा बनाया । उसको कहते भी हैं हवेनली गॉडफादर, तो दुनिया के संबंध की बात है न, क्रियेटर भी जब कहा जाता है तो दुनिया के संबंध में आता है ना । बाकी ये थोड़ी है की छोटा-छोटा जो कुछ हुआ तो ये हमारा भगवान ने किया, अच्छा हमको थोड़ा पैसा मिल गया यह हमारे लिए भगवान ने किया, ये तो हम भी जो अपने अच्छे करम करते हैं तो उसका भी तो मिल जाता है बाकी हमारे अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब कैसे चलता है, हम जो बुरा करते हैं तो कहते हैं न की ये बुरे का फल है, तो अच्छा भी करते हैं , चलो भाई ये धनवान बना, कैसे बना ? भाई अपना अच्छा कर्म किया होगा, इसका फल है, तो अच्छे का भी तो फल है न । तो हमारे अच्छे बुरे कर्म का भी हम पाते रहते हैं न लेकिन परमात्मा ने आ करके जो हमको कर्म सिखाया उसका जो फल है ना, वह फल अलग है इसीलिए कहते हैं वो ये है,

जो मैं बैठ करके तुमको वो नई दुनिया जिसमें तुम सदा सुखी रहेंगे। यह तो तुम्हारा अल्पकाल का सुख है ना। यह तो तुम अल्पकाल के सुख के लिए, मनुष्य बुद्धि से ये जो कुछ करते हो उसका पाते हो। परंतु वो जो मैं तुमको आ कर के नॉलेज देता हूँ, वह उसी चीज के लिए जिससे तुम सदा सुख पाओ तो मेरा काम जो है न, वो भिन्न हो गया, इसीलिए कहते हैं कि मैं ही आकर के कर्म की भी जो यथार्थ नॉलेज है न वो मैं सिखलाता हूँ इसीलिए जो मैं आकर के कर्म सिखलाता हूँ, जिसको कहा है कर्मयोग श्रेष्ठ है, क्योंकि मैं आकर के कर्म की पूरी नॉलेज बतलाता हूँ की कर्म को छोड़ने का नहीं है, घर बार गृहस्थ में रहते सिर्फ तुम अपने कर्मों को पवित्र कैसे बनाओ, उसी का में आकर के नॉलेज देता हूँ। तो कर्म को पवित्र बनाना है कर्म नहीं छोड़ना है, कर्म तो अनादि चीज है ही। यह कर्म क्षेत्र अनादि है मनुष्य है तो कर्म भी है। परंतु उस कर्म को तुम किस खाते में लाओ, वह कैसे श्रेष्ठ बनाओ, वह आकर के सिखाता हूँ, जिससे फिर तुम्हारे कर्म का खाता अकर्म रहता है। अकर्म का मतलब है कोई बुरा खाता नहीं बनता है। इसीलिए देवताओं का खाता क्या कहेंगे, अकर्म। यानी उनको कोई सत्कर्म करने की भी दरकार नहीं है। सत्य है असत्य के ऊपर। अभी हम सत्य कर्म करते हैं। फिर इसकी प्रारब्ध में हमारा कोई भी कर्म का खाता नहीं रहेगा। हम इसकी प्रालब्ध पाएंगे, उसको कहेंगे अकर्म। लेकिन इसके पहले क्या करते थे विकर्म। यानी विकारों के संबंध में तो

विकर्म अनादि हैं विक्रम तो बाप बैठकर के समझाते हैं, कर्म तो चलता ही है फिर चाहे कर्म को विकर्म बनाओ यानी विकारी संबंध में कर्म करो, चाहे अभी जो मैं सत्कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म या यह पवित्र कर्म करना सीखलाता हूँ उसको कर करके फिर अपने कर्म को अकर्म करो अर्थात विकारी खाते से छूटे रहो । तुम्हारा कोई भी विकारी खाता नहीं बनता है क्योंकि वहाँ कोई विकार की बात ही नहीं है, तो यह सभी चीजें बाप बैठ कर समझाते हैं । यह कर्म की गति जो है, बाप कहते हैं इसको मैं जानता हूँ तो उसकी यथार्थ नॉलेज भी मैं दूंगा ना । ऐसे नहीं है कि जानूंगा मैं, देंगे मनुष्य, नहीं! मनुष्य नहीं दे सकते हैं, इसीलिए यह मैं जानता हूँ, मैं भी सोल हूँ न, मैं जो जानता हूँ वो आकर के बोल भी सकता हूँ, मैं भी आत्मा हूँ जैसे तुम भी आत्मा शरीर के आधार से बोलती हो न तो क्या परमात्मा नहीं बोल सकते । आत्मा बोल सकती है तो परमात्मा क्यों नहीं बोल सकते हैं वह तो और ही अथॉरिटी हैं, इसीलिए कहते हैं जब तुम भी आत्मा शरीर में आती हो । तो बोलती हो तो तुम भी शरीर ले करके बोल सकती हो तो आत्मा ही तो बोलती है ना अभी उसमें से आत्मा निकल जाए तो बोलेगी ? नहीं! ये डेड बॉडी पड़ी है, नहीं बोल सकेगी न । उसकी आत्मा बोलने वाली नहीं है, तो नहीं बोलेगी । परंतु आत्मा शरीर लेती है तो फिर बोलती है ना । तो अगर आत्मा बोल सकती है शरीर ले करके तो फिर परमात्मा क्यों नहीं बोल सकते, बोलेंगे । इसीलिए कहते हैं मेरे भी बोलने के लिए शरीर लेता हूँ,

लेकिन मैं अपने कर्मों के हिसाब से शरीर नहीं लेता हूँ । तुम सब आत्माएं शरीर लेती हो कर्मों के हिसाब से, यह तुम्हारे हिसाब का शरीर है परन्तु ये एक शरीर ही नहीं , ऐसे शरीर तुमने बहुत लिए हैं ओर वह तुम्हारे अपने अपने कर्मों के हिसाब का है । मैं ऐसा नहीं लेता हूँ, जिसमें मैं दुःख सुख भोगूं । इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं आता हूँ, और वो गीता में भी है कि मैं प्रकृति का आधार ले करके आता हूँ या प्रकृति को अधीन करता हूँ । । ऐसे नहीं उसके अधीन होकर के या कर्म के वश आकर के शरीर लेता हूँ तो प्रकृति को अपने अधीन यानी उसका टेंपरेरी आधार लेकर आता हूँ । उसको कहेंगे टेंपरेरी अपने कोई कर्म के हिसाब का शरीर नहीं है । सिर्फ मुझे उससे बोलने का है इसीलिए कहते हैं कि मैं भी आकर के वो नॉलेज देने का कार्य करता हूँ, बोल तो सकता हूँ । तो मेरा काम मेरा कर्तव्य भी अपने टाइम के लिए है, ऐसे नहीं जैसे क्राइस्ट का काम अपने टाइम पर है । भाई क्राइस्ट फिर कब आएगा, तो कहेंगे अभी 2000 वर्ष में इसकी क्रिश्चियेनिटी पूरी होगी फिर 5000 वर्ष के इस चक्र के हिसाब से फिर 3000 वर्ष के बाद फिर आएगा क्राइस्ट । फिर यही क्रिश्चियेनिटी स्थापन करेगा । तो देखो अपन अभी समझते हैं. की क्राइस्ट अभी फिर कब आएगा, अभी आए हुए उसको 1965 वर्ष हुए । अभी भी कोई ना कोई जन्म में है, इसका अभी 2000 वर्ष तक है । पीछे यह क्रिश्चियनिटी की एंड होगी फिर क्राइस्ट आएगा अपने टाइम पर । कब आएगा, फिर जब क्राइस्ट का टाइम आएगा, 3000

वर्ष के बाद फिर होगा तब आएगा । तो हर एक सोल का अपना - अपना इस चक्र में पार्ट है । इसी तरह से परमात्मा का भी मुकर्रर टाइम है, मुकर्रर पार्ट है, इसमें ये नहीं है कि परमात्मा कोई हद में आ गया या परमात्मा कोई बंधन में आ गया नहीं! यह ड्रामा का अपना-अपना फिक्स्ड, हर एक आत्मा का अपना-अपना पार्ट है । इसमें फिर परमात्मा का भी हमारे लिए पार्ट है कि हम आत्माओं को माया की बांडेड से छुड़ाना । तो छुड़ाएंगे भी तब ना जब हम बॉन्डेज में आएंगे । जब आते हैं बोंडेज में तभी उसका फिर छुड़ाने का भी काम हो सकता है । तो हमारा बोंडेज में आना और फिर उसका आ करके हमें उस बोंडेज से छुड़ाना तो उसका पार्ट छुड़ाने के टाइम पर हुआ, तो उसका टाइम मुकर्रर हुआ ना, कि भाई किस टाइम पर आएगा, जब हम माया कि बॉन्डेज में बंध जाएंगे बिल्कुल एकदम, तब फिर वह आएंगे हम सब को छुड़ाने के लिए । वह लिब्रेटर है तो लिब्रेटर का टाइम हो गया ना । ऐसे थोड़ी सदा छुड़ाता रहेगा, इसका माना हम सदा बने रहे हैं । नहीं! हमको माया जब कीचड़ में फेंकती है फिर उससे दुखी जब होते हैं तब ही मैं फिर आकर के उससे छुड़ाता हूँ । तो यह सिलसिला जो हम संसार का देखते हैं, उससे भी समझ सकते हैं कि हर एक का पार्ट है । क्राइस्ट का अपना पार्ट है, उनका अपना पार्ट है । तो पार्ट है और कॉमन भी ये कहते हैं कि यह जो संसार है वह एक नाटक है और हम सब उसके एक्टर्स हैं । तो एक्टर्स है ना यानी आते हैं कहाँ से पार्ट बजाने के लिए । यह स्टेज

है, तो स्टेज पर सबको पार्ट बजाना होगा ना । तो परमात्मा की भी जो महिमा है वह भी तो उसके पार्ट के ऊपर है ना । उसकी कोई थोड़ी ऐसी मुफ्त की महिमा है, नहीं! उसका भी पार्ट है लेकिन उसका पार्ट सबसे बड़ा अच्छा पार्ट है इसीलिए उनके मुख्य पार्ट की महिमा करते हैं तो उनका पार्ट मुख्य है । तो सभी एक्टर का पार्ट जानना चाहिए ना कि उसका कैसे होता है । वह आ करके हमारे लिए क्या करते हैं, वो आकर के सब एक्टर्स को माया की बोंडेज से छुडाते है तो ये सभी चीजों को समझना है की उसको भी सुप्रीम सोल है, वह गॉड कोई और चीज नहीं है । गॉड भी सोल को कहा जाए लेकिन गॉड नाम है उनके कर्तव्य के ऊपर की । भाई अथॉरिटी है, भाई गॉड क्यों कहा जाता है, क्योंकि वह अथॉरिटी है सबकी । तो सबकी अथॉरिटी होने के कारण उसको गॉड कहते हैं । गॉड माना ऐसे नहीं की कोई बड़ी चीज है, एकदम । वह समझते हैं न गॉड कोई बहुत बड़ा बड़ा बड़ा है, जैसे वह पांडवों को बड़ा-बड़ा कहते हैं उसके बुत जो पुतले बनाए हैं बहुत बड़े बड़े बनाएं है । वो देखा है ना सिलिकॉन में बड़े बड़े, वो समझते हैं इस शरीर में बड़े परन्तु नहीं, उनकी लाइफ में, उनकी जीवन में, उनकी जीवन बड़ी थी । भाई देवताओं, पांडव जिन्होंने बैठकर के परमात्मा से यह लिया था, उन्हों की जीवन बड़ी थी, बाकी ऐसे नहीं की शरीर बड़ा था । उन्होंने बड़ा बड़ा कह दिया है, वो भल समझते हैं कि उनके शरीर बहुत बड़े-बड़े थे । जिस तरह से परमात्मा को भी समझते हैं वह बड़ा है न, कर्तव्य में महान हैं,

कर्तव्य में बड़ा है इसीलिए वो समझते हैं कि वह बहुत बड़ा है, फैला हुआ है शायद । तो उसको बड़ा इसी में ले गए हैं परन्तु ऐसा बड़ा नहीं है । वह बड़ा अपने कर्तव्य से है । मनुष्य अपने कर्तव्य में बड़ा होता है । है तो गांधी भी तो मनुष्य था ना । कौन था ? ऐसे थोड़ी की बहुत बड़ा, बहुत ह्यूज था, बड़ा लंबा आदमी था, नहीं! आदमी था ना, मनुष्य था, लेकिन उसका कर्तव्य बड़ा था इसीलिए वह कर्तव्य में महान था, तो इसीलिए उनको कहते हैं कि तुमने यह क्या किया । तो कर्तव्य के ऊपर है ना सभी का । इसी तरह परमात्मा को भी गॉड, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी आदि जो भी महिमा है यह सभी उनके कर्तव्य के ऊपर है । लेकिन कर्तव्य हमारा कैसा है वो भी तो हमें मालूम होना चाहिए ना, बाकी ये कॉमन जो हम कुछ अच्छे - अच्छे कुछ हैं, बस यही परमात्मा का कर्तव्य है तो वो अच्छाई क्या है । नहीं! अच्छाई उसकी है उसको गाते ही है ऐसे हैं हेवेनली गॉड फादर, अंग्रेजी में भी देखो ऐसे-ऐसे नाम देते हैं भाई हेवेनली गॉड फादर, हेवेन का स्थापक, जैसे वो क्रिश्चियनिटी का फादर, वह बुद्धिज्म का फादर, वो इस्लामी धर्म का फादर तो यह है हेवेन का फादर, यानि हेवेन का क्रिएटर । बाकी ऐसे नहीं कि वो हेवेन में बैठा है और हम हेल में पड़े हैं, तो वह फादर बैठा है हेवेन में और हम पड़े हैं हेल में वाह!, यह नहीं है । वह कहते हैं हेवेन भी तेरे लिए है, हेल भी तेरे लिए हैं । मैं तो हेवेन में बैठता ही नहीं हूँ । मैं तो हेवेन एंड हेल से अलग हूँ । मेरे लिए तो फिर साइलेंस वर्ल्ड है, जहां से तुम

आत्माएं आती हो पहले-पहले, परन्तु यह हेवन एंड हेल ये दुनिया का स्टेज का है इसीलिए पहले ये हेवेन हुआ है पीछे ये हेल हुआ है, हेवन में भी तुम आते हो, हेल में भी तुम जाते हो, बाकी मैं तो न हेवेन का न हेल का । न हेवेन में आता हूँ न हेल में । मैं तो आता हूँ सिर्फ तुमको हेवेन बनाने की हेल्प करने के लिए । तुम्हारे कर्मों को ऊंचा करने के लिए, वो भी टेंपरेरी ऐसा नहीं की यहाँ कोई मेरा ठिकाना है, मैं सिर्फ आ करके तेरा काम करके जाता हूँ इस तरह । तो मैं आता हूँ सिर्फ, कोई मेरा घर नहीं है ये, यहां बैठने का नहीं हूँ । मैं आता हूँ केवल तुम आत्माओं की हेल्प करने के लिए, तुम आत्माएं जो माया की बॉन्डेज में बंध गई हो ना, उससे छुड़ाने के लिए । वो मैं हेल्प करने के लिए आता हूँ इसीलिए मैं आ करके तुमको यह हेल्प दे करके तुम्हारी दुनिया को हैवेन बना कर जाता हूँ तो यह है मेरा काम, तो मैंने काम किया है ना । जैसे क्राइस्ट भी आया है न, उसने भी यहां काम किया है न । ऐसे थोड़ी की ऊपर बैठकर काम किया है । जिन्हों- जिन्हों ने काम किया है, वो यहां किया है तो मैं ऊपर बैठकर काम करूंगा क्या । नहीं! मैं भी यहाँ आकर के काम करूंगा तो मैं भी कैसे काम करता हूँ, उन्हीं सभी बातों को भी समझने का है ना । ऐसे नहीं है की मैं ऊपर बैठे करूँगा । ऊपर बैठे तो क्या किसने और क्या, ऊपर किसने देखा क्या काम किया । नहीं! मेरा भी काम, जैसे मनुष्य आत्माएं भी काम करके सबको सुख देती हैं तो तुम उनको गाती हो तो मेरा काम सबसे

महान रहा, परंतु कहते हैं की जब जब मैं आता हूँ ना वो टाइम नहीं जानते हैं क्योंकि मेरा काम ऐसे तरीके का है, बड़ा गुप्त, बड़ा साधारण क्योंकि करूंगा तो मनुष्य के ही नमूने से ना । मनुष्य सृष्टि है ना तो दूसरा क्या नमूना ले आऊंगा, क्या करू स्पेशल और क्या करू । नहीं! करूंगा तो उसी नमूने से ना तो भगवान् सुना है न बहुत बड़ा है तो वो समझते हैं कि इसको ऐसे काम करने की क्या पड़ी है । कहते भगवान होता तो पता नहीं आज दुनिया में क्या हो जाता बिजली चमक जाती, सभी ढेर के ढेर यहां इकट्ठे हो जाते । तो वह कहते हैं नहीं! यह चीज ही ऐसी है तो मैं जानता हूँ ना, अगर ढेर के ढेर आ जावे यहां, सारी दुनिया यहां आ जावे तो फिर तो सारी दुनिया को मुझे उसका फायदा भी देना पड़े । यानी उसका मतलब है कि जो हेवेन स्थापन करता हूँ, परंतु नहीं! वहां संख्या ही थोड़ी है इसीलिए मैं जानता हूँ । बाकी इतनी संख्या का फायदा सबका करता हूँ, ऐसे नहीं, कहते हैं सभी मेरे बच्चे हैं फायदा सबका देता हूँ, परन्तु उनका फायदा फिर जो यह ज्ञान लेते हैं उनका फायदा दूसरा है । और उनका फायदा फिर यही है की उन्हों को माया की बोंडेज से सजाओं के जरिए छुड़ा करके, उनको फिर साइलेंस वर्ल्ड में बिठा देता हूँ । तो फायदा तो उनका वह भी चाहते हैं न कि हम आए नहीं यहाँ पर आएं ही नहीं, वहां ही बैठे रहें, वहाँ तेरे पास, चलो तुम मेरे पास बैठे रहो, ऐसे ही समझो । मैं फिर जीवनमुक्त, यानि उन्हों को फिर यहां सुखी करता हूँ । यह दुनिया तो चलनी है न, तो इधर भी सुखी, उधर सुख-

दुख से न्यारे फायदा तो सबको देता हूँ ना, जिसको मुक्ति और जीवन मुक्ति कहते हैं । मैं हूँ सबका देने वाला दाता । सबको लिबरेट करता हूँ तो सबका फायदा हुआ न । वो कहते हैं बच्चे मेरे तो सभी हैं न, परन्तु वो इनडायरेक्ट है , न जानते हैं तो उनको इनडायरेक्ट वे का फायदा देता हूँ और जो मुझे डायरेक्ट जानते हैं और डायरेक्ट मेरे से रिलेशन रख के डायरेक्ट अपना पुरुषार्थ रखते हैं, उनको डायरेक्ट दुनिया का फायदा देता हूँ । तो डायरेक्ट का डायरेक्ट फायदा और इनडायरेक्ट का इनडायरेक्ट फायदा लेकिन देता हूँ फायदा, इसलिए तो मुझे सब कहते हैं ना गॉड, पिता यह सब कहते हैं क्योंकि यह सब का काम करता हूँ और कैसे करता हूँ वह करने का भी मेरा तरीका समझो । बाप कहते हैं तुमने मेरा तरीका दूसरा समझा है की सबका जो थोड़ा बहुत होता रहता है ना, कुछ भी थोड़ा होगा तो माना यह भगवान ने किया है, भगवान ने किया है, कोई को कुछ होगा तो भगवान् बचाएगा, भगवान् ने किया है या कोई का धन जाएगा तो रोएगा पिटेगा कहेगा भगवान् ने किया है, अच्छा या कोई मर जाएगा तो भी रोएगा पिटेगा कहेगा भगवान् ने किया है । अरे! भगवान ने भला क्या किया, भगवान अगर सब करता है तो फिर सब में रखो, फिर बैठ के बुरे में अच्छे में सबमे भगवान्, ये क्या सब में भगवान, परंतु ऐसे थोड़ी ही ऐसी बात है की भगवान ने किया, फिर भगवान को गाली भी देते हैं । नहीं! फिर यह तो बात नहीं है ना । यह तो हमारे कर्मों की है अच्छा हुआ तो हम कुछ हम अपने अच्छे भी तो

बनाते हैं ना । ऐसे थोड़ी है कि बुरे ही बनाते हैं नहीं! अच्छे बुरे सब उसका भी थोड़ा अच्छा मिलता है लेकिन कहते हैं ये अच्छा बुरा जो तेरा है न ये मैंने नहीं बनाई । मैं तेरी दूसरी अच्छाई बनाता हूँ । वह दूसरे किस्म की अच्छाई है, वह कौन सी है कि वह दुनिया ही नई थी, जिसमें तुम्हारा कभी अकाले मृत्यु नहीं होती थी, ऐसे नहीं की जन्में तो खुश होएं और फिर मरे तो रोए, ऐसा नहीं मैं करता हूँ । मैं तुम्हारे को ऐसा देता हूँ जिसमें कोई अकाले मरे ना । कोई रोगी होय ना, तेरा जन्म मरण में ऐसा बनाता हूँ, तो वो ठीक न । मैं तेरा जन्मना तेरा मरना दूसरे ढंग का बनाता हूँ । ढंग का मतलब क्या है, जिसमें तुम कोइ अकाले नहीं मरेंगे, मरेंगे क्योंकि शरीर तो देवताएं भी छोड़ेंगे ना, बाकी ऐसे थोड़ी छोड़ेंगे नहीं, वृद्ध होंगे तो क्या रखा रहेगा क्या छोड़ा शरीर, नहीं! शरीर तो छोड़ेंगे, परंतु वह अकाले नहीं छोड़ेंगे । वह अपने टाइम, समय पर मालिक हो करके । तो कहते हैं वह जन्मना वह शरीर छोड़ना, उसको फिर अमर कहा जाता है, उनको मृत्यु नहीं कहा जाता । तो वो कहते मैं तेरा और ढंग से बनाता हूँ, तो मेरा काम भी समझो ना । इसीलिए मेरे काम की मुसाफत, मनुष्य के काम से मत करो । यह अभी इसी दुनिया में मेरा काम इसी तरीके से जो मैं करता हूँ आकर के डायरेक्ट, फिर वो इनडायरेक्ट तो सभी फिर करने वाला है क्योंकि भावना तो फिर भी ईश्वर तरफ रखते हैं ना । कहते हैं मैं मनोकामना फिर अल्पकाल के लिए भी पूर्ण करने वाला मैं हूँ, परंतु यह डायरेक्ट जो मेरा काम है,

एक्ट आकर के करता हूँ प्रेक्टिकल जिसकी महिमा है वह मेरा यह काम है । उसका तुम्हारे को फायदा भी मेरा अलग है ना तो मेरा फायदा तुम अलग समझो । कोन सा? मैं जरूर कोई बड़ा काम किया है ना तुम्हारा, तो बड़ा यह है जो तुम्हारे जीवन में इतना फायदा दिया है, सदा सुखी, कभी रोग नहीं, कभी अकाले मृत्यु नहीं, कभी कोई नहीं तो यह किसने दिया? ऐसी दुनिया किसने बनाई भला, ये कई समझते हैं, ऐसी कोई दुनिया है ही नहीं इसीलिए समझते हैं दुनिया तो ऐसी ही होगी ना, उसमें मरना भी होगा जन्मना भी होगा, वहां रोग भी होंगे, करके कुछ कम होंगे पहले, अभी करके बहुत हैं बस, इतना फर्क परंतु नहीं! वह भी टाइम था, जब था ही नहीं तो जो था ही नहीं वो किसने बनाया, वो हमारे कौन से कर्म थे तो वह भी कोई कर्म का फल था ना, तो जरूर दुनिया थी ऐसी, ऐसी नहीं एक दो आदमी की बात है, परंतु यह समझना चाहिए बात । कई शायद इनको नहीं समझते हैं कि ऐसी कभी दुनिया हुई होगी, जिसमें दुनिया, एक दो आदमी की बात नहीं है दुनिया ऐसी थी, सब सुखी थे । अरे! जनावर, पशु, पक्षी भी कभी रोगी नहीं होते थे । कभी वह भी झगड़ते नहीं थे । जब जनावर ऐसे थे, तो मनुष्य क्या होगा । सब सुखी थे, कोई भी मनुष्य अकाले नहीं मरता था । लॉ था, जैसे अभी मरते हैं ना, जैसे यह अभी नियम हो गया है, लॉ हो गया है एक कि भाई ऐसे ही मरना है । कहते हैं न इस दुनिया में ऐसे तो मरना होता ही है । ऐसे ही सबको मरना है परंतु वहां सतयुग में फिर

सबको ऐसे नहीं मरना है । वहां ऐसे अकाले मृत्यु होता ही नहीं है, किसी का भी सुनेंगे नहीं कि फलाना ऐसे अकाले मर गया । टाइम पर, समय पर, इधर तो देखो सुनते हैं ना, देखते भी हैं, सुनते भी हैं, भाई फलाने का हार्ट फेल हुआ, यह हुआ, एक्सीडेंट हुआ, यहां बैठे ही मर गया मतलब बैठे-बैठे मर गए, यह सभी चीजें होती हैं । वहां ऐसे नहीं है, वहां सब टाइम पर । कभी ऐसे सुनेंगे नहीं कि फलाना ऐसे मरा । नहीं! वो टाइम पर, समय पर, परन्तु कई शायद बिलीव नहीं करते कि शायद कभी ऐसा संसार था ही नहीं । क्यों नहीं बिलीव करते हैं, इसका भी कारण है क्योंकि कई शास्त्रों में जो हमारा पहले के संसार की कुछ चिन्ह है ना, उसकी बायोग्राफी में ऐसी ऐसी बातें लगा दी हैं । राम के साथ में भी लड़ाई लगा दी रावण की । उसकी सीता चुराई गई, ऐसी ऐसी बातें उन्हों के हिस्ट्री में लगा दी है, जैसे कोई बिलीव नहीं करते भाई उनके जमाने में भी ऐसा होता था । वह समझते हैं उन्हों के जमाने में भी ऐसा होता था इसीलिए समझते हैं कि कोई जमाना ऐसा होगा ही नहीं जिसमें कभी कोई लड़ाई ना हो झगड़े ना हो, कभी अकाले मृत्यु ना हो । ऐसे हो ही नहीं सकता है क्योंकि उन्होंने बायोग्राफी में कुछ बातें में मिक्स कर दी हैं । देवताओं का नाम रखा है परंतु उनके कर्तव्य में कैसी कैसी बातें डाल दी जो बिचारे मनुष्य मूंझ पड़े हैं, वह समझते हैं कि किसी भी जमाने में कभी ऐसा हुआ ही नहीं है । यह भी इमपॉसिबल है तो यह सभी चीजों को भी अच्छी तरह से समझना है कि नहीं लाइफ की कुछ

स्टेज है और वह स्टेज किसने बनाई है उसके काम करने वाला भी कोई है, ऐसे ही नहीं । भले नेचर है , यह यह सब चक्कर चलता है, यह भी लाइफ है, कई समझते हैं नहीं! यह तो चक्र है, चलो ऐसा भी होगा दुनिया कोई अपने टाइम पर आपे ही बनेगी, परंतु आपे ही नहीं, जैसे क्राइस्ट की क्रिश्चियनिटी आपे ही बनी निमित्त था ना, भले क्राइस्ट कोई कहे आपे ही आया, चलो पर आया ना, नाम तो उसका हुआ ना काम किया उसने, भले वह भी ऑटोमेटिक में था भाई क्राइस्ट को आना था, काम करना था, चलो कोई ऐसे भी समझे, परंतु फिर भी तो वह आया न तो परमात्मा भी ऑटोमेटिक में आएगा । चलो ऑटोमेटिक ही समझो, परंतु आएगा, करेगा वह । तो करेंगे ना, जैसे क्राइस्ट भी ऑटोमेटिक में आया, वो भाई उसकी क्या महिमा है? वह आया भाई क्रिश्चियनिटी उसके नाम पर हुई, बुद्ध आया फिर भी आया ना इसी तरह से परमात्मा भी ऑटोमेटिक में ही समझो, परंतु आएगा, तो वह कहते हैं मेरा भी टाइम है ना, समय है, सब का टाइम । देखो टाइम ही है सबकी स्टेज में, क्राइस्ट का टाइम है, 1965 बरस हुए, बुद्ध का भी टाइम है अपना बतलाते हैं, इस्लामी धर्म वाले भी बदलाते हैं अपना टाइम । टाइम सबका है वह परमात्मा का भी टाइम है ना, टाइम के अंदर की बात है इसीलिए उसको कहेंगे उसके लिए कोई टाइम ही नहीं है उनको हम हद में लाते हैं यह । नहीं! यह हद नहीं है, उनके कर्तव्य की समझ है, इसको हद नहीं कहेंगे । उसको कोई हम हद में नहीं लाते हैं, लेकिन उसका टाइम,

उसका कर्तव्य तभी है, उसकी समझ है उसको कोई हद में थोड़ी लाते हैं । हद और बेहद का भी अर्थ समझना है । वह समझते हैं हम उसको हद में लाते हैं, श्रीमत में या हद में कि भाई इसका मुकर्रर टाइम है वह तो महान, विशाल, बेहद जब चाहे, जिधर चाहे, जिधर करें काम, परंतु वह कहते हैं मेरे भी काम होने का समय चाहिए ना । मेरा समय जब होता है तो वो एक ही टाइम है मैं आता हूँ एक ही बार । यही तो सर्वशक्तिमान हूँ कि एक ही टाइम में सारा काम कर लेता हूँ विनाश का स्थापना का पालना का तीनों काम एक ही बार करता हूँ डिस्ट्रक्शन कंस्ट्रक्शन और फिर जो कंस्ट्रक्शन करता हूँ उसकी पालना बैठ करके यह सब फिर मैं चलाता हूँ, कैसे कराता हूँ, देखो पालना लायक बनाता हूँ तो मैं आ करके एक ही बार में ये सारा करता हूँ । इसी में ही तो मैं शक्तिमान हूँ न, बड़ा काम करता हूँ एक ही बार में । तो मेरी शक्ति का गायन उसी बात पर है की एक ही बार आकर के बड़ा काम करता हूँ । बाकी ऐसे नहीं है कि मेरा काम चलता ही रहता है इसीलिए मैं शक्ति या महान या बड़ा या विशाल या बेहद हूँ । मैं कोई हद में एक ही का थोड़ी करता हूँ । एक की तो बात ही नहीं है सबका, यह तो और ही हद हो गई भाई कभी किसका काम करता है, कभी किसका काम करता है, कभी किसकी तो हद हो गई कभी किसका कभी किसका । बाप कहते हैं मैं आता हूँ तो धक से, एक बार सबका काम कर लेता हूँ धक् से इसीलिए तो बाप कहते हैं तुम भी मेरे धक से बनो झाट्कू बनो, मैं भी झाट्कू की तरह से

काम करता हूँ तुम भी झाट्कू की तरह से काम करो । ऐसे नहीं धीमे-धीमे आस्ते-आस्ते थोड़ा थोड़ा, नहीं! वह कहते हैं मैं भी एक बार आकर करके डिस्ट्रक्शन, कंस्ट्रक्शन और जो भी काम है धक से कर लेता हूँ तुम भी अपना काम फिर ऐसे ही करो इसीलिए कहते हैं यही जन्म है अंतिम इसका अर्थ ही है लास्ट जन्म है काम करने का । यही अभी है टाइम , तो देखो टाइम भी अभी है ना, क्योंकि ये अभी यह वर्ल्ड के डिस्ट्रक्शन की टाइम है । वह कहते हैं मैं वर्ल्ड के डिस्ट्रक्शन के टाइम पर काम करता हूँ जभी हो न टाइम अभी डिस्ट्रक्शन का टाइम ही ना होंगा तो अभी बीच मैं आ कर के क्या करूंगा । अच्छा यह सभी बातों को भी अच्छी तरह से समझने का है, इसीलिए बाप कहते हैं मेरा काम निराला और कहते भी हैं तुम्हारी गत, तुम्हारी मत तुम ही जानो । ऐसे नहीं है तुम्हरी गत, तुम्हरी मत हम जाने, नहीं! तुम ही जानो । देखो कहा न गत भी तुम्हारी, मत भी तुम्हारी, यानी तुम्हारी गति सद्गति करने की जो मत है, नॉलेज वह भी तुम ही जानो । तुम ही जानो, तुम्हरी गत, मत तुम ही जानो, ऐसे नहीं तुम्हारी गत मत हमारे वेद, शास्त्र, विद्वान, पंडित जाने, नहीं! तुम ही जानो, तो जो जानेगा वही तो सुनाएगा ना इसीलिए कहते हैं गॉड नोज, कोई मनुष्य नहीं । अच्छा कैसे हो, सब बैठे हो अपने बेहद बाप की याद में और उसकी फरमान और आज्ञा की पालना करते रहना है । बहुत अच्छी उसकी आज्ञा है मीठी- मीठी । मीठी नहीं लगती है उसकी आज्ञा? जो हमको मीठा बनाती हैं, जो

हमारी लाइफ को क्या बनाती है । गुप्ता जी? कहाँ हो? अच्छा है । इन विचारों में रहना अच्छा है । इसे विचार सागर मंथन भी कहते हैं ना, विचार सागर मंथन उसका देखो शास्त्र है । तो इस मंथन को करने का भी महत्व है । फिर कभी उससे रतन निकल आएंगे । कभी पत्थर निकलते हैं कभी रतन निकलते हैं । अभी रतन निकलते हैं । इतना समय तो बेचारे जो पीछे- पीछे जितनी हद की बुद्धि थी मनुष्यों की करते आए परंतु उससे कोई वह चीज मिली नहीं । अभी बाप कहते हैं वह तो मेरे द्‌वारा मिलेगी । मुझे कोई विचार सागर मंथन करने की दरकार नहीं, यह मनुष्य के लिए । बाप कहते हैं भले अभी मैं देता हूँ, भले विचार करो । मनुष्यों की भी सुनी, अब मेरी भी सुनो, पीछे जज योर सेल्फ, व्हाट इज राइट, व्हाट इज रॉन्ग । मनुष्यों की सुनते आए हो अब मैं जो सुनाता हूँ वह भी सुनो । अब दोनों को विचार में लाओ । पीछे जज योर सेल्फ । अच्छा कैसे हैं हमारे किसके नाम ले, कितने लें, हमारे रामचंद्र, जीवनलाल । यह मोहन, मोहन बहुत दिन के बाद दिखाई पड़ रहा है, बीमार थे? अच्छा! बीमार होते हैं ना, तो लिख कर के भेज देना चाहिए कि सिक लीव पर, ताकि पता चले फिर आपके पास कोई को भेजें जो मुरली आकर के सुनावे । जो कुछ रोग आदि का है नहीं तो कैसे पता पड़े बीमार है या कोई बाहर चला गया, क्या हुआ, किधर है । कैसे पता चले, तो जो स्टूडेंट होता है ना, जैसे की स्कूल में भी होता है कि भाई खबर दे देते हैं, एक पोस्टकार्ड भी डाल दो ना, तो पता चलेगा,

नहीं आ सकते, थोड़ा तबीयत खराब है । ऐसा तो होगा कि दो अक्षर लिख सकूं, ऐसा तो नहीं या किसी से लिखवाओ, खुद ना लिख सको तो की भाई तबीयत कैसी है, किसी को कहो मेरा यह दो अक्षर कार्ड में लिख दो, तो कोई काम भी तो कर सकता है तो पता चले स्टूडेंट तो फिर ऐसा होना चाहिए ना । हम तो इंतजार करते रहे, कहीं बाहर गया, क्या हुआ, किधर गया या माया खा गई, ख्याल तो रहता है ना । माया नहीं खाएगी, वह तो बहुत अच्छा सुनाया, आपके मुख में गुलाब कि माया आपको कभी नहीं खाएगी । बहुत अच्छी बात सुनाई, परंतु फिर भी ख्याल तो रहेगा ना, क्योंकि हम देखते हैं बहुत अच्छे बच्चों को भी माया खा जाती है । बहुत अच्छे-अच्छे कहते हैं ना महारथी, बड़े अच्छे बीस-बीस बरस रह कर भी के भी माया खा जाती है । आप तो अभी पता नहीं कितने समय के हो ? पाँच मास, चलो आठ मास, मास के ही हैं न, यह मास के, लेकिन यहां हमारे पास आठ-दस बरस वाले भी टूट पड़ते हैं । बीस-बीस, अठारह-अठारह वर्ष, तो ख्याल रहता है अच्छा टोली मिली? अच्छा ऐसा बाप ऐसा दादा, बापदादा और माँ की मीठी मीठी बहुत अच्छे समझदार बच्चों के प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

16. परमात्मा का परिचय

ओम शांति ।

सत् है बाप, वो ही सत् टीचर और सद्गुरु, अभी यह नशा बैठा है ना अच्छी तरह से कि हम ऐसे सत बाप, सत् टीचर और सतगुरु जो है, उनके बने हैं । उनका फिर कोई बाप, टीचर, गुरु है ही नहीं । बाकी तो सब का बाप, टीचर, गुरु है ही । इसीलिए जो बेहद का बाप है, उसके ऊपर तो कोई नहीं है ना । क्रियेटर का कोई क्रिएटर नहीं, तो हमारा क्रिएटर, डायरेक्टर अभी कौन है ? वह है, जिसके ऊपर कोई क्रिएटर, डायरेक्टर की बात ही नहीं है । तो उससे अभी प्रैक्टिकल में संबंध है । बातें नहीं है सिर्फ, अभी उससे प्रैक्टिकल रिलेशन यानी संबंध जोड़ा है और वह भी अभी आए हैं और आ करके हमारे को अपना रिलेशन प्रैक्टिकल में दे रहा है । और उसका कहना भी है कि यदा यदा ही यानी जब-जब ऐसा टाइम होता है, तब-तब मैं आता हूँ, तो जरूर है कि कहीं से आता है ना , कोई ठिकाने से आता है । अगर यहाँ बैठा हुआ होता ओमनीप्रेजेंट, तो 'आता हूँ क्यों कहता ? आता और जाता, उसी चीज के लिए कहने में आता है जहाँ ना है तभी कहने में आता है 'आता' । अगर ओमनीप्रेजेंट है, तो फिर 'आता' यह बात बनती नहीं, तो यह भी समझने की बातें हैं ना । उसने भी कहा है कि यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत तब तब मैं आता,

आता कहा है ना, तो आता हूँ । आएँगे तो जरूर है कि कोई और ठिकाने का रहवासी है, जहाँ से आते हैं और हम सब भी किसी और ठिकाने के रहवासी हैं । हम कहाँ के रहवासी हैं ? निराकारी दुनिया के । हम आत्माओं का अपना निवास स्थान है निराकारी दुनिया जिसको अंग्रेजी में इनकॉरपोरियल वर्ल्ड कहेंगे । तो उसकी माना इनकॉरपोरियल वर्ल्ड में ऐसा नहीं है कि खाली एक ही परमात्मा रहता है । अगर एक ही रहता तो फिर वर्ल्ड क्यों कहते । वर्ल्ड माना उसमें बहुत रहते हैं । वर्ल्ड शब्द आता ही तभी है जब बहुतों की बात हो । देखो यहाँ इतने मनुष्य हैं तभी उसको कहाँ जाता है मनुष्यों की वर्ल्ड अर्थात दुनिया । एक आदमी होता तो फिर उसको दुनिया कहते? दुनिया नहीं कहते ना । दुनिया माना बहुत हैं तो इसको भी वर्ल्ड कहते हैं, इनकॉरपोरियल भी वर्ल्ड है । निराकारी भी दुनिया है । निराकारी एक नहीं है, निराकारी दुनिया है । तो कोई बहुत निराकारियों का रहने का स्थान है तो बहुत निराकारी कौन है ? आत्माएँ । तो यह भी समझना है इसीलिए हमारा भी ठिकाना उधर का ही है । लेकिन हम इधर पार्ट बजाने आते हैं तो हम अनेक जन्मों में चल पड़ते हैं । वह आता है तो उनको कोई अनेक जन्मों में चलने की आवश्यकता नहीं । वह कोई अपना कर्मों का शरीर नहीं लेते हैं । हम सब आत्माएँ अपना पार्ट अपने संस्कार, कर्म के हिसाब से लेते चलते हैं और वह जो है, उनका पार्ट फिर ऐसा है कि उनको टेंपरेरी शरीर लेना है दूसरे का, अपना कोई कर्म का शरीर नहीं लेना है,

उनका फिर हिसाब ही ऐसा है । उसका पार्ट समझो ऐसा है, टेंप्ररी प्रवेश, जिसको कहा जाता है परकाया प्रवेश होते हैं । इसी तरह से आकर के शरीर का आधार लेकर के वह भी थोड़े टाइम के लिए, उनको आकर के नॉलेज सुनाया । ऐसे नहीं बच्चे के शरीर में आवे, जैसे समझते हैं कृष्ण के छोटे शरीर में तो कृष्ण के छोटेपन के छोटे शरीर में कैसे बैठकर सुनाएगा । शरीर तो ऐसा चाहिए ना, जिसमें बैठ के समझाए तो समझाने में भी अच्छा लगे । देखो आता है बेहद का बाप, वह बैठ करके बच्चों को समझाते हैं, अगर छोटे शरीर में आवे और कहे बच्चे तो ये छोटे शरीर से शोभा भी नहीं देगा, शोभा देगा ? वो छोटा शरीर से कहे बच्चे मैं आया हुआ हूँ. अब चलना है तुम्हे परमधाम तो शोभा देगा ? छोटा बच्चा कोई यहाँ अगर बैठा हुआ है, उसमें बैठ के परमात्मा अगर कहे बच्चे तो अच्छा लगेगा ? तो जब वो आवे तो कोई बुजुर्ग शरीर भी तो कोई ठाऊ का होवे । जैसे ड्रेस पहनते हो तो रहता है न की हाँ भाई जरा फिटिंग ठीक चाहिए तो उसके भी आत्मा के मुताबिक कोई फिट चाहिए न शरीर । तो जरूर कोई ऐसा बुजुर्ग शरीर हो जिसमें बच्चा कहना अच्छा लगे । और आते हैं तो हमारे साकार में भी गुरु, टीचर बनते हैं तो कहने में भी उसको शोभा रहे और साकार में भी मिलने में लगे की हाँ भाई बाप है । बाप तो बुजुर्ग होते हैं न, बाकि छोटे शरीर में आवे और कहे बच्चे तो शोभा भी नहीं देगा । इसीलिए उसमें कहते कैसे बनेगा इसीलिए बाप आते हैं बुजुर्ग शरीर में । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप

समझाते हैं कि मैं आता हूँ और मैं आते ही काम करता हूँ । ऐसा नहीं है कि पहले छोटा हूँ तो पालना लूँ पीछे बैठकर के ज्ञान दूँ, ऐसे भी नहीं है । नहीं, मैं आता हूँ और आकर के अपना काम चालू करता हूँ । मुझे आना ही काम करने के लिए है । मुझे कोई आ करके तुम्हारे सदृश्य माँ की पालना थोड़ी लेनी है, जो मैं पलूँ, बढ़ूँ, फिर बैठ करके ज्ञान दूँ, यह भी कोई बात नहीं है । मुझे क्या पालना लेने की दरकार है । तुम मुझे क्या पालोगे, वो तो बात ही नहीं है न । ऐसे भी नहीं है कि मुझे कोई पालना लेनी है या कोई माँ का दूध लेना है । ऐसा तो नहीं है न कि पल कर के बड़ा होऊं । मैं तो आता ही हूँ नॉलेज देने के लिए । नॉलेज देने के लिए तो मुझे बस टाइम पर आना है, नॉलेज देना है और टाइम भी जब मेरा पूरा होता है मैं फिर चला जाता हूँ । ऐसे भी नहीं कि मुझे बैठ ही जाना है । इसीलिए कहते हैं कि मैं आता ही उसी टाइम पर हूँ और तन भी ऐसा लेता हूँ, जिसमें सब बातें हो । देखो उसमें अनुभव. एक्सपीरिएंस आदि सब हो । समझाना के लिए तो शरीर ज़रा फिट चाहिए न, जो की समझाने में भी सभी बातें अच्छी लगे । कॉमन भी तुम लोग ड्रेस पहनते हो तो समझते हो जरा ठीक लगे, ऐसे तो नहीं न । सबका अपना देखो रसम रिवाज है उसी अनुसार पहनते हो ना । वो भी अपने रसम अनुसार पहनेगा ना । उसकी रसम कौन सी है, वह भी अपने रसम का शरीर लेता है । कौन सा लेता है, वह बैठ करके समझाते हैं तो मैं भी तो अपनी ड्रेस लूँगा, शरीर लूँगा अपने रसम का, अपने काम का

करने लायक । तो बैठकर के समझाते हैं कि इसी तरीके से आता हूँ और आ करके ये नॉलेज सुनाता हूँ और बैठकर के समझाता हूँ । तो उस आत्मा में भी क्यों आता हूँ सो भी बैठकर के समझाता हूँ की उस आत्मा का भी बहुत जन्मों का चक्कर लगाया हुआ है । कौन सा ? आप लोगों ने एक चित्र देखा होगा जिसमें दिखलाते हैं की विष्णु के नाभी कमल से ब्रह्मा निकला है, वह चित्र बहुत कॉमन है । आजकल तो उसका भी दिखलाते हैं गांधी का । गांधी के नाभि से नेहरू निकला है, ऐसा चित्र रखा था आज कल बनाए थे । उसमें गांधी विष्णु की तरह से लेटा पड़ा है, उसकी नाभि से नेहरू को निकाला था तो आजकल ऐसे बनाये हैं । तो असल है विष्णु का । फिर विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा दिखलाते हैं अभी इसका भी रहस्य है कि हाँ यह विष्णु सो ब्रह्मा, ब्रह्मा सो विष्णु । अभी इनका ही 84 जन्म, ये विष्णु लक्ष्मीनारायण कंबाइंड है ना तो देखो ये विष्णु लक्ष्मीनारायण कंबाइंड, ये देखो जन्म शुरू का था विष्णु, सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी फिर जन्म लेते लेते उसका लास्ट जन्म जो हुआ वह ब्रह्मा । फिर ब्रह्मा सो फिर विष्णु तो अभी इनके ही 84 जन्मों का, जो मनुष्य पहले आया, जिसका पहले पहले जन्म हुआ उसका ही जो फिर अंतिम जन्म है, उसी में मैं आता हूँ । तो विष्णु का जो अंतिम जन्म है मैं उस में आता हूँ । तो विष्णु का अंतिम जन्म कौन सा हुआ ब्रह्मा । विष्णु सो ब्रह्मा, ब्रह्मा सो विष्णु और यह दिखलाया है और इसी कारण गाया है ब्रह्मा

का दिन, ब्रह्मा की रात, गीता में है ना, अभी विष्णु का दिन, विष्णु की रात नहीं कहा क्योंकि परमात्मा जब आता है, तब आता है अंत में और वह आता है ब्रह्मा के शरीर में इसीलिए ब्रह्मा की रात कहने में आएगी क्योंकि उसकी रात पूरी करके जिसकी पूरी करता है और जिसका दिन चालू करता है तो उनका ही नाम आएगा ना इसीलिए विष्णु का दिन विष्णु की रात नहीं परंतु ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात क्योंकि उसमें आता है परमात्मा और आकर के सैप्लिंग लगाता है । विष्णु से सैप्लिंग नहीं लगती है, सैप्लिंग उधर से लगती है ब्रह्मा से इसीलिए जहाँ से सैप्लिंग लगती है तो वहाँ से बताएँगे ना कि उनकी रात और उनका दिन जब पूरा होता है तब फिर मैं आकर के रात के अंत में उनका रात का अंत और दिन का फिर आरंभ करता हूँ । तो यह सारी चीजें समझने की हैं, जो बैठ कर के बाप समझाते हैं । तो मैं आऊंगा भी उसमें ना, इसीलिए मैं ब्रह्मा के तन में आता हूँ, दूसरे किसी के तन की बात ही नहीं रहती है । मैं आता हूँ वो वंशावली बनाने के लिए, कौन सी? विष्णु वाली यानी देवी देवताओं की तो एक धर्म एक राज्य जब था संसार में, तो मैं वह देवी-देवता धर्म स्थापन करने के लिए आता हूँ ना । कहते तो हैं गीता गाने वाले बतलाते हैं कि हाँ भाई भगवान आया यदा यदा ही धर्मस्य जब अधर्म हुआ, तब आया और धर्म स्थापन किया । परंतु किसी से अगर पूँछा जाए कि भगवान ने कौन सा धर्म स्थापन किया, बता सकेंगे? यह विष्णु वंशावली अर्थात श्री लक्ष्मी श्री नारायण

वंशावली यह धर्म की स्थापना परमात्मा ने की, यह कोई नहीं जानता है । उनमें भी जाके फिर कोई से पोंछे की भाई क्राइस्ट ने कौन सा धर्म स्थापन किया, तो क्रिश्चियन लोग बता देंगे कि क्राइस्ट के द्वारा यह क्रिश्चन धर्म स्थापन हुआ । बुद्धिज्म वाले से भी अगर पूँछे तो कहेंगे बुद्ध के द्वारा यह बुद्ध धर्म स्थापन हुआ, मुसलमान भी बतला देंगे सभी अपने-अपने धर्म स्थापक के नाम से बताएँगे कि उन्हीं के नाम से यह धर्म स्थापन हुआ है, लेकिन भारतवासियों से अगर पूँछा जाए कि अपना धर्म कौन सा है और स्वयं गीता के भगवान ने खुद कहा है कि जब-जब अधर्म होता है तब-तब मैं आता हूँ धर्म स्थापन करने के लिए, तो वह कौन सा धर्म है, उसका नाम कौन सा है, बताए तो सही कोई । भारतवासियों को अपने धर्म का भी नाम का पता नहीं है । अगर सुनाते हैं तो कहते हैं हिंदू । किसी से भी पूछेंगे तो कहते हैं हमारा धर्म हिंदू है । अभी हिंदू कोई धर्म नहीं है, हिंदू तो हिंदुस्तान में रहने के कारण अपने को हिंदवासी या हिंदुस्तान में रहने वाले समझते हैं इसीलिए अपने को हिंदू कहते हैं बाकी हिंदू कोई धर्म तो नहीं न । तो यह बातें देखो अभी बाप बैठकर समझाते हैं । अभी यूरोप देश में रहने वाले अपने को यूरोपियन कहते हैं, परंतु यूरोपियन कोई धर्म नहीं है उनसे अगर पूछेंगे कि तुम्हारा धर्म कौनसा है, वो यह नहीं कहेंगे यूरोपियन धर्म है वह तो यूरोप में रहते हैं इसी लिए यूरोपियन है, बाकी धर्म पूछेंगे तो क्राइस्ट के नाम पर कहेंगे क्रिश्चियन धर्म । (एक भाई बोला) मम्मा यह हिंदू नाम जो है

यूरोपियन लैंग्वेज में ठाकुरों को बोला जाता है, आपने देखा होगा यह कोई धर्म नहीं है । नहीं, यह जब मुसलमान लोग आए थे न तभी, तभी के बाद वह सब नाम पड़े हैं । उनको ये फिर काफिर यह सब झगडे जब हुए थे तभी यह सब नाम पड़े थे परंतु वास्तव में यहाँ कोई धर्म की तो बात ही नहीं है ना । तो वही बैठ कर के बाप समझाते हैं की यह तो यहाँ का नाम हो गया, यहाँ के रहने वालों का जिसने भी डाला मुसलमान आए, मतलब पड़ा तो यहाँ देशवासियों के ऊपर ना, यानी देश के ऊपर हिंदुस्तान के ऊपर हिंदुस्तान नाम डाला इसीलिए वह हिंदवासी कहने लगे । बाकी वह अपना कोई धर्म तो नहीं हुआ ना इसीलिए बाप कहते हैं अपना जो सनातनी असुल भारतवासियों का धर्म है वह कोई जानता नहीं है । भारतवासी भी नहीं जानते हैं, कोई भी जानते नहीं है । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं तो हमारा असुल आदि सनातनी धर्म था देवी देवता विष्णु कहो, देवी देवता लक्ष्मी नारायण । यह जो राजधानी सूर्यवंशी चंद्रवंशी चली है, हम असुल देवी देवता थे परंतु आज देवी-देवताओं जैसे लक्षण नहीं रहे हैं ना इसीलिए बेचारे कहें कैसे अपने को देवी देवता । तो देवी-देवता कहने का वह क्वालिफिकेशन चाहिए ना । कहें देवी देवता और लड़ते झगड़ते मरते मारते रहते हैं यह देवी-देवताओं के लक्षण हैं ? यह तो लक्षण ही नहीं है न, परंतु असूल ऐसी क्वालिफिकेशन वाले और इतना हमारे में बल था, ताकत थी, कभी हम अकाले नहीं मरते थे, कभी कोई रोग आदि नहीं होता था, यह

सभी हमारे कर्म श्रेष्ठता का हमारे पास बल था तो इसीलिए बाप कहते हैं मैं आता हूँ उसी में आऊँगा ना जो पहला पहला उसी राजधानी का किंग था । तो मैं आता हूँ तो उसी में इसीलिए कहा है कि विष्णु सो ब्रहमा और ब्रहमा फिर सो विष्णु हम सो । विष्णु क्या कहेगा हम सो और ब्रहमा कहेगा हम सो, हम सो हम । तो वह है एंड का जन्म यह शुरू का जन्म इसीलिए परमात्मा एंड वाले जन्म में आएगा ना । तो अभी विष्णु का 84वां जन्म कौन सा हुआ । वो नाभी से दिखलाता है ना. वह 84वां लास्ट ब्रहमा और फिर ब्रहमा जाकर के विष्णु बनते हैं अथवा श्री नारायण बनता है तो यह चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि यह इनके ही 84 जन्मों की नॉलेज हैं । ये नाभि दिखलाते हैं ना, इनके ही 84 जन्मों चक्कर है । इसी चक्कर में सभी और धर्मों का बाय प्लाट चलता है । जब इसके जन्म कुछ नीचे आते हैं, सूर्यवंशी चंद्रवंशी पूरे होते हैं तो पीछे दूसरे धर्म मानो चालू होते हैं । पीछे सभी धर्म और इनका भी जब अंत जन्म होता है तभी फिर मैं आता हूँ और फिर इनके द्वारा फिर आ करके नई दुनिया की सैप्लिंग लगाता हूँ तो यह भी जैसे झाड़ है ना । देखो गोल्डन, सिल्वर कॉपर यह सारा है मानो यह नाभी है, यह है ब्रहमा की सारी नॉलेज, विष्णु सो ब्रहमा ऊपर है अंत में देखो ऊपर है ना, देखते हो ना? नीचे विष्णु सो ब्रहमा, अभी ब्रहमा सो फिर विष्णु, वो है नाभी जैसे बैठा है और वह जैसे अंत में । वह फॉर्म दूसरा है पिक्चर का, ये झाड़ के सूरत में है तो यह विष्णु और विष्णु की

नाभि से वह ब्रह्मा तो अभी उसका 84 वाँ जन्म है । अभी परमात्मा को आना है आकर के नॉलेज देना है । तो कहाँ आएगा इधर थोड़ी आएगा, यह तो उसको बनाना है ना, आएगा उधर इसीलिए ब्रह्मा के तन में आते हैं और आ करके उनको भी जगाते हैं । वह भी जो 84वें जन्म में पतित बना है । उनको भी पावन बनाते हैं, उसके साथ उसकी वंशावली को भी पावन बनाते हैं । फिर वो ही वंशावली फिर दूसरे जन्म में जाकर के यह विष्णु बनता है और देवी देवताओं का सूर्यवंशी राजा महाराजाओं का राज्य बनता है तो विष्णु सो ब्रह्मा, ब्रह्मा सो विष्णु । अभी देखो सैप्लिंग हो रही है ना, तो देखो ब्रह्मा इधर बैठा है ना, इधर भी बैठा है उधर भी है तो देखो अभी यह ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा । नाभि में दिखलाया है, यह इधर इसी फॉर्म में समझाया हुआ है तो अभी उसमें क्यों आता है क्योंकि इनका ही तो यह लास्ट जन्म है ना । इन सभी बातों को समझने का है इसीलिए कहते हैं लास्ट सो फास्ट इसीलिए जो लास्ट है एकदम, कहते हैं मैं लास्ट में आऊंगा तो लास्ट मनुष्यों में कौन है और फिर सबसे फर्स्ट मनुष्य कौन है यानी पहला पहला आदमी या पहला पहला मनुष्य तो सतयुग का पहला तो उनको रखेंगे और लास्ट में फिर इसको रखेंगे । तो लास्ट में मैं आकर के सैप्लिंग लगाता हूँ जिससे यह सभी चलता है । बाकी बीच में भी सभी बाय प्लांट यह सभी दूसरे धर्म जो हैं वह इनके बीच में आते हैं । देखो जब कॉपर एज आती है, शुरू होती है तो यह सभी कॉपर एज के बाद शुरू हुए हैं

ना । देखो इसमें भी लगाया है ना, यहाँ यह नहीं है सिल्वर एज से नहीं डार निकली है, गोल्डन एज से नहीं निकले हैं, ये गोल्डन एंड सिल्वर इनका ही चला है देवी देवताओं का । फिर जब देवी देवताओं का टाइम पूरा हुआ है उनकी ताकत कम हुई है तब फिर दूसरे कुछ अपनी-अपनी ताकत के कॉपर एज में आए हैं जब मानो ब्रहमा की रात शुरू हुई है । कॉपर एज से रात शुरू हुई है ना, दो युग दिन के जब रात शुरू हुई अभी तब मानो दूसरे आने लगे हैं फिर उनका भी कुछ कुछ अपना अपना उनकी भी देखो गोल्डन सिल्वर कोपर एंड आयरन । हर एक का भी अपना-अपना टाइम होता है । पहले उनका फ़ोर्स होता है, उनकी ताकत का ऐसा प्रभाव होता है पीछे उनके भी प्रभाव कम पड़ते जाते हैं । अभी सब आयरन एजेड, देखो सब काले आयरन में हैं ना, अभी तो सब अभी आयरन एज है और उनकी भी आयरन एज है लास्ट इसीलिए कहते हैं मैं इस आयरन एज वाले में आऊँ या उसमें आऊँ, किसमें आऊँ, क्योंकि इनको डाल तो नहीं बनाना है ना, बनाना है फिर ये सैप्लिंग ये फाउंडेशन इसीलिए मुझे फाउंडेशन वाले में आना पड़ता है तो कई कहते हैं की क्यों नहीं, कोई क्रिश्चियन धर्म वाले में या कोई बुद्ध धर्म वाले में या कोई और धर्म वाले में । और मैं किसमे, क्योंकि यह धर्म आते ही पीछे हैं तो यह जो धर्म पीछे आते हैं तो इनको पीछे वाले धर्मों को तो स्थापन नहीं करना है ना, उनको करना है वह पहले वाला, इसीलिए पहले वाले धर्म को स्थापन करने के लिए उनके पहले वाले में आना पड़ेगा ना

सोल में । तो यह सभी हिसाब समझने का है इसीलिए कहा है विष्णु सो ब्रह्मा और ब्रह्मा सो विष्णु, यह है चित्र में, देखो यह चित्र कोई हमारा बनाया हुआ नहीं है ना ब्रह्मा विष्णु का । आपको बतलाया न वो दिखलाते हैं कमल के फूल से और कहाँ दिखलाते भी हैं वो लक्ष्मी बैठकर के चापी कर रही है बैठी और वो विष्णु उसके नाभि से ब्रह्मा निकला हुआ है, तो ऐसा ऐसा चित्र दिखलाते हैं परंतु यह सभी चित्रकारों ने बनाए हैं । पिताश्री हमें सुनाते हैं की जब हमने ये चित्र देखा था कि लक्ष्मी बैठे विष्णु को पैर दबाती हैं तो कहा ये तो स्त्री जाति का अपमान है तो मैंने चित्र वालों को कहा की ये लक्ष्मी को काट के, जैसे फोटो से किसी को निकल देते हैं जैसे आपने लक्ष्मी को निकाल दिया था न, तो बाबा कहते थे की हमने उसको कहा की लक्ष्मी को हटा के चित्र से खाली विष्णु रख दो क्योंकि बाबा भक्ति मार्ग में विष्णु का भक्त था न वो तो भक्ति मार्ग में बहुतों का होता है ना जैसे किसी का कृष्ण में प्रेम किसको राम में प्रेम तो बाबा को विष्णु में बड़ा प्रेम था । जभी भक्त था तो बहुत उसका पूजन करता था तो उसको विष्णु का चित्र बहुत अच्छा लगा लेकिन लक्ष्मी दासी बनी बैठी थी तो वो बाबा को अच्छा नहीं लगा । तो कहा लक्ष्मी को निकाल दो, उसको मुक्त कर दो खाली हम को विष्णु का फोटो बना कर दो उसका पूजन करता था । तो वो भगत विष्णु का था देखो उसको उस समय तो पता ही नहीं था कि मैं ही विष्णु हूँ, मैं ही विष्णु था अभी मैं ही अंतिम जन्म में आया हूँ, और भक्ति करता हूँ

। कहते हैं जो बहुत गिरा वो आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी देखो बना न । तो उनका बहुत पूजन करता था । बाबा अपना हिस्ट्री में सुनाते हैं मैं जाता था अपने दुकान पर, ट्रेन में होता था, कहाँ उनको दूसरी जगह जाना पड़ता तो ट्रेन में भी उसका चित्र वह ,पोकेट में रहता था, घड़ी-घड़ी देखता था, घड़ी घड़ी देखता था ऐसे जैसे उस चित्र को जैसे कोई पागल देखता है ना वैसे इतना प्रेम था उसमें, परंतु यह तो पता ही नहीं था कि यह कोई मैं ही हूँ, मेरे ही जन्म का कुछ यह है उसको पता ही नहीं था । इतना प्रेम था उसका चित्र पॉकेट में रखता था बहुत विष्णु के चित्र बनाएं एक तकिये के नीचे रात को सोए तो देख के सोए, जब खटिया पर आए तो एक खटिया पर रखा हुआ होता था, एक पॉकेट में रखा होता, एक दूकान पर रखा होता था तो जहाँ जहाँ जाते वहाँ वहाँ विष्णु का चित्र, तो जहाँ-जहाँ जाए वहाँ विष्णु ही विष्णु ऐसा तो भक्त था तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप अभी समझाते हैं । अभी वो निराकार परमात्मा बैठकर के समझाते हैं की ये तू था लेकिन बहुत जन्म लेते लेते अभी तुम्हारा यह लास्ट जन्म है तो लास्ट जन्म तो कोई दूसरा होगा ना इसीलिए कहते हैं उसका नाम पहले था लखीराज पीछे जब मैंने आकर के ज्ञान दिया एडोप्ट किया ना उसको अपना बनाया तो मैंने उसका नाम रखा है ब्रह्मा । ब्रह्मा अभी नाम पड़ा है नहीं तो वैसे तो साधारण जैसे किसका कुछ नाम है तो उनको लखिराज कहते थे । तो यह सभी बातें बैठकर के बाप समझाते हैं की मैं इसीलिए उनके तन में आता हूँ

क्योंकि ये वही आत्मा है जो अपने जन्म लेते लेते अभी इसका ये 84वाँ जन्म है तो उसी में आकर के मैं फिर सेप्लिंग लगा रहा हूँ । फिर वो ही विष्णु अथवा सूर्यवंशी चंद्रवंशी राज्य के अधिकारी बनते हैं तो यह है अपना भारत का जो प्राचीन अपना धर्म था और हम जिस धर्म वाले थे वह अभी सैप्लिंग बाप लगा रहे हैं इसीलिए कहते हैं अभी जो दूसरे धर्म हैं अभी उनका एंड और दूसरे धर्म वाले भी मानते हैं मुसलमान भी मानते हैं कि हमारी चौदहवीं सदी में कयामत होगी उनका भी अभी-अभी हिसाब पूरा होता है । उनका 1382 या 83 कुछ ऐसा टाइम है उसके भी 15-16 वर्ष हिसाब है और क्रिश्चियन भी कहते हमारी सीग्रीगेशन 2000 वर्ष की है । हम जब हॉस्पिटल गए थे तो एक बड़ी नर्स थी । वह कुछ धर्म की नॉलेज को अच्छा जानती थी तो उसने हमसे भी बात की । हमने कहा आपका, आपके इसका कितना एज है क्रिश्चियनिटी का? कहा 2000 वर्ष । मैंने कहा अभी तो 1964 तो अभी तो आपके बाकी थोड़ी वर्ष हैं । कहा हाँ अभी सीग्रीगेशन होगा उनका । तो वह मानते हैं कि हमारे इस क्रिश्चियनिटी की 2000 वर्ष की आयु है । उसमें अभी उस समय 1964 था तो उसने कहा कि बस बाकि अभी थोड़े वर्ष हैं तो हमने कहा कि चलो फिर आपकी क्रिश्चेनिटी का एंड, तो फिर क्या होगा तो उसने कहा वह तो गॉड जाने, गॉड नोज । वह बेचारी बहुत तो नहीं बता सकी न लेकिन गॉड नोज, जो गॉड जनता है वो अभी बतलाते हैं कि क्या खबर है अब मैं बताता हूँ कि क्रिश्चेनिटी की भी सीग्रीगेशन

और मुसलमानों की भी कयामत और हिंदू भी तो प्रलय मानते हैं ना तो हिंदू धर्म की भी अभी प्रलय । फिर वो ही देवी देवता आदि सनातनी धर्म जो एक धर्म और एक राज्य अभी उनका अपना चलने का है तो वह बैठकर के बाप समझाते हैं कि सभी धर्मों का फिर एंड होन है इसीलिए ये डिस्ट्रक्शन की तैयारियां है कि इसी में ये जो इतनी जनसंख्या इतने धर्म कैसे नष्ट होंगे तो उसके लिए कोई भारी डिस्ट्रक्शन चाहिए ना, बात भी कोई भारी चाहिए ना इसीलिए उसकी यह सब तैयारियां हैं जिसमें इतनी मनुष्य सृष्टि की ये संख्या अभी देखो 500-550 करोड़ की संख्या यह भी नष्ट होनी चाहिए ना । कैसे हो, उसका कोई तरीका भी अच्छा चाहिए ना । तो अच्छा क्या होगा, खाली एटॉमिक बम से भी काम नहीं, कुछ नेचुरल कैलेमिटीज भी काम करेंगे इसीलिए बाप कहते हैं मेरी नेचुरल कैलेमिटीज भी अपने अच्छी तरह से फ़ोर्स में काम करेगी और यह बोम्ब्स से फिर सिविलवार के जरिए इसी इसी तरीके से इन जनसँख्या का इन धर्मों का अभी नष्ट हो करके, अभी साथ-साथ फिर सैप्लिंग भी लगा रहा हूँ क्योंकि सैप्लिंग भी साथ-साथ चाहिए ना । डिस्ट्रक्शन के टाइम पर ही तो चाहिए । ऐसे थोड़ी हो जाएगा पीछे से, नहीं उसके साथ क्योंकि ये अनादी सृष्टि है न तो सैप्लिंग साथ ही चाहिए पुराने में ही सैप्लिंग चाहिए इसीलिए कहते हैं मैं पुराने में, अति पुराने के टाइम पर आता हूँ औ अभी आता हूँ तो सेप्लिंग का भी काम चल रहा है उधर डिस्ट्रक्शन की तैयारियाँ हो रही है । अभी डिस्ट्रक्शन भी होगा

और सैप्लिंग का काम भी पूरा होगा और सैप्लिंग मजबूत हो जाएगी तो डिस्ट्रक्शन । इसीलिए गीता में भी है कि मेरे इस यज्ञ के बल से यह विनाश ज्वाला प्रज्वलित होती जाएग । जितना जितना हम ताकत में आते जाएँगे ज्ञान और योग के उतना उतना उसकी पावर से ये विनाश ज्वाला प्रज्वलित होती जाएगी क्योंकि उनको डिस्ट्रक्शन करना है ना तो उसी से यह दुनिया का अंत हो करके फिर ये नई दुनिया बनेगी । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि बच्चे अभी यह टाइम वह है इसीलिए इस टाइम पर अपना इंडीविजुअली क्या करने का है यह तो है गॉड का प्लान और गॉड बैठकर के समझाते हैं की मेरा प्लान क्या है और मैं किस तरह से इस प्लान को एक्ट में लाता हूँ । उसमें हर एक को इंडिविजुअली अभी क्या करना है वह इंडिविजुअली बैठ करके समझाते हैं कि तुम भी अपने में नई दुनिया की सैप्लिंग लगाओ अर्थात अपने को प्योर बनाओ । प्योर दुनिया के लिए तो प्योर चाहिए ना । प्योरिटी को अपनाएंगे तभी प्योर दुनिया में आएँगे प्योरिटी नहीं अपनाएंगे तो प्योर दुनिया में कैसे आएँगे, इम्प्योर थोड़ी प्योर दुनिया में आएगा । नहीं, दुनिया कोई दूसरी नहीं है यही दुनिया है लेकिन चेंज में आती है तो अपने में ही चेंज लानी है ना, बाकी कोई दुनिया और नहीं दुनिया यही है लेकिन दुनिया बदलती है तो बदलती है तो पहले अपने को इंडीविजुअली बदलना है ना । कैसे बदलना है, बदलना बैठ करके सिखाते हैं तो अभी देखो हम बदल रहे हैं ना । हम पहले बदल रहे हैं

हमारे बदलने से फिर दुनिया बदलेगी तो अभी कैसे बदलते हो, बदलते जा रहे हो ना । चेंज मालूम होती है कि हम चेंज होते जा रहे हैं । चेंज में कोई बड़ी चेंज नहीं होगी, सोल इम्प्योरीफाईड से प्योरीफाईड में सोल को आना है तो प्योरीफाईड सोल बनता है इसीसे हम प्योरीफाईड बनते जाते हैं तो यह है हमारी चेंज । संस्कार को चेंज करना है जैसा जैसा संस्कार वैसा वैसा जन्म मिलता है । तो हमको जन्म किस आधार पर मिलता है संस्कारों के आधार से तो हम पहले संस्कार बना रहे हैं ना अपना आत्म संस्कार को लेती है बनाती है फिर वह जाकर के जैसा संस्कार वैसा जन्म मिलता है । तो हमको अभी अपनी आत्मा के संस्कारों को बदलना है तो अभी बदल रहे हैं हम बदल रहे हैं दुनिया बदलेगी जरूर इसीलिए परमात्मा अभी बाप कहते हैं अभी बदलो, अपने को चेंज करो तो अभी चेंज करना है और चेंज भी चेंज थोड़ा चेंज नहीं थोड़ा चेंज तो फिर थोड़े चेंज के हिसाब से थोड़ा बीच में आएँगे चंद्र्वंशी में और फिर उनके कम कला में आएँगे नहीं तो फिर चंद्रवंशी के भी लास्ट में आएँगे । फिर जल्दी पुरानी दुनिया में जाना पड़ेगा इसीलिए कहते हैं जितना जितना अपने को कंप्लीट बनाएँगे तो कंप्लीट आएँगे । पहली-पहली न्यू वर्ल्ड नए घर में अर्थात जब पूरा सुख है तभी आएँगे तो अभी कंप्लीट चेंज । तो यह कंप्लीट चेंज में फायदा है की आएँ भी नई दुनिया में और फिर हमको जाने में भी डंडे नहीं खाने पड़ेंगे धर्मराज के । नहीं तो फिर हमको अंत में इसी सभी जन्मों का फिर अपना भोगना पड़ेगा

सजाएँ जैसे स्वप्न में भी देखो कई स्वपन आते हैं ना फिर बहुत दुःख महसूस होता है । समझते हैं आदमी कोई मर गया या हमको किसी ने कष्ट दिया उसी समय है तो स्वपन परंतु भासता तो है ना, तो इसी तरह से तो हमको भी भले शरीर तो अभी लेना नहीं हैं क्योंकि शरीरों की तो एंड है क्योंकि अभी डिस्ट्रक्शन है तो इस डिस्ट्रक्शन में शरीर को नाश होना है । लेकिन आत्मा के कर्मों के हिसाब को नाश करने का कौन सा तरीका है तो फिर वह फिर सजाओं के द्वारा तो उन सजाओं से अन्दर आत्मा को पीड़ा रहेगी । जितने-जितने बुरे कर्म किए होंगे न वो भोगेंगे वो महसूस करेंगे कि मैं बहुत दुःखी हूँ । इसलिए बाप कहते हैं उसी दुःख से छूटने के लिए मैं तुमको अभी ज्ञान योग का बल देता हूँ तो वह भी तुम्हारे पाप नष्ट हो जाए । तुम आत्मा धर्मराज की सजाएँ भी ना खाओ तुमको पीड़ा भी न भोगना पड़े इसीलिए जाने के समय में भी तुम अच्छी तरह से सुख से जाओ और आने के समय पर भी तुम सुख में आओ । इसीलिए यह तुम्हारा जाने और आने का रास्ता साफ करता हूँ । तो यह साफ करना चाहिए ना आने की जाने के रास्ते को । तो अभी जाना और आना साफ रास्ते से चाहिए वह बैठ कर के बाप समझाते हैं । नहीं तो कहते हैं सजाएँ खाते जाएँगे । फिर उसी से साफ होना सजाओ से वह बहुत कड़ी है । अभी का दुःख शरीर का भोगना और भी कुछ सुख का है क्योंकि अभी ज्ञान है ना । कुछ दुःख होता है तो कहते हैं कि भाई कर्म भोग है इतनी उसकी पीड़ा नहीं है । परंतु वो सजाओ

की पीड़ा बहुत कड़ी है इसलिए बाप कहते हैं कि अभी उसका ख्याल रखने का है । तो इसी सभी बातों को बैठकर के बाप समझाते हैं कि इन्हीं सभी सजाओं से छूटना है और फिर आना भी इज्जत से है इसे कहते हैं विथ ऑनर पास होना, वह है डिसओनर, सजाएँ तो खाते जाएँगे । भाई सजाएँ भी ना खाएँ और आएँ भी हम अच्छी स्टेज पर तो यह तब होगा जब अभी इसी ज्ञान और योग से हम अपने पापों को दग्ध करेंगे तो यह है विथ ऑनर पास होना। जो विथ ऑनर पास हो जाएँगे वो अच्छी दुनिया में आएँगे या पहले टाइम में आएँगे और जो डिस ऑनर से होंगे वो पीछे पीछे आएँगे जाना तो देखो सबको है न, राम गयो रावण गयो जेक साबू परिवार कहते है न जाना तो सबको है ऐसे नहीं हमको भी कोई बैठ जाना है । जाना तो है लेकिन हर एक जाने का अपना है न, हम विथ ऑनर कोशिश कर रहे हैं विथ ऑनर पास हो जाए और जो डिस ऑनर होकर के जाएँगे वो फिर डिस ऑनर वर्ल्ड में आएँगे, टाइम पर पीछे आएँगे और जो विथ ऑनर जाएँगे वो फिर ऑनरफुली आएँगे नीचे भी पीछे ऑनरफुली दुनिया में आएँगे और वो टाइम अपना सुख का पास करेंगे । तो यह सारी चीजें हैं जिसको हमें समझना है तो वर्ल्ड को भी समझना है अपने लाइफ के जन्मों को भी समझना है और उसी अनुसार हमको अभी क्या प्राप्त करना है इसको जान करके उसी का पुरुषार्थ रखना है तो यह सभी बातें हैं ना जिसको समझना है अच्छी तरह से। तो ज्ञान का मतलब ही है समझ। समझ का मतलब यह नहीं है कि

खाली शास्त्र, ग्रंथ, वेद बैठकर के समझना। नहीं, हमको अपना नॉलेज, व्हाट एम् आई अपने रचता का नॉलेज हमारे सभी जन्मों का नॉलेज और उसमें अच्छे जन्म कौन से हैं उसका नॉलेज और यह सब कैसे बनाएँ उसका नॉलेज इसको ज्ञान कहा जाता है। बाकी ऐसे नहीं हम विद्वान वेद पढ़कर के विद्वान या शास्त्र पढ़कर शास्त्री बना तो ज्ञानी हो गया, नहीं ज्ञानी मीन्स हम को इन चीजों का ज्ञान और प्रैक्टिकल में उसी चीज को हम अपनाएँ, इस को कहा जाता है ज्ञान, इसीलिए बाप कहते हैं वह प्रैक्टिकल बनाना और प्रैक्टिकल का नॉलेज मैं देता हूँ इसीलिए ज्ञान का सागर भी मैं हूँ और फिर बनाता भी मैं ही आकर के हूँ । कैसे बनाता हूँ, तो देखो बन रहे हो न, प्रैक्टिकल देखते जा रहे हो कैसे बनाता है । इसमें कोई क्वेश्चन पूँछने की क्या बात है, कैसे बनाता है, भगवान ने दुनिया कैसे रची, अब देख लो ना तो अपने को रचना में ला कर देख लो कैसे रची, ऐसे रची। बाकी ऐसे नहीं कि कभी मनुष्य था ही नहीं, जो बैठकर के पुतला बनाया । अभी देखो यह बना रहे हैं कैसा बना रहे हैं आत्मा में भी प्योरिटी फूँक रहा है तो देखो यह पंप कर रहा है ना । तो देखो इसी तरीके से बाकी ऐसे नहीं हवा फूँकी जैसे उसमें हवा फूँकते हैं साइकिल में या मोटर में कोई ऐसा बैठके तो हवा नहीं फूकना है न जो बैठके स्वांस फूँका । ये ऐसे जैसे अभी देखो प्योरिटी फूंक रहे हैं हमारे में प्योरिटी धारणा का दे रहे हैं उससे हम फिर प्योरिटी में आ कर के फिर अपने जनरेशन इसी तरीके से पाते हैं । तो भगवान ने दुनिया कैसे रची वह अभी

देखो प्रैक्टिकल उसकी रचना में आकर के देखो कि भगवान ने दुनिया कैसे रची । बाकी कैसे रची खाली पूछने वाले तो कोई कहेगा उसको कि पहले तो दुनिया आग का लाल गोला थी । पहले बंदर ही बंदर थे फिर बंदर से मनुष्य बना, फिर भगवान ने मनुष्य को बन्दर कर दिया ऐसा मनुष्य को रचा वाह! । पहले बंदर अच्छे रहे तो पहले बंदर पीछे मनुष्य वाह! नहीं, बाप कहते हैं ऐसी बातें ही नहीं है । मनुष्य अनादि है । ऐसे नहीं कहेंगे कि मनुष्य कभी थे ही नहीं । हाँ, संख्या कभी थोड़ी है कभी बहुत होती है इसका डिफरेंस पड़ता है । संख्या बढ़ती है घटती है इसका चेंज होता है । चेंज होता है लेकिन मनुष्य था ही नहीं, नहीं मनुष्य अनादि है लेकिन फिर उसको आ करके न्यूमैन बनाते हैं तो जरूर ओल्डमैन होगा उसको न्यूमैन बनाएँगे ना । न्यूमैन का मतलब ही क्या है, उसका माना ओल्डमैन है, मैन तो जरूर है ना । खाली ओल्ड है उसको न्यू बनाते हैं , न्यूमैन का मतलब यह नहीं मैंन ही नहीं है यानी मनुष्य ही नहीं है । नहीं, न्यूमैन का मतलब है कि ओल्ड यानी तमो प्रधान है और दु:खी हो गए हैं, उन्हीं को आकर के न्यूमैन बनाते हैं अर्थात उनमें नई लाइफ अथवा सुख का यह सब भरते हैं । वह कैसे भरते हैं इसीलिए उसको क्रिएटर कहते हैं यह सारी चीजों को समझना है और इसी बात को बैठ कर के बाप स्पष्ट रीति से समझाते हैं तो अभी समझते हो ना अच्छी तरह से कि परमात्मा कौन और परमात्मा ने दुनिया कैसे रची । उस दुनिया के पहले पहले मनुष्य कौन हैं तो पहली रचना जो

डायरेक्ट उसने रची उन्हों को क्या कहेंगे ब्राहमण मुखवंशावली जिसको बैठकर मुख से रचा । मुख से ऐसे नहीं कि आदमी निकल आएँगे, हम ऐसे कोई मुख से थोड़ी निकल आए हैं सारे के सारे, नहीं । हम मुख के द्वारा जो नॉलेज सुनाया है उसी नॉलेज से हम देखो प्रकट हुए हैं यानी उसी समझ से ज्ञान से हम प्योरिफाइड बने हैं तो हम हो गए उसकी मुख वंशावली परंतु कई बिचारे वो ब्राहमण है ना, ब्राहमण लोग वह कहेंगे हाँ, हम ब्रहमा की मुखवंशावली । उन्हों से पूछेंगे तो कहेंगे ऐसा, परंतु कहेंगे मुख वंशावली कैसे रची वह उनको पता थोड़ी है कुछ बता नहीं सकेंगे । लेकिन नहीं, वह तो एक जात का नाम रख दिया नहीं तो असल में अभी प्रैक्टिकल में यह हम ब्राम्हण अथवा ब्रहमनियाँ हैं । यह हैं प्रजापिता ब्रहमा इसको कहा जाता है प्रजापिता, यानी इसी मनुष्य द्वारा बैठ कर के यह नए मनुष्यों की रचना करते हैं । वह परमात्मा तो निराकार है ना । निराकार भी रचेगा तो वह मनुष्य सृष्टि रचता है तो मनुष्य के थ्रू ही तो रचेगा ना । तो थ्रू ब्रहमा वो बैठ कर के देखो रचना इसी तरह से बैठ कर के हम ब्राहमणों को फिर सो देवता बनाते हैं । तो ब्रहमा सो विष्णु तो हम भी ब्राहमण सो देवता । विष्णु वंश में आएँगे ना । विष्णु कुल में आएँगे, देवी देवता पद पाएँगे तो ब्रहमा सो विष्णु हम भी फिर ब्रहमण सो देवता । इसी तरीके से फी देवी-देवताओं पद पा करके रहेंगे फिर सदा सुख पाएंगे तो अभी ऐसे लायक बनना है और अपना ऐसा पुरुषार्थ करना है । कहते हैं परमात्मा जानी जाननहार है

तो जो जानी जानकार है वही तो हमको सब जान पहचान सुनाएगे ना । जानी जाननहार का मतलब कई ऐसे समझते हैं वह जानते हैं कि उसके अंदर क्या चल रहा है, क्या बेकरी याद है या दुकान याद है या क्या याद है वह रीड करे । वह थॉट रीडर थोड़ी है वह खाली बैठकर थॉट रीड करेगा, उससे क्या । ऐसे तो थॉट रीडर्स बहुत है थॉट रीड करते हैं इसके अंदर क्या थॉट है, वो एक नॉलेज है, विद्या है जो वो भी सीखते फिर वो थॉट रीड कर सकते हैं ऐसे बहुत हैं परन्तु वो कोई थॉट रीडर नहीं है । गॉड की जो महिमा है तो इसका मतलब यह नहीं की वो थॉट रीड करता हैं । कोई चोर है उसको अन्दर चोरी का ख्याल चल रहा है, मैं अभी जाउँगा, ऐसा चोरी करूँगा, तो क्या है उसको अगर किसी ने जाना । अगर भगवान जानता है इसके अंदर में यह चल रहा है तो उससे फायदा क्या हुआ, तो क्या चोर तो चोरी कर लेता है । जानते भी वह तो कर रहा है ना, खुनी खून कर रहा है और फिर वह जानता है, वह जानता है, ऐसे ही मुफ्त का वो जानता रहे और चोर चोरी करता रहे तो उसकी जानने से फायदा ही क्या हुआ । उसके जानने का तो कोई महत्व ही नहीं हुआ ना । नहीं, उसके जानने से कोई महत्वता का कर्तव्य हुआ हो तभी तो कहें भाई वो जानी जाननहार है वो बात उसी पर है की वो हमारी सारी कर्मगति को जानता है कि तुम कहाँ थे ऊँचे और कहाँ से गिरे हो वो हमारे इसी करमगति को जानता है । खुद बैठकर समझाता है और फिर हम को ऊँचा बनाता है इसीलिए उसको कहते हैं, देखो वो हमारी

ऊंची स्टेज को जानता है और कहते हैं कि तुम कैसे हो ऊँची स्टेज पर चढ़ो तो हमको देखो, अभी चढ़ा रहा है न । तो हमारे को कुछ ऊंचा उठाया है तभी तो उसका नाम है, बाकी हम चोरी करते रहे, हम पाप करते रहे और वह जानता है, तो जानता है तो अपने घर में रखे जानकर, हमारा क्या फायदा हुआ । हमको कुछ फायदा दिया हुआ होता तब तो हम उसकी महिमा करे ना । तो हम उसकी महिमा करते हैं इसी आधार पर कि वह हमारी गिरावट और हमारी चढ़ावट दोनों को जानता है इसीलिए अभी आ करके हमको चढ़ाता है । हमारे कर्मों को श्रेष्ठ बनाता है इसीलिए उसने बैठकर के हम को उठाया है तभी हम उसकी महिमा करते हैं और कहते हैं कि देखो यह हमारी जानने वाला है और तब हम महिला करते हैं तू जानी जाननाहार है तू ऐसा है तू ऐसा है । किसकी भी स्तुति करते हैं तो कभी उसने कुछ किया है तभी ना, परंतु खाली स्तुति नहीं करने का बाप कहते हैं कि अभी स्तुति करते-करते, पता नहीं है खाली स्तुति करते हो ना, उससे क्या हुआ अभी देखो पता भी पड़ता है और अभी फिर देखो प्रैक्टिकल में आओ तो प्रैक्टिकल में जो तुम एक्संस में आएँगे उससे मेरा शो करेंगे तो बच्चे हैं तो बच्चों का काम है प्रैक्टिकल में बाप का शो करना कहते हैं ना सन शोज फादर स्टूडेंट् शोज मास्टर तो अभी बा कहते हैं कि अभी मेरा शो करो अपनी पढ़ाई से और अपना फॉलो कर करके, फॉलो करो फादर को अच्छी तरह से तो इससे मेरा शो करेंगे भाई बच्चा किसका है कोई बच्चा अच्छा काम करता है तो कहते हैं

यह किसका बच्चा है बच्चा ऐसा है तो बाप क्या होगा तो ऑटोमेटिक बाप की शो हो जाती है ना तो स्तुति हो गई ना वह कहते हैं कि मेरी स्तुति ऐसे करो प्रैक्टिकल में बाकी ऐसे नहीं तू ऐसा, तू ऐसा, मैं पापी, तू ऐसा ऐसा, मैं नीचे, मैं कपटी, मैं दास आदि अपने को नीचे कहना और उसकी खली महिमा ही करना, उससे क्या हुआ । अज्ञान में भी अगर कोई बच्चा हो न, कहे मेरा बाप बहुत अच्छा अच्छा, मैं तो बहुत खुनी हूँ, डाकू हूँ ऐसा हूँ, बाप के सामने बैठ कर के खाली बाप की स्तुति करें और अपने को ऐसा कहे तो बाप क्या कहेगा, नालायक बच्चा तू मेरी इज्जत गँवाते हो, नहीं कहेगा ? तो कहेगा एकदम, तो बाप भी कहते हैं तुम खाली मेरी ऐसे ही स्तुति करते हो, इससे क्या हुआ । ऐसी स्तुति से फायदा ही क्या । तू प्रैक्टिकल में एक्शंस को सुधार, प्रेक्टिकल में अपनी एक्टिविटी को ठीक कर तो उससे फिर मेरी स्तुति आपे ही होगी तुमको करने की दरकार नहीं है । तुम्हारे एक्टिविटी से सब कहेंगे कि हाँ भाई ये किसका बच्चा है, किसने पढाया इसको, यह कौन है, इसको किसने सिखाया तो उससे अपने आप होगा, खाली कहने की क्या बात है । तो यह सब बाप बैठ के अभी प्रेक्टिकल में समझाते हैं और कहते हैं कि अभी प्रैक्टिकल अपने में ऐसी चेंज ले आओ, तो फिर दुनिया भी चेंज रहेगी, समझा अभी, इन बातों को समझते हो ना अच्छी तरह से । अच्छा अभी आज संडे है, हाँ इसको बिचारे को टोली दे दो । तो ऐसा बाप जो बेहद का बाप है, वह बैठ करके अभी हमको यह नॉलेज दे रहा है ।

तो ऐसे बाप से ऐसी नॉलेज को धारण करके और अपने को हम भी तो देखो मास्टर नॉलेजफुल, वह हमारे फादर है नॉलेजफुल और हम हैं मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर बच्चे को कहा जाता है, तो हम हैं मास्टर नालेजफुल तो हम भी कोई कम थोड़ी ही है । हमको भी अभी बाप ने बैठकर के जो नॉलेज दी है उससे हमारी आँख खुल गई है तो हम भी अभी मास्टर नॉलेजफुल बने हैं और फिर बने हैं तो हमको भी इसी ज्ञान से अपना पूरा अधिकार पाने का और पाकर के सदा सुख को प्राप्त करना है हम अपने सुख के लिए ही तो करते हैं ना । सुख कहाँ से होता है कैसे होगा इस बातों से दु:ख है मनुष्य बिचारे जानते ही नहीं हैं । खाली दुःख होता है तो दु:खी होकर के रोता है या चिल्लाता है या हे भगवान, हे भगवान ऐसे-ऐसे पुकारता है । यह बिचारे जानते नहीं है इतना कि खाली हे भगवान् कहने से तो कुछ नहीं है ना । दुःख कहाँ से हुआ, किस बात से हुआ उसका ज्ञान होना चाहिए न । अभी देखो अपने साथ रोशनी है कि ये पाँच विकार हैं, विकारों के कारण हमारे कर्म जो है बुरे हुए हैं और बुराई के कारण हमारा दुःख बना है । अभी दुःख हमको होता है जभी रोग होता है, कोई अकाले मरता है, लड़ाई झगड़े होते हैं, निर्धनता होती है यह सभी बातें हमको दुःख देती हैं । अभी यह दुःख की बातें हमारी बनी कहाँ से, हम निर्धनी कहाँ से बने या हमारे में रोग कहाँ से आया, किसने बनाया, क्या भगवान ने बनाया? नहीं, हमने अपने बुरे कर्मों में बनाया । तो अभी हमको नॉलेज होना चाहिए कि हम बुरे कर्म में ना

करें, जिससे हमारा रोग बने । तो रोग बनाने वाला अथवा निर्धनी अपने को बनाने वाला, अकाले मृत्यु में आने वाला, हम अपने को आपे ही अपने को बनाया । यह भगवान ने नहीं दिया है वह कई समझते हैं भगवान ने रोग भी भगवान ने दिया है, यह सब भगवान करते हैं, यह सब तो भगवान के ऊपर दोष है । भगवान कहते हैं मैं बच्चों को दु:खी थोड़े ही करूँगा । मैं कैसे । लौकिक बाप भी होता है ना, तो कभी बच्चों को दु:खी रखने का ख्याल भी नहीं करता । आप पिता हो, आप अपने बच्चों को कभी दुःख देने का सोंचते हो हाँ मैं इसको दुःख दूँगा ऐसा करूँगा, कभी ख्याल करते हो? कभी नहीं । जब आप लौकिक पिता भी नहीं करते हो तो वह तो पारलौकिक पिता है । यह तो महिमा ही करते हो तू सदा सुख दाता, तू दुःखहर्ता सुखकर्ता, महिमा करते हो ना । ऐसे थोड़ी कहते हो हे भगवान तू दुःखकर्ता, तू सुखकर्ता कभी महिमा करते हो ऐसे? कभी नहीं करते हो । आप उसको कहते हो दुःखहर्ता, हरने वाला है तभी तो दुःख में उसको याद करते हो ना । अगर दुःख देने वाला हो तो याद क्यों करते हो । ऐसे थोड़ी है दुःख देता हो तो उसको कहें तू दुःखहर्ता नहीं, दुःख हमने अपनी भूल से, अपने विकारोंवश हो करके बनाया इसलिए बाप कहते हैं, अब इन्हीं सभी बातों को समझ करके इन विकारों का संग छोड़ो तो फिर तुम्हारे दुःख छूट जाएँगे समझा । तो अभी उससे कैसे छूटें, उसका उपाय क्या है इसीलिए कहते हैं दुःख छुड़ाने वाला तू दुःखहर्ता क्योंकि उसकी तरकीब तुम बतलाते हो, तुम्हारे पास उसकी

तरकीब है । हम तो फंस गए, अभी उससे हम छूटें कैसे हो वो तरकीब तुम ही जानते हो, गॉड नोज इसीलिए कहते हैं तुम जानते हो । उसकी सच्ची-सच्ची बात तुम बताएँगे । कहते हैं गॉड इज ट्रुथ, भाई तुम उसकी सच्ची बातें क्या है, वह यथार्थ तुम बताएँगे । अभी बताओ तो हम छूटें उससे इसीलिए हम याद करते हैं उसको । तो अभी बाप आया है, बतलाते हैं कि किस तरह से तुम इन दुखों से छुटो और अपने को सुखी बनाओ वह बैठ करके समझा रहे हैं । तो अभी बनना चाहिए ना, सीखना चाहिए और सदा सुख पाना चाहिए, समझा । आती है कुछ समझ में बातें ? अच्छा । अभी बहुत समझदार बनते जाते हो ना, तो अभी समझदार, हम समझदार बाप के समझदार बनते हैं तो समझदार खाली ऐसा नहीं समझदार बने हैं परंतु समझदार के ऊपर बहुत रिस्पांसिबिलिटी है । जितने बच्चे बड़े होते हैं तो रिस्पांसिबिलिटी आती है सर पर तो अभी रिस्पांसिबल रहना है । कौनसी रिस्पांसिबिलिटी की हम बने हैं तो अभी दूसरे को भी बनाना है और ऐसे नहीं कि बन करके भी उनसे कोई भूल होती है न तो उसके ऊपर और दंड पड़ता है । समझदार कोई बुरा काम करता है ना तो कहते हैं अभी तुम इतना अच्छा समझदार तुमने ऐसा काम किया तो उसके ऊपर और ही मेहनत पड़ेगी इसीलिए समझदार बनते हो तो कोई बुरी बात फिर करने की नहीं है । अगर करें तो फिर उसके ऊपर नैलत यानि उसकी सजा भारी हो जाएँगी, डबल हो जाएगी । पहले सिंगल थी अभी डबल होगी इसीलिए संभलना है तो

इन्हीं सभी बातों को अच्छी तरह से समझते अब चलो । अच्छा ऐसा बाप और दादा, अभी देखा ना अभी बापदादा को समझते जाते हो ना अच्छी तरह से, तो बाप दादा और माँ की मीठे-मीठे बहुत अच्छे समझदार बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग । अच्छा अभी टोली दो । कौन देगा? अच्छा । आज करुणा को टर्न नहीं मिलता है ना, संडे का ही मिलता है तो खिलाओ । बड़ी थाली है तो उठाने की मेहनत है । शिव बाबा को याद करते हो? पहले तो याद नहीं था । थैंक्स क्या करनी है, कितनी थैंक्स करेंगे, बताओ । याद करो और याद करते, देते जाओ और दृष्टि भी देते जाओ मानो याद कराते जाओ । देखो अपना योग कैसा है? अटेंशन देखो जैसे किसी को कहा जाता ना अटेंशन, जो ड्रिल टीचर होते हैं तो कहते हैं अटेंशन । अटेंशन कहाँ? अटेंशन कहाँ ? ऐसे नहीं अटेंशन हमारे में , बुध्ही बाप की याद में, अटेंशन । तो अटेंशन, तो यह भी अपना योग में बिठाते हैं तो अटेंशन खिंचवाने के लिए, उसमें आँखे बंद नहीं, अटेंशन हो और आंखें क्यों बंद करें, अंदर थोड़ी कुछ देखने का है । बंद नहीं, खुला । तो अपने सब कायदे, कभी उबासी नहीं देना, कभी-कभी क्लास में बैठे-बैठे कोई उबासी देते हैं ना, तो समझते हैं शायद यह पढ़ने में सुस्त है । जो इस पढ़ाई भी चुस्त होते हैं ना वह कभी उबासी नहीं लेते । स्कूल में बच्चा जाए और उबासी देते रहे तो क्या कहेंगे उसको यह सुस्त है, नहीं चुस्त, यह पढ़ाई का है तो पढ़ाई में बड़े चुस्त रहना चाहिए और कभी झुठके नहीं, वह नींद के झुटके,

इसमें तो आंखें खुल जानी चाहिए । पढ़ाई है ना, नॉलेज है तो आँखें खुल जानी चाहिए और उबासी भी नहीं, यह भी नहीं, यह भी सभी जैसे डांस करता है । हमारे बाबा हमारे पास मधुबन में आएँगे ना तो किसी ने उबासी दे दी क्लास के समय तो कहेंगे कि यह कोई काम का नहीं है, इसको कमाई का शौक नहीं है खाली खाने वाला है ऐसे ही, कमाई करके नहीं जाने का है । जो कमाई वाले हैं उसकी तो नींद खुल जाती है और सुस्ती वुस्ती चली जाती है तो हम बतला देते हैं कि फिर आएँगे उधर तो फिर अच्छी तरह से सब मैनर्स और सब बातें ध्यान में रखनी हैं । रूहानी मैनर्स और ये सभी बातें अपने को ऊँची-ऊँची उठा देती हैं न और रॉयल मैनर्स रखने हैं, अभी हम बहुत रॉयल बनते हैं । अभी बाप पढ़ाने वाला हमको बाप, हम किस के स्टूडेंट हैं, कोई ऐसे वैसे कॉमन टीचर के नहीं हैं, हमारा टीचर वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी है, नॉलेज फुल गॉड हम कहते हैं । तो अभी जब हम उसके स्टूडेंट है तो हम को कितना नशा होना चाहिए और इस पढ़ाई की स्टेटस कितनी ऊँची है तो ऐसी लेनी चाहिए ना । सबको दिया ? कोई भूला है, कोई भूला हो तो हाथ उठाए । क्यों इसमें हमको चने वने नहीं दिया है दादी ने । दादी के चने खलास हो गए । दादी देगरा थोड़ा बनाती है, अच्छा, हम थोड़ा दे देते हैं, दादी.... दादी क्या हाल तेरा हुआ आज? अपना ले आई है, अभी उसको चलने वाला देना होगा । कुछ तो हमेशा ज्यादा बनाना चाहिए, ज्यादा चीज होए फिर दिन है न तो काम में आ जाएँगे । पीछे बचेगा तो काम में

आएगा भाई रात का है तो दूसरे दिन खाने में जरा हो जाता है । बचा तो भी क्या हुआ फिर दूसरी बार खाना है क्या है इसमें । ज्यादा बना लिया तो क्या, बड़ी दिल करनी चाहिए, छोटी दिल नहीं । देखो, हमको बड़ा बाप मिला है ना, अच्छा! नहीं बेचारी मेहनत करी है, छोटा देगरा बनाया है, बड़ा बड़ा बनाने में वो जरा बड़ा- बड़ा करना पड़ता है ना, घुमाना पड़ता है । हमारे पास मधुबन में तो देखो पौने चार सौ इकट्ठे रहते थे । पौने चार सौ का खाना इकट्ठा, तो उनके लिए कितना चढ़ाना पड़ता, चावल चढ़ाना पड़े तो देखो कितना और पौने चार सौ का चावल कितना बनेगा बताओ और दाल चढ़ाने के लिए कितना तो इतने-इतने इतने-इतने, तवा इतना मानी रोटी पकाने का, जिसमें दस-दस बारह-बारह रोटी आए फिर वह थोड़ा जल्दी-जल्दी पकाए ऐसे, तो वह प्रैक्टिस हैं न । इन बिचारो को बड़े बड़े ठांव से बनाने की प्रेक्टिस नहीं है न । तो छोटे ठांव में दो जनी बैठती है और खाना बनाने की प्रेक्टिस है । नहीं तो बड़े-बड़े की तो थक जाए । और बनाना है अपने हाथ से । उधर तो वो बीमार पड़ जाएगा वो हार्ड वर्कर का । वो देखो हमारी एक ही भंडारी है शुरू से चली आती है, भोली आएँगे न मधुबन, हम दिखलाएंगे, यहाँ पहले हिर्द्या थी परंतु यह भी मददगार थी बहुत समय से, बहुत समय से चली आई है । अभी तक भी चलती रहती है और इतना इतना डेग बनाती है उसका रोज का काम है जैसे घर में शादी होती है ना, शादी में बड़े-बड़े थांव में बनाए तो हमारे पास रोज शादी । बाबा कहते हमको बहुत कन्याएँ

है, इन सब की शादी करानी है ना शिवबाबा से । उसके साथ उसको सगाई तो हमारे पास रोज शादी है । रोज हम सबकी सगाई कराते हैं शिव बाबा से, उससे अपना कनेक्शन तोड़ दिया है वह उसका हथियाला बाँधते हैं, रोज उसका बुद्धि लगाओ, बुद्धि बाँधना उससे या हाँथ बाँधना तो हाँथ ऐसा नहीं बाँधना, उसका तो हाथ ही नहीं है ना तो बाँधना है बुद्धि तो इसलिए बुद्धि का कनेक्शन जुटाना है तो हम तो रोज शादियाँ करते हैं बच्चों की बुद्धि लगाओ, बुद्धि लगाओ, बुद्धि का हथियाला बाँधते हैं, हमारे पास रोज शादी तो रोज डेगियाँ चढ़ती हैं इसीलिए देखो अपना रोज शादियाँ । अभी यह सच्ची इसमें से कभी हमारा कोई दुःख नहीं । शादी माना शादमाना शादी माना दुःख का थोड़ी । वह तो बिचारी जाती है विकारों में गिरती है फिर उसको कहते हैं हनीमून । हनीमून है, हनीमून माना विकार में गिरना और पाप का भागी बनना उसको थोड़ी हनीमून कहेंगे । हनीमून तो देखो वो देव्ताएँ थे जिनका सच-सच पवित्रता के बल से संतान पैदा करते थे । उनकी संतान पवित्रता के बल से इसीलिए तो उन्हों के पास कभी कोई दुःख अकाल मृत्यु ये सब नहीं था । अभी तो है ही विकारों से । यह है भोगबल की दुनिया, वह है योग बल की दुनिया, पवित्र दुनिया । अच्छा खाओ ।

17. रचना और रचयिता का ज्ञान

रिकॉर्ड:

कौन आया मेरे मन के द्वारे पायल की झनकार लिए.......

ऐसा कौन है, जिसको आँख से देखा नहीं जाता लेकिन दिल पहचानती है । ऐसा कौन है? क्यों राम जी, बाप । बेहद का बाप । जिसको निराकार बाप कहो । शरीर के पिता को साकार, वह निराकार । तो निराकार बाप जिसको निराकार परमपिता परमात्मा कहा जाता है, वो इन आँखों से भले देखा नहीं जाता लेकिन जाना जाता है, पहचाना जाता है । ऐसे नहीं आँखों से नहीं देखा जाता इसीलिए वो कोई चीज ही नहीं है । आँखों से देखने के लिए तो यहाँ का भी सांसारिक पदार्थों में भी कई चीजें हैं जो हम आँखों से नहीं देख सकते हैं परंतु उसका मतलब यह तो नहीं है कि वह कोई चीज ही नहीं है । तो जबकि सांसारिक पदार्थों में से भी हम कोई चीज आँखों से ना देख करके उस चीज की हस्ती समझते हैं कि है , तो वह तो परमपिता परमात्मा है ना । तो ऐसा नहीं आँखों से नहीं देखते हैं तो इसका मतलब वह कुछ है ही नहीं । नहीं, वो है । है तो क्या है वही तो बैठ कर के स्वयं जो है वही समझाता है मैं क्या हूँ । तो अभी उसी बेहद बाप से परिचय मिला है कि मैं क्या हूँ । हूँ तो एक स्टार लाइट, बिंदी कहो, स्टार

लाइट कहो, बहुत छोटी लेकिन छोटी में यह सब बड़ा, जिसमें यह सब बेहद की नॉलेज, और उसका बेहद का कर्तव्य का पार्ट भरा हुआ है । इसी तरह से हम आत्माएँ भी बहुत छोटी सी हैं बिंदी, स्टार लाइट लेकिन उसमें हमारे कितने जन्मों का यह पार्ट भरा हुआ है । जैसे रिकॉर्ड है तो रिकॉर्ड में गीत भरा हुआ है । देखो यह रिकॉर्डस का बॉक्स है न, कितने रिकॉर्ड पड़े हैं । तो यह मानो आत्माओं का भी बॉक्स है जिसको निराकारी दुनिया कहेंगे । वह है आत्माओं के स्टॉक का बॉक्स जैसे इस बॉक्स में बहुत रिकॉर्ड पड़े हैं, उसी तरह से आत्माओं के भी स्टॉक का बॉक्स इनकॉरपोरियल वर्ल्ड कहो या उसको कहो आत्माओं के स्टॉक का बॉक्स, जहाँ स्टॉक रहती है और फिर उसी स्टॉक से नंबरवार टाइम अनुसार, जैसे-जैसे जब जिसका पार्ट है आत्माएँ इस कारपोरियल वर्ल्ड में आती हैं पार्ट बजाने । जैसे इस रिकॉर्ड को निकाल करके ग्रामोफोन पर चढ़ाया जाता है, तो चढ़ाया जाता है तो उसको फिर नीडल, यह रखते हैं और फिर वो बजता है, ठीक है ना । इसी तरह से वह निराकारी आत्माएँ भी यहाँ आती हैं, शरीर का आधार लेती है तो इसके साथ वह फिर बोलती है, ये मानो उसको फिर नीडल लगी वो जैसे बजता है फिर यह टॉकी हो जाता है । नहीं तो आत्मा साइलेंस शरीर के बिना, तो शरीर भी कुछ साइलेंस, शरीर भी कोई काम का नहीं और आत्मा भी जो है ना वह साइलेंस । जब दोनों का मेल होता है तो फिर बजता है, फिर टॉकी । तो रिकॉर्ड इसमें पड़े हैं तो भी ग्रामोफोन साइलेंस में पड़ा है जब दोनों का मेल

होता तो फिर बजता है । ऐसा होता है ना तो यह सभी चीजें समझने की । तो बाप समझाते हैं सभी आत्माएँ जो हैं ना उनको सबको शरीर में आना है और शरीर लेना शुरू किया आत्मा ने तो उसको बहुत शरीरों में जन्म लेना पड़ेगा । ऐसे नहीं शरीर ले करके फिर वापस चली जाए वहाँ । नहीं, उनको जितना जितना टाइम है पार्ट बजाने का वह शरीर उनको लेने ही है । फिर शरीर लेने का भी स्टेजिस हैं । बाप बैठकर समझाते हैं कि जब पहले पहले जब आत्मा आती है ऊपर से, शरीर लेती है तो पहली आत्मा प्योर है इसलिए उनको शरीर भी अच्छा मिलता है । पीछे जितना-जितना शरीर लेते जाएँगे जितना जितना टाइम होता जाएगा फिर सब स्टेज नीचे पड़ती जाएगी । तो जो आत्मा सबसे पहले आती है शुरू शुरू में यानी गोल्डन एज में उनके बहुत जन्म होंगे, जो पीछे आएँगे सिलवर कॉपर एंड आईरन एज में, देखो अभी भी कई आत्माएँ आती हैं स्टॉक की वृद्धि होती जाती है, संख्या बढती जाती है न, तो उसका माना अभी भी उतरती जाती हैं आत्माएँ । नहीं तो इतनी सोल्स कहाँ से आती है । यह मनुष्य की संख्या जो वृद्धि होती है वह कहाँ से होती है । जो मरते हैं वह भी तो जन्मते ही हैं, फिर अगर जो मरते हैं वही जन्मते होते तो फिर स्टॉक इक्वल रहना चाहिए ना । नहीं यह वृद्धि भी होता है तो उसका माना स्टॉक बढ़ता है तो कोई स्टॉक घर है ना जहाँ से आत्माएँ आती हैं । तो आती भी है और जो मरते हैं वह भी यहाँ ही जन्म लेते हैं । अभी जाने की तो बात है नहीं ऐसे नहीं जो मरते हैं

वह जाते हैं दूसरी आती है नहीं जो शरीर छोड़ते हैं वह भी एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेते यहाँ ही हैं और स्टॉक वृद्धि को भी पाता जाता है संख्या बढ़ती जाती है उसकी माना नई आत्माएँ भी आती जाती है जो यहाँ स्टॉक बढ़ता जाता है । तो जो अभी आती होंगी उसके बाकी कितने जन्म होंगे क्योंकि आयरन एज का अभी एंड है तो उसका क्या एक-दो जन्म होंगे सो भी छोटी आयु का क्या जन्म होगा । तो इसी तरह से बाप बैठकर के समझाते हैं कि जो-जो आत्माएँ शुरू से आती हैं उनके बहुत जन्म और जो पीछे-पीछे आती है उनका कम । जो शुरू में आत्माएँ आती है उनका तो बहुत में बहुत 84 जन्म और कम से कम दो जन्म भी हो सकते हैं । ऐसे भी जो लास्ट में आती हैं देखो अभी जो आ रही है उनका क्या होगा, एक दो जन्म भी नहीं । अभी लास्ट में, अभी तो डिस्ट्रक्शन का टाइम है बाकी थोड़े टाइम में उसकी बाकि क्या है तो इसीलिए बाप कहते हैं देखो बहुत में बहुत 84 जन्म, कम से कम दो जन्म जिसको मैक्सिमम मिनिमम कहा जाए । तो बहुत में बहुत कहो 84 जन्म और कम में कम दो । इसी तरह से यह जैसे झाड़ होता है ना, झाड़ बढ़ता जाता है, जो जड़ है जड़ का आयु झाड़ में गिनेगे लास्ट तक भाई कहेंगे जड़ को पैदा हुए बहुत टाइम हुआ तो इसकी एज बहुत हुई झाड़ में और यह डार का टाइम थोड़ा कम रहा फिर दूसरा छोटा डार फिर टार फिर टारियां पीछे लास्ट में भी छोटे छोटे पत्ते निकलते हैं तो कहेंगे यह तो अभी अभी हुआ है अभी-अभी इसी झाड़ का लास्ट है, इसको खत्म होना है । तो

यह अभी-अभी आया है तो इसकी आयु छोटी । तो झाड़ में भी नंबरवार जड़ की आयु टाइम ज्यादा टार की उससे टारियों की उससे कम, टारी की उससे कम फिर छोटी-छोटी टारी निकलेंगे तो फिर कहेंगे अभी अभी निकली है अभी अभी खत्म होंगे । इसी तरह से यह मनुष्य सृष्टि रूपी भी एक वृक्ष है । इसीलिए गीता में वृक्ष का नाम लिया हुआ है कि यह मनुष्य सृष्टि एक वृक्ष सदृश्य है । इसकी वृद्धि वृक्ष सदृश्य होती है और फिर इसका अनादि है यह सेप्लिंग लगती है, यह वृक्ष सेप्लिंग लगने वाला है । तो इसी तरह से बाप बैठकर के समझाते हैं कि बच्चे अभी जो टाइम है, ये वृक्ष वृद्धि को पा चुका है । अभी यह जड़जड़ीभूत अवस्था को पा चुका है, वृद्धि को पा चुका है । बाकी भी जो वृद्धि होगी वह भी अभी जल्दी जल्दी होती जा रही है लेकिन अभी एंड तो पहुँच गई है ना । तो अभी एंड इसीलिए बाप कहते हैं अभी यह जड़जड़ीभूत अवस्था को पा चुका है । अभी इसको खत्म करके फिर नया सेप्लिंग लगना है, फिर न्यू वर्ल्ड । तो यह सारी है मनुष्य के अनेक जन्मों का सृष्टि का चक्कर जिसको समझना है । और है एक आत्मा देखो बिंदी स्टार लाइट उस एक एक आत्मा में कितने जन्मों का पार्ट भरा हुआ है । तो यह तो हुआ हम आत्माओं का फिर परमात्मा का भी । वह भी तो है आत्मा ही है ना । वह भी स्टार लाइट है ऐसे नहीं उसका शेप बड़ा है, हम छोटे हैं क्योंकि वह बड़ा है इसीलिए वह बड़ा है नहीं । वैसे आप लोगों ने देखे होंगे ना वो बहुत कई शिवलिंग की पूजा करते हैं और एक यज्ञ भी

रचते हैं । फिर वह छोटे-छोटे शालिग्राम बहुत शिवलिंग बनाते हैं उसका एक यज्ञ करते हैं । तो वह बहुत शालिग्राम बनाते हैं उसको कहते हैं शालिग्राम छोटे-छोटे बनाते हैं, एक बड़ा बनाते हैं शिवलिंग । उसको शिवलिंग कहते हैं और बाकी सब छोटे-छोटे उसको शालिग्राम कहते हैं । तो इनका भी यही अर्थ है की छोटे-छोटे माना आत्माएँ । आत्मा का भी शेप तो वही है तो आत्मा शालिग्राम और वह परमात्मा शिवलिंग परंतु उसका ऐसा नहीं वह बड़ा है उसका साइज और हम छोटे छोटे हैं, नहीं । हमारा साइज और उसका साइड एक ही है । बाकी फर्क किसका है कि हम जन्म मरण में आते हैं, हमारी लाइट डल हो जाती हैं । ऐसे समझो जैसे यह स्टार्टस है किसी की डल लाइट है किसी की तेज लाइट है ऐसे है ना । इसी तरह से हमारे में भी जितनी-जितनी प्योरिटी है इतनी तेज है और जितनी जितनी इंप्योरिटी है तो डल है फिर डल पड़ते-पड़ते ब्लैक । जैसे चंद्रमा को ग्रहण लग जाता है ना वो काला पड़ जाता है वैसे आत्माएँ मानो काली पड़ गई है । बाकी परमात्मा को तो ग्रहण नहीं लगता है ना माया का इसीलिए वह एवर प्योर और एक वही है जिसके ऊपर कोई आवरण नहीं । एक वही आत्मा जिसको इसीलिए ही परमात्मा कहा जाता है क्योंकि हम सब में उस एक को ही कोई माया का ग्रहण नहीं लगता है क्योंकि आते ही नहीं जन्म मरण में । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए बाप कहते हैं देखो मैं आता हूँ, मैं आ करके अपना परिचय देता हूँ । तो अभी देखो भले आँखों से देखने की चीज

नहीं है लेकिन अभी पहचानते हैं अच्छी तरह से कि हाँ हम कौन हैं, हमारा पिता कौन है । अभी उसको पिता भी क्यों कहते हैं क्योंकि उससे हमें वर्सा प्राप्त होता है इसीलिए हम उनको पिता भी कहते हैं और वह हमारे रचता भी हैं । तो रचता को पिता कहा जाता है जैसे लौकिक में भी बाप बच्चों को क्रिएट करते हैं तब उनको फादर कहते हैं । तो इसी तरह से वह भी हमको क्रिएट करते हैं परंतु क्रिएट का मतलब यह नहीं कि आत्माएँ कभी है ही नहीं जिसको बैठकर बनाता है, या बिंदिया को बनाता है या स्टार लाइट को बनाता है, नहीं, वह तो अनादि है इम्मोर्टल है । उसको बनाने की उनको जरूरत नहीं है लेकिन उसमें क्या बनाता है वह जो इंप्योरिटी आवरण ग्रहण लगा है ना, उसको उतार कर के वह अपना जो प्योरिटी का पावर है न, वह दे करके हमारी इंप्योरिटी का नाश करके हमको फिर प्योरिटी में ले आते हैं । यह हमारी प्योरिटी हमारे में क्रिएट करते हैं इसीलिए मानो हमारी नई लाइफ नई जनरेशंस, नया यह सभी सुख का वो क्रिएट करते हैं तो उनके द्वारा क्रिएट होता है इसीलिए उनको क्रिएटर कहते हैं । बाकी ऐसे नहीं है कि हम आत्माएँ है ही नहीं, जिसको बैठकर वह बनाता है या हमारे शरीर है ही नहीं जिसको बैठकर के मिट्टी का पुतला बनाता है, ऐसी बातें नहीं है । तो यह सभी चीजें बुद्धि में है कि हां आत्माएँ अनादि हैं, इम्मोर्टल है, परमात्मा भी इम्मोर्टल है । जैसे परमात्मा को कोई बनाया नहीं किसने, उसका कोई क्रिएटर नहीं है वैसे आत्माओं का भी कोई क्रिएटर नहीं है । लेकिन क्रिएटर कहा

जाता है वो किस अर्थ में कि हाँ वह हमारी इंप्योरिटी को नाश करके, जो इसमें इंप्योरिटी पड़ गई उसको नाश करके हमारे में प्योरिटी ले आते हैं इसीलिए फिर हमारी नई जनरेशंस हमारी प्योरिटी से हमको शरीर भी नया, हमारा संसार भी नया मिलता है, हमारी सारी जीवन नई हो जाती है, तो मानो वो वर्ल्ड का क्रिएटर, आत्मा का क्रिएटर इन सब का जैसे क्रिएटर है इसी नाते । तो वह भी उनका पार्ट है, उस सोल का भी जो सुप्रीम सोल है, उसका भी पार्ट है हमको ये पावर देना इसीलिए कहते हैं मैं आता हूँ तुम आत्माओं का अपने साथ कनेक्शन रखने, योग सिखाने के लिए अर्थात मेरे से कैसे कनेक्शन रखो तो तुमको पावर मिले और पावर मिलने से तुम प्यूरीफाइड होंगे और तेरा संसार नया हो जाएगा । सब कुछ नया होगा तो यह है उस बाप का पार्ट यहाँ इसलिए उनको क्रिएटर, डायरेक्ट यह सभी नाम देते हैं । तो अभी बाप कहते हैं अभी फिर से यह टाइम आया है न्यू वर्ल्ड क्रिएट करने का । अभी ओल्ड वर्ल्ड अपना स्टेज पूरा कर चुका है । अभी इसको कुछ भी मरम्मत करने की और आगे चलाने का टाइम नहीं है । अभी कंडीशन एकदम तोड़ने की कंडीशन है इसीलिए कहते हैं, अभी कंडीशन इसकी अब जड़जड़ीभूत अवस्था बनी है, अभी इसका डिस्ट्रक्शन और फिर न्यू वर्ल्ड का कंस्ट्रक्शन इसीलिए देखो मैं आया हूँ यह सेप्लिंग लगाना मेरा काम है, तो अभी मैं अपने काम पर आया हुआ हूँ । उसका काम चालू है अच्छी तरह से । तो अभी कैसे चालू है वह कहते हैं ऐसे भी तो नहीं मैं तो करन करावनहार हूँ ना । मुझे तो

कोई हाथ पाव नहीं है कोई बैठ करके क्या करूं । यहाँ नॉलेज देना है उसके लिए मुख लेना पड़ता है क्योंकि कंस्ट्रक्शन के काम में मुझे नॉलेज देना पड़ता है । नॉलेज से प्यूरीफाइड बनाना पड़ता है इसीलिए नॉलेज देनी पड़ती है और डिस्ट्रक्शन के लिए तो नॉलेज देने की बात ही नहीं है ना । उनको बैठ करके थोड़ी कहेंगे ये एटम ऐसा बनाओ, ये तो प्रेरणा द्वारा इसीलिए कहते हैं शंकर द्वारा वह विनाश का प्रेरक बन करके, यह देखो फिर बैकबोन तो मैं ही हूँ सबका, तो फिर देखो यह सब अभी उसी तरह से वह बुद्धि काम करती रहती है । तो देखो विनाश, डिस्ट्रक्शन । और डिस्ट्रक्शन के लिए तो सिर्फ मनुष्य तो नहीं है ना, खाली यह बोंब्स आदि, उसमें तो नेचुरल कैलेमिटीज भी है फिर उसको क्या बैठ कर के सिखाऊँगा । ऐसे तो बात ही नहीं है ना तो जैसे वो टाइम है मैं हूँ ही बैकबोन इन सब का प्रेरक तो उनको भी प्रेरणा से, तो नेचुरल कैलेमिटीज से भी और यह बोम्ब्स आदि से भी सिविल वॉर के जरिये उसकी बुद्धि से देखो काम ही ऐसे बनते हैं । बिचारे कितने सुधार के करते हैं लेकिन सुधरना तो इसी तरीके से है ना । वह काम ही ऐसे बनते चलेंगे जिसमें टक्कर खाते रहें, टक्कर खाते रहें, खा-खा कर के एकदम क्लश आ जाएगा तो फिर एकदम ख़त्म हो जाएंगे सब । तो यह सभी बातें बैठ कर के बाप समझाते हैं कि इसी तरीके से मेरा काम है यह डिस्ट्रक्शन, कंस्ट्रक्शन और फिर जो कंस्ट्रक्शन करता हूँ, उसी की फिर पालना करने के लिए फिर उनको भी लायक बनाता हूँ । यह देखो अभी

अपन को कंस्ट्रक्शन वाली जो दुनिया है, उसमें हम सदा सुख पाते चलें उसकी प्रालब्ध भी हमारे में बनाते जा रहे हैं ये बहुत जनरेशन में हम उसका फल पाते चलें । तो उसकी पालना लायक भी बनाते हैं तो पालनहार भी हो गया ना। हमारे पालनहार भी हो गया, हमारे कंस्ट्रक्शन करने वाला भी हो गया तो डिस्ट्रक्शन तो इसीलिए उसको कहते हैं विनाश, स्थापना पालना कर्ता । परंतु है करन करावनहार । बाकी ऐसे नहीं जैसे कई इसका अर्थ समझते हैं कि वह विनाश, स्थापना, पालना ऐसे करते हैं यह सब मनुष्य जो मरते हैं ना, कभी कोई मरा, कभी कोई मरा यह जो मरते हैं यह मारता भगवान है यह विनाश करता भगवान है और कई जन्मते हैं, आज के दिन में दुनिया में कितने जन्मते होंगे, यह जो जन्म सबको मिलता है वह भगवान देता है यह क्रिएटर है, वह डिस्ट्रक्शन करता है जो मरते हैं, वह सब भगवान करता है और खाना-पीना जो सबको मिलता है, किसी बिचारे को रोटी मिलती है, किसी को नहीं मिलती है यह सब भगवान करता है । पालना में तो सब चलता है ना किसी को अच्छी रोटी मिलती है, किसी को नहीं मिलती है, कितने बिचारे भूखे मरते हैं तो यह पालनहार । तो कई अर्थ ऐसा समझते हैं कि यह सब पालनहार परमात्मा है, विनाश करता भी परमात्मा है और क्रिएट करता भी परमात्मा है यह सब परमात्मा करता है, परंतु परमात्मा कहते हैं यह तुम्हारे जन्म और मरण और यह पालन मैं थोड़ी करता हूँ । मेरा पालन ऐसे थोड़ी होगा किसी को बेचारों को रोटी मिले, किसी को मिले

ही नहीं और कोई मरे दु:खी बिचारा होकर के मरे, यह मैं थोड़ी बैठकर धंधा तुम्हारा करता हूँ। यह तो तुम्हारे कर्मों का हिसाब है हर एक का । तुम अपने कर्मों के हिसाब से जन्मते हो, कोई राजा के घर में जन्म लेते हैं, कोई कहाँ लेते हैं, यह सब कर्म से अपना जो बनाए हैं और कोई बिचारे मरते हैं तो यह तो तुम्हारा कर्म का था, यह मेरा विनाश स्थापना पालना ये मेरा अर्थ ये नहीं है । मैं कैसे विनाश स्थापना और पालना करता हूँ जिसको उत्पत्ति कहें परंतु हम उत्पत्त अक्षर इसीलिए काम में नहीं लाते क्योंकि कई उत्पत्त से ये अर्थ निकालते हैं की भाई कभी कुछ था ही नहीं, जिससे उत्पत्त किया । स्थापना कहने से यानी कुछ चीज है जिसके ऊपर आ करके स्थापना किया । तो स्थापना से सिद्ध होता है की कोई चीज पहले है जिसके ऊपर स्थापना किया । ऐसे नहीं कुछ है ही नहीं तो उत्पत्त शब्द से कई ऐसे अर्थ निकालते हैं इसीलिए हम उत्पत्ति अक्षर काम में नहीं लाते हैं कि कहीं कोई ऐसा अर्थ ना समझे कि भगवान ने उत्पत्ति की, प्रलय की । प्रलय माना बिल्कुल नाश, कुछ रहा ही नहीं, उत्पत्त माना कुछ था ही नहीं तो फिर उत्पन्न किया । परंतु ऐसे नहीं ना प्रलय होती है, ना ऐसे उत्पत्ति होती है। प्रलय होती ही नहीं है। कई प्रलय का जो मीनिंग समझते हैं कि एकदम कुछ भी नहीं न जल, ना पृथ्वी, ना पानी, कुछ भी नहीं, सब जलमई, जल भी था भला , जलमई फिर तो जल भी होगा ना, कुछ तो होगा ना, परंतु ऐसे भी नहीं है कि खाली जल ही जल था इसीलिए बिचारे कई चित्र

भी दिखलाते हैं न वह पीपल के पत्ते पर कृष्ण छोटा दिखलाते हैं, देखे हैं चित्र में? वो पीपल का पत्ता है जल है, जल के ऊपर पीपल का पत्ता है, उसके ऊपर कृष्ण ऐसे अंगूठा चूसता हुआ दिखाते हैं की बस उस बिचारे के पास ठिकाना ही नहीं था। पत्ते के ऊपर बैठना, जल के ऊपर रहना और ऐसा अंगूठा चूसता रहता है दिखलाते हैं, परंतु ऐसा नहीं है कि एकदम कुछ दुनिया थी ही नहीं, जल के ऊपर या पत्ते के ऊपर कृष्ण आया। इसका अर्थ है, चित्र दिखाते हैं हम देखो ये पत्ते के ऊपर देखा हैं, वो छोटा मिच्नूं, वो मिच्नूं देखो पत्ते के ऊपर दिखलाया है। तुम दिखाओ उठ के, यह देखा है सबने? यह पत्ते के ऊपर मिच्नू दिखलाया है तो यह पत्ता जो है इसी मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का पहला-पहला जो पत्ता है ना, वो पहला पहला यह है इसीलिए इसका है कि पहला पत्ता, तो वृक्ष के हिसाब से। बाकी ऐसे नहीं जल्मई है उस में पत्ते के ऊपर जैसे दिखाया है अंगूठा चूसता हुआ। वह देखे होंगे बहुत भक्ति मार्ग में चित्र बनाते हैं । ऐसे अंगूठा उसके मुख में पड़ा है और पते पर तैरता-तैरता ऐसा दिखाते हैं तो ऐसी बातें नहीं है। यह दिखलाया है कि इस वृक्ष का पहला जो पत्ता है वह फर्स्ट यानी फर्स्ट हुमन जिसको कहें नई दुनिया का, तो पहले यह प्रिंस है ना। पीछे वही श्रीनारायण बना है परंतु पहला तो छोटापन गिनेंगे ना। तो यह सभी चीजें बैठ कर के बाप समझाते हैं कि नई दुनिया का पहला- पहला। बाकी ऐसे नहीं एकदम कुछ है ही नहीं तो यह सभी चीजें और गीता में भी है मैं आता हूं अधर्म विनाश,

धर्म स्थापन करने के लिए तो अधर्म विनाश करने के लिए आया होगा और धर्म स्थापन करने के लिए तो जरूर अधर्मी भी मनुष्य होंगे ना, इसका मतलब ही है कि दुनिया तो होगी ना। दुनिया थी ही नहीं और भगवान आया दुनिया बनाने के लिए तो उसका मतलब दुनिया थी ही नहीं तो ऐसा क्यों कहा मैं आता हुआ अधर्म विनाश और धर्म स्थापन करने तो इसका मतलब अधर्मी मनुष्य थे ना, तभी तो नाश करने आया तो कोई चीज थी ना, जिसका नाश किया और कोई चीज बनाई । तो नाश करने वाली भी तो कोई चीज थी ना, दुनिया थी न तो यह सभी चीजें समझने की हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं कि ऐसे नहीं है कि दुनिया कभी है ही नहीं । मैं आता हूँ दुनिया पुरानी को खत्म करके नई दुनिया बनाने के लिए तो वह सेपलिंग हो गई ना । बाकि ऐसे नहीं एकदम प्रलय, नहीं, नई दुनिया साथ ही साथ बनाने आता हूँ जैसे वह चेंज, यह जेनरेशंस की चेंज तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं अभी फिर उसी काम पर आया हूँ और वही काम कर रहा हूँ । अभी किस में आना चाहिए, डिस्ट्रक्शन की उस ओर जाना चाहिए या कंस्ट्रक्शन कि इस ओर आना चाहिए, यह तो हर एक को अपना निर्णय अपने से समझना है । कोई चाहेगा हम डिस्ट्रक्शन की ओर जाएँ, क्यों नहीं अपना अभी न्यू वर्ल्ड जो स्थापन हो रही है उसमें अपना सौभाग्य ले लें । और आत्मा को पुनर्जन्म में आना ही है । ऐसे भी नहीं है कोई समझे हम ऊपर बैठ ही जाएँ स्टॉक घर में बॉक्स में बैठे ही रहें,

नहीं, रिकॉर्ड भरा हुआ है काहे के लिए, बजने के लिए या भरा रखने के लिए । वह भरा ही पड़ा है उसमें, उसको आना ही है ग्रामोफोन पर, जरूर आना है । ऐसा ही नहीं है कि रिकॉर्ड खाली बॉक्स में रखा रहे, नहीं तो फिर भरा ही किस लिए, काहे के लिए भरा है । तो उसमें पार्ट है, तो रिकॉर्ड में पार्ट है ही, उसको ग्रामोफोन पर आना ही है और यह अनादि है, उसको बजना ही है, उसको शरीर में आना ही है । कोई कहे कि नहीं, हम लीन हो जाएँ । बैठे ही रहे उधर, उसमें लीन हो जाएँ । एक तो लीन नहीं हो सकते जिसका जो-जो पार्ट भरा हुआ है एक दो में मिलते, एक का गीत दूसरा, दूसरे का गीत तीसरा, सबका अपना अपना गीत अपना है न, देखो सब का कर्म का हिसाब अपना है ना, एक ना मिले दूसरे से, मिलता नहीं है इसीलिए सबका अपना है । अनेक जन्मों का ही अपना-अपना है । इसीलिए कहते हैं बच्चे यह तो बातें सब समझने की है कि यह ड्रामा की, बेहद की सब बातें कैसे बनी हुई है, इन्हीं सभी बातों को समझना है । तो यथार्थ रीति से जान करके अभी उसके मुताबिक क्या करना चाहिए । बाकि ऐसे नहीं कि मैं लीन हो जाऊँ, नहीं उसमें लीन नहीं हो सकते, उसका पार्ट अपना है परमात्मा का भी । उसमें कोई लीन नहीं हो सकता है ना । उसका पार्ट अपना है । आत्मा आत्मा में भी लीन नहीं हो सकती है तो परमात्मा में कैसे लीन हो सकेगी, कभी नहीं । आत्मा आत्मा में भी चाहे लीन हो जाए तो भी नहीं हो सकती है । उसका पार्ट अपना उसका पार्ट अपना हर एक का संस्कार अपना तो आत्मा

आत्मा में भी मिक्स नहीं हो सकती तो उसमें कैसे होगी । वो तो है ही सबसे न्यारा । कहते है ना तुम्हारी गत मत न्यारी, तुम्हारा सब कुछ न्यारा तो वह जो है ही न्यारा बिल्कुल, जन्म मरण रहित तो हमारे से उसके मिलने की क्या बात है और मिलने से कोई मतलब भी नहीं है इधर हमको जो स्टेज चाहिए सुख की शांति की इसीलिए हम समझते हैं ना हम उसमें मिल जाएँ, शांत स्वरूप हो जाएँगे । परंतु हमको अपने स्टेज में जो शांति लेने की है वह हमारी स्टेज है ना । ऐसे थोड़ी उससे मिलेंगे तभी शांति होगी, नहीं, हमको अपनी स्टेज में शांति की स्टेज है लेकिन हम वह जानते नहीं हैं । हमको वह अपनी स्टेज प्राप्त करने की है । तो वह हम कैसे प्राप्त करें इसी का बैठकर के बाप समझाते हैं कि तुम मेरे में मिलने की लीन हो जाने की कोशिश मत कर । न तू लीन होगा, ना वह स्टेज कोई ऐसे मिलने की है । तुमको कैसे स्टेज तेरी मिलने की है वह तू मुझसे समझ । वह जो तुम्हारे ऊपर जो ब्लैक आवरण ग्रहण माया का चढ़ा है ना वह उतार तो तू भी अपनी स्टेज पर आ जाएगा । तो तुमको क्या उतारना है तुमको कैसे प्योर बनना है तो उसी तरीके से प्योर बन । बाकि कोशिश करते हो की उसमें मिल जाएँ मिल जाएँ, मिलेंगे क्या? उसमें मिलने का या कुछ ऐसा होने का तो है ही नहीं ना । वह होने की नहीं है । उनसे कनेक्शन रखकर के पावर लेने का है और अपने ऊपर जो ग्रहण चढ़ा है ना माया का, ब्लैक हो गए हो, वह चमक तुम्हारी निकल गई है एकदम, तो वह चमक अपने में लाओ ।

वह मेरे से चमक ले मेरे से वह पॉवर लो, वो शक्ति लो, वो बल लो चमक का, उसी चमक से फिर तुम सदा सुखी बनेंगे । फिर ऐसी चमकीली आत्मा फिर जब शरीर भी लेगी वह भी चमकीले, जैसे देवताओं के शरीर एवर हेल्दी एवर वेल्थी एवर हैप्पी बाकी तुम्हारा ऐसे ही काम है बाकि ऐसे नहीं तुम कोशिश करो मेरे में मिलने की, मेरे मिलने का तो कुछ है ही नहीं । जो है ही नहीं बात, जो स्टेज ही नहीं है, जो होने की नहीं है, उससे कुछ नहीं । जो तुम्हारे को मिलना क्या है, तुम्हारा होना क्या है, तुमको प्राप्त क्या करना है वह तू अपनी समझ ना । तुम चीज क्या हो, तुमको कैसे अपनी चीज अपने लायक बनानी है, अपने कोशिश उसी में रखने की है उसी को समझ । तो यह सभी बातें समझने की है उसी को समझ करके और अपना पुरुषार्थ रखने का है । तो बुद्धि में आती हैं न ये सभी बातें ? तो उसी को समझ के अभी यही पुरुषार्थ अपना रखने का है । अच्छा टाइम हुआ है, दो मिनट साइलेंस । साइलेंस का मतलब है याद करो और उससे पावर लो तो यह ब्लैक आवरण से चढ़ा है ना, वह उतरता जाए, ये उतारना है । याद का मतलब भी यही है कि उससे हमको पावर मिलेगा, शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा याद का कनेक्शन और हमको अपना वह उतारना है । बाकी कोई ऐसे नहीं उसमें मिल जाने की कोई बात है कुछ नहीं । उससे हमको मिलना है कुछ, मिलने का मतलब यह नहीं है कि मिल जाना है, नहीं उससे प्राप्त होना है । उससे मिलना है, क्या प्राप्त होने का है, यह पावर, जिससे हमारी

आवरण अथवा जो कुछ चढ़ा है, यह अज्ञान का अंधकार कहो या माया का ग्रहण कहो उससे हमें छूटना है । माया का बोंडेज कहो । स्वर्गवासी बना रहे हैं । स्वर्ग बनेगा तभी तो स्वर्गवासी भी बनेंगे ना । स्वर्ग ही नहीं होगा तो स्वर्गवास कहाँ करेंगे । अभी सवर्ग ही तो परमात्मा अभी आया है बनाने । तो अभी आया है बाकी कोई दुनिया बनी रखी नहीं है, बनाने आया है । इसी दुनिया को ही उसको बनाना है न । तो जब स्वर्ग बनाने वाला आवे स्वर्ग बनावे तभी तो हम स्वर्गवासी होवें ना । इससे पहले कोई हुआ होगा स्वर्गवासी, कोई नहीं । कैसे होगा, स्वर्ग ही नहीं है, कहाँ है, किधर है । इसीलिए बाप कहते हैं इससे पहले ही नहीं तो स्वर्गवासी कहाँ होंगे, यही बैठे हैं सब । जो मरे हैं इधर ही हैं कोई ना कोई जन्म में । कोई गया ही नहीं है स्वर्ग में । स्वर्ग ही कहाँ है जो वहाँ गए होंगे । स्वर्ग ही मैं अभी आता हूँ बनाने के लिए । अभी जो बनेंगे ऐसे लायक वो फिर स्वर्ग में शरीर लेते, शरीर छोड़ते स्वर्गवास में रहेंगे, यानी स्वर्ग में शरीर छोड़ेंगे शरीर लेंगे । तो वह स्वर्ग का शरीर छोड़ना और लेना वह मरना नहीं है । तो उसको कहेंगे अमर । तो वो दु:ख से शरीर नहीं छोड़ते हैं, अभी तो दु:ख से छोड़ते हैं ना, इसको अकाले मृत्यु कहते हैं । उसको मृत्यु नहीं कहेंगे, वह मालिक हो करके शरीर छोड़ते हैं जैसे साँप एक खाल उतारता है, दूसरी चढ़ाते हैं इसी तरीके से यह एक शरीर पुराना हुआ, छोड़ दिया इसमें दुःख करने की क्या बात है । और ही पुराना कपड़ा छोड़ते हैं, नया पहनते हैं खुशी करते हैं ना, नया कपड़ा मिला

है आज । ऐसा नहीं है? पुराना छूटा तो इसमें भी क्या है । बाल युवा वृद्ध अभी टाइम पूरा हुआ भाई पुराना उतारते हैं नया लेते हैं । पता रहता है न अभी टाइम है उतारने का, अभी नया लूँगा क्या लूँगा । मालूम रहता है इसीलिए वो डर नहीं रहता है । वह दु:ख का तो है ही नहीं जनरेशंस सुख के ही हैं । अभी तो दु:ख है ना तो बिचारे रोते हैं । जिसके घर से कोई मरता है तो घरवाले भी रोते हैं, और वह भी बिचारे दुखी होके हैं । होता है, तो यह दु:ख में जाते हैं ना इसीलिए रोते हैं । कहते हैं स्वर्गवास है परंतु जाते तो दु:ख में है ना तो रोना तभी आता है । आत्मा तो जानती है ना कि वहाँ जाता है दुख में तो रोते हैं तभी । सुख में तो बिचारी जाते नहीं, तो अपन अभी सच-सच स्वर्गवासी होते हैं । तो अभी सच-सच स्वर्गवास बनाने का प्रयत्न करो अपने को । कैसा माताजी अच्छा है? फिर चलेंगी स्वर्ग में? उसके लिए तो फिर पुरानी दुनिया का सब जो अटके हैं कुछ वो छुड़ाना पड़ेगा । नहीं तो कोई पीछे पकड़ेगा तो घसीट के ले जाएगा तो इसीलिए देह सहित देह के सबंधों से बुद्धियोग हटा करके एक में जोड़ना है, उसका पावर खींचने का है । नहीं तो किधर मोह ममत्व लटका हुआ होंगा न तो वो पीछे वाले पकड़ लेंगे फिर बुद्धि उधर चली जाएगी तो अंत मते सो गते । तो फिर ऐसा हो जाएगा । इसलिए बाप कहते अपने को आल राउंड से छुड़ा के बंधनमुक्त हो जाओ, तो फिर मेरे से होगा तो फिर ले जाऊँगा, ठीक है ना । कैसा, अच्छा।

18. सतयुग का स्थापक कौन है

हेलो, ब्राह्मण कुलभूषणों सभी सेंटर निवासी, आज आप सभी को मुबारक दे रहे हैं की आज बेंगलुरु के दूसरे सेंटर पर मम्मा की पदरामिनी हुई है । सभी गोप गोपियों को निमंत्रण देकर बुलाया है । अभी मम्मा की मुरली चलेगी, आप सब सुन लेंगे । कैसे ? ठीक है ना । दूर से जैसे हम मम्मा की मुरली सुन रहे हैं आप भी दूर से साक्षात्कार कर लो, कैसे मम्मा हम सब बच्चों को बहलाती है, हँसाती है, कुदाती है, ज्ञान का श्रृंगार कराती है । ठीक है मधुबन निवासी, अच्छा, अब छुट्टी । अब मम्मा आ रही है ।

रिकॉर्ड :-

एकमात्र सहायक स्वामी सखा, तुम ही सब के रखवारे हो.......

परमपिता, देखो परमात्मा को पिता कहने से मजा आता है । खाली परमात्मा कहने से या भगवान कहने से फीका-फीका लगता है । परमपिता , पिता में रिलेशन यानी संबंध दिखाई पड़ता है कि वह हमारे पिता लगते हैं तो पिता और पुत्र अथवा पुत्रियाँ । आत्मा के हिसाब से तो सब पुत्र हो गए ना, तो हम हैं उसकी संतान, वह है हमारे पिता । अभी पिता से बच्चों को क्या लेना चाहिए? वह जो हमारे पिता हैं, तो पिता के पास हमारा हक है । हक समझते हो ना,

उसके पास हमारा बर्‌थ राइट, इनहेरिटेंस है, जिसको वर्सा कहा जाता है । जैसे बच्चे का हक होता है ना बाप के पास जायदाद का, प्रॉपर्टी का, वैसे उस पिता के पास भी हमारी प्रॉपर्टी है । क्या प्रॉपर्टी है मालूम है ? वह प्रॉपर्टी है, उनके पास स्वर्ग, जिस स्वर्ग के अधिकारी हम बच्चे हैं । उनको तो स्वर्ग को भोगने का दरकार नहीं क्योंकि वह तो स्वर्ग नर्क से ऊपर है ना, लेकिन स्वर्ग को, जो हम ही नर्क में आए हुए हैं तो उन्हों को ही स्वर्ग का अधिकार मिलने का है । तो उस पिता से हमको स्वर्ग का हक मिलना है । वह हमारी जो प्रॉपर्टी है स्वर्ग की, वह उस बाप के पास है तो ऐसे बाप से रिलेशन रखना चाहिए ना । रखेंगे तभी तो हमको वह स्वर्ग का अधिकार देगा ना, अगर रखेंगे नहीं संबंध, तो कैसे मिलेगा इसलिए उस बाप से संबंध रखना है और उससे स्वर्ग का अधिकार लेना है । स्वर्ग का मतलब क्या है, समझते हो? स्वर्ग माना जिसमें हमारी जीवन सदा सुखी रहे । सदा सुख किसको कहा जाता है, देखो हमको आज दुःख किसमें है ? हमारे शरीर को रोग होता है तो हम दु:खी होते हैं, कोई अकाले मरता है, अकाले समझते हो ना है बिगर टाइम के, तो कोई अकाले मरता है तो दुःख होता है कोई लड़ाई झगड़े जो भी अशांति के कारण हैं यह सब होते हैं तो दुःख होता है लेकिन अगर यह हमारे जीवन में बातें ना होवें फिर तो जीवन अच्छी है ना, कभी रोग ना होवे और कभी कोई अकाले मरे ना, हमारे मरने जीने का हमारे पास कंट्रोल होवे, कंट्रोल होने का मतलब है हमारे वश की बात होवे जैसे कपड़े

पुराने होते हैं टाइम पर उतारे जाते हैं, वैसे हम टाइम पर शरीर को उतारे और शरीर लेवें, इसका बल हमारे पास होवे, यह सब बातों का हमारे पास बल होवे, फिर तो ठीक है ना, तो यह हमारे पास था, इन्हीं को ही कहा जाता है हमारी जीवन स्वर्ग लाइफ थी अर्थात हम स्वर्गवासी थे अर्थात् हमारी जीवन सुखी थी। यह सब बल हमारे पास था। आप लोग सब सुन सकते हो पीछे वाले? आवाज नहीं आए तो आगे आ सकते हैं। तो हमारे पास यह स्वर्ग का अधिकार था, लेकिन आज नहीं है। तो अभी उस बाप से अभी अपना रिलेशन, संबंध रखना है और उससे फिर अपना जन्मसिद्ध अधिकार यह पवित्रता, सुख, शांति का लेना है । उसका दाता एक है, कोई मनुष्य के द्‌वारा यह नहीं मिलेगा, कोई देवता के द्‌वारा भी य़ह नहीं मिलेगा, यह मिलेगा परमपिता परमात्मा के द्‌वारा। तो परमात्मा तो एक है ना। परमात्मा के सब रूप परमात्मा के नहीं है, यह समझना भूल है। परमात्मा परमात्मा है, यह तो सब आत्माएं हैं, हम सब उसकी संतान हैं तो सब रूप परमात्मा के कैसे कहेंगे, वह परमात्मा तो निराकार है ना। तो यह सभी चीजों को समझना है। अभी उसी निराकार पिता से परमपिता से हमको अपना हक लेना है लेकिन हक मिलेगा तभी जब हम उसकी आज्ञा का पालन करेंगे। उसकी आज्ञा कौन सी है? उसकी आज्ञा है तुम पवित्र रहो । पवित्र माना पाँच विकार जो है ना, उनको छोड़ो तो फिर तुम पवित्र रहेंगे तो तुम्हारे कर्म अच्छे बनेंगे और अच्छे कर्म से फिर तुम मेरे स्वर्ग के लायक बनेंगे। लायक भी बनना

चाहिए ना, ऐसे थोड़ी स्वर्ग का ऐसे ही सुख प्राप्त होगा। उसके लिए लायक बनना पड़ेगा तो लायक का मतलब है कि हमको पाँच विकारों को छोड़ना पड़ेगा। फिर विकारों को छोड़ने के लिए तैयार हो ? स्वर्ग का वर्सा लेने के लिए तो कहा हाँ, अभी विकार भी छोड़ना पड़े ना। लेने के लिए तो तैयार हो गए और छोड़ने को? तो कुछ तो छोड़ना पड़ेगा ना, बाकी ऐसा नहीं कहता है कि तुम घर बार छोड़ो, पति छोड़ो, बच्चे छोड़ो, वह नहीं, वह नहीं छोड़ना है बच्चे विकार नहीं है, पति विकार की बात नहीं है, उसमें जो विकार है, विकार कौन से हैं? मालूम है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अशुद्ध अहंकार यह हैं पाँच विकार। तो देखो देवताएँ भी तो घर गृहस्ती में थे ना। देवता है ना लक्ष्मी नारायण, मंदिर देखे हैं ना। तो देखो जोड़ी है ना, मर्द भी है, स्त्री भी है, दोनों थे, परंतु दोनों निर्विकारी थे। बाल बच्चे भी थे परंतु निर्विकारी थे। तो अभी बाप कहते हैं कि ऐसे पवित्र रहने का अभी प्रतिज्ञा करो। अपना जीवन पवित्र बनाओ तो पवित्र रहेंगे और मुझे याद करेंगे तो मैं आपको स्वर्ग का अधिकार दूँगा, तो अभी वह प्रतिज्ञा पालन करेंगे ? जब ऐसा पवित्र बनेंगे, तब फिर उस बाप का उसकी जायदाद पा सकेंगे, तो यह तभी मिलेगा तो अभी क्या ख्याल है? अभी पवित्रता धारण करने का यह फिर अपने को पुरुषार्थ रखना पड़ेगा । अभी उसके लिए कहते हैं मैं जो बैठ के शिक्षा का ये कॉलेज खोला है ना, उसमें आओ और आ करके सीखो कि कैसे हम घर गृहस्थ में रहकर के पवित्र रहें, उसके सिखाने के लिए मैंने स्कूल

खोला है । कौन बोलता है, परमात्मा । हमको भी वह पढ़ा रहा है ना, हम भी पढ़ रहे हैं तो हमको सिखाने वाला कौन है? परमपिता परमात्मा, निराकार, तो वह अभी सिखा रहा है, उसने यह कॉलेज खोला है, कहते हैं उसमें आ करके यह कॉलेजखोला तुम यह सीखो, कर्म योग, राजयोग । कहा है ना राजयोग, तो राजयोग का मतलब है कि मैं यह जो योग और ज्ञान सिखा रहा हूँ, पढ़ा रहा हूँ, उससे तुम ऐसे राजा बनेंगे। कैसे? लक्ष्मी नारायण सीताराम जैसे, ऐसी राजधानी का अधिकार पाएंगे अर्थात सदा सुख का। तो अभी बाप बैठ करके समझा रहे हैं कि बच्चे इस कॉलेज में पढ़ो। यह उसकी कॉलेज है, उसने यह खोला है। वह बैठ करके सिखा रहा है और फिर यह सीख कर के फिर उस बाप का अधिकार पाना है । तो अभी सीखना पड़े ना, समझना पड़े ना इन बातों को। तो उसके लिए फिर थोड़ा टाइम देना पड़े, तब हमारा जो गृहस्थाश्रम, गृहस्थ धर्म ऐसा कहते हैं ना, आप में भी कहते होंगे गृहस्थ आश्रम, गृहस्थ धर्म। पति को भी कहा जाता है धर्म पति और पत्नी को कहा जाता है धर्मपत्नी परंतु धर्म अभी कहाँ है, पति पत्नी में धर्म कहाँ है, अभी तो विकार में है तो विकार को धर्म थोड़ी कहेंगे। विकार को क्या कहेंगे अधर्म, ठीक है ना। तो अभी है पति पत्नी का संबंध अधर्म का । अभी बदलकर के धर्म का नाता बनाना है। धर्म का मतलब है पवित्र नाता इसीलिए कहते हैं पवित्र बनाने से फिर तुम्हारा अनेक जन्म पवित्र चलेगा, जिसको जेनरेशंस कहा जाता है। फिर तुम्हारे पवित्रता के बल से

संतान भी जो पैदा होगी ना, वह पवित्रता के बल से पैदा होती है । अभी देखो विकारों से संतान पैदा करते हो तो संतानों में अभी वह बल नहीं रहा है इसीलिए संसार दुःख और अशांति में नीचे गिरता जा रहा है तो अभी कहते हैं अभी पहले पवित्र बल लाओ अपने में फिर पीछे उस पवित्रता से जो संतान पैदा करेंगे उस ताकत से तो वह संतान सुख का होगा। देखो कृष्ण, राम कितने अच्छे संतान थे। वह कैसे पैदा हुए, पवित्रता के बल से। तो कहते हैं अभी ऐसे संतान पैदा करो परंतु ऐसे संतान पैदा करने के लिए पहले अपने मैं बल चाहिए ना, ताकत चाहिए ना। ऐसी अभी ताकत कहाँ है, इसीलिए कहते हैं भगवान, परमात्मा, परमपिता की अभी ऐसी पवित्र जीवन बनाओ और अभी संसार में ऐसी प्रवृत्ति रखो और पवित्र संतान पैदा करो। फिर पवित्र संतान का संसार जो होगा वह सदा सुख का होगा इसलिए आज गवर्नमेंट भी कहती है ना, बर्थ कंट्रोल। अभी वह भी संभाल नहीं सकती है। अब वह भी गवर्मेंट हाई गवर्मेंट आलमाईटी गवर्मेंट वह भी कहती है बर्थ कंट्रोल। तो अभी काहे के लिए, अभी दुनिया बदलती है। अभी यह दुःख की दुनिया बना करके दुःखी हो गए हैं तो इसीलिए बाप कहते हैं अभी बाकी उसके लिए मौत की तैयारियां भी हो रही है। अभी यह दुनिया का बहुत संख्या बढ़ गई है ना, अभी यह संख्या कैसे कम होगी तो उसके लिए देखो अभी मौत की भी तैयारियाँ है, कुछ कुदरती आपदाओं से जैसे यह अर्थक्वेक फ्लड्स उसको भी यह लोग कुछ अपनी भाषा में कहते होंगे भूकंप, यह सब होते हैं ना एक

साथ जिससे भी देखो बहुत मौत होता है तो यह अभी बहुत जोर से होने के हैं सब कुछ इसीलिए अभी परमात्मा कहते हैं अपने को अभी पवित्र बनाओ तो फिर जो तुम्हारी दुनिया रहेगी ना, सदा सुख की रहेगी । तो अभी अपने को सुखी बनाने का साधन समझा कि कौन सा है, कैसे हम अपने को सुखी रखें, पवित्र रह के तो अभी अपने को पवित्र कैसे रखें। अपनी गृहस्थी में रहकर के किस तरह से हम पाँच विकारों को छोड़ें। उसके लिए देखो यह रोज यहाँ उसकी शिक्षा मिलती है और उसके लिए यह नॉलेज है तो उसके लिए फिर जब आप आएँगे थोड़ा सुनेंगे, समझेंगे तो तभी तो फिर उसी प्रैक्टिकल जीवन को बना सकेंगे ना। तो ऐसी जीवन बनाने का यह पुरुषार्थ है और इसमें क्या डिफिकल्ट है बताओ, कोई है डिफिकल्ट बात? कुछ नहीं है। बाकी सहज है और अपने जीवन को उसी तरह से रखते चलना है तो ऐसी सहज बातों को क्यों नहीं धारण करते हो। फिर क्या है, क्या डिफिकल्टी आती है? नहीं तो सुनाओ कि हाँ मम्मा हमको ऐसी डिफिकल्टी है, हम इसी कारण नहीं कर सकते हैं तो आपको रास्ता बता देंगे, राय देंगे कि कैसे करो, बाकी उसमें है नहीं कुछ । आ करके समझना है और ऐसे हमारे बहुत हैं, घर गृहस्थ में रह करके अपनी जीवन बना भी रहे हैं। जो यहाँ आते हो रोज उन्हों को मालूम है कि कैसे घर गृहस्ती में रह करके जीवन को पवित्र बनाएँ। बहुत है यहाँ बैंगलोर में थोड़े हैं, दूसरे भी अपने केंद्र बहुत है जहाँ आते हैं और बहुत अपनी जीवन बना रहे हैं, इसमें डरने की कोई बात नहीं है कि

हम को कोई घर बार छोड़ना पड़ेगा, बच्चे कैसे संभाले, बच्चों को तो संभालना ही है, इन बिचारों का भी तो कल्याण करना है ना । तो माता-पिता में ज्ञान होगा तो बच्चों का भी कल्याण होगा, माता-पिता में ज्ञान नहीं होगा तो बच्चों का क्या होगा तो यह तो और अच्छी बात हो जाएगी न । यह तो और अच्छा ही है, परंतु यह सब ज्ञान कैसे धारण करें, उसको तो आकर के समझना पड़ेगा ना। तो इस बातों को समझो और फिर अपना जीवन बनाओ, बाकि तो ऐसे ही बच्चे पैदा करना, घर गृहस्ती संभालना, वह तो जनावर भी काम करते हैं, करते हैं ना। चिड़ियाएँ हैं, चिड़ियाएँ भी घर बनाते हैं, बच्चे पैदा करती हैं, उसको खिलाती है, पिलाते हैं, जाती हैं बिजनेस करती है, ले आती है खाना फिर खिलाती हैं, नहीं करती है, इतना काम तो वह भी करती हैं, मनुष्य ने भी इतना ही काम किया तो क्या बड़ी बात है तो कोई बड़ी बात है नहीं। तो जितना जनावर काम करें मनुष्य भी इतना ही काम करे तो क्या फायदा तो वह तो जानवर से भी बदतर है। मनुष्य को जो बुद्धि मिली है उससे ऊँचा काम लेना चाहिए ना कहते हैं। मनुष्य जन्म बहुत ऊँचा है तो ऊँचे से ऊँचा काम लेना चाहिए ना कि सादा काम लेना चाहिए, जनावरों वाला, वह भी कर लेते हैं ना तो खाली इतना ही काम नहीं है जिंदगी का, जीवन का। जीवन बहुत ऊँची चीज है और उससे ऊँचा काम लेना चाहिए। गृहस्थ के फर्ज जो है, वह खाली इतने ही नहीं हैं। वह समझते हैं हम फर्ज का पालन करते हैं, यह फर्ज तो चिड़ियाएँ भी पालन करती है,

मनुष्य ने पालन किया तो क्या बड़ी बात है। हमारी जिंदगी के अथवा जीवन के फर्ज कितने ऊँचे हैं, उसको समझना चाहिए और उसको पालन करना चाहिए। फिर क्या विचार है? खाली सुनेंगे, खाली समझेंगे, दर्शन करें, देखें बस देखने से कोई हो जाएगा? कोई डॉक्टर को देखने से डॉक्टर हो जाएगा? नहीं, उसको समझना है ना, वह तो डॉक्टरी नॉलेज पढ़ना है, समझना है तो फिर ऐसा बनेंगे। तो बनने के लिए तो फिर समझना पड़ेगा, इन बातों को समझ करके पुरुषार्थ करना पड़े और दोनों ही नर-नारी दोनों ही समझ सकते हैं बाल बच्चे सभी, सब आत्माओं को अधिकार है कि पिता से अपना जन्मसिद्ध अधिकार लेना । यह बच्चे भी अपना बाप से वर्सा पा सकते हैं यह तो इतना इजी ज्ञान है तो बच्चे को भी अपने पिता का पता देना है कि तुम्हारा असली पिता कौन है । जैसे यह बच्चे को सुनाया, यह तुम्हारी माँ है तो पता लग जाता है कि यह हमारी माँ है, यह हमारा डैडी है, यह हमारी मम्मी है जल्दी बैठ जाता है तो हमारा वह हमारा असली डैडी कौन है, वह है परमपिता तो उनको अगर पता पड़ेगी मैं आत्मा हूँ, मेरा पिता वह है तो देखो उसकी बुद्धि भी उसमें लग जाए । उसका भी कल्याण हो जाए। तो इतना इजी ज्ञान है कि बच्चा भी समझ सकता है, बुड्ढा भी समझ सकता है, कोई भी समझ सकता है। तो इतनी इजी बात को समझने के लिए और तो कोई मेहनत नहीं करनी है, ना कोई आसन लगाना है, ना कोई कुछ आंखें बंद करके बैठना है, कुछ नहीं, खाली काम करते और बुद्धि की याद रखने

की है, बहुत इजी । खाली उनको समझना है, फिर पता नहीं क्या है, अभी क्यों ऐसी सहज बात में क्यों नहीं समझते हैं । यह सब भाषा समझते हैं आप लोग? हिंदी भाषा समझते हो? कुंज कुंज, थोड़ी-थोड़ी, थोड़ी-थोड़ी समझते हैं । हिंदी भाषा समझते हो? नहीं? ओहो! देखो हम क्या अभी बिचारी भाषाएँ भी कितनी सीखें । बहुत भाषाएँ हैं इसीलिए भाषा का भी आप लोगों में से कोई समझ जाए तो फिर अपनी भाषा में समझा सकें। अभी आओ, थोड़ा थोड़ा समझो फिर आपकी भाषा, अपनी भाषा समझ कर फिर दूसरों को समझाओ तो फिर आप लोग देखो अच्छी सेवा करेंगे । अभी देखो इंदिरा नेहरू, विजयलक्ष्मी नेहरू भी हैं ना । वह नाम तो सुनते होंगे अखबारों में, तो देखो वह लोग देश की सेवा करते हैं ना। बच्चे तो उन्हों की भी हैं, बच्चे को भी करते हैं और देश की भी सेवा करते हैं परंतु देश की सेवा बहुतों की सेवा करने से उन्हों को इतना फल भी मिलेगा। यह भी करना चाहिए ना । खाली बच्चों की संभाल में थोड़ी जिंदगी दे देना है, उसके साथ यह भी काम करना चाहिए । अपना जीवन भी सफल बनाना चाहिए और दूसरों का भी जीवन सफल बनाना चाहिए । जैसे सोशल वर्कर होते हैं ना, तो फिर जनता की भी सेवा करते हैं तो आप लोगों की ही समझो और जनता की भी सेवा करो तो जीवन कुछ अच्छी बने, सफल होवे । बाकी ऐसा ही खाली जीवन बनाया, खाया, पिया बस, गया, बस यही काम है, यही जिंदगी है. तो थोड़ी जीवन कहेंगे । तो थोड़ा समझो इन बातों को और अपनी जीवन

अच्छी बनाओ तो अच्छी जीवन से अच्छा फल मिलेगा। अच्छा आप लोगों को देरी होती होगी पता नहीं कहाँ-कहाँ से दूर जाना होता होगा । इन्हों को सवेर छुट्टी लेनी चाहिए, दूर-दूर जाएँगे परंतु हम तो कहेंगे आते रहो। खाली आज नहीं, फिर आओ, हम अभी हैं इधर थोड़े रोज, आप लोगों के लिए रहे हैं की कुछ समझें । फिर आप लोग आओ, कुछ सुनो कुछ समझो और कुछ अपना बनाओ । नहीं तो फिर वह भी टाइम आएगा अभी कहते हैं टू लेट । हम इतना मेहनत करते थे, सुनाते थे, कोई सुनते नहीं थे, पीछे बहुत समय भारी आएगा आगे चलकर के इसीलिए आप लोगों को राय देते हैं कुछ टाइम लेकर के आओ और आकर के समझो । फिर इधर कोई कहेंगे हम को इधर सहज पड़ता है, हम एक को इधर रखेंगे, फिर वह इधर समझाएँगे लेकिन कोई समझने वाले हो ना । कुछ अपना अटेंशन रखो, समझने की कोशिश करो, अच्छा । देखो, यह समझने की बातें हैं ना तो सुननी पड़ती है। बाकी ऐसा नहीं खाली दूर से ही दर्शन किया, उसमें तो कोई बात ही नहीं है। इसमें समझना है इसीलिए जरा पूछना पड़ता है की समझते हो ? खाली दर्शन वाली तो चीजें नहीं है, यहाँ तो प्रैक्टिकल समझकर के प्रैक्टिकल अपना जीवन बनाना है इसीलिए सुनना है समझना है। खाली सुनना भी नहीं है समझना है, खाली समझना भी नहीं है, समझना माना प्रैक्टिकल में लाना है, एक्शंस में लाना तो जो समझा है वह एक्शन में लाना है। एक्शन माना कर्मों में और कर्म में ला करके अपनी प्रालब्ध बनानी है, फिर कर्म में लाते हो

ना। अच्छा कर्म में लाएंगे जितना आप अपना बनाएंगे और जो करेगा सो पाएंगे । ऐसे नहीं है कि यह पुराना है मैं तो पीछे आया हूँ यह पुराना का भी क्या अवस्था बनी है, तो एक दूसरे के गुण ग्रहण करना है अवगुण नहीं उठाना है कि यह पुराने में तो कम ज्ञान है हम तो पीछे आए हैं यही नहीं बना है तो हम क्या बनेंगे । ऐसा नहीं, जो करेगा सो पाएगा । हमको तो हर एक से अच्छा गुण ले करके हमको अच्छा बनना चाहिए । तो हर एक को अपने को देखना है समझा और बाप जो फरमान करता है उसका पालन करना है । स्कूल होता है देखो स्टूडेंट होते हैं ना तो स्कूल में भी देखो कोई नंबर वन आता है कोई मार्क्स कम लेता है कोई फेल भी हो जाते हैं ऐसा भी होता है ना । कोई भी स्कूल है, स्कूल में कोई नंबर आगे होगा कोई पीछे भी होगा तो हमको पीछे वालों को थोड़ी देखना चाहिए । हमको देखना चाहिए जो आगे हैं जो स्कॉलरशिप भी लेते हैं जो आगे आगे बढ़ते हैं उसको फॉलो करना चाहिए । बाकी ऐसे नहीं, भाई यह तो फेल हो गया तो इसमें क्या उठाया, नहीं । अगर हम फेल को देखेंगे तो हम भी फेल हो जाएंगे तो हम को फेल थोड़े ही होना है । तो फेल वालों को नहीं देखना चाहिए । हमको देखना है कि जो जो आगे हैं उन्होंने अपने जीवन क्या बनाई है हम भी बनाए तो स्टूडेंट्स इसको कहा जाता है बाकी ऐसे नहीं की सारा दिन में अवगुण ग्रहण करें इतने इतने बरस पढ़े इन्होंने क्या उठाया । उन्होंने नहीं उठाया समझो तो हम उठाएँगे ना । जो करेंगे सो पाएगा वह तो गीता में भी है

जीवात्मा अपना शत्रु अपना मित्र है बाकी हमको औरों को क्या देखना है । तो इसी सभी बातों को समझना है और फिर भी कोई को ना समझ में आए तो फिर टाइम लेकर के आ करके समझ सकते है । कोई भी ना समझ में आए किसको तो पूँछ भी सकते हो, समझ भी सकते हो । अच्छा अभी दो मिनट साइलेंस करो, परमपिता को याद करो । दो मिनट साइलेंस करो पीछे तो इनको टोली देना नीचे । अच्छा, अभी याद करो अपने पिता को । पिता को जान के याद करना है ऐसे नहीं कैसे भी करें हनुमान के रूप से करें, गणेश के रूप से करें कैसे भी करें नहीं । वह कहते हैं मेरा जो रूप है ना, वह जान के याद करो । मैं हूँ ज्योति रूप, तो मुझे समझ के याद करो । मैं जो हूँ जैसा हूँ वह समझ के याद करो तो वह फिर आएँगे आप लोगों को समझाएँगे । पुराने तो जो सुना है उन्हों को पता है, जो नए हैं फिर उनको समझना है । अच्छा दो मिनट साइलेंस ।

19. सौभाग्यशाली बनने की विधि - 2

रिकॉर्ड :-

आज के इस इंसान को यह क्या हो गया........

यह है आज के भारत की दशा, परंतु अपना भारत सदा ऐसा नहीं था । यह आज की दशा है लेकिन अपना प्राचीन भारत बहुत ऊँचा था । बहुत ऊँचा का मतलब है कि मनुष्य ही बहुत ऊँचे थे । भारत का मतलब ही है हम भारतवासी तो मनुष्य की लाइफ बहुत ऊँची थी और जब भारत ऊँचा था तो हम भारतवासी ऊँचे थे और उस टाइम पर सारी दुनिया ही सुखी थी । आज भारत भी नीचे तो सारी दुनिया भी नीचे । सारी में कहेंगे आज दुःख और अशांति के आवाज के सिवाय और कोई आवाज है ही नहीं । तो यह चीज समझने की है कि आज हमारी ऐसी दशा क्यों हुई है? क्या अभी ऐसी दशा भी बदल कर के, फिर जो अपनी प्राचीन, जिसको गाँधीजी भी कहते थे ना, ये राम राज्य बने, तो राम राज्य भी तो हमारे भारत की प्राचीन जमाने की बात है ना, जिसको गाँधीजी ने भी भावना रखकर के बनाने की कोशिश की लेकिन वह प्रैक्टिकल चीज बन नहीं पाई । तो अभी वह प्रैक्टिकल चीज कैसे बनी थी, कैसे बन सकती है, उसके लिए क्या उपाय है, यह भी तो बातें समझने की है ना । तो वो रामराज्य कहो

या कई जिसको कहते हैं स्वर्ग कहो, स्वर्ग का नाम तो उठाते हैं बहुत, कम से कम जब कोई मरता है, तब तो कहते ही हैं कि स्वर्गवासी हुआ, लेकिन यह पता तो होना चाहिए ना कि स्वर्ग है क्या चीज । अंग्रेजी में भी कहते हैं हेवेनली अबोड गया, लेकिन हेवेन क्या चीज है, जिसको सुख और शांति का स्थान कहा जाए, तो वह भी नॉलेज होना चाहिए कि सुख और शांति की कोई दूसरी दुनिया है, कोई ऊपर है या यही दुनिया जिसमें हम हैं, इसी दुनिया की लाइफ की स्टेज कुछ बदलने की है । तो इसका नॉलेज होना चाहिए कि इसकी स्टेज बदलनी है, दुनिया यही है । ऐसे नहीं है कि दुनिया कोई दूसरी है, दुनिया यह एक ही है । वर्ल्ड वन है, जैसे गॉड इज वन वैसे वर्ल्ड इज वन । यह मनुष्य सृष्टि एक ही है लेकिन इस मनुष्य सृष्टि की लाइफ की स्टेजिस जो हैं ना, वह बदलती जरूर हैं, इसीलिए अभी जो स्टेज है वह तो हाल सुना, क्या है हालत, कैसे रोते हैं, कैसे दु:खी हैं, क्या हाल है । लेकिन ऐसे नहीं कहेंगे कि हमारी सदा ही कोई दुनिया ऐसी थी, नहीं, वह भी दुनिया थी, जिसको स्वर्ग कहने में आता था, सुख शांति वाली दुनिया कहने में आती थी, जिसकी भावना किन्हों ने राम राज्य में रखी, किन्हों ने स्वर्ग के नाम से रखी है, किन्होंने कुछ नाम से रखी है, लेकिन वह हमारी जो स्टेज थी, जिस भारत के लिए नाम भी लेते हैं कि गोल्डन स्पैरो था, तो वह कौन सी चीज है और कैसे बनी थी । उसमें हमारी क्या लाइफ थी जो आज नहीं है, तो उन बातों को समझना चाहिए । जब समझेंगे तभी तो

ऐसी लाइफ को बना सकेंगे ना । तो यह अभी रोशनी मिल रही है । आप लोगों को तो मालूम होगा, क्योंकि आज थोड़े नए कुछ भी पधारे हुए हैं इसीलिए जरा समझाया जाता है कि जहाँ आप पधारे हो, यहाँ की एम एंड ऑब्जेक्ट यही है कि हमारी प्राचीन जो लाइफ की स्टेज थी अथवा हमारी दुनिया जो सुख और शांति वाली थी, वह कैसे बनी थी और कब बनी थी। उसका अभी फिर से कैसे टाइम आया हुआ है और हम भी उसी परमपिता परमात्मा के द्वारा इन सब बातों को समझ रहे हैं क्योंकि इन बातों को जानने वाला है ही एक । सिवाय परमात्मा के हमको इन सभी बातों की रोशनी कोई मनुष्य नहीं दे सकता है इसीलिए इन बातों की रोशनी उसको ही है । उसको माना परमपिता परमात्मा को, जिसको ही कहा जाता है नॉलेजफुल । वह हमारी सारी कर्म गति को जानने वाला है तो वही तो बता सकेगा ना और उसने ही कहा है यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, जब जब अधर्म होता है तब तब मैं आता हूँ । काहे के लिए आता हूँ, इसीलिए ही कि इन बातों की समझ दे करके ऐसी दुनिया बनाने के लिए । तो अभी यह वही टाइम है और यह उनकी ही कॉलेज है परमपिता परमात्मा की, हम सब स्टूडेंट्स हैं । उनके द्वारा वह सीख रहे हैं कि किस तरह से अभी हम अपने प्रैक्टिकल लाइफ को ऊँच बनाएँ, जिसके आधार से जो दुनिया हम चाहते हैं अथवा हम अपने लाइफ में जो सुख शांति चाहते हैं, वह हमको प्राप्त हो क्योंकि मनुष्य दु:खी जो होते हैं ना, दुःख कहाँ से होता है? दुःख को भी समझना

चाहिए कि दुःख किन बातों से होता है। देखो मनुष्य को रोग होता है तो दुःखी होता है, अकाले मृत्यु होता है तो दुःख होता है, निर्धनता होती है तो दुःख होता है, लड़ाई झगड़े होते हैं तो दुःख होता है, यही दुःख के कारण हैं ना । अभी अगर हमारे लाइफ में यह बातें ना हों, फिर तो ठीक है ना । फिर तो हमारी जीवन सुखी होगी। हमारे पास कभी रोग ही ना आवे, कभी अकाले मृत्यु न होवे या मरने जीने का बल हमारे पास होवे और कभी लड़ाई झगड़े और निर्धनता आदि सभी बातें ना होवें, फिर तो हमारी जीवन सुखी हो, फिर तो ठीक ही है ना। लेकिन यह होवे कैसे, ऐसे भी नहीं कहेंगे कि यह संसार का नियम है, रोग होना भी जरूरी है, अकाले मृत्यु होना भी जरूरी है, निर्धनता भी जरूरी है, यह लड़ाई झगड़े भी सदा से चले आए हैं, कई ऐसे सब समझते हैं परंतु नहीं, यह रॉन्ग है। यह समझने की बात है कि हमारी दुनिया की वह भी स्टेज थी, जिस जमाने को ही कहा जाता था स्वर्ग अथवा रामराज्य, जिसकी अपने-अपने शब्दों में, कईयों ने बिचारों ने भावना रखी तो है, परंतु वह प्रैक्टिकल चीज कैसी थी, किस तरह से बनी थी, उनका प्रैक्टिकल चित्र किसी के पास ना होने के वो यथार्थ रीति जान न सकें, तो प्रैक्टिकल तो वह जानने वाला है ना, परमात्मा । वही बता सकते हैं तो अभी वो ही बैठकर बता रहें हैं और समझा रहे हैं कि वो समय भी था, जब हमारे जीवन में कभी रोग ही नहीं था, हमारे जीवन में कभी अकाले मृत्यु यानी बिगर टाइम कभी मरते ही नहीं थे, अभी मनुष्य है, मनुष्य मर जाता है तो

मनुष्य क्या कर सकते हैं, बेबस हैं ना, परंतु नहीं हमारे में वह बल था कि हम अपने शरीर को अपने टाइम पर, अपने बल से उतारते थे, उतारते का मतलब है छोड़ते थे, जब बाल, युवा, वृद्ध स्टेज कंप्लीट होती थी, तब टाइम पर मालूम पड़ता था कि अभी हमारा समय हुआ है, अभी इस शरीर को छोड़ना है और शरीर लेना है । तो वह बल था, लेकिन आज वह ताकत नहीं है । तो यह सभी ताकत हमारे में से क्यों चली गई, जरूर है कि हमारे कर्म की गिरावट हुई है, इसको कहें कर्म भ्रष्ट, तो अभी कर्म भ्रष्ट बनने के कारण हमारी वह ताकत अपने सभी बातों के प्राप्त करने की, यह रोग आदि भी क्यों होता है, यह भी तो कर्म की हीनता है ना । कोई भी दुःख होता है तो मनुष्य कहते हैं कि यह कर्म, तकदीर, किस्मत, उसी पर ही कहना पड़ता है ना, तो यह क्यों कहते हैं? जरूर है कि कर्म ऐसा बनाया है । तो यह कर्म किसने बनाया है? यह कोई भगवान ने थोड़ी बनाया है बैठकर के, हमारे दुःख के कर्म भगवान ने थोड़ी बनाए हैं। अगर भगवान ने हमारे कर्म बनाए, रोग भी भगवान देता है या हमारा दुःख भी भगवान देता है, तो भगवान को हम सुख के लिए याद क्यों करते हैं जब दुःख आता हे तो क्यों कहते हैं की भगवान अभी रहम करो, हे भगवान अभी सुख दे, अच्छी बात के लिए उसको याद करते हैं ना, ऐसे थोड़ी कहते हैं कि भगवान दुःख दे। उसने अगर हमको दुःख दिया होता तो हम उसको हम सुख के लिए क्यों याद करते हैं और महिमा भी ऐसे करते हैं, कि तू दुःखहर्ता सुखकर्ता, ऐसे नहीं उनको

कहते हैं तू दुःखहर्ता सुखकर्ता, नहीं! कभी भी स्तुति में भगवान के लिए कोई ऐसे कहते हैं, हे भगवान तू दुःखकर्ता, नहीं, उनको कहते हैं तू सुखकर्ता और आप दुःखहर्ता, हरता का मतलब ही है नाश करने वाला, तो जो दुःख का हरने वाला है वह दुःख देगा कैसे? यह तो कॉमन समझने की बात है ना कि दुःख कोई भगवान ने नहीं दिया है, यह दुःख हमने अपने भूलवश, अपने विकारों के वश होने के कारण खुद बनाए हैं, विकारों के कारण दुःख बना है, इसीलिए अभी परमात्मा कहते हैं कि जब तलक इन विकारों को नहीं छोड़ा है, तब तलक तुम दुःख से छूट नहीं सकते हो । तो अभी उन विकारों से कैसे छुटकारा पाओ और तुम्हारे कर्म कैसे श्रेष्ठ बने, जिस श्रेष्ठ कर्म के आधार पर तुम्हारी प्रालब्ध श्रेष्ठ बने तो वह बैठ कर के सिखाया जाता है, तो इसी शिक्षा के लिए ही परमात्मा ने आगे भी कहा है ना, यदा यदा, जब जब ऐसा अधर्म होता है, जब इस बात की जानकारी एकदम चली जाती है और पाँच विकारों वश मनुष्य हो जाते हैं, तब मैं आता हूँ और आकर के यह ज्ञान देकर के विकारों से निवृत्त करता हूँ। तो यह है उसी का ही कॉलेज, उसने बैठकर के बस एक अर्जुन को नहीं समझाया था, यह तो गीता का शास्त्र बनाया है, वह तो पीछे शास्त्रकारों ने बैठकर के एक फोरम से शास्त्र बनाया, परंतु प्रैक्टिकल में तो कोई एक के लिए तो नहीं आया ना, वह तो नर नारियों को बैठकर के शिक्षा दी है, जैसे दे रहे हैं । हम भी तो अभी उनके द्वारा यह शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जो सबका पिता है, आप लोगों का,

हमारा, कोई अकेला हमारा थोड़ी ही है, सबका है न, सारी दुनिया का, सभी मनुष्य मात्र का, सभी धर्म का, सबका बाप तो एक ही है ना । परमात्मा तो एक को ही कहेंगे ना। इनकॉरपोरियल गॉड, निराकार परमात्मा एक को ही कहा जाता है और उसको सब मानते हैं और सब कहते हैं गॉड इज वन, तो वो वन तो एक ही चीज है ना, कोई मनुष्य की तो बात तो नहीं है ना और जो भी धर्म स्थापक आए हैं तो उन्होंने भी कहा, खुद अपने को गॉड नहीं कहा, देखो गुरु नानक देव है, उसने भी अपने को कोई परमात्मा नहीं कहा, क्राईस्ट था तो उसने भी अपने परमात्मा नहीं कहा, उसने भी कहा मैं सन ऑफ़ गॉड हूँ, नॉट गॉड बट सन ऑफ़ गॉड और जो भी आए हैं धर्म स्थापक उन्होंने कोई अपने को परमात्मा नहीं कहा, उन्होंने भी परमात्मा की तरफ उंगली उठाई अर्थात उसकी तरफ इशारा किया तो उसका मतलब है कि परमात्मा तो एक निराकार हो गया ना और उसी निराकार को सब मानेंगे । ऐसे तो नहीं है ना, जो धर्म के स्थापन करने वाले हैं, उनको सब मानेंगे। वह तो हर एक का अपने-अपने हैं, जैसे गुरु नानक है, वह सिख धर्म वाला या जिस-जिस धर्म वाले को मानते हैं, सब तो नहीं मानेंगे ना. तो वह तो हो गए धर्म स्थापक लेकिन उन्हों का भी जो पिता, निराकार परमात्मा, जिसको ही कहा जाता है वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी । अभी वह वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी हमारे सारे कर्मगति को जानता है इसीलिए उसका भी टाइम है, एक बार आकर के उसने ही कहा है जब जब ऐसा अधर्म होता है, तब-तब मैं आकर

के सभी के कर्म गति का नॉलेज देता हूँ और कर्म को कैसे श्रेष्ठ बनाओ, वह आ करके समझाता हूँ। तो अभी जहाँ पर आए हो न, यह कोई हमारी कॉलेज या हमारी स्कूल नहीं है, हम भी स्टूडेंट्स हैं, लेकिन पढ़ाने वाला जो है ना, वही है जो बैठ कर के अभी समझा रहा है कि किस तरह से और हमारा यह दुःख कहाँ से हुआ है, क्यों हुआ है, हमारी आगे लाइफ क्या थी, खाली हमारे रोने या पुकारने से तो काम नहीं होगा ना, परंतु वह हमारी स्थिति कैसे बने, वह बैठकर प्रैक्टिकल बैठकर के समझाते हैं कि यह पाँच विकार ही हैं, जो मनुष्य को गिराते हैं। उसी से ही मनुष्य के कर्म भ्रष्ट बनते हैं अभी उसको कैसे सुधारो, इसी के सुधारने से तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ बनेंगे और उसी श्रेष्ठ कर्म से तुम्हारी प्रालब्ध भी श्रेष्ठ बनेगी, जिसके आधार से फिर तुम्हारी लाइफ में सदा सुख प्राप्त होगा यानी एवर हेल्दी एवर वेल्दी एवर हैप्पी यानी सदा सुख के जो साधन हैं वो प्राप्त रहेंगे । तो वह हमको प्राप्त रहेंगे तभी जब हमारे कर्म श्रेष्ठ रहेंगे ना। बिना श्रेष्ठ कर्मों के हमको सुख की प्राप्ति हो ही नहीं सकती है तो हम खाली सुख शांति के इच्छुक रहें, उससे तो काम नहीं बनेगा ना लेकिन वह बनेगा कैसे, तो हमको उसके उपाय करना होगा। आज दुनिया बहुत उपाय करती है, वर्ल्ड पीस के लिए, वर्ल्ड शांति के लिए, विश्व शांति के लिए अथवा अनेकानेक सुख प्राप्त करने के साधन के लिए तो कई कोशिश करते हैं परंतु उन सभी कोशिशों का हमको लाभ मिल नहीं रहा है प्रैक्टिकल में उस तरीके से। आज देखो कितनी साइंस ऊँची

गई है चाँद, सूर्य तक मनुष्य चले गए हैं लेकिन लाइफ हमारी नीचे चली जा रही है। तो कहेंगे हमारी लाइफ को कैसे ऊँचा उठाया जाए और हमारी लाइफ कैसे ऊँची उठे, उसका फाउंडेशन कौन सा है, तो उसका फाउंडेशन है प्योरिटी। फर्स्ट प्योरिटी देन पीस एंड प्रोस्पेरिटी। ऐसे नहीं फर्स्ट पीस एंड प्रोस्पेरिटी, नहीं, फर्स्ट प्योरिटी। जब तलक लाइफ में प्योरिटी नहीं आई है तब तलक पीस एंड प्रोस्पेरिटी आ ही नहीं सकती है तो फर्स्ट प्योरिटी। तो प्योरिटी कैसे हमारे जीवन में आए, जिससे हमारे कर्म अच्छे बने, तो कर्म का ही हम फल खा सकेंगे ना। हमारे कर्म ही ठीक नहीं होंगे तो हम खाएँगे कहाँ से, कर्म से ही तो फल बनता है ना। हम फल खाने की इच्छा रख बैठे हैं लेकिन मिले कहाँ से, उनका बीज अभी जो बोना है तो यह है कर्मक्षेत्र है, यह तो गीता में भी है कि कर्मक्षेत्र है। इसको कर्मों की खेत कहा जाता है। जो हम करते हैं सो हम पाते हैं लेकिन हमको करना क्या चाहिए, हमको उसका राइट नॉलेज होना चाहिए। ऐसे तो कॉमन कई समझते हैं इतना तो हमें भी ज्ञान हैं कि भई सच बोलना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसको धोखा नहीं देना चाहिए, किसी से कोई ऐसा पापकर्म नहीं करना चाहिए यह तो कॉमन सब समझते भी हैं, परंतु पहले पहले यह भी हमको जानना चाहिए न कि सच क्या है। सच बोलना चाहिए, परंतु सच क्या है, सच का भी तो पता होना चाहिए ना कि व्हाट इस ट्रुथ, ट्रुथ का नॉलेज होना चाहिए ना। ट्रुथ उसको कहेंगे कि हमको यथार्थ अपनी नॉलेज होनी चाहिए कि व्हाट

एम आई, हम कौन हैं, सेल्फ रियलाईजेशन होना चाहिए कि हम हैं कौन। ऐसे तो कॉमन किसी से भी पूछेंगे तो आप कौन हो, तो क्या कहेंगे हम मनुष्य हैं और क्या हैं, देखते नहीं हो हम मनुष्य हैं, यह तो कॉमन परिचय, वह तो बात ही नहीं है लेकिन आई, सेल्फ, हम हैं कौन, वह चीज का पता होना चाहिए ना। तो हम हैं आत्मा। आत्मा को अपना ज्ञान होना चाहिए और हमारा कैसा कर्म के साथ संबंध है, हम किन कर्मों से श्रेष्ठ बन सकते हैं और किन कर्मों के कारण नीचे गिरे हैं, इन सब बातों का यथार्थ नॉलेज होना चाहिए ना। तो हमको अपना और अपना क्रिएटर का, परमपिता परमात्मा ,का जिससे ही हम को बल मिलेगा, ताकत मिलेगी उनका नॉलेज और हमको अपने कर्म का नॉलेज, इन्हीं सब बातों की यथार्थ नॉलेज होनी चाहिए तो यथार्थ नॉलेज को ही सच कहा जाएगा। बाकी यह कॉमन नॉलेज, वह तो सब जानते हैं सच बोलना, सच क्या है, सच क्या कहेंगे की भाई उसने जो बात सुनाई इसने भी वो ही बात सुनाई, ये सच बोला, अभी सच ये तो नहीं न। हम वास्तव में हैं कौन, हमारे ये कर्म का चक्कर कैसे चलता है, हमारी कर्म की सृष्टि का ये कैसे बना, इन बातों को जानना उसको कहेंगे सच को जानना। बाकी यह तो नहीं है ना कि इसने जो बोला, हमने भी वह बोला इसीलिए हम सच्चे हो गए, नहीं, यह है कौन, इसका पता होना चाहिए, यह कौन है तो हरेक को अपना, दूसरे का, यह कौन है, हम यह जो देखते हैं तो यह नॉलेज होना चाहिए ना कि यह क्या है, यह मनुष्य है क्या, तो इस यथार्थ

नॉलेज को समझना इसको कहेंगे ड्रुथ को जानना। तो सत्यता का पता भी होना चाहिए ना कि हमारी जीवन का आधार किसके ऊपर है, हमारा कर्मों का आधार किसके ऊपर है, हमारा कर्म क्या है, हमें कर्म करना क्या चाहिए, इसके इन सब बातों की यथार्थ जानकारी को ही ज्ञान कहा जाता है और उसको ही कहेंगे सच को जानना, तो जब तलक ऐसी यथार्थ नॉलेज का पता नहीं है तो मनुष्य सत्यता से चलते ही नहीं हैं। भले मनुष्य तो समझते हैं की हमने किसी का खून तो नहीं किया है, कभी किसी का पाप तो नहीं किया है, कभी किसी को धोखा तो दिया नहीं है इसीलिए हम बड़े सत्यवादी है, बहुत अच्छे हैं परंतु पाँच विकारवश जब तलक मनुष्य है ना, तब तलक मानो उससे पाप होता ही रहता है। ऐसा तो कोई कह नहीं सकता है कि हमारे पास विकार ही नहीं है क्योंकि बिचारे को विकारों का अर्थ ही नहीं है ना, पता ही नहीं है, वह तो समझते हैं ना क्रोध के बिना दुनिया कैसे चलेगी, काम के बिना संसार की वृद्धि कैसे होगी, मोह के बिना बच्चों की पालना कैसे होगी, वह कई ऐसे समझते हैं कि पाँच विकार के बिना संसार का काम ही नहीं चलेगा। परंतु यह रॉन्ग है हमारा संसार निर्विकारों के सिवाय ही सदा सुखी था, जिसको ही कहा जाता था स्वर्ग। स्वर्ग में स्वर्गवासी मनुष्य जो थे क्या विकारी थे? हमारे पूज्य श्री लक्ष्मी श्री नारायण, श्री सीता श्री राम, गाँधीजी जी जिस रामराज्य की भावना रखता था, उसी जमाने की बात है, क्या उस समय में विकार था? अगर उन्हों में विकार था तो आज उन्हों के

चित्र मंदिरों में क्यों पूजे जाते हैं । आज जब मंदिरों में जाते हो, लक्ष्मी नारायण के मंदिरों में जाते हो तो आप उनके आगे क्या कहते हो, आप सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी कहते हो ना? या कहते हो आप सर्वगुण अपूर्ण, आप विकारी, ऐसे तो नहीं कहते हो ना? उनको निर्विकारी क्यों कहते हो, जरूर कंट्रास्ट है ना? विकार और निर्विकार का कोई तो कंट्रास्ट है ना? तो इसी सभी बातों को भी समझना है न और अपने को कहते हैं हम विकारी, हम पापी, हम नीच, हम कपटी, अपने को ऐसे कहेंगे और उनको कहेंगे आप संपूर्ण, आप सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, देवताओं को ऐसे कहते हैं ना तो क्यों कहते हैं? जरूर कोई कंट्रास्ट है ना और अंग्रेजी में भी कहते हैं वॉइसलेस और विषियश, तो फर्क है ना उसमें और इसमें । जिसमें वाइशेस हैं, तो वाइशेस किसको कहा जाता है, तो यह भी समझने की बात है ना। तो वाइसलेस, निर्विकार का मतलब ही है वाइसलेस तो उसकी माना वाइसेस का लेस चाहिए ना, कहते हैं वॉइसलेस तो माना वॉइसिस नहीं, तो उनको कहेंगे वाइसलेस, बाकी ऐसे नहीं है कि ये विकारों के बिना दुनिया कैसे चलेगी तो वाइसलेस वर्ड का भी तो अर्थ समझना है ना, तो यह सभी चीजों को समझना है कि हमारी दुनिया उसी बल से चली हुई है, जिसमें हमारे पास विकारों का बल नहीं, विकार कोई बल नहीं है, विकार से तो हम गिरे है ना। तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए इन बातों को समझ करके हम अपने संसार को कैसे ऊँचा

उठाएँ और उसके लिए हमें क्या करना चाहिए और किस तरह से हम ऊँचे हो सकते हैं उसको कहेंगे यथार्थ समझना और उसको ही कहेंगे सच को जानना। इसीलिए कहा जाता है कि गॉड इज ट्रूथ यानी इस सत्यता को परमात्मा ही जानता है। ड्रुथ को परमात्मा ही जानता है और कोई जान ही नहीं सकता है इसीलिए तो बेचारे मनुष्य नहीं जानते हैं ना तब तो कहते हैं ना की संसार तो ऐसे ही चलेगा, परंतु संसार कैसे चलेगा, अगर ऐसे ही चलेगा तो चला के दिखाओ न । आज क्यों संसार अशांत हुआ है? ऐसे ही चलेगा तो चला रहे हैं ना संसार, फिर उसमें चिल्ला क्यों रहे हो, अशांति है, दुःख है, देखो हाहाकार हो गई है ना, यह देखा ना, सुना न, गीत में भी सुना ना, आज हमारा भारत क्या है, तो यह क्यों है, अगर हम चलाना जानते हैं तो दिखाओ ना चला के। फिर संसार क्यों हमारा दुःख और अशांति में आज चुका है। इसीलिए बाप कहते हैं मनुष्य तुम नहीं जानते हो, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा संसार कैसे सुखी बनेगा इसीलिए सभी परमात्मा के द्वारा यह रोशनी मिल रही है कि किस तरह से हम मनुष्य अपने संसार को सुखी बनाएँ, इसका ज्ञान कोई मनुष्य के पास नहीं है। इसका ज्ञान उसी ज्ञान दाता के पास है, जिसको ही कहा जाता है नॉलेजफुल गॉड अथवा जानी जाननहार अथवा ज्ञानसागर, ये किसको कहा जाता है परमात्मा को, तो परमात्मा के पास ही हम मनुष्य का यथार्थ नॉलेज है कि मनुष्य की कंप्लीट स्टेज कौन सी है। तो हमारी कंप्लीट स्टेज कौन सी है और कैसे बने उनकी हमको

नॉलेज चाहिए, उसको ही कहेंगे सत्यता को जानना, जिससे हम सचमुच सत्य बनें, और प्रैक्टिकल लाइफ हमारी वो ऊँची बने। जब तलक ऐसी ऊँची लाइफ नहीं बनी है, तब तलक मानो हम सत्यता को जानते ही नहीं हैं, बाकी यह कॉमन सत्यता, किसी ने कुछ कहा हमने भी वही सुनाया तो उसको थोड़ी सत्यता कहेंगे, सत्यता है कि हमारी लाइफ सत्यता क्या है, वास्तविकता क्या है जिसको हम जान करके उसी वास्तविकता को प्राप्त करें तो उसको कहेंगे सत्यता, कि हमारी लाइफ की जो वास्तविक एम एन ऑब्जेक्ट क्या है और कैसे हम उसको पाएँ, तो कहेंगे यह राइट को स्टेज जानता है और राइट स्टेज को प्राप्त करता है, तब तो कहेंगे ना कि सत्य को जानना। तो ये सभी ज्ञान होना चाहिए ना अभी यह ज्ञान सिवाए परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता इसीलिए यह हम भी अभी उनके द्वारा सुन रहे हैं, नहीं तो हम भी ऐसे कहते थे, जैसे दुनिया कहती है कि हाँ भाई यह विकार है, विकारों के बिना दुनिया कैसे चलेगी, ऐसे ही चली आई है क्योंकि हमारे पूज्य देवताओं की बायोग्राफी में, कहीं-कहीं ऐसी बातें शास्त्रों में लिखी हुई हैं, जिसकी वजह से कई मनुष्य मूंझे हुए हैं जैसे श्री रामचंद्र के जमाने में भी लगाए हैं ना, रावण के साथ लड़ाई लगी तो वह समझते हैं कि उसी जमाने में भी लड़ाई हुई है ना, तो यह सभी जमानों में हुआ है, वह कृष्ण के साथ भी लड़ाई दिखाई है उसके जमाने की भी बात है, उधर सतयुग के जमाने असुर और देवताओं की लड़ाई तो सभी जमाने में लड़ाई की बातें आई हैं ना, तो मनुष्य

समझते हैं कि यह तो सभी युगों में चली आई है, परंतु ऐसे है नहीं, तो यह भी तो हमें बातें समझने की है ना । जिसके लिए गाँधीजी रामराज्य कहते थे, राम राजा राम प्रजा राम साहूकार है, बसे नगरी, जिए दाता धर्म का उपकार है, यह कहावत बहुत मशहूर है तो जब ऐसे धर्म का उपकार का जमाना था तो वहाँ कैसे राम और रावण की लड़ाई हो सकती है, अभी इनका भी बैठ कर के अर्थ समझना है वह कोई त्रेतावंश राजा राम की लड़ाई की बात नहीं है, यह राम और रावण क्या हैं, यह सभी बातें फिर समझने की है, ये रावण क्या चीज है, रावण कोई दस शीश वाला कभी हुआ ही नहीं है, न कोई राजा था, आदमी ही नहीं आत्मा ही आदमी ही नहीं था तो राजा कहाँ से होगा तो यह दस शीश वाला कभी कोई आदमी था ही नहीं अभी यह किस अर्थ से बनाई है ये बातें तो वह समझने का है कि दस विकार हैं पाँच विकार स्त्री के, पाँच विकार पुरुष के, इसको अपवित्रता का सिम्बल कहेंगे, निशान है बाकी ऐसे नहीं कि कोई दस शीश वाला आदमी होता है, तो देखो इन सभी बातों का अर्थ समझना है ना तो यह है अपवित्र मनुष्यों का सिंबल यानी नर नारी दोनों जब अपवित्र होते हैं तो संसार दु:खी होता है उसको कहा जाता है रावण राज्य यानी विकारों का राज रावण विकारों का सिम्बल समझो बाकी कोई मनुष्य नहीं है दस शीश वाला नहीं दस शीश वाला कभी आदमी होता है क्या कोई जमाने में कभी हुआ नहीं है नहीं देवता थे तो दो आँखों वाले एक सिर वाले , ऐसे नहीं तीन आँखें वाले या चार सिर वाले या

चार भुजाएँ वाले नहीं वो देवता तो भी दो भुजा तो इसीलिए चित्र अब करेक्ट बनाए हैं ना कि भाई यह देवता तो भी दो भुजा वाले जैसे मनुष्य जैसे होते हैं लेकिन हाँ उनकी लाइफ जरूर ऊँची थी बाकी तीसरी आंख का यह तीनों के जो दिखाते हैं इनका भी अर्थ है यह थर्ड आई ऑफ विजडम ज्ञान का नेत्र है बाकी ज्ञान का नेत्र ये जो तीन आँख दिखलाते हैं इनका भी अर्थ है ये थर्ड आई ऑफ़ विजडम ज्ञान का नेत्र है बाकि ज्ञान का नेत्र कोई ऐसा नहीं कोई इधर नेत्र निकल आएगा नहीं मनुष्य को तो दो नेत्र है जो देखने के लिए वह तो दो नेता की बात है लेकिन यह ज्ञान का नेत्र जो अभी ये ज्ञान मिल रहा है न इसको कह सकते हैं कि अभी थर्ड आई ऑफ़ विजडम है परन्तु ऐसे थोड़ी यहाँ थोड़ी कोई आँख निकल आई है निकलेंगी थोड़ी नहीं वह ज्ञान का चिन्ह है, निशान है जो चित्रकारों ने बैठ करके दिखाया है, ज्ञान कैसे दिखलाएँ भाई इस मनुष्य के पास ज्ञान है तो इधर आंख दिकहा दी है बस तो यह उसका निशान है बाकि ऐसे नहीं है कि तीन आँखें होती हैं या चार भुजाएँ होती हैं पर चार भुजाओं का भी अर्थ है जो चतुर्भुज का, दो भुजा नारी की दो भुजा नारी की यानी नर नारी जब पवित्र है तो चतुर्भुज यानी पवित्र देवी देवता है इसीलिए उसका सिंबल है, यह सभी सिंबल है यह रावण भी विकारों का सिंबल है, और यह चतुर्भुज भी पवित्र निर्विकारी मनुष्यों का सिंबल है तो यह सभी चीजों को समझना है बाकी ऐसा नहीं है कि राम रावण की लड़ाई हुई है या कुछ भी नहीं, नहीं ये राम माना परमात्मा जब

परमात्मा आया है तो विकारों से लड़ाई कराई है अर्थात युद्ध कराई है पांचों विकारों के साथ, जीतने के लिए, देखो अभी हम युद्ध कर रहे हैं न हमारी लड़ाई किससे है, हम भी लड़ रहे हैं, किससे लड़ रहे हैं विकारों से, विकारों ने हमारे ऊपर जीता है ना अभी हम विकारी हो गए थे, हमारे ऊपर विकारों ने राज किया है इसीलिए हम दु:खी हुए हैं अभी फिर परमात्मा आ करके रोशनी दिया हैं कि इन विकारों से लड़ो और इन विकारों को जीतो, किससे लड़ो? रावण से, तो यह हमारी रावण के साथ लड़ाई है । अभी लड़ाई का अर्थ यह है, बाकी ऐसे नहीं है कि कोई सच-सच दस सीस वाला आदमी था । कोई राजा था, जिसके साथ राम की युद्ध हुई, ऐसी कोई बात ही नहीं है । तो यह सभी चीजों को भी समझना है ना । तो अभी यह बायोग्राफी जो राम और उसकी बनाई है और स्टोरी बनाने वालों ने इस तरह से बनाया है तो इन बातों का पूरा ना समझने के कारण यह बहुत बातें मिक्स अप हो गई हैं इसीलिए कई समझते हैं कि लड़ाई तो सदा से चली है ना । परंतु नहीं, सदा हमारे सतयुग और त्रेता के जमाने में जिसमें कहते हैं राम राजा राम प्रजा राम साहूकार है बसे नगरी दिए दाता धर्म का उपकार है, तो धर्म का उपकार जहाँ होगा वहाँ अधर्म की बातें कहाँ होगी । लड़ाई झगड़े तो अधर्म की बात है ना, वह कैसे होगी । तो यह सभी चीजों को समझने का है इसीलिए वह जमाने कोई लड़ाई के नहीं थे । यह लड़ाईयों है का जमाना द्वापर से शुरू हुआ है । सतयुग और त्रेता में ये लड़ाई के कारण या अशांति के कोई भी कारण कभी

अकाले मरना या रोग आदि थे ही नहीं । वह भी जमाना था जब डॉक्टर और हॉस्पिटल्स थे ही नहीं क्योंकि रोग ही नहीं था । कभी कोई जज, वकील, कोर्ट आदि थी ही नहीं, क्योंकि चोरी चकारी थी ही नहीं, काहे के लिए होंगे, वह भी जमाना था ना । तो वह जमाने जिसमें हमारे पास ना कोई झूठ ना पाप न कोई ना कोई ऐसा कर्म, धर्मराज के डंडे भी नहीं थे क्योंकि हमारे पास ही नहीं से उसकी कोर्ट भी बंद । तो यह यहाँ की कोर्ट की तो कोई बात ही नहीं है क्योंकि वह हमारी लाइफ की स्टेज इतनी ऊँची थी, तभी हम पूर्ण सुखी थे, एवर हेल्थी, एवर वेल्थी एवर हैप्पी, जिसको कहा जाता है हमारे कर्म श्रेष्ठ देना लेकिन हम आज हमारे हमारे घरों में व्यस्तता आ गई है जिसको कहते हैं भ्रष्टाचार, तो देखो आज भ्रष्टाचार का नाम है ना, तो भ्रष्टाचार और स्रेष्ठाचार कंट्रास्ट तो चाहिए न । तो स्रेष्ठाचार अर्थात श्रेष्ठ आचरण, अभी आचरण भ्रष्ट हुआ है इसीलिए भ्रष्टाचार । तो ये सभी चीजों को भी समझना है ना इसीलिए देखो यह सभी बैठ कर के बातें अच्छी तरह से समझने की है कि यहाँ कोई लेक्चर से समझ जाएगा, नहीं! यह तो बातें आ करके इंडिविजुअली अच्छी तरह से बैठकर के टाइम दे करके कोई समझे, तभी कुछ समय समझ सकेगा और कुछ अपना प्रैक्टिकल जीवन बना सकेंगे इसीलिए बार-बार जो भी नए आते हैं, आप लोगों को यह ध्यान में दिया जाता है कि यह कुछ टाइम दे कर के समझने से समझ सकेंगे । बाकी कोई एक-दो लेक्चर्स से, आया और सुना, यह कोई कॉमन चीजें ऐसी

नहीं है जो समझ में आए । यह तो अपने प्रैक्टिकल लाइफ में कैसे हम लाएँ और अपनी लाइफ में क्या करें, वह तभी बातें आकर के अच्छी तरह से सीखने और समझने की है । बाकी कुछ और ऐसी डिफिकल्ट भी बात नहीं है जो कोई डर जाए की पता नहीं कुछ ऐसी साधनाएँ या क्रियाएँ हैं, नहीं यह समझना है कुछ और समझ कर के अपने गृहस्थ व्यवहार में रह करके अपनी जीवन को पवित्र रखना है, जिसको ही कहा जाता है गृहस्थ आश्रम, कहते हैं ना गृहस्थाश्रम । तो है गृहस्थ आश्रम, गृहस्थ का नाम देखो कितना अच्छा है आश्रम, लेकिन आज कहाँ है गृहस्थ आश्रम? आश्रम होता है वह, जहाँ शांति और सुख होता है, जहाँ पवित्रता की बातें होती हैं, उसको आश्रम कहेंगे, आज कहाँ है हमारे गृहस्थ में? कहा जाता है गृहस्थ धर्म, आज कहाँ है धर्म? आज गृहस्थ धर्म को अगर अधर्म कहा जाए तो कह सकते हैं क्योंकि विकारों के साथ गृहस्थ का संबंध चल रहा है ना, जिसमें दुःख, अशांति, आज किसी से भी पूछोगे भाई गृहस्थ में क्या है, कहेंगे झंझट, जंजाल ये कॉमन कहते हैं, क्यों कहते हैं? नहीं तो गृहस्थ आश्रम उसमें झंझट और जंजाल? क्यों? परन्तु है, क्योंकि आज हमारे गृहस्थी में विकारी कर्म का जो खाता है ना वो उल्टा चल चुका है इसलिए हमारा गृहस्थ अभी गिर चुका है, नहीं तो हमारी प्रवृत्ति का आदर्श बहुत ऊँचा था, देखो देवताएँ ये हम ही थे ना, हम मनुष्य ही थे इतने ऊँचे । यह लक्ष्मी नारायण, सीताराम इनके जीवन का आदरश क्यों ऊँचा था? उनका गृहस्थ पवित्र था, उसको कहते थे

गृहस्थ धर्म । धर्म पति, धर्म पत्नी, देखो धर्म का नाम आता है ना, लेकिन आज कहाँ है धर्म का संबंध, अभी तो है विकारों का संबंध तो उसको थोड़ी धर्म कहेंगे, तो यह सभी चीजें समझनी चाहिए कि हमारा जो लाइफ का स्टेज है और हमारी जो प्रवृत्ति का स्टेज है वह बहुत ऊँचा है, उसकी वो ऊँच कैसे बनाएँ, प्रैक्टिकल में कैसे लाएँ, इन्हीं सभी बातों को समझना है और यह सभी गीता के भगवान ने भी गीता में कहा हुआ है न, कि कर्मयोग, राजयोग वो सबसे श्रेष्ठ है, ये वही चीज है, वहीं बैठ कर के परमात्मा अभी कर्मयोग यानी घर गृहस्थ में रहते और किस तरह से हम अपने पवित्र प्रवृत्ति को बनाएँ, वह बैठकर के सिखा रहे हैं तो यह है कॉलेज जैसे डॉक्टरी, बैरिस्टरी, इंजीनियरिंग कॉलेज होता है ना, मनुष्य डॉक्टरी कॉलेज से डॉक्टर बनेगा, इंजीनियरिंग कॉलेज से इंजीनियर बनेगा तो यह भी एक कॉलेज या यूनिवर्सिटी समझो, काहे की है, मनुष्य से देवता अथवा देवी बनने की, नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण बनना हो तो फिर वेलकम, समझा! तो इसकी स्टेटस बदला देते है, एम एंड ऑब्जेक्ट, कि नर कितना ऊँचा है, नारी कितनी ऊँची है, नारी नहीं तो लक्ष्मी है, लक्ष्मी कहने की नहीं, प्रैक्टिकल चाहिए ना, लाइफ चाहिए और नर नारायण है नारायण का मतलब है पवित्र । तो मनुष्य नर नारी इतने ऊँचे हैं, अभी ऐसी प्रवृत्ति अपनी बनानी है, उसकी ये कॉलेज है, किस तरह से हम अपने घर ग्रहस्थ में रहते प्रवृत्ति को पवित्र बनाएँ, उसी को कैसे प्रैक्टिकल में लाएँ, उसी को प्रेक्टिकल बनाना है तो ये आप

लोगों को एम एंड ऑब्जेक्ट सुनाते हैं, बाकी बनना और प्रैक्टिकल में आना उसके लिए तो फिर थोड़ा टाइम दे करके समझेंगे तो समझ सकेंगे । अच्छा अभी टाइम हुआ है इसलिए अभी दो मिनट साइलेंस । ऐसा हाल होता है तब मैं आता हूँ, यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति जब-जब अधर्म होता है तब-तब मैं आता हूँ, तो अभी यह हाल है, अभी बाप आ करके समझा रहा है कि अभी कैसे अपने संसार को फिर अच्छा बनाओ । बनाएँगे तो हम ही ना । बिगाड़ा भी हमने ही है, बनाना भी हमको ही है, क्योंकि हमारे कर्म से बिगड़ा है । अभी हमको अपने कर्म श्रेष्ठ से फिर सुधारना है, तो हम कैसे श्रेष्ठ कर्म बनाएँ । उसने तो अपना कॉलेज खोला है, अभी जो आ करके सीखेगा वही इस श्रेष्ठ कर्म की धारणा करके ऐसे संस्कार के लायक बनेगा क्योंकि अभी दुनिया की हालात अनुसार, यह भी समझना है कि अभी दुनिया के चेंज का टाइम आया हुआ है परंतु आएगा चेंज तभी जब हम अपने लाइफ में भी चेंज ले आएँगे न । जो लाएगा वही ऐसी चीज चेंज वर्ल्ड की, यानी जो आगे आने वाली फ्यूचरवर्ल्ड है, जिसको ही गोल्डन एजड वर्ल्ड कहा जाए कि अभी ये आयरन एजेड तो अभी इसको कैसे चेंज होना है, ये अभी कैसे वर्ल्ड डिस्ट्रक्शन का और वर्ल्ड कंस्ट्रक्शन का टाइम है तो यह सभी चीजों को समझना है इसलिए थोड़े टाइम में तो यह सभी बातें समझाई भी नहीं जा सकती हैं इसीलिए कोई नए आए हैं तो आप लोगों को राय है कि इसको कुछ

टाइम दे करके आ करके समझेंगे तो बहुत अच्छा है और बहुत कुछ अपने जीवन का लाभ पा सकेंगे।

20. विनाश से पहले पूरा वर्सा लेने की विधि ओर भगवान् की श्रीमत क्या है

बच्चों के लिए सुख शांति की दुनिया बनाऊँगा, तो वह तो अपने वायदों को पूरा करने का पार्ट बजा रहा है, ऐक्ट कर रहा है कि आया है और बच्चों के लिए सुख शांति की दुनिया बनाने का काम चालू किया है । किया है ना काम चालू । और दुख अशांति की दुनिया को नाश करने का भी काम चालू किया है। दिखाई पड़ते हैं अच्छी तरह से? चारों ओर नजर फिरा करके देखो अच्छी तरह से कि दुनिया की हालात भी कंडीशन भी अभी साफ़ है कि ये दुनिया अभी दु:ख अशांति की ओर जा रही है और इसको ही कहा जाएगा धर्म ग्लानि का समा । दुनिया ऐसा नहीं समझती है वह समझती है कलयुग तो अभी बच्चा है। अभी तो इसको बहुत हजारों लाखों वर्ष पड़े हैं जवान होगा , बुड्ढा होगा , अभी तो और इसकी आयु है। परंतु नहीं, यह उनकी लास्ट स्टेज है बाकी कुछ थोड़े समय की है यह अभी अपन जानते हैं । तो इसीलिए तो बाप कहते हैं कि मनुष्यों ने एक-दो की बुद्धि को मेरे से और मेरे कर्तव्य से कि मैं किस टाइम आ करके ये काम करता हूँ उससे बुद्धि को दूर हटा दिया है। और मैं आ कर के फिर अपनी सभी बातों का अपना, अपने कर्तव्य का और अपने टाइम का सब बतलाता हूँ कि बच्चे बहुत काल नहीं है अभी, समय बहुत नहीं है

। अभी बच्चा नहीं है कलयुग, अभी बुड्ढा है। इसकी आयु अभी पूरे होने पर है । इसको अभी कहा जाएगा जड़जड़ीभूत अवस्था। मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष जो है वह अभी जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त हुआ है। अभी जड़जड़ीभूत अवस्था वाले की तो मृत्यु की स्टेज है ना। इसीलिए अभी वो टाइम आया हुआ है तब तो यह मृत्यु के लिए तैयारियाँ है ना । ऐसे थोड़ी है कि यह चीजें कोई बहुत हजारों लाखों वर्ष चलती रहेंगी। आज वो चीजें भी बनी है ना अगर कोई चीजों से भी अंदाज लगाए ना कि यह चीजें कोई अब से लाखो वर्ष तक रखी रहें और यह लाखो बरस तक रहने की चीजें हो, ऐसा है ही नहीं। यह चीजें अपना काम करके ही रहेंगी । इसलिए आज जो इतने एटॉमिक बॉम्ब हाइड्रोजन बॉम्ब यह मिसाइल यह सभी चीजें जो बनी है ये चीजें ही ऐसी किस्म की हैं कि अगर ऐसा समझे कि आज से लाखों वर्ष तक करोड़ों वर्ष या और भी आगे तक रखी रहें और चलती रहे और इसकी इन्वेंशन ऐसे ही बढ़ती रहे तो बढ़ती क्या खाली इन्वेंशन बढ़ती रहे तो उससे क्या इसको खामी करना है ना। चीज तो आ गई है बाहर। कैसे दुनिया का नाश हो अब इसके उपाय खोजने की तो कोई दरकार नहीं। अभी वह चीज तो आ गई है बाकी काम में लानी है। थोड़ी एक्सपेरिमेंट जो भी है उसकी वह अभी कर रहे हैं थोड़ा रिफाइन । देखो हिरोशिमा में ट्रायल की न। यह ट्रायल की तो देखा कि इसमें बहुत बिचारे मनुष्य बीमार पड़ गए , रोगी हो गया है फिर उसको हॉस्पिटल में अभी तक भी कोई कोई बीमार पड़े हैं तो समझते

हैं । नहीं तो ऐसे हो जाए तो जल्दी से हो जाए सब, पर फिर बीमारों को कौन संभालेगा । उसके लिए भी फिर हॉस्पिटल्स डॉक्टर्स चाहिए ना । यह तो ऐसा चाहिए कि एकदम खत्म, जो पीछे ये भी ना रहे जिनके लिए बेचारों को कुछ उनके लिए इलाज का रखना पड़े। तो वो रिफाइन कर रहे हैं और अभी रिफाइन होता ही जा रहा है और समझते हैं आज ऐसी चीजें कोई इतने लाखों करोड़ों वर्ष थोड़ी ही चलेंगी और संख्या से भी हम अंदाजा लगा सकते हैं यह संख्या बढ़ती जा रही है । तो ऐसा नहीं है की संख्या भी बढती ही रहेगी। बढ़ते बढ़ते आखिर एंड भी तो आनी चाहिए ना । और देखो संख्या की स्पीड बिचारे खुद भी संभाल नहीं पा रहे हैं । समझते हैं ऐसे बढ़ते जाए तो वह बिचारे नहीं समझ पा रहे हैं कि किस तरह से इन को संभाला जा सकेगा । तो यह सभी बातें दिखा रही है यह मामले अभी-अभी क्रिएट होते जा रहे हैं ना जोर से तो यह सब इतना कैसे होगा तो अभी यह सब हालात दिखाई पड़ते हैं । ऐसे मत समझो कोई इधर भी कोई ऐसा ना हो कि समझे कि नहीं अभी तो काफी टाइम पड़ा है जैसे दूसरे विकार में पड़े हैं तो ऐसा नहीं। अब टाइम बहुत निकट आता जा रहा है इसीलिए इस समय को पूरी तरह से समझते और दुनिया की हालात और यह कंडीशन अभी आसार भी चिन्ह जिसको कहेंगे अभी दिखाई दे रहे हैं। यह दुनिया के अंत का समय है। और ऐसे भी नहीं है कि यह मनुष्य सृष्टि का चक्कर कोई अरबों वर्षों का चला हुआ है । अगर अरबों वर्ष का होता ना तो आज पता नहीं

कितनी संख्या होती। यह तो कहते हैं अभी यह क्राइस्ट आया ना , क्राइस्ट को देखो 1965 हुआ अभी तो वह कहते हैं क्राइस्ट के बिफोर यानी आगे उस समय लाखों के अंदाज में वर्ल्ड की सेंसस थी । सेन्सस भी लेते हैं ना कितने वर्षों से दुनिया की कितनी सेन्सस रही। तो वह बतलाते हैं की क्राइस्ट से पहले दुनिया की सेन्सस बहुत थोड़ी थी लाखों में गिनते थे । तो क्राइस्ट की पहले कि इतनी थी अभी 2000 वर्ष में अभी जाकर के करोड़ों में लगी है अगर यह अरबों वर्षों का होता तो हिसाब लगाने की बात है कि कितनी होनी चाहिए । फिर तो इतना जितना टाइम हुआ है इतने टाइम के अंदाज के अनुसार तो बहुत संख्या बढ़ जाती , पता नहीं क्या हो जाता , अभी ही खाने के लिए बेचारे तंग हो गए हैं तो तब तो ना मालूम क्या हो जाता। तो ऐसे नहीं है कि यह चक्कर कोई अरबों वर्षों का चला आया है । यह है ही 5000 वर्ष का जो बैठकर के बाप समझाते हैं कि 2000 वर्ष में भी यह क्राइस्ट के पहले की बात है 2020 में जब इतनी संख्या करोड़ों के अंदाज में आ चुकी है तो सोचने की बात है अगर यह अरबों और लाखों वर्षों का कल्प होता तो क्या होता अभी बैठने की जगह तक कम पड़ गई है खाने के लिए तंग पड़ गए हैं अभी हर बातों में तंग पड़ गए हैं । ना मालूम अभी कितनी संख्या और आगे होती तो ऐसे नहीं है यह 5000 वर्ष का ही चक्कर है और हिस्ट्री भी हमको कोई इतनी अरबों वर्षों की या करोड़ों वर्षों की कोई हिस्ट्री भी नहीं मिलेंगी और है ही नहीं हिस्ट्री । बस आगे में अच्छे से अच्छे

मनुष्यों की हिस्ट्री यह देवताओं की मिलती है और देवताओं के टाइम को अगर गिनते हैं तो भी 5000 वर्ष की बात है बाकी इसके आगे कोई दूसरी दुनिया थी या ऐसे कहीं कुछ न कुछ अपना समझते हैं पर ऐसी बात ही नहीं है। अगर आगे की आगे हिस्ट्री भी लेंगे तो यह देवताओं की मिलेगी और देवताओं की लाइफ से ही पता लगता है कि पहले लाइफ संसार की ऊँची थी। यह जो कई समझते हैं कि पहले लाइफ नीचे थी और अभी फिर यह सिविलाइज्ड दुनिया होती गई है तो यह अभी दुनिया बहुत ऊँची चढ़ी है तो यह ऐसे नहीं है । वह आगे दुनिया ऊँची थी जिसमें संसार सुखी थी, कभी रोग नहीं, कभी अकाले मृत्यु नहीं, यह सभी बातें थी ही नहीं, तो उसको ही तो ऊँचा कहेंगे ना जिसमें मनुष्य एवर हेल्दी, एवर वेल्थी, एवर हैप्पी थे। तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं बच्चे अभी फिर से वो टाइम आ रहा है । इसीलिए ऐसे नहीं समझो कि यह दुनिया कोई बहुत काल का है। नहीं, 5000 वर्ष का है अभी उसका टाइम भी आ करके पूरा हुआ है। तो दुनिया नहीं जानती है, ना इसके शुरू का टाइम, ना इस के अंत का टाइम । वो शुरू समझते हैं तो भी पता नहीं कितने अरबों लाखों करोड़ों वर्षों में ले गए है । कोई शुरू समझते हैं तो भी समझते हैं पता नहीं कोई जनावर पहले थे। बंदरों से फिर मनुष्य हुए हैं या कोई कैसे समझते हैं कोई कैसे जैसे जिसको आया । तो ना इस सृष्टि के आदि को जानते हैं ना मध्य को जानते हैं। अंत ही नहीं जाना तो उसकी बायोग्राफी सारी कैसे यह वृद्धि को

पाती है यह मनुष्य नहीं जान सकते। इसकी आदि और इसका अंत में आ करके बताता हूँ। इसीलिए बाप बैठ करके समझा रहे हैं बच्चे सारी सृष्टि का रचता तो मैं हूँ ना तो मैं ही जान सकता हूँ कि इनकी शुरुआत और अंत कैसे होता है और मध्य में यह कैसे होती है, सभी धर्मों का आना शुरू तभी से होता है इन सभी चीजों को मैं जानता हूँ इसलिए बाप कहते हैं बच्चे जो जानता है वही तो समझाएगा ना । अगर मेरे पास कोई और अधिक मनुष्य से समझ ना होती तो फिर मुझे क्यों कहते कि वह नॉलेजफुल, फिर तो कहो सब नॉलेज फुल हैं। तो मुझे क्यों आगे रखते हो, मेरी महिमा क्यों सबसे श्रेष्ठ करते हो तू ज्ञान का सागर है, तू ही पतित को पावन करने वाला है, तू ही ऐसा है, तू ही ऐसा है, मेरी महिमा करते हो, क्यों करते हो। जरूर मेरे पास अधिक है । तुम मनुष्यों से मैं अधिक जानता हूँ। जो बात तुम नहीं जानते हो वह मैं जानता हूँ तभी तो कहते हैं ना हम नहीं जानते तुम जानते हो और बाप ने भी कहा है अर्जुन को कहा है न तुम्हारे सभी जन्मों को मैं जानता हूँ। अर्जुन को भी गीता में कहा तुम नहीं अपने जन्मों को जानते हो, जन्म -मरण में आने वाले तुम हो लेकिन तुम नहीं जानते हो मैं तुम्हारे सभी जन्मों को जानता हूँ क्योंकि मैं जन्म मरण में नहीं आने वाला हूँ, तो जो नहीं आने वाला है वही तो जानेगा ना, बाकी तू तो आने वाला ही है जन्म मरण में तो जो जन्मेगा मरेगा वह कैसे जानेगा। नहीं उसको तो चक्कर में नीचे ही चलना है । उसे तो भूल जाता है ना। इसलिए बाप कहते हैं बच्चे तुम

तो भूल ही जाते हो और तुमको भूलना ही है क्योंकि तुमको चक्कर में चलना है। मैं चक्कर में ही नहीं आता हूँ तो मैं भूलता भी नहीं हूँ इसलिए मेरे पास नॉलेज सबकी रहती है कि सभी कैसे-कैसे नंबरवार, कौन कौन सा धर्म पहले पीछे नंबरवार यह सभी कैसे आते हैं इन सब बातों को मैं जानता हूँ। इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे जो जानेगा वही बतलाएगा ना । जरूर मेरे पास जानकारी है इन चीजों की तभी मुझे कहते हो ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर । इन चीजों से मैं आकर के सुख शांति बतलाता हूँ और देता हूँ इसीलिए मेरा गायन करते हो । तो यह सभी चीजों को समझना है न इसीलिए बाप कहते हैं गफलत में नहीं रहना है। दुनिया तो गफलत में है और हम भी पहले गफलत में थे। ऐसा नहीं है कि हम कोई ऊपर से आए हैं हम भी यहाँ के ही ऐसे ही थे । जैसे अभी दुनिया समझती है हम भी ऐसे ही समझते थे पहले । लेकिन अभी जब बाप ने रोशनी दी हैं तो अभी उसी रोशनी के आधार से जानते हैं यथार्थ बातों को । तो अभी जब बाप यथार्थ बातों को सुना रहा है तो उसके ऊपर अटेंशन देना है । सुनते और समझते भी और फिर गफलत में रहना यह तो फिर महामूर्ख वाली बात बतलाई ना, मूर्ख भी नहीं महामूर्ख। तो ऐसा नहीं बनना है कि समझते जानते और फिर हम, मूर्ख तो थे ही परंतु अभी समझते भी अगर मूर्ख रहा तो उसको कहेंगे महामूर्ख। तो ऐसा तो नहीं बनने का है ना इसीलिए ऐसे महामूर्ख अथवा जानते समझते अपना ना कुछ करना इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे इन सभी बातों को

अच्छी तरह से समझते अपना पुरुषार्थ रखते रहो क्योंकि टाइम अभी थोड़ा है इसीलिए थोड़े में भी थोड़ा होता जा रहा है। जितने जितने दिन कटते हैं उतना उतना जैसे मनुष्य होता है ना भक्ति मार्ग में भी मिसाल देते हैं कि मनुष्य समझता है कि मैं बड़ा होता जाता हूँ परंतु यह नहीं जानते हैं कि आयु कम होती जाती है। यह भक्ति मार्ग मैं भी मिसाल होते हैं वह समझते हैं मैं बच्चे से बड़ा हुआ, बड़े से अभी बुड्ढा होऊंगा वह समझते हैं मैं बड़ा होता जाता हूँ परंतु यह नहीं समझते हैं कि आयु कम होती जाती हैं तो छोटा होता जाता है यानी आयु कम पड़ती जाती है। तो भक्ति मार्ग में भी मिसाल देते हैं कि देखो मनुष्य कितने मूर्ख है। वह समझते हैं कि मैं बड़ा होता जाता हूँ परंतु यह नहीं समझते हैं की आयु छोटी होती जाती है । जितना बड़ा होता जाएगा तो आयु छोटी होती जाएगी ना। तो इसी तरह से यह भी बाप बैठकर के समझाते हैं कि बच्चे जितने दिन बीतते जा रहे हैं, टाइम थोड़ा रहता जा रहा है तो ऐसे नहीं समझना कि अभी बहुत टाइम पड़ा है । दिन तो कटते जा रहे हैं न, समय बीतता जा रहा है इसीलिए ऐसे समय का पूरा-पूरा खबरदार रहना है और सावधान रहना है और उस विनाश से पहले कोई अपना ही ना विनाश हो जाए तो भी छोटा पड़ेगा ना। तो ख्याल रखना है कि जितना जितना हम अपने जीवन में बना रहे हैं, इतना प्रीपेयर रहना है कि भले आज सांस निकल जाए तो अपने को देखना है कि मैं रेडी हूँ । ऐसा है कि मैंने कुछ कमाई कर ली है, मैं जाऊं अभी, अभी मेरा स्वांस निकल जाए

तो मेरे पास क्या है, मैंने कमाई का स्टॉक क्या जमा किया है तो अपना स्टॉक संभालो। अभी स्वांस निकल जाए तो मेरे पास क्या है, मैं क्या ले जाऊंगा क्योंकि अभी ऐसे तो नहीं है ना कि मरूंगा फिर जन्म लूंगा फिर बड़ा हो करके फिर थोड़ा ज्ञान लूंगा, इतना टाइम नहीं है इसीलिए बाप कहते हैं अभी लेना है तो इस जीवन में लेना है। ऐसे भी नहीं है अभी मरेगा फिर कहाँ जन्मेगा तो भी जरूर थोड़ा बड़ा हो पंद्रह-सोलह बरस का जब थोड़ा ज्ञान अच्छी तरह से सुन सके, समझ सके नहीं तो छोटा बच्चा होगा वह क्या समझ सकेगा। तो अभी इतने बरस थोड़ी हैं आ करके ज्ञान ले फिर उसको धारण करे फिर इतना करमातीत अवस्था बनाए, तो मेहनत चाहिए ना। हमको भी देखो 28 बरस लेते हो गया है ज्ञान में तभी भी कहते हैं अभी भी पुरुषार्थ करते हैं पुरुषार्थी हैं। तो देखो मेहनत है ना, कुछ तो मेहनत है जिसमें हमको 28 बरस लगते भी अभी कहते हैं पुरुषार्थ करते हैं। तो फिर लग कर के भी टाइम चाहिए ना, ऐसे थोड़ी बस आया एक दिन में चल पड़ेगा। नहीं, उसमें भी फिर टाइम चाहिए, अपनी कर्मातीत अवस्था बनाए जो पापों का बोझा है आत्मा पर बहुत जन्मों का उसको साफ करना तो अभी इतना तो टाइम नहीं रहा है ना कि वह मरे फिर जन्म लेवे फिर बड़ा होवे फिर आवे फिर इतना टाइम देकर के ज्ञान लेवे फिर अपनी कर्मातीत अवस्था बनावे इतना टाइम कहाँ है? इतना समय नहीं है इसीलिए बात कहते हैं कि ये अंतिम जन्म है। यह लास्ट जन्म है तुम्हारे ज्ञान लेने का तो इसमें तुमको

प्रिपेयर रहना है कि कहीं उस विनाश के पहले मेरा ही विनाश हो जाए तो मेरे जीवन में इतना स्टॉक है कि मैं जाऊं तो अपना जो बाप से पूरा लेने का अधिकार है वह पा लूंगा । तो पाने का तो अभी समय हो गया ना, इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यह लेने का यह अंतिम जन्म है इसीलिए पुरुषार्थ अपना अच्छा करो और अच्छी तरह से पुरुषार्थ में ध्यान देकर के बाप से जो अपना अधिकार पाने का है वह पाओ । तो उसमें अच्छी तरह से करो, गफलत में नहीं आओ । गफलत में दुनिया पड़ी है परंतु बाप ने तो हमको अभी सुजाग किया है ना, जगाया है, आंख खोली है, तो हमको थोड़ी फिर नींद में सोए रहना है । हम जागे हैं तो जाकर के बाप से पूरा पूरा अधिकार, इसीलिए बाप कहते हैं की बच्चे जो जागे हो, जिसको बैठ जगाया है जिनकी आँख खुली है अभी, तीसरा नेत्र जिन्होंने धारण किया है, जिनके पास यह सब रोशनी है उनको बहुत खबरदार रहना है और ऐसा को तो खबरदार रहना ही चाहिए तो यह सभी बातों को अच्छी तरह से समझते और अपना पुरुषार्थ अच्छा रखो तो अच्छे पुरुषार्थ का फल भी जरूर अच्छा ही पाएंगे । करेगा अच्छा पाएगा नहीं, ऐसा कभी होगा? नहीं । अच्छा करेगा अच्छा पाएगा, बुरा करता है तो बुरा ही पाएगा तो अभी अच्छाई और बुराई का ज्ञान तो बुद्धि में अच्छा है ना । बुराई किसको कहते हैं, अच्छाई किसको कहते हैं इनकी सारी अभी रोशनी है इसीलिए अब बुराइयों को निकालो और अच्छाई उसकी जगह पर रखो । प्यूरीफाइड करो । देखो कल गये थे ना तो देखा

भाई वाटर प्यूरीफाई कैसे किया जाता है । पानी को साफ करना तो वह वाटर को साफ करना हो गया, यह सोल प्योरीफाईड करना है । पहला तो सोल चाहिए ना । वहाँ देखो इम्प्योरीफाईड वाटर से जीवाणु जाएंगे, भाई मनुष्य बीमार पड़ेंगे तभी तो पानी को साफ करके हमको पीने के लिए अभी काम में लगाने के लिए मिलता है । तो देखो साफ करते हैं ना, अगर गंदा ही पानी आ जाए तो फिर बीमार पड़ जाए इसीलिए उनको साफ करने का देखो कितनी मशीनें, कितनी स्टेप्स करते हैं, कितने स्टेजिस से पानी को निकलते हैं, इसका पानी इसमें फिर इसमें का इसमें फिर उसका पानी दूसरे में ऐसे वो साफ करते हैं । तो यह भी सब हमारी भी स्टेज है न, तो बाप कहते हैं यह सोल को भी प्योरीफाइड करना है, गंदा नहीं चलेगा, उससे काम नहीं बनेगा । तो इसको प्यूरीफाइड करो । अभी उसकी मशीनरी कौन सी है - यह ज्ञान और योग । बड़ा इजी, इसके लिए देखो कुछ खर्चा है ? उस पानी के लिए देखो उन्हों को कितना खर्चा लगाना पड़ता है इसके लिए कोई खर्चा है? बिगर खर्चे चीज मिलती है, जिससे हमारी सब प्यूरीफाइड होगा । तख्त भी प्यूरीफाइड हो जाएगा पृथ्वी, जल, अग्नि सब । तख़्त आदि भी आर्डर में आ जाएगा सब कुछ । ऐसी चीज बाप हमको दे रहा है बिना खर्चे । तो देखो बिना खर्च और बिना कोई बहुत भारी मेहनत नहीं है, लेकिन ऐसी इजी चीज और बाप दे रहा है जिससे जड़ से हमारी सोल प्यूरीफाइड होने से हमारा सब कुछ प्यूरीफायर हो जाएगा तो ऐसी चीज लेने में क्यों इतनी ढीले पड़े हो,

क्या सस्ती मिली है बहुत तभी? कहते हैं ना, कोई बहुत बड़ी चीज होती है जो कहते हैं भाई बहुत ऊँची है, वह कोई बहुत सस्ते में मिल जाए तो वैल्यू नहीं रहती है । तो यहाँ भी शायद बहुत इजी मिला है न तो तभी शायद वैल्यू नहीं देते हो इसीलिए ढीले-ढाले और सुस्त लेजी और ऐसे चलते हैं जैसे कि भगवान को गरज है, इनको गरज ही नहीं है, ऐसे चलते हैं । ऐसे नहीं चलना है, नहीं, हमारी गरज है न । तो अपनी गरज को पूर्ण रीति से चलाना चाहिए कि यह हमारे लिए है इसीलिए बहुत इजी मिली है ना, परंतु नहीं यह भले बाप है ना तो बाप बच्चों से क्या मेहनत कराएगा । दूसरों ने तो बहुत मेहनत के रास्ते बतलाए लेकिन होना फिर भी उससे कुछ नहीं था । वह तो फ़ालतू यानि फालतू का मतलब यह नहीं, माना जो चीज लेने की है उसमें फालतू, बाकी थोड़ा बहुत फिर भी ईश्वर के प्रति करते थे न, तो भगवान कहते मेरे प्रति उल्टी भी करते हो ना कुछ मेहनत तो भी उसका फल दे देता हूँ अल्पकाल के लिए । उसका व्यर्थ नहीं जाता है, भले उलटे भी करते थे, हनुमान को भगवान समझा तो भी ठीक फिर भी भगवान समझा न । चलो, फिर उसका भी दे देता हूँ कुछ ना कुछ मनोकामना पूर्ण कर देता हूँ परंतु जो यथार्थ गति सद्गति प्राप्ति है वह नहीं देता हूँ । वह तो मेरे द्वारा मिलेगी ना उसके लिए तो जो यथार्थ पुरुषार्थ होगा, उसके लिए तो चाहिए पूरा पापों का दग्ध । तो पूरे पापों का नाश करने के लिए पहले मेरे से जब बल लेंगे तभी तो तुम गति सद्गति को पाएंगे ना । उसके लिए तो चाहिए पूरी

प्योरीफिकेशन, तो पूरा प्यूरीफाइड चाहिए ना । तो पूरा प्यूरीफाइड तो सिवाय मेरे ज्ञान और योग के बन नहीं सकते इसीलिए मुझे बनाने के लिए आना पड़ता है । तो इसीलिए बाप कहते हैं पूरी पूरी बातों को समझ कर के अभी उसका पुरुषार्थ रखो और उससे अपनी सोल को प्यूरीफाइड करो । तो सोल को पॉलिश करो, कोई कुछ कहते हैं कोई कुछ कहते हैं लेकिन है कैसे करें कैसे वपो तरकीब सिवाय एक के और कोई नहीं बताएगा । भले कहते बहुत है की सोल को प्यूरीफाइड या कई तो कहते हैं सोल तो है ही न्यारी, लेप छेप नहीं लगता है उसके ऊपर । और लगता ही तो सारा लेप छेप उसके ऊपर ही । ऐसे थोड़ी है कि सोल के ऊपर ना लगता हो तो सोल क्यों भोगती है, भोगती तो आत्मा है ना । आत्मा ही तो एक शरीर छोड़कर के दूसरे शरीर में जाती है न तो कौन भोगती है । रिसपॉसिबल जो है वही तो जाता है ना । अगर आत्मा रिस्पांसिबल नहीं है तो फिर शरीर जाए ना, फिर आत्मा क्यों जाती है, फिर तो शरीर को जाना चाहिए । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं बच्चे इन सब बातों को अच्छी तरह से समझ करके और बाप से अपना पूरा-पूरा जन्मसिद्ध अधिकार ले लो । और अभी टाइम है, अभी ना लिया तो अभी खोया माना सदा के लिए खोया । ड्रामा में इसकी नूंध ही नहीं रहेगी न तो ऐसा मत करो । अब का खोया माना सदा के लिए खोया और अब का पाया माना सदा के लिए पाया । कल्प-कल्प पाते रहेंगे । तो ऐसे पाने के लिए पूरा पुरुषार्थ रखकर के बाप से अपना

जन्मसिद्ध अधिकार पाने का पूरा पुरुषार्थ रखना है । अच्छा, आज तो गुरुवार भी है और हमारे भी जाने का आज का ही दिन है, कल तो चले जाने का विदाई का दिन होगा, छुट्टी लेने का । आज लास्ट डे है, कल जाने का दिन गिनती में आएगा । देखो हमारे लेने वाला भी आया है पूने से, तो अभी संगम हो गया न, ले जाने वाले और आप लोगों से छुट्टी लेने वाले, तो अभी संगम पर पहुँच गए हैं जाने आने के संगम पर । अभी वहाँ फिर पुणे वालों के यहाँ आने की तैयारियाँ हैं यहाँ जाने की तैयारी है, देखो यही तो आना और जाना, सृष्टि के नियम का चक्कर है । यह सब है हद की बातें, वह है बेहद का आना जाना । तो अभी हम आत्माओं को भी यह चक्कर पूरा करके अभी अपने बेहद बाप के घर को जाना है उसी का ध्यान रखना । इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे उसको ख्याल रखते अपना पुरुषार्थ रखो । अच्छा जिसको बैठना है बैठो । विचारों को छुट्टी तो नहीं है इसलिए टाइम पर छोड़ना अच्छा है । ऐसे बेहद बाप से अपना पूरा पूरा वर्सा पाने का पूरा पुरुषार्थ रखो । और अच्छी तरह से बाप से जो कुछ मिल रहा है उसी खजाने से पॉकेट भरते जाओ । यह पॉकेट नहीं, ये पॉकेट, तो इस पॉकेट को भरो । जितना भरेंगे उतना यह पॉकेट चलेगा, यह पॉकेट नहीं चलेगा, यह पॉकेट तो छोड़ना होगा । इसीलिए बाप कहते हैं यह पॉकेट जो मन बुद्धि सहित आत्मा है, आत्मा मन बुद्धि के तो साथ में ही रहेगा ना तो उसमें जो भरेंगे वह ले जाएंगे । तो अगर भरना है पॉकेट में तो बुद्धि रूपी पॉकेट में भरो संस्कार। तो संस्कार

तो आत्मा ले जाती है ना । बुद्धि से क्या बनता है संस्कार। जो जो हम करते हैं उसका संस्कार बनता है। तो आत्मा संस्कार सहित है तो वह जाती है अपने संस्कार ले जाती है। तो अगर हमको पॉकेट भर कर जाना है तो पॉकेट संस्कार से, शुद्ध संस्कार तो उससे हम जितना भरेंगे वह हमारा पॉकेट चलेगा । तो हम तन को, मन को, धन को भरकर ले जा सकते हैं परंतु धन ऐसे नहीं कोई नए पैसे हाँथ में चलेंगे, नहीं, परंतु उसका हम जो करेंगे वो अपने कर्तव्य से वह भरते हैं। देखो कोई साहूकार के घर में जन्म लेता है, तो हाथ में तो धन नहीं लेकर आता है ना । लेकिन ऐसे घर में जन्म उसको मिलता है । लेकिन वह कैसे ले आया, अगले जन्म में कुछ अच्छा काम किया है, कर्मों का तो देखो धन ले आया ना । वो अपना हक ले आया न । उसको ऐसे घर में जन्म मिलता है तो धन उसका पहले से ही तैयार है । ले आता है तो ले आए न परंतु ऐसे सीधा नहीं लेकर आता है हाँथ में पैसे लेकिन वह कर्मों से अपना बनाते हैं । तो हम भी अपने कर्मों को श्रेष्ठ करते हैं तो अपने तन मन धन को प्यूरीफाइड लेवे । तो कहाँ ? नई दुनिया में, सुख की दुनिया में । तो यह सभी क्योंकि इस पुरानी दुनिया में लेने में धन में मजा नहीं है । अभी धन वालों का हाल पूछो ना इसीलिए कहते हैं इस दुनिया का हमको धन भी नहीं चाहिए, इस दुनिया का हमको मर्तबा भी नहीं चाहिए इस दुनिया का हमको कुछ भी नहीं चाहिए। इस दुनिया से तो हमारी दिल भर गई है । हम कहते हैं हमको मिले तो नई दुनिया में, जिसमें मजा हो

न, आनंद हो, खुशी हो और सब कुछ पाने में मौज हो । धन भी हो तो मौज का हो ना, शरीर भी हो तो फिर मौज का, ऐसे नहीं शरीर को तो फिर रोगी हो, धन हो तो किट-किट हो, ऐसी कोई बात ही, नहीं हो सब सुख, इसीलिए अभी उसका पुरुषार्थ रख रहे हैं । तो ऐसे पुरुषार्थ में अपने को अच्छी तरह से रखते और अपने को आगे बढ़ाते चलो । अच्छा, चलो, चलो सबकी याद प्यार भी देना और हमारी याद प्यार विदाई लेना, ठीक । चलो, चलो के बाबा के पास । यह बेचारी को प्रेम आता है कि आज मम्मा के साथ हमारा अंतिम मुलाकात है । कोई बात थोड़ी ही है, हम तो मिले हैं ना अभी । अभी तो मिले हैं, अभी विदाई थोड़ी होती है हमारी । हमारी विदाई थोड़ी है । विदाई हुई थी पहले, हम एक दो से बिछड़ गए थे, अभी तो मिले हैं । देखो कहां-कहाँ से, यह कहाँ का, वह कहाँ का, हम जानते हैं आपको? देखो कोई है कल्प पहले का संबंध तभी तो देखो आकर के मिले हो ना, यह बाप से हक लेने के लिए अब आए हो । तो यह मिलन अभी थोड़ी खत्म होगा, यह मिलन अभी जन्म-जन्म का चलने का है क्योंकि यह अब हम बाप से हक ले रहे हैं ना वो अपने प्रालब्ध में फिर मिलकर भागेंगे, तो अभी उसी में हम स्टेटस ऊँची पाएँ, उसका अभी ये पुरुषार्थ रखना है । तो अभी तो हमारा मिलन हुआ है ना अभी विदाई थोड़ी होती है । अभी तो विदाई पूरी हुई, विदाई हो गई थी, हम छूट गए थे एक दो से, कोई कहाँ, कोई कहाँ, कोई कहाँ, अभी तो मिले हैं तो अभी हम कोई बिछड़ते थोड़ी हैं । विदाई नहीं है

हमारी, अभी मिलन ही मिलन है । सभी मिलकर रहेंगे । इस जन्म में मिले हैं अनेक जन्मों के संबंध में मिलते रहेंगे इसीलिए अपना मिलना ही मिलना है समझा । अच्छा चलो बाबा के पास, बाबा कहेगा ये देखो क्या, अच्छा शाबाश , चलो भागो, (रिकॉर्ड बजा- इकमात सहायक बंधू सखा) बाबा को याद करो । कोई देहधारी को थोड़ी याद करना है बाबा को याद करो । ये बाबा के धन को याद रखती है बेचारी, समझती है ना हाँ बाबा का खजाना, हमको बाबा मम्मा से खजाना मिलता है, तो खजाने का लोभ तो सबको रहता है ना । यह तो बड़ा खजाना है । इससे तो हम बड़े साहूकार बनते हैं । जिस्मानी, रूहानी दोनों ताकत मिलती है लेकिन खजाना तो फिर देखो मुरलियों में आप लोगों को मिलता है लेकिन वह है थोड़ा थोड़ा पारुखा हो जाता है, वह डायरेक्टर टेस्ट और होता है सुनने का और वह जैसे रोटी पकाई जाए ताजी-ताजी खाई जाए, उसी समय निकले और उसे खाएं तो गरम-गरम का स्वाद अच्छा होता है और फिर रोटी को थोड़ा रख दो तो वह पारूती हो जाती है तो वह आपको मुरली में डाल के लिख कर के भेजते हैं वो जरा पारुति होके आती तो पारूती का स्वाद और ताज़ी का स्वाद का फर्क तो होता ही है, इतना फर्क तो जरूर पड़ता है लेकिन हाँ फिर भी जो टेस्ट लेने वाले हैं, ताजी खाने वाले, भागना, चले आना, ताजी रोटी खाने के लिए वहाँ, उसी से निकले उसी समय खाओ, गरम गरम । और बता देना कोई आए मम्मा का कल है प्रोग्राम अनुसार, सब समाचार तो अपने आप ही सुनाना

चाहिए, चलो! अच्छा ऐसा बाप दादा और माँ के मीठे-मीठे बहुत अच्छे सपूत सयाने और समझदार बच्चों को याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

21. श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान - 23-04-65

हेलो, गुड मॉर्निंग । आज शुक्रवार, अप्रैल की 23 तारीख है । प्रातः क्लास में प्राण माँ की मुरली सुनते हैं ।

रिकार्ड:-

जो पिया के साथ है उसके लिए बरसात है........

जो समझ लिया है, जो गीतों में आता है पिया, पियू, बालम, साजन, ऐसे-ऐसे जो शब्द आते हैं तो यह कोई कॉमन मनुष्य के लिए नहीं है । यह कहावत है ना जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि । भले गीत बनाने वालों ने गाने वालों ने किसी भी तरह से गाया हो लेकिन अपनी बुद्धि तो अभी उधर है ना, उनके तरफ । तो अभी बुद्धि को ले जाना है उधर, परमपिता परमात्मा की तरफ । जो ही अभी अपना मात-पिता, बंधु-सखा यह सभी कनेक्शन उसी से ही हैं । इसलिए जब ऐसे सुनते हो तो बुद्धि को तो उधर ही ले जाना है । तो अभी सुना, जो पिया के साथ है उनके लिए बरसात है, कौन सी बरसात? यह जो पानी की बरसात पड़ती है? नहीं, यह ज्ञान की बरसात । ज्ञान को बरसात भी कहा जा सकता है इस अर्थ से क्योंकि बरसात से क्या होता है, देखो पानी मिलता है, अगर बरसात ना पड़े तो खाना पीना नहीं खा सको ।

तो यह सरसब्ज बनाने के लिए, तो यह है ज्ञान की बरसात । हम आत्माएँ सूख गई हैं ना? सुखी हो ना? अभी तो सुखी नहीं हो ना? सूख गई थी, यह ज्ञान की बरसात ना मिलने से आत्माओं को सुखी कहो या आत्माएँ अपवित्र, तमोप्रधान हो गई थी । अभी बाप ने आ कर के फिर से इस ज्ञान बरसात से अभी उसको साफ कर रहे हैं या सरसब्ज बना रहे हैं । तो अभी हम फिर से हरे-भरे होते जा रहे हैं इस ज्ञान की बरसात से । तो इसीलिए इसको बरसात भी कहेंगे क्योंकि हम आत्माएँ जो मुरझा गई थी, सूख गई थी, अभी इस बरसात से फिर हम जागृत होकर के अभी फिर बाप से अपना वह जो कुछ भी पाने का है, वह पाने का यह पुरुषार्थ रख रहे हैं इसीलिए इसको ज्ञान की बरसात कहा जाए । ज्ञान के भी बहुत नाम हैं, जैसे परमात्मा के भी बहुत नाम हैं ना, तो इसी तरह से ज्ञान के भी बहुत नाम है । ज्ञान को बरसात कहो, ज्ञान को अंजन कहो, ज्ञान को कहाँ देखो तलवार के रूप में दिया है, जैसे शक्तियों को तलवारें आदि दिए हैं न, अभी उन्होंने तलवार आदि कोई हिंसक अस्त्र-शस्त्र तो नहीं उठाए हैं ना, यह ज्ञान है तो ज्ञान को तलवार भी कहा जाता है । कृष्ण के हाथ में देखो मुरली दी है । उसको तो भगवान समझा है ना, परंतु वह मुरली, वह कोई कांठ की मुरली की बात नहीं है । वो यह ज्ञान है जो परमात्मा ने सुनाया है इसीलिए उनको ज्ञान मुरली कहा जाता है । कहाँ देखो साज़ों के रूप में जैसे सरस्वती को सितार या बैन्जो दिया है तो ऐसा नहीं है कि उसने आ करके यह सितार

बजा करके सुनाया है । नहीं, यह ज्ञान सुनाया इसीलिए उनको कहते हैं गॉडेज ऑफ नॉलेज, तो नॉलेज दिया है ना । बाकी ऐसे नहीं है बैंजो बजाया है इसीलिए कहा, क्योंकि इसी से जीवन मधुर बनती है । इससे जीवन में यह प्राप्ति आती है सुख शांति की इसीलिए कहाँ साज़ों के रूप में, कहाँ अस्त्र शस्त्रों के रूप में, कहाँ कुछ रूप में, कहाँ ये देखो ज्ञान का नेत्र दे दिया तो यह सभी ज्ञान के अलंकार और ज्ञान के सब निशान हैं । ज्ञान को भी देखो अभी कितने रूप और कितने ढंग में लाया है, कहाँ नेत्र से, कहाँ अंजन से, कहाँ बरसात के रूप में, कहाँ कुछ तो यह सभी बातें बैठ कर के बाप समझाते हैं । वह भागीरथ का देखा है ना, वो यहाँ से गंगा निकली फिर पानी बहता है, वह चित्रों में दिखलाया है तो यह भी सभी है, तो वास्तव में ज्ञान की बरसात की बात है परंतु ऐसा नहीं पानी यहाँ से निकलेगा यह तो नॉलेज है न, जिसको धारण करना है और उस परमात्मा ने भी आकर के नॉलेज सुनाया है, तो नॉलेज तो सुनाना पड़ेगा ना बाकी यहाँ से पानी थोड़ी निकलेगा माथे से । तो यह सभी चीजें अभी बुद्धि में हैं कि परमात्मा ने आकर के नॉलेज सुनाया है और हमने भी नॉलेज को धारण किया है बाकी कोई ज्ञान की बरसात या ज्ञान की गंगा या पानी बहा है या कुछ ऐसी बातें नहीं है । तो यह तो सभी अभी अच्छी तरह से जो पुराने हो जो भी आते हो, इन सब बातों को तो समझ गए होंगे । तो अभी बाप के द्वारा वह नॉलेज प्राप्त हो रहा है जिससे अभी हम हरे-भरे होते जा रहे हैं, होते जा रहे हो ना, अपने

को समझते हो ना क्योंकि यह समझने की बातें हैं । तो देखो यह ड्रामा भी जो है वह भले है बना बनाया, परंतु उसका मतलब यह नहीं है, इसके भी नियमों को समझना है ना कि यह बना बनाया ड्रामा भी किस तरह से बना हुआ है । तो बाप आकर के समझाते हैं कि यह बना बनाया जो चीज है वह भी किन नियमों से बना हुआ है वह समझने की बात है । इसमें मूंझना नहीं है क्योंकि कभी-कभी कई इस ड्रामा की बात में मूंझते भी हैं कि जब यह बना बनाया है तो फिर हमारे लिए तो कोई पुरुषार्थ की बात ही नहीं है । बना बनाया पड़ा है फिर हम काहे के लिए मेहनत करें जो होना होगा वह होगा परंतु नहीं, वह होना होगा वह भी तो होगा हमारे करने से ना । तो हमको अपना आधार रखना है अपने कर्म के ऊपर । वह बात भूल जाओ जो इन बात में कोई को ना समझ में आती है ना, तो उसमें अटकना नहीं है कि बना बनाया है, और यह पॉइंट हमें समझाई भी है कि कभी भी कोई भी नयों को समझाने की नहीं है । यह तो है ड्रामा को समझना कि कैसे यह नाटक बना बनाया है और अनादि काल से यह बना बनाया ही है, इसका टाइम है शुरू होता है तो पूरा होता है फिर पूरा हो करके फिर शुरू होता है, तो यह तो एक नाटक है जो बाप बैठकर के समझाते हैं कि यह कई बार शुरू हुआ है, फिर पूरा होता है, फिर पूरा हो करके फिर शुरू होता है वह बैठकर के बाप समझाते हैं, लेकिन शुरू कैसे हुआ, मुझे भी तो आकर के देखो कर्म करना पड़ता है ना, उसमें तो मैं भी बंधा हुआ हूँ और मुझे भी आकर

के नई दुनिया को रचने के लिए काम करना पड़ता है तो मेरा भी पार्ट है ना, तो हरेक का भी अपना-अपना पार्ट है जो भी नूंधा हुआ है । तो हमको अपने पार्ट के ऊपर, अपने एक्शंस के ऊपर अटेंशन देने का है । तो अभी जो हमारा टाइम है, अभी हमको क्या करना है, अभी तो हमको अपने कर्मों को श्रेष्ठ बना करके अभी हमको अपनी प्रालब्ध ऊंची करने की है । तो बाप भी तो आता है ना कर्म बनाने के लिए जब ड्रामा है तो फिर उसका आना क्यों ना हुआ होना चाहिए फिर उनको आ करके हमको ज्ञान देना उनको भी यह मेहनत करने की क्या जरूरत है । नहीं, उनका भी आना यह पार्ट है, हमको आकर के ज्ञान देना, यह पार्ट है न, तभी तो उसकी महिमा है ना नॉलेजफुल । तो नॉलेजफुल है तो अपने लिए तो नहीं है ना कि भाई उनको सब जानकारी है । जानता है, अपने लिए जानता है तो क्या हुआ लेकिन वह जो जानता है वह आ करके समझाता है और समझाता है हमको, जो हम नहीं जानते हैं तो हम नहीं जानते हैं उन्हों को आ करके समझाया है । उनकी समझ उनके पास है तभी उनकी महिमा है कि नॉलेजफुल है । बाकी ऐसे नहीं है वह हम सब को जानता है अपने लिए तो हमारे लिए क्या हुआ । नहीं, उसने हमको उसी समझ का बल दिया है, जिसके आधार से हम भी ऊँचे उठे हैं तो इसी कारण उनकी महिमा है, तो परमात्मा को भी कर्म करने की ड्रामा में ही समझो परंतु उनको भी तो अपना कर्म करने का पाबंदी है ना, वह भी तो बंधा हुआ है ना । इसी तरह से हम भी अपने कर्म करने के लिए

बंधे हुए हैं, तो हमको दूसरी बात को ना समझ या उन्हीं बातों में ना मूंझ करके हमको अभी क्या करने का है, हमको अभी अपना कर्म स्वच्छ बनाने का है । तो इसीलिए ऐसा नहीं कि ड्रामा में होगा तो अपने आप ही स्वच्छ हो जाएगा नहीं, हमारा काम तो है ना करना, बनेगा भी कैसे अपने आप नहीं बनेगा वह भी हम करेंगे ना । तो हमको अपना अटेंशन जो है वो करने के ऊपर देने का है । हमको अपना कर्म करके अपने को स्वच्छ बनाना है । अभी देखो हमको समझ मिली है, हमारा काम क्या है, अभी हम ऐसे तो नहीं समझेंगे कि जो होना होगा वह अपने आप होगा । नहीं, हमारा काम है जो समझ है उस पर चल करके काम करना न । तो हमारा काम है उसी समझ को ले करके अभी अपने कर्‌म को स्वच्छ बनाना । हमारा अटेंशन इसी कर्म पर है कि हम अपने को स्वच्छ बनाएं । तो हमारा काम है काम करके उसको प्राप्त करना, जो करेंगे तो जरूर पाएंगे । बाकी यह तो जानते हैं कि हाँ यह ड्रामा है, यह खेल है, आदि से अंत तक है कैसे चलता है वह नॉलेज है जिसको समझने की बात है, बाकी ऐसा नहीं है कि हम उसके लिए चुप हो करके बैठें या कुछ ना करें तो इन बातों में अगर यह बात किसी को नहीं भी समझ में आती है ना, तो मूंझना नहीं है । आप उसको छोड़ कर के, यह कोई पॉइंट ऐसी भी नहीं है कि कोई जरूरी है । नहीं, यह पॉइंट ना समझ में आती है तो उसको छोड़ कर के अपना अटेंशन अपने कर्म पर रखो कि हम जो करेंगे सो पाएंगे । यह तो गीता में भी है न कि जीवात्मा

अपना शत्रु अपना मित्र है तो करने के ऊपर सारा आधार है न । तो हमको अपना पुरुषार्थ करना है इसीलिए पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध । भले पुरुषार्थ और प्रालब्ध का है बना बनाया परंतु वह बना भी कैसे हैं, जो करेगा सो पाएगा, इसी के आधार पर बना हुआ है परंतु करेंगे तब पाएंगे ना । बना हुआ भी ऐसे ढंग से है कि हम जो करेंगे सो पाएंगे । अगर करेंगे नहीं तो पाएंगे नहीं तो इसीलिए ऐसा नहीं है जो बना हुआ होगा वह आपे ही होगा । नहीं, वह भी हमारे करने से होगा ना और ऐसा भी नहीं है की करना भी हमारा अपने आप होगा, वह तो हम समझेंगे, करेंगे, ध्यान देंगे, अटेंशन देंगे तब तो करेंगे ना । तो इसीलिए हम को सारा आधार अपने करने के ऊपर रखना है और करना ही फिर पाना है । इसीलिए इन बातों में भी कोई अगर अटकता हो तो इनमें मूंझो नहीं । इनको छोड़ कर के अपने कर्म के ऊपर रहो कि हम जो करेंगे सो पाएंगे और बिना किए पा तो सकते ही नहीं है । लेकिन अभी सिर्फ रोशनी मिलती है कि करना क्या है । क्योंकि मनुष्य तो समझते हैं कि भाई अच्छा करना है । अच्छा भी क्या है, अच्छे का भी नॉलेज होना चाहिए ना की अच्छी चीज क्या है, सबसे श्रेष्ठ कर्म कौन से हैं, वह बैठ कर के भी बाप समझाते हैं कि कर्मों को श्रेष्ठ बनाना जिसके ऊपर फिर कोई कर्म करने की जरूरत ना रहे, ऐसे श्रेष्ठ कर्म कौन से हैं । तो बाप बैठ करके उसकी अभी नॉलेज देते हैं की सबसे ऊँचे में ऊँच और श्रेष्ठ में श्रेष्ठ कर्म कौन से हैं । तो श्रेष्ठ कर्म तभी हैं, जिस कर्म करने से फिर हमको कोई बात

करने की दरकार ना रहे तो वह चीज अभी सीखलाते हैं कि कंप्लीट पवित्र कैसे बनो । तो अभी कम्प्लीट पवित्र बनाने की अथवा कंप्लीट अपने श्रेष्ठ कर्म बनाने की अभी नॉलेज बैठकर के बाप देते हैं जिससे हमारे कैसे पिछले पापकर्म भी दग्ध होवे और आगे के लिए भी हमारी कंप्लीट पवित्र कर्म बने, जिसके आधार से हम उसी पवित्रता की प्रालब्ध को पाएं जिसमें फिर हमारे को कोई कर्म करना ना पड़े । बाकी हम जो करते आए हैं ना वह अल्पकाल के हैं, वह श्रेष्ठ कर्म सदा के लिए नहीं है, यानी सदा की प्राप्ति के लिए नहीं है इसीलिए उनको कहेंगे अल्पकाल की प्राप्ति के कर्म । तो उनको हम श्रेष्ठ कर्म जो कंप्लीट कर्म है उसके भेंट में नहीं कहेंगे । वह है थोड़ा बहुत अच्छा करता है जैसे किसी ने दान किया मानो, अच्छा दूसरे जन्म में क्या होगा, उसको धन दान करने के एवज में उसको अच्छा धन मिलेगा, तो चलो साहूकार होगा ना, बस न, इतना ही उसको फल मिला या जो भी जितना थोड़ा बहुत अच्छा किया उसका मिला लेकिन उससे ऐसा तो नहीं है ना कंप्लीट पवित्रता का बल मिलेगा, जिससे सब कुछ प्राप्त हो । नहीं, धन मिला तो कोई रोग होगा, फिर कोई ऐसी कर्म की भी हानि होगी जिससे फिर कोई ना कोई दु:ख रहेगा, तो यह सब चीजें जो है कि सभी चीजों का सुख प्राप्त रहे उसको कहा जाएगा कर्म श्रेष्ठ । तो बाप बैठ कर के अभी वो चीज हमको सिखाते हैं जिससे हमारे सर्व कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म जिसको कहा जाता है, सब तरह से कर्मों की श्रेष्ठता की प्रालब्ध हमको प्राप्त रहे और जिस

प्रालब्ध से फिर हम सदा सुख को प्राप्त करते रहें तो सदा सुख और सर्व सुख प्राप्त करने के लिए हमारे ऊँच में ऊँच जो कर्म है ना वह बैठकर के बाप सिखाते हैं इसीलिए कहा जाता है कि जो बाप ने बैठकर के कर्म सिखलाया न इसीलिए अपने कर्मों के लिए कहा है कि मेरा कर्मयोग सबसे श्रेष्ठ है और उसके ऊपर फिर कोई ऐसी चीज नहीं है । तो मैं तो आकर के कर्म करना सिखलाता हूँ, वह सबसे श्रेष्ठ है और उसको ही कहा कि यह कर्म योग राजयोग यानी जिस प्राप्ति का राजाई का अथवा जो मैं स्थापित करता हूँ राजाई अथवा जो मैं आकर के दुनिया बनाता हूँ उसी श्रेष्ठ दुनिया के ऊपर फिर कोई दूसरी तो बात है ही नहीं ना । तो यह सभी चीजों को समझना है कि अभी जो हमको बाप के द्वारा यह कर्म करने की जो शिक्षा मिलती है यह है सबसे ऊँच, इसीलिए इसको कहा है कि कर्म श्रेष्ठ अथवा कर्म की ऊँच प्रालब्ध अभी बैठकर के बाप सिखाते हैं । तो इन बातों में अपनी बुद्धि रख करके कि हमको अपना कर्म करना है और जो अभी बाप के द्वारा यह मत मिल रही है ये उनकी मत है ना, बाप की डायरेक्ट तो अभी जो उसकी मत मिल रही है उसे लेकर के अभी हमको अपने कर्मों में रहना है । बाकी तो बाप बैठकर समझाते हैं कि तुमने कभी अच्छा कर्म किया था और ऐसी प्रालब्ध पाई थी, इसका भी तो निशान है ना कि तुमने यह किया था तो वो ड्रामा भी समझाते हैं कि ऐसे नहीं है, जो चीज हुई है वह फिर होने की है उसी आधार पर समझाते हैं कि नहीं, तुम आगे ऊँचे थे फिर देखो कैसे

तुम्हारा ये सब नीचे चले आए, अभी फिर आकर के तुम्हारा वो टाइम हुआ है । अभी फिर मैं आया हूँ तुमको ऊँचा उठाने के लिए तो ये सारा चक्कर है सृष्टि का, वह बैठ करके समझाते हैं कि कैसे तुम ऊँचे थे, अभी नीचे हुए हो फिर ऊँचे होते हो, वह चक्कर बैठकर समझाते हैं । बाकी हमको करना तो कर्म है ना । ऊँचा उठेंगे तो भी तो कर्म से ना फिर एक-दो ने भी अपने कर्म उल्टे बनाए तभी तो गिरे ना कारण तो फिर भी कर्मों का देना पड़ेगा ना । तो इसीलिए इन बातों में भी भाई ड्रामा है, ड्रामा के कारण ही हम गिरे और ड्रामा से ही हम चढ़ेंगे । लेकिन ड्रामा से भी चढ़ेंगे कैसे, उनके भी कोई नियम है ना, तो उन नियमों को भी समझना है कि हम करेंगे तो पाएंगे । अगर नहीं करेंगे तो समझेंगे इसका ड्रामा में पार्ट नहीं है । ड्रामा तभी समझेंगे कि अगर ये अच्छा पुरुषार्थ नहीं करता है तो समझेंगे हाँ इनका ड्रामा में पार्ट नहीं है, परंतु हमको करने के लिए तो करना पड़ेगा ना । पुरुषार्थ करेंगे तब तो पाएंगे ना । अगर अभी हम हैं, हम समझे कि अगर हमारा ड्रामा में होगा तो फिर हम अपने आप ही चढ़ेंगे फिर तो कुछ नहीं करें । तो फिर हमारी क्या पड़ी है इतनी मेहनत करें, ये क्यों हम करते हैं । ये इसीलिए करते हैं क्योंकि समझते हैं कि हम जो करेंगे सो पाएंगे । तो अपने करने के ऊपर ही तो पाने का आधार है न । तो यह समझने की बात है । ऐसे नहीं कि हमारे ड्रामा में होंगा तो हमारे से अपने आप ही होगा । आपे ही कैसे होगा, वह भी तो हम सोचेंगे हमको यह करना है, यह राइट एक्शन

है, यह रॉन्ग है, यह करना है, यह नहीं करना है, यह तो हम समझ ले कर के अपने पुरुषार्थ से चलेंगे ना । अगर हम खाली उसी पर बैठ जाएं कि जो होना होगा वह अपने आप ही होगा हम बैठ जाते हैं, फिर तो सब में बैठो । फिर धंधा भी नहीं करो, कहो जो होना होगा, यह काम काज जो होना होगा, पैसा कमाना होगा तो आपे ही होगा और बैठ जाओ, देखो कमाते हो । तो बैठ जाओ चुप करके, फिर तो सभी बात मैं बैठो ना, सिर्फ इसी बात में क्यों, फिर तो सभी करो यह जो शरीर निर्वाह के लिए काम करते हो ना, उसमें भी ड्रामा रखकर बैठ जाओ कि नहीं, हमारा होना होगा तो अपने आप होगा, हमको पैसा कमाना होगा फिर अपने आप कमाएंगे, कर सकते हो? नहीं, जैसे उसमें सोच के, समझ के चलना पड़ता है, फिर कोई रिजल्ट हो जाती है तो वहाँ समझते हैं कि चलो इतना ही था, जो होना था वह हुआ । बाकि ऐसे नहीं है कि करने के समय हम उस पर बैठ जाएँ की होना होगा तो होगा खाना पीना सब, फिर तो कमाओ भी नहीं, फिर तो कुछ नहीं करो, होना होगा तो होगा, हम तो चुप करके बैठ जाएँ फिर तो कुछ नहीं काम कर सकेंगे, फिर तो खाना भी न खाओ, पकाओ भी नहीं, फिर तो कमाओ भी नहीं, फिर तो कुछ नहीं करो, होना होगा अपने आप होगा फिर तो चुप करके बैठ जाओ, परंतु ऐसा होता नहीं है । करना ही पड़ता है, कर्म तो चलता ही है ना । तो जो चलता है उसी में हमको समझना है और समझ कर के अपने कर्म को श्रेष्ठ बना करके चलना है जिसकी प्रालब्ध हमको श्रेष्ठ पानी है ।

तो वह तो हमको समझ भी देनी पड़ेगी, करम भी करना पड़ेगा, पुरुषार्थ भी रखना पड़ेगा, रॉन्ग ओर राइट को सोचना समझना और उसी पर हमको चलना भी पड़ेगा कि राईट क्या है, जो हमको करने का है । तो यह सब करने के ऊपर है इसीलिए अपना आधार सारा कर्म के ऊपर है । बाकी तो हाँ यह टोटल समझते हैं कि यह वर्ल्ड की हिस्ट्री कैसी है, ये शुरू कैसे होती है, पूरी कैसी होती है फिर इसका भी टाइम है जो बैठकर के बाप समझाते हैं । अभी वह टाइम पूरा हुआ है फिर से अपना आदि सनातनी वो जो पहली पहली दुनिया थी उसका अभी टाइम आता है तो यह वर्ल्ड हिस्ट्री रिपीट होती है । तो यह सभी हिसाब हिस्ट्री का भी समझना है, और उसमें हमारा डिटेल्स जो चलता है वह कम होता है वह डिटेल्स चलने से ही तो हमारे कर्म ऊँचे फिर हमारे कर्म नीचे उसी के आधार पर ही तो हमारी यह सारी हिस्ट्री वर्ल्ड की चलती है । हमारे नीचे के कर्म होते हैं तो हम नीचे हो जाते हैं मानो वर्ल्ड ही नीचे हो जाती है अर्थात उसकी लाइफ ही नीचे हो जाती है, हमारे कर्म ऊँचे होते हैं तो देखो वर्ल्ड ऊँची हो जाती है अर्थात दुनिया स्वर्ग हो जाती है, है तो हमारे कर्म के आधार पर न । स्वर्ग और नरक ये आधार कैसे बना, नर्क कैसे बना । बनी बनाई तो नहीं पड़ी है न, बनती है, परन्तु बनती कैसे है कर्म से । नर्क भी बनता है तो हमारे कर्म से और स्वर्ग भी बनता है हमारे कर्मों से । तो कर्म से बनता है, ऐसे नहीं स्वर्ग बना रखा है, नरक बना रखा है सब बना बनाया पड़ा है । नहीं, वो टाइम अनुसार चेंज भी होती है तो

भी हमारे कर्म से होती है ना । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए जो चीज हमारे कर्म के आधार से बनने वाली है तो हमको आधार पकड़ना है कर्म का । भले बना बनाया है परंतु आधार कर्मों का है, जो हम करेंगे उससे बनेगा । बना बनाया भी उसी तरीके से बनता है हमारे कर्म से । तो नर्क और स्वर्ग भी हमारे कर्म से बनता है, वो हम बुरे कर्म करते हैं तो दुनिया देखो नर्क हो जाती है और फिर हम अच्छे कर्म करते हैं तो दुनिया स्वर्ग होती है तो दुनिया की बात है ना । तो यह दुनिया की हिस्ट्री भी है और फिर हमारे इंडिविजुअल कर्म के ऊपर भी सारा आधार भी है इसीलिए इन सभी बातों को भी अच्छी तरह से समझ कर के और अपने ऐसे पुरुषार्थ को चलाना है । बाकी इसमें ऐसा नहीं है कि होना है, दुनिया स्वर्ग होनी है तो हम अपने आप आ जाएंगे । नहीं, इसके लिए ही तो हम माथाखुटी करते हैं कि हम स्वर्ग में अपना अधिकार लगाएं और स्वर्ग में भी ऊँचा स्टेटस पाएं, उसके लिए इंडिविजुअल पुरुषार्थ करें । बाकी बाप बनाता है, अपने आप होगा तो फिर तो हम भी चुप करके बैठ जाएं । फिर तो हम खाएं पियें मौज करें, जैसे चले वैसे चले फिर तो कोई बात ही नहीं । हम तो अपने आप आ जाएंगे फिर तो कर्म का कुछ रहा ही नहीं ना । नहीं, हमारे कर्मों से ही तो होगी ना इसीलिए परमात्मा को भी तो हमारे कर्म बनाने के लिए आना पड़ता है । उसको भी मेहनत करनी पड़ती है हमारे कर्मों के लिए । लेकिन ऐसे ही अगर होना होता तो वह ऐसे ही कर लेता, तो हमारे से माथाखुटी

क्यों करता । उनको भी तो हमारे से माथा लगाना पड़ता है ना और हमको भी तो अपना इंडिविजुअली मेहनत करनी पड़ती है ना । तो आधार है ना । उनको भी उसी का आधार देना पड़ता है कर्मों को आ करके और हमको भी अपना इंडिविजुअली कर्म बनाने पड़ते हैं इसीलिए हम करेंगे तब पाएंगे । भले बनेगा भी परन्तु कैसे, बनने का भी तो नियम है ना तो उसको भी उसी नियम से बनाया गया है परमात्मा को भी, देखो कर्म करा करके उसी नियम से आ करके हमको बनाना पड़ता है बाकी ऐसा नहीं है बना पड़ा है अपने आप बनेगा । नहीं, अभी मकान है, ऐसा थोड़ी छू मंत्र से बन जाएगा । बनेगा जैसा नियम होगा वैसे ना कि हाँ भाई इसका ऐसे फाउंडेशन डाला जाता है, ऐसा किया जाता है, जैसी बनाने की तरकीब होगी उसी तरकीब से बनेगा ना, तो तरकीब को तो लेना पड़ेगा ना । बाकी ऐसे थोड़े है की बना हुआ होगा तो ऐसे अपने आप ही बन जाएगा । यह चीज अगर बननी होगी तो अपने आप ही बन जाएगी । नहीं, वो जिस तरकीब से बनने की है, जिस नियम से बनने की है उसी चीज को उसी नियमों से बनाना होगा ना । तो मनुष्य की लाइफ इसी नियम से बनने की है तो उसको भी तो अपने कर्म के नियम से बनाना होगा ना । तो हमको करना होगा इसीलिए हमारा अटेंशन जो है वह अपने करने के ऊपर होना चाहिए । बाकी तो जानते ही हैं कि हाँ यह तो ड्रामा है और सृष्टि चक्र है वह कैसे होता है वो कैसे ऊँचा उठता है और कैसे ये नीचे आता है परंतु अभी तो ऊँचा उठने का

टाइम है ना तो वह भी सभी बात को छोड़ करके अभी जो टाइम है हमारे उनसे ऊँचे उठने का है इसीलिए हमको ऊँच कर्म करना ही चाहिए । ड्रामा अनुसार अभी हमारी चढ़ती कला का टाइम है तो हमको चढ़ना ही चाहिए ना । अगर चढ़ती कला के समय पर हम अपने कर्मों को श्रेष्ठ ना करेंगे तो चढ़ेंगे कैसे, इसीलिए हमको अपने अपने कर्म के ऊपर यह आधार रखना है । बाकी ऐसा नहीं है कि अपने आप होगा, अपने आप कुछ होता नहीं है । कुछ होता है? खाना-पीना भी करते हो, अपने आप होता है? खाना है, हमको मिलना है तो बनके आएगा हमारे आगे? अन्दर जाना होगा, अपने आप जाएँगे? अपने आप होता है कुछ? करना होता है ना, बनाना होता है उसको खाना होता है और उनको सब तरह से चलाना होता है । हर चीज को हमको एक्शंस में लाना ही पड़ता है । तो जबकि हर चीज एक्शन से चलती है तो हमको अपना ऊँचा उठने के लिए भी तो करना है ना । उस पर फिर क्यों, हम कैसे बैठ जाएं कि नहीं होना होगा तो होगा ही । फिर तो सब बात में होना होगा । फिर तो सब के लिए कहो कि सब कुछ अपने आप होगा, चलना होगा, होना होगा सब । सब बात में ऐसे कहो बाकी बैठ जाओ, परंतु हो ही नहीं सकता है ना । तो ऐसे थोड़ी बाकी बात में करेंगे और इस बात में कहेंगे कि नहीं, होना होगा तो होगा, हमारी किस्मत में होगा, हमारे नसीब में होगा या हमारे ड्रामा में होगा तो होगा, नहीं तो फिर उसके लिए बैठ जाना है । नहीं, जैसे सब बात करते हो तभी होता है, तो यह भी तो

बात करने से होगी ना । यह फिर खास ऐसी कैसे होगी कि अपने आप हो । इसका मतलब यह हो जाता है कि कई समझते नहीं है कि यह बात भी हमारी ऐसे जरूरी है जैसे हम जीवन के दूसरे जरूरी काम करते हैं खाना-पीना पकाना कमाना सब जो कुछ करते हैं जरूरी समझकर करते हैं यह भी वैसे ही चीज है । इसको भी हमको कर्म से बनाना है । बाकी ऐसे नहीं है यह अपने आप होगा । अपने आप होगी तो ड्रामा में सब अपने आप होने का होगा ना । फिर तो कमाओ भी नहीं, बैठ जाओ, होना होगा तो आपे ही करेंगे । आप ही करेंगे? नहीं, जरूर सोचेंगे क्या करना है, कैसे करना है, उसके लिए यह करना है, बच्चे हैं पालना है, रिस्पांसिबिलिटी है, यह सब सोचेंगे, करेंगे तभी तो होगा ना, उसके लिए जाएंगे और बैठे हो यहाँ, समझते हो नहीं हमको कमाने के लिए जाना होगा आपे ही जाएंगे, आपेही कैसे? उठेंगे, टाइम हुआ है, जाना है, दफ्तर है, ऑफिस है सब एक्शंस सोच के करना पड़ता है ना, तो फिर करना ही पड़ता है ना । तो जैसे सभी बात करने से होती है, यह भी तो करने की बात है ना । इसमें फिर ऐसे क्यों कि किस्मत में होगा तो होगा, इसमें किस्मत क्यों । किस्मत तो फिर सबमें करो तो खाली इसमें क्यों? नहीं, जैसे और एक्शंस में सब एक्टिविटी चलती हैं, वैसे ही इसमें भी अपनी एक्टिविटी को राईटिअस वे में चलाना है, तो यह समझना है उसी तरीके से चलाना है । हर बात में ऐसा होता है हम को डॉक्टर बनना है या इंजीनियर बनना होगा तो क्या अपने आप बन जाएगा? नहीं,

उसके लिए जरूर है कि हम कोशिश रखेंगे, पुरुषार्थ रखेंगे, पढ़ेंगे, उसमें अटेंशन देंगे, वह सब करेंगे, तभी तो होंगे ना, सब बात कैसे चलती है । चलो, होती है तो कहते हैं हाँ भाई यह किस्मत में था । यह चीज नहीं हुई तो कहेंगे अच्छा, न था ड्रामा में इसीलिए किस्मत कहो, ड्रामा कहो बात एक ही है, वह तो होती है रिजल्ट में, जब किसी बात का रिजल्ट होता है । बाकी हमको करना तो हर काम तो करने की तरह से करना पड़ता है ना । तो उसमें तो हमको अपना पुरुषार्थ लगाना ही पड़ेगा, उसमें सोचना है, समझना है रोंग और राइट को और समझ करके चलना है तो अभी जो बुद्धि मिली है उसको लेकर के चलना है । उससे ऐसा नहीं है की होगा तो होगा, फिर तो सब में बैठ जाओ । फिर तो धंधे धोरी में भी कहो होगा तो आपे ही कमाई हो जाएगी, बैठ जाओ । बैठो तो सब में बैठो, उठो तो सब में उठो । बाकी ऐसे नहीं उसमें उठो उसमें सोंचो, उसमें करो फिर इसमें क्यों । इसमें क्यों बैठ जाते हो कि होगा किस्मत में तो पैसा भी कमाएंगे, बैठ जाओ घर में, देखो होगा? लव जी? नहीं, तो करना पड़ेगा ना । तो जैसे उस काम के लिए करना है, वैसे यह भी तो अपने जीवन के लिए ही तो करना है न । ऐसा समझो, हम मोटर चलाते हो और बच्चा आ गया तो उसका एक्शन तो अच्छा था मोटर चलाने का, वह बच्चा कट जाता है, देखिए वह भी तो हिसाब है ना । अभी कोई बच्चा कट गया, हम समझेंगे कि इसको कोई दु:ख दिया था या इसने हम को कोई दु:ख दिया था अभी रिटर्न उसको हमसे

मिला तो वह हो गया कुछ अगले कर्मों की हिसाब-किताब की भी सब चलती है ना । हमने कभी किसको दु:ख दिया है तो हाँ हमको फिर दूसरे जन्म में उससे लेना है तो यह लेनदेन का भी जो हिसाब है कर्मों का तो वह भी तो चल रहा है, हम तो अभी सोच के अच्छे चले लेकिन हमसे कुछ उसको कुछ ऐसा पहुंचा, हमारे से कुछ किया हुआ है तो हमारे से फिर मिलना है तो फिर वह चला, तो वह तो कर्मों का हिसाब है ना तो फिर वह सारी कर्मों की फिलॉसफी है कि कितने जन्मों का हमारा खाता चलता है । ऐसा नहीं जो हमें अभी करते हैं अभी ही पाते हैं नहीं, हम जो करते हैं वह हमारे रिजर्व में बहुत कुछ खाता कई जन्मों का चलता रहता है इसीलिए हम बहुत जन्मों के हिसाब को भी पा रहे हैं । समझो इस जन्म में कोई बुरा काम नहीं किया, हम तो सोचेंगे हमने कोई बुराई नहीं की है लेकिन हमारे पास क्यों यह कर्मभोग या यह बुराई सब क्यों आती है तो हाँ यह हमारा कोई अगले जन्म का भी तो पाप है ना । कई जन्मों का बोझ है सिर पर तो हो सकता है उसकी भोगना भी तो अभी हमको भोगनी पड़ेगी ना । तो ऐसे नहीं है की एक जन्म का खाता एक ही जन्म में खत्म होता है कई जन्मों का खाता हमारा बहुत बड़ा बनता है, उसको भोगने में हमारी एक आयु पूरी भी नहीं होती है इसीलिए हमारा खाता स्टॉक में रहता चलता है कई जन्मों का इसीलिए हम उसको भोगते हैं तो उसका मतलब यह नहीं है कि हम इस जीवन को देखकर भाई इस जीवन में तो हम किसी से बुराई नहीं की है या कोई ऐसा बुरा

कर्म नहीं किया है लेकिन पाते क्यों हैं बुराई । पाते है क्योंकि कोई अगले जन्मों का हिसाब है । जरूर अगले जन्म में कोई ऐसा कर्मों का हिसाब किताब है जिसको भी अभी पाने का ही है । तो कोई हिसाब अगले जन्मों का आते तो हैं न । तो यह आ गया, हमने तो सोचा नहीं कि मोटर के नीचे किसको लाऊँ लेकिन हाँ कुछ उसका दु:ख दिया हुआ है, फिर हमसे उनको मिलना है अंजानाई में । एक होता है जानबूझ कर किसका खून करना, एक होता है अन्जानाई से तो ऐसा ही कोई हिसाब होगा । कुछ ऐसा हिसाब किताब का बना होगा जिससे कुछ उसने दु:ख दिया है उसको मिलना होगा मिला है । तो यह जो हुआ वह तो समझते हैं की ये कुछ कर्मों का हिसाब है तो यह सभी चीजें कर्म का हिसाब भी तो चलता है ना, बाकी हम सोचते हैं अच्छा चले, चलना तो है ना हमको सोचकर । लेकिन सोचकर चलने पर भी कुछ ऐसा हो गया यहाँ कहेंगे ड्रामा । समझो हो गया कोई एक्सीडेंट, चलो ऐसा कुछ हो गया जैसा आपने कहा, तो हम उसको क्या कहेंगे ड्रामा, कोई हिसाब था । कोई कर्म का ऐसा किया हुआ था मेरा उसके साथ में हिसाब किताब का था सो हुआ । फिर हाँ उसके लिए हम जितना अच्छा कर सकते हैं या जितना हमारे से उसके लिए कुछ बन सके हम करें। परन्तु हाँ उसको कहेंगे न जो हो चुका, हमने जानबूझकर तो नहीं किया ना, हो गया, लेकिन अभी तो हमको अपने कर्मों को अच्छा करना है ना, जो अभी बनाते हैं । अभी तो सोचना है, अभी तो राइटियस करो करने की है उसी राइटियस को

समझना है । इसीलिए हम को अटेंशन तो देना पड़ेगा ना, ऐसा नहीं कि जो होना होगा होगा । नहीं, हमको अपने कर्म के ऊपर ध्यान देना है । तो ड्रामा और कर्म, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का ये ऐसा बना हुआ है इसी सभी बातों को अच्छी तरह से समझना है । लेकिन करना हमको पुरुषार्थ है । हमारा अटेंशन उसी के ऊपर रहना चाहिए । तो यह सभी चीजों को समझने का है अच्छी तरह से । अच्छा टाइम हुआ है । तो इसीलिए बाप से जो कुछ अपना मिल रहा है, उसी सभी बातों को अच्छी तरह से समझ और अपना पुरुषार्थ उस पर लगाना है । हमको उसमें लगे रहना है । अगर यह ड्रामा की भी बात हमको ना समझ में आए तो उसको छोड़ दो कोई ऐसी जरूरी नहीं है । हाँ परमात्मा को जानना जरूरी है क्योंकि उससे योग लगाना है । हाँ ड्रामा है, कैसा चलता कैसा है, नहीं समझ में आता है छोड़ दो, लेकिन हमको कर्म करना है, उसको पकड़ो । यह अपने आप समझ में आ जाएगा कि यह कैसा बना बनाया है और उसमें फिर रह करके हमको कैसा पुरुषार्थ करना है । हमारा चलता ही जीवन कर्म से है तो हमको अपने कर्म के ऊपर ही अटेंशन देना है इसीलिए हम को उसी बातों को उठा करके चलना है । अभी उठा कर के रहना है क्योंकि अभी तो हमारे कर्म नीचे के हैं ना । हमको तो अभी ऊँचा उठना है तो हमको तो उस चीज को ऊंचा उठाना है इसीलिए उठा कर के हमको ऊँचा बनने का है तो हमको तो वही पुरुषार्थ रखना है न । अच्छा, टोली दो । यह भी अपनी बुद्धि की में रखने की बात है और हर बात में हम

को सोच कर चलना ही चाहिए । सोच के चलते हैं तो यह तो अभी सोच मिलता है ना कि सच्चा सोच कौन सा है । राइटियस क्या है बुद्धि वह अभी मिलती है तो उस बुद्धि से काम ले करके चलना है । जो भी ग्रंथ है न देखो गुरु नानक के भी ग्रंथ हैं शास्त्र, उसमें भी है आदि युग आदि है भी सत होसि भी सत, यानी उसका मतलब है जो हो चुका है वह फिर होने का ही है परंतु उसका मतलब यह नहीं है वह वर्ल्ड हिस्ट्री का कि जो हिस्ट्री हो चुकी है वह फिर होने की है, जो स्टेज हमारी ऊँची थी, चल चुकी है, वह फिर आने की है । अभी हम फिर नीचे आए हैं परंतु उसका मतलब यह नहीं है ना कि जो होना होगा अपने आप ही होगा । अपने आप नहीं होगा, होना होगा, होगा परंतु करने से होगा न । वह भी तो हम ऊँचे उठेंगे अपने कर्म से ही ना । जब ऊँचे उठे थे तभी भी कर्म से ही उठे थे तो हमको कर्म अवश्य करना ही है । इसीलिए देखो उस अर्जुन के लिए भी है गीता ही सारी इसी के ऊपर है, उसने कहा कि नहीं, जो हमारे से होना होगा अपने आप होगा, वह सब छोड़ कर बैठ गया, कहा नहीं तुमको उठाना है, तुमको करना है । करने के बिना नहीं होगा तो अवश्य करना है । तो हमको अपने कर्म को उठाना ही है, पुरुषार्थ को उठाना ही है । तो अपने पुरुषार्थ को उठाओ । चलो उस पर । जो है ना वो ही सब्जेक्ट है । अपना मुख्य है ही यह बातें ज्ञान की और मुख्य है ही चीज की हमको चलना ही उसी के ऊपर है इसीलिए अपने कर्मों को, कर्म भी कौन सा? श्रेष्ठ बुद्धि रखकर के कर्म करना है और

अभी श्रेष्ठ बुद्धि मिलती है कि हमारी ऊँची बुद्धि कौन सी है तो हमको उसको लेकर के चलना है । तभी तो परमात्मा को भी आ करके समझ देनी पड़ती है ना । अगर हमारे कर्म के ऊपर आधार नहीं होता तो वह भी कहता अपने आप ही बनेगा, तो वह भी क्यों आकर के नॉलेज देता, फिर उसको नॉलेजफुल क्यों कहते । फिर पतितों को पावन करने वाला वह भी क्यों करता, अपने आप होने वाला कहो । फिर तो भगवान की भी कोई अथॉरिटी रही नहीं, वह तो सब अपने आप होता है फिर तो भगवान् भी कोई अथोरिटी नहीं है । फिर तो उसको ऑलमाइटी कहना भगवान कहना, फिर तो नाम उतार देना चाहिए उसका भी । काहे की माईटी, ऑलमाइटी काहे की, किसकी माइटी देता है, क्या करता है । फिर तो सब ऐसा ही चलता रहता है फिर कोई किसकी माइटी है ही नहीं । ना हम कुछ कर्म करते, न परमात्मा हमको कराते हैं, ना वह कुछ है न कोई कुछ है, सब ड्रामा है, फिर तो चलता ही रहता । फिर तो किसकी बड़ाई नहीं? नहीं, परंतु ऐसे नहीं है, उनका पार्ट है, वह भी हमको आकर के उठाते हैं इसलिए उनको भी नाम है वर्ल्ड ऑलमाइटी क्योंकि हमारी ऊँची दुनिया बनाता है, वह हमको शक्ति देता है इसीलिए वह भी ऑलमाइटी गाया जाता है और हम अपने कर्म श्रेष्ठ करते हैं तो हमारी भी प्रालब्ध बनती है तो सब का है ना काम, पार्ट है । फिर अगर नहीं होता सब अपने आप होने का होता, तो फिर तो ना वर्ल्ड ऑलमाइटी है, ना हमारे कर्म है, ना हमारी प्रालब्ध है, कुछ नहीं है,

फिर तो ऑटोमेटिक मशीन चलती रहती है । फिर तो कुछ बात ही नहीं है न । परंतु नहीं, भले है ऑटोमेटिक परंतु उस ऑटोमेटिक को भी किन नियमों से चलना है वह नियम भी समझने है न । तो हमको पकड़ना है नियम को । बाकी ऑटोमेटिक तो है अनादि, वह बात ही अलग है लेकिन हमको नियम को पकड़ना है । अगर नियम को नहीं पकड़ेंगे तो फिर हम राईट नहीं चलेंगे । चलेंगे ऑटोमेटिक में परन्तु ठीक नहीं चलेंगे । हमारे एक्शंस टेढ़े हो जाएंगे, चलना तो है ही जरूर परंतु क्यों नहीं हम समझ कर चलेंगे तो हमारा पोजीशन अच्छा रहेगा । तो समझ कर चलना चाहिए ना इसलिए अपने कर्म को और उसी सभी बातों को समझना है और अपने कर्म को श्रेष्ठ रखना है ये सभी चीजें समझने की हैं । देखो इतना नॉलेजफुल, सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता भगवान को भी समझाना पड़ा और जो भी आए हैं धर्म स्थापक सबने अपना-अपना काम आ कर के एक्शंस से किया है ना, अपने आप थोड़ी ही होता रहा । आए हैं उन्होंने भी जितना-जितना काम किया है अपना आकर के कर्म कराकर के किया है । गांधी ने भी किया कुछ भी तो अपना थोड़ा पुरुषार्थ किया न, माथाकुटी की, कुछ किया । हर एक काम करने से होता है ना, अपने आप कैसे होगा । तो करना है उसमें समझना पड़ता है, उसमें चलना पड़ता है, करना पड़ता है न । कुछ भी करते हो तो करने की तरह से करते हो ना अपने आप कैसे होगा । दो चार बच्चे संभालते हैं तो कैसे संभालते हो । करते हो तभी संभालते हो ना । इतने छोटे काम

भी बिना करने नहीं होते हैं, एक शरीर का भी अपने संभाल भी बिना करने के नहीं होता है उसके लिए भी करना पड़ता है, समझना पड़ता है, अभी खाना है, अभी यह करना है, अभी यह करना है, वह करना पड़ता है ना । चुप करके बैठो सब कुछ होता जाए, करो, देखो होता है? कभी नहीं होगा । तो ऑटोमेटिक हो तो सब ऑटोमेटिक हो ना । परन्तु ये नहीं आप कहेंगे यह भी हमसे ऐसा ही होता है, उसमें आपका सोच चलता है एक्शंस चलती है, करते हो यह करना है या नहीं करना है, सब करने की तरह से होता है न । तो फिर इसमें भी ऐसा होना चाहिए ना इसको कोई अलग क्यों करते हो, वह अपना सोच समझ कर करते हो इसको क्यों समझते होना होगा, किस्मत में होगा हम बने होंगे तो बनेंगे । इसमें क्यों ऐसे करते हो । उसमें भी ऐसे करो न हम बने होंगे तो बनेंगे, पैसा मिलना होगा तो मिलेगा, कमाना होगा तो कमाएंगे तो करेंगे, फिर चुप करके बैठ जाओ । उसमें नहीं बैठते हो फिर इसमें क्यों? तो यह तो सभी चीजों के लिए है ना । ऐसा बाप, कैसा? जो हमको ऐसी समझ दे करके ऐसा ऊँच बनाते हैं और दादा जिसको बनाया है । वह हमारे सामने आदर्श है कि मनुष्य को कैसा बनना है और और कैसे मनुष्य को क्या बनाया । तो दादा को क्या बनाया, उसको क्या बनाया है वह हमारे सामने है कि किसको और क्या बनाया वह दिखाते हैं कि मनुष्य को मैंने क्या बनाया तो बनना है ना, वह भी कर्म से बना है । ऐसे नहीं ड्रामा से बना है, कर्म से बना है कराया ना । उसको भी आकर के मुझे उठाना

पड़ा ना, कराना पड़ा ना । तो उसके तन मन धन से जो उसने कर्म किया, उसका फल पाया है तो वह फल का साक्षात्कार है । बाकी बना बनाया नहीं है ऐसे ही मुफ्त का, कर्म से । तो दिखलाते हैं कि उसने भी कर्म किया है और कर रहे हैं ना हमारे सामने । तो बाप दादा, बाप को भी करना पड़ता है और दादा से भी आकर के कराया है तो उसको भी कराने का काम आ करके करना पड़ता है ना, करना ही तो पड़ेगा न । तो ऐसा बाप और दादा और माँ के बहुत मीठे-मीठे, ऐसे समझदार जो अपने सब पुरुषार्थ में पूरे तत्पर रहे हैं ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

22. सन्देश - मोहिनी बहन - 23-06-65

ओम शांति ।

आप सब का याद प्यार लेकर जब वतन में पहुँची तो क्या देखा- मम्मा बाबा और कुछ अनन्य भाई बहनें जैसे कोई मीटिंग कर रहे थे लेकिन क्या कर रहे थे, वह मुझे सुनाई नहीं देता था लेकिन ऐसा लगता था कि जैसे कोई गहरी बात कर रहे हों। एक सेकंड तो खड़ी रही, फिर बाबा की नज़र मेरे पर पड़ी। बाबा ने बुलाया कि आओ बच्ची आप भी इस महफिल में आओ, तो मैं भी उसमें शामिल हुई । मीठी मम्मा की मीठी दृष्टि जैसे इतनी प्यार भरी, शक्ति भरी, एक सेकंड तो मैं उसमें खो गई । उस संगठन में दीदी भी थी तो भाऊ भी था, चंद्रमणि दादी भी थी तो ब्रिजेंद्रा दादी भी थी, मतलब आठ दस दादियाँ थी । भाई थे, पुष्पशांता भी थी, जगदीश भाई भी था । तो मैं सबके चेहरे देखने लगी जैसे नैन मुलाकात भी करती हूँ और पूछ भी रही हूँ आँखों से ही बात हो रही है । तो मैंने दीदी से पूछा कि दीदी क्या बात कर रही थी, अभी वह बात बंद हो गई है तो दीदी ने मुस्कुराते हुए कहा कि बाबा से पूछो । तो मैंने बाबा की और देखा तो बाबा ने कहा कि ये मेरे रायबहादुर, रायसाहब बच्चे आज मम्मा के साथ बैठे हैं तो भविष्य का प्लान बना रहे थे । हाँ, तो मैंने कहा

भविष्य का प्लान क्या बना रहे थे, तो बोला अब मैंने इशारा दे दिया, अब इनसे ही पूछो क्या बना रहे थे, तब तक मैं चक्कर लगा कर आता हूँ। तो बाबा तो उठ कर चला गया, चतुर सुजान तो है । फिर मैंने मम्मा से पूछा कि मम्मा आज आप इतनी सारी सखियों के साथ में मिली हो, बाबा ने इशारा दिया तो क्या प्लान बना रही थी तो मम्मा मुझसे पूछती है कि अच्छा एक बात आप सुनाइए, मैंने कहा क्या मम्मा, बोला आप संपूर्ण बनी हो? मैं हैरान हो गई कि मेरे से ही मम्मा पूछ रही है कि संपूर्ण बनी हो, तो मैंने कहा मम्मा ड्रामा प्लान अनुसार, समय के अनुसार तो मैं कहूँगी इस अनुसार तो मैं संपूर्ण हूँ कि मेरा शरीर छूट जाए तो ये मैं समझूंगी तो मम्मी कहती है कि युक्ति से जवाब दे रही हो तो मैंने कहा कि मम्मा जब एकदम संपूर्ण हो जाएँगे तो मैं तो फिर कर्मातीत बन गई फिर तो यहाँ रहूँगी नहीं ना, लेकिन समय के अनुसार इतना हम कहेंगे कि हाँ मम्मा अभी समय अनुसार संपूर्ण हूँ, तो दीदी कहती है मम्मा इनको सारा सुनाओ ना, तो मम्मा तो बहुत गंभीर है ना, इतनी जल्दी कहाँ सुनाने वाली, तो मम्मा ने उन सब की और देखा, मम्मा ने जैसे जगदीश भाई की और देखा कि आप सुनाएं, लेकिन जगदीश भाई भी चुपचाप बैठे रहे कुछ सुनाए ही नहीं, तो मैंने दीदी को कहा दीदी आप सुनाओ ना या चंद्रमणि दादी आप सुनाओ तो चंद्रमणि दादी कहती कोई बोलता ही नहीं है । मैंने कहा आप बोलो, आप सुनाओ तो चंद्रमणि दादी ने कहा कि हमारी मीटिंग हो रही थी, आपस में राय कर रहे थे

कि दुनिया के अंदर हलचल तो बहुत है लेकिन एकमत नहीं है । कोई कहता है हाँ तैयार है, कोई कहता है कि अभी थोड़ा रुको लेकिन हलचल चारों तरफ है । लेकिन जब तक एकमत नहीं होते हैं ना, तब तक तो कोई कार्य संपन्न नहीं होता है, कभी पुरुषार्थ में तो देखेंगे बहुत बहुत बहुत अच्छे हैं और कभी देखेंगे तो जैसे कर लेंगे, हो जाएगा, जैसे दूसरे लोग कहते हैं ना, बाहर वाले कि कर लेंगे, देख लेंगे, ऐसी कभी-कभी आप भी कहना शुरू कर देते हो कि समय पर हो जाएगा, कर लेंगे तो बाबा ने कहा कि अभी आप सब बच्चे भी एकमत नहीं हुए हो, एकरस नहीं बने हो । कोई कहता है बाबा हम रेडी हैं, कोई कहता है बाबा थोड़ा ठहरो । तो मैंने कहा बाबा यह एडवांस पार्टी क्या कहती है, मम्मा से पूँछो बाबा कहते हैं, मम्मा से पूछा ये लोग क्या कहते हैं तो मम्मा ने कहा इनसे पूँछो क्या कहते हैं, तो मैंने फिर पूछा तो बृजेंद्र दादी कहती हम तो रेडी हैं । हमें तो जब बाबा इशारा दे तो हम तो सब प्रत्यक्ष होने वाले हैं, सब रेडी हैं । देर है तो आप लोगों की देर है । आप लोग हाँ करो तो हमारी तो हाँ है ही । तो एकदम जैसे सब शांत हो गए तो मम्मा कहती अब बताओ जवाब दो । मैंने कहा मम्मा अब तो समय ही कुछ करेगा । हर एक के अंदर उमंग उत्साह तो बहुत है, पुरुषार्थ भी कर रहे हैं भट्टियाँ भी कर रहे हैं, स्व परिवर्तन का भी लक्ष्य रखा है, हम कर तो रहे हैं लेकिन बाकी समय पर सब हो जाएगा । तो मम्मा कहती अच्छा समय का इंतजार कर रहे हो । मैंने कहा समय का इंतजार

नहीं कर रहे हैं लेकिन इतना सब हुआ है तो बाकी भी समय पर सब हो जाएगा, तैयार हो जाएँगे । तो मम्मा ने कहा कि आपके पुरुषार्थ के अनुसार जब दुनिया में हलचल होती है तो आप अपना पुरुषार्थी तीव्र कर देते हो और दुनिया की जब हलचल नहीं दिखाई देती तो आप भी अपना पुरुषार्थ हल्का कर देते हो । अभी आप दुनिया की हलचल के आधार पर पुरुषार्थ करते हो, लेकिन जब आप अपना पुरुषार्थ करेंगे ना, तब दुनिया में हलचल होगी और ऐसी हलचल होगी जो फिर उसको रोकना मुश्किल हो जाएगा । चारों तरफ से घेराव तो डाल दिया गया है, चारों तरफ घेराव है, लेकिन इशारे की देरी है । हम सब तैयार हैं लेकिन आप की तरफ से इशारा आवे तो यह कार्य शुरू हो जाए । तो मैंने कहा बाबा हमारी तरफ से तो आप ही इशारा दोगे ना, हम कैसे देंगे । तो कहा वह भी समय आ जाएगा लेकिन ऐसा समय आने वाला है मम्मा ने कहा, कि ऐसा समय आने वाला है जिसमें बच्चों को बहुत ही अचल अडोल रहना है, सामना करने की शक्ति धारण करना है क्योंकि चारों तरफ से प्रकृति भी, माया भी हर प्रकार से घेराव डालेगी । उस समय आपको अपनी संपूर्ण में स्टेज सामना करना है और उस समय ही यह एडवांस पार्टी प्रत्यक्ष होगी आप लोगों के सामने और जय जयकार होगी । उधर हाहाकार सुनेंगे इधर जय जयकार सुनेंगे । यह सीन जो है, वह बहुत जल्दी सामने आने वाला है । अभी थोड़ा सा टाइम आप सबको दिया हुआ है कि उस थोड़े से टाइम में आप ज्वाला रूप, शक्ति रूप बन स्टेज पर

आओ । अभी बचपन की बातें पूरी हुई, अभी ज्वाला रूप, शक्ति रूप बन के स्टेज पर आने का समय है, अभी ये नाज नखरे अलबेला नहीं चलेगा इसलिए अपने स्वमान में अभी सब को स्थिर होना है और जिस दिन ऐसा हुआ, शुरू हुआ वह दिन मिरुआ मौत मलूका शिकार । आप सब बच्चे अच्छी तरह से देखेंगे और यह जो प्रैक्टिस की हुई है अशरीरी बनना वह उसी समय काम में आएगा कि अशरीरी बन जाएँगे और खेल देखेंगे और जब वह खेल पूरा हो जाएगा फिर शरीर में आ जाएँगे । तो यह अशरीरी बनना और शरीर में आना यह वही कर सकेंगे और देख सकेंगे जो शक्ति रूप, विकराल रूप, ज्वाला रूप होंगे । तो इसलिए बाबा बच्चों को ही इशारा देता है कि अपने स्वमान में, शक्ति रूप में स्थिर हो जाओ । तो मैंने कहा मम्मा आज इतने सारे लोग आए हैं, आप कोई ना कोई इशारा दो कि कैसे शक्ति रूप बनें, कैसे इस में स्थित होवें, तो सब बहने कहने लगी कि हाँ हाँ मम्मा कुछ कहे, कुछ कहे, कुछ कहे, तो मम्मा ने कहा कि बाबा से ही इशारा लो, तो बाबा कहता है (तब तक बाबा आ गया था) तो बाबा कहता है कि मम्मा आज आपका विशेष यादगार दिन है ना, आप इशारा दो । तो मम्मा मुस्कुराई और बाबा की आज्ञा का पालन करने में तो मम्मा नंबर वन, हाँ जी का पाठ । तो मम्मा ने कहा कि ऐसे समय बाबा की छत्रछाया चाहिए । जो छत्रछाया में रहेगा ना, वो सेफ रहेगा और जो छत्रछाया से बाहर रहेगा तो सेफ्टी नहीं रहेगी । तो मैंने कहा मम्मा छत्रछाया क्या, तो मम्मा ने एक सीन दिखलाया

। वो सीन क्या दिखलाया, कि जैसे राजाओं महाराजाओं के पीछे छत्र दिखाते हैं ना तो ऐसे छत्र लेकिन वह दूसरी तरह का था लाइट का और उसके ऊपर शिव बाबा और शिव बाबा जैसे चारों और घूम रहा है और चारों तरफ अपनी लाइट जो है ना, वह फेंक रहा है और यह जो छतरी के चारों और होते हैं ना तो वो भिन्न-भिन्न कलर के थे और उस भिन्न-भिन्न कलर के ऊपर लिखा हुआ था शांति, प्रेम, शक्ति ऐसे एक-एक शक्ति और एक-एक गुण जैसे लिखा हुआ था और उसी अनुसार उसकी लाइट थी और जब उसके नीचे अनुभव किया तो ऐसा लगा कि जैसे सब शक्तियाँ जैसे हमारे अंदर हो और एकदम शीतलता, शांति जैसे उसका अनुभव किया । ऐसा लगा जैसे बाबा की छत्रछाया में हम बैठे हुए हों सेफ, कोई आवाज नहीं है, कोई भय नहीं है, कोई कुछ नहीं है । तो कहा की देखो हमारे ऊपर बाबा बैठा हुआ है और बाबा सब को सर्च लाइट दे रहा है । और यह जो बाबा ने शक्तियाँ दी हुई हैं, नैतिक गुण दिए हुए हैं मूल्य दिए हुए हैं इसकी धारणा और पालना हम करते हैं ना, उसमें तुम्हारी सेफ्टी है । तो जब भी ऐसा समय कोई आता है तो उस छत्रछाया में बैठ जाओ तो सेफ रहेंगे । तो सेफ्टी का साधन है यह छत्रछाया । तो बाबा कहते हैं हमेशा बाप की छत्रछाया में रहो, तो आज मम्मा भी आपको यह छत्रछाया दे रही है, जो हमारे बाबा ने हम बच्चों को यह इशारा दिया है । तो बाप की छत्रछाया में रहने से सदा सेफ रहेंगे, तो सदा सेफ्टी का साधन है बाबा की छत्रछाया । तो यह एक सीन मम्मा ने दिखाया

। सब ने उसको देखा और कहा की ये सौगात मेरी आप लेकर जाना और सभी को देना । कहना कि यह छत्रछाया सदा अपने साथ रखें और समय पर इसको यूज़ करें तो आप सदा ही सेफ भी रहेंगे और आगे बढ़ भी सकेंगे और बाबा की सदा मदद का भी अनुभव करेंगे । तो उस समय मम्मा जिस समय सुना रही थी, तो सभी इतनी शांति से चुपचाप ऐसे जैसे पिनड्रॉप साइलेंस थी न ऐसे । तो बाबा ने कहा सुना, मम्मा ने सबको सौगात दी । देखो मम्मा बच्ची की विशेषता कि बाबा ने कहा और हाँ जी कहा । ये हाँ जी का पाठ पक्का करने वाले बच्चों के आगे प्रकृति भी, भगवान् भी जी हजूर करता है । तो ऐसे कहा बाबा ने और कहा कि आप सब आज से यह पाठ पक्का करना कि कोई भी डायरेक्शन मिलता है तो हाँ जी । हाँ जी कहने से एक तो आपमें धारणा भी हो जाएगी, बाप की मदद भी मिलेगी और वह पक्का भी हो जाएगा । फिर मैंने कहा बाबा आज तो बहुत भोग आया है, सारे थाल के थाल बाबा के आगे, सब बहनों के आगे इमर्ज हो गए तो हमने कहा दादी ने बहुत बहुत बहुत प्यार से यह भोग भेजा है तो सब देखने लगे इतने बड़े थाल यहाँ तो छोटी सी थाली थी न, वहाँ तो बहुत बहुत बड़ा थाल था, कहें कितने प्रकार का है कितने प्रकार का है सब पूछते हैं मैने कहा छप्पन प्रकार का है, बोले छप्पन प्रकार का है? मम्मा आपके लिए दादी ने छप्पन प्रकार का भोग भेजा है तो मम्मा मुस्कुराई और जैसे ऐसे बैठी रही मुस्कुरा के, और सब देखने लगे कि क्या क्या आया है क्या क्या आया है लेकिन

मम्मा जैसे शांति से ऐसे बैठी रही तो दीदी कहती है मम्मा देखो ना क्या क्या है क्या आया है, मम्मा कहती है आप देखो फिर हमको बताना क्या आया है । फिर सारा देखा तो बाबा ने कहा के देखो कुमारका बच्ची को शौक बहुत है, उमंग बहुत है मम्मा की सखी है ना । मम्मा आपकी सखी है न, तो मम्मा तो मुस्कुराती जैसे ऐसे, तो कहा देखो आपकी सखी ने आपके लिए कितना वैरायटी भेजा है और सब एक से एक अच्छा आया है, तो स्वीकार करो मम्मा । मम्मा तो बैठी रही तो चंद्रमणि दादी कहती है ना मम्मा ऐसे थोड़ी स्वीकार करेंगी, आप पहले खाएँगे पीछे मम्मा खाएँगी । तो बाबा कहता आज तो मम्मा का दिन है, आज पहले मम्मा खाएगी पीछे सब । तो मम्मा तो देखती रही बाबा को, न हाथ हिलाए न कुछ करे, फिर बाबा ने कहा अच्छा, बच्ची खाएगी तो नहीं बिना बाबा को खिलाए । तो बोले अच्छा बाबा को आप खिलाओ ना, फिर भी मम्मा बैठी बाबा को खिलाए ही नहीं, तो हमने कहा बाबा को खिलाओ, तो मम्मा कहती आप लेकर आई हो आप बाबा को खिलाओ । मैंने कहा आज मैं नहीं खिलाएंगी, आज आप ही खिलाओ बाबा को । तो बाबा बोला आज मैं पहले मम्मा के हाथ से खाऊंगा । मम्मा ने प्यार से उठाया और बाबा को प्यार से खिलाया तो मैंने कहा बाबा आप भी मम्मा को खिलाओ । बाबा ने मम्मा को बाबा ने मम्मा खिलाया । ऐसे खिलाया तो सब बहुत खुश हुए, फिर उसके बाद में एक-दो को खिलाने का सिलसिला जारी हुआ । सब ने बहुत बहुत बहुत प्यार से एक एक चीज खिलाई

भी खाई भी । तो बाबा ने कहा कि देखो बच्ची आज आपका दिन है ना, तो सब आपको कितना याद करते हैं तो मैंने कहा मम्मा आप को तो सब बहुत याद करते हैं मम्मा बहुत गंभीर है ना तो कुछ जल्दी जवाब नहीं देती है ना, सिर्फ मुस्कुराती रहती है, मुस्कुराती रहती है । तो मैंने कहा मम्मा कुछ तो बोलो ना, तो मम्मा बोली बाबा बोलता है ना, बाबा का सुनो । बाबा ने कहा आज मम्मा आप का दिन है आप बोलो ना, बाबा तो बोलता ही रहता है । तो मम्मा ने कहा कि देखो हमारी सब की आज यहाँ मीटिंग हुई है ना, उसमें एक बात ही निकली है कि अभी जैसे हम लोग चारों तरफ से घेराव डाल रहे हैं, ऐसे आप लोग भी चारों तरफ से घेराव डालो । उसमें क्या होगा एक तो सब को संदेश भी मिल जाएगा, जो आपका काम रहा हुआ है वह भी हो जाएगा और चारों तरफ आपका नाम भी बाला हो जाएगा । अभी आपका नाम इतना बाला हो गया है, जो खुद आने के लिए चाहते हैं कि आएँ आएँ आएँ और आप उनको अभी मना करते हो अभी आप ना आओ, थोड़े आओ । तो ऐसा समय आएगा कि जब आप मना भी करेंगे ना, समय है समय है ना, तो भी लोग आएँगे । एक कदम भी रख के जाएँगे तो समझेंगे मेरा भाग्य बन गया है तो इसलिए अपने समय ऐसा आने वाला है जैसे अभी आप लिमिट देती हो कि थोड़े थोड़े थोड़े आओ लेकिन उस समय कोई सुनेगा नहीं की थोड़े आओ, लाइन लग जाएगी और थोड़े में ही अपना भाग्य बना कर जाएँगे । तो ऐसा समय आने वाला है जो अपना भाग्य बनाने के लिए

लाइन लगेगी और उस समय कोई सुनेगा नहीं आपकी । ये जो गाया हुआ है, यह तीरथ है ना, वह तीरथ प्रत्यक्ष होना है । तो इसीलिए अभी आपकी चारों तरफ प्रत्यक्षता शुरू हो गई है और धीरे-धीरे और प्रत्यक्षता बढ़ने वाली है, इसके लिए आप सबको देने के लिए तैयार रहना है । कोई भी आत्मा खाली हाथ ना जाए तो उसके लिए दातापन की स्टेज में, वरदातापन की स्टेज में आप सब को तैयार रहना है । तो इसलिए आपका जो टाइटल है वरदानीमूरत, विश्वकल्याणी मूरत तो यह आपका पार्ट जो है शुरू होने वाला है । ऐसे कहते मम्मा ने सबको बहुत बहुत बहुत याद प्यार दिया और बाबा ने भी याद प्यार दिया, फिर हम नीचे आ गए । दादी को तो बाबा ने बहुत बहुत बहुत याद प्यार दिया और कहा कि दादी बच्ची को बहुत बहुत याद प्यार देना । बच्ची तो बाप के नैनों में, दिल में समाई हुई है ।

23. अलंकारी बनने के लिए मायाजीत कैसे बनें

रिकॉर्ड:-

आज अंधेरे में है हम इंसान, ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान........

गीत में सुना हम इंसान अंधेरे में हैं, काहे का अंधेरा? आज तो दुनिया समझती है कि हम बहुत रोशनी में हैं । इतनी रोशनी हुई है कि चाँद तक जा सकते हैं, सूर्य, सितारों में घूम सकते हैं । आज मनुष्य क्या नहीं कर सकता है तो यह सभी बातों को मनुष्य समझते हैं कि बहुत रोशनी आ गई है और हमारी दुनिया तो अभी बहुत रोशनी की ओर चली जा रही है, परंतु इधर तो गीतों में कहते हैं अंधेरों में हैं, फिर अगर ऐसी बातें नहीं हैं तो फिर ऐसे गीतों को तो गवर्मेंट को बंद करा देना चाहिए कि भाई अंधेरा काहे का है, रोशनी में है बहुत । परंतु नहीं अंधेरा है किस बात का, जिस चीज के लिए इतनी इतनी खोजनाओं में जाकर के आज चाँद सितारों तक जाने की मनुष्य ने अपने में हिम्मत लगाई है, परंतु जो चीज चाहिए लाइफ में, वह नहीं पा रहे हैं। तो जो चीज चाहिए, जिसको बनाने के लिए और जिस प्राप्ति के लिए इतनी इतनी खोजनाएं है इतना इतना सब कुछ, समझते हैं मनुष्य को कोई प्राप्ति रहे सुख और शांति की, लेकिन उसी चीज को खोजते-खोजते भले मनुष्य की इतनी ताकत ऊँची गई

है लेकिन लाइफ ऊँची नहीं गई है। लाइफ का मतलब जो लाइफ की सुख और शांति है उसमें तो मनुष्य ऊँचा नहीं गया है ना । लाइफ की सुख शांति की स्टेज और ही दुःख अशांति की ओर बढ़ती जा रही है तो इससे सिद्ध होता है कि जो मनुष्य को चीज चाहिए उसमें नीचे होते जाते हैं, उसका अंधकार है बाकी तो भले और ताकत में तो मनुष्य क्यों नहीं, अभी देखो घर बैठे उधर बात भी करते हैं, इधर देखते भी हैं टेलीविजन, रेडियो आदि आदि ये सभी चीजें भले कितने भी मनुष्य के सुख के यह सभी चीजें मनुष्य ने पाई हैं परंतु फिर भी वो जो लाइफ का सुख और शांति कहें वह तो चीज नहीं रही है ना, तो उसका अंधकार है । इसीलिए कहते हैं आज इंसान सब अंधेरे में हैं । किस के अंधेरे में इस चीज के अंधेरे में । उसकी अभी रोशनी, उसकी अभी इस चीज का पता नहीं लगता है कि वह चीज हमारी लाइफ में, जिसमें हम सदा सुखी रहे वह कैसे प्राप्त रहे । भले आज देखो रोगों के लिए कितने इलाज, कितनी दवाइयाँ आदि यह सभी बातें भी कितनी आगे बढ़ती जा रही है लेकिन फिर रोग भी तो सब साथ-साथ बढ़ते जा रहे हैं । तो हमारे लिए दुःख अशांति भी बढ़ता ही जा रहा है तो इससे सिद्ध होता है कि वह जो चीज है जिस चीज का अभी हमको लाइफ में चाहिए सुख की वह हमको नहीं मिल पा रहा है इसीलिए कहते हैं उसके हम अंधेरे में हैं अभी तू आ । किसको बुलाते हैं कि तू आ और उस चीज की रोशनी दे कि हमारी लाइफ में यह जो अंधकार है, अंधकार कहो या दुःख अशांति कहो, तो वह सुख शांति

का अंधकार है कि हमको प्रैक्टिकली सुख शांति कैसे मिले, उस चीज की हमारे में जो अंधकार है वह आ करके हमारी दूर कर, तो देखो उसके लिए तो परमात्मा को पुकारते हैं ना । उसके लिए कोई इंसान को नहीं पुकारते हैं कि हां इंसान आ या इंसान इंसान को उस चीज के लिए कुछ देने का नहीं है, तभी तो कहते हैं ना हम सब इंसान जो कहते हैं उसमें सब आ गए जो भी साधु, संत, महात्मा जो रख बैठे हैं और जिन्हों को समझते हैं कि वह हमको पार करेंगे तो इंसानों में तो सब आ गए ना, तो सभी का अर्थ है हम सब जो भी इंसान हैं यहाँ, सब उस चीज के अंधकार में है प्रैक्टिकली जो सुख शांति की चीज है लाइफ के लिए, वह हमें नहीं मिल पा रही है, अभी तू आ । इसीलिए परमात्मा को पुकारते हैं और गाते भी हैं कि अंधे की लाठी तू है । गाते हैं ना, उसको कहते हैं अंधे की लाठी तू है, तो हम अंधे किस में है इस चीज में है, ऐसे नहीं है कि ये आंखें नहीं है देखने के लिए, इन सभी पदार्थों को देखने के लिए ये आंखें भले हैं, लेकिन वह नेत्र नहीं है जिसको ज्ञान नेत्र कहा जाता है, अंग्रेजी में भी कहा जाता है थर्ड आई ऑफ विजडम तो वह हमको किस विजडम का नेत्र नहीं है, इस नॉलेज का कि हमारे लाइफ में पूर्ण सुख शांति कैसे आवे उसका हमें ज्ञान नहीं है तो वह ज्ञान नेत्र । तो वह ज्ञान मतलब यहाँ कोई नेत्र निकल नहीं आएगा, यह जो चित्रकारों ने चित्रों में बैठकर के तीसरा नेत्र यहाँ दिखलाया है कई देवताओं के ऊपर तो कई समझते हैं शायद तीन आँखों वाले कभी मनुष्य थे ऐसे तीन आँख वाले कभी

मनुष्य होते न हीं हैं, यह सभी जो चित्रों में भी अलंकार हैं इनका भी अर्थ समझना है कभी तीन आंखें मनुष्य को होती नहीं भले देवता हो, कोई भी हो । मनुष्य ही देवता है और मनुष्य ही असुर है, वह है मनुष्य की क्वालिफिकेशन बाकी ऐसे नहीं है उससे कोई मनुष्य के शरीर की बनावट जो है वो बदल जाती है, देवता होगा तो चारभुजा आ जाएंगी या तीन आँखें आ जाएंगी या असुर है तो उसमें कोई और बनावट की फर्क पड़ जाएगी, ऐसा नहीं है । मनुष्य डिसक्वालिफाइड है तो उसको कहा जाएगा असुर और क्वालीफिकेशंस में जब सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी है तो वह क्वालीफिकेशंस की बात है तभी देवता है, बाकी शरीर की बनावट में नहीं उसके क्वालीफिकेशंस में फर्क जरूर पड़ता है जिसको पवित्र अपवित्र कहो या गुणों से संपन्न कहो या कहो की भ्रष्टाचारी श्रेष्टाचारी यह सभी जो हैं आचरण के ऊपर है । तो यह सभी चीजें भी समझने की है बाकी कभी मनुष्य को चारभुजाएँ या तीन आंखें यह सभी चीजें होती नहीं । चारभुजा का भी अर्थ है जो पुराने हो वह तो समझते हो ना चारभुजा का भी यह अर्थ है तो यह दो भुजा नारी की दो भुजा नर की, तो जब नर नारी पवित्र हैं तो फिर वह दिखलाते हैं ना चतुर्भुज का डबल क्राउन किंगडम का सिम्बल तो ऐसी रजाई थी और ऐसी राजाई में सभी नर नारी सुखी थे । तो जब पवित्र थे तो संसार ऐसा था । ऐसे संसार में सब सुखी थे तो वह दिखलाया हुआ है चतुर्भुज के रूप में और वह जो रावण का दिखलाते हैं दस शीश, उसका भी अर्थ है ।

इसका यह मतलब नहीं है कि दस शीश के कभी आदमी होते हैं नहीं, आदमी का नहीं है यह । यह भी एक सिंबल समझो विकारों का । जब अपवित्र प्रवृत्ति है उसमें भी नर नारी के दस शीश हैं, 5 पाँच विकार स्त्री के और पाँच विकार पुरुष के और मिलाकर के दस सर रख लिए हैं तो वह है नर नारी जब अपवित्र हैं तो संसार ऐसा दुःखी है और जब नर नारी पवित्र हैं तो संसार सुखी है तो वह पवित्र का सिंबल है चतुर्भुज और पवित्रता का सिंबल है यह रावण । तो यह सभी चीजें समझने की है यह सभी अलंकार है इसको कहा जाता है अलंकार यानी निशान है । इस बात का इनका अर्थ है बाकी ऐसे नहीं है कि मनुष्य कोई दस शीश वाले या तीन आँख वाले या चार भुजाएँ वाले या तीन सर वाले ऐसे-ऐसे जो चित्र दिखलाते हैं मनुष्य की कोई बनावट में फर्क नहीं पड़ता है । हाँ इतना जरूर है जब मनुष्य पवित्र है तो नेचुरल हैल्दी हैं और उसका बनावट, फीचर्स नेचुरल ब्यूटी आदि यह सभी इनका फर्क हो सकता है बाकी ऐसे नहीं है कि उसमें कोई तीन आंखें या कोई तीन सिर या कुछ ऐसी बनावट का है नहीं, तो यह भी सभी चीजों को समझना है । तो अभी वह कहते हैं कि देखो यह थर्ड आई ऑफ व्हिज्डम अथवा ज्ञान का नेत्र अभी उसको पुकारते हैं कि तू आ कर के दे तो ज्ञान का नेत्र दे अर्थात वह समझ दे । नॉलेज दे कि अभी हम कैसे सदा सुख शांति प्राप्त करें । हम सब इंसान अभी खोजते-खोजते थक गए हैं । जितना खोजनाओं में गए हैं, इतना और ही दुःख अशांति पाते हैं । देखो वह खोजते तो सुख के

लिए हैं लेकिन उनसे फिर भी वही चीजें बनती जा रही हैं जिससे और ही हमारे दुःख प्राप्त हो देखो यह सब बोंब्स आदि यह सब क्या चीज है, नहीं तो यही साइंस अगर अच्छी तरह से उपयोग में काम में अच्छी तरीके से लगाया जाए तो इन चीजों से बहुत सुख का मिल सकता है परंतु बुद्धि है ना अभी, उस बुद्धि से काम ही उल्टा हो रहा है इसको भी कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि । तो अभी जो विनाश का काल है यानी काल कहा जाता है समय को, तो अभी यह टाइम ही विनाश का है तो उसके द्‌वारा बुद्धि से काम ही उल्टा चलता है तो देखो बुद्धि से उसकी काम ही ऐसा निकलता है कि दुनिया का नाश कैसे हो । तो अभी है ही विनाश काले विपरीत बुद्धि । विपरीत किससे? यानि परमात्मा से विपरीत, यानी प्रीत नहीं । तो अभी प्रीत नहीं ऐसी बुद्धि हो गई है, तो प्रीत नहीं है तो अभी क्या हुआ, तो हुआ माया से प्रीत । परमात्मा से प्रीत नहीं है, है माया से । माया कहा जाता है पाँच विकारों को । कई बिचारे माया को भी नहीं समझते हैं, समझते हैं यह शरीर है ना, जो भी हम इन आँखों से देखते हैं यह माया है । यह शरीर भी माया है, यह संसार भी माया है, यह धन-संपत्ति भी माया है परंतु माया इसको नहीं कहेंगे । धन-संपत्ति तो माया को भी ,थी शरीर तो देवताओं को भी था और संसार में तो देवताएं ने भी थे फिर क्या वह माया थी क्या? नहीं, माया कहा जाता है पाँच विकारों को । विकार ही माया है बाकी कोई शरीर माया नहीं है । शरीर में तो देवताएँ भी थे परंतु उनको पास माया

नहीं थी । धन-संपत्ति तो देवताओं को भी थी परंतु माया नहीं थी माया कहा ही जाता है विकारों को और माया ही दुःख देती है बाकी धन-संपत्ति कोई दुःख देने की चीज नहीं है । संपत्ति तो सुख का साधन है ना परंतु उस संपत्ति को भी इमप्योर अथवा शरीर को भी इमप्योर, अपवित्र किसने बनाया है पाँच विकारों ने, माया ने । तो माया के कारण, विकारों के कारण हर चीज जो है ना, वह अभी दुःख का कारण हो गई है । तो अभी धन से भी दुःख, शरीर से भी दुःख, हर चीज से अभी दुःख प्राप्त हो रहा है इसका कारण यह हो गया कि हर चीज में अभी माया प्रवेश हो गई है अर्थात पाँच विकारों की चीज हो गई है इसीलिए बाप कहते हैं अभी इस माया को निकालो पाँच विकारों को निकालो तो फिर तुमको इसी शरीर से ही और संपत्ति से और संसार से सदा सुख मिलेगा जैसे देवताओं का था । देखो संसार में भी थे और शरीर भी था, संपत्ति भी थी, सब था लेकिन एवर हेल्दी एवर वेल्दी और एवर हैप्पी तो देखो सुखी थे न । तो यह सुख तभी उन्हों के पास था जब उनके पास माया नहीं थी यानी यह रावण नहीं था, पाँच विकारों का ये नहीं था तो इसको नाश करने का है । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि इस माया को नाश करो । तो माया माना यह नहीं की शरीर से ही निकल जाने का है या संसार में ही ना आवें, ऐसे-ऐसे कई समझते हैं यह संसार माया है इसीलिए कई शास्त्रों में भी लगा रखा है कि यह जगत मिथ्या है, परंतु जगत मिथ्या नहीं, जगत तो अनादि है ही । इसको कौन कहेगा

मिथ्या जगह तो है ही परंतु हाँ इसको मिथ्या बनाया गया है । विकारों के कारण मनुष्य दुःखी हुए हैं बाकी ऐसे नहीं है कि जगत जो है वह है ही नहीं । जगह तो अनादि है ही ना, तो यह सभी चीजें समझनी है कि हमको कोई जगत से या संसार से निकल जाने की बात नहीं है लेकिन संसार को पवित्र बनाने की बात है । पवित्र भी संसार था, यही तो देवताओं का जो निशान है यह पवित्र संसार के मनुष्य थे न । देवताएं कोई और चीज थोड़ी है या देवताओं की दुनिया कोई ऊपर थोड़ी ही है । यही दुनिया, हम मनुष्य ही देवता थे और हम मनुष्यों का ही संसार स्वर्ग कहो, हेवेन कहो यही संसार था, जिसमें हम मनुष्य ही स्वर्गवासी थे यानी वो टाइम स्वर्ग का था और हमारे जनरेसन स्वर्ग में चलते थे । तो यह सभी चीजों को भी समझने का है इसलिए माया को भी अभी मिटाना है उसका नाश करना है इसीलिए उसका मतलब है पाँच विकारों को तो अभी माया को नाश करना अथवा माया को जीतना तो उसका मतलब है विकारों को जीतना तो माया कहीं जाती है विकार को । अभी विकारों के कारण ही यह सब चीजें हम को दुःख देती हैं क्योंकि यह धन भी अभी विकारी कर्म के अनुसार होने के कारण उससे भी दुःख होता है । शरीर भी विकारी खाते का होने के कारण उसमें रोग अकाले मृत्यु यह सभी चीजों से दुःख मिलता है । नहीं तो हमारे शरीर में भी कभी रोग नहीं था, कभी अकाले मृत्यु नहीं होता था, क्यों नहीं होता था क्योंकि निर्विकार के बल से बना हुआ था । अभी विकारों से बना हुआ है

इसीलिए उसमें से दुःख मिलेगा तो हर चीज अभी विकारों के संग से बनी हुई होने के कारण हर चीज से दुःख मिलता है । तो अभी संसार ही विकारों के संबंध का हो गया ना इसीलिए सबसे दुःख तो इसको कहा जाता है माया के कारण ही अभी सब दुःख मिल रहे हैं तो अभी इसको निकालो । तो यह अभी कैसे निकले फिर हमारा संसार सुखी बने इसके लिए देखो उसको बुलाते हैं कि अभी हम इंसान, इन सभी बातों को खोजते-खोजते सुख शांति को ढूंढते-ढूंढते जितना ढूंढते जाते हैं, उतना और ही उससे दुःख क्योंकि हमारी अभी तो है ही नीचे की स्टेज आने में ना इसीलिए देखो उस बुद्धि से काम ही उल्टे चलते हैं तो इसीलिए बाप कहते हैं तेरी बुद्धि अभी उसी सत्य बाप को अभी पा नहीं सकती है, उसकी बुद्धि में आएगा नहीं, क्योंकि तेरी तो बुद्धि अभी तमोप्रधान हो चुकी है ना इसीलिए अभी मैं जब आता हूँ, तभी आ कर के फिर तुमको राइट बात बताता हूँ और वह ज्ञान का नेत्र मैं देता हूँ, ज्ञान का नेत्र माना ही समझ, वह समझ तो बुद्धि में धारण करेंगे ना कि यहाँ तो कुछ नहीं बनेगा ना बुद्धि में धारण करना है । तो अभी देखो यह समझ मिल रही है । अभी अपने को ये क्या मिला है ज्ञान ने,त्र तो अभी है ना नेत्र, तीसरा नेत्र है, तो अभी देखो हम यह थर्ड आई ऑफ विजडम पा रहें है तो ज्ञान का नेत्र अभी हमारे पास है, देवताओं के पास नहीं हमारे पास । हम माना हम ब्राम्हण, ब्राह्मण हो ना देखो अभी शुद्र थे, शुद्र माना विकारी । अभी विकारी से पवित्रता के ऊपर अपना पाँव रखा है, तो अभी मानो हो गए

ब्राह्मण, अभी पवित्रता को अपनाया है ना, तो अभी हो गये ब्राह्मण । तो अभी देखो ब्राह्मणों को तीसरी आँख है और देवताएं है तो फिर प्रालब्ध है ना, वह तो हम जब जाकर के फ्यूचर में वह कंप्लीट प्रालब्ध पाएंगे । तो देवताओं को फिर ज्ञान नेत्र की जरूरत नहीं है, ज्ञान नेत्र से तो देवता बने ना । अभी जो ज्ञान मिल रहा है उससे हम क्या बनेंगे देवता, मनुष्य से देवता बनेंगे तो हमको देवताओं को तीसरा नेत्र होना चाहिए या अभी जो हम ज्ञान ले रहे हैं हमारे को, तो हम मनुष्य हो गए हैं न । अभी हम ब्राह्मण कहलाएंगे, मनुष्य पहले शुद्र थे, अभी हम शूद्र से ब्राह्मण हुए हैं यानी हम परमात्मा के मुख वशावली जो परमात्मा ब्राह्मण द्वारा बैठकर के यह मुख से नॉलेज दे रहा है उस नॉलेज से हम पैदा हुए हैं तो उसको कहा जाता है मुख वंशावली तो अभी देखो ऐसे नहीं मुझ से आदमी निकल आएँगे । आगे ऐसे समझते थे कि मुख का मतलब है शायद मुख से आदमी ऐसे निकले थे परंतु नहीं, मुख से हम अभी देखो जो मुख से नॉलेज मिल रहां हैं उससे प्यूरीफाइड बन रहे हैं तो अभी हमारा यह नया जन्म हो गया ना । अभी हुआ है ना आपका नया जन्म तो अभी क्या अभी शूद्र से ब्राह्मण हुए हैं तभी वह ब्राह्मण यह नया जन्म हो गया हमारा परमात्मा द्वारा यह मुख वंशावली । जो नॉलेज सुनाया उससे हम प्यूरीफाइड बने हैं फिर जाकर के देवता बनेंगे तो अभी तीसरा नेत्र किसको होना चाहिए ब्राह्मणों को अभी क्योंकि ज्ञान अभी की बात है ना पीछे तो ज्ञान की बात ही नहीं रहेगी । तो ब्राह्मणों

को ही तीसरा नेत्र और यह सभी जो भी अलंकार हैं यह देखो दिया है ना विष्णु को शंख, चक्र, गदा, पदम् ये सभी अलंकार हैं, ऐसे नहीं है कोई इनका अर्थ है शंख माना ज्ञान का शंख, ये कोई ऐसे नहीं बजा है शंख माना ये ज्ञान का तो इसको शंख भी कह सकते हैं परंतु भक्ति मार्ग में उन्होंने यह चीजें रख दी हैं और गदा वह भी है देखो पाँच विकारों के ऊपर हमने अपना पूरा जोर लगाया है और वह चक्र भी है, यह चक्र भी है गोल्डन, सिल्वर, कॉपर, आयरन ये चार युगों का, कैसे हम पहले-पहले हम देवताएँ थे और कैसे फिर नीचे आए । अभी नीचे आ करके अभी फिर बाप आया ऊँचा उठाने के लिए, यह सारा चक्र जो हमने अभी अपना चक्र पूरा किया है, वह वही है सुदर्शन चक्र यानि स्व को अभी दर्शन अर्थात साक्षात्कार हुआ है, नॉलेज हुआ है कि हमारा सेल्फ का यह चक्र कैसे चलता है तो आत्मा को स्व का यानी सारे चक्कर का पता है, अभीपता है ना, तो सुदर्शन चक्र फिरता है बुद्धि में? चलता रहता है? खड़ा तो नहीं है ना? चलता रहता है । स्व माना सेल्फ यानि सेल्फ को अभी नॉलेज हुआ है कि ये हमारा चक्कर कैसे चलता है । हम जो देवता थे, अभी देखो क्या हो गए हैं, अभी फिर देवता बनते हैं तो यह है सारा चक्कर । गोल्डन, सिल्वर, कॉपर एंड आयरन एज इसमें हमारे अनेक जन्मों का ये चक्र चला अभी चक्र पूरा हो करके फिर सो देवता । समझा ! तो यह है स्वदर्शन चक्र, इसीको जितना -जितना याद रखेंगे कि सो थे, अभी फिर नीचे आए हैं अभी फिर ऊँचा जाना है तो जितना यह

बुद्धि में फिराते रहेंगे वहां उससे तुम्हारे जो विकार हैं न वो कटते रहेंगे वो कहते हैं न विष्णु स्वदर्शन चक्र घुमाते थे तो दुश्मनों के सर कट जाते थे परन्तु दुश्मन कौन ये विकार तो जितना ये स्वदर्शन यानि सेल्फ को उसी स्टेज में रखेंगे कि आई एम असल में पवित्र सोल, पीछे इम्प्योर हुए हैं । अभी फिर हमको अपने पवित्र स्टेज पर जाना है तो आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र तो फिर हम देवता होंगे तो जितना ये चीजें बुद्धि में घूमती रहेगी यानी स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा तो तुम्हारे विकार जो है ना, वह नाश होते जाएंगे । तो अर्थ असूल में यह है परंतु उन्होंने बैठ कर के उसको एक अस्त्र-शस्त्र के रूप में ले गए थे, वो कहते हैं की वो चक्र घुमाते थे , कोई दुश्मन के पास भेजते थे तो उसका गला काट के आता था ऐसा-ऐसा शास्त्रों में कुछ दिया हुआ है परंतु ऐसा नहीं है वह दुश्मन है यह विकार । तो इसी नॉलेज के आधार से हमारे विकार नाश होते हैं तो स्वदर्शन चक्र का भी ये अर्थ है शंख का भी ये ही है और वह गदा का भी रखा है पाँच विकारों के ऊपर और वह जो पदम, फूल दिया है ना ये भी है प्रवृत्ति का की कमल फूल सामान प्रवृत्ति । वो कमल का फूल होता है न वो पानी में रहते भी पानी का स्पर्श उसके ऊपर नहीं लगता है तो मिसाल दिया जाता है कि कैसे घर गृहस्ती रहते भी प्रवृत्ति में रहते भी कमल फूल समान यानी उसमें कोई उसका लेप छेप में नहीं और उसमें अपने को पवित्र रखते थे । तो यह है अपना आदर्श कि हमारे लाइफ का आदर्श क्या था और कैसे हमारी प्रवृत्ति का आदर्श

ऊँचा था, यह सभी इनका है, लेकिन वह भी अभी का है सब, बाकी देवताओं को यह जो गदा शंख चक्र आदि ये लेकर के कोई घूमते थे या इन्हों के हाथ में थे, नहीं, यह सभी चित्रकारों ने बैठ करके वो कैसे दिखलावें की भाई इन्हों को ज्ञान था या इन्हों कि माया के ऊपर जीत थी यह सब कैसे दिखलावें तो चित्रों में बैठ कर के वो निशान रखे हैं । बाकी ऐसे नहीं है कि ऐसे कोई देवताएं कोई चार भुजा वाले थे और वो ये सब लेकर के घूमते रहते थे ऐसी कोई बात नहीं है । तो यह सभी चीजें समझने की है कि नहीं, देवताएं भी मनुष्य थे दो बाहों वाले इसीलिए अपना करेक्ट चित्र भी बनाया है ना दो बाहें दी है. देखो नहीं तो श्री लक्ष्मी श्री नारायण को बहुत मंदिरों में देते हैं चार भुजाएँ लेकिन इन दोनों को मिलेंगे ना लक्ष्मी को पीछे कर दो तो उसकी दो बाहें दिखानी पड़ेगी । आपको दिखाया होगा कभी आप देखे हैं चतुर्भुज का चित्र दिखाएं आपको? चलो आओ, आओ अभी हम दिखाते हैं चतुर्भुज का कैसा फोटो निकाला है । उठो दोनों, एक लंबी आगे रहे, छोटी पीछे रहे । हाँ इधर आओ, हाँ देखो यह चतुर्भुज । यह देखा दो भुजाएँ लक्ष्मी की, हाँ इसी तरह से, यह दो भुजाएँ लक्ष्मी की वह दो भुजाएँ नारायण की । इनको शंख, चक्र, गदा, पद्म देदो और आप लोग फोटो निकालेंगे तो देखेंगे । अभी लक्ष्मी तू आगे जा और वह नारायण पीछे, फिर इसी तरह वो लक्ष्मी चतुर्भुज दिखाएंगे । वो नारी तो लम्बी है पीछे हो जाएँगी, आओ फिर ज़रा, हाँ तो फिर यह लक्ष्मी चतुर्भुज हो जाएँगी । तो वो नारायण चतुर्भुज वो लक्ष्मी

चतुर्भुज । ये ऐसा फोटो निकला है, वह दिखलाया है ना चतुर्भुज का । तो असल में है कि लक्ष्मी चतुर्भुज और नारायण चतुर्भुज इनका चित्रकारों ने फोटो निकाला है । बाकी ऐसे नहीं कि चार भुजाएँ का कोई मनुष्य है, यह कंबाइंड लक्ष्मी और नारायण का फोटो निकला हुआ है तो इसका अर्थ है । तो यह सभी चीजें समझने की है परंतु ऐसे कंबाइंड पवित्र नर नारी कैसे बने, किन धारणाओं से, वह धारणाएँ वो चित्रों में बैठकर में दिखलाए हैं । भाई शंख, चक्र, गदा, पद्म जिन्होंने धारण किया वो ही ऐसे बने । तो अभी धारण किया है ना शंख चक्र गदा? है न ? है न शंख? शंख का मतलब है कि जो यह सुना है नॉलेज फिर सुनाना है, शंख बजाना भी है ऐसे नहीं शंख नहीं बजाना है फिर दूसरे को भी तो बनाना है ना । तो देखो यह हम क्या कर रहे हैं, जो धारणाएँ की हैं वह दूसरों को भी सुनाते हैं । ऐसे हर एक को करना है, तो हर एक को शंख चक्र गदा पदम् धारी बनना है । तो बनना अभी है ब्राह्मणों को, अभी से बनेंगे फिर तो देवता बनेंगे । जो करेंगे तो फिर पाएंगे, तो यह सभी चीजें समझने की है जिसका प्रैक्टिकल अर्थ क्या है । अच्छा, अभी टाइम हुआ है । आप लोगों को पता नहीं कहाँ-कहाँ जाना होता है, हम तो बैठे हैं, हमारे को अरज नहीं है लेकिन जाने वाले तो आप कहाँ-कहाँ होंगे तो इसीलिए आप लोगों को टाइम पर छोड़ते हैं । अच्छा दो मिनट साइलेंस।

24. चढ़ती कला और उतरती कला

सबके रखवाले बनते हैं । ऐसे नहीं जैसे शास्त्रों में कहते आए हैं कभी उसका रखवाला बना, कभी उसका बना, यह अवतार लेकर के उसकी रक्षा की, यह अवतार लेकर के उसकी रक्षा की तो अवतार भी कई और रक्षा भी कभी सतयुग में तो कभी त्रेता में, कभी द्वापर में सभी जगह ले गए हैं, परंतु ऐसे नहीं । रक्षा की जरूरत भी तभी है जबकि हम पूर्ण गिरावट में आ चुके होते हैं । तो जब हम पूरे गिरते हैं तभी तो आकर के परमात्मा चढ़ाते हैं । अगर अभी हमारा गिरना ही शुरू हुआ है तो वो कैसे आकर चढ़ाएंगे, उनका भी तो टाइम है ना ऐसे तो नहीं है ना । उसका भी टाइम है, गिरने का भी अपना टाइम है । द्वापर से लेकर के कलयुग तक गिरना ही है, यह भी ड्रामा का है समझते हैं । इसमें कई मूंझते हैं, समझते हैं गिरना ही हैं तो फिर तो अपना तो कुछ नहीं हुआ ना । परंतु नहीं यह ड्रामा भी समझना है, फिर यह भी समझना है कि उस गिरावट से चढ़ने का भी टाइम है और बाप आ करके चढ़ाने की बल जो है ना, वह भी वही देता है । तो यह बातें समझने की है । गिरना ही है तो इसका मतलब गिरना ही है यह भी तो नहीं है ना । चढ़ना है तो उसका मतलब अपने आप ही चढ़ जाएँगे । नहीं, चढ़ना है, उसका टाइम है और चढ़ाने वाला भी आकर के चढ़ाते हैं परंतु वह भी हमारे से पुरुषार्थ कराके चढ़ाते हैं तो

हमको अपने पुरुषार्थ से चढ़ना हो गया ना, अभी यह चीज फिर समझना । कई इसमें मूंझते हैं कि फिर इसमें पुरुषार्थ की क्या बात रही, जब गिरना ही है, चढ़ना ही है, यह बना बनाया पड़ा है तो हमको गिरने ही दो, जब चढ़ना होगा तो चढ़ ही जाएँगे अपने आप, फिर मेहनत की क्या बात है तो इसीलिए कई पुरुषार्थ को नहीं लेते, बस इसी बात में मूंझ जाते हैं । अभी मूंझने की भी बात नहीं है यह समझना है । भले गिरने चढ़ने, उतरती कला चढ़ती कला का बना बनाया ड्रामा है परंतु चढ़ने का भी जैसा नियम होगा वैसे ही चढ़ेंगे ना । नियम है अपने किए कर्मों से चढ़ना । गिरने का भी नियम तो यही है ना अपने किए कर्मों से गिरते हैं । कोई ऐसे थोड़ी है कि अपने आप गिरते हैं, हमारे कर्म से ही तो हम गिरते हैं, रिस्पांसिबिलिटी भी फिर हमारे कर्म पर आती है ना । तो बाप को भूलते हैं, विकारों में गिरते हैं तो गिरते हैं, अगर विकारों में नहीं गिरते तो नहीं गिरते । तो देखो ड्रामा में भी यह पॉइंट रखी हुई है, नियम में भी यह पॉइंट रखी हुई है की विकारों के कारण गिरे । कारण कौन सा, भई गिरे क्यों? ऐसे ही तो मुफ्त में नहीं गिर पड़े ना, अच्छे थे और गिर गए ? नहीं ! विकारों के कारण गिरे । विकार आए तब गिरे । तो देखो देवताएँ, भई सर्वगुण संपन्न 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी थे, फिर 14 कला, पीछे आहिस्ते-आहिस्ते फिर जब देवताएँ वाम मार्ग में आए न, देखो देवताओं का वाम मार्ग भी है ना, वाम मार्ग का मतलब ही है कि देवताएँ जब फिर विकार में

गिरे हैं परंतु जब गिरे तब देवता थोड़ी ही थे, तब तो देवता नहीं थे ना । तो ऐसे नहीं कहेंगे देवताएँ गिरे, नहीं तब देवता है ही नहीं ना । देवता तब थे, जब सर्वगुण संपन्न थे लेकिन इनके बहुत जन्म चलते-चलते वह जो अपना सुख का कर्म बनाया, वह सभी भोग करके जब उनका पूरा हुआ तो फिर विकारी दुनिया का टाइम भी आया, फिर उन्हों में विकार प्रवेश होने लगे तो फिर वह उस समय तो विकारी हुए ना, उस समय देवता थोड़ी कहेंगे । नहीं, तो इसीलिए बिचारे कई समझते हैं इसका चित्र भी रखते हैं वह जगन्नाथ या कहाँ है, बाबा बतलाते हैं कि उनके मंदिर के बाहर दीवारों में बहुत देवताओं के गंदे-गंदे चित्र दिखलाए हुए हैं कि देवताएँ जब वाम मार्ग में गए हैं न, तो वाम मार्ग का चित्र दिखाते हैं । तो शक्ल देवता की और विकारों में चल पड़े हैं तो उनका विकारी दृश्य दिखलाए हैं परन्तु देवता वेश में तो उसी से कई ये समझते हैं कि देवता भी ऐसे गंदे थे इसीलिए समझते हैं भले ब्रह्मा भी फ़िदा हुआ फलाना भी फ़िदा हुआ तो वह देवताओं के ऊपर कलंक लगा दिया है इसीलिए सन्यासी आदि समझते हैं कि यह देवताओं का यह सुख भी विष्टा समान है, ऐसे-ऐसे कह देते हैं क्योंकि वो समझते हैं या और भी कई समझते हैं कि भई देवता पद ये कोई बड़ी बात थोड़ी ही है । देवताएँ भी गिरे इसमें क्या बड़ी बात है । ऐसा तो हमें बनना ही नहीं है । हम कहते हैं ना हमारा एम एंड ऑब्जेक्ट है मनुष्य से देवता, तो कई देवताओं से घृणा करते हैं । वो कहते हैं यह स्टेज नीचे की है । देवताओं से भी

ऊपर की स्टेज है, वो फिर वह ज्योति ज्योत में समाना फिर वह ऊपर जाना, वह समझते हैं कि वो ऊँची स्टेज है हमको वो स्टेज चाहिए देवता नहीं, क्योंकि देवता बनेंगे फिर भी गिरेंगे ना, इसलिए क्यों हम ऐसी स्टेज में जाएँ । तो बिचारे जानते नहीं है न । तो वह भी तो देवताओं की दुनिया है तो देवता हैं, प्रैक्टिकल लाइफ है ना । फिर जब यह टाइम आता है तो फिर वही आत्माएँ है ना वही आत्मा जन्म लेती-लेती फिर रजो में फिर तमो में भी तो वही आती है ना । तो जब रजो शुरू होता है सतो प्रधान और सतो जब पूरा होता है तो फिर रजो आता है ना, तो फिर उस टाइम पर तो वह देवता नहीं रहे ना । फिर विकार का प्रवेश हुआ तो फिर विकारी कहें । फिर वही जो निर्विकारी राजे रानियाँ थी वही फिर विकारी राजे रानियाँ बन जाते हैं, भले उनका वह जो है ऊँचा पद वो रहता है परंतु विकारी । फिर उनके द्वारा फिर उनका वो राज्य चलता है तो इसी तरीके से बैठकर के बाप समझाते हैं तो फिर जब विकारों से भी गिरते-गिरते नीचे चल पड़ते हैं, तभी फिर मैं आता हूँ और आकर के फिर ऊँचा उठाता हूँ तो यह ड्रामा कैसे बना हुआ है नंबरवार सभी बातों को समझना है और फिर नियम को भी समझना है । बना बनाया को भी समझना है परंतु बना बनाया भी नियमों से, कानून से, कायदों से बना हुआ है उन कायदों को भी समझना है । ऐसे नहीं है बस चढ़ती कला है तो अपने आप चढ़ जाएगा, उतरती कला है तो आपे ही उतरते हैं आपे ही चढ़ेंगे । नहीं, उतरते भी अपने कर्मों से ही हैं, रखा तो वही है ना, तो

भाई विकार में गिरे तभी गिरे, कारण तो देखो निकल आया ना । परंतु हाँ जानते हैं की विकारों का भी टाइम है । विकार ना होता तो निर्विकारी शब्द नहीं आता कंट्रास्ट में, रात नहीं होती तो दिन कैसे कहते हैं, दिन है तभी रात कहते हैं तो दोनों ही है । तो यह सभी चीजें जानते हैं, ऐसे कोई कहे कि रात होती ही क्यों है जो दिन होवे, फिर दिन ही ना हो रात ही ना हो फिर तू भी ना हो, फिर तो कुछ भी ना हो, वह तो बात ही नहीं है फिर तो कहने वाला भी ना हो फिर कुछ भी ना हो ना । फिर तो बात ही नहीं रहेगी तो यह सभी चीजों को समझने का है इसीलिए यह खेल कैसा है बना हुआ, किस तरह से ये बना हुआ है नियम कानून सब, तो हर चीज का नियम कानून को समझना है, इसी का ही नाम तो ज्ञान है ना । बाकी ज्ञान क्या है यह ना होता, वह ना होता तो कुछ भी नहीं होता फिर ज्ञान भी नहीं होता, फिर तू भी नहीं होता कुछ भी नहीं होता फिर तो है ही नहीं कुछ । फिर तो खेल ही खत्म है ना ये सब । तो खेल का नियम होता है, खेल का सब टाइम, पार्ट, सब वर्णन तो उसी चीज का है ना । तो अभी बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं बच्चे अभी तुम्हारा टाइम पूरा हो तो मैं भी आकर के सब का सहारा बनता हूँ एक ही टाइम पर और मैं सबका बनता हूँ । ऐसा नहीं है कोई दूसरे धर्मों का दूसरा सहारा है, क्रिश्चियन धर्म का क्राईस्ट सहारा है, सहारा नहीं, सहारा सबका मैं हूँ । सहारे का मतलब ही है की सहारा तभी चाहता है जब मनुष्य गिरते हैं, दु:खी होते हैं तब आकर के कोई

उनको सहायता देता है तो कहते हैं कि भाई इसने हम को सहारा दिया तो सहारा तभी कहने में आता है जब दु:ख में या कोई गिरावट के समय में कोई आकर के सहायता दे तब कहेंगे ना सहारा । तो ऐसे टाइम पर सहारा देने वाला एक ही परमात्मा है । तो सबको देखो पापों से मुक्ति और जीवन मुक्ति देने वाला तो एक ही है ना इसीलिए सहारा सबका है । क्राइस्ट को सहारा नहीं कहेंगे, बुद्ध को सहारा नहीं कहेंगे । वह तो आते हैं धर्म अपना स्थापन करने के लिए, वह तो और ही आत्मा को ऊपर से खींच के नीचे करते हैं । पवित्र आत्माएँ आती हैं और उन्हों को नीचे ही चलना है, खुद भी आते हैं तो खुद भी नीचे ही जाते हैं । उनके फॉलोअर्स भी जो कुछ है वह भी पवित्र आत्माएँ ऊपर से आती हैं उनकी संख्या क्रिश्चियनिटी की संख्या भी पीछे ही बढ़ती है न, तो संख्या जो उतरती है वह भी नीचे ही चलती है तो वह सहारा कैसे हुआ, वह तो और ही नीचे ले जाने वाला हुए ना । पावन आते हैं पतित बनते हैं तो वह पावन से पतित बनते हैं और बाप आकर के पतित से पावन बनाते हैं तो सहारा उसको कहेंगे जो हमको नीचे से ऊँचा बनाता है इसीलिए परमात्मा को कहेंगे पतित से पावन करने वाला, तो वह पावन बनाते हैं हमको दु:ख से छुड़ाते हैं इसीलिए उनको सहारा कहते हैं । वह धर्म स्थापको को तो दु:ख में ले ही जाना है, आते हैं पहले-पहले तब सुखी हैं पवित्र आत्माए हैं न, उस समय ताकत है उनमें बहुत, पीछे तो उनको और ही नीचे चलना ही है तो सब जाते हैं जो आती हैं

आत्माएँ, जो स्थापक है उन सहित सब को नीचे ही जाना है । तो उसका मतलब यह हो गया न कि जो आते हैं धर्म स्थापक उनको तो नीचे ही ले जाना होता है क्योंकि उनको चलना ही है और हमारा बाप आते हैं तो नीचे वाली आत्माओं को ऊपर खींच ले जाते हैं तो हमको पतित से पावन बनाने वाला जो है जो धर्म स्थापन करने वाला है हम उन्ही की स्थापना में आने वाले हैं और दूसरे जो धर्म स्थापक हैं वह तो पावन से फिर पतित बनते हैं तो यह फर्क है इसलिए हमारा धर्म, इस धर्म की स्थापना जो है वह परमात्मा ने कहा हैं कि यह धर्म मैं स्थापन करता हूँ । कौन सा? जो पतित से पावन बनते हैं फिर पावन जेनरेशंस में सुख भोगते हैं और यह जो है बाकि वह पावन आते हैं और नीचे चलते हैं तो यह धर्म स्थापंना यह मनुष्यों का काम है, वह आत्माएँ यहाँ आ करके अपना धर्म ऐसे स्थापन करती हैं तो उनके धर्म स्थापन में और परमात्मा के धर्म स्थापन में रात और दिन का फर्क है क्योंकि वह अधर्म नाश करके धर्म स्थापन करते हैं इसीलिए एक धर्म, एक राज्य रहते हैं और वह जब आते हैं तो ऐसे नहीं एक धर्म एक बुद्धिज़्म, क्रिस्च्निज्म उस समय तो सभी धर्म हैं देखो इस्लामी धर्म है फिर बुद्ध आता है तो जब बौद्ध धर्म स्थापन होता है तो इस्लाम धर्म है ना । वह खत्म तो नहीं होता है न, वह है । फिर बुद्ध के बाद क्राइस्ट आता है तो फिर बुद्ध धर्म भी है फिर क्राईस्ट अपना धर्म स्थापन करता है । वह है धर्मों की वृद्धि और जब बाप आता है तो सब धर्मों का एंड करके एक धर्म स्थापन करता है ।

उसको कहा जाता है फिर संसार सुखी बनाता है । तो उसके कर्तव्य और मनुष्यों के कर्तव्य में रात और दिन का फर्क रहा ना इसीलिए कहते हैं सबका तू एक सहारा । तो कैसे सहारा बनते हैं कि हम सबको इस माया की बॉन्डेज से तो सब कुछ छुडाते हैं ना एकदम । एकदम से सबको माया की बॉन्डेज से छुड़ाते हैं । तो सहारा तभी है जब सभी माया के दु:ख में आए हैं तब उसकी बॉन्डेज से छुड़ाना, लिब्रेटर बनना तो इसको कहा जाएगा सहारा । तो लिब्रेटर तो एक ही है ना । क्राइस्ट को लिब्रेटर नहीं कहेंगे, बुद्ध को लिब्रेटर नहीं कहेंगे । वह तो और ही सब को साथ में लेकर के खुद भी नीचे और जो साथी हैं उनके सबको नीचे ही चलना है । तो यह सभी चीजें भी बुद्धि में रखने की है इसलिए परमात्मा का कर्तव्य स्पेशल है । वह अपने आप करने वाला है । उसके कर्तव्य को कोई मनुष्य कर भी नहीं सकता है और मनुष्य के साथ उसकी भेंट करी भी नहीं जा सकती है । हाँ, मनुष्यों की आपस में थोड़ी-बहुत भेंट चलती है जैसे भई क्राइस्ट था, बुद्ध था, इब्राहिम था जिन्होंने धर्म स्थापन किया तो हाँ यह सभी धर्म स्थापक, भले धर्म सबका अपना-अपना है परंतु सबके लिए कहेंगे तो न कि सब धर्म स्थापकों को भी अपने धर्म को स्थापन करके पालना के लिए उन सब को चलना है तो उनकी एक-दो में से भेंट हो सकती है लेकिन परमात्मा का सब कर्तव्य भिन्न, उनका पार्ट ही भिन्न है, उनका धर्म स्थापन करने का तरीका भी भिन्न है, सब भिन्नता है इसीलिए कहते हैं बस तुम्हरी गत मत तुम ही जानो, तुम सबसे

न्यारा, भगवान को क्यों कहते हैं परमात्मा को, तुम सबसे न्यारा । न्यारा भी और फिर प्यारा भी तो देखो कहते हैं सबसे न्यारा काम भी करता है और अलग किसी से उसके भेंट नहीं की जा सकती हैं । तो सब से उसका न्यारा कर्तव्य भी है और फिर सबका प्यारा कर्तव्य करते हैं यानी सबके लिए जो माया की बोंडेज से छुडाने का प्यारा कर्तव्य है, वो सबका करता है लेकिन सबसे न्यारा । ये काम कोई और नहीं कर सकता है । तो उसको न्यारा कहा ही इसलिए जाता है क्योंकि वह सबसे न्यारा है, कोई से उसकी भेंट करने में नहीं आ सकती हैं । उनका कर्तव्य सबसे निराला है । कहते हैं तुम्हरे काम निराले..ये गाते हैं भक्ति मार्ग में कि तुम्हरे काम निराले । क्यों कहते हैं तुम्हारे काम निराले हैं, कौन सा काम उसका निराला है । यह उसका माया की बॉन्डेज से छुड़ाना तो उसके काम निराले । दूसरे जो आ कर के काम करते हैं वह और तरीके के काम है । वह हमको यहाँ इस दुःख में ले आते हैं, यह हमको इसी दु:ख के संसार से छुडाते हैं । माया की बोंडेज से ले जाते हैं तो फर्क हो गया न । तो यह सभी चीजें बैठ करके बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं मेरा काम निराला है परंतु मेरा काम सबका प्यारा है इसीलिए सब मुझे याद करते हो ना फिर भी । धर्म स्थापक भी मुझे याद करते हैं । वह भी आ करके तुम लोगों को मेरी महिमा सुनाते हैं, परमात्मा ऐसा वैसा सब । देखो गुरु नानक है तो उनकी भी वाणी में किसकी महिमा है, परमात्मा की महिमा है । तो सभी जो भी धर्म स्थापक आए हैं, उन सब ने

परमात्मा की महिमा की है और उनके कर्तव्य क्या था, लेकिन मेरी खाली महिमा से भी उसने अपना अपना धर्म स्थापन किया । उनका काम सिर्फ मेरी महिमा करना, मेरी महिमा से भी देखो उन्होंने कितना अपना धर्म स्थापन करने का ये काम कर लिया । लेकिन मैं खुद जो हूँ वह खुद आकर के काम करूंगा तो कैसा काम करूंगा, फर्क होगा ना । तो इसीलिए कहते हैं देखो मेरा काम सबसे निराला । तो यह देखो अभी निराला काम जो करने वाला है ना, उसके हम डायरेक्ट वंशावली बनते हैं और वो डायरेक्ट धर्म जो स्थापन करता है उसी धर्म वाले हम बनते हैं तो अपना नशा कितना होना चाहिए । कोई कॉमन धर्म स्थापक की तरह से हमारा धर्म स्थापन नहीं होता । हमारा धर्म स्थापन करने वाला कौन? स्वयं परमपिता परमात्मा वर्ल्ड ओलमाइटी अथॉरिटी । तो हम उसी धर्म वाले हैं जो धर्म स्वयं परमात्मा ने स्थापन किया है और वो आकर के करते हैं इसीलिए अपना धर्म का, अपने कर्म का, अपने बनाने वाले का कितना फखुर होना चाहिए कि हमारे कर्म सबसे श्रेष्ठ, हमारा धर्म सबसे श्रेष्ठ, हमें बनाने वाला सबसे श्रेष्ठ । वह है ही ऊँचे में ऊँचा, उनकी तो भेंट ही क्या करें, है ही ऊँचे ते ऊँचा, ऊँचा एक ही है । तो यह सभी चीजें बुद्धि में रहने की है इसीलिए अभी बाप कहते हैं बच्चे अभी तुम्हारा धर्म, देखो तुम्हारा धर्म सबसे पूज्य । पूजनीय देवी देवताएं वो धर्म, जिसके लिए देखो यादगार चित्र सामने हैं । गॉड एंड गोडेजिस, अंग्रेजी वाले भी अंग्रेजी में इनको गॉड एंड गोडेजिज कहते हैं । इसके चित्र

बड़े पुराने पुराने मिलते हैं । तो इसी तरह से जैसे झाड़ होता है ना झाड़ बढ़ता जाता है और उसमें जो जड़ की आयु यदि गिनेंगे झाड़ में लास्ट तक तो कहेंगे भाई जड़ को पैदा हुए बहुत टाइम हुआ तो इसकी एज बहुत हुई झाड़ में और यह डार का टाइम थोड़ा कम रहा, फिर दूसरा छोटा डाल फिर टार फिर टारिया । पीछे लास्ट में भी छोटे-छोटे पत्ते निकलते हैं तो कहेंगे यह तो अभी-अभी पैदा हुआ और अभी-अभी इस झाड़ का एंड है और खत्म होना है तो अभी-अभी हुआ है तो इसकी आयु झाड़ में छोटी रही तो झाड़ में भी नंबरवार जड़ की आयु झाड़ में सबसे कम, फिर टारी की उससे कम फिर छोटी-छोटी टारियां उनकी उससे कम और फिर छोटे-छोटे पत्ते उसको कहेंगे अभी अभी निकले अभी-अभी झाड़ का एंड है तो वह सबसे कम उसकी आयु इसी तरह से इसी तरह से यह चक्कर चलता है । तो यह सभी बातों को समझने का है कि आत्मा में अपना कैसा पार्ट है जो शुरू होता है, फिर पूरा होता है फिर पूरा हो करके फिर वैसा ही शुरू होगा । ऐसे नहीं चलता चलेगा । जो चीज शुरू हुई है उसकी एंड जरूर चाहिए यह भी एक समझने की बात है जिसको कहे शुरू, तो भाई शुरू कहाँ से हुआ अगर शुरुआत है तो उसकी एंड जरूर है । तो समझना चाहिए ना इसीलिए बाप कहते हैं इस नाटक का खेल का पार्ट का शुरुआत है । बाकी यह कब शुरू हुआ कभी पूरा हुआ ये अनादी है, जिसका कोई एंड नहीं है इसको कहते हैं अनगिनत । ये एक शुरू हो करके पूरा हुआ फिर शुरू हो करके पूरा हुआ, ये अनादि

चला आता है । कभी था ही नहीं न जो हुआ, तो अभी क्वेश्चन भी उठे । नहीं, ये अनादी है, उसके लिए कहेंगे अनादी, इसका कोई आदि अंत नहीं है । हाँ फिर खेल का, पार्ट का की भाई पहले कौन थे पार्टधारी एक्टर्स उन एक्टर्स का नंबरवार खेल का है कि पहले ये देवी-देवताएं पीछे फिर दूसरे- दूसरे धर्म । तो यह सभी चीजें बाप समझाते हैं । देखो इस चक्र में हैं न पहले देवी देवता है तो देखो दूसरा धर्म कोइ है इस तरफ? है ही नहीं, एक ही धर्म है । अभी जब कॉपर एज शुरू होता है तो दूसरे धर्म देखो आना शुरू होते हैं वह दिखाया है यहाँ, इसमें झाड़ में भी दिखाया है इधर । ये देखो खाली है ना सारी वर्ल्ड में, यह वर्ल्ड के ऊपर दिखलाया है की सारी वर्ल्ड में एक ही आदि सनातनी देवी देवता धर्म दिखलाया है कि सारी वर्ल्ड में एक ही आदि सनातनी देवी देवता धर्म, यह गोल्डन एंड सिल्वर ये साइड में एक ही धर्म है देवी देवता । जब ये देवी देवता धर्म है तो एक धर्म एक राज्य सारी वर्ल्ड में । उस टाइम पर दूसरा कोई धर्म नहीं है । पीछे यह नंबरवार दूसरे धर्म, धर्म स्थापक आते हैं अपना अपना धर्म चलाते है । तो एंड फिर देखो सबकी एक है । देखा है ना, सबकी एंड इसीलिए सभी का शास्त्र भी दिया है हर एक अपना अपना । देखो शास्त्र इनके पीछे शुरू होते हैं, जब धर्म का आधा भाग हर एक चलता है, उसका गोल्डन सिल्वर पूरा होता है फिर उनके भी कॉपर एज में यानी जब थोड़ा बीच का टाइम पीछे उनका चलता है शास्त्र ग्रंथ या बाइबल या जो भी उनके भक्ति मार्ग का है वो पीछे

चलता है । पीछे फिर मल्टीप्लिकेशन भी होती है । तो इसी तरीके से सबका फिर एंड एक साथ तो यह सभी चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझना है । यह चक्र बुद्धि में घूमने का है । बाबा कहते हैं ना सुदर्शन चक्र फिराओ । फिराओ क्या कि देखो हम अभी कहाँ थे । अभी चक्र पूरा करके हम फिर अपनी जगह पर आ रहे हैं । हम अपनी सीट ले रहे हैं फिर । हमारी सीट माया ने छीन ली थी अभी हम फिर अपनी जगह पर आ रहे हैं, फिर अपनी सीट पकड़नी है इसीलिए कहते हैं कि अब चक्र फिरेगा तो अपनी सीट याद आएगी कि हम इसी सीट से गिरे थे, अभी अपनी सीट फिर पकड़ते हैं । तो चक्र फिरेगा तो याद आएगा । तो फिराओ इसीलिए कहते हैं सारा दिन बुद्धि में ये स्वदर्शन चक्र फिराओ तो फिर इस चक्र से तुम्हारे पाप नाश होंगे । तभी जब याद रहेगा न हमारी सीट ऊँची है हमारी सीट ऊंची है तो अपना ख्याल रखेंगे हम ऊँची सीट वाले हैं तो हमारे से कोई ऐसा उलटा काम नहीं होना चाहिए तो देखो विकार कटते जाएंगे न । तो सीट याद करेंगे विकार कटेंगे, सीट याद करेंगे विकार कटेंगे तो अपनी पोजीशन सीट को याद करना है । तो इसको बाबा कहते हैं चक्र घुमाओ । (भाई-50 फुट का चक्र पत्थर में बना हुआ है) । हाँ यह चक्र का तो बहुत बना हुआ है, यह क्रॉस का भी है यानी स्वास्तिक भी है स्वास्तिक का भी पूजन करते हैं । जब गणेश पूजन होता है या कोई भी पूजन करते हैं ना तो पहले यह स्वास्तिक जरूर निकालते हैं । पूजन के आरंभ में पहले स्वास्तिक जरूर रखते हैं तो

यह स्वास्तिक का भी चार भाग का हिसाब है यह ईक्वल चार भाग हैं । ईक्वेलिटी को कोई नहीं जानते हैं, वह समझते हैं सतयुग हैं वह बड़ा है उसकी आयु बड़ी है, फिर त्रेता है उसकी आयु थोड़ी कम है, फिर द्वापर है उसकी थोड़ी और कम कलयुग का और थोड़ी कम तो उसके भाग को छोटा छोटा करते जाते हैं । तो ये इक्वल है तो चारों की आयु इक्वल है साढ़े बारह सौ- साढ़े बारह सौ वर्ष सबकी आयु ईक्वल है । इस ईक्वेलिटी को कोई नहीं जानते हैं परन्तु इनका महत्व बहुत है । बाबा सुनाते हैं वह जगन्नाथ में चावल का डेग बनाते हैं उसमें फिर चावल के आपे ही चार भाग हो जाते हैं । वो तो ऐसे भक्ति मार्ग की भावना है न तो ये चार भाग का महत्त्व यही है । तो यह बातें अभी अपन सब जानते हैं । ये चक्र बहुत रखते हैं, अभी देखो अपनी गवर्मेंट का यह जो है उसमें भी नीचे एक चक्र हैं ना, परन्तु इस चक्र का अर्थ वह समझते हैं गांधी जी ने चरखा चलाया । तो यह चरखे का निशान दिया है । वह अपने घर पर सूत बनाते थे वह तो उसको वो चरखा बना दिया, वो बिचारे ने गाँधी जी ने वो चक्र का राज तो समझा नहीं तो चरखा लगा लिया । है तो असुल गीता की बात यह है ना यह चक्र परन्तु उसमें तो सारी बातें स्वराज वगैरह यह सब आहिंसा आदि को उस तरीके से ले गए हैं ना । अहिंसा को समझा की हथियार कमान से नहीं लड़ना, बाकी पिकेटिंग, भूख हड़ताल. सत्याग्रह इन्ही से राज्य लेना है तो उसने फिर अहिंसा को इसी तरीके से लिया, उस चक्र को फिर चरखा में

लिया । वो समझे घर-घर में चरखा फिराओ । घर-घर में एक-एक चरखा, जिसको देखो वो एक-एक चरखा । वो टिकली टिकली सब निकलती थी देखो बच्चे-बच्चे, छोटे-छोटे सब, जब कांग्रेस का चलता था तो खूब ऐसे करते थे, हम भी करते थे, बहुत करके देते थे उसको । वो बनाते थे ना, तो जो बनाते थे पीछे उनको देते थे । जो ऐसे दान करेंगे ना तो समझते थे भाई ये कांग्रेस को मदद करते हैं, जितना बना के दे । रोज जितना भी बना कर दें तो यह कांग्रेस को मदद की तो हम भी ऐसे मदद करते थे, वो बना कर दे देते थे । तो यह सभी होते हैं तो गांधी जी ने भी ये समझा की यह घर-घर का चरखा सब को सुखी करेगा लेकिन यह बात कहाँ की थी कि हमारा चक्र कहाँ पूरा होता है फिर हम कहाँ जाते हैं वो अभी चक्र पूरा करके आए हैं और इसी कर्म श्रेष्ठ से अपनी वो जगह पकडनी है । तो बातें ऐसी है लेकिन बातों को ले गए हैं दूसरे-दूसरे तरह से, अभी बैठकर के बाप समझाते हैं । तो अभी सब बुद्धि में आती है ना ? तो यह सभी अभी बुद्धि में ले करके अभी फिर वैसे अपने कर्म को बनाना है तो यह सभी बातें अभी अच्छी तरह से बुद्धि में रखते जाओ । इसमें मूंझना नहीं है किसी को समझाने करने के लिए भी परंतु समझाने की समय में भी कभी भी कोई नयों को कोई ऐसी बातें नहीं ये चरखा चक्र आदि यह बातें समझाएँगे तो वह बिचारा मूंझ जाएगा । पहली-पहली बात तो सबको बाप का परिचय देना है कि तुम कौन हो, तुम्हारा पिता कौन है । तुम आत्मा, आत्मा का पिता कौन है, तो

बाप से तो बुद्धि लगे । जिससे कनेक्शन कट हुआ है उससे तो पहले कनेक्शन लगे फिर उसके कनेक्शन से फिर सारी बातें आपे ही आप समझता जाएगा इसीलिए पहले पहले किस को भी बैठकर के ये चरखा और चक्कर ये सभी चीजें सुनाएंगे तो माथा खराब हो जाएगा इसीलिए कभी भी नयों को कोई इस बातों में कोई टू मच बातों में नहीं । कोई क्वेश्चन भी करे न तो कहो पहले तो यह बात समझो तुमको बाप से वर्सा लेना है, तुमको अपना जीवन बनाना है या बैठकर के यह बातें सीखने है की जनावरों की आत्मा कहाँ रहती हैं, जनावर कैसे बनते हैं । कई क्वेश्चन उल्टे उठा लेते हैं न फिर उन्हों की गति क्या होती है तो तुम जनावर हो क्या? अपनी गति तो करो पहले, मनुष्य की गति क्या होती है पीछे जनावर की गति पूंछना की उनकी क्या होती है । जनावर की गति पीछे रही, तेरी गति से सबकी गति होगी । मनुष्य की गति सद्गति से सब जनावर पशु-पक्षी सब की गति होगी तो तेरे पीछे सब है । तू पहले अपनी कर तो तेरे पीछे सब सुधर जाएंगे अपने आप । तुम जनावरों की काहे चिंता करते हो । जनावर का क्या हुआ, कैसा हुआ, कई-कई क्वेश्चन करते हैं । वो कुत्ते होते हैं ना डॉग्स, वो कई तो बिचारे राजाओं के महल में पलते हैं । राजा अपनी पलंग के पास रखते हैं । बड़े प्यारे जिसके कुत्ते होते हैं बड़े-बड़े साहूकार अपने पलंग के साथ उसकी पलंग लगाते हैं, सुलाएँगे, खिलाएंगे पिलाएंगे बहुत किसका लव होता है जनावरों से । तो कहते हैं देखो वो तो राजा से महलों में पल रहे हैं, यह भी कुत्ते

का कोई भाग्य है किस्मत है, उसने भी कोई कर्म किये होंगे । फिर ऐसे-ऐसे कई क्वेश्चन करते हैं कि उसने क्या कर्म किया है । कोई कुत्ते को तो लाठी मारते हैं, आते हैं घर में तो मारो लाठी, निकालते हैं घर से बाहर, तो कोई तो बेचारे ऐसे पल रहे हैं उसकी क्या कर्म की गति है । तो ऐसे-ऐसे क्वेश्चन उठाते हैं परंतु इन्हीं बातों में अगर जाएंगे ना तो कहेंगे तुमको कुत्ता बनना है क्या? तुम अपने कुत्ते की गति पूँछ रहे हो । तू अपनी तो गति को समझ, तेरी गति से सब की गति होगी । जैसे मनुष्य में भी नीच ऊँच का है, जितना मनुष्य ऊँचा होता है तो उनका भी फिर अपना-अपना हिसाब किताब है । देखो कुत्ते-कुत्ते भी अपना आपस में लड़ते-करते हैं परंतु उसकी फिर कैटेगरी जो है ना वह अलग है । वह उनकी अपनी कैटेगरी में अपने कर्म का हिसाब का खाता है लेकिन मनुष्य की कैटेगरी अलग है यह समझना है । ऐसे नहीं मनुष्य से ही जनावर की कोई भेंट करनी है । जनावरों का जनावरों में अपना हिसाब-किताब का खाता चलता है वह बात अलग है बाकी मनुष्य की केटेगरी और जनावर की कैटेगरी को मिलाना तो नहीं है ना । यह कैटेगरी अलग वो कैटेगरी अलग, उसको अलग तो करो पहले । तो ऐसे नहीं है मिलाना है कि हमने कुछ अच्छा कर्म किया यह मनुष्य से भेंट की बात नहीं है । वह तो जनावर अपने आपस में उनका भी तो कोई हिसाब किताब अपना चलता होगा न तो यह तो जनावरों का हिसाब-किताब हुआ ना । हमको कोई जनावर तो नही बनना है न । हमको तो मनुष्य की गति

क्या है, उसको समझना है और अपनी गति को पकड़ना है गति अथवा सद्गति को । तो हमको तो वो चीजें समझने की है ना । तो यह सभी बातें बुद्धि में रखनी है । तो यह कोई कभी-कभी ऐसे फ़ालतू क्वेश्चंस उठा लेते हैं तो ये क्यूँ आप लोगों को समझाते हैं क्योंकि कोई सर्विसेबल हो ना तो यह सभी पॉइंट्स दी जाती हैं । कभी भी कोई ऐसा कोई क्वेश्चन रॉन्ग वे का उठा लेवे तो कहना भाई इन्ही बातों में तुम्हारा क्या जाता है । तुमको अपना जीवन बनाना है, तुमको अपना सुख शांति चाहिए ना कि जानवरों के सुख शांति का ख्याल है । तू सुखी बनेगा जनावर अपने आप सुखी बनेंगे । तेरे बल से ही जनावर बनेंगे सुखी । तुमको अगर जानवरों के ऊपर दया है तो तू पहले अपने को बना फिर जनावर तेरे बल से अपने आप सुखी हो जाएंगे । सब सुखी हो जाएंगे, यह तत्व आदि सब आर्डर में आ जाएंगे । तो तू अपने को बना वह अपने आप बनेंगे । बाकी तू अगर समझे कि इनके ऊपर दया करके इनको बनाने से मैं बनूंगा । उसके ऊपर दया करने से उसकी दुआ हमारे ऊपर आएगी । नहीं, तू अपने ऊपर दया कर तो तेरी दया सबके ऊपर जाएगी । इसीलिए कई पशुओं की, पक्षियों की, कई चीटियों की सेवा करते हैं कि उनकी दुआ हमको मिलेगी, परंतु तू बन तो तेरी दुआ सब बिचारों को मिल जाएगी । तेरे ही कृपा से सब बेचारे हरे-भरे हो जाएंगे जनावर, पशु, पक्षी, जड़, चेतन वृक्ष आदि सब हरे-भरे हो जाएँगे । अभी देखो वृक्ष आदि में भी ताकत नहीं है ना, फल-फूल अनाज वगैरह सब बिचारे

सड़ गए हैं, भले देते भी हैं परंतु देखो वह ताकत नहीं है । पीछे ये तत्व आदि सब में, तुम्हारे बल से इन तत्व आदि सब में बल आएगा इसीलिए तू अपने ऊपर दया कर तो सबके ऊपर दया तेरी हो जाएगी ऑटोमेटिक । लेकिन तू उनके ऊपर दया करेगा ऐसे करेगा तो इससे कैसे होगा । नहीं, यह अपने ऊपर कर दया । दया का मतलब ही है की अपने को पवित्र बना और मनुष्य को पवित्र बनाने का रास्ता दे तो मनुष्य के बनने से यह मनुष्य का जो भी है जैसे घर का मालिक होता है घर में कितना फर्नीचर होता है न तो किसके लिए है? मनुष्य के लिए है ना । तो यह संसार भी मनुष्य के लिए है । खाना-पीना यह सब शोभा जैसे घर में नहीं रखते हैं बहुत रखते हैं, कुत्ते बिल्ली यह सब पशु पक्षी बनाकर रखते हैं अपने घर की शोभा रखते हैं ना तो यह भी हमारे संसार में शोभा है, इन चीजों का । परंतु है किसके लिए मनुष्य के लिए, मुख्य मनुष्य है ना । तो समझो यह फर्नीचर है सजावट है तो मनुष्य अच्छा हो जाएगा तो उसके घर की सजावट अच्छी हो जाएगी और मनुष्य गिरता है तो उसके घर की सजावट गिरती है । तो अभी पहले सजावट को बनाना है या मनुष्य का बनना है । धनी का बनना है ना, तो धनी बनेगा तो उसके लिए अपने आप मकान अच्छा बनेगा, अच्छे मकान के लिए अच्छा फर्नीचर बनेगा, सब अच्छा होगा । तो पहले जिसको बनना है उसको बनने का पुरुषार्थ रखना चाहिए ना । तो पहली कोशिश करनी है अपने को बनाने की इसीलिए बाप कहते हैं पहले आत्मा मुख्य, शरीर

से भी पहले मुख्य आत्मा । आत्मा बनेगी तब शरीर बनेगा, ऐसे नहीं पहले शरीर बनेगा तब आत्मा बनेगी । नहीं, शरीर पीछे किसके कर्मों के आधार से शरीर बनता है? आत्मा के, तो मेन तो आत्मा है ना और आत्मा को कौन बनाएगा- परमात्मा तो इसीलिए उसको जानना पड़ता है । तो जो बनाने वाला है उसको ना जानेंगे तो हम बनेंगे कहाँ से इसीलिए उसको भी जानना पड़ता है तो आत्मा को और परमपिता परमात्मा को यानी उसको बनाने वाले को समझना पड़ता है । जब समझेंगे तभी तो बनाने वाले के कनेक्शन में आएंगे ना । वह कहते हैं मुझे याद करो अगर हम समझे क्यों याद करें, तो जब पता लगेगा की इसको याद करने से हम बनेंगे, हमारे को उससे ताकत मिलेंगी, बल मिलेगा तो जब हम जानेंगे तब तो टेंप्टेशन रहेगी ना तो इसके लिए उनका ज्ञान जरूर चाहिए । तो हमको अपने बनने के लिए ये बातें जाननी पड़ती हैं । जानकर के उससे कनेक्शन जोड़ना पड़ता है, और जोड़कर के उससे अपना बल लेना पड़ता है तभी तो हम सुखी बनेंगे । ये तो सभी बातें एक दो के सम्बन्ध में है ही । तो ये सभी जो सम्बन्ध की बातें है वो समझने की हैं बाकि ये सब भी नटशेल में क्यूँ, आप लोग तो पुराने हो दस बरस के अथवा कुछ अभी आए हो, अच्छा समझते हो तो उन्हों को समझाया है की भाई चलो यह सभी कैसा है । मनुष्य मुख्य है उसके साथ फिर सभी का कनेक्शन है समझाने में आता है, नहीं तो बिल्कुल नए जो है ना उनको फिर बैठकर के यह बातें समझाये तो फिर मूंझ पड़ेंगे क्योंकि उनको तो

खाली ये बाप का रिलेशन बाप क्या, मैं क्या और उसके साथ सम्बन्ध कैसे रखो और अपने कर्मों को स्वच्छ कैसे बनाओ, बस इतनी बातों में ले जाना है । जब वो अमझ जाएंगे, बुद्धि स्वच्छ जितनी होती जाएगी न, अपने आप बातें समझ में आती जाएँगी, क्योंकि स्वच्छ बुद्धि में ही ये बैठेगा । जिसकी बुद्धि स्वच्छ नहीं है न उसमें ये नॉलेज भी बैठ नहीं सकेगी । ये नॉलेज है बहुत ऊँच की, नॉलेजफुल का । जो नोलेज्फुल गॉड है उसका नॉलेज है तो उसका नॉलेज कोई ऐसी बुद्धि में नहीं । भले आते हैं पतितों को बिठाकर के पावन बनाने के लिए परंतु पतित भी जो उनके बच्चे बनेंगे ना, जो उनके बनेंगे उन्हों को । तो उन्हों को कहते हैं कि बैठेंगे, जो बनेंगे नहीं तो कभी बैठेंगे नहीं । तो मेरे बनेंगे तो ऐसी पतित आत्माएं भी ऐसे ज्ञान से पावन बनती हैं । तो इसीलिए कहते हैं पहले मेरे तो बनो, मेरे में तो पहले विश्वास रखो । अगर विश्वास ही ना होगा तो मेरे से प्राप्ति क्या करेंगे इसीलिए कहते हैं मेरे बन करके मेरे द्वारा फिर जो प्राप्ति होती है उसको ग्रहण करते जाएंगे, प्रैक्टिकल जीवन बनाते रहेंगे तो यह सभी चीजें अच्छी तरह से बुद्धि में रखकर के अपने भी उन्नति करनी है और दूसरों की भी उन्नति करनी है । तो करनी है दूसरों की ऐसे भी नहीं, यह भी दान करना है । दूसरों की सेवा करने से सेवा का फल होता है ना । मनुष्य ये क्यों जनता की सेवा करते हैं या कोई रोगियों की सेवा गरीबों की सेवा क्यों करते हैं । सेवा का फल होता है ना । तो ये भी हमारी सेवा का भी हमारे में

होना चाहिए की दूसरों को ये सच्चा मार्ग बतलाएं, सच्चा रास्ता दें । तो ये सेवा सबसे श्रेष्ठ हैं, तो ये सेवा करने का भी सौख होना चाहिए न । इस सेवा का भी फल है, इससे मिलता है । एक हम अपना पुरुषार्थ करते हैं तो हम बनते हैं फिर सेवा करते हैं दूसरों को बनाते हैं फिर उसका भी फल हमको मिलता है । तो ये सभी अपने में जमा करने की चीजें हैं ना तरीके अपने को और और आगे धनवान अथवा ऊँच बनाने का तो ऐसा बनने के लिए पुरुषार्थ रखने का ही चाहिए । और आएगा, दिल में ऑटोमेटिक आएगा, जिसको जो चीज अच्छी मिलती है तो जरूर आएगा दूसरों को दें । ये बिचारा दुःखी है । हम तो जानते हैं न सारी दुनिया दुःखी है । भले कोई कितना भी अपने को सुखी समझे लकिन हम जानते हैं कि उस बिचारे को सुख का पता ही नहीं है कि सुख क्या चीज है । यह बेचारा जैसे वह होते हैं ना, जैसे कुत्ता होता है ना तो उस बेचारे को हड्डी मिलती है ना, तो वो उस हड्डी को समझता है कि बहुत माल मिला है तो खाता जाता है । तो जब खाता जाता है तो हड्डी घुसती है ना, लगती है तो अपना ही खून वो खाता रहता है लेकिन वो समझता है मुझे हड्डी मिली है न, उसको खाता रहता है बड़ा मजा है, मजे से खाता रहता है लेकिन अपना ही ख़ून करता है वह पता नहीं चलता है । यह मिसाल देते हैं कुत्ते का । तो वो हड्डी खाते हैं तो उसको हड्डी लगती है अपने मुख से उनका ही खून निकलता है वो चूसता जाता है तो वो समझता है हमको हड्डी मिली है तो ये भी दुनिया वाले समझते हैं ये

जो हमको सुख मिला है न, है हड्डी, है नहीं कुछ उसमें परन्तु वो समझते हैं बस हमको सुख मिला है परन्तु हम तो जानते हैं न की वो अपना ही जैसे उससे और ही दु:खी हो रहे हैं और ही अपने को खराब कर रहे हैं इसीलिए हम तो जानते हैं न तो उसको फिर छुड़ाना है कि अरे भाई तुम अपना खराब कर रहे हो इसीलिए ये अपना और ही हानि कर रहे हो । ये तुम्हारा सुख नहीं है ये हानि है । तो हम तो जानते हैं न तो हमारा फर्स्ट धर्म है उसको उससे छुड़ाना । हम जो देखते हैं कि वह अपना हानि कर रहा है उनको पता नहीं लगता है वह अपनी हानि में ही खुश है । वह समझते हैं हम बहुत ही सुखी हैं । हमको कोई दरकार नहीं है तो हम तो भले उस समय थोड़े वो देखो जैसे कई पेशेंट होते हैं न, वो डॉक्टर्स से अपनी दवाई कराने से डरते हैं, ऑपरेशन कराने से डरते हैं लेकिन डॉक्टर तो जानता है ना कि बेचारे की ऑपरेशन ना किया जाए तो उसकी लाइफ चली जाएगी तो वह किसी ना किसी तरीके से जो अच्छे होते हैं वो कोशिश रखेंगे कि नहीं, बिचारे का किसी न किसी तरीके से जान बच जाए । माँ भी होती है न बच्चे को दवा पिलाती है तो बच्चा तो चिल्लाएगा कड़वी दवा पीने में परंतु वह नाक बंद करके भी दवा मुंह में डालेगी तो फायदा है ना । तो हम अभी जगत के बड़े जैसे हमारे से अभी जगत रचता है, भले बाबा हमको रचता है तो हम भी फिर करें हमारा काम है । कोई नही दवाई लेते हैं ना तो जैसे कोई मां भी होती है ना तो वो कहेगी कि नहीं बच्चे का इसमें कल्याण है तो हमको भी कोशिश

करनी चाहिए । उसमें अभिमान नहीं होना चाहिए जैसे बच्चा होता है ना वो लात भी मारेगा, होता है ना मां दवाई पिलाती है तो वह लात भी मारेगा, हाथ भी करेंगे ऐसे-ऐसे तो कोई लात भी लगाएंगे, ऐसे भी करेंगे, कोई गाली भी देंगे परन्तु हमको वो इन्सल्ट नहीं समझनी चाहिए परन्तु ऐसे भी नहीं किसी को नाक पकड़ के दो । ये हम समझाते हैं क्योंकि कई डरते हैं यहाँ । वो समझते हैं, कैसा श्री राम ? श्री राम डरता है कोई इन्सल्ट करते हैं ऐसे करते हैं तो । तो इसमें देह अभिमान की बात नहीं है । नहीं, इसमें तो हमारा काम है जैसे माँ होती है, देखा है कभी, बच्चे होते हैं ना तो वो दवाई लेने में बहुत ऐसे-ऐसे होते हैं फिर मां-बाप जो होते हैं ना वो देते है । तो देख-देख करके देना है । ऐसे को भी नहीं दो जो कोई तिरस्कार करे ज्ञान का । नहीं, समझो भाई उठाने जैसा है, परंतु पहले इसको थोड़ा थोड़ा ऐसा लगता है परंतु ये उठाने जैसा है उसको थोड़ा तरीके से देना चाहिए तो वो कहते हैं तिरस्कार भी नहीं कराओ । ऐसे भी नहीं है जो ऐसे को दो जो ज्ञान का तिरस्कार कराए । उसका दोष फिर तेरे सिर पर चढ़ेगा । तो तिरस्कार भी नहीं करना है देना भी है इसलिए युक्ति से चलना है, समझा! तो इन दोनों बातों को समझना है । यह दोनों बातों की ही खबरदारी है । ऐसे भी नहीं देह अभिमान में अपने को डरना है । अपने को भी देह अभिमान में डरना भी नहीं है और तिरस्कार भी नहीं कराना है । दोनों बातों को संभाल करके सर्विस में रहना है, चलना है तो यह सभी चीजें समझते अपना बनाते अपना

पुरुषार्थ करते चलना है, इनको कहेंगे पुरुषार्थी बाकी ऐसे नहीं बस समझ लिया बाबा आया है, हम बाबा के हैं, हम आत्मा है वह परमात्मा है, यह चक्र ऐसे घूमता है बस हमको ज्ञान है, ऐसा नहीं है । ऐसा समझ के बस अपने को ज्ञानी समझ के बैठ जाओ । इसी पर मिसाल है हम कहते हैं सिंधी में ऐसे कहते हैं आप लोगों में भी कुछ ऐसा होगा कुए लदी डेग गारी आव पसारी परन्तु आप की भाषा में कहते हैं कुछ । वो चूहा होता है न, उसका एक मिसाल देते हैं । एक कहानी है कि चूहे को एक हल्दी का, हल्दी होती है ना सब्जी में डालते हैं, चूहे को एक हल्दी की गांठ मिली तो उसने समझा कि मैं भी बड़ा दुकान वाला हो गया हूँ, दुकान वाला हो गया हूँ तो उसको थोड़ा सा मिला तो उसने समझा कि मैं सारा दुकान वाला हो गया । तो ऐसा नहीं है कि थोड़ा मिला है तो समझना है हाँ अब हम बस हो गए यह मिसाल है । ऐसे मिसाल आप लोगों में भी होगा लेकिन हमको भाषा नहीं आती है ना, तभी हम आपकी भाषा में कुछ नहीं बोल सकते हैं । तो यह सभी बातें हैं तो यह सभी बातों को समझ कर के अपना पुरुषार्थ रखने का है । तो ऐसे-ऐसे रखते रहेंगे और शौक भी रखते रहेंगे अपना जीवन भी अच्छा करेंगे दूसरों का भी अच्छा करेंगे तो जरूर है कि दूसरों की आशीर्वाद मिलेंगी जो बनेगा जिसको सुख मिलेगा । देखो आप लोगों के जीवन में शांति और सुख आया है तो ऑटोमेटिक मन से दुआएं निकलती हैं देखो हमर जीवन कौन बनाने वाला है तो ऑटोमेटिक उसके प्रति हमारी शुभ इच्छाएं

अथवा शुभ भावनाएं उठती हैं । ये ऑटोमेटिक होता ही है तो यह भी चीज ऐसे ही है । जितना-जितना हम दूसरों को बनाएंगे उसकी शुभकामनाएं और शुभ इच्छाएं हमको भी उनकी मदद मिलती है तो ये ऑटोमेटिक है । इसमें कोई ऐसे नहीं किसी से दया मांगने की है या कृपा मांगने की है या दया करने की है या कृपा वह तो एक आर्टिफीसिअल तरीका बना लिया है ऐसा दया कृपा ब्लेस ब्लेस्सिंग्स । यह ब्लेस करना है ये ब्लेस ऐसी ऐसी थोड़ी होती है । नहीं, ब्लेस तो प्रैक्टिकल है ना जो हम कर्म बनाते हैं और जो करेंगे उसका ब्लेसिंग हो ही जाता है । बुरा करेंगे तो बुरा होगा अच्छा करेंगे उसका फिर अच्छा होगा । वह समझते हैं कि ऑटोमेटिक होती है परन्तु ये तो एक भक्ति मार्ग का आडम्बर जैसे वो आया पॉप भाई ब्लेस किया सबको ऐसे ऐसे करता था, वो खुश होते थे, भाई ऐसे ऐसे किया परन्तु ये एक रिवाज भक्ति मार्ग का वास्तव में जो अच्छे कर्म करते हैं उसका ब्लेस्सिंग पाते ही हैं । उसको ऑटोमेटिक ब्लेस होती है परन्तु ये कॉमन चल गया है न तो इसमें बहुत मनुष्य ठहर गए हैं । वो समझेंगे ऐसे करेंगे तो हमारा कुछ भला होगा । भले भावना अनुसार जब पत्थर से भी कुछ मिल जाता है तो कुछ ऐसा करेगा मनुष्य तो मनुष्य से भी कुछ हो सकता है परन्तु अल्पकाल के लिए न । भाई चलो ऐसे-ऐसे किया । चलो पॉप आया, कोई रोगी को ऐसा किया वो थोड़ा ठीक हो गया तो समझेंगे नहीं भाई ये देखो इसके ऐसे करने से हुआ हैं तो वो हुई अल्पकाल की भावना । उसकी भावना रही

न की भाई ये भगवान् है कुछ तो भावना रखी तो उसकी भावना का रिटर्न फिर भी कुछ मिल भी जाए परन्तु अल्पकाल में फिर कोई रोग होगा, फिर कुछ और बात होंगी फिर क्या हुआ भला क्या हुआ । चलो थोड़े समय के लिए शफा हुई फिर और कोई बिमारी हो जाएगी या कोई और बात होगी फिर? ये तो है हम सदा के लिए इन बातों से छूटने का यत्न लेते हैं इसीलिए उसको अल्पकाल यह सदा काल । यह है फर्क । इन बातों को समझ करके और अपना पुरुषार्थ आगे बढ़ाने का है । तो ऐसे पुरुषार्थ में लगे रहना है । इसको कहेंगे पुरुषार्थ । बाकी यह ज्ञान अभी बुद्धि में आया, खाली अभी घर बैठ जाना है ऐसा नहीं अभी देखो हम भी अट्ठाईस बरस से समझते रहते हैं जरूर कोई पढ़ाई है दिन-ब-दिन रोज सभी पढ़ते हैं, नहीं तो हमने अठाईस बीस बरस से पढ़ा है क्या ज्ञान नहीं बुद्धि में आया है क्या, परंतु अभी तक भी कहते हैं ना सुनना है, अभी तक सुनते हैं देखो । देखते हैं रोज के वर्सीस सुनते हैं । सुनते हैं ना तो ज्ञान स्नान करना रोज का यह भी अच्छा है । इससे बुद्धि रिफ्रेश होती है और फिर इसमें बुद्धि अच्छी चलती है तो फिर फालतू संकल्प इधर उधर के नहीं आते हैं और अपने कर्मों के ऊपर भी अच्छे संकल्प रहते हैं तो कर्म भी अच्छे रहते हैं । कर्म अच्छे हैं तो वो भी अच्छा है तो सब अच्छे-अच्छे होते चलते है तो यह हेल्प है ना । तो उसी हेल्प को पकड़ते चलना चाहिए । ऐसा नहीं है अभी हमको हेल्प की दरकार नहीं है, हम अपने आप कर लेंगे । कितना चलेंगे? दस दिन बैठ कर

देखो लो घर में क्या हाल हो जाता है । वो हो जाएगा सोडा वाटर । वो सोडा वाटर होता है न फुर्र्र्रर्र.... आता भी जल्दी है.... तो चढ़ाएंगे एकदम फिर सोडा खोलेंगे तो एकदम फुस्स्शह्ह..,.. गीला हो जाएगा पानी हो जाएंगा एकदम । फिर ये जो नशा चढ़ा है ना वह फिर पानी हो जाएगा एकदम तो इसको कहेंगे सोडा वाटर । तो ऐसा तो नहीं है ना सोडा वाटर वाला नशा नहीं चढ़ाना है फिर चढ़े भी फुस्श और उतरे तो एकदम तो अपना नशा कायम रखने का है अच्छी तरह से तो ऐसा अपना पुरुषार्थ कायम रखने का है । अच्छा, बोलते नहीं है । चिट चैट अच्छी लगती है ना । फिर याद करेंगे ना, भूल तो नहीं जाएँगी ना । तुम किसी से नाराज तो नहीं होती ना । क्या नाराज होंगी हाँ, अभी नाराजी के ऊपर राजी करने वाला मिला । अभी उनके ऊपर नाराज रहें तो कहाँ जाएंगे, किधर के रहेंगे, कोई ठिकाना नहीं इसीलिए जिसका ठिकाना है, जो ठिकाना देने वाला है उसको तो पकड़ के रखो । और पकड़ रखने का मतलब यह नहीं इसको हमने पकड़ रखा है तो इसके ऊपर हम नाराज रहें यह पकड़ना नहीं है । हम इसके ऊपर राजी रहें वो तब ही है पकड़ा हुआ । ये कौन है? ये भी तो उनका संतान है न । तो ऐसे नहीं इसके ऊपर हम नाराज हैं, उसके ऊपर थोड़ी हम नाराज हैं, ऐसे ठग भी बहुत हैं यहाँ चलते हैं । वो समझते हैं हम इसके ऊपर नाराज हैं न, उसको तो हमने पकड़ रखा है न, उसको तो हम याद करते हैं न । याद ही नहीं है, इसके ऊपर नाराज हो तो ये अंडरस्टुड है । नाराजगी शो की उसके ऊपर

नाराज क्योंकि अगर वो याद होता तो उसके ऊपर नाराज क्यूँ । ये दो गाली दी न तो भी इसके ऊपर हम नाराज नहीं, इसके ऊपर ही हम राजी हैं तो अंडरस्टुड है की हमको वो याद है तो उसकी याद हमको इससे पता लगेगा । ऐसा नहीं है की इसके ऊपर हम नाराज हैं लेकिन उसके ऊपर तो हम राजी हैं वो तो हमारा है ही न, ऐसे ठग बहुत हैं यहाँ । ये ठगते हैं अपने को ये सूक्ष्म बातें हैं बहुत तो ऐसे ही कई समझते हैं हम बाबा से थोड़ी रूठते हैं हम दादी से रूठते हैं । नहीं, हम ऐसे ही कह रहे हैं ऐसे ही, नाम तो किसका लेना पडेगा ना जरूर । जैसे कहेंगे न हनाधि के एक सिंधी में बात है वो कहते हैं कहो लड़की को सीखेंगी बहु । ठीक है ऐसी कहावत होती है । बहु नहीं सुनती है क्योंकि दूसरे घर की है न । बाहर के घर की है वो नहीं सुन सकेगी । उसको देह अभिमान है । वो अपनी लड़की है तो उसको कुछ भी लगाओ वो सुन लेगी । तो कहते हैं कहो लड़की को सीखेंगी बहू ऐसी कहावते हैं । तो अच्छा, कुछ भी है चलना है । अच्छा आओ, टोली लो, टोली लो, आओ टोली दें । तुमको डबल देंगे । आज मम्मा के हाथ से, तुमको देखो मम्मा ने दिया है । अच्छा, शाबाश! अभी किसी ने टोली नहीं खिलाया, बाकी थोड़े दिन है देखो रह न जाए कोई । अच्छा, यह गोपीनाथ देखना, यह हाथ उठाते हो । ये हाथ कहाँ उठाया? धर्मराज के दरबार में खड़ा हो गया तेरा । बाबा कहेगा तू ही था ना, तूने हाथ उठाया था । ठीक है ना । चलना है, निभाना है । आओ, मैदान पर । अभी तो जोरू से मिले हो, ज्ञान के

बाद मिलना है, परीक्षा है पीछे । (भाई:- यह बात बोलना है) यह बात बोलना है ? फिर ना मालूम तुमको वह कुछ बोले फिर तू उनका हो जावे (भाई:- नहीं, नहीं, नहीं होगा नहीं होगा) नहीं होगा? पक्का ? अपना बनाएगा उसको? तू नहीं बनेगा उसका? देखेंगे अभी यह रंग चढ़ाता है, भाई कहता है हिम्मत रखता है हम तो शुभ भावना रखेंगे न । हम क्यों कहे कि नहीं । हम कहेंगे हाँ और ही हिम्मत बढ़ाएंगे । हमारा फर्ज है । अगर अपना कुछ कमजोरी करेगा तो फिर इसकी रेस्पोंसिबिलिटी हो जाएगी परंतु दिखाई अच्छा पड़ता है । अभी के चार्ट अनुसार दिखाई अच्छा पड़ता है । हिम्मतवान है थोड़ा, हिम्मत का रखता जरूर है । शाबाश, दो । शिव बाबा को याद करो और तुम भी मैं कौन हूँ, आपसे पूछते हैं कि आपको पता लगा है कि मैं कौन हूँ । मैं कौन हूँ । मैं शिव बाबा का बच्चा अच्छा । शिव बाबा का बच्चा और सच्चा । बच्चा-बच्चा मीन्स सच्चा, पक्का, कच्चा नहीं । शाबाश! शाबाश! ऐसे अगर निकलते रहें देखो एक भी निकले ऐसे और निकले सच्चे तो कहेंगे न अच्छा । अभी देखेंगे, मम्मा आई है उसके बाद जो आए हैं देखो हमारे ये श्यामसुंदर और जो-जो हैं कितने नाम लें । ये राजपूत और भी हैं देखो ये हमारा अभी आता है, इसका क्या नाम था, हमारा ये लक्ष्मण । देखो अभी लक्ष्मण । तो दादी तो नाम नहीं याद रखती है । तुमको अपने स्टूडेंट का नाम ध्यान में रखना चाहिए । देखो वो बोलती है, तुम भी बोलो न, उसको बुलाओ टोली वोली खिलाओ, सब खातिरी करो अच्छी तरह से । पूँछो अच्छे से तो पता

तो चले न हाँ कौन है । इतना तो लेना चाहिए जो संभाल भी सको न । संभाल नहीं सकेगी तो काम कैसे चलेगा । ऐसे नहीं हमारे पीछे बिचारों को इधर उधर करदो हाँ । नहीं, हम इससे बड़े चिट-चेट करते हैं । अच्छी है आपकी दादी और ये भी दादी दादी सुन्दरी ये दोनों दादियाँ अच्छी हैं न ? ये भी दादियाँ, ये दादा सब अच्छा, देखो तभी हमें यहाँ ढाई मास हो गये, रह गये । नहीं तो हम कहाँ नहीं इतना रहते हैं । हाँ, ये आप लोगों के प्रेम में हम फंस गए (एक बहन:- मम्मा ये आपकी प्रजा है या दादी की प्रजा है) अरे! किसकी प्रजा, ये सब बाबा की प्रजा है, हम सब बाबा के हम भी उसके हैं तो फिर हमारा क्या है । हम खुद ही उसके हैं (बहन - मम्मा आपके ही द्वारा फाउंडेशन लगा न ये गोपीनाथ और इनका) अरे निमित्त कोई बनते हैं लेकिन है तो सबके पीछे बाबा न, बड़ाई तो बाबा की है न । अच्छा शाबाश, ये इनका है खुश मिजाज बच्चा है । मिजाज इसका खुश अच्छा है । ऐसे मीठे बच्चे रेस कर सकते हैं । हाँ, फिर आना मधुबन, जोरू को ले करके आना कम्पलीट उसको बना करके । फिर कहना मम्मा देखो हम जीते खड़े हैं ऐसा आ करके दिखाना । मम्मा जीते खड़े हैं देखो, बहादुर हो कर के देखो आग और कापूस पवित्र रह रहे हैं । जीते खड़े हैं ऐसा हिम्मत । शाबाश! आयेंगे माया थोड़ा करती हैं, विघ्न आएँगे परन्तु उसकी परवाह नहीं । जो खड़े हैं न अच्छे, वो कहेंगे रे इनको तो अभी समझ लिया है । अभी इसको ठीक करके रहना है । शाबाश! फिर भी कोई मुश्किल पड़े, कोई ऐसी डिफिकल्ट

बात आवे, चिट्ठी डालना, राय लेना फिर उसमें तुमको सब डायरेक्संस मिलेंगे । सबके लिए है, किसी एक के लिए नहीं ये सबके लिए है । कोई भी बात में मूंझो, चिट्ठी पत्र लिखो और चिट्ठी पत्र हफ्ते में लिखना ही चाहिए । ओके हैं तो पता चलेगा बच्चे जीते हैं, चल रहे हैं । तो कुछ कनेक्शन में आना चाहिए न । आपको अगर बच्चे का पात्र न आवे तो न फ़िक्र हो जावे कितना दिन हुआ है चिट्ठी नहीं लिखा, न पता क्या है तो हाँ ये फ़िक्र हो जाए । तो यहाँ भी देखो आप किसके बच्चे हो । तो बहुत प्रिय बच्चे हो न । अपने को प्रिय समझते हो न । तो हाँ फिर नशा रखो तो आप लोगों की कितना चिंता रहती है की बच्चे जीते हैं, पता नहीं कोई माया तो नहीं । किसी ने न पता संभाल की, न की । खुद माया भी आ जाएगी तो दादी नाक से पकड़ लेगी ।

मम्मा मुरली मधुबन

25. ज्ञान क्या है और ज्ञानदाता कौन है

रिकॉर्ड :-

रात भर का है मेहमान अंधेरा, किसके रोके रुका है सवेरा......

ओम शांति । यह रोज अंधेरा और सवेरा अर्थात रात और दिन होता है वह तो सब देखते हैं जानते हैं । लेकिन इस सृष्टि चक्र का भी, हमारे अनेक जन्मों का भी एक रात और एक दिन का चक्र है जेनरेशंस का तो उसको भी समझना चाहिए । हमारे अनेक जन्मों का रात और दिन का, रात का मतलब ही है हमारी दु:ख के जेनरेशंस और फिर सुख के जेनरेशंस । यह तो गीता में भी है कि शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, अंधियारा मार्ग और रोशनी मार्ग यह गीता के वर्सेस हैं और ब्रह्मा की रात, ब्रह्मा का दिन यह गीता के वर्सेस है । तो यह समझना है कि ब्रह्मा की रात और ब्रह्मा का दिन जब पूरा होता है एक रात एक दिन ब्रह्मा का तो एक कल्प बनता है और ऐसे ही कहें कि यह शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष पूरा होता है तो उसको एक कल्प कहा जाता है तो यह सभी बातें समझने की है । जैसे यह चार युग हैं तो युग किसको कहा जाता है साढ़े बारह सौ वर्ष एक युग का टाइम है और इसी तरह से चार युग को मिलाकर के 5000 वर्ष का एक कल्प है तो चार युगों को मिलाकर के पूरा होने में 5000 वर्ष

लगते हैं जिसका एक कल्प बनता है । इसमें दो युग दिन में दो युग रात में तो सभी युगों का ईक्वल टाइम है । ऐसा नहीं कहेंगे कि सतयुग का ज्यादा टाइम है, जैसे कई शास्त्रकार समझते हैं कि सतयुग की आयु ज्यादा है, त्रेता की कुछ उससे कम, द्वापर की उससे कुछ कम और फिर कलयुग की उससे कम, परंतु ऐसा नहीं है । सभी युगों का जो टाइम है वो एक ही है । तो सतयुग भी साढ़े बारह सौ वर्ष तो त्रेता भी साढ़े बारह सौ वर्ष, चारों युगों में हर एक युग साढ़े बारह सौ वर्ष का है । इसी हिसाब से 5000 वर्ष का तो ढाई हजार वर्ष में एक दिन और ढाई हजार वर्ष में रात । अभी यह जो टाइम है इस समय प्रेजेंट यह कौन सा है, इसको क्या कहेंगे । इस को कहा जाएगा कृष्ण पक्ष अथवा ब्रह्मा की रात । अभी ब्रह्मा की रात पूरी होती है अभी फिर ब्रह्मा का दिन अर्थात हमारी सुख की जेनरेशंस चलती है । तो इन्हीं बातों को समझना है कि यह हमारे सृष्टि चक्र का भी कैसा नियम है और किस तरह से चलता है तो यह रात और दिन यानी दो युग दिन में दो युग रात में । अभी दिन भी पूरा हुआ और रात भी अभी पूरे होने पर है फिर रात के बाद फिर दिन आना है । ऐसे नहीं है फिर खत्म प्रलय हो जाए, फिर रात के बाद दिन दिन के बाद रात यह फिर चलने का है । तो अभी रात पूरी हो करके अभी दिन आने का है । दिन माना हमारे सुख का समय जन्म जन्मांतर हमारा सुख का अर्थात हमारी सुख की जेनरेशंस तो अभी यह है संगम तो अभी इस प्रेजेंट टाइम को संगम कहेंगे । ये

संगम युग है जिसको पांचवा युग भी कहा जाता है । इस युग का फिर महत्व है । इसकी आयु छोटी है यह साढ़े बारह सौ वर्ष नहीं चलने का है । संगम का पीरियड, टाइम थोड़ा है । इसको युग ना कहना अच्छा है परंतु वो गीता में लगाया है ना युगे युगे मैं आता हूँ तो कई शायद यह समझते हैं की सतयुगे, त्रेतायुगे, द्वापरयुगे, कलयुगे सभी युगों में आता है परमात्मा परंतु ऐसा नहीं है । युगे युगे आता हूँ तो मतलब है सभी युगों में आता हूँ नहीं, युगे युगे का मतलब ही है यह संगम के टाइम पर यानि यह संगम जब-जब आता है क्योंकि यह संगम का टाइम फिर-फिर रिपीट हो करके आता है ना इसीलिए युगे-युगे कहा । परन्तु युगे-युगे ऐसा दो बार युगे कहने का मतलब यह नहीं है कि सभी युगों में आता है लेकिन संगमयुगे यानि जब-जब ये कल्प पूरा होकर के कल्प का अंत और आदि का टाइम आता है तब-तक मैं आता हूँ तो कहने में तो आएगा ना की जब-जब, जैसे कहें कि रात पूरी होकर के दिन आता है फिर दिन पूरा होकर के रात आती है तो कहने में आएगा ना कि जब-जब रात आती है क्योंकि फिर-फिर रिपीट होती है ना तो कहने में तो आएगा न जब-जब रात आती है तब-तब ऐसा होता है कहने में आता है । इसी तरह से फिर-फिर रिपीट हो करके यह टाइम आता है इसीलिए उसको कहा हुआ है कि जब-जब यह युग आता है संगम का, तब-तब उसी संगम युगे-युगे आता हूँ तो इन्हीं सभी बातों को भी समझना है । तो अभी यह है संगम । चार युग तो कॉमन सब बता भी देंगे, किसी से अगर

पूछा जाए कि कितने युग है तो बता भी देंगे भई सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग लेकिन यह पाँचवा युग जिसको संगम टाइम कहा जाता है, यह कोई नहीं जानता है । इसको परमात्मा आ करके अपना खास टाइम बतलाता है कि मेरा टाइम आने का जो है वह रात का अंत और दिन का आरंभ होने का जब टाइम है तभी मैं आता हूँ । तो अभी यह रात और दिन के संगम का टाइम है ये टाइम अभी जो प्रेजेंट चल रहा है इसीलिए परमात्मा कहते हैं इस टाइम पर आकर के अभी ये अंधियारे का टाइम ख़त्म करता हूँ और फिर दिन का टाइम आगे जेनरेशंस में चलने का है । फिर उसके लिए तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ बनें तभी तुम अपने श्रेष्ठ कर्मों की प्रालब्ध अभी उस दिन में यानि सुख के दिनों में प्राप्त करो तो उसके लिए फिर आ करके यह कर्म श्रेष्ठ की सेपलिंग लगाते हैं अर्थात हमारे में प्योरिटी धारण कराते है अर्थात हमारे कर्म को ऊँच कराते हैं । हमारे कर्म को ऊँच कराने के लिए हमको प्योरिटी चाहिए । बिना प्यूरिटी के हमारे कर्म जो हैं न वो स्वच्छ नहीं हो सकते । स्वच्छ का मतलब यह नहीं है कि नहाया धोया अथवा सच बोलते हैं, झूठ नहीं बोलते हैं इसी से हमारी यह स्वच्छता है । हमको सच का भी नॉलेज चाहिए ना । सच क्या है उसका भी ज्ञान चाहिए । सच यह नहीं है कि हाँ बस हम जानते हैं की यह परमात्मा है, यह संसार है यह नहीं । परमात्मा यथार्थ क्या है, हम भी यथार्थ क्या है, हमारे कर्मों का यह चक्र यथार्थ कैसे चलता है तो इन यथार्थ बातों को जानना जो जैसी चीज है, उसको यथार्थ

समझना उसको कहा जाता है सच को जानना । जब तक मनुष्य यथार्थ बात को नहीं जानते हैं तो उनको सच थोड़े ही कहेंगे । तो यह सभी चीजों को समझने का है इसीलिए यथार्थ नॉलेज सच की नॉलेज सिवाय परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता है इसीलिए तो कहते हैं न की गॉड इस ट्रुथ क्योंकि ट्रुथ को जानने वाला वह है । उनके सिवाय और कोई सत्यता जान ही नहीं सकता है इसीलिए बताता भी वही है कि सत्यता क्या है, मैं कौन हूँ, तुम मनुष्य क्या हो, तुम मनुष्यों के कर्मों का यह चक्र कैसा चलता है तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए अभी परमात्मा के द्वारा जिन बातों की रोशनी मिली है कि हम कौन हैं, अभी हमारा यह कौन सा टाइम है वह अभी हम समझ करके फिर दूसरों को अपने अनुभव के आधार से समझाते हैं कि अभी यह टाइम कौन सा है । इस टाइम के मुताबिक अभी क्या करना चाहिए क्योंकि हम तो यह बातें भूल गए हैं ना । यही हमारे से भूल हुई है । इसी भूल के कारण ही हम दु:खी हुए हैं । हम नहीं जानते हैं, अपने को भी नहीं जानते हैं, अपने पिता को भी नहीं जानते हैं और हमारा यह सृष्टि का चक्र दिन और रात का कैसे चलता है इसको भी नहीं जानते हैं इसीलिए हम दु:खी हुए हैं । अगर अभी जानते हैं अपने कर्मों को अच्छा बनाते हैं, जानने से ही हमारे कर्म अच्छे बनते हैं ना । नहीं जानने से हमारे कर्म अच्छे नहीं थे तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए बाप कहते हैं कि इनको जानने से ही तुम्हारे कर्म अच्छे होंगे और उन अच्छे कर्मों की फिर

प्रालब्ध भी जरूर है की अच्छी प्राप्ति रहेगी । तो अभी देखो यह है वह ज्ञान । बाकी ज्ञान का कोई मतलब यह नहीं है कि उसके लिए हम बैठकर के चार वेद पढ़ें, अठारह पुराण पढ़ें, ये सभी शास्त्र, ग्रंथ, वेद पढ़े तभी हम ज्ञानी बने । नहीं, ज्ञान के लिए कोई शास्त्र पढ़कर के ज्ञानी बनना नहीं । ज्ञान जो चीज है वह यह है की हमको यथार्थ अपनी और अपने पिता की और अपने सारे कर्मगति इन सभी बातों की नॉलेज चाहिए ना तो इसकी नॉलेज सिवाय परमात्मा के और कोई दे नहीं सकता है और वह बाप देखो बाप जो बैठ समझाते हैं बड़ी सिंपल । वो थोड़ी कहते हैं इतने शास्त्र पढो, ग्रन्थ पढो तभी तुमको ज्ञान प्राप्त होगा, वो तो कहते हैं ज्ञान क्या है- मैं बाप हूँ तुम बच्चे हो ये खाली समझना है और फिर जैसा बाप है वैसा ही फिर बच्चों को बनना है । मेरे द्वारा तुमको क्या प्राप्ति करनी है, उसको समझ करके उसमें चलना है इसमें डिफिकल्टी क्या है, या इसके लिए बैठ करके कोई बहुत शास्त्र या ग्रन्थ करना इनकी क्या बात है । तो कोई डिफिकल्टी नहीं है न, तो यह सभी बैठकर के बाप समझाते हैं कि ज्ञान कोई लंबी चौड़ी चीज नहीं है परंतु भूले हो न, भूल हो गई है तुम्हारे से । तुम मेरे से रिलेशन को भूल गए हो, और अपने को भी भुला दिया है इसीलिए अपने से जो भूल हुई है उसको करेक्ट करो बस ज्ञान इतना ही है अपनी भूल को करेक्ट करना । तो भूल हुई है एक । एक ही भूल हुई है जिससे हम सारे देखो दु:खी हो गए हैं और भूल देखो है कितनी बड़ी से बड़ी । अपने को भूल जाए कोई, व्हाट

एम आई, किसी से पूछे तुम कौन हो, वो कहे हमको पता ही नहीं हैं तो उसको क्या कहा जाए । वैसे तो किसी से भी पूछो भाई तुम कौन हो तो कहेंगे हाँ देखते नहीं हो, मनुष्य हैं । हम कौन हैं, तो क्या हैं मनुष्य हैं परंतु नहीं, मनुष्य क्या ? मनुष्य किसको कहते हो? कौन मनुष्य, ये कहता कौन है, तो यह सभी चीजें यथार्थ समझनी चाहिए न । ऐसे तो देखो मनुष्य मरता है बॉडी पड़ी है फिर कौन सी चीज निकल गई, मनुष्य क्या है मनुष्य वह जो निकल गया या यह जो बॉडी पड़ी है, किसको कहेंगे । तो कौन है क्या है इन सभी बातों की यथार्थ नॉलेज चाहिए ना । बाकी ऐसे तो सब कहेंगे हम मनुष्य है, देखते नहीं हो मनुष्य हैं, परन्तु मनुष्य का इतना ही तो परिचय नहीं है ना । परिचय हमको अपना यथार्थ होना चाहिए कि हम क्या चीज हैं, हम कौन हैं तो अपनी चीज अपने को पता होने से कि मैं कौन हूँ तो हमको अपने कर्तव्य और अपने कर्मों का भी यथार्थ नॉलेज आएगा कि हम कौन हैं । इसीलिए बाप बैठकर के अभी समझाते हैं की असूल में तुम कौन सी चीज हो और तुम जो चीज हो उसकी पोजीशन कितनी ऊँची है । फर्स्ट आत्मा प्योर है ना, तो भले आत्मा हो परन्तु फर्स्ट आत्मा प्योर है, पीछे इम्प्योर हुई है । ऐसे नहीं है पहले इम्प्योर है पीछे प्योर हुई है नहीं, पहले प्योर पीछे इम्प्योर हुई है अभी फिर इम्प्योर से फिर प्योर बनने का है इसीलिए इंप्योरिटी उसके ऊपर चढ़ी है । ओरिजिनल आत्मा की स्टेज प्योर है, ये इंप्योरिटी पीछे चढ़ी है इसीलिए अभी उस इंप्योरिटी को निकालो तो

फिर प्योर बनो । तो प्योर बनने से फिर तुम सुख को प्राप्त करेंगे । तो यह ज्ञान आने से ही तो हमारे कर्मों में परिवर्तन आएगा ना । यह नॉलेज से होगा ना । अभी हम जानेंगे ही नहीं कि हम कौन हैं हमारा क्या कर्तव्य है तो कैसे पता रहेगा । अभी जिस-जिस की जो ड्यूटी है कि भई हमारा क्या काम है, क्या है, उसका भी समझ होगी तभी तो करेंगे ना । नॉलेज, कि भई हम मिनिस्टर हैं हमारा यह ड्यूटी है । हम गवर्नर हैं , हमारा क्या काम है, हमको कौन सा काम करना है, हमको क्या करना है वह हरेक को अपना अपना नॉलेज होता है ना । डॉक्टर है उसको पता है मैं डॉक्टर हूँ मुझे ये जिस्म का काटना कूटना या जो भी कुछ है उसको बनाना है, उसका इलाज देना है तो वो सबका अपना-अपना काम है । तो व्हाट ऍम आई मेरा क्या कर्तव्य है वो अपने का भी तो मालूम होना चाहिए ना । वह मालूम ही ना हो बस चलते ही रहो तो उससे मनुष्य क्या कर सकेगा । मनुष्य सिर्फ इतना ही तो नहीं है ना कि मैं डॉक्टर हूँ बस ये मनुष्य है, मैं इंजीनियर हूँ बस इतना ही तो मनुष्य नहीं है ना । नहीं, वास्तविकता में हम कौन हैं, यह सभी बातों को जानना चाहिए ना, इतना ही तो परिचय नहीं है ना यह तो हुआ जिस्मानी परिचय, बाहर का कि भाई मैं डॉक्टर, इंजीनियर बैरिस्टर हूँ । इतना ही तो ऑक्यूपेशन नहीं है ना । हमारा पहला फर्स्ट परिचय की व्हाट एम आई तो सेल्फ की नॉलेज चाहिए ना जिसको सेल्फ रिलाइजेशन कहा जाता है । तो इन सभी बातों की यथार्थ नॉलेज भी होनी चाहिए और

उसी की नॉलेज को ही कहा जाएगा ज्ञान और यही ज्ञान न होने के कारण यही भूल है तो यह भूल सारी दुनिया की है । सब इसी बात को भूले हुए हैं । यथार्थ रीति से कोई जानता नहीं है कि हम कौन हैं तो जब यह नहीं जानते कि हम कौन हैं तो करना क्या है यह भी नहीं जानते इसीलिए सबकी रॉन्ग एक्शंस होने के कारण मनुष्य दु:खी और अशांत हैं । इसी का ही कारण है दु:ख अशांति । आज हमारी दुनिया दुःख और अशांति में है यह सिर्फ एक भूल के कारण है । सब भूले हैं, नहीं जानते हैं कि हम हैं क्या, हमें करना क्या है । अभी आकर के बाप यथार्थ रीति से समझा रहे हैं और उसी भूल को करेक्ट करा रहे हैं कि किस तरह से इस भूल को करेक्ट करो और समझ करके अभी उसी पर चलो । तो अभी तो सब जो रोज आते हो इन बातों को सुनते हो और समझते हो उन्हों कि तो बुद्धि में आती है न कि हम क्या हैं, कौन हैं, हमें क्या करना है तो अभी उसी प्रैक्टिस में प्रैक्टिकल चलने का है तभी हमारी प्रैक्टिकल प्रैक्टिस से ही हमारे श्रेष्ठ कर्म बनेंगे । ऐसे नहीं खाली सुनने से होगा । नहीं, आएंगे प्रैक्टिकल एक्शंस को अपने में परिवर्तन में लाएंगे अर्थात प्योरिटी को प्रैक्टिकल में लाएंगे बाकी खाली सुनने से अथवा हमारा टाइम अच्छा पास हुआ या सुनने से हमने कुछ सफलता पाई, नहीं, हम जब तलक अपने एक्शंस में ना लाएं तब तलक हमारे में प्योरिटी आ नहीं सकेगी । तो यह है ही सारा अपने कर्मों के ऊपर आधार रखने की चीज क्योंकि हमारा जो भी बुरा अच्छा बनता है और जिससे हम दु:ख

अशांति पाते हैं वह सब कर्मों से है तो हमको फिर लाना भी तो कर्मों में है ना अच्छी को भी हमको अपने कर्मों में लाना है । बाकी हमने सुना तो बस हम अच्छे हो गए ऐसे तो नहीं है ना या कोई देखने से बस हम अब ऐसे हो गए, कोई डॉक्टर को देखने से डॉक्टर नहीं हो जाएगा या सुनने से तो खाली नहीं हो जाएगा ना । प्रैक्टिकल प्रैक्टिस में आएगा तब डॉक्टर बनेगा । खाली बैठकर के लेक्चर्स सुने तो उससे क्या होगा । प्रैक्टिकल में आएगा तभी तो प्रैक्टिकल में वो स्टेज प्राप्त कर सकेगा न तो यह भी चीज ऐसी है । इसको भी प्रैक्टिकल में प्रैक्टिस में लाना होता है इसीलिए ही यहाँ सबसे पूछा जाता है कि हाँ यह समझते हो, प्रैक्टिकल में ले आते हो, उनका प्रेक्टिकल एक्शंस अपने में धारण करते जाते हो । तो देखो ये नॉलेज और ये जो पढ़ाई है इसमें तो जैसे पढ़ाई होती है ना स्कूल में, हर एक बच्चे को देखा जाता है कि बरोबर यह पढता है, इसकी बुद्धि में बैठता है, यह समझता है, प्रैक्टिकल में धारण करता है, तो एक-एक स्टूडेंट को देखा जाता है । ऐसे नहीं खाली आए सुने, नहीं इसीलिए इसको स्कूल कहा जाता है । इसको कॉमन सत्संग नहीं कहा जाता है जैसे कई आए, बस सुना फिर चले गए, किसी ने समझा या ना समझा, वो समझेंगे अच्छा हमने घंटा, आधा घंटा पास किया, हमारा भी अच्छा हो गया और हमने दर्शन भी कर लिया । बस हो गया । ऐसी बातें नहीं है । इससे होता नहीं है कुछ भी । ये एक भावना बहुत काल की बनी आई है न इसीलिए मनुष्य बिचारे बहुत अंधश्रद्धा

में चलते रहते हैं । उसको कहेंगे अंधश्रद्धा ब्लाइंड फेथ । परन्तु नहीं, यहाँ तो कोई ब्लाइंड फेथ में नहीं बिठाना है न कि बस इतना ही तुम फेथ रखो दर्शन किया या दो वचन सुना तो काम हो गया नहीं, ब्लाइंड फेथ को निकालना है । अभी अपने को सच-सच जानकर के, रियलिटी को जानकर के उसी रियलिटी में आना है इसीलिए यहाँ प्रैक्टिकल एक्टिविटी के ऊपर सारा मदार है और इसीलिए उसी पर ही जोर दिया जाता है कि अपने एक्शंस को परिवर्तन में लाओ । देखो पूछते हैं ना इसीलिए पूछते हैं कि पवित्रता को धारण करते हो, अपने में परिवर्तन महसूस करते हो । ये फाइव वाइसेस जो है, यह समझते हो कि उसमें चेंज आती जाती है । अगर नहीं आती है तो फिर उसका इलाज लेना चाहिए । वह रिपोर्ट करेगा बताएगा तभी तो पता चलेगा ना । ऐसे नहीं है कि यहाँ बस अपने आप जानी जाननहार है जानते रहेंगे । नहीं, यह पढ़ाई है तो जैसे कोई किसी सब्जेक्ट में कम होता है तो देखो टीचर को उसका पता भी रहेगा ना । वह देखेगा तो हर एक के ऊपर और ऐसा भी है स्टूडेंट्स का भी काम है कि सबको अपना रिपोर्ट देना है कि हमारी क्या वीकनेस है फिर उसको उसके ऊपर सावधानी मिलेगी, शिक्षा मिलेगी और उन्हीं शिक्षाओं में फिर आगे बढ़ते चलेंगे । तो प्रैक्टिकली अपने में देखना चाहिए कि हमारे में चेंज है, नहीं आई है तो समझना चाहिए कि अभी तक हम कहाँ भूले हुए हैं तो फिर उस भूल को करेक्ट करना चाहिए, तभी हम अपना कुछ लाभ जिसको कहें और प्रैक्टिकल लाइफ जिसको बनाना

कहें बना सकें तो समझें कि हमने कुछ पाया है । नहीं तो बाकी ऐसे ही नहीं कि बस हाँ बैठने से कुछ हो जाएगा । ये होगा प्रैक्टिकल में आने से और प्रैक्टिकल एक्शंस वाला कोई छिप नहीं सकता है । जो एक्शंस में है अच्छे तो उसका सबूत तो बाहर आता है । उसके एक्शंस कोई छिपने वाली चीज तो नहीं है ना । कोई बुरा करता है तो भी प्रत्यक्ष हो जाता है, अच्छे का अच्छा भी प्रत्यक्ष हो ही जाता है तो इसीलिए अपने सारा प्रैक्टिकल के ऊपर मदार है इसीलिए उस प्रैक्टिकल लाइफ का पूरा अटेंशन रखते और अपने कर्मों को स्वच्छ बनाते चलना है । बाकी तो अभी पता चला है ना भूल कौन सी रही, किस भूल को करेक्ट करना है वह तो अभी बुद्धि में बात आई है । तो जो रोज आते हैं उनको तो इन बातों में कोई मूंझने की बात नहीं रही होगी कि हम कौन हैं, हमारा पिता कौन है हमें बाप से क्या लेना है । एम एंड ऑब्जेक्ट अभी बुद्धि में पूरी है और होनी चाहिए तब तो पुरुषार्थ भी चलेगा न । अगर एम नहीं होगी कि हमको क्या बनना है तो क्या पुरुषार्थ करेंगे तो एम चाहिए । जो कॉमन सत्संग हैं उसमें कोई एम नहीं है । वो समझते हैं खाली जाना है, दो वचन सुनना है, बस उसी से ही काम हो गया । परन्तु नहीं, ये पढ़ाई है, नॉलेज है, जैसे स्कूल में जाते हैं, भाई हमको इंजीनियर बनना है, तो एम है न तो एम पर चल करके हमको वो स्टेटस प्राप्त करने का है । तो सत्संग में कोई एम नहीं है न, खाली समझने हैं इससे हम मुक्त जीवनमुक्त हो जाएंगे । ऐसे सुनते-सुनते या यह शास्त्र ग्रन्थ पढ़ते-

पढ़ते बहुत मुक्त हो गए हैं यह समझ बैठे हैं और हम भी हो जाएंगे । हुए या ना हुए या क्या होने का है इन सब बातों का पता होना चाहिए न यथार्थ । तो यह सभी अपनी प्रैक्टिकल लाइफ में परिवर्तन लाना है और प्रैक्टिकल हमारे में वो प्रैक्टिस आती जाती है उससे पता चलेगा ना । हम अपने जीवन से महसूस करते हैं ना कि भई हमारी आगे क्या जीवन थी, अभी क्या जीवन है फर्क आता जाता है तो समझते हैं की हाँ फायदा पड़ता जा रहा है । बाकी ऐसे नहीं कि हाँ हम जाके ज्योति ज्योत समाएंगे तो हो जाएगा बस, यहाँ ऐसे के ऐसे ही । नहीं, ये सभी प्रैक्टिकल लाइफ में आना चाहिए । यहाँ पर ही परिवर्तन आना चाहिए न तब फिर उसी के आधार से हम समझेंगे की हमारा भविष्य भी उस आधार से ऊंचा बनता जाता है । तो ये सभी बातें अच्छी तरह से बुद्धि में रखने की है और प्रेक्टिकल अपनी धारणाओं में भी आगे बढ़ने का है । अच्छा दो मिनट साइलेंस । लेकिन बाप कहने से बाप तो कॉमन बात हो जाती है नाम भी चाहिए न । तो एक ही है परमात्मा जिस आत्मा के ऊपर नाम है शिव । निराकार के ऊपर नाम है ना कोई शक्ल वाला मनुष्य तो नहीं है ना । बाकी आत्माओं के ऊपर जब शरीर लेती हैं आत्माएँ तभी नाम पड़ता है, देखो भाई शिवराज, तोलाराम आदि ये सभी नाम तो शरीर लेते हैं फिर नाम होता है । नहीं तो कॉमन तो कहेंगे सब आत्मा । आत्मा के ऊपर नाम क्या है आत्मा । आत्मा ही कहेंगे । लेकिन वो ही एक परमात्मा है, जिसका नाम है शिव । तो वह आत्मा के ऊपर

नाम है शिव । बाकी हम शरीरधारियों के ऊपर शरीर पर नाम है । देखो शंकर है तो भी आकारी शरीरधारी है ब्रह्मा, विष्णु, राम अथवा श्री नारायण तो भी शरीरधारी है न । बाकी एक ही है निराकार परमात्मा बाप जिसके आत्मा के ऊपर नाम है बाकी हम सब मनुष्यों का शरीरधारियों के ऊपर नाम है । तो उनका नाम शिव है । कई ऐसे समझते हैं कि निराकार परमात्मा तो सबका पिता है ना, तो शिव नाम तो भारतवासियों का है तो वह तो सबका पिता है ना । दूसरे देश वाले उसको शिव नाम से कैसे समझेंगे । ऐसे कई क्वेश्चंस उठाते हैं । परंतु यह भी समझने की बात है कि परमात्मा यहाँ आए हैं ना । निराकार परमात्मा कहाँ आए हैं भारत में आए हैं । वहाँ आ करके उन्होंने नॉलेज दिया है, कर्तव्य किया है इसीलिए नाम भी जो पड़ा है तो भारतवासियों का पड़ेगा ना । जैसे शरीर भी भारतवासियों का लिया है तो नाम भी जो है उनके कर्तव्य के ऊपर तो इधर ही पड़ा है ना । तो इसीलिए यहाँ का नाम है और भारत में उसका जन्म स्थान है यानि परमात्मा का अंतरण भारत में हुआ है, ऐसे नहीं दूसरे देशों में, इसीलिए क्योंकि ये भारत अविनाशी खंड है । तो यह सभी चीजें भी समझने की है इसलिए परमात्मा को शिव नाम डाला हुआ है तो भारतवासी डालेंगे ना । भाई शिव का अवतरण भारत में तो भारतवासियों का ही नाम पड़ेगा ना । तो अभी कृष्ण पक्ष का अभी लास्ट टाइम है अभी फिर शुक्ल पक्ष चलना है तो चलना है ना उसमें । तो अभी कृष्ण पक्ष यानी अँधियारा मार्ग का टाइम अभी बहुत थोड़ा

है । अब लगाना तो सेप्लिंग उसमें ही है । तो ये सारी चीजों को समझ करके अभी अपना पुरुषार्थ रखो । अच्छा टाइम हुआ है । अभी दो मिनट साइलेंस । साइलेंस का मतलब आई एम सोल । फर्स्ट साइलेंस पीछे टॉकी में आते हैं अब बाप कहते हैं फिर चलो साइलेंस वर्ल्ड हमारा असूल साइलेंस शांति अपना स्वधर्म है आत्मा का । अब फिर साइलेंस में चलने के लिए कहते हैं इस देह का और देह सहित देह के संबंधों का अभी अटैचमेंट छोड़ो इसे डिटेच हो जाओ और अपना मन अभी मेरे में लगाओ और तुम हो सन ऑफ सुप्रीम सोल । अब मुझे याद करो और मेरे धाम में आओ । मेरा धाम कौन सा है? मेरा भी वही है लेकिन तू भूल गया है इसलिए अभी अपने धाम को याद करो । तो साइलेंस का मतलब यह है इसीलिए ऐसा साइलेंस में बैठने का है अर्थात निरंतर अपने को ऐसी अवस्था में रखना है कि आई एम सोल परंतु नॉट ओनली सोल, साइलेंस्ड सोल अथवा फर्स्ट प्योर सोल । तो सोल के साथ आई एम फर्स्ट प्योर सोल, वह भी ख्याल में रखने का है कि आई एम फर्स्ट प्योर । नोट ओनली सोल बट प्योर सोल । और प्योर सोल फर्स्ट साइलेंस्ड थे पीछे फिर टाकी में आए तो प्योर सोल भी और बॉडी भी प्योर । अभी बाप कहते है अभी तो तुमको चलना है वहाँ, पीछे आएँगे तो अभी चलने का ध्यान रखो । अभी आने का नहीं ख्याल करो अभी बस चलने का । तो आने का नहीं अभी ख़याल करना है । पीछे आएंगे तो प्योर हो करके फिर बॉडी भी प्योर मिलेगी तुमको परन्तु अभी तो चलने का है न तो

अभी तो चलने का ख्याल करो तो अंत मते सो गते तो फिर ऐसी गति को पाएंगे तो अभी चलने का ख्याल करो । इसीलिए चलना है तो डिटेच होके चलना है । अभी कोई भी अटैचमेंट नहीं , वो प्योर सोल और बॉडी अभी उसकी भी अटैचमेंट नहीं । अभी शरीर की अटैचमेंट छोड़ दो । अभी वह बुद्धि में रखो तो ऑटोमेटिक है कि तुमको प्योर सोल को फिर शरीर भी प्योर मिलेगा । समझा । तो ऐसी अपनी धारणा बनाने की है । अच्छा अब बैठो साइलेंस में । ऐसा नहीं खाली थोड़ा टाइम, यह फिर प्रैक्टिस हर वक़्त रखने की है, चलते भी साइलेंस में, बोलते भी साइलेंस । बोलते कैसे साइलेंस होती है, मालूम है? बोलते भी हमको बुद्धियोग अपने उसी आई एम सोल, फर्स्ट प्योर सोल अथवा साइलेंस सोल तो यह याद रखना । यह मानो देखो अभी हम आप से बोल रहे हैं ना, लेकिन बोलते भी हम अगर उसी याद में है तो आई एम साइलेंट । और बोलते हैं तो हमारे में यह नॉलेज उसी समय रहना चाहिए आई ऍम सोल, इस ऑर्गन से बोलते हैं टॉक करते हैं नहीं तो फर्स्ट आई एम साइलेंस । अभी चलो बोलना है इनको समझाना है तो बोलो । ओरगंस का आधार लेकर के हम बोलते हैं, नहीं तो फर्स्ट आई एम साइलेंस । नहीं बोलते हैं अभी तो साइलेंस । अभी अपने को आर्डर करते हैं की मुख से बोलो तो बोलते हैं, सुनते हैं और करते हैं, नहीं तो बस अच्छा, नहीं तो नहीं बोलते हैं । तो यह अपना प्रेक्टिस होनी चाहिए जैसे हम इसका आधार ले कर के बोलते हैं । ना आधार लें तो चलो साइलेंस में । अच्छा कान का

आधार खाली लेते हैं सुनते हैं, चलो आँखों का आधार लेते हैं देखते हैं तो जिसकी जरूरत है उसका आधार लेकर के काम करते हैं और क्या । ऐसा काम रहने से खुशी रहेगी और कोई ऐसा बुरा काम नहीं होगा अगर इसी प्रैक्टिस और इसी सभी बातों में रहेंगे तो । अच्छा ।

26. कर्मों की गहन गति

रिकॉर्ड :

एकमात सहायक स्वामी सखा तुम ही सब के रखवारे हो.........

इसी तरह से ये हमारा यह कल्प कल्पान्तर का अधिकार बाप के पास नूंधा हुआ है अपन अभी ऐसे ही कहेंगे । यह अधिकार हमारे सिवा और कोई ले नहीं सकता है यह अपना पार्ट है, यह अभी पार्ट सिद्ध होता है जो जो इसमें आते जाते हैं और दृढ़ता से लगते जा रहे हैं तो जानते हैं कि यह कल्प पहले वाला वही बाप है और बाप से अपना अधिकार लेने वाले ले रहे हैं । तो अभी अपन जानते हैं कि अपना सुख का अधिकार जो बाप के पास संपूर्ण सुख है वह सुखदाता जिस लिए गाया हुआ है वह हमारा अधिकार है और हम ही कल्प कल्प बाप से अपना यह अधिकार लेने के लिए आते हैं । यह सुख का अधिकार और कोई ले नहीं सकते हैं । इसमें कोई कहे क्यों सिर्फ यहाँ ही क्यों या भारत से ही क्यों या दूसरे धर्म वाले क्यों नहीं तो यह तो अभी हम जानते हैं जो अगर दूसरे धर्म के लिए भी कहे कि क्रिश्चंस में क्यों नहीं या बुद्धिज्म में क्यों नहीं, वो क्यों नहीं अपना ये अधिकार लेते या कई ये भी विचार देते हैं ना की बारी-बारी होनी चाहिए कभी दूसरे धर्म वाले ले कभी दूसरे धर्म वाले, क्यों एक ही

क्यों । अभी दूसरे-दूसरे का तो नहीं है ना । यह तो फिर ड्रामा है जिसको अपने समय पर पूरा हो करके फिर हूबहू रिपीट होना है इसीलिए यह अपना ही अधिकार है । अगर कोई का भी क्वेश्चन हो तो अच्छा क्वेश्चन है फिर भी यही आएगा कि क्यों हो और बदली भी नहीं होने की बात है कि एक बार क्रिश्चिंस लेवें, दूसरी बार बुद्धिज्म लेवे, तीसरी बारी हिंदू लेवे आदि-आदि, ऐसे भी नहीं है । यह तो ड्रामा है ये तो जैसा शुरू हुआ है, फिर पूरा हो करके फिर शुरू होगा तो वही होगा ना । ऐसे तो नहीं फिर शुरू दूसरे से होगा । यह तो बना बनाया ड्रामा है इसीलिए ही यह गाया हुआ है की बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाही, क्या नहीं बनना है? ये ही जो कि बना हुआ है उसमें फिर कोई ऐसा फर्क नहीं पड़ सकता है । तो कहाँ से शुरू हुआ, किस से शुरू हुआ तो वह शुरुआत और एंड उसमें फर्क है शुरुआत और एंड में लेकिन एंड हो करके फिर शुरुआत होगी तो वही होगी, उसमें फिर कोई फर्क नहीं हो सकता है बाकी खेल को चलने में कि शुरू कैसे हुआ फिर शुरू होकर चलते चलते फिर इसका अंत कैसे होता है, यह पूरा खेल कैसे होता है वह अभी सब देख रहे हैं । अभी देखो सब एक्टर्स अभी आ चुके हैं बाकी भी जो आने के होंगे थोड़े बहुत वह भी आते रहेंगे लेकिन मुख्य मुख्य पार्टधारी अभी स्टेज पर स्थित हैं यादव भी हैं, कौरव भी हैं, इधर पांडव भी हैं, परमात्मा भी उपस्थित है तो ये जो अभी सब मुख्य पार्टधारी हैं अपने मुख्य पार्ट में अभी कैसे चल रहे हैं उन्हों का यह पार्ट अदा हो रहा है । यह

खेल फिर अंतिम है यह सीन । यह सीन का भी अभी बाकी थोड़ा टुकड़ा बाकी है पर्दा बाकि है यह भी आखिर चल करके वह अपना पर्दा भी पूरा होगा फिर यह खेल समाप्त होगा फिर जैसे वह एक ही राज्य एक ही धर्म और एक ही संसार में देवी-देवताओं का धर्म का पूर्ण सुख का जो है वह अधिकार फिर लेकर चलते रहेंगे तो यह तो अभी सारा चक्र है ना बुद्धि में, सुदर्शन चक्र कहो या स्व को अभी नॉलेज है, सारी अपनी आदि से लेकर के अंत तक कि हमारा खेल कहाँ से शुरू हुआ और कहाँ अभी पूरा होता है यह पूरा हो करके फिर अभी ऐसा । तो यह तो कई बार ऐसा अपना हुआ है और यही हू ब हू इसी तरीके से आज की भी जो सीन है आज भी जैसे कोई मानेगा यह फूल हू ब हू वही कल्प पहले की सदृश्य इसी तरह से हर एक सेकंड अभी जो मिनट चल रहा है यह इसी तरीके से कल्प पहले भी चला था, जिसका सिर जहाँ है जिसकी जैसी है सब जो है वह हूबहू रिपीट हो रहा है । यही एक वंडरफुल बात है और बहुतों की बुद्धि में यह बात आए तो बहुत अच्छी तरह से आए और नहीं आए तो बहुत इसमें संशय बुद्धि भी हो जाते हैं । कईयों की बुद्धि में ये बात की ये ड्रामा बना बनाया है और किस तरह से बना बनाया है, ऐसे नहीं कि कोई फर्क से बना बनाया है । इस ड्रामा में जो सीन जो है जिस तरह से है जैसे देखो नाटक में भी जो शूट किया हुआ है जो सीन जैसे रिकॉर्ड हुई है फिर रिपीट होगी तो वह सीन उस टाइम की वैसे ही रिपीट होगी इसी तरह से यह भी सीन हुबहू जो कल्प पहले चली है

वह ही चलेगी । अभी हमारा आना, आप लोगों का यहाँ आना जो जो बैठे हो जिस तरह से बैठे हो यह हू ब हू वही और इसका 5000 वर्ष का अंदाजा है और उस अंदाजे के अनुसार यह सब ऐसे ही रिपीट होता चलता है । तो यह देखो कैसा बुद्धि में स्थित और हर वक्त यह बुद्धि में स्थित रहना है कि यह ड्रामा है । जो हुआ सीन यह ड्रामा है इसीलिए इनका भी हमारे ध्यान में इतना होना चाहिए जैसे परमात्मा की याद वैसे ही साथ-साथ जो हमारी एक्टिविटी एक्शंस है क्योंकि कर्म भी तो है ना, कर्म क्षेत्र भी तो है ना, तो फिर परमात्मा और यह कर्म क्षेत्र भी जो है, यह कर्मों का भी जो सारा चलता है यह भी हू ब हू रिपीट होता ही चलता है इसमें जरा फर्क नहीं पड़ सकता है । जो चला हुआ है वह चलता ही रहेगा और चलते रहेंगे इसी तरह से जानते और समझते उसी दम उसी घड़ी चलते रहे तो कभी किसी बात का दुःख शोक मान अपमान यह सभी बातों की जो उलझने आती है ना, अनेक प्रकार की आती हैं यह हुआ, क्यों हुआ, ऐसा हुआ, क्यों हुआ, क्यों क्या यह सब उड़ जाता है । क्यों और क्या और कैसे यह सब क्वेश्चन जो है ना, वह हट जाते हैं । ये तब हटते हैं जब बुद्धि में यह धारणा स्थिरता की बैठ जाए कि यह हुआ यही था ड्रामा, जो हुआ ना यही ड्रामा था । भले हम जानते नहीं हैं, अगर जानते होते तो ड्रामा कैसा, मजा ही कैसे आवे । पहले से ही पता हो तो फिर तो कोई मजा नहीं । ड्रामा है देखते चलते हैं, जो होता है बस उसी को ही समझना है कि यही ड्रामा है । ऐसी अगर स्थिति से कोई

चलते रहे और अपनी धारणाओं को बनाते रहे तो कभी कोई बात की क्या भी हो जाए, कैसी भी भारी बात हो जाए ना तो कभी कोई बात नहीं हिलेंगे नहीं, तो समझेंगे अभी अचानक कुछ हो जाता है कोई ऐसी बात कि हाँ क्या हो गया, नहीं, वह समझते हैं कि हाँ यही तो ड्रामा था न । बस इसी तरह से अगर पकड़ते चले ना तो फिर किसी बात का हिलना या मूंझना या कोई बात में संशय में आना या किसी बात की भी कोई उलझन चली आए ऐसी ऐसी बातें कुछ हो नहीं सकती हैं । यह तब होती है जब हम इसी चीज को भूल जाते हैं तो यह भी एक भारी पॉइंट है । बाप की याद और साथ-साथ फिर यही जो हमारा चक्र भी है, यह चक्र का भी बना बनाया कैसे है, जो बाप बैठकर के समझाया है कि मेरा भी पार्ट नूंध है, मैं भी बंधा हुआ हूँ । मैं चाहूं मैं नहीं आऊं, फर्क निकाल दूं कुछ, अच्छा इस बार नहीं आता हूँ, ऐसे ही कुछ कर लेता हूँ या कुछ और तरीका कर लेता हूँ नहीं, जैसे किया हुआ है, जैसे ड्रामा में है वैसे ही करना है इसमें कोई फर्क पड़ नहीं सकता है इसीलिए मैं भी बंधा हुआ हूँ । मैं भी उसमें कुछ कर नहीं सकता हूँ । जब सर्वशक्तिमान होते हुए भी इसका मतलब यह नहीं है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है क्यों नहीं कुछ कर लेता है । वह कहता है मैं भी ड्रामा में बंधा हूँ मुझे भी आना है । मैं चाहूँ मैं ना आऊं, मैं कुछ ऐसे ही बस चला लूं, नहीं कुछ नहीं, मुझे भी आना ही है, मेरा जैसा पार्ट है तो अगर इस चीज को कोई अच्छी तरह से समझ ले ना कि मेरा जैसा पार्ट है और जिस तरह से है वह

ऐसे ही चलता है, इसमें कोई फर्क की बात नहीं है लेकिन हां यह जानते भी फिर अपना पुरुषार्थ भी चलाना है । ऐसे नहीं है कि मेरे भाग्य में होगा ड्रामा में होगा तो होगा । कई फिर इसका उल्टा एडवांटेज ले लेते हैं न । ऐसे भी बहुत है जो इन्हीं बातों को उल्टा भी उठा लेते हैं । तो इसीलिए उल्टा उठाने के कारण फिर मूंझ पड़ते हैं । कहते हैं भाग्य में होगा जैसा भी ड्रामा में होगा, किस्मत में होगा जैसे भक्ति मार्ग में भी कहते हैं कि किस्मत में होगा फिर ऐसी-ऐसी बातों में ठहर जाते हैं । लेकिन ठहरने की नहीं है । यह जानते भी पुरुषार्थ ऐसे करते हैं जैसे कि करके ही पाना है, बिना किए काम नहीं चलेगा । तो करना ऐसा है कि बिना किए काम नहीं चलेगा लेकिन जानते हैं कि काम को भी कैसे चलना है लेकिन पुरुषार्थ तो जरूर है ना । इसीलिए पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध, ऐसे नहीं है कि बना बनाया में जो बना पड़ा होगा या प्रालब्ध में जो होगा, वैसा पुरुषार्थ चलेगा यह तो फिर उल्टी गाड़ी हो जाएगी । फिर चक्र भी उल्टा फिरेगा । उल्टा होगा तो क्या होगा, खत्म होते जाएंगे । नहीं, यह चक्र को भी तो सीधा चलाना है ना । तो चक्र चलाने का भी पूरा-पूरा नॉलेज चाहिए, नहीं तो कई उल्टा चला लेते हैं, पहले प्रालब्ध पीछे पुरुषार्थ तो उल्टी गाड़ी हो गई ना । आगे घोड़ा होना चाहिए, गाड़ी पीछे है ऐसे नहीं है कि पहले गाड़ी रखेंगे फिर तो उल्टी हो जाएगी तो एक्सीडेंट हो जाते हैं । ऐसे बहुत तो एक्सीडेंट हो जाते हैं क्योंकि उल्टे चलाते हैं ना, फिर किस्मत, भाग्य या तकदीर या ड्रामा इन्हीं के ऊपर फिर बैठ

जाते हैं । नहीं, तो यह सारी चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझना है । भले पहले पुरुषार्थ पीछे प्रालब्ध यह समझते अपने पुरुषार्थ को आगे करते चलना है । तो जितना जितना इन राजों को समझेंगे उतना उतना पुरुषार्थ में और ही तेजी आएगी । ऐसे नहीं पुरुषार्थ ठंडा पड़ेगा, भाग्य के ऊपर बैठ जाएंगे या ड्रामा के ऊपर बैठ जाएंगे नहीं, पुरुषार्थ करेंगे उसी में तो शूट है ना उसी टाइम तो उनका पता लगेगा ना कि हमारी नूंध क्या है जो हम पुरुषार्थ करेंगे सो ही तो नूंध है न, उसी से ही तो हमको नूंध का पता लगेगा की हमारी नूंध क्या है । जो हम पुरुषार्थ करते हैं और उसी को पाते हैं तो वो ही हमारी नूंध है, तो नूंध को देखने के लिए भी पुरुषार्थ चाहिए न । बिना पुरुषार्थ ऐसे ही बैठ जाए तो फिर कुछ काम नहीं होगा । तो यह है एक पॉइंट जिसको भी बहुत अच्छी तरह से अपनी धारणा में प्रैक्टिकल लगाना है । ऐसा भी नहीं है कि खाली बुद्धि में रखने की बात है, हर वक्त जैसे बाप की याद है, उसके साथ यह हमारे एक्शंस की भी हमारे कर्मों की भी जो यह सारा चलता है उसको भी इस तरीके से जानकर कि यह हमारा ड्रामा में किस तरीके से कैसे उसमें हमें क्या करना है, अपने को बुद्धि जो मिली है, समझ भी है ना साथ में, ऐसे थोड़ी ना कि जो किस्मत में होगा । किस्मत में होगा तो फिर बुद्धि ही नहीं होनी चाहिए फिर समझ काहे के लिए है । तो नहीं समझ से काम लेना है और समझ देने वाला भी तो देखो समझ देने के लिए आया है ना । हमारी बुद्धि भी अभी तमोप्रधान हो गई है इसीलिए वह

बुद्धि नहीं जान सकती है । तो बुद्धिवानों की बुद्धि अभी आकर के बुद्धि दे रहा है तो बुद्धि की अभी जरूरत है ना । समझने की ही तो बात है ना । तो खाली किस्मत अथवा ड्रामा इन्हीं सभी बातों के ऊपर तो नहीं बैठ जाने की बात है । तो यह सारी चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से समझते और अपने पुरुषार्थ को भी इसी तरीके से आगे करने का जतन करते रहना है तो फिर कभी ऐसी बातों में मूंझेंगे नहीं और कोई उलझन कोई दु:ख, कोई अशांति या कभी कभी किसी बातों में मुरझाईस यह सभी चीजें होंगी नहीं । यह है मुख्य-मुख्य बातें जो बुद्धि में हर वक्त अगर कोई रखे तो अपनी धारणाओं में बहुत स्थित रहे और स्थिर रहे और कभी कोई बात की उलझने फिर आएंगी नहीं । तो अभी सभी उलझनों से पार करने वाला बाप आया है ना तो इसलिए वह कहता है मैं नॉलेज भी उसी मतलब का देता हूँ जिससे तुम्हारे प्रैक्टिकल कर्मों में बल आवे । बाकी बातों से तो तुम्हारा मतलब ही नहीं है । जिन बातों से मतलब है जिन बातों से तुम्हारे कर्मों को बल मिले वहीं बैठ करके तुम्हें सारी नॉलेज समझाता हूँ । देखो परमात्मा का भी परिचय क्यों जानना जरूरी है क्योंकि उनको जानने से ही तो उनको याद कर सकेंगे और जब तुम याद करेंगे तभी तुमको शक्ति मिलेगी । तो यह जो जो जरूरी बातें हैं, मैं समझाता ही वही ज्ञान हूँ जिससे तुम्हारे कर्मों में बल आवे । बाकी बातों से तो कोई मतलब ही नहीं है । यह क्या होगा, कैसे होगा बाप कहते हैं जो जरूरत की बातें हैं वह मैं समझा रहा हूँ । बाकी भी जो जरूरत की

होंगी तुम्हारे कर्मों में बल देने की बात होगी, वह मैं तुम्हारे समझाता रहूँगा इसलिए तुम्हें उसका फिक्र नहीं करना है, तुम्हें तो जो बल मिलता जा रहा है, वह अपने कर्मों में लगाते जाओ, धारण करते जाओ बाकी बातों में मूंझने की आवश्यकता नहीं कि यह है तो भला यह कैसे होगा, यह है तो ऐसे कैसे होगा, इन्हीं सभी बातों में कई मूझते हैं ना, तो मूंझने की बातें नहीं है । हमारे कर्म में हमको बल लाना है और इस नॉलेज का भी मतलब यही है इसीलिए बाप कहते हैं कि इस नॉलेज को अच्छी तरह से अपने कर्मों में लगाते और अपने बल को अच्छी तरह से धारण करते चलो । तो यह है बाप के द्वारा जो अभी वर्सा मिलता है ज्ञान का, जिसके बल से फिर हम अपना सदा सुख की प्रालब्ध पाते चलेंगे । आधार तो सारा इसी के ऊपर है ना कर्म के ऊपर । अभी अपने कर्मों में ही सारा बल भरना है । यह ज्ञान का मतलब क्या है, इतना जो सारा दिन सुनते हो, रोज सुनते हो उसका मतलब क्या है । इसका मतलब यही है कि हम अपने कर्मों मे बल कैसे लाएं और उन्हीं कर्मों में अपने को स्थित रखकर चलना ही है । बनते तो हम कर्मों से ही है ना, बिगड़ते भी हम कर्मों से ही हैं और बनते भी हम कर्मों से ही हैं । तो हम अभी जो बिगड़े हैं सो बनाना है । बिगड़ी को कैसे बनाना है उसका तरकीब अभी अच्छी तरह से बाप ने समझाई है । समझाई तो जरूर उसने ही है ना, हमारे पास समझ थोड़े ही थी । समझाई उसने है और वह ही जानता है और कहते हैं बल भी तो मैं ही दूंगा ना । ऐसे थोड़े ही समझाऊंगा मैं,

बल दूसरे देंगे या मैं ऐसी चीजों के नीचे आता ही नहीं बल मेरे पास है तो शक्ति भी तो मेरे से ही मिलेगी ना । मेन पावर हाउस तो मैं ही हूँ ना, मेरे से ही पावर लेनी है । तो पावर भी लेनी उससे ही है और ज्ञान भी मिलना उससे ही है । तो ज्ञानदाता और अपने योग से उसमें बल भरने का दाता भी अथवा जिसको गति सद्‌गति दाता भी कहो, सद्‌गति का मतलब ही क्या है हमारे कर्म का जो यह पांचों विकारों के बंधन में फंसे हैं, उसी बंधन से निकाल करके गति सद्‌गति देते हैं । तो यह बल देना यह भी तो उसका ही काम हुआ ना । इसीलिए उस बाप से अपना पूरा पूरा बल लेने के लिए पूरा पुरुषार्थ रखते रहना है । अच्छा सभी राजी खुशी में हो? राजी खुशी तो पूछना ही है, इस दुनिया में पूछना पड़ता है । सतयुग में नहीं पूछेंगे राजी खुशी हो । वहाँ कुछ नाराजी नाखुशी है ही नहीं । जहाँ ऐसी कोई चीज ही नहीं है तो पूछने की कोई आवश्यकता ही नहीं । यहाँ तो रिवाज है ना, पूछना होता है कि कैसे हो, राजी खुशी में हो ठीक हो यह पूछना होता है क्योंकि यहाँ नाठीक है, नाखुश हैं तो पूछना होता है, वहाँ नाठीक की बात ही नहीं है तो पूछने की भी जरूरत नहीं है न रूहानी न जिस्मानी, दोनों तरह से नहीं है । वहाँ हर तरह से तन दुरुस्त मन दुरुस्त सब दुरुस्त है ना इसीलिए वह प्रालब्ध कंप्लीट है तो वहाँ तो यह क्वेश्चन पूछने ही नहीं पड़ते हैं । यहाँ पूछना पड़ता है क्योंकि है । तो अभी बाप से जो अपना वर्सा मिलता रहता है, हक मिलता रहता है उसको लेते और अपना पुरुषार्थ

आगे करते चलो । बाकी तो नॉलेज बहुत क्लियर है और बहुत सरल भी है जबकि बाप कहते हैं कि मैं समर्थ हूँ ना और तुम्हारे सभी पापों को सभी माना सभी जन्मों के पापों को बैठकर के दग्ध कराने का बल देता हूँ फिर तो कोई बात ही नहीं रही । इसीलिए यही सर्वशक्तिमान के द्वारा अभी बल मिलता है । तो कोई भी बातों का संकोच रखकर के नहीं लेकिन अभी अपने पुरुषार्थ में आगे बढ़ना है । अभी जो मिल रहा है ना उसको उठाते चलो । उसमें अगर कुछ नीचा ऊँचा हुआ तो फिर उनकी भावी बाकी जो हो गया वह हो गया । वो तो अंजानाई में था न । अब कहते हैं अगर जानते अगर कुछ करते हो तो उनकी सजा भारी है इसीलिए बाप कहते हैं उस भारी सजाओ से बचते और अपना जो कुछ पिछला खाता है, उस सब को अपना दग्ध करते, पुरुषार्थ करते चलो । सब रोशनी है ना बुद्धि में क्या करना है क्या नहीं करना है, यह अभी रोशनी है । अच्छा, तो सब राजी खुशी में है । इसका मतलब है राजी भी हो और खुश भी हो । बहुत अच्छा है, अगर बाप से ऐसा अधिकार लेने में पूरे मस्त हो और चलते रहते हो तो बाकी क्या चाहिए और यही टाइम है यही वक्त है यह भी ख्याल रखना है कि लेना अभी है फिर लेने का चांस नहीं है । समा यही है, यही जीवन है इसीलिए इस जीवन में जितनी कमाई कर सके, यह कमाई अविनाशी उतनी करते चले । फिर ऐसा समय भी नहीं मिलेगा और देने वाला भी नहीं होगा । देने वाला तो अभी है ना लेकिन अभी है, बैठा है और अभी उसका कोर्स चल रहा है पूरा नहीं

हुआ है इसीलिए बाप कहते हैं जहाँ तक मैं हूँ, कम से कम वहाँ तक मैं जो फरमान करता हूँ उसकी पालना तो करते चलो । कोई भारी बात थोड़ी ही है मुश्किल थोड़ी ही है इसीलिए कहते हैं मैं \जानता हूँ तुम बहुत जन्म तो आत्मा आत्माओं के प्रति देते आए, अब मैं एक जन्म तुम्हारा सो भी यह अंतिम, पिछड़ी का, अभी का यह तुम्हारा लेता हूँ, इसमें अभी मेरे साथ अथवा मेरे फरमान पर चलो तो क्या यह थोड़ा सा भी, छोटा सा जन्म मेरे हवाले नहीं कर सकते हो । छोटा सा भी क्यों कहते हैं मौत है सामने । अब तो छोटे का, बच्चे का, बूढ़े का, छोटा ही जन्म है सब का । अब ऐसे ख्याल नहीं करना है कि बड़े होंगे, यह होगा, यह होगा, यह करूंगा नहीं, अभी बाप कहते हैं ये अंतिम जन्म है इसीलिए बस उसी को अपना दे करके और अपना पुरुषार्थ करो । ऐसे पुरुषार्थ को करते और अपना कल्याण करते आगे बढ़ो जबकि अभी कल्याणकारी बाप मिला है, जानते हो ना अच्छी तरह से, मूंझते तो नहीं हो ना । साधारण तन में आए हुए बाप को न जान करके मूंझते तो नहीं हो ना । जानते हो ना अच्छी तरह से, समझ में आता है ना, वो ही है न, फर्क तो नहीं है न । अच्छा इसीलिए वो ही है , वो ही । कई बार देखा है, याद नहीं आता है देखा है । कई बार देखे हैं, हम ऐसे ही बाप से मिले हैं और ऐसे ही बाप से हक़ लिया है और कोई इसका तरीका है नहीं, सोचो ही मत । क्यों सोचते हो, ये तो तुम लोगों को बाप कहते हैं कि दूसरों ने बैठकर के ऐसी- ऐसी बातें सुनाई है इसीलिए मूंझते हो, लेकिन ये भी

सारे शास्त्रों में है, जिन्होंने सुनाया है यह भी सुनाया है कि हाँ आता है तो बड़ा साधारण तन में आता है । आता है तो बड़ा गुप्त भेष में, लेकिन गुप्त क्या होता है इसका मतलब ही क्या है । अगर कोई चीज इन आँखों से देखने वाली होती तो फिर गुप्त भी क्यों कहते हैं । अगर कोई प्रख्यात कोई ऐसी चीज होती जो जल्दी से जानने वाली होती तो उसको गुप्त ही क्यों कहते, जरूर कोई ऐसी गुंजाइश है जिसको फिर गुप्त शब्द भी दिया है ना । गुप्त का भी तो महत्त्व है न, गुप्त दान आदि ये सब क्यों रखते हैं क्योंकि वो आए हैं गुप्त, गुप्त और क्या हो सकता है । पता है न देखो है न गुप्त ।

27. मुक्ति और जीवनमुक्तिपाने की विधि - ट्रांस

कहा है ना पापों को दग्ध करने वाला मैं हूँ और मेरी याद । मैं कैसा हूँ वह भी बतलाते हैं इसीलिए कहा है ना मनमनाभव । देखो गीता में भी है इसी मंत्र महामंत्र कि मनमनाभव यह गीता के शब्द हैं यह निरंतर चाहिए । मन मनमनाभव का मतलब ही है कि मन को मेरे में लगाओ, बुद्धि को मेरे में लगाओ तो पाप दग्ध होगा और फिर पापों को दग्ध करके हम ऐसे अधिकार को प्राप्त करेंगे । तो यह सारा बुद्धि में रखने की बात है और इसी को ही कहा जाता है मुक्ति जीवनमुक्ति । मुक्ति को भी समझते हैं जीवन मुक्ति को भी अभी समझते हैं । आना सबको है । सबकी स्टेज है जीवनमुक्ति की इसीलिए देखो दिखलाई हुई है ना । दिखलाने में सहजें है सबको । पहले पहले जब आते हैं तभी सब जीवनमुक्त हैं । जीवनमुक्त का अर्थ है की पहले-पहले जब आते हैं तब दुःख का कोई बंधन नहीं है फिर नीचे आ करके बनाते हैं न जब पार्ट में आते हैं । तो जब आते हैं सब, तो सब जीवनमुक्ति हैं परंतु वह जीवनमुक्त भी सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी स्टेजिस में, हम जो जीवन मुक्ति प्राप्त करते हैं वह सतोगुण । आना तो है ही, आना जरूर है । कोई कहे नहीं आए, हो ही नहीं सकता । आना जरूर है । तो जब आना है तो क्यों नहीं स्टेज ऊंची में आना चाहिए यह अक्ल का काम है ना । भाई कोई

काम ऐसा बनना है यह होना ही है तो अकलमंद का क्या काम है? क्यों नहीं सतोगुण गोल्डन जीवन मुक्ति । एक है गोल्डन, सिल्वर सिर्फ है कॉपर रजोगुणी फिर तमोगुणी तो जो पीछे आएंगे । आएंगे भले वह जीवनमुक्त में आएंगे यानी पहले दुःख का जीवन में बंधन नहीं होगा परंतु वह तमोगुण में आएंगे ना या रजोगुण में आएँगे न । ये तो है सतोगुण, सदा का सुख । तो बाप कहते हैं मुक्त तो सबको होना है, मुक्त माना पार्ट से मुक्त तो अभी तो सबको पार्ट से मुक्त होना ही है, वह तो मिलना ही है सबको । कोई चाहे या ना चाहे, मिलना ही है और जीवनमुक्त भी होना ही है परंतु सिर्फ पुरुषार्थ से क्या फायदा होता है कि मुक्ति में हम सजाओ से छूट के जाते हैं । फायदा देखो क्या है, मुक्ति और जीवन मुक्ति का तो अनादि है ही । मुक्त भी सभी को होना है और जीवनमुक्त में भी सबको आना है, समझा । जीवनमुक्त का अर्थ समझते हो कि भाई जीवन मैं दु:ख का बंधन न हो तो   जो पीछे भी आते हैं ना पहले तो नहीं है ना, पीछे फिर जन्म लेकर यहां दुखी हो जाते हैं । तो पहले तो कहेंगे सब जीवनमुक्त और मुक्त हैं परन्तु ये तो होना ही है उसमें पुरुषार्थ का क्या फायदा है तो पुरुषार्थ से हमारी स्टेज बनती है, मुक्ति में भी स्टेज है, क्या स्टेज है कि हम अगर सजाओं से छूट करके अभी जाएंगे तो हमारी मुक्ति की भी स्टेज ऊँची है और मुक्ति की ऊंची है तो फिर हमारी जीवन मुक्ति की भी ऊंची है साथ ही है क्योंकि हम सजाओं से मुक्त हैं तो फिर आएंगे फर्स्ट जीवनमुक्ति में यानी

गोल्डन एजेड जीवनमुक्ति में । तो यह हमारे पुरुषार्थ से ताल्लुक की बातें हैं बाकी जाना और आना यह तो चक्कर बंधा हुआ है । बाकि ये किसके साथ बंधा हुआ है गोल्डन सिल्वर और ये सभी स्टेजिस तो ये हमारे पुरुषार्थ से । इसी के लिए बाप कहते हैं अभी स्टेज बनाने के लिए तुमको पुरुषार्थ रखना है बाकि तो कोई कहे की हाँ मुक्त होना है तो उसके लिए कोई पुरुषार्थ नहीं वो तो जाना ही है जबरदस्ती भी जाना ही है नाक से दम निकल के भी ले ही जाएंगे । तो जाना ही है न सबको देखो ये अभी दम निकालने की तैयारियाँ कर रहें हैं न यह सब डिस्ट्रक्शन की तैयारियां है न । तो यह सभी अभी छोटा बड़ा बूढा सबको इसीलिए कहते हैं सभी आत्माएं, मौत का भी ऐसा तरीका बनता जा रहा है जिससे सबको जाना है, सब आत्माओं को । अभी ऐसा नहीं है कि नहीं हम छोटे हैं, बड़े होंगे फिर बुड्ढे होंगे पीछे की बात है यह नहीं, बाप कहते हैं अभी सबका मौत है सभी वानप्रस्थी हैं । छोटा बछा भी है न, अभी वो भी वानप्रस्थी है । वानप्रस्थ का अर्थ है कि वाणी से परे स्थान जो है निराकारी दुनिया का अभी उसमें जाने का टाइम है तो सब का टाइम है ना । छोटे बच्चे का भी अभी टाइम है । तो बाप बैठ के समझाते हैं कि बच्चे अभी सब वानप्रस्थी हैं इसीलिए ये नॉलेज का अधिकार सबको है ये छोटे बड़े बुड्ढे सबको । इसीलिए कहते हैं परिवार के परिवार इस नॉलेज को उठा सकते हैं क्योंकि हर एक आत्मा का अभी वानप्रस्थ है । ऐसे नहीं है यह तो छोटा बच्चा है, इसकी तो अभी आयु पड़ी है, अभी तो खा पी ले अभी

तो दुनिया यह कर ले तो बाप कहते हैं नहीं बच्चे अभी सबका, छोटे बच्चे का भी अभी एंड है ना । तो यह चीजें समझने की है इसीलिए कहते हैं अभी सबको अधिकार है बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार लेना । तो जाना है ना अभी सबको इसीलिए कहते हैं देखो ये अभी मैं तैयारी कर रहां हूँ की आत्माएं जब शरीर से निकले तब तो फिर जाए ना, तो ऐसे ही थोड़ी सब मर जाएंगे कोई ऐसा काम चाहिए ना डिस्ट्रक्शन जिससे यह शरीर सभी का फट फूट जाए और फिर आत्माएं फिर चले । ऐसे नहीं है इतने सब मरेंगे तो फिर इतने ही सब जन्म लेंगे । नहीं, तो यह सब मर करके अभी इनको वापस जाना है इसीलिए यह डिस्ट्रक्शन का भी रखा हुआ है । भले लड़ाइयां तो समय प्रति समय होती रही हैं, बहुत मरते भी हैं यह सब स्पार्क होता है लेकिन यह है वर्ल्ड डिस्ट्रक्शन । ये तो हाँ कभी तूफ़ान हुआ जैसे देखो अभी रामेश्वर पर भी तूफान हुआ, कई सारे मरे कई, लाखों मरते तो है परंतु वह जो है ना फिर भी पुनर्जन्म में चलते भी रहते हैं उनका सब लेकिन यह तो अभी वर्ल्ड डिस्ट्रक्शन है ना भारी इसीलिए कहते हैं अभी तो यह लास्ट है और इसी से फिर दुनिया बदलनी है । यह तो देखो दुनिया में इतनी लड़ाइयाँ होती हैं, मरते भी हैं सभी संख्या भी फिर भी बढ़ती जा रही है । वह तो हम अपना देख भी रहे हैं ना इधर की संख्या बढ़ती जा रही है, यह तूफान आते हैं, यह आते हैं वह आते हैं भले मरते भी इतने हैं परंतु परंतु संख्या भी तो देखो कितनी स्पीड से बढती ही जाती है । वो गवर्नमेंट निकालती है न

अपना कि इसकी स्पीड कितनी हैं जन्मते कितने हैं मरते कितने हैं देखो एक हिसाब निकालते हैं एक मिनट में इतने जन्मते हैं तो इतना कम मरते हैं यानी उनका हिसाब है की संख्या बढ़ती जा रही है तो वो तो बढ़ते जा रहे हैं परन्तु यह है अभी संख्या कम होने का डिस्ट्रक्शन । तो यह डिस्ट्रक्शन भारी है जिसको हिंदू शास्त्रों में प्रलय लिखा है ना, परन्तु प्रलय का कई अर्थ समझते हैं कि एकदम खत्म भाई मनुष्य ही नहीं होंगे । तो ऐसी बात नहीं है, मनुष्य तो होंगे ना मनुष्य सृष्टि है तो परंतु कम । ये डिस्ट्रक्शन होकर के फिर थोड़े मनुष्य रहेंगे, जिस थोड़े मनुष्य का यह प्योरिटी का अभी कलम लगा है और उसी कलम से फिर जनरेशंस पीछे जो पावरफुल होंगी वह प्योरिटी वाली और उसी से फिर चलेगा । तो यह सारी चीजों को भी समझना है कि इसलिए बाप कहते हैं बच्चे अभी यह समय जो है ना अभी यह मौत का है इसीलिए कहते हैं अभी छोटा बड़ा बुड्ढा अभी सबको वापस जाना है । तो अभी सबके लिए यह अधिकार है ना कि बाप को याद करना और बाप से अपना वर्सा लेना तो मुक्ति और जीवनमुक्ति । तो आना है तो क्यों नहीं हम अपना गोल्डन एजेंड जीवनमुक्ति में आएँ । वह फिर है रजोगुणी जीवनमुक्ति जो पीछे-पीछे आते हैं और फिर तमोगुणी । हम आए तो फिर क्यों नहीं सदा सुख का प्राप्त करें तो यह है बाप का भी राय मत । देखो मत मिलती है ना यह की बच्चे अभी तुमको मत देता हूँ, राय देता हूँ जब आना है तुमको तो फिर पुरुषार्थ करके क्यों नहीं गोल्डन एजेड बनते

हो इसीलिए कहते हैं वह कैसे बनो उसकी मत तुम्हे देता हूँ इसीलिए कहा है श्रीमत भगवत गीता देखो शास्त्र के ऊपर भी नाम है ना कि श्रीमद भगवत गीता तो भगवान ने जो बैठकर की नॉलेज जिसको भगवत गीता कहा जाता है, गीत नहीं गाए हैं उसने तो बैठकर के नॉलेज सुनाया ये श्लोक भी जो हैं शास्त्र में वह संस्कृत श्लोक डाले हैं ना कि भगवान ने बैठकर के संस्कृत भाषा में या संस्कृत श्लोकों में थोड़ी सुनाया है । नहीं, कोई श्लोक तो सुनाने का नहीं है ना यह तो नॉलेज है न तो समझाने की बातें हैं न । तो श्लोकों में थोड़ी नॉलेज पढ़ाई जाती है । नहीं, कोई भी नॉलेज है डॉक्टरी है, इंजीनियरी है तो बैठकर के समझाएँगे, करेंगे इसमें तो हर एक समझाने की बात होती है ना । इसमें तो श्लोकों में बस कह दिया काम हो गया नहीं, यह तो पीछे लिखने वालों ने बैठकर के गीता को श्लोकों में लिखा फिर उस श्लोकों को भी कीन्हों ने बैठ करके उसकी भी टीकाएं की जैसे गांधी गीता वह श्लोक तो ले लिया ना एक ही परंतु उसकी बैठकर के टीका की अर्थात उनका अर्थ लिखा जिसमें फिर वो गांधी गीता बन गई, तिलक गीता, टैगोर गीता देखो कितनी गीताएँ हैं । बहुत गीताएँ हैं, है गीता एक लेकिन गांधी तिलक फलाना फलाना इन्होंने अपना-अपना सबने उसका बैठकर के अर्थ निकला है तो ऐसे तो बहुत है गीत जैसे एक बताया था ना एक सन्यासी हमारे पास आया था तो उसने कहा मैंने 200 गीताएँ पढी हैं तो 200 तो पढ़ी हैं और भी होंगी । उसने पढी थी 200 गीताएँ, तो गीता एक लेकिन उनकी देखो 200 गीताएँ,

तो कहा परंतु 200 गीताएँ पढ़ते भी अभी तक मैं गीता को समझ नहीं पाया हूँ और ना मुझे कोई शांति अभी मिली हुई है । अच्छा तुमने पढ़ा उससे क्या हुआ नहीं अभी पीस ऑफ माइंड अभी कोई शांति मिली नहीं है तो उसी की खोज में अभी हूँ । तो है सन्यासी, स्पीच करता है, बड़ा विद्‌वान्, पढ़ा-लिखा लेकिन अपने को शांति नहीं है । तो बिचारे उनको भी साधन कर रहे हैं जिसको जैसा मिला है वैसा चलाते रहते हैं, किसी ने कुछ कह दिया, किसी ने कुछ कह दिया तो उसमें चलते हैं परंतु अभी इन्हीं सभी बातों से तो शांति मिलने की नहीं है ना । शांति तो है शांति दाता के पास । मनुष्य के पास या शास्त्रों से कोई शांति का ताल्लुक नहीं है न । शांति दाता ही शांति देगा तो वह आकर के शांति कैसे देता है तो उनकी शांति देने का उपाय दूसरा है ना । वह थोड़ी कहेंगे कि तुम गीता पढ़ो, तुम यह करो, तुम वेद पढो तुम शास्त्र पढ़ो तभी तुम्हें शांति मिलेगी । वो तो अर्जुन पढ़ा हुआ था ना, विद्‌वान था बहुत शास्त्र आदि । तभी तो कहा ना कि देखो तुम पढ़ा तो बहुत कुछ है लेकिन तुमको शांति कहाँ है तुम्हारे विकार कहाँ गए हुए हैं, देखो मोह तुमको सता रहा है, यह तुमको हो रहा है, तब बैठ करके उनको नॉलेज सुनाया तो कहा इसी से तुम नष्टोमोहा बनेंगे । तुम्हारे विकार छूटेंगे इन ज्ञान से जो मैं सुना रहा हूँ । तो बाप ने समझाया है ना कि मेरी नॉलेज मैं ही शांति का सुख का दाता हूँ और शांति भी कैसे होगी जब इस दुनिया से यह अनेक धर्म, अनेक राज्य यह सब जाएंगे, तब शांति होगी यह आते-

आते बहुत हो गए हैं तभी तो देखो यह फ्रिक्शंस है ना । यह सब अभी लड़ते-झगड़ते सभी धर्म वाले अपना-अपना, सब राज्य वाले अपना-अपना इसीलिए तो यह लड़ाई है ना इसीलिए अभी यह हद की दुनिया, हद के राज्य बन गए हैं । सब अपना-अपना, सब टुकड़े-टुकड़े लगा बैठे हैं । अभी देखो तत्वों में भी टुकड़े कर दिए हैं-पृथ्वी के भी टुकड़े, पानी के भी टुकड़े, आकाश के भी टुकड़े, सब हद में आ गए हैं ना इसीलिए बाप कहते हैं यह अभी हद की दुनिया का कहाँ तक चलेगी इसलिए अभी एक पृथ्वी, एक आकाश तो एक राज्य, एक धर्म तब फिर संसार सुखी रहे इसीलिए कहते हैं मैं आकर के यह जो न थे यानी जब सतयुग था तो ये अनेक धर्म राज्य यह नहीं थे । यह सब पीछे हुए हैं कॉर्पोर एज से । अभी बाप कहते हैं मैं फिर सतयुग बनाता हूँ अथवा स्वर्ग बनाता हूँ तो फिर स्वर्ग का एक धर्म, एक ही राज्य रहेगा ना तो इतनी संख्या कब कहाँ जाएंगी? यह सब इतनी आत्माएं इतनी सोल्स कहाँ जाएंगी? इसीलिए कहते हैं अभी शरीर तो यहीं नाश होंगे डिस्ट्रक्शन में, और फिर आतमाएँ निराकारी दुनिया में जाएंगे फिर जिसका पार्ट है बाकी सतयुग में वह फिर प्योर आत्माएं अपना यहाँ सौभाग्य पाएंगी तो यह सारी आत्माओं की भी फिलासफी और संख्या का घटना बढना ये सब इतनी आत्माएं कहाँ से आती है, यह बढ़ती जो है संख्या, इतनी सोल्स कहाँ से आती है? कोई तो उनका स्टॉक होगा ना, कहाँ तो स्टॉक में होंगी जहाँ से आती है तो यह कहाँ स्टॉक है? स्टॉक निराकारी घर को कहा जाता है, बैठ करके

बाप समझाते हैं कि उनको कहा जाता है इनकॉरपोरियल वर्ल्ड, जहाँ से यह निराकारी आत्माएं आती हैं, फिर ये कॉरपोरियल वर्ल्ड । तो वह भी इन कॉरपोरियल वर्ल्ड है , ऐसे नहीं इनकॉरपोरियल वन है या कोई ऐसी चीज है जिसमें केवल एक है नहीं इन कॉरपोरियल वर्ल्ड है । वर्ल्ड या दुनिया उसी चीज को कहा जाता है जिसमें बहुत चीजें हो । तो वो है इनकॉरपोरियल्स की वर्ल्ड यानी निराकारियों की दुनिया । तो निराकारी बहुत है ना, निराकार एक तो नहीं है ना । तो इसमें यह भी क्वेश्चन नहीं आ सकता है कि आत्माएं मिलकर एक हो जाती हैं फिर तो एक निराकारी फिर तो उसको वर्ल्ड नहीं कहेंगे । अंग्रेजी में जो है इन कॉरपोरियल वर्ल्ड तो वर्ल्ड माना कॉरपोरियल्स बहुत हैं, निराकारी बहुत है परंतु निराकारी कौन? निराकारी आत्माएं और परमात्मा भी निराकारी वह भी तो सोल है ना । तो यह सभी चीजें समझने की है जैसे यह कॉरपोरियल वर्ल्ड, भाई कॉरपोरियल मनुष्य तो मनुष्य बहुत है ना, एक मनुष्य थोड़ी है तो एक हो फिर तो इसको वर्ल्ड बनहिं कहें न । नहीं बहुत हैं । तो यह सारी चीजों को समझना है इसीलिए बाप कहते हैं जितने मनुष्य हैं उतनी आत्माएँ है अभी ये वृद्धि होती है तो इतनी आत्माएँ आती कहाँ से हैं तो ये भी सब समझना है न । जो मरते हैं वह तो जन्म लेते हैं लेकिन वृद्धि भी होती है, नहीं तो वो तो एक ही अंदाज हो जाए, जो मरे सो जन्म लें फिर तो एक ही सेंसर होना चाहिए, फिर तो वृद्धि नहीं होनी चाहिए तो फिर तो वृद्धि भी होती है ना । तो वृद्धि होती है तो फिर कहाँ से

जरूर है न की इनका भी कोई निराकारी आत्माओंस्टॉक यानि स्थान है । ये आत्मा तो ऐसी चीज नहीं जो वो कोई मरती है जन्म लेती है वो तो गीता में भी है उनको कटा नहीं जा सकता है जलाया नहीं जा सकता है इम्मोर्टल है, अविनाशी है अविनाशी अनादि है । तो उस अनादि अविनाशी का भी कोई ठिकाना होगा ना जहाँ से आत्माएं आती हैं इसीलिए बैठकर के बाप समझाते हैं कि निराकारी दुनिया जहाँ का मैं भी निवासी हूँ, आत्मा भी निवासी है, नंबरवार सब आते हैं और आकर के अभी तो सब संख्या उतरती आई है बाकी भी जो होंगी थोड़े समय में यह संख्या बढ़कर के इसका फिर एंड । तो एंड आना है तो इतनी संख्या का भी एंड होगा । ऐसे नहीं थोड़े-थोड़े कम होते जाएंगे, नहीं ये एकदम से ख़त्म होंगे तो एकदम से तो फिर नई दुनिया । नई दुनिया में तो फिर थोड़ी संख्या होगी ना तो उसके लिए डिस्ट्रक्शन होती है । तो यह सभी बातों को भी समझाते हैं इसीलिए कहते हैं ये मुक्ति जीवनमुक्ति यह सभी बातों को भी समझना है यह क्या चीज है । यह ऐसी चीज नहीं है यह तो है की जब हमारा अनेक जन्मों का पार्ट पूरा होता है तो मुक्त होना ही है , फिर आना है । आना भी जरूर है नहीं तो सर्किल कैसे चलेगा । हम नहीं आएँ फिर तो यह अनादी सृष्टि का चक्कर ठहर नहीं ये भी चलना है । तो ये कोई ऐसी चीज नहीं है की नहीं आना चाहें तो न आएँ । नहीं, आना है लेकिन स्टेज को बनाने के लिए हमको बाप बैठ करके समझाते हैं इसीलिए कहते हैं अभी मेरी यह मत लो । यह है

श्रीमत, श्रेष्ठ । तो तमको श्रेष्ठ बनाने की मत देता हूँ कि तुम श्रेष्ठ कैसे बनों । आओ तो श्रेष्ठ बन के आओ वो कैसे वो बैठ के सिखलाय रहे है, समझा रहे हैं, उसके लिए यह पुरुषार्थ है । तो यह समझ आ जाती है ना फिर जो बहुतों को ये पुराने पुराने विचार बैठे हुए हैं न कि हमको भाई ज्योति ज्योत समाना है या हम वहाँ जाएं जहाँ से फिर लौटे नहीं क्योंकि यह बहुत दु:खी हुए हैं ना इधर बहुत इसीलिए उनको मन में ऐसा बैठ गया है कि इधर दु:ख ही है । इसीलिए वो कहते हैं उधर बैठे र्हे न, न दुःख होगा न सुख होगा । अच्छे हैं इधर परन्तु नहीं । बाप कहते हैं की नहीं बच्चे वो दुःख और सुख से अलग है जैसे इसको न दुःख है न सुख है । इसको क्या है जड़ को पता है? ये तो जड़ है ना । तो यह स्टेज थोड़े ही है वैसे आत्मा में भी दुःख सुख नहीं है साइलेंस, डेड साइलेंस एकदम । तो उनको भी कोई ना दु:ख न सुख, उसमें तो कोई बात ही नहीं, वह भी आनंद थोड़ी ही है । भाई दुःख सुख से न्यारी आनंदित अवस्था है वो आनंदित भी नहीं है । आनंद या न आनंद वो तो जड़ एकदम साइलेंस है । तो पार्ट जब तलक नहीं है तब तलक वेट करती है आत्मा वहाँ, फिर जब टाइम आता है तो फिर टाइम पर उतरती है । उतरना जरूर है पीछे टाइम में उतरना, उससे अच्छा पहले टाइम में क्यों ना उतरें जो हम सुख का चांस लें यह है अकलमंदी । इसीलिए बाप कहते हैं अक्ल सीखो अगर तुमको सुख पाना है और सुख और शांति की जो मैं दुनिया बनाता हूँ उसमें आ करके चलना है इसको

कहा है जीवन मुक्त । जीवनमुक्त तो वैसे वह भी है जो पीछे भी आते हैं परंतु वो रजोगुणी, तमोगुणी । तो यह है सतोगुणी इसीलिए कहा है सतोगुणी जीवनमुक्ति को प्राप्त रखने का है । तो बाप यह बैठकर के स्टेजिस समझा करके अभी कहते हैं इस स्टेज को पाओ । उसके लिए कहा है मनमना भव मद्‌याजी भव, निरंतर मुझे याद करो तो फिर तुम उसी स्टेज को प्राप्त करेंगे जिसमें सदा सुख है । पीछे तो दुनिया पुरानी होगी ना, पुराने में आएँगे फिर रोग शुरू हो जाएंगे, फिर अकाले मृत्यु शुरू हो जाएगी, फिर यह सभी बातें हो जाएंगी फिर उसमें आकर के अकाले मरेंगे, रोगी बनेंगे और यह सब होंगे तो आओ और रोगी बनो और ये बनो उसमें क्या है । आओ तो उसमें आओ ना जिसमें अकाले मृत्यु ना हो, जब तुमको काल ना खा सके, उस लाइफ का भी तो सुख लेना चाहिए ना । कभी रोग ना हो, कभी अकाले ना मरे, कभी लड़ाई झगड़े ना हो, तो वह जो सदा सुख की जीवन है उसको प्राप्त करो । इसीलिए कहा है स्टेटस वह हो और उसी की प्राप्ति का पुरुषार्थ है । उसका पुरुषार्थ बैठकर के बाप समझाते हैं कराते हैं तो इजी बात है ना । इसमें कुछ मूंझना नहीं है, यह तो सारी अपनी कैसी बनावट है, आत्माओं के लिए क्या है, आत्माओं का पार्ट कैसा भरा हुआ है उसको भी समझना है । उसमें हमको उसके मुताबिक क्या पुरुषार्थ करना है वो समझ करके हमको अपना पुरुषार्थ रखने का है । हमारे पुरुषार्थ का भी चांस है हमको अभी, तो चांस लेना चाहिए न । देखो वो लोटरी लगाते हैं न फिर चांस लेते हैं की हाँ

भाई अगर मिल जाएगी तो भाई लाख मिल जाएंगे, ये मिल जाएंगे तो ये भी बड़ी लॉटरी है ना, तो चांस लेना चाहिए न । तो लगाना चाहिए दाव । तो यह बड़ी लॉटरी लगती है फिर देखो हम कितना चांस ऊंचा लेते हैं इसीलिए बाप कहते हैं लगाओ और पुरुषार्थ करो । इसमें तो पुरुषार्थ की बात है कोई लक की बात नहीं है । लक के ऊपर नहीं बैठ जाना है कि जो किस्मत में होगा, जो तकदीर में होगा वह मिलेगा फिर तो तकदीर में होगा तो फिर तो सबके लिए बैठ जाओ ना । फिर तो काम भी नहीं धंधा भी नहीं करो, कुछ नहीं करो, कहो किस्मत में होगा तो रोटी मिलेगी । फिर रोटी के लिए क्यों पुरुषार्थ करते हो, सारा दिन माथा खोटी करते हो, क्यों करते हो । फिर तो सब लक तो सब लक ना । फिर क्या है, पैसे कमाने के लिए लक की बात नहीं है और इसमें लक क्यों । ये भी तो कमाई है ना, तो इस कमाई के लिए भी पुरुषार्थ रखने का है । ताकि ऐसे नहीं उसके लिए माथा खोटी करने का है, करते हो ना ? भले जो किया है कर्म उसका मिलेगा कर्मों के हिसाब से ही परंतु फिर करते तो हो ना पुरुषार्थ । ऐसे नहीं बैठ जाना होता है कि अगर किस्मत में होगा तो रोटी आपे ही आएगी । कर के देखो आती है? नहीं, ऐसा तो नहीं होगा ना, वह करना पड़ता है तो इसके लिए भी हमको पुरुषार्थ करना है न । इसीलिए बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो और पुरुषार्थ से तुम्हारी विजय अवश्य है । कहा है ना पुरुषार्थी की विजय । तो इसीलिए पुरुषार्थ करना है तब विजय पाएंगे ना । नहीं करेंगे तो नहीं पाएंगे ।

तो यह सब बातें अपनी बुद्धि में रखनी है और उसके लिए पुरुषार्थ करना है । मेहनत भी कोई ऐसी तो मेहनत नहीं है ना जिसके करते तुम खाने पीने का कोई काम ना कर सको । खाना पीना तो जरूरी है ना इसीलिए कहते हैं जो तुम्हारी जरूरी बातें हैं वह खोटी नहीं करता इस काम के लिए लेकिन यह काम, तुम्हारा जो वेस्टेज है ना, वेस्टीज से मैं काम निकालता हूँ । तुम्हारी बुद्धि वेस्टेज में जाती है मैं कहता हूँ मेरे में मन लगाओ, वेस्ट क्यों गुमाते हो । उसकी प्रैक्टिस करो । कहता है कि मेरे में मन लगाओ और कर्म भी, जो कुछ टाइम है तुम्हारा फिर सेवा में लगाओ तो इससे क्या होगा तुमको फायदा मिलेगा । यह तो इजी बात है ना । इसमें ऐसी भी बात नहीं है जो कहते हो की नहीं, शरीर निर्वाह ना करो, सब छोड़ कर बैठो । नहीं, जो ऐसे लायक हैं, जो कहते हैं इसमें ही अपना सब करना है उसका फिर देखो शरीर निर्वाह भी होता है इस सेवा से, नेचुरल है । यह है पांडव गवर्मेंट सर्विस परंतु वह भी इतनी बुद्धि चाहिए ना, इतना काम करने वाला चाहिए । ऐसे थोड़े ही सबकी एक जैसी बुद्धि तो नहीं होती है ना इसीलिए बाप कहते हैं कि नहीं बच्चे वह तो है ही । बाकी है अपना यह कमाई करना और इससे हम अपनी प्रैक्टिकल लाइफ को ताकत में ले आते हैं और उससे ऊँच कमाई प्राप्त करते हैं । यह भी आजीविका के लिए है ना । इससे हमारी जेनरेशंस की आजीविका बनती है । देखो हम यह जो अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं, इससे क्या बनता है? हम सदा सुख का खाते रहेंगे ना । हमारी आजीविका ही तो

हम बना रहे हैं ना जेनरेशंस की, कि सदा सुख की रहे जिसमें कभी रोग ना हो । आप लोग भी क्या करते हो बच्चों का चलो पालन पोषण यह सभी करते हो, वही है ना । अच्छा उनको दु:ख होगा, तकलीफ होगी उसको संभाललेंगे, उनके खाने-पीने का रखते हो, अपने खाने-पीने का रखते हो, उनका कपड़ा लत्ता उनका सब, यही कर रहे हो ना । बाप कहते हैं मैं भी तुम्हारे कपड़े लत्ते, खाने-पीने सदा सुख का देखो तुमको अच्छा मार्ग बतला रहा हूँ, जिसमें कपड़े लत्ते खाने-पीने की तुम को फिक्रात ही ना हो । कपड़े लत्ते देवताओं के देखो, खाना-पीना उनका देखो । देवताओं के भोजन देखो मंदिरों में भी भोग लगाते हैं, आजकल भले इतना ना भी हो परन्तु वो देखो जगन्नाथ फलाने इधर श्रीनाथ जाओ, उधर कितने भोजन 36 प्रकार के कुछ भोजन ऐसे-ऐसे रखते हैं, बाबा अनुभव सुनाते हैं ना वह तो चक्कर लगाए हुए हैं सभी तीर्थ स्थानों का । तो हाँ वो 36 प्रकार के भोजन बनाते हैं यह करते हैं वो करते हैं देखो जड़ चित्रों के आगे । अभी चैतन्य होंगे तो क्या खाते होंगे । यह तो समझने की बातें हैं न, क्या पहनते होंगी । उनके घड़ी-घड़ी कपड़े बदलते हैं उन जड़ चित्रों के । अभी हम मुंबई में भी गए थे वह लक्ष्मी नारायण का मंदिर है, बड़ा उनका अच्छी तरह से कपड़े पहनाते हैं, श्रृंगार कराते हैं, उसके लिए रखते हैं मिठाइयां और यह सब जाते हैं फिर जो-जो भी आते हैं उनको प्रसाद देते हैं । फिर दुकानदार बेचारे उसका कमाई करते है वो लेते हैं चढ़ावे का सब पैसों से दुकानदारों से फिर वो ही जाकर के

भोग लगाते हैं तो उनका भी पुजारियों का काम हो जाता है । तो यह सभी तो अभी बिजनेस हो गया है ना यह तो सभी धंधे के काम हो गए हैं परंतु असुल में जब चैतन्य में होंगे तो उनके आगे क्या होगा । तो सोचे तो खाने पीने की तो कोई कमी नहीं होगी तो यह सब भी सब आजीविका के लिए बना रहे हैं ना परंतु प्रालब्ध की ताकत से । इसीलिए हम प्रालब्ध अपनी जोर की बनाते हैं । देखो कुछ हो जाता है नीचा ऊंचा, रोटी का भी मुश्किलात, देखो दुनिया की स्थिति ही ऐसी है । भले पैसा भी है तो भी देखो अन्न न मिले तो क्या हो । अगर पैसा हो बहुत भले ही हीरे आदि बहुत हो लेकिन आज अन्न नहीं तो पैसे वाला क्या करेगा ? कई समय ऐसी भी आते हैं वो पानी की प्यास मनुष्य को ऐसा करती हैं वह समझते हैं कि हीरे हैं अभी वह तो पड़े हैं वह काम की चीज नहीं है पहले पानी खाना जो जीवन के लिए जरूरी है वह चाहिए । पहले वह चाहिए जिससे जीवन चले, उसमें यह क्या है । वो हालतें भी ऐसी आ जाती हैं, भले आज पैसा हो परन्तु ऐसा समय भी होता है दुक्कड़ पड़ जाता है । दुक्कड़ को क्या कहते हैं अंग्रेजी में? फेमिन हो जाए, ये हो जाए तो फिर क्या है । कितना भी पैसा रखा हो, रखा हो तो क्या होगा, पहले तो खाने की चीज चाहिए ना । यह तो सभी हालतें होने की है यह फैमिली, फलड्स, यह अर्थक्वेक, ये सभी जो नेचुरल कैलेमिटीज है यह सभी बातें आने की है बड़े फ़ोर्स से, इसीलिए यह सभी बातों को बाप जानते हैं ना इसीलिए कहते हैं बच्चे जरा खबरदार रहो और अपने को इतना

अपने में साहस भी हो, अभी के लिए भी, सब डिफिकल्टीज आने की है बड़े फोर्स से तो उसमें अपना भी यह बल चाहिए और फिर फ्यूचर के लिए भी अपना प्रालब्ध ऊंच रखो जो आगे के लिए तुमको यह तकलीफ लेनी ना पड़े अथवा तुम्हारे सामने यह तकलीफें है आवें नहीं । इसीलिए ऐसी दुनिया का बैठ कर के अभी बाप प्रबंध रख रहा है जिसमें फिर कभी फेमिन, फ्लड्स यह सभी बातें रहेंगी नहीं । तो यह सभी बातों को समझ करके और बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने का पूरा पुरुषार्थ रखो । तो यह है अपने लाइफ के लिए ना और लाइफ के लिए ही तो सब कुछ है ना । बाकी ऐसे नहीं समझना है कि यह किया, ना किया चलो वह तो जरूरी है खाने पीने की । यह भी तो खाने-पीने की बंदोबस्त है और वह भी सदा के लिए ये साधन है ना । इसी साधन, इसी प्रालब्ध के सिवाय तो हमारा खाना-पीना भी नहीं होता है, हो जाती है देखो कर्म का कहीं कुछ होता है तो ऐसी बातें हो जाती हैं कि कहते हैं कि देखो यह सब कुछ होते भी परंतु इतना दु:ख यह क्यों है, वो समझते हैं भई ये कर्म का है । तो कर्म का भी हमारा सारा मदार उन्हीं के ऊपर है ना तो हमको अपने कर्मों को रखना है । वह कैसे तो उसके लिए बैठकर के बाप ये नॉलेज समझा रहे हैं । तो ये सभी बातें अभी अच्छी तरह से समझते हो ना? तो समझदार का क्या काम है समझना खली ऐसे ही थोड़ी होता ऐसे ही समझना । नहीं, समझा है तो अभी करना है । तो अभी क्या करना है उसका पुरुषार्थ रखना है । ठीक है । आज छुट्टी तो नहीं

होगी ना तो क्लास को भी टाइम पर पूरा करना है, परंतु आप लोगों को इतना जरूर कहेंगे कि अपना चार्ट रखो । सारे दिन का अपना देखो अच्छी तरह से अपने कर्मों की संभाल रखो । अपना याद का भी चार्ट रखो और उसी पर अपना अटेंशन दो क्योंकि कमाई है ना, इसी से तो कमाई है । बाकी वह तो शरीर निर्वाह का काम तो करना ही है उसकी तो बात ही नहीं है लेकिन उसको करते भी साथ-साथ यह चीजें भी अपनी धारणा में लानी है ना उन सभी बातों को भी अटेंशन देना है, तो खुशी रहेगी, इस लाइफ में भी अपने को खुश समझेंगे और यह आप लोगों की लाइफ में परिवर्तन आना चाहिए, महसूसता आनी चाहिए कि आप लोग फील करते हो कि हमारी लाइफ अभी कुछ और हो गई है । दुनिया वालों से कुछ और है, भले हैं दुनिया में ही परंतु लाइफ की कोई चिंता, कोई फिकरात, कोई कुछ भी हो लेकिन कोई दुःख की लहर ना हो क्योंकि अभी हम जानते हैं कि यह सब हमारे पिछले खाते का है । भले नीचा ऊँचा कुछ आता है और आएगा वह भी परंतु जानते हैं कि यह हमारे पिछले कर्मों की सब निचाई-उचाई है । हमने कर्म किए हैं तो उसका सामना अभी होता है लेकिन इन्हीं सभी बातों को भी अभी बनाने का यत्न रखना है ना तो कहते हैं फिर तुम्हारा वह भी सूली से कांटा हो जाएगा । आनी होगी सूली, सूली समझते हो? फांसी और फिर वो जैसे कांटा लगता है न यानी कम लगेगा क्योंकि वह खुशी खड़ी होगी ना तो वह भी सूली से कांटा लगेगा यानी भासेंगा थोड़ा और आगे के लिए भविष्य भी अच्छा रहेगा

। तो अभी अपनी चढ़ती कला है, चढ़ती कला समझते हैं तभी आगे ही चढ़ते जाना है, ऊँचा उठते जाना है तो ऐसी चढ़ती कला को बढ़ाते चलना है । ऐसा पुरुषार्थ रखना है और ऐसे पुरुषार्थ में आगे होकर के बाप से अपना अधिकार पाना है । अधिकार देने वाला तो अभी है ना तो इन सभी बातों को समझो और अपने पर ध्यान दो, अपने पर अटेंशन दो । अच्छा, इनकी क्लास का क्या टाइम है? कुछ शायद दूर रहते हैं बेचारे तभी, नहीं तो इन्हीं से पूँछ लो, जो इन्हों को अपना टाइम इजी हो ना वो टाइम रखो तो सब टाइम पर हो जाए हाजिर क्योंकि यह तो समझने की बातें है ना । यह तो ऐसे नहीं है न कि खाली जैसे कोई मंदिर में गया या आगे पीछे गया तो खाली दर्शन ही करके आना है । यह तो है स्टूडेंट्स को क्लास के टाइम पर आना चाहिए, अगर लेट हो जाए तो फिर खड़े हो जाएं । ऐसा होता है ना स्कूलों में । तो जो टाइम सबको सूट करें अच्छा, वो टाइम रखो पूछ करके । कोई कारण होगा कभी बस नहीं मिलती, यहाँ की दिक्कतें भी बहुत हैं, कभी बस नहीं मिली, कभी कुछ है, कोई बिचारे कहाँ रहते हैं तो वह तो जानते हैं परंतु फिर भी कोई डिफिकल्टी हो तो उनको साल्वेशन मिलनी चाहिए । आते हैं तो फिर पूरा बिचारे अपना लाभ भी लेवें और फिर अपना पूरा पूरा जो डोज है वह लेकर के फिर सारा दिन मिजाज जो है ना वो अच्छा रहता है । नहीं तो फिर, क्योंकि दुनिया की लाइफ देखो कैसी है, मिलते भी ऐसे है, साथी भी ऐसे है, जिन्हों के साथ कांटेक्ट होता है वो भी है कोई कुछ कोई कुछ कोई

कुछ तो फिर माइंड जो है वो डिस्टर्ब हो जाती है तो इसीलिए फिर यह बल है तो उसमें खुश रहेगा और कई ऐसी बातों में चलेगा नहीं । उसमें गिरेगा नहीं संभलेगा ही अच्छी तरह से । तो यह सभी बात अपने पास रखने की है तो इसीलिए कोई अगर टाइम की दिक्कत हो या आने जाने की हो तो आप लोग उसकी सहूलियत रख सकते हो । बाकी ठीक हो जैसे अगर टाइम ठीक है तो कोई हर्ज नहीं है, कभी-कभी हो जाता है कभी बस का कभी उनका ये सब है ही, देखो यह कोई रेगुलर दुनिया थोड़ी है इरेगुलर है सब । अभी ये तत्व आदि भी सब इरेगुलर है कोई आर्डर में नहीं है । तो यह तो दुनिया का है ही परंतु फिर भी जितना अपना बन सके, कोई ऐसी दिक्कत हो तो कह सकते हैं, देखो ये अपना सहज मार्ग है न कोई हठ तो है नहीं, इसीलिए उसमें सहज बाकि हाँ अपना अटेंशन रखना है, अपनी धारणा अपना पुरुषार्थ अच्छा रखना है । अच्छा! कैसा? आती है , सब भाषा समझते हो । ये जो बैठे हैं सब भाषा समझते हो? पपैया समझता है भाषा हिंदी समझते हैं ? भोपालम भी समझते हैं, हिंदी भाषा भी समझते हैं ना ठीक से ? पुरुषार्थ क्या करना है ? ऐसा? पुरुषार्थ यही करना है कि जैसे बाप कहते हैं ना कि पहले तो है पांच विकार, विकारों को समझते हो ना? काम क्रोध लोभ मोह अहंकार यह पांच विकार है । अभी हमको पुरुषार्थ में क्या रखना है कि पहले-पहले तो बाप का रिलेशन पकड़ना है समझा । पहले हम अपने को समझते थे हम बॉडी हैं । आप आगे आइए । पहले हम समझते थे हम बॉडी हैं

समझा, अभी अपने को बॉडी नहीं समझना है भले काम करते हो ना अपने ऑफिस में या जहाँ भी आपका काम हो तो आपको क्या ख्याल रखना है कि आई एम सोल तो यह पुरुषार्थ है हमारे अंदर का, ये अन्दर का है, बाहर से तो कुछ करने का नहीं है ना हाथ पाव से । ये है अंदर का । तो हमको अपने को क्या समझना है, आई एम सोल, नोट बॉडी । तो पहले तो अपने को सोल समझना है । हम सोल है अभी हम सोल इन हाथों से लिखते हैं । हम ये आत्मा इन हाथों से लिखवाती हैं । इसको आर्डर करते हैं कि लिखो ये ओरगंस का आधार लेकर । हमको कुछ देखना है, हम आंखों से देखते हैं, मुख से बोलते हैं तो हम जैसे औरगन्स का आधार लेकर के, जैसे हम पेंसिल हाथ में उठा कर के हम पेंसिल से काम लेते हैं, पेन से काम लेते हैं, वैसे ही यह हमारा हाथ है । हम हाथ नहीं हैं, आई एम सोल, यह हमारा है हम इससे काम लेते हैं, हैंड से काम लेते हैं, कानों से काम लेते हैं, सब शरीर की जो ऑर्गन्स है उससे काम लेते हैं तो काम करने के समय हमको यह बुद्धि में रहना चाहिए यह है पुरुषार्थ । अभी पुरुषार्थ समझाते हैं, तो आई एम सोल लेकिन यह सब ऑर्गन्स से जो भी काम करते हैं, टांगों से चलते हैं वैसे तो हम समझते हैं कि ये हम तंग चलाने वाला मैं आत्मा तो ध्यान अपना आत्मा में रखना है । तो आत्मा में रखने से फिर हमको अपना परमात्मा पिता जो है ना उसका रिलेशन याद रहेगा । तो यह आत्मा आई एम सोल, सन ऑफ सुप्रीम सोल ये बुद्धि में हर वक़्त रखना है ये है पुरुषार्थ । तो अपनी

बुद्धि का ध्यान जो है, अटेंशन जो है इसी चीज में रखना है । चलते हुए भी ध्यान कि हम आत्मा चल रहे हैं टांगों से शरीर को चला रहा हूँ, आई एम सोल चला रहा हूँ, आई एम सोल देख रहा हूँ, तो देखने समय, सुनने समय आई एम सोल सुन रहा हूँ तो अपने बुद्धि में रखना है, यह कहने का नहीं है । यह तो हम आपको समझाने के लिए कहते हैं लेकिन घड़ी-घड़ी कहना नहीं है आई ऍम सोल सुन रहा हूँ, आई एम सोल, कहने की कोई बात नहीं है । यह तो हम आप को समझाने के लिए कहते हैं, लेकिन यह हमको अपनी बुद्धि में रखना है इसको कहा जाता है सोल कॉन्शियस । सोल कॉन्शियस वह है बॉडी कॉन्शियस तो नॉट बॉडी कॉन्शियस बट सोल कॉन्शियस तो अपने को सौल कॉन्शियस रख करके आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल यह बुद्धि में रहना चाहिए । तो इससे क्या होगा हमारे एक्शंस जो चलेंगे ना उसमें हम सेफ रहेंगे । हमसे कभी क्रोध नहीं होगा । इसी धारणा से हमारा क्रोध नहीं होगा क्योंकि जब हम को क्रोध का कोई बात आए, हमको समझो इस ने दो गाली दी तो हमारे ध्यान में क्या होगा, हम सौल कॉन्शियस होंगे ना तो क्या होगा यह भी तो आत्मा है, यह भी तो आत्मा ही है ना, हम आत्मा है तो यह नहीं है क्या । यह भी आत्मा है यह भी बुद्धि में आएगा ना, यह सब सोल्स हैं तो यह भी आत्मा है परंतु इस बेचारी आत्मा को यह ज्ञान नहीं है कि आई एम सोल तो इसको ज्ञान ना होने के कारण यह क्रोध करता है, हमको गाली देता है परंतु हम बॉडी कॉन्शियस होकर के सोंचे की

इसने हमको गाली डी है तो हम दो का चार देंगे यह नहीं आएगा । हमको क्या आएगा कि यह बिचारा । बिचारा मन में आएगा की बिचारे को नॉलेज नहीं है । इसकी हानि होती है, यह देखो बॉडी को इनसे होने के कारण की हानि होती है । हमको हानि का पता है ना यह नुकसान कर रहा है तो इनको हमको क्या है इनको सोल कॉन्शियस बनाना है तो हम इसको भी बाप के साथ रिलेशन और तुम आत्मा हो ये बता दें तो यह भी बिचारे कर्म अच्छे करें । नहीं तो देखो यह क्रोध में आकर के अपनी हानि कर रहा है या गाली देता है इससे इसके विकर्म बनते हैं । तो हमको यह नॉलेज है ना तो इसी के आधार से हमको तरस पड़ेगा । किसी की हानि देख कर के तरस पड़ता है ना कि यह अपना, आपे ही अपनी हानि कर रहा है जैसे कोई अपनी हानि करता है तो नहीं उसके ऊपर तरस पड़ेगा अरे डुबोया है अपने को, ये बिचारा डुबोता है कोई बचाओ बचाओ ऐसा आएगा न तो यह भी बिचारा डुबो रहा है अपने को तो हमारे को क्या आएगा कि नहीं, इसको बचाएं । तो हम को तरस पड़ेगा, ऐसा नहीं आएगा इसने दो गाली दी है तो हम भी दो गाली दें । नहीं, तो क्या होगा, माइंड चेंज हो जाएगी इससे चेंज हो जाएंगे । हम क्रोध से काम ना ले करके, उससे प्रेम से काम लेंगे उसको भी बनाएंगे । हाँ बाकी कहीं हमको जरूरत पड़े कि नहीं, यह आदमी या कोई ऐसी कड़ी बातें भी होती है देखो बच्चा है, छोटा है, नहीं समझते हैं भाई बच्चे हैं छोटे हैं वह थोड़ी इतना ज्ञान समझेगा तो हाँ बच्चे को जरा मूड से । वह

तो जैसे एक्टर्स होते हैं ना, बाहर बाहर से ऐसे ही मूड बनाकर के, परन्तु अंदर से तो फीलिंग नहीं होती है ना । अंदर नहीं होगा वो सिर्फ बाहर से जैसे एक्टिंग तो वह कहाँ हमको काम चलाने के लिए तो उसी तरीके से बाकी अपनी माइंड जो है ना वह सेफ रखनी है । तो वो हमारा रहने से, यह पुरुषार्थ है । अंदर हमको क्या करना है ये अंदर का पुरुषार्थ है । तो यह पुरुषार्थ रखने से हमारी एक्शंस जो है ना वह राइटियस रहेंगे, रोंग नहीं होंगे । राइटियस एक्सपेंस रहेंगे जिससे हमारे कर्म क्या है श्रेष्ठ बनेंगे और बाप की याद वो भी अपने में हर वक्त रहे कि हम उनकी संतान हैं । तो उनकी संतान हैं तो जैसा बाप वैसी हमको भी क्वालीफिकेशंस रखनी चाहिए ना जैसे कोई बच्चा किसी बड़े खानदान का बच्चा हो, उसका बाप कोई पोजीशन वाला हो तो उसको ध्यान तो रहेगा ना कि हमारा फादर बड़ा मिनिस्टर है, हमारा फादर बड़ा है । हम जो काम करेंगे तो सन शोज फादर इसीलिए हम जो कोई ऐसा काम करेंगे तो बाप के ऊपर कलंक लगेगा । तो हमको कोई ऐसा काम नहीं करना है जो हमारे बाप के ऊपर ग्लानि पड़े तो ध्यान रखेंगे । तो हमको हर तरह से अपने एक्शंस का ध्यान रखना है इससे क्या होगा कि हमारे कर्म अच्छे रहेंगे और हमने जो पाप किए हुए हैं पिछले भी, उनके ऊपर भी बल मिलेगा । वह भी हमारे दग्ध रहेंगे और इसी तरह से चलने से सदा हमारी हैप्पी लाइफ रहेगी । सब कुछ अच्छा रहेगा । कोई मरेगा न तो भी हम समझेंगे की आत्मा बिचारी एक शरीर छोड़ा और दूसरा

लिया जाकर कर्म से तो उसका हमको उसी तरीके से दुःख नहीं होगा । अगर दुःख होगा तो यही होगा कि बेचारा देखो कुछ अपना बनाकर नहीं गया तो हमारा काम है हम उसको रोशनी दे करके कुछ बनाए । तो अगर दुःख होता है तो यही कि देखो बिचारे ऐसे ही चले गए, बिचारे ने कुछ बनाया ही नहीं । अपने कर्म का खाता जो उल्टा किया या जो किया वही ले गया । तो हमारा अभी काम है दूसरे के ऊपर तरस करना, दूसरे के ऊपर हितकारी बनना, इसी में रहेंगे कि उसको राइट रास्ता दिखाएं । तो है अपनी और अपने भी एक्शंस को ठीक रखना, अपना अटेंशन रखना, उसी पुरुषार्थ में चलना । बाकी कोई हाथ से कुछ करना या माला सिमरनी है या कोई आसन लगाना है बाहर से कुछ नहीं । बाकी याद रखना है इसीलिए कहा है ना दो बातें बी प्योर एंड बी योगी । प्योर रखना है अपने को और अपने एक्शंस को और फिर याद रखना है बाप को, यह है दो बातें जिसको अपने में धारण करना है और अपनी प्रैक्टिकल लाइफ उसी पर चलानी है तो हमारी प्रैक्टिकल लाइफ में हमारी जो जरूरी एक्शंस है और राइट एक्शंस है वह चलेंगे रॉन्ग निकल जाएंगे फिर हमारी सेफ्टी होती जाएगी और हम सेफ होते हैं तो फिर दूसरों को भी सेफ करेंगे । फिर हमारी सेवा कौन सी चलेगी? हमको अन्दर में आएगा कि हम अगर समझते हैं कि ये गिरता है, ये मरता है ये बिचारा अपनी हानि कर रहा है तो हमारे दिल में जरूर आएगा की इनको भी बचाएं । तो ऑटोमेटिक हमारे मन में भी कि दूसरों को भी ऐसा बनाना, उसको

भी सावधान करना कि नहीं तुम भी आत्मा हो, अपने पिता को याद करो, यह चलेगा । उसको भी रास्ता बतलाना, अगर हम किसी रास्ते पर लगे हैं और हम समझे कि नहीं विचार है उल्टा जा रहा है तो आएगा ना दिल में कि इसको भी रास्ते पर लगाएं भाई इधर रास्ता है, इधर नहीं है तू उल्टा जा रहा है । जहाँ तुमको जाना है वहाँ जाने का रास्ता यह नहीं है, तू उल्टा जा रहा है, उसको रास्ता देना है । तो आएगा तो फिर हमारी सेवा भी वो ही चलेगी । नहीं तो आप लोगों से हमारी क्या पड़ी है हम जानते हैं आपको? कोई रिलेशन तो नहीं है ना, लेकिन अभी आत्मा का रिलेशन है इसीलिए तरस पड़ता है की ये बिचारी आत्माएं इस चीज को समझ करके अपनी लाइफ को ये भी हैप्पी बनाएं और सदा के लिए अपने जेनरेशंस की ऊँचे करें तो उसी के लिए । और अभी यह भी जानते हैं कि टाइम भी अभी बहुत खराब आ रहा है । दुनिया की हालतें अब दिन-ब-दिन बहुत खराब आने की है और जानते हैं कि गॉड के द्वारा परमात्मा के द्वारा अभी यह वर्ल्ड हिस्ट्री का सारा पता चला है कि ये अभी वर्ल्ड के एंड का टाइम है इसीलिए अभी हमें क्या करना चाहिए, उसके लिए भी हमको प्रिपेयर रहना क्योंकि हालतें बड़ी सीरियस आएंगी । इसी समय हमको अपने को भी ठीक रखना और फिर हमारा भविष्य बने अच्छी तरह तो फिर अंत मते सो गते ऐसी अपनी अवस्था को बनाना है । तो यह सभी अपना ध्यान रखने की बात है बाकी तो हाँ अपना शरीर निर्वाह का काम करना है, बच्चे हैं, बच्चों को संभालना है और जो बच्चे भी

इसी राह में चले उसको भी अपने पवित्रता और उसकी बातों पर चलाना है । ना चले तो दूसरी रास्ते चलना चाहे चलाओ उसमें क्या है जो करेगा तो पाएगा लेकिन हमारा काम तो है ना कि हम देखते हैं यह गिरना है, यह मरने की चीज है तो उसको बचाना तो हमारा काम है ना । कोई गिरता रहे और हम देखे तो कहेंगे भले गिरे हाँ? नहीं, कोशिश करना अपना धर्म है बाकि कोई कहे नहीं, हम गिरेंगे ही तो कहो गिरेंगे तो गिरे फिर क्या करें, बाकि कोशिश करना तो अपना धर्म है ना । तो इनको फिर यह पुरुषार्थ अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी । तो यह है कर्म, कर्म अच्छे का मतलब यही है तो इसी से ही फिर हम सदा काल के सुख को अपना भी बनाते हैं और दूसरों का भी बनाते हैं । तो यह है चीज बाकी याद रखना है इसीलिए यह सब अभ्यास फिर इसी के लिए प्रैक्टिस क्योंकि सारा दिन आप लोग काम धंधे में रहते हो, बुद्धि उसमें रहती है इसीलिए आप लोगों को रोज का यह लेसन दिया जाता है इससे रिमाइंड मिलती है ना बुद्धि में घड़ी-घड़ी रिमाइंड किया जाता है जैसे कोई चीज याद कराई जाती है न भाई याद है, याद है तो रिमाइंड, रखते हैं ना, तो यह भी आप लोगों को जैसे रिमाइंड किया कराया जाता है । आते हो तो यह डोज मिलने से बुद्धि रिफ्रेश रहती है । अगर आप 10 रोज नहीं आकर के देखो फिर यह सारा नशा उतर जाएगा । ये देख लो आप एक हफ्ता ना आओ इधर तो फिर देखो क्या हाल हो जाता है । वो जैसे खाली-खाली लगता है एकदम । वह नेचुरल है न , एटमॉस्फेयर जो है बाहर

का, उसी का वातावरण वह सब बातें, फिर वह सब खत्म कर देती हैं । अगर इसी वातावरण में रोज का डोज मिलता है फिर इसी वातावरण का सारा दिन नशा रहता है आज हमने यह सुना, यह बातें ऐसी है, तो मन्थन भी रहता है बुद्धि में, राइटियस तरफ बुद्धि रहेगी, नहीं तो फालतू बुद्धि काम करती रहेगी फिर फालतू- फालतू संकल्प । नहीं, बुद्धि को यह वर्क मिलता है । काम चाहिए ना उनको । उनको भी राइटियस काम चाहिए । उनको राइटियस काम नहीं मिलेगा तो कुछ न क्कुह उल्टा पुल्टा बुद्धि में चलाती रहेंगी । मन वचन और कर्म जिसको कहा जाता है थॉट वर्ड और डीड ऐसे कहते हैं ना तो थॉट वर्ड और डीड यह तीनों को स्वच्छ बनाना है । तो थॉट को परमात्मा के साथ लगाना है उसके ही विचारों में, जो ये सुना रहे हैं और वर्ड, वर्ड भी उसके जो अभी वर्ड सुना रहे हैं ना वह सुनाना है बुद्धि में अपना, बाकी काम काज तो अपना करना ही है । धंधा धोरी है उसका तो बोलना ही है ना, जो जरूरी है वह तो करना ही है बाकी कोई अनुचित नहीं बोलना है । आगे तो अनुचित बोल देते थे, तो हम बोल देते थे गाली या कोई भी अनुचित बात कह देते थे, अभी समझ से इसलिए थॉट वर्ड और डीड, अपना एक्शन सभी । इन सभी के ऊपर पूरा अटेंशन देना है । अटेंशन आएगा जब हम वह याद रखेंगे आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सौल, फर्स्ट इसी को याद रखना है समझा । यह है पुरुषार्थ, अंदर का है ना बाकी बाहर से तो कुछ करने का नहीं है । बाहर से तो काम काज जो भी है वो करना

ही है और यही अपना करना है फिर बाकि अपना जो टाइम बचता है तो यही आर्टिकल लिखो दूसरी दुनिया को भी रोशनी देने के लिए यह करो, वह करो, जैसा जिसका दिमाग है । जितना काम कर सकते हो उसी तरीके से करो । कुछ दिमाग है तो लिखो, लिखत से किसी को समझाओ, कई तरीकों से हम सेवा कर सकते हैं न तो करो, तो यह है ऐसा । अच्छा टोली दो अभी । अच्छा आप कौन हैं हाँ जो धारणा में पवित्रता को अपनाया है । अपनी प्रैक्टिकल लाइफ को पवित्र रखकर के चल रहे हैं तो जो पवित्र रहते हैं उन्हें के ही हाँथ का खाना है और पवित्रता में रहकर के पकाना है खाना है तो बल मिलता है न ताकत मिलती है । कैसा हो परमधाम ? परमधाम में रहते हो न ? हाँ ये तो युगल है जोड़ी है । आओ । अच्छा ऐसा बाप दादा, दादा को जानते हो ना अभी? बापदादा और माँ के मीठे-मीठे बहुत सपूत बच्चों प्रति यादप्यार और गुड मॉर्निंग ।

28. ओ मीठी-मीठी माँ - गीत

गीत-

वो मीठी मीठी लोरी मां, हमें फिर याद आएगी

कभी तन्हाइयों में मां

अचानक जा रही हो माँ, ना सोचा था कभी हमने,

अचानक जा रही हो मां, ना सोचा था कभी हमने,

अहो ड्रामा, अहो भावी वो घड़ियाँ याद आएंगी

कभी तन्हाइयों में मां तुम्हारी याद आएगी

कभी तन्हाइयों में मां

मां तुम सूक्ष्म वतन जाकर, हमें बिसरा नहीं देना,

मां तुम सूक्ष्म वतन जाकर हमें बिसरा नहीं देना,

तरसता दिल हमारा ये जुदाई सह ना जाएगी

कभी तन्हाइयों में मां तुम्हारी याद आएगी

सुनाई ज्ञान की वीणा, वो वीणा याद आएगी

कभी तन्हाइयों में माँ

मम्मा मुरली मधुबन

29. परमात्मा और धर्मात्मा में अन्तर और उनके कर्तव्य

दुनिया यह तो मानेगी ही कि परमात्मा एक है । अभी सारी दुनिया का परमपिता परमात्मा जो एक है तो उनको ही कहा जाता है निराकार परमात्मा और निराकार परमात्मा के लिए ही सारी दुनिया परमात्मा एक कहती है । तो यह भी समझने की बात है कि परमात्मा तो एक ही है ना । ऐसे तो नहीं है ना कि सभी धर्म का परमात्मा अलग अलग है। सभी धर्मों के धर्म पिता अलग-अलग कह सकते हैं जैसे क्राइस्ट है क्रिश्चियन धर्म स्थापन करने वाला, बुद्ध बुद्धिज्म धर्म स्थापन करने वाला परंतु खुद क्राइस्ट अथवा बुद्ध अथवा इस्लाम धर्म स्थापन करने वाले ने भी अपने को ऐसा नहीं कहा कि मैं परमपिता परमात्मा हूँ या भगवान हूँ । नहीं, उन्होंने भी उस निराकार परमात्मा की ओर इशारा रखा कि परमात्मा वो है । जैसे क्राइस्ट ने भी अपने को सन ऑफ गॉड कहा ऐसे नहीं कहा आई एम गॉड, नहीं सन ऑफ गॉड और परमात्मा उसी निराकार को कहा तो जो खुद धर्म स्थापक है उन्होंने भी अपने को गॉड ना मान करके उसी निराकार को कहा । गुरु नानक देव ने भी उसको ऊपर रखा कि ऊंचे से ऊंचा भगवन तो वह निराकार को रखा ना। अपने को नहीं कहा कि मैं परमात्मा हूँ अपने को और ही नीचे रखा । तो यह सभी चीजें समझने की है कि जिन धर्म स्थापन करने वालों धर्म पिताओं ने

भी अपने को परमात्मा परमपिता नहीं कहा उन्होंने भी उनको अपना पिता रखा तो वह उनकी संतान हो गई ना। तो यह सभी बातें समझने की है कि सबका पिता एक है। अभी सबका पिता एक जिसको निराकार कहा जाता है तो उसकी भी तो जानकारी होनी चाहिए ना कि वह परमपिता परमात्मा कौन है । अभी हम भारतवासी भी जो कृष्ण अथवा राम को मानते हैं तो यह भी तो समझने की बात है ना कि कृष्ण और राम उनको परमात्मा कहें या उन्हें भी परमात्मा की संतान कहें क्योंकि कृष्ण और राम यह तो सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजे महाराजाएं सतयुग और त्रेता के होकर के हुए हैं और यह देवी देवता तो इनको देवता कहेंगे । इन देवताओं को ऐसा देवता बनाने वाला भी वह परमपिता परमात्मा है तो परमात्मा तो अलग हो गया ना इसीलिए भारतवासियों में ही यह चित्र भी हैं रामेश्वर का या कृष्ण का, सभी देवताओं का जिसमें सभी देवताएं शिवलिंग की जो प्रतिमा है ना उनका बैठकर के पूजन करते हैं। तो वह दिखाते हैं जैसे रामेश्वर का दिखलाया है कि राम ने शिव का पूजन किया है। ऐसे कृष्ण का भी दिखाते हैं और सभी देवताओं का मिला हुआ चित्र भी दिखलाते हैं ब्रह्मा विष्णु शंकर सब शिवलिंग के आगे हाथ जोड़कर खड़े हैं। तो वह शिवलिंग प्रतिमा वह निराकार परमात्मा की जिसको ज्योति रुप या ज्योतिर्लिंगम निराकार परमात्मा कहा जाता है उनकी प्रतिमा है जिसको चित्रों में दिखलाते हैं कि सभी देवताए भी उसकी मान्यता करते हैं कृष्ण राम आदि भी । तो यह समझने की बात है

कि वह जो निराकार है जिसको शिव कहा जाता है परंतु कई भारतवासी शिव और शंकर को भी नहीं समझते हैं ना इसीलिए वह समझते हैं कि शिव और शंकर एक हैं। अभी ऐसा नहीं है शिव कहा जाएगा निराकार को ना तो शंकर जो चित्रों में दिखाते हैं ना कि उनके गले में साँप आदि पड़े हैं, अभी यह भी उनका बच्चा है । उसे भी देवता कहेंगे, शंकर को देवता कहेंगे । शंकर को परमात्मा नहीं कहेंगे शिव को परमात्मा कहेंगे तो शिव और शंकर के भी अंतर को समझना है ना। तो शंकर हो गया शिव का बच्चा और सभी देवता है शिव के बच्चे । धर्म स्थापक धर्म पिता भी शिव के बच्चे। तो शिव निराकार उनको कहा जाएगा ज्योतिर्लिंगम शिव परमात्मा उन्हीं को ही परमात्मा कहा जाता है। तो अभी सबका पिता तो एक हो गया ना इसलिए हर एक के ऑक्यूपेशन को समझने की बात है कि परमात्मा क्या देवता क्या और मनुष्य क्या बन सकता है। मनुष्य परमात्मा बन सकता है या मनुष्य को देवता बनना है तो ये सभी चीजें भी तो समझने की है ना। हर एक चीज से हर एक का ऑक्यूपेशन अच्छी तरह से समझना है। सब मिल मिलाकर के एक ही तो नहीं कहने का है ना । अभी मिनिस्टर, गवर्नर, कलेक्टर सब की पोस्ट अलग है और हर एक का ऑक्यूपेशन और कर्तव्य अलग है। ऐसे तो नहीं कहेंगे ना कि सब एक है। इसी तरह से परम आत्मा और परमात्मा का कर्तव्य अलग है और देवता और देवताओं के गुण, ऑक्यूपेशन अलग है। तो हर चीज को समझने की बात है इसीलिए देवता और परमात्मा को

मिलाकर एक कह देना यह बड़ी भारी भूल हो जाती है । तो जिसको हम मानते हैं परमपिता सारी दुनिया एक को कहती है तो वह एक कौन है। तो एक है यह ज्योतिर्लिंगम निराकार परमात्मा जिसको स्टार लाइट कहो या बिंदी कहो लेकिन है तो छोटी सी ही यह तो चित्र में बड़ा दिखाया है लेकिन है तो छोटी सी बिंदी। तो आत्मा भी ऐसी ही चीज है परंतु आत्मा हर एक की अपनी अपनी अलग अलग है। जितने मनुष्य हैं उतनी आत्माएं हैं ऐसे नहीं कहेंगे सब की आत्मा एक ही है नहीं तो हर एक आत्मा अलग-अलग है। जितने मनुष्य उतनी ही आत्माएं हैं, सोल्स हैं एक सोल नहीं है । सोल सुप्रीम सोल जिसको गॉड कहा जाता है वह एक है तो सभी आत्माओं में उनको ऊंचा कहेंगे क्योंकि वह जन्म मरण रहित हैं तो गॉड को सुप्रीम सोल कहेंगे । आई एम सोल यानी हम मनुष्य आत्माएं आत्मा है। तो अपने को कहेंगे आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल। तो गॉड को सुप्रीम क्यों कहा जाता है, है वह भी सोल परंतु सुप्रीम क्यों कहते हैं इसीलिए कहते हैं क्योंकि वह जन्म मरण में नहीं आते हैं और हम सब आत्माएं शरीरधारी जन्म मरण में आते हैं इस कॉरपोरियल वर्ल्ड में अनेक जन्मों में हम पार्ट बजाने आते हैं लेकिन हम आत्माएं आती कहाँ से हैं निराकारी दुनिया का मतलब ही है इनकॉरपोरियल वर्ल्ड । तो वर्ल्ड है यानी इनकॉरपोरियल एक नहीं है इनकॉरपोरियल की भी वर्ल्ड है यानी बहुत है। वर्ल्ड कहा जाता है उसी चीज को जिसमें बहुत हो। देखो यह मनुष्य सृष्टि अथवा मनुष्य की वर्ल्ड यानी उसको कहा

जाता है कॉरपोरियल वर्ल्ड तो यह कॉरपोरियल बहुत है ना, एक थोड़ी है एक मनुष्य होता तो फिर इसको वर्ल्ड थोड़ी कहते। तो यह बहुत है इसलिए उसको कहा जाता है कॉरपोरियल वर्ल्ड। कॉरपोरियल वर्ल्ड यानी साकार शरीर धारण करने वाले मनुष्यों की दुनिया तो शरीर धारण करने वाली मनुष्य आत्माएं बहुत है एक नहीं है एक होता तो फिर उसको दुनिया नहीं कहते। दुनिया माना इसमें बहुत होते हैं उनको मिलाकर दुनिया कहने में आती है। इसी तरह से निराकारी भी दुनिया है माना निराकारी बहुत है एक नहीं है, तो बहुत कौन आत्माएं और परमात्मा भी वहाँ का निवासी । तो यह सभी चीजें समझने की है कि यह सभी सोल उनको कहा जाता है इनकॉरपोरियल वर्ल्ड, हिंदी में कहेंगे निराकारी दुनिया और अंग्रेजी में कहेंगे इनकॉरपोरियल वर्ल्ड और इस साकार दुनिया को कहेंगे कॉरपोरियल वर्ल्ड और हिंदी में कहते हैं साकार दुनिया । तो यह सभी चीजें समझने की है ना इसीलिए हमारा पिता सारी दुनिया का एक उन्हीं को कहा जाएगा। अभी यह जो कई भारतवासी भी समझते हैं कि परमात्मा का अवतरण हुआ अभी उनके अवतरण को भी समझना है कि हाँ सुप्रीम सोल भी जो निराकार है ना अभी उसका अवतरण हुआ है । अवतरण का मतलब है जैसे हम आत्माएं ऊपर से निराकारी दुनिया से यहां आती हैं ना साकार में यानी शरीर को लेते हैं तो परमात्मा भी जो सुप्रीम सोल है वह भी एक बार आता है परंतु वह कहते हैं मैं मनुष्य सदृश्य प्रकृति के वश होकर के कर्म के हिसाब से शरीर नहीं लेता हूँ

मैं आता हूँ प्रकृति को अधीन करके यानी शरीर का आधार लेकर के यह गीता की भी वर्शन है कि मैं प्रकृति का आधार लेता हूँ यानी टेंपरेरी आकर के मनुष्य तन का सहारा लेता हूँ बाकी मेरा कोई अपना तन अपने कर्मों के हिसाब से ऐसा नहीं है परंतु मैं क्यों आता हूँ मुझे भी आना पड़ता है यह मनुष्य आत्माएँ जो पाँच विकारों के वश हो करके माया की बॉन्डेज में बंध गई है ना ऐसी जब दुख अशांति में आ जाती हैं आत्माएँ अथवा मनुष्य तभी मैं फिर आ करके उन्हों को उससे छुड़ाता हूँ । कहा भी है ना यदा यदा ही देखो गीत भी अभी सुना कि हाँ छोड़ दे आकाश सिंहासन, अभी कोई आकाश में तो नहीं बैठा है ना। आकाश से पार जिसको कहा जाएगा इनफिनिट लाइट तो आकाश यानी पांच तत्वों से भी पार इंफिनिट लाइट में जहाँ आत्माएँ भी निवास करती हैं और जहाँ परमात्मा भी निवास करते हैं जैसे स्थल में आकाश में तो इस स्थल में मनुष्य रहते हैं इसी तरह से इंफिनिट लाइट में आत्माओं का और परमात्मा का निवास है तो आत्माएँ वहाँ पर आती है लेकिन एक बार परमात्मा कहते हैं जब सब आत्माएँ जन्म मरण के चक्कर में आकर के फिर पाँच विकारों के बस में फंस जाती हैं तब फिर मैं उनको छुड़ाने आता हूँ । तो कहा है ना गीत में भी सुना कि यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत की जब-जब अधर्म की वृद्धि होती है अर्थात धर्म की हानि होती है तब तक मैं आता हूँ अथवा जब पाप बढ़ जाता है तब तब मैं आता हूँ । तो आते हैं काहे के लिए, आते हैं पापों से छुड़ाने के लिए तो वह

उनका पावर शक्ति काम करती है पापों के ऊपर क्योंकि सुप्रीम सोल है ना वह जन्म मरण रहित है एवर प्योर है तो उनको कहा जाएगा परमात्मा । तो वह है एवर प्योर और हम आत्माएँ जन्म मरण में आती हैं इसीलिए हम आत्माएँ जो है ना पाप आत्माएँ बनती है देखो कहते भी है ना पाप आत्मा, पुण्य आत्मा तो पाप और पुण्य तो आत्मा के ऊपर लगता है ना ऐसे नहीं जैसे कई समझते हैं आत्मा निर्लेप है, आत्मा को कोई लेप छेप नहीं लगता है, नहीं आत्मा को ही तो लगता है ना । अगर आत्मा को नहीं लगता तो मनुष्य एक शरीर छोड़कर के दूसरा कौन लेते हैं, आत्मा ही तो लेती है ना। आत्मा ही तो यह बॉडी का कवर छोड़ कर के जा करके दूसरा लेती है तो आत्मा ही तो अपने कर्मों का हिसाब ले जाती है ना अच्छा बुरा। तो अच्छा बुरा आत्मा के साथ रहा तभी तो आत्मा जाती है और जा कर के फिर जो कर्म का हिसाब है दूसरे जन्म में पाती है तो वह कौन पाती है, आत्मा ही तो पाती है ना। अगर शरीर को पाना हो तो शरीर जावे । नहीं, शरीर तो इधर छोड़ा जाती है जाती है आत्मा तो उसका मतलब है रिस्पांसिबल आत्मा है ना। आत्मा अपने कर्म के अच्छे बुरे का हिसाब लेकर के दूसरे शरीर को जाकर के लेती है। तो लेती और छोड़ती कौन है आत्मा, शरीर एक छोड़ती है दूसरा लेती है और कर्मों का हिसाब उसके साथ रहा तो अच्छा चाहे बुरा वह आत्मा के साथ रहा ना लेप छेप यानी आत्मा के ऊपर ही तो रिस्पांसिबिलिटी रही ना। तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए परमात्मा कहते हैं मैं

तभी आता हूँ जब आत्माओं के ऊपर यह मेल, आवरण कहो या अंग्रेजी में इसको डस्ट यह सब चढ़ती है तो आता हूँ उनको फिर उतारने के लिए। जैसे देखो सूर्य होता है ना चंद्रमा होता है उसके ऊपर ग्रहण लगता है तो फिर कहते हैं ना दे दान तो छूटे ग्रहण तो अभी आत्मा के ऊपर भी यह माया का, पांच विकारों का ग्रहण लगा हुआ है तो बाप कहते हैं अभी दे दान यानी यह विकारों को छोड़ो तो फिर तुम्हारा यह ग्रहण उतर जाएगा। फिर तुम आत्मा जो असुल प्यूरीफाइड थी वह प्यूरीफाइड हो करके तुमको फिर शरीर भी प्यूरीफाइड मिलेगा जिनको फिर देवता कहते थे, अभी श्री कृष्णा और श्रीराम इन्हों को देवता कहते हैं क्योंकि इनकी आत्मा भी पवित्र थी और शरीर भी पवित्र था तो इन्हों को देवता कहा जाता है तो ऐसे मनुष्य जिनकी आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र ऐसे सिर्फ सतयुग और त्रेता के मनुष्य थे यानी देवताएं भी मनुष्य को ही कहेंगे ना। मनुष्य भी क्वालिफाइड जिनको कहा जाता है सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकारी, तो यह मनुष्य निर्विकारी थे, सर्वगुण संपन्न थे, कंपलीट थे तो कंप्लीट मनुष्य को देवता कहा जाता है इसीलिए वह आत्मा भी पवित्र शरीर भी पवित्र तो यह सभी चीजें समझने की है क्योंकि भारतवासी श्रीकृष्ण को तो मानते हैं परंतु वह जो सुना है ना कि श्री कृष्ण फिर भगवान कह दिया क्यों क्योंकि उन्होंने गीता का भगवान कृष्ण को रख दिया है। वह समझते हैं द्वापर के समय में कृष्ण आया और उसने ही आकर के ज्ञान दिया,

अभी ज्ञान दिया निराकार परमात्मा ने जिसको शिव कहते हैं शंकर नहीं यह भी समझने की बात है । शिव, ज्योतिर्लिंग वह आया और उन्होंने ही आकर के ज्ञान दिया उनको ही कहा जाता है ना नॉलेजफुल। नॉलेजफुल किसको कहेंगे निराकार परमात्मा को, जानी जाननहार, ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर, अंग्रेजी में भी कहते हैं ब्लिस्फुल, पीसफुल यह सब उनको ही कहा जाता है ना, ओसियन ऑफ नॉलेज देखो यह महिमा किसकी है तो यह ओसियन ऑफ नॉलेज या नॉलेजफुल उनको ही कहा जाता है ना ओसियन ऑफ पीस यह सभी उनके लिए हैं तो यह है सारी परमात्मा की महिमा यह देवता या मनुष्य के लिए तो नहीं कहा जा सकता ना । अभी उसने आकर के जो ज्ञान दिया और मनुष्य को क्या बनाया फिर मनुष्य को कंप्लीट कैसे बनाया वह फिर कंप्लीट मनुष्यों में यह देवता श्री कृष्ण, श्री राम। तो यह है मनुष्य का आदर्श कि मनुष्य भगवान ने कैसा बनाया, ऐसा कंप्लीट। इसीलिए कहते हैं यदा यदा ही जब-जब अधर्म होता है तब तब मैं आता हूँ ऐसे मनुष्य बनाने के लिए तो परमात्मा जो आते हैं जिन्होंने अधर्म नाश करके सत्य धर्म जो स्थापन किया तो सत धर्म की मीनिंग क्या है, उनका मतलब यही है कि सब धर्म माना धर्मात्माएं मनुष्‍य तो धर्मात्माएं मनुष्य कौन थे जो देवी देवता थे इन्हों को ही महान आत्माएं धर्मात्मा इन्हों को ही कहा जा सकता है। आज की दुनिया में किसी को भी महान नहीं कहा जा सकता है । महान माना सबसे श्रेष्ठ जिसके ऊपर कोई

श्रेष्ठ नहीं तो देवताओं के ऊपर कोई श्रेष्ठ नहीं है यानी मनुष्य, बाकी परमात्मा तो सबसे ऊपर है ही वह तो बात अलग रही परमात्मा के साथ तो किसी की भेंट की नहीं जा सकती वह तो गॉड इज वन, वन के साथ दूसरा हो ही नहीं सकता है नहीं, गॉड एंड गॉडेजिस भी जो अंग्रेजी में कहते हैं तो वह भी देवी देवताओं को है परंतु वास्तव में निराकार परमात्मा को तो कोई गॉडेस नहीं है ना, उनको तो गॉड कहेंगे परंतु यह क्यों कहा है गॉड एंड गॉडेस यानी परमात्मा ने जो गॉड है उसने जो धर्म स्थापन किया है ना वह देवताओं का धर्म है जो कहा है ना मैं आता हूँ सतधर्म स्थापन करने तो सतधर्म कौन सा? यह देवी-देवता वाला धर्म स्थापन किया है तो उस धर्म का नाम पड़ गया है गॉड एंड गॉडेज जैसे हिंदी में भी कहते हैं भगवती भगवान। अभी वास्तव में मनुष्य को भगवती भगवान कह नहीं सकते हैं परंतु वह नाम हुआ जैसे क्राइस्ट ने धर्म स्थापन किया तो फिर क्राइस्ट के धर्म का नाम क्या हो गया क्रिश्चियन यानी क्राइस्ट के नाम के ऊपर इसी तरह से यह गॉड ने जो धर्म स्थापन किया तो उसके धर्म का नाम हो गया गॉड एंड गॉडेज बाकी ऐसे नहीं है की मनुष्य गॉड एंड गॉडेज कहलाए जा सकते हैं परंतु उनको भगवती भगवान कहते हैं यानी भगवान के द्वारा जो मनुष्य ऊंचे बने तो भाई भगवान के द्वारा यह भगवती और भगवान । बाकी ऐसे नहीं है कि भगवान और भगवती कोई बहुत थे गॉड इज वन परंतु जैसे क्राइस्ट के नाम से क्रिश्चियन, बहुत हो गए ना तो क्रिश्चियंस नाम कहाँ से

हुआ, क्राइस्ट के नाम से। जैसे बुद्धिस्म, बुद्धिस्म किस नाम से कहते हैं बुद्ध के नाम से, इसी तरह से भगवती भगवान किस नाम से करते हैं भगवान के नाम से, तो भगवान ने वह धर्म बनाया ना इसलिए उस धर्म का नाम भगवती भगवान कहा गया । बाकी ऐसे नहीं है क्योंकि भगवान तो एक ही है ना। तो यह सारी चीजों को अच्छी तरह से समझना है क्योंकि हर एक बात को यथार्थ रीति से समझना इसी का नाम ज्ञान है।बाकी ज्ञान का मतलब यह नहीं है खाली वेद शास्त्र ग्रंथ आदि बैठकर के अध्ययन करो कराओ नहीं , हमको अपना, सेल्फ का तो सेल्फ रियलाइजेशन कि व्हाट एम आई, सेल्फ का यथार्थ नॉलेज होना चाहिए कि हम कौन हैं कहाँ से आए हैं, किधर जाएंगे, क्या करने का है, गॉड क्या है, और हम मनुष्य कहाँ तक पहुंच सकते हैं, हमारी लाइफ की एज क्या है, नॉलेज क्या है, मनुष्य क्या है और मनुष्य क्या हो सकता है तो इन सब बातों की यथार्थ नॉलेज होनी चाहिए ना । तो अभी देखो परमात्मा के द्वारा वह नॉलेज मिल रही है क्योंकि उसने कहा है ना कि यदा यदा जब-जब धर्म होता है तब आता हूँ। तो अभी देखो यह वही टाइम है और आकर के वही समझा रहे हैं और यह कॉलेज भी तो उन्हीं की है ना यह जहाँ हम पढ़ रहे हैं । हम सब स्टूडेंट्स है ।हमको पढ़ाने वाला हमारा टीचर कौन? परमपिता परमात्मा वो नॉलेजफुल । अभी यह भी समझने की बात है ना कि परमात्मा को अगर आकर के नॉलेज सुनाना पड़े वह तो है सोल, सुप्रीम सोल तो निराकार ऊपर से ऐसे ही

तो नहीं बोलेगी ना उनको ऑर्गन चाहिए शरीर चाहिए तो परमात्मा आ करके शरीर लेगा। वो आता है अधर्म के टाइम पर, अभी अधर्म के टाइम पर कृष्ण जैसा शरीर कहाँ होगा। कृष्ण जैसे सर्वगुण संपन्न और सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकार ऐसे शरीर तो सतयुग में थे ना। अभी परमात्मा को सतयुग में तो आना ही नहीं है, सतयुग में क्या करेगा आकर के सतयुग तो है ही सतयुग। उनको आकर के अधर्म नाश करके सतयुग बनाना है तो जो चीज परमात्मा को बनानी है तो जब वह बनी हुई है उसी समय पर कैसे आएगा। उसको आना है अधर्म के टाइम पर यानी कलयुग के टाइम पर। कलयुग के भी अंत में इसीलिए बाप कहते हैं मैं कलयुग के भी पिछाड़ी में आऊंगा तो मुझे मनुष्य कैसा मिलेगा । मैं शरीर का आधार लूँगा तो मुझे मनुष्य भी ऐसा ही मिलेगा यानी अधर्म के टाइम पर अधर्मी यानी ऐसा तमोप्रधान, ऐसा मनुष्य मिलेगा वेतन में आकर उसको भी पवित्र बना लूँगा जिसके तन मैं आकर के उसको भी पवित्र बनाऊंगा, उसके साथ दूसरे भी जो ज्ञान सुनेंगे वह भी पवित्र बनेंगे। तो उनको श्री कृष्ण जैसा सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकार कैसे शरीर मिलेगा। ऐसे अधर्म के टाइम पर ऐसा शरीर और ऐसी पवित्र आत्मा है ही कहाँ। ऐसा तो बनाने के लिए आते हैं ना। तो जो चीज बनाने के लिए आया वह चीज पहले कैसे होगी। जैसे क्राइस्ट आया क्राइस्ट आया तो क्रिश्चियन धर्म पीछे हुआ ना, क्राइस्ट के बाद में। क्राइस्ट आया तो बाइबल भी पीछे हुआ उसने जो[ ] वर्सेस बोले फिर

उसका बैठ करके लिखने वालों ने जो किताब बनाया उसका नाम रखा बाइबल, परंतु ऐसे तो नहीं ना क्राइस्ट आया तो पहले बाइबल था या पहले यह क्रिश्चियन धर्म था नहीं पीछे । इसी तरह से परमात्मा आया तो परमात्मा के पीछे ही तो ऐसे देवी-देवताओं जैसे मनुष्य बने ना । अभी श्रीकृष्ण को तो ऊंचा गिना जाएगा ना देखो उनकी कितनी महिमा है। वास्तव में श्रीकृष्ण सतयुग का पहला-पहला प्रिंस और पीछे फिर बढ़ा हुआ है तो उनको श्री नारायण कहेंगे । तो यह भी चीजें समझने की है कि वही श्री कृष्ण सो ही फिर श्री नारायण यानी बड़ेपन में जब उनका स्वयंवर हुआ है तो उसका नाम श्री नारायण। तो छोटेपन में राधे कृष्ण और पीछे फिर बड़े होते हैं तो लक्ष्मी नारायण राधे का नाम लक्ष्मी और उनका नाम नारायण लेकिन यह सतयुग के हो गए ना । तो यह भारतवासी इन बातों को ना समझने के कारण तो सब यानी बाप और बेटे को मिला रखा है। जैसे कोई अगर गांधी की बायोग्राफी के ऊपर नेहरू का नाम लगा दे तो फिर ना नेहरू की बायोग्राफी सिद्ध होगी ना गांधी की बायोग्राफी सिद्ध होगी तो इन्होंने मानो निराकार परमात्मा की बायोग्राफी के ऊपर श्री कृष्ण का नाम रख दिया है, बाप की बायोग्राफी के ऊपर बेटे का नाम रख दिया है तो न बेटे की बायोग्राफी सिद्ध हुई ना बाप की बायोग्राफी सिद्ध होती है, ना कृष्ण की बायोग्राफी सिद्ध हुई ना निराकार परमात्मा की बायोग्राफी सिद्ध होती है तो दोनों मिक्स हो गई है ना । तो यह सभी चीजें समझने की है कि निराकार परमात्मा जिसको शिव कहा जाता

है और कहते भी हैं ना कि शिवलिंग, यह जो मंदिरों में पूजे जाते हैं शिवलिंग, तो यह सब समझने की चीजें हैं शंकर नहीं यह बार-बार समझने का है कि शंकर और शिव में अंतर है इसीलिए शिव, तो शिव को जो अभी मानते हैं ज्योतिर्लिंग निराकार और इसी प्रतिमा को फॉरेन में भी मानते हैं, मुसलमान भी मानते हैं मक्का के मदीने में भी इनकी यह प्रतिमा है । आप लोगों को बताया था ना हमारी पार्टी जब यहाँ से जापान में गई थी तो जापान में भी एक संस्था में गए थे जिस संस्था में उनके पास भी ऐसा शिवलिंग के सदृश्य छोटे-छोटे पत्थर पॉकेट में पड़े थे । फिर वह पॉकेट से पत्थर निकाल कर उनका जब क्लास होता था या स्टूडेंट्स बैठकर के योग आदि सीखते थे तो अपने ज्योत के आगे वो डीला रख करके उसका ध्यान करते थे। तभी इन लोगों ने उनसे पूछा कि यह जो आप ध्यान करते हो यह पत्थर रख कर के इसका मतलब क्या है तो वह बेचारे तो पूरा समझा नहीं सके। उन्होंने कहा खाली हमको सिखाने वाले हैं उन्होंने हमको कह दिया है कि यह रख करके आप उनका ध्यान करो परंतु उनसे पूछा गया कि अगर ध्यान भी करने का है तो फिर तो कोई भी चीज रख करके उसका ध्यान करो, फिर खास यह पत्थर और सो भी उसी लिंग आकार का ये ही क्यों । तो वो बेचारे अधिक तो कुछ समझा नहीं सके। फिर इन्होंने बैठ करके उनको समझाया कि यह जो है यह प्रतिमा उस परमात्मा की है और तुम हर एक आत्मा का भी पिता यही है तो यह आत्मा का अथवा परमात्मा का जो शेप है वह उनको

दे दिया है परंतु इनका ज्ञान ना होने के कारण आप लोगों को यह पता नहीं है । खाली आप लोग यह समझते हो कि खाली इस पत्थर को देखते रहने से हमारा ध्यान उसमें लगेगा फिर किधर भी बुद्धि नहीं जाएगी तो कंसंट्रेट खाली इनको लगाकर के करते हो, परंतु वास्तव में यह है क्या उसको भी तो जाना चाहिए ना इसका ज्ञान चाहिए । तो खाली बैठकर के कोई चीज रख करके उसका ध्यान करना फिर तो कोई भी चीज रखो उसका बैठकर के अटेंशन दो तो दूसरी तरफ बुद्धि नहीं जाएगी तो यह तो खाली ऐसा नहीं है ना कि किसी चीज को ध्यान लगा कर के उसको कहेंगे ध्यान। नहीं, यह तो हमको सेल्फ रियलाईजेशन हर वक्त अपने में रखना है कि आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल । चलते-फिरते इस बॉडी से डिटेच रहने का है ना इस बॉडी से और इन ऑर्गन से जैसे देखो हम यह हाथ से लिखते हैं, यह मुख से हम बोलते हैं, आँखों से देखते हैं, कानों से सुनते हैं लेकिन कौन ? आई एम सोल तो अपने को हर वक्त सोल समझना तो इसको कहेंगे सोल कॉन्शियस । तो सुन कॉन्शियस एंड गॉड कॉन्शियस तो जितना सौल कॉन्शियस रहेंगे उतना ही गॉड कॉन्शियस भी रहेंगे तो कहेंगे सोल तो सन ऑफ सुप्रीम सौल है ना, उसको गॉड कॉन्शियस जरूर आएगा बुद्धि में कि हम उसकी संतान हैं की हम उसकी संतान है। तो गॉड की संतान है, ऐसे नहीं है आई एम गॉड, आई एम सोल आई एम गॉड, नो, आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल। तो यह सारी चीजें समझने की है कि आत्मा और

परमात्मा उस परमात्मा को कहा ही जाता है परमपिता और हम हैं उसकी संतान तो यह रामकृष्ण आदि भी परमात्मा की संतान है बच्चे हैं लेकिन श्रेष्ठ महान आत्माएँ धर्म आत्माएँ संपूर्ण उनको कहेंगे कंप्लीट सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण तो परमात्मा ने आकर के जो दुनिया बनाई अथवा धर्म स्थापन किया कहा ना यदा यदा ही अधर्म होता है तब मैं आकर के धर्म स्थापन करता हूँ तो कौन सा धर्म स्थापन किया । भारतवासी यह थोड़ी जानते हैं कि भगवान ने कौन सा धर्म स्थापन किया । अगर किसी से पूछा भी जाएं क्राइस्ट आया तो क्राइस्ट ने कौन सा धर्म स्थापन किया तो सुना देंगे कि देखो यह क्रिश्चियन धर्म है ना यह किसने स्थापन किया, किसी से अगर पूछा भी जाए कि बुद्ध आया तो उसने कौन सा धर्म स्थापन किया तो सुना देंगे कि यह बुद्धिज्म धर्म परंतु अगर यह पूछा जाए भारतवासियों से कि भगवान ने कहा है कि यदा यदा ही धर्मस्य यानी जब जब मैं आता हूँ तब आ करके मैं सतधर्म स्थापन करता हूँ वह सतधर्म कौन सा है उसका तो नाम कोई बतलाए, कोई नहीं बता सकेंगे । बहुत बार देखो आप पूछते हैं ना तो देखो पता है ? खाली सत धर्म, यानी सत्य का सत धर्म लेकिन वह कौन सा उसका नाम क्या है कहाँ है वह सतधर्म । तो यह सभी चीजें समझने की है कि अभी सत धर्म देखो यह भारतवासियों का जो प्राचीन देवी देवता धर्म था ना वह, अभी देवी-देवता धर्म वाले तो भारतवासी अपने को मानते नहीं है, अभी उन्होंने तो अपना नाम हिंदू रख दिया है ना। वास्तव में

हिंदू कोई धर्म नहीं है । हिंदू तो हिंदुस्तान में रहने के कारण अपने को हिंदवासी कहलाते हैं जैसे यूरोप में रहने वाले अपने को यूरोपियन कहते हैं परंतु अगर उनसे धर्म पूछा जाएगा तो वह ऐसे थोड़ी कहेंगे कि हम यूरोपियन धर्म वाले हैं। नहीं, धर्म नाम पर वह क्राइस्ट के नाम पर कहेंगे कि हम क्रिश्चियन धर्म के हैं बाकी अगर पूछेंगे कि रहने वाले कहाँ के हैं तो कहेंगे हम यूरोप के रहने वाले हैं यूरोपीयंस है बाकी धर्म क्रिश्चन है। इसी तरह से भारतवासी हिंदुस्तानी या हिंदवासी यानी भारत व में रहते हैं तो वह तो इस देश का नाम है ना बाकी हिंदू कोई धर्म थोड़े ही है। धर्म तो भारतवासियों का देवी देवता है परंतु आज वह लक्षण नहीं रहे हैं ना इसीलिए बिचारे वह देवी देवता कह नहीं सकते हैं। देवी देवता कहा जाता है कोई अच्छा आदमी या अच्छी माता होती है तो कहते हैं भाई यह तो जैसे देवी है जैसे देवता है, लक्षणों के ऊपर कहा जाता है लेकिन आज वह लक्षण रहे नहीं है इसीलिए कहने में लज्जा आती है कहते नहीं है कि देवी देवता। तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप जो नॉलेजफुल है वह बैठ करके समझाते हैं लेकिन वह कहते हैं मैं आता हूँ समझाने के लिए जब दुनिया अधर्मी पतित है ना तो वहाँ मुझे सर्वगुण संपन्न ऐसा शरीर कैसे मिलेगा इसीलिए कहते हैं ना मैं कोई द्वापर में आया हुआ हूँ क्योंकि द्वापर के बाद तो कलयुग हुआ ना। अभी द्वापर में भी सर्वगुण संपन्ना सोलह कला संपूर्ण श्री कृष्ण जैसे मनुष्य कहाँ से हुए, उस टाइम भी नहीं थे । नहीं, वह तो है सतयुग और मैं आता हूँ

कलयुग में। कलयुग के भी अंत में आकर के सतयुग बनाता हूँ पूरी दुनिया को तो यह सभी चीजें समझने की है। इसीलिये बाप कहते हैं मैं आता हूँ कलयुग के समय पर तो मुझे ऐसा ही मिलेगा ना। उसी मनुष्य के तन में आता हूँ जिसका नाम फिर मैं रखता हूँ ब्रह्मा। तो मैं ब्रह्मा के तन में आता हूँ ऐसे नहीं कि कृष्ण के तन में नहीं ब्रह्मा के तन में आकर के वह ब्रह्मा जिसका नाम रखता हूँ मैं उनको बैठकर के पवित्र बनाता हूँ फिर उनका जाकर के भविष्य में सेकंड जन्म फिर उनका श्री कृष्ण बनता है । श्री कृष्ण का पहला जन्म जो है ना वह कौन सा। भाई श्री कृष्ण भी सर्वगुण संपन्न बना वह कहाँ से बना, ऐसे तो नहीं बने बनाए ऊपर से आए नहीं, वह भी तो कर्म का फल है ना तो यह सभी चीजों को समझना है। कई तो समझते हैं नहीं यह कृष्ण और राम आदि ऊपर से ऐसे ही बने बनाए आए हैं जैसे कई नाटकों में भी दिखा देते हैं यानी ब्रह्मा फिर दूसरे जन्म में कृष्ण बना तो कृष्ण का पिछला जन्म जो है ना वह ब्रह्मा तो यह सारी चीजें समझने की हैं की ब्रह्मा सो कृष्ण देखो दिखलाते भी हैं ना वो विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा निकला तो विष्णु कौन है लक्ष्मी नारायण फिर उन्हें छोटेपन में राधे कृष्ण कहो तो उसको विष्णु । तो यह विष्णु से लक्ष्मीनारायण सो ब्रह्म यानी सतयुग के लक्ष्मी नारायण से जन्म लेते लेते अंत में जाकर फिर ब्रह्मा सो विष्णु तो परमात्मा जब आते हैं तो ब्रह्मा के तन में आएगा या विष्णु के यानी लक्ष्मी नारायण के। नहीं, वो आएगा ब्रह्मा तन में

लक्ष्मी नारायण में आके क्या करेगा वह तो उसे बनाना है ना । नहीं वो आएगा लास्ट में ब्रह्मा के तन में आ कर के फिर परमात्मा निराकार उसको ऐसा बनाता है । तो ब्रह्मा सो विष्णु अर्थात लक्ष्मी नारायण, वह पवित्र देवी देवताए और यह गाते भी हैं कि प्रजापिता ब्रह्मा देखो कहते भी हैं ना कि प्रजापिता ब्रह्मा अर्थात ब्रह्मा द्वारा आकर के प्रजा रची तो कौन सी प्रजा? ये ही नई दुनिया । तो परमात्मा आ करके ब्रह्मा के तन में से बैठ करके ब्रह्मा के द्वारा क्रिएट कराते हैं। ब्रह्मा को कहते भी हैं ब्रह्मा द क्रिएटर यानी ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा ने नई दुनिया करके रचाई थी इसीलिए कहते हैं उनके द्वारा बैठकर के मनुष्य को पवित्रता का नॉलेज देकर के पवित्र बनाता हूँ जिनको फिर ब्राह्मण कहते हैं। तो ब्राह्मण सो देवता। एक जन्म पहले ब्राह्मण उन्हों को बनाता हूँ आकर के शूद्र से ब्राह्मण फिर ब्राह्मण सो देवता यह सभी चीजें समझने की है ना। अब तो यह कोई अच्छे से आकर के समझे सुने और तभी कोई समझ सके बाकी कोई भले ऐसे ही टेप सुने या ऐसे ही लिटरेचर पढ़े, ऐसे ही इन तरीकों से नहीं समझ पाएंगे। यह तो जब कोई रूबरू सम्मुख आ करके समझे सन्मुख कोई बात नहीं समझ आए और फिर पूछ भी सके और समझ भी सके और यह तो सन्मुख समझने की बातें हैं अगर सन्मुख का महत्व ना होता तो परमात्मा भी क्यों आता अवतरित क्यों होता । उनको भी उतर के सन्मुख आकर के समझाने की जरूरत पड़ती है ना तभी तो वह भी कहते हैं मैं भी आता हूँ । मैं

भी अवतरण इसीलिए लेता हूँ, नहीं तो मैं भी अंदर-अंदर से ऐसे ही प्रेरणा द्वारा ऐसे ही ऐसे समझा लेता न । नहीं, वह कहते हैं मुझे आकर के समझाना पड़ता है तो मुझे भी आना पड़ता है ना। तो यह सभी बातें हैं सन्मुख समझने की और समझकर के उसी पर चलने की और चलना क्या है वह भी देखो अभी बाप बैठ करके हमको सिखा रहे हैं ना ये हमारा कॉलेज किस लिए है बाप बैठ करके समझाते हैं, यह बाप की कॉलेज है ना। इसका नाम ही है ईश्वरीय विश्वविद्यालय यानी ईश्वर का विश्वविद्यालय है। पढ़ाता कौन हैं स्वयं ईश्वर, इसका टीचर कौन है स्वयं ईश्वर यानी परमात्मा । क्या पढ़ा रहा है मनुष्य को देवता बनने की पढ़ाई, नारी को लक्ष्मी नर को नारायण बनाने की पढ़ाई तो अभी देखो पढ़ा रहे हैं। तो हम क्या बन रहे हैं नर से नारायण नारी से लक्ष्मी यानी हम जो नर नारायण थे अभी देखो क्या हो गए हैं । अब फिर हमको ऐसा बनने का है । कैसे बनेंगे? बाप कहते हैं बच्चे भी होली एंड बी योगी अर्थात पवित्र रहो पांच विकारों को छोड़ो, इन विकारों को ही रावण कहा जाता है। ये जो रावण का दस शीश का भी दिखाते हैं ना यह भी सिंबल है पांच विकार स्त्री के पांच विकार पुरुष के बाकी दस शीश कभी किसी जमाने में किसी को हुआ ही नहीं । मनुष्य को तो सिर्फ एक ही सिर है ना। देवताए भी थे तो भी एक ही सिर है ऐसे नहीं कभी किसी को तीन सिर चार भुजाएं ये तो सभी अलंकार हैं, अलंकार का मतलब निशानियां है अर्थ है इनका। बाकी ऐसे नहीं है मनुष्य ऐसे होते हैं

चार भुजाओं वाले तीन आंखों वाले तीन सिर वाले नहीं । तो ये सब समझना है तो का भी अर्थ है स्त्री के पांच विकार और पुरुष के पांच विकार उसको मिलाकर कहा जाता है अपवित्र प्रवृत्ति का संसार अथवा राज्य । तो अभी देखो राज्य किसका है विकारों का इसलिए इसको कहा जाता है रावण राज्य तो इसीलिए परमात्मा कहते हैं अभी रावण को नाश करो अर्थात विकारों को नाश करो तो यह सभी बातों को समझना है ना और यह जो चतुर्भुज देखो चार भुजाओं का दिखाते हैं इनका भी मीनिंग है की दो भुजा नारी की दो भुजा नर की यानी पवित्र नर नारी वह चतुर्भुज देवता का रूप दिखाते हैं ना और रावण का भयंकर रूप दिखाते हैं तो यह विकारों का सिंबल और वह देवताओं का कि ऐसा नर-नारी बनना है। लक्ष्मी चतुर्भुज भी दिखाते हैं तो दो भुजा है नारायण की, नारायण पीछे हैं लक्ष्मी आगे हैं और वो फिर विष्णु का दिखाते हैं तो नारायण आगे हैं लक्ष्मी पीछे हैं परंतु है दोनों कंबाइंड, तो कंबाइंड का फिर फोटो निकाला हुआ है तो यह सब चीजों को समझने का है। तो देखो हर बात के अर्थ को समझना है । अर्थ को यथार्थ जानने को ही ज्ञान कहा जाता है । गीता में भी कहां है मुझे अर्थ स्वरूप परमात्मा को जानने से ही तुम्हें मेरी यथार्थ जो ताकत है वह कर सकेंगे बाकी ऐसे नहीं है जैसे कि समझो सब परमात्मा ही परमात्मा है, नहीं , परमात्मा खुद ही परमात्मा है बाकी हम सब मनुष्य है परंतु मनुष्यों में भी वो देवता है हम देखो अभी नीचे गिर आए हैं तो यह सभी चीजें समझने की है तो सबकी स्टेज

समझने की है ना । सब मिल मिलाकर एक ही कैसे होगा। एक ही एक मिनिस्टर भी एक गवर्नमेंट भी एक तो कलेक्टर भी एक तब एक ही एक, जब एक ही एक है तो अलग पोस्ट क्यों है अलग ऑक्यूपेशन क्यों है फिर तो मिनिस्टर का काम गवर्नर गवर्नर का काम कलेक्टर करता रहे परंतु नहीं, तो यह सभी चीजें समझने की है ना इसीलिए बाप कहते हैं मेरा ऑक्यूपेशन की मैं भी क्या हूँ मुझे भी यथार्थ समझो । तू क्या है हे आत्मा तू अपने को भी समझ, अभी तुम मेरा इंसल्ट क्यों करते हो। मानो परमात्मा गिरा ऐसा हो गया है ना। तो मैं थोड़ी गिरा हूँ । मैं कभी गिरता नहीं, कभी चलता नहीं मैं तो एवर प्योर हूँ बाकी तू आत्मा इमप्योर फिर प्योर आत्मा इमप्योर से प्योर बनती है और उसको बनना है। बाकी ऐसे नहीं है कि मैं कोई इमप्योर और प्योर बनता हूँ मैं तो हूँ ही एवर प्योर तो इन सभी बातों को अच्छी तरह से समझना है ना इसीलिए हमारे भारत का देखो श्री कृष्ण बहुत लाडला और प्रिय है भारत वासियों को क्योंकि यह मनुष्यों की एम एंड ऑब्जेक्ट है यानी हम मनुष्य इतने उच्चतम थे लेकिन अभी उनसे गिरे हैं। अभी हमको फिर ऐसा ऊंचा बनने का है लेकिन बनाने वाला कौन परमपिता परमात्मा, जिसने कहा है यदा यदा ही यानी जब जब ऐसा अधर्म होता है यानी तुम गिर पड़ते हो तभी मैं आता हूँ तुम को चढ़ाने के लिए । तो तुम्हारी चढ़ी हुई स्थिति कौन सी है? यही सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी तो समझना चाहिए ना कि मनुष्य को आखिर क्या बनने

का है और बनाने वाला कौन। तो बनाने वाला अलग, बनाने वाला नहीं गिरा है या उनको चढ़ना है नहीं, बनाने वाला तो एवर प्योर है ना बाकी गिरे हैं तो हम मनुष्य, जो दुर्गति में आए हैं उन्हीं को ही सद्गति मिलनी है तो सद्गति की बायोग्राफी को भी समझना है ना की सद्गति वाले कौन से मनुष्य हैं। अभी देखो दुर्गति वाले कौन से मनुष्य हैं, भाई देख लो सामने बैठे हो ना, यह है दुर्गति पाए हुए मनुष्य। तो दुर्गति की दुनिया और दुर्गति पाए हुए मनुष्य की बायोग्राफी जो सामने है कि भाई आज की दुनिया कलयुगी तमोप्रधान, दुःख अशांति वाली जो मनुष्य की लाइफ देख रहे हो। तो जरुर सद्गति भी तो कोई दुनिया होगी ना। ऐसे तो नहीं है ना सद्गति बस कोई नाम हो गया । नहीं, सद्गति की भी दुनिया थी जिसको स्वर्ग भी कहते हैं । तो स्वर्ग को भी दुनिया कहा जाता है लेकिन अभी नहीं है। कई समझते हैं स्वर्ग भी इधर नर्क भी इधर जो कहीं देखते हैं ना धनवान है तो समझते हैं कि यह सुखी है लेकिन नहीं यह नर्क का स्वर्ग है । इस रावण का स्वर्ग इसको कहेंगे रावण का स्वर्ग यानी विकारों का । वह स्वर्ग जो परमपिता परमात्मा ने बनाया ना वह तो स्वर्ग स्वर्ग था तो उसमे कोई दुःख का नाम निशान नहीं था । यह तो रावण का स्वर्ग है रावण की थोड़ा बहुत उसका सुख उसको थोड़ी स्वर्ग कहेंगे नहीं तो यह सभी चीजों को समझने का है ना इसीलिए बाप कहते हैं मेरा जो स्वर्ग था ना, राम ने आकर के जो दुनिया को स्वर्ग बनाया। राम कहा जाता है निराकार परमात्मा को लेकिन त्रेता

का एक राजा जो था ना राम उसका भी नाम था जैसे यहां भी बहुत रामचंद्र कृष्ण चंद्र आदि नाम रख लेते हैं तो वह भी त्रेता का एक राजा था जिसका नाम था राम परंतु वह तो महिमा है निराकार परमात्मा की, राम उसको कहा जाता है तो उसने आ करके रावण को मरवाया यानी अधर्म को नाश करवाया। तो अधर्म नाश कहो या रावण नाच कहो बात एक ही है। परंतु यह सभी बायोग्राफी हिस्ट्री आदि लिखने वालों ने बना दी है कि भई राम आया रावण को मारा तो राम कोई त्रेता वंश वाला नहीं । नहीं राम निराकार परमात्मा जिसने आ करके अधर्म का नाश किया यानी रावण को नाश किया बाकी ऐसा नहीं दस शीश वाला कोई आदमी था या राजा था जिसको मारा । नहीं मारा यानी विकारों को मरवाया, अधर्म का नाश किया, यह अधर्म की सिंबल है। अधर्म नाश कहो या रावण नाश कहो बात एक ही है । यह सभी चीजों को समझना है ना तो नाश करके अधर्म फिर परमात्मा ने क्या बनाया संसार को भई ऐसा राम कृष्ण जैसे देवता। ऐसे मनुष्य अथवा देवताओं का संसार बनाया फिर ऐसे संसार में सदा सुख था। कहते हैं ना राम राजा राम प्रजा राम साहूकार है बसे नगरी जिये दाता धर्म का उपकार है। कहते हैं उस समय में शेर बकरी एक घाट पर पानी पी सकते थे। कभी कोई लड़ाई झगड़े नहीं थे तो यह सभी चीजें समझने की है। बाकी यह तो बहुत बातें लगा दी है ना राम की सीता चुराई गई अभी राम कि वह राजाराम की सीता थोड़ी चुराई गई । ये हम सीताएं देखो सीताएं हैं ना निराकार

परमात्मा की जो उसको याद करते हैं हम चुराई गई हैं । हमें किसने चुराया है विकारों ने, रावण ने, तो हमको रावण ने चुराया है। बाकी वह सीता उस राजा की थोड़ी चुराई गई थी । अभी देखो यह उल्टी बात हो गई ना तो उन्होंने जाकर के राजा के ऊपर लगा दिया है कि राम की सीता चुराई गई और वहाँ ले गए अभी वहाँ की यह बात थोड़ी है जहाँ कहते हैं राम राजा राम प्रजा राम साहुकार बसे नगरी जिये दाता धर्म का उपकार है, ऐसी जगह पर ऐसा अधर्म हो कि खुद राजा की कोई औरत चुरा के ले जाए आज राजा की या किसी मिनिस्टर की कोई औरत लेकर जाए कितनी बड़ी बात हो जाए तो उस जमाने में अगर राजा राम की कोई सीता चुराई जाए यह कैसे हो सकता है, ऐसा अधर्म का जमाना और नहीं होगा । तो यह तो बात ही नहीं है ना वह उस टाइम की बातें नहीं है। तो यह सभी चीजें समझने की है तो वह समझते हैं कि यह फिर भगवान ने मर्यादा दिखलाई है । मर्यादा इस तरीके से थोड़ी, भगवान तो निराकार है उसने आकर के इंसान को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया है। कैसे बनाया है पांच विकारों से छुड़ा करके फिर ऐसा सर्वगुण संपन्न देवता बनाया है। तो मनुष्य को देवता बनाया है और ग्रंथों में भी कहते हैं ना गुरु नानक देव जी के ग्रंथ में भी है मानस से देवता किए करत न लागी वार, उसका अर्थ ही है मनुष्य को देवता बनाने में परमात्मा को समय नहीं लगा। तो मनुष्य को देवता बनना है मनुष्य को परमात्मा नहीं बनना है। परमात्मा तो परमात्मा ही है ना तो यह सभी चीजों को

समझना है इसीलिए शिव और श्री कृष्ण का संबंध क्या है यह बातें समझने की है की श्री कृष्ण शिव का बच्चा था अर्थात शिव निराकार को कहा जाता है ना कि शंकर को। शंकर भी उसका बच्चा था शिव का। तो यह सभी चीजें समझने की है तो शिव ज्योतिर्लिंगम निराकार परमात्मा। गीता में भी कहा है ना, जब परमात्म साक्षात्कार अर्जुन को कराया तो कहा है कि उसका तेज हज़ारों सूर्यों से भी अधिक तीखा है वह किसका ? वह वही ज्योतिर्लिंगम निराकार परमात्मा का । तो देखो सामने खड़े होकर भी उनको दिखलाया अपना निराकार परमात्म रूप। तो देखो उसमे कहा ना कि उनका तेज हजार सूर्य से भी तीखा है। तो उसमें तो लगा दिया है परंतु उसका मतलब निराकार स्टार लाइट बिंदी उसका साक्षात्कार हुआ। तो यह सभी चीजें समझने की है कि निराकार को ही परमात्मा कहा जाता है लेकिन बैठ कर के जो ज्ञान दिया ना वह ब्रह्मा तन से दिया और फिर उसी को ही ऐसा सर्वगुण संपन्न श्रीराम श्री कृष्ण जैसा बैठ करके बनाया । तो इसीलिए हम भारतवासियों का श्री कृष्ण इतना लाडला है क्योंकि हम मनुष्य ही इतने ऊंचे थे और ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण थे। परंतु यह सभी ना जाने के कारण उसके ऊपर भगवान नाम देने से अभी भगवान का महत्व हटा दिया है और देवता का भी महत्व हटा दिया है भाई मनुष्य इतना ऊंचा हो सकते हैं वह चीज हट गई और भगवान निराकार है वह भी बात नहीं रही । अगर आज देखो भारतवासी ऐसा समझते कि यह भारत का भगवान

निराकार परमात्मा आया था तो देखो हमारी जो भगवद्गीता है ना, कहते हैं ना भगवत गीता देखो नाम भी है तो ज्ञान गीता का मान भी बड़ा हो जाता क्योंकि वह भगवान ने बतलाया है ना। अभी कृष्ण को तो सभी धर्म वाले भगवान नहीं समझेंगे ना वह तो खाली भारतवासी ही समझेंगे तो भगवान तो निराकार है ना लेकिन उसने आ करके ऐसा सर्वगुण संपन्न बनाया। तो यह सभी बातों को अच्छी तरह से समझने का है और हर एक बात को यथार्थ समझने को ही ज्ञान कहा जाता है। बाकी ऐसे नहीं सब मिला करके एक ही एक, एक ही एक। वह तो ज्ञान कोई ज्ञान ही नहीं है ना। तो यह सभी चीजों को समझना है और समझ करके यथार्थ रीति से और उसको फिर यथार्थ पाना है। तो यह सभी बातें हैं जिस को अच्छी तरह से बुद्धि में रखना है। ये क्यों समझाई जाती है क्योंकि बहुत इन्हीं बातों में बिचारे मूंझे पड़े हैं। ऐसे भी नहीं है कि जैसे बहुत ऐसे समझते हैं कि यह शायद खाली शिव को मानते हैं। अभी शिव और शंकर को भी बहुत नहीं समझते हैं ना तो समझते हैं यह शंकर के पुजारी हैं। शंकर भी बच्चा था शिव का। शिव कहा जाता है उस ज्योतिर्लिंगम को तो यह सभी चीजें समझने की है ना। इसीलिए वह निराकार परमात्मा और परमात्मा ने जो काम किया उसकी सिद्धि क्या उसकी सिद्धि यह सर्वगुण संपन्न श्री कृष्ण जैसे श्री राम जैसे मनुष्य को बनाया जिसके लिए कहा मैं आता हूँ सतयुगी सतधर्म की दुनिया बनाता हूँ । तो सतधर्म वाले मनुष्य कौन से थे उन्हों की कोई बायोग्राफी तो चाहिए

ना वो ये परंतु उन देवताओं की भी बायोग्राफी को यथार्थ ना समझने के कारण श्री कृष्ण को भी 108 रानियाँ आदि बातें लगा दी है। नहीं तो 108 रानियां श्रीकृष्ण को नहीं थी । यह सभी बातें समझने की है वह श्रीकृष्ण तो मर्यादा पुरुषोत्तम था बहुत ऊंचा था । उस जैसा मनुष्य ऊंचे से ऊंचा कोई है नहीं । सबसे ऊंचे में ऊंचा मनुष्य देवता उनकी महिमा तो बहुत ऊंची है । तो ऐसे के ऊपर ऐसी बातें रखना इसीलिए देखो क्रिश्चन लोग भी हैं ना वह अपने धर्म में कन्वर्ट करने के लिए फिर ऐसी एसी ग्लानी की बातें बताते हैं देखो आपका भगवान कैसा था जिसको 108 रानियाँ थी। आपके भगवान की औरत चुराई गई और दूसरा भगवान तुम्हारा दूसरों की औरत चुराता था। वो कहते हैं रुकमणी श्री कृष्ण ने चुराई तो वह बैठकर के उन्होंने देखो यह भगवान तुम्हारा दूसरों की औरत चुराते थे और दूसरे भगवान की औरत कोई खुद चुरा कर ले गया देखो तुम्हारे भगवान कैसे भगवान थे परंतु क्या है कि भारतवासियों ने अपने पूज्य देवता अर्थात पूजनीय देवताओं के ऊपर भी ऐसी बातें लगा रखी है ना इसीलिए नहीं तो इसका अर्थ है कि सीता चुराई गई तो उस राम की थोड़े ही। यह निराकार परमात्मा कहते हैं मेरी तुम सीताएं यानी आत्माएं तुम चुराई गई हो यानी तुम को रावण ले गया है यानी पांच विकार और मैंने भगवान कहते हैं मैंने आ करके तुमको आ करके कॉलेज में पढ़ाया है जिसमें से एक सो आठ नंबर मुख्य जो पास हुए हैं मुख्य एक सो आठ की वैजयंती माला सिमरते हैं तो यह एक सो आठ नंबर

है जिन्होंने बैठकर के पांच विकारों इस ज्ञान से पूर्ण जीता है और जिन्होंने जीता है उन्हों को देखो वो मनुष्य सतयुगी में राजा महाराजा बनें हैं तो वो फिर अभी की बात है जब परमात्मा आया है । बाकी ऐसे नहीं श्रीकृष्ण को एक सो आठ रानियाँ थी । ये एक सो आठ मेरे बच्चे थे तो कहाँ भगवान के बच्चे जिन्होंने विन किया है, जिन्होंने बैठकर के ये पांच विकारों को जीता है उसका यह नंबर है और कहाँ फिर ये कृष्ण के साथ लगा दिया तो देखो वही बात हो गई ना । वही बात हो गई के जैसे गाँधी के बायोग्राफी के ऊपर अगर नेहरू का नाम दिया जाए तो कितना रोला आ जाए। ना नेहरू की बायोग्राफी सिद्ध होगी ना गांधी की तो ये भी बात है कि भगवान की बायोग्राफी के ऊपर उसके बच्चे का नाम दे दिया है बच्चे की भी बायोग्राफी सिद्ध नहीं होती है श्रीकृष्ण की और ना भगवान की । तो यह सभी समझना है ना तो इसका मतलब ye नहीं कई शायद समझते हैं कि ये शायद श्रीकृष्ण को मानते नहीं । श्री कृष्ण को हम जितना मानते हैं ना इतना कोई मान नहीं सकता क्योंकि हम हम वही तो बनने का अर्थात हम वही संपूर्ण सर्वगुण संपन्न बनने का प्रयत्न रखते हैं। हम उनको पूजनीय समझते हैं ना तो हम पूजनीय इतने ऊंचे थे अभी देखो पुजारी खुद ही कहते है ना आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी और वो है एवर पूज्य। मनुष्य पूजनीय लायक बने, बनाया किसने ? परमात्मा ने। तो यह सभी चीजों को समझने का है ना। तो बाप बैठ करके अभी समझाते हैं तो हर एक बात को भी समझना है। बाकी

ऐसे नहीं है कि बस देखो हमारे पास तो देखो यह श्री कृष्ण का कितना मान है। बतलाते हैं समझाते हैं कि देखो यही फिर कितना ऊंचा सतयुग का मुख्य यही था। यही तो अभी परमात्मा आके ऐसा संसार बनाते हैं। तो यह मनुष्य की स्टैटस है लेकिन परमात्मा निराकार की स्टैटस तो निराकार की हुई ना । यह सभी चीजों को समझना है और समझ कर फिर इसी मुताबिक चलने का है तो अभी क्या करना है । बी होली एंड बी योगी अर्थात पांच विकारों को छोड़ने का है और जो पापों का बोझ है उसके ऊपर वह भी परमात्मा कहता है अभी मुझे याद करो जिसको राजयोग और उसी द्वारा फिर तुम्हारे योग के पावर से तुम्हारे पाप दग्ध होंगे यह सभी चीजों को समझने का है ना । तो अभी उसे याद करना है । योग का मतलब है याद बाकी ऐसे नहीं आसन लगाना है, यह करना है नहीं, याद चलते-फिरते घर गृहस्थी में रहते, जिसको कर्म योग कहा । इसके लिए कोई घर बार छोड़ने का नहीं है । भगवान ने आ करके वही शिक्षा दी है की गृहस्थ आश्रम गृहस्थ धर्म । लाते में भी कहते हैं धर्मपति धर्मपत्नी ये सब हैं ना । ये सभी चीजें समझने की हैं अच्छी तरीके से । अच्छा, बापदादा अभी समझ गए हैं ना बाप कौन दादा कौन, यह सभी समझना है । तो बाप दादा और माँ के मीठे मीठे बहुत अच्छे सपूत बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

मम्मा मुरली मधुबन

30. परमात्मा का कर्तव्य - 2

गुड मॉर्निंग । आज सोमवार अप्रैल की छबीस तारीख है। प्रातः क्लास में प्राण मां की मुरली सुनते हैं।

रिकॉर्ड:

तुम ही हो माता पिता तुम ही हो

यह महिमा सुनी अपने बेहद के बाप की क्योंकि यह कोई कॉमन मनुष्य की ऐसी महिमा नहीं हो सकती । यह उसी एक की महिमा है, जो इस महिमा का अधिकारी है । यह उनकी महिमा उनके कर्तव्य अनुसार है गाई जाती है । उसका कर्तव्य सभी मनुष्य आत्माओं से महान है क्योंकि सभी मनुष्य आत्माओं के लिए ही उसका कर्तव्य है तो वह सबसे ऊंचा हो गया ना क्योंकि सबके लिए, सबका गति-सद्गति दाता एक ही है । ऐसे नहीं कहेंगे थोड़ो की गति-सद्गति दाता है। नहीं, सर्व का, तो सर्व की अथॉरिटी हो गई ना । तो सबका गति सद्गति दाता एक । तो वह एक जो है, उसने आकर के हम सबके लिए क्या महान कर्तव्य किया है जिसकी महिमा है और महिमा होती भी तभी है, वैसे भी कॉमन तरीके से भी देखा जाए तो महिमा होती भी तभी है जब कोई कर्तव्य करता है । भाई गांधी ने

कुछ किया, फलाने ने कुछ किया जिन्हों-जिन्होंने ने कुछ ना कुछ थोड़ा-बहुत जैसा-जैसा भी काम किया है तो उसकी देखो महिमा है । तो बाप की भी जो महिमा है, वह भी ऐसे ही नहीं है क्योंकि वह है ही ऊंचा इसीलिए नहीं । उसने काम ऊंचा किया है तो उसके भी कर्तव्य की महिमा है। उसकी भी बिना कर्तव्य के महिमा नहीं है। यहाँ आकर के उसने महान कर्तव्य किया है और वह हमारे संबंध में कर्तव्य है तभी तो हम गाते हैं ना, नहीं तो हम क्यों गाते । हम जो उसकी महिमा गाते हैं और महिमा करते हैं उसे याद करते हैं तो जरूर हमारे लिए किया है । तो हमारे लिए किया है और उसने सबसे ऊंचा कर्तव्य किया है इसलिए सबसे ऊंची उसकी महिमा है । तो यह है उसी बाप की महिमा जिसने हमारे लिए, मनुष्य सृष्टि के लिए कहेंगे महान ऊंच कर्तव्य किया है क्योंकि इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता उसे कहा जाता है ना । तो उसने आकर के मनुष्य सृष्टि को ऊंच बनाया है । सृष्टि को, कोई थोड़े आदमियों को, या थोड़ी संख्या को या किसको ऐसा नहीं है । उसने आकर के सारी सृष्टि को बनाया है। उसमें सब आ जाता है न, यह तत्व आदि सब आ जाता है जिस सब को आकर के परिवर्तन में लाया है । लेकिन लाया किस युक्ति से है वह बैठ करके समझाते हैं कि ऐसे नहीं है, पहले मनुष्य आत्मा, आत्मा को चेंज में लाने से फिर आत्मा के बल से अपने कर्म के बल के आधार से फिर आत्मा का शरीर, फिर उस शरीरधारी मनुष्य के लिए ये सब प्रकृति तत्व आदि पर भी उनका बल काम करता है

लेकिन बनाने वाला तो हो वह हो गया ना इसलिए बनाने वाला वह, परंतु बनाते कैसे हैं जब तलक मनुष्य आत्माएं ना ऊंची बने, तब तलक आत्मा के आधार से शरीर, प्रकृति तत्व आदी यह सभी नंबरवार उसी ताकत में आते हैं। उससे फिर यह सारी सृष्टि हरी-भरी कहो या सृष्टि कहो सुखदाई बनती है। तो सुखदाई बनाने वाला बाप जानता है कि मनुष्य सृष्टि सुखदाई बनेगी कैसे, जब तलक आत्माएं स्वच्छ ना बनी है तब तलक संसार सुखदाई नहीं हो सकता है इसीलिए वह आते हैं पहले-पहले आत्माओं को ही आकर के स्वच्छ बनाते हैं । तो स्वच्छता वहाँ से होगी क्योंकि लगी भी आत्मा को है ना। जो भी कुछ लगा है इंप्योरिटी वह लगी है आत्मा को । तो जब तलक वहाँ से इंप्योरिटी ना निकली है तब तलक हर चीज से इंप्योरिटी निकल नहीं सकती है । तो पहले पहले निकलनी है उनसे, आत्मा से तो फिर आत्मा के बल से हर चीज से उनकी इमप्योरिटी अर्थात तमोप्रधानता जो है वह बदल कर के सतोप्रधानता हो जाएगी जिसको कहेंगे कि सभी गोल्डन एजेड में आ जाते हैं तो फिर यह तत्व आदि भी गोल्डन एजेड स्टेज में आ जाते हैं, परंतु पहले स्टेज किसकी बदलेगी, आत्मा की इसीलिए आत्माओं का बदलाने वाला अर्थात आत्माओं को प्यूरीफाइड बनाने वाला फिर अथॉरिटी वह हो गया । तो वह बाप जानता है ना कि यह संसार अथवा दुनिया भी बदलेगी कैसे । तो बदलने वाला वह इसी तरीके से आकर के हमको बदलते हैं अर्थात हमारी दुनिया को बदलते हैं । फिर देखते हो ना

दुनिया बदलती जा रही है। बदलते जा रहे हो ना, पहले तो अपने को बदलना है ना । हम अपने को बदलेंगे उसके आधार से फिर दुनिया बदलेगी तो अभी बदलते जाते हो अपने बदलाव को देखते जाते हो? क्योंकि अपने को जांचते जाना है अथवा देखते जाना है कि हम अपने में बदलते जा रहे हैं, हमारे में क्या फर्क आया है । अगर फर्क नहीं आया है, इधर नहीं बदले हैं, अपने मैं नहीं बदले हैं तो फिर हाँ, बदली हुई दुनिया में नहीं आएंगे । इसीलिए पहले देखना है, अंदाजा अपना लगाना है अपने से कि हम अपने में बदले हैं? तो अपनी जांच रखो रोज रात को , तो सारा दिन जब बीतता है रात को अपनी जांच करो । जैसे पोतामेल रखने वाले रात को अपना खाता देखते हैं ना कि हाँ क्या जमा हुआ, क्या निकला, क्या हुआ सब अपना हिसाब रखते हैं तो यह भी अपना सारा पोतामेल रखने का है तो फिर जांच करो कि हमारे सारे दिन में कितना फायदा रहा, कितना नुकसान रहा, क्या नुकसान में गया, क्या फायदे में आया, अगर नुकसान में कुछ ज्यादा गया तो फिर दूसरे दिन के लिए खबरदार रहना है कि नुकसान ना हो फायदे में आवे तो इसी तरीके से अपना अटेंशन रखने से फिर हम फायदे में जाते-जाते अपने को ठीक अपनी जो पोजीशन है उसको पकड़ते चलेंगे तो यह अपनी जांच रखने की । तो ऐसी जांच रखते और अपने को बदलता हुआ देखना है कि हम बदलते जा रहे हैं वह महसूस होना चाहिए ना । ऐसे नहीं हम सो देवता बनेंगे वह तो पीछे बनेंगे अभी जैसे हैं वैसे ही । नहीं, वह

बदलने का तो यहाँ ही मालूम पड़ेगा ना कि हमारे में हमारे में हमारे संस्कार में क्या परिवर्तन है । हमारे को क्या पता चलेगा । हमारे संस्कार आगे जो पांच विकारों के वश संस्कार चलते थे, अभी देखना है कि उस विकारों से हम छूटते जा रहे हैं तो फिर वह छूटे हुए दिखाई पड़ेंगे ना । आगे क्रोध था भई हमारे में ज्यादा, अभी हम देखते हैं कि हमारे में वह क्रोध निकलता जा रहा है अथवा हमारे में लोभ था, मोह था जो भी विकारों का है तो यह सभी बातों को देखते जाना है कि हमारे यह संस्कार बदलते जा रहे हैं । अगर बदलते जा रहे हैं छूटते जा रहे हैं तो मानो हम बदलते जा रहे हैं । अगर नहीं छोड़ते हैं तो समझेंगे अभी बदले नहीं हैं तो बदलने का फर्क महसूस होना चाहिए । अपने में चेंज आनी चाहिए तो यह जांच करनी है अपने से । तो यह रोज अपना देखना है क्योंकि हमारे रोज के जो हम सारा दिन करते हैं, उसी से ही तो हमारा खाता बनता है ना कर्मों का । तो जहाँ से बनता है वहाँ से ही तो हमको संभालना है ना । बाकी ऐसे नहीं है कि सारा दिन हम अपने विकारी खाते में चलते रहे बाकी समझे कि हमने अच्छा किया, कोई दान किया पुण्य किया बस उससे हमने अच्छा किया। नहीं, हमारा कर्म का जो खाता चलता है उसी में ही तो हमको संभलना है ना कि हम जो कुछ करते हैं वह हम कोई विकार के संग में अपना विक्रमी खाता तो नहीं बनाते हैं तो अपने को संभालना है । तो यह सारी जिसको कहा जाता है सारे दिन की दिनचर्या और यह सारा अपना पोतामेल रखने का है कि सारा

दिन कैसा बीता, तो यह रात को जाँचना है । जब सोते हैं ना तो सोने से पहले दस पंद्रह मिनट अपनी इन्हीं बातों को देना चाहिए। विचार रखना चाहिए कि आज सारा दिन हमारा कैसा बीता। कई होते हैं जो नोट भी करते हैं कि हाँ ख्याल में रहेगा आज हमारे से यह ऐसी बात ये क्रोधवश हुई । इस विकारी संग से यह बात हो गई, तो जो कुछ हो तो फिर दूसरे दिन के लिए खबरदार रहेंगे। तो यह सारे दिन का अपना रखना और साथ-साथ अपने पिछले पापों का भी जो बोझ है सिर पर उनके लिए भी अपना चार्ट रखना कि हां उनको भी तो हमें मिटाना है ना। तो उसे मिटाने के लिए बाप का फरमान है मुझे याद करो तो वह भी हमने कितना समय उस याद में दिया जो पिछले खाते का पाप का बोझा मिटे । तो यह चीजें ख्याल में रखने की है कि हम सारे दिन में अपना चार्ट अथवा सारे दिन की दिनचर्या कैसे रही तो यह ख्याल रखने से फिर हम दूसरे दिन के लिए सावधान रहेंगे । ऐसे सावधान रहते रहते सावधान हो जाएंगे फिर हमारे कर्म अच्छे रहते चलेंगे। फिर ऐसा कोई पाप नहीं होगा। तो पापों से ही तो बचना है ना । बुरा बनाते हैं हमको यह विकार और विकारों के कारण ही हम फिर दु:खी होते हैं क्योंकि पाप बनता है तब तो दुःख होता है ना । अभी हमने छूटना है दुःख से मुख्य चीज यही है बाकी और कोई बात तो नहीं है । परमात्मा को भी हम पुकारते हैं, याद करते हैं जो भी कुछ है यह सभी यत्न किसलिए हैं? चाहे सांसारिक पदार्थों के यत्न, चाहे यह ईश्वरीय मार्ग के यत्न काहे के

लिए हैं? अपने सुख और शांति के लिए, एम तो यही है ना । लेकिन वह एम् हमारे में आएगी कैसे हम पाएंगे कैसे उसका यह प्रैक्टिकल प्रैक्टिस जब उसमें आएंगे तभी तो होगा ना । तो यह है प्रैक्टिस इसीलिए इसको कहा ही जाता है प्रैक्टिकल कॉलेज, उस प्रैक्टिस के लिए जिससे हम अपने को स्वच्छ अथवा पवित्र बनाकर के फिर हमारा जो आदि सनातनी पवित्र प्रवृत्ति का आदर्श है वह हम पा लेते हैं । तो यह उसी की कॉलेज जैसे डॉक्टरी कॉलेज में कोई जाएगा डॉक्टर बनने के लिए तो डॉक्टरी प्रैक्टिस से डॉक्टर होता जाएगा ना । इसी तरह से हम भी इस कॉलेज में कहो या इस स्कूल में कहो, इस पढ़ाई से अथवा इस प्रैक्टिस से हम इन विकारों से अथवा पाप कर्म करने से कैसे छूट जाए, तो हमको उसकी प्रैक्टिस में चलना है। तो जितना हम उसकी प्रैक्टिस में रहेंगे उतना-उतना हम स्वच्छ होते जाएंगे। स्वच्छ की डिग्री क्या है देवता। ये देवता ही तो स्वच्छ गाए हुए हैं ना। उनकी ही तो महिमा है न सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकारी तो यह महिमा है न। तो बनना है, ऐसे नहीं है बने बनाए हैं । नहीं, बनना है क्योंकि हम ही बिगड़े हैं । हम ही देवता थे सो बिगड़े हैं अभी बिगड़े से फिर सुधारना है। तो यह हमको ही बनना है ना। ऐसे नहीं देवताएं कोई बैठे हैं, दूसरी कोई दुनिया है। नहीं, यह हम ही, मनुष्य ही देवता बनने के हैं और देवता ही फिर ऐसे हुए हैं, गिरे हैं अब फिर चढ़ना है । कैसा? तो फिर चढ़ना है ना अभी? लेकिन चढ़ने का भी ढंग बैठ करके बाप समझा रहा है। उसको

समझ के चलने का है। कैसा? ख्याल में है ना पूरा ?अच्छा! आते हैं सबका मुखड़ा देखने के लिए, खुश खैराफत पूछने के लिए। तो सब अपने बेहद बाप से जो बाप वर्सा देने के लिए वर्सा कहो या अपना ही हक कहो जो बाप के पास है। यह मिलेगी चीज उसी से ही, यह ख्याल में रखना है कि उसी से ही मिलेगा। तो जो चीज उसके द्वारा ही मिलने की है इसीलिए उसके साथ ही हमको अपना रिलेशन अभी जोड़ना है । टूट गया था रिलेशन, अभी बाप ने आकर की रोशनी दी है कि तुम मेरे हो अभी मेरे हो करके कैसे रहो। प्रैक्टिकल जैसे लौकिक में बाप बच्चों का बच्चे बाप का कैसे हो करके रहते हैं। रहते हो ना, देखो रह रहे हो, चल रहे हो ना । अभी बाप कहते हैं नहीं, मेरे होकर के रहो। प्रैक्टिकल तन मन धन से मेरे हो करके चलो । कैसे चलो, आदर्श है कि जिसके तन में आता है, उसने अपना तन मन धन किसका बना करके रखा, उनका रखा ना। जैसे वह प्रैक्टिकल में उनका हो कर के चल रहे हैं कहते हैं फॉलो फादर । अभी फॉलो करना है कि मनुष्य को क्या करना है वह वह मनुष्य से करा करके दिखाते हैं तो अभी करना है ना। तो अभी करते चलो। इसमें और कोई पूछने की और मूंछेंने की भी बात नहीं है। सीधी है ना साफ बात, तो अभी चलते रहो। अच्छा, टाइम हुआ अभी । क्योंकि सुनना है थोड़ा। एक एक बात बहुत मूल्य वाली है । ऐसे नहीं बहुत सुनो और धारण करो थोड़ा । नहीं, सुनो थोड़ा, धारण करो बहुत। करना तो प्रैक्टिकल धारण है ना इसीलिए जो सुनते हो उसको प्रैक्टिकल में कैसे

लाओ उसका पूरा ख्याल रखते रहो । तो अभी आप लोगों में यह प्रैक्टिकल डाली जाती है कि थोड़ा सुनो और धारण बहुत करो, नहीं तो बहुत सुनते हो ना, उसमें से थोड़ा उठाते हो । अभी सुनो थोड़ा और धारण करो बहुत वह प्रैक्टिस कराई जाती है। तो अभी थोड़ा सुनो और धारण करो बहुत ऐसी अपनी प्रैक्टिस को आगे बढ़ाते चलो । अगर कोई इसको एक अक्षर सुने और प्रैक्टिकल में लाए ना तो देखो क्या हो जाए, बस सुने और लाए । ऐसे नहीं सुनते रहे सुनते रहे। नहीं, सुने और लाए तो देखो क्या हो जाए। तो आज जो सुना उसको अगर कोई प्रैक्टिकल में लाए की बस आज से हम इसी स्टेज में चलेंगे। अपने से कोई विकार संग या कोई ऐसा काम नहीं करेंगे और अपनी ऐसी दिनचर्या और अपना ऐसा चार्ट ये रखेंगे, अगर इसको कोई प्रैक्टिकल प्रैक्टिस में उठाए और चले तो देखो क्या हो जाएगा। तो अभी इसकी प्रैक्टिस प्रैक्टिकल में लाओ। समझा! तो जो सुनते हो वो लाओ, अभी ऐसी प्रैक्टिस में चलना है बाकी नहीं तो बहुत सुना है। सुना है बहुत प्रैक्टिकल में बहुत थोड़ा करते हो इसीलिए अभी सुनाएंगे थोड़ा और प्रैक्टिकल प्रैक्टिस में बहुत लाने का ख्याल रखने का है । तो यह ध्यान रखना है प्रैक्टिकल प्रैक्टिस में चलें और उसकी प्रैक्टिकल की धारणा । कैसे हैं हमारे ये छोटे-छोटे मुंबई के लाडले फूल कहो, फूल कहें कली कहें? फूल? ओहो! अच्छा फूल कहो। भला फूल खुशबूदार कहें या क्या कहें? खुशबूदार । फूल कहीं बिना खुशबू के होते हैं? अच्छा, भला खुशबूदार में भी कौन सा फूल कहे?

गुलाब का कहें ? देखो तो यह तो बड़ा झाड़ लगाते गए हैं, कुछ नहीं छोड़ा। पहले कहा फूल कहो, पीछे कहा खुशबूदार कहो, फिर कहा गुलाब का कहो तो कंप्लीट जगह भर दी एकदम, बाकी कुछ रखी ही नहीं । बहुत अच्छा । अब जो कहा ना उसको प्रैक्टिकल में चलाओ । तो अभी ऐसी प्रैक्टिस करो की जो कहते हो जो सुनते हो वह करो, बस दूसरी बात नहीं । जो कहो, जो सुनो सो करो । करने के ऊपर जोर दो समझा । समझते हैं हमने क्या देखा, किस से मिले या बाबा ने क्या सुनाया, क्या हुआ उसका भी ज्ञान है ना तभी मजा है । नहीं तो बिना ज्ञान ऐसे भक्ति मार्ग में भी बहुत जाते हैं तो बस देखा फिर क्या । वो तो समझते हैं न, बस देखा ना हमारे स्वर्ग के खुल गए । हम पहुंच गए उधर । परंतु नहीं, देखो पहुंच थोड़ी ही जाते हैं। फिर उसको भेज देता उतार करके, कहते हैं अभी मेहनत करो। करेंगे तो अपने कर्म से ना। प्रैक्टिकल तो तभी जाएंगे जब अपने कर्म को बनाएंगे। बाकी तो अच्छा देखा जैसे स्वप्न । अच्छा ज्ञान जैसा मिला है और जैसा दादा को बनाया है अभी ऐसा बनने का है। फॉलो करना है तो ऐसा बाप और ऐसा दादा दोनों को जानते हो ना अच्छी तरह से अब फॉलो करो । ऐसे जो फॉलो करने वाले हैं सपूत बच्चे हैं अथवा मीठे मीठे बच्चे हैं ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

31. परमात्मा का कर्तव्य और मनुष्यों की मत

ओम शांति ।

याद में बैठे हो? जिसकी याद में बैठे हो उसको जानते हो ना ? ऐसे नहीं अंधविश्वास में बस ऐसे ही याद करें । नहीं, जान करके, समझ करके, ज्ञान सहित । इसीलिए यह गीता में भी है कि मुझे मेरे अर्थ स्वरूप से, जो मुझे याद रखते हैं उसको यथार्थ रीति से मेरी प्राप्ति होती है । यथार्थ रीति से मेरे अर्थ स्वरूप में, कहा है ओम के अर्थ स्वरूप में, तो ओम उसका अर्थ स्वरूप, तो अर्थ बुद्धि में है । तो ओम, आई एम दैट , दैट व्हाट ? सोल, परंतु प्योर सोल, सन ऑफ सुप्रीम सोल तो यह बुद्धि में है । तो आई एम फर्स्ट प्योर, अभी इंप्योर हुए हैं । तो अभी इंप्योरिटी से निकलकर के प्योर सोल, सन ऑफ सुप्रीम सोल बनना है । तो प्योर बनना है तब ही सन ऑफ सुप्रीम सोल ही है । तो यह अर्थ बुद्धि में रखना है कि हम उसकी संतान, तो प्योर, और प्योर ही उसकी संतान कहलाने का अधिकारी है । तो उसकी संतान प्योर होनी चाहिए और प्योर ही उसकी संतान हो सकती है तो यह अपनी बुद्धि में रखने का है । तो यह अर्थ है उसी अर्थ सहित उसे याद रखना है । इसको कहा जाता है ज्ञान सहित । ऐसे नहीं बस ऐसे ही, कैसे भी, किसी भी रूप से नहीं,

वह भी जो जैसा है, हम भी जो जैसे हैं । तो हम कैसे हैं फर्स्ट प्योर इसीलिए हम भी जो जैसे हैं, वैसे अपने को भी समझना है और वह भी जो जैसा है कि हम उसके बच्चे हैं, वह हमारे पिता है, उससे हमें प्राप्ति करनी है, उसको भी ऐसा ही समझ करके याद रखने का है । इसको कहा जाता है ज्ञान सहित, अर्थ सहित । तो अभी अर्थ तो बुद्धि में है ना । इसी को ही फिर गीता में भी कहा है कि मुझे यथार्थ रीती से, मेरे अर्थ स्वरूप को समझ करके मुझे जो याद करते हैं उसको मेरी प्राप्ति मेरे द्‌वारा होती है । क्योंकि मेरी प्राप्ति मेरे द्‌वारा ही हो सकती है , मैं ही आ करके अपना अर्थ, अपना नॉलेज यथार्थ समझाता हूँ । क्योंकि मेरे अर्थ को अथवा मेरे नॉलेज को, मेरे परिचय को, मेरे सिवा और कोई नहीं समझा सकता है इसलिए मेरा परिचय मैं देता हूँ इसलिए कहा है मेरे द्‌वारा । और कहा भी डायरेक्ट है ना, देखो कहा है मामेकम, मुझे याद करो तो यह किसने कहा ? परमात्मा ने स्वयं कहा तो अपनी याद के लिए भी उसने बैठ करके अपने साथ ही याद कराना सिखाया है, कोई दूसरे ने नहीं । दूसरा कहेगा तो कहेगा कि उसको याद करो । तो परमात्मा ने तो अपने साथ योग खुद सिखाया है ना । उसका माना वो सिखाने के लिए उनके पास ही नॉलेज है । मनुष्य नहीं सिखा सकता । जो उसको कहने वाले हैं न उन्हें वो यथार्थ परिचय नहीं है इसीलिए बाप कहते हैं मेरा परिचय मैं देता हूँ और मैं खुद आ करके कहता हूँ मामएकम, मुझ एक को । माम का मतलब ही मुझ और एकम तो एक को यानी

मुझ एक को याद करो । तो मुझ कहने वाला तो वह अथॉरिटी स्वयं है ना । मनुष्य थोड़ी कहेगा मुझ एक को याद करो । वह ऐसा नहीं कह सकता है । तो हमको याद सिखलाने वाला वही खुद चाहिए जिसको याद करना है । तो जिसको याद करना है वही सिखाने वाला चाहिए । ऐसे नहीं करना उसको है, सिखाने वाले दूसरे हों, नहीं वो ही । तो अभी उनके द्वारा हम सीख रहे हैं । वह कह रहा है कि बच्चे मुझे याद करो और बैठकर के बच्चों को समझा रहे हैं कि किस तरह से तुम मेरी संतान हो, संतान कितनी ऊंची थी, अब क्या हो गए हो । अब फिर आया हुआ हूँ जब तुम बच्चे दुःखी होते हो, अशांत होते हो और दुःखी होकर के पुकारते हो तो फिर आता हूँ । और पुकार भी देखो बहुत काल से भक्ति मार्ग में करते ही आए हो लेकिन आता हूँ जब भक्ति का भी टाइम पूरा रहे ना । उसका भी टाइम है । पहले भक्ति की भी स्टेज थी, जिसको अव्यभिचारी भक्ति कहने में आती थी । अव्यभिचारी समझते हो ना, एक की भक्ति, सिर्फ परमात्मा की। अभी तो देखो बहुतों की हो गई हुई है ना । देवताओं की, देवताओं में भी बहुत देवताओं की और उसमें भी फिर अनेक-अनेक की देखो गणेश, हनुमान । अभी यह तो कोई, ऐसे ना कभी कोई देवताए हुए हैं, ये सूंड वाले या वह बंदर की शक्ल वाले, ऐसी ऐसी न कोई देवियां ना देवताएं, कोई ऐसे मनुष्य कभी हुए नहीं है । यह तो अपनी-अपनी भावना का, कल्पना का बैठकर के बनाए हैं । फिर इनका अर्थ बैठ करके निकाले कि हाँ भाई मनुष्य जब है

देवता परंतु जनावर सदृश्य बन जाते हैं तो फिर परमात्मा ऐसे मनुष्यों को आ करके फिर देवता बनाते हैं । ऐसे जानवर जैसे परंतु जानवर जैसी शक्ल थोड़ी ही हो जाती है, सूंड थोड़ी आ जाएगी या बंदर थोड़ी ही बन जाएंगे जो जनावर दिखाए हैं परंतु हाँ बंदर मिसल । देखो अभी बंदर हो गए थे ना । पांच विकार में हम बंदर हो गए हैं । तो कहते हैं ना राम ने बंदर सेना ली । वह बतलाते हैं रामेश्वर पर कि रामसेतु पार किया तो बंदर सेना ले गया । अभी बंदर कोई इनह्यूमन बंदर थोड़े ही है । क्यों? भगवान को कोई सेना मिली नहीं? आजकल तो बहुत सेना है, और उनको बंदर की सेना की जरूरत पड़ी और वह समझते हैं कि यह शक्ति दिखलाई उसने । अभी कोई बंदर की सेना लेकर के शक्ति दिखलाने की क्या बात है । नहीं, वह बंदर का मतलब है मनुष्य जो पांच विकारवश बंदर मिसल है ना क्योंकि बंदर में विशेष विकार होते हैं । बंदर होता है ना बड़ा लोभी भी होता है । देखा है, उसको चने खिलाओ ना तो मुट्ठी में भी पकड़ेगा, मुख में भी डालेगा और पांव से भी पकड़ेगा, लोभी होता है बहुत, जो दो पकड़ता जाएगा, पकड़ता जाएगा तो लोभी होता है बहुत इसीलिए लोभ भी उसमें विशेष होता है । क्रोध भी उसमें विशेष होता है । कोई को बड़ा देखेगा न, कोई हाँथी भी देखेगा ना अपने से बड़ा तो गुर्रर । वो समझेगा नहीं की मैं इनसे छोटा हूँ यह मुझसे बड़ा है, नहीं, वह अभिमानी, क्रोधी, कामी भी और फिर मोह भी उसमें होता है । उसकी जो बंदरिया होती है न तो उनके जब बच्चे मरते हैं

ना, तो वह मरे हुए बच्चे भी वह साथ में लेकर घूमती फिरती है । तो देखो मरे हुए बच्चों को भी छोड़ेगी नहीं, मोह इतना है उसका । तो इसीलिए बंदर का शास्त्रों में भी मिसाल है कि अरे! तुम्हारे में विकार तो ऐसे हैं जैसे बंदर । तो यह है करतूत कि मनुष्य तू है तो मंदिर । देखो तुम आत्मा है पवित्र और तुम्हारा शरीर पवित्र तू है तो मन्दिर, चैतन्य मंदिर, वो जड़ मंदिर नहीं मूर्ति का लेकिन तू खुद स्वयं चैतन्य मंदिर हो, परंतु अपने को न जानने से देखो बंदर बन गया है । तो यह बंदर से मुशाबत मनुष्य की करतूत से । तो वह जो राम ने सेना ली ना, तो सेना किसकी ली ? पतित मनुष्यों की । देखो अभी परमात्मा आकर के हमको, हम भी वॉरियर्स है ना । हम वॉरियर्स हैं, कौन से वॉरियर्स हैं? रूहानी वॉरियर्स । वो जिस्मानी वॉरियर्स, हम रूहानी वॉरियर्स तो यह सेना ली है ना । अभी सब बंदर सेना है किसकी ? राम की । तो है असल में यह बात कि परमात्मा ने आकर के बंदरों को मंदिर बनाया है अर्थात बंदरों से पतितो को पावन बनाया है । पावन बना करके पावन किंगडम अर्थात स्वर्ग स्थापन किया है तो है यह बंदर सेना मनुष्य की बात है । यह बंदर सेना लेकर के और फिर परमात्मा ने बैठकर के यह संसार को स्वर्ग बनाया है । बाकी ऐसे नहीं वह इनह्यूमन बंदर ले गया है और जीता है लंका को, वो बैठ करके बताते हैं ना, लंका पर जीत पाने के लिए बंदर सेना ले गए । अभी कोई बंदर सेना की तो बात नहीं है न । यह है कि अभी राम, निराकार परमात्मा हम बन्दरों की, विकारी ही

कहें ना, विकारियो को ही बैठकर के मंदिर बना रहे हैं निर्विकारी इसीलिए उन्हों को लेकर के, पतितो को पावन बना करके और उनके द्‌वारा फिर पावन किंगडम हेवन कहो, स्वर्ग कहो या धर्म स्थापना कहो ऐसे आकर के करते हैं । तो यह सभी चीजें इनका अर्थ ऐसा है । अभी देखो शास्त्रकारो ने वो बंदर सेना लगा दी, बात देखो कितनी बदल गई । अभी बिचारे पढ़ने वाले समझते हैं कि शायद बंदर सेना ली और उधर देखो कृष्ण के साथ फिर गौएँ लगा दी कि वह गौएँ चराता था, यह करता था ऐसी बातें हैं ना । यह कई चित्रों में भी दिखलाते हैं ना तो उसके साथ गईयां दिखलाते हैं । अभी यह भी समझने की बात है की ऐसे नहीं है कि कृष्ण आया क्या यहाँ गौओं की गौशाला संभालने के लिए, ये गैयाँ संभालने के लिए ? यहाँ कोई है नहीं क्या संभालने के लिए । गौओं को संभालने के लिए आज कल तो इंवेंशंस बहुत है, अभी भगवान की क्या जरूरत है यहाँ आकर के गौएँ संभाले, क्या गंवार नहीं हैं क्या गौएँ संभालने वाले जो भगवान आकर के यह काम करें इधर । परंतु यह नहीं है, ये इनह्यूमन गौ के लिए नहीं है । यह वास्तव में ये हम सब गौ है । ये गौ क्यों कहा जाता है क्योंकि खास थोड़ा माताओं का रखा है ना और माताओं को आगे कहते भी थे ये माता तो जैसे गौ है ऐसे इसीलिए उनको गौ का नाम रख करके और गाया है ना तो भगवान ने कहा न इनको बिचारी को देखो कितना हटाया गया है बिचारी गौओं को, अबलाओं को तो कहा ये गौ तो फिर उनको वो गौ ऐसा रख दिया वो जनावर गऊ

लगा ली । बाकी वो इन ह्यूमन की तो बात ही नहीं की भगवान आया बंदर और गौ और यह इन ह्यूमन संभाले आ करके । वो यह संभालने आया है क्या ? उनके संभालने वाले कोई नहीं थे क्या, जो भगवान खास आएगा यह गौ और बंदर संभालने के लिए । नहीं, उसने तो आ करके मनुष्य को, नर और नारी को श्रेष्ठ बनाया है । उनका कार्य तो मनुष्य के प्रति रहा है और मनुष्य के श्रेष्ठ होने से सब चीजें इनह्यूमन भी तो जड़ आदि भी श्रेष्ठ हो ही जाती हैं । यह तो पहला मनुष्य को चेंज होना है ना, मनुष्य की पावर से फिर सब चीजें और मनुष्य को पावर मिलती है गॉड से । तो गॉड की पावर से मनुष्य और मनुष्य की पावर से फिर सब चीजें जो है ना, वह बदलती हैं । तो यह तो बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए उनको गउओ को लेने या बंदर आदि को लेने की तो कोई बात ही नहीं की उनकी बैठ करके सेवा करें या उनको बैठकर के कुछ करें, उसकी क्या दरकार है नहीं, तो यह सभी चीजें शास्त्रकारों ने कैसे फिर यह गौएँ लगा दी फिर यह तो बातें देखो बदल गई है ना अभी । तो ऐसी-ऐसी बातें लगाने से बहुत शास्त्रों को भी झूठा कर दिया है इसीलिए देखो क्रिश्चन लोग हैं ना वह जब बैठ करके जब अपना बनाते हैं ना कन्वर्ट करते हैं तो फिर यह सारी बातें सुनाते हैं कि तुम्हारा भगवान कृष्ण, अरे कृष्ण को देखो 108 रानियां थी कितना विकारी था । हमारा क्राइस्ट देखो, उसको कभी नहीं, उसको एक मेरी या कुछ ऐसा, सो भी उसको भी वर्जन से पैदा हुआ, ऐसा नहीं इसीलिए ऐसी अपनी-

अपनी महिमा करके कन्वर्ट करते हैं, अरे वह तुम्हारा भगवान, रामचंद्र भगवान, देखो उसकी सीता जो औरत थी ना, वह दूसरे चुरा के ले गए तुम्हारा भगवान कितना कमजोर है जिसकी औरत ही कोई चुरा कर ले जाए, ऐसी-ऐसी बातें वह क्रिश्चियन लोग सुना करके कन्वर्ट करते हैं कि तुम्हारे भगवान देखो ना एक तो दूसरों की औरतें चुरा के आते थे कृष्ण, वह है ना रुक्मणी चुराई, सत्यभामा चुराई, ऐसी-ऐसी बातें शास्त्रों में रखी हैं तो कहते हैं एक भगवान तो तुम्हारा दूसरों की औरतें चुराता था और दूसरे भगवान की कोई औरत चुरा के ले गया यह देखो तुम्हारे भगवान । यह है तुम्हारे भगवान हिंदुस्तानियों के भगवान देखो कैसे हैं । परंतु क्या है कि शास्त्रकारों ने ऐसी-ऐसी बातें रख दी, वो द्रोपदी को पांच पति ऎसी-ऐसी बातें । आज भी पंचकाल और इधर चकराता तरफ ऐसी ऐसी सिस्टम है, वो कहते हैं ना द्रोपदी को पांच पति हैं तो वह पांच पति करती हैं । हमारे पिता श्री भी गए थे जब चकराता तो वह बतलाते थे कि हां वो रखती हैं जितने पति होते हैं ना उतना वह पहनती है रिंग । तो जितने पति होते है उतने रिंग पहनती हैं, एक होता है तो एक, दो है तो दो तीन तो तीन इससे पता लगता है इसको कितना पति है । पांच पति करती है । तो देखो आज कितना अधर्म और कितना यह सभी बातें हो गई हैं क्योंकि वो कहा है ना की द्रौपदी को पांच पति था । अभी द्रौपदी कहाँ की बात, पांच पति कहाँ की बात । वो पांच पांडव थे, पांच पांडव का अर्थ है कोई ऐसे थोड़ी ही की द्रौपदी के पति

थे । ये तो बात ही नहीं है । वास्तव में द्रौपदी कोई एक की बात नहीं है, ये हैं ये सब द्रौपदिया और यह सब दुर्योधन । कहते हैं न द्रोपदी को दुर्योधन या पता नहीं दुशासन ने नंगन किया था ऐसा कुछ है शास्त्रों में । अभी इसका मतलब यही है कि विकारों में एक दो को नंगन करते हैं, तो हां पहले तो उसमें मेल आते हैं ना तो इसीलिए भाई दुशासन ने द्रौपदियों को नंगन किया तो नंगन होने से परमात्मा ने आकर के इन विकारों से बचाया । है अर्थ ये, देखो अर्थ कितना है । अभी देखो उसी अर्थ को कैसे ले गए हैं कि द्रोपदी के पांच पति फलाने-फलाने तो शास्त्रों के कारण, यह उल्टी-उल्टी बातों के कारण तो देखो कितनी बातें उल्टी हो गई है । इसलिए देखो हमारे भारत में भी कई बातें ऐसी हैं देखो वह है ना, पिताश्री भी बतलाते थे क्योंकि जवाहरी थे ना तो इन्हों का रिश्ता तो बड़े-बड़े राजा महाराजाओं से था । तो यह आगाखान था ना अपने हैदराबाद का, उसने 500 स्त्री रखी थी तो जब उनकी सेक्रेटरी से मिले थे ना तो कहा कि भाई देखो यह कैसा है 500 स्त्री रखना तो उसने कहा अरे देखो आपका हिंदुओं का जो भगवान था ना श्री कृष्ण उसको तो 108 रानियां थी । अगर भगवान ने 108 रखी तो इसने 500 रखे तो क्या बड़ी बात है । तो इसमें क्या बड़ी बात है । उसने भगवान होकर के 108 रखें तो इस मनुष्य होकर के 500 रखी तो क्या बड़ी बात है । ये तो कोई बड़ी बात ही नहीं है तो देखो कितना ऐसी बातें हैं तो ये सभी कहाँ से उठाया, शास्त्रों से । तो यह शास्त्रों से देखो मनुष्यों ने देखो जाकर के

क्या-क्या किया इसीलिए तो कहते हैं देखो यह शास्त्रों में उल्टी उल्टी बातें पूरा अर्थ ना रखने के कारण लगा दी हैं । अभी है इन सब बातों का यथार्थ अर्थ । ये सभी अभी की बातें हैं । अभी देखो द्रोपदियाँ हैं एक द्रौपदी तो नहीं है ना । यह है द्रोपदियाँ और ये दुशासन कहो या दुर्योधन कहो जिन्होंने बैठ कर के एक-दो को नंगन करके विकार में रहे हैं । तो भगवान आते हैं इन विकारों से छुड़ाने के लिए, नगन होने से बचाने के लिए । अभी देखो यह विकारों की चूहेदानी में साधु संत महात्मा सब अंदर पड़े हैं, बॉन्डेज में माया के सब फंसे हुए हैं जैसे चूहे तो अभी उसमें सब फंसे हुए हैं, सब माया की बॉन्डेज में । अभी छुड़ाने वाला इसीलिए कहा है इन साधुओं का भी उद्धार करने वाला मैं हूँ क्योंकि साधु भी माया की बॉन्डेज में । हैं सब माया की बॉन्डेज में मानो सब इस चूहेदानी में फंसे हुए हैं । उसको कहते हैं ना क्या चूहेदानी को क्या कहते हैं रेट और उसको क्या कहते हैं दानी को ट्रैप । समझते हो ना चूहेदानी का मतलब है कि रेट की ट्रेप, हाँ ऐसा है ना, जिसमें वह फसाया जाता है । तो मानो हम रेट की तरह से उस ट्रेप में फंसे हुए हैं । किसकी? माया की बॉन्डेज में । हमने एग्जीबिशन में एक चित्र बनाया था उसमें चूहे को शक्ल दिया था साधु संत सन्यासियों आदि की शक्ल देकर के दिखाया था जैसे कि सब उसमें फंसे हुए हैं, चूहेदानी के अंदर फंसे हुए हैं । अभी सबको बोंडेज स कौन छुड़ाएगा, वो इस चूहेदानी से निकलेगा कौन, यह बोंडेज काटेगा कौन? काटने वाला एक ही परमात्मा और वह आकर के

अपने योग और ज्ञान के बल से वह बॉन्डेज काटता है और काटकर के निकालता है तब फ्री हो सकेंगे, नहीं तो अंदर जो बॉन्डेज में पड़े हैं वह कैसे एक दो को छुड़ाएंगे । तो छुड़ा नहीं सकते हैं तो हम सब बॉन्डेज में हैं । हम एक-दूसरे को छुड़ा नहीं सकते । हमको छुड़ाने वाले कि उसकी पावर चाहिए इसीलिए वह आता है और आ करके हमको छुड़ाता है । तो अभी छूटना है ना बॉन्डेज से? तो अभी बाप कहते हैं बच्चे बोंडेज से कैसे छूटें, उसका यह है रॉयल तरीका बॉन्डेज से छूटने का । अभी सब तो ज्ञान नहीं लेते हैं ना, तो कहते हैं बाकियों को क्या करूंगा । जाना तो सबको है अभी मुझे संख्या तो कम चाहिए तो बाकियों को फिर सजा । धर्मराज के रूप में अभी कोर्ट रहेगी बड़ी जिसको कयामत, सिग्रीगेसन यह कहते हैं ना, अभी सजाओ के द्वारा अच्छी तरह से उन आत्माओं का भी उसी तरीके से बॉन्डेज काटूँगा, हिसाब किताब चुक्तु होगा । जैसे कोर्ट देखो सजा देती है ना, फिर सजा से उसका जो है हिसाब-किताब वह काट देती है की हाँ भाई पांच साल का जेल मिला या दंड मिला या कुछ ऐसा है या काले पानी का फरमान दे देते हैं तो देखो यह सब मिलते हैं न तो सजाओ के द्वारा जो उसका दोष वो हिसाब फिर पूरा कर लेते हैं । तो ये एक तरीका है सजाओ से परंतु वह कड़ा है । उसमें बहुत फीलिंग जो है ना दु:ख की कड़ी है इसीलिए वह कड़ी है बहुत सजा का तरीका और यह है रॉयल, विद ऑनर । यह है विद ऑनर पास होना, वह है डिसऑर्नर पास होना । तो अभी डिसऑर्नर पास होना

अच्छा या विथ ओनर पास होना अच्छा । उस समय ताकत थी ये सभी वो शास्त्र आदि ये सभी उन्हें पढने का नहीं चाहिए क्योंकि ये शास्त्र है गृहस्थियों के लिए, प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए । उन्होंने तो प्रवृत्ति ख़त्म कर दी न । वो तो चले गए, उनको तो खाली तत्व याद रखना है बस उधर ही बहार से ही बाहर चला जाना है । वो तो समझते हैं हमको उधर से ही उधर चले जाना है, वो तो निकल गए न तो उनके लिए तो ये सब नहीं है न । ये तो शास्त्रों में तो है देवताओं आदि की ये सभी बातें हैं प्रवृत्ति की तो वो प्रवृत्ति को तो खंडन करते हैं न । ये देवताओं की भी प्रवृत्ति को भी नहीं मानंगे वो प्रवृत्ति ही ख़तम । वो तो पवित्र प्रवृत्ति को मानते ही नहीं हैं वो प्रवृत्ति को ही नहीं मानते वो निवृत्ति मार्ग है तो वास्तव में शास्तों में तो प्रवृत्ति पवित्रता का ये सभी आते हैं तो इन्हों को तो इन चीजों का भी लेना नहीं चाहिए । परंतु अभी देखो अंदर घुस आए हैं । अभी तो वो कंदराओं मन्द्राओं छूटी, अभी तो शहरों में फ्लेट्स, अभी देखो मुंबई में बड़े-बड़े सन्यासी बड़े-बड़े फ्लेट्स में रहते हैं । अभी तो गृहस्थियों से भी अच्छी तरह से रहते हैं मौज से चल रहे हैं स्त्रियां सेवा करती हैं और जिस नारी को लगाया, जिस नारी को छोड़ के गए उसका ख्याल नहीँ और फिर दूसरी नारियां उसकी सेवा करते हैं बहुत अच्छी तरह से खातिरी करती हैं । तो देखो दिन-ब-दिन वह जो बल था ना वह जो ताकत थी वह चलती-चलती अभी नहीं रही है । उसमें बहुत खराब भी हो जाते है । बहुत सन्यासी इधर-उधर में आ जाते हैं

फिर उल्टे चक्कर में तो ऐसी सब बातें हैं इसीलिए कहते हैं अभी सबकी ताकत, हर चीज की ताकत अभी गिरी हुई है इसलिए बाप कहते हैं वह जो पहली-पहली ताकत थी भक्ति का भी जो पहला गोल्डन एज था ना जिसको अव्यभिचारी भक्ति कहा जाए, वह अभी सब गिरावट में है इसीलिए सबकी जो भी आए हैं सबकी अभी ताकत कम है इसीलिए कहते हैं जब सब ताकत में क्षीण हो जाते हैं ना, सब की ताकत निकल जाती है तब फिर मैं आता हूँ सर्व शक्तिवान और फिर मैं आकर के वो बल देता हूँ । अभी तुम्हारे को बाकी बल कौन देगा अभी किसी का बल रहा नहीं है । जो बल था ना उससे तुम्हारा थोड़ा बहुत अल्पकाल का कराते आए अभी उन्हों का बल भी खुद खत्म है तो अभी क्या है अभी इसीलिए कहते हैं कि मैं आता हूँ और जैसे मकान होता है ना तो मरम्मत करते हैं, मरम्मत समझते हो ना - रिपेयर, तो रिपेयर से थोड़ा बहुत काम चलता है तो मानो यह रिपेयर करने वाले थे सब । कोई धर्म के ताकत से, भक्ति की ताकत से, इसी ताकत से इस मकान की रिपेयर करते हैं लेकिन लेंडलार्ड का तो काम हैं न, धणी का मकान तोड़ना और नया बनाना तो वो तो धणी का काम है न तो मैं धणी हूँ । वो धणी का काम है वो करेगा, वो नहीं करेगा जो किरायदार हैं अल्पकाल के वो नहीं ये काम कर सकते हैं, धणी करेगा न, तो मैं धणी हूँ । अभी धणी की दरकार है क्योंकि यह पुराना हो गया है जड़जड़ीभूत अवस्था हो गया है संसार इसीलिए कहते हैं इसका डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन करना मेरा काम

है । बाकी यह तो भक्ति के जरिए और यह सभी मानो यह सब थोड़ा रिपेयर का काम चलता आया है । तो अभी रिपेयर की कंडीशन नहीं रही है अभी इसकी रिपेयरिंग की कंडीशन नहीं है क्योंकि अभी तो इसकी कंडीशन है तोड़ना । जैसे गवर्मेंट देखती है न कोई मकान है अभी उसकी कंडीशन नहीं है चलने की अभी तो इसको गिराना है नहीं तो एक्सीडेंट हो पड़ेगा । तो अभी बड़ा एक्सीडेंट होने का है ना, इसे कहें विनाश की । एक्सीडेंट होना है यह तो अभी गिरना ही है इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे उससे अभी कैसे बचना है और अपना भविष्य भी कैसा बनाना है इन्हीं सभी बातों को समझना है । तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए अभी मानो लैंडलॉर्ड, धणी जो है न वह आया है । मालिक आया है, अपना जो वर्ल्ड का क्रिएटर कहा जाता है ना इसको वर्ल्ड का क्रिएटर दुनिया का रचता तो दुनिया का रचता कैसा है वो अभी देखो नई दुनिया रच रहा है और नई दुनिया के लिए यह फाउंडेशन कहो या सेप्लिंग कहो लगा रहा है । तो फाउंडेशन चाहिए ना और फाउंडेशन मजबूत चाहिए । अगर मकान का फाउंडेशन मजबूत नहीं है न तो मकान के गिरने का डर है । तो फाउंडेशन है प्योरिटी इसीलिए कहते हैं प्योरिटी से ही फाउंडेशन मजबूत होगा । उसके लिए फिर मेरी ताकत चाहिए क्योंकि यह फाउंडेशन लगाना काम मेरा है क्योंकि ह्यूमेनिटी का सीड जो है ना बीज वो मैं हूँ इसीलिए उसको बीजरूप भी कहा जाता है । गीता में भी है मैं इस मनुष्य रूपी सृष्टि का बीज हूँ तो बीज कौन है? वो सीड

वो है ना । ह्यूमेनिटी यानि ह्यूमन वर्ल्ड का सीड तो मैं हूँ न, में ही आकर के ह्यूमन वर्ल्ड की ये सीड कैसे लगाता हूँ या सेप्लिंग कैसे लगाता हूँ वो बैठकर के समझाते हैं । तो यह है प्योरिटी तो प्योरिटी है जो मैं आकर के प्योरिटी का बीज अथवा सेप्लिंग या फाउंडेशन जो कुछ कहो लगाता हूँ जिससे फिर तुम्हारा संसार सदा सुख का रहता है । तो यह सभी चीजें समझने की है तो देखो परमात्मा ने कैसे और किस तरह से बैठकर के समझाया, अब शास्त्रों में कैसी कैसी बातें चली गई, पीछे वालों ने बैठकर के ऐसा-ऐसा लिख दिया । तो ऐसी असुल बातें ऎसी देखो परंतु कितनी यह सभी बातें उलट-पुलट हो गई है । है सब मनुष्य के बन्दर आदि वह एक है ना कथा वो भी है लक्ष्मी नारायण का कि जब स्वयंवर हुआ है, लक्ष्मी सभा में गई है तो जा करके देखा है, स्वयंवर में लक्ष्मी निकली है वर चुनने के लिए, ऐसा शास्त्र में दिखाते हैं तो वहाँ नारद बैठा था, नाटक भी दिखलाते हैं इसके बड़े अच्छे-अच्छे । तो वो बैठा रहा बड़े ठाठ में की अभी लक्ष्मी हमें वरेंगी, तो उसको हंसी आ गई तो उसने कहा कि तू शक्ल तो देख अपनी, तू कहता है लक्ष्मी मुझे वरमाला डालेगी, तू शक्ल तो देख अपनी तू कौन है । तो उसने आइना दिया उसको तो उसने देखा तो उसको अपनी शक्ल बंदर की दिखाई पड़ी । अभी ये बंदर का अर्थ कोई इनहुमन बंदर से नहीं है वह है कि पाँच विकार का उनको दर्पण दिया यानी यह नॉलेज दिया, ये है सभी अभी की बात । कोई वहाँ की नहीं है सतयुग की, स्वयंबर सभा यह है । हमारी अभी ये सभा

स्वयंवर सभा है । स्वयंवर का मतलब कि हम स्वयं को, सेल्फ को वरते हैं । वरते का मतलब है कि हम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी स्वयं को वरते हैं । यह समझा, तो अभी यह सभा क्या है इसको स्वयंवर सभा कही जा सकती है । बाकि सतयुग में कोई लक्ष्मी निकलेगी और स्वयंबर रचेंगी, वो तो रजवाड़ी खाता है उसको तो कायदे से सगाई होगी जैसे कानून से होती है वैसे होगी बाकि ऐसे थोड़ी उसी समय बाहर निकल के ढूँढेंगी । उनको मिला ही नहीं उनका रजवाड़े में पता ही नहीं है किसके साथ है जो उसी समय बाहर निकल के ढूँढेंगी, नहीं ऐसा नहीं होता है ये हैं असुल अभी की बातें, जब परमात्मा आया है तो परमात्मा ने यह स्वयंवर सभा रची । यह सभा कहो, क्लास कहो, कुछ भी कहो लेकिन यह सभा है जिसमें हर एक को नर नारी को कहा है स्वयं को वरो । स्वयं माना सेल्फ को वरो । सेल्फ को कैसे वरो यानी सेल्फ जो असूल तुम्हारी स्टेज है तू नर नारायण है, नारी तू लक्ष्मी है असूल, अपने को भूल गए हो । अभी फिर नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनो, स्वयं को वरो । तो स्वयं को वरेंगे तो फिर तुम्हारा सतयुग में भी पवित्र जोड़े बनेंगे । नर-नारी पवित्र होकर रहेंगे, लेकिन अभी स्वयं को वरना है तो असूल यह है स्वयंवर बाकी उधर कोई स्वयंवर की सिस्टम ऐसी नहीं कोई सभा होगी जिसमें लड़के इकट्ठे होंगे, उसमें से फिर वह चुनेंगी या शादी करेंगी, नहीं ऐसी बातें नहीं होती हैं । वहाँ तो बड़े मर्यादा से, कायदे से, कानून से सब होता है । तो यह सभी चीजें समझने की हैं

। ये तो लिखने वालो ने बैठकर के स्टोरीज आदि बनाई हैं जैसे स्टोरीज या नोवेल्स कैसे बनते हैं । बहुत अच्छे-अच्छे नोवेल्स ऐसे बनाते हैं कि पढ़ने वालों को रुला देते हैं । रुला देती हैं एकदम ऐसी-ऐसी चीजें । ये इतनी पिक्चर्स बनती है कहाँ से बनती हैं ये कोई रियल स्टोरीज थोड़ी हैं ये तो बनाते हैं न कहानियाँ, इसी-इसी तरह से यह शास्त्रकारों ने भी बैठकर के बड़े अच्छे अच्छे ढंग से बैठ करके यह सब बनाया है, परंतु उनको समझने और समझाने वाले, वह तो समझते हैं ना कि शायद ऐसी बंदर सेना थी, ऐसा शायद था, ऐसी सब बातें थी, वो ले गए हैं उसमें तो इसीलिए यह सभी बातें गड़बड़ हो गई है । इसीलिए बाप कहते हैं देखो अभी तुम सब मूंझ गए हो, अपनी ही बनाई हुई चीजों में मूंझ गए हो । अपने से ही बनाया है और अपनी ही बनाई हुई चीजों में मूंझ गए हो । अपने ही बनाई हुई चीजों में अपने को मुझाया है और मूंझ करके मेरे को भुला दिया है । मुझे ही बुला दिया है ना, परमात्मा क्या, तू क्या अपने आपको खुद को भूल गए हो । तो खुद में ही अपना रोला डाल करके और उसमें से ही अपने आपको ही मुझा दिया है और उससे देखो अभी तुम्हारा हाल क्या हुआ है । अभी इसीलिए कहते हैं इन सब को भूलो । जिसमें मूंझे हो अब इसको भूलो इसीलिए इसको कहते हैं भूल भुलैया । वह देखा है ना बारादरी में कभी देखा है उसमें ऐसे टेढ़े-मेढ़े रास्ते बनाते हैं वह लखनऊ में भी है बारादरी बारादरी कहते हैं वो रास्ता ऐसा होता है अगर कोई गाइड ना मिले ना तो बाहर निकल नहीं सके

। देखेंगे सामने रास्ता है परंतु जाएंगे फिर दोबारा आ जाएंगे रास्ता बंद । वो देखा है कभी, ऐसा बनाते हैं बहुत है जब कभी एक्जीबिशन होती हैं या सर्कस होती है तो वहाँ ये बहुत बनाते हैं तो यह होते है रास्ता मूंझाने का जिसको कहते हैं भूल-भुलैया । ऐसे रास्ते हैं जब तलक कोई गाइड ना मिले ना तो पार नहीं कर सके । जाएंगे रास्ता देखेंगे आगे चलेंगे परंतु सामने दीवार आ जाएगी, किधर से निकलें मूंझ जाएंगे । बारादरी लखनऊ में भी है हम गए थे वहाँ देखने के लिए क्योंकि हमको मिसाल देना पड़ता है ना दृष्टांत समझाने के लिए तो हमने कहा देखें तो सही क्या है, कैसा है हम तो भाई मूंझ गए थे एकदम । वो गाइड क्या करता था, वो घड़ी-घड़ी गुम हो जाता था । उसको तो अपने रास्तों का पता था ना तो वह निकल जाता था, हम तो रह जाते थे । फिर कहते - अरे! इधर कहाँ आ गए, फिर उसको बुलाते थे इधर आओ तो फिर आकर के हमको फिर ले चलता था । वो समझता था देखें ये लोग कैसे हैं तो ये होते हैं लखनऊ में । आप जाएँगे न बारादरी तो देखना, जब कभी जाओ । अपना सेंटर है वहाँ । यह भी एक देखने की चीज है, एक राजा ने बनाई हुई है अपने खेलने के लिए । आगे तो वो रजवाड़े लोग तो बड़े शौकीन थे ना, तो ऐसी-ऐसी चीजें बनाते थे तो उनका बनाया हुआ है । तो यह मिसाल है कि यह सभी रास्ते तो कहते हैं कि बहुत हैं परन्तु वो रास्ते तो नहीं हैं न जो उनका रास्ता है इसीलिए बाप कहते हैं मेरा जो रास्ता है तो मैं वो आ करके बताता हूँ । तुम रास्ता समझ कर चल तो पड़े हैं की बहुत

रस्ते हैं परंतु तुम्हारे पार होने के नहीं है उससे । दीवार है सामने एकदम, निकल नहीं सकते हो पार । फिर यहाँ के यहीं पड़े हो । फिर लॉक हो जाते हो यहाँ के यहाँ ही पड़े हो, सब पुनर्जन्म लेते रहते हो । रास्ता पार कराने का गाइड में हूँ । जब तलक तुमको गाइड ना मिले ना तब तलक तुम पार नहीं हो सकते हो तो वह गाइड मैं हूँ । इसका रास्ता और कहीं कोई नहीं जानता हैं । वो दुसरे रास्ते तो मनुष्य बता देते हैं परंतु इसका गाइड मैं हूँ ना इसीलिए इसका गाइड और लिब्रेटर मैं ही हूँ इसीलिए कहते हैं इसका गाइड मैं करता हूँ । मैं आता ही इसीलिए हूँ नहीं तो मुझे क्यों आना पड़े क्योंकि इसका रास्ता दिखलाना मुझे ही है । इस पार आने के लिए मुझे ही रास्ता दिखाना पड़ता है इसीलिए मुझे आना पड़ता है । नहीं तो किसी को ले आना हो तो किसी को कह दूँ की ले आओ । नीचे से कह दूँ किसी को की हाँ तू ले आ इनको । नहीं, मुझे आना पड़ता है, मुझे बुलाते हो ना और लिब्रेटर मैं ही हूँ इसीलिए कहते हैं इसकी गाइड मैं करता हूँ । मैं आता ही इसीलिए हूँ, नहीं तो मुझे क्यों आना पड़े क्योंकि इसका रास्ता दिखलाना मुझे ही है । मेरे पार आने के लिए मुझे ही रास्ता दिखलाना पड़ता है इसीलिए मुझे आना पड़ता है नहीं तो किसी और को ले आना होए तो कहो ले आओ, नीचे से कह दूँ ले आओ, तू ले आ इनको । नहीं मुझे आना पड़ता है मुझे पुकारते हो ना देखो पुकारते हैं कि छोड़ अभी आकाश, अभी धरती पर आ । अगर धरती पर है ओमनीप्रेजेंट है तो फिर बुलाते काहे के लिए हैं । बैठा है ना

इसलिए उनको पुकारते हैं तू आ और आकर के अभी हमको रास्ता बतला । अंधकार में हम मूंझ गये हैं, रास्ता मिलता नहीं है । जाते हैं रास्ता समझ करके परंतु सामने बंद, फिर इधर ही पड़े हैं दुःख में अभी तू निकाल इससे, तू गाइड कर तो देखो उस गाइड को बुलाते हैं ना । तो वो अभी कहते हैं मैं हाजिर हूँ तो यह सभी बातें समझने की है । तो यह बैठकर के बाप समझाते हैं कि बच्चे अभी इन्हीं बातों को समझ करके कि मैं गाइड आया हुआ हूँ, अभी लिब्रेटर आया हुआ है । अभी तुमको लिब्रेट होने का टाइम भी है क्योंकि अभी तुम्हारे जन्म पूरे हुए हैं यह चक्कर के जन्म । ऐसे नहीं है कि फिर जन्म ना लेंगे यह चक्कर तो चलना ही है ना परंतु इस चक्कर के जन्म पूरे हुए हैं । अभी तुम्हारे सुख के, दुःख के यह सभी जन्म पूरे होते हैं । यह लास्ट जन्म है इसीलिए कहते हैं यह तुम्हारा लास्ट जन्म है, अभी सब का लास्ट जन्म । बच्चा भी है ना छोटा, उसका भी लास्ट जन्म है कैसे कि वह आत्मा को भी अभी वापस जाना है इसीलिए अभी छोटे, बड़े, बूढ़े सबका मौत है इसीलिए अभी मौत भी उसकी भी अलग-अलग किस्म से तैयारियां हो रही है । इस डिस्ट्रक्शन में इन वार्स में या एटॉमिक वार्स आदि में इन सब चीजों में ऐसे ही थोड़ी खाली बुड्ढे मरेंगे, छोटे रह जाएंगे, नहीं उसमें तो सब मरेंगे ना, छोटे-बड़े सभी नेचुरल कैलेमिटीज से और इन्हीं सभी चीजों से जो मौत के तरीके हैं सब उसमें तो सब छोटे-बड़े बुड्ढे सब मरेंगे ना इसीलिए बाप कहते हैं अभी सब की आयु वानप्रस्थ समझो यानी अभी छोटा बच्चा

भी है ना वह भी वानप्रस्थ ही है । वानप्रस्थ का अर्थ है अभी उसको वाणी के स्थान, इनकॉरपोरियल साइलेंस वर्ल्ड, यह वाणी की वर्ल्ड है जिसको टॉकी वर्ल्ड माना वाणी की, वाचा' की, तो वाचा की वर्ल्ड है अभी इसी वाणी से परे स्थान जाना है । परस्थान का मतलब है वान पर स्थान, वानप्रस्थी कहते हैं ना तो उसका मतलब ही है वहाँ माना वाणी से पर स्थान तो पर स्थान पर जाना है । पर स्थान कौन सा है इन कॉरपोरियल वर्ल्ड तो वाणी से पर स्थान जाना है । तो वह है वाणी से पर साइलेंस वर्ल्ड तो अभी सबको जाना है छोटे बड़े सबको इसीलिए कहते हैं अभी लास्ट जन्म है । अभी इन जन्मों का चक्कर पूरा होता है इसीलिए बाप कहते हैं अभी चक्कर जब पूरा होता है तो उसको पूरा करके अभी चलो, परंतु प्योर हो करके चलेंगे ना । ऐसे तो नहीं चल उधर सकते हो । इम्प्योर सोल नहीं चल सकती है । जब मैंने भेजा था, तुम आए थे तो प्योर थे ना, अभी मेरे घर के उधर चलेंगे तो प्योर ही चलेंगे ना, इम्प्योर थोड़े ही घुस सकता है नॉट अलाउड । इम्प्योर नॉट अलाउड इसीलिए यहाँ ही प्योर होना है ना तो इसीलिए इधर प्योर होने के लिए मैं ज्ञान और योग इधर देने के लिए आता हूँ । अगर मुझे उधर ही देना होता तो मैं कहता चलो आओ इम्प्योर सोल और पीछे फिर यहाँ बैठकर मैं तुमको ज्ञान दूँगा । नहीं, तुम आ ही नहीं सकते हो उधर, घुस ही नहीं सकते तो इम्प्योर इसीलिए तुमको यहाँ प्योर बनना है तो प्योर बनाने के लिए मुझे आना पड़ता है इसीलिए मेरा अवतरण होता है और मुझे पुकारते हो

की तू आ । तो जब आएँगे प्योर बनाएंगे इस बोंडेज से छुड़ाएंगे सब को इस पिंजरे से निकल सकेंगे ना । ये माया का पिंजड़ा, पिंजड़ा समझते हो ना, वह चूहेदानी होती है न जिसमें चूहे फंसाते हैं तो हम चूहे के मिसल फंस गए हैं सब । सब हैं इसमें साधु-संतों महात्मा वो अपना एक मैगजीन है न वो एक अग्जिबिशन निकली थी न उसमें देखा होगा वो एक चूहेदानी में सब साधु, संत, महात्मा सब अंदर पड़े हैं माया के बोंडेज में । सब फंसे हुए हैं जैसे चूहे तो अभी उसमें सब फंसे हुए हैं तो अभी छुड़ाने वाला इसीलिए कहा इन साधुओं का भी उद्धार करने वाला मैं हूँ क्योंकि साधु भी माया की बॉन्डेज में है । सब माया की बॉन्डेज में है मानो सब इस चूहेदानी में फंसे हुए हैं । उसको कहते हैं न क्या चूहे को क्या कहते हैं रेट और उसको कहते हैं दानी को ट्रैप, समझते हो ना चूहेदानी का मतलब है रेट की ट्रेप जिसमें चूहे फंसाए जाते हैं तो मानो हम रेट की तरह से उस ट्रैप में फंसे हुए हैं किसमें माया की बॉन्डेज में तो हमने एग्जीबिशन में एक चित्र बनाया था, जैसे अन्दर चूहे बनाकर के उनको साधुओं की, संतों की इन सब की शक्ल देकर के वह सब उसमें जो है ना जैसे वह चूहेदानी में फंसे हुए हैं अभी सबको इस बोंडेज से कौन छुड़ाएगा ? वो । उस चूहेदानी से निकालेगा कौन? वो । इस बोंडेज को काटेगा कौन? काटने वाला एक ही परमात्मा और वह आ करके अपने योग और ज्ञान के बल से वह बॉन्डेज काटता है और काटकर के निकालता है तब फ्री हो सकेंगे नहीं तो अंदर जो बॉन्डेज में पड़े हैं वह कैसे एक-दो

को छुड़ाएंगे । छुड़ा नही सकते हैं तो हम सब बॉन्डेज में है, हम एक-दो को छुड़ा नहीं सकते हैं । हमको छुड़ाने वाले की उसकी पावर चाहिए इसीलिए वह आता है और आ करके हमको छुड़ाता है तो अभी छूटना है ना बॉन्डेज से, तो अभी बाप कहते हैं बच्चे इस बोंडेज कैसे छूटो तो यह है रॉयल तरीका बॉन्डेज से छूटने का । अभी सब तो ज्ञान नहीं लेते हैं ना तो कहते हैं बाकियों को क्या करूंगा, जाना तो सबको है अभी, मुझे संख्या तो कम चाहिए तो बाकियों को फिर सजा । धर्मराज के रूप में अभी कोर्ट रहेगी बड़ी, जिसको क़यामत, सीग्रिगेशन यह कहते हैं ना । अभी सजाओं के द्वारा उसको अच्छी तरह से उन आत्माओं का फिर उसी तरीके से बोंडेज काटूँगा, हिसाब किताब छुक्तु करूँगा जैसे कोर्ट देखो सजा देती है ना फिर सजा से उसका जो है हिसाब वह काट देती हैं की भाई पाँच साल का जेल मिला या कुछ दंड मिला या कुछ और या फिर उसको काले पानी की सजा सुना देते हैं तो देखो यह सब सजाएं मिलती है ना, इसी तरह सजाओ के द्वारा वह हिसाब पूरा कर लेते हैं । तो एक तरीका है सजाओं का परंतु वह कड़ा है उसमें बहुत फीलिंग जो है ना दुःख की कड़ी है इसीलिए कहते है उसमें कड़ी दुःख की फीलिंग है वो कड़ा है बहुत सजाओं का तरीका, और यह रॉयल, विद ओनर । यह है विद ओनर पास होना वह है डिशऑनर पास होना । तो अभी डिस ओनर पास होना अच्छा या विद ऑनर पास होना अच्छा ?

मम्मा मुरली मधुबन

32. परमात्मा का परिचय -1

रिकॉर्ड:-

प्रीतम आन मिलो............

प्रियतम, कौन है? यह सभी परमपिता परमात्मा की महिमा है । प्रियतम वो है ना और हम सब हैं उसकी प्रियतमाएं अर्थात उनको प्रेम करने वाले और करते हैं उसको, तो जिसको करते हैं वह प्रीतम रहा और जो करते हैं प्रेम वह हो गई प्रियतमाएं, उनको कहा जाता है प्रियतमाएं अर्थात प्रेम करने वाले । तो हम करते हैं परन्तु करते हैं जिसको वह दूसरा हुआ ना । ऐसे नहीं हम ही प्रेम करने वाले, हम ही प्रेम लेने वाले, नहीं, प्रेम उनको करना है, करने वाले हम । तो जिसको करना है वह प्रेम कहो, लगन कहो, योग कहो बात एक ही है । योग कोई अलग चीज नहीं है । योग, तो योग शब्द से बातें बहुत बड़ी हो गई हैं । वो समझते हैं योग, योग तो पता नहीं योग क्या होगा तो इसीलिए योग के नाम से बहुत बड़ा समझते हैं, परंतु योग है तो उसके साथ लगन कहो. प्रेम कहो, उसकी याद कहो इसीलिए हम लोग योग अक्षर को इतना काम में नहीं लाते हैं, जितना याद को लाते हैं क्योंकि याद कहने से सिंपल लगता है । और है भी याद, योग दूसरी तो कोई चीज है नहीं । योग कहने से फिर कईयों ने

समझा है शायद आसन लगाकर बैठने से उससे मन लगेगा, शायद आंखें बंद करके बैठने से उससे मन लगेगा, शायद ऐसे करने से उससे मन लगेगा । मन लगाने के लिए इन सभी साधनों की कोई जरूरत नहीं है । कोई चीज से हमारा मन लगता है तो कैसे लगता है, कोई जड़ चीज से यदि मन लगाना हो यानी कोई जड़ चीज से हमारा प्रेम हो, कोई चैतन्य किसी से किसी का लव हो तो लव तो एक नेचुरल चीज है, लव होता है तो फिर कहाँ भी हो कोई लंडन हो मेरा लव है समझो किसी से तो वह तो नेचुरल है वह तो यहाँ बैठे काम करेंगे, बुद्धि हर वक्त उस स्मृति में रहेगी । तो लव बुद्धि योग जिसको लव कहा जाए तो लव के जरिए वह बुद्धि खींचती रहेगी । तो हमको भी उनके साथ बुद्धि का योग रखना है, जैसे लैला-मजनू, हीर-रांझा यह सब है ना, मशहूर है तो इनके किस्से, तो ये जिस्मानी लव है वह है शारीरिक लव, इसको रुहानी नहीं कहेंगे लेकिन जिस्मानी लव की भी स्टेज है । जिस्मानी लव भी इनका प्योर था तभी इनका गायन है, महिमा है क्योंकि इनका विकारी प्रेम नहीं था । जिस्म के ऊपर जरूर था लेकिन विकारी नहीं था । परंतु यह तो फिर जिस्म का नहीं है ना, यह है रूहानी, उस बाप के साथ हमारा है रूहानी प्रेम इसीलिए उनको फिर पवित्र प्रेम कहा जाए । तो यह है हमारा उसी अपने बाप से जन्म सिद्ध अधिकार लेना तो यह अपना है रूहानी प्रेम । रूह है ना, हम आत्मा रूह हैं वो हमारा रूहों का बाप तो हमारा उस बाप से प्रेम है क्योंकि हम रूह निर्बल हो गए हैं ना, अभी उस बाप से बल लेने के

लिए उसे याद रखना है । उससे अपना रिलेशन, उसके साथ अपना संबंध जोड़ना है । तो संबंध के लिए भी तो उसका साथ चाहिए ना इसीलिए कहते हैं तुम्हारे साथ संबंध जुड़वाने के लिए मुझे भी तेरे जैसे मनुष्य का आधार लेना पड़ता है । तो बैठकर के समझाते हैं कि इस मनुष्य तन का आधार लेने के ऊपर भी शास्त्रों में बहुत बातें हैं । कहाँ-कहाँ शास्त्रों में तो बहुत गुप्त उसका दिखलाया है, कहते हैं ना सत्यनारायण की कथा आप लोग सुनते होंगे, बहुत सत्यनारायण का व्रत भी रखते हैं तो वह कथा भी करते हैं । तो उस कथा में भी है कि भाई भगवान आया बूढ़े ब्राह्मण के रूप में तो उसने कहा कि यह तुम्हारी नाव में क्या है, तो उसने कहा ये क्यूं पूछते हो तो उसने कहा ये बेडा डूबना है तो इसको संभालो, तो उसने कहा भला ये क्यों हमसे पूंछता है की इसमें क्या है, उसने समझा ये कोई चोर लुटेरा है तो उसने कहा की इसमें कुछ नहीं, कुछ नहीं है चले जाओ, इसमें क्या है बस कख और पन है इसमें और कुछ थोड़ी है, चले जाओ इसमें कुछ नहीं है तो बूढ़े ब्राह्मण ने कहा तथास्तु, चलो कहते हो कखपन है तो चलो तथास्तु । तो फिर उसी समय वो बेड़ा डूब गया और कखपन हो गया यानि ख़त्म, विनाश हो गया, यह तो बैठ करके कहानी बनाई है । अभी देखो कहानी बनाई है ना यह परंतु प्रैक्टिकल कहते हैं कि इस कलयुग के अंत और सतयुग की आदि में अर्थात जब यह बेडा डूबना है यानी संसार के डिस्ट्रक्शन का टाइम है । यह बड़ा बेड़ा है ना? ये हम सब जैसे की बड़े बोट में बैठे हुए हैं न यहाँ

तो यह है बड़ा बेड़ा है, तो कहते हैं जब यह डूबने का है यानी डिस्ट्रक्शन का टाइम है तब परमात्मा बुड्ढे ब्राह्मण के रूप में अर्थात बूढ़े तन में आए हैं । तो बिल्कुल साधारण, ऐसा नहीं है कि ठाठ बाट से या और कुछ, नहीं गुप्त और साधारण तन में आए हैं, ओंर आकर के कहते हैं भाई देखो अब तो विनाश है, अब तो अपना कुछ बना लो इसीलिए तो फिर वह समझते हैं कि पता नहीं ये विनाश-विनाश कह करके बहकाती हैं । कहते हैं ना ब्रम्हाकुमारियाँ बहकाती हैं, विनाश का डराव देती हैं, यह करती हैं तो उनको भी ऐसा समझा कि यह चोर लुटेरा है, ये कुछ लूटने के लिए आया है । ये जो कहता है कि यह डूबता है तो ये लूटना चाहता है तो जैसे यह सब बातें हुई है ना । अभी देखो बातें प्रैक्टिकल कैसे हुई हैं और फिर बैठकर के शास्त्रों में कैसे इन सब बातों को लगाया है तो है यह । तब बाप कहते हैं अच्छा नहीं समझते हो तो तथास्तु । डूबेगा तो फिर तुम्हारा यह कखपन हो ही जाएगा । जो जानते हैं जिन्होंने समझा की ये क्या कहते है कुछ तो जिन्होंने सेफ किया तो सेफ हो गये । तो अभी देखो जो जानते हैं, जिन्होंने सेफ किया है अपने को तो वो अभी सेफ हो रहे हैं बाकी जिन्होंने नहीं जाना वह डूब ही मरते हैं । तो यह है इसी समय की सभी बातें, एक समय की बातों को बहुत कहानियों में यानी छोटे-छोटे बड़े-बड़े ये सब शास्त्र आदि बना दिए हैं । और उधर देखो गीता में भी है कि परमात्मा अर्जुन के रथ पर बैठा, अभी वह चित्र में दिखलाते हैं । इसके लिए बहुत से चित्रों की है, एक अहमदाबाद में

भी हैं सॉरी गीता को चित्रों में दिखाया है । सारी दीवारों पर गीता के श्लोक और चित्र लगाए हुए हैं जो वहाँ गए होंगे तो शायद देखा भी सारी गीता का, एक बड़ी बिल्डिंग है उस बिल्डिंग में सारी गीता का चित्र निकाल करके जैसे अर्जुन का रथ तो वहाँ श्लोक भी लगाए हैं और फिर यह चित्र भी रखे हैं तो ऐसे बहुत हैं । और ऐसे ही गीता भी बनाते हैं, चित्र वाली गीता देखेंगे तो उसमें भी है कि अर्जुन के रथ पर बैठा है कृष्ण । अभी कोई अर्जुन के रथ या रथ पर कृष्ण बैठे ऐसी तो कोई बात ही नहीं है जो लड़ाई के मैदान पर किसी रथ में बैठ कर के कृष्ण डायरेक्शन दे ऐसी तो कोई बात ही नहीं है न, कोई लड़ाई की बात तो है नहीं, की ये लड़ाई के लिए कहा । नहीं, यह है पांचों विकारों से लड़ाई करने की बात । तो परमात्मा ने बैठकर के पांच विकार से लड़ने की युक्ति सिखलाई, उसके लिए कहा । बाकी कोई युद्ध के मैदान पर रथ में बैठ कर के ज्ञान सुनाएं उसकी तो बात ही नहीं है न की चार घोड़े की गाड़ी रखी है, फिर वह रथ रखा है बड़ा अच्छा, ऐसी बातें नहीं है । अभी रथ ये है कि परमात्मा अर्जुन के रथ में यानी साधारण मनुष्य तन जिसका नाम अर्जुन भी कहो, ब्रह्मा भी कहो, यह सब नाम है, तो यह उनका नाम रखा है । तो अभी ब्रह्मा कहो या अर्जुन कहो यह सभी है, उसको नंदीगण कहो, वह नंदीगण रखते हैं ना इधर बहुत मानते हैं बैल को, नंदीगण उसको कहते हैं जिस बैल को फिर पूजते हैं । आपने देखे होंगे यहाँ बड़े-बड़े बैल का एक मंदिर है उस दिन हम भी गए थे देखने के लिए । तो यह बैल

की क्यूं इतनी महिमा है । परंतु वह समझते हैं कि वह शिव है जो वो शंकर के आगे बैल दिखलाते हैं तो इनको पूजते हैं तो इनको क्यों पूजते हैं, असल में है कि शिव निराकार नॉट शंकर, शिव और शंकर में अंतर है यह तो समझे हैं ना । तो शिव आया है जिस तन में, तो आया है तो आया है तो मनुष्य तन में ना, कोई बैल के ऊपर थोड़ी ही आया है परंतु उन्होंने समझा नहीं है ना तो उन्होंने समझा कि बैल के ऊपर चढ़कर आया है । अभी बैल के ऊपर कैसे आएगा ? दूसरी सवारी नहीं मिली जो इस बैल के ऊपर आएगा? नहीं, तो बैल के ऊपर नहीं, परंतु मनुष्य तन में आया है परन्तु उनको बैल बना दिया है क्योंकि जैसे इन ह्यूमन गैया रखी है ना, देखो कृष्ण के आगे गैया रखी है, गैया भी रखी है तो बैल भी लगा दिया है तो वह बैल वो गैय्या तो इनह्यूमन बातें लगा दी हैं परंतु ऐसे नहीं है कि कोई बैल के ऊपर आए थे । आए तो मनुष्य तन में थे ना । वह तो सोल है ना, उसकी तो बैल के ऊपर आने की कोई बात ही नहीं है, सोलको तो शरीर चाहिए ना । तो उन्होंने शरीर का आधार लिया है इसीलिए उनको वो बैल दिखाया है तो यह नंदीगड़ का जो पूजन है जिसको बैल का यहाँ मंदिर है तो वास्तव में यह भी परमात्मा जिस तन में आया है, रथ पर कहो क्योंकि शरीर को रथ भी कहा जाता है तो शरीर की बात है, रथ माना यह नहीं घोड़े-गाड़ी, घोड़ा लगाया वो गाड़ी बना दी है, नहीं, रथ शरीर को भी कहा जाता है तो ये रथ शरीर है, आत्मा का रथ कौन सा है, ये शरीर है न, तो परमात्मा भी आएगा

तो कोई शरीर लेगा ना उनको अपना तो शरीर है नहीं कर्म का, उसको टेंपरेरी लेना है सुनाने के लिए नॉलेज । तो जिसको लिया है तो वह है परमात्मा का बैल कहो, नंदीगण कहो । वह भागीरथ है ना, भागीरथ का दिखलाते हैं कि जटाओं से गंगा निकली । अभी इसका भी अर्थ है, अभी ये भागीरथ क्या है, उसको कहा जाता है भागीरथ यानी भाग्यशाली रथ । इसका अर्थ है भाग्यशाली, तो भाग्यशाली रथ हुआ ना, जिसमें परमात्मा आते हैं तो उसका नाम हो गया भागीरथ । अभी उससे गंगा निकली तो गंगा ऐसा थोड़ी है यहाँ से वो ऐसे फव्वारे की तरह से जैसे निकालते हैं, दिखलाते हैं ना चित्रों में, फव्वारा समझते हो ना जैसे पानी ऊपर से बहता है तो वह दिखलाते हैं ऐसे कि उसमें से पानी निकला है परन्तु कोई ऐसे पानी वाणी थोड़ी निकला है क्योंकि वहाँ तो लिखा हैं ना की गंगा से पावन होते हैं तो इन्होंने फिर वह पानी दिखलाया है । अभी इसका अर्थ है कि उन्होंने बैठकर के बुद्धि से नॉलेज दिया है, तो असुल में बात ऐसी है कि हाँ बुद्धि से नॉलेज दिया है बाकी नॉलेज को कैसे दिखलाए तो नॉलेज के लिए पानी दिखला दिया है तो इसीलिए वो लिखा है कि उसकी जटाओं से पानी निकला है । पानी से थोड़ी पावन होंगे पावन तो नॉलेज से होंगे ना ज्ञान से । ज्ञान ही पावन बनाता है ना तो परमात्मा ने बैठकर के ज्ञान और योग सिखलाया है । तो आया है जिस तन में उस भाग्यशाली रथ का आधार लेकर के और बैठकर के नॉलेज दिया है तो देखो चित्रकारों ने उस भागीरथ का कैसा चित्र बना

दिया है, यहाँ गंगा रख दी वह शक्ल भी रखते हैं माथे पर माता गंगा का फिर उसमें से पानी ऐसे बहता है । परंतु इसका अर्थ यह है कि ये ज्ञान गंगाएं निकाली है ना, यह देखो ज्ञानगंगाएं, इसको कह सकते हैं यह ज्ञान गंगाएं तो ज्ञान गंगा यानी माताओं के द्वारा फिर बैठकर के यह नॉलेज दिया है तो यह ज्ञान गंगाएं । अभी ज्ञान गंगा कहाँ की बात और देखो वह पानी की गंगाएं यह सभी बातें कैसे ले आए हैं और फिर उस मनुष्य के सर से वह पानी बहता हुआ दिखाया, उसको फव्वारा बना करके तो ऐसा थोड़े ही है कि यह मनुष्य की बात है । इस तरीके से नहीं है परंतु हाँ कैसे तन में आया तो देखो परमात्मा का तन में आना, उसके कैसे-कैसे अजीब अजीब से चित्र बनाए हैं । यह भागीरथ का चित्र देखो, फिर वो नरसिंह का देखो, वह शेर की शक्ल नर का शरीर वह कैसे-कैसे चित्र बनाएं हैं परंतु ऐसा तो नहीं है ना । वह आया है नर तन में परंतु हाँ परमात्मा शेरों का शेर कहो, शेर को किंग कहा जाता है ना जनावरों का तो वह आए हैं परंतु उन्होंने दे दिया है जनावर की शक्ल, अभी उसको जनावर की शक्ल थोड़ी लेकर के आना है पर हाँ यह है कि हाँ वह सर्व समर्थ बाप जो सर्वशक्तिमान है तो शेर की शक्ति ऊंची गिनी जाती है ना तो इसका अर्थ है कि हाँ वह सर्वशक्तिमान नर तन में आकर के ज्ञान दिया परंतु जनावर में तो नहीं आया है ना, ऐसी तो कोई बात नहीं है ना । तो बातें हैं ऐसी परंतु उनके अवतरण के लिए फिर कैसी-कैसी अजीब-अजीब सी शक्लें रख दी है । इधर नरसिंह कहाँ भागीरथ, कहाँ बैल,

वह बैल को रख दिया है बेचारे को, अभी बैल की क्या बात है । तो यह इनह्यूमंस का आधार लगाया है आधा मनुष्य का आधा वो, कहाँ सारे इन्ह्यूमंस रख दिए हैं, अब देखो ये कैसे-कैसे अजीब से चित्र और यह सब बातें और उसके कितने बड़े-बड़े चित्र बनाके कितनी अच्छी तरह से पूजते आते हैं । यह कभी समझते नहीं है कि भाई बैल को क्यों पूजते हैं । बैल क्या चीज है परंतु नहीं, यह आया है क्योंकि मेल है न, ये गैया कहेंगी माताएं, ये बैल कहो तो ये इन्ह्यूंमन तो नहीं है न, ह्यूमन की बात है यानी मेल एंड फीमेल । तो आए हैं मेल के तन में इसीलिए उनको बैल की सवारी दिखलाया है । तो परमात्मा की सवारी किस पर हुई? आया है न ब्रह्मा के तन में तो देखो उसी को ब्रह्मा अथवा अर्जुन कहाँ नाम से और कहाँ फिर यह उसकी शक्लें कोई जानवर कोई कुछ ऐसी-ऐसी चीजें बना दी हैं तो देखो कितनी बातें बदल गई हैं, है तो एक ही टाइम की बात । एक ही टाइम आया है और एक ही टाइम आकर के परमात्मा ने यह नॉलेज दिया है और नॉलेज देने की बातों को देखो कहाँ बूढ़ा ब्रह्मण, कहाँ कुछ, कहाँ कुछ, यह सभी बातें बना दी हैं । तो है तो सब अभी की बात ना तो यह देखो कहानियां कितनी है । ऐसे नहीं है कभी बूढ़ा ब्राह्मण बन कर आया, कभी बैल पर आया, कभी कैसे आया ऐसी भी नहीं है, है एक ही टाइम की बात लेकिन एक ही टाइम की बातों के कितने चित्र और कितनी कथाएं और कितनी बातें और ये सभी हैं तो फिर भक्ति मार्ग के लिए बड़ा सामान चाहिए ना, एक शास्त्र से क्या मजा है

इसीलिए वैरायटी चाहिए. जिसकी जो टेस्ट बने, कहा है ना जैसे दुकानदार होते हैं ना, तो अपने दुकान में वैरायटी रखते हैं जिसकी जो टेस्ट तो ग्राहक ज्यादा आएँगे, धंधा ज्यादा होगा तो यह भी भक्ति मार्ग की वैरायटी बन गई तो हर एक दुकान पर वैरायटी-वैरायटी है । देखो कहीं शिवलिंग भी रखा होगा, कृष्ण भी रखा होगा, राम भी रखा होगा सब रखेंगे क्योंकि सब वैरायटी वाले पूजने वाले आएंगे, पैसा रखेंगे तो ग्राहकी हो जाएंगी ना । एक का रखेंगे तो कोई शिव के मानने वाला नहीं होगा तो खाली शिव को रखेंगे तो कम ग्राहकी होगी और वैरायटी रखेंगे तो कोई राम का कोई कृष्ण का सब आएंगे, कहेंगे राम भी इधर बैठा है, कृष्ण भी इधर है । तो जैसे वैरायटी दुकानदार रखते हैं ना तो सब वैरायटी होगी तो किसको कुछ लेना है किसको कुछ लेना है तो ग्राहक सब आएंगे ना । तो यह सभी चीजें हैं तो यह भी एक दुकानदारी हो गई ना जैसे इसीलिए बाप कहते हैं एक तो मेरा आना एक ही टाइम का है और मैं आता ही एक ही टाइम हूँ और मेरा आना और मेरा आकर के काम करना सो मेरा इस तरीके से है बाकी मैं कोई बैल के ऊपर नहीं आया हूँ या किसी पक्षी के ऊपर बैठकर के जैसे दिखलाते हैं ना हंस के ऊपर, सरस्वती की सवारी हंस के ऊपर, ऐसी- ऐसी बहुत, वो गणेश की चूहे के ऊपर, चूहे के ऊपर कोई बैठ कर के तो दिखलाएं । तो देखो कैसी-कैसी सवारी रखी है अभी यह देखो देवताओं की सवारी ऐसी अजीब सी रखी है कोई की चूहे के ऊपर, कोई हंस के ऊपर, कोई किसी के ऊपर तो देखो ये कैसे

अजीब से बनाए हैं । परंतु नहीं यह हंस, ये हंस का भी मतलब है । यह हंस है, उसका मिसाल देते हैं शास्त्रों में कि हंस होते हैं वो चुगता है तो पत्थर अलग करके मोती चुगता है यानी यह हंस का मिसाल है और उसके सामने दूध रखो तो वह दूध चुगता है पानी उससे अलग कर लेता है तो यह उसका मिसाल है तो हमको भी बाप कहते हैं तुम हंस बनो अर्थात जो गंद है उसको छोड़ो, और जो अच्छी है उसको चुगो, तो मैं जो चीज दे रहा हूँ ये अच्छी चीज को लो और गंदगी छोड़ो, किचड़ा छोड़ो । यह रतन जो दे रहा हूँ इसको पकड़ो और पत्थर को छोड़ो, है असूल ये बातें लेकिन वो हंस की सवारी तो हंस पक्षी रख दिया है ना । अभी कहाँ देखो पक्षी के ऊपर बैठने की थोड़ी बात है । तो वह तो ख्याल करते हैं कि आएगा तो कोई पक्षी के ऊपर आएगा परमात्मा, आएगा तो कोई बैल के ऊपर आएगा, आएगा तो ऐसे आएगा तो वो यह समझते हैं कि आएगा तो इसी तरीके से आएगा । अभी इस तरीके से तो न कोई मनुष्य होता है, ना कोई जनावर होता है, ना ऐसी कोई बात है, है असूल इन्ही सब बातों का । तो अर्थ देखो कैसा है बातों का और फिर चित्र बनाए हैं ना तो चित्रों में मूंझ गए हैं एकदम । वह यही ख्याल रख बैठे हैं कि ऐसा ही होता होगा परमात्मा का । तो है देखो सब यही न, यही नंदीगण, यही भागीरथ और यही कहो की अर्जुन और यही कहो कि ब्रह्मा । असुल, ओरिजिनल नाम ब्रह्मा क्योंकि ब्रह्मा द क्रिएटर क्योंकि क्रियेट किया है न दुनिया को आकर तो ब्रह्मा । अभी ब्रह्मा भी कोई तीन मुख

वाला तो है नहीं ना । वो ब्रह्मा विष्णु शंकर यह तीन अलग-अलग हैं परंतु उन्होंने तीन इन तीन के लिए तीन सर रख दिया है ब्रह्मा के ऊपर । अभी ब्रह्मा के ऊपर जैसे तीन सर दिखाया है तो तीन सिर वाला मनुष्य तो कभी रहा ही नहीं है तो देखो कैसी कैसी यह सभी बातें बना दी हैं । तो इन चित्रों से यह सभी बातें मूंझ गई है ना, शास्त्रों आदि से इसीलिए बाप कहते हैं अभी इन सभी बातों को भूलो । अब जो मैं समझा रहा हूँ, मैं कैसे आता हूँ मैं आकर दिखलाता हूँ न, मेरा काम कैसे होता है मैं करके दिखालाता हूँ न । मैं अभी कर रहा हूँ, मैंने आकर दिखलाया है कि मैं कैसे आता हूँ बाकी ऐसा ख्याल नहीं करो कि मैं हंस के ऊपर बैठ कर आऊंगा या मैं कोई बैल के ऊपर बैठ कर आऊंगा या फिर मैं कोई शेर की शक्ल आदि लूंगा, आधा मनुष्य का लूंगा आधा जनावर का, ऐसे-ऐसे ख्याल नहीं करो । मैं ऐसे आता हूँ, तो मैं आकर के दिखलाता हूँ मैं कैसे आता हूँ । मैं काम कर करके दिखलाता हूँ कि मैं कैसे करता हूँ तो अभी देखो कर रहा हूँ ना । मेरा काम ऐसा ही है जैसे अभी कर रहा हूँ बस ऐसे ही मैं कल्प कल्प यदा यदा ही जब-जब अधर्म है मैं आता हूँ और ऐसे करता हूँ । और आता हूँ तो मुझे भी तो कोई यहाँ का ही तन मिलेगा । और उस तन में भी क्यों आता हूँ वो भी बैठ कर के समझाते हूँ कि वही चाहिए ना पुराने, जो पहले थे स्वर्ग के राजे महाराजे श्री लक्ष्मी श्री नारायण, वो भी अभी किसी ना किसी जन्म में होंगे ना, तो उनका कौन सा है शरीर इसीलिए मैं फिर उसमें आता हूँ क्योंकि

उनकी राजधानी स्थापन करने के लिए है । इसलिए उसको भी बैठ कर के पवित्र बनाता हूँ और उसके साथ-साथ उसकी वंशावली भी जो है वह भी पवित्र बनती है फिर वह पवित्र वंशावली का फिर जनरेशन चलता है, यह सीधी सीधी बात है । तो इसमें भी अभी मूंझने की बात नहीं है कि परमात्मा क्यों इसी तन में आता है । परमात्मा को जो नॉलेज सुनाना है तो कैसे सुनाए, ऊपर से तो आकाशवाणी नहीं करेगा । ऊपर से कैसे आवाज करें, ऐसे ही आवाज फेंक दे? कैसे करे या अन्दर सेआवाज करें या अंदर प्रेरणा करें? नहीं, वह अंदर अगर प्रेरणा करे या आवाज करे फिर तो जो कहा है जो करेगा सो पाएगा तो वह सिद्ध नहीं होता क्योंकि हमको अपने कर्मों से बनना है ना । तो अगर हमको परमात्मा अंदर अंदर से ठीक करता रहेगा तो फिर तो इसमें हमारी तो कोई पुरुषार्थ की बात ही नहीं रही न । फिर तो वही बात हो जाएगी कि जब परमात्मा करें, अंदर से जब करें, फिर तो वही बात आ जाती है ना जैसे कई कहते हैं की परमात्मा सब करता है, वो ही जब अन्दर से प्रेरणा करे तब सुधरें । राईट क्या है, कोई बात को रोंग राइट समझाने में तो हम किसी की गिला तो नहीं करेंगे ना कि हां रोंग क्यों कहते हैं । इसको रॉग नहीं कहते हैं लेकिन भाई इससे क्या हुआ, ये कैसे बनी, ये यादगार में फर्क पड़ गया जैसे गांधी की जीवन प्रैक्टिकल क्या थी, लिखने वालों ने कुछ फर्क कर दिया है, फिर बहुत समय आगे बढ़ने से बातों में बहुत डिफरेंस पड़ जाता है किसी ने क्या समझा किसी ने क्या समझा तो हो जाता है

ना बहुत काल का, तो पीछे देखो उसमें हमने ग्लानी थोड़ी ही की । बात समझाना तो पड़ेगा ना भाई यह ओरिजिनल क्या बात है । तो जैसे हम कहें यह दूध है इसमें मिलावट है पानी की तो क्या हम दूधवाले की ग्लानी करते हैं क्या? है दूध में पानी तो बताना तो पड़ेगा ना भाई मीटर टेस्ट करता है भाई इसमें इतना पानी है, इसमें इतना ये है वाला तो अभी मीटर टेस्ट करने वाला बतलाता है जो धणी है न वो धणी हमको कहता है अभी मीटर बतला रहा है तो क्या है, हम भी नहीं कहते हैं ना यह तो हमको परमात्मा बतलाता है देखो वो तो टेस्ट करने वाला है ना ओरिजिनल, तो मीटर तो राइट दिखलाता है ना । उस मीटर में खराबी भी हो जाए, उस मीटर में तो खराबी नहीं होगी ना परमात्मा में, वह तो टेस्ट अच्छी तरह से करके बतलाता है ना कि झूठ क्या है सच क्या है । उसमें तो कुछ फर्क भी पड़ जाए क्योंकि विनाशी चीज है, वो तो नॉलेज फुल है ना, उसकी बुद्धि में तो सब कुछ है ना, हम सबकी कर्म गति है न, उसके समझने में तो कोई ऊंचा नीचा नहीं हो सकता है ना । अब वह समझा रहा है, बता रहा है तो हम बतलाते हैं उसी से सुन करके और विवेक से भी, अनुभव में भी आकर के वह बात समझाते हैं । तो अगर हमको किसी को समझाना है जैसे स्कूल में भी बच्चे पढ़ते हैं तो टीचर उसको सुनाएगा न यह तुम्हारा लेसन रॉन्ग है, इसको ऐसा करेक्ट करो तो हमने अगर उसे रॉग बतलाया तो हमने उसकी ग्लानी थोड़ी ही की, वो तो बतलाना पड़ेगा न कि ये रॉग है इसको ऐसे करेक्ट

करो । तो जरूर रॉंग बतलाना तो पड़ेगा ना करेक्ट करने के लिए, अगर ना बदलाएं तो करेक्ट कैसे होगा फिर तो करैक्ट नहीं होगा ना, यह पाप है यह पुण्य है तो जरूर हमको क्लियर करना पड़ेगा कि पाप क्यों है यह, तो समझाना पड़ेगा ना इससे हमने उसकी ग्लानी थोड़ी ही करी । तो बाप भी बैठ करके बतलाते हैं कि बच्चे ये जो शास्त्र है, यह जो ग्रंथ है इसमें बातें कैसे मिक्स हो गई है इसीलिए तू उसी पर आधार रख करके, यह समझ करके कि भाई यह शास्त्र कैसे झूठे होंगे, यह सुनाने वाले कैसे झूठे होंगे, नहीं तेरी बुद्धि में यह घुसा हुआ है ना इसीलिए तुम अपनी बुद्धि को नहीं चलाते हो इसीलिए तुम उस बात को नहीं समझ रहे हो, अभी मैं जो कहता हूँ तू विवेक में तो ला ना, अपनी बुद्धि में तो ला ना । तो बाप समझाएगा न तू समझ तो सही की भला ये बात ऐसे कैसे होगी । बताओ भला ऐसे कैसे मेरा अवतरण होगा शेर की शक्ल आदि यह सब ऐसे भला कैसे होगा, बताओ? तो बाप तो यही समझाएंगे ना कि यह तो इन चित्रकारों ने ऐसे भूल की है और भला कैसे समझाए? इसी-इसी अर्थ से इन्होंने बैठ करके ऐसा रखा है, बाकी इनका अर्थ है यह अलंकार है इनको तू ऐसे समझ बाकि बात असूल क्या है वह ऐसी है, तो समझाएगा ना । अभी इसमें क्या ग्लानि करी बताओ? ग्लानि थोड़े ही है । तो हम किसी की ग्लानि नहीं करते हैं, ना शास्त्रों की, ना ग्रंथों की, न चित्रों की, पर समझाना तो पड़ेगा ना की यह सभी बातें कैसे बनी, यह भक्ति मार्ग के लिए हैं ये सब । इसीलिए किसी की ग्लानि नहीं है

लेकिन समझाने के लिए यह राइट और रॉन्ग बताना होता है । यदि राइट समझाने के लिए रॉन्ग ना बताए तो राईट का कैसे पता चलेगा कि क्या राइट है, किसमें हमको बुद्धि रखनी है, कैसे हमको राइट बनना है वह कैसे समझें तो समझाने के लिए समझाना पड़ता है । तो इसमें कोई संशय लाने की या कोई भी ऐसी बात आने की जरूरत नहीं रहती है क्योंकि यह तो समझना है ना । तो बाप बैठकर के समझ देते हैं, कोई तो बात में हम मूंझें हैं, कोई तो बात में हम भूले हैं, कोई तो बात में हम रॉन्ग हुए हैं तभी तो परमात्मा को आना पड़ता है ना यहाँ । वह कहते हैं यह बात मुझे ही समझानी पड़ती है । अगर पहले से ही सब है तो यह इतने सब चित्र हैं इतने वेद शास्त्र ग्रन्थ हैं आज तो हमारे पास सब बातों की समझ होनी चाहिए न, फिर परमात्मा ने यह क्यों रखा कि यदा-यदा ही, जब-जब अधर्म होता है तो मैं आता हूँ, तो अधर्म के समय यह सब था ना । देखो परमात्मा जब आया तो अर्जुन भी था, पहले से ही था ना । वो भी था और उसके साथ-साथ वेद शास्त्र ग्रंथ आदि भी थे, तब तो गीता में कहा है ना, इन वेद, शास्त्र, ग्रंथ आदि के अध्ययन से मेरी प्राप्ति नहीं हो सकती है । तुम बड़े पंडित भी बने हो, तुमने सब वेद शास्त्र आदि बहुत पढ़े हैं, तुम्हारे इतने पढ़ाने वाले गुरु भी खड़े हैं, ये सब है, अब कहा ना इन सबको भूलो, क्यों कहा? तभी तो कहा ना कि यह सब तुम जो पढ़े हो और जिन्होंने पढ़ाया है यह सब बातें तुमने पढ़ी तो सही परंतु मेरी प्राप्ति मेरे द्वारा ही हो सकती है क्योंकि यथार्थ में

ही समझाता हूँ । ये तो खुद भगवान ने कहा है न तो भगवान ने क्या ग्लानी करी? वेदों की ग्लानि करी? शास्त्रों की ग्लानि करी? अगर भगवान ने ग्लानी करी तो भगवान के शास्त्र को खत्म कर देना चाहिए, भगवान का ही शास्त्र खत्म कर देना चाहिए की भगवान भला ग्लानि क्यों करता है । नहीं, वह तो भगवान ने समझाया है ना । अगर वह भी आ करके हमको रॉन्ग राइट ना पता देवे, रॉग राईट का पता न देवे तो हम राइट में कैसे आवे, फिर कैसे समझें । तो उसको समझाना पड़ा न तो इसीलिए यह ग्लानी की बात नहीं है । उसको समझाना पड़ेगा इसलिए बाप कहते हैं बच्चे मुझे तो आकर के रोशनी देनी पड़ेगी, रोशनी नहीं तो काहे की? किस अंधकार में पड़े हो? कैसे तुम अंधकार में आए? ये पांच विकारों के अंधकार तो पहले ही चढ़ी बाकी भी जिन्होंने तुमको रास्ते बतलाया है ना, उन्होंने भी ऐसी-ऐसी बातें रखी तो उसकी वजह से और भी तुम्हारा उन बातों में तुम ठहर गए हो । बस समझते हो यह ऐसा ही होगा, परमात्मा ऐसा होगा, यह बात ऐसी होगी, उसी में रह गए । परंतु नहीं, यथार्थ क्या है प्रैक्टिकल उसकी खोज, उसका पूरा-पूरा जो सार है, वह मैं आ करके तुमको समझाता हूँ । तो इसीलिए तुम बातों में मूंझ गए हो तो मैं आ करके समझाता हूँ बाकी उसमें मैं किसी की ग्लानि नहीं करता हूँ । कहा है ना आसुरी संप्रदाय, तू उसका संग मत कर, अब तो मैं डायरेक्ट समझाता हूँ तो क्या ग्लानि की? आसुरी सम्प्रदाय, वह भी भगवान की संताने थी ना, तो भगवान ने अपनी संतान के लिए

आसुरी संप्रदाय क्यों कहा? फिर तो ऐसे तो कहो वो गिला करता है भगवान । अब भगवान् क्यूं गिला करता है? नहीं, वो कहा है क्योंकि उसको समझाना पड़े न, यह आसुरी है यह दैवीय है, तो आसुरी शब्द लेना पडा न, फिर आसुरी कहा तो क्या गिला करी क्या? और क्यों कहा इन सब को मारो । कहा है न, उसमें तो और ही कड़ी बात कही है गीता में कि मारो, यह गुरु खड़े हैं इनको मारो वो कहा है ना गीता में अर्जुन को, तो क्यों कहा मारो ? भगवान और गुरु के लिए कहे मारो, भगवान कहे यह सब करो तो भगवान के लिए तो बड़ी बात है न । तो भगवान जो ऐसा आर्डर करें, तो अगर रॉन्ग है तो उसको भगवान नहीं मानना चाहिए न । परंतु नहीं यह समझने की बातें हैं ना । इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यह सब समझने की बात है । मैंने आ करके जरूर ऊंची बात, उन्हों से कोई नई बात, उन्हों से कोई ऊंची बात समझाई है, तब तो कहा ना कि अभी यह तू भूल जा । देखो इसीलिए कहा कि वह नदी नाले कुँए जिसमें तुम डुबकी लगाते थे ना, अभी तो तुमको सागर मिला है ना ज्ञान का सागर, तो ज्ञान का सागर यानी सागर मिला है तो अभी तुम काहे ये नदी नाले आदि की बातें कर रहे हो यह नदी ने मुझे यह सिखाया, इसने नाले में यह किया, यह वेद शास्त्रों के लिए कहा है ना, यह तो जैसे नदी नाले यह सब कुँए है । तुमको तो अभी जब ज्ञान का सागर मिला है तो इनके लिए क्यों सोचता है । अभी इन सब को भूल, इसीलिए बैठ कर के कहा कि अभी मैं जो कहता हूँ उसको समझ और

समझ करके मेरी मत पर इसीलिए कहा है श्रीमद्भगवद्गीता तो इसीलिए कहते हैं मेरी शिक्षा अभी जो तुमको मिल रही है उसको धारण करके अभी उसी पर चल तो ठीक बात है ना सीधी बातें हैं ना । तो इसमें तो कोई मूंझने की बात है ही नहीं और ना कोई इसमें किसी की ग्लानि की बात है । यह तो कभी कोई ख्याल ना करें कि हम कोई किसी से घृणा से या कोई की गिला से कहते हैं । नहीं, ये तो समझाना पड़ता है ना । तो समझाया जाता है डिफरेंस तो यह भक्ति मार्ग का यह भी होना है । यह मूंझ ना हो तो फिर तो सुलझना भी ना हो, मूंझ है तो सुलझना भी है दोनों कंट्रास्ट चाहिए ना । ना हो मूंझ तो उलझने वाले और सुलझाने वाले की आने की जरूरत ही ना हो, फिर तो हम ठीक ही ठीक हैं परंतु उस ठीक की रिजल्ट भी होनी चाहिए ना । जरूर कहाँ मूंझे हैं हमारी कोई चीज पूरी नहीं है तब तो हमारी लाइफ हमको दिखलाती है ना । नहीं, तो हम अगर ठीक है तो फिर हमारी लाइफ में प्राप्ति होती सुख शांति की । तो जरूर है कि कहाँ मूंझें हैं, किसी बात में हम खोए-खोए चल रहे हैं, तो वह खोए-खोए किसमें चल रहे हैं, वह खोई हुई क्या चीज है तो यही खोई हुई चीज फिर बाप आ करके बतलाते हैं कि बच्चे यहाँ से तुम रॉन्ग हो, ये स्टेप यहाँ ठीक रखो, इन बातों को ऐसे समझो । तो ये सभी चीजें, इन सभी बातों का सार, इन सभी बातों का रहस्य पूरा आकर के बाप समझाते हैं तो उसकी नई नॉलेज हो गई ना इसीलिए कहते हैं मैं जो समझाता हूँ वह नया समझाता हूँ ।

जो तुम सुनते आए ना वेद और शास्त्र में बातें वह बातें दूसरी हैं, यह बात जो मैं समझाता हूँ वह दूसरी है इसीलिए मैं नई दुनिया की नई नॉलेज देता हूँ क्योंकि नई दुनिया बनाता हूँ ना, उसके लिए नई नॉलेज और नई बातें यह समझाता हूँ । मैं तुमको बतलाता हूँ कि यह दुनिया स्वर्ग होती है कैसे होती है जिस स्वर्ग के तुम मालिक बनते हो और कैसे बनते हो यह सिखा रहा हूँ समझा, तो यह नई बातें हैं ना । तो उसकी बातें ही नई है इसीलिए हम जो सुनते आए हैं, उसमें और अभी जो यह सुनने हैं रात और दिन का फर्क है क्योंकि मेरे परिचय को ही मनुष्यों ने उल्टा कर दिया है ना सर्वव्यापी रख करके । देखो उन्होंने कहा परमात्मा सर्वव्यापी है, अभी ये भी रॉन्ग है । मुझे व्यापक रखने से मेरी वैल्यू कम कर दिया । व्यापक कहा तो माना मैं कुत्ते में भी व्यापक, बिल्ली में भी व्यापक, चींटी में भी व्यापक तो मुझे तो चींटी बना दिया, कण-कण में व्यापक तो मुझे कण बना दिया, मेरी कितनी ग्लानी की है । बाप कहते हैं मेरी जितनी ग्लानी की है उतनी किसी की ग्लानि नहीं की है । मुझे तो और ही पत्थर-पत्थर में ठोंक दिया न । देवताओं को फिर भी मनुष्य शरीर में रखा है, मुझे तो और ही पत्थर बना दिया है । मुझे तो कण-कण में रख करके मुझे तो कण-कण बना दिया है मेरी तो और ही सब ग्लानि करी ना । सबसे ज्यादा ग्लानि परमात्मा की करी, देवताओं को फिर भी मनुष्य रखा कि भाई यह मनुष्य देवता हैं, उनको पत्थर तो नहीं रखा ना, मुझे तो पत्थर बना दिया मुझे तो

कण-कण में रख दिया, मेरी तो वैल्यू बिल्कुल डाउन कर दी । कहते हैं सब कुछ में परमात्मा है । एक सन्यासी मिला था आप लोगों को नहीं शायद मालूम हो एक सन्यासी था उससे बात चली थी की भाई परमात्मा को आप लोग सर्वव्यापी कहते हो उससे जरा थोड़ी बात चली थी, तो उसने कहा हां सर्वव्यापी, आर्य समाजी था शायद तो कहा हाँ परमात्मा सर्वव्यापी है तो उसने कहा क्या विष्टा में भी परमात्मा है, विष्टा में भी परमात्मा है वो टट्टी में, तो उसने कहा क्या सब में परमात्मा है तो कहा हाँ विष्टा में भी परमात्मा है, देखो परमात्मा को कहाँ ले गए हैं । तो बाप कहते हैं देखो मुझे विष्टा बना दिया मुझे गंद बना दिया तो सब में तू सर्वव्यापी, तो सर्वव्यापी माना तो उस गंद में भी परमात्मा है । तो देखो तुमने मुझे गंद भी बना दिया, की गंद में परमात्मा, मुझे भी गंद कर दिया और क्या है । तो देखो मेरी कितनी ग्लानि की है, मेरी कितनी इंसल्ट की है तो सबसे ज्यादा इंसल्ट मेरी करी है इसीलिए कहते हैं तुम गिरे हो । ऑटोमेटिक गिरे हो क्योंकि मेरी ग्लानी की है ना, मुझे ना जाने के कारण तुमने मुझे उल्टा बना दिया है । तो बाप तो समझाएंगे ना बच्चे देखो ना जानने के कारण मुझे कहाँ ले गए हो इससे तो अच्छा वो पहले वह ऋषि मुनि थे ना वह कहते थे बेअंत-बेअंत-बेअंत नेति-नेति । है न वेदों में, वह कहते हैं कि ऋषि मुनि जो पहले थे वह कहते हैं कि परमात्मा और परमात्मा की रचना का अंत पाना वह नेति नेति नेति बेअंत तो कहते हैं, फिर भी अच्छे थे ना कि हम नहीं

जानते हैं । कोई बात का पता ना हो तो कह देना चाहिए भाई हम नहीं जानते हैं और दावा रख कर के कहना हाँ हम जानते हैं, कैसा है भाई? हाँ कण कण में है, उल्टा बतावे तो तो वो तो कहते हैं रॉन्ग साइड लेना तो यह तो और ही रॉन्ग है उससे तो अच्छा कह दो भाई मुझे रास्ते का मालूम नहीं है हम आपको बताएं तो कहाँ पता नहीं उल्टा तुम चले जाओ इसीलिए कहदो की हमें मालूम नहीं है तो वो अच्छा है ना । मालूम नहीं है तो धोखा तो नहीं होगा ना । हां मालूम कहकर कि यह रास्ता है और किसी को उल्टा धकेल देना तो बाप तो कहेंगे ना कि देखो यह तो उल्टा रास्ता दिखलाने वाले हो गए ना । तो उल्टा रास्ता दिखाने वाले के ऊपर भी बाप आंख दिखाएंगे ना इसीलिए कहा है कि इन सब का उद्धार करने वाला मैं हूँ साधु-संतों भगत आदि सबका नाम लिया ना । तो बाप है ना अथॉरिटी है ना तो वह आँख दिखाएगा न कहेंगे देखो इससे तो अच्छा था तुम कहते कि मालूम नहीं है । तो इससे पहले जो थे वो अच्छे थे न फिर भी रजोगुणी थे न, अब तो देखो तमोगुणी हाँ कहते हो, हाँ रास्ते का पता है, ये मन्त्र जपो बेड़ा पार है, तुम पहुच जाएंगे । अरे! पहुच जाएगा, किसने देखा, कहाँ पहुचा, कहाँ गया, पडा तो फिर भी यहीं हैं, फिर मरा इधर ही जन्म लेगा और जाएगा कहाँ । जब तलक मैं दुनिया को स्वर्ग न बनाऊँ तब तलक तुम स्वर्गवासी होती ही कहाँ हो और तुम समझते हो वह स्वर्गवासी हो गया । तो ये सभी बातें बैठकर के बाप समझाते हैं, बाप है न ऑथोरिटी है न तो सब समझाते हैं क्योंकि

अथोरिटी को तो हक़ है न । बाप है न, तो इसमें हम किसी की ग्लानी थोड़े ही करते हैं । वो यथार्थ बातें हैं और बाप समझाते हैं वो बातें सुनकर के विवेक में आती है अनुभव में आती है तो दूसरों को समझाने में आती हैं क्योंकि मिस गाइड हो रहे हैं न । इसको कहेंगे मिस गाइड, इससे गाइड न करना अच्छा है न । बजाय मिस गाइड करन के गाइड न करना अच्छा है इसीलिए तो कहते हैं गाइड न बनो न । गाइड भी बने हो परन्तु मिस गाइड करते हो । तो बाप कहेंगे मिस गाइड क्यों करते हो । इसीलिए कहते हैं गाइड इज वन । मैं गाइड हूँ, मैं जानता हूँ, रास्ता कौन सा है वो मैं जानता हूँ । तुम रास्ते वाले गाइड भी बनते हो परन्तु करते हो मिसगाइड तो उसका दोष भी है न । इसीलिए कहा है की अभी इन सब बातों को भूलो । तभी तो कहा है न इन गुरुओं का, इन् शास्त्रों का, इन ग्रंथों का, इन सब बातों का अभी तुम संग छोड़ करके अभी तुम मेरी मत पर रहो । तो जरूर कोई नई बात थी न, जरूर कोई बात ऐसी थी जिस पर बैठ कर बाप ने समझाया तो ये सभी चीजों को समझना है । इसीलिए अभी बाप कहते हैं की देखो पहले एक तो विकारों ने तुमको मिसगाइड किया, विकार ले गए एक तो वो ताला पडा बुद्धि को, दूसरा फिर ये गाइड करने का दावा रखने वालों ने और ही मिस गाइड किया इसीलिए कहते हैं डबल ताला, बुद्धि को डबल ताला लग गया न तो और ही बुद्धि एकदम ऐसी हो गई । वो कहते हैं भाई विद्वान, फलाने शास्त्र वाले, वो कैसे हमको रोंग बतलाएंगे या ये कैसे रॉग होंगे तो

देखो वो क्या बताते हैं और उसी में बैठकर के तुम उसी में चल पड़े, पर वो सभी बातें क्या है तो तुम देखो तो सही की मेरा ही परिचय पूरा नहीं है इसीलिए तुम मेरे से बेमुख हो गये । भले उन्होंने अनजाने में करा है लेकिन अनजाने में भी करा न । जान के भले नहीं करा परन्तु अनजाने में तो किया न, उससे तो अच्छा था कहना की हम जानते ही नहीं हैं परन्तु ये कहना की ये रास्ते चलने से मोक्ष होगा, इस रास्ते ये होगा, मोक्ष का नाम ले करके और ये सब चीजें बतलाना, वो कहते हैं ये मोक्ष देना मेरा काम है की मनुष्य का काम है । यह मेरे काम को फिर दावा करते हैं अपने के लिए, इससे अच्छा तो कहें की भाई यह जो थोड़ा बहुत तुम करते हो तो करते रहो बाकी मोक्ष तो परमात्मा जब आएंगा तब देगा, कह के कुछ न कुछ वो अपने से तो उतार दे न, अपने से तो हटा देना । इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यह सभी बातों को अच्छी तरह से समझो और समझ करके इन सब बातों को अच्छी तरह से पकड़ो । इसमें देखो ग्लानि थोड़ी है किसकी, यह तो राइट है ना जो बैठकर के बाप समझाते हैं और उसको समझ करके चलना है । यह तो आप लोगों को मालूम है कि अपना हो रहा है हम गवर्नमेंट से भी लिखा पढी कराएं लेकिन गवर्नमेंट भी इर्रिलीजियस है ना । कौन समझे इस बात को । जब नेहरू से लिखा पढ़ी होती थी कि भाई देखो यह तो हमारे पूज्य देवताओं की ग्लानि करते हैं ना । हमारे पूज्य देवी देवताओं श्री कृष्ण के ऊपर सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण संपूर्ण निर्विकारी हमारा

पूज्य देवता उनकी ग्लानि करते हैं, उसको एक सो आठ रानी थी उसको ऎसी-ऎसी बातें लगा रखी है, ऐसी ऐसी बात उनके साथ करी हैं की वो नगन करके गोपियों के कपडे चुरा के ले गए, ये ऐसी-ऐसी बातें रखी है जो क्रिश्चियन लोग भी उसका उल्टा एडवांटेज लेते हैं इसीलिए इन सब बातों को आप लोगों को देखना चाहिए परंतु सुने कौन, वो नेहरू तो बिचारा देवी देवताओं का नाम सुनकर कहता है की वह तो जानता ही नहीं है । वह कहता है देवी देवताओं आदि को हम मानते ही नहीं हैं । तो ये सभी बातें हैं क्योंकि हमारी गवर्मेंट ही इरिलिजियस है । भारत सो भी प्राचीन भारत जिसमें कितना बल था और प्राचीन भारत कितना ऊंचा था, उसमें आज वो नॉलेज की पॉवर न रहने के कारण, वो समझ ना रहने के कारण आज हमारा भारत गिर चुका है और अभी गवर्नमेंट ही इरिलिजि यस है । उनका कोई अपना धर्म तो कोई है नहीं, वो कोई धर्म को तो मानते ही नहीं, सब अपने-अपने धर्म है, यहाँ तो सब अपना बस करो । चलो, करें भी कर्म तो कर्म क्या करें, चलो कर्म को धर्म समझो तो पता तो होना चाहिए न की क्या करें, व्हाट इस कर्म, कर्म की भी नॉलेज चाहिए ना । कर्म की फिलॉसफी क्या है, कर्म की भी तो नॉलेज होना चाहिए ना । वो कर्म की नॉलेज तो कर्म की गति को जानने वाला देगा न की यथार्थ कर्म क्या है इसीलिए बाप कहते हैं इन सभी बातों को यथार्थ ना जानने के कारण बिचारे ये मूंझ पड़े हैं इसीलिए यह सभी गिरावट है क्योंकि मेरे से बेमुख हो अपने कर्म से बेमुख हो । यथार्थ कर्म को

ना जानने के कारण तुम्हारे एक्शंस का तुमको पता नहीं है हमें क्या करना है इसीलिए मैं आकर किसी सिखाता हूँ कि कैसे प्योरिटी को अपना करके अपने प्योरिटी के एक्शंस को करो तो तुम्हारे एक्शंस श्रेष्ठ बने और उसी के आधार से तुम श्रेष्ठ बनो । तो यह सभी चीजें समझने की है ना जो बैठकर के बाद समझाते हैं । अच्छा, अब टाइम हो गया है । आज छुट्टी है ना? आज तो रिपब्लिक डे है, आजादी का दिन है । किससे आजादी? हाँ. माया से आजादी । हम बनाते हैं माया से आजादी । पांचों विकारों से आजाद । जब तलक पांचों विकारों से आजाद ना हुए हैं तब तलक हमारा भारत भी सच-सच आजाद नहीं हो सकता है । यह आजाद होते भी देखो कितना दुःख खाना नहीं, पीना नहीं, देखो दिन-ब-दिन ये सब बढ़ते जाता है, ये काहे के लिए है क्योंकि इसमें माया जो बैठी है ना, वो ब्रिटिश गवर्नमेंट से तो आजाद हो गए लेकिन माया से तो आजाद नहीं हुए ना । तो माया से जब तलक आजाद नहीं हुए हैं तब तलक सुखी हो ही नहीं सकते हैं इंपॉसिबल है । इसी से यह भ्रष्टाचार आदि यह सब बातें बढ़ती चलेंगे, यह कम होने की नहीं है जब तलक वह खत्म ना हो । खत्म करने का पावर चाहिए और पावर देने वाला चाहिए पावरफुल । फुल पावर वाला चाहिए अभी छोटे पावर वाले का काम नहीं है इसीलिए कहते हैं कोई मैसेंजर भेजूं या कोई पैगंबर भेजूं अभी उनका काम नहीं है । अभी तो मेरे आने का टाइम है इसीलिए कहते हैं मैं फुल पावर वाला खुद आता हूँ । इसीलिए कहते हैं ना यदा यदा जब जब अधर्म

होता है तो मैं आता हूँ ऐसे नहीं मैसेंजर भेजता हूँ या पैगंबर खाली पैगाम दे जाए । नहीं, उनका भी काम नहीं उसका भी काम पूरा हुआ । अभी मेरा काम है, मैं खुद ही अभी आया हुआ हुआ हूँ । अपनी पहचान अपना सब बात समझाने के लिए मुझे आना पड़ता है इसीलिए कहते हैं अभी मैं आया हूँ और कैसे आया हूँ वह समझाते हैं । तो मुझे भी सुनाने के लिए कुछ तो जगह चाहिए ना जहाँ से सुनाऊँ मुझे भी तो तुम्हारे जैसा मुख चाहिए ना । सुनाने के लिए मुख का ही आधार चाहिए और कहाँ से सुनाऊँ, माइक्रोफोन से ? माइक्रोफोन को भी मुख चाहिए ना, सब चीज को मुख चाहिए न । मुख से तो आवाज आएगी, फिर उससे आवाज बढ़ेगी परंतु फिर भी मुझे तो मुख का आधार लेना पड़ेगा ना । मैं ऊपर से क्या माइक्रोफोन से आवाज करूँगा । वह भी आवाज कहाँ से आएगा, कैसे करूंगा और तो कोई तरीका ही नहीं है ना । कोई आकाशवाणी भी तो नहीं ना, आकाशवाणी की वाणी भी तो इधर से ही चलेगी ना । ये आकाश हैं ना पोलार , मुख का, उससे वाणी भी तो यहाँ से निकलेगी न ऑर्गन से, तो इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे इस सभी बातों को समझना है । मैं आकर के आकाशवाणी करता हूँ लेकिन आकाशवाणी के लिए मुख लूंगा तभी तो आकाश से वाणी सुनाऊंगा न तो यह सभी चीजें समझने की है । अच्छा, कैसा, पार्वती मां? पार्वती मां ने खिलाया कभी? नहीं खिलाया ना । अच्छा, इसको तकलीफ है हाँथ में । अच्छा, बैकुंठमाँ खिलाया है? आओ, आओ, कभी एक बार यह, एक

बारी ये । शिव बाबा को याद करके खिलाना है, शिव बाबा को याद करके । अच्छा अभी अपने को आजाद करो, किससे आजाद करो? पांच भूतों से । बड़े भूत हैं यह तो अजगर कहो, भूत कहो, शैतान कहो, इसे असुर कहो । यही असूर है जिसने हमको आसुरी संप्रदाय बनाया है न इसीलिए बाप कहते हैं अभी इनको नाश करो । और कोई तरीका नहीं है बस एक ही तरीका है इसका । ऐसे नहीं कैसे भी करें, बहुत रास्ते हैं इसके, जैसे बतलाने वालों ने बहुत बताया हैं ऐसा भी करो, ऐसा भी करो, जैसा भी करो पहुंचेंगे वहाँ ही, परंतु कहते हैं नहीं, एक रास्ता है । गॉड इज वन, गॉड का रास्ता भी इज वन, ऐसे नहीं गॉड इज वन रास्ते बहुत है, नो, नो, नो रास्ता एक ही है । इसीलिए गाइड करने के लिए भी मैं ही हूँ क्योंकि इसका गाइड भी इज वन तो मैं ही गाइड बनता हूँ और रास्ता में ही बतलाता हूँ इसीलिए गाइड मैं हूँ और कोई गाइड हो ही नहीं सकता है । ओरों की गाइडेंस तुमको इधर ही ले आती है उसमें तुम अच्छा करते हो उसका थोड़ा अच्छा पाते हो इधर ही, जन्म मरण में इधर ही उसका सुख लेते हो । वो कहते हैं ना मोक्ष, कहते हैं तुमको पार ले जाएंगे, पार नहीं ले जाते हैं इधर ही उनके अच्छे कर्म का फल तुमको मिलता है । मिलता है ना, इधर ही है । तो इधर ही का फल खा खा करके अभी देखो उसका मजा रहा नहीं है ना । अब कहते हैं वह सदा सुख वह कहते हैं वह फल मैं तुझको देने आता हूँ, वह जो ऊँच में ऊँच फल है इसीलिए कहते हैं |मेरी बात, मेरी प्राप्ति सबसे ऊंची है और

नई है । वो मैं आ करके समझाता हूँ और मैं ही आकरके कर देता हूँ । बाकी उन्हों का यहाँ मिलता है ऐसे नहीं है की व्यर्थ है, उसका फल है परंतु वो अल्पकाल का, जो तुम यहाँ खाते आए हो । मिलता है परंतु खाते-खाते उसका भी हाल देख लो न । फल वाले भी इधर ही है, कर्म वाले भी इधर ही हैं देखो हैं ना, कोई धनवान है. यह धन भी तो कोई कर्म का फल ही है ना, यह भी कोई अगले जन्म में अच्छा कर्म किया है ना तो उसी कर्म का फल भी देख रहे हो परंतु धनवानो का भी बिचारों का क्या हाल है । वह भी तो बिचारे ही गिने जाएंगे ना । उस फल के आगे, मेरे फल के आगे, वह भी बिचारे गिने जाएंगे । यह हमारे बैकुंठमाँ, कैसा बैकुंठ चलेंगे ना? पक्का, पक्का पक्का है तुमने मेहनत की है ना डबल तो तुमको डबल देंते हैं । अच्छा, शाबाश! हम लेते हैं, देखो । अच्छा, शाबाश! अच्छा, इसीलिए बाप से अपना पूरा पूरा वर्सा लेने के लिए पूरा-पूरा पुरुषार्थ रखो । अच्छा, बाप दादा हां अभी बाप और दादा को समझते जाते हो ना । तो बाप दादा क्योंकि इनको पहले-पहले दादा कहते थे सिंध में दादा नाम था, दादा लखीराज नाम है लेखराज पहला तो लेखराज या लखीराज, जवाहरी था ना तो बहुत व्यापारियों के साथ बड़े-बड़े राजाओं के साथ कनेक्शन होता है, जवाहरी लोगों का तो जवाहरात लेने वालों से, तो जरूर साहूकार होंगे ना, राजे लोग होंगे तो उनको लखीराज भी कहते थे । तो नाम असूल ये है परंतु जब एडोप्ट किया परमात्मा ने तो फिर नाम रखा है ब्रह्मा । ऐसे इन सब का नाम सब की लिस्ट आई

थी ऊपर से देखो कितने थे तीन सौ, पता नहीं कितने थे चार सौ थे तो सब की लिस्ट आई थी नाम की एक ही दम । एकदम जैसे छत्रिवादी जाती है तो बच्चों की एक ही दिन छात्रिवे सबका नाम आया था ऊपर से । इनका पहला नाम क्या है तुम्हारा अभी क्या बाबा ने क्या रखा है? बाबा ने हृदय पुष्पा, देखो कितना अच्छा रखा । उसका पहले नाम है टिक्कन, इसके लौकिक बाप के घर का नाम है टिक्कन । मालूम है आपके टीचर का नाम है टिक्कन । अभी फिर रखा है बाबा ने इसका हृदयपुष्पा तो अभी हृदयपुष्पा पूरा बनना है न । पूरा पुष्प, ऐसे बहुतों के हैं ये तो पीछे पीछे आए न इसकी छतरी अभी हुई नहीं है ये सब पीछे आए हैं । बहुतों के नाम ऐसे रखे गए देखो हमारा पहले नाम है राधे, अभी रखा है सरस्वती । नाम है बाकी ऐसा नहीं है कि हां सरस्वती है तो कमल के फूल पर बैठेंगे वो जैसे चित्र दिखाया हंस के ऊपर बैठेंगे या सितार बजाएंगे । यही सितार है ना, ये ज्ञान की सितार तो यह गायन वहाँ रख दिया है । कहाँ अस्त्र-शस्त्र दे दिया दुर्गा को, है देखो वह तलवारे दे दी हैं, अभी कोई वह तलवारे थोड़े ही चलानी है । नहीं, यह ज्ञान की तलवार । यह ज्ञान की तलवार है ना जिससे हम विकारों को काटने का यह समझाते हैं तो यह तलवार है । तो तलवार भी कहा जाता है इसको । इसको तलवार कहो, अस्त्र-शस्त्र कहो तो भी अस्त्र-शस्त्र यह ज्ञान के और बैंजो कहो, सितार कहो तो यह है ज्ञान के । तो ज्ञान के बहुत अलंकार दे दिए हैं, कहाँ सितार रख दिया है, कहाँ मुरली रख दी है,

कहाँ तलवारे रख दी है, कहाँ कुछ रख दिया है, कहाँ वह घड़ा दे दिया है वो लक्ष्मी को घड़ा देते हैं ना, वह घड़ा ले आई अमृत का । तो अमृत का कोई घड़ा थोड़ी लेकर आई, यही है ज्ञान अमृत का घड़ा जो अभी मिल रहा है ना, नॉलेज को अमृत भी कहते हैं, ये ज्ञान को अमृत भी कहते हैं । तो है सब यह नाम ज्ञान के नाम फिर कहाँ अमृत, कहाँ तलवार, कहाँ बैंजो, कहाँ मुरली कहाँ कुछ यह सब रख दिए हैं, है यह ज्ञान के अलंकार । तो ज्ञान की भी छतरी कितनी बना दी है । तो यह सभी चीजों को बैठकर के बाप समझाते हैं । अच्छा ऐसे बाप दादा और मां के मीठे मीठे बहुत सपूत बच्चों प्रित याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

मम्मा मुरली मधुबन

33. पुरुषार्थ और प्रालब्ध

यह संगम का सुहावना समय वह अच्छा व हमारा भविष्य जो हम देवी-देवता पद को पाएंगे वह अच्छा? क्वेश्चन करते हैं, कौन से दिन अच्छे हैं ? यह अच्छा? क्यों? देवी देवता बनेंगे, प्रालब्ध पाएंगे सतयुगी बनेंगे, वह नहीं अच्छा और यह अच्छा, क्यों ? यहाँ से ही पद पाते हो तभी, यह ठीक है । हाँ, यह ठीक बात है कि यह दिन उन दिनों से भी अच्छे हैं । क्योंकि कमाई इसमें करते हैं । वह तो खाएंगे, खाते-खाते, खाते-खाते खुट जाएगा । यहाँ तो भरते हैं ना तो इधर तो भरते रहते हैं तो भरने के दिन अच्छे हैं ना और यहाँ हमको बाप का संग मिलता है । उसके साथ हम अपना सौभाग्य बनाते हैं तो यह सौभाग्य बनाने के दिन है । पीछे तो सौभाग्य की प्रालब्ध पाएंगे । सोलह कला से फिर कला कम होते-होते चौदह कला हो जाएगी तो वह तो हुआ खाते रहना और यहाँ है अकाउंट में जमा करते रहना तो यह जमा के दिन अच्छे हैं जो हम अकाउंट में डालते भरपूर होते जाते हैं और बाप के संग के दिन हैं । तो हाँ यह दिन बहुत मीठे हैं जो अभी गुजर रहे हैं । उसमें भी अभी प्रेजेंट क्योंकि कमाई के दिन में भी इस संगम में भी यह टाइम कमाई का है संगम का । आगे चलकर के जब विनाश का सीन चलेगा तब उस टाइम थोड़े बैठकर के सुन सकेंगे, कमाई कर सकेंगे । नहीं, कमाई का यह

अभी का टाइम है, यह जो बीच का थोड़ा टाइम है इसी में हम यह कमाई कर सकते हैं इसके बाद दिन और भी खराब होते जाएंगे, जिसमें हम ऐसे बैठ करके सुने, करें मुश्किल पड़ता जाएगा । तो यह सभी बातें समझने की है और इसमें यह हमारा प्रेजेंट एक-एक दिन जो भी बीतता जा रहा है यह सब सुहावने दिन है । संगम में भी यह सुहावने दिन है क्योंकि कमाई के दिन है ना । पीछे, आगे चलकर के कमाई नहीं होगी फिर जो अपना स्टॉक यह जमा करके रखा है ना, उस टाइम पर भी उसी से काम लेना पड़ेगा ना । जितनी-जितनी जिसकी धारणा होगी तो उस धारणा को फिर उसमें लगाना पड़ेगा, जिसमें ताकत होगी । तो ताकत भी जमा करते हो ना ये दिन । संगम के दिनों में भी यह दिन प्रेजेंट के दिन, यह वह दिन जिनमें हम कमाई कर रहे हैं तो ऐसे संगम के सुहावने दिनों को खोते नहीं रहना, ध्यान रखना है । जब कहते हो कि नहीं, उन प्रालब्ध के दिनों से भी यह दिन अच्छे हैं तो इस दिनों से हम इतनी कमाई करते हैं और गाते भी ऐसे हैं शास्त्रों में भी है देवताएँ भी इच्छा करते थे मनुष्य जन्म की । परंतु देवताएं क्यों मनुष्य जन्म की इच्छा करते थे, यह बात कहने की है, ऐसे नहीं कि हम कोई इच्छा करेंगे वहाँ इसकी, हमको तो याद भी नहीं होगा कि हम ऐसे थे, हमने ऐसे यह प्रालब्ध प्राप्त की । डिटेल तो नहीं होगी, हाँ यह होगा कि हाँ अच्छे कर्म किए हैं, जैसे कॉमन होता है की मैंने अच्छे कर्म करते हैं तो अच्छा मिला है तो वैसे ही अच्छा फल पाया है परंतु अभी तो जानते

हैं ना । तो गाते हैं कि भाई देवताएं भी मनुष्य जन्म की इच्छा रखते थे, कौन से मनुष्य जन्म की? यह, अभी के अंतिम जन्म की । मनुष्य जन्म तो ऐसे बहुत हैं, देवताओं के भी मनुष्य जन्म तो बहुत चले हैं ना, परंतु यह, अंतिम जिसमें हम बाप के साथ कैसे हमने यह सुहावने दिन बिताए अर्थात यह अपनी प्रालब्ध ऊँची पाई, इन दिनों की वह भी इच्छा रखते हैं । तो इस मनुष्य जन्म की यह अंतिम जन्म क्योंकि इस अंतिम जन्म से ही तो हम इतने ऊंचे बनते हैं ना देवी देवताओं जेनरेशंस में, अपनी प्रालब्ध ऊंची प्राप्त करते हैं । तो इन दिनों को भूलना नहीं । ना भूलना है, ना खोना है और इन दिनों को अच्छी तरह से कमाई में तत्पर होकर के कमाई करने की है और सच्ची कमाई अभी ही है । इस कमाई से हमारी सभी कमाई हो जाती है सब । हमको धन-संपत्ति सब फिर इसमें से पूरा हो ही जाता है ना । तो पीछे हमको बैठकर के कोई शरीर निर्वाह के लिए ऐसे माथा खोटी ऐसे नहीं करना पड़ेगा जैसे अभी । अभी सारा दिन माथा खोटी करते हो तभी पेट की आजीविका निकल सकती है, उधर ऐसा नहीं है । उधर पेट के लिए चिंता ही नहीं है, पेट के लिए तो खाने-पीने का अपना अच्छी प्रालब्ध मिलती है । सब के पास अच्छी जायदाद रहती है, भले राजा हो, प्रजा हो सब खाने-पीने में सुखी क्योंकि वहाँ संख्या भी थोड़ी, माल बहुत सब कुछ तो फिर काहे के लिए चिंता और वहाँ तन दुरुस्त मन दुरुस्त, ख़ुशी जैसी खुराक नहीं, हैप्पी लाइफ होती है ना वहां तो यह सभी चीजें अभी अपन जानते हैं इसीलिए ऐसी लाइफ

बनाने का अपना पूरा-पूरा पुरुषार्थ और ख्याल और अटेंशन रखते रहना एक एक घड़ी की बहुत कमाई तो इसीलिए इसमें एक घंटे, एक घड़ी, आधी घड़ी का भी बहुत मूल्य है । इससे हम बहुत जन्म जन्मांतर का बना सकते हैं । उसमें तो देखो आठ घंटे देते हो, आज घंटों में आजीविका का मुश्किल से निकल सकता है और इधर तो इसमें देने से तुम्हारा जन्म जन्मांतर का कमाई निकलती है । इसमें कहते हैं घड़ी, आधी घड़ी, आधी की भी पुनः आधी घड़ी दो तो भी तुम्हारे जन्म जन्मांतर का मिलेगा देखो इसमें कितना मल्टीप्लिकेशन हो जाता है । तो ऐसी कमाई के लिए और ऐसी धारणा बनाने से देखो अब कितना अपना जन्म जन्मांतर का बनाते हैं । तो क्यों नहीं ऐसी कमाई के लिए अपना जितना टाइम बन सके उतना देना चाहिए तो इससे हमारी कितनी कमाई बनेगी और सच्ची । तो ऐसी कमाई के मूल्य को अच्छी तरह से समझते अभी बाप से अपना यह हक लेने का पूरा पुरुषार्थ रखते रहना है । तो अभी अच्छी तरह से बाप को और बाप के द्वारा जो जायदाद कहो या वर्सा कहो प्राप्त होता है उसको जान गए हो ना? अभी इन बातों में तो कोई मूंझता नहीं है ना, ना बाप में कि कैसा बाप है या कैसे आ सकता है या कैसे साधारण तन में आता है ऐसी-ऐसी बातों में तो नहीं कोई अभी मौजूदा है ना, तो अभी बाप को भी समझा है और फिर बाप से जो कुछ प्राप्ति होने की है उसको भी जाना है जिसके लिए तो अभी देख ही रहे हो दुनिया की हालात भी अभी समझाती जा रही है की अभी

दुनिया की हालात पीछे पड़ती जा रही है । जो चीज पीछे है तो जरूर है कि उसका अंत हो करके कुछ आगे भी तो आएगा ना । पीछे पड़ते-पड़ते आखिर उनका एंड भी तो होना चाहिए ना, ऐसे थोड़ी है कि पीछे पीछे चलता जाए । नहीं, एंड है तो अभी एंड का भी तो कभी टाइम आएगा ना, तो आया है । दुनिया नहीं जानती है कि एंड है, दुनिया समझती है कि यह तो ऐसे हो करके सुधरेगी । बिचारे चिल्लाते तो सब देखो रहते हैं, कई तो समझते हैं इससे तो अच्छा ब्रिटिश गवर्नमेंट थी तो कुछ अच्छे थे कैसे समझते हैं की स्वराज्य पा करके बेचारे खुद ही तंग पड़ गए हैं जैसे । परंतु नहीं, लिया तो सही, स्वतंत्र तो बने परंतु स्वतंत्रता का पूरा लाभ और पूरा सब वह सभी चीजें तो नहीं है ना । इसमें तो देखो ये भ्रष्टाचार आदि इन सभी बातों ने बाकी भी देखो कर्म को बुरा कर दिया है तो बुरे कर्मों के कारण देखो वह सुख जो वह अपना सुख नहीं पा सकते हैं, यह तो कर्म का हिसाब है ना । तो इसीलिए बाप बैठकर के अभी हमारे कर्मों को अच्छा बनाने का यह यत्न दे रहे हैं कि तुम श्रेष्ठाचारी बनो तो स्रेष्ठाचारी ही तो सुख पा सकेंगे न भ्रष्टाचारी थोड़ी सुख पाएंगे । नहीं, श्रेष्ठाचारी तो अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाओ तो प्रकृति तुम्हारे आगे सेवा रखेगी अच्छी तरह से, नहीं तो प्रकृति लात मारती रहेगी, सब तरफ से दु:ख ही दु:ख आता रहेगा इसीलिए बाप बैठकर के यह श्रेष्ठाचार बनाने का अभी यह यत्न बतला रहे हैं इसीलिए कहते हैं पहले आचरण, अपने कर्म जब तलक अच्छे नहीं बने हैं तब तक तो

हम उसका प्रालब्ध भी पा नहीं सकते हैं ना । यह हमारी प्रालब्ध अभी जो पा रहे हैं वह तो भ्रष्टाचारी कर्मों की तो भ्रष्टाचारी कर्मों की क्या पाएंगे भ्रष्ट प्रालब्ध अर्थात दुःख की । भ्रष्टाचारी कर्मों की भ्रष्ट प्रालब्ध और श्रेष्ठाचार कर्मों की श्रेष्ठ प्रालब्ध यह तो बुद्धि कॉमन भी समझती है । कहते भले हैं देखो भ्रष्टाचार श्रेष्ठाचार, नाम तो उठाते हैं लेकिन विचारे जानते नहीं हैं कि भ्रष्टाचार क्या है, वो रिश्वतखोरी को, करप्शन को भ्रष्टाचार समझते हैं परंतु खाली करप्शन थोड़े ही है, इधर तो सब, इन पांच विकारों में ही तो भ्रष्टाचार है ना । इन्हीं के कारण ही तो यह सारी बातें हैं । खाली करप्शन है इसीलिए भ्रष्टाचार है, नहीं भ्रष्टाचार तो पांच विकारों का पूरा राज्य है तो यही तो भ्रष्टाचार यानी कर्म गिराना ही तो भ्रष्टाचार है ना । करप्शन भी क्यों हुई है, यह सभी लोभ, लालच यह सभी बातें क्यों होती हैं विकार है, देह-अभिमान है, बॉडी कॉन्शसनेस है, पहले तो यह सब शत्रु है इसी से तो सब हुआ है, परंतु यह थोड़ी ही दुनिया जानती है, बस ऊपर-ऊपर की बातों को कि भाई करप्शन, करप्शन को बंद करो । करप्शन जाएगा कैसे लोभ, लालच आदि यह सब विकार अपना राज्य जमा कर बैठे हैं तो वह ऐसे ही थोड़ी जाएगा । वह तो और भी बढ़ते जाएंगे एक दो को मरते मारते और उसी में और बढ़ते जाएंगे । तो अभी देखो यह दुनिया का हाल तो देखते रहते हो ना इसको मारा, उसको गोली मारी, उसको मारी देखो लगा क्या पड़ा है, समाचार तो सुनो दुनिया का । अखबार में तो यही रोना पीटना लगा हुआ है यह

मरा, वह मरा, यह हुआ, वह हुआ तो आज के संसार का समाचार माना दुःख का समाचार । सुख का समाचार तो है ही नहीं की हमारी दुनिया कैसी थी वगैरह । सब जिधर देखो बेचारे इसी में ही सारा दिन कर रहे हैं लेकिन करते-करते आखिरी भी तो आएंगे ना तो आखिर आने का भी समय आ चुका है । तो यह सभी बातों की अपने पास सीन है पूरी प्रैक्टिकल कि आखिर भी कैसा होगा । ऐसा नहीं है आखिर भी बस ऐसे ही जैसे यह समझते हैं कि आखिर में सभी धर्म मिलकर के एक हो जाएंगे, ऐसे नहीं मिलेंगे । यह आपस में टक्कर खाते-खाते एक दो को मर मारकर के पीछे सब के माथे ठीक होंगे । तो यह तो हम जानते हैं ना कि मर के यह मिटेंगे ऐसे, बाकी ऐसे नहीं सुधरने के हैं कि ऐसे ही सब धर्म अपने आप अच्छे हो जाएंगे, मिलकर एक हो जाएंगे ऐसी बुद्धि यहाँ ऐसे ही पलट जाएगी । नहीं ऐसे नहीं पलटेगी, ये मर के पीछे फिर नए आएंगे ना तब फिर बुद्धि कुछ होगी ठीक, बाकी ऐसे ही यह आए तो अभी तमोप्रधान बुद्धि है न, सभी आत्माओं की अभी तमोप्रधान बुद्धि तो उसमें तमो का फ़ोर्स है । वह तमो का फ़ोर्स उनको अच्छे कर्तव्य में लाने ही नहीं देगा । तमो का फ़ोर्स तमो का ही काम करेगा ना, वह तो हो ही रहा है, दिन-ब-दिन जो देखते जा रहे हैं । तो यह सभी बातें अभी बुद्धि में है इसलिए इसका प्रयत्न कौन सा करना है, जो प्रयत्न कर रहे हैं इन प्रयत्नों से कुछ होने का नहीं है यह तो अभी बुद्धि में सिद्ध होता जाता है ना । होना होता तो आज के प्रयत्न थोड़ी ही है यह तो बहुत काल

से करते आए हैं तो कुछ तो सुधार होता न । ये बिचारे जितना करते जाते हैं, जितना बनाने की कोशिश करते हैं उतना ही एक बात बनती है तो दो-चार और बिगड़ जाती है, कहते हैं ना बनती एक है चार बिगड़ती है, तो यह सभी बातों से दुनिया का क्या हाल होगा । तो यह सभी बातें अभी है बुद्धि में इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे अभी आप इस दुनिया से बुद्धि हटा करके अपनी पेट की आजीविका के लिए जितना जरूरी है उतना सिर्फ थोड़ा निमित्त काम करते बाकी अपना तो सारा अभी यहाँ से उठाओ, अभी वहाँ अपना लगाओ, अपना सारा कुछ, जो जमा करना है उधर कर दो क्योंकि अभी तो तुम्हारे लिए वही सेफ्टी का स्थान है और वहाँ ही सेफ्टी मिलेगी बाकी इधर तो किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाए, किसकी चोरी लूट ले जाए किसकी आग जलाए, इसका अर्थ समझते हो ना किसका चोर लूट ले जाए, जब ऐसे बाप होते हैं ना तो चोरी, डाका वालों को भी चांस मिलता है । वह भी समझते हैं लगे तो अभी लगे ना, तो ऐसा होता है कि तो किसकी चोर खाए, किसकी राजा खाए, देखे हैं ना राजा लोग, अभी गवर्नमेंट भी अच्छी तरह से पीछे लगी है धनवानों के पीछे तो किसकी राजा खाए, देखो खाते जाते हैं ना, तो किसकी राजा खाए, किसकी चोर लूट जाए किसकी आग जलाए, यह सभी होंगे ना, देखो यह जलाते हैं, यह करते हैं, वह करते हैं । वह थोड़ा हंगामा अभी हुआ हिंदी के ऊपर, कितना यह सब हुआ आग जलाओ उसके मकान को, ये करो, वो करो तो यह सब क्या करते हैं और

नेचुरल कैलेमिटीज भी बहुत अपने समय पर काम करेंगे । अभी तो यह छोटी-छोटी रहर्सल्स हैं । यह तो प्रैक्टिकल जब सब बातें होंगी तब तो बहुत हंगामा होगा, फिर तो कोई कंट्रोल नहीं कर सकेगा, अभी तो थोड़ा कंट्रोल हो ही जाता है न ।पीछे तो कंट्रोल होना ही इम्पॉसिबल हो जाएगा जब सब भड़क उठेंगे । कोई किसी का सुनेगा ही नहीं । अभी देखो थोड़े में भी तो सुनते नहीं है ना, यह जब जोश बढ़ जाता है फिर तो कभी सुनेंगे ही नहीं, काम करके ही रहेंगे लेकिन अभी तो है भाई एक तरफ थोड़ा शांत है, दूसरी तरफ कुछ होता है तो एक दो को कंट्रोल कर लेते हैं लेकिन वह तो टाइम ही ऐसा रहेगा ना । एटमॉस्फेयर, वायुमंडल वर्ल्ड का सारा उड़ पड़ेगा तो यह सभी बातें बाप बैठकर अभी समझाते हैं बच्चे उसके लिए पहले से ही अपना जो कुछ करना है वह कर लो और अपना जीवन अच्छा बना लो और इसी को करके अपना भविष्य नई दुनिया में जमा करो, इस दुनिया की कोई अभी टेम्पटेशन नहीं रखो, इधर ये करें, शादी करें, बच्चे पैदा करें, इधर हम बड़े साहूकार बने ये करें, यहाँ की अभी कोई टेम्पटेशन रखने की नहीं है यहाँ सब बन के देख लिया । यहाँ सब बनने वालों से ही पूछ लो ना, नेताओं से पूछो, धनवानों से पूछो, साधू सन्यासियों से पूछो, जो बिचारे त्याग करके बैठे हैं उनसे भी पूछो, जो लेकर बैठे हैं उनसे भी पूछो, दोनों बिचारे वह फिर भी यही कहते हैं कि वह चीज नहीं है । भले अल्पकाल का हो परंतु फिर भी वो सुख की बात तो नहीं है ना । वो भी सब खोजनाओं में हैं, सब बिचारे पुरुषार्थ

करते ही रहते हैं । इसीलिए बाप कहते हैं वह चीज तो मेरे पास है ना जिसकी चाहना सब को रहती है त्याग किया है, तो भी रहती है, फिर भी शांति के लिए सुख के लिए फिर भी चाहत है इच्छा है । इच्छा फिर भी सब में ही है तो इसीलिए बाप कहते हैं वह चीज तो मेरे पास है ना । इच्छा पूर्ण करना, कंप्लीट संतुष्ट रखना वह चीज मेरे पास है, वो चीज अभी मैं देता हूँ तो कंप्लीट देता हूँ फिर इच्छा मातरम अविद्या, यानि इच्छा क्या होती है उसकी अविद्या । अविद्या माना उसकी नॉलेज ही नहीं है, इच्छा करने की नॉलेज ही नहीं है । अभी तो इच्छा सब में ही है, उसमें फिर बाप कहते हैं तुमको इच्छा मात्र अविद्या यानी इच्छा की अविद्या, तुम्हारे को कोई इच्छा करने की बात ही नहीं उसकी अविद्या । इच्छा क्या होता है वह पता ही नहीं, इच्छा क्यों करें, सब कुछ है, काहे के लिए इच्छा करें उसको कहा जाता है इच्छा मात्रम अविद्या । वह गीता में भी है तुमको ऐसी कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहेगी जिसको प्राप्त करने के लिए फिर तुमको पुरुषार्थ करना पड़े, ये गीता के वर्सेस हैं । कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहेगी, तो अप्राप्त ही नहीं रहेगी तो फिर प्राप्ति की इच्छा ही कहे के लिए रहेगी । अप्राप्त ही नहीं कुछ, सब प्राप्त है तो अभी बाप कहते हैं देखो मैं अभी तुमको सब प्राप्ति वाला बनाता हूँ, जिसमें सब कुछ तुमको आराम से सब कुछ प्राप्त रहेगा, परंतु कर्म इतने अच्छे रखो ना । रखेंगे अच्छे नहीं और ऐसे ही प्राप्ति का सब कुछ मिलेगा ऐसे तो नहीं है ना, बिन कमाई से तो कुछ काम नहीं होता, पुरुषार्थ है

इसीलिए कहते हैं अभी अपनी अच्छी कमाई करो, अपने को अच्छा बनाओ, अपना अच्छा पुरुषार्थ रखो और उसी से फिर अपनी प्रालब्ध तो ऑटोमेटिक है ही । रखो इच्छा ना रखो लेकिन प्रालब्ध जो अच्छे कर्म करते हैं उसकी प्रालब्ध तो ऑटोमेटिक होती ही है । यह तो नहीं अभी कोई समझते हैं न कि हम निष्काम है, निष्कामता कुछ होती नहीं है । निष्काम भी कामना होती है । कोई कहे की हमारी कोई कामना नहीं है, कामना क्यूँ नहीं है, भाई सुना है न कामना नहीं रखने से भगवान् अच्छा काम कर देता है, तो अंदर में तो है ना की हाँ कामना नहीं रखेंगे तो भगवान अच्छा करेगा । जबान से नहीं बोले, संकल्प ना करें लेकिन अन्दर अंडरस्टूड समाया हुआ है कि बिना कामना से काम पूरा होता है तो यह तो हुई न कामना । कामना के बिना कोई काम होता ही नहीं है, निष्कामता भी कामना ही है इसीलिए ये निष्कामता कहना एक अभिमान है, ये आप अभिमान है मैं निष्कामी हूँ, वो टाइटल देते हैं कहीं-कहीं यह फलाना निष्कामी है, ये ये है, कोई निष्कामी हो ही नहीं सकता है । भले कोई गरीबों की सेवा करके जाते हैं, या कहीं हॉस्पिटल खोली है भाई यह निष्कामी था, बस देता ही देता था, भले परंतु उसके अंदर तो है ना कि ऐसा करने का भी फल बड़ा है इसीलिए निष्कामी है तो निष्कामी में भी कामना तो है ना । बिना कामना कोई काम होता ही नहीं है इसीलिए बाप कहते हैं निष्कामी तो एक मैं ही हूँ क्योंकि मैं तो कामना नहीं रखूंगा कि मैं कोई स्वर्ग का अधिकारी बनूँ, ये बनूँ

क्योंकि मुझे बनना ही नहीं है और ना मुझे जरूरत है इसीलिए निष्कामी अगर कोई है तो एक बाप, परमपिता परमात्मा क्योंकि उसको कामना रखने की जरूरत है ही नहीं । मनुष्य को कामना है और मनुष्य को ही प्राप्त होनी है वह तो मनुष्य से ऊपर का है ना इसीलिए उसको ना कामना है, ना नीचे आता है ना ऊँचा होना है । वह तो है ही ऊंचे से ऊंचा भगवन, वह नीचा ही नहीं होता जो ऊंचा होने की कामना हो ।ऊँचा होए तो फिर नीचा भी हो । नहीं वह तो है ही ऊँचे ते ऊँचा । एक ही बाप है जिसको निष्कामी कह सकते हैं मुझे तुमसे एक ही बाप है जिसको निष्काम ही कह सकते हैं इसलिए तो बाप कहते हैं देखो मैं आता हूं तुम बच्चों को इतना सौभाग्य प्राप्त कराने के लिए लेकिन मेरी कोई तुम्हारे में ये कामना थोड़ी ही है कि मैं भी पाऊंगा । नहीं, विश्व का मालिक तुमको बनाता हूँ, मैं तो फिर जैसा हूँ वैसा ही हूँ, मेरे में कोई फर्क पड़ने की बात ही नहीं है, फर्क तुम्हारे में आता है, नीचे तुम आते हो, ऊँचे तुम बनते हो मैं तो जैसा हूँ वैसा ही हूँ, मुझमें फर्क है ही नहीं । तो एक वो ही है जिसके पास कोई कामना की बात ही नहीं होती है तो निष्कामी भी कहें ना तो उनको कह सकते हैं बाकी कोई मनुष्य अपने को निष्कामी कहलाए, नहीं, मनुष्य माना ही कामना फिर गुप्त या प्रत्यक्ष, वह तो उनके कर्म का फल है ही । मनुष्य के लिए यह लो है कि मनुष्य आत्मा के कर्म का फल है तो यह लॉ जो है वह हर एक से बंधा हुआ है । यह लॉ है हर एक के लिए, ईश्वर का यह नियम है । जैसे हर चीज का

नियम है ना, तो आत्मा का भी नियम है जिसके साथ कर्म और कर्म का फल लगा हुआ है । उसको कर्म भी अवश्य करना है और फिर उसका फल भी अवश्_य मिलना ही है इसीलिए यह लॉ है । तो लॉ को भी समझना है, हर बात के लॉ और फिन्ड्स को भी समझना होता है तो यह ईश्वरीय लॉज भी कौन से हैं, यह प्रकृति के लॉज़ क्या हैं, मनुष्य आत्मा के लॉज़ क्या हैं, यह सभी संसार का चक्र किस लॉ में चलता है यह सभी बातों को समझना है । ऐसे नहीं है की नियम बिगर कोई चीज है । सब नियमों से बंधी हुई है और वह चलती है जिसको कहते हैं नेचर परंतु नेचर को भी तो समझना है ना । कह देना ऑटोमेटिक चलती है परंतु ऑटोमेटिक के भी नियम क्या हैं, किसके आधार पर किसका आधार है, यह सभी बातों को भी तो समझना है ना । तो अभी बैठ कर के बाप समझाते बातें हैं की देखो अभी तमो बिल्कुल, तमोप्रधान तो तमोप्रधान के बाद फिर सतोप्रधान, तो एक के के ऊपर एक का कैसे आधार तो अभी वो टाइम है इसीलिए उसके लिए अभी क्या करना चाहिए, वह बैठ करके अभी समझाते हैं इसीलिए कहते हैं उसमें मेरी मदद की दरकार है । इस टाइम पर ही मुझे आना पड़ता है क्योंकि यह टाइम मेरे काम का है । इसके बीच में मेरा काम है ही नहीं । उसमें तो फिर सभी आत्माओं का अपने आप अपने नियम से चलने का है, इसमें फिर मुझे आना पड़ता है । जब बिल्कुल तमोप्रधान पतित दुनिया हो जाती है तो मेरा काम होता है तो मैं अपने टाइम पर आता हूँ । मैं अभी लॉ के

मुताबिक बंधा हुआ हूँ, मैं कहूं नहीं मैं नहीं आता हूँ इस बार, ऐसे नहीं हो सकता है । मैं भी लो में बना हुआ हूँ, मुझे भी आना है । जब बिल्कुल सब की ताकत चली जाती है तो मुझे आना ही है फिर मुझे उसको ठीक करना है ये सभी नियम हैं । तो यह सभी बातों को भी समझने का है ना, तो देखो जैसे सूर्य है, सूर्य पानी को खींचता है, तो यह फिर पानी ऊपर से आता है यह सब नियम बंधे हुए हैं न । यह सब चीज का अपना अपना नियम है, ये` बारिश कैसे आती है? बारिश पानी तो यहाँ से ही खींचती है न, पानी खीचता है फिर वो बादल बनते हैं, फिर बादल बरसते हैं फिर उससे सूरज खीचता है फिर उससे बादल बनता तो ये चक्र, इसी तरह से हम भी जब खत्म हो जाते हैं फिर बाबा आ करके हम बादलों को भरते हैं । हम बादल है ना हमको भरते हैं, फिर हमको भरने से फिर हम गरजते हैं, फिर सदा हम उसमें चलते हैं, फिर खाली हो जाते हैं फिर बाबा आते हैं तो यह भी सब नियम से सभी बातें बंधी हुई है, उस सुप्रीम सौल का भी पार्ट है इसी तरह से यह सभी के नियम, सभी के कानून अनादि यह ड्रामा फिक्स्ड बना हुआ है इसको भी बहुत कायदे से समझने का है । इसीलिए कोई परमात्मा को जानना मुश्किल नहीं है और परमात्मा को इस तरीके से मानना भी मुश्किल नहीं है । मानते और मुश्किल समझते वह है, जो नहीं जानते हैं, जिन बिचारों को इन लॉज का पता नहीं तो अभी तो खुद जो मालिक है इन लॉज का वह बैठकर समझाते हैं न कि मैं भी बंधा हुआ हूँ, मेरा भी पार्ट है आने का और

मैं भी अपने टाइम पर आता हूँ । मैं भी टाइम पर आऊंगा ना जैसे बारिश की सीजन है ना फिर बरसने का भी टाइम है ना, बादल भरने का भी टाइम है ना, इन सभी बातों का टाइम है, इसी तरह से मेरा भी टाइम है । मैं जब चाहूँ तब आ जाऊं या जब हो तब आओ नहीं मेरा भी नियम है । जब यहाँ सब खाली हो जाते हैं तो खींचते हैं । दुखी होते हैं ना, तो दुःख में फिर याद करते हैं तो फिर मैं आता हूँ, फिर आकर के तुम्हें भरता हूँ, फिर भर करके ले चलता हूँ, फिर तुम आते हो नंबरवार फिर भरी हुई आत्माएं आती हो ना संपूर्ण । तो फिर जब संपूर्ण आती हो तो यहाँ कुछ-कुछ टाइम, जितनी-जितनी जिसकी ताकत है उतना-उतना टाइम यहाँ सुखी रहते हैं तो पहली जो आत्माएं हैं सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकार वो बहुत काल यहाँ सुखी रहती हैं और उसी समय संसार सुखी है उसको कहा जाता है सतयुग और क्या स्वर्ग । अभी इसमें क्या मूंझने की बात है कि कैसा स्वर्ग होगा, कैसे हम समझे, यह कल्पनाएं हैं, ये कैसे है, इसमें मूंझने की बात नहीं खाली नियम समझना है । अगर कोई नेचर भी समझे ना तो नेचर वाले को भी हम अच्छी तरह से समझा सकते हैं । कोई साइंस वाला हो ना उनको भी और अच्छी तरह से समझा सकते हैं क्योंकि साइंस तो अभी ही सिद्ध करती है तो यह सभी बातों से हम समझा सकते हैं कि आप साइंस वाले नेचर वाले अच्छी तरह से समझ सकते हो क्योंकि नेचर का नियम भी क्या है, परमात्मा को भी अपने टाइम पर आना, उसका टाइम है अभी लेकिन वह जानते

नहीं है कि यह टाइम है हम खाली हो गए हैं। वह समझते हैं अभी हमारे में बहुत ताकत है लेकिन यह ताकत लड़ने मरने मारने की बहुत है । अभी जो ताकत निकलती है मनुष्य से वह काहे की निकलती है एक-दो को मरने मारने की। अभी ताकत जाकर के तमो ताकत हो गई है, अभी ताकत है लेकिन ताकत उल्टा काम करती है क्योंकि बुद्धि उल्टी उल्टी हो गई है न तमोप्रधान तो अभी सबकी तमो प्रधान बुद्धि है सिवाय मरने मारने गिराने एक-दो की हानि करने के बिना काम नहीं चलता है इसीलिए इसका भी प्रभाव है तमो का, उसका राज्य है ना । सबका अपना-अपना टाइम है ना, इसीलिए बाप कहते हैं अभी यह टाइम ऐसा है, उसी टाइम पर ही तो मुझे आ करके उसका फिर नाश क्योंकि इनको नाश करना और किसकी ताकत नहीं है । यह पांच शैतान है ना, तो इन शैतानों को तो मैं ही नाश कर सकता हूं मेरा बल । तुम कैसे करेंगे, तुम आत्माओं में तो खुद ही बल नहीं तुम तो शैतान के वर्ष हो गए हो ना । एकदम उसके कंट्रोल में आ गए हो तुम कैसे अपने में से वह बल निकाल सकते हो तुम्हारे में बल है ही नहीं, कोई मैं भी नहीं है। भले साधु सन्यासी हैं लेकिन वह कंप्लीट बल नहीं है इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे मुझे आना पड़ता है तो इसीलिए मैं आता हूँ और आ करके यह सभी पांच विकार शैतानों का नाश करने का उपाय बतलाता हूँ । मैं भी उपाय दे करके तुमसे ही कराऊंगा क्योंकि कर्म का फल तो तुमको पाना है मैं थोड़ी ही करूंगा। मैं करूंगा तो फिर मैं पाऊं। ऐसे थोड़ी ही है कि मैं

करूं और तुम पाओ । नहीं, फिर तो ऐसा हो जाएगा तुम करो और मैं पाऊं, फिर तो ऐसा भी हो जाना चाहिए न परंतु ऐसा नहीं है, जो करेगा सो पाएगा इसीलिए लॉ है तुम्हारे लिए तुमको करना है तुमको पाना है तो मुझे भी आ करके उस लॉ के मुताबिक काम कराना पड़ेगा । तुम्हारे से ही तुम्हारे कर्म को ऊंचा कराना पड़ेगा । मैं ऐसे ही समझूँ जादू का हाथ फिरा दूं तो सब ठीक हो जाओ नहीं, मेरा बल का यह काम नहीं है । मैं अपना बल जो मेरे पास बल है तेरे लिए वह तुमको देता हूँ, तुम वह ले करके अपने को बलवान बनाओ तो लेना है ना बनाना है बाकी ऐसा नहीं छूमंतर से कोई काम होने का है । नहीं, भगवान हूँ तो मतलब छूमंतर से काम करूं, इसका मतलब यह नहीं है भगवान इसीलिए नहीं है । कई बिचारे ऐसे समझते हैं कि भगवान है तो उसके लिए तो क्या बड़ी बात है वह ऐसे हाथ फिर मुर्दा को जिंदा कर दे वह ऐसे समझते हैं कि ऐसे करें परंतु बाप कहते हैं बच्चे मुझे कोई ऐसे मुर्दे जिंदे नहीं कराने हैं, वह शरीर को तो छोड़ना ही है लेकिन मुझे मुर्दे को जिंदा कैसेकराना है जो तमोप्रधान, ऐसे मुर्दे बने हैं उनको उनको जिंदा करता हूं उनकी लाइफ को ऊंचा बनाता हूँ, पीछे उनका मरना-जन्मना जिसको फिर देवताओं के मरने जन्मने को अमर कहा जाता है । उनके शरीर छोड़ने को भी अमर कहा जाता है क्योंकि वह अपने कानून से अपने टाइम पर शरीर छोड़ते हैं इसीलिए उनको मृत्यु नहीं कहेंगे देवताओं को । मृत्यु कहें की भाई देवता मृत्यु में आया, देवता के लिए कभी कहने में नहीं

आता है । देवताओं को अमर पद गिना जाता है, क्यों? ऐसे नहीं देवताएं शरीर नहीं छोड़ते हैं, छोड़ते हैं परंतु अपने टाइम पर अपने बल से अपनी ताकत से इसीलिए वह अपनी ताकत से शरीर छोड़ना और लेना उनको मृत्यु नहीं कहा जाता है । वह अमर पद क्योंकि शरीर छोड़ते भी वह सुखी हैं और लेते हैं तो सुख का मिलना ही है लेना ही है इसीलिए उनके पास जैसे पुराना वस्त्र उतारा, नया पहनेंगे तो क्या फिर रोते हैं ? नहीं, और खुश होंगे, पुराना छूटा अब नया मिलता है तो उनको और ही खुशी रहेगी ना, उसमें दुःख की क्या बात है तो वह ऐसी लाइफ हो जाती है । तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए कहते हैं बच्चे मैं अमर पद, अमरलोक का वहाँ का भी तुमको मालिक बनाता हूँ । अमरलोक अमरलोक कहेंगे सतयुग को, देवतालोक को अथवा जहाँ हम इस दुनिया में अमर पद पाते हैं बाकी वह आत्माएं तो अमर और मन दोनों से ऊपर है ना, उनको अमर नहीं कहेंगे आत्माओं को जब हम शरीर में यहाँ कंप्लीट शरीर आत्मा भी पवित्र और शरीर भी पवित्र है तो उसको कहेंगे अमर पद यानी सतयुग को । स्वर्ग को अमर और नर्क को मृत्यु लोक ऐसे, बाकी वह हमारी निराकारी दुनिया उसको अमरलोक नहीं कहेंगे बाकी वह तो आत्मा ना मरना अमर वह तो है ही इम्मोर्टल, उनको तो काटे काटे नहीं जाए, जले जलाए नहीं जाए, उसके लिए तो इस सब का क्वेश्चन ही नहीं है मरने और जन्मने का लेकिन यह कैसा है, आत्मा किस तरह से एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेती है, लेने में उसका

कैसा पवित्र शरीर और पवित्र आत्मा है उसी को फिर कहेंगे भाई अमरपद । तो यह सभी चीजें बहुत अच्छी तरह से एक एक पॉइंट क्लियर बुद्धि में रखनी है और क्लियर फिर समझाने की है । तो समझाने का भी टैक्स अच्छा रखना है फिर उसको कहेंगे सर्विसेबल की यह बच्चे सर्विसेबल हैं, यह दूसरों को अच्छी तरह से कुछ समझा सकते हैं तो यह सेवा है सबसे ऊंची, अभी इसमें तो और कोई नहीं है ना । भले कोई को धन नहीं है धन से सेवा नहीं कर सकते हैं तो तन तो है ना, बुद्धि तो है ना, बुद्धि से सेवा करें, बुद्धि का दान दे दूसरों को अर्थात यह ऊँच नॉलेज जो है वह नॉलेज से दूसरों को रोशनी देवे, तो इस जैसी सेवा कोई है बहुत ऊंची सेवा है जो जिसके पास अगर तन का है तो हाँ तन का, तन से भी कोई हार्ड वर्क थोड़े ही है, नहीं यह सुनाना है, समझाना है । हाँ कोई कहेगा बूढ़ा हूँ भाई, नहीं किसी के पास जा सकता, अच्छा भाई कोई जवान है, यंग है, वह तो जा सकता है ना । देखो जैसे यहाँ करुना है, भागता है दौड़ता है किसी के पास जाता है, कोई बिचारा बूढ़ा होगा, कहेगा तो अच्छा बेचारा बूढ़ा है, नहीं निकल सकता है, घर में बैठकर याद करो बाबा को तो यह भी सेवा है । उनको याद करने से तुम्हारे भी पाप दग्ध होंगे और उसका बल दूसरों को भी मिल सकता है तो घर में बैठे भी सेवा कर सकते हैं । चलो किसी का शरीर बेचारे का ऐसा है, नहीं चल सकता है, चलो घर में भी सेवा करो । है अगर तन का कुछ बील तो चलो तन का करो, अगर धन का बल है तो चलो धन से करो,

जितना जिसको बल है तीनों ही है तो तन-मन-धन तीनों से करो, जैसा जिसको है उससे करो । मतलब करो, करने से तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ बनेंगे और उसी श्रेष्ठ कर्म की फिर प्रालब्ध पाएंगे, तो ठीक बात है ना । इसमें तो मूंझने की है नहीं कोई बात । जितना है उतना अपना करना है पुरुषार्थ, इसमें मूंझने की है नहीं है हमारे पास धन नहीं है तो हम कैसे करें, कोई धन से ही तो बनने की नहीं है न, जितना जो है इतने से करना है, बदलाया ना कोई गरीब है लेकिन वह दिल से अपना जितना चलता है उसका उतना ही बनता है, कोई धनवान है परंतु कंजूस है तो उसका क्या बनता है कुछ नहीं । यह दिल से है, वह गरीब आगे चला जाएगा, साहूकार पीछे हो जाएगा और देखते भी हो साहूकार बिचारे है, कोई आते हैं समीप? सब गरीब, क्योंकि भगवान है भी गरीब नवाज । साहूकारों को तो बिचारों को अभी थोड़ा साहूकारी का नशा है तो अभी थोड़ा टेंप्टेशन है ना धन की तो उसमें लटक बैठे हैं इसीलिए बाप कहते हैं मैं जब आता हूँ, उस टाइम जो साहूकार है ना वह बहुत गरीब समझो क्योंकि आगे चलकर के दुनिया में गरीब होंगे ना । अभी जो गरीब है ना वह बहुत साहूकार समझना है क्योंकि वह अपना भविष्य प्रालब्ध बना सकते हैं इसीलिए गरीब होना इस टाइम और भाग्यशाली की बात है इसलिए ऐसा नहीं समझना कि हम गरीब हैं, कुछ नहीं कर सकते हैं, कैसा भूषण? हम बहुत साहूकार बन सकते हैं और बहुत धनवान बन सकते हैं क्योंकि हम बाप के हो करके सच्चे अगर चलते हैं, तो वह तो हर एक को

अपने से पूछना है कि हम सच्चे हैं । उनके साथ कितने सच्चे हैं, सच्चे का अर्थ समझते हो ना, जैसे हम अपने से हैं वैसा उनसे, अपने से कैसे हैं? सब अपना पता है ना, मैं क्या हूँ, कैसा हूँ, बुरा हूँ या अच्छा हूँ बुराई अंदर करता हूँ तो अपने को मालूम है ना मैंने बुराई किया है अंदर तो खाता है ना कॉन्शियस तो बाइट करता है ना । तो हाँ उसके साथ भी ऐसा सच्चा कि हाँ बुराई की है तो बाप कहते हैं हां मेरे आगे रखो तो फिर तुम्हारा माफ़ हो जाएगा । ऐसा नहीं करते रहो, बुराई करो मेरे आगे रखो, बुराई करो मेरे आगे रखो तो उसका माना तुमको माफ होती जाएगा । ना, ना, ना, बाप है तो फिर कहते हैं नहीं खबरदार, अच्छा एक बार भूल हो गई चलो कोई माया की उंगली लग गई, चलो एक बार फिर अगर दूसरी बार तो और दंड तीसरी बार तो खत्म एकदम । तो इसीलिए बाप कहते हैं की नहीं भूल भी घड़ी-घड़ी नहीं, घड़ी-धडी गिरा तो खत्म हो जाएगा इसलिए कोई भी भूल में अपने को ना लाना है और अपनी भूलों से अपने को बचाते आगे बढ़ते चलना है तो ऐसे बनने वाले जो है वही कुछ अपना पा सकेंगे और अपना कुछ ले सकेंगे । तो अभी पॉकेट बढ़ते जाते हो ना? पॉकेट समझते हो ना, कहाँ है पॉकेट? बुद्धि, यह पॉकेट नहीं । बुद्धि पॉकेट है उसने भरते जाओ अच्छी तरह से । बहुत हैं, यह बेंगलुरु वाले तो होशियार होते जाते हैं, बहुत अच्छे । अच्छा टोली खिलाओ । देखो, यह टोली भी आई है मधुबन से । देखो सिकिलधे हो ना बेंगलुरु वाले, तो आप लोगों को आपके भाई बहन सभी याद करते

हैं कि बेंगलुरु वाले हमारे भाई बहन, तो देखो मधुबन वालों ने आप लोगों को याद किया है सिकिलधे हो ना इसीलिए । अच्छा, जी? दादी खिलाए? दादी.... किसने बोला? किसने भी बोला, अच्छी राय कोई देता है तो एक्सेप्ट करना चाहिए ना, इसमें बेचारे ने कोई बुरी राय थोड़ी ही दी, बहुत अच्छी दी, अच्छी राय ले लेना चाहिए, (बहुत माइट मिलती है माताजी के हाथ से) हाँ हाँ क्यों नहीं, माताजी के हाथ की (और मम्मा के हाथ से मिले तो ?- मम्मा के हाथ से मिले तो अहो सौभाग्य) टीचर से प्रेम स्टूडेंट्स का दिखाई पड़त है की टीचर से प्रेम है और टीचर का भी स्टूडेंट्स से प्रेम है । हाँ जो पालते हैं, सँभालते हैं, चलाते हैं तो नेचुरल है उसके साथ थोड़ा हो तो जाता है और टीचर भी अच्छी है मीठी है बिचारी भोली भाली । हाँ भोलों का तो भगवान है ना । कोई बिचारी में वो नहीं है, बहुत इधर-उधर में नहीं रहती है । अच्छी है बेंगलुरु के लिए फिट । बेंगलुरु के भी भोले भाले हैं ना तो भोले भालों को भोली ही चाहिए । हाँ......लाठी भी देती है! अगर लाठी भी ना दे तो फिर आप चलो कैसे । आप पहले से ही ऐसे हुए पड़े हो, आपको लाठी मिले तो थोड़ा सीधा तो चलो ना । लाठी ना मिले तो फिर चलो ही कैसे, बाकी फिर ऐसे ही गिर जाओ । देखो जो जो सही न चलने वाले होते तो थोड़ा लाठी देते हैं, थोड़े अंधे होते तो लाठी देते हैं, लाठी के आधार पर चलते हैं तो लाठी भी चाहिए न । लाठी ना मिले तो खड़े कैसे हो, सुस्त पड़ जाओ । पहले से तो सोए ही पड़े हो, माया ने तो सुला दिया बाकी भी सो जाओ, तो थोड़ा सुस्त पड़ेंगे तो

लाठी तो चलाएंगी ना तब तो थोड़े खड़े होगे । तो यह भी तो चाहिए ना, टीचर अगर थोड़ा आँख भी ना दिखलाय तो काम कैसे चले, काम थोड़ा चलाने के लिए थोड़ा आँख दिखलानी पड़ती है, परंतु आँख दूसरी थोड़े ही है, यह तो मीठी-मीठी आंखें हैं, और इसी से तो हम तेज बनते हैं । अच्छा, वाह! दादी । दादी भूल गई, अच्छा, अभी तुमने बुलाया है इसीलिए तुमको कम देंग। अच्छा लो, तुमको खिलाएं ? एक हाँथ में, एक मुख में । ऐसा बन्दर करता हैं हम हंसी करते हैं ऐसे ही, दादी है ना, तो ऐसे ही चिट-चैट करते हैं । अपनी ज्ञान की चैट है, बंदर से मंदिर, वो गाली देते हैं एक-दो को ऐ बन्दर, ऐ सूअर, ऐ कुत्ते के बच्चे कहते हैं न ऐसा? गाली देते हैं परंतु ये तो मनुष्य को गए हैं कुत्ते बने है, सूअर बने हैं, जैसे गिरावट से भी बदतर । अभी तो हम देखो बंदर से मंदिर बनते हैं क्योंकि आत्मा को पवित्र बनाते हैं उसका यह घर उसको भी पवित्र, अभी देखो सच-सच मंदिर बनते हैं न, अभी पता चला है । उसके लिए फिर हमारी दुनिया भी ऐसी स्वच्छ रहेंगे फिर उसी के यादगार यह चित्र बनाते चलते हैं लेकिन पहले तो प्रैक्टिकल चैतन्य थे फिर जड़, उनका फिर मंदिर बनाते हैं जड़ यादगारों का, जड़ चित्रों का । पहले तो चैतन्य थे न तो चैतन्य में क्या होंगे, सोचना है । अच्छा ऐसा बापदादा और माँ के मीठे-मीठे बहुत अच्छे सपूत सयाने समझदार बच्चों को याद प्यार और गुड मॉर्निंग जिसको टोली नहीं मिली भूल तो नहीं गई दादी, अच्छा ।

मम्मा मुरली मधुबन

34. रचना और रचयिता का ज्ञान -2

रिकॉर्ड :

आने वाले कल की तुम तस्वीर हो, नाज करेगी दुनिया तुम पर दुनिया की तकदीर हो....

आज की बदतकदीर, ऐसे कहेंगे इसका मतलब है कि आज हमारी दुनिया की वह स्थिति है, जिस दुनिया को कहते ही हैं दुःख और अशांति की दुनिया तो दुःख अशांति क्या है बदतकदीर कहेंगे ना । परंतु ऐसे नहीं कहेंगे कि कोई हमारी सदा ही ऐसी दुनिया है । नहीं, दुनिया हमारी तकदीर वाली भी थी । तकदीर का मतलब ही है हम मनुष्य सदा सुख और शांति वाले थे । तो आज बद तकदीर है दुनिया की, मानो बहुत अभी देरी नहीं है, अभी बहुत निकट आकर के पहुंचे हैं मानो कल को तकदीरवान बनने के हैं यानी इस जन्म के बाद परन्तु बनेंगे तभी जब हम इस जन्म में अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाएंगे । यह है उस बाप का फरमान जो हमारे परम पिता परम पूज्य बाप है ना, यह हम नहीं कहते हैं उसने सुनाया है, वह आप लोगों को सुनाते हैं अभी पिता क्या कहते हैं । अच्छा, यह चित्र ले आना तो सहज समझाएं, एक इशारे में ये करुना, हाँ श्री राम ले आओ कोई भी ले आओ । हाँ यहाँ यह इजी समझाया आपको, कल की तकदीर और आज की, यह दिखाई पड़ता है ना, देखो यह हम थे, यह दूसरे नहीं हैं, यह मनुष्य की स्टेटस है तो हम ऐसे थे । ऐसे का मतलब यह

नहीं देखना है, यह हमारी लाइफ ऐसी थी । हमारी लाइफ ये थी मानो सिंबल, निशान है की प्रैक्टिकल हमारी लाइफ क्या थी । हम मनुष्य नर और नारी, नारी भी थी, लक्ष्मी नारायण जिन्हें कहते थे यह राजधानी थी, यह दुनिया थी इस लाइफ की, जिसमें हम एवर हेल्थी एवर वेल्दी एवर हैप्पी समझते हो न तो यह हमारी लाइफ थी । यह जो कृष्णा और राधा, मानते हैं न मंदिरों में, ये लक्ष्मी नारायण तो यह छोटापन है इन्हीं का । यह लक्ष्मी का छोटापन राधा तो छोटे पन में उनका नाम राधा है और श्री नारायण का छोटेपन में नाम कृष्ण है फिर जब स्वयंबर करते हैं यह राधा कृष्ण तो उनका नाम हो जाता है लक्ष्मी नारायण यह इनकी छोटी लाइफ है छोटापन जैसे आप लोग जो आप शादीशुदा हो तो छोटेपन में लड़की का और लड़के का अपना अपना नाम सब अलग है, पीछे जब संबंध होता है तो रिवाज होता है कि लड़की जब आती है तो अपने ससुर घर में उसका नाम दूसरा होता है, आप लोगों में भी होगा परन्तु पता नहीं किसी में ना भी हो ये रसम लेकिन वहाँ रिवाज था की यह दोनों का नाम बदली होता है लेकिन है एक ही लाइफ जैसे आप की छोटेपन की लाइफ और बड़ेपन की लाइफ, पर लाइफ तो एक ही है ना । तो यह छोटापन कृष्ण राधे और उन्हीं का ही बड़ा बन यह लक्ष्मी नारायण तो यह है वास्तव में यह हमारे सूर्यवंशी चंद्रवंशी राजे महाराजे जिसको रामराज्य कहा है और जो श्री लक्ष्मी श्री नारायण का राज्य हुआ है । अभी यह जो कृष्ण की बात मूंझ गई है न जो कई समझते हैं की यह कृष्ण द्वापर मे था और द्वापर में आकर के परमात्मा ने इसके तन में ऐसे ही समझो, आकर के गीता सुनाई, अधर्म नाश और धर्म स्थापना के लिए, ऐसे मानते आए हो ना । गीता मैं ऐसा ही है न कि द्वापर के अंत में सुनाया, पढ़ने वाले गीता समझते हो ना, तो ऐसे ही समझते

आए हो और हम भी ऐसे ही समझते थे लेकिन अभी परमात्मा ने क्या सुनाया है की यह तो द्वापर का तो सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण को कहेंगे ना । सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, ऐसा मनुष्य द्वापर के अंत में तो था ही नही । अभी उसमें परमात्मा आया और आ करके सुनाया, एक तो ऐसा मनुष्य नहीं था, दूसरी यह भी चीज समझने की है कि अगर इस द्वापर में बैठकर के सुनाया अधर्म विनाश और धर्म स्थापना का नॉलेज सुना करके परमात्मा ने अधर्म नाच किया तो फिर कलयुग क्यों आया? यह भी क्वेश्चन है ना कि द्वापर के अंत के बाद क्या हुआ ? द्वापर के अंत के बाद तो कलयुग चालू हो गया, अभी अगर भगवान ने आकर करके अधर्म नाश करने का काम चलाया तो भगवान का अधर्म नाश कहाँ हुआ और ही कलयुग शुरू हो गया, यह तो और ही भगवान आया और ही हमारे लिए मुसीबत पैदा की । अगर धर्म स्थापन करना था तो द्वापर के बाद गोल्डन एजेड वर्ल्ड हो जानी चाहिए, फिर कलयुग नहीं होना चाहिए लेकिन द्वापर के अंत के बाद तो कलयुग हो गया ना । अभी कलयुग ही चल रहा है ना, तो भगवान ने जो धर्म स्थापन किया वह कहाँ गया, भगवान वाला धर्म । तो यह समझने की बात है यह भूल है । अभी यह शास्त्रों में भूल है कि द्वापर के अंत में जो गीता सुनाई तो यह महाभारी महाभारत युद्ध द्वापर के अंत का नहीं है । अगर द्वापर के अंत में आकर के उसने अधर्म विनाश और धर्म का स्थापन किया तो वो धर्म भी होना चाहिए न और अभी कलयुग क्यों हो गया ? भगवान् आया और कलयुग बनाया तो ऐसी तो चीज अच्छी नहीं है न । ऐसा भगवान फिर आया ही क्यों जो हमारे लिए कलयुग बनाया तो यह चीज नहीं है, तो द्वापर में वह आया नहीं । वह कहता है मेरा

टाइम ही है आने का जबकि अधर्म के अंत का समय है । तो अधर्म के अंत का पीरियड कौन सा है, कोई विचारवान सुनाए तो अधर्म के अंत का टाइम कौन सा कहेंगे? आप बताइए भूपाल जी, अधर्म के अंत का कौन सा टाइम? गोल्डन एज आने का और कलयुग के अंत का तो कलयुग का अंत, उसको कहा जाएगा अधर्म पीरियड का अंत क्योंकि कलयुग माना ही है तमोप्रधान वर्ल्ड, उसी का नाम ही कलयुग है, गोल्डन एजेड माना सतयुगी सतोप्रधान वर्ल्ड तो अगर परमात्मा को आना चाहिए, विचार की बात है, यह विवेक की बात है थोड़ा समय शास्त्रवाद को भुला करके और विवेक से अगर काम लिया जाए तो आप सोचिए कि भगवान आया अधर्म नाश करने के लिए तो अगर अधर्म नाश करने के लिए आया तो उसको कब आना चाहिए? अधर्म का नाश होना कब हो सकता है जबकि कलयुग का अंत हो ना, तभी तो कलयुग का नाश और सतयुग आने का टाइम है तभी आकर के गोल्डन एजड वर्ल्ड बनाए क्योंकि इस चक्कर को तो चलना ही है ना गोल्डन, सिल्वर, कॉपर एंड आयरन, ऐसे नहीं है कि कॉपर में आकर के गोल्डन कर देवें पीछे, नहीं कॉपर एज के बाद आयरन एज को तो अवश्य आना ही है इसीलिए अगर परमात्मा को आकर के अधर्म नाश करना है तो जब अधर्म की पीरियड पूरी होने पर है तभी वह आकर के अधर्म का नाश और गोल्डन एजेड आकर के स्थापन करता है, क्रिएट करता है क्योंकि उनके बिना गोल्डन एज और कोई ला नहीं सकता है क्योंकि गोल्डन लाने के लिए प्योरिटी चाहिए और प्योरिटी को लाने के लिए सिवाय उसी परमपिता परमात्मा के और कोई पावर दे नहीं सकता है । इसीलिए उसने जो कहा है अधर्म विनाश और धर्म स्थापन उसको कहा जाएगा कलयुग आयरन एज की एंड और गोल्डन एज की आदि उसका कॉनफ्लुएंस, उसी कनफ्लुएंस

एज पर परमात्मा आते हैं । तो यह चीज समझने की है लेकिन परमात्मा अभी उसी समय, आर्यन एज में ऐसा मनुष्य तो हो ही नहीं सकता है, द्वापर एज में भी नहीं हो सकता है परंतु द्वापर एज तो टाइम ही नहीं है उसके आने का और आयरन एज में तो ऐसा मनुष्य है ही नहीं । अगर ऐसा मनुष्य पहले से ही है सर्वगुण संपन्न तो भगवान को आकर के बाकी क्या करना है और एक अकेला थोड़े ही होगा, होगा तो उसकी वंशावली होगी । अगर कलयुग में एक मनुष्य है तो ऐसे तो बहुत मनुष्य होंगे अकेला तो नहीं होगा ये ऐसा, ऐसा भी तो नहीं ना । जरूर उसके साथ उसकी वंशावली भी चाहिए तो ऐसा मनुष्य आयरन एजेड वर्ल्ड में हो ही नहीं सकता है, जब है ही आयरन एजट वर्ल्ड उसमें ऐसा कहाँ से आया तो इसीलिए इस के (कृष्ण के) तन में नहीं, अभी यह है सचमुच तो उस सतयुग का, गोल्डन एजेड का, यह है छोटेपन की मनुष्य की लाइफ फिर ये है बड़ेपन की तो इसको कृष्ण और यह श्री लक्ष्मी नारायण और यह राधे-कृष्ण, तो यह है सतयुग का सर्वगुण संपन्न । अभी परमात्मा आया कलयुग में तो कलयुग में यह परमात्मा निराकार जिसको कहते हैं, यह सुप्रीम सौल, अभी अगर इसको आना है और आकर के कलयुग में नॉलेज देना है तो कलयुगी मनुष्य मिलेगा ना इसीलिए कहते हैं मैं आता हूँ कोई साधारण तन में, तो वह बतलाते हैं कि मैं साधारण तन में आता हूँ । मैं इस में आकर के नॉलेज सुनाता हूँ सिर्फ नॉलेज देने के लिए आता हूँ, ऐसा नहीं इसमें पहले से में हूँ । इसमें अपनी सोल तो है ना, जैसे सब में अपनी सोल है लेकिन मैं टेम्पोरेरी आता हूँ जैसे आप लोगों ने देखा होगा ना, कभी कोई इविल सोल भी आ करके बोलती है, देखा है कभी किन्हो ने कभी इविल सोल किसमें आ करके बोलती हैं इसीलिए मैं सुप्रीम सोल हूँ ना, तो

मैं सुप्रीम सोल आ करके यह जो मेरे पास नॉलेज है वह आ करके देता हूँ । तो मैं आकर के नॉलेज देता हूँ कलयुग के अंत में तो कलयुग के अंत में तो तमो प्रधान शरीर मिलेगा ना, ऐसा कहाँ से मिलेगा, ऐसा मिलेगा जैसे अभी हम हैं साधारण, ऐसा ही कोई शरीर मिलेगा तो उसको आकर के इस तन द्वारा जिसका फिर नाम रखता है जब यह इसको अडॉप्ट करता है परमात्मा तो इसका नाम रखता है, पहले इसका नाम दूसरा है परंतु जब यह अडॉप्ट करता है, जब इसका आधार लेता है तो इसका नाम रखता है ब्रह्मा । ब्रह्मा का मतलब है उसका अर्थ है कि उसके द्वारा आकर के, क्योंकि कहा जाता है ना ब्रह्मा द क्रिएटर, ब्रह्मा कहा जाता है उसको जिससे रचना रची जाती है तो इसीलिए इनका नाम रखा क्योंकि इससे अभी नई रचना शुरू करते हैं यानी प्योरिटी का नॉलेज दे करके इसके मुख द्वारा और फिर प्योरिटी की जनरेशंस चालू करते हैं इसीलिए इनका नाम रखा ब्रह्मा । तो मैं आया कलयुग में बात कहता है यह बाप, बाप यह है निराकार परमात्मा । हमारा पिता जो है वह यह सुप्रीम सौल निराकार, अब आया इसके तन में और आकर के नॉलेज दिया और उसी नॉलेज से हमको बैठकर के समझाते हैं, सभी मनुष्य आत्माओं को नर और नारी को जो बैठकर के ज्ञान दे करके यह स्टेटस हम नर नारियों की बनाता है, समझा, तो नॉलेज सुनाया गीता सरमोनाइजर कौन हुआ, यह, नोट यह । यह गीता सर्मोनाइजर नहीं, गीता सर्मोनईजर यह हुआ लेकिन ओरगंस चाहिए ना, यह ऐसे कैसे बोलेगा यहाँ से, यह तो निराकार है यहाँ से आवाज कैसे करेगा । इनको ओरगंस जरूर चाहिए, मनुष्य का तन जरूर चाहिए । तो इसमें आ करके बोलता है लेकिन बोलता यह है । नॉलेज फुल यह है, यह नहीं है नॉलेज फुल, यह जानता नहीं है लेकिन इसने आ करके

सुनाया है, इसके भी कौन सुनते हैं ना, इसकी भी आत्मा सुनती है ना और हम भी सब सुनते हैं और उसी नॉलेज से फिर हम प्योरिटी में आकर के यह फिर दूसरे जन्म में प्योरिटी की जनरेशंस चलती हैं । तो यह है हमारी सतयुग की लाइफ जिसमें हम इस लाइफ को पा करके सदा सुखी रहते हैं बाकी ऐसा सतयुगी लाइफ का मनुष्य कलयुग में तो नहीं हो सकता है ना । यह इसका मानो सेकंड बर्थ यानी दूसरा जन्म, पुनर्जन्म जिसको कहे कि ऐसी प्रालब्ध बनाई, प्यूरीफाइड बना तो इसने जाकर के यह जन्म लिया । उसके साथ दूसरे भी वंशावली होंगी ना, एक थोड़ी अकेला होगा, राधा है फिर इसके मां-बाप होंगे, फिर उसके मां-बाप होंगे, दूसरे भी तो सखा सखियां बहुत होंगे ना, एक ही अकेला क्या करेगा । अकेला तो ना किसी में सोभे न किसी में, काम ही नहीं चल सके । नहीं, देखो राधा है तो इसके मां-बाप भी होंगे ना, यह ऊपर से थोड़े ही गिरे ऐसे ही । नहीं, जरूर इनके माँ-बाप होंगे जिन से जन्म लिया होगा । उनके भी तो मां-बाप होंगे ना, फिर उसके साथ-साथ दूसरे भी तो होंगे ना सखा सखियां वह तो बहुत ही थे ना । तो वह दूसरे भी प्रिंस प्रिंसेस होंगे ना । तो यह सभी चीजें समझने की है क्योंकि वह तो राजधानी थी उनकी पूरी वर्ल्ड थी जैसे राजा प्रजा जैसे कायदे सिर होती है तो इस लाइफ की यह है हमारी लाइफ । तो इसने गीता के भगवान ने क्या बनाया यह हमारी लाइफ बनाई, मनुष्य की यह स्टेटस मनुष्य की यह लाइफ बनाई । मानो मनुष्य को गीता के भगवान ने यह बनाया तो अभी यह बनाया ना, कृष्ण के तन में आकर के यह ज्ञान दिया परंतु भगवान ने ऐसा मनुष्य को ज्ञान दे करके और ऐसे मनुष्य को ऐसा बनाया, सेकंड जन्म से जनरेशन्स में तो अभी इसमें कृष्ण भगवान वह तो बात रही नहीं ना, यह समझने की बात है अभी

इसको तो भगवान नहीं करेंगे ना । भगवान उसको कहेंगे और मनुष्य को बनाया तो मनुष्य की यह प्रालब्ध है यह स्टेटस है सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकार मनुष्य । तो हमको ऐसा बनना है यह हमारी स्टेटस है इसीलिए गीता का भगवान इसको कहना रॉन्ग हो जाता है । गीता का भगवान वह, गीता से जो मनुष्य को नॉलेज दिया, गीता सुनाई, जो वर्शंश सुनाएं उसका नाम हो गया ना गीता । तो जो वर्शंश सुनाएं, उसी वर्शंश से मनुष्य क्या बना ऐसा बना । तो वह है यह जो बनाया ना तो क्रिएट किया ना । यह तो उसकी क्रिएशन हो गई ना । क्रिएटर यह हो गया ना, यह क्रिएटर, वह उसकी क्रिएशन तो क्रिएशन को कैसे भगवान कहेंगे । यह तो उनका बच्चा हो गया ना मानो ऐसी संतान परमात्मा ने नई दुनिया की रची, जो ऐसी संतान रही और जिस संतान को सदा सुख प्राप्त रहा । तो यह है हम संतान, हम क्या थे । कहते हैं ना तकदीरवान, अब बदतकदीरवान बन गए तो यह है हमारी तकदीर अर्थात ये स्टेटस ये लाइफ की हमारे पास सम्पूर्ण सुख शांति थी, कभी रोग नहीं होता था कभी अकाले मृत्यू नहीं होता था, अकाले मृत्यू समझते हो न , बिगर टाइम शरीर छोड़ना । हमारे पास मरने जीने का कण्ट्रोल था यानी अपने टाइम पर शरीर छोड़न जब बाल युवा वृद्ध एज पूरी होती थी, एवरेज सवा सो डेढ़ सो वर्ष आयु थी । अभी तो देखो पचीस तीस वर्ष या अभी तो कोई ठिकाना ही नहीं है । वह एवरेज, यानी अपने टाइम पर और शरीर छोड़ने का बल था, कैसे था तो जब टाइम होता था तो अपने आप पता लगता था कि अभी हमारा टाइम है अभी इसको उतारना है । तो शरीर उतारना और पहनना जैसे ऐसा बल था, अभी तो नहीं है ना क्योंकि अभी वह कर्म की श्रेष्ठता नहीं है । तो यह हमारी लाइफ की जो स्टेज थी, वह आ करके यह बनाता है ।

बनाता है कलयुग के अंत में । और किसी के द्वारा तो नॉलेज सुनाएंगा ना, तो निमित्त रखा इनको क्योंकि इनकी सोल ही जाकर के, प्यूरीफाइड बन करके इस स्टेटस को पाती है, उसके फिर दूसरे भी हैं सब जो फिर बनते हैं, एक तो नहीं है ना । दूसरे भी हैं जो हम प्यूरीफाइड बन रहे हैं न तो हम भी अपनी प्रालब्ध बनाते हैं । तो इसी तरह से परमात्मा ने जो कहा है कि यदा-यदा ही जब-जब अधर्म होता है तब-तब मैं आता हूँ तो कहा है मैं इसी टाइम पर, यह अभी वही टाइम है । वह देखो वह कहा है महाभारी महाभारत लड़ाई के लिए भी तो यह मुसल आदि सब तैयार है ना । यह मिसाइल एटॉमिक बम वह मिसाइल अक्षर दिया है ना, वहाँ मूसल है, यह मुसल ही है वह गर्भ से कोई लोहा नहीं निकला था जो शास्त्रों में है कि लोहा निकला था, उससे फिर बैठ करके एक दूसरे से झगड़ करके फिर खत्म हुए थे । नहीं, यह बुद्धि की इन्वेंशन, यह जो निकले हैं एटॉमिक बोंब्स, मिसाइल्स आदि यह सब चीजें, यह बुद्धि की इंवेंशंस है, तो बुद्धि से कोई ऐसी चीज बड़ी बनी बनाई थोड़ी निकलेगी । नहीं ये इन्वेंशन निकली है ना अभी विचारों से । तो वह चीज जो निकली है उससे यदुवंश, ये यूरोपवासी यादव, यदुवंश नाश और यहाँ भारत का कुरु राज्य कहो, कोरव राज्य कहो या कांग्रेस राज्य कहो, यह राज है एक । तो अभी इसका सिविल वॉर के जरिए और उसी समय फिर पांडव सेना भी थी, पांडव का मतलब ही है जिन्होंने प्रभु के साथ, परमात्मा के साथ, सहयोग दिया था अर्थात उसके साथ संबंध रखा था । तो अभी यह है परमात्मा अपने साथ बैठकर के कहते हैं अभी मेरे बनोगे तो मेरे द्वारा तुम्हारी यह राजधानी बनेगी, यह थे जिन्होंने विन करके फिर संसार के ऊपर इस राजधानी का राज्य चलाया अर्थात सदा सुख से जीवन बनी हुई है । तो यह बातें सीधी-सीधी

समझने की है, समझ में आती है कि गीता का भगवान उसको कहेंगे निराकार ना कि इनको । तो यह समझना है इसीलिए यह तो हो गया इनकी संतान परमात्मा की, अभी यह तो सतयुग का प्रिंस है ना, यह प्रिंस छोटेपन की लाइफ है, यह फिर किंग है । छोटा होता है तो प्रिंस कहने में आता है फिर बड़ा होता है राजगद्दी पर बैठते हैं तो उनको किंग कहते हैं । तो यह अभी सब सीधी-सीधी बातें हैं । अभी देखो इसकी लाइफ ले गए हैं द्वापर में, छोटेपन की लाइफ ले गए हैं द्वापर में और इन्हों को कहा है कि ये सतयुग के हैं लक्ष्मी नारायण । इनकी छोटे फंकी लाइफ कहाँ है, तो आधा काट लिया है ना उनका, वह लाइफ ले गए हैं द्वापर में । द्वापर में कहाँ से आए । तो यह सारी चीजों को समझना है इसीलिए यह द्वापर के नहीं है यह सतयुग के है, यह सतयुग लाइफ के है । यह इनका ही छोटापन है, यह कोई दूसरे की लाइफ नहीं है यह इनका ही है और बड़ेपन का है श्री नारायण । तो यह सभी चीजों को समझना है लेकिन गीता का भगवान यह जो आ करके सुनाया पतित पावन, पतितों को पावन बनाने वाला यह । पावन क्या बनाता है यह, यह पावन लाइफ । यह पावन लाइफ, हम पतित । हम प्रतीत ट्रांसफर हो करके फिर इस पावन लाइफ में आते हैं तो हम पतित से पावन बनते हैं, बनाने वाला यह । यह पतित को पावन करने वाला, ऐसा नहीं है कि यह पतित पावन होने वाला, ना, यह करने वाला है, कैसे करता है, आ करके लाइट, रोशनी देता है नॉलेज देता है थ्रू ब्रह्मा ओरगंस, उनके मुख से और फिर बनाता है यह जेनेरेसंस चलती है फ्यूचर में । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए हमारी लाइफ यह निकट है, जल्दी अभी आने वाली है । इस जन्म के बाद फिर अभी हमारा यह जन्म है लेकिन आएगा वह जो ऐसी प्योर लाइफ यहाँ बनाएगा । बनाएगा

नहीं तो फिर नहीं आएगा । ऐसा नहीं है कि अभी आने वाली हैं तो हम ऐसे ही बैठ जाएँ आराम से, अभी आने वाली हैं ना गोल्डन एजड वर्ल्ड इसीलिए बस हम आराम से बैठे रहैं, अपने आप आ जाएगी । नहीं, उसके लिए हमको कर्म श्रेष्ठ करना है जो भगवान ने कहा न राजयोग, कर्मयोग तो यह राजाई प्राप्त कराने के लिए बैठ कर के यह योग सिखाया है । तो अभी देखो उसमें योग सीख रहे हैं ना, देखो यह राजयोग यह राजयोग, देखते हो ना । यह राजयोग कर रहे हैं अथवा योग और ज्ञान ले रहे हैं परमात्मा के द्वारा, फिर जाकर के बनेंगे यह जो बड़े चित्र में देखा । यह हमारी स्टेटस, और यह अभी राजयोग सीख रहे हैं । यह जो अभी आप लोगों को योग और ज्ञान सिखाया जाता है यह देखो यह लाइट, यह अभी सेपलिंग लग रही है । यह राजयोग, इसको कहा जाता है राजयोग यानी ये राजाई प्राप्त करने के लिए योग, उसको कहा है राजयोग । बाकी ऐसे कई समझते हैं की आगे-आगे जो राजाए थे ना, राम को भी कोई वशिष्ठ गुरु था फिर उसको योग सिखलाता था, ये आगे-आगे बड़े-बड़े राजाओं को भी योग सीखलाते थे, उनको क्या योग की दरकार पड़ी है? वह कोई भोगी थोड़े ही हैं । प्रालब्ध तो संपूर्ण सुख की है ना । यह तो जब फिर कॉपर एज में दुःख शुरू हुआ है, दुखी हुए हैं मनुष्य, तभी फिर भगवान को याद करने की बात है । यह गुरु आदि पीछे सब आते हैं बाद में । यहाँ इनको गुरु, शास्त्र, वेद आदि का अध्ययन करने या इनका सहारा लेने की दरकार नहीं है क्योंकि वहाँ पूज्य हो गए ना, खुद ही पूज्य हैं । इनको खुद बैठ कर के किसी के पूजन आदि करने की दरकार नहीं है । इन्हीं की तो पूजा पीछे पुजारी बन कर के शुरू होती है न । तो यह सब चीजें समझने की है इसीलिए कई जो मूंझते हैं क्योंकि यह शास्त्र में थोड़ी-थोड़ी बातें ऐसी उल्टी अटक गई है ना,

भाई राम को भी वशिष्ट गुरु था, यह तो गुरु लोगों ने पीछे बैठ करके राम को भी गुरु लगा दिया है, कृष्ण को भी गुरु लगा दिया, गुरु का मान बढ़ाने के लिए की भाई जब कृष्ण और राम जैसों ने भी गुरु किया तो हम जैसों को तो दस-बीस गुरु करना चाहिए न, हम तो और ही नीचे गिरे हुए हैं । उन्होंने अगर गुरु किया तो हमको तो और न कितने गुरु करने चाहिए जो हमारा बेड़ा पार करें । तो यह तो पीछे जो गुरु आए उन्होंने बैठ कर के ये सब बातें, शास्त्रकारो ने पीछे जो शास्त्र बनाए ना, तो इनके जीवन में ये बातों का फिर वह बैठकर के लगाया । परंतु यह समझना है कि सबका गुरु तो एक ही परमपिता परमात्मा हुआ ना निराकार, जो आकर के सब की गति सद्गति और सबको फिर ये स्टेटस प्राप्त कराते हैं, तो यह सारी चीजें समझनी है । निराकार को कहा जाता है हवेनली गॉडफादर, हेवेन बनाता है यानि ये हेवेनली लाइफ इसको कहेंगे । हमारी लाइफ ये बनाते हैं । तो यह है की नर नारी की लाइफ कितनी ऊंची है और वह बनाता कौन है, वह परमपिता परमात्मा । तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए गीता का भगवान वह निराकार और फिर गीता से क्या पैदा हुआ, ऐसी मनुष्य की लाइफ कृष्ण कैसी, कृष्ण जैसी । बाकी कृष्ण ने सुनाया नहीं, तो यह सभी चीजों को समझना है ना । निराकार तो कहा जाता है जन्म मरण रहित और कृष्ण तो गर्भ से जन्मा ना तो उसको थोड़ी ही भगवान कहेंगे तो कृष्ण को भगवान कहना रॉन्ग है । भगवान निराकार एक है, हाँ बाकी इनकी संतान कह सकते हैं कृष्ण को, फर्स्ट संतान । पहली-पहली संतान यानी प्यूरीफाइड, उसका पहला-पहला किंग जो बना है, हाँ ऐसे कह सकते हैं । तो संतान हो गए ना तो परमात्मा ने आकर के बनाया । तो यह सभी चीजों को समझना है अभी यह तो कोई नए हो शायद जो कुछ आते हो थोड़े

दिनों से तो वो शायद समझ जाएंगे परंतु कोई नए होंगे ना तो उनको जरा मुश्किल है इसीलिए फिर राय देते हैं की इनको तो टाइम लेकर के बातों को समझने से अच्छी तरह से समझ सकेंगे क्योंकि शार्ट टाइम है, तो थोड़ी टाइम में डिटेल से तो नहीं समझा सकते हैं ना । यह तो कुछ पुराने हैं जो थोड़े इशारों से समझ जाएंगे, नयों के लिए तो फिर कायदे से आकर के सुनेंगे, समझेंगे तब कुछ समझ सकेंगे अच्छा । दो मिनट साइलेंस ।

मम्मा मुरली मधुबन

35. रचना और रचयिता का ज्ञान -1

रिकॉर्ड :-

कौन आया मेरे मन के द्वारे पायल की झंकार लिए......

यह जो गीत सुना, सभी ने गीत सुना ना कि यह कौन आया मन के द्वारे जिसको आँख ना जाने और दिल पहचाने, ऐसी कौन सी चीज है जिसको आँखों से देखा नहीं जाता, आँख ना जाने लेकिन दिल पहचानती है तो ऐसी कौन सी चीज है? सेठ जी, बताइए ऐसी कौन सी चीज है वह जिसको आँखों से नहीं देखा जा सकता, आँख ना जाने लेकिन दिल पहचाने ऐसी कौन सी चीज है, बताओ । आत्मा , अच्छा हमारी यह, इनका नाम क्या है शुभ नाम, अच्छा आप बताइए, ऐसी कौन सी चीज है जिसको आँख नहीं जानती लेकिन दिल पहचानती है, परमपिता परमात्मा, अच्छा । श्याम सुंदर जी, आपका क्या विचार है, ऐसी कौन सी चीज है जिसको आँख ना जाने लेकिन दिल पहचानती है । कौन सी चीज है? परमपिता परमात्मा, हाँ दोनों ही हैं, आत्मा को भी तो इन आँखों से नहीं देखा जा सकता, उसको भी जाना जा सकता है और परमपिता परमात्मा को भी आँखों से नहीं देखा जा सकता लेकिन जाना जा सकता है इसीलिए गीतों में भी कहते हैं ना कौन आया मेरे मन के द्वारे, तो उनको आना ही है मन

कहो या बुद्धि कहो, बुद्धि से उसे याद करना है, आँखों से कोई देखने की तो चीज नहीं है ना इसीलिए यहाँ कई जो साक्षात्कार की इच्छा रखते हैं ना कि हाँ देखें, तो देखो बाप खुद बताते हैं की मैं इन आँखों से, भले बुद्धि से देखा भी जाऊं तो भी ऐसा नहीं है कि बस देखा और काम हो गया, फिर भी उसको पहचानना है । इन आँखों से तो उसको देख ही नहीं सकते हैं परंतु दिव्य बुद्धि से भले देखा भी जाए तो भी देखने से तो कोई काम नहीं होगा ना । अभी उनको जानना होता है इसीलिए कहते हैं कि जान पहचान भी मैं आकर के देता हूँ इसीलिए कहते हैं मेरी अभी जान पहचान दूसरा कोई कैसे दे सकेगा । तो परमात्मा की जान पहचान परमात्मा ही देता है और आत्माओं की भी जान पहचान परमात्मा ही देता है क्योंकि हम तो उसकी रचना है ना, तो जो उसकी रचना है उसको तो वह जानता ही है ना कि यह क्या है कैसे मैंने इनको रचा, रचा का मतलब यह भी नहीं कई जैसे समझते हैं कि कभी आत्मा थी भी नहीं जिसको बैठ करके रचा । नहीं, आत्माएँ भी अनादि हैं यह चीजें भी बहुत अच्छी तरह से समझने की है कि आत्मा को कभी किसी ने बनाया ही नहीं है जैसे परमात्मा को कभी किसी ने बनाया ही नहीं । ऐसा भी कोई क्वेश्चन उठा सकता है कि परमात्मा का क्रिएटर कौन है, परमात्मा को किसने पैदा किया यह कोई क्वेश्चन उठा सकता है नहीं, जैसे परमात्मा का कोई रचता नहीं है वैसे आत्माओं का भी वास्तविकता में कोई रचता है ही नहीं, अनादि है ना परंतु फिर भी परमात्मा को क्रिएटर कहा तो

जाता है ना, क्यों कहा जाता है वह इसी नाते कहा जाता है कि आत्माओं को प्यूरीफाइड स्टेज पर लाना, उसमें प्योरीफिकेशन क्रिएट करना और आत्माओं को ओरिजिनल स्टेज पर लाना यह परमात्मा का काम है इसीलिए उसको क्रिएटर कहा जाता है । उसके रचता होने का मतलब ही है कि वह हमारे ओरिजिनल स्टेज पर हमको ले आता है ना बाकी ऐसे नहीं है कि हम है ही नहीं, हम आत्मा कभी है ही नहीं, आत्मा तो अनादि है । तो यह चीजें भी समझने की है यह सृष्टि भी अनादि है, मनुष्य भी अनादि है, ऐसे नहीं है कि वह रचता तो कोई मनुष्य कभी था ही नहीं या यह सृष्टि कभी थी ही नहीं या कोई आत्माएँ कभी थी ही नहीं जिनको बैठकर के परमात्मा ने रचा है । नहीं, यह सब चीजें अनादि हैं लेकिन उन चीजों को प्यूरीफाइड करना, उनको अपनी ओरिजिनल स्टेज पर लाना, वह बल देना, वह ताकत दे करके उनको अपनी ओरिजिनल कंडीशन पर ले आना, वह उसका काम है । देखो, अभी हम आत्माएँ भी तमोंप्रधान, शरीर भी तमोप्रधान, संसार भी तमोप्रधान है ना लेकिन परमात्मा आ करके अभी क्रिएट करता है क्या, ऐसे तो नहीं है ना कि मनुष्य है ही नहीं जो परमात्मा आ करके उसको क्रिएट करता है परंतु मनुष्य में जो हमारी ओरिजिनल स्टेज है उसको क्रिएट करता है अर्थात उसको दूसरे शब्दों में तो यही कहेंगे ना की आत्मा को प्यूरीफाइड बनाता है तो आत्मा को प्यूरीफाइड बनाने से फिर आत्मा का शरीर भी प्यूरीफाइड होता है जैसे देवताओं का था प्योरीफाइड शरीर और आत्मा के संबंध

में फिर संसार भी सब यहाँ पर जो भी पदार्थ है सब पवित्र हो जाते हैं यानी सतोप्रधान गोल्डन एजेड जिससे फिर हर चीज में सुख होता है, यह तत्व आदि भी गोल्डन एजेड हो जाते हैं बाकी ऐसे नहीं है कि कभी धरती थी ही नहीं, कभी पानी था ही नहीं, कभी आकाश था ही नहीं, यह पाँच तत्व कभी थे नहीं । नहीं, यह भी अनादि हैं तो मनुष्य भी अनादि है, यह सृष्टि भी अनादि है तो आत्माएँ भी अनादि हैं तो परमात्मा भी अनादि है इसीलिए कई कहते हैं हम पूछते हैं ना कि पहले मुर्गी या पहले अंडा ? तो अभी दोनों ही अनादि हैं, अगर मुर्गी नहीं तो अंडा नहीं है अंडा नहीं तो मुर्गी नहीं है । ऐसे नहीं कहेंगे पहले अंडा या मुर्गी कोई एक, नहीं वह दोनों ही हैं मुर्गी है तो अंडा है, अंडा है तो मुर्गी भी जरूर है । ऐसे कोई किसको कहे पहले, पहले मुर्गी या अंडा, दोनों ही अनादि हैं परंतु फिर भी मुर्गी से अंडा होता है ऐसा कहने में तो आएगा ना । तो फिर उसको क्रिएटर क्यों कहा जाता है हर चीज का अपना संबंध है इसीलिए, बाकी ऐसे नहीं है कि कभी हम आत्माएँ हैं ही नहीं, हम आत्माएँ भी अनादि हैं तो परमात्मा भी अनादी है और सृष्टि चक्र भी अनादि है परंतु फिर भी उनको क्रिएटर इसीलिए कहते हैं क्योंकि वह एक बार हम आत्माओं को उसी स्टेज पर लाने का आकर के एक्ट करता है ना वह क्रिएटर का करता है यानी हमको नई जान देता है । हमारे में नई जान फूंकता है ना । हमारे से जान निकल गई थी ना, वह आ करके हमारे में नई जान, नई लाइफ तो जैसे लाइफ दे दिया ना । भले लाइफ तो

है परंतु लाइफ निकल गई थी । जीवन से सुख और शांति निकल गई थी तो जैसे हम मुर्दाबाद हो गए थे, मर गए थे, वो कहते हैं ना सागर के सौ पुत्र फिर आ करके, शास्त्रों में है कथा, उनको आ करके जिंदा किया, वह मरे पड़े थे तो अभी सागर कौन? ज्ञान सागर परमात्मा, उनके हम पुत्र एक सौ आठ का महत्व है ना, तो हाँ, हम उनके पुत्र मरे पड़े थे । देखो मर गए थे ना, माया ने हम को मार डाला था यानी दुःख अशांति में, अभी वो हम मरे हुए को आ करके जिंदा करते हैं अर्थात हमारे में नई जान कहो, नई लाइफ कहो अथवा वो प्योरीफिकेशन अभी भरते हैं तो वह क्रिएटर किसका हो गया हमारे में वह नई लाइफ अर्थात हमारे में वह हमारी ओरिजिनल जो स्टेज है वह ले आता है इसीलिए उसको क्रिएटर कहते हैं । बाकि ऐसे नहीं कभी हम है ही नहीं, जो हमको बैठकर बनाते हैं । नहीं, तो यह चीजें भी बहुत अच्छी तरह से समझने की है इसीलिए कहते हैं कि ऐसी बात नहीं है कि आत्मा कोई इन आँखों से देखने की चीज है या परमात्मा भी कोई इन आँखों से देखने की चीज है । नहीं, उनको जाना जाता है जिसकी नॉलेज, जान पहचान वह खुद आकर के परमात्मा देता है । आत्मा को भी पहचान नहीं थी, वह नॉलेज जो है वह परमात्मा देते हैं और खुद की भी, परमात्मा की भी जान पहचान वह खुद ही देते हैं क्योंकि उसका तो कोई क्रिएटर कोई है नहीं ना तो अपनी और अपनी रचना की यानी हम आत्माओं का परिचय वह देते हैं इसीलिए कहते हैं बुद्धि से जाना जाता है लेकिन इन आँखों से चाहे

दिव्य दृष्टि से भी उनको देखें तो परंतु वो भी देखने के बाद फिर भी जाना जाता है ना । देखने से भी ऐसे नहीं बस देख लिया तो काम हो गया, उसको फिर भी ज्ञान से जानना पड़े कि परमात्मा क्या है, आत्मा क्या है और उनका क्या पार्ट है, कैसे-कैसे वह पार्ट में चलती हैं आत्माएँ जिनमें यह सारा पार्ट अनेक जन्मों का भरा हुआ है, परमात्मा में भी अपना जो पार्ट है वह सारा उसमें भरा हुआ है तो देखो यह ज्ञान सब समझना पड़ता है ना बाकी देखने से क्या देखेंगे । चलो दिव्य दृष्टि से भी कोई साक्षात्कार करें, उसको बिंदी का या स्टार लाइट कहो वह कुछ दिखाई भी पड़े परंतु फिर क्या हुआ । देख करके क्या उससे समझ जाएगा कि यह क्या है, नहीं उसका फिर ज्ञान चाहिए ना इसमें पार्ट भरा हुआ है वह पार्ट को भी तो समझना पड़ेगा ना, यह ज्ञान सागर है, यह ज्ञान दाता है, ये ही हमारे लिब्रेटर हैं, यह आते हैं, यह पार्ट कैसे बजाते हैं, जब यह आते हैं तभी हम को फिर वापस ले जाते हैं, तो हम आत्माओं का भी अनेक जन्मों का यह पार्ट है, वह सब तो फिर ऐसे देखने में तो नहीं आएगा ना, देखने में तो खाली बिंदी ही आएगी परंतु उसमें जो सारा पार्ट आदि वह तो ज्ञान से समझना पड़ेगा ना, कि इसमें यह पार्ट सारा कैसे भरा हुआ है जैसे रिकॉर्ड को हम देखें तो हमको क्या देखने में आएगा, खाली हो रिकॉर्ड का खली शेप देखने में आएगा चलो, बाकी इसमें कौन सा गीत है, क्या है, कहाँ से बजेगा, वह तो बजने से पता चलता है ना । इसी तरह से हमको भी यह बिंदी दिखाई पड़े, समझो देख लिया हमने

फिर क्या हुआ, उसको तो फिर भी जानना पड़ेगा ना कि भाई इसमें यह सारे जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, ये कैसे जन्म बाय जन्म मनुष्य आत्मा के पार्ट चलते हैं और हर एक का पार्ट भी अपना-अपना है, हरेक का अपना गीत भरा हुआ है, एक ना मिले दूसरे से, सब में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है अपने सभी जन्मों का । उसमें भी आदि के और अंत के जन्मों का कैसा-कैसा कंट्रास्ट है देखो यह सब अभी बुद्धि से जान सकते हैं । ये तो बुद्धि में रखने की चीजें हैं ना, अभी यह देखने में कैसे आएगा । वह बिंदी देखने से यह सब देख लेंगे ? यह देखने की तो चीजें नहीं है ना, यह जानने की, समझने की चीजें हैं इसीलिए कहते हैं वह ऐसी चीज है जिसको आँख ना देखें, आँख ना जाने लेकिन मन पहचाने अथवा बुद्धि से उसे जाना जाता है । तो यह है अपने परमपिता परमात्मा को हम आत्माओं को जानना लेकिन पहचान तो वह देता है ना तो मुख्य उसको रखेंगे कि परमात्मा ही तो आत्मा की पहचान देते हैं ना, आत्मा नहीं परमात्मा की पहचान देती है इसीलिए मुख्य उसको रखेंगे जो आत्मा की भी पहचान देते हैं इसीलिए कहते हैं परमपिता परमात्मा वह चीज है जिसको इन आँखों से नहीं देखा जा सकता लेकिन हाँ बुद्धि से जाना जाता है लेकिन वह बुद्धि भी तो वह देता है ना । ऐसे थोड़े ही है कि हम अपने आप ही जानते हैं, नहीं, वह बुद्धि भी वही देता है वह बुद्धि उसके पास है । जान पहचान कराने की बुद्धि उनके पास है हमारे पास नहीं है, हमारे पास से चली जाती है । जब वह आकर के

पहचान देते हैं तभी अभी आई है बुद्धि । तो हमारे में कैसे आई बुद्धि, अपने आप नहीं आई, उनके द्वारा आई तो बुद्धि तो उसके पास रही ना । इसीलिए कहेंगे कि उनके द्वारा हमको जान-पहचान मिलती है तो हाँ पहचाना जाता है उनके द्वारा बाकी हम अपने द्वारा नहीं पहचान सकते । तो यह भी चीजें समझने की है तो पहले उसको रखेंगे ना इसीलिए हाँ परमपिता परमात्मा जिन्हें हम इन आँखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन जाना जाता है परंतु वह भी उसके द्वारा यानी वह जब दे पहचान । पहचान देने की बुद्धि उसमें है । हम खो देते हैं हमारे से खो जाती है वो बुद्धि । वह तो फिर जब वह आते हैं तो देते हैं तो अभी देखो दी है बुद्धि तो बुद्धि आई है लेकिन आई कहाँ से है, उसने दी । वह ना देता तो थी थोड़े ही, नहीं, इसीलिए यह चीज भी समझने की है कि बुद्धिदाता, कहते हैं ना, बुद्धिवानों की बुद्धि अभी वह बैठ करके यह बुद्धि दे रहा है तो यह उनकी बुद्धि है । बुद्धि कहो नॉलेज कहो, ज्ञान कहो तो उनका ही है । बुद्धि में क्या है समझ, बुद्धि किसको कही जाती है समझ को कि भाई तुम्हारे में बुद्धि नहीं है क्या, जिसको समझ नहीं होती है ना तो कहते हैं कि तुम्हारे में तो बुद्धि नहीं है, ऐसे कहते हैं ना कि बुद्धि नहीं है, मानो तुमको समझ नहीं है । तो बाप कहते हैं तुम तो अभी देखो बुद्धि नहीं है तो बुद्धू हो गए हो, यानी नहीं जानते हो इसीलिए कहते हैं तुम्हार में से वह बुद्धि निकल गई है बाकि ऐसे नहीं तुम्हारे में बुद्धि नहीं है । बाकी तो बुद्धि है ना बच्चे कैसे पैदा करना है, यह घर कैसे चलाना है,

फलाना कैसा है यह भी बुद्धि ना होती तो काम कैसे करते, यह तो बुद्धि है परंतु वह कहते हैं यह बुद्धि नहीं है कि हाँ मैं कौन हूँ, तू कौन है, करना क्या है, वास्तविकता क्या है लाइफ की । वह कहते हैं यह बुद्धि तुम्हारे से चली गई है, वह बुद्धि नहीं है अभी देखो क्या हो गए हो, तभी आ करके मैं बुद्धि देता हूँ । तो बुद्धि माना समझ बाकी मन बुद्धि अनादि है, आत्मा अनादि है, ऐसे नहीं आत्मा है मन बुद्धि नहीं है । आत्मा है तो मन बुद्धि भी उसके साथ है, यह चक्कर भी है बाकी अनादि है, ऐसे नहीं कभी बुद्धि है ही नहीं मन है ही नहीं । मन तो है ही, मन तो परमात्मा में भी है ही । कहते हैं न उसको भी संकल्प उठा, तो यह चीजें अनादि हैं बाकी इनमें क्या परमात्मा आकर के भरते हैं वह चीज समझनी है तो इसी का क्रिएटर कहते हैं मैं हूँ । तो अभी यह समझना है ना वह क्या भरता है । वो आ करके हमारी बुद्धि में यह नॉलेज भरता है तो फिर बुद्धि बुद्धि हो जाती है फिर कहते भी हैं ना सुमत दे । तो सुमत यानी हमको श्रेष्ठ मत से अथवा वह कंप्लीट स्वच्छ मत जो है वह आ कर के देते हैं । तो सुमत देने वाला है ना तो देखो अभी सुमत दे रहा है ना । बाकि ऐसे थोड़ी ही कि भगवान तू सुमत दे बस ऐसे ऐसे ही थोड़े ही है । नहीं, सुमत दे रहा है तो अभी ले ना । लेना तो अपना काम है ना वह तो सुमत दे रहा है ना । अब यह सुमत दे रहा है ऐसे नहीं कि अंदर-अंदर से ऐसे ही सुमत कर देवें । नहीं, अभी दे रहा है । देगा भी वह खुद आ करके ओरगंस का आधार लेकर के समझाएगा बाकी अंदर-अंदर से

नहीं दे देगा, सबके अंदर-अंदर से ऐसे ही दे देवे, चलो दो अंदर-अंदर से नहीं । वह कहते हैं मैं सुमत भी कैसे लेता हूँ वह भी तो समझो ना । मैं भी आकर के सुमत देता हूँ, तो मत को समझाना पड़ेगा ना । समझाता हूँ तो वह भी समझने की बात है । कई समझते हैं की सुमत भई अंदर ही अंदर दे दे अपने आप इसीलिए कहते हैं हे भगवान इसको सुमत दे दे या कहते हैं जब भगवान को देना होगा तभी देगा देखो बहुत आते हैं इधर कहते हैं जब भगवान हुकुम करेगा, जब भगवान की कृपा होगी, उसकी कृपा के बिना थोड़ी हम इतना भी नहीं चल सकते हैं । तो कहते हैं हम इतना भी नहीं चल सकते हैं तो क्या भगवान इतने दिन तुम्हारे पर अकृपा करके बैठा था, उसकी माना तो भगवान की अकृपा थी जो जब भगवान् कृपा करे कहते हो । अभी यह सब क्या है भक्ति मार्ग का बात करने का ढंग बैठ गया है ना तो बिचारे ये बस कहते आते हैंसमझे चाहे न समझे । भई इतना समय क्या था, तुम्हारे पर आज कृपा की भगवान ने? इतना दिन उसकी अकृपा थी क्या वह अकृपालू है, उसको तो कहते हैं सदा कृपालु । गाते तो ऐसे ही महिमा तो ऐसे ही करते हैं तू सदा कृपालु है तो तुम्हारे ऊपर आज कृपा की उसने? क्यों कल अकृपा की थी क्या तुम्हारे ऊपर उसने । नहीं, यह तो देखो रॉन्ग हो जाता है ना । एक तरफ उसकी महिमा करना, मुंह पर चित्र के आगे उसकी महिमा करना और फिर बातें ऐसी करना कि जब वह कृपा करे ना । तो उसका मतलब तो वो अकृपालु हो गया जो इतना दिन तुम्हारे ऊपर

अकृपा करके बैठा था । कृपा नहीं करी थी आज की है तो तुमने आज कुछ अपना करने का सोचा । तो इसका माना उसकी अकृपा रही न तेरे पर, तो वह अकृपालु है । तो क्यों कहते हो सदा कृपालु? तो सदा तो हुआ ही नहीं न तेरे ऊपर । तो यह तो रॉन्ग हो जाती है ना कहनी एक करनी दूसरी यह सभी बातों में । तो देखो समझते नहीं बेचारे खाली एक आदत पड़ गई है ना भक्ति मार्ग की कि जब वह कृपा करेगा, जब उसका हुकुम होगा, उसके हुकुम के बिना यह पत्ता है न वो भी नहीं हिलता है बस वो बैठा हुआ है न खयालात में । अभी इस पत्ते को क्या भगवान का हुक्म है पत्ता तू हिल? यह तो हवा का काम है ना । हर एक तत्व आदि का अपना जो नियम है उसी नियम के अनुसार चलता है, इसमें परमात्मा के आर्डर की क्या आवश्यकता है जो हुकुम करता है तू हिल, तो फिर तो चोर को भी चोरी करने के लिए कहेगा तू हाथ उठा, जा चोरी कर, इतना- इतना तू हिलाएगा हाथ तो, यह पत्ते को भी उसका हुक्म है तो चोर के चोरी करने को भी उसका हुकुम मानना चाहिए न फिर तो । फिर तो खुनी खून करता है तो उसको भी कहता होगा खूनी तू खून कर, तो अगर पत्ता हिला तो कहा परमात्मा ने हिलाया फिर चोर ने चोरी करने के लिए जो हाथ हिलाया, खुनी ने खून करने के लिए जो हाथ हिलाया फिर ये हठ भी उसी ने चलाया फिर तो ये काम उसका हो गया न फिर मनुष्य क्यों उसका दुःख भोगता है । फिर तो उसके लिए पाप कर्म पुण्य कर्म की बात ही नहीं रही । फिर तो सब जो

कराता है वह परमात्मा ही कराता है । फिर तो हमारे से पाप भी वह कर आता है, जब पत्ते को हिलाता है तो फिर हमारे से भी कोई काम उल्टा होता है वह भी वह कराता है । तो जब वह कराता है तो हम काहे के लिए दुःख भोगते हैं? फिर तो दुःख भी उसको ही भोगना चाहिए । फिर तो सारी रिस्पांसिबिलिटी उनकी हो जानी चाहिए ना फिर हमारी क्यों है, परंतु यह रॉन्ग है । यह जो कई बातें इस तरीके से समझ बैठे हैं ना तो वह बिचारे समझते हैं उसके हुकुम के बिना ऐसे ही थोड़ी, अरे पता भी नहीं हिल सकता है । अभी पत्ता भी नहीं हिल सकता है तो चोर कैसे चलता है चोरी करने के लिए, भगवान चला रहा है उसको कि चल इधर चल, इससे लूट इससे ले फिर तो भगवान रिस्पांसिबल रहा ना? परंतु नहीं, यह तो हर एक का नियम है । हवा का नियम है पत्ते को हिलाना तो हवा हिलती है । इधर हम आत्मा हैं तो उसका काम है चलाना, ये हाथ कौन चलाता है ? ये परमात्मा थोड़ी चलाता है, पत्ते को हवा चल आती है यह इधर हम आत्मा है शरीर को चलाने के लिए यह कौन चलाती है यह परमात्मा थोड़ी ही चलाता है, यह आत्मा चलाती है ना हाथ तो । अभी इस हाथ की समझ मेरे पास है ना, आत्मा के पास कि इसको राइट एक्शंस में लाएँ या रॉन्ग एक्शंस में लाएँ । इस मुख से हम गाली देवें या राइट एक्शंस में लाएँ यह मेरी रिस्पांसिबिलिटी है, यह भगवान की थोड़े ही है । वो थोड़े ही चलाता है । हाँ पर वह अभी बुद्धि दे रहा है । उसने अभी समझ दिया है कि हाँ कैसे चलाओ । इस

मुख से राइट क्या बोलो, रॉन्ग नहीं बोलो । इन हाथों को राइट कैसे चलाओ । इससे क्या राइट एक्शंस करो । ऐसा कोई काम ना करो उल्टा जिससे तुम्हारा अकल्याण हो तो वह समझ दी है बाकी ऐसे थोड़ी ही है कि वह करता है । करने को तो सब जो उल्टे एक्शंस भी करते हैं तो भगवान चलाटा है? तो नहीं, यह सब चीजें समझनी हैं, यह जो पुरानी आदतें चली आई हैं ना भक्ति मार्ग की कि उसके बिना कुछ नहीं होता, करनकरावन आप ही आप वो है एक कहावत मानस के कुछ नाही हाथ वो अर्थ उठा लिया परंतु उसका अर्थ है कि मनुष्य जो समझ बैठे हैं ना भाई देखो इसका अर्थ कितना है । सिंधी बोली में भंवर ऐसी कहावत भी है तो एक बात का दो अर्थ निकाल लेते हैं । अभी देखो इसका अर्थ मनुष्यों ने क्या निकाला और परमात्मा बैठकर के समझाते हैं कि मानुष के कुछ नाही हाथ, कारनकरावन आपे आप, ये गाते हैं, ये किसी ग्रन्थ में ये वाणी है । अच्छा, मनुष्य के कुछ नाही हाथ तो वह समझते हैं कि मनुष्य भी क्या, मनुष्य तो यहाँ से उठ करके यहाँ भी नहीं हो सकता, उसके थोड़ी कुछ हाथ में है । भक्ति मार्ग में ऐसे समझते हैं, हम भी समझते थे । यह पत्ता भी नहीं हिल सकता है उसके थोड़े ही हाथ में है भक्ति मार्ग में समझाते हैं हम भी समझते थे यहाँ से यहाँ तक भी जो हम हिलते हैं ना तो भगवान ना होता तो हम हिल भी नहीं सकते थे तो कहते यह कर्म करावन आप ही आप वही कराता है हमारी क्या ताकत है यहाँ से यहाँ तक हो सकें, अब देखो यह भी अर्थ है । अभी भक्ति मार्ग में

सब ऐसे ही समझते हैं परंतु अभी ज्ञान से परमात्मा ने क्या समझाया नहीं, कारन करावन आप ही आप मनुष्य के कुछ नाही हाथ यानी मनुष्य जो समझ बैठे हैं ना की हाँ यह गति सद्गति मोक्ष करेगा, जो मेरा काम है वह अपने लिए समझ बैठे हैं । समझते हैं ना कि हाँ भाई यह गुरु द्वारा फलाने द्वारा मोक्ष होगा और वह भी कहते हैं तुम्हारा मोक्ष हुआ । तुम ऐसे करो तेरा हो गया । बहुतों का ऐसा मोक्ष हो गया, बहुत निर्वाण में चले गए हैं, ऐसे बहुत हैं । यह जो काम परमात्मा का है वह गुरु लोग कहते हैं मनुष्यों का है इसीलिए कहते हैं मनुष्य के कुछ नाही हाथ, अरे! यह मनुष्य के हाथ की बात नहीं है यह मेरे है, करन करावना आप ही आप यानी इसको करने वाला मैं हूँ बाकी मनुष्य के हाथ की यह बात नहीं है । तो वह समझना है ना मनुष्य का क्या काम, परमात्मा का क्या काम । अभी जो परमात्मा का काम है वह मनुष्य ले करके बैठ गए हैं कि यह हम करते हैं, हम कराते हैं । तो बाप कहते हैं यह मनुष्य के कुछ नाही हाथ यह उनके हाथ की बात नही है । गति सद्गति देना या आत्मा को ऊंचा ले जाना, जो ऊंचाई की स्टेज है उसी पर ले जाना यह कोई मनुष्य का काम नहीं है यह कारन करावन आप ही आप इसीलिए कहते हैं ना मैं आता हूँ तो विनाश की स्थापना और पालना उसका कारन करावनहार हूँ ना तो यह मैं आकर के काम करता हूँ इसीलिए यह करने का मैं हूँ इसीलिए देखो अर्थ कितना डबल हो गया न । अभी वह अर्थ कहाँ । भक्ति मार्ग में जो समझते हैं ना कि मनुष्य

कुछ नहीं कर सकता है, यह ऐसे उंगली भी चलती है ना वह भी उसके बिना नहीं चल सकती है तो वह समझते हैं कि यह परमात्मा का काम है पर आत्मा भी तो चैतन्य है ना । आत्मा में अपनी कोई ताकत ही नहीं है क्या । जब मनुष्य मरता है तो आत्मा ही तो निकल जाती है ना कि परमात्मा निकल जाता है, आत्मा कहते हो ना तो आत्मा निकलती है ना तो आत्मा की अपनी सत्ता भी तो है ना । आत्मा भी तो चैतन्यता है ना फिर ऐसे कैसे कहेंगे करन करावन आप ही आप । वह आत्मा है ना रिस्पांसिबल अपनी । लेकिन हाँ आत्मा में वह जो ज्ञान है ना उस ज्ञान के लिए कहते हैं कि मनुष्य के कुछ नाही हाथ अर्थात ये ज्ञान मनुष्य नहीं दे सकते हैं । वह तो समझ बैठे हैं हाँ हम मोक्ष देने वाले हैं, दूसरे भी समझते हैं कि मनुष्य हमको देगा तो कहते हैं यह रॉन्ग है । यह जो काम है ना यह तुम मनुष्यों का नहीं है, यह काम मेरा है । यह तुम मनुष्यों ने अपने आप अपने पर रख लिया है करने वाले भी समझते हैं कि हम करने वाले हैं, मोक्ष देने वाले हैं और तुम भी समझते हो कि हाँ वह हमको देगा, ये जो आपस में मेरे काम को अपने लिए लगा कर बैठ गए हो, ये काम तुम्हारा नहीं है ये काम मेरा है इसीलिए कहते हैं मानस के कुछ नाही हाथ, कारन करावन आप ही आप अर्थात ये अपना काम करने के लिए वो स्वयं अपने आप समर्थ है बाकी यह सामर्थ्य कोई मनुष्य में नहीं है, इस काम के लिए कोई मनुष्य समर्थ नहीं है । यह काम उसका है तो परमात्मा के भी काम को समझना है ना अच्छी

तरह से उसका काम कौन सा है । उसका काम मनुष्य भी कर सकते हैं मनुष्य का काम वह भी कर सकता है फिर तो उसका महत्त्व रहना नहीं चाहिए न । फिर तो उसको कहना की सुमत दो, उसको कहना की सद्‌बुद्धि दो, फिर ये सब क्यों कहना । फिर तो ठीक मनुष्य सबकर सकते हैं फिर तो मनुष्य के लिए महिमा होनी चाहिए न । नहीं, वह जो काम है ना उनके सिवा कोई कर नहीं सकता है इसलिए डिफरेंट हो गया ना । मनुष्य में बुद्धि पड़ गई है सबकी, मनुष्यों की आपस में सबकी मनुष्यों पर बुद्धि पड़ गई है इसीलिए कहते हैं मेरे से बेमुख बनाया है ना । इन सबने तुमको मेरे से बेमुख बनाया, कैसे बनाया कि यह कहना कि मैं तुमको देता हूँ, मोक्ष, फलाना, फलाना यह सब मैं तुमको देता हूँ तो देखो यह बुद्धि मनुष्यों में चली गई ना, तो परमात्मा से हटा लिया ना । तो इसीलिए कहते हैं देखो यह तो तुम एक दो को मेरे से हटाते हो । मेरे समीप नहीं करते हो मेरे से आप हटाते हो क्योंकि मनुष्य करेगा ऐसा तुम समझ गए हो न । अभी यही तो बुद्धि लगा दी है ना भक्ति मार्ग में सब क्या है? हमारे में भी यह था ना कि नहीं भाई मनुष्य करेगा तो देखो दिन-ब-दिन परमात्मा से बुद्धि हटती जाती है, अभी तो कहते हैं परमात्मा है ही नहीं, समझते हैं जो कुछ करता है वह सब मनुष्य है तो सारी बात मनुष्य पर रख दी है तो देखो बेमुख होते जा रहे हैं इसीलिए कहते हैं वह ताकत तुम्हारी खत्म होती जाती है, जैसे-जैसे मेरे से दूर होते जाते हो तो तुम्हारी ताकत जैसे खत्म होती जाती है

। तुम्हारे में वह ताकत भले माया की आती जाती है लेकिन मेरे से तो बेमुख होते जाते हो ना क्योंकि मनुष्य में जाकर के बुद्धि पड़ी है और मेरे से बुद्धि दूर होती जाती है इसीलिए तो कई तो मुझे भुला कर बैठ गए हैं । वह समझते हैं बस नेचर है बस, कुछ है ही नहीं, परमात्मा है ही नहीं, जो कुछ है वो मनुष्य है, मनुष्य जो कहता है, करता है बस जो कुछ करा है वो मनुष्य ही है तो देखो कितने बेमुख हो गए हो । जिन्होंने भी शास्त्र आदि बनाए हैं उन्होंने भी तो मनुष्य को ही रख दिया है ना कि यह सब काम मनुष्य ही करते हैं तो मनुष्य में बुद्धि लगा देना इसीलिए बाप कहते हैं देखो मेरे से तुमको बेमुख बना दिया इसीलिए कहते हैं यह तो तुम लोग आपस में एक दो को मेरे से बेमुख कर रहे हो अर्थात मेरे से हटा रहे हो । तो मेरे से कैसे तुम्हारा योग रहे, तुम मेरे कैसे बनो यह यथार्थ रीति से मैं आ करके समझाता हूँ और उसी की प्राप्ति भी मैं आकर के कराता हूँ इसीलिए मैं कहता हूँ मानुष के कुछ नाही हाथ । तो देखो अर्थ कैसे हुआ, बदल गया ना अभी अक्षर तो वही है लेकिन अभी बाप बैठकर समझाते हैं इनका मतलब यह है कि मनुष्य के कुछ नाही हाथ ये जो मनुष्य दावा लगाकर बैठे हैं कि यह हम करेंगे या कराएंगे या मनुष्य भी समझते हैं कि मनुष्य करेगा, तो कहते हैं मानस के कुछ नाही हाथ कारन करावन आपे आप यानी वही स्वयं परमपिता परमात्मा वही इस काम को करने में समर्थ है बाकी मनुष्य नहीं । तो यह सभी चीजें समझने की है ना तो देखो मनुष्य क्या समझते हैं और क्या

समझाते हैं और परमात्मा क्या समझाता है तो रात और दिन का फर्क हो गया ना, बात वही अर्थ में देखो कितना फर्क है । हम भी तो वही कहते हैं ना कि भाई मानुष के कुछ नाही हाथ, हम भी तो कहते हैं ना भाई मानुष के कुछ नहीं हाँथ मनुष्य जो समझते हैं कि यह हम करेंगे या मनुष्य को भगवान कहना यह रॉन्ग है, यह बड़ी भूल है, यह भी एक पाप है । देखो बाप बैठ के समझाते हैं मनुष्य को भगवान कहना यह पाप है, देखो पाप कितना गहरा समझाता है और वह कहते हैं सब परमात्मा है, सब परमात्मा के रूप हैं और बाप कहते हैं मेरा रूप सब है ही नहीं और तुम यह समझाते हो । यह पाप करते हो इसको भी पाप कहते हैं देखो कितना फर्क हो गया तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि बच्चे देखो मेरी बातों को यथार्थ रीति से समझो क्योंकि पाप क्यों हुआ क्योंकि तुम्हारी बुद्धि मेरे से हटकर के जाकर मनुष्यों में लग गई, मेरे से तुम्हारा कनेक्शन, योग निकल गया तो योग निकल गया तो क्या होगा, तो यह सभी बातों को भी अच्छी तरह से समझने का है इसीलिए बाप बैठकर कहते हैं कि यह नॉलेज, यह बुद्धि मेरा काम, तेरा काम क्या है जब तुम यह समझो तभी तो तुम काम ठीक कर सको ना । अभी तो समझते हैं मैं सब काम कर सकता हूँ, मनुष्य सब कर सकता है, मनुष्य से ही होगा तो फिर तुमने तो मुझे भुला दिया ना । और भुला दिया तो फिर मेरे काम का फायदा तुमको मिलेगा कैसे । जो करने वाला ही मैं हूँ और कोई कर नहीं सकता है और तुम समझ बैठे हो

कि हम आपस में हम ही कर सकते हैं तो करो, देखो अभी कर रहे हो ना, करते-करते देखली है न दुनिया, बना ली है ना दुनिया, बहुत अच्छी दुनिया, बाप तो ऐसा कहेगा ना । तो देख लो ना तुम समझ बैठे थे न अपने को सब कुछ की सब हम करने वाले हैं, अभी देख लो न क्या बनाई है दुनिया । तुम हो ना सब, तुम सब परमात्मा हो ना कितने परमात्मा हो, एक परमात्मा के बदले इतने परमात्मा हुए हो तो दुनिया क्या बनाई है । सब हो गए हो परमात्मा, सर्वव्यापी के हिसाब से तो सब परमात्मा हो गए ना, तो एक के बदले इतने परमात्मा और इतने परमात्मा की दुनिया क्या, तो बाप तो कहेगा ना कि देखो बच्चे क्या कर दिया है, मुझे भुला करके तुम सब परमात्मा बन करके बैठ गए हो और सभी के परमात्मा बनने से दुनिया और क्या बनाई है और ही दुःख अशांति की, तो देखो यह क्या है, तो यह बाप तो कहेगा ना, बच्चे होते हैं ना तो जैसे बाप कहते हैं कि देखो कितने मूर्ख हो गए तो अपने को भगवान समझ बैठे हो, वाह! अभी भगवान भला इतने हुए हो तो दुनिया तेरी क्या है । एक भगवान आता है तो दुनिया को स्वर्ग बनाते हैं और तुम इतने भगवान और दुनिया नर्क, देखो कितना कंट्रास्ट सब भगवान और दुनिया नर्क हो गई है और मैं एक आता हूँ तो दुनिया स्वर्ग बनाता हूँ तो देखो ना, तुम कितने अच्छे भगवान बने हो तो बाप तो ऐसे ही कहेंगे ना, परंतु कहते हैं नहीं बच्चे देखो भूले हो । यह भूलने के कारण ही तुमको पता नहीं रहा है ना तो बाप से तुमको ताकत मिले कैसे, तुम और ही

मूर्ख बनते गए हो इसीलिए नीचे गिरते गए हो, कर्म तुम्हारे भ्रष्ट होते गए हैं, तुम्हारे में ताकत नहीं रही ना, ना ताकत रहने से तुम दुःख भोग रहे हो इसीलिए कहते हैं बच्चे अभी राइट समझो कि मैं कौन, मेरा काम क्या उसको राइट समझो, तो राइट समझने से तुम्हारा काम भी राइट होगा, नहीं तो तुम समझते हो सब कुछ मैं हूँ, सब कुछ मैं हूँ, ताकत है नहीं और सब कुछ मैं हूँ, अपने को सब कुछ समझते-समझते मेरे से ताकत लेने का कनेक्शन कट ऑफ हो गया है तो मिलेगी कहाँ से ताकत, तो देखो बेताकत हो करके यानी ताकत ना रहने से तुम्हारा हाल देख लो क्या है हींया हो गये हो, हींया माना ताकत कम हो गई है तो यह सभी चीजें बाप बैठकर के समझाते हैं । आती है ना समझ में, तो मनुष्य का क्या काम, परमात्मा का क्या काम, कैसे फर्क पड़ता गया है तो यह भी समझने की बात है कि कैसे मनुष्य की बुद्धि में फर्क आया और मनुष्य क्या-क्या समझ बैठे हैं और बाप आ करके समझाते हैं कि यह मेरा काम कैसे हैं । अच्छा, आज वह है ना, गुरुवार, आओ तो यह सभी बातों को अच्छी तरह से समझते भी उसी बाप से कनेक्शन जाना है इसीलिए कहते हैं मेरे से रखो मुझे जानो, अभी देखो यह सब जानने की बातें हैं ना, देखने से थोड़ी दिखाई पड़ेगी यह सब बातें परमात्मा कैसा, आत्मा क्या, देखने में तो दोनों बिंदी दिखाई पड़ेगी आत्मा भी और परमात्मा भी, देखने से क्या होगा कैसे पता पड़ेगा नहीं कहते हैं देखने से तो सिर्फ जैसा शेप, साइज तेरा वैसा शेप साइज मेरा लेकिन

ये जानने की सब बातें हैं ना परमात्मा का क्या क्वालिफिकेशन, उसका कर्तव्य, उसका और मेरा क्या रिलेशन यह सब जानना है बुद्धि से सब समझना है । अभी यह भी तो तुम्हारे में तो बुद्धि है नहीं ना, तुम्हारे से तो बुद्धि निकल गई है, अभी यह बुद्धि देवे कौन है, मैं इसीलिए मेरा महत्व, महिमा मेरी है । तो कहते हैं ना कौन आया मेरे मन के द्वारे, तो कौन कहती हैं? आत्मा कहती है परमात्मा के लिए । तो अभी मेरे मन के द्वारे यानि मेरे मन में अभी यह बात आई है, अभी जान गए हैं, अभी समझ गए हैं कि हाँ परमात्मा क्या, कभी कोई बात समझी जाती है कहते ना हाँ हाँ, अभी आ गई, समझ में, ख्याल में आ गई यह ऐसी बात है, तो हाँ मन-बुद्धि तो है परंतु मन में अभी आई है, बुद्धि में अभी आई है, समझ में अभी आई है तो हम कहते हैं हाँ अभी आई है समझ में कि हाँ वह बाप है, हम बच्चे हैं और हमारा क्या कर्तव्य है, बाप का क्या कर्तव्य है, वह बैठ कर के अभी बाप ने समझाया है तो हम समझते हैं । नहीं तो बाप के कर्तव्य को समझ बैठे थे कि हम करेंगे, हम आपे आप हैं । एक तरफ तो कहते हैं मनुष्य के कुछ नाही हाथ एक उसके सब है, परंतु उसके हाथ कैसे हैं । कहते एक है परंतु करनी ऐसी करके बैठे हैं कि जैसे सब हम करते हैं । देखो चोरी करते हैं कहते हैं आप ही आप कराता है ना, करते खुद हैं और कहते हैं आपे आप, देखो रॉन्ग हो गया ना । परमात्मा थोड़ी कराता है, सब कुछ वह कराता है तो सब कुछ में तो सब आ गया ना । यह तो हमारी बुद्धि से की यह रॉन्ग है

यह राइट यह सब समझने की बातें हैं ना तो यह सभी समझ करके अभी बाप बैठकर के यह सभी रोशनी देते हैं । तो इसको कहा जाएगा रोशनी, तो यह सब रोशनी जो अभी बाप के द्‌वारा मिली है उसे लेकर के अभी रोशन होना है । रोशनी से फिर कभी ठोकरें नहीं खाएंगे, कभी दुःख नहीं पाएंगे । ठोकर माना दुःख, तो रोशनी से दुःख नहीं बिना रोशनी के दुःख है । तो अभी बाप रोशनी देता है सदा सुखी बनाने के लिए, तो अभी सदा सुखी बनने का है ना? तो देखो इसको कहा जाता है अर्थ को अनर्थ बनाना । अर्थ क्या है उसको बना दिया है अनर्थ तो ऐसी बातें हो गई हैं । तो ऐसे अर्थ को अनर्थ बनाया । देखो अर्थ कैसे अनर्थ हुआ अभी बाप आ करके फिर अर्थ समझाते हैं कि हाँ अभी कहते हैं की फिर अभी अपनी जगह पर ठीक हो जाओ और ठीक हो करके अभी मेरे से अपना पूरा-पूरा हक लो । नहीं तो हक भी तुम्हारा चला गया था किससे लो? संबंधी, रिलेशन सब कुछ तुम अपने आप में हो करके बैठे हो, आपस में ही सब कुछ बनाया तो बाप तो ऐसे कहेंगे ना, जैसे बच्चे होते हैं ना बच्चे आपस में ही खेल करते हैं न माँ भी तू बाप भी तू आपस में ही माँ बाप सब बन करके यह गुड़ियों का खेल करते हैं, तो ये भी चीज ऐसी है की तुम सब आपस में ही सब बन करके बैठे हो अपना गुरु, बाप, माँ सब अपने आप में । बाप कहते हैं नहीं मैं मैं हूँ, तू तू है यह भी तो समझ ना । तुम आपस में ही सब बन कर बैठ गए यह कैसे गुरु भी तू मनुष्य, मोक्ष करने वाला भी तू, सब मनुष्य आपस में बन कर

बैठ गए मेरे को बुला करके तो बाप होता है तो कहते हैं ना बच्चों को कि आपस में सब कुछ बन कर बैठ गए मेरे को भुलाकर करके तो इसीलिए कहते हैं कि नहीं अभी मैं जो हूँ यथार्थ रीति से समझो और समझ करके चलो । अच्छा, चलो । चलो माना समझते हो ना? किधर, बुद्धि बल से, हाँ चलो अभी, इन टांगों से नहीं चलने का है, बुद्धि की रफ्तार से, उसको तेज करो रफ्तार, बुद्धि की रफ्तार को तेज करो । खिलाने वाला कौन है? अभी खिलाने वाला वह है परमपिता परमात्मा । भक्ति मार्ग में तो सब कहते हैं भगवान खिलाता है, जो देता है सो भगवान देता है परंतु वह तो खाली कहने की ही बात है ना । फिर तो बेचारे किसको मिलता है खाना, किसको नहीं मिलता है । जिसको नहीं मिलता है तो फिर क्या कहेंगे भगवान नहीं खिलाता है? फिर तो ऐसा भी मानना पड़ेगा । अगर सब को खिलाता है किसको नहीं खिलाता है फिर तो भगवान ही नहीं खिलाता है ऐसा कहना पड़ेगा ना । परंतु नहीं, ये खाना, खिलाना तो अपने हिसाब से । कोई बिचारे अच्छा खाते हैं, किसी को नहीं मिलता है तो कर्म का है ना । लेकिन बाप कहते हैं सच-सच अभी खिलाता हूँ क्योंकि अभी तुम मेरे हो ना। तो अभी जो उनके बने हैं यानी तन मन धन से प्रैक्टिकल उनके हैं तो अभी देखो कहते हैं जो उनके बने हैं ना तो उसकी परवरिश जैसे उनसे ही होती है बाप से । तो अभी कहते हैं हाँ, तो जो खिलाता है अभी उसको भी याद रखने का है। तो अभी हम को कौन खिलाता है? शिव बाबा। हम उनके हैं ना तो उसको याद

करते हैं कि हाँ जैसे बाबा खिलाते हैं तो उनको याद करते हैं ना, तो बाबा आप स्वीकार कीजिए। परंतु स्वीकार कीजिए तो वो भोजन थोड़ी ही खाता है। वह तो सोल है ना, सुप्रीम सौल, उसको तो शरीर नहीं है । खाने पीने का तो शरीर के साथ संबंध है ना परंतु हाँ यह रिस्पेक्ट, उसकी याद। तो यह सभी याद के तरीके हैं बाकी इसमें कोई और बात नहीं है। याद रखना तो खाते भी याद रखना, चलते भी याद रखना, उसको याद रखने का है । तो यह है उसी बाप की याद जिसकी याद में रहकर के अभी हमको चलना है। तो अभी उसकी याद में रह करके चलो। चलते, फिरते, खाते, पीते, काम करते भी, कहते हैं ना कम कार डे वो कहावत है दिल यार डे । वो यार कहते हैं, यार परमात्मा को भी कहते हैं, खुदा दोस्त। तो यह सभी उसके प्रति तो कम कार डे और दिल परमात्मा की तरफ। उसको सखा भी कहा है ना, त्वमेव माता च पिता त्वमेव बंधु च सखा। देखो सखा कहो या फ्रेंड कहो या यार कहो या दोस्त । ये शायद उर्दू अक्षर है या कोई भाषा का है परंतु है, दोस्त कहो बात एक ही है। तो यह सभी है परंतु कहा परमात्मा के प्रति है । तो अभी कहते हैं मेरे से लगाओ, दोस्ती रखो। फिर हाँ दोस्त बनो अथवा बच्चा। बच्चा अक्षर अच्छा लगता है क्योंकि बच्चे से वर्सा की टेंप्टेशन रहती है ना । बच्चा तो वर्सा मिलेगा, दोस्त को थोड़ी वर्सा मिलेगा। नहीं, तो हम कहते हैं क्यों नहीं, हम बच्चा बनेंगे तो जो भी उसकी जायदाद है, उसकी सारी प्रॉपर्टी का हकदार हो जाए। तो बाप से ले लेना इसीलिए हम उसके

होते हैं कि उसकी सारी प्रॉपर्टी का हमें हक है । तो बच्चा कहने से डबल फायदा है ना। उसका जायदाद का सारा हक, कोर्ट भी दिलाएगी। लॉ भी दिलाएगा । वह लॉ लग जाता है बाकी रिलेशंस में वो लॉ नहीं लगता है । सजनी कहें, साजन कहे तो उसको, सजनी को भी नहीं। बाप का बच्चा, तो बच्चे से वारिस, बच्चा ही तो वारिस बनता है ना । वारिस किसको कहेंगे? वारिस माना सजनी को थोड़ी वारिश। वारिस माना बच्चा। हेयर पेरेंट्स, हेयर पैरेंट के अर्थ से, कोई कहेगा यह इसका हेयर पैरेंट हैं तो हां भाई इनका बच्चा होगा ना, हेयर पेरेंट से दूसरा थोड़ी कहेगा दोस्त होगा या सजनी होगी। नहीं उससे कहेंगे इसका बच्चा हेयर पैरेंट। तो हेयर पैरेंट का भी नशा चाहिए की हां भाई जितनी उसकी जायदाद है उसका हेयर पैरेंट, वारिस तो फायदा है न। तो क्यों नहीं हम उसका बच्चा बने। तो बच्चा बनने से, उसको पिता कहने से दूसरा आनंद है क्योंकि उसमें आनंद आता है। पिता कहते भी हैं परमपिता परमात्मा देखो पिता कहते हैं ना। पिता से पुत्र आता है बुद्धि में और पुत्र से वर्सा का नशा चढ़ता है। वर्से से उसकी सारी जायदाद की जो पूर्ण सुख शांति की जायदाद है ना उसके ऊपर हक लगता है और हमको चाहिए उसका हक। भगवान को भी हम याद करते हैं, भगवान को भी हम चाहते हैं इसलिए क्योंकि उससे मतलब है। किसलिए उसे याद करते हैं उसमें मतलब है। कौन सा, कि उसके पास हमारी सुख शांति की जायदाद है, वह उससे हमको लेना है। हमको चाहिए सुख शांति, भगवान को नहीं चाहिए, नहीं तो

भगवान को भी कौन पूछे। क्योंकि सुख शांति के लिए सब है तो हमको चाहिए अपने जीवन में, जीवन में हो या जीवन के बाहर हो, कहाँ भी हो मतलब सुख शांति चाहिए। तो उसी सुख शांति के लिए तो मोक्ष कहते हैं कि भले तू जीवन से बाहर ले जा, जीवन में न ला, किधर भी रख किधर भी हो लेकिन सुख शांति तो हो न। आनंद हो, शांति हो कहते हैं न। भले शांति से भी कई समझते हैं शांति से भी दूर होवें परंतु वह भी समझते हैं की वह महाशांत है । कुछ भी समझते हैं उसमें भी कुछ समझते हैं तभी ना। तो यह सभी चीजों को बैठकर के बाप समझाते हैं । ये भी जो भी सब चाहना है ना तो उसमें भी कोई चाहना है न। भाई शांति भी हमको नहीं, कोई कहते हैं भाई शांति भी हमको नहीं, आनंद भी नहीं, इससे भी ऊपर है परमो अधिक आनंद, कुछ तो अधिक समझते हैं ना तभी तो पर पर कहते हैं न। तभी बाप कहते हैं मैं तुमको पर से पर वो परम सुख, परम परमात्मा परम सुख देगा ना,। ऊंचा, परे यानी ऊंचे में ऊंचा सुख। ऊंचे में ऊंचा कहो या परे ते परे कहो यानी इस दुनिया के सुख से जो परे है, ऊपर है। तो हमको परम सुख, परम शांति कई कहते हैं ना यह शांति नहीं, परम शांति। परम शांति क्या? वह शांति से भी ऊपर है। परंतु शांति से ऊपर क्या यानी अल्पकाल की जो शांति है ना उस अल्पकाल की शांति से ऊपर, सदा काल की। तो सदा काल और अल्पकाल यह सभी चीजों को बैठ करके बाप समझाते हैं और बाप कहते हैं कि इन बातों को अच्छी तरह समझ कर करके उससे परम

शांति और परम आनंद, तो अभी समझते हो ना अर्थ को भी ? परम आनंद को, परम शांति को, यानी जो सदाकाल का सुख है । तो सदा काल, सदा का सुख, सदा की शांति इसको कहेंगे परम आनंद परम शांति । यह है अल्पकाल की शांति, अल्पकाल का सुख, वह है सदा का। तो सदा कहो या परम कहो बात एक ही है। तो यह सभी नॉलेज अच्छी तरह से समझने का है और समझकर के बाप से अपना हक पाना है। हक लगेगा तभी जब हम रिलेशन बच्चे का रखेंगे तो पिता से हक मिलेगा। पिता के ऊपर पुत्र का हक होता है तो डबल काम होता है ना रिलेशन भी और हक भी इसीलिए हम वह अपना रिलेशन जुड़ाते हैं। अच्छा चलो (रिकॉर्ड: बजा शिव भोला भगवान) जहाँ सब जाते हैं। मालूम है तुमको, तुम भी जाती हो सब जाते हैं । बाप को याद रखना है। बाबा किसको दिखा देते हैं, हम भले ना देखते हैं, याद है ना। ये देखने में आप भूल जाते हैं हम तो याद में रहते हैं इसीलिए कहते हैं फिर भी याद रखने का है और है सभी याद के लिए। भक्ति मार्ग में दीदार आदि का बहुत महत्व है। अपने पास इन बातों का महत्व नहीं है क्योंकि अपने पास इससे ऊंची चीज है ना उसमें टेंप्टेशन है इसीलिए अपने पास महत्व है। नहीं तो है बहुत अच्छी चीज । इसको दूसरे होते हैं न कहां दर्शन दीदार के लिए जाते हैं तो देवी धन तो जाती हैं बहुत महत्व है। लेकिन अपने पास कमाई की चीज है ना यह । तो इसीलिए महत्व है इसका, कमाई का। बाकी है तो यह भी बहुत अच्छी। इसमें और तो कोई बात नहीं है फिर भी

अच्छा ही है अनुभव देखना, घूमना, मज़ा है जाना, निराकारी दुनिया, बैकुंठ, सब घूमना फिरना अच्छी हैं ये भी सीन सीनरी देखना चाहिए। अच्छा परंतु सब थोड़ी ही देखेंगे। किस किस का पार्ट होता है। देखो हमने कभी नहीं देखा है। हम कहते हैं कि देखें फिर लौट आएं, ऐसा देखें तो फिर बैठ ही जाए इसीलिए वह इच्छा है कि वह काम करें जो फिर जाए तो लौटें न। यह तो जाएंगे फिर लौट आएंगे ना। फिर इसको यहाँ मेहनत पुरुषार्थ करना होगा। हम ऐसी मेहनत करके जाए तो फिर लौटे नहीं उधर ही खेलते रहे और मौज करते रहें। तो हाँ अभी वह दुनिया तैयार हो जाए तो फिर उसमें बैठी रहें इसीलिए आस वो है ना बड़ी। यह हैं स्वपन, यह सपनों में बाबा खुश करता है। वह फिर होगा प्रैक्टिकल, तो प्रैक्टिकल तो कर्म से होगा ना । यह तो बाबा स्वपन दिखलाते हैं, सींस दिखलाते हैं कि हां देख लो। जैसे होता है ना दिल्ली का दरवाजा आगरा में, वह दिखलाते हैं फिर आगरा दिखलाते हैं, वह देखा है कभी दूरबिनी, ये दिल्ली का दरवाजा देखो, आगरे का ताज देखो, फलाने का यह देखो वो देखो, बाबा भी ये दूरबीनी दिखलाते हैं बैकुंठ का दरवाजा देखो, यह सीन सीनरी देखो, यह निराकार आत्माओं का देश देखो, यह फलाना देखो, यह ब्रह्माजी देखो, यह विष्णु जी देखो यह देखो, देखा? ये जादू की डब्बी देखी है कभी ? तो आगरे का ताज देखो यह देखो दिखलाते हैं। अभी हम चाहते हैं हम प्रैक्टिकल में देखें। अच्छा चलो गो सून कम सून। (रिकॉर्ड हमने देखा हमने जाना शिव भोला भगवान) तो हमने देखा,

जाना, समझा सो भी समझ उसने दी अपने जानने की। तो उससे हमने जाना, जब जाना तब पाया। तो उसको जानना है कहते हैं न दिल से पहचानना है। आँखों से नहीं देखने का है दिल पहचाना है, तो दिल से जानना है न। तो जाना और पाया, देखा और पाया नहीं। तो इसीलिए कई समझते हैं ना कि हमने देखा ना तो हमारा द्वार खुल गया, पा लिया। नहीं, देखा और पाया नहीं, जाना और पाया । तो जानने के लिए तो फिर नॉलेज है ना। कोई भी चीज जानी जाती है समझ से और समझ आ करके वह देता है जिससे हम जान करके पहचान, करके उसको पाते हैं। तो अभी देखो पाया है ना उसके द्वारा। वह तो कहता है मैं तो आकर के अभी देखो द्वार खड़ा हुआ हूँ, अभी मैंने गेट खोला है अभी उसको खोल करके और फिर अभी चलो। तो अभी उस बेहद बाप से अपना बेहद का वर्सा पाना। पाना भी क्या है उससे वह भी तो समझना है ना उसका भी तो मालूम होना चाहिए ना, नॉलेज होना चाहिए। सभी बातों का ज्ञान समझ, अभी यह बात समझ दे रहा है मैं क्या, तुम क्या, तुमको पाना क्या है। उसको पाने का भी पता थोड़ी है कि मिलेगा क्या, पाना क्या होता है इसीलिए अभी तक भी कई विश्वास नहीं करते हैं ना कि ऐसा भी कोई मनुष्य हो सकता है एवर हेल्दी एवर वेल्थी यह इंपॉसिबल है। ऐसे कभी हुआ ही नहीं है, कोई हिस्ट्री में नहीं है, कई ऐसे समझते हैं। तो मानते नहीं है, मनुष्य को पता ही नहीं है हम मनुष्य कितने ऊंचे थे। हम मनुष्य के लिए पाने की क्या चीज है, पाने का भी पता

नहीं है कि हमको बाना ही क्या चाहिए वह नहीं जानते हैं। और बतलाते हैं तो भी कोई, कोटो में कोई निश्चय करके समझते हैं, नहीं तो बिचारी कई समझते भी नहीं है कि यह होता ही नहीं है इसीलिए हमको रोग ही पसंद है। यह चलना ही ऐसा है हिस्ट्री रिपीट होती है तो यह दुनिया ही ऐसी होती है। तो समझते हैं ऐसे ही दुनिया है और ऐसा ही होता है इसीलिए कई बिचारे पुरुषार्थ ही नहीं करते हैं क्योंकि वह समझ बैठे हैं ना कि बस ऐसे ही दुनिया है। वह आए होश में कि नहीं दुनिया ऐसी मनुष्य ऐसा ऊंचा हो सकता है तब तो वह काम भी चले, पुरुषार्थ भी चले । यह तो बुद्धि अभी बाप ने दी है ना और वह भी किसी थोड़ो की बुद्धि में यथार्थ रीति से बैठता है। अभी यथार्थ रीति से जानना वो बहुत थोड़े। जब जाने कि यह चीज हमें मिल सकती है तो शौक से पुरुषार्थ करें नहीं तो कहेंगे यह तो चला आया है, अच्छा थोड़ा बहुत इतना ही सही जैसे भगवान को भी थोड़ा राजा कर दो, उसको भी खुश कर दो। कैसा जीवनलाल? यह अपने को खुश करना है, उनको नहीं खुश करना है। उनको खुश करने का मतलब है अपने को खुश करना क्योंकि अपने को खुश करने के लिए ही तो हम उसके द्वारा लेते हैं ना । तो ऐसी नही उनको खाली खुश करना है, नही अपने को। अपने को तो खुश करने के लिए सारी जिंदगी करते ही रहते हैं, मनुष्य सारी जिंदगी जो करते हैं काहे के लिए । जिंदगी भर करते हो लेकिन उस से मिलता कुछ नहीं है इतना, फिर भी दुःख अशांति। ऐसा नहीं कोई करता ही नहीं है, करते हो, सारी जिंदगी

अभी किसके लिए करते हो? छोटे थे तो बाबा मां-बाप के लिए, बड़े हुए तो मां-बाप बन करके बच्चों के लिए, सारी जिंदगी करते हो लेकिन करते करते करते तो रहते ही हो परन्तु उससे कुछ उससे वो थोड़े ही प्राप्त करते हो। अभी बाप कहते हैं वैसे भी करते ही हो अभी मैं तुमको यथार्थ समझाता हूँ तो क्यों नहीं यथार्थ करके मेरे से लेते हो। ये तो मिलने की आप चीज है न और करते तो ऐसे भी हो छोटे हो तो अपने मां बाप के लिए करते हो और बड़े होते हो तो मां बाप बन करके करते हो। करते तो जिंदगी भर हो। ऐसे नहीं है कि बिना करने बैठे हो, परंतु वो करना तुम्हारा ऐसा है और यह करना देखो तुमको मिलता है तो क्यों नहीं ये करना चाहिए। मैं खाली तुम्हारे करने को बदलता हूँ। करना तो वैसे भी पड़ता है, सब करना पड़ता है। तो वह करना ख़ाली मैं बदलता हूँ तो क्यों नहीं अपने को बदलते हो। अच्छा तो समझ गए हो ना। तो बाप दादा और मां की मीठे-मीठे, बहुत अच्छे सपूत सिकिलधे सयाने, समझदार, नशा चढ़ता है? ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग। अभी गुड डे, गुड इवनिंग ये भी टाइम गुड रखने का पुरुषार्थ करने का है। गुड भी कहने मैं तभी आता है जब बेड बैठी है । सतयुग में गुड भी नहीं कहेंगे क्योंकि बेड है ही नहीं। गुड के भेद में बेड, बेड के भेद में गुड कंट्रास्ट है न।वहां कंट्रास्ट की बात ही नहीं है है ही गुड ही गुड। तो बेड भी क्यों कहेंगे, गुड भी क्यों कहेंगे। तो अभी ऐसी दुनिया में चलने का है।

36. सतयुग का स्थापक कौन है

आज गुरुवार है भोग लग रहा है

रिकॉर्ड :-

तुम छोड़ो ना मुझको अकेला कभी.........

ओम शांति ।

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, माँ भी सुनते हो ना गीत में तो माँ उस माँ को, मेरी माँ को कहते हैं समझा, उसको याद करना है । हम भी तो उसको याद करेंगे ना । तो इसको नहीं याद करना है, कोई मनुष्य को नहीं याद करना है । उन्हीं को, जिसकी महिमा है कि त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव । तो अभी तो उससे रिश्ता, संबंध जोड़ना है ना । जोड़ा है कि जोड़ना है ? जोड़ा है । जोड़ ही देना चाहिए । जोड़ने में देरी थोड़ी लगती है । कोई साहूकार हो धनवान हो और उसको बच्चा ना हो और कोई गोद का बच्चा उसको लेना हो तो कोई बच्चा उसका कितने समय में बनेगा? अभी-अभी बनेगा या सोचेगा कि लखपति हो जाऊंगा, करोड़पति हो जाऊंगा तब ? तो कोई ना करेगा बच्चा बनने के लिए ? नहीं । भोपालम समझते हैं ना ? तो कोई लखपति हो और कहे हमको अडॉप्ट करना है बच्चे को, हम को बच्चा नहीं है,

प्रॉपर्टी कौन संभालेगा । प्रॉपर्टी का हकदार चाहिए तो हमको किसी को गोद का बच्चा बनाना है तो किसी को बनाए तो कितने में बनेगा ? इतने में और बना और उसी घड़ी वह प्रॉपर्टी का मालिक हो गया जायदाद का । तो अभी देखो कौन कहता है सर्व समर्थ वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी, वह अथॉरिटी कहती है कि अभी मैं आया हुआ हूँ । अभी मेरे बच्चे बनेंगे, वैसे तो बच्चे सारी दुनिया है वह तो बात ही नहीं है लेकिन यह अभी बनना है ना, उससे संबंध जोड़ना है ना, उसके कहे प्रमाण चलना है, उनका हो करके रहना है, उसकी डायरेक्संस पर, उसके मत पर प्रैक्टिकल चलना है ना तो अभी कहते हैं मेरे बच्चे बनो । तो ऐसे के बच्चे बनने में क्यों देरी । जब कोई लखपति करोड़पति का बच्चा बनने में देरी नहीं करते जबकि विनाशी है और यहाँ तो गारंटी है इसकी और यह तो शहंशाह, कहते भी हैं उसको शहंशाह बनाने वाला है एकदम, तो उसका बच्चा बनने में देरी क्यों, जिसकी जायदाद हैवेन, हैवेन में सबकुछ संपत्ति, हेल्थ एवरीथिंग सब प्राप्त, तो हैवेन के मालिक बन जाए, हैवेन के भी मालिक, हैवेन में भी ऊँचा पद तो अगर ऐसी प्राप्ति मिले तो उसे लेने के लिए क्यों अपने को पीछे रखना चाहिए ? झट से दाव तो लगा देना चाहिए हाँ फिर पीछे है बच्चे बनकर के जितना पुरुषार्थ करेंगे, फिर उतना ही स्टेटस को पाएंगे लेकिन पहले बच्चे तो बन जाए जायदाद के ऊपर हक तो लगा ले ना । तो जहाँ अपने लिए स्वर्ग का अधिकार मिल जाए फिर तो उसका बच्चा हो जाना चाहिए न । बच्चे

का मतलब ही है जो बाप का फरमान है, आज्ञा है उसी पर चलना बाकी तो और कुछ बात नहीं है ना । वह स्थापन करता है पवित्र दुनिया, इंप्योरिटी की दुनिया नहीं, वो पवित्र, प्योरिटी की मालिक भी तो प्योरिटी की दुनिया को बनाएगा ना इंप्योरिटी का थोड़े ही । नहीं, इंप्योरिटी का विनाश, प्योरिटी की स्थापना । अधर्म नाश, धर्म स्थापना तो इसका मतलब यही है ना कि इंप्योरिटी का नाश और प्योरिटी की स्थापना तो जो चीज स्थापन करता है उसी का ही तो मालिक बनाएगा ना । तो प्योरिटी की वर्ल्ड है ना, प्योरिटी कोई ऐसी ही चीज थोड़े ही है, प्योरिटी की वर्ल्ड है जैसे इंप्योरिटी की वर्ल्ड है तो वह भी बनाता है प्योरिटी की वर्ल्ड । तो उसी वर्ल्ड का मालिक जिस प्योरिटी वर्ल्ड को ही हैवेन कहा जाता है । कई बिचारे समझते नहीं है कि हैवेन क्या चीज है । हैवेन माना ही प्योरिटी वर्ल्ड । यही वर्ल्ड प्योरिटी वाला और प्योरिटी से फिर पीस एंड प्रोस्पेरिटी है ही । जहाँ प्योरिटी है, वह पीस एंड प्रोस्पेरिटी जरूर है क्योंकि कर्म श्रेष्ठ होते हैं ना प्योरिटी से तो कर्म श्रेष्ठ की प्रारब्ध जरूर है । प्योरिटी नहीं है तो तभी यह सब नो पीस नो प्रोस्पेरिटी यह सब है । आज हमारा भारत हमारा देश जो देखो कितना ऊंचा था, जिसको कहते हैं सोने की चिड़िया थी । भारत को गोल्डन स्पैरो कहते थे ना आज देखो कंगाल, मोहताज भीख मांगते हैं दूसरों से, अन्न के लिए, पैसों के लिए मदद, सब मदद नहीं तो इसके पास कितना अथाह सब था । तो अब यह क्यों हुआ है क्योंकि यहाँ से प्योरिटी चली जाने के कारण

प्रकृति भी पीछे पाओं करके चली गई है इसीलिए यह सब हाल है । तो अभी तो बाप समझाते हैं ना बच्चे वही चीज फिर मैं बना रहा हूँ जिसमें तुम सदा सुख को प्राप्त करो । इसी को ही गांधीजी भी कहता था रामराज्य, इसी को ही सब कहते हैं नई दुनिया, नया भारत । भले ही दिल्ली बनाते हैं न्यू दिल्ली, अभी न्यू दिल्ली थोड़ी ही है, ओल्ड वर्ल्ड में न्यू दिल्ली कहाँ से आई । न्यू तो न्यू वर्ल्ड में होगी न । यह तो है ही ओल्ड वर्ल्ड, इसमें जो भी नया बनाते हो वह भी पुराना क्योंकि जो बनता है वह अभी डिस्ट्रक्शन होना है । यह सब इतने जो बनाए हैं महल मारियां देखो अशोका होटल आदि आदि ये कितनी इमारतें बनाई है अच्छी-अच्छी, यह अभी-अभी बनी है यह है हिरण के पानी मिसल । हिरण के पानी समझते हो मृगतृष्णा । इसको अंग्रेजी में भी कोई शब्द कहते हैं मृगतृष्णा को, तो मृगतृष्णा वह मिसाल बतलाते हैं ना जैसे मृग होता है ना हिरण, देखा है हाँ क्या कहते हैं? मिरेज, उनको कहा जाता है मृगतृष्णा, अंग्रेजी में कहते हैं मिरेज यानी उसका मतलब है कि वह हिरण जो होता है ना, वह रेत पर घूमते हैं तो वह दूर से देखते हैं तो वह रेत जो सूर्य के उसमें चमकती है उसको जैसे पानी दिखाई पड़ता है परंतु आगे जाता है तो पानी नहीं है लेकिन वह रेत है तो इसको कहा जाता है मृगतृष्णा वह दृष्टांत है बड़ा मशहूर है । तो यह भी मृगतृष्णा यानी यह समझते हैं कि हमने वह गोल्डन स्पैरो वाली भारत का स्वराज्य लिया है परंतु दैट इज नॉट गोल्डन स्पैरो वह स्वराज स्वराज कह करके वह समझते हैं अभी

हमको वह स्वराज मिला है लेकिन वह स्वराज्य तो नहीं है ना । स्वराज्य तभी जब पहले सेल्फ रूल, आत्मा का पहले सेल्फ रूल अर्थात अपने इस कर्म की श्रेष्ठता में होना चाहिए । पहले यहाँ कहाँ है सेल्फ रूल? इधर ही सेल्फ रूल चलाने की पावर नहीं है तो फिर बाकी रूल चलाने की पावर कैसे होगी, वह तो लड़ेंगे झगड़ेगे जो अभी हो रहा है । तो बाप कहते हैं बच्चे पहले तो यही पावर प्राप्त करो । आत्मा को सेल्फ रूल चलाने की, अपने कर्म के ऊपर सेल्फ रूल चलाने की ताकत होनी चाहिए जिसको कहा जाता है स्वराज, तो स्वराज पहले इधर । इधर तो पहले मरो तो मरो, रोगी बनो तो रोगी बनो सेल्फ रूल कहाँ है? तो पहले यहाँ पावर आनी चाहिए, उस पावर के आधार से फिर वह पावर आएगी । यह है रिलीजोपॉलीटिकल, देखो दोनों है ना रिलीजोपॉलीटिकल, तो अभी हम यह जो प्राप्त कर रहे हैं दोनों पावर्स रिलीजो भी पॉलिटिकल भी जिससे हम अपना सेल्फ रूल पा करके फिर उससे हम रूल करेंगे, कहाँ? स्वर्ग का, स्वर्ग का अधिकार तो रिलीजोपॉलीटिकल दोनों पावर आती है । अभी तो ना रिलीजो पावर है ना पॉलीटिकल पावर है । फर्स्ट रिलीजो चाहिए ना । रिलीजो पावर है तो पॉलिटिकल । अभी देखो पॉलिटिकल अलग है रिलीजन अलग है इसीलिए सब पावर्स अलग-अलग परंतु आज रिलीजन की रिलीजन पावर नहीं रही है पॉलिटिकल्स की पॉलीटिकल पावर नहीं रही है । दोनों की पावर चली गई है क्योंकि वह जो हमारी सुप्रीम सौल है ना उससे कनेक्शन नहीं है, संबंध नहीं है इसीलिए

पावर कहाँ से मिले, शक्ति कहाँ से मिले, बल कहाँ से मिले, इस तरह से यह काम चले इसलिए आज संसार की हालत लड़ाई-झगड़े, दुख-अशांति कोई नहीं किसी की सुनता, कोई नहीं किसी की मानता यह सब बातें बनी है इसीलिए बाप कहते हैं यह दुनिया कहाँ तक चलेगी । ऐसी दुनिया कहाँ तक चलेगी, अभी ऐसी दुनिया का करता हूँ डिस्ट्रक्शन इसीलिए कहते हैं अभी बच्चे तुम अपनी प्योरिटी को अपनाओ तो फिर इसी कर्म की श्रेष्ठता की प्रारब्ध तुम नहीं दुनिया में पाएंगे फिर डबल पावर, यह जो देवताएं हैं देखो डबल पावर है ना । रिलीजो पॉलीटिकल दोनों पावर्स की निशानी है । वह किंगडम का ताज भी है और प्योरिटी का भी दिखलाते हैं ना लाइट का चक्र तो यह है प्योरिटी की पावर, तो इनके पास डबल पावर थी इसलिए इनको कहते हैं डबल क्राउन किंगडम यानी दोनों पावर्स प्योरिटी की भी और किंगडम की भी दोनों पावर्स है ना तो देखो किंगडम भी है और प्योरिटी भी है क्योंकि प्योरिटी का पावर था । परंतु फर्स्ट प्योरिटी देन प्रोस्पेरिटी और ये सब [पावर्स । और लॉ भी है कि राजा रानी और प्रजा । अभी तो है प्रजा का प्रजा पर राज्य, तो प्रजा का प्रजा पर राज्य क्या करेगा । प्रजा प्रजा पर राज्य कर सकती है ? लॉ है असुल जैसे घर में भी होता है एक बाप एक माँ फिर बच्चे तो मां-बाप और बच्चे । आगे भी ऐसा होता था आजकल राजाओं का नाम खराब कर दिया है क्योंकि वो राजाओं का तो उठा लिया है ना तो वह राजाओं का नाम सुनते हैं ना कि हाँ भाई सतयुग के क्या

बनेंगे, भाई महाराजा बनेंगे या महारानी तो वो समझते हैं राजा क्या, राजाओं तो तो उठा दिया कांग्रेश गवर्मेंट ने इसीलिए राजाओं का नाम खराब कर दिया है परंतु वह राजाई है नहीं । ये राजाई है वो राजाई जिसमें इन विकारी राजाओं ने जैसे राज चलाया वैसे नहीं, वो हैं की जैसे घर में माँ बाप होते हैं न, बच्चों की संभाल करते हैं वैसे राजे महाराजें प्रजा की संभाल रखते थे तो सबमें माँ बाप की पलना बच्चों के लिए श्रेष्ठ गिनी जाती है न । जो पालना मां-बाप देते हैं वैसे कोई और पाल सकता है वैसे ही प्रजा के लिए राजा रानी भी जरूरी है तो प्रजा की पालना तभी हो सकती है जब राजा रानी परंतु कौन से राजा रानी? वह निर्विकारी वो पालते थे मां-बाप के सदृश्य। वह प्रजा प्रजा नहीं, बाकी अक्षर तो प्रजा कहने में आता है लेकिन वो प्रजा राजा, आज के प्रजा राजा की तरह नहीं थे। वह देखा है ना तो बेचारे ह्रास में आ जाते हैं यह तो हमको चाहिए ही नहीं। वह तो इन विकारी राजाओं को उठा लिया है ना इसीलिए यह जो प्रजा का प्रजा पर राज्य है यह सिस्टम पसंद करते हैं इसीलिए कि सबको अधिकार रहे, हर एक को परंतु इनमें फिर इनका आपस में धनी धोरी तो कोई हुआ ही नहीं । यह तो आपस में सब का धनी इसीलिए देखो कोई किसी का है? आज मिनिस्टर है कल उतारो, मारो लात । आज यहां कल वहां, देखो ना कोई किसी का ना किसी का, देखो लगा क्या पड़ा है। आज कोई छोटा भी हो ना दो पैसे वाला वह भी किसी को लात मारे न बड़े को तो मार सकता है। तो आज देखो हाल क्या हो गया है इसीलिए

बाप कहते हैं यह प्रजा पर प्रजा का राज्य, यह कोई राज्य थोड़े ही है। इसी राज्य को कहा है मृगतृष्णा मिसल दिखता तो है कि हां इससे हमको बहुत स्वराज्य मिला है लेकिन यह स्वराज थोड़े ही है । स्वराज तो वह था जिसमें पावर थी और जिससे तुमने सुख भोगा। तो यह तो अभी अभी हुआ है अभी अभी खत्म होगा। इसको देखो कितना सोलह, सत्रह, अठारह बरस हुआ मेरे ख्याल में अभी तो अभी बस बाकी थोड़ा समय है। इसमें ये कांग्रेस राज्य का अभी फिर एंड ही आना है । यह थोड़े समय का स है इसीलिए बाप कहते हैं इसको कहा जाता है मृगतृष्णा मिसल जैसे वहां पानी है नहीं परंतु वह समझते हैं पानी है तो यह सभी मिसाल है । इसी पर एक द्रोपदी का भी मिसाल है ना, वह द्रौपदी के महल में दुर्योधन गया था एक अखानी है शास्त्रों में की द्रोपदी ने दुर्योधन को, हां दुर्योधन था शायद तो उसको बुलाया था , मेहमानी दी थी। तो वह जब आया ना उनके महल में तो उनके महल में एक टेंट की तरह से कुछ बना हुआ था परंतु बना था एक पत्थर सा था जिसको कहा जाता है सप्तक मणी, वह चमकती है दूर से तो जैसे दूर से पानी दिखाई पड़ता था । तो वह समझा यह पानी है, नहाने का कोई तालाब है तो कपड़े वपड़े उतार कर के नहाने की तैयारी की उसमें। तो वह जो द्रौपदी खड़ी थी ना सखियों के साथ उनको हंसी आ गई, उसने कहा देखो तो सही, बिचारा कपड़े वपडे उतार के नहाने को लगे हैं परंतु देखता नहीं है कि यह पानी नहीं है और कूदने को तैयार हुआ है। तो उसको हंसी आई

और उसको जरा लज्जा जाए देखा ऊपर क्या है । अरे देखा ये तो पानी नहीं ये तो पत्थर है सप्तक मणि, चमकती है ना वैसा होता है तो दूर से जैसा चमकता है पानी जैसा लगता है तो उसको लज्जा आ गई। तो यह दृष्टांत है उसमें यह समझते हैं कि हां यह हमको माल मिल गया है, तो सारा अपना समझते हैं ये ही स्वराज है पानी समझ के कपड़े कपड़े उतार के उसमें लग गए हैं परंतु यह चीज वह तो चीज नहीं है ना, यह सब दृष्टांत हैं। सिद्धांत इन का जो है प्रैक्टिकली वह यह अभी की जो सब चल रही है ना तो यह तो समझ रहे हैं ही हमको जो स्वराज और वह जो चीज है वह यही है परंतु यह चीज नहीं है । वह तो जो था स्वराज वह स्वराज तो प्योरिटी के पावर वाला था। इसमें प्योरिटी की पावर है नहीं इसीलिए बेचारे मोरालिटी और भ्रष्टाचार फलाना यह सब चीजें उठा रहे हैं ना। अभी उसी में कहाँ से यह स्वराज का सुख पा सकेंगे, ये नहीं पा सकेंगे । स्वराज तभी है जब प्योरिटी है । अभी वह प्योरिटी वाला स्वराज परमात्मा के द्वारा बन रहा है । यह है राम के द्वारा बना हुआ राज्य, राम माना परमात्मा जिसने बैठकर के यह राज्य बनाया जिसको सूर्यवंशी चंद्रवंशी राजाओं ने फिर प्राप्त रखा है तो वो ही बैठ करके देखो बना रहे हैं । ये राजधानी बना रहे हैं ना, यह परमात्मा के द्वारा अभी राजधानी इस्टैबलिश्ड हो रही है परंतु गुप्त वेश में। अभी जो कर्म करते हैं इसके द्वारा फिर यह जेनरेशंस में चलेंगे वह राजधानी । तो यह अभी परमात्मा यह हेवेनली किंगडम, वह अंग्रेजी में भी कहते हैं

ना हेवेनली किंगडम, तो यह देखो अभी हेवेनली किंगडम परमात्मा बना रहा है तो यह अभी हैवेन के लिए किंगडम तैयार हो रही है अर्थात यह एक जन्म की बात है, बस इसी जन्म के बाद उसी किंगडम में । तो बनना तो अभी है ना। जब कर्म करेंगे तभी तो उसमें प्रॉब्लम पाएंगे ना वह किंगडम प्रालब्ध की है ना। वह कोई लड़ाई से प्राप्त नहीं होने की है या कोई किसी और तरीके से नहीं है। वह है अपने कर्म श्रेष्ठ से प्रालब्ध बनाने की किंगडम। तो वह प्रालब्ध की ताकत चले हुए हैं तो यह देखो अभी बन रही है। यह अभी परमात्मा के द्वारा उस हेवेनली किंगडम स्थापन हो रही है अर्थात वह इस्टैबलिश्ड हो रहा है । तो यह बातें सभी समझने की है कि यह काम कौन सा है और कौन कर रहा है और यह अभी टाइम कौनसा है । यह वही टाइम है जिसमें एक ही हवेनली किंगडम जब थी ना तब दूसरी किंगडम नहीं थी तो ऐसी ब्रह्मचर्य का स्कूल भी खोला था । आज भी बहुत है जो गांधी जी के बहुत पक्के फॉलोअर्स हैं वह ब्रह्मचारी रहते हैं। उसने भी उठाया था, कुछ कुछ बातें उठाई थी परंतु फिर भी मनुष्य का काम हो गया ना । यह तो परमात्मा की अथॉरिटी है जो इस तरह से काम करा रहा है, नहीं तो और किसी से यह होना नहीं है। देखो साधु सन्यासी हैं, भले वह खुद घर बार छोड़कर जाते हैं समझते हैं ना ब्रह्मचर्य का पालन करना जरूरी है तभी तो घर छोड़ कर चले जाते हैं, स्त्री को छोड़ कर चले जाते हैं समझते हैं स्त्री नागिन है। वह ऐसे नहीं कहते हैं एक नारी सो

ब्रह्मचारी, अगर एक नारी कहते हैं शास्त्रों में परंतु अगर एक नारी सो ब्रह्मचारी तो नारी के साथ रहे ना, अपनी नारी क्यों छोड़ कर जाते हैं। अगर एक नारी सो ब्रह्मचारी, अगर ऐसा ही होता तो अपनी नारी क्यों छोड़ कर जाते हैं । वह तो कहते हैं ना अपनी नारी से तो कुछ भी विकार में जाए वह विकार नहीं है, हां पर स्त्री गमन करना यह विकार है परंतु वह सन्यासी तो अपनी स्त्री छोड़कर जाते हैं फिर क्यों छोड़ कर जाते हैं। वह तो हमारे सामने जीता मिसाल है ना। जीते जागते बैठे हैं ना सन्यासी लोग। पूछो उनसे कि आप लोग कहते हो शास्त्रों के आधार पर कि भाई एक नारी सो ब्रह्मचारी फिर आप अपनी एक नारी क्यों छोड़ कर चले जाते हो? बैठो नारी से और करते एक नारी रख कर के फिर ब्रह्मचारी हो करके रहो ना, फिर भागते काहे के लिए हो ? फिर क्यों यह सन्यास धारण करते हो और घर छोड़ते हो तो कहनी एक और करनी दूसरी यह कहाँ की रीत है? जहाँ जो अगर है हिम्मत तो एक नारी रख के दिखाओ परंतु नहीं ब्रम्हचर्य का जरूर है परंतु उनका कमजोरी का सन्यास है । वो नहीं हिम्मत करते हैं कि उनके सामने रह करके जीता जा सकता है और यहाँ देखो, हम यह दावा रखते हैं कि हम सामने रह करके जीत सकते हैं, क्योंकि हमको बल किसका है , सर्व समर्थ परमात्मा के साथ योग है ना इसीलिए उसकी ताकत यह काम कर सकती है। उनको बिचारों को कोई यह योग का और उसके बल का पता ही नहीं है, किससे बल मिले? तो वह नहीं है ना। यहाँ तो प्रैक्टिकल बाप कहते हैं मेरे बच्चे

हो , तो हम उनके बच्चे, वह भी कहेगा मैं भी उनका बच्चा, स्त्री भी कहेगी मैं भी उनका बच्चा, तो फिर बच्चा बच्चा आपस में भाई भाई हो गए ना, आत्मा के हिसाब से । फिर भाई भाई में विकार की क्रिमिनल आई कहाँ से आई अथवा भाई-बहन भी कहो, ब्रह्मा की औलाद के हिसाब से तो भी भाई-बहन हो गए। फिर भाई बहन के हिसाब से भी फिर क्रिमिनल आई कैसे लगाएंगे। फिर वह विकारी दृष्टि जा नहीं सकती है ना भाई बहन में । तो देखो बाप प्रैक्टिकल आ करके वह संबंध जुटाता है ना। इसी हेल्प से फिर निर्विकारी रहने का बल मिलता है तो यह सभी चीजें हैं बाकी ऐसे ही कोई का रहना तो बड़ा मुश्किल है ना इसीलिए परमात्मा कहते हैं इसमें मेरा बल चाहिए । मैं ही आकर के अपनी ताकत से, अपने बल से यह धारणा कराता हूं । तो यह सभी चीजों को समझना है और समझ करके अभी बाप से अपना अधिकार लेना है क्योंकि पवित्र दुनिया का अधिकार है ना तो उसके लिए पवित्र रहना बिल्कुल जरूरी है। वैसे भी देखो बच्चे पढ़ते हैं तो ब्रह्मचारी बच्चे पढ़ते हैं ना, पढ़ाई के समय तो यह भी पढ़ाई है ना। तो बाप कहते हैं अभी यह मैं पढ़ा रहा हूं ना , यह जितना समय पढ़ाई का है पवित्र रहो। कम से कम घर में शुभ कार्य भी होता है, ऐसे कई कार्य होते हैं तो उस टाइम में ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। कभी कोई घर में पाठ रखाते हैं या कुछ करते हैं ऐसा शुभ कार्य होता है तो वह ब्रम्हचर्य का पालन रखते हैं। तो रखते हैं उसका माना अच्छा है ना, जैसे मंदिर में जाते हैं भाई नहा धोकर

स्वच्छ होकर जाना है तो घर में भी कुछ ऐसा होता है तो वह उसी समय स्वच्छता की यह पालना करते हैं तो मानो अस्वच्छता है ना यह , तब तो उसकी पालना करते हैं ना कि भाई ब्रम्हचर्य में रहना है और साथ-साथ अभी भी बाप कहता है कि अभी तो बच्चे मैं आया हुआ हूं। अभी तो मेरा पाठ चल रहा है यह नॉलेज का, तो मैं उपस्थित हूं। मेरी प्रेजेंट में अभी थोड़े समय जितना मैं हूं उतना तक तो अपनी पवित्रता को पालन करो ना और वह है ही इतना टाइम, यह काम करा कर ही उसको जाना है इसीलिए कहते हैं अभी भगवान आया है तो घर में कोई ऐसा गीता पाठ लगाते हो या कोई ऐसा शुभ कार्य शास्त्र का भी रखते हो तो भी शुद्ध रहते हो। अभी तो मैं स्वयं चैतन्य आया हुआ हूं ना तो मेरे आने पर तुम विकारों में गोते लगाते रहेंगे ? नहीं, इसीलिए कहते हैं मैं आया हूं कम से कम इतना तो अपना रखो और अभी आया है, यह तो रहेगा ही अंत तक। वह तो जानते हैं कि हां अभी डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन का काम तो मेरे होते ही होने का है इसीलिए अभी पवित्र रहा तो उसकी जेनरेशंस की प्रलब्ध बन ही जाएगी इसीलिए बाप का फरमान है कि बच्चे अब पवित्र रहो । तो सब बातें हैं एक तो मौत हैं, मौत के समय थोड़ी विकारों का ख्याल किया जाता है, मौत के समय भगवान को । दूसरा तो अभी भगवान आया है तो भगवान आया है तो स्वच्छ रखना चाहिए ना । उसके आगे थोड़े ही ऐसे रहेंगे वह कहते हैं अभी स्वच्छ रहो। और यह हिसाब भी है कि पवित्र दुनिया के लिए पवित्र रहना ही

है । तो सभी बातों में, यह योग लगाने के लिए भी इसकी आवश्यकता है । तो अभी सभी बातें दिखलाती हैं कि हमको पवित्र रहना चाहिए, यह अंतिम जीवन है। अभी मानो यह अंतिम श्वास है, यह जीवन है लास्ट एकदम तो इसमें हमको अपने बाप को याद रखना है और पवित्र भी रहना है । तो यह जरूरी चीजें हैं जिससे हम अपने जीवन को आगे कर सकते हैं । और आज तो हालत में भी ऐसी ही हैं , गवर्नमेंट भी कहती है बर्थ कंट्रोल, अभी तो उनका हिसाब भी तंग हो गया है इसीलिए अभी बाप भी कहते हैं कि विकार कंट्रोल इसीलिए इन सभी बातों को बाप बैठकर के समझाते हैं तो इन सब बातों को समझ करके अभी अपने बेहद बाप से पूरा पूरा वर्सा पाना है। तो वर्सा पाने वाले को अपना यह ध्यान रखना है तो पांचों विकारों से पवित्र उसने भी काम, पहला जो शत्रु है । पहला पहला सबसे तो देह अभिमान, जिसको बॉडी कॉन्शियस कहते हैं। अपने को पहले देह ना समझ के आत्मा समझना। तो पहला तो वह है , उसके साथ फिर फर्स्ट यह विकार है । इसके साथ पीछे क्रोध, लोभ यह सभी तो हां यह चीज को पकड़ने से पहली पहली से फिर बाकी जो है ना वो ठंडे पड़ जाएंगे क्योंकि हमारा हेड पकड़ गया, हेड को जीत लिया तो पीछे लश्कर कहेंगे फिर हमारी क्या दाल गलेगी तो वह ऑटोमेटिक ठंडे पड़ जाएंगे । तो यह है पुरुषार्थ जो अपने में लाना है । खान-पान की भी परहेज रखनी है क्योंकि इसमें खानपान भी पवित्र शुद्ध जिसको कहा जाए वह खानपान चाहिए इसीलिए कोशिश करते हैं कि बाप को याद

करके अपने हाथ से बनाया हुआ खाना तो उसमें हेल्प रहती है। कहा हुआ है ना जैसा आना वैसा मन, खानपान का भी बुद्धि के ऊपर असर आता है इसीलिए यह सभी परहेज है जिसको भी प्रैक्टिकल में लाना है और उसके आधार से जैसे डॉक्टर लोग होते हैं ना रोगी को कहेंगे कि भाई तुम्हारे लिए यह दवाई भी है उसके साथ यह परहेज भी रखना है खट्टा नहीं खाना, मीठा नहीं खाना तुमको शुगर की शिकायत है तुमको यह संभाल रखने की है, देगा ना परहेज भी देगा तो यह भी रूहानी परहेज है। तो यह इलाज भी करना है, योग भी रखना है और उसके साथ यह परहेज भी सब है , तो परहेज से क्योंकि अभी धारणा बना रहे हैं ना तो यह मुख्य मुख्य जो है धारणाएं परहेज की वह रखने की है जिससे क्या है हमको हेल्प मिलेगी, इसकी भी हेल्प मिलती है इन सब बातों से, नहीं तो फिर अन्न दोष उससे भी सही बुद्धि जो है ना वह उल्टी हो जाती है यह शास्त्रों में भी बहुत मिसाल है कि एक ने किसी के हाथ का खाया, फिर उसकी बुद्धि ऐसी उल्टी हुई तो कहीं जाकर चोरी की फिर उसने सोचा कि भाई क्यों हमने आज चोरी की हमारे मन में क्यों आया चोरी का ख्याल तो उसने ख्याल किया कि हां मैंने आज ये खाया ना इनका तो उसे हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई तो यह सब शास्त्रों में भी है कि उसका खाया तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई ऐसी ऐसी बातें तो यह सभी है । अन्न दोष जो कहा हुआ है संग दोष, संग का भी है जैसा संग वैसा रंग इसीलिए संग की भी संभाल रखनी पड़ती है इसीलिए कहते हैं जितना हो सके

इस संग को अपने साथ रखेंगे तो उसके लिए युक्तियां दी जाती हैं, सर्विस करो, यह करो, वह करो तो बुद्धि इसमें ही होगी ना वह संग बना रहेगा, इससे क्या होगा बचे रहेंगे, उससे कोई ऐसा आयुक्त, अयोग्य कार्य नहीं होगा जिसको बुरा कहा जाए। तो बुराई से छूटे रहेंगे तो यह सभी धारणाएं हैं जिन बातों के ऊपर भी अटेंशन देना है । अच्छा आज थोड़ा भोग का है इसीलिए वाणी थोड़ी छोटी सुनाते हैं फिर इसको भी टाइम देना है। अच्छा आज यह नई बैठी है ? फिर क्या बाबा को याद करती हो? किसी ने मोह तो नहीं है ? परमधाम में ? अच्छा कोई बच्चे बच्चे में ? नहीं? अच्छा यह तो सर्टिफिकेट दोनों का लेना पड़ेगा इनसे भी पूछना पड़ेगा कि यह ठीक कहती है या रॉन्ग कहती है, अच्छा फिर आप दोनों की कचहरी करेंगे। अच्छा बहुत अच्छा अगर एक में मोह है ना? किस में मोह है ? शिव बाबा में? अच्छा। अच्छा देखेंगे । देखना, शिव बाबा सुन रहा है । नहीं तो बाबा कहेगा नहीं देखो झूठ बोलती है, इसका किसी और में मोह है, ऐसा तो नहीं है ना? एक में है ना ?अच्छा! तब ठीक है। अच्छा! चलो अभी जाओ, जिसमें मोह है उसके पास, याद करो उसको, चलो हां बाबा बहलाएंगे तुमको। फिर हां गौ सून कम सून । खेल पल में बैठ नहीं जाना है, बच्चे जो पढ़ने वाले होते हैं उसको कहा जाता है बहुत खेलकूद में अटेंशन नहीं, पढ़ाई में भी अटेंशन देना है। ऐसे ही फिर बहुत जाते हैं ना वहां, मजे देखते हैं तो फिर बैठ जाते हैं इसीलिए यहाँ कहते हैं गो सून कम सून। याद प्यार देना सबका, कहना एक

भूपालम आता है और देखो वो अच्छी तरह से बाबा पूछना कि भूपालम चलेगा स्वर्ग में कि हां यही बैठ जाएगा । वह तो बाबा कहेंगे जो करेगा सो पाएगा । बाबा कोई ऐसा नहीं है जन्मपत्री ऐसे ही देखकर बताएगा, कभी नहीं बताएगा । भले जानता है पर किसी को बताएगा थोड़ी, हार्टफेल्ट थोड़ी करेगा किसी का । अगर किसी को कहेगा कि भाई यह नहीं उठेगा , वह तो बिचारा हार्ट फेल हो जाएगा कि हां भाई भगवान कहता है कि नहीं उठेगा फिर क्या उठेगा । ऐसे थोड़ी कहेगा वह तो कहेगा कैसा भी है ना हां उठेगा, बहुत अच्छा करेगा, बाप को तो पुल करना है ना । वो ऐसी बातें थोड़ी ही सुनाएगा, वह कहेगा नहीं उठना चाहिए पुरुषार्थ रखना है और जो करेगा तो पाएगा। बाकी आप थोड़ा समझो अच्छी तरह से, आप थोड़ा टाइम लेकर के आइए कोई घंटा। आप इंग्लिश में, क्योंकी हिंदी भाषा शायद आपको इतनी ना भी समझ में आए तो आपको इंग्लिश में देंगे । अच्छी तरह से आपको समझाएंगे और इसी पर सारा तो यह नॉलेज की सारी आइडिया आपके पास हो जाएगी, उससे फिर औरों को भी आप समझा सकेंगे और अपने जीवन में भी इसका पूरा लाभ ले सकेंगे तो यह सभी बातें आपके ख्याल में होनी चाहिए आत्मा क्या परमात्मा क्या किससे योग रखना है, यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, ये वर्ल्ड हिस्ट्री का कैसा है यह सभी बातों को समझना चाहिए। अभी कौन सा पीरियड है टाइम प्रेजेंट, ये कैसा अभी चेंज होने का टाइम है यह सभी बातों का नॉलेज होना चाहिए तो फिर आप आएंगे अच्छी

तरह से थोड़ा अकेले, अभी तो क्लासेस के टाइम पर आते हो परंतु कोई ऐसा टाइम भी रखो एक घंटा या तो क्लास के थोड़ा पहले आओ आधा घंटा सवेल में तो पहले आपको थोड़ा समझाएं आधा घंटा पौना घंटा, पीछे फिर क्लास में बैठेंगे। सवेल आता है तो ऐसे फिर कोई समझाए। इनको इंग्लिश वाले दो जिसमें इनको सहज होता हो समझने में क्योंकि बुद्धि को खींचना पड़ता है ना हिंदी भाषा नहीं इतनी जानते होंगे तो बेचारे कोई अक्षर समझेंगे कोई नहीं समझेंगे तो इसको सीधी तरह से या कन्नड़ी या जो भी जानते हो उसको देना है। अच्छा चलो, याद प्यार देना मम्मा की भी देना। अच्छा चलो।(रिकॉर्ड बजा) घर जाएंगे, अभी प्रेम के सागर, उसको लवफुल भी कहा जाता है ना गॉड को। तो अभी कहते हैं जरूर उसने कभी आ करके हमको लव किया है ना हम बच्चों को कभी आ करके उसने लव किया है। ऐसे नहीं हम ऐसे ही लवफुल कहते हैं, हम दुखी बैठे हैं और वह लवफुल है। नहीं, उसने जरूर कोई हमको प्यार किया है तो प्यार का कोई सबूत होगा ना। बाकी यह प्यार थोड़े ही है कहे कि हां गॉड लवफुल है गॉड ब्लिसफुल है गॉड ऐसा है। गॉड से क्या लव मिल रहा है दुख अशांति में दुखी हो रहे हैं यह लव है? नहीं, लव कैसा उसने आ करके हमको जो पवित्रता की धारणा करा करके हमको सर्व सुखों का दिया है तो लव सबसे श्रेष्ठ हो गया ना। उसके जैसा लव हमको और कोई थोड़े ही कर सकता है इसीलिए उसको लवफुल कहते हैं कि लव का भी सागर है ओसियन ऑफ लव, ओसियन ऑफ नॉलेज,

उसको ओसियन, सबका ओसियन कहते हैं ना क्योंकि वह बेहद, हद नहीं वह है बेहद, सबसे ऊंचा। तो देखो अभी वह बाप आ करके हम बच्चों को इतना सुखी बनाने का यह साधन बतला रहा है, कंप्लीट सुख का साधन। तो ऐसा साधन और कोई बतला नहीं सकते हैं इसीलिए कहते हैं यह तरीका , यह जो है इससे तुमको कंप्लीट सब कुछ प्राप्त रहेगा तो ऐसे बाप से प्रेम रखना चाहिए ना । तो अभी बाप कहते हैं मेरे से प्रेम रखो, मेरे से संबंध रखो तो फिर मेरे लव से, तभी तो मेरे से पाएंगे ना । ऐसे थोड़े ही खाली मैं लव करूंगा तुम ना करेंगे यह तो ऐसा भी नहीं बनेगा। तो यह तो फिर जब दोनों तरफ से तुम भी मेरे संबंध में आएंगे तब तो, ऐसे तो मैं सबको लव करता ही हूं ऐसे तो मेरे बच्चे हैं सब ऐसे तो जनरली तो हैं ही लेकिन फिर भी तुम खास मेरे आगे सपूत बनेंगे तब तो होगा ना । लौकिक में भी सपूत बच्चे के ऊपर बाप का प्रेम ज्यादा रहता है कि भाई यह सपूत है लौकिक में भी होता है ना। जैसे कहा है ना गीता में भी कहा है इसमें ऐसे नहीं परमात्मा की दो आंखें हैं नहीं कहा है ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय हैं यह खुद भगवान के वर्सस हैं। गीता में पढ़ा होगा ना कहा है ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है तो उसका माना ज्ञानी आत्मा मुझे प्रिय है अंडरस्टूड अज्ञानी आत्मा नॉट प्रिय। अंडरस्टूड हुआ ना, कहा भले नहीं है परंतु कहना कि ज्ञानी आत्मा मुझे प्रिय है तो उससे सिद्ध हो जाता है ना। तो जरूर है कि वह मुझे जो ना है ज्ञानी वह मुझे प्रिय नहीं है । तो भगवान को दो आंख थोड़ी ही है, द्वैत थोड़ी

हुआ। नहीं, द्वैत नहीं है यह तो लॉ है ना। जरूर है जो जितना अपना पुरुषार्थ रखते हैं, वो अपने प्रारब्ध को पाते हैं।(थोड़ा भोग का बताइए यह नए हैं) अभी जरा इसके ऊपर समझाते हैं क्योंकि नए-नए है ना उनको उठेगा कि यह क्या है तो यह समझने की चीज है। अभी देखो पहले हम अपना अनुभव सुनाते हैं अभी इसको कहा जाता है यह तो कॉमन नाम भी सुने होंगे ट्रांस, ध्यान । अभी यह दिव्य दृष्टि से इनको मानो बाबा , गॉड कहो परमात्मा कहो वह दिव्यदृष्टि दाता वही है । अभी यह तो उनका काम है ऐसे नहीं है कि हमने कुछ इसको भेजा या अगर भेजने का होता तो पहले तो हम जाते, हमारे में कुछ उसका, नहीं। यह तो बाबा है जिसको भी ले जाते हैं। वह गीता में भी है एक परोक्ष एक अपरोक्ष पढ़ा है न, एक देखे हुए एक बिना देखे हुए । अभी देखो यह देखती है, हम बिना देखे, हम कभी नहीं जाते हैं परंतु कहा है देखे हुए से भी बिना देखे जो है ना वह आगे जा सकते हैं क्योंकि हमको तो फिर भी देखी हुई चीज का ज्ञान चाहिए न। अभी हमारे सामने यह रखा है हमको पता नहीं यह क्या है तो नॉलेज चाहिए ना, फर्स्ट नॉलेज तभी हमको होगा कि नहीं भाई यह माइक्रोफोन है, इसमें आवाज करने की चीज है मानो हम केवल देखें और पता ना हो तो हम क्या कहेंगे, पता नहीं यह क्या चीज है , पता ही नहीं इससे क्या होता है तो फर्स्ट नॉलेज नॉलेज से वैल्यू होती है किसी चीज की। तो यह भी चीज ऐसी है कि हमको ज्ञान चाहिए और कहा भी हुआ है ज्ञान बिना गति नहीं है , ऐसे भी नहीं

कहा है ध्यान बिना, देखे बिना गति नहीं है नहीं, ज्ञान बिना । जो देखते हैं उसका नॉलेज चाहिए ना तो अभी यह नॉलेज के ऊपर सारा है। तो है चीज वह भी परंतु यह भी कोई बुरी तो चीज नहीं है। यह भी फिर देखना है ना तो अभी यह है । कोई-कोई जाती है , जैसे मीरा थी। आप लोगों ने मीरा का तो बड़ा सुना होगा ना वह मीरा जाती थी ट्रांस में, कृष्ण को देखती थी उसके साथ रास करती थी, उससे चॉपर खेलती थी चौपर समझते हो ना, वो चौपर का खेला होता है न वह खेलती थी दूसरे समझते थे इसके साथ तो कोई है नहीं क्योंकि दूसरों को तो दिखाई नहीं पड़ता था , कहते थे यह तो पागल है। यह पगली हो गई है । उनको पागल समझते थे लेकिन वह देखती थी दिव्य दृष्टि से । उनको कृष्ण से रास करना बोलना हंसना यह सब करती थी । वो दूसरे को तो दिखाई नहीं देता था तो समझते थे अकेली हंसती है , ये ऐसा करती है तो पगली हो गई है परंतु उनको तो अंदर अंदर से सब दिखाई पड़ता था तो इसको कहा जाता है दिव्य दृष्टि तो यह दिव्य दृष्टि मिलती है। जैसे हम रात को सपने देखते हैं ना, स्वप्न में नहीं देखते हैं कभी खेलते भी हैं कभी हंसते भी हैं बाहर हंसना निकल आता है, कभी-कभी नींद में कोई हंस पड़ता है तो समझते हैं कि ऐसा कभी रो भी पड़ते हैं ऐसा होता है क्योंकि स्वप्न देखते हैं ना कभी उसमें फिर रोना या हंसना आया तो ऐसा कभी हो जाता है। तो जैसा स्वपन है वैसा हो जाते हैं परंतु वो तमोगुण नींद में यह जागते तो इस जागते हुए सपना को कहा जाता

है ट्रांस। तो अभी ये ट्रांस में यानी इसको अभी बाबा दिखाएंगे की क्योंकि हमको अभी खिलाने वाला अभी वह है ना तो यह भी हम क्यों करते हैं कि बाबा की याद रहे। हैं सब यह याद की युक्तियां और कुछ नहीं है। ऐसे नहीं है कि यह जरूरी है करना या कुछ भी परंतु जैसे दूसरा कोर्स दिया जाता है ना समझाने के लिए वैसे यह भी कि बाबा के घर से खाते हो बाबा को याद करो उठते बैठते बाबा को याद करो तो यह सभी बाबा की याद की युक्तियां हैं इसीलिए कि हां बाबा को भूलना नहीं है, पिता को भूलना नहीं है क्योंकि अभी हमको वह खिलाते हैं ना प्रैक्टिकल क्योंकि अभी हम उनके हैं और उनके ही द्वारा अभी हम को जो मिलता है जैसे उनका। कोई मनुष्य के द्वारा नहीं, अभी उनका डायरेक्टर तो उनकी याद रखने की है ना तो जो खिलाता है उसको ऑफर करनी चाहिए ना। जैसे होता है ना कोई देता है तो कहते हैं ना फर्स्ट टेक यू, लॉ है ना जैसे जो खिलाता है उसको स्वीकार करा कर के फिर खाते हैं परंतु यह आज खाली गुरुवार के दिन नहीं है, यह तो हमेशा होना चाहिए जब भी आप भोजन पर बैठते हो ना तो उनको याद रखना चाहिए क्योंकि वह खाली टाइम है। खाते भी रहो बुद्धि से उसको याद करो टाइम मिलता है। तो इजी भी टाइम निकल सकता है और उससे फिर हमको भोजन में भी बल मिलेगा । फिर जो खाएंगे ना वह बल का भोजन खाएंगे, उससे हमको बल मिलेगा । उससे हमको प्योरीफिकेशन की ताकत मिलेगी तो यह है सब युक्तियां अपने को प्यूरीफाइड बनाने की तो जितना हम याद

करेंगे हमको पुरीफिकेशन का बल मिलेगा ताकत मिलेगी। तो यह सब युक्तियां है इसीलिए यह सब रखी जाती है। यह क्लास है ना तो स्टूडेंट को तो सब तरह की शिक्षा दी जाती है देखो कभी नेष्टा में भी बिठाते हैं दिखाते हैं ना कि आज निष्ठा का। क्यों है वास्तव में उनको बैठने की जरूरत नहीं है, नहीं ऐसा नहीं है कि बैठना ही है एक घंटा या दो घंटा । नहीं , यह तो चलते फिरते है न, परंतु जब तलक पक्के हो अभ्यास हो तो हां कच्चों के हिसाब से बिठाना होता है कि उनको अभ्यास पड़े, आदत पड़े ये समझें, इनको भी अनुभव होगा ना सुख का तो फिर चलते फिरते इनकी ऐसी बुद्धि रहेगी तो वह बुद्धि को जरा ठिकाने लगाने का अभ्यास कराया जाता है। तो यह भी सब अभ्यास के लिए बातें हैं बाकी ऐसे नहीं है कि यह कोई जरूरी है परंतु यह आदत कैसे पड़े तो आदत डालने के लिए स्कूल है ना तो जैसे स्कूल में सब सब्जेक्ट पढ़ाई जाती है तो यह भी एक सब्जेक्ट है। तो निष्ठा की भी सब्जेक्ट है , वाचा की भी सब्जेक्ट है प्रैक्टिस कराई जाती है भाषण की, प्रैक्टिस कराई जाती है बोलने की, जैसे यह सब है वैसे यह भी प्रैक्टिस कराई जाती है परंतु है सब इसमें ज्ञान । तो यह सब जो जाती है ना ट्रांस में तो यह सब देखती हैं इनको यहाँ का पता ही नहीं रहता है। उसमें भी स्टेज होती है हर एक की, अभी हमको इनका मालूम नहीं है क्योंकि आज ही यह बैठी है , फिर इससे पूछेंगे परंतु इसमें सब का स्टेजिस है और ऐसे भी है कोई टाइम कैसा कोई टाइम कैसा। इसको हम कहते हैं सैमी, सेमी समझते हो ना?

कभी फुल चली जाती है बिल्कुल पता नहीं पड़ता है कभी कुछ यहाँ का पता भी होता है, कुछ वहां का जैसे कभी कच्चा स्वप्न होता है कभी पक्का स्वप्न होता है कभी कोई भूल भी जाता है , कभी कोई याद पड़ता है ऐसे स्वपन में भी स्टेजिस होती हैं न तो इसमें भी कभी सेमी जाती है इसको हम सेमी कहते हैं थोड़ा, कभी फुल चली जाती है यह सब है। परंतु इन्हीं सभी बातों में भी अभी यह देखेंगे इसको जो भी बाबा दिखाएगा कोई सीन भी। दिखलाए, जो भी दिखलाए , वह तो अभी यह आएंगी फिर बताएंगी क्या देखा। यह बताएंगे ना प्रैक्टिकल तो इनका परंतु यह सब है, उनको दिखाएंगे भाई यह आया भोग, फिर कैसे वो देवता इमर्ज करेंगे, उसको दिखलाएंगे फिर उन्होंने भई भोग स्वीकार किया फिर ये देख करके फिर चली जाएंगी । कभी-कभी फिर वो रास रचाते हैं खेल करते हैं जैसे वह मीरा मस्त हो जाती थी, ध्यान में मगन हो जाती थी ना तो कभी-कभी यह लोग भी उधर मगन हो जाते हैं तभी हम इसको कहते हैं गो सून कम सून , ऐसे नहीं मगन हो जाओ और हम बैठे रहे हैं। तुम तो वहां देखती रहेगी हम तो यहाँ बैठे ही रहेंगे । तो ऐसे भले इनको उधर ये ख्याल नहीं रहेगा। यहाँ से गई तो यहाँ का ख्याल नहीं रहेगा परंतु यह कह देते हैं फिर बाबा तो हमारा है ना तो वो कह देंगे की हां भई विचारों का टाइम खोटी न हो तो फिर चली आती हैं तो यह सभी बातें है । अपना तो रिश्ता उससे ऐसा है ना जैसे घर का। जैसे बाबा होता है ना डैडी, हां जाओ डैडी के पास, चलो चक्कर लगा

कर आओ, जैसे फादर होता है ना, कोई लवली फादर्स होते हैं ना तो बाप बच्चों का बहुत हेल मेल होता है , अच्छा, गया , बाप से हंसी गुली करके फिर चला आया तो अपना तो रिश्ता जैसे उससे ऐसा ही है । बहुत जाती हैं, कुछ पूछना होता है, हमारा सब काम डायरेक्शन ऊपर से ही चलता है। अभी हम बेंगलुरु आए, अभी हम बैंगलोर से जाएंगे, कोई भी ऐसी बात होगी ना तो ऊपर से पूछेंगे। तो यहां से कोई जाएंगी ,जाओ ये पूछो , ऊपर से पूछ कर आओ, अभी कैसा है, हमारी कोई सर्विस है इधर, बेंगलुरु वाले कुछ है उठने वाले तो फिर हमको जैसी आज्ञा मिलेगी हम उसी पर चलेंगे फरमान पर । तो हम सब ऊपर की डायरेक्शंस पर चलते हैं। ऐसे नहीं अपनी मत पर, जो आया । नहीं, ऊपर पूछना है उससे डायरेक्शन लेना है । उसी के डायरेक्शन पर चलते हैं तो फिर वह गॉड आएगा, सुप्रीम सौल आकार में यहाँ ब्रह्मा के तन में इमर्ज होएंगा। फिर वह कुछ सुनाएंगे क्योंकि बोलेंगे तो ना मूवी में । वहां कोई आवाज नहीं होता है तो इनको मूवी में, यह कैच करेंगे। फिर किसकी बुद्धि कैसी होती है, कभी कैचिंग में भूल भी कर देती हैं, कभी मैसेज लाने में भूल कर देती है, फिर वेरीफाई कराना पड़ता है । बहुत ऐसे होते हैं , ऐसे नहीं इसके ही आधार पर चलते हैं, बड़ी खबरदारी क्योंकि उसके बीच में माया भी आ सकती हैं ना । अब मैसेज में मिक्स भी हो जाता है जैसे लड़ाई के समय में वह मैसेज ले जाने वाले होते हैं ना तो कभी-कभी दुश्मन लोग जो है ना, वह वायरलेस में वो कट करके अपना मैसेज डाल देते

हैं। ऐसे भी होते हैं दुश्मन अपना मैसेज दे देते हैं फिर रॉन्ग मैसेज हो जाता है । तो यहाँ भी हमारी माया दुश्मन है ना फिर कोई रॉन्ग मैसेज ऐड कर देगी बीच में, उसका बुद्धि वहां से कट करके कभी-कभी ऐसे हो जाते हैं। फिर हम वेरिफाई करते हैं। भेजते हैं दूसरी संदेशी फिर तीसरी संदेशी। फिर अपनी भी बुद्धि, होता है ना अपना भी तो होता है ना । अपरोक्ष योग के बल से भी हम उसी बातों को जान सकते हैं न। तो ये ऐसा नहीं है कि बस ऐसे ही चले बड़ी खबरदारी से इसमें बड़ी बुद्धि का भी काम रहता है । तो यह सभी चीजें हैं जिसको बहुत समझना होता है बाकी है कॉमन। यह तो भक्ति मार्ग में भी बहुत जाती हैं, आपको अनुभव भी हो भक्ति मार्ग में भी कभी राम का, कभी कृष्ण का कइयों को साक्षात्कार हो जाता है तो ऐसी कोई बड़ी बात नहीं है । यह नई बात नहीं है यह कॉमन है इसीलिए हम इनको इतना महत्व नहीं देते हैं। इससे ज्यादा महत्व ज्ञान को देते हैं क्योंकि नॉलेज से हमको जो कुछ अपना योग, योग दूसरी चीज है इसको योग नहीं कहेंगे । अभी यह बिचारी तो वहां खेलपाल में अभी स्वप्न देख रही है ना, हमारा योग तो अपनी बुद्धि से है ना। अभी याद में बैठ करके उसको याद रखना चलते फिरते वह अपनी मेहनत का है और यह तो गई अभी देखा जैसे स्वप्न था, अभी इसको योग और ज्ञान की स्टेज नहीं कहेंगे इसे ध्यान कहेंगे । यह ध्यान अलग चीज है और ज्ञान और योग अलग चीज है , इसको योग नहीं कहेंगे । कई इसके लिए बिचारे इच्छा रखते हैं न कि हम देखें, हम आत्मा

को देखें, दीदार करें । वह समझते हैं दीदार किया नहीं हमारा योग हो गया। नहीं, दीदार से योग का कनेक्शन नहीं है यह भूल है रोंग है इसीलिए कई समझते हैं हम देखें तो चाहना रखते हैं कि हमको दर्शन हो इसका तो देखने से कोई योग का कनेक्शन नहीं है क्योंकि वह तो हमारी बुद्धि योग से है ना । हमको जानना भी पड़े न, हमने जो चीज देखी अभी बताया ना कि हमने देखी पर हमको इसका नॉलेज नहीं है कि व्हाट इज दिस, फिर हम समझ नहीं सकेंगे कि देखकर भी क्या चीज है इससे क्या होता है तो इसकी वैल्यू नहीं होगी। हमको नॉलेज चाहिए हमको नॉलेज होगी तभी तो हम उस चीज की फिर कदर कर सकेंगे ना तो हमको फर्स्ट नॉलेज चाहिए। तो इसीलिए कहीं देखने की इच्छा रखते हैं कि हम देखें, उसका दर्शन करें हमको मिले तो यह रॉन्ग है । हम अपना बतलाते हैं ना हमने कभी नहीं देखा है। हमने इतना भी नहीं देखा है परंतु यह नॉलेज की है ना ।(शिव बाबा नहीं देखा है ?)नहीं , वो तो है हम उसके हैं वह हमारा है रिलेशन है उससे तो वह तो जानते हैं बुद्धि से एकदम , हमारे से कहाँ अलग हो सकते हैं। उनसे हम हो करके रह रहे हैं परंतु कई कई आशा रखते हैं कि हम भी देखें परंतु यह तो बाबा है ना जिसको चाहे जिसका कोई पार्ट होगा, जिससे कोई सर्विस लेनी होगी तो हां बाबा करेंगे। कई नई भी आते हैं ना चले जाते हैं ऐसे भी नहीं है कि पुराने ही जाते हैं खाली । यहाँ कई नए भी आते हैं ना अनायास बाबा को कोई टेम्पटेशन बिठानी होगी ना किसी को तो दिखा देंगे। वो टेंप्टेशन है ना तो कभी-

कभी टेंप्टेशन से पकड़ लेता है परंतु वह तो देखेगा कोई टेम्पटेशन से पकड़ेगा। तो ऐसा नहीं है कभी-कभी बाबा नए को भी उठा लेता है । कभी आते हैं अचानक चले जाते हैं ऐसे हमारे बहुत केंद्र हैं न सेंटर्स फिर ऐसे हो जाते हैं । फिर कई तो समझते हैं यह मिसमेरिज्म है जादू है फिर ऐसे समझ लेते हैं।(धनलक्ष्मी जाती हैं) हां बहुत हैं यहाँ तो, यहाँ भी नए-नए, अब देखो अभी यह नई है इधर धनलक्ष्मी जो आती है जयकिशन कि वह नई है और वह भी जाती है। बैठी थी ना उस दिन, नहीं तो है तो थोड़े समय की । ऐसे हैं परंतु कभी-कभी अचानक बिल्कुल नए नए आते हैं तो भी चले जाते हैं। एकदम खो जाते हैं यह तो उनकी है दिव्य बुद्धि परंतु यह तो कॉमन चीज है । यह तो ज्ञान में भक्ति मार्ग में भी बहुत जाते हैं। बहुत खेलते हैं, रास करते हैं धुन में चढ़ जाते हैं यह बहुत होता है लेकिन इन सब चीजों से फिर भी हमको अपना सारा, अपने पवित्र रहने का कनेक्शन फिर भी ज्ञान से है । अभी देखो ध्यान में बहुत जाती है परंतु अगर अवस्था नहीं होगी ना तो फिर कोई काम का नहीं होगा, फिर कहीं मोह होगा कहां कुछ होगा फिर वह तो हमारा ज्ञान से कटेगा ना। ध्यान से कोई मोह नहीं कटेगा, ध्यान से कोई क्रोध नहीं कटेगा, उसका कनेक्शन ज्ञान से है इस नॉलेज से है इसीलिए योग और ज्ञान का महत्व है तो यह सभी चीजों को भी समझना है और इसमें भी कुछ मूंझने की बातें नहीं है यह तो कॉमन है सब। अच्छा! मतलब है मुख्य बाप को याद करने से और याद करना और उससे अपना

जन्मसिद्ध अधिकार पाने के लिए अपनी प्रैक्टिकल लाइफ को बनाना तो वह सब चीजें रखने की है। (हम लोग भी जा सकते हैं ?) कोई भी , यहाँ एक गोप जाता है ना, एक गोप जाता है। (मम्मा इसने दो तीन बारी देखा है।) अच्छा आप गए हो? आपको अनुभव है? अच्छा! अब देखो ये हमारे से भी तीखा हो गया ना । वही तो टेम्पटेशन दिया ना बाबा ने। देखो यह सब खाने वाला उसको पकड़ने के लिए फिर उसको टेंप्टेशन दिया ना बाबा ने की यह कुछ देखेगा तो इसका विश्वास बैठेगा। (एक बार देखा बैकुंठ, बैकुंठ का महल देखा तो मस्त हो गया दो तीन दिन के लिए। हां होनकोंग बुलाने के लिए बाबा ने फिर हवेनली हांगकांग दिखलाइ उसको । तो जब ऊंची चीज दिखलाएगा तभी तो कोई नीची चीज छोड़ेगा ना, नहीं तो यह समझ बैठा है कि वह है वन है ना। आज की हैवेन तो यही है ना विकारी दुनिया की, हेल की हेवेन । वह है हैवेन की हैवेन तो बाबा ने उसको वह हेवेन दिखलाया की ऐसा नहीं की तुम होनकोंग को अपना जीवन समझ के बैठो। बैठा था ना समझ कर, उसी में मस्त था बहुत। इसका अनुभव कभी सुना है ना? तो बहुत खाना-पीना सब करता था, जैसी होती है दुनिया की लाइफ । खाना पीना खाओ पियो मौज करो बस यही और डांस करना यह करना बहुत, इसकी लाइफ ऐसी थी। अब तो जब से चला है तो बिलकुल, बाबा को भी ऐसों को पकड़ने के लिए कुछ दिखाना पड़े न ऐसा तब तो टेंपटेशन बैठे तो फिर कुछ दिखाया। हमें मालूम नहीं है इनका इतना तो नए-नए जो है ना, अभी

नया ग्रुप आया है उसको भी आप सुनाओ अच्छी तरह से अपना अनुभव क्योंकि अनुभव से आता है न कि भाई ऐसे ऐसे भी अपना जीवन बनाने में अब देखो पवित्र रहते हैं चलते हैं बहुत अच्छा। हमने भी अभी देखा है इसको। हमारा भी इससे भी कांटेक्ट हुआ है नहीं तो हमारा इतना मिलना करना, तो देखते हैं बहुत अच्छी अवस्था में एकदम सिगरेट विगरेट सब छूट गया। सिगरेट , रोज कितने सिगरेट पीते थे ? कितने सिगरेट पीते थे? एक दिन में सौ सिगरेट , देखो तो ऐसा सिगरेट एक सौ रोज पीने वाला और फिर छोड़ दे तो आफरीन है ना और छोड़ा भी एक ही दिन में । छोड़ा तो छोड़ा फिर ऐसे नहीं थोड़ा थोड़ा पहले पचास पीछे साठ, ऐसे थोड़ा थोड़ा नहीं एक दिन में। तो देखो आफरीन है ना तो इसको फिर बड़ा इनाम मिलेगा ना, बाबा भी इतना करेगा।(बाबा को याद किया मदद उससे मांगी, मदद आप दो हिम्मत हम रखते हैं)अब देखो तबीयत भी अच्छी रहती है। कई तो समझते हमारी तबीयत सिगरेट छोड़ने से तबीयत खराब हो जाएगी, अभी डबल खाना खाता है। हैप्पी रहता है। आगे से इसका भी देखेंगे चेहरा भी अच्छा, हैप्पी खुशी है ना। ये खुशी का पारा चढ़ता है तो कहते हैं खुशी जैसी खुराक नहीं है और कितनी भी खुराक हो लेकिन हैप्पीनेस। तो अभी बड़ा खुश रहता है। इसकी तबीयत खुश मिजाज है और अच्छा है। और बहुत इसकी आदत ऐसी थी मीट खाना, यह खाना, कुकर खाना, ये मुर्गी खाना ये कॉमन चीज थी, अब देखो वो सब छूट गई, मुर्गी बुर्गी सब छूट गई। डांस करना यह करना

वह तो बाहर की लाइफ ऐसी होती है न। अब देखो तो यह ध्यान की ज्ञान में तो ऐसा कोई चेंज होता है और ऐसे बहुत है हमारे पास बहुत शराब की आदत आदि लेकिन अभी जब आए हैं तो बहुत हैप्पी लाइफ हो गई है। बहुत है यह तो यहाँ है बेंगलुरु में लेकिन अपने बहुत हैं जिनकी लाइफ में बहुत परिवर्तन और कैसा वो अपनी लाइफ को देखते हैं बड़े-बड़े।(एक दुरंदर दास का हिस्ट्री बोलता है, बहुत गरीब था। गुरु के पास जाने का मुश्किल था , गुरु के पास जाता तो पैसे मंगता था, बहुत जगह गया, तभी भगवान का साक्षात्कार जोरों से होया) हां ये तो बहुतों को होते भी हैं परंतु यह तो फिर प्रैक्टिकल में आकर के यह सब रहकर के साथ में स्त्री पति बाल बच्चे यह तो फिर उसमें चल करके फिर दूसरों को चलाना यह तो फिर बात अलग हो जाती है। बाकी ऐसे तो बहुत चलते भी हैं परंतु यहां तो है ही वह कोर्स और यह तो है ही अपना बाप से अपना वर्सा पाकर के हेवेन के लिए अपना अधिकार बनाना तो ऐसे बाप से अपना पुरुषार्थ रखने का है। अच्छा साढ़े आठ हो गया है ना, जल्दी जाना होगा बिचारों को देरी होगा । आज छुट्टी तो नहीं होगी। पपैया को देरी होती है ऑफिस के लिए । दो जल्दी जल्दी , हां शाबाश। हां क्या देख, बाबा मिला ? (परमधाम पूछो कहां गई) खाली परमधाम का सुनाएगी ? नहीं, (वो भाषा.... क्योंकि हिंदी भाषा में बात नहीं करती है)। अच्छा यही परेशानी है इन बेचारियों की कि हिंदी भाषा नहीं जानती।(मगर

समझती है)। अच्छा बापदादा और मां की मीठे मीठे बहुत सबूत बच्चों को याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

मम्मा मुरली मधुबन

37. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान-1

रिकॉर्ड :-

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे

यह जो गीतों में आता है ना कि यह झूठी काया झूठी माया झूठा सब संसार सुना ना अभी यह गीत में तो इसको झूठा क्यों कहते हैं यह भी समझने की बात है। जिस दुनिया में हम चल रहे हैं उसी की बात है ना । उसी के लिए ही कहा है कि झूठा यह संसार, झूठी माया झूठी काया। काया कहा जाता है शरीर को । तो झूठी काया झूठी माया झूठा सब संसार तो सब संसार माना यह सब संबंध आदि सब कुछ यह सब झूठा । इनको झूठा क्यों कहा है ? झूठ और सच दो बातें होती हैं, झूठ किसी कंट्रास्ट में जरूर है । इसको अगर झूठा कहा जाता है तो कोई सच्चा भी होगा सच्ची काया सच्चा संसार । जरूर कोई सच्चा भी होगा तो यह समझना है झूठ इसको तभी कहा हुआ है । ऐसे नहीं है कि यह संसार झूठ है यानी जैसे कई समझते हैं ना कि यह संसार बना ही नहीं है , यह संसार मिथ्या है । नहीं, संसार तो अनादि है. ऐसे नहीं कहेंगे कि यह संसार कभी था ही नहीं जैसे कई समझते हैं और इसको मिथ्या मानते हैं । कई ज्ञान के प्रचार वाले इसको मिथ्या बतलाते हैं कि यह संसार मिथ्या है जैसे राम जी को

भी उनके वशिष्ठ गुरु ने यही कहा कि राम यह संसार बना ही नहीं है । तो अगर संसार नहीं बना है तो रामजी भी कहाँ रहा, फिर तो कुछ भी नहीं बना ना । तो यह तो सब चीजों को समझना है ऐसे नहीं है कि संसार बना ही नहीं है । संसार तो बना हुआ है, संसार तो चल रहा है ना परंतु किस संसार के लिए कहा, यह जो अभी झूठा हो गया है यह सच्चा था। यही संसार अभी झूठा हो गया है तो झूठ और सच को समझना है। उसका मतलब है यह संसार अभी विकारी हो गया है, तो विकारों के कारण इसको झूठा कहने में आता है अर्थात इसमें दुःख और अशांति है । यह दुःख अशांति वाला संसार अपना संसार नहीं है इसीलिए बाप बैठकर के समझाते हैं कि तुम्हारा जो संसार मैंने बनाया था ना, वह सुख शांति वाला था इसीलिए तुम उस संसार में सुखी थे । अभी यह जो तुमने बनाया है इसको झूठा बना दिया, कैसे बनाया इसमें तुमने विकार लाया तो विकारों के कारण काया भी दुःख की विकारी हो गई और उससे यह संसार के संबंध भी दुःख के हो गए, देखो राजा प्रजा पति-पत्नी बाप बेटा सब संबंध एक-दो के दुःख के हो गए हैं ना इसीलिए बैठकर के बाप समझाते हैं कि यह झूठी काया झूठा सब संसार यह सब झूठा कर दिया है । झूठा किसने बनाया विकारों ने । विकारों के कारण इस दुनिया को झूठा कहा जाता है। झूठे के कारण ही तुम दुखी हो इसीलिए कहते हैं अभी उसे छोड़ो अर्थात इन विकारों से अपना संबंध तोड़ो तो फिर तुम्हारा जो संसार है ना वह सुख का हो जाएगा और सच्चा हो जाएगा । तो सच्चा और

झूठा, कहा भी जाता है सचखंड, अभी है झूठखंड । यह अभी झूठा बन गया है तो सचखंड था अर्थात यह दुनिया सच्ची थी । सच्ची का मतलब है स्वच्छ थी, तब इसमें संपूर्ण सुख था और हमारे जीवन में सदा का सुख था तो वह सुख की दुनिया तभी थी जब पवित्रता थी । आज जीवन में अपवित्रता है इसीलिए वह दुःख की है और झूठी है । तो झूठी और सच्ची का भी अर्थ समझना है ना । ऐसे नहीं है ही नहीं, यह संसार बना ही नहीं है । यह संसार तो अनादि है, कैसे कहते हैं नहीं बना है । बना है तभी तो हम आप सब है ना, इसको ऐसे नहीं कहेंगे कि यह संसार ही नहीं है । संसार तो अनादि है लेकिन हाँ पहले सच्चा था और अब झूठा हो गया है । यह झूठा कैसे हुआ है इसमें विकार आए हैं तो विकारों के आने के कारण यह लाइफ दुःख और अशांति की हो गई है इसीलिए इसको झूठा कहते हैं अब फिर बाप कहते हैं कि जो मैंने सचखंड बना करके तुमको उसमें रखा था, तुम्हारी दुनिया सचखंड थी अथवा स्वच्छ थी और सुख की दुनिया थी उसमें मैंने तुमको रखा था । वह जो तुम्हारी लाइफ अथवा जीवन थी ना वह अभी बनाओ, तो वह कैसे बनाओ तो उसके लिए इस अपवित्रता को निकालो । अपवित्रता का मतलब ही है विकारों को निकालो और फिर तुम स्वच्छ बनो तो फिर तुम्हारी निर्विकारी दुनिया, जिसको ही फिर श्रेष्ठाचारी कहते हैं। ये श्रेष्ठाचारी भ्रष्टाचारी आदि यह सब जो भी शब्द है ना, ये कहते हैं परंतु इनका अर्थ समझते नहीं है परंतु इनका अर्थ समझते नहीं है । ये भ्रष्टाचारी

श्रेष्ठाचारी तो यह भी हमारे आचरण के ऊपर है ना । श्रेष्ठ आचरण तो उसको कहा गया श्रेष्ठाचारी और आज है भ्रष्टाचारी माना भ्रष्ट आचरण तो हमारा आचरण बिगड़ गया है ना । तो आचरण के ऊपर ही श्रेष्ठाचार और भ्रष्टाचार कहने में आता है । तो आज के आचरण बिगड़ने के कारण इसको कहा जाता है भ्रष्टाचार यानी भ्रष्ट आचरण । वह है श्रेष्ठ आचरण इसीलिए देखो देवताओं के श्रेष्ठ आचरण का गायन है ना । क्या कहते हैं उसको, कहते हैं सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण और संपूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम यह सब महिमा है ना तो उन्हों की देखो कितनी महिमा है श्रेष्ठ आचरण वालों की उनके पास सच्ची मर्यादा थी । मर्यादा भी तब थी जब विकार नहीं थे । अभी तो विकार में मनुष्य देखो अमर्यादा वाले हो गए हैं ना लोभवश, क्रोधवश, मोहवश, विकारोंवश सब यह बातें हैं इसीलिए बाप कहते हैं यह है ही अभी जो दुनिया उसको कहा ही जाएगा भ्रष्ट आचरण । उसी के कारण देखो यह करप्शन आदि देखो यह किस कारण है, लोभ है ना । लोभ ना होता तो करप्शन कहाँ से होती । यह अहंकार, अभिमान, यह क्रोध, यह दुश्मन एक दो से लड़ना-झगड़ना, आज इतने बोंब्स आदि सब यह कौन बनाता है यह क्रोध शत्रु, यह अहंकार, अभिमान हम बड़े, हम बड़े, यह मेरा यह तेरा, यह सब है ना तो यह विकार है ना । अहंकार कहो, क्रोध कहो, लोभ कहो यह सब चीजें हैं जो यह काम कराती हैं । अगर यह चीजें ना होती तो आज हमारा संसार यह क्रोध, लोभ और इससे जो दु:ख हैं तो यह

सब बातें थोड़ी होती ये करप्शन आदि यह सब कहाँ से होती, यह सब लोभ है ना । लोभ के कारण मनुष्य यह सब झूठ चोरी पाप आदि यह सब करते हैं तो यह सभी चीजों को समझना है । तो यही है पांच विकार, जो मनुष्य के आचरण बिगाड़ते हैं। आचरण बिगड़ता है तो उसको कहेंगे भ्रष्ट आचरण । तो आज की दुनिया है भ्रष्टाचार अथवा भ्रष्ट आचरण वाली क्योंकि पांच विकारोंवश अभी सब हो गए हैं इसीलिए देखो अभी यह मोरालिटी आदि सब इन सब चीजों में बिचारे कितने माथा खोटी करते हैं परंतु कैसे हो, जब तलक यह शत्रु बैठे हैं, यह विकार दुश्मन बैठे हैं तो यह मोरालिटी आदि सब कैसे हो सकती है । यह सभी बातों को भी समझना है की हमारी दुनिया कितने श्रेष्ठ आचरण वाली थी। मनुष्य की लाइफ में उसका आचरण कितना अच्छा था, कितना श्रेष्ठ था, आज वह है ही नहीं । तो श्रेष्ठ आचरण को सचखंड कहेंगे अथवा सच्ची दुनिया सचखंड। आज यह हो गई है झूठी दुनिया क्योंकि भ्रष्ट आचरण हो गया है ना इसीलिए भ्रष्टाचार कहो या झूठी दुनिया कहो। झूठ कमाते हैं, झूठ खाते हैं, झूठे चलते हैं, सब झूठ ही झूठ है ना इसीलिए इसको कहा ही जाता है झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार इसीलिए दुःख अशांति है। तो अभी बाप कहते हैं इसको सच बनाओ तो कैसे बनाएंगे, देखो सोना होता है ना तो सोने को अगर झूठा बनाना है तो कैसे बनाएंगे। हमको जेवर झूठे बनाने होंगे तो हम सोने में झूठी चीजें तांबा ,लोहा, पीतल आदि जो सोनार मिलाते हैं वो ज़ेवर में नहीं मिलाते हैं लेकिन सोने में

मिलाते हैं फिर उसी झूठे सोने से जो जेवर बनता है वह झूठा हो जाता है। अगर हमको फिर सच्चा जेवर बनाना है तो फिर जेवर को गला करके फिर सोने से निकालना होगा, जेवर से नहीं निकालेंगे, तो यह देखो फॉर्म है ना । अभी हमारा झूठ किस में पड़ा है, हमारे यह पांच विकार किस में लगे हैं तो यह शरीर है जेवर, ऐसे समझो, फॉर्म बना है ना, यह फॉर्म किसके आधार से बना है? आत्मा के, तो जैसी आत्मा वैसा फॉर्म, जैसा सोना वैसा उसका फॉर्म । झूठा सोना तो झूठा फॉर्म जो भी फॉर्म बनेगा बैंगल बनेगी रिंग बनेगा जो भी बनेगा तो अगर झूठे सोने की बनेगी तो सब झूठा बेंगल भी झूठा, रिंग भी झूठा जो भी चीज बनाएंगे, परंतु पहले तो सोना ही झूठा होगा ना । इसी तरह से यह हमारा फॉर्म जो है शरीर का वह किसके आधार से बनता है आत्मा के, तो आत्मा पहले झूठी बनती है । ऐसे नहीं कहेंगे आत्मा निर्लेप है, आत्मा को कोई लेप क्षेप नहीं लगता है, आत्मा में ही पांचों विकारों का प्रवेश आता है, फिर उसे विकार के संबंध से आत्मा जो कर्म करती है उसी कर्म के हिसाब से यह शरीर बनता है, शरीर के संबंध, शरीर के रिश्ते आदि यह सब जो भी कर्मों के खाते से कोई बाप बना, कोई बेटा बना, कोई स्त्री बनी, यह कर्म का हिसाब है ना । यह बाप बेटा भी कैसे बना कर्म का हिसाब। बेटा बन करके आएगा उसे हिसाब किताब है, लेना है, स्त्री बनी, पति बना, यह सब कर्म का खाता है ना। राजा प्रजा यह सब कर्मों का खाता है, एक दो से लड़ना झगड़ना यह सब कर्मों का खाता है ना तो दुनिया का यह

जो भी कर्म का खाता बना किससे बना, बनाने की रिस्पांसिबिलिटी किसकी हुई, आत्मा की। तो आत्मा इंप्योर हुई तो शरीर भी इंप्योर हुआ और आत्मा और शरीर इंप्योर तो उससे सब रिश्तेदारी, सब संसार की जो बनावट रही सब इंप्योर तो झूठी हो गई ना । तो पहले झूठ कहाँ मिला उसमें मिला आत्मा में इसीलिए फिर आत्माओं का जो पिता है ना वह आ करके कहते हैं हे आत्मा तू तो सोनी थी, कंचन थी, साफ थी एकदम, तुममे यह इंप्योरिटी का लोहा, तांबा यह झूठ आदि पांचो विकारों का यह लोहा तांबा समझो ना, वो उसमें मिल गए हैं तो तू जो कंचन थी ना प्यूरीफाइड सोना इन विकारों से मिलकर के तू झूठी हो गई है, तो अभी झूठी काया, तेरा शरीर भी जो बना फॉर्म वह भी झूठी, सब संसार के संबंध भी झूठे, सब झूठे हो गए हैं तो सब झूठ ही झूठ बना दिया। झूठे से सब झूठे बन गए हैं, आजकल है ना फोर्टीन कैरेट का सोना बनाते हैं दिन-ब-दिन सब झूठा होता जाता है तो तुम भी देखो तुम भी क्या बन गए हो । तुम्हारा भी वह सच जो है वह निकलता जाता है और अभी झूठे बनते जाते हो एकदम। इसीलिए कहते हैं आत्मा इमप्योर तो इंप्योर होने से तुम्हारा जो भी संसार का फॉर्म है ना शरीर का संसार की जो भी फॉर्म बना है इसको भ्रष्टाचारी दुनिया कहो, कुछ भी कहो यह फॉर्म कहाँ से बना, इसी से । इसका रिस्पांसिबल कौन है आत्मा, इसीलिए फिर आत्माओं को बैठकर के बाप अभी प्यूरीफाइड बनाते हैं । सबसे पहले यह प्यूरीफाइड बनेंगे तो उससे फिर शरीर जो बनेगा, फिर शरीर

और शरीर का संबंध फिर संसार की सारी रिलेशंस संसार की है आपस की वो फिर सदा सुखी हो जाएगी। राजा, प्रजा यह सभी संबंध है ना, वह सब सदा सुख के बनेंगे। अभी संसार के सभी संबंध जो रिलेशंस हैं वह सब एक दूसरे के दुःख के हैं इसीलिए यह सब दुःख का कारण पहले कहाँ से हुआ आत्मा से, तो आत्मा रिस्पांसिबल हो गई । इसीलिए बाप बैठकर के अभी आत्माओं को प्यूरीफाइड करने का यह नॉलेज दे रहे हैं । तो झूठ और सच को समझना है ना, झूठी कैसे बनी है, झूठ क्यों है बाकी ऐसे नहीं संसार है ही नहीं। कई झूठ का अर्थ यह समझ लेते हैं ना कि संसार ही नहीं है यह स्वप्न है, यह देख रहे हैं यह स्वप्न है इसीलिए यह संसार है ही नहीं बना ही नहीं है । अरे! संसार तो खड़ा है ना, संसार तो अनादि है। हाँ एक मनुष्य शरीर छोड़ता है दूसरा लेता है, वह मनुष्य शरीर छोड़ करके दूसरा लेता है लेकिन संसार तो चलता ही है ना, पुनर्जन्म वाला संसार तो चलता ही रहता है ना। तो यह सारी चीजों को समझना है इसीलिए बाप कहते हैं कि ऐसे नहीं है कि संसार नहीं बना है झूठ का मतलब यह नहीं है । संसार है, लेकिन उसमें यह जो तुमने विकार बनाए हैं ना, जिसमें ही दुखी हुए हो यह मैंने नहीं बनाया है। ऐसे नहीं है यह विकार मैंने बनाएं और दुःख भी तुम्हारे को मैंने दिया, यह तो मेरे पर तुम कलंक लगाते हो । मैं थोड़ी ही दुःख बनाऊंगा, बच्चों के लिए मैं दुःख बनाऊंगा, ऐसा कभी बाप देखा? लौकिक बाप भी कभी बच्चों को दुखी थोड़ी ही करता है, करेंगे आप? बाप हो करके कभी बच्चों

को दुखी करेंगे आप? नहीं, कभी नहीं । कैसा भी नालायक बच्चा होगा ना तो भी बाप हमेशा रहमदिल रहते हैं । तो जब लौकिक बाप भी कभी बच्चों के लिए दुःख नहीं बना सकते हैं तो वह तो हमारे पारलौकिक पिता है ना। जब एक साधारण मनुष्य भी किसी मनुष्य के प्रति इतने दुःख का ख्याल नहीं रख सकता है तो वह हमारे परमपिता हम को कैसे दुःख देंगे । फिर भी कहे परमपिता, वाह! परमपिता और दुःख देवें? फिर काहे के लिए उसको परमपिता कहना चाहिए, जो दुःख देता है उसको परमपिता कहना चाहिए? कभी नहीं कहना चाहिए । फिर उसको याद करना चाहिए - हे भगवान, जब दुःख आता है तो उसको याद करते हैं, हे भगवान रहम करो, हे भगवान सुख दो, दुःख जब आता है तब तो उसको याद करते हो तो उसकी माना वह हमारे दुःख को नाश करने वाला है ना, तब तो उसको याद करते हैं ना। कोई दुःख देने वाला हो तो उसको हम कैसे याद करेंगे दुःख के समय की है भगवान दुःख दूर करो। जब वो दुःख ही देने वाला है तो उसको याद ही क्यों करना चाहिए, परंतु नहीं वह दुःख दाता नहीं है। गाते भी हो ना, महिमा करते हो दुःखहर्ता सुखकर्ता ऐसे कहते हो, कभी ऐसे कहा है हे भगवान तू दुःखकर्ता सुखहर्ता ऐसी महिमा तो कभी है ही नहीं उसकी। उसकी महिमा है दुःखहर्ता दुःख हरने वाला, हरने का मतलब है नाश करना तो दुःख का नाश करने वाला है उसकी महिमा ही ऐसी है। तो उसके ऊपर कभी यह नहीं समझना है कि दुःख भगवान ने दिया है या ऐसी

दुनिया भगवान ने बनाई है जो अभी दुःख की है । भगवान ने बनाई जरूर है परंतु सुख की इसीलिए उसको सुख के लिए याद करते हैं तेरी दुनिया बड़ी अच्छी थी, तेरी दुनिया में हम बहुत सुखी थे, तू सुखदाता है, तू शांतिदाता है तभी उसको याद करते हैं। याद भी कभी कोई मनुष्य को भी याद करते हैं जब कोई किसी के ऊपर एहसान करता है कोई हमको कोई सुख देता है, तभी हम उसको याद करते हैं । अभी देखो गांधी जी ने कुछ अच्छा किया भारत के लिए, तो उनको याद करते हैं, भाई नेहरू जी ने कुछ अच्छे काम किए तब उसको याद करते हैं , नहीं तो कोई किसी को क्यों याद करेगा । जब मनुष्य भी कोई अच्छा काम करता है तब उसको याद करते हैं, भगवान को तो देखो याद ही करते हैं और सो भी दुःख के समय। जब कोई किसी के पास शारीरिक रोग आएगा या कोई ऐसी फिकरात आएगी या कोई मुसीबत आएगी या कोई भी ऐसी बात होगी तो कहेंगे हे भगवान रहम करना, हे भगवान खैर करना, हे भगवान अभी यह मेरा भला करना भगवान ऐसा करना कहते हैं ना तो उसका माना उसने हमारे साथ भलाई की है ना, कोई बुराई तो की नहीं है उसने । अगर बुराई उसने की होती तो ऐसे क्यों उससे कहते । तो वह हमारे हैं ही अच्छे काम करने वाले, यानी उसने हमको अच्छा ही बनाया है, हमारी बुराई को नाश कराया है। कैसे कराया है तो बुरा हमको बनाने वाले हैं पांच विकार। अभी इन विकारों को बैठकर के नाश करने का उसने उपाय बतलाया है इसीलिए उनको हम याद रखते हैं तो उसने हमारी दुनिया

सचखंड, श्रेष्ठाचार बनाया है और यह ये भ्रष्टाचार झूठखंड को नाश कराया है। तो अभी यह देखो झूठी काया झूठी माया झूठा यह संसार है इसीलिए कहते हैं बनवारी, बनवारी कोई कृष्ण को नहीं, कई उसको समझते हैं कि बनवारी वह गए हैं ना कृष्ण, रास रचाया है यह किया है ऐसी-ऐसी बातें परंतु वह बातें नहीं है, वह तो यह शास्त्रकारों ने बैठकर के कहानियों की तरह से बना दिया है परंतु यह कहा ही जाता है निराकार परमात्मा को। कृष्ण को परमात्मा नहीं कहेंगे यह तो बात बहुत समझने की है। कृष्ण तो सतयुग का प्रिंस है । यह कृष्ण, ऐसा मनुष्य परमात्मा ने बनाया यानी कृष्ण जैसा सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी यह प्रिंस है, फर्स्ट प्रिंस । जो किंगडम परमात्मा ने बनाई राजधानी उसका यह फर्स्ट प्रिंस है । तो भगवान ने जो राजधानी बनाई ना उनका यह कृष्ण प्रिंस है जो जब बड़ा हुआ है फिर किंग बना है जिसको फिर श्री नारायण कहा जाए । तो यह समझना है कि भगवान ने ऐसे मनुष्य बनाएं। यह कृष्ण मनुष्य के स्टेटस का निशान है कि यह कृष्ण ऐसा मनुष्य परमात्मा ने बनाया तो यह मनुष्य की स्टेटस है और परमात्मा तो निराकार है ना तो इसको परमात्मा कहने से मनुष्य के स्टेटस चली जाती है। तो ना मनुष्य की स्टेटस रहती है ना परमात्मा का भी। अगर परमात्मा यह कृष्ण है तो फिर तो सारी दुनिया को उसको मानना चाहिए ना कि गॉड इज वन, परमात्मा इज़ वन फिर तो सबको उसको देखना चाहिए ना, फिर सबका अपना-अपना क्यों । नहीं कहते हैं गॉड इज वन, तो

निराकार परमात्मा तो एक ही है ना इसीलिए इसको कृष्ण को सब थोड़ी ही मानेंगे, सारी दुनिया मानेगी? नहीं, अगर परमात्मा है तो सारी दुनिया को मानना चाहिए ना। गॉड इज वन तो फिर तो एक ही को मानना चाहिए ना। परंतु नहीं, परमात्मा जिसको कहेंगे वह है निराकार, परंतु वह ना जानने के कारण उनका पता नहीं है कि वह कौन सी चीज है। उनको भी ज्योति रूप निराकार परमात्मा कहेंगे, फिर स्टार लाइट कहो ज्योति या बिंदी लाइट कहो, उनको बिंदु भी कहते हैं तो यह है, परंतु है ज्योति का लाइट। तो यह सभी चीजों को समझना है इसी की प्रतिमा फॉरेन देशों में भी है, जो शिवलिंग की देखते हो ना शिव के लिंग की प्रतिमा इसीलिए बहुत ज्योति का दीवे का भी रखते हैं क्योंकि दिया का भी जोत को लाइट के रूप में रखते हैं। देखो कलयुग में सीख रहे हैं और फिर सतयुग प्रारब्ध है न तो फिर प्रारब्ध में जाकर के इस प्राप्ति को प्राप्त करते हैं तो यह चीजें समझने की है ना । जरूर इन्होंने अगले जन्म में, यह भी क्वेश्चन है ना उसने कौन सा अगले जन्म में कर्म किया जिससे ऐसी प्रारब्ध पाई । जरूर कोई पुरुषार्थ किया होगा ना, कर्म का फल है ना, मनुष्य के लिए तो कर्म का फल है। इन्हों को फल कहाँ से मिला? जरूर अगले जन्म का, तो अगला कौन सा जन्म है - यह, तो यह मानो हम कलयुग के अंत में, इस लास्ट समय में अभी जो पुरुषार्थ करेंगे इसके प्रारब्ध में फिर हमारी जनरेशन आगे सुख की चलती है तो सीधी बातें हैं ना। तो यह सभी पुनर्जन्म और यह जेनरेशंस का यह वर्ल्ड का

चक्कर इन्हीं सभी बातों को भी समझना चाहिए और जान करके अभी उसी को प्राप्त करना है इसीलिए कहते हैं कि यह सभी अभी नया कलम लगता है। यह पुराना डाल टार टारिया अभी इसकी एंड इसीलिए देखो यह सब डिस्ट्रक्शन तैयार है अभी, यह सिविल वॉर और नेचुरल कैलेमिटीज ये एटॉमिक बॉम्ब आदि सब चीजें जो बनी है इन सब के जरिए यह दुनिया की संस्था का नाश । तो देखो आत्माएं अभी जा रही है ना मच्छरों सदृश्य, देख रहे हो ना, यह गीता के आधार पर है । उसमें कहते हैं ना तुम्हारे तरफ आत्माएं आ रही है मच्छरों के सदृश्य, जैसे मच्छर होते हैं ना, जब दिवाली होती है तो देखे हैं समा के ऊपर बहुत मच्छर मंडराते हैं फिर सुबह को मर जाते हैं तो बहुत ढेर नीचे पड़े हुए होते हैं। तो कहते हैं यह मच्छरों के सदृश्य मनुष्यों का डिस्ट्रक्शन होगा । यह आत्माएं तुम्हारे पास आ रहे हैं उनको साक्षात्कार हुआ था ना उसमें, तो अभी फिर कहते हैं फिर नंबरवार आत्माएं आएंगे फिर पहले पहले यह नंबर में जो आकर के सदा सुख को पाती हैं फिर सारा सर्किल चलता है। बाकी इसमें मूंझना नहीं है कि ज्योति में समाना है। नहीं, आत्माओं को आना है, आना है तो फर्स्ट चांस लेना चाहिए ना। आए तो फिर इधर क्यों आए, कोऑपरेज में उतरे फिर आयरन एज में आए, आए और क्या सुख लेंगे । आना है तो क्यूँ नहीं इधर आएं, आना है तो फिर फर्स्ट चांस लेना है सुख की दुनिया में । इसीलिए कहते हैं यह राजयोग से जो कर्म श्रेष्ठ करके जाएंगे वह फिर फर्स्ट आएंगे । जो मेरे द्वारा

अपने पापों को दग्ध करके नहीं जाएंगे वो पीछे आएंगे, पीछे आएंगे तो फिर उसमें इतना सुख की प्राप्ति तो नहीं होगी न। तो यह सारी चीजों को समझना है यह सर्कल है, आत्माओं का आना, आत्माओं का जाना, आत्माएं फिर कितने जन्म यहाँ लेती हैं सारे चक्र को समझना है। इसी सारे चक्र को लिखा है कल्प ट्री फाइव थाउजेंड ईयर्स का। ये सारा चक्कर 5000 वर्ष में पूरा होता है। तो यह सब चीजों को समझना है कि यह किस तरह से चलता है, और उसी सब को पाना है । समझा, कैसा भूपालम? कुछ आता है समझ में? अभी भूपालम कैसा, भू का पालम, देखो यह है ना, इसी भू पर राज करना है । इस भू पर अभी क्या है भू तो हिलती है इसमें अर्थक्वेक होते हैं, इसमें दुःख अशांति मिलती है, यह भू बिचारी अन्न नहीं दे सकती है, अभी बुड्ढी हो गई है। खिलाते-खिलाते अभी देखो धरती भी बुड्ढी हो गई है, संख्या बढ़ गई है, अन्न भी अभी कैसा है, उसमें ताकत नहीं क्योंकि पृथ्वी में अभी वह ताकत नहीं रही नहीं। तो पृथ्वी में ताकत थी, सब कुछ हमको अच्छा मिलता था, आज देखो सब तत्वों में भी अभी तमोप्रधानता हो गई है ना, हवा आदि सब में। नहीं तो हमारे में बल था तो हर चीज में बल था, इसी से हम को सदा सुख की प्राप्ति थी । कभी कोई बीमारी नहीं, कोई रोग नहीं। यह सभी क्यों होते हैं क्योंकि हमारे में यह पांच विकार रूपी कीड़े पड़ गए हैं ना, तो हमारे को कीड़े खा गए तो सब चीजों को कीड़े खा गए इसीलिए दुखी है मनुष्य। सब में अभी कीड़े ही कीड़े हैं, कीड़ों की दुनिया, रोगों की

दुनिया, आओं की, दाओं की, दर्द की, दुःख की दुनिया, सारा दिन क्या है यही, इसीलिए बाप कहते हैं कहाँ तक यह आह दाह दर्द दुःख चलती रहेगी इसीलिए कहते हैं अभी इसका एंड, फिर इसमें कभी आह! दाह! दर्द दुःख रहेगा नहीं। कहते हैं वह जमाना था जब शेर बकरी भी एक घाट पर पानी पीते थे, तो यह इसका मिसाल दिया है कि ऐसा जमाना था कि जनावर भी नहीं लड़ते थे, सब सुखी थे तो मनुष्य क्या होगा । तो यह सभी बातें हैं तो ऐसा सदा सुख का राज्य पाने के लिए अभी हम यहाँ सीख रहे हैं, इसी कॉलेज में परमात्मा जो सिखा रहे हैं, यह राज्य की स्टेटस वह प्राप्ति सीख रहे हैं भविष्य प्रालब्ध जनरेशंस में, और अभी-अभी फ्यूचर दुनिया यही आने की है तो यह सभी बातों को समझना चाहिए ना । मनुष्य जो कुछ करता है देखो पढ़ता है , इसी जीवन में ही भले, मैं डॉक्टर बनूंगा है लेकिन करता तो फ्यूचर के लिए है ना, भले इसी लाइफ की फ्यूचर है । यह है जेनरेशंस की फ्यूचर जो हम सदा काल के सुख को पाते हैं । तो यह जो हम करते हैं वह पाते हैं । हर एक चीज करनी होती है पाने के लिए ना, मनुष्य जो कुछ भी करता है डॉक्टरी पढ़ता है इंजीनियरी पढ़ता है, भाई पढ़ेगा लिखेगा बड़ा होगा, फिर यह करेगा, वह करेगा, रखता तो एम फ्यूचर के लिए है ना, हाँ कल को मर ही जाए तो उसका वह सब कुछ खत्म हो जाए। परंतु यह तो गारंटी है क्योंकि परमात्मा द्वारा यह सारा नॉलेज और हमारी वह जनरेशंस अविनाशी पिता के द्वारा बनाई जाती है तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से

समझना है । अभी इसमें कुछ मूझने की बात है नहीं, फिर भी किसी को कुछ नहीं समझ में आता है तो हाँ पूछ सकते हैं । अच्छा, खिलाओ टोली । हाँ, अच्छा, एक दिन गोप एक दिन गोपी, अच्छा । यह पुरानी है ना पार्वती मां, हनुमान है इसका नाम। हनुमान क्यों रखा है बिचारी का? (सभी को जाके संदेश देती है) सन्देश देती है, अच्छा खिलाओ। बाबा को याद करके खिलाना। पहले हमको ? पहले सब बच्चों को, नहीं, फिर भगत बनेंगी, फिर भगत कहेंगे। भगत ऐसा काम करेगा । ज्ञानी तू आत्मा वह तो फिर ज्ञान से काम करेंगे ना । पहले बच्चे।

38. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान- 2

रिकॉर्ड:

नई उमर की कलियों तुमको देख रही दुनिया सारी तुम पर बड़ी जिम्मेदारी.....

ओम शांति।

यह याद में बैठे हो। जिसकी याद में बैठे हो उसको जानते हो ना? क्योंकि अपना है ज्ञान सहित। जो भी अपन कर्म करते हैं पहले उसका ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान मतलब ही है समझ और कॉमन तरह से भी कहने में आता है भाई समझ के काम करो, ऐसे नहीं कहने में आता है काम करके फिर समझो। नहीं, समझ के काम करो तो पहले ज्ञान पीछे काम । तो ज्ञान का मतलब ही है समझ लेकिन समझ तो बहुत प्रकार की है ना, डॉक्टरी भी एक डॉक्टरी की समझ है, इंजीनियरिंग भी एक इंजीनियरी की समझ है वैसे तो कई प्रकार की समझे हैं लेकिन ज्ञान नाम जिस बात में मशहूर है की ज्ञान बिना गति नहीं है, वह कौन से ज्ञान बिना, किस समझ के बिना, तो वह भी समझने की बात है कि कौन से ज्ञान के बिना गति सद्गति नहीं है, वह गति सद्गति की समझ कौन सी है। वह कोई डॉक्टरी

बैरीस्टरी इंजीनियरी या यह साइंस आदि इन सब चीजों से भी तो कोई गति सद्गति का ताल्लुक नहीं है ना। गति सद्गति का ज्ञान अथवा समझ कौन सी है और उसी समय समझ को देने वाला भी सर्व समर्थ स्वयं परमपिता परमात्मा ही है इसीलिए कहते हैं कि वह समझ, उसका ज्ञान गति सद्गति का दाता मैं हूं और उस ज्ञान को देने वाला भी मैं हूं, मैं उसका नॉलेजफुल हूं। अभी गति सद्गति क्या चीज है, कई बेचारे इस चीज को नहीं समझते हैं। कई समझते हैं वह चीज शायद ऐसी है कि बस शरीर में ना आवे, कोई ऐसा स्थान है जहां बैठ जाना होता है इसीलिए वह समझते हैं कि मोक्ष या गति सद्गति । नहीं, ऐसी चीज नहीं है जो शरीर में ना आना हो, शरीर में तो आने का है ही । यह मनुष्य सृष्टि तो अनादि है ना । अगर शरीर में ना आना हो तो फिर तो सृष्टि चले ही ना, जो मरे, जाते रहे जाते रहे फिर तो यह खत्म हो जाए परंतु नहीं, ऐसी बात नहीं है। यह सृष्टि अनादि है, आत्मा को इस चक्कर में आना ही है लेकिन इन्हीं बातों को समझना है कि ये चक्र में चलने वाली मनुष्य सृष्टि के भी स्टेजिस हैं। तो सृष्टि की भी स्टेजिस हैं, यह भी समझने की बात है ऐसे नहीं सृष्टि कोई बिना हिसाब से चलती है। कई समझते हैं यह दुनिया जो है ना यह दुनिया चलती ही रहती है परंतु इसका भी हिसाब है। जैसे शरीर का भी हिसाब है ना कि भई पहले बाल, पीछे युवा, पीछे वृद्ध हिसाब है ना? ऐसे तो नहीं ऐसे ही शरीर चलता है कोई इसका नियम ही नहीं है। हर चीज का अपना अपना नियम है

जैसे शरीर का भी नियम है पहले बाल होगा, पीछे युवा, पीछे वृद्ध, ऐसे तो नहीं है बाल से फिर वृद्ध हो जाएगा, नहीं बीच में युवा पीछे वृद्धि फिर वृद्ध के बाद भाई मृत्यु, मृत्यु से फिर जन्म तो स्टेजिस बाय स्टेजिस है ना । ऐसे तो नहीं कहेंगे वृद्ध फिर ऐसे ही बाल हो जाएगा। नहीं मृत्यु, स्टेज है बीच में । ऐसे भी नहीं वृद्ध फिर युवा होगा, ऐसे उल्टा लौटेगा, फिर वृद्ध से युवा युवा से बाल ऐसा होगा, नहीं हर चीज का नियम है । तो जिस तरह से इस शरीर के स्टेजिस का नियम है वैसे आत्मा की भी स्टेजिस हैं उनका भी गोल्डन, सिल्वर, कॉपर एंड आयरन एज और हिंदी में अगर कहेंगे सतो, रजो और तमो यह स्टेजिस हैं। तो आत्मा को भी जो बहुत जन्मों में चलती है तो जन्म की भी स्टेजिस हैं तो मानो आत्मा अपने स्टेजिस अनुसार जन्मों को लेती है पहले सतोप्रधान है तो उनके जन्म ऐसे हैं पीछे सतो तो कम, पीछे रजो, फिर रजोप्रधान, पीछे तमो फिर तमोप्रधान, इसी तरह से फिर उनकी स्टेज बाय स्टेज यह जन्मों का भी हिसाब है। तो जैसे एक जीवन में भी बाल, युवा, वृद्ध और यह सब स्टेजिस एक ही जीवन से पता लगता है इसी तरह से अनेक जन्मों का भी फिर स्टेजिस हैं तो जैसे जन्मों का स्टेजिस है तो फिर उसमें संसार का भी दुनिया की भी स्टेजिस होती है। तो यह सभी चीजों को समझना है कि दुनिया का भी फिर गोल्डन, सिल्वर कॉपर एंड आईरन एज जिसको सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग फिर उनका चक्कर होता है। तो ऐसे नहीं कहेंगे कि यह दुनिया एक ही तरीके से

या बस ऐसे ही कोई बिना हिसाब से चलती रहती है। नहीं, इसका हिसाब है जैसे शरीर का हिसाब है कि भाई नियम है कि यह बाल अभी युवा होगा, फिर वृद्ध होगा हिसाब है ना, इसी तरह से यह सृष्टि का भी बाल, युवा, वृद्ध ऐसी स्टेजिस हैं तो समझना चाहिए अभी कौन सी स्टेज है। यह वृद्ध अवस्था है सृष्टि की या इसको युवा अवस्था कहेंगे या बाल अवस्था कहेंगे ? तो इस सृष्टि की भी बाल युवा वृद्ध स्टेजिस हैं। अच्छा, अभी बताइए कि अभी कौन सी स्टेज है? वृद्ध। हां, वृद्ध में भी जड़जड़ी, लास्ट। इसको कहा जाएगा जड़जड़ीभूत अवस्था । यह गीता के भी वर्संश हैं कि यह मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष अभी जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त हो चुका है अर्थात अति पुराना। अभी अति पुराने के बाद में फिर डिस्ट्रक्शन। फिर डिस्ट्रक्शन चाहिए तो फिर साथ-साथ कंस्ट्रक्शन क्योंकि सृष्टि अनादि है। तो यह भी सब हिसाब समझने के हैं न कि यह सृष्टि की भी स्टेजिस नंबरवार है। तो यह सृष्टि हमारी जेनरेशंस की, अनेक जन्मों की हिसाब से चलती है, अभी उनकी आ करके यह वृद्ध अथवा बिल्कुल जर्जरीभूत अवस्था पहुंची है। अभी ऐसी अवस्था के बाद तो फिर जरूर डिस्ट्रक्शन चाहिए ना यानी मृत्यु, तो दुनिया की भी मृत्यु। मृत्यु का मतलब यह नहीं है कि जैसे कई समझते हैं कि प्रलय हो जाएगी। प्रलय नहीं हो जाएगी जैसे मृत्यु से फिर जन्म तो इस सृष्टि का भी साथ-साथ फिर कंस्ट्रक्शन अथवा इसका फिर भी चलना होता ही है क्योंकि अनादि है। ऐसे नहीं कहेंगे कभी सृष्टि थी ही नहीं। नहीं,

सृष्टि अनादि है ऐसे नहीं है कि पहले मनुष्य थे ही नहीं जैसे किसी हिस्टोरिज में या कई शास्त्रों में कई बातें बैठ करके सुना रखी है कि भाई पहले दुनिया थी ही नहीं, जल ही जल था या कई समझते हैं कि दुनिया थी ही नहीं पहले पहले मनुष्य थे ही नहीं एक बुत बनाया फिर उसमें स्वांस फूंका, फिर वह चला, फिर मनुष्य से मनुष्य, मनुष्य से मनुष्य फिर ऐसे बहुत हो गए या कहीं कहीं ऐसी बातें रखी है या कह देते हैं ये आग का गोला था पहले कुछ और था ही नहीं पीछे उससे ऐसे दुनिया निकली फिर ऐसे ऐसे हिसाब बतलाते हैं या कई तो समझते हैं पहले बंदर था, बंदर से मनुष्य हुआ है ऐसे ऐसे हिसाब बतलाते हैं परंतु यह सभी चीजें नहीं है कि पहले बंदर थे, पहले जनावर थे फिर मनुष्य हुआ, नहीं मनुष्य अनादि है ही परंतु हां इतना जरूर है कि यह संख्या पहले कम थी पीछे वृद्धि को पाती जाती है। अभी देखो वृद्धि को चली जा रही है ना। अभी वृद्धि भी कम कम होगी ना । ऐसे वृद्धि होते होते बढ़ते बढ़ते आख़िर उसकी एंड भी चाहिए, तो वह एंड कैसे होती है तो उसके लिए फिर डिस्ट्रक्शन चाहिए । तो फिर डिस्ट्रक्शन माना वह जो वृद्धि है उस संख्या का कम करना। पीछे कम होकर के फिर नई जेनरेशंस फिर उसको कहेंगे सतयुग तो यह फिर उसका आरंभ होता है डिस्ट्रक्शन के बाद में। तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप इस सृष्टि की भी स्टेजिस समझाते हैं तो हर चीज अपने नियमों में चलती है जिस नियमों को जानना उसका नाम है ज्ञान। तो यथार्थ यह सृष्टि जिसमें हम हैं वह कैसे

चलती है, जिस जीवन में हम हैं उसकी जेनरेशंस कैसे चलती है जिसमें हमारा यह कर्म का खाता है वह कैसे चलता है इन सभी बातों को यथार्थ रीति से जानना इन्हीं का नाम है ज्ञान और इसी ज्ञान को जानने से ही हम अपनी पहली जो ओरिजिनल स्टेज है उसको कैसे प्राप्त करें उसका नॉलेज आता है क्योंकि आपको जब समझ मिलेगी ना कि भाई हां पहले बाल, पीछे युवा, पीछे वृद्ध, पीछे मृत्यु, जानेंगे तो अभी हमको क्या चाहिए हम चाहते हैं कि हमारी जो पहली सदा सुख की जो स्टेज थी जिसको गोल्डन एज कहेंगे तो गोल्डन एज में सुख था, पीछे-पीछे आस्ते आस्ते सिल्वर एज भई उसमें थोड़ा कम, पीछे कॉपर पीछे आयरन, अभी देखो बिल्कुल तमोप्रधान तो उसमें हमारे सुख-दुख का संबंध आता है ना तो उस जेनरेशंस में सुख था जब गोल्डन एंड सिल्वर एज थी। पीछे कॉपर एंड आयरन एज में दुःख शुरू हुआ परंतु कॉपर में थोड़ा दुःख था, पीछे बढ़ते बढ़ते आयरन एज फिर आयरन एज की भी अभी बिल्कुल तमोप्रधान लास्ट स्टेज तो अभी दुख बढ़ते जा रहे हैं तो यह भी सुख और दुख का संबंध हमारे इसी स्टेजिस के ऊपर है। तो जेनरेशंस में कैसा सुख कैसा दुख भी चलता है जेनरेशंस का भी सुख दुःख। एक जीवन में भी दुख सुख है लेकिन फिर हमारे जेनरेशंस का भी हिसाब में बहुत जन्म हमारे सुख के भी हैं और फिर बहुत जन्म हमारे दुःख के भी हैं तो बहुत जन्मों का भी हिसाब है । तो यह सभी हिसाब भी समझना है और हमारे सभी जन्मों का कितना हिसाब है फिर यह पूरा हो करके

फिर हमारे सुख के जन्म कैसे रिपीट होते हैं तो इन सभी बातों को भी जानना है ना । अभी यह जिसमें हम चल रहे हैं तो मनुष्य को इन सभी बातों का नॉलेज होना चाहिए । बाकी ऐसे नहीं बस मैं मनुष्य हूं, भाई तू क्या है मैं मनुष्य हूं, वह तो देखते नहीं मैं मनुष्य हूं, यह कोई समझ थोड़े ही है । नहीं, मनुष्य क्या है, उनके कर्म का यह सब हिसाब कैसे चलता है, यह संसार का चलना कैसे होता है, यह सृष्टि सारी कैसे चलती है इसका भी स्टेज बाय स्टेज कैसे होता है, अभी कौन सा टाइम है, अभी इस टाइम के बाद फिर क्या टाइम आने का है तो इन सभी बातों का यथार्थ नॉलेज होना इसको कहा जाता है ज्ञान। अभी इसी ज्ञान के बिना गति सद्‍गति नहीं है। जब यह जाने तब उसके जानने से फिर हमारी जो कंप्लीट स्टेज है उसको फिर हम अभी पाएंगे । भाई कैसे पाएंगे इसीलिए फिर परमपिता परमात्मा कहते हैं कि वह फिर मेरे पावर से, उसके लिए तेरा मेरे से योग चाहिए। क्यों, योग क्यों चाहिए इसीलिए क्योंकि मेरे से तुम को ताकत लेने की है। अभी तो तुम निर्बल हो गए हो ना और निर्बल तो उस स्टेज पर आ नहीं सकते हैं। निर्बल को बल देने वाला, गाते हो ना, तो बल देने वाला चाहिए ना तो इसीलिए फिर सुप्रीम सौल, जो वह पावरफुल है उनके द्‍वारा अभी तुम्हें पावर लेने की है इसीलिए फिर उसको भी जानना पड़े, जिसको फिर गॉड कहो परमात्मा कहो तो परमात्मा को भी जानना पड़े जिससे हमारा संबंध है। उससे हमको वह ताकत अथवा बल लेने का है जिसके आधार से फिर हम ऊंचे उठें।

ऊंचा हमको वह उठाएगा जिसका फिर गायन भी है भई पतित को पावन करने वाला। तो पतित हो गए नीचे, निर्बल और वो उसको पावन करने वाला, ऊंचा उठाने वाला। पावन माना पवित्र पवित्र माना ही वह ऊंची स्टेज अथवा सुख की स्टेज तो यह सभी चीजें भी समझने की है ना। बाकी ऐसे नहीं है कि बस पतित पावन ऐसे ही ऐसे । नहीं, पावन माना सुख, पतित माना दुख ऐसे नहीं पतित माना सुख। तो अभी है ही पतित दुनिया तो ऐसे नहीं कह सकते हैं कि अभी दुनिया सिविलाइज्ड होती जाती है, अभी दुनिया बहुत सुधरती जाती है यह भी दुनिया बहुत सुखी होती जाती है, भाई जब है ही पतित दुनिया तो वह सुख कहां से आया। पतित में सुख नहीं है और पावन में फिर दुःख नहीं है, यह भी तो समझने की बात है। ऐसे नहीं है कि जब पावन है तभी भी दुःख है, जब पतित है तभी भी दुःख है ऐसा भी नहीं है । पावन तो फिर दुःख नहीं पतित तो फिर सुख नहीं तो यह भी हिसाब सभी समझने के है ना। भले इस दुनिया में सुख है परंतु वह उस पावन दुनिया की भेंट में सुख नहीं है दुख है क्योंकि पावन दुनिया का जो सुख है उसमें कोई दुख का नाम निशान नहीं है और इस दुनिया के अभी पतित दुनिया के यानी पतित दुनिया के सुख में दुःख है बहुत इसीलिए वह सुख भी दुःख बराबर हो जाता है। इसीलिए बाप कहते हैं वह पावन दुनिया का जो सुख है ना उसमें सदा सुख है उसमें कोई ऐसी दुख की बात नहीं है इसीलिए उसको सुख की दुनिया कहेंगे तो सुख और दुख को भी समझना चाहिए ना।

बाकी ऐसे नहीं है कि बस सुख और दुःख यह ऐसे ही चलते रहते हैं, यह सदा से ही चला आया है, सदा से ही होता रहता है, सब सदा से है । नहीं, सदा से यह सभी स्टेजिज कैसे चली है, यह स्टेज बाय स्टेज सृष्टि की भी है। सदा से ही ऐसे थोड़ी कहेंगे यह सदा से ही वृद्ध है या सदा से ही बाल है, नहीं स्टेजीज बदलती रही है। तो यह भी सब समझना है ना कि हम पहले बाल थे, उससे फिर अभी युवा या वृद्ध स्टेज पर आया हूं तो वह जो बदली है उस बदली का भी हमे फिर सभी हिसाब किताब, नॉलेज होना चाहिए ना। अभी हमको फिर उसी स्टेज पर जाना है जो हमारे वह जेनरेशंस थे सदा सुख की तो यह सभी चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझने का है इसीलिए बाप कहते हैं कि यह समझ जो है ना इस समझ को ज्ञान कहा जाता है जिसका नाम मशहूर है ना कि भाई ज्ञान बिना गत नहीं है तो इसी ज्ञान बिना, इसी समझ के बिना जिसके जानने से तुम सदा सुखी हो जाएंगे। उसमें सब आएगा ना एवर हेल्थी, एवर हैप्पी सब आ गया फिर उसमें कोई डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, बैरिस्टरी इन सब बातों की कोई दरकार नहीं । फिर कोई बैरिस्टरी की दरकार रहेगी? ना कोई चोर होगा, ना चकारी होगी, ना कोई ऐसी बात होगी, ना कोई फिर जज होए ना कोई बैरिस्टर बनने की दरकार ही नहीं रहेगी। ना रोग होगा, ना डॉक्टर होंगे, ना फिर हॉस्पिटल्स होंगे, क्यों होंगे तो कहते हैं तुम्हारी देखो मैं ऐसी स्टेज बनाता हूं जिसमें तुमको सदा सुख हो। फिर तुमको कोई भी ऐसी बातों की जरूरत नहीं रहेगी। तो यह सभी

बैठ करके बाप समझाते हैं कि तुम मनुष्य की क्या असुल स्टेज है और वह स्टेज कब आती है, अभी वो टाइम है इसी टाइम पर ही मैं आ करके तुमको समझाता हूं क्योंकि मैं इसके बीच में भी आकर के समझाऊं, नहीं, जो ऐसे समझते हैं कि द्वापर के अंत में आया था परमात्मा, यदा यदा ही, लिखा है ना वह गीता में तो वह समझते हैं की द्वापर के अंत में आया था और आ करके उसने अधर्म नाश और धर्म स्थापना का काम किया था। अभी द्वापर के अंत में तो अधर्म हुआ ही नहीं ना, अधर्म का नाश करने का टाइम कब है जब कलयुग हो और कलयुग की भी पिछाड़ी हो तो अधर्म नाश भी तभी होगा न। द्वापर के अंत के बाद तो अधर्म बढ़ता है, कलयुग शुरू होता है तो जब अधर्म शुरू होने का टाइम है तब क्यों आएगा, अधर्म तो अभी बढ़ता है उस समय, द्वापर के बाद तो और ही कलयुग होना है, कलयुग को फिर तो और ही घोर कलयुग होना है और ही वृद्धि में जाना है तो जो चीज अधर्म की वृद्धि की ओर जानी है तो उसके बीच में आकर क्या करेगा। इसीलिए ना टाइम कौन सा है इसीलिए कहते हैं कि जब डिस्ट्रक्शन का टाइम हो ना । तो डिस्ट्रक्शन का टाइम है जबकि कलयुग के अंत का समय है इसीलिए कहते हैं मैं आता तब हूं और मैं आ करके फिर इस दुनिया का डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन का काम और कंस्ट्रक्शन का काम ऐसे करता हूं। तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं इसीलिए मेरा आना और मेरे ज्ञान देने का भी कौन सा टाइम है तो जब चक्कर भी पूरा हो तभी तो सारा

चक्कर भी समझाऊं ना। अभी चक्कर चलता ही रहता है बीच में क्या समझाऊं? आधा समझाऊं? नहीं, मैं सारा समझाता हूं कि भाई पहले शुरू कहां से हुआ, अभी पूरा यहां आ करके हुआ है अभी फिर से शुरू होने का है, फिर यह रिपीट होने का है। वह कैसे होता है तो कहते हैं जब पूरा होने पर है तभी आ करके समझाता हूं कि कहां से यह शुरू हुआ था, अभी कहां तुम्हारी जेनरेशंस अभी पूरी होती है । अभी फिर वही जेनरेशंस चलेंगी जो पहले थी। तो हिसाब भी समझाने में आएगा जब सारा हिसाब पूरा होगा ना। तो हर चीज अपने नियम पर देखो यह मकान, मकान भी कहेंगे भाई पहले यह नया बना, पीछे आहिस्ते आहिस्ते नए से फिर.... एकदम तो पुराना नहीं हो जाएगा ना, नया था, पीछे आहिस्ते आहिस्ते काफी टाइम के बाद फिर पुरानापन चलेगा। फिर पुराना भी ऐसे नहीं है झट से पुराना, आहिस्ते आहिस्ते पुराना होगा। लास्ट में आकर ऐसी कंडीशन हो जाती है जो उसको गिराना पड़ेगा या तो गिर जाएगा। तो यह सभी चीजें समझने है कि हर चीज में अपना नियम है ना नया फिर पुराना अपने अपने टाइम पर तो यह सृष्टि के लिए भी पहले नई कहेंगे पीछे पुरानी । ऐसे नहीं कहेंगे अभी नई हुई है। नहीं, यह पुरानी है तो पुरानी को पतित कहेंगे और पतित को दुखी कहेंगे और नई को सतयुग कहेंगे और सुख कहेंगे तो यह भी हिसाब समझने के हैं ना । तो ऐसे नहीं कहेंगे कि आगे दुनिया कुछ थी नहीं या आगे कुछ जानते नहीं थे। नहीं, आगे जो थी पहले, तो वह सुख की थी, अभी इसको दुःख की कहेंगे। तो यह भी

सभी चीजें हिसाब को समझना है कि नया कौन सा, पुराना कौन सा। इस दुनिया का भी नया और पुराना भाग है इसीलिए सतयुग और त्रेता को नया कहेंगे, द्वापर और कलयुग को पुराना कहेंगे। ऐसा नहीं है कि द्वापर कलयुग को नया कहेंगे और सतयुग त्रेता को पुराना कहेंगे, नहीं तो फिर उसको गोल्डन एज सिल्वर एज क्यों कहते हैं । तो यह सभी चीजों को समझना है कि यह हमारी सृष्टि का भी नियम कैसा है और जो नया है तो नए में जरा नयापन होगा, पुराने में पुरानापन होगा और पुरानी में जरूर दुख होगा नई में ही जरूर सुख होगा, नहीं तो नई क्यों कहते हैं। तो अर्थ सहित बातें चाहिए ना। तो यह सभी चीजों को समझना है बाकी ऐसे नहीं दुनिया ऐसे ही चलती है या दुनिया बिना हिसाब से चलती है। नहीं, दुनिया का भी अभी जो टाइम है तो उसी पर ही बैठ करके बाप अभी यह ज्ञान अथवा समझ देता है कि अभी यह समझो कि अभी यह पुराना अभी इसकी एज अथवा समय आ करके पहुंचा है डिस्ट्रक्शन का तो अभी इसके लिए डिस्ट्रक्शन चाहिए। वृद्ध के बाद फिर मृत्यु की स्टेज तो अभी फिर इसका मृत्यु। मृत्यु कैसे होगा दुनिया का तो डिस्ट्र्क्शन इसी तरीके से । आत्मा तो इम्मोर्टल चीज है ना, तो वह भी बैठकर समझाते हैं कि आत्मा को तो नाश करने का सवाल ही नहीं है आत्मा तो काटे काटी नहीं जा सकती, जलाए जल नहीं सकती डुबाए डुबोई नहीं जा सकती। आत्मा तो इम्मोर्टल है लेकिन आत्मा के ऊपर जो यह आवरण कहो या मेलापन चढ़ा है उनको साफ होना है बाकी है तो

इम्मोर्टल चीज ना। ऐसा नहीं है कि वह कोई विनाशी चीज है, है इम्मोर्टल परंतु उनके ऊपर सिर्फ यह मैल चढ़ा है। अभी उसकी मेल को साफ करने का है और फिर यह जो शरीर है जो इतना सब वृद्धि हुआ है उन शरीरों को फिर नाश करने के लिए यह डिस्ट्रक्शन का, तो उससे शरीर नाश होंगे और आत्माएं फिर प्यूरीफाइड होंगी और फिर प्यूरीफाइड हो करके फिर अपने समय पर जिस जिस का पार्ट है उसका अपना पार्ट नंबरवार चलेगा। बाकी आत्माएं फिर अपने स्टॉक घर में होंगी तो वह भी बैठ करके सारा सर्कल समझाते हैं कि कैसे आत्माएं जाती है फिर आती हैं । यह इतनी संख्या जो बढ़ती है यह इतनी आत्माएं कहां से आती है जरूर है कि कोई सोल्स का स्टॉक घर है जहां से ये आत्माएं आती हैं । जो मरते हैं वह भी जन्म लेते हैं दूसरी स्टॉक भी आती है। जरूर आती है तभी तो वृद्धि है ना, नहीं तो यह संख्या कहां से बढ़ती है, इतनी सोल्स कहां से आती हैं। तो यह भी सभी चीजें हिसाब समझने का है कि कोई स्टॉक घर है जिसको इनकॉरपोरियल वर्ल्ड भी कहा जाता है परंतु वह वर्ल्ड कोई ऐसी नहीं है जैसे कई समझते हैं कि वहां शायद कारोबार चलती है या रूह या आत्माऐं आपस में कुछ बोलती है या कुछ वहां दुनिया चलती है। नहीं, वह तो डेड साइलेंस एकदम बस आत्माएं निवास करती हैं साइलेंस में । बाकी ऐसे नहीं है कि कहीं रूहों की दुनिया है जिसमें घूमते हैं फिरते हैं, बात करते हैं, हंसते हैं या कुछ उनका धंधा व्यापार या ऐसे दुनिया कुछ चलती है नहीं। दुनिया का मतलब है वहां स्टॉक

बहुत है, आत्माएं, सोल्स बहुत है। बाकी ऐसे नहीं दुनिया का मतलब है यह कामकाज चलता है जैसा यहां चलता है, नहीं। वह तो एक ही मनुष्य सृष्टि। तो यह भी सभी चीजें समझने की है नहीं तो कई समझते हैं रूहों की भी दुनिया है, जहां यह रूह आपस में बोलते हैं यह करते हैं, वह करते हैं। नहीं, वहां बोलने की बात नहीं, बोलना तो शरीर के आधार से होता है बाकी आत्माएं वहां बैठकर के कुछ आपस में करती हैं ऐसी कोई बात नहीं है। वह बस साइलेंस बस, नो पार्ट, यानी की पार्ट नहीं तब तलक साइलेंट। इसको कहा ही जाएगा साइलेंस वर्ल्ड। इनकॉरपोरियल वर्ल्ड कहो या साइलेंस वर्ल्ड कहो। अभी यह है टॉकी वर्ल्ड। देखो यह है ना टोकी, यह भी टॉकी वर्ल्ड कहा जाएगा जिसमें हम आकर के शरीर का आधार लेकर के फिर यह टॉक में आते हैं और फिर वहां जहां देवताओं का साक्षात्कार होता है उसको कहेंगे मूवी या सबल वर्ल्ड कहो या मूवी। तो साइलेंस एंड मूवी एंड टॉकी। तो यह सभी हिसाब बैठकर के बाप समझाते हैं अभी कहते हैं कि इस दुनिया का अभी आकर के परिवर्तन का टाइम हुआ है। परिवर्तन का, चेंज का, बाकी ऐसे नहीं दुनिया एकदम खत्म, दुनिया ही ना हो। नहीं, यह जो कलयुगी तमोप्रधान दुनिया है उसके खत्म होने का यानी इस स्टेज के खत्म होने का बाकी इसका माना यह नहीं कि दुनिया के खत्म होने का । दुनिया की अभी जो स्टेज है आयरन उस स्टेज के खत्म होने का अभी टाइम है। तो आयरन एज खत्म हो करके फिर क्या होगा? इसी दुनिया पर गोल्डन एज । तो

गोल्डन एज में भी तो मनुष्य होंगे ना । गोल्डन एज माना थोड़ी ही कुछ ना हो। नहीं, मनुष्य, वो मनुष्य की लाइफ की स्टेज बहुत ऊंची रहेगी और जिसमें फिर वह जेनरेशंस ऊंची स्टेज के चलेंगे जिसमें फिर सदा सुख होगा । तो ये सभी लाइफ और लाइफ की जेनरेशंस और फिर मनुष्य का यह सभी हिसाब किताब को भी समझना है ना। तो बाप बैठकर के यह सभी बातों को समझ जाते हैं और समझा करके फिर कहते हैं कि अभी कौन सी स्टेज है अभी उसके लिए प्रिपेयर होने का है। अभी यह तुम्हारी दुनिया के अथवा संसार के मृत्यु कहो या डिस्ट्रक्शन कहो, अभी उसका टाइम है इसीलिए कहते हैं अभी फिर जो नई जेनरेशंस चलेंगे उसके लिए अपना सेपलिंग लगाओ। लगाना अभी है ना, तो उसके लिए क्या करो क्योंकि यह कर्म क्षेत्र है, कर्म भूमि है इसमें जो बोएंगे, सो पाएंगे यह भी इसका नियम है। इसमें मैं भी कोई लॉ ब्रेक करूं मैं भी नहीं कर सकता हूं। मैं वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी का मतलब यह नहीं है कि मैं चाहूं तो आसमान को नीचे करूं या धरती को ऊपर करूं। वह समझते हैं भगवान है ना, भगवान तो कुछ भी कर सकता है। हां वह तो मुर्दा पड़ा है ना उसको जिंदा करके दिखलावे, परंतु वो कहते हैं कि मेरे भगवान होने का या शक्ति का कोई यह अर्थ नहीं है कि मुर्दा पड़ा है तो जिंदा करूं तो मेरी शक्ति है । मुर्दा पड़ा है तो जिंदा कर दो तो क्या फिर मुर्दा नहीं बनेगा? बनेगा ना । वह तो आत्मा को तो शरीर छोड़ने का ही है वह तो बात ही नहीं है ना । अच्छा उसको जिंदा करूं

भला फिर क्या हुआ? फिर क्या मुर्दा नहीं बनेगा ? फिर भी बनेगा, तो जो नियम है हर चीज का वह तो चलेगा ही ना। इसीलिए उनमें कोई महत्वता मेरी थोड़ी ही है कि मैं यह शक्ति दिखलाऊं। या कोई कहेगा कि भगवान है तो आसमान को नीचे करें धरती को ऊपर करें, ये उल्टा पुल्टा करे कुछ। यह तो मेरा काम नहीं है ना। वह तो हर तत्व का भी अपना नियम है। यह तत्व भी जो पांच तत्व है उसका भी अपना नियम है। वह भी अपने गोल्डन सिल्वर कॉपर एंड आयरन एज अनुसार वह भी स्टेजिस में आते हैं । अभी देखो यह भी आयरन एज वाले हैं ना यह तत्व। यह अर्थक्वेक होता है, यह फ्लड्स होती है, यह तूफान होते हैं यह सभी होते हैं तो देखो यह भी अभी डिसऑर्डर में हो गए हैं ना । यह भी अभी तमोप्रधान हो गए हैं । हर चीज में अभी तमोप्रधानता है। तो यह सभी चीजें बैठकर के बाद समझाते हैं अभी हर चीज बिगड़ चुकी है और फिर मैं आता हूं तो हर चीज को सुधारता हूं। मनुष्य आत्मा को सुधारता हूं उससे फिर सब चीजें सुधरती है। फिर संसार सुधरा हुआ फिर उसमें सदा सुख है । फिर कोई चीज एक दो को दुख नहीं देती है। अभी सब चीजों से दुख मिलता है। तो यह सभी बातों को समझना और किस तरह से यह संसार अथवा सृष्टि का यह सब चलता है इन्हीं का नाम ज्ञान है । इसी का में नोलेजफुल हूं । मेरे पास इसकी फुल नॉलेज है, यह सारे कर्म का कैसे खाता चलता है, कैसे नंबरवार आते हैं, यह सब क्या है इन सभी बातों को मैं जानता हूं। इसीलिए कहते हैं इस ज्ञान को कोई

मनुष्य यथार्थ रीति से नहीं समझा सकता है क्योंकि सभी मनुष्य तो इसी चक्कर में आने वाले हैं ना। जो चक्र में आने वाले हैं वह इन बातों को नहीं जानेंगे, जो इस चक्र से बाहर है तो वह बाहर वाला उसके पास ही यह सब नॉलेज रहती है। वह मैं हूं ही एक इसीलिए मैं जानता हूं और इसीलिए ही मैं आ कर के फिर सुनाता हूं। क्योंकि वह जानकारी रहती ही मेरे पास है और सबसे भूल जाती है। और तो आते हैं चक्र में भूल जाते हैं तो इसीलिए कहते हैं मुझे आना पड़ता है और मैं आकर की फिर ये नॉलेज समझाता हूं। तो सुनाने वाला, समझाने वाला मैं एक ही हो गया ना इस बात का। और मेरे द्‌वारा ही बल मिलने का है क्योंकि बल देने वाला भी मैं हूं। मेरे में ही वह पावर रहती है और तो सब अपना पावर इस जन्म मरण के चक्कर में आकर के खो देते हैं। मेरे पास ही रहता है इसीलिए फिर मैं आता हूं वह अपना बल देने के लिए। तो यह तो सीधी बातें है ना इसमें कोई मूंझने की बात है ही नहीं। इसीलिए मुझे परमात्मा, इसीलिए मुझे सर्वशक्तिमान, इसीलिए मुझे जानी जाननहार, इसीलिए मुझे ज्ञान का सागर, इसीलिए मुझे सब यह जो महिमा करते हो। मेरी महिमा कोई मुफ्त की थोड़ी ही है मैंने काम किया है और मेरा कुछ कर्तव्य है । मैंने यहां बहुत ऊंचा काम किया है इसीलिए महिमा है। जैसे मनुष्य की भी महिमा क्यों होती है भाई गांधी गांधी गांधी सब करते हैं देखो, भाई बड़ा आदमी, अच्छा था, ऊंचा था ऐसा। ऊंचा तो माना यह नहीं कि बड़ा बड़ा था एकदम, ऐसा तो बड़ा नहीं था ना।

बड़ा माना अपने कर्तव्य में बड़ा था। उसने कुछ कर्तव्य अच्छे किए इसीलिए उनको सब याद करते हैं, उसकी सब महिमा करते हैं। तो मनुष्य की हिस्ट्रीज में भी जो बातें आती हैं भाई फलाने मनुष्य ने यह काम किया, इसने अच्छा किया तो देखते हैं जिन्होंने भी अच्छा काम किया तो उनका नाम आता है कि हां भाई इसने ऐसा ऐसा किया। इसमें फिर उन आदमियों की फिर हिस्ट्री आदि में नाम लेते हैं उनकी हिस्ट्री बनती है। तो परमात्मा की भी जो महिमा है इतनी तो उसने भी हमारे लिए कुछ काम किया होगा ना। बाकी ऐसे थोड़ी ही है कि बस हां ऊंचा बैठा ही है, बस उसकी शक्ति चलती रहती है या उसका यह काम सब होता ही रहता है तो ऐसी तो नहीं है न। नहीं, उसने आकर के कुछ किया है, वह क्या किया है, हम मनुष्य को ऐसा ऊंचा उठाया है और इस तरीके से उठाया है इसीलिए उसकी महिमा है। तो अभी समझना है ना कि परमात्मा की महिमा और परमात्मा का कर्तव्य कैसा है और उसी के ही कर्तव्य के ऊपर उसकी महिमा है जो अभी फिर से आकर के कर रहा है । और सबने महिमा गाई है देखो जो भी धर्म पिताऐं भी आए हैं ना उन्होंने उनकी महिमा गाई है। गुरु नानक देव ने भी उसकी महिमा, क्राइस्ट बुद्ध उन्होंने भी तो इशारा उसकी तरफ उठाया है ना । क्राइस्ट को थोड़ी ही कहेंगे हेवेनली गॉडफादर। हेवेनली गॉडफादर वह भी कहेंगे तो उसको निराकार परमपिता परमात्मा को । परंतु वह कई समझते हैं हेवेनली गॉडफादर उसका माना वो हेवेन में बैठा है। नहीं उसने हेवेन दुनिया को बनाया

है। हेवेन एंड हेल इस दुनिया का नाम है बाकी हेवेन कोई बना नहीं रखा है जहां बैठे हैं। नहीं हेवेन भी बनना इधर ही है ना। हेल भी इधर ही है हेवेन भी इधर ही है। हेल ये बना है, हेवेन से हेल बना है, अभी हेल से फिर हेवेन होने का है बाकी ऐसे नहीं है हेवेन कोई बनी बनाई दुनिया रखी है जिसमें जाना है । नहीं, इसको बनना है। तो अभी इसको बनना है तो जिस चीज को बनना है उसको बनाने वाला भी तो पावरफुल चाहिए ना । इसलिए बाप कहते हैं मैं आता हूं इसको हेवेन बनाने के लिए। कैसे बनाता हूं वो बैठ करके समझाते हैं इसीलिए फिर मेरा नाम क्रिएटर क्योंकि मैं बनाता हूं ना। यानी है तो बनी बनाई, दुनिया तो अनादि है, परंतु मैं आकर के हेल से हेवेन करता हूं उसकी पावर देता हूं इसीलिए मेरा नाम हो जाता है भाई क्रिएटर। बाकी ऐसे नहीं कभी दुनिया है ही नहीं, मनुष्य है ही नहीं, जिसको मैं क्रिएट करता हूं परंतु इसी तरह से क्रिएट करता हूं। तो यह सभी चीजें बैठ करके समझाते हैं । तो यह सभी बातें कोई डिफिकल्ट थोड़े ही हैं या कुछ मूंझने की तो नहीं हैं न। यह तो बहुत साफ बातें हैं जिसको समझ करके और उसी पर पुरुषार्थ रखने का है । अभी ऐसे बाप से..., अभी वह फरमान करते हैं कि मुझे याद करो और मैं जो फरमान करता हूं अपने कर्मों को अच्छा पवित्र रखो तो उसी से तुम्हारा यह अधिकार जो है हेवेन का वो तुमको प्राप्त होगा, इसमें दूसरी क्या बात है। तुम वैसे भी तो कर्म करते ही हो परंतु वह कर्म तुम्हारे रोंग होते जाते हैं। उससे तुम्हारा दुख बनता जाता है

इसीलिए बाप कहते हैं अभी समझ से करो। मैं जो समझ देता हूं उसको लेकर के अच्छी तरह से करो, मेरे डायरेक्शंस पर रहो, मेरी मत पर चलो तो फिर तुम्हारे जो एक्शन वह राइट रहेंगे और उसकी आधार से तुम सुखी रहेंगे और क्या है। हमको अपने एक्शंस से ही तो बनना, बिगड़ना यह सारा हमारा उसी पर आधार है। उसको हम क्या बनाएं, कैसे बनाएं उसको उसकी हमको समझ चाहिए, वह अभी समझ दे रहा है, उस पर चलना है। तो इसमें बाकी क्या मूंझना है ? तो ऐसी बातों को समझ कर करके और अपना ऐसा पुरुषार्थ रखना है। अच्छा। देखो कितनी सिंपल है, कितनी सहज है और इसके लिए देखो कितने वेद, शास्त्र, ग्रंथ, पुराण और कितने हठयोग, प्राणायाम फलाने फलाने कितनी बातें बनाई हुई है। नहीं तो है तो बिल्कुल सिंपल। मनुष्य को बनना, किससे है मनुष्य नीचे ऊंचा होता है वह बातें साफ कर कर के बाप समझाते हैं कि चलना तो उसको कर्म से ही है लेकिन कर्म को खाली सुधारते चलो । सुधारों कैसे, वह चीज समझाते हैं। उसके लिए तुमको कोई विद्वान, उसके लिए तुमको कोई पंडित, उसके लिए तुम को कोई आचार्य बनने की ऐसी तो बात ही नहीं है ना। तुमको अपने कर्म को स्वच्छ बनाने का है तुमको उससे बनना है । तो स्वच्छता क्या है, पवित्रता क्या है वह बैठ करके स्पष्ट समझाते हैं कि मेरे बिना तुम पवित्र बन ही नहीं सकते हो मेरे योग के बिना । इसीलिए कहते हैं भले तू कोई देवता का योग कर, भले कोई मनुष्य का योग कर किसी के भी योग से तू पवित्र नहीं बन

सकता। पापों को दग्ध करने का बल मेरा बल देगा तो इसीलिए बाप कहते हैं मेरा योग अथवा मेरे से कनेक्शन। जब तक मेरे से कनेक्शन नहीं है जैसे बत्तियों का कनेक्शन मेन पावर हाउस से है न, अगर वहां न हो तो बत्ती में लाइट नहीं आएगा, बल नहीं आएगा ना वो। इसी तरह से तेरा कनेक्शन मेरे से है। मैं हूं मेन पावर हाउस तो उससे कनेक्शन चाहिए ना। अगर उससे कनेक्शन ना होगा तो वो ताकत नहीं मिलेगी और ताकत ना मिलेगी तो पाप दग्ध ना होंगे और पाप दग्ध नहीं होंगे तो तू आगे नहीं चढ़ेगा इसीलिए कहते हैं मेरे से। समझा। कहते हैं मेरे योग बिना यह गति सद्गति होगी नहीं। जानते हो ना ऐसे बाप को और दादा को ? अभी बाप दादा में कोई मूंझता तो नहीं है ना? कैसे वह परमपिता, परमात्मा इसके तन में क्यों आता है या इसमें ही कैसे आता है कोई मूंझता हो तो बताए । यह क्या गीत सुनाना चाहता है?

39. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान और परमात्मा से सर्व संबंध

ओम शांति ।

परमपूज्य और परमपिता परमात्मा को जान गए हो ना? अर्थात अपने बेहद बाप को समझ गए हो ना? आत्मा ही तो समझेगी ना ? आत्मा भी ऐसे इन आंखों से तो नहीं देखी जा सकती है। देखी जा सकती है ? नहीं, तो परमात्मा को भी तो भले इस आंखों से नहीं देखते हैं परंतु जानते हैं कि मैं आत्मा आंखों से देखी जाने वाली नहीं हूं परंतु मैं जानती हूं ना मैं आत्मा हूं । आत्मा को भी तो जाना जाता है ना तो परमात्मा को भी जाना जाता है । भले दिव्य दृष्टि से देखें भी परंतु भल देखा ना, फिर भी तो उसके लिए जानना पड़े कि वह देखी हुई चीज क्या है। उनका ऑक्यूपेशन, उनका पहचान तो फिर बुद्धि से जानी पड़ेगी ना। बुद्धि से जान करके फिर उसे याद रखना है। ऐसे भी नहीं है कि जो दिव्य दृष्टि से देखते हैं तो उस ज्योति रूप का बैठ करके ध्यान करने का है। ऐसा भी नहीं है कि उनका कोई ध्यान रखने का है। नहीं, यह तो बुद्धि से कि बाप है, जैसे बच्चे को बाप सारा दिन याद रहता है कोई वह सामने फोटो रखकर के थोड़े ही याद करता है या कई मानसिक भी करते हैं मूर्ति को ला करके सारी पूजा मानसिक करते हैं, कई यह सब करते हैं भक्ति मार्ग में तो बहुत हैं

ऐसा भी नहीं है। यह तो हम बाप के हैं प्रैक्टिकल और बाप को याद रख कर के बाप का जो फरमान है, बाप की जो आज्ञा है उसी को पालन करते रहना है। यह है उनका फरमान बाकी ऐसे नहीं कहता है कि सारा दिन मेरा चित्र बुद्धि में रखकर खाली तू उसको देखते रहो। नहीं, कहते हैं याद रखो बुद्धि से, मुझे भूलना नहीं । ऐसे नहीं कि मुझे देखते रहो। कहा भी है, गीता में भी कहा है मनमनाभव, मन को निरंतर मेरे में स्थित कर अर्थात मन को स्थित कर माना बुद्धि से तो याद में चीज आएगी ना । बाकी ऐसे भी नहीं है कि उसका बैठ करके ध्यान कर या उसके चित्र का, उसके लिए तो फिर बैठना पड़ेगा न। अगर उसके चित्र का बैठकर के ख्याल करें तो उसको ख्याल करने के लिए फिर बैठना पड़े, मानसिक भी बैठना पड़े । नहीं, वह कहते हैं नहीं तू मेरा ध्यान रख, याद रख और मैं कौन हूं किसकी संतान हूं जैसे लौकिक रीति में भी बाप का, खानदान का, बाप के पोजीशन का ध्यान रखा जाता है ना बाकी सारा दिन बाप का फोटो, मानसिक भी फोटो घड़ी घड़ी फोटो उनको थोड़ी ही बैठ कर के देखेंगे। तो कौन सा बाप है, बाप का ऑक्यूपेशन क्या है, बाप की पोजीशन क्या है, मैं ऐसे बाप का बच्चा हूं और ऐसे बाप के बच्चे का क्या फर्ज है और मुझे भी बाप को फॉलो करना है, बाप के खानदान को, बाप के कुल को अथवा पोजीशन को कोई लग ना जाए कुछ चिट्ठा इसीलिए वह ख्याल रखेंगे कि हमारे कर्तव्य में कोई ऐसी बात ना हो । मेरा कर्तव्य अच्छा रहे और अच्छा कर्तव्य भी कैसे अच्छा होता है उसका भी बाप

ने बैठकर के समझाया है। तो यह सभी चीजें बुद्धि में रख कर के अपने एकशंस को ठीक रख करके चलना है यह है बाप से याद अथवा बेहद बाप के हम संतान हैं जो बुद्धि में रखने का है। गीता भी थी पहले पहले मनमनाभव कहा, फिर बीच में कहा, फिर एंड में कहा । तीन बार है उसमें मन मना भव का बैठकर के सुनाया है। तो आखरी में भी, पहले में भी और मध्य में, बीच में भी यह वार्निंग दी है कि बच्चे बाप को याद रख । तो मूल बात यही है और इसी से ही हमको बाप से बल मिलना है और अपने पापों को दग्ध करने का क्योंकि अभी तो पाप आत्मा है ना तो उसको अभी स्वच्छ बनाना है इसीलिए उसके याद की मदद लेनी है, तो पापों को नाश करके इसीलिए कहते हैं इसी से ही तुमको बल मिलेगा। इसीसे ही तुम्हारे कर्म भी ऊंचे रहेंगे । यहां पर भी तुमको ऊंचे कर्म का बल तब मिलेगा जब पाप का बोझा नाश होगा ना तब। अगर पाप का बोझा सिर पर होगा तो फिर तुम्हारा यहां भी कर्म, वो मैल चढ़ी हुई है, मैल उतरती जाए तो तुम्हारे को भी कर्म करने का रोशनी आवे इसीलिए बाप कहते हैं याद करो और अपने कर्म को भी संभालते और स्वच्छ बनाते चलो । तो यह तो मुख्य बातें बुद्धि में अच्छी तरह से रख लेने की है बाकी है नॉलेज सारा। बाकी नॉलेज के लिए तो देखो कई किस्म के हैं आज कितनी मत हैं, कितने विचार हैं कितने रास्ते कितने यह सभी बातें हैं। उसी के लिए फिर यह सब बातें फिर समझनी और समझानी पड़ती हैं। वास्तव कर करके कोई हमको बाप को जानने के लिए

इतनी सभी बातों के जानने की जरूरत नहीं है परंतु यह जरूरत तभी रही है क्योंकि दूसरे बिचारों ने बहुत-बहुत रास्ते बना रखे हुए हैं ना, अनेकानेक इसीलिए फिर उन्हीं बातों को फिर बैठकर के बाप कहते हैं कि समझो और दूसरों को समझाओ। तो दूसरों को समझाने के लिए फिर यह सभी इतने पॉइंट्स बुद्धि में रखनी पड़ती है और अपने भी कई जो बहुत काल से सुना है तो उन्हीं सभी बातों को भी जो उल्टी पड़ी हुई है ना बुद्धि में बातें तो उन्हों भी फिर किस तरह से अपने बुद्धि में भी लाने के लिए फिर बाप यह सब बातें समझाते हैं। तो यह सभी है समझने की बातें जो उल्टा पड़ा है उसको सुल्टा बनाने के लिए लेकिन बाप को जानने के लिए तो बड़ी सिंपल बात है। बस बाप है समझना है इसीलिए बाबा कहते हैं ना आजकल देखो आप लोग मुरलियों में पढ़ते हो बस एक ही प्वाइंट किसी से भी पूछ लो कि तुम्हारा बाप से, पिता से संबंध क्या है ? कहते हो ना परमपिता तो कहते ही हो तो ऐसे पिता कहते हो तो पिता से क्या संबंध रहा, परमात्मा से क्या संबंध रहा। बस वह पिता है ना, पिता है तो फिर पिता से क्या मिलेगा? वर्सा। तो बस उस पिता का होकर के रहो। पिता का होना क्या होता है ? बस पिता का हो जाए ना, बच्चा बन जाए, पिता का बच्चा तो बस उसका हो करके चलो । उसके लिए तुमको और बैठकर के साधन या क्रिया या कुछ और करना है, कुछ करने की क्या बात है। बाप के लिए, बाप के रास्ते के लिए कोई क्रियाएं या कोई साधन इनकी क्या आवश्यकता है। बस बाप से जन्म

लिया और जन्म सिद्ध अधिकार हो गया । बाप के पास जन्म लिया और जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त होना ही है बस यह भी चीज ऐसे ही है। फिर वह कितनी सिंपल और सहज बात है अगर कोई समझे तो सेकंड की बात है। नहीं समझे तो फिर देखो उसके लिए फिर देखो कितना बैठ करके यह सब माथा खुटी हैं । तो यह सभी बाप बैठकर के अभी समझाते हैं कि बच्चे मुझे जानने के लिए, पर्सनली मेरे जानने के लिए कोई डिफिकल्टी नहीं है । डिफिकल्टी भी तुमको तभी जब ये सब समझना, पुरुषार्थ रखना, जो उल्टा बनाया है अपना तो उसको सुल्टा करने के लिए मेहनत है क्योंकि बहुत पुराने संस्कार तेरी बुद्धि में है ना तो उसको मिटाना, करना वह तो भाई उल्टा जो भरा है उसको सुल्टा करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। नहीं तो ऐसे तो कोई मेहनत कि मेरे जानने के लिए तो कोई मेहनत नहीं करते हो। मेरा जानना तो बड़ा सिंपल है बाप हूं बस और क्या है, उसको सिर्फ भूल गए हो अभी पता लगा है और बाप को बस बाप समझ करके चलना है कि मैं उसका पुत्र हूं ऐसा समझ करके बस उसको पकड़ लो, उस संबंध को पकड़ लो। जैसे संबंध पकड़े जाते हैं ना, देखो लड़का लड़की है, फिर जानते तो नहीं है ना आपस में। बस उसको खाली संबंध का पता लगा कि यह मेरा अभी पति बना तो बस संबंध पकड़ लिया ना। क्या पकड़ लिया, संबंध पकड़ लिया ना। पकड़ लिया तो बस वह जीवन का साथी, वह जीवन की साथिन। तो बन गए फिर देखो फिर वह सारा कैसा। है तो वैसे तो बस लड़के लड़कियां ही हैं

परंतु खाली संबंध का जोड़ मालूम होने से बस वह जुट जाती हैं और जुट जाती है तो जीवन देखो एक दो के प्रति हो जाती है ना। इसी तरह से यह भी हमको अभी पता चला है उनके प्रति हमारी जीवन हो चुकी तो वो लगाना पड़े ना संबंध का । तो इसीलिए बाप कहते हैं कि बस मेरे लिए तो सिंपल बात है बाकी इतनी सब जो भी तुमको जानना अथवा यह सब करना है वह तो तुम्हारे अंदर जो उल्टा भरा है ना उसको बैठ करके साफ करने के लिए हेल्प और फिर दूसरों को समझाने के लिए यह जो तुम्हारा उल्टा भरा हुआ है उसकी माथा खोटी तुमको ही करनी पड़ती है। बाकी मुझे जानना तो बड़ा सिंपल है मुझे जानने में कोई बड़ी बात थोड़ी ही है कि ऐसा हूं, बड़ा हूं, यह हूं वह हूं । नहीं, मैं तो देखो क्या हूं बिंदी, इतना छोटा। तू भी कितनी है, उसको क्या जानना है। नहीं, बस पता पड़ा कि हम आत्मा बिंदी हैं, ज्योति रूप हैं। वह भी परमात्मा है, क्या उसका क्या बैठकर के वर्णन करें। मनुष्य का भी वर्णन है दो आंखें हैं, दो कान है इतना वर्णन करना पड़े, उनके लिए तो इतना भी वर्णन नहीं वह तो बिंदी की बिंदी, उसमें क्या वर्णन करें । तो कहते हैं मेरा तो कोई रूप का भी वर्णन बड़ा नहीं है और मेरे लिए तो कोई इतना बैठकर के कोई वर्णन करने की बात तो है ही नहीं। तो यह सारी चीजों को समझने का है इसीलिए बाप कहते हैं बड़ा सिंपल, बहुत सिंपल है बाकी यह सभी इतनी बातें ये विस्तार, ये सब बातें समझाना क्योंकि पहले से पड़ा हुआ है न इसीलिए ये सब समझाने में आता है। तो ऐसे ये सब

बाप बैठ कर अभी समझाते हैं। सिंपल तो लगता है ना। कोई भारी नहीं है बहुत सिंपल है, इसीलिए ऐसी सिंपल नॉलेज बाप ही समझा सकते हैं बाकी बिचारे दूसरे मनुष्य तो देखो कितने बड़े-बड़े वेद, बड़े-बड़े शास्त्र, बड़े-बड़े ग्रंथ, अठारह पुराण, चार वेद और फिर और अनेक शास्त्र होंगे तो देखो कितने-कितने यह सब बैठकर के बनाए हैं। वेद जब चार वेद पढ़ो, अठारह पुराण पढ़ो, यह करो, वह करो तब कोई ज्ञान थोड़ा बहुत कुछ बुद्धि में आए इसीलिए बैठकर के इतना पढ़े तो पहले से ही है भाई चार वेद पढ़े, अठारह पुराण पढ़ें तभी जाकर ज्ञान कुछ लगे परंतु बाप कहते हैं अभी इसके लिए तुमको कोई वेद शास्त्र या बैठ करके कोई हठयोग साधनाएं क्रियाएं करनी है या इतना ये सब, या तो कहेंगे कई जन्म भक्ति करो पीछे ज्ञान, ऐसी ऐसी बातें बता रखी थी ना इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे ऐसी कोई बात नहीं है । बाप को ऐसी कठिनाई से पाना ऐसी कोई बात नहीं है। बाप तो बस बाप है, तू बच्चा हो जा वह बाप है। बाप को पाने के लिए इतना बैठ करके मेहनत करने की तो कोई बात ही नहीं है, परंतु वह जब स्वयं बाप आता है ना तब आकर के सहज करके बतलाते है । बाप ही तो सहज करके बच्चे को देगा ना । बाप क्या बच्चों को कहेगा कि मेरे पाने के लिए तू ऐसा कर, ऐसा ऐसा कर? देखो मेरे पाने के लिए तुमको क्या करना है बड़ा सहज और मैं खुद ही आता हूं तुमको अपना गोद का बच्चा बनाने के लिए अथवा अडॉप्टेड बच्चे बनाने के लिए तो मैं खुद ही आता हूं न। तो देखो बाप तो कहते हैं मैं खुद

आता हूं और आकर कहता हूं अभी मेरे बनो तो फिर बनना चाहिए ना। बाप की सुननी चाहिए और सुनकर माननी चाहिए । अभी बाप तो अच्छी बात बताते हैं हमारे ही कल्याण की बतलाते हैं। इसमें नुकसान ही क्या बताया कोई, क्या नुकसान पड़ा है ? हमारे अपने जीवन में हम देखें तो क्या नुकसान पड़ा है , कोई नुकसान की तो बात है ही नहीं । यह भी जीवन अच्छी रही और जरूर है जो यह जीवन अच्छी है तो उसकी भविष्य भी, भले कोई कहे, चलो कोई कैसे समझें भविष्य स्वर्ग रहेगा। नारी से लक्ष्मी बनेंगे, नारायण बनेंगे चलो, परंतु भविष्य अच्छा तो रहेगा ना। अच्छा और क्या रहेगा। इस दुनिया में तो अच्छा और कुछ है नहीं। हम अगर इतना श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर रहे हैं और यही है कि नहीं हमको कोई इस दुनिया के धन की इस दुनिया के मर्तबे की तो इस दुनिया से निराली कोई चीज मिलेगी तो निराली और क्या होगी? दूसरी दुनिया का तो फिर यही भविष्य प्रारब्ध है ना और क्या है। तो भले यह समझते तो है ना कि नहीं यह जो पुरुषार्थ कर रहे हैं वह हम कोई धनवान बनने का पुरुषार्थ नहीं है। यह कोई हम इस दुनिया में मर्तबे पाए उसके लिए पुरुषार्थ नहीं है। इस दुनिया के मर्तबे वाले भी देख लिए, इस दुनिया का सब देख लिया उसके लिए तो नहीं है ना। यह पुरुषार्थ नया है और नई कोई चीज पाने के लिए है। तो नई क्या और पाएंगे? जरूर नई दुनिया की पाएंगे ना और जानते हैं कि नई दुनिया भी अभी आने की है। अभी टाइम भी देख रहे हैं और आसार भी सामने हैं । अभी

यह तो कोई कल्पना कहे या कोई कहे की नहीं यह तो सब बनावट है, अपनी बातें बना रखी हैं। इसमें अपने बनाने की क्या बात है? यह तो प्रैक्टिकल है ना। सामने समय भी दिखाई दे रहा है, आसार भी नजर आते जाते हैं। वह भी तो विवेक और बुद्धि है, बड़े-बड़े लिखे पढ़े साइंस वाले भी खुद कहते हैं कि यह सब दुनिया की हालात दिखाई दे रही है कि हां दुनिया का डिस्ट्रक्शन है। वह तो कॉमन बुद्धि भी जो अभी पढ़े लिखे हैं वह भी समझते हैं। तो हां वह तो बुद्धि कह रही है, इसमें तो कोई ऐसा नहीं है कि हम अपनी कल्पना लगाते हैं। नहीं, सो भी आसार देखते जाएं और इधर यह भी देखते हैं कि इतना जो ऊंच पुरुषार्थ है। जो पुरुषार्थ अब तक करते आए हैं वह तो दूसरा पुरुषार्थ है ना, धन के लिए, पुत्र के लिए या दुनिया में मर्तबे के लिए या जो भी कुछ किया है उनका फल है। अभी यह तो पुरुषार्थ ही निराला है। हम तो देह सहित देह के सर्व संबंध से बुद्धि हटा करके अपने बाप से लगाते हैं वो नई चीज पाने के लिए हमको इस दुनिया का नहीं चाहिए। तो हमारा इस दुनिया से तो कोई रहा ही नहीं ना। हमारा है नई तो जरूर है कि नई दुनिया का तो नई दुनिया में ही मिलेगा और जानते हैं कि जरूर दुनिया का परिवर्तन, यह दुनिया ही दिखा रही है कि दुनिया का परिवर्तन होने का है। तो अभी जरूर है कि उसी में ही तो पाएंगे ना। तो इसमें तो कोई ऐसी भी मूंझने की आवश्यकता नहीं है कौन कहता है कैसा स्वर्ग, कौन कहता है ये सब। भला ऐसी ऐसी दुनिया चल करके भी कितना समय रहेगी। बस इसी

तरह से चलते रहे चलते रहे यह भी कोई दुनिया होती है। तू जरूर है कि दुनिया की कंडीशन चेंज होती आई है, जैसे कि हमारी लाइफ में हम इतनी छोटी लाइफ में भी देखें तो दुनिया चेंज होती आई है। हमारी इतनी लाइफ में भी चेंज है हम देखते थे अनाज कितने के हैं भाई, गेहूं भाई इतने के हैं, बाबा की लाइफ में देखें बाबा तो कहते हैं हम भी सौदा करते थे, सीधे का पहले काम था , जवाहरी काम तो पीछे उठाया था सीधा समझते हो ? अनाज बेचने वाला, तो उनके बाप का कुछ ऐसा काम था कि उसी दुकान पर हम काम करते थे । तो बाबा भी कहते हैं कि पता नहीं गेंहू कितने बतलाते हैं की इतना दाम सस्ता आता था , आज तो देखो गेहूं नहीं मिलता, चावल नहीं मिलता यह नहीं होता वह नहीं होता देखो कितना । तो देखो थोड़े ही बरसों की बातों में भी , एक ही आयु में भी कितना डिफरेंस है और यह हमारी हिस्ट्री में भी कितनी चीजों जो सस्ती मिलती थीं अब देखो । तो दुनिया का अब का टाइम यह टाइम कहां तक जा करके अपना यह होगा । और यह हमारी हिस्ट्रीज भी हमको बतलाती है, चाहे शास्त्र के कुछ चिह्न भी हमको दिखलाते हैं कि दुनिया का चेंज कैसे होता आया है तो उसी तरीके का अभी टाइम आ करके पहुंचा है। तो यह सभी बातें कोई अगर विचारवान विचार शक्ति पूरी लगा करके और उसी ढंग से सोचे समझे न बाकी अभी तो दृष्टि मिली है न। त्रिकालदर्शी बाप ने तीनों कालों का बैठकर के नॉलेज क्लियर दिया है और इन्हीं बातों को लेकर के कोई अच्छी तरह से सोचे और समझे

बैठ करके तो आएगा उनको कि हां, क्योंकि अभी तीन काल की दृष्टि मिली है ना, तीनों कालों का। काल समझते हो ना ? टाइम, काल कहा जाता है टाइम को । तो अभी तीन काल यानी आदि, मध्य, अंत कि हम आदि कहां से आए, फिर कैसे मध्य में फिर चेंज आया, ये माया का राज्य आया फिर कहते हैं अभी उसकी भी एंड होगी ना। आई है जो चीज फिर जाएगी भी न, जिसको आना है उसको जाना भी है यह तो अनादि चक्र का खेल ही है। तो माया का राज्य आया ना, ऐसे तो नहीं है ना शुरू से ही सदा से ही था। आया, आया तो फिर जाएगा भी ना। फिर जैसा था वैसा होगा। यह तो गीता में भी वर्णन है कि यह राजे भी और हम और तुम आगे भी मिले थे, अभी भी मिले हैं फिर मिलेंगे, ऐसा कहा है ना। तो यह रिपीट होता है और यह कैसा चक्र चलता है इन सभी राजों को भी समझना है न। तो ये अभी यह जो कलयुग आया है यह कलयुग कई बार आया है यही फिर सतयुग बना है। फिर सतयुग का भी तो जरूर टाइम जैसे कलयुग का भी टाइम चला है ना, इतना टाइम चला है, हम इस तमोप्रधान अवस्था में होते, दुख अशांति कोई आज की थोड़ी ही है आई है, ये तो चलती आई है । बढ़ती बढ़ती, बढ़ती , बढ़ती चलती जाती है इसी तरह से हमारा सुख शांति का जैनरेशंस में चलने का होगा न समा। तो यह सभी चीजों को बाप बैठकर के समझाते हैं कि इन सब बातों को, नियमों को हर चीज का अपना अपना नियम है। आकाश किस तरह का है उसका अपना नियम है, पानी का अपना है

नियम, पृथ्वी का अपना है, हर एक चीज की जो बनावट है उसका अपना अपना है, यह कैसे होता है इसका भी परिवर्तन, यह सभी बातें। तो बाप कहते हैं हर चीज को जैसी है उसी को वैसा जानना उसको कहा जाता है ज्ञान। ऐसे नहीं है कि है ऐसी और उसको फिर कैसे भी जाने, कुछ भी समझे, यह कोई समझ थोड़ी ही होती है। यह है क्या है कौन है, इसको हम क्या भी कहें, क्या भी समझे तो बस ये समझ है ? नहीं, जो है, जैसी है जो है उसको उसी तरीके से समझना कि भाई हम को पहचान है इसकी कौन है, यह फलाना है , तो जो है जैसा है उसकी ओरिजिनल पहचान को ही पहचान कहेंगे न । बाकी कैसे भी जाने कि ऐसा नहीं है ऐसा है कैसे भी जानो, बस कुछ भी समझो तो ऐसे ही बस ऐसे ही जानना, उसको जानना तो नहीं कहेंगे न। इसलिए परमात्मा ने भी कहा है कि मैं जो हूं, जैसा हूं मुझे उसी तरीके से ही जानना उसका नाम ही तो ज्ञान है इसीलिए वह यथार्थ नॉलेज और यथार्थ समझ जो जैसा है उसकी नॉलेज तो मैं ही दूंगा न। मैं अपनी भी दूंगा और दूसरों की भी मैं दूंगा क्योंकि मेरी क्रिएशन है ना, मैं जानता हूं ना सबको । मैं तो सबको जानता हूं। मुझे ही तो भूले हो ना। अपने को भी भूल हो तो मुझे भी भूले हो । अपने को ही नहीं जानते तो मुझे क्या जानेंगे । self-realization ही नहीं है तो गॉड रियलीजेशन क्या होगा। जिसको सेल्फ रियलीजेशन नहीं, सेल्फ को नहीं जानते हैं तो गॉड को क्या जानेंगे। तो अपने को नहीं जानते हैं वो तो तुम्हारी लाइफ से सिद्ध है। अगर जानते होते तो

लाइफ तुम्हारी खड़ी होती है अच्छी, बाप तो ऐसा कहेगा ना। अगर सेल्फ रियलाइजेशन है कि हम मनुष्य क्या है तो मनुष्य की लाइफ कितनी ऊंची होती है । नहीं, जानते हो तभी तो दुख अशांति में पड़े हो । तुम्हारा ना जानना तुम्हारी लाइफ से सिद्ध है। तुम्हारी लाइफ दुख अशांति में पड़ी है वहीं तो दिखलाता है कि तुम अपनी लाइफ को नहीं जानते हो। तो जिसको सेल्फ रियलाइजेशन नहीं है वह गॉड रियलाइजेशन क्या करेगा । तो इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे अपने को समझो अच्छी तरह से और तुमको तुम्हारी समझ और मैं अपनी समझ मैं ही दे सकता हूं। तो इन सब बातों को अच्छी तरह से समझते और अच्छी तरह से बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने का अभी लगाओ और लगाकर के बाप से अच्छी तरह से बेहद का वर्सा प्राप्त करो, तो लेना चाहिए ना, तो लग जाओ। बाकी ऐसी ऐसी बातों में मूंझने की तो कोई बात ही नहीं है । बाप है बाप से अपना लेना है, लेना भी जरूर कर्म अच्छे करेंगे तब लेंगे, मुफ्त का थोड़ी ही मिलेगा । बाप है तो क्या ऐसे ही देगा? नहीं, वह बाप भले कहे जैसा है वैसा चलो यह बाप तो फिर इसका है ही अर्थ की बनेंगे इसीलिए तो बाप ने बैठकर के कहा है न कि बच्चे विकारों को और इन सब बातों को छोड़ो इन सब से निकलो तो यह सब समझने का है ना । आ करके बुद्धि योग हटाते हैं। छोड़कर कहां जाएंगे, दुनिया में तो होंगे ही ना, छोड़कर कहां जाएंगे। जिधर भी जाएंगे दुनिया में तो होंगे ना परंतु बाप कहते हैं बुद्धि से इसकी आसक्ति ममत्व छोड़ो। तो बुद्धि से

छोड़ेंगे तो फिर तुम्हारे बुद्धि बल से फिर प्रैक्टिकल में नई दुनिया बसाऊंगा इधर अर्थात तेरे लिए नई दुनिया बनाऊंगा। तो अभी देखो नई दुनिया बना रहे हैं। अभी चलना है ना नहीं दुनिया में ? उसके लिए देखो बाप भी, बनाने वाला भी नया, कोई मनुष्य तो नहीं है ना । इतना समय हमको मनुष्य सुनाते हैं, अभी उनकी सुनते हैं परमात्मा की । तो अभी बाप सुनाता है तो उनका सुनाने वाला भी नया और बातें भी नई है । देखो नई बातें हैं ना जो सुनते आए परमात्मा सर्वव्यापी है, फलाना है यह बातें, जो भी कुछ सुनते आए। अभी बाप आ करके सब बातें नई कि नहीं, मेरा धाम है, मैं अपने घर का निवासी हूं, मेरा घर है, ठिकाना है ऐसे थोड़े ही है मेरा कोई ठिकाना नहीं है सब मैं वासी हूं । नहीं, हां सब में मेरी याद है वह बात एक अलग है बाकी मैं तो जो हूं वह तो मैं अपना निराकारी दुनिया का निवासी हूं। मेरा ऑक्यूपेशन यह है, मैं ऐसे हूं, सब बात बैठकर के बाप समझाते हैं।

40. याद की यात्रा

रिकॉर्ड:

कौन आया मेरे मन के द्वारे.....

कौन आया मेरे मन के द्वारे, इसका शायद कई ऐसे भी अर्थ समझते होंगे क्योंकि कॉमन तो मनुष्यों की बुद्धि में यही बात है ना परमात्मा अंदर है। बाहर भी है अंदर भी है, बैठा है परंतु कौन आया मन के द्वारे उसका मतलब यह नहीं है कि परमात्मा आया। नहीं, वह आया नहीं अंदर उसकी याद आई। किसकी याद आती है ना तो याद ऐसी चीज होती है जिसकी याद होती है तो कहने में आता है वह तो जैसे हमारे पास बैठा है, जैसे हम उनके पास बैठे हैं परंतु ऐसे नहीं है वह हमारे में आया बैठा है या हम उसमें बैठे हैं लेकिन याद, उसका एक महत्व रूप कहा जाता है भाई इसकी याद ऐसी है जैसे कि हम उससे अलग नहीं है। ऐसी याद है जैसे हम उसके साथ ही हैं तो एक याद कि वह महत्वता है परंतु है तो याद ना। ऐसे थोड़े ही कि वह चीज हमारे में अंदर बैठी है, आए बैठी है या आई है हमारे अंदर । नहीं, याद उसकी आई है । हमारे अंदर उसकी याद है । तो यह है सभी परमात्मा के प्रति क्योंकि अभी तो अपनी दृष्टि उधर है ना। कहा जाता है ना जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि तो अभी अपनी बुद्धि में है एक की

ही याद । किसकी याद है? परमपिता परमात्मा की। तो इसीलिए अभी उनकी याद आई है, जाना है उसको समझा है और उसकी याद अभी रखने की है क्योंकि उसका फरमान है। याद कहो या योग कहो बात एक ही है। योग अक्षर हम बहुत काम में नहीं लाते हैं याद कहते हैं क्योंकि याद जरा सिंपल चीज है ना। योग से कई समझते हैं भाई हां योग, योग अक्षर से वह कइयों ने सुना हुआ है ना बहुत और योग के नाम पर बहुत आश्रम, बहुत ऐसी चीजें मनुष्य ने बनाई है आसन लगाना, आसन के भी कई किस्म बैठकर के बतलाते हैं ऐसा आसन, फिर ऐसा आसन, फिर ऐसा वैसा कई बातें सिखाते हैं ऐसे बहुत योग आश्रम नाम के बहुत आश्रम है। तो यह जो बहुत चीजें चली हुई है ना तो हम योग अक्षर कहेंगे तो कईयों की बुद्धि उधर चली जाएगी कि यह योग पता नहीं कोई आसन का योग है या क्या करना है इसीलिए बिचारे कई यहां आते हैं ना तो पूछते हैं कि आप का योग क्या है, क्या करना है। अभी करने को तो कोई हाथ पाव से या आंखों से या कानों से या आंख मूंदनी है या कान मूंदना है या कुछ बैठकर करना है तो करने की तो कोई चीज नहीं है ना। यह तो है बुद्धि की लगन। अभी उसी लगन को तो बुद्धि से याद रखना है चलते फिरते खाते-पीते अभी इसी याद को, फिर याद ऐसी अटल चाहिए ना। अभी वह तभी होगी जब हमको उनके साथ अपना क्या रिलेशन है जिससे हमारी याद रहेगी, किसका किसके साथ लव होता है तो भाई हां उससे हमारा क्या रिलेशन है क्या है वह तभी तो उनके प्रति हमारा लव

जाएगा ना। तो यह भी चीज है जिसको हमें याद करना है उसके साथ लव चाहिए। अभी लव भी तभी बैठेगा जब हमको नॉलेज हो उसके साथ हमारा रिलेशन क्या है। वह लगता क्या है हमारा। उससे हमको प्राप्त क्या होने का है । हां प्राप्ति की कुछ टेंप्टेशन होगी तो लव भी बैठेगा, कुछ टेंप्टेशन नहीं होगी तो लव क्यों बैठेगा। देखो कोई स्त्री की या किसकी लगन किसी के साथ लग जाती है तो टेंप्टेशन है ना प्यार की, सुख की कोई टेंप्टेशन है तो उधर लव जाता है । तो हमारे को भी अपना मालूम हो ना की उसको हम लव करें अथवा प्रेम करें उसको याद करें तो हमको क्या मिलना है उससे। हमारी कोई टेंपटेशन का पता होना चाहिए ना । तो जिसमें टेंप्टेशन होती है बुद्धि उधर खींची जाती है फिर जिस्मानी प्रेम में या कोई चीज में, कोई वस्तु में वो टेंप्टेशन खींचती है। देखो पैसे में किसका लव होता है तो फिर पैसे की तरफ बुद्धि जाएगी कोई और चीज में लव होगा उधर बुद्धि जाएगी। बैठा होगा किधर बुद्धि उधर जाएगी जहां प्रेम होगा, जहां आसक्ति होगी। तो अभी हमको लगानी है उसके साथ तो उसका भी हमें पता होना चाहिए ना कि उससे हमें होना क्या है, मिलना क्या है, बस ऐसे ही याद करें खाली? तो ऐसे तो बैठेगी नहीं तो वह नॉलेज होना चाहिए। तो नॉलेज है कि हमारी तो बहुत उसके पास जायदाद यानी मिलने की चीज है । वह कौन सी मिलने की चीज़ है ? जो हमारी लाइफ की, जो लाइफ है ना लाइफ कहा जाता है पीस एंड प्रोस्पेरिटी वह जो हमारी है लाइफ की चीज जिसको ही लाइफ कहा जाए, बिना

पीस एंड प्रोस्पेरिटी के यानि सुख शांति के सिवाय लाइफ इज नॉट लाइक। कहते हैं यह लाइफ ही नहीं है। जिंदा होते भी मनुष्य अगर अशांत और दुखी है तो कहते हैं ना इससे तो मरे भले यह तो जिंदे मुर्दे हैं। जब मनुष्य दुखी होता है तो कहता है ऐसे जीने से फायदा ही क्या है जब दुख आता है तो उसको माना सुख और शांति। परंतु सुख भी कंप्लीट शांति भी कंप्लीट चाहिए ना। अभी हमारी जो कंप्लीट चीज है ना वह उनके पास है तो हमको अभी वो टेंप्टेशन है कि उनसे वह लेना है। हमारे लाइफ की जो लाइफ है सुख और शांति वह उससे लेना है, अभी कैसे लेवे? तो अभी उनसे कैसे लेना है तो उसके लिए फिर हमको अभी मत मिलती है डायरेक्शंस मिलते हैं कि हां बी प्योर, पवित्र बनो तो अपने को पवित्र रखो। यह पांच विकार जो है शत्रु तेरे वह निकालो और अपने कर्मों को भी अच्छा रखो। उसका अपने में ख्याल रखो, सावधानी रखो और मुझे याद रखो तो याद से भी तुम्हारे पास जो है वह दग्ध होंगे। तो देखो उसको याद करने से भी हमको मालूम है ना क्या फायदा मिलेगा और हम अपने कर्मों को भी क्यों स्वच्छ रखें क्योंकि हमारे कर्म ऊंचे रखेंगे तभी हमको पीस एंड प्रोस्पेरिटी सुख शांति मिलेगी इसीलिए वह जो हमारी टेंप्टेशन है ना वह हमको उसी की तरफ खींचेगी। तो अभी यह है बुद्धि की याद, उसी को ही योग कहने में आता है। बाकी योग कोई और ऐसी चीज नहीं है इसीलिए हम याद ज्यादातर कहते हैं क्योंकि याद कॉमन भी है और बड़ी सिंपल चीज भी है। इसके लिए कोई बैठकर के शारीरिक

क्रिया करनी है या कोई ऐसी बातें नहीं है इसीलिए इसको याद कहना और अच्छा है ईजी है क्योंकि उन्होंने योग के नाम के ऊपर बहुत ऐसी-ऐसी बातें लगा रखी है ना तो मनुष्य बिचारे मूंझे हुए हैं इसीलिए बिचारे कोई कष्ट की बात यहां दिखाई जाए ना, अगर भाई कांटों पर सोना है तो समझेगा शायद यह कोई बड़ा योग है परंतु यह कांटे कोई ऐसी बात नहीं है। कई कई बिचारे करते हैं बहुत ऐसी क्रियाएं करते हैं कहीं-कहीं तो देखो जहां आप लोग जाते होंगे यह मेले वेले होते हैं ना वहां आप लोग देखते होंगे आते हैं ऐसे कांटों पर भी सोते हैं, ऐसे खून विचारों का बेहता रहता है । बहुत हठ करते हैं इसको कहा जाता है हठयोग । तो कई हठ के तरीके हैं जिससे समझते हैं कि अपने को शायद कष्ट देंगे तभी भगवान मिलेगा। अरे! भगवान कहता है तू अपना खून बहेगा तभी मैं मिलूंगा ऐसी कोई बातें थोड़ी है। बहुत ऐसे तरीके करते हैं बिचारे कष्ट के । आप लोग जो ऐसी ऐसी बातों में अनुभवी होंगे तो देखते होंगे बहुत ऐसे ऐसे तरीके करते हैं । तो यह सभी बातें हैं जो बैठकर के बाप समझाते हैं कि बच्चे इन्हीं हठ से, यह अपने को तकलीफ देना, आपने को हठ से बैठाकर यह सब करना इससे मेरी प्राप्ति का कोई ताल्लुक नहीं है । यह मेरी प्राप्ति जो है ना वह तो जो मैं बतलाता हूं उसी तरीके से हैं। वह तो तुम्हारे कर्म जो है ना उसी को तुम को स्वच्छ बनाना है जिसके आधार से तुम्हारी प्रालब्ध बनेगी । बाकी तुम अपने को कष्ट दोगे यह करोगे यह नहीं। बाकी हां यह पांच विकार निकालना है उसी के लिए कुछ सहन करना

पड़े ना तो करना है। बाकी ऐसे नहीं जान बूझकर अपने को कष्ट देना है, जानबूझकर वह तो हठ हो जाता है ना। तो जानबूझकर कोई अपने को कष्ट देने से नहीं है हां अपना जीवन बनाने में कई बातें आती हैं, देखो कई कहेंगे बुरा है, यह है देखो यह गाली वाली सुननी पड़ती है ना थोड़ी बहुत। दुनिया बुरा कहेगी यह कहेगी वह कहेगी कि इनको क्या हुआ है ऐसी कई बातें आती हैं तो यह सभी बातों को भी ना सोच कर कि इन्हीं बातों का कोई ख्याल ना करके इनको सहन करके अपने में ही, हम तो सत्य के लिए कर रहे हैं ना । सत्य के लिए देखो गांधी जी ने सत्य के लिए किया, अगर गोली भी लग गई तो उसने क्या कहा कि इसके लिए अगर हमारी जान भी गई ना तो कोई बड़ी बात थोड़ी ही है, तो देखो जो सत्य के ऊपर रहे हैं उन्होंने सितम भी सहन किए हैं। क्राइस्ट की हिस्ट्री है तो देखो वह सत्य पर रहा तो फिर उनको सितम भी मिला ना टॉर्चर्स । तो ये टॉर्चर्स उन्होंने सहन किया किसके लिए? सत् के लिए। तो हां हम अगर सत पर चलते हैं उसके लिए हमको दुनिया कुछ बुरा भला कहती है या कोई भी ऐसी बातें आती हैं उन्हीं को हमको सहन करके हमको पार होना है तो इसी चीजों में हमको हिम्मत रखनी है। हां इसी कांटों से पार होना है बाकी ऐसे नहीं जानबूझकर कांटो के ऊपर चलना है परंतु हां यह विघ्न आते हैं यह हमारे सामने बातें आएंगी क्योंकि हम युद्ध करते हैं पांचों विकारों से तो पांच विकार भी हमारी हो अपोजिशन करेंगे ना। फिर विकारी संबंध यह सभी बातें अपोजीशन करेंगे तो यह

सब होगा, इसकी फिर परवाह नहीं करनी है। इसीलिए बाप कहते हैं हां इन्हीं के लिए तुमको कुछ सहन भी करना पड़े तो यह तो देखो जिन्होंने थोड़ा बहुत काम भी किया उन्हों को भी टॉर्चर्स सहन करने पड़े। किसकी हिस्ट्री में नहीं है जिन्होंने किया सब को सुनना पड़ा। किसी को गाली खानी पड़ा, किसी को क्रॉस पर चढ़ना पड़ा, किसी को कुछ होना पड़ा, कुछ ना कुछ थोड़ा बहुत सहन किया है बाकी ऐसे नहीं है और नाम भी आज उन्हों का ही है । जिन्होंने सहन किया, जिनको उस समय ना समझ करके किसी को मार दिया , किसी को कुछ किया आज नाम भी तो उन्हीं का है ना फिर जितना जितना जिसने जैसा जैसा किया । तो बाप कहते हैं हां इसी में क्योंकि सत मार्ग है इसमें तुम्हारे यह विकार का संबंध जो है ना उल्टे खाते का बना हुआ वह अपोजिशन भी करेंगे पर इसमें हिम्मत रखने की है ना इसमें घबराना नहीं है। तो यह है कांटे यह आते हैं न प्रैक्टिकल लाइफ में। प्रैक्टिकल लाइफ बनाने में तो यह सारी बातें आएंगी अभी उसी में से पार होना है । बाकी ऐसे नहीं है कि अपने को कोई कष्ट देने की बात है , बाकी यह जो आती है नेचुरल कष्ट के रूप आएंगी यह सब उसी से पार होना है। तो यह है अपना प्रैक्टिकल लाइफ बनाना और बाप कहते हैं मुझे ऐसे याद करो। बाकी ऐसे नहीं है कि इस योग के लिए या याद के लिए कोई कष्ट की बात है । याद तो फिर बाप है बाप के लिए क्या हमको कष्ट उठाना है । अरे! बाप है ना खाली बाप को ही समझे तो बाप कहने से देखो रस आता है ना।

खाली परमात्मा कहने से मजा नहीं आता है फीका फीका लगता है । परमात्मा, गॉड, अब गॉड क्या भगवान, फीका ही फीका । अब कहें भगवान, भगवान हमारा पिता है अरे! भगवान , कोई मिनिस्टर का बच्चा होना तो कितना उसका करें अरे मिनिस्टर, मिनिस्टर हमारा बाप है, हम मिनिस्टर का बच्चा है, हम गवर्नर का बच्चा है, हां हम राजा का बच्चा है, हम फलाने का है , होता है ना, वह भी तो अपने पोजीशन का, बाप के खानदान का, बाप के कुल का भी नशा होता है ना तो हम किसके बच्चे हैं? परमात्मा, परमपिता के जो पिता है सब का रचता है उसी की तो हम रचना है परंतु हम प्रैक्टिकल , ऐसे नहीं कहने वाले तो सब कह देंगे कि हां हमारा वह पिता है। किसी से भी पूछेंगे कि परमात्मा तुम्हारा क्या लगता है कहने को तो कह देंगे पिता लगता है। पिता लगता है तो फिर पिता कहां पुत्र कहां पड़ा है। तो जैसा पिता तो फिर पुत्र को भी फॉलो करना चाहिए ना यह भी सभी बातें हैं ना तो देखो समझ जब फॉलो करेंगे तब तो फिर हम अपनी क्वालीफिकेशंस में श्रेष्ठ बनेंगे नहीं तो कैसे बनेंगे । तो यह सभी चीजों को समझने की बातें हैं ना तो अभी बाप बैठ करके समझाते हैं कि मैं पिता, मेरी क्वालीफिकेशंस और तुम बच्चे की क्वालीफिकेशंस भले तुम बच्चे बड़े भी बनोगे क्वालिफाइड भी बनोगे लेकिन तुमको तो फिर मनुष्य क्वालिफाइड होना है ना मैं तो कोई मनुष्य नहीं हूं ना मैं तो हूं ही निराकार। देखो उनका गुण कौन सा है नॉलेज फुल उनको कहते हैं और उनको सबका सागर कहते हैं शांति

का सागर और सुख का सागर यानी सुखदाता, शांति दाता, पतित पावन अभी वह किसको कहेंगे परमात्मा को। मनुष्य को फिर पतित पावन नहीं कहेंगे, उनको क्या कहेंगे पतित से पावन होने वाला। मनुष्य पावन बनता है और बनाने वाला परमपिता परमात्मा तो बनाने वाला वो और बनने वाले तो हम हैं ना। बनाने वाला भी वह और बनने वाले भी वही वह कैसे होगा ऐसे होगा ? पतित पावन भी हम बने और बनाने वाले भी हम ही ऐसा भी नहीं है तो फिर अगर ऐसे हो तो यह बातें तो नहीं हो ना लेकिन नहीं बनाने वाला वह इसीलिए उसे कहा जाता है तू पतित पावन करने वाला। देखो गांधीजी भी गाता था न, वह कहते थे रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम गाता था, बहुत गाता था। जिन्होंने भी उनके लेक्चर सुने होंगे गीता के ऊपर, जब गांधी जी थे तो बहुत सवेरे सवेरे में गीता के ऊपर सुनाते थे। उनको गीता के ऊपर बहुत प्रेम था। वह बड़े लेक्चर देते थे गीता के ऊपर तीन तीन बजे आदमी जाते थे वो सवेरे सवेरे करते थे तो जिनको शौक होता था वह तीन बजे भागते थे सुबह को , सुबह सुबह को तो वह बड़ा गाते थे अच्छी तरह से पतित पावन सीता राम रघुपति राघव राजा राम तो वह बेचारे गांधी भी पूरे पतित पावन, एक तरफ तो कहते थे पतित पावन सीताराम कि हां वह सीताओं का जो राम है वह पतित पावन है परंतु वह जो पीछे लगा दिया है न रघुपति राघव राजा राम तो सब की बुद्धि चली जाती थी वह त्रेता वंश का था ना राजाराम उसकी तरफ परंतु कोई जो वह त्रेता

वंश का राजाराम था उसने कोई पतितो को पावन नहीं बनाया था वह तो खुद पावन बना था और उसको किसने बनाया था, वह त्रेता वंशी राजाई का पद उसको कहां से मिला, निराकार परमात्मा से। तो पतित पावन तो निराकार है उसको भी राम कहा जाता है। राम परमात्मा को भी कहा जाता है ना। वैसे तो ऐसे बहुत अपना नाम राम रखवाते हैं यहां भी बहुत होंगे किसी का रामचंद्र नाम होगा, किसका कैसा नाम होगा। नाम होते हैं ना किशन चंद्र, रामचंद्र यह तो नाम रखते हैं बहुत, इसी तरह से एक त्रेता वंशी राजा भी था जिसका नाम राम था और उसकी औरत का नाम सीता था परंतु कईयों ने जा करके उसी राम के लिए समझा है कि उसी ने आकर के पतितो को पावन बनाया परंतु उसने नहीं बनाया। उसको भी खुद उस त्रेता वंशी राजा को भी यह राजाई पद और ऐसा पवित्र राजा किसने बनाया ? परमात्मा ने, निराकार ने तो वह राम निराकार। तो यह सारी चीजें समझने की है ना इसीलिए पतित पावन निराकार परमात्मा । बाकी वह मनुष्य नहीं है जो एक राजा हो करके गया है त्रेता वंश का उसकी बात नहीं है । उसको भी यह प्रालेब्ध मिली, परमात्मा ने यह जो शिक्षा दी है उसी के द्वारा वो किंगडम बनी है। तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए मनुष्य और परमात्मा की महिमा में फर्क है। मनुष्य ऊंचे में ऊंचा सर्व कला संपूर्ण कहेंगे, सर्वगुण संपन्न तो सर्वगुण संपन्न कैसे यही जो देवता है श्री लक्ष्मी श्री नारायण श्री सीता श्री राम, यह मनुष्य की स्टेटस है ना। तो हमको क्या बनना है? सर्वगुण संपन्न,

16 कला संपूर्ण यानी हर एक मनुष्य के लिए यह बात है नर अथवा नारी को और परमात्मा बनाने वाला जो बैठकर के यह नॉलेज दे रहा है। तो यह सभी चीजें समझना है ना इसलिए परमात्मा के ऑक्यूपेशन को और मनुष्य का ऑक्यूपेशन कि ऊंचे में ऊंचा मनुष्य कौन सा और परमात्मा का क्या कर्तव्य है इन्हीं सभी बातों को यथार्थ जानना है। ऐसे नहीं है कि परमात्मा और मनुष्य आत्मा एक ही है या उसको मिलकर एक ही हो जाना है , नहीं । मनुष्य ऊंचे में ऊंचा यह स्टेटस, उसको सर्वगुण संपन्न बनना है। और वह बनेगा तभी जब अपने विकारों से अपने को निमृत करेगा और पापों को दग्ध करेगा उसके योग से। तो यह सब चीजें समझी ना? अभी टाइम ही हुआ है इसीलिए आप लोगों को अभी छुट्टी देते हैं। थोड़ा सुनना लेकिन प्रैक्टिकल में बहुत लाना है। ऐसे नहीं सुनना बहुत काम में थोड़ा लाना है, नहीं काम में बहुत लाना है सुनना थोड़ा है । हां ऐसी धारणा को बनाओ ।अच्छा 2 मिनट साइलेंस। साइलेंस का मतलब है याद करो । आई एम सोल असुल साइलेंस है। साइलेंस से फिर टॉकी में आए हैं ना, यह टॉकी वर्ल्ड है। असुल हम साइलेंस वर्ल्ड की है, पीछे यह टॉकी में आई हैं अब फिर हमको जाना है साइलेंस वर्ल्ड और फिर टॉकी वर्ल्ड में, प्योर टॉकी वर्ल्ड में यह इम्प्योर टॉकी वर्ल्ड है। यह इम्प्योर हो गई है ना अब फिर प्योर जिसको हेवेन कहेंगे उसमें आना है। तो अभी वह हेवेन बनता है परंतु बनेगा हमारे कर्मों से ना । तो अभी साइलेंस, सन ऑफ सुप्रीम सौल उसको याद करना है ।

(रिकॉर्ड बजा ओम नमः शिवाय) हमारे मन में तुम्हारी भक्ति जगी, भक्ति का मतलब है याद । भक्ति का मतलब यह नहीं है पठन-पाठन पूजन माला सिमरन नहीं, यह याद। तो जिसके मन में अथवा बुद्धि में तुम्हारी याद जगी उसने ही तुमको पाया। बाकी यह तो पठन-पाठन पूजन यह तो इसको कहेंगे भक्ति मार्ग। यह तो बैठकर कुछ उल्टे सुल्टे काम करने से फिर भी अच्छा है परंतु हमारी चाहिए बुद्धि की याद ना। अगर माला फेरे और बुद्धि में काम धंधा इधर-उधर तो फिर क्या हुआ उससे। नहीं, यह बुद्धि को लगाना है जिसमें इस गीत में भी है ना हाथ के मन के छोड़ के मन का मनका अर्थात बुद्धि की याद मैं उसको लगा। ऐसे नहीं यह हाथ के मनके यह हांथ से चलता रहे और बुद्धि इधर-उधर भटकती रहे इससे फिर क्या हुआ (एक भाई ने कहा हाथ चलता रहे और बुद्धि से याद करता रहे....) हां परंतु इसकी जरूरत नहीं है। यह आधार पकड़ने की भी जरूरत नहीं है इससे हाथ रोकना पड़े ना। हमको अगर रसोई पकानी है तो क्या उसको भूल जाना चाहिए, खाली माला जब हाथ में है तभी याद करें ? सारा दिन फिर माला रखनी पड़े न। नहीं, हम रसोई पकाएं ऐसा करते रहे तो याद करते रहे। हम सब कुछ काम करते रहे तो याद करते रहे। ऑफिस दफ्तर में फिर तो हमको सारा दिन माला ही लेकर बैठना पड़े न। परमात्मा ने कहा है निरंतर याद करो तो क्या करें इसीलिए बहुत बिचारे है ना वह माला पॉकेट में रख लेते हैं । उस में हाथ डालकर ऐसे ऐसे करते ही रहते हैं परंतु यह सब तो एक आदत

बन जाती है ऐसे ऐसे करने की । मुख से गाली देंगे हाथ से ऐसे ऐसे करेंगे वह एक आदत बन जाती है। नहीं, यह बात कोई ऐसी नहीं है कि बुरी है परंतु हमको तो चाहिए बुद्धि का योग ना इसीलिए हमको इन बातों की कोई जरूरत नहीं है यानी जरूरत नहीं है। एक होता है ना कि हां बस यही करना है तो कई समझते हैं बस यही करो पीछे बुद्धि कहां भी होए, क्या भी करें हम कोई भी विकारों में उल्टा काम कोई भी करें तो बस हां। और ऐसी बहुत हैं आदत हो जाती है ना, माला सिमरती है और नौकर से कहेंगे साथ में हां भैया यह काम करो राम-राम.. राम-राम राम-राम राम-राम.. यहां से ऐसे से करते ही रहेंगे और गाली भी देंगे वह बच्चा राम राम राम राम राम राम बहुत ऐसे ऐसे हैं जो आदत बन जाती है ना तो वो समझते हैं कि बस खाली राम-राम राम-राम ऐसे करना है, वो बुद्धि इसमें उसमें लगी रहती है उससे कुछ नहीं बना ना? बनाना तो बुद्धि योग से है ना। यह जो बनाई है ना यह समझाया है। इसको ऐसा नहीं है किसी सिमरने के लिए, यह अर्थ समझाया है इनका कि यह जो माला है यह यादगार है। ये जो माला सिमरते हो ना वह क्या है? वो यादगार है जो हम प्रैक्टिकल में प्यूरीफाइड बने हैं ना उनकी यादगार है . तो यह यादगार के लिए भक्ति मार्ग जैसे और चित्र रखे हैं ना परंतु यह चित्र पूजने के लिए तो खाली नहीं है ना या यह खाली सिमरने के लिए तो नहीं है ना तो देखो जैसे यह चित्र भी है ना यादगार है, वैसे यह भी यादगार है । वैसे तो शिवलिंग भी यादगार है ना परंतु इस यादगार

का महत्व समझना है कि यह काहे की यादगार है । ऐसे खाली उनका बैठकर के पूजन करने की तो बात नहीं है ना, इन्होंने क्या काम किया हमको ऐसा बनना है । यह यादगार है इसीलिए हम को ऐसा बनना है समझा। तो ऐसा बनाना है ना तो यह कैसे बने ? यह खाली माला सिमरने से थोड़ी ही बने, यह बने अपने कर्म को श्रेष्ठ करने से । तो कर्म श्रेष्ठ कौन सा है उसी को समझना है कि विकारों के बिना कर्म को कर्म श्रेष्ठ कहा है बाकी जो कई समझते हैं कि यह करने से ही कर्म श्रेष्ठ है ना वह नहीं इसीलिए समझाया । बाकी ऐसे नहीं है वह कोई बुरी बात है तभी तो कहते हैं ना नास्तिक से भगत अच्छा । यह जो हमने बताया पहले पहले ही बतलाया कि नास्तिक से भगत अच्छा लेकिन भगत से फिर ज्ञानी श्रेष्ठ है क्योंकि इन सब बातों का ज्ञान चाहिए ना समझा भूपालम। जी। बाकी ऐसा नहीं है कि यह कोई बुरी बातें हैं नहीं यह तो बतलाया ना।

मम्मा मुरली मधुबन

41. मामा का विशेषता - राजू भाई - 24-06-05

आज 24 जून हमारी मीठी जगदंबा मां का स्मृति दिवस है । हम सबने कल मम्मा का संदेश भी सुना, योग भी किया लेकिन सारे भारत में सभी सेवा केंद्रों पर आज का विशेष दिन मम्मा की स्मृति में योग की भट्टियां और कुछ माताओं के लिए कार्यक्रम चल रहे हैं। कुछ स्थानों से मेरी बात हुई फोन पर तो कहीं प्रोग्राम में माताओं के ग्रुप बुलाए हुए थे, कहीं योग की भट्टियां चल रही थी। मीठी मम्मा की विशेषताएं हम दादियों के द्वारा सुनते रहते हैं। जिन्होंने साकार में पालना ली है उनके सामने तो मम्मा की मूर्ति, वह चेहरा, वह पालना के सब दृश्य आ ही जाते हैं लेकिन हम सबने उनकी विशेषताओं को उनके महावाक्यों को सुना है, जानते हैं। यही छोटा हॉल जिसमें दोनों ही मात-पिता जब सामने बैठकर मुरली चलाते थे। उस समय की मुरलिया भी जो अभी कभी-कभी रिवाइज होती हैं, क्या मम्मा की विशेषताएं थी तो कल सब चारों तरफ से फोन करने लगे की मम्मा की विशेषताएं इस बार मधुबन से नहीं आई है जो हर साल भेजी जाती हैं । मम्मा की मुरली तो सब जगह पहुंच ही गई है लेकिन विशेषताएं नहीं भेजी थी। कल मम्मा की इकत्तीस विशेषताएं सबके पास भेजी हैं। आप सुनना चाहेंगे? अच्छा। तो हम सभी को एडवांस पार्टी के समाचारों का विशेष ध्यान रहता है क्या समाचार है

उनके पास क्योंकि सभी ब्राह्मणों की बुद्धि में है कि अब वह एडवांस में गई हुई आत्माएं जो श्रीकृष्ण को जन्म देंगी, जो देवी देवताओं को इस धरती पर उतारेंगी। कौन उतारेंगे? जो एडवांस में ब्राह्मण आत्माएं, योगी आत्माएं गई हैं । बाबा ने हम सब को बहुत ही स्पष्ट बातें बताई हैं कुछ छिपाया नहीं है। कैसे यह योगी आत्माओं के घरों में फर्स्ट आत्माएं सतयुग की अवतरित होंगी, जन्म लेंगी और फिर यह वापस जाएंगी, जन्म दे करके वापस घर जाएंगी। तो हर एक ब्राह्मण के अंदर ये रहता है की एडवांस पार्टी का क्या पार्ट चल रहा है तो इस बार ये गुप्त रीति से इशारा मिल गया। वो सभी एवररेडी हैं अपने आप को प्रत्यक्ष करने के लिए, तुम सिर्फ एवररेडी हो जाओ। अपने आप को संपन्न और संपूर्ण बना लो तो एडवांस पार्टी अभी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो जाएगी और जय जयकार का जो दृश्य है, एक और हाहाकार होगा दुनिया के अंदर और दूसरी और जय-जयकार होगा। हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं सभी समाचार, कैसे अभी चारों ओर बाबा की बेहद की सेवाएं हो रही हैं और बाबा कहते हैं अभी कितना भी ब्रेक लगाओ लेकिन एक बार तो इस मधुबन धरनी पर हर एक आएगा ही । ये तीर्थ स्थान है, यह प्रसिद्ध होना ही है तो चारों तरफ से लोग भी भाग भाग करके आ रहे हैं,आते रहेंगे । एडवांस पार्टी की आत्माएं भी अभी अपनी फुल एज में आ रही हैं । दीदी को भी कितने साल हो गए? 83 से आज कितना हुआ है 2005, सत्रह पांच कितना हो गया, बाइस साल की हो गई दीदी। जुलाई में अव्यक्त हुई

थी । तो यह एडवांस पार्टी की आत्माएं जो योगी आत्माएं जो गई है वो नई दुनिया की पवित्र आत्माओं को अवतरित करेंगी, बुलाएंगी, आवाहन करेंगी। मम्मा की जो साकार में विशेषताएं थी जो दादियों ने अपने मुखारबिंदु से वर्णन की हैं समय प्रति समय, कल भी हमारे पास इंग्लिश में लंदन से ईमेल आया है जिसमें दादी जानकी ने पूरा ही क्लास मम्मा की विशेषताओं पर कराया है। मम्मा ही सरस्वती थी विद्या की देवी, इतना स्पष्ट ज्ञान मम्मा की मुरलियों से हम सबको मिलता है । बाबा की एक एक बात को मम्मा ने बहुत स्पष्ट किया है तो सरस्वती का पार्ट, दुर्गा का पार्ट, काली का पार्ट और शीतला का पार्ट यह चारों पार्ट कैसे मम्मा ने बजाए उस पर दादी जानकी ने कल लंदन में क्लास कराया। इंग्लिश में आया है अभी उसकी ट्रांसलेशन हो रही है । इस प्रकार से दादियां समय प्रति समय हम सबको इन आत्माओं की विशेषताएं सुना करके जैसे उन्होंने किया हम भी वैसे करें और वैसे बनें तो क्या क्या मम्मा ने किया। सुनते तो हम सभी हैं कि मम्मा की तीन मुख्य विशेषताएं, एक तो कुमारी होते भी मां के रूप में पालना देने के लिए फुल रूहानियत में रही, कभी भी साधारणता नहीं । मैं कुमारी हूं ये स्मृति नहीं लेकिन मैं जगत मां हूं और बाबा ने मुझे मां की सीट दी है इसलिए मां के रूप में बच्चों को देखा और उसी दृष्टि से, उसी स्वमान में, उसी रूहानियत में रही इसलिए कोई भी आत्मा मम्मा के सामने आई तो आते ही, दृष्टि पड़ते ही वो परिवर्तन हो गई, उसकी विचारधाराएं चेंज हो गई । किसी

भी एज का हो, नया हो, पुराना हो, विरोधी हो, बहुत सी आत्माएं उस समय विरोध करती थीं, बहुत हंगामें करती थीं लेकिन मम्मा की दृष्टि पड़ते ही वो शांत शीतल हो जाते थे। कई मिसाल, कई उदाहरण अपने भाई बहनों ने मम्मा के सुनाएं हैं । तो एक तो था निरंतर रूहानियत की स्थिति में रहना । आज भी एक माता सुना रही थी जो मम्मा से पली हुई है कि कभी भी संगठन में मम्मा ने कभी हंसी में जोर से बात नहीं की । चार-पांच सहेलियां मिलकर के आपस में बैठे, हंसी मजाक करें लेकिन कभी भी आवाज में वो नहीं आई तो सबसे बड़ी विशेषता की मम्मा सबसे अधिक गंभीर थी, चुप रहने का एक बहुत अच्छा अभ्यास था। कुछ भी बात हो तो अंदर ही अंदर चुप हो करके समा लेना तो एक विशेषता यह थी। क्यों सुनते हैं हम सभी? हमको बाबा और मम्मा का डायरेक्शन मिला हुआ है सी फादर सी मदर, केवल मात पिता को देखना और उन्हें ही फॉलो करना है, ब्रदर और सिस्टर को नहीं इसलिए उनकी जो विशेषताएं हैं वह हमारे जीवन में आज हैं और वह विशेषताएं कैसे उन्होंने प्रैक्टिकल में करके दिखाई है, उनके जीवन में रही हैं तो एक तो मैं सुना रहा था कि बहुत अच्छी अंदर की धारणा रूहानियत की और रूहानियत के आधार से गंभीरता और दूसरा सदा ऊंचा स्वमान, बहुत ऊंचा स्वमान रखा । शिव की शक्ति हूं, अभी राधे और श्री लक्ष्मी बनने वाली हूं। बाबा ने कहा कि तुम ही राधा सो लक्ष्मी बनने वाली हो बस उसी स्वमान में स्थित हो गई, उस दातापन के स्वरूप में स्थित हो गई। विद्या की

देवी सरस्वती बन करके पार्ट बजाया और भविष्य स्वरूप लक्ष्मी पद सदा याद रखा मैं ही श्रीलक्ष्मी हूं और वह लक्षण अपने आप अपने जीवन में आते गए इतना ऊंचा स्वमान रखा और साथ-साथ एक बाबा दूसरा ना कोई अंदर से बिल्कुल पाठ पक्का, बाबा ने कहा, जो बाबा कहे, बस हां जी । कैसी भी बात तो चाहे जैसी परिस्थिति हो कभी भी प्रश्न नहीं हुआ ऐसा क्यों, ऐसा कैसे या ऐसा नहीं हो सकता है। कौन कह रहा है बहुत ऊंची नशे से स्मृति से कि कहने वाला कौन है, इसके तन में कौन बैठा हुआ है, किसके ये महावाक्य हैं इसलिए कभी प्रश्न नहीं उठाया ऐसा क्यों, ऐसे नहीं हो सकता है, कैसे हो सकता है । बाबा ने कहा और मम्मा ने हां जी किया इसलिए नंबर वन चली गई, आगे चली गईं तो मैं आप को पढ़कर इकतीस विशेषताऐं सुना देता हूं क्योंकि आप सोचेंगे ये तो क्लास कराने लगे इसलिए कौन सी विशेषताएं मम्मा की सब सेंटर्स पर भेजी गई हैं आप सभी भी सुनो। मम्मा का लौकिक नाम राधे था परंतु जैसा नाम था वैसे राधे। राधे की क्या विशेषता भक्ति मार्ग में गाई हुई है ? मुरली की मस्तानी, मुरली के पीछे दीवानी वैसे राधे मुरली की मस्तानी थी। बाबा का एक-एक शब्द बड़े प्यार से सुनती समाती और उन्हें बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट करके सबको सुनाती इसलिए सरस्वती के हाथ में ज्ञान की सितार दिखाइ गई है, ज्ञान वीणा, ज्ञान के सितार बजाते हुए फोटो में सरस्वती को दिखाया हुआ है । दूसरा, कभी कुछ भी हो जाए, ड्रामा का पाठ मम्मा को बहुत पक्का था। साक्षी हो करके देखने की इतनी

अच्छी आदत थी जो कोई भी दृश्य को देखकर कभी हलचल में नहीं आई, सदा एकरस मुस्कुराता हुआ चेहरा रहता था। ड्रामा की ढाल अगर मजबूत है, पक्का है तो कैसी भी हलचल की परिस्थितियां आ जाए चाहे कितना सामना करना पड़ा, कितना विरोध हुआ बाबा तो माताओं को आगे कर देता था। बहनों को सब सामना करना पड़ता था। कोर्ट में जाना है, वहां पर सब प्रकार की बातें सुननी है, उत्तर देने हैं तो मम्मा का ही सबसे आगे पार्ट रहा न । सुना होगा इतिहास में कैसे मम्मा गई कोर्ट के अंदर, कैसे वकीलों से बहस की जज के सामने और विजयी बन के आई। तो हर बात में, कैसी भी परिस्थिति आई, बेगरी पार्ट में भी मम्मा सब बच्चों की पालना करने के लिए, इतने लोगों की संभाल करने के लिए आगे थी। परिस्थितियों में अचला अडोल रहना और सदा चेहरा मुस्कुराता रहे, कोई भी प्रकार का टेंशन ना हो तो ये मम्मा की दूसरी विशेषता है। नथिंग न्यू का पाठ पढ़कर अचल अड़ोल रही। नथिंग न्यू, नई बात नहीं है और हम सब को भी यही पाठ पढ़ाया । तीसरी मम्मा के चेहरे पर कभी भी कोई फिकरात के चिन्ह नहीं दिखाई दिए। कोई शरीर भी छोड़ दे या अपने ही शरीर में कुछ हुआ बहुत सारी बीमारिया आ गई लेकिन कोई भी प्रकार का सोच नहीं, संकल्प नहीं। साधारणता में मम्मा कभी नहीं रही, मम्मा को सदा ऊंचे रूहानियत के नशे में देखा। चौथा, बाबा ने मम्मा को कहा तुम ही श्री लक्ष्मी बनोगी बस, एक बार कहने से मम्मा की सूरत और सीरत बदल गई। गुणवान बनना है, गुण देखना

है और गुणदान करना है यही तीन बातें मम्मा को पक्की थी । गुणवान बनना है सब के गुण देखना है और गुणों का दान करना है इसलिए उम्र भल कम थी लेकिन धारणा में बड़ी होने के कारण उनको सभी छोटे बड़े मम्मा कहते थे। मम्मा की मां भी, लौकिक मां भी, क्या कहती थी मम्मा को ? उनको मम्मा ही कह करके पुकारती थी। सभी छोटे बड़े दिल से मम्मा कहने लगे । उस समय मम्मा की पर्सनालिटी के मुकाबले में भल और भी कुछ पर्सनेलिटी थीं फिर भी मम्मा सबसे आगे नंबर वन चली गई। मम्मा मम्मा तभी बनी पांचवी विशेषता है, जब एक बार की हुई कोई ऐसी बात दोबारा रिपीट नहीं की, कोई गलती मान लो छोटी मोटी हो भी जाए लेकिन दोबारा वो न हो ये पुरुषार्थ का एक पहला पाठ पढ़ाया, कभी भी रिपीट नहीं की गलती। मम्मा का सबसे बड़ा गुण था हां जी, हां बाबा, जी बाबा । इसके सिवाए मम्मा के मुख से कभी दूसरा शब्द सुना ही नहीं जो बाबा ने कहा हां जी बाबा, हो जाएगा, कर लेंगे। कभी श्रीमत में मनमत ऐड ही नहीं की, कभी नहीं ऐड की। हम लोग तो सोचने लगते हैं बाबा तो कह देता है, कौन करेगा, कैसे होगा, हो सकेगा नहीं हो सके, प्रश्न उठ जाते हैं ना लेकिन मम्मा ने कभी भी उसमें अपने मन की मत ऐड नहीं की। क्लास में सदा हाजिर रहना ये भी बाबा का फरमानवरदार बच्चा बनना है लेकिन न केवल रेगुलर बल्कि पंक्चुअल, जरा भी आगे पीछे नहीं । टीचर के पहले क्लास में हाजिर होना, जरा भी ऊपर नीचे ना हो ये हमें मम्मा ने सिखाया। मुरली

और सवेरे का योग कभी भी मिस नहीं किया जिसको बाबा ने कहा गफलत ना करो, जिसे उड़ना होता है वह कभी गफलत नहीं करते । बाबा कहते तुम ऊपर की स्थिति में रहो नीचे की बातें क्यों करते हो, मम्मा के मुख से कभी भी ऐसी नीचे की बातें नहीं सुनी। मम्मा बिल्कुल चुप रहती थी, जितना जरूरी है उतना बोला और फिर चुप, कोई दूसरा बोल निकलेगा ही नहीं, शब्द निकलेंगे ही नहीं तो गलत कैसे होंगे। जो अधिक बोलता है तो कुछ ना कुछ गलत बोल ही देगा इसलिए चुप रहना सबसे बड़ा गुण है। मम्मा ने मर्यादाओं में एक्यूरेट रहना सिखाया। ऐसी देही अभिमानी स्थिति में रही जो मम्मा से बाबा के गुण और कर्म दिखाई देते थे, ऐसी देही अभिमानी स्थिति में मम्मा खुद रही जो बाबा के गुण उनके चेहरे से दिखाई देते थे। तो बाबा जो हमें सिखा रहा है वही हमारे से दिखाई दे और पुराने संस्कार सब खत्म हो जाए। मम्मा में तीन विशेषताएं बहुत स्पष्ट दिखाई देती थी जो अभी सुनाई आपको, एक रूहानियत, दूसरा स्वमान और तीसरा बाप से सर्व संबंध का स्नेह । हमें भी इन तीनों गुणों को स्वयं में धारण करने हैं इससे देह अभिमान सहज खत्म हो जाएगा । मम्मा के सिर पर अमृत का कलश शिव बाबा ने रखा, ज्ञान अमृत का कलश बाबा ने रखा । मम्मा उसे धारण कर सुनाने के निमित्त बनी लेकिन मम्मा हमेशा कहती थी, क्या कहती थी मम्मा के शब्द थे, मम्मा की कोई महिमा करें मम्मा आज आपने बहुत अच्छी मुरली सुनाइ, आज बहुत अच्छा भाषण किया, बहुत अच्छा क्लास कराया तो

मम्मा क्या कहती थीं, नहीं पिता प्रसादे, पिता प्रसादे है। बाबा ने दिया है, भगवान का दिया हुआ आपको दे दिया। मेरा नहीं है, मेरी विशेषता यह नहीं है, पिता प्रसाद है , भगवान का प्रसाद आपको बांट दिया, उसने मुझे दिया मैंने आपको दिया। तो मम्मा हमेशा कहती थी पिता प्रसादी, बाप से मिला हुआ सुना रही हूं, स्वयं की धारणा में जो है वह सुना रही हूं, तभी वाणी में मधुरता और सच्चाई झलकती थी । मधुरता और सच्चाई मम्मा की वाणी में झलकती है । ऐसे हमारे में जितनी पवित्रता और सत्यता होगी उतना मिठास आएगी। जरा भी अपवित्रता है, मन में किसी के लिए भी ग्लानि है तो वाणी में कड़वापन आ जाएगा। किसी के लिए भी मन में अगर ग्लानि है तो वाणी में कड़वापन आ जाएगा। तो मम्मा की वाणी से मधुरता और सच्चाई झलकती थी क्योंकि किसी के प्रति भी कटु वचन नहीं थे, कोई के अवगुण नोट ही नहीं थे जो गलत शब्द निकल जाए। मीठी मां ने हम सबको बड़े प्रेम से इशारों से पाला । मम्मा का चित्र बहुत शीतल और साफ था। हर एक बच्चे की बात दिल में ऐसे समा लेती थी जैसे कोई बात हुई ही नहीं। शिक्षाऐं दीं, ऐसे नहीं शिक्षाएं भी नहीं दी शिक्षाएं देते हुए भी अंदर समा लिया। समाने की शक्ति और प्यार से उसको चेंज करने की शक्ति, समाया और फिर प्यार दे करके उसको चेंज कर दिया यह बहुत बड़ी विशेषता हम सबने मम्मा में देखी। मम्मा ने कभी भी दूसरों के अवगुणों को चित्त पे नहीं रखा । मम्मा सदा अपने स्वमान में रहती थी। उन्हें बीज रूप स्थिति बनाने

का , सब संकल्प समेट लेने का, विस्तार में न जाने का एक नेचुरल आर्ट था। बहुत बड़ी विशेषता है, सब कुछ देखो, सब कुछ सुनो, लेकिन विस्तार में न जाकर के समेट लो। बीज रूप स्थिति अगर बनानी है तो समेटने की शक्ति तो मम्मा सदा अपने स्वमान में रहती और बीज रूप स्थिति बनाने का, सब संकल्प समेट लेने का, विस्तार में न जाने का नेचुरल आर्ट्, समेटना और समा लेना, कभी कोई बात विस्तार में आया हुआ नहीं देखा । कभी भी कोई बात में विस्तार में आया हुआ नहीं देखा जिस कारण मम्मा की मुरली बहुत प्रभावशाली रही। वह मम्मा की दिव्यता और सत्यता की आकर्षण चेहरे से चमकती थी । मम्मा ने अशरीरी बनने की बहुत मेहनत की। हमने आंखों से देखा , दादी सुना रहे हैं, हमने आंखों से देखा है बिगर मेहनत फल नहीं मिलता तो मेहनत से डरना नहीं और थकना नहीं। जब अथक रहते हैं तो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं और थकावट खुशी गुम कर देती है, उदासी ले आती है फिर मजबूरी से पुरुषार्थ चलता है इसलिए खुशी-खुशी से याद करना जिससे मेहनत और थकावट का अनुभव न हो। मम्मा के चेहरे से दिखाई देता था कितना अथक बन करके अशरीरी बनने का अभ्यास दो बजे उठकर करते थे।मीठी ज्ञान चंद्र मां की शीतलता को देखकर क्रोध करने वाली कैसी भी क्रोधी आत्मा सामने आए अपने आप उसे शीतलता का अनुभव होता था उसका क्रोध शांत हो जाता है। बोलने की जरूरत नहीं थी लेकिन इतनी शीतल थी कोई भी क्रोधी सामने आ जाए वह अपने आप

शीतल बन जाए। मम्मा सदा अथक रहे कितनी भी सर्विस करते उनके चेहरे पर कभी थकावट की चिन्ह नहीं दिखाई दी, फीलिंग ही नहीं महसूस करने दी। इतनी आत्माओं के संग में रहते हुए भी सभी की बातों को सुनते हुए खुद हर बात से न्यारी और प्यारी रही, कभी मम्मा की दृष्टि में किसी भी आत्मा के प्रति चेंज नहीं आई, की ये है ऐसी, वह है वैसी। सुना सबको देखा सबको, जानती सब कुछ है लेकिन दृष्टि में कभी चेंज नहीं आई। वही मीठी दृष्टि हर किसी के प्रति रही साथ-साथ उसकी कमियों पर सावधानी भी जरूर देती थी। भल कैसे भी अवगुण वाली आत्मा हो लेकिन मम्मा के मुख पर कभी किसी भी आत्मा के प्रति कोई अशुभ बोल नहीं निकले जिसका कोई फायदा ले ले, कमजोर बोल नहीं है अशुभ बोल नहीं निकले लेकिन उसकी विशेषताओं का ही वर्णन किया। सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली मां का सदा यही लक्ष्य रहा कि सबके दुःख दूर करूं। किसी भी हालत में किसी भी बात में मम्मा को कभी क्रोध तो क्या आवेश तक भी नहीं आया, मम्मा का तेज आवाज कभी सुना ही नहीं। मम्मा शांति की अवतार और प्रेम की मूर्ति थी। गंभीरता का गुण जो सर्व गुणों की खान है, गंभीरता कानून जो सब गुणों की खान है उसका प्रत्यक्ष स्वरूप मम्मा में देखा। ममता वाली मां नहीं अच्छी मां, टीचर गुरु जैसी मां, खुद के सबूत से सिखाने वाली मां। गंभीरता के कारण मम्मा में समाने और समेटने की दोनों शक्तियां थीं। समा भी ली, बच्चों की बातों को समाया भी और विस्तार को

समेट लिया, अधिक फैलाई नहीं बात, समाने और समेटने के कारण मम्मा सहनशीलता की थी, सहनशीलता के गुण से सदा शीतल और शांत बन गई। सदा शीतल और शांत वही रह सकता है जिसके अंदर सहनशीलता का गुण हो। मम्मा जब भी मिलती थी तो मम्मा का हाथ पकड़ो तो ऐसा लगता था कि मम्मा के हाथ से सकाश आ रही है, खुशी मिल रही है इतनी ताकत थी मम्मा के हाथ में वह चमत्कारी हाथ था। बाबा जो भी सुनाता मम्मा उसे इतना ध्यान से सुनती कि जैसे उसी समय एक एक बात का स्वरूप बन गई इसलिए मम्मा सदा अचल अड़ोल और एकरस स्थिति में रही मम्मा की स्थिति कभी ऊपर नीचे नहीं देखी । पुरुषार्थ भी कोई ऐसा मेहनत वाला हार्ड नहीं, मम्मी के चेहरे पर सदा प्योरिटी की रॉयल्टी नजर आती थी। इस प्योरिटी की पर्सनैलिटी के कारण जगदंबा के रूप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है । कोई भी कैसी भी आत्मा हो मम्मा की प्योरिटी के आगे झुक गया एकदम उसको साक्षात्कार हो गया कितनी पवित्र मां है। अटल निश्चय किसको कहा जाता है, अटल निश्चय किसको कहा जाता है वो मम्मा कि सूरत से दिखाई देता था । कभी भी मामा ने श्रीमत में अपनी मत मिक्स नहीं कि मेरा विचार यह है, मैं यह समझती हूं ये मम्मा ने कभी नहीं कहा परंतु बाबा ने कहा है, बाबा ने समझाया है , वो भी बताने में ऐसा रस जो हर एक को समझ में आ जाए कि बाबा ने किस रहस्य से कहा है। मम्मा की चलन कभी साधारण नहीं देखी सदा रॉयल

इसलिए मम्मा शिव बाबा की पौत्री और ब्रह्मा बाबा की बेटी बनने से सर्व की मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली सरस्वती मां बन गई। मम्मा ने अपने लिए कोई कामना नहीं रखी, बाप के दिए हुए खजाने से सदा अपने को संपन्न बनाया। मम्मा कभी अपना शो नहीं किया, गुप्त पालना दी। अच्छी धरना कराने में मदद मदद दी, आज दिन तक भी देश और विदेश में बाबा के कई बच्चे हैं जिनका अनुभव है कि हम जैसे साकार मात पिता की पालना में पल रहे हैं। अनुभव करते हैं को अभी भी हमें वतन से मात पिता की गुप्त पालना मिल रही है। यही बड़ी मम्मा ब्रह्मा है, ब्रह्मा हमारी बड़ी मां है, अडॉप्ट करने वाली मां है और पालना करने वाली मां सरस्वती मां है। मम्मा के चेहरे से कभी ऐसे नहीं लगा कि मम्मा को कोई बंधन है । हम सबको भी सेकंड में फ्री करके शीतला बना दिया । मम्मा ने हम बच्चों की पालना करने में इतना सर्वोत्तम और श्रेष्ठ पार्ट बजाया इस कारण गोडेज आफ नॉलेज कहलाई ये टाइटल मम्मा का ही है और किसी को नहीं मिल सकता। कौन सा गोडेज ऑफ नॉलेज। शिव बाबा की नॉलेज को ऐसा धारण किया जो विद्या की देवी बन गई। आज तक भी विद्या के लिए सरस्वती की पूजा करते हैं इसीलिए विद्या धारण करने के लिए सरस्वती को याद करते हैं। मम्मा को स्वमान स्वधर्म में रहने का सदा नशा रहा। स्वधर्म हमारा शांत है उसमें मम्मा शक्ति अवतार रही। बाबा ने जो कहा मम्मा की बुद्धि ने माना। कभी किसी का अपमान नहीं किया, ना अपमान की फीलिंग में आई।

कोई अपमान कर दे फीलिंग आ जाए मम्मा को कभी किसी के अपमान की फीलिंग नहीं आई और किसी का भी अपमान नहीं किया, सदा ज्ञान के सुमिरन में रहने के कारण हर्षित और गंभीरता की मूर्ति बन कर रही। मम्मा है ब्रह्मा की बेटी लेकिन संबंध में इतनी स्वच्छता, पवित्रता की शक्ति थी जो जगदंबा बन गई और साथ-साथ मम्मा को भविष्य का हम सो का ऐसा नशा था जो उनके नैन, चैन से, चेहरे से वो नशा दिखाई देता था जैसे सच मुच श्री लक्ष्मी है। जैसे वो संस्कारों में भर गया मैं किसकी हूं, भविष्य मेरा क्या है। मम्मा एकांत में रहती थी। रोज दो बजे सवेरे उठकर बाबा की एकांत यादों में चली जाती थी। इसी पुरुषार्थ से मम्मा का संपूर्ण स्वरूप कई बार साक्षात्कार होता था। एकांत में सवेरे सवेरे दो बजे उठ करके तपस्या करना जिससे अनेक आत्माओं को दूर बैठे भी मम्मा का साक्षात्कार होता था। मम्मा नंबरवन आज्ञाकारी रही इसीलिए मम्मा का यही स्लोगन था हुकुमी हुकुम चला रहा है । आज्ञाकारी, वफादार देखना हो तो मम्मा देखो । मम्मा ने बाबा के इशारों को समझा और हम बच्चों को बड़ा सहज और सरल करके समझाया। मम्मा के महावाक्यों में एक-एक बात का स्पष्टीकरण है, बाबा के साथ लग्न कैसे हो मम्मा की सूरत से देखा । मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा मैंने यह किया हमेशा बाबा की तरफ इशारा किया। मैं बेटी हूं मात पिता वह है मम्मा इतनी निर्हंकारी थी। कभी मम्मा ने हाथ में लॉ नहीं उठाया, कभी ऑथोरिटी नहीं चलाई परंतु धारणा की मूरत बन करके रही।

किसके लिए भी मम्मा ने कभी यह नहीं कहा होगा कि तू सुधरने वाली नहीं है। यह टोन कभी नहीं रहा कि तू सुधारने वाला नहीं है, सुधरने वाली नहीं है। एक बहुत शुभचिंतक भावना जिससे वह आत्मा सुधर जाए अपने आप, अथॉरिटी नहीं उठाई । मम्मा हमेशा कहती थी यह बहुत अच्छी बात है लास्ट, नोट करना, मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितना जल्दी कर लेते हो। जमा करने के लिए इतनी मेहनत करते हैं, रोज योग करेंगे, रोज पढ़ाई करेंगे, रोज क्लास करेंगे और जब खर्च करने का समय आएगा तो एक सेकंड में गुस्सा करके सारी शक्ति खत्म कर देंगे। एक सेकंड लगेगा खर्च करने में, जमा करने में सारा दिन लग गया और खर्च एक सेकंड में कर दिया। तो मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितनी जल्दी कर लेते हो। फालतू बातों में शक्ति खर्च करके फिर उदास और कमजोर हो जाते हो । कमाई करने में इतना टाइम नहीं देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा तो क्या होगा, देवाला हो जाएगा और जब कोई बात सामने आती है तो कहते हैं बहुत मुश्किल है, क्या करूं शक्ति नहीं है, ताकत नहीं है। ताकत गई कहां? जिसको इतना अच्छा संग, इतनी अच्छी पढ़ाई, इतना अच्छा वायुमंडल इतना अच्छा सब हो प्राप्त हो रहा हो, प्राप्तियां इतनी अखुट हो रही हों वो भी अगर कमजोर का कमजोर हो तो क्या कहेंगे, कहां गई तुम्हारी शक्ति? शक्ति कहीं व्यर्थ जरूर गई,

देवाला मार दिया। तो ये मम्मा की विशेषताएं हम सबको आज के दिन मम्मा के समान बनने की क्या, बहुत अच्छी प्रेरणाऐं देती हैं कि हम भी बाबा के याद से, ज्ञान से, पढ़ाई से, अच्छे संग से, भोजन से, अपने अंदर ऐसी शक्तियां जमा करें , जो मन और बुद्धि हमारे कंट्रोल में आ जाए, कभी भी हमारी शक्ति व्यर्थ ना जाए तो हम सब शक्तिमान बन जाएंगे कमजोरियां समाप्त हो जाएंगी , ओम शांति।

मम्मा मुरली मधुबन

42. दुखों का कारण क्या है - 02 - 25-04-65

रिकॉर्ड:

किसी ने अपना बना के मुझको मुस्कुराना सिखा दिया

ओम शांति ।

एक है मुस्कुराने की दुनिया और दूसरी है रोने की दुनिया, अभी किधर बैठे हो ? मुस्कुराने की ? मुस्कुराने के बाद भी तो रो रहे हैं। देखो, अभी ये रोने की दुनिया का अंत और मुस्कुराने की दुनिया अथवा सुख की दुनिया का अभी सेप्लिंग लग रहा है । अपन है संगम पर लेकिन अभी जानते हैं कि हम अपनी उस मुस्कुराने की अथवा सुख की दुनिया के लिए यह अपना सब पुरुषार्थ कर रहे हैं तो अपना सारा अटेंशन उसी पर है । अभी रोने वाली अथवा दुःख की दुनिया की कोई तमन्ना रखने की नहीं है कोई भी । भले इस दुनिया में कोई धन संपत्ति की या कोई मर्तबे की या कोई मान इज्जत की, किसी भी बात की तमन्ना अभी रखने की नहीं है क्योंकि जब जानते हैं कि इन सभी में, धन-संपत्ति में भी रोना ही है यानी दुःख ही है इस दुनिया की, इस दुनिया के मर्तबे मान इज्जत में भी रोना ही है अर्थात दुःख है इसीलिए इस दुनिया की कोई भी कोई भी प्राप्ति

जिसको प्राप्ति गिनी जाए उसमें अभी कोई सुख रहा नहीं है। इसीलिए अभी बाप कहते हैं कि जो मैं मुस्कुराने की अर्थात सदा सुख में, सुख में तो सदा मुस्कुराएंगे ना, उसमें थोड़ी ना कोई दुःख करेंगे, देखो देवताओं के चेहरे भी जब बनाते हैं ना, तो बड़े अच्छे बनाते हैं, मुस्कुराहट रखते हैं उनके चेहरे में पवित्रता, दिव्यता आदि आदि ऐसे रखते हैं जिससे कि उनके चिन्ह खींचे, तो यह सब है कि वहां वह हमारे जो भी संस्कार हैं जो हम अभी बना रहे हैं अथवा धारण कर रहे हैं जिसको पाएंगे, तो यही है कि वहां कोई दु:ख के चिन्ह है ही नहीं। यहां तो देखो प्रैक्टिकल दु:ख है ना और वहां है प्रैक्टिकल सुख इसीलिए कोई भी दु:ख का चिन्ह है ही नहीं, कभी वहां रोना होता नहीं है। इसीलिए बाप कहते हैं अभी बहुत रोया, बहुत दु:ख पाया, अर्थात दु:ख की दुनिया के अनेक जन्म भोगे, एक जन्म नहीं, बहुत जन्म, अभी आकर के वह बहुत जन्म भी तो कभी पूरे होंगे ना, कभी रात पूरी होकर कभी दिन भी तो आएगा ना। सदा ना रात और सदा ना फिर दिन इसीलिए अभी यह रात अथवा दु:ख की जो जेनरेशंस हैं, वह अभी पूरी होती है, अभी हमारे सुख की जेनरेशंस चालू होती है तो उसका अभी यह लास्ट जन्म। अभी इसमें ही हमको उस जेनरेशंस का यानि सुख का अथवा सुख की दुनिया का फाउंडेशन यहां लगाने का है इसीलिए संभाल रखने की है बहुत । अभी लगा तो लगा फाउंडेशन नहीं लगा तो फिर सदा के लिए यहां यह सुख के जेनरेशंस प्राप्त करने से वंचित रह जाएंगे। इसीलिए बाप कहते हैं अभी की जो जीवन

है और जो गाया भी हुआ है कि मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है, वह किस जन्म के लिए, इस जन्म के लिए क्योंकि वैसे जन्म तो हमारे बहुत हैं परंतु सबसे ज्यादा इस जन्म का महत्व है इसीलिए क्योंकि इस जन्म में हम अपना सबसे ऊंचे जेनरेशंस का अभी फाउंडेशन लगा सकते हैं। इसीलिए जो गाया है कीमनुष्य जन्म अति दुर्लभ तो वो ऐसे ही नहीं है, कई समझते हैं कि मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों के बाद मिलता है इसीलिए समझते हैं कि यह मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है परंतु ऐसा नहीं है, अगर हमारा मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों के बाद ही एक सुख का जन्म है तो फिर सभी मनुष्य सुखी होने चाहिए ना, फिर तो योनियों में दुःख भोंकते आवें, इसमें तो सुख होना चाहिए ना, फिर इधर दुःख क्यों देखते हैं। परंतु नहीं, हम देख रहे हैं कि मनुष्य जन्म में भी तो दुःख ही है ना तो उसका मतलब अगर यह सुख का जन्म होता तो सभी मनुष्य सुखी होते ना, परंतु ऐसा है नहीं और ना कोई ऐसा है कि चौरासी लाख योनियां कोई मनुष्य भोगते हैं। नहीं, मनुष्य को तो मनुष्य जन्म में ही अपने दुःख का हिसाब किताब मनुष्य जन्म में ही भोगना है, बाकी ऐसा नहीं है कि मनुष्य कोई जनावर पशु पक्षी या वृक्ष आदि मनुष्य बनता है नहीं, यह तो सभी बातें अभी बुद्धि में हैं कि मनुष्य को अपने कर्म का हिसाब मनुष्य जन्म में ही पाना है और यह भी जानते हैं कि मनुष्य का बहुत में बहुत जन्म चौरासी लाख तो बात ही नहीं है, यह चौरासी बहुत में बहुत, बाकी हां कम है क्योंकि जितना जितना पीछे आते हैं,

उतना उतना जरूर है कि कम जन्म रहेंगे। तो यह सभी हिसाब अभी बुद्धि में हैं उसी हिसाब अनुसार अभी अपन जानते हैं कि हमारा अभी यह अंतिम जन्म है जिसमें हम अभी नई जनरेशंस अथवा जो सुख का अनेक जन्मों का प्राप्ति का है वह अभी हम बना सकते हैं इसीलिए इस जन्म की जो है ना महिमा है कि यह जन्म सबसे उत्तम है क्योंकि इसमें हम उत्तम बन सकते हैं। देवताओं से भी ज्यादा इस जन्म की महिमा गाई जाती है इसीलिए क्योंकि इसी जन्म से ही हम देवता बनते हैं ना, पीछे तो देवता हो गए लेकिन हम ऊंचे तो इस जन्म से बनते हैं ना इसीलिए इस जन्म की महिमा है कि मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है, मनुष्य जन्म अति ऊंचा है, वह ऊंचा जन्म यह जिसमें हम इतना अपने को ऊँच बना सकते हैं। तो इसीलिए इस जन्म की बहुत संभाल और बहुत इसमें अटेंशन रखने का है कि इसमें अगर हमने अपना बनाया तो मानो हमारे लिए सदा के लिए ऊँच प्राप्ति का हक रह जाएगा जो अगर नहीं तो हम सदा के लिए अपने जन्मों की जो ऊँच प्राप्ति है मनुष्य जन्मों की उससे वंचित हो जाएंगे। तो वंचित तो नहीं होना है ना अपना पाके रहना है, तो ऐसा पाने के लिए इस जन्म का, सो भी अभी का यह टाइम जबकि परमात्मा आ करके अभी हमको यह धारणाएं अथवा ऊँच बनाने का बल दे रहा है तो अभी जब उससे बल मिल रहा है तो लेना ही है, ऐसे नहीं बस इस जन्म में आए ऐसे ही हो जाएगा या यह जन्म में आपे से हम आपे ही ऊँच बन जाएंगे नहीं, बनाने वाला जब

आया है तो उनसे अपने को बनना है। कैसे बनना है तो उसके फरमान और उनकी जो आज्ञा या उनकी जो मत मिल रही है तो उसको लेकर के। अभी उसकी मत क्या है और उनके डायरेक्शंस क्या है वह तो अच्छी तरह से बुद्धि में है ना, कि बी होली एंड बी योगी, है तो दो बात ही ना कि मुझे याद करो और पवित्र रहो। तो यह बात अपनी बुद्धि में अच्छी तरह से रखने की है और रख करके उसके फरमान के ऊपर अपने को चलाना है तब हम अपना जो सौभाग्य है वह ऊँच पा सकेंगे और ऐसे ही अपनी जो सदा सुख की दुनिया है उसका सुख पा सकेंगे। ऐसे तो नहीं समझते हो ना कि यह सब कल्पनाएं हैं? ऐसा तो ख्याल नहीं आता है ना, क्यों कल्पना क्यों समझी जाएं जबकि हम देख रहे हैं कि यह दुःख की दुनिया तो देख रहे हो ना उसको हम कैसे कह सकेंगे यह मिथ्या है, तो मिथ्या तो नहीं है ना यह प्रैक्टिकल है, तो जैसे दुःख की दुनिया हमारे सामने प्रैक्टिकल है तो जरूर सुख की भी तो होनी चाहिए ना। भले है नहीं अभी, लेकिन होनी तो चाहिए ना। तो क्या नहीं तो सदा से हम ऐसे दुःखी ही हैं, तो क्या समझे संसार दुःख का ही है, ऐसा नहीं है। संसार उसमें सुख और दुःख भले दोनों ही है परंतु सुख का भी तो समय है ना, ऐसे नहीं कहेंगे कि अभी जो सुख है बस यही सुख है। कई ऐसे समझते हैं कि जो अभी सुख है बस यही स्वर्ग है, यही सुख है बस ऐसा ही सुख दुःख है परंतु नहीं अभी के सुख को सुख नहीं कहेंगे, वह सुख जो था जिसमें हम सदा सुखी थे वह चीज ही और है

इसीलिए सुख उसको कहेंगे। आज के सुख को सब दुःख के बराबर कहेंगे ना, उसमें सदा काल का तो कोई सुख नहीं है ना, तो यह सभी चीजें अभी बुद्धि में है कि जो प्रैक्टिकल में हम दुःख की दुनिया देख रहे हैं वह कोई कल्पना तो नहीं है ना, तो जैसे दुःख प्रैक्टिकल है तो सुख भी तो प्रैक्टिकल होना चाहिए ना, उसको क्यों कल्पना समझना, क्योंकि आज है नहीं इसलिए उसको कल्पना समझते हैं परंतु नहीं, यह विवेक और अपने बाप के मिले इस नॉलेज के बल से समझते हैं कि जो चीज दुःख है तो जरूर सुख भी तो प्रैक्टिकल चीज होनी चाहिए ना, ऐसे थोड़ी ही कि खाली कल्पना। कई तो फिर बैठकर के ऐसे मार्ग बतलाते हैं कि हां भले दुःख आवे परंतु तुम समझो कि मैं सुखी हूं इसीलिए कई समझते हैं कोई सुख की इच्छा या कोई तमन्ना रखना, यह इच्छा मात्र अविद्या ये ऐसी ऐसी बातें लगा देते हैं कि उसकी इच्छा ही क्या रखनी है जो होता है उसमें ही सुख समझो, फिर भले रोग हो, भले कोई अकाले मृत्यु हो, कोई भी ऐसी बात हो परंतु तू अपने को समझ मैं सुखी हूं। यह तो हो गया अपनी कल्पना का सुख न, इसको थोड़ी प्रैक्टिकल कहेंगे । जैसे दुःख प्रैक्टिकल है ना ऐसे थोड़ी ही की ये कल्पना से है, वह तो है ही। रोग होता है अकाले मृत्यु होती है, कई बातें दुःख की आती है ना प्रैक्टिकल में, तो जैसे हम दुःख को देख रहे हैं और पा रहे हैं, अपने अनुभव में उसको पा रहे हैं तो जैसे प्रैक्टिकल दुःख है तो सुख भी तो ऐसा प्रैक्टिकल होना चाहिए ना। ऐसे थोड़ी कहेंगे कि नहीं, इसी में ही तू अपने को सुखी

मान, वह अपनी कल्पना का हो गया जो हमको इतना समय मनुष्यों के द्वारा सुख की बतलाई जाती थी कि हां तू इनमें ही अपने को सुखी समझ, ये दुःख समझते ही क्यों हो, तू समझ कि यह शरीर भोगता है, ऐसा होता है, ऐसी ऐसी बातें लगा रखी थी ना। तू तो आत्मा निर्लेप है, तेरे को कोई लेप छेप है ही नहीं, तू तो सदा सुखी है, वह तो कल्पना हो गई। है नहीं, लेकिन हम अपने को ऐसा समझे कि आत्मा निर्लेप है, आत्मा को कोई लेप क्षेप नहीं लगता है, ये ऐसा होता है, ऐसे समझ करके अपने को सुखी समझ तो वह सुख तो कल्पना का हो गया ना, वो कल्पना से अपने को सुखी समझना, जैसे दुःख प्रैक्टिकल में है, होता है ना, देखते हैं हम और भोगते हैं, उसकी महसूसता है, फीलिंग है प्रैक्टिकल, तो जैसे दुःख प्रैक्टिकल में है वैसे हमको सुख भी तो प्रैक्टिकल होना चाहिए ना, उसमें हम ऐसा क्यों समझेंगे हमको खाली आत्मा को निर्लेप समझ करके अपने को सुखी समझना है तो क्या सुख कल्पना है और दुःख प्रैक्टिकल है ? नहीं, जैसे दुःख प्रैक्टिकल में है वैसे सुख भी प्रैक्टिकल में है तो यह चीजें भी समझने की है बाकी कई मनुष्यों ने बैठकर के ऐसी ऐसी बातें, दुःख को जरा कम महसूस कराने के लिए फिर ऐसी ऐसी बातें बैठ करके लगाई है कि नहीं यह तो है ही जगत मिथ्या, इसको मिथ्या समझ ले या ऐसे ऐसे कहते हैं कि आत्मा तो है ही निर्लेप इसमें कोई लेप क्षेप है ही नहीं, इसीलिए तो दुःख और सुख को समझ ही नहीं तो मानो समझ ही नहीं दुःख को ऐसे तू अपने को सुखी समझ परंतु

वह तो कोई सुख नहीं है ना। तो यह अभी अपनी नॉलेज में है कि हमको अभी प्रैक्टिकल बाप के द्वारा जैसे दुःख प्रैक्टिकल देख रहे हैं तो दुःख अगर प्रैक्टिकल है तो सुख भी प्रैक्टिकल है, फिर उसके लिए क्यों समझा जाए कि वह कल्पना है लेकिन आज है नहीं इसीलिए उसको कई ऐसे समझते हैं परंतु नहीं, कभी रात पूरी हो करके दिन अपने अपने टाइम पर है ना, दिन पूरा होकर के फिर रात, यह तो चक्र है तो अभी जानते हैं और देख भी रहे हैं कि अभी दुःख की सीमा कहां तक आ करके पहुंची है, बाकी भी जो उनकी थोड़ी मार्जन है वह भी अपने समय पर पूरी हो करके अपने टाइम पर फिर सुख की दुनिया आनी है, उसका फाउंडेशन तो अभी लगेगा ना, उसके लिए भी तो हमको अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना पड़ेगा। यह दुःख भी तो हमारे कर्म से बना, ऐसे नहीं कहेंगे ड्रामा या अपने आप, भले है ड्रामा परंतु वह भी जो बना तो कुछ कारण से बना ना। दुःख कैसे आया? जब हम भूले और बिगड़े अपने एक्शंस में तो हमारा दुःख बना, तो नियम है ना भाई दुःख बनने का भी कौन सा कारण हुआ कि हम बिगड़े, अपने एक्शंस को बिगाड़ा, विकारों वश हो करके, उसी कारण से फिर दुःख पैदा हुआ परंतु ऐसे नहीं है कि अपने आप, कारण तो बना ना। वैसे अभी सुख फिर कैसा रहेगा, जब हम फिर अपने एक्शंस को उस बिगड़ी बातों से हटाएंगे, तो जिन्होंने बिगाड़ा, जिसके संग में बिगड़ा तो उसका संग छोड़ना पड़ेगा ना, यानी माया का, पांचों विकारों का, जिसको फिर रावण कहो या कुछ भी कहो। तो

अभी उसका संग छोड़ेंगे तो फिर हमारे कर्म श्रेष्ठ बनेंगे, उसी श्रेष्ठ कर्म से फिर हमारा सुख बनेगा। तो बनेगा कैसे वह भी तो करना होगा ना और दुःख बना कैसे वह भी तो हमारे करने से हुआ ना, ऐसे ही तो नहीं हो गया ना, भले उसको हमने जाना नहीं, कोई जानबूझकर अपना दुःख थोड़ी बनाएगा, दुःख के लिए थोड़ी ही जानना पड़ता है, सुख के लिए साधन अथवा पुरुषार्थ रखना पड़ता है , दुःख के लिए थोड़ी कोई साधन करना होता है या यह हम करें हम दुःखी होवें, दुःख के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं होता है, सुख के लिए। तो अभी बाप आ करके सुख के लिए अर्थात पुरुषार्थ क्या करना है वह बताते हैं, बाकी कोई ऐसे कहे कि हां दुःख के लिए भी हमने कोई साधन किया, वह करना होता ही नहीं है। मनुष्य करता है कोई पुरुषार्थ तो अपने को सुखी बनाने के लिए, पुरुषार्थ की बात आती है तब है ना बाकि कोई गिरने के लिए पुरुषार्थ थोड़े ही किया जाता है परंतु होता है, वह भी अपने एक्शन से ही तो होता है ना, कारण तो कोई बनता है ना बाकी कोई करता नहीं है उसको समझ करके कोई गिरे या अपने को दुःखी बनाएं कि हम जानबूझकर के अपने को दुःखी करें, उसका कौन सा साधन है, अपने को दुःखी करें, ऐसा कोई करता नहीं है, और ऐसा होता ही नहीं है। दुःख आ जाता है लेकिन सुखी बनाने के लिए तो फिर पुरुषार्थ रखना पड़ेगा ना। उस समझ को लेना पड़ेगा, पुरुषार्थ करना पड़ेगा इसीलिए पुरुषार्थ को रखना पड़ेगा आगे कि हम जो करेंगे सो पाएंगे । तो यह सभी चीजों को भी समझना पड़ेगा कि

हम को दुःख के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है जैसे यह मकान है, मकान में जो पुरानापन आता है तो वह अपने आप आता है, ऐसे नहीं है कि मकान को कोई पुराना बनाया जाता है। नया बनाया जाता है, नया मकान बनाना है तो भाई नया बनाना है, इसको तोड़कर के नया बनाया जाता है, पुराना थोड़ी ही बनाया जाता है, पुराने को बनाना होता है? नहीं, पुराना हो जाता है। तो कोई कहे कि यह कैसे हुआ पुराना, भाई वह नियम है, उसमें पुरानापन भी आना है, टाइम पड़ने से उसमें पुरानापन भी आना है। तो पुराना हो जाता है और नया बनाया जाता है तो बनाने के समय नया बनाया जाता है और पुराने के समय बनाया थोड़ी ही जाता है, पुराना हो जाता है। तो यह सारी चीजें समझने की है ना, हर चीज का हर बात का कैसा कैसा नियम है इसीलिए हमको अभी पुरुषार्थ रखने का है क्योंकि ऊचा उठना है, नया बनना है बाकी हम गिरे तो कोई कहेंगे उसके लिए क्या पुरुषार्थ रखा या ऐसे क्यों गिरे या बाप था तो हमको गिरने क्यों दिया, उसने थोड़ी ही गिरने किया, वह तो है ना, जब गिरे ना तो फिर चढ़ाए कैसे, बाप चढाने कैसे आवे, गिरे हैं तभी तो है ना उसका गायन भी है पतित पावन करने वाला तो पतित ही ना हो तो पावन करने वाला उसको कहें भी कैसे। तो यह भी है पतित होना है, फिर पावन होना है, फिर पावन से फिर पतित होना है यह सारा चक्र है, इसीलिए इस चक्र को भी समझना है और चक्कर से फिर हमको पतित से पावन बनाने वाला कौन है, उसकी महिमा है और हमारे भी

पावन बनने की महिमा है। हम भी अपने को पतित से पावन बनाते हैं तो अपने को पूजनीय हमारी भी महिमा तब है और हमारे वह पूज्य हो जाते है क्योंकि वो हमें बनाते हैं तो बनाने वाले और बनने वालों की महिमा होती है और गिरने वालो की थोड़ी महिमा होगी, तो गिरने वाले की तो महिमा की तो बात ही नहीं है ना और ना ही गिरने की महिमा होने की कोई बात है इसीलिए हमारे बनने की, जब हम ऊँच तो हमारी महिमा है कि हम मनुष्य से भाई देवता बनते हैं तो देवता फिर पूजनीय गाए जाते हैं यानी पूजान लायक और फिर जो बनाने वाला है उसकी भी महिमा होती है कि भाई किसने बनाया है, दो चाहिए ना, ऐसे थोड़े है, बनने वाला भी खुद, बनाने वाला भी खुद, आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा ऐसे तो नहीं है ना। बनने वाले अलग और बनाने वाला अलग क्योंकि बनने वाले किससे बनते हैं, जरूर गिरे हैं उससे बनते हैं, बिगड़े हैं उससे बनते हैं, पतित से पावन होते हैं लेकिन वह तो पतित नहीं होता है ना बनाने वाला, इसीलिए बनाने वाला अलग चाहिए और बनने वाले जहाँ से बनते हैं वह पतितपन से फिर पावन बनते हैं तो वही पतित बनते हैं ना जो पावन बने हैं और जो बनाता है वह थोड़ी ही पतित बनेंगे जो पावन बने। तो इसीलिए बनाने वाला अलग, बनने वाले अलग और वह बनते कैसे हैं वह चीज बैठकर के बाप समझाते हैं। तो यह सारी चीजें समझने की है इसलिए इन बातों में भी कोई मूंझने की या किस तरह से पुरुषार्थ करना ही है और पुरुषार्थ की बात तभी ही है जबकि हमको

ऊँचा बनना है, ऊंचा उठना है बाकि गिरने के समय पर तो पुरुषार्थ की कोई बात ही नहीं है । गिरने का कोई पुरुषार्थ थोड़ी ही करता है, अपने को दु:खी बनाने का, उसको पुरुषार्थ थोड़ी ही कहा जाता है, नहीं पुरुषार्थ तब है जब अपने को ऊंचा उठाया जाता है वह पुरुषार्थ ही अभी मिलता है। जिस चीज को पुरुषार्थ कहा जाए और जिसकी प्रालब्ध कहीं जाए वह भी मिलती है कि बाप आ करके हमको यथार्थ पुरुषार्थ होता ही क्या है हमारी ऊँच प्राप्ति का पुरुषार्थ कौन सा है वह अभी सिखाता है। इतने टाइम हमको किसी ने वो पुरुषार्थ ही नहीं सिखलाया क्योंकि सिखलाने वाले खुद ही सब चक्कर में है ना, नीचे ही चलना था सबको इसीलिए वह पुरुषार्थ नहीं मिला जिससे हम अपने को ऊंचा उठाएं। अभी ऊंचा उठाने वाला भी अभी आया है और अभी आकर के ऊंचे उठने का पुरुषार्थ बताते हैं और उसको हम जितना जितना धारण करते हैं फिर ऐसी प्रालब्ध को पाते हैं। तो यह सभी नॉलेज बुद्धि में हैं इसीलिए अभी क्या करना है वह करना है समझा, करने के ऊपर सारा अपना पुरुषार्थ का पूरा बल लगाने का है। बाकी तो ठीक है ना बाकी तो चक्कर है वह तो चक्कर की बात चक्कर से समझनी है। अभी हम को कहां से निकल कर कहां चक्कर को ऊंचा जाना है, उसको अभी हमको पकड़ना है। उसके लिए हमको क्या मेहनत करना है हमको उसका ध्यान रखने का है अटेंशन उसका रखना है। बाकी तो चक्कर को चलना ही है अपने टाइम पर, वह तो अपना टाइम समय अनुसार होता चलेगा बाकी अभी समय कौन सा

है, अभी हमको नीचे से ऊंचा होना है, पतित से पावन बनने का है, वह बात समझने की है। बाकी तो जो भी चक्कर में आते हैं, जो भी धर्म स्थापक आते हैं ना, ऊपर से आते हैं उन्हों को नीचे ही जाना है और अभी हमको नीचे से ऊँचा उठाने के लिए परमपिता परमात्मा स्वयं आ करके हमको देखो ऊंचा उठाते हैं तो पतितो को पावन करने वाला एक ही हो गया ना। बाकी क्राइस्ट, बुद्ध जो भी आए ना वह तो पावन आते हैं उनको पतित बनना है, उनको नीचे ही जाना है। तो खुद भी नीचे जाते हैं जो भी उसकी संख्या भी आती है, वह भी नीचे ही जाती है तो तो मानो वह सावन से पतित बनते हैं और हम पतित से पावन बनते हैं, यह फर्क है। तो जो भी और सब आते हैं क्राइस्ट आया ना, ऊपर से आया ना पवित्र आत्मा आई तो उनको अपनी जेनरेशंस में क्रिश्चियनिटी में अपने यह सभी जन्म लेते अभी उसकी जो वृद्धि होती रही वह तो नीचे ही चलते आए ना, तो मानो पावन आए पतित उन्हों को बनना है और हमको आकर के बाप पतित से पावन बनाते हैं इसीलिए हमारी है चढ़ती कला और वह आते हैं उतरती कला के समय। वह नारे देखा है ना नार समझते वह किन्ज्डी का होता है ना, पानी का तो देखो जो आधा पार्ट जो होता है वह नीचे जाता है उनको नीचे ही चलने का है, वो किंजड़ियाँ खली हो जाती हैं और फिर आधा समय वो भरतु हो करके ऊपर चलती है तो अभी हमारा वो भरतु हो करके ऊपर चढ़ने का टाइम है इसीलिए हमारी चढ़ती कला है और वह आते हैं उतरती कला में यानी उनको उतरना

ही है। आते हैं ऊपर से और नीचे ही जाते हैं तो उनको मानो पावन से पतित होना है और अपने को पतित से पावन होना है इसीलिए कहते हैं पतित को पावन करने वाला एक बाकी क्राइस्ट, बुद्ध पतित को पावन करने वाला नहीं, वह तो सब पावन से पतित होने वाले हैं खुद भी और जो भी संख्या आनी है वह भी पतित होनी है। तो यह सारे हिसाब को भी समझना है कि वह ऊपर से आई हुई आत्माओं को नीचे जाना है अभी हमको नीचे से आकर के ऊपर उठाते हैं बाप इसीलिए उनका गायन है और यह अभी वो टाइम है उसी धर्म की स्थापना है और उसी टाइम पर ही नहीं दुनिया की स्थापना होती है, यह पुरानी दुनिया का भी अंत। तो यह सभी हिसाब को समझना है और उसी अनुसार अपना पुरुषार्थ रखना है। अच्छा, टाइम हुआ। बाप, जो ऐसा ऊँच कार्य करने के लिए उपस्थित हुआ है उससे अपना पूरा-पूरा लाभ लेने का है और कौन सा लाभ है यह सबसे श्रेष्ठ, जो किसी ने दिया नहीं। क्राइस्ट, बुद्ध जिन्होंने भी आकर के कोई कार्य किया तो वो कार्य नहीं, ये दूसरा है। वह हमारी उतरती कला के समय का है, यह अभी चढ़ती कला के समय का है तो समय को भी समझना है ना कि अभी टाइम कौन सा है। उस टाइम पर उनका आ करके आत्माओं को ले जाना या ऊंचा ले जाने का टाइम ही नहीं है। वह आते ही द्वापरकाल से हैं जब कलयुग तक नीचे होना ही है तो उनको तो नीचे ही आना है मानो पावन से पतित ही बनना है तो उनके लिए कहा नहीं जा सकता है पतिटन को पावन करने वाला,

कोई नहीं। एक ही है जो आ करके हम पतित को पावन बनाते हैं अथवा सर्व आत्माओं को ले जाते हैं गति और सद्गति इसीलिए एक की रिस्पांसिबिलिटी हो गई ना। बाकी सबका है नीचे ही आना है, कोई भी कितनी भी बड़ी आत्माएं हैं आती है, पहले पवित्र आती है उनको नीचे ही जाना है क्योंकि चक्कर का ऐसा टर्न है इसीलिए उसमें नीचे ही चलना है। तो यह सभी हिसाब को भी समझना है, ऐसा नहीं है उसके आने से चक्र ऐसा हो जाएगा या उल्टा, उनको चलना ही है ऐसा अपने नियमानुसार, तो उसको नीचे ही चलना है। तो यह सभी चीजों को भी अच्छी तरह से समझने का है इसीलिए अब टाइम है चढ़ने का और चढाने वाला इसीलिए एक ही निमित्त है। तो उसका अभी हमको भाग्य मिला है, सौभाग्य मिला है तो उसके साथ में हमको उसी सौभाग्य को पाना है और बाप से लेना है, समझा । जो करता है सो पता है तो करते हो किसके लिए ? हाँ ? किसके लिए करते हो ? अपने लिए, बात अच्छी उठाई न, अपने लिए । तो यह है सब अपने लिए , मानो आपका अभी खजाना भरता जा रहा है । भले यहाँ नए पैसे नहीं दिखाई पड़ते हैं, परन्तु आपकी बहुत इनकम हो रही है , हाँ जमा होती है, एक से सौ गुना, हजार गुना, यह अपनी जमा कर रहे हैं तो यह बहुत बना रहे हो अपना और अपने लिए कर रहे हो यह तो राइट ही है तो उसके लिए तो करना ही चाहिए। अभी भी करते हो यह, जो भी कुछ धंधा धोरी करते हो ना, भले बच्चों के लिए इधर से उधर गया समझ करके, परंतु हां वह तो कर्मों के

हिसाब के अनुसार लेकिन यह तो देखो अपना पूरा बनाते हो ना। जो करते हो वह पाएंगे और पाएंगे भी नई दुनिया में, तो देखो यह सब कुछ नया मिलेगा न यह ख्याल में है ना, तभी तो अभी सारे उत्साह से कर रहे हैं। आपका दूसरा साथी नहीं दिखता है? नहीं आया । तो अच्छा है जो करता है उत्साह से करता है तो उत्साह का भी मिलता है, जो लाचारी से करता है, तंग होकर करता है मुश्किल से या कोई दिखावटी करता है कि हां दुनिया देखे हमने यह किया, वह किया। कई होते हैं ना दान करते हैं तो दिखाऊ दान करते हैं की पता चले तो कहते हैं उसका आधा ताकत जो है ना दान की निकल जाती है। कोई करते हैं गुप्त, क्यों गुप्त का महत्व है की गुप्त का ताकत बढ़ती है, उसका हिसाब ज्यादा मिलता है और शो करने से उसका हिसाब कम पड़ जाता है। तो जो अपना गुप्त करता है उसकी ताकत ज्यादा मिलती है फिर यह भी ऐसे ही है। तो यहां कोई करते हैं तो या तो दिखाऊ करते हैं या तो कोई करते हैं लाचारी से तो लाचारी का भी जो किया होता है ना उसका इतना फल नहीं होता है जो उत्साह और उमंग और उसी तरीके से करते हैं उनका बनता है, यह भी सब बनाने में भी हिसाब है ना। करना तो करना परंतु करने का भी ढंग है सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, करने में भी हिसाब है तो अपनी करनी में भी कैसा हम श्रेष्ठ बनाएं और किस तरह से करें जिसमें हमारा बने तो वह बनाने का भी अच्छा ढंग चाहिए ना। तो यह अच्छे ढंग से चल रहे हैं ऐसा दिखाई पड़ता है तो जरूर है कि कुछ अपना आगे

तकदीर बनाने वाले हैं। भले आए पीछे हैं यह मूलन का तो मेरे ख्याल में थोड़े समय, अभी दो-चार मास हां? चार मास देखो तीन चार मास के बच्चे हैं, बोम्बे के छोटे में छोटे हैं मेरे ख्याल में लास्ट, तो लास्ट सो फास्ट जा रहे हैं। तो देखो यह जब प्रदर्शनी लगी थी , हां हां यह सब साथ में ही है। तो जो लास्ट है बाबा कहते हैं ना जो लास्ट सो फास्ट होते हैं सैंपल देखो अभी। प्रदर्शनी से निकला और खुद प्रदर्शनी रच रहे हैं और कर रहे हैं देखो कितने अच्छे हैं लेकिन अभी सेण्टर नहीं लगाया है मूलन ने, अभी प्रदर्शनी तो लगाई पर सेंटर न लगाएंगे तो बेचारे कहां आएंगे समझने के लिए । अभी फिर हिम्मत करो सेंटर लगाने की, तब फिर होगा वहां कुछ। क्योंकि प्रदर्शनी की रिजल्ट तभी है जो बिचारे आएँ रेगुलर समझे, नहीं तो फिर एक दिन सुना...हाँ? (सेंटर खोलेंगे फिर आप आएँगे न ओपनिंग करने के लिए) सेंटर खोलेंगे, अभी खोले तो सही। देखो ओपनिंग नहीं करना होता है बाबा मम्मा को, बाबा मम्मा को जब फुलवारी तैयार होती है ना तो फूलों की खुशबू लेने जाना होता है। (बाबा ने जाकर किया था न घटपुर में जाकर के) अभी देखिये ना, वह घाट्पुर में तो फूल तैयार थे ना, (यहाँ भी करेगे न तैयार) अब वह तो देखेंगे ना जब करेंगे, देखेंगे न कौन से फूल बनते हैं । कौन करता है वह भी जब देखेंगे ना। वहां तो फूल तैयार थे कुछ, अच्छा बापदादा और मां की मीठे-मीठे बहुत अच्छे सपूत और बहुत रेस करने वाले देखो बस तीन दिन का, तीन मास का कमाल कर रहे हैं वाह, ऐसे ऐसे। अब

यह भी बड़ा हो गया, यह छोटा गिना जाएगा। (मम्मा सेंटर के लिए जगह खोज रहे हैं) मुंबई सेंटर के लिए? दो-चार दिन से पपैय्या नहीं दिखाई पड़ता है । अच्छा ऐसा बाप दादा और मां की मीठे-मीठे बहुत अच्छे और सपूत बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।।

मम्मा मुरली मधुबन

043. सौभाग्यशाली बनाने की विधि - 19-04-65

आज 19 अप्रैल है जगदंबा मां की मुरली सुनते हैं

रिकॉर्ड:-

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे............

ओम शांति। यह जो ऐसे गीत हैं, अभी सुना ना कि दुनिया वालों से क्या काम है, तो दुनिया तो कहती है दुनिया से काम है, आप ऐसे कहती हो दुनिया वालों से क्या काम है, आप तो कहते हो दुनिया से तो काम है फिर यह जो गीत है, ठीक नहीं है ना? फिर ऐसे गीतों को तो बंद करा देना चाहिए कि बनवारी तेरे से काम है दुनिया वालों से क्या काम है। दुनिया वाले तो कहते हैं दुनिया से ना काम लेंगे तो दुनिया में कैसे रहेंगे। तो दुनिया वाले तो ऐसे कहते हैं अभी क्या होना चाहिए? अभी यह है समझने की बातें कि हां दुनिया से तो काम है लेकिन यह जो अब की दुनिया है ना, यह अब की दुनिया जो है जिसमें दु:ख और अशांति ही उठा रहे हैं तो अभी उसके लिए है कि इस दुनिया में अभी कुछ रहा नहीं है, कोई सार नहीं रहा है इसीलिए अभी जो तेरी दुनिया थी बनाई हुई तेरी दुनिया, ख्याल में है ना, उनकी भी दुनिया है, उनमें भी पति-पत्नी बाप बेटा संसार है सारे का

सारा, राजा प्रजा सब कुछ है लेकिन हां, तेरी जो दुनिया है ना उसमें कुछ माल था, कुछ सार था, कुछ तो क्या पूरा सार था और अभी जो यह संसार है ना यह तो है झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार। अब इस झूठे से क्या काम रखें इसीलिए कहते हैं अब इस झूठे संसार से अभी क्या मेरा काम रहा क्योंकि अभी इसमें है ही नहीं कुछ माल, कोई सार ही नहीं रहा है तो फिर इससे काम क्या रहा इसलिए अभी तेरे से दिल लगाते हैं इसीलिए कि अभी तेरी जो दुनिया है ना उसमें से कुछ माल मिलेगा। तो दुनिया तो है ही परंतु दुनिया सुख की जो है, वह तेरे से प्राप्त रहेगी इसलिए अभी तेरे से काम है। क्योंकि तेरे द्वारा जो हमें दुनिया प्राप्त रही है अथवा तुमने जो हमारी दुनिया बनाई है, वह बहुत अच्छी बनाई। उसमें कभी हमको दुःख नहीं था और कोई दुःख की बात नहीं थी। सब था लेकिन दुःख नहीं था। और हम चाहते भी यह है ना कि दुनिया हो लेकिन उसमें दुःख ना हो दुःख तो कोई चाहता ही नहीं है इसीलिए अभी यह जो दुनिया है जिस\में अभी बैठे हैं तो इसमें तो अभी दुःख और अशांति के सिवा और कुछ है ही नहीं इसीलिए कहते हैं कि हां अब यह दुनिया झूठी हो गई है, इसमें कोई सार नहीं रहा है। इसको कहते भी हैं असार संसार इसीलिए अभी इसी असार संसार से हमको निकालो। अभी फिर जो तुमने सार वाला संसार बनाया जिसमें कुछ मालपानी था अच्छा, अभी उस संसार का हमें फिर से हक दो। तो जो हक देने वाला है तो अभी तो उससे काम है ना तो फिर तो यह छोड़ना चाहिए ना, इससे फिर

तो दिल हटानी चाहिए। तो वह बाप कहते हैं अगर मेरी दुनिया के अभी बनना चाहते हो और मैं आया भी हूँ वह नई दुनिया बनाने के लिए अभी टाइम है तो अगर उसी दुनिया में अपना हक बनाना चाहते हो तो अभी फिर जैसे मैं कहूं तो यह जो रावण की दुनिया है ना यह तो उनकी है पांच विकारों की तो फिर इस विकारी दुनिया को तो छोड़ना पड़ेगा ना, नहीं तो विकारी दुनिया वाले क्या कहेगी तुमको कि बिना विकारों के तो काम नहीं चलेगा, यह क्या तुमको मंडली वाले, तुमको ब्रम्हाकुमारियाँ, तुमको फलाने क्या सिखलाते हैं वह तो ऐसी-ऐसी बातें कहेंगे कि इनके बिना काम नहीं चलेगा, मोह के बिना काम नहीं चलेगा, क्रोध के बिना काम नहीं चलेगा, काम के बिना दुनिया नहीं उत्पत्ति होगी, यह नहीं होगा, वह नहीं होगा वह तो ऐसी बातें सुनाएंगे क्योंकि है ही विकारी दुनिया, उन बिचारों को यह पता ही नहीं है कि कोई निर्विकारी दुनिया भी है। निर्विकारीपन से भी कोई दुनिया चली हुई है, वह नहीं जानते हैं इसीलिए यह विकारी दुनिया तो तुमको यह राय देंगे, यह सलाह देंगे, यह बातें कहेंगे इसीलिए बाप कहता है अभी इनका संग, इनकी मत छोड़ो। इनके मत में है ही कि विकारों से दुनिया चलने की है तो तुमको मत भी ऎसी ही देंगी, राय भी ऐसी ही देंगे, सलाह भी ऐसे ही देंगे और चलाएंगे भी ऐसे तो यह तो दुनिया तुमको उस तरफ खींचेगी ना इसीलिए बाप कहते हैं अभी इसका यह सभी संग छोड़ करके अभी मेरा संग पकड़ो तो मेरा संग पकड़ने से फिर तुमको जो नया संसार मैं बनाता हूं, वह भी संसार

बनाता हूं, मैं कोई ऐसा नहीं है तुमको कोई संसार से कहीं और, नहीं संसार ही बना देता हूँ परंतु उस संसार में सार, सुख कुछ जिसमें कोई ऐसी दुःख की बात रहती नहीं है इसीलिए कहते हैं अभी मेरी मत पर चलना पड़ेगा ना। तो अभी किसकी मत पर रहना है? यह तो कहेंगे कि विकारों पर चलो, यह संसार वाले अथवा यह जो है वह तो रावण की मत हो गई ना इसीलिए बाप कहते हैं अभी रावण की मत पर मत चलो, अभी चलो मेरी मत पर, राम की, राम माना निराकार परमपिता परमात्मा। वो अभी कहते हैं मेरी मत पर रहो, तो अभी उसकी मत से सुख पाएंगे और रावण की मत से दुःख पाएंगे, अभी क्या करना चाहिए? तो इसीलिए है कि अभी इनकी है इन सभी बातों से बुद्धि हटा करके अभी मेरे में लगाओ और जो मैं कहूं वह करो तो अभी करना चाहिए जो अगर सुख चाहते हैं। नहीं तो यह विकारी दुनिया भी अभी-अभी खत्म होने की है। भले कोई कहे चलो हम इसकी मत पर ही सही, जैसा होगा वैसा परंतु कहते हैं वह भी अभी खत्म होने पर है। इनका भी अभी टाइम पूरा हुआ है यह भी समझने की बात है कि ऐसे नहीं यह दुनिया अभी आगे और चलने की है, इनका भी अभी आ करके टाइम पूरा हुआ है। जभी इसका भी नाश होने का है तो नाश भई हुई दुनिया में अभी तुम काहे के लिए अपना मन लगाकर बैठे हो, इसमें क्या मिलेगा। इस दुनिया का भी अभी कुछ मिलने का नहीं है क्योंकि इनका भी अभी स्टेज आ करके पूरा हुआ है ऐसे भी नहीं है कि चलो इसका भी आगे कुछ टाइम है इसमें

भी अभी कुछ जो भी है, जैसा भी है अच्छा वह भी तो लेवें, नहीं बाप कहते हैं अभी उसका भी टाइम पूरा हुआ है इसको मुझे विनाश करना ही है क्योंकि इनकी अभी जड़जड़ीभूत अवस्था अथवा लास्ट स्टेज आ चुकी है इसलिए जबकि अभी इसी राज्य का खत्म होने का टाइम आया हुआ है यानी रावण के राज्य का, इस विकारी दुनिया के समय का अभी टाइम आ करके पूरा हुआ है और उसका डिस्ट्रक्शन, देखो मौत की भी निशानियां आ चुकी हैम, तो अभी जबकि उसके नाश का टाइम आया है तो क्यों नहीं अभी जो दुनिया आने वाली है सुख की तो क्यों नहीं अपना उसमें बना लेना चाहिए तो अकलमंदी तो यही है ना। एक तो जो चीज है वह एक खत्म होने की है, भले कोई कहे कि चलो हमको स्वर्ग के सुख नहीं चाहिए, हमको यही अच्छे हैं, हम इधर ही पड़े रहे परंतु बाप कहते हैं वह भी तो नहीं रहने का है ना। वह भी रहने का नहीं है क्योंकि उनका भी अभी टाइम पूरा हुआ है तो जबकि उसका टाइम भी पूरा है और उसमें कोई सार भी नहीं है तो जब ऐसी बात है तो क्यों नहीं जिसमें सार भी है और उसका टाइम भी आया हुआ है तो उसमें हक लगाने का समय है क्योंकि वह दुनिया अभी आ रही है, वह बताया ना आ रही है दुनिया। तो जबकि आ रही है दुनिया और अभी उस दुनिया की बारी है तो क्यों नहीं उसमें अपना अभी लगा देना चाहिए सेप्लिंग, कलम तो फिर हम उसमें अपना फल पाएंगे इसलिए बाप कहते हैं अभी समझ का अगर काम है और समझदार बनना है तो अभी यह विनाश भई हुई, अभी-अभी बाकी

थोड़ा टाइम है तो अभी जो खत्म होने पर है उसको अभी से ही खत्म कर दो, पहले से ही, जरा पहले से उसको खत्म कर दो, होनी तो है ही। तू ना करेंगे तो ऐसा नहीं है कि यह खत्म होने की नहीं है, तू ना करेंगे तो भी होने की है तो क्यों नहीं पहले से ही अपना उससे पहले से ही आशक्ति अथवा ममत्व निकाल देते हो तो उसका तुमको फायदा मिलेगा, तो मैं खाली कहता हूं तू पहले से जरा, मरनी तो ऐसे भी है , ख़त्म तो ऐसे भी होनी है तो जबकि ऐसे भी तुम्हारे से छूटना है सब कुछ, तो क्यों नहीं तुम पहले से ही अपना जरा दिल से आशक्ति अगर तोडेंगे तो उसका फल तुम्हारा देखो उस आशक्ति तोड़ने की सेप्लिंग लग जाएगी। तुम खाली आशक्ति तोड़ रहे हो, यह जो तुम कहते हो देह सहित देह के सर्व संबंधों से बुद्धि हटाते हो, बस उसी मेहनत का ही तुम्हारा सेप्लिंग लग जाती है, तो क्यों नहीं तुम इतना अपना नई दुनिया के लिए बना लेते हो, छूटनी तो वैसे भी है। ऐसे नहीं कोई कहे नहीं हम नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़ेंगे तो हां देखो उसका विनाश खड़ा है सामने। तो यह है सारी बातें इसीलिए बाप कहते हैं जबकि अभी यह सारा राज मैंने समझाया है और समझा रहा हूं और बुद्धि में आता भी है तो फिर उसके मुताबिक काम करना चाहिए ना, बाकी मेरा संसार ही मेरी दुनिया देखो कितनी सुखदाई है इसीलिए है कि हाँ अभी इसमें कुछ रहा नहीं है, कोई सार नहीं किसी में भी सार नहीं, सब कुछ बन के इस दुनिया का भी बड़े-बड़े बन कर भी देख लिया मर्तबे वाले, धनवान, बड़े-बड़े सब बनकर देख लिया

इसमें भी सार नहीं है, सब अनुभवी हो ना, इस दुनिया का अनुभव देखते चलते आए हो तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप अभी समझाते हैं इसीलिए कहते हैं जबकि अभी यह दुनिया का टाइम पूरा होने पर आ चुका है, अभी कोई कहे हम कैसे माने कि दुनिया का टाइम पूरा हुआ है तो अभी क्या इसमें अभी तक भी आंखें नहीं खुलती हैं, अभी तक यह ध्यान में नहीं आता है कि दुनिया का टाइम पूरा होने का यह सब दिखाई दे रहा है, यह दुनिया के आसार या दुनिया की जो भी अभी हालात हैं वह क्या अभी महसूस नहीं कराती है कि दुनिया किस ओर जा रही है। तो ऐसे कोई ना समझे कि नहीं अभी कोई हजार या लाखों बरस, वह कई समझते हैं ना कि कलयुग अभी तो बच्चा है, अभी तो इसको बड़ा, बुड्ढा होने में हजारों कई लाखों वर्ष पड़े हैं परंतु नहीं, अगर हजारों लाखों वर्ष पड़े हुए होते ना तो आज ही जितनी संख्या है वही संभालना दुनिया के लिए बड़ा एक मुसीबत की बात हो गई है कि आगे फिर चलते चलते यह संख्या और घटती चले और यह सब दुनिया का तो ऐसा ही चले तो हजारों लाखों वर्ष में क्या हो जाएगा, और है ही नहीं इतने टाइम का जबकि हम देखते हैं अभी-अभी थोड़े देखो यह क्रिश्चियेनिटी को 1965 वर्ष कहेंगे, उसके अंदर भी देखो कितनी संख्या बढ़ गई है। जब क्राइस्ट था उसने क्रिश्चियनिटी धर्म की स्थापना की उसी समय की संख्या काफी लो और अभी तो 2000 वर्ष भी नहीं हुआ है तो उसके अंदर अंदर इतनी संख्या बढ़ती जा रही है तो सोचने की बात है कि अभी कोई हजारों

या लाखों वर्ष कहे की पड़े हैं तो उसमें जाकर क्या होगा। अभी ही तंग हो गए हैं, अभी अपनी संख्या को कोई संभाल नहीं पा सकता है, खाने पीने रहने और सब बातों में देखो कितने तंग पड़ जाते हैं। तंग पड़ जाते हैं तभी तो लड़ते हैं ना, वह समझते हैं कि नहीं हमारे को ज्यादा जमीन मिलनी चाहिए, हमारे को ज्यादा यह होना चाहिए, हमारे को यह सब लड़ाई झगड़ा क्यों होता है। तो यह सब बातें बाप बैठकर के समझाते हैं कि जबकि अभी 2000 वर्ष के अंदर की संख्या भी सोचो तो जब पहले अभी क्रिस्चियन घराने की स्थापना की थी तभी कितनी थी और अभी उसके 2000 वर्ष भी नहीं हुए हैं तो कितनी संख्या हो गई है। तो सोचने की बात है कि जबकि समझते हैं कि ऐसी स्पीड संख्या की होती जा रही है तो हजार लाखो वर्ष और आगे हो तो क्या हो जाएगा फिर तो एक दो के ऊपर बैठेंगे क्या, क्या रहेगा तो इसीलिए बाप कहते हैं ऐसा है ही नहीं, अभी यह सब टाइम निशानियां है कि अभी यह टाइम आकर के लास्ट पहुंचा है। बाकी भी जो कहते हैं ना कि घोर कलयुग बहुत जबकि मनुष्य बहुत पीड़ा, तो वह भी तो टाइम बहुत निकट है, जब यह विनाश का चलेगा तो वह है पीड़ा का टाइम परंतु वह पीड़ा का टाइम बहुतकाल नहीं चलता है। बहुत दुःख का समय फिर बहुतकाल नहीं चलता है क्योंकि अगर बहुत समय चले तो बहुत पीड़ा में और बहुत समय अगर मनुष्य चलते रहे तो न मालूम क्या हो जाए, देखो पाकिस्तान और हिंदुस्तान का जो मामला हुआ तो ऐसा थोड़ी ना है कि बहुत काल चलता चले, नहीं

चला थोड़ा टाइम चला परंतु वह टाइम तो था, वो घड़ी जो थी वह समय जो थे वो कितने दर्दनाक थे। अगर यह दर्दनाक समय बहुत काल चलटा ही चले, चलता ही चले ऐसे मनुष्य एक दो को काटते फाड़ते चलते ही रहे तो ऐसा अगर लगातार चलता ही रहे तो कितना क्या हो जाए, तो नहीं वो पीड़ा का असली पीड़ा का टाइम थोड़ा टाइम चलता है लेकिन होती पीड़ा का है। तो यह भी विनाश का चलेगा लेकिन ऐसा थोड़ी है कि वह भी कोई हजारों लाखों वर्ष चलने की बातें है तो यह सभी चीजों को भी बहुत अच्छी तरह से समझने की बातें हैं कि हाँ टाइम आया हुआ है और यह भी जो बाकी टाइम है जिसको कहते हैं अति पीड़ा का समय वो भी आने का है। परंतु उसी टाइम पर तो अपना जो कुछ बनाना है वह उसी टाइम तो नहीं बनाएंगे ना बनाना है पहले, जो कुछ करना है तो पहले करना है वह करने का अभी समय है। पीछे तो है मौत, उसी टाइम पर जैसे मनुष्य मरने पर थोड़ी ही कुछ कर सकता है, मरने से पहले। कहते हैं ना घड़ी, आधी घड़ी, आधी की पुन: आधी के कुछ पहले, बाकी ऐसे थोड़ी है फिर मरने के समय मनुष्य क्या करेगा। मरने के समय मनुष्य मरने में ही होगा बाकी उसी टाइम तो कुछ नहीं कर सकता है ना करना है तो पहले। तो इसीलिए बाप कहते हैं यह मरने की मानो एक घड़ी पहले है, आधी घड़ी आधी की पुनः आधी इतना टाइम समझो इसीलिए जबकि अभी टाइम ही इतना रहा है तो उसके पहले कुछ कर लेना चाहिए ना। तो यह है थोड़ा टाइम पहले का जिसमें बैठ कर के हम

बाप के द्वारा उसकी मत ले करके और अपना उच्च सौभाग्य बनाते हैं और सौभाग्य भी क्या बनाते हैं उसकी भी हमारे बुद्धि में सारा साक्षात्कार ज्ञान से बैठकर के कराते हैं। समझाते हैं कि अभी क्या है फ्यूचर और किसलिए तुमको मैं बैठकर के यह मत दे रहा हूं, उससे तुम्हारा क्या बनेगा, क्या होने का है वह सारी इस फिल्म की भावी जो है ना वह बैठ करके बतलाते हैं। तो वह अभी बुद्धि में है ना अच्छी तरह से ? जबकि बुद्धि में है और रोशनी है अभी तो फिर उसके मुताबिक काम करना चाहिए ना। और है बहुत सहज, कोई और भी ऐसी कोई बात नहीं है कि क्या करना है, कोई ऐसे नहीं है कि मुश्किल है कोई क्या करें, कहते हैं कोई भी हो, नारी हो नर हो दोनों कर सकते हैं। बच्चा हो बूढ़ा हो कोई भी कर सकता है क्योंकि बाप को याद करना है और बाप के फरमान के ऊपर चलना है तो वह कोई ऐसी डिफिकल्ट बात नहीं जो बच्चा भी ना कर सके। बच्चे को भी अगर छोटे को कहो कि यह तेरी मां है तेरा बाप है तो बुद्धि में नहीं बैठ जाता है, बैठ जाता है ना? तो जो बच्चा भी धारण कर सकता है यह इतनी इजी बात है। तो इसीलिए ऐसे भी नहीं कोई कह सकते हैं कि नहीं भाई सभी आत्माएं कैसे उसको पा सकेंगी, नहीं कोई बच्चा हो बूढ़ा हो सबको अधिकार है और इसीलिए बाप कहते हैं देखो मैं आता हूं तो मैं तो सबको बैठकर के बच्चे को, बूढ़े को देखो इस स्कूल में सब है ना, बच्चे भी हैं, बूढ़े भी हैं, ऐसा कोई स्कूल देखा? और स्कूलों में तो देखेंगे कि हां उसमें तो एक ही एज के या थोड़ा कुछ

वर्षों का इधर उधर हो, परंतु इधर तो देखो बुड्ढा भी, बच्चा भी, यंग भी सब के लिए और नर और नारी कोई भी हो और किसी जात का भी हो और कैसा भी हो। भले कहते हैं बीमार भी हो ना तो भी ऐसी बात नहीं है कि मैं बीमार हूं नहीं कर पा सकता हूं, ऐसी कोई बात नहीं है कि तुमको आसन लगाकर के, कमर सीधे करके बैठने की है इसलिए हमारा मुश्किल है, नहीं ऐसी भी कोई बात नहीं है बड़ा सिंपल है भले लेटे रहो, भले सोए पड़े रहो परंतु याद रखने का है, तो याद तो बुद्धि से रखने का है ना। तो उसमें ऐसे भी कोई डिफिकल्टी नहीं है कि कोई कहे कि हम कैसे कर सकते हैं इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं बात ऐसी सहज बतलाता हूं कि कोई भी करके अपना भविष्य ऊँच बना सकता है इसीलिए कोई ऐसी डिफिकल्ट की बात नहीं है किसी के लिए भी नहीं। और सबको हक है क्योंकि आत्माएं तो सब मेरी संतान है ना, परंतु जानती नहीं है बिचारी भूल गई है। अभी फिर यथार्थ रीति से मुझे जान करके और मेरे द्वारा वह अपना हक पाने का पुरुषार्थ रखने का है। तो यह तो अभी सब बुद्धि में है ना कैसे उसको याद रखने का है और याद का भी सहज तरीका बतलाते हैं, कल बतलाया न सहज तरीका, ऐसा भी नहीं है कि काम करें तो भूल जाएं क्योंकि हमारे सामने तो कोई चित्र ही चाहिए, हमारे सामने तो क्या उसकी सूरत ही चाहिए, पीछे हम काम करेंगे तो फिर सुरत कैसे आएगी, नहीं वह कहते हैं ऐसी भी नहीं है कि मेरी शक्ल देखते रहो। नहीं मैं ऐसा नहीं कहता हूं कि मेरी बस मेरी सूरत के ऊपर तुम प्रेम

लगाओ, मेरी सूरत, सूरत ही मेरी क्या है, मैं तो हूं ही बिंदी स्टरलाइट, वह तो तू भी बिंदी स्टार लाइट है एकदम। तो मेरी सूरत के ऊपर थोड़ी ही आशिक होना है, वह तो आशिक माशूक होते हैं तो भी एक दो के शरीर के ऊपर उनका प्रेम जाता है, यह तो कहते हैं कि नहीं तुम्हारा मेरे पर प्रेम कोई सूरत के ऊपर नहीं है कि तुम मेरी सूरत देखते रहो या कोई मूर्ति चाहिए तुमको उसके लिए, नहीं मैं क्या हूं तेरा बाप हूं मेरा रिलेशन है तेरे से । हां तो बाप भी किसमें हूं, बाप भी क्यों कहा जाता है क्योंकि बाप से हक मिलता है तभी उसको बाप कहा जाता है। बाप क्रिएटर है और बाप से वर्सा मिलता है इसीलिए तो मैं कैसे क्रिएटर हूं और कैसे मेरे से क्या वर्सा तुम्हे में मिलता है वह तो मेरा रिलेशन समझो। तो वो जो प्राप्ति है ना तुमको मुझसे उसी प्राप्ति के लिए तुम मुझसे प्रेम करते हो कि वही हमारे सुखदाता है, वही हमारे शांति के दाता है। किसी से कुछ मिलता है तभी तो उससे प्रेम होता है ना, तो तुमको कोई मेरी सूरत नहीं मिली है, जो उसके ऊपर तुम्हारा प्रेम हो, तुम आशिक माशूक की तरह से मेरा चित्र ही देखते रहो या मेरा तुमको फोटो चाहिए या तुम मेरा साक्षात्कार करो या सूरत को देखते रहो, मेरी सूरत के ऊपर थोड़ी ही तुम फिदा हो, तुम फिदा हो उसी पर कि हां मैं जो तुमको देता हूं ना, मेरे द्वारा तुमको मिलता है, क्या मिलता है सदा का सुख, वह बल मिलता है, शक्ति मिलती है तो वह जो चीज तुमको मिलती है जो मैं तुमको देता हूं उसी का ज्ञान तुमको चाहिए कि उसको याद रखने से

अथवा उसका होकर के रहने से मेरे द्‌वारा तुम्हें क्या प्राप्त होगा उसको समझो। तो समझने से तुमको बैठेगा कि यह हमारा दाता है, देने वाला है इससे कुछ मिलने का है, कुछ तो क्या सब कुछ और सब कुछ क्या उसका तो दिखलाता है कि सब कुछ क्या। सब कुछ में सब कुछ है ना, हेल्थ वेल्थ एवरीथिंग। मनुष्य को चाहिए क्या, आज जीवन में क्या-क्या चाहिए बताओ। जीवन में यही तो चीजें चाहिए ना अगर यह चीजें हो तो फिर तो वाह! फिर कोई कहेगा थोड़ी कि संसार ऐसा क्यों, ऐसे संसार में तो होते ही नहीं, यह तभी मनुष्य को होता है जब दुःख आता है। कोई रोग आता है, कोई अकाले मरता है या कोई ऐसी निर्धनता या कई ऐसी बातें होती हैं तो मनुष्य दुःखी हो करके कहते हैं कि ऐसा संसार भगवान ने रचा ही क्यों, ऐसा भगवान ने बनाया ही क्यों, फिर भगवान को भी कई गाली दे देते हैं कि भगवान तुमने तो संसार अपना हेल समझकर बनाया और हमारे लिए पीड़ा और दुःख रचा, परंतु बाप कहते हैं मैंने वह नहीं रचा, यह तो तुमने बनाया है, मैंने कैसे रचाया जो तुम सदा उसमें सुखी थे वह बैठ करके समझाते हैं कि मैंने तुम्हारी जीवन कैसी बनाई। इसीलिए तो कहते हैं मैं आया हूं और तुम्हारे लिए अभी वह जीवन फिर से बना रहा हूं तो अभी बनाना चाहिए ना। तो यह तो अभी कंट्रास्ट बुद्धि में है ना इसीलिए कहते हैं गीतों में की हाँ यह दुनिया अभी झूठी, माया झूठी काया, झूठा सब संसार इसमें अब सब झूठ हो गया है, सच निकल गया है अभी फिर तू आया है सच्चा संसार, जिसको संसार

कहें, अभी संसार थोड़े ही है इसको नर्क। तो अभी कहते हैं सच्चा संसार जिसमें सूख था, कुछ सार था वह अभी कहते हैं सार वाला संसार अभी बनाते हैं। तो अभी बनाता हूं तो उसमें तुम भी अपना लगाएंगे कर्म का बल, तभी तो तुम उसमें आएंगे ना, नहीं तो ऐसी प्रालब्ध कौन पा सकेगा। सिवाय कर्म के प्रालब्ध तो नहीं मिल सकती है ना तो उसी प्रारब्ध को पाने के लिए तुम्हारे कर्म में भी ताकत चाहिए इसीलिए कहते मैं आता हूं तुमको वह बल देने के लिए। तो यह तो बात सीधी और साफ है ना ? तो ऐसी साफ बातों को समझ करके और बाप से अपना ऐसा अधिकार लेने का पूरा पूरा पुरुषार्थ करना है इसीलिए कहते हैं अभी बनवारी, बनवारी वह लगाया हुआ है ना वह ले गए हैं रामचंद्र को भी भगवान बनाया, कृष्ण को भी भगवान बनाया ले गए हैं उसी हिसाब से ऐसे ऐसे, बाकी कोई बन में नहीं गए हैं या कोई जाकर के बनवास लिया या किया, नहीं यही है हम इस दुनिया से वनवास लेते हैं अथवा इसका हम त्याग करते हैं। हमारा है सारी दुनिया का त्याग हम कोई घर बार का त्याग नहीं करते हैं, हम इस पुरानी झूठी सारी दुनिया का त्याग करते हैं। यह दुनिया, यह दुनिया ही नहीं चाहिए हमको, हमको चाहिए वह दुनिया तो हमारा त्याग बड़ा है सबसे। वह घर बार का खाली नहीं, वो सन्यासी तो खाली घर बार का सन्यास करके फिर भी जाते तो इसी दुनिया में है ना, कहाँ जंगल जाएंगे या कहां भी जाएंगे तो फिर जाते तो इधर ही है ना, हमतो कहते हैं हमको यह दुनिया ही नहीं चाहिए।

कौन सी दुनिया, दुनिया तो इधर ही रहेगी लेकिन परंतु फिर यह दुनिया परिवर्तन में, चेंज में आकर के जिसको सुख की दुनिया अथवा स्वर्ग कहा जाता है फिर उस दुनिया का सुख पाएंगे इसीलिए बुद्धि में अभी वह चीज है न । तो अभी बुद्धि में वह चीज रख कर के अभी उसी का प्रयत्न करना है तो ऐसे प्रयत्न कर करके अपना सौभाग्य बनाना है। अच्छा सौभाग्यशाली और भाग्यशाली भाग्यशाली का मतलब है जिन्होंने अपने परम पूज्य बाप से यह वर्सा पाने के लिए पूरा पूरा अपना पांव लगाया है। पांव लगाने का मतलब है जिन्होंने पवित्रता को अपनाया है तो इतना तो है भाग्यशाली बाकी फिर उसमें भी अपना ऊँच स्टेटस पाने का बैठ करके पुरुषार्थ करना उसको फिर कहेंगे सौभाग्यशाली क्योंकि उसमें भी दर्जे है ना। उसमें भी राजा प्रजा नंबरवार है । प्रजा भी तो पवित्र दुनिया में ही है, राजा भी तो पवित्र दुनिया में ही है, तो उसमें भी स्टेटस है ना नंबरवार तो फिर उसमें स्टेटस पाने का पुरुषार्थ रखना उसको कहेंगे सौभाग्यशाली। बाकी भाग्यशाली तो जरूर हो यहां तक जो आए हो, बैठे हो सुनते हो, रोज सुन रहे हो और जरूर पवित्र दुनिया में पवित्रता को भी अपनाया होगा, तभी तो फिर पवित्र दुनिया में चल सकेंगे ना बाकी उसमें भी अपना ऊँच मर्तबा पाना उसके लिए है यह सारा पुरुषार्थ तो जरूर उसमें भी नंबरवार अपना पुरुषार्थ तेजी से करते रहते होंगे। कैसे लव जी? क्या बनने का है? डबल क्राउन? हां.... अच्छा! डबल क्राउन। और बनना ही चाहिए डबल क्राउन सो भी सूर्यवंशी। सूर्यवंशियों में भी

पहला सूर्यवंशी भी आठ गद्दी हैं, किस गद्दी में? पहला, कोशिश तो ऐसा रखना है ना? पहला का मतलब अभी पहला तो कोई कहे सेकंड, थर्ड मतलब पहले पहले नंबर तो कोशिश रखने की है । देखो स्कूल में बच्चे भी पढ़ते हैं तो हमेशा यही तो रखते हैं ना जो पढना जानते हैं और जिनकी तेज बुद्धि है उनको अपने दिमाग का भी नशा रहता है ना, वह समझते हैं हम जब कर सकते हैं तो क्यों नहीं, तो अगर नंबर भी थोड़ा कम आएंगे ना तो कई बच्चे जो पढ़कर जाते हैं जन्हों को पढ़ाई का और बुद्धि का नशा है तो एक नंबर से भी विचारे ऐसे हो जाते हैं कि एक नंबर भी क्यों हुआ, पास तो हुआ परंतु नंबर भी क्यों वह समझते हैं नंबर भी हम लें ना । तो यह भी तो है ना, खाली पास मार्क में पास होना, यह भी नहीं, परंतु इसमें हम अपना नंबर भी आगे करें ऐसा पुरुषार्थ रखने का है तो ऐसे पुरुषार्थी जो है ना, वह तेजी से अच्छी तरह से अपना ध्यान रखकर के अपना अपना बनाएंगे। अच्छा, टोली दो। बाप से अपना पूरा पूरा आने का पूरा वर्सा भी पूरा, इसमें ऐसे नहीं है कि वह बाप है तो बस हमको मिल ही जाएगा ऐसा कोई ख्याल ना करे। जैसे वह बाप लौकिक में ऐसे हो जाए भाई बच्चे को, कैसा भी बच्चा होगा लेकिन बाप का वर्सा तो मी ही जाएगा लेकिन यहां तो है बच्चे को लायक बनना। लायकी के ऊपर है सारा काम, लायक नहीं बनेंगे तो वर्सा नहीं मिलेगा, ऐसा नहीं समझना कि चलो हां वर्सा तो मिल ही जाएगा । हां हां भले पाएंगे थोड़ा बहुत जो कुछ जो किया है, आकर के वहां कुछ पा लेंगे परंतु वो

जो है पूर्ण प्राप्ति की स्टेज वह तो अपनी मेहनत से होगा ना, तो उसके लिए तो पुरुषार्थ करना है। तो ऐसा ख्याल रख कर के पुरुषार्थ रख कर के अपने को आगे करते रहो जितना हो सके। ऐसे नहीं है कि हमारा सारा समय बुद्धि जो है ऐसी बिजी रहती है जो हम अटेंशन इसमें नहीं दे सकते हैं नहीं, बहुत फालतू बुद्धि चलती है, अगर अटेंशन देवें तो फालतू से हम बहुत काम ले सकते हैं बुद्धि को इस प्रैक्टिस में अथवा इसमें लगा करके हम अपना फायदा निकाल सकते हैं। तो फालतू बुद्धि इधर उधर ना जाए उसकी हमको संभाल रखने की है। जितना हो सके बाप की याद में रह करके उससे अपना बल लेने का है। इसलिए बाप कहते हैं मैं तुम्हारा काम भी देखो, तुम्हारा कोई काम करके नहीं करता हूं, तुम्हारा जो फालतू है ना मैं कहता हूं तुम्हारी फालतू बुद्धि इधर-उधर जाती है उससे तुम मेरे में मन लगाओ फालतू की उधर उधर बेस्ट करते हो। तो मैं तुम्हारा काम इतना ऊँच तुम्हारी जो वेस्टेज है उससे निकालता हूं बाकी तुम्हारा कोई जरूरी काम थोड़ी ही खोटी आठ घंटे या छ; घंटे सात घंटे देते हो की जरूरी है बुद्धि उसमें लगे, नहीं उसमें कई ऐसे समय मिलती है जिसमें तुम यह भी काम करो और वह भी काम करो, कर सकते हो। तो भी आठ घंटे भी कहते हैं तुमको छूट है, दिन में चौबीस घंटे हैं, फिर भी सोलह घंटा बच जाता है तो सोलह घंटा क्या करते हो? चलो उसमें आठ घंटे और भी छोड़ देता हूं, नींद करो, आराम करो, जो करो चलो, बाकी भी आठ घंटे सीधे बच जाते हैं तो बाकी क्या ,है चलो आठ न तो चार

घंटे का कुछ कर दो, आधी घड़ी, घड़ी की भी आधी, आधी की भी आधी, तो थोड़ा तो कुछ टाइम का यहां करने से जितना बन जाएगा। तो अपना टाइम कैसे सफल करना चाहिए और किस तरह से उसका पूरा अटेंशन रखने का है। बुद्धि टिक सकती है ना? जैसे हमारी टिकी हुई थी बॉडी कॉन्शियस में कि हम फलाना हैं, उसमें कैसे टिकी थी, अभी बॉडी ना समझ करके अपने को सोल समझना है तो फिर उसमें टिक जाएंगे। खाली चीज को बदलना है बस, बुद्धि तो टिकती है किसी ना किसी भी टिकती है। हां, पति के सामने होगा तो टिकेगी कि हाँ मैं इनकी स्त्री हूं, देखो टिकी हुई है ना बुद्धि, बच्चों के सामने होगा कि मैं इसकी मां हूं, देखो टिकी हुई है ना बुद्धि, तो जैसे यह बुद्धि टिकाई है, पहले तो माँ नहीं थी ना, पहले तो किसी का बच्चा बच्ची थी, पीछे मां बनी तो देखो टिक गई ना, तो उसी बातों में जल्दी-जल्दी टिकती है ना माँ बने तो मां के ऊपर टिक गई, स्त्री बन गई तो स्त्री के ऊपर टिक गई, कन्या थी तो हाँ मैं किसकी बच्ची हूँ उसमें टिकी तो फिर उसमें कैसे जल्दी-जल्दी टिक गई, वह कैसे बुद्धि में जल्दी आ जाता है। बैठ जाती है ना बुद्धि में, तो वह बुद्धि जल्दी-जल्दी यह ग्रहण कर लेती है, इसमें भी बाप कहते हैं अभी यह सब देह के जो कुछ हैं, जिसमें पहले से टिकी हुई बुद्धि है उसमें से निकाल करके अभी मेरे में मन लगाओ, तो अभी इसमें बदली करने में क्या मुसीबत पड़ती है हां? (प्रैक्टिस चाहिए) हाँ प्रेक्टिस चाहिए क्योंकि वैसे भी प्रैक्टिस है, देखो छोटा देखो था तो उसी समय इसको थोड़े था कि

मैं बाप हूं, न अभी देखो बड़ा हुआ, बच्चे पैदा किया तो अभी बुद्धि टिक गई है कि मैं बाप हूं, तो वह भी बुद्धि बदलती है ना। वह स्टेज से इस स्टेज में आया तो यह बुद्धि बैठ गई अभी मैं बाप हूँ, बच्चे हैं, मुझे संभालनना है, यह करना है, वह करना है, तो इसमें बुद्धि बदलती है और उसमें बुद्धि टिक जाती है जो भी स्टेज आती है उसमें बुद्धि टिक जाती है, अभी बाप कहते हैं उस स्टेज में टिक जाओ और क्या है। अभी बॉडी कॉन्शियस निकलकर के सोल कॉन्शियस में आ जाओ, बस उसी स्टेज में चले जाओ, इसमें क्या है। कुछ नहीं है, तो खाली अपनी प्रैक्टिस और समझ की बात है कि उसमें रखकर के लगना है। (बेटे से बाप है लेकिन बाप फिर अपने को बेटा समझना मुश्किल होता है) नहीं, यह भी सहज है, बच्चे को देखो छोटा बच्चा होता है ना, उसको अगर कोई गोद का बच्चा ले लेते हैं तो क्या वह रिलेशन नहीं उधर चला जाएगा? बहुत छोटे बच्चे को भी हो सकते हैं, भले बड़ा भी हो समझो आप कोई बच्चे को कोई गोद का बच्चा बनाता है तो क्या नहीं चाहेगा, कोई धनवान है, साहूकार है, लखपति है, करोड़पति है वह कहता है मुझे बच्चा नहीं है, कोई तुमको गोद का बच्चा लेगा, क्या बदली नहीं हो जाएगा? अरे! मैं इसका बच्चा हूं, क्योंकि समझेगा न, नहीं तो बच्चा ना समझूंगा तो लक नहीं मिलेगा, हां पहले नहीं मिलेगा, तो झट से बुद्धि चली जाएगी, क्यों नहीं जाएगी टेंप्टेशन कोई है तो जाएगी और यह टेंप्टेशन कोई कम थोड़ी ही है, बहुत बड़ी टेंप्टेशन है तो ऐसे नहीं है कि बुद्धि नहीं जा सकती है, जा

सकती है (ये कहते हैं ये दम से दिलासे हैं कैसे होगा) ओहो ये दम के दिलासे नहीं है, जो उसमें दम है ना वो अभी सब झूठ हो जाने का है, देखो कहते हैं ना झूठी काया झूठी माया, जीते हुए भी झूठा कह रहे हो क्योंकि अभी सार नहीं है, निकलता जाता है बाकी मरने में देरी थोड़े ही है। इसकी हालत तो देखते जाते हो अभी हालत देखते भी नहीं समझते हो मरने पर है, ऐसे ना हो तो फिर जब समय आए फिर तो कुछ नहीं कर सकेंगे ना करना पहले हैं। अच्छा, कुछ भी है जीवन ऐसी ही चलती है, आप जब छोटे थे आपको तो यह दिलासा था ना खाली कि मैं बाप बनूंगा, पढ़ाऊंगा लिखूंगा पढ़ूंगा, बच्चे पैदा करूंगा तो वो शास्त्र में कैसे चले, उसका फ्यूचर कैसे बनाया, वह भी तो फ्यूचर सोचा ना? छोटा था तो कहा मैं पढ़ूंगा, लिखूंगा, हां इंजीनियर बनूंगा, तो पहले थोड़ी इंजीनियर थे लेकिन फ्यूचर सोचा ना? वह एक जीवन का सोचा, यह है दूसरी जन्म का सोचना, फर्क सिर्फ इतना है लेकिन वह भी तो फ्यूचर सोचना है ना, तो फिर जैसे उसमें सोचते हो वैसे फिर इसमें सोचना है, यह भी तो दम के दिलासे थे ना। पता था कुछ अभी मर जाऊं तो, कोई पक्का थोड़े ही है कि हां बचे रहूंगा, नहीं उसमें भी तो ऐसा ही था ना, जिसको कहते हैं दम के दिलासे तो वह भी तो ऐसा ही था फिर उसमें कैसे चले आए? अभी इसमें भी क्या है ये आत्मा तो जन्म लेती रहती है उनका पुनर्जनम है यह तो सभी बातें मानते ही हैं ना, तो फिर बाकी क्या है, तो इसमें क्यों भूलना चाहिए। अच्छा! ऐसा बाप और दादा और मां की मीठे

मीठे बहुत अच्छे और ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चे हैं ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

मम्मा मुरली मधुबन

044. अलंकारधारी बनने की विधि

रिकॉर्ड :

एकमात सहायक स्वामी सखा, तुम ही सबके रखवारे हो

ओम शांति।

मात पिता को समझा है ना? यह महिमा है उनकी, उनकी किसकी? अपने परम पूज्य, पूज्य एक ही है ना, जो एवर पूज्य है, एवर प्योर है। जो एवर प्योर है वही तो पूज्य लायक रहेगा ना और बाकी हम मनुष्य पूज्य और पुजारी भी बनते हैं ना। अपने ही बैठकर के चित्रों को और पूजते हैं, नहीं तो यह देवताएं, मनुष्य भी जो पूज्य गिने गए हैं वह तो एवर पूज्य हैं यह पुजारी से पूज्य, परंतु जो मनुष्य भी पूज्य गिने गए हैं फिर वही पुजारी बनते हैं और पूज्य बनते हैं। वो कहते हैं ना आप ही पूजा आप ही पुजारी, वह परमात्मा के लिए नहीं। कई ऐसे समझते हैं कि सर्वव्यापी के हिसाब से पुजारी में भी परमात्मा पूज्य में भी परमात्मा इसीलिए वह समझते हैं आप ही पूछिए आप ही पुजारी, ऐसे कैसे, नहीं, आप ही पूज्य आप ही पुजारी का अर्थ है कि हम ही आत्माएं, यह आत्मा से लगता है कि हम आत्माएं सो पूज्य थी अर्थात पवित्र थी, फिर अपवित्र बनी तो अपने

ही पवित्र आत्मा और एवर प्योर परमात्मा को पूजने लगी। है ना, देवताओं को भी पूजने लगे तो परमात्मा को भी पूजने लगे तो पुजारी हम बने, उसको तो नहीं कहेंगे ना आप ही पूज्य आप ही पुजारी, रॉन्ग हो जाता है। तो परमात्मा की स्तुति और महिमा कौन सी होनी चाहिए यह भी समझने की बात है। ऐसे नहीं जो उलट-पुलट आए आप ही पूजा आप ही पुजारी या परमात्मा को भी आगे जा करके कह देंगे, सबको कहेंगे आप सर्व गुण संपूर्ण 16 कला संपूर्ण, नहीं परमात्मा को कभी सर्वगुण भी नहीं, यह इंसल्ट है उसकी क्योंकि वह कभी अवगुण में आता ही नहीं है जो उनको सर्वगुण कहें, वह तो एवर, सभी बातों में एवर है ना, उसमें कोई परिवर्तन या उनकी चेंज चेंज नहीं आ सकती है । जो चेंज में आती है, उनकी महिमा अलग है तो मनुष्य आत्मा चेंज में आती है वह गोल्डन सिल्वर कॉपर एंड आयरन सतोप्रधान, सदो रजो तमो इन सभी में आते हैं तो जो चंजेस में आते हैं उनकी महिमा अलग और जो आता ही नहीं है उनकी महिमा अलग होनी चाहिए ना । तो हम सभी एक ही एक जैसे जो भी यहां हैं जैसे मिनिस्टर भी एक, गवर्नर भी एक तो राजा भी एक तो फलाना भी एक, सब एक ही एक? सबका एक नहीं, हर एक की पोजीशन, हर एक की पोस्ट, हर एक का कर्तव्य अपना-अपना है ना। मिनिस्टर में भी यह फाइनेंसमिनिस्टर, यह फलाना मिनिस्टर, हर एक की पोजीशन अलग है न। अगर हमको कोई काम किसी किसी मिनिस्टर का निकालना है तो हम गवर्नर के पास थोड़ी ही जाएंगे, हर

एक की पोस्ट हर एक की बात अपनी-अपनी है। तो सबसे ऊंचा परमात्मा तो यह सभी जानने की बातें हैं ना तो ऐसा नहीं है कि सब मिल मिलाकर एक ही एक, देवता को देवता, परमात्मा को परमात्मा, यह सभी चीजें समझने की है। तो देवता मनुष्य जो प्यूरीफाइड है उन्हीं को देवता कहते हैं बाकी परमात्मा को फिर देवता नहीं कहेंगे इसीलिए ब्रह्मा, विष्णु, शंकर इन्हीं को देवता कहेंगे। देखो यह है ना ब्रह्मा, विष्णु, शंकर ये तीन इनको देवता कहेंगे, इनको गॉड नहीं कह सकते हैं। इसी तरह से कृष्ण, राम, यह फिर साकार में, कॉरपोरियल देवताएं, जो फॉर्म में आए हुए हैं वर्ल्ड पर अब यह चार भुजाएं वाला तो वर्ल्ड पर नहीं है ना, यह तो सिंबल है सिर्फ साक्षात्कार में देखने के लिए, इसको कहेंगे फिर आकारी देवता, आकारी समझते हो? आकार माना जिसका फॉर्म साकार कॉरपोरियल नहीं है सिर्फ दिव्य दृष्टि से देखने में आता है। तो यह चतुर्भुज, इनको कहेंगे आकारी देवता और राम और कृष्ण इनको कहेंगे साकारी देवता । तो साकारी माना जो कॉरपोरियल फॉर्म में यहां आए हुए हैं वर्ल्ड में, तो यह लक्ष्मीनारायण जो है इनको साकारी देवता कहेंगे, देवी और देवता आए हैं फॉर्म में, यहां इनका राज्य चला है यानी मनुष्य, जो प्योर मनुष्य थे उनका देवी देवता धर्म था इधर, जैसे क्रिश्चियन बुद्धिस्म यह सभी है ना वैसे परमात्मा के द्वारा जो अभी यह प्योरिटी की जनरेशन चली है उसका नाम देवी देवता तो वह साकारी देवता है इनको कहेंगे आकारी देवता क्योंकि यह कोई पृथ्वी पर नहीं आए हैं, चार भुजा

धारी आदि यह तो सिर्फ दिव्य दृष्टि के देखने का सिंबल है जो सिर्फ परमात्मा द्वारा साक्षात्कार कराया जाता है कि नर नारी ऐसे हैं परन्तु नर नारी जो साकार में आए हैं तो लक्ष्मी नारायण को साकारी देवता, इनको आकारी देवता परंतु यह सिर्फ मनुष्य के स्टेटस है लेकिन परमात्मा फिर भी निराकार को कहेंगे। तो यह सभी चीजें समझने की है ना निराकार, फिर साकार, फिर आकार। आकार माना जिसका फॉर्म है मनुष्य जैसा परंतु इस साकार हड्डी मास का नहीं। यह हड्डी मास का है, वह सूक्ष्म दिखाई पड़ते हैं बाकी वह हड्डी मास नहीं है। ऐसे उसको स्पर्स करो, नहीं वह आकार में खाली दिव्य दृष्टि में आते हैं। तो यह चीजें समझने की है सब तो वह आकारी देवता और वह साकारी देवता लेकिन परमात्मा इन सब से ऊपर, निराकार। निराकार माना उसका मनुष्य जैसा आकार नहीं है उनका लाइट की बिंदी कहो, बिंदी सदृश्य, इधर भी बड़ा दिखाया है चित्रों में क्योंकि इतनी छोटी बिंदी दे कैसे जो देखने में आए। इधर इतनी छोटी छोटी बिंदी दी है समझ में आती है देखने में आती है तो इसलिए थोड़ा बड़ा दिया है, नहीं तो है तो बिल्कुल स्टार लाइट जैसे एक टीका, बिंदी बस ज्योति सा परंतु इतनी छोटी चीज कैसे दिखलाने में आवे इसीलिए थोड़ा बड़ा दिखाया है कि भाई ज्योति का, लाइट का, तो हम आत्मा भी ऐसी चीज है और परमात्मा भी ऐसी चीज है लेकिन हां वह एवर प्योर है हम इमप्योर, प्योर, हमारी आत्मा के ऊपर मैल चढ़ती है जैसे चंद्रमा को ग्रहण लगता है ना। ग्रहण देखा है कभी चंद्रमा का, तो चंद्रमा को

ग्रहण आ जाता है, सूर्य को ग्रहण आ जाता है, तो आत्मा को ग्रहण लगता है परमात्मा को ग्रहण नहीं लगता है। उसी सोल के ऊपर, सुप्रीम सौल के ऊपर यह माया का, पांचों विकारों का आवरण नहीं चढ़ता है लेकिन हम आत्माएं सोल्स के ऊपर वह चढ़ता है तो मानो ग्रहण लग जाता है जैसे जब फिर ग्रहण हट जाता है तो चंद्रमा खिल जाता है। इसी तरह से आत्मा है ज्योति रूप परंतु उसके ऊपर मेल कहो, ग्रहण कहो माया का, आवरण कहो या ऐसे कहो जैसे वो नीडल होती है ना, उसके ऊपर कट चल जाती है। कट समझते हो? जंक, हाँ वह जंक चढ़ जाती है ना तो फिर हां उसको उतारी जाती है तो मानो आत्मा के ऊपर जंक चढ़ गई है, काहे की? पांच विकार की। अभी जैसे वह तेल से, घासलेट या किसी और चीज से उनको साफ किया जाता है, वैसे इसको यह ज्ञान रूपी, ये योग रूपी घासलेट, इसको घासलेट कहो, इसको तेल कहो, इसको घृत कहो तो इसी तेज को जगाना है, साफ करना है। तो यह ज्ञान और योग है उसका घृत कहो या तेल कहो, उनको यह देना है जिससे उसकी कट कहो, ग्रहण कहो, आवरण कहो, यह सब फिर है माया का जो चढ़ा है, तो यह चढ़ा किसके ऊपर है? आत्मा के ऊपर, आत्मा के ऊपर चढ़ा है तो फिर बाती भी ऐसी और फिर हमारे सारे रिश्ते भी ऐसे, फिर सारे संसार की बनावट भी ऐसी सब हमारी कर्म बंधन यानी सब हमारे दुःख के बन गए हैं इस माया के संग से। जब माया का संग नहीं था हम प्योर आत्मा थे तो शरीर भी प्योर थे और हमारे संबंध भी प्योर थे और

संसार की सारी जो बनावट थी वह भी प्योर थी, इसी को कहा जाता था जब ऐसी प्योर थी सब कुछ तो उसको सतयुग, हेवन और देवी-देवताओं का राज्य कहा जाता था, मनुष्य देवी देवता । तो वह लाइफ हमारी जो थी ऊंची थी, अब हमारी लाइफ जंक चढ़ी हुई है, समझा, ग्रहण लगी हुई है। तो अभी यह सारी दुनिया के ऊपर ग्रहण है, कोई एक के ऊपर नहीं है यह सारी दुनिया के ऊपर अभी ग्रहण है। अब यह ग्रहण सारी दुनिया के कौन उतारे ? तो दुनिया का मालिक चाहिए ना, इसीलिए कहते हैं वर्ल्ड क्रिएटर उनको क्योंकि यह ग्रहण, यह बॉन्डेज इसको बॉन्डेज कहो माया का, ये ग्रहण या बाँडेज माया का यह उतारना, इससे लिब्रेट करना, यह उस लिब्रेटर का काम है। लिब्रेटर इज वन, इस जंक को उतारने का, इस ग्रहण को उतारने का, लिब्रेटर इज वन। जैसे गॉड इज वन, तो गॉड ही लिब्रेटर है। मनुष्य में इससे सेलिब्रेट करने की पावर नहीं है क्योंकि ग्रहण तो सभी मनुष्य के ऊपर है ना, किसी के ऊपर बहुत, किसी के ऊपर थोड़ा है सबके ऊपर परंतु ग्रहण में सब हैं। सन्यासी, साधू भी ग्रहण में हैं क्योंकि बैठे हैं ना विकारी दुनिया में। जन्मते हैं तो कहां से जन्मते हैं विकारों से, जन्मेंगे, छोटापन होगा तो विकारियों के संग में रहेंगे ना, पीछे बड़े होंगे तो पीछे संन्यास लेंगे तो यह भी तो कर्म का हिसाब है ना। तो यह है ही विकारी दुनिया उनको भी देखो सन्यासियों को क्या रोग नहीं होता है? तो कोई तो कर्म का हिसाब है ना, तो कोई तो हिसाब है जो उसको भी भोगना पड़ता है तो जरूर है कि कोई विकारी

खातों का हिसाब है तो विकारों का उसमें भी खाता है तो सब अभी सब कहेंगे, इसीलिए यह सारी दुनिया सब आत्माएं अभी ग्रहण लगी हुई है। तो सारी दुनिया के ऊपर ग्रहण है तो सारी दुनिया का ग्रहण उतारना दुनिया का मालिक, तो दुनिया का मालिक कहते हैं यदा यदा ही जब सारे पूरे ग्रहण में आ जाते हैं ना तब फिर मैं आकर के उसी ग्रहण से छुड़ाता हूं, फिर कहते हैं दे दान तो छूटे ग्‌रहण जैसे जब ग्रहण होता है ना तो दान लेने आते हैं। यहां पर भी होता होगा जब ग्रहण लगता होगा तो । तो कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण तो क्या दान देना है? पांच विकार, तो अभी बाप भी कहते हैं बच्चे दो दान तो छूटे ग्रहण। अभी दान देने के लिए कौन तैयार है तो दो दान तो छूटे ग्रहण तो यह दान देना है। कहते हैं अभी यह दान मेरी भेंटा मेरी दान मेरा जो कुछ है अभी ये पाँच विकार दान दो तो छूटे ग्रहण। फिर ग्रहण उतर जाएगा फिर आत्मा भी प्यूरीफाइड, शरीर भी प्यूरीफाइड फिर सब, एवरीथिंग तुमको प्यूरीफाइड मिलेगी तब, सदा सुखी रहेंगे। तो यह जो अभी चढ़ी है ना मैल ती इसी मेल को धोने वाला इसका धोबी स्पेशल एक ही हैं इसीलिए कहते हैं मैं धोबी भी हूं। गॉड कहते हैं मैं धोबी बनके आता हूं क्योंकि यह माल उतारना इसके लिए यह तो देखो धोभी बहुत हैं, अच्छा इससे ना बनी तो दूसरा, दूसरे से ना बनी तो तीसरा, इधर तो कहते हैं ही मैं एक धोबी, इसको धोने वाला, इसकी मैल कैसे उतरे, इसका जो सामान है ना वह हमारे पास है, दूसरे किसी के पास नहीं है, इसका ज्ञान इसका योग, इसको

साफ करने का और तो दूसरी चीजों के लिए एक से ना हुआ तो दूसरे से कर देंगे लेकिन इनका हमारे पास है। इसकी धोने की चीज जो है योग और ज्ञान की क्योंकि इसमें चाहिए मेरा योग, तो मेरा योग, मेरे साथ वह मैं ही आकर के सिखाता हूं । मेरे योग के लिए मैं ही चाहिए, यानि मेरा होना चाहिए, मेरा योग कोई तीसरा थर्ड पर्सन बैठकरके तुमको बताए तो नहीं बता सकेंगे, इसके लिए मेरी जरूरत है। मेरा नॉलेज, मेरा परिचय, क्योंकि मेरा परिचय भी मैं जानता हूं, तेरा परिचय भी मैं जानता क्योंकि तू मेरी क्रिएशन हो ना तो क्रिएशन का नॉलेज कौन देगा ? क्रिएटर। जैसे बाप है बच्चे की नॉलेज कौन देगा? बाप देगा न, बाप को पता है कि यह बच्चा कैसे पैदा हुआ क्या हुआ सारी चीज लेकिन जानता तो बाप है ना, जैसे क्रिएटर बाप अपनी क्रिएशन को जानता है, इसी तरह हम क्रिएशन को कौन जानेगा बाप ही जानेगा ना। तो क्रिएटर इज वन, नोट क्रिएटर्स बहुत हैं नहीं, वह तो हर एक का अपना अपना बाप है लेकिन हर एक का एक बाप है ना। ऐसे थोड़ी कहेंगे बहुत भले अडॉप्ट करे वह बात अलग परंतु एक है ना, कहेंगे तो एक ना, पैदा तो एक से हैं न तो इसी तरह से यह सारी चीजें समझने की हैं कि हमारा क्रिएटर, आत्माओं का, हम आत्माओं का, बॉडी का क्रिएटर तो हर एक का अपना-अपना है ही लेकिन हम आत्मा का क्रिएटर तो इसलिए उसको क्रिएटर कहेंगे। वह क्रिएटर ही हम क्रिएशन को जानता है क्योंकि हम उसकी क्रिएशन, हम अच्छे बच्चे थे तो उस हमारी अच्छाई को भी

क्रिएटर जानेगा ना कि हम कैसे अच्छे थे तो बाप कहते हैं मैंने तो तुमको अच्छा क्रिएट किया और मैंने तुमको अच्छा इस दुनिया में छोड़ा लेकिन तुम इतने गंदे हो गए। यह ग्रहण चला चढ़ा लिया अपने ऊपर और माया का संग पड़ा तभी तुम दु:खी हुए हो। अभी इसके लिए मैं आता हूँ, मेरा काम है मैं बाप हूँ ना फिर भी इसीलिए बाप को तो तरस पड़ता है, बाप तो रहमदिल गाए हुए हैं इसीलिए फिर मैं आता हूं और आ करके तुम्हारी फिर ये ग्रहण कहो, जंक कहो कुछ भी कहो यह उतारता हूं। तो धोबी भी बनता हूं इसीलिए कहते हैं कि यह हॉस्पिटल भी है, वह कहते हैं ना आई स्पेशलिस्ट तो यह है थर्ड आई ऑफ विजडम, नॉलेज तो इसको हॉस्पिटल भी कह सकते हैं जिसमें हमको पूरी सफा मिलती है काहे की, एवर हेल्दी, एवरवेल्थी, जिस्मानी भी हेल्थ रूहानी के साथ है ना तो आत्मा प्योर हो जाती है तो मानो आत्मा प्योर है तो शरीर को कोई रोग नहीं हो सकता है शरीर भी प्योर परंतु अभी तो तत्व पुराने हैं ना। यह जो बना हुआ शरीर है यह अगले हिसाब का बना हुआ शरीर है। यह जो मां-बाप विकारी थे उनका बनाया हुआ है। अभी तो आत्मा प्योर हो रही है ना। अभी यहां शरीर तो नहीं बदली हो जाएगा ना, न शरीर भी हमारा यह बना है जो यह हमने जो शरीर लिया है वह हमने पिछले खाते का लिया है तो हमारा पिछला खाता तो खराब है ना, रॉन्ग है ना। अभी हम करेक्ट कर रहे हैं तो फिर वह आत्मा करेक्ट आत्मा जो शरीर लेगी ना तो उसको शरीर भी जो है ना वह करेक्ट मिलेगा,

उसने फिर कोई रोग आदि नहीं होंगे इसीलिए उसको है कि वह पांच तत्व का शरीर भी जो है ना वह प्योर इसीलिए फिर हमको सब प्योर होने के कारण से सदा सुख। अभी तो यह रॉन्ग उससे बना हुआ है ना शरीर, यह किसने बनाया बॉडी के मदर फादर ने जिसने बनाया है तो वह कर्म का खाता तो हमारा रॉन्ग एक्शंस का है ना, अभी हम राइट कर रहे हैं। तो अभी आत्मा राइट करती है उस राइट किए हुए हमारे कर्म का जो हमको शरीर मिलेगा वह हमारा प्योर होगा। इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे वह तुम्हें अब कैसे मिले इसके लिए तो फिर माता-पिता प्योर, सब प्योर सारी दुनिया तत्व आदि सब प्योर थे उसके लिए देखो यह सारी दुनिया बना रहा हूं, पीछे तुम्हारी जेनरेशंस भी प्योर रहेंगी जैसे अभी जेनरेशंस इम्प्योर है वैसे फिर जेनरेशंस भी प्योर रहेंगी, उसमें तुम सदा सुखी रहेंगे। तो एवर हेल्दी एवर हैप्पी वैली देखो कैसा हो जाएगा तो इसीलिए कहते हैं यह देखो तुमको मैं हेल्थ पूरी दे देता हूं, जिसमें फिर तुम्हारे को कोई कभी कोई डॉक्टर की आवश्यकता नहीं, कभी कोई हॉस्पिटल नहीं, कुछ नहीं, रोग ही नहीं होगा तो काहे के लिए होंगे यह, दरकार ही नहीं। तो कहते हैं यह देखो मैं तुम्हारी कौन सी हेल्थ बनाता हूं तो देखो यह हॉस्पिटल हो गई ना, एवर हेल्दी बनाने की हॉस्पिटल, ऐसी कभी हॉस्पिटल सुनी? एवरहेल्दी बनाने की हॉस्पिटल। तो यह है एवरहेल्दी बनाने की हॉस्पिटल। तो हॉस्पिटल भी कहो, उसको सर्‌जन भी कहो, उसको डॉक्टर कहो या धोबी कहो या इनको विद्‌यालय कहो, यह

विद्यालय भी है। टीचर भी है ना बड़ा, इस टीचर के पढ़ाने से कौन सी स्टेटस मिलती है, यह इंजीनियरी डॉक्टरी मनुष्य, मनुष्य से इंजीनियर, मनुष्य से डॉक्टर ये ऐसा नहीं, यह स्टेटस है मनुष्य से देवता, देवता मींस एवर हेल्दी वेल्थी वेल्दी एवर हैप्पी यह लाइफ की स्टेज, तो यह है विद्यालय मनुष्य को देवी देवता बनाने का, इसकी स्टेटस सबसे ऊंची। तो ऐसे विद्यालय में पढ़ना चाहिए ना? ऐसे टीचर से पढ़ना चाहिए और ऐसी स्टेटस पानी चाहिए जिस स्टेटस में हम सदा सुखी। देवता और दु:खी तो शब्द बनता ही नहीं है। देवता सुखी असुर दु:खी, दुःख देते दुःख लेते तो आसुरी संप्रदाय, दैवीय संप्रदाय देखो गीता में है, यह दोनों शब्द है। यह आसुरी संप्रदाय के भी लक्षण सुनाएं हैं और दैवीय संप्रदाय की भी लक्षण उसमें हैं तो कहा है दैवीय संप्रदाय के लक्षण ऐसे होते हैं, उनको देवता कहा जाता है और आसुरी संप्रदाय वाले के लक्षण यह होते हैं तो लक्षणों के ऊपर है ना, लक्षण है तो देवता है लक्षण नहीं है तो फिर असुर है। तो अभी मनुष्य क्या है असुर, हम सब असुर अभी देवता बनने का यत्न कर रहे हैं। तो यत्न कर रहे हैं अभी परमात्मा के बन करके तो अभी असुर से, शूद्र से अभी ब्राह्मण। बीच का है अभी, अब ब्राह्मण है, अभी ब्राह्मण फिर देवता जाकर के बनेंगे। अभी प्योरिटी का फाउंडेशन डाल रहे हैं इसीलिए जिन्होंने प्योरिटी का फाउंडेशन डाला है उनको कहेंगे ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण सो देवता बनेंगे फिर हमको शरीर भी पवित्र मिलेगा आत्मा भी पवित्र होगी तो उसको कहेंगे देवता

समझा। यह हैं सब बातें जिनको समझ करके और बाप से अभी वो जन्मसिद्ध अधिकार लेना है तो अभी इसमें क्या डिफिकल्टी है, बस बाप समझना है और बाप से रिलेशन जोड़ना है, उसी के संबंध में और उसी की मत पर वह करके चलना है, बाकी हां कोई संस्कार हैं पुराने, जानते हैं कोई भाव स्वभाव कोई किसी का उन्हीं सभी बातों से अपने को नीचा ऊंचा थोड़ी ही करना है, भाव स्वभाव से, नहीं। अच्छा कोई ने कुछ कह दिया, कुछ कर दिया, कुछ हो गया उसमें अपने को क्यों, हम क्यों उसमें आ जाएं, वह हमारा विक्रम बनता है ना इसलिए बड़ी खबरदारी रखने की है। चलो जो करेगा सो पाएगा, हम अगर किसी बात में आ जाते हैं तो हमने भी कर लिया ना, तो हमने कर लिया तो उस पाप का बोझा का तो हम भी भागी बन गए ना, हम क्यों बने। हमको कोई क्या भी करें तो हम तो कहेंगे ठीक है, यह उसने अपने लिए किया। जो करता है वो अपने लिए करते हैं मेरे लिए कुछ बिगाड़ा, मेरा तो नहीं बिगड़ा न। जिसने बिगाड़ा बिगड़ा उसका तो हमारा क्या बिगड़ता है, हमको तो अडोल रहना चाहिए ना। हम अडोल, अचल तभी तो देखो अचलघर होते हैं ना माउंट आबू पर, वो अचलघर है यह हमारी गुणों की धारणा से वह गुणों की स्टेटस जो है वह उसकी यादगार बनाए हुए हैं अचलघर पर भाई अचल, स्थिर और अचल स्थिर की तो अभी बात है ना, देवताओं को स्थिर रहने की दरकार ही नहीं है क्योंकि वहां तो कोई हिलाने वाला है ही नहीं। माया ही नहीं है तो हिलाने डुलाने की बात ही नहीं है

अभी तो है ना। यह हमारी क्वालीफिकेशंस है ना अचल अडोल तो हिलना नहीं, कोई भी हमको भी हिलाए। थोड़ा कोई ऐसा करें तो हिलना थोड़ी ना चाहिए, कोई किसी ने आंख दिखाई, कोई किसी ने चलो हाथ भी कोई चला दे, चला दे क्या है, उसका बिगड़ेगा। उसको विकर्म होगा, हमारा क्या बिगड़ा, कुछ नहीं इसलिए अपनी तो अवस्था को अचल अडोल, स्थिर यही है तो इसीलिए अचल नाम पड़ा है। फिर अचल देवता, नाम रख दिया है क्योंकि क्वालीफिकेशंस हुई है ना तो नाम रख दिया है, वह अभी कि सब बातें हैं। तो अचल देवता अडोल देवता ऐसे ऐसे सबी नाम रखकर वो देवताएं बनाकर रख दिए हैं, हैं तो अभी की क्वालीफिकेशंस की बातें । तो यह तो यह हमारी क्वालीफिकेशंस है क्योंकि अभी है ना। यह माया के तूफान वगैरह की बातें तो अभी है ना, इसीमें हमको कैसा रहना है और इन सभी बातों से जब हम क्रॉस करेंगे तभी तो फिर देवता बनेंगे ना। यह है क्रॉस करना, अभी यही रास्ता है, अभी यही बातें हैं जिसमें हमको सहनशील बनना है । इससे देखो कितनी सहनशीलता आती है क्योंकि हम जानते हैं ना हम किस पर हैं किस सत्यता के ऊपर हैं हमको तो अपना डोल रहना है न । हमको कोई डोले, हमको ऐसे ऐसे करे तो बस हम हिल जाए, वाह! वाह! ये भी कोई बात है ? हम बाप को भूल जाए ? हम क्यों अपनी हैप्पीनेस, हम क्यों अपने अडोलता, हम क्यों अपनी स्थैरियमता छोड़ें। वह अंगद का मिसाल है ना उसने कहा हमारा पांव कोई हिलाके तो दिखलाएं, उसने कहा हिलाए कोई, कभी

नहीं । तो कौन सा, यह पाँव थोड़ी यह हमारी बुद्धि का हमको कोई लाए तो इसका मतलब यह थोड़ी है हम ऐसे ऐसे हो जाए कोई बात की फीलिंग आ जाए, कोई बात फील हो जाए उसमें ऐसे ऐसे हो जाएं, फिर कहे हम अडोल हैं बाबा के तो हैं न, बाबा को ये ठगना नहीं है ? यह तो फिर ठगने की बात हो जाए ना, बाबा के है तो फिर अडोल हैं ना, हैं तो फिर हम क्यों डोलें कुछ भी है बाबा के बच्चे हैं चलो किसी ने कुछ कह दिया, कोई जैसे मां-बाप होते हैं ना बड़े, कुछ करते हैं छोटे बच्चे तो कहते हैं बच्चा है न , क्या है इसने थोड़ा बहुत कर दिया तो, बच्चा ही है हमारे लिए भी कोई थोड़ा बहुत नीचा ऊँचा करे न तो हम तो ऊपर खड़े हैं ना अपने बाप की स्टेज पर तो हम तो कहेंगे ना कि यह तो बच्चे हैं बिचारे इसने कुछ कर दिया तो क्या है । भले बड़े ने किया परंतु हम बड़ा थोड़ी ही देखते हैं, तो कहते हैं बेचारे को ज्ञान है नहीं भले इसका शरीर बड़ा है लेकिन आत्मा तो इसकी बिचारी को ज्ञान है नहीं न, समझो, डोंट माइंड, हम एक बात कहते हैं कहते हैं । हम ऐसे बात कहते हैं समझो किसी ने कुछ कर दिया तो हम क्या कहेंगे शरीर तो भले इसका बड़ा है, अच्छा हमको तो गाली दि,या यह कर दिया तो क्या हुआ । बेचारा जानता नहीं, इसको पता नहीं है, बच्चा भी नहीं है बाप को भी नहीं जानता है और हां भूला हुआ है ना उस टाइम, और अपने बाप को भी नहीं जानता है, तो जो बिचारा बाप को भी नहीं जानता है वो क्या रहा तो बेचारा नहीं जानता है चलो उसने कुछ कह दिया तो क्या हुआ । हां हमारा

काम है इसका भी रिलेशन बाप से जुट्वाना, तो इसको कहे कि अरे तुम कौन हो देख लो ना । यह क्या, तुम्हारे में ये भूत आ गया तुमने ऐसा कर दिया, नहीं तुम बाप को समझो, बाप से अपना रिलेशन जोड़ो और बाप का हो करके रहो, देखो तुमको वर्सा मिलेगा, उसको बाप की टेंप्टेशन दिलानी चाहिए, और रियल, टेंपटेशन ऐसी नहीं झूठी मूठी है, प्रैक्टिकल है ना । उससे हम देखो क्या प्राप्त करते हैं, उसको दिखलाना चाहिए, देना चाहिए समझाना चाहिए । तो हमको तो और ही शौक होगा ना समझाने का । ऐसे थोड़ी ही ना कि हम उसमें हां उसने ऐसा किया हां चलो हम रूठ गए, नहीं तो यह तो अपनी अडोलता, अपनी अवस्था चाहिए ना, ना, तो यह सभी चीजों को बहुत संभालना । हमारी एक एक कदम को एक एक बात को हमको बहुत संभालना है । जब हम ऐसे संभालें और संभल के चले तभी तो हम अपने कर्म में राइटियस रहे, नहीं तो फिर अनराइटियस हो जाते हैं ना, फिर वही हमारा विक्रम बनता है और विकर्मों से ही तो हम दु:खी हुए हैं तो विकर्म और कर्म श्रेष्ठ बनाने की हमारी हर वक्त हर समय वह अपनी सावधानी रखनी चाहिए तब हम अपने में अच्छी ऊंचाई और अच्छी धारणाएं ला सकते हैं और इन्हीं धारणाओं से तो हमारी लाइफ बनेगी ना, बाकी बनाने का नहीं तो क्या है, यही तो बनाने की चीज है इसी कर्म से तो हम बन रहे हैं । कर्म से बिगड़े हैं, हमारी जीवन गिरी है और कर्म से हम सुधरेंगे तो कर्मों को तो संभालना है ना । अभी संभलना है इन बातों में, बाकी ऐसे नहीं लड़ाई

झगड़े पकडे बाकी बैठ करके हमने आपको बतालाया था ना । कई कई ऐसे नियम का पालन करते हैं खाली नियम को पालन किया या कहीं बैठकर के हठयोग साधनाएं करते हैं बाकी उनसे क्या फायदा होगा । नहीं, हमको प्रैक्टिकल लाइफ जो हमारी दिनचर्या है, रोज में जो कर्म चलते हैं, उसी कर्मों में ही तो हमको संभलना है ना । उसमें हमारी कोई एक्शन रॉंग तो नहीं होती है जो हम बना रहे हैं बाकी इसके लिए हमने कितना भी माला फेरी, फलाना किया, फलाना किया, वह बताया था ना एक मिसाल, एक ने बैठकर इतना माला फेरने का, राम-राम राम-राम करने का जाप की प्रैक्टिस की थी तो वह तो उस बेचारी के कंठ से यहां से उसका राम-राम राम-राम आवाज निकलता रहता था । ऐसे बंद भी करता था ना तो भी, हमको आता नहीं है वह प्रैक्टिस हमारी तो नहीं है लेकिन उसका मुंह बंद रहता था लेकिन उसके अंदर से राम-राम राम-राम राम-राम राम-राम ऐसा हम सुनते थे, यानि यह मुख बंद था लेकिन उसने ऐसी प्रैक्टिस बनाई थी जैसे उनके यहां से उनके कंठ से राम-राम का आवाज चलता रहता था । वह आया था हमारे से मिलने के लिए कानपुर में अपना सेंटर है ना तो उधर आया था मिलने के लिए तो खड़ा था तो हमने भी सुना उसका वह राम-राम फिर चलता ही था । तो बेचारे को वह औरत को बहुत मारता पीटता था तो दूसरे दिन उसकी विचारी औरत भी आती थी तो दूसरे दिन जब औरत बिचारी रोटी रोटी आई उसको निशान हो गए थे, ऐसा मारा था, वह निशान हो जाते हैं ना खून के जैसा वह

पड़ गया तो आया देखो राम-राम तो कहता है देखो अभी हम को मारा है बहुत गाली दी है अब हमको इससे छुडाओ, यह बहुत ऐसा है । तो देखो मुंह से गाली और इधर से राम-राम किया तो क्या हुआ और वह मुख जिससे कर्म बनते हैं उससे गाली और इधर यह हठयोग से उसको अभिमान था बहुत कि देखो हमने कैसा प्रैक्टिस की है हमारा तो राम नाम चलता ही रहता है, ना जबते हुए भी जपता रहता है, देखो हमारा राम नाम कैसा चलता है । तो उसको बहुत उसका अभिमान था लेकिन उस बात से हुआ ही क्या । इतनी प्रैक्टिस की, अभ्यास किया वह राम-राम चला, लेकिन मुख से जो काम करता है उससे गाली बकता है, मुंह से गाली देता है औरत को मारता है और यह करता है तो हाथ से और मुख से जो विक्रम बना उससे तो पाप का भागी हो गया ना । तो उससे क्या हुआ, तो यह तो नहीं है ना खाली, यह तो हमारी कर्मों को हमको संभालना है, जो हमारी एक्शंस हैं जिसके ऊपर ही हमारा आधार है उसी से ही तो हमको संभलना है ना । मनसा वाचा कर्मणा इन्हीं बातों से संभलना है तो इसीलिए बाप कहते हैं अभी मनसा को तो मेरे में लगा दो, मेरा काम दे दो उसको तो वो फालतू नहीं घूमेगी । जब देखो इधर-उधर फालतू जाती है झट से उसको ब्रेक दो जैसे मोटर को ब्रेक दी जाती है ना तो बुद्धि को भी ब्रेक देने की है हैबिट डालो, अभी यह हैबिट पड़ी हुई है ना तो उसको छोड़ देते हो, जहां मोटर चली जाए चली जाए ये बुद्धि की और वह फालतू चली जाती है तो उसको ब्रेक देना सीखो, फिर ब्रेक दे करके

झट बाप से लगा लो आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल । यह कोई कहने की बात नहीं है लेकिन अपना बुद्धि की याद में अपने को ऐसा समझना है तो समझ करके हम उनकी संतान हैं तो हमारे एक्शंस कैसे होने चाहिए राइट, हमारे बोल कैसे होने चाहिए हम किससे बोलते हैं आत्मा से, यह दूसरा भी जो है ना आत्मा से, हम उसको बोलते हैं कोई काम बोलते हैं कुछ भी है तो हमको किस तरीके से बोलना चाहिए तो वह हमारा नेचुरल है आत्मा को देख करके बोलने से हमारी भावनाएं शुद्ध रहेंगी उनके प्रति और बोल चाल हमारा रॉयल रहेगा, हम कोई ऐसे नहीं, हां कहां काम के लिए या कुछ भी कहीं हमको थोड़ा किसी को समझाना पड़े या कुछ , कई आदमी तो जैसे आप लोगों का तो बहुतों से गुजारा होता है ना, सब थोड़े ही ज्ञानी होंगे, कहीं पैसों में तो कहीं, तो चलो कहां हमको कुछ भी तो भी हम तो साथ ही रहेंगे ना । ऐसे नहीं की हमारा से टेम्पर लूज हो जाए या हम अपना टेम्पर छोड़ बैठे । तो टेंपरेचर अपना यूज नहीं करना चाहिए, उसमें कंट्रोलिंग पावर होनी चाहिए अपने में कंट्रोल । तो यह हमारी मोटर हैं न गाड़ी है न तो इसका सारा कंट्रोल हमारे में होना चाहिए । हम इसे डिटेच हो जाए या हमको काम लेना है तो सिर्फ ऑर्गन का अटैचमेंट लेकर करके हम काम लेवे, फिर डिटेच हो जाए ना, तो डिटेच और अटैच, डिटैच और अटैच इसकी प्रैक्टिस होनी चाहिए ना । फिर यह हमारे में धारणा होनी चाहिए कि हम चाहें तो इससे डिटेच, अभी डिटेच हो जाते हैं अशरीरी गीता में भी कहा ना,

अशरीरी भव हे अर्जुन तू अशरीरी हो जा, शरीर से निकल जा, लेकिन कैसे इस शरीर में होते तू डिटैच हो जा कि इसको मैंने आधार लिया है, अभी मैं इसका इससे काम नहीं लेता हूं अच्छा, डिटेच हो करके बैठ जाओ बस हम, आत्मा ।

045. अमृत वेला का महत्तव

तो अभी समझ आई है ना कि आई एम सोल, सन ऑफ सुप्रीम सोल, उससे हमें फायदा भी है और हम ऐसे रहने से हम अपना अधिकार लेंगे बाप से तो यह तो अच्छी बात है ना तो खाली हैबिट बदलने की है बस और कुछ क्या करना है। कई पूछते हैं क्या पुरुषार्थ करें, भला यह तो सुना, अब घर पर जाकर फिर क्या करें। वह समझते हैं कोई साधन दे दे, कोई मंत्र दे दें या कुछ सुना दे कि जाकर के करें। नहीं, यही निरंतर मंत्र है ना। यह महामंत्र, निरंतर जाप रखने का मतलब, जाप कोई कहने का नहीं है लेकिन ध्यान रखना है अटेंशन। तो यह हर वक्त अटेंशन रखना और इसी प्रैक्टिस में रहना इन्हीं को कहा जाता है योग और इन्ही को कहा जाता है यह योग का जो ज्ञान, जो सुन रहे हैं बाकी योग कोई ऐसा थोड़ी ही है कि आसन लगाकर बैठो या यह कर बैठो या बैठकर के कोई दिवा जगा के कहो कि भाई आई एम देट आई एम देट, आई एम देट, व्हाट? बैठकर बस माला सिमरे या राम राम राम राम राम राम क्या, बस यह ऐसे ऐसे राम-राम खाली मुख थोड़ी ही चलाना है, अपनी बुद्धि से योग रखना है जिससे हमारा योग राइटियस रहेगा ना। कहा न जब तलक बुद्धि नहीं है जिससे हमने डिटैच होकर के उसके साथ बुद्धि नहीं जोड़ी है उसमें तो फिर कितना भी राम-राम राम-राम लाखों बार भी करे ना तो क्या हुआ, यह तो खाली मुख ही चलता है ना। उसने तो बेचारे ने अपनी ऐसी अजपाजाप की प्रैक्टिस बनाई थी उसका अपने आप राम-राम

चलता था। जपने की भी दरकार नहीं है अपने आप चलता था उसने ऐसा बना दिया था अपनी प्रैक्टिस। तो उससे तो फिर सब ऐसे बना देवें फिर तो राम-राम ऑटोमेटिक ही चलता रहेगा , ऑटोमेटिक मशीन। यह तो चलाना पड़ता है उसने तो बेचारे ने ऑटोमेटिक प्रैक्टिस की थी कि ऑटोमेटिक चलता ही रहता था। उसने शास्त्रों में पढ़ा है ना, अजपाजाप यानी जपे नहीं, परंतु जाप चलता ही रहे तो उसने बैठ करकेउस बात इसी तरह से बनाया। उसका अर्थ निकाला, देखो कैसा अच्छा निकाला परंतु फिर मुंह से गाली देना, यह करना, वह करना उससे तो अपना विकर्म बना ना, यह तो राइट नहीं है ना। तो यह सभी चीजें समझने की है बहुत अच्छी तरह से इसीलिए बाप कहते हैं अपने को राइटियस, अभी उसी तरीके से कैसा चलना है उसीमें चल करके और अपना बनाते रहना है। तो यह है अपना स्टेटस बनाने की अथवा अपना प्रैक्टिकल लाइफ बनाने की यह पुरुषार्थ, जिसको बना करके और ऐसी लाइफ से अपने को ऊंचा करना है क्योंकि हमारा सारा दारोमदार इन्हीं कर्मों के ऊपर है ना और सारा दिन ही हम कर्म में ही तो रहते ही हैं किसी के बोलचाल में, किसी के काम में किसी के रिश्ते में हमारा तो कांटेक्ट है, उसीमें हमको सारा दिन संभल करके चलना है। इसके लिए कोई खास थोड़ी ही बैठ करके कुछ करना है, भाई खास कोई कर्म करें या खास कोई पठन-पाठन या खास कोई पूजन कुछ नहीं, यही हमारी पूजा है हम आत्माओं को देखें, सभी आत्माएं हैं, उन्हीं आत्माओं से हमारा कैसा बर्ताव चलना चाहिए यही हमारा जो प्रैक्टिकल है उन्हीं में हम कैसे बर्ताव में रहे, इसी में ही हमको अपना कर्म श्रेष्ठ बनाना है और उसी में हमारा नेचुरल है रास्ता देवें तो हमारी यह सर्विस चलेगी इसको भी समझाएंगे। कोई मिलेगा तो क्या करेंगे, उसको भी बैठ के यही

समझाएंगे। काम हुआ, फिर उसको कहेंगे अच्छा बैठो, चलो एक बात सुनाएं तुमको, तुम कौन है, चलो आपको जरा बाप का तो परिचय दें और वह बड़ा खुश हो जाएगा। किसको वह नशा चढ़ा दें और किसको बैठ करके यह दो बात भी इशारे में समझा दे न वह तो बड़ा खुश, कहेगा बड़ा, यह तो बड़ा कोई फरिश्ता है, एकदम उसके लिए भी रिकॉर्ड बैठेगा। कोई भले लड़ने झगड़ने वाले होंगे ना, किसी से ऐसे प्रेम से बैठ करके बात करें वह उनका भी मित्र बन जाएगा। यह अपने मे टेप्ट चाहिए और अपने में जरा हिम्मत और पावर भी चाहिए ना तो उससे हम दुश्मन को अपना सर्जन बना सकते हैं अपने पास सभी बातें चाहिए ना। बाकि ऐसे ही थोड़ी, बस ऐसा ऐसा बैठकर किया, वह तो करते-करते तो देखो दुनिया नीचे ही पड़ गई ना यह तो अपना उसी में आना है। यह तो रियल है ना, चैतन्य हम आत्मा है और चैतन्य पिता के साथ, बाकी कोई जड़ दिवे के साथ या जड़ मूर्ति के साथ या कोई जड़ माला के साथ, उसके साथ कोई योग की बात तो नहीं है ना। यह हमारा चैतन्य, इससे हमको चैतन्य पावर मिलता है। तो हमको जब हैं सत चित आनंद स्वरूप कहते हैं ना तो उसी चैतन्य परमात्मा के साथ हम चैतन्य आत्मा का संबंध चाहिए इसको हम संबंध, संबंध कहो या योग कहो बात एक ही है। तो हमारा रिलेशन उसके साथ, योग का मतलब ही क्या है, योग का अर्थ भी आता है कि दो चीज होनी है न, किसका किसके साथ योग। योग का मतलब है सम्बन्ध, तो सम्बन्ध में तो दो चीज होंगी न, सम्बन्ध वो अकेला सम्बन्ध क्या, और सम्बन्ध तो दो चीज है, दो चाहिए न तो बाप और हम आत्माएं, तो सम्बन्ध चाहिये, उससे रिलेशन चाहिए । इसको संबंध कहो या योग कहो बात एक ही है तो हमारा योग उससे बैठे माना उससे सम्बन्ध बैठे तो संबंध के लिए हमको नॉलेज

चाहिए, परिचय चाहिए तब तो उसके साथ बैठेगा ना तो बाप बैठकर के समझाते हैं, इसीलिए यह ज्ञान देते हैं कि तेरा मेरे से यथार्थ योग कैसे बैठे वह बैठ करके समझाता हूं। तो यह सारी बातों को अच्छी तरीके से बुद्धि में रखना और फिर उसके साथ सारा चक्कर भी बाप समझाते हैं कि देखो अभी तुम्हारा यह चक्र कहां तक आ करके पहुंचा है, अभी तुमको ऊंचा कैसे उठना है, अभी टाइम भी है। टाइम हो तब बात भी हो ना, अभी टाइम पर बात है। इतना समय टाइम नहीं था तो जो बातें थी ना वह सब भक्ति मार्ग की थी, वह सिर्फ यादगार की थीं , वह यादगार का सिर्फ तुमको बल मिलता था, अभी यह है प्रैक्टिकल। वह थ्योरीकल, यह प्रैक्टिकल, अभी मैं प्रैक्टिकल में आया हूं। वह तो तुम मेरे खाली यादगार को पूजते थे, मैंने जो कुछ अभी आ करके काम किया है , उसके पीछे फिर द्वापर काल में भक्ति मार्ग में शास्त्र आदि चित्र आदि यह सब यादगारें बनाई है जिसका फिर तुम यह पठन-पाठन, पूजन करते आते हो। तो वह बात अलग है, वह डिपार्टमेंट अलग, वह साइड अलग और यह प्रैक्टिकल अभी मैं आया हुआ हूं इसलिए प्रैक्टिकल तुमको बना करके प्रैक्टिकल दुनिया बनाता हूं यह बात अलग है, इनको कहेंगे प्रैक्टिकल वह हो गया थ्योरीकल। तो अभी तो प्रैक्टिकल बात समझनी है ना, उससे हमको पूरा वर्सा लेना है और वह वर्से वाली दुनिया मैं बनाता हूं तो यह सभी चीजों को ही समझना है। अच्छा, टाइम तो हुआ है आज संडे भी है छुट्टी का थोड़ा तो फायदा लेना चाहिए ना और यह फायदा है बड़ा। यह कमाई है, यह ऐसा नहीं है। भले बैठे हो, देखो यह कमाई कैसी है चुप से, ऐसे बैठो कमाई, ऐसी कोई कमाई देखी? सब कमाई में हाथ चलाना पड़ेगा, यह चलाना पड़ेगा इसमें तो ऐसे बैठे रहो चुप, बाप की याद में और कमाई होती रहती है, कौन सी कमाई? हमारे पाप नाश,

इस योग अग्नि से हम पापों का नाश करते हैं और इसी से हमारा देखो पापनाश हुआ तो हम प्यूरीफाइड होते हैं और उस पुरीफिकेशन से ही तो हमको सब कुछ मिलता है, हेल्थ, वेल्थ, एवरीथिंग तो देखो यह कमाई अच्छी नहीं है? ऐसी इजी कमाई और फिर क्यों कहते हैं फुर्सत नहीं है , यह है फिर बहाने बनाने देते हैं। इसके लिए तो फुर्सत कैसे भी निकालनी चाहिए और सो भी इसका टाइम ऐसा है सवेल सुबह का, जितना सवेरे हो अच्छा है क्योंकि अमृतवेला, सवेरे का वैसे भी देखो कोई कीर्तन करते हैं पूजा करते हैं कुछ भी ऐसा होता है सवेरे का होता है क्योंकि सवेरे में ऐसा टाइम होता है, देखो सारा दिन का टाइम है, टाइम में भी स्टेजिज हैं, सुबह का अमृतवेला कहते हैं और उसको गोल्डन टाइम कहते हैं, पीछे धीरे-धीरे जैसे दिन चढ़ता जाता है देखो सुबह के टाइम कोई भी पाठ करेंगे पूजा करेंगे सुबह को करेंगे, सब सुबह को उठेंगे तो भगवान का नाम लेंगे, कोई भी बुरा काम सुबह नहीं करेंगे, हां, रात को कोई चोर चोरी भी करेगा, रात को लोग विकार में भी जाएंगे, तो रात गंदी इसीलिए रात को चोर को चोरी भी करना है तो वाइब्रेशन जो है ना और सारे विकार में जाते हैं तो देखो यह वाइब्रेशन, हां बाकी सुबह का जो टाइम है दो बजे के बाद, तीन बजे इस समय पर सवेरे का जो टाइम है उसको अमृतवेला गिना जाए तो यह सब उसी समय कोई ना कोई भगवान का नाम लेंगे, राम का, देखो मुसलमान लोग हैं न सुबह को पाँच बजे उठेंगे, चार पाँच बजे उठेंगे वह भी खुदा की बंदगी करेंगे सब। क्रिश्चियन लोग भी हैं वह भी सवेरे देखो चर्चिज में जाते हैं कितने, तो बहुत करके जब सुबह का टाइम होता है उसमें वर्ल्ड का ही सारा वाइब्रेशन पवित्र रहता है क्योंकि उस समय कोई धंधा धोरी और इनका भी हंगामा बुद्धि में नहीं होता है और सबके अंदर में भगवान का उस

समय, कोई भी उठेगा ना कैसा भी होगा उल्टा की सीधा पहले तो भगवान् को याद करेंगे, फिर दिन होता है फिर काम धंधा उसको फिर रजोगुणी स्टेज कही जाएगी क्योंकि फिर काम धंधे के वाइब्रेशन, बुद्धि फिर all-round चलते हैं और फिर ऐसी स्टेज हो जाती है । रात को तो है ही तमोप्रधान चोर को चोरी करने का टाइम आया है उसकी वाइब्रेशन और विकारों के वाइब्रेशन तो वह गंदगी का इसीलिए वो टाइम सुबह का सवेल है इसलिए हमारी ज्यादातर क्लासेज है ना पंजाब आदि में बहुत सुबह चलती हैं परंतु यहां तो आप लोगों को दिक्कत है बस से आना जाना, बस नहीं मिलती है फिर कभी ऐसी दिक्कत है आती है ऐसी दिक्कतें आजकल जहाँ तहां हैं परंतु जो है नियमी तो फिर वो तो चलते हैं, क्योंकि वहां सेंटर्स हैं दस बारह दिल्ली में, आजू बाजू के जो हैं अपने अपने सेंटर पर आते हैं जैसे आपका सेंट्रौमेट है, इधर है तो जो जहाँ है उनको नजदीक पड़ता है ना तो सवेरे भी आ सकते हैं तो यह सभी जो भी दिक्कतें भी संभालनी पड़ती है । परंतु है सुबह का टाइम, अपने घर में भी तो उठ के सवेरे बैठना, बाप को याद करना, यह सभी है, जितना जितना करेंगे उतना उतना अपने को बल मिलता है । तो यह होना चाहिए यह अभ्यास अपने में बनाना है यानी कि जो उल्टी बॉडी की प्रैक्टिस हो गई है तो अभी उसको उल्टा करना है तो वह प्रैक्टिस डालनी है ना अपने में तो हमको यह सुबह का टाइम तो मिलता ही है तो थोड़ा सा नींद जो है थोड़ा कम करेंगे न , थोड़ा उससे आधा एक घंटा निकाल करके हम सुबह-सुबह अपने में यह प्रैक्टिस डालें । यहां आते को सुनते हो है, उसमें रिमाइंड मिलता है कि हमको कैसे करना है, उसका ढंग मिलता है तो जितना जितना वो ढंग बुद्धि में बैठता जाएगा प्रेक्टिस में मदद होती जाएगी । तो यह ज्ञान मदद करता है योग में फिर हम सारा

दिन काम करते भी आस्ते आस्ते फिर वह प्रैक्टिस भी होती जाएगी और खुशी भी रहेगी । यह सुबह की याद, देखो स्कूल में बच्चे भी पढ़ते हैं ना, सवेरे उठकर पढ़ते हैं क्योंकि सवेरे की बुद्धि जो होती है नींद करके उठते हैं ना फ्रेश रहती है तो उसमें जो भी धारणा बनानी होती है ना वह जल्दी हो जाती है तो इसीलिए बच्चे भी सवेरे उठकर के पढ़ते हैं । जो ज्ञान में और पढ़ाई में चुस्त होते हैं बहुत सवेरे सवेरे उठकर पढेंगे क्योंकि सुबह उठकर बढ़ने में वह याददाश्त आ जाती है, दिन के इधर-उधर में सब भूल जाता है तो इसीलिए सवेरे का महत्व हैं । अमृतवेला कहते हैं इसको कहते हैं अमृतवेला, तो यह अमृतवेला का अपना लाभ लेना चाहिए । तो ये सभी चीजें हैं, देखो हर बात की भी स्टेजिस है ना, दिन में भी देखो टाइम का है सारा तो अभी बाप कहते हैं देखो यह तो हद रोज का अमृतवेला सुबह सुबह का, यह है बेहद का । बेहद में भी अभी हम चक्कर घुमते अपनी जेनेरेशंश का अभी यह हमारा अमृतवेला चल रहा है क्योंकि हमारा अभी न्यू जेनरेशंस का फाउंडेशन और हमारी ओल्ड जो जेनरेशंस है इंप्योरिटी कि उसकी एंड । अभी कोन्फ़्लएंस हैं न तो ये हमारा अमृतवेला, देखो सवेरे जब सूर्य चढ़ता है, सवेरे अमृत पहला पहला जब सूर्य निकलता है तो देखो कैसा होता है तो इसी तरह से अभी हमारा ज्ञान का सूर्य चढ़ता है । अब चढ़ती कला होती जाएगी, अभि मानो सूर्य उदय हुआ है तो सवेरे का जो सुबह सूर्य उदय होता है तो देखो कैसा होता है तो हमारा भी ऐसे ही अभी फाउंडेशन है कलम लगा है, यह सेप्लिंग लगा है । यह मानो अभी सूर्य की सेप्लिंग और चंद्रमा की यानि रात की अभी एंड होती है और अभी वह सूर्य उदय होता है तो वहां क्या न्यू जनरेशन उदय होती है तो यह हमारा बेहद का अमृतवेला है । वह हद का है रोज का और यह अभी बेहद का तो अभी यह हमारा अमृतवेला

है, तो अमृत्वेले परमात्मा कहते हैं मैं आता हूं, रात में नहीं आता हूं । वह है ना हिरण्यकश्यप और नरसिंह की बात, तो हिरण्यकश्यप ने कहा था, ना मैं रात मरूं न मैं दिन में मरू, ना अंदर मरू ना बाहर मरू, उसने वर मांगा था, तो वह बात कहां की है यह अभी की है इसीलिए कहते हैं मैं आता हूं तो जब वो अमृतवेला है, कांफ्लुएंस टाइम है रात की एंड और सुबह की शुरुआत के अन्दर का समय, इधर ना दिन में ना रात में बीच में आ करके देखो यह डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन का काम करता हूं । तो कहते हैं ना मैं रात में आता हूं ना मैं दिन में आता हूं । रात और दिन में ब्रह्मा की रात ना ब्रह्मा की रात में आता हूं ना ब्रह्मा के दिन में आता हूं लेकिन कहां आता हूं, जब रात पूरी होती है और दिन चढ़ता है उसको कहते हैं सैप्लिंग, कांफ्लुएंस तब फिर मैं आता हूं । तो देखो नरसिंह नर तन में सिंह परमात्मा, जो शहंशाह है वह अभी नर तन में आकर के इसलिए उसका नाम पड़ा है नरसिंह । है तो नॉलेजफुल वही ना, वह आता है इस तन में इसीलिए कहते हैं नरसिंह तो नाम रख दिया है नरसिंह । अभी नरसिंह ऐसे नहीं कि कोई शेर की शक्ल या नर का शरीर, ऐसे कैसे होगा जैसा दिखाया है ऐसा तो न कोई मनुष्य होता है, ना ऐसा कभी कोई जानवर होता है तो यह सभी चीजें समझनी है, यह सब नाम रखे हैं बैठकर के जो ये बनाए हैं । तो यह सभी चीजों को समझना है और समझकर के बाप से अपना ऐसा जन्मसिद्ध अधिकार पाना है तो अभी बुद्धि में आता है ना, पाना किससे है और हमको क्या बनना है । हमको यह नर और नारी प्यूरीफाइड बनना है, हमको मनुष्य तन में आना जरूर है, ऐसे हम कहे नहीं, उधर बैठ जाएं । नहीं, बैठने में कोई मजा नहीं है, क्या करेंगे वहां बैठ कर क्या करेंगे, वह तो जैसे रात को नींद में चले जाते हैं ना, देखो डिटैच हो

जाती है रोज होते हो न डिटैच, देखो नींद करते हो बॉडी से डिटैच हो जाते हो परंतू वह नींद की है और यहां हम चलते फिरते डिटैच रहे इससे । और उधर जाकर बैठेंगे, बस बैठ गए उधर साइलेंस में क्या हुआ, वह मजा नहीं है । हम आते हैं, जागते हैं, जागते ही तो सब मजा है ना, परंतु उसमें हमको लाइफ की पूर्ण सुख चाहिए, वह हमारा कैसे बने उसी को बनाना है और उसी में हमको सदा सुख प्राप्त करना है समझा । तो ऐसी बातों को समझते हैं और अपना ऐसा पुरुषार्थ करते अपनी ऐसी प्रारब्ध बनाओ, अच्छा । देखो, यह जो हम कहते हैं, यह जो बनाते हैं ना, इसको गोरा बनाओ, सांवरा बनाया है । हम अभी गोरे बनते हैं ना, तो यह सांवरा रंग कर दिया है । सबमें हमको प्रवीण बनना है ना, सोल भी प्योरीफ़ाइड तो एवरीथिंग बनाने में भी हमको होशियार होना है न । तो यह सांवरा थोड़ा बना दिया है, लेकिन क्या अभी सांवरे हैं ना । अभी देखो सांवरे हैं फिर गोरे बनेंगे । आत्मा भी गोरी, शरीर भी गोरे, यह नहीं गोरे, यूरोपियन गोरे नहीं वो तो देखो उनकी ठंडाइश में रहते हैं न ठन्डे मुल्कों में इसीलिए उनकी चमड़ी ऐसी होती हैं परंतु क्या रोग है, बीमारियां हैं यह हैं तो उसका वह गोरापन क्या है । गोरे का मतलब हेल्थ और वेल्थ, नेचुरल ब्यूटी वहां देखो सतयुग में नो लिपस्टिक, नो पाउडर, मेकअप करने की कोई दरकार नहीं क्योंकि वह नेचुरल ब्यूटी है ना । यहां तो मेकअप करनी पड़ती है और उन गोरों को भी मेकअप करना पड़ता है वहां कुछ भी नहीं, नेचुरल और हेल्थ वेल्थ और शरीर छोड़ना, करना यह सब भी, ऐसे नहीं अकाले बैठे बैठे मर जाए, हार्ट फेल हो जाए, यह हो जाए, नहीं, कभी नहीं, वहां कभी कोई विधवा होती नहीं, क्योंकि वहां सदा सुहागिन सदा सुख की सब बातें जो हैं वह ईश्वरीय बल से प्राप्त है गारेंटी है, कोई लावारिस हो ही नहीं सकता, लावारिस

समझते हो? ऐसा हो कि वहां कोई किसी को बच्चा ना हो कि हे भगवान बच्चा दो, ना, बच्चा होना ही है, गारंटी क्योंकि धन को नहीं तो कौन संभालेगा इसीलिए ये सब हमारी प्रालब्ध जो है ना, वह प्रालब्ध से हमको सब कुछ प्राप्त होना ही है, इसको कहा जाता है बर्थ राइट, जन्मसिद्ध अधिकार , लाइफ का जो सब कुछ साधन है वह पूरे मिलेंगे, उसकी कोई फिकरात ही नहीं है । खाने पीने के लिए भी सब भरपूर, आज दो दिन ना कमाए तो बेचारे को चिंता रहेगी कि अरे बीमार पड़ गया हूं, अभी कौन कमाई करेगा, घर का कौन करेगा, बच्चों का कौन करेगा, फिकरात होती है ना, तो वहां कोई ऐसी बात ही नहीं, खाने पीने के लिए सब आराम से मिलता ही रहता है । खाने को तो तुम, तुम्हारे बच्चे, बच्चों के बच्चे, बच्चों के बच्चे खाते ही रहेंगे खुटेगा नहीं । यहां तो चिंता रहती है ना, इधर चिंता से कमाया जाता है तो यह सब बातें हैं । बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसी लाइफ देता हूं फिर बाकी क्या चाहिए । कभी लड़ाई नहीं कभी झगड़े नहीं, अभी तो देखो लड़ाई झगड़े यह सब दिक्कतें, अर्थक्वेक हुआ, यह नेचुरल कैलेमिटीज, ऐसी कुछ बातें वहां नहीं, सब आर्डर में क्योंकि तुम आर्डर में आ जाते हो, तुम गॉड को ओबे करते हो तो सब चीजें तुमको ओबे करती हैं और तुम उसको ओबे नहीं करते हो, डिसऑर्डर में आए हो तो सब चीज तुमको डिसऑर्डर में वर्क करेंगी, जरूर करेंगे पीछे वाले तुम्हारे, अच्छा । आज मालती भी आई क्योंकि बच्चे तो ऐसे ही शुद्ध होते हैं ना बहुत, और ये फिर भी शिवबाबा से प्रेम है । याद करते हो ना? भूलती तो नहीं हो ना? रोती तो नहीं हो? अच्छा! बाबा को याद कर करके फिर खिलाओ, सबको दो, शिव बाबा को, खाने वाले लेने वाले भी याद करें । देखो, याद दिलाओ आंखों से, उसको कहो, ऐसे आंखों से इशारा करो, देखो दिखाओ की आत्मा, आई

एम सोल, सन ऑफ सुप्रीम सोल, दृष्टि दे करके दो, टोली को दृष्टि नहीं खाली दो, उनको भी दो । कोई बात नहीं, गिर गया हर्जा नहीं । देखो प्रसाद गिरता है ना, उठा लेते हैं, उसका सत्कार रखते हैं, यह प्रसाद की तो बात ही नहीं है यहां तो कोई वह भक्ति मार्ग की बात ही नहीं है, परंतू फिर भी देखो यह पवित्र हाथों से और जिसकी यहां कोई ऐसा भी स्वीकार नहीं किया जाता है कोई अपवित्र का धन या कुछ भी, नहीं, पेट में खाने की चीज की संभाल रखते हैं । हां बाकी कुछ ऐसे हैं, लिटरेचर आदि या कोई ऐसे बाहर का, कुछ भी है । खाने पीने की चीजों में इसलिए करते हैं क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन, वह ऑटोमेटिक मशीन चलती है, जाएगा ही पेट में जो ऐसे पक्के हैं, मजबूत, उसके अंदर जाएगा ही बिल्कुल पवित्र इसलिए बनाने वाला प्योर और बाप को याद करेगा इसीलिए हमारी खाने पीने की ज़रा थोड़ी परहेज रखते हैं । जिस किसी का बना बनाया खाना ,नहीं क्योंकि वह फिर भी विकारी तो रहते हैं ना, पवित्र तो नहीं रहते हैं ना । पवित्रता यह नहीं भाई मैंने धोया है, नहाया है, चौका साफ किया है बर्तन वर्तन साफ किया है, अब तो हमारा बहुत शुद्ध हो गया, यह बर्तन कहां साफ किया? इधर, इधर प्योरिटी चाहिए, ये सोल, बाकी वह चौका साफ किया, यह किया, वह किया, नहाया धोया तो उसमें क्या हुआ । यह नहाना, आत्मा को नहाना है, उसके लिए तो ज्ञान पानी चाहिए, ज्ञान गंगा उसके बिना वह धोई नहीं जा सकती । पानी में कितने भी गोते लगाओ, नदी में नहाओ फिर त्रिवेणी में डुबो, किसमें भी पड़ो लेकिन उसमें कोई आत्मा थोड़ी ही साफ होगी, नहीं पावन होने के लिए ज्ञान और योग । आत्मा का ग्रहण, आत्मा का बताया ना जंक उतरेगा ही तभी, उसको उतारने का एक ही उपाय है, सो भी परमात्मा का योग । कोई तत्व का योग, कोई मूर्ति का योग,

कोई दीवे का योग, दीवा भी रखते हैं न, आगे दीवा रख करके उससे कांसनट्रेट करते हैं, मेडिटेशन बहुत किस्म का दिखलाते हैं ना, तो भले कोई दीवे का योग, कोई मूर्ति का या कोई किसी का, इन्हीं का योग नहीं, परंतु डायरेक्ट परमात्मा का योग उससे पावर मिलेगी इसीलिए कहते हैं मुझे याद करो । अच्छा, तुमने मेहनत की है ना तो डबल देना चाहिए ना । डबल एक मेहनत का, एक तुम्हारा अच्छा हमको देंगी। आप दो । छोटे को कितना खिलाया जाता है, इसको बिठाएंगे तो नेष्ठा में भी, याद में अच्छी बैठती है, आज बहुत अच्छा बैठी मम्मा । किसको याद करती हो? शिव बाबा को? कैसा है शिव बाबा? अच्छा है? क्यों नहीं, जो इतना बिलवेड फादर है, जो हमको इतना प्यार करता है कि हमारी लाइफ ऐसी बना देता है, उसके प्रति क्या प्रेम नहीं हो,गा जरूर होगा । कभी कोई मनुष्य मनुष्य के ऊपर कोई एहसान करता है, कोई धन की मदद करता है, कोई समय पर कुछ हेल्प करता है तो कितना उसके लिए दिल में होता है, भाई इसने समय पर हमको बहुत मदद की । तो जब मनुष्य के प्रति इतना होता है, वह तो हमारा सदा सुख, सर्व सुख देने वाला है लेकिन जब जानते हैं ना, तब उससे लव बैठता है । नहीं तो नहीं जानते हैं तो फिर बिचारे चल रहे हैं तो ऐसे बाप को समझ करके चलना चाहिए । यह कुछ माताएं आज आई है नई, तो समझती हैं आप भाषा समझती है हिंदी ? श्याम सुन्दर की है, श्याम सुन्दर की हाँ वो तो , वो आई है गाँव वाली ? और यह आगे जो बैठी है, यह ? नए है । हां, बहुत अच्छा, यह कोई लाए हैं या अपने आप आए हैं? अपने आप । अपने आप, अच्छा ये तो अपने आप आई है, अभी इन्हों से पूछो कि समझती हो और फिर इन्हों को समझाओ तो टाइम दे करके आ करके समझे । बहुत अच्छी चीजें हैं जिसको समझना चाहिए और

समझ करके अपने घर गृहस्थ में रह करके कुछ छोड़ना नहीं है, हां बाकी छोड़ना क्या है पांच विकास, भाई विकार तो छोड़ेंगे कि कहेंगे विकार भी रखे रहें? नहीं, विकार तो हमको दुःख देने की चीज है ना, उनको छोड़ना है इसीलिए उसे ही हमको घर गृहस्थ में रहते संभाल रखनी है । घर गृहस्थ कोई विकार नहीं है, विकार कौन सी चीज है पाँच विकार, तो विकार निकलने से कोई हमारी गृहस्थी नहीं छूट जाएगी, नहीं वह तो देवताए भी गृहस्थी में थे, बाल बच्चे थे, राजाई करते थे लेकिन प्योरिटी के बल से, उन्हों को योग बल था । अभी भोग बल है ना । वह योग बल था, योग बल से संतान पावरफुल, अभी वह संतान पैदा करने की ताकत नहीं है इसीलिए संसार दुःखी है जैसे संतान बिच्छू टिंडन जैसे निकालते हैं तो वो काटते ही हैं न और क्या करेंगे, इसीलिए कहते हैं यह संतान ऐसी पैदा की, उनकी बुद्धि देखो ना । तो आज दुनिया के नाश के लिए तैयारियां हो गई हैं, अब बाप कहते हैं ऐसे संसार को नष्ट करके अब फिर मैं अच्छी बुद्धि वाला संसार बनाता हूं, जिसमें स्वच्छ रहने से कितना सुखी रहोगे, फिर काटना, फाड़ना एक-दो से लड़ना-झगड़ना यह सब बातें होती नहीं, समझा । अच्छा बाप दादा और मां की मीठे मीठे सिकिलेथे, सिकीलधे हॉप न ? सिकीलधे का अर्थ है बहुत काल के बाद मिले हो, कितने काल के बाद? 5000 वर्ष, क्योंकि यह चक्र पूरा होने पर, ऐसे आगे मिले थे वो गीता में भी है ना, कल्प पहले भी मिले थे, आगे भी मिले थे, अब भी मिले हैं फिर भी मिलेंगे तो यह हमारा चक्र । आगे मिले थे इसी टाइम पर ऐसा हूबहू, ऐसा यह भूपाल बैठा था, यह सब यह 5000 वर्ष की रिपीटेशन है परंतु कहां तक बैठेगा चलेगा वह कह नहीं सकते हैं, वह आगे चल कर के देखेंगे लेकिन आज की जो है, ऐसा बैठा था । तो हां आए थे, मिले थे हम सब, ऐसे और फिर

मिलेंगे, हां फिर यह राज भाग लेंगे और यह हम प्राप्त करेंगे फिर ये चक्र फिर करके ऐसे आएगा तो यह तो चलता ही रहने का है । तो अभी हमारी चढ़ती कला है इसीलिए हमको ख्याल करना है कि अभी हमारा चढ़ती कला का टाइम है इसलिए हम चढ़ जाएं । किसको ना खुशी होगी अभी हमारा नया घर बनता है तो खुशी नहीं होगी, हम नाए घर में जाएंगे, ऐसा करेंगे, वैसा करेंगे, यह सजाएंगे, वह करेंगे, वह करेंगे, वह होता है ना । इसलिए हमको अभी तो ख़ुशी की बात है , इसका ख्याल नहीं करना है अभी प्ले करके फिर यह पुराना होगा ना, फिर काहे के लिए बनाएं, ऐसा कोई ख्याल थोड़ी ही करता है । एक जीवन में कोई ख्याल करता है कल को मर जाए इसीलिए क्यों हम पढ़े, क्यों हम लिखें, क्यों शादी करें, क्यों बच्चे पैदा करें,इससे तो बैठे ही रहें । कल को मर जाएं, कल को मर जाएं, ऐसा कहते कोई बैठ जाता है? नहीं, भले जानते हैं कल को मर जाए हो सकता है, पॉसिबल है, तो जो पॉसिबल बात है उसमें भी मनुष्य ऐसे चलता है जैसे किसी को सदा के लिए बैठना ही है, पढूंगा, लिखूंगा शादी करूंगा, बच्चे पैदा करूंगा, डॉक्टर बनूंगा, इंजीनियर बनूंगा, कितना मनुष्य सोच कर चलता ह, उसमें क्यों नहीं ख्याल करता है कल को अगर मर जाऊं कुछ न करूँ, ऐसा करेगा ? कभी नहीं , ऐसा कोई सोचता ही नहीं, तो जो पॉसिबल बात है उसमें कोई नहीं सोंचे, यह तो गारंटी है कि हमको अवश्य मिलना ही है तो उसके लिए तो कितना अपना पुरुषार्थ करना चाहिए बाप से । इसमें ऐसा नहीं है कि कहीं हमारा चला जाएगा नहीं, जो करता है उसका मिलेगा जरूर, जितना भी करता है । थोड़ा करता है तो थोड़ी का भी मिलेगा परंतु मिलता तो है ना, तो बहुत करेंगे तो बहुत का भी मिलेगा । तो जो अविनाशी सी चीज है उसके लिए पुरुषार्थ नहीं करते हैं और विनाशी के लिए कितना

करते हैं । तो यह सभी चीजों को समझना है, तो ऐसे ही सिकिलधे और सपूत ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

046. बाबा सूरज मामा चंदा - गीत बीके सतीश भाई द्वारा

बाबा सूरज, मम्मा चंदा...., बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं....

बाबा सूरज, मम्मा चंदा, बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं,

बाबा सूरज, मम्मा चंदा, बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं

बाबा सूरज, मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं,

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं

बाबा तो सबके बाबा थे, पर मम्मा भी कुछ नहीं थी कम,

पीछे आते, आगे बढ़के, बाबा से मिलाई कदम कदम,

बाबा तो सबके बाबा थे , पर मम्मा भी कुछ नहीं थी कम,

पीछे आते, आगे बढ़के, बाबा से मिलाई कदम कदम,

शक्ति बिन शिव के अधूरे हैं, वह प्यारे कर्म तुम्हारे हैं,

शक्ति बिन शिव के अधूरे हैं, वह प्यारे कर्म तुम्हारे हैं,

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं,

बाबा सूरज मम्मा चंदा, बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं,

बाबा ने पिता का प्यार दिया, पर मां की ममता मां जाने,

बाबा ने पिता का प्यार दिया, पर मां की ममता मां जाने

लक्ष्मी, दुर्गा और सरस्वती है कौन तुझी में पहचानें,

बाबा ने पिता का प्यार दिया पर मां की ममता मां जाने,

लक्ष्मी दुर्गा और सरस्वती है कौन तुझी में पहचानें

वो स्नेह की मलिका, शक्ति स्वरूपा सारे गुण को धारे हैं

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारें हैं

तुम रात-रात भर जाग- जाग कर, ज्ञान की लोरी सुनाती थी

वह प्यार की और दुलार भरी थपकी दे करके सुलाती थी,

तुम रात-रात भर जाग-जाग कर ज्ञान की लोरी सुनाती थी,

वह प्यार की और दुलार भरी, थपकी देकर सुनाती थी,

हर दर्द समा करके दिल में, धरती सा धीरज धारी थी,

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं,

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं,

कुटिया की तरफ जब जाते हैं, वह दिन सम्मुख आ जाते हैं,

कुटिया की तरफ जब जाते हैं, वह दिन सम्मुख आ जाते है,

फल फूल लताएं कानों में, गुनगुन गुनगुन गुनगुनाते हैं,

हमको भी ले लो साथ-साथ यह बोल रहे दिल सारे हैं,

हमको भी ले लो साथ-साथ यह बोल रहे दिल सारे हैं,

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं

जग को रोशन करने वाले दो प्यारे नैन हमारे हैं

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे हैं

बाबा सूरज मम्मा चंदा बच्चे हम ज्ञान सितारे है।

मम्मा मुरली मधुबन

047. बाप से वर्सा लेने की विधि - 1

रिकॉर्ड :

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो।

ओम शांति। अपने परम पूज्य मात-पिता को तो अभी जान चुके हो ना, कि अभी ऐसे कहेंगे कि अभी जानने की कोशिश कर रहे हैं? माता-पिता को जानने की तो कोशिश नहीं कर रहे हो ना , उसको तो जान चुके हो। हां बाकी ऐसे कह सकते हैं कि बाकी पुरुषार्थ किसके लिए है वो इसी के लिए है कि बाप से जो पूरा पूरा, वैसे तो बच्चे भी हैं, मात-पिता है तो जरूर उनके बच्चे भी हैं ऐसे नहीं बच्चे बनने की कोशिश कर रहे हैं या मात पिता को जानने की कोशिश कर रहे हैं, ऐसा कोई समझने की भूल ना करें बाकी हमारी कोशिश पुरुषार्थ किसके लिए है यह उसी के लिए है कि जो मात-पिता है जिसकी हम संतान हैं, प्रैक्टिकल हैं, कहने वाले भी बातें नहीं है जैसे भक्ति मार्ग में हां तुम मात पिता हम बालक तेरे, गाते तो आए हैं ना, नई बात तो नहीं है लेकिन वह तो खाली गाने की बातें थी, ऐसे ही कहने की। कहने से कोई मुख मीठा नहीं होता है, प्रैक्टिकल चाहिए। तो अभी तो माता-पिता को प्रैक्टिकल जानते हैं और प्रैक्टिकल उनकी संतान बन करके अपना हक भी उसके ऊपर रखते हैं बाकी पुरुषार्थ इसीलिए हैं

कि हां, जो उनके द्‌वारा प्राप्ति होने की है उसमें जो कंप्लीट प्राप्ति है वो उनके द्‌वारा पूर्ण करना है कौन सी स्वर्ग की पूरी जो राजधानी है उसमें पूरा पूरा अपना स्टेटस प्राप्त करना। उसी स्टेटस को प्राप्त करने के लिए अर्थात पद प्राप्त करने के लिए पूरा बाकी उसी के लिए यह पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह पिछले विकर्मों का खाता और आगे के लिए अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का यह सारा पुरुषार्थ चल रहा है। जितना जितना हम पुरुषार्थ में तेज होंगे उतना हम सजाओं से भी छुटकारा पाएंगे और आगे भविष्य प्रालब्ध में भी ऊंचा स्टेटस को प्राप्त करेंगे। तो बाकी भी जो पुरुषार्थ है वह अभी इसीलिए पुरुषार्थ हो रहा है कि हमारे पिछला हमारे पापों का या विक्रम का जो खाता है जिससे हम सजाए खाते हुए ना जाए इसीलिए उन सजाओ से भी छुटकारा हो जाए और आगे भविष्य प्रालब्ध में भी ऊँच स्टेटस को प्राप्त करें, इसी प्राप्ति के लिए बाकी पुरुषार्थ है। बाकी ऐसे ना कहना कोई या ऐसे भी कोई न समझे कि मात पिता को जानने के लिएया उनका बच्चा बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। कोई बच्चा बनने का पुरुषार्थ थोड़ी होता है। लौकिक रीति में भी कोई बच्चा माता-पिता का बच्चा बनने के लिए पुरुषार्थ थोड़ी ही करता है कि भाई बच्चा बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं, ऐसा कभी कोई कहता है बच्चा? बस जन्म हुआ और बच्चा हुआ और बच्चा हुआ तो उसका हेयर पेरेंट्स हो ही गया यानी बाप की प्रॉपर्टी के ऊपर उसका हक हो ही गया। तो हक लगाने के लिए और बच्चे बनने के लिए कोई पुरुषार्थ की बात नहीं

होती है बाकी पुरुषार्थ की बात है कि उस बाप के द्वारा जो हमारा कंप्लीट स्टेटस है नई दुनिया में और हमारे उसको पाना और हमारे विक्रम जो पिछले खाते का है वो भी इस बाप से बल ले करके हमको पूरे पापों को बैठ करके दग्ध करने का अभी बल लेना है जो हम सजाएं ना खाएं इसलिए उससे छुटकारा पाने का, उससे पूरी कंप्लीट शक्ति कहो या बल कहो लेना है। इसी बल को लेने के लिए बाप का भी फरमान है कि बच्चे निरंतर मेरी याद में रहने का पुरुषार्थ करो अर्थात जितना जितना मेरे योग में अथवा याद में स्थित रहेंगे उतना उतना मेरे याद से तुमको बल मिलेगा और उसी बल से फिर तुम पापों से छुटकारा पाएंगे और पाप तेरे दग्ध होंगे तो फिर भविष्य प्रालब्ध को भी ऊँच में प्राप्त करेंगे। तो बाकी जो पुरुषार्थ है वो इसी के लिए है बाकि कोई ऐसा ना कभी कहे, ऐसा कहने से से तो अभी मात पिता को ही नहीं जाना और उसका बच्चा ही नहीं बना तो बाकी योग भी नहीं रह सकता है। योग भी उसी का लगेगा, ज्ञान भी उसी की बुद्धि में बैठ सकेगा ये भी एक पॉइंट है समझने की कि जब टॉक मात पिता को समझा नहीं है और उनका संतान प्रेक्टिकल बना नहीं है तो ज्ञान और योग भी बुद्धि में बैठ नहीं सकता । ऐसे नहीं कहेंगे कि ज्ञान और योग ले रहे हैं, नहीं पहले तो ज्ञान और योग जिससे ले रहे हैं, उनका परिचय चाहिए न कि किससे ले रहे हैं । ये कोई साधारण मनुष्य से तो नहीं ले रहे हैं ना तो कोई ऐसा ख्याल ना करें कि जैसे हम मनुष्यों से इतना काल सुनते आए अनेक जन्मों से तो

यह भी हम कोई मनुष्य के द्वारा सुन रहे हैं नहीं, यह तो वही नॉलेजफुल की नॉलेज है जो जानी जाननहार है, जिसके पास ही नॉलेज है और जो इस नॉलेज जानने का हकदार है तो वही जान सकता है ना। सबकी करमगति को जान ही कौन सकता है सिवाय परमपिता परमात्मा के मनुष्य आत्माओं की करम गति कोई जान भी नहीं सकता है, मनुष्य मनुष्य की कर्मगति नहीं जान सकता है इसीलिए ही जो हकदार है जानने का, जिसको ही नॉलेजफुल जानी जाननहार कहा जाता है, जो इसी महिमा का लायक है और हकदार है उन्हीं के द्वारा ही अभी डायरेक्ट जान रहे हैं। तो यह तो पहली बातें अपनी बुद्धि में अच्छी तरह से होनी चाहिए कि हम उनके द्वारा सुन रहे हैं और उनकी ही सुनी हुई बातों में अभी प्रैक्टिकल धारणा करके चलने का पुरुषार्थ करना है। तो कोई कॉमन मनुष्य की नॉलेज या कोई मनुष्य के द्वारा जैसे सुनते आए, जैसे रोज सुनते हो, ऐसी बातें का ख्याल करके नहीं चलना है। यह जो बाप है जो सर्व समर्थ हैं, भले इन आंखों से देखने में नहीं आता है इसीलिए बहुत मूंझते हैं। ना इन आंखों से देखने वाली चीज है ना कोई उनकी शक्ति कुछ जो है, जो उनका कोई ऐसा चमत्कार हो जिससे कुछ ऐसे दिखाई दे, जिससे मनुष्य समझे, तो यह कोई शक्ति उस सर्व शक्तिमान की शक्ति कोई ऐसी नहीं होती है कि मुर्दे को जिंदा करना या कोई ऐसी शक्ति दिखा दे, नहीं सर्वशक्तिमान की शक्ति ऐसी नहीं होती। वो सर्वशक्तिमान गाया इसी पर है, उसकी शक्ति क्या काम करती है जो

कोई मनुष्य चला नहीं सकता है वह कौन सी, कि हमारे कर्मों को कंप्लीट श्रेष्ठ बनाना। तो वो कर्म तो हमारे पुरुषार्थ से बनाएंगे ना, कर्म कोई जादूगरी से थोड़ी बनाएंगे या मुर्दे को जिंदा करने से हमारा कर्म क्या बनेगा। कर्मों को तो हमको अपने पुरुषार्थ से ही बनाना है वह हमको पुरुषार्थ सिखाएं,गे टीचिंग्स देंगे, जिस टीचिंग को हम लेकर के अपने पुरुषार्थ से अपने कर्मों को बनाएंगे बाकी कोई जादूगरी से वो हमारे कर्म थोड़े ही बनाएंगे। देखो कर्मभोग को तो भोगना पड़ता है ना इसीलिए इन कर्मों को काटना और इन पापों को दग्ध करना, यह तो फिर हमारे पुरुषार्थ का काम हो जाता है क्योंकि बनाया भी तो हमने है ना। यह सारी चीजें समझने की है इसीलिए सर्व शक्तिमान की शक्ति कौन सी है, जो कोई मनुष्य इस शक्ति का काम नहीं कर सकता है यानी हमारे कर्मों में यह बल नहीं ला सकता है जो वह ला सकता है। इसलिए उनको सर्वशक्तिमान कहा बाकी ऐसे नहीं मुर्दे को जिंदा करें या कोई ताकत दिखलाए या कोई ऐसी बात कर देवें तभी समझे कि वह सर्वशक्तिमान है। अगर उसको सर्वशक्तिमान को हमको उसकी ये शक्ति से समझना है तो हमारा इसमें क्या हुआ, हमको तो अपने कर्मों से शक्ति में आना है ना क्योंकि हमारी शक्ति गई भी हमारे कर्मों से है तो हमको बनना भी तो अब अपने कर्मों से है ना तो इसीलिए हमारे कर्मों में शक्ति कैसे भरें वह इसी नॉलेज के द्वारा। इसीलिए बाप बैठ करके इस नॉलेज की यह धारणा दे रहे हैं और इसी को धारण करके अपना भविष्य

प्रालब्ध ऊँच बनाने का पुरुषार्थ करना है। तो अभी समझा ना? यह बातें तो अभी समझते भी हो रोज सुनते भी हो कि हमको पुरुषार्थ किस बात के ऊपर अटेंशन रखकर के करना है। तो यह बात है जिसके लिए बहुत अच्छी तरह से अपना पुरुषार्थ करके आगे बढ़ना है। अच्छा अब आप लोगों का टाइम हुआ है आप सवेरे से क्लास में आए हुए हो इसलिए बहुत आप लोगों का टाइम नहीं लेते हैं। आज तो आए थे सबके मुखड़े देखने के लिए और खुश खेराफत लेने के लिए और खुशखेरा फल देने के लिए। आप सब तकलीफ लेते हो इसीसे हमने कहा हम भी जाएंगे, सबके मुखड़े भी देख लेंगे और अपनी खुश शराफत भी बता देंगे और सबकी खुशखेराफत भी देख लेंगे। मुखड़ों से देखनी है ना? मुखड़ा कौन सा? यह शरीर का नहीं, नहीं यह तो जानते हो कि हमारे मुखड़े अभी कौन से हैं। हमारा मुखड़ा कौन सा है, आत्मा को, हमको आत्मा अपने को भी अभी आत्मा ही मानना है, अपने को आत्मा मानने से ही हम परमपिता परमात्मा की संतान अपने को मान सकते हैं इसीलिए अपना भी मुखड़ा उसी में स्थित होना है, बुद्धि को उसी में ही स्थित करना है और फिर देखना है जो भी बॉडी नहीं, सोल, ये भी मुखड़े कैसे खिलते जा रहे हैं क्योंकि यह शरीर तो पिछले खाते का है ना । उसमें तो देखो यह सभी कर्म भोगना, खिट-खिट होते यह सब चलते रहेंगे लेकिन अभी आगे के लिए जो हम बना रहे हैं तो मुखड़ा उसका देखना है कि उसका परिवर्तन कितना आता जाता है, वह मुखडे कितने खेलते जा रहे हैं

क्योंकि उसको अभी कंप्लीट खिलाना है। इस शरीर में ही उसको कंप्लीट करना है आत्मा को। तो आत्मा कंप्लीट होगी तो फिर जो शरीर मिलेंगे सदा निरोगी, सदा सुख के मिलेंगे, ठीक है ना। तो अभी कंप्लीट पुरुषार्थ करने का यत्न करते रहना है। अच्छा और क्या बताएं, सब राजी खुशी तो हो ही न, हाँ? मजे में हो ना? तारु छे ना? तो अभी राजी और खुशी का भी अर्थ अभी समझते हो कि राजी किसमें रहना है। अभी तो देखो खुश किस्मत बनाने वाला बाप मिला है जो हमारी सच सच किस्मत बहुत ऊंच बनाता है और हम सदा खुश, नहीं तो बाकी कुछ खुशकिस्मती है थोड़ी ही। मनुष्य तो समझते हैं कि धनवान है तो हां धन है तो यह खुशकिस्मती है, पति है, पुत्र है जो भी सांसारिक है सभी बातें हैं, उनमें समझते हैं खुश किस्मती हैं लेकिन अपन जानते हैं यह तो सब दुःख के ही देने वाले हैं और देख ही रहे हैं तो इन सब में अल्पकाल का विनाशी हो गया ना सुख। अभी तो हम सब चाहते हैं अविनाशी, जो गारंटी जिसमें कभी डर ना हो, कभी दुःख की, कभी यह ना हो तो कभी वह ना हो, इसमें तो होता ही है ना, हे भगवान खैर करना, हे भगवान यह करना, फिर कुछ हो जाता है तो कहते हैं हे भगवान यह क्या किया या हे भगवान अभी यह कर, तो करना पड़ता है ना, कहना पड़ता है। तो अभी तो इसमें यह पुरुषार्थ है जिसमें हमको गारंटी रहे और जब कभी कोई ऐसी दुःख की प्राप्ति की बातें होवें ही नहीं। तो ऐसे पुरुषार्थ में अभी लगे रहना है इसीलिए अभी इस पुरानी दुनिया की यह सब इच्छाएं

और तमन्नाएं और यह सब जो बातें हैं उससे अभी दिल को हटाते जा रहे हैं कि ये अल्पकाल काल का ले करके करेंगे ही क्या और वह भी अभी विनाश होने का है, टाइम आकर के अभी उसका भी पूरा हुआ है इसलिए अभी दिल लगानी है तो उसमें, नई दुनिया में जिसमें हमारा सब कुछ प्राप्त होने का अभी पूरा मिलने का है इसीलिए दिल ले गए हैं उधर तब हम पुरानी दुनिया के सभी बंधनों से अपनी बुद्धि हटाते जा रहे हैं। अच्छा और क्या आपकी सेवा करें? सब राजी खुशी में हो ही और बाप और बाप के खजाने को अच्छी तरह से जानते और पाते जा रहे हो, यह तो बहुत अच्छा है। टोली वोली मिली है? मिलेंगी ? दो। अच्छा । सब अपने पुरुषार्थ में ठीक हो ना? कहाँ चलते चलते कोई माया तो नहीं सताती है ना? नहीं, अभी पता लग गया है कि हमको गिराने वाली और हमको दुःख देने वाली अथवा हमारा दुःख बनाने वाली कौन सी चीज है तो अभी इन पांच विकार वाली चीजों के ऊपर पूरा-पूरा अटेंशन रखते रहना इसीलिए संभलते चलते रहना, कोई माया का वार खाना नहीं । ना काम, न क्रोध, न लोभ का, न मोह का, अहंकार की तो पहले ही बात नहीं है इसीलिए यह सब बातों को अच्छी तरह से संभलते आगे बढ़ते रहना है, हिम्मत रखते रहना है। आएंगे, माया के विघ्न, तूफान, कभी-कभी कई बातें आ भी जाएंगी इसीलिए ध्यान अपना पूरा रखना। पुरुषार्थ करते कोई ऐसी बातें आ भी जाएं तो हिम्मत हारना नहीं, बाकी आएंगी कई प्रकार की उलझने, विघ्न, इधर-उधर हर एक प्रकार की

अपने मन से भी आएंगे, तन से भी आएंगी, बाहर से भी आएंगे, संबंध से भी आएंगे, दुनिया से भी आएंगे, कई कई बातें आएंगी, ये बतला देते हैं और आती भी हैं अनुभव में तो अभी आते जाते हो परंतु उससे थकना नहीं । ये तो अभी समझ गए हैं कि यह सब पिछले खातों के कर्मों का हिसाब किताब है, वह किसी ना किसी तरह से हमारा सामना करेंगे तो इसीलिए हमारी उससे युद्ध है बाकी नहीं तो काहे की युद्ध है। जरूर कोई अपोजिशन है ना , जिससे हमें युद्ध करना है, वह क्या है इसी कर्मों की तो युद्ध है ना। पिछले कर्म का जो है हमारा उल्टा खाता, उसके ऊपर हमको जीत पानी है तो हमें हिम्मत नहीं हारनी है । तो हिम्मत हारना नहीं, हिम्मत अच्छी तरह से रखते चलना है, गाया भी हुआ हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा, हिम्मत ए मर्दा तो, मदद ए खुदा। ऐसे नहीं मदद ए खुदा तो हिम्मत ए मर्दा, ऐसा उल्टा नहीं चलना है। ऐसे उल्टा चलने वाले बहुत एडवांटेज लेते हैं भगवान के गले बहुत पड़ते हैं। वह कहते हैं मदद ए खुदा तो हिम्मत ए मर्दा, ऐसे कहते हैं और भगवान कहते हैं हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा और कई समझते हैं कुछ भगवान करे, दिखाएं कुछ, तब फिर हम भी कुछ करें ऐसे कहते हैं उल्टा, तो उल्टा तोनहीं बनना है ना? एक दे तो दस पावे, ऐसे नहीं दस दे तो फिर एक दे देंगे, ऐसे हिसाब लगाने वाले नहीं। नहीं एक दे तो दस पावे इसीलिए ऐसे कानून को भी समझना है, ईश्वरीय लॉज भी है ना। तो उसी पुरुषार्थ में चलते रहना है ऐसे नहीं वह कुछ दिखाएं, कुछ करे

तो कुछ होवे, कुछ हो पीछे हम भी कुछ कर लेंगे, ऐसे ख्याल कोई ना करें, ऐसे आसरे पर कोई बैठे हुए हो ना, तो ऐसा ना हो तो फिर अपना पुरुषार्थ से जो कुछ लेना है वह लेने से वंचित रह जाए इसलिए खबरदार रहना। इसीलिए अपना पुरुषार्थ चलाते रहना, अपनी हिम्मत हार नहीं है कुछ भी हो जाए। तो हिम्मत रखते चलना है क्योंकि उनका कहना है कि बच्चे हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा। कुछ तो पुरुषार्थी की भी पॉइंट्स होंगी ना, ऐसे आसान होती तो फिर बाकी क्या, भगवान भी फिर क्यों घर बैठे मिले, और सब कुछ हमको ऐसे ही मिल जाए तो फिर बाकी क्या है फिर तो कोई बात ही नहीं रही, हमारे पुरुषार्थ की तो कोई बात ही नहीं रही। कुछ तो हमें अपना पुरुषार्थ मेहनत लगानी पड़ती है न तो लगानी चाहिए इसीलिए ऐसी हिम्मत और पुरुषार्थ में अपने को चलाते रहना ऐसे हिम्मतवान ही कुछ पा सकेंगे। ऐसे तो बाहर के कामों में भी अपना मेहनत और पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। देखो बाहर वालों से पूछो, क्या नहीं करना पड़ता है कितनी मेहनत करनी पड़ती है। थोड़े बैठे कमाने के लिए, पेट के देखो सारा दिन मनुष्य कितना माथा लड़ाते हैं, कितना मेहनत करते हैं तो जब थोड़े काम के लिए भी, एक की आजीविका के लिए भी करना पड़ता है तो यह तो जन्म जन्मांतर के लिए बनाना है, उसके लिए क्या नहीं करना पड़ेगा, तो थोड़ी यह मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इसीलिए हिम्मत हारना नहीं, चलते रहना है। अच्छा बाकी हम कुछ राजी में हैं, पेट भर दिया, भर गई पेट में कि हम बहुत खुशी

राजी में है, सब सेंटर्स पर चले जाएंगे की अभी कोई को हुज्जत करने की बात नहीं है। अभी आपकी सेवा में कंप्लीट, आस्ते आस्ते रेगुलर सर्विस में लग जाएंगे। थोड़ा समय थोड़ा इरेगुलर हो गई ना सर्विस में, अभी रेगुलर हो जाएंगे। अपनी सब है तो सर्विस ही, वह भी सर्विस की थी। अगर हम समझे कि हमारी आगे है ही चढ़ती कला क्योंकि हमतो आगे ही जा रहे हैं ना इसलिए तो आती है बीच में कर्म भोगना, हिसाब-किताब यह सब, यह तो चलता रहेगा ना। पिछला खाता भी तो रास्ता क्रॉस करने में काटना तो पड़ेगा ही ना। तो कुछ भोगने काटने में, कुछ योग बल से, कुछ किसी तरीके से लेकिन चलना तो है ना तो उसमें भी हिम्मत रखकर चलना ही है। तो यह सभी सर्विस ही समझनी है, उसमें भी कुछ ना कुछ आत्माओं कुछ न कुछ मिलना ही है तो वह भी संबंध में मिल ही जाता है न, डॉक्टर्स, नर्सेज वगेरह कुछ ना कुछ उन्हों के भी कानों में आवाज जाती है, कुछ ना कुछ उन्हें को भी यह मिलता है तो याद रहेगा। कभी न कभी किसकी भी जाग्रता हो जाए तो यह भी एक सर्विस का चांस हो जाता है तो अपन तो समझते ही हैं कि यह सब पार्ट बजाते कोई कर्म भोग का पार्ट, कोई किसी तरीके का पार्ट ये चलते रहेंगे , बढ़ना तो आगे ही है और चलकर के अपना जो मंजिल मकसद है उसी को अवश्य प्राप्त करना है, उससे हटना नहीं है कुछ भी हो जाए। अच्छा, सबको मिल गया? अभी आप लोगों को भी टाइम हुआ है न । अच्छा, बाप को याद करते हो ना? तो ऐसा बाप और दादा, बाप और

दादा को जानते हो ना अच्छी तरह से, उसमें कुछ मूंझते तो नहीं हो ना, बाप है या दादा है या बाबा है या बाप है, जानते है की वह आता है उनको अपना शरीर नहीं है इसीलिए इसमें मुझने वाली बात नहीं है तो बाप दादा को तो अच्छी तरह से समझ जाना है इसीलिए बापदादा और माँ के मीठे मीठे, मीठे मीठे हो ना? मीठे-मीठे बनते जा रहे हो ना? कड़वे तो नहीं ना? कड़वा बनाती है माया पांच विकार, तो ऐसे मीठे मीठे सिकीलधे, सिकीलधे का भी अर्थ समझ गये हो कि इतने समय बाद बाप से मिले हो उसी कल से कभी अर्थ समझ गए हो इतने समय बाद बाप से मिले हो, तो याद है ना अपना वही दाव लगाया था, लगाया था? याद में आता है? पक्का ? तो ऐसे दाव लगाने वाले, सिकीलधे जो पाँच हजार वर्ष के बाद फिर आकर के मिले हैं, मिले हो ? आगे मिले थे ? पक्का? शिवानी पक्का ? देखना । अच्छा, ऐसे सिकीलधे जो है, और बहुत सपूत भी जो अपने बाप की आज्ञा पर चल रहे हैं अच्छी तरह से, ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार, गुड डे, गुड मॉर्निंग, गुड इवनिंग एवरी टाइम गुड रखना अभी फिर छुट्टी देते हैं फिर भी मिलते रहेंगे ।

048. बाप से वरसा लेने की विधि

ओम शांति।

यह कमाई सहज नहीं है ? बिल्कुल सहज, अति सहज। इसमें और कोई भी डिफिकल्टी की बात ही नहीं है जितनी मनुष्य समझते आए हैं । ज्ञान का नाम सुनते हैं ना तो डरते हैं, ज्ञान... ज्ञान तो इस आयु में थोड़ी ही और समझते हैं और समझते हैं आज की दुनिया जो कलयुगी तमोप्रधान है उसमें तो इन बातों का नाम ही नहीं है ज्ञान आदि । वो समझते हैं आज की दुनिया कैसी है, उसमें कैसे हो सकता है, विश्वास नहीं पा सकते हैं लेकिन शास्त्रों में फिर यही तो गाया हुआ है ना कि जब-जब अधर्म हुआ है, पाप हुआ है परमात्मा का आना भी तब हुआ है तो आया होगा तभी तो ज्ञान दिया होगा ना, अधर्म के समय में आकर के अधर्मी मनुष्यों को ही तो आकर के ज्ञान दिया होगा ना नहीं तो आया क्यूं, ऐसे ही घूमने आया क्या? आया होगा ज्ञान भी तभी दिया होगा ना तो जरूर ऐसे अधर्म के टाइम पर ही ज्ञान लेने वालों ने ही तो तभी लिया होगा ना। यह तो एक तरफ तो शास्त्रों में देखो ऐसी बातें हैं और दूसरी तरफ समझते हैं ऐसे कलयुगी अति तमो प्रधान समय पर ऐसे कोई पवित्र रहते होंगे, यह परमात्मा आया है और यह सभी धारणाएं इस युग में हो सकती

है तो यह विश्वास नहीं इन्हों को बैठ सकता है, इतनी भारी जिसमें पांचों विकारों का उसमें क्या मानना ही बड़ा मुश्किल हो जाता है परंतु यह भी देखो समझने की बात है एक तरफ तो शास्त्रों में भी तो यही गाते हैं कि ऐसे ही पाप के, अति पाप के समय पर अति पाप के समय पर आता हूं तो इसकी माना जरूर पाप के समय पापी ही मिलेंगे ना । जरूर पापियों को ही तो अति पापियों को ही तो बैठ कर के ज्ञान दिया होगा और उन्होंने लिया होगा, नहीं तो आया ही क्यों और आने का अभी वो टाइम है, ऐसा नहीं है कि मैं सतयुग में आता हूं, मैं कोई पावन दुनिया में आता हूं, मैं कोई ऐसे नहीं आता हूं। वह कहते हैं अति पतित और जब एकदम गिरावट का समय है तभी तो आता हूं ना, तो आने वाले का भी तो टाइम सिद्ध है। शास्त्र भी गाते हैं कि ऐसे ही टाइम पर उसको आना ही है। लेने वालों का भी टाइम सिद्ध ही है तो आया है तो उसी टाइम पर ही तो लिया है और जरूर ऐसे पतित ही पावन बने हैं तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है। तो देखो अभी अपन समझते हैं, भले शास्त्र पढ़ने वाले यह पढ़ते हैं लेकिन बिचारे समझ नहीं सकते हैं, जब प्रैक्टिकल होता है तो इन बातों को समझ नहीं पाते हैं इसीलिए समझते हैं आज के संसार में इतनी छोटी छोटी या इतने छोटे छोटे यह दावा लगाते हैं पवित्रता के और सो भी ऐसे गृहस्थ व्यवहार में रह करके स्त्री पति साथ रहकर के। अरे इतने ऋषि मुनि और इतने सब साधु सन्यासी ये भी घर गृहस्थ में रहकर पवित्र न रह सके इन्हों को भी अपना घर छोड़ना

पड़ा और ऋषि मुनियों का भी गायन है भाई फलाने मुनि चलायमान हुए ये हुए कई बातें हैं ना शास्त्रों में ऐसी। देवताओं के भी नाम पर ऐसी ऐसी बातें रख दी हैं ब्रह्मा जैसे शंकर जैसे जिसको कहते हैं महादेव, महादेव के ऊपर भी कलंक कि भाई वह भी मोहिनी के ऊपर फिदा हुआ, है ना। तो समझते हैं महादेव जैसे ऋषि मुनि जैसे फलाने जैसे गिरे और आज यह कैसे यह छोटे-छोटे बच्चे या यह लड़कियां या घर गृहस्ती में रहने वाले और वह समझे कि हम पवित्र रहे ये कैसे तो मनुष्यों के ये बिलीव में आना इंपॉसिबल लगता है, परंतु यह भी सिद्ध बात है कि ये ऐसे ही यह मनुष्य नहीं कर सकता है, यह तो इंपॉसिबल है कि मनुष्य नहीं बना सकता है बाकी हां सर्व समर्थ जो बाप है उसके लिए करना और कराना कोई डिफिकल्ट नहीं है क्योंकि वह बाप मिलता है ना, एक चीज मिलती है ना। कोई चीज छूटती है जब कुछ मिलता है, एक आना हमसे छूटेगा तब जब हमको दो आना मिलेगा, चलो और दो पैसा ज्यादा मिलेगा तब कुछ तो ज्यादा बड़ी चीज खींचता है ना। तो यह कुछ छूटता है किसी प्राप्ति के ऊपर। तो अभी जबकि सर्व समर्थ खुद आ करके अपने सभी संबंधों का साथ देकर के और हमें टेंप्टेशन कि तुमको इससे क्या अधिकार प्राप्त होगा, जब मिलता है जरूर कोई ऊंची टेंपटेशन मिलेगी तब तो वो टेंप्टेशन छूटेगी ना, नहीं तो विकारों की टेंप्टेशन कोई कम थोड़ी ही है। देखो दुनिया इसके ही ऊपर चटकी हुई है एकदम तो विकारों की टेंप्टेशन कोई कम नहीं है तो इसके छूटने के लिए कोई इसके ऊपर

की टेंप्टेशन चाहिए ना तभी तो वह बुद्धि की थी ना उधर तो वह बुद्धि खिंचवाने वाला, वह टेंप्टेशन देने वाला वह कोई अथॉरिटी चाहिए ना । तो अभी अथॉरिटी ने बैठ कर के उसकी भी ऊपर की टेंप्टेशन दी है प्रैक्टिकल में इसीलिए छूटना आसान है। तो यह तो बेचारे अपने को अनुभवी समझते हैं ना, यह दूसरे को तो नहीं समझ सकते हैं ना कि इनको क्या टेंपटेशन मिली है, किस आधार पर इन्हों से यह सब छूट सकता है, नहीं तो छूटना मुश्किल है यह तो बराबर है और हम अनुभव में भी देखते हैं कि बरोबर मुश्किल है , कोई चल पाते हैं कोटो में कोई । परंतु चल पाते हैं ऐसे नहीं कहेंगे इंपॉसिबल है, पॉसिबल है क्योंकि अभी परमात्मा मिला है, सर्व समर्थ मिला है और उसने सहज तरीके से बैठ करके हमें इस गंद से निकाला है इसीलिए अभी वह गंद दिखाई पड़ता है । यह विकार सभी गंद दिखाई पड़ते हैं इसीलिए गंद में कौन फिर डुबकी लगाएंगे या उनकी और देखेंगे इसीलिए वह चीज ऑटोमेटिक छूट जाती है क्योंकि कंट्रास्ट दोनों का बुद्धि में आ जाता है ना कि वह गंद है और यह बहार है । तो बहार और गंद, कौन चाहेगा बहार को छोड़कर फिर गंद तरफ जाएं। गंद छूट करके बहार तो देखो यह सतयुगी पवित्र जीवन की टेंप्टेशन बैठी है तो फिर यह गंद की कलयुगी विकारी जीवन की गंदगी जो कुछ है वह गंदगी छूट जाती है तो देने वाले ने अथॉरिटी ने दिया है ना तब, नहीं तो छूटना मुश्किल है, यह तो अनुभव भी कहते हैं देखो कई तो चल करके भी टूट पड़ते हैं उसका कारण ही क्या है कि जब यह चीज

विश्वास से निकल जाती है तो फिर टूट पड़ते हैं ना परंतु हां जिन्हों को यह है अनुभूति, अनुभव और प्रैक्टिकल लाइफ में जो चल रहे हैं वह देखो आसान होती जाती है तो फिर तो देखो छोटा है, बड़ा है सबके लिए आसान है कोई डिफिकल्टी नहीं है। तो यह तो हम अनुभवी जानते हैं ना दूसरे कैसे समझें कि यह इन्हों को कैसे क्या अनुभव है तो इसीलिए जो आवे अनुभव कर करके देखे तो उसको इस टेस्ट का पता लगे, नहीं तो बिचारे ऐसे कई मूंझते हैं वह समझते हैं कि भाई ऐसे कैसे होगा। बहुत बिलीव नहीं करते हैं वह समझते हैं यह पवित्र रहते होंगे यह तो इंपॉसिबल है लेकिन पवित्र ना रहते होंगे तो खाली पवित्रता का नाम रखने से फायदा ही क्या है। ऐसा थोड़ी कोई बोगस बनाकर बैठेंगे या कोई ऐसे बैठ करके बातें रखेंगे वो तो कोई मतलब ही नहीं है ना इससे क्या अपने को मिलेगा दूसरों से हमको कुछ लेना या दूसरों से कुछ करना वह तो बात ही नहीं है यह तो अपने जीवन का है परंतु दुनिया बिचारी के आगे क्या है कि ऐसी बहुत काल की उल्टी बातें बुद्धि में पड़ी हुई है ना, ये ऐसे ऐसे ऋषि मुनि फलाने फलाने ऐसे युग में ऐसे जमाने में भी बड़ा मुश्किल रहा ऐसी ऐसी जो बातें रखी हैं इसीलिए आज मनुष्य को अपनी हिम्मत नहीं होती है कि अभी कुछ विकारों से छूट सके लेकिन कई विचारों में हिम्मत हो कर भी विकारों में पड़े हैं यानी हिम्मत ना होने के कारण क्योंकि उनकी हिम्मत गिराई गई है ना, ऐसी बातों ने उनकी हिम्मत गिरा दी है क्योंकि समझते हैं ऋषि मुनि नहीं जीत पा सके हम कैसे

जीत पा सकेंगे, हमारे जैसे कैसे तो उन्होंने हिम्मत हार दी है ना। तो देखो बाप तो ऐसे कहेंगे ना कि देखो यह शास्त्रों से और ऐसी ऐसी उल्टी बातों से तुम्हारी देखो अभी हिम्मत गिर चुकी है कि भाई फलाने ब्रह्मा जैसा फलाना शंकर जैसा वह नहीं जीत सका तो हम कैसे कर सकेंगे सो भी आज की कलयुगी दुनिया में यह बड़ा मुश्किल है हो ही नहीं सकेगा इसीलिए हम गंद में पड़े ही अच्छे हैं तो ऐसे ऐसे समझ कर के बिचारे कई हिम्मत नहीं रखते हैं आगे बढ़ने की परंतु बाप कहते हैं नहीं बच्चे यही टाइम है। इसमें ही तो मैंने आकर की निकाला है ना। ऐसी पतित दुनिया से ही तो मैंने पावन दुनिया निकाली है, हां मैंने पावन दुनिया बनाई है इस दुनिया से पतित दुनिया से, एक आदमी की बात नहीं है। एक आदमी नहीं बनाया कि मैंने खाली अर्जुन या फलाना या फलाना जैसा शास्त्रों में दिखलाता आए हैं इसका उद्धार किया फिर उसका उद्धार किया कई नाम देते हैं ना भक्ति मार्ग में फलाने का उद्धार किया फलाने का उद्धार किया तो एक का ही थोड़ी ही, उद्धार वाले सभी का नाम एक ही टाइम का है ऐसे नहीं एक बारी आया तो फलाने का उद्धार किया, दूसरी बार आया तो तो दूसरे का उद्धार किया नहीं, आया एक ही बार और सबका उद्धार किया है। वह तो उन्होंने बैठकर के अलग-अलग टाइम अलग-अलग स्थान अलग-अलग बातें बना रखी है लेकिन है तो एक ही समय की बातें यानी करा है तो सबका उद्धार किया है। तो मैंने जो काम किया है वह ऐसे टाइम पर किया है तो देखो काम बहुत भारी है

ना, करने वाला भी ऐसा भारी चाहिए ना। कोई मनुष्य की ताकत थोड़ी है कि ऐसे बैठकर कि यह काम कर सके इसीलिए कहते हैं मनुष्य का काम तो है ही नहीं, मैं सर्व समर्थ हूं इसीलिए सर्व समर्थ गाया हुआ हूं । कहते हैं ना भगवान है तो कोई शक्ति दिखलाए, यही तो भगवान की शक्ति है और क्या दिखलाएंगे । जो मनुष्य नहीं कर सकते हैं वहीं आकर के परमात्मा कराते हैं की ऐसी अति पतित दुनिया के टाइम पर पतित दुनिया से ही पावन दुनिया निकालते हैं परमात्मा अर्थात बनाते हैं यही तो उनकी शक्ति है और क्या शक्ति। शक्ति का मतलब यह थोड़ी है कि मुर्दों को जिंदा करें, यही तो मुर्दों को जिंदा करते हैं ना प्रैक्टिकल। यही शक्ति है और क्या शक्ति दिखलाएंगे बाकी वह मुर्दा तो क्या फिर भी तो मुर्दा तो बनना ही है ना, शरीर तो छूटना ही है कोई ऐसे थोड़ी मुर्दे को जिंदा किया चलो जिंदा हुआ फिर क्या हुआ? बस फिर जिंदा ही रहा, जिंदे के साथ तो सब रहे ना फिर तो जिंदगी में सब कुछ चाहिए ना, खाली जिंदा से थोड़ी ही जिंदा रहते हैं। जिंदे वालों से पूछो ना आज, उनमें अगर कई दुख के कारण है तो जिंदगी जिंदगी नहीं है तू जिंदा के साथ तो सभी पदार्थ साधन दुख के जो हैं जीवन में चाहिए, अगर वह साधन नहीं है तो जिंदगी जिंदगी नहीं है इसीलिए कई बिचारे अपने को आत्मघात कर लेते हैं , कई डूब मरते हैं, क्यों मरते हैं? समझते हैं ऐसी जिंदगी ना होगी, वह समझते हैं परंतु ऐसे नहीं है फिर भी कर्म जो करके गए उल्टे इसी के अनुसार फिर जन्म ले लेंगे। उनको वह जन्म याद नहीं

पड़ता है ना इसीलिए समझते हैं हम तो छूट जाएंगे ना, वह याद नहीं रहता है परंतु सिर कर्म का हिसाब तो ले जाएंगे ना। वह भी इतना बड़ा पाप आत्मघात महापाप, जो किया तो उसका भी नतीजा उसको जा करके भोगना ही पड़ेगा परंतु वह बिचारे समझते थोड़े ही है। वह समझते हैं कि मरेंगे फिर याद थोड़ी ही पड़ेगी ये, यहां से छूट जाएंगे लेकिन छूटना कोई ऐसा तो नहीं है ना कर्म का हिसाब तो मनुष्य लेकर ही जाते हैं । जो भी देखो जीवन में दुख आता है यह भी तो कोई कर्म के हिसाब लेकर आए हैं दुख भोगते हैं तो समझते हैं ये छूटे तो छूटने का तरीका यह तो नहीं है मारे तो छूटे, नहीं इन्ही कर्मों को काटना है। यह कर्म का हिसाब जो बना है उसी हिसाब को काटना है जिंदगी नहीं काटनी है, यानी जिंदगी को नहीं खत्म करना है, इसमें जो हिसाब हमारा दुख का बना है उसको काटना है । जब तलक उसको ना काटे तब तलक हम दूसरी जिंदगी में सुख नहीं पा सकते हैं ना, तो भी दुखी मिलेगा तो इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे देखो मैं तुमको बैठ कर के यह कर्म की सब नॉलेज समझाता हूं कि तुम दुख से कैसे छूटो, तुम दुख को कैसे काटो। तो मरने से दुख नहीं कटेंगे, मरो कैसे जीते जी मरो । यह अभी अपन जीते जी मरते हैं ना, हैं जीते परंतु मरते हैं। काहे में मरते हैं, यह विकारी खाता अपना खत्म करते हैं तो हम मरते जा रहे हैं न, तो यह है जीते जी मरना, मरीजीवा बनना तो हम देखो मर करके अब जीते बने हैं, इसको कहेंगे मरजीवा। मर के जिए हैं तो मरे कहां से हैं, जिए कहां हैं यह

अभी समझते हैं कि मरे हैं पुरानी दुनिया के देह सहित देह के सर्व संबंधों से मरे हैं और फिर जिए कहां है नए संबंधों में अर्थात नए बाप से रिलेशन से फिर हमारा खाता भी नया ही रहेगा तो इसको कहां जाएगा मरजीवा। तो अभी मरजीवा बने हो ना, जीते जी मरे हो ना तो, अभी देखो बाप बैठ करके हमको मरना भी सीखलाते हैं मरो तो कैसे मरो । मरने का भी अकल कहते हैं तुमको नहीं है, ऐसे ही मर जाते हो। वह तो तुम अपने कर्मों का जो हिसाब है वो ले जाते हो। मरो तो फिर ऐसा मरो, मरना भी सीखो मेरे से जीना भी सीखो मेरे से, तो मैं तुमको अकल सिखाऊं कि मरो तो कैसे मरो तो अभी देखो मरना सीख रहे हैं ना, मरना और फिर जिंदा होना तो हम जिंदा रहे तो ऐसी जिंदाबाद दुनिया में जिंदा रहें, मरे तो ऐसी मरने वाली दुनिया से मरे। बाकी ऐसे थोड़ी ही है कि जिंदाबाद दुनिया से मरे और मरने वाली दुनिया में जिंदा रहे तो उसमें क्या पाएंगे, कुछ नहीं पाएंगे ना दुख ही लेना पड़ेगा तो इसीलिए बाप बैठ अकल सिखलाते हैं तो देखो यह मरने और जन्मने का अक्ल तो यह भी बुद्धि अभी बाप ने बैठकर के दी है। तो अभी हम जानते हैं कि मरो तो कैसे मरो जियो तो कैसे जियो तो अभी सीखे हो ना मरना जीना। तो अभी यह जो मरना जीना यह मरजीवा जानते हैं ऐसे मरजीवा पाए हुए ही फिर जब सतयुग में शरीर छोड़ेंगे ना फिर भी तुम जानेंगे मरना जीना अपने टाइम पर, मालिक हो करके शरीर छोड़ना शरीर लेना इसका तुमको बल मिलेगा क्योंकि अभी तुम मरना जीना सीखते हो ना तो यह

मरजीवा से तुम फिर कभी ऐसे नहीं मरेंगे अकाले, फिर तुम्हारा अमर पद रहेगा उसको करेंगे अमर। तो देखो बाप हमको अभी हम अमर बनाते हैं फिर हम ऐसे कभी नहीं मरेंगे यह मृत्यु लोक के सदृश्य दुख में मरे, दुख से जन्मे, दुख से चले नहीं, फिर हमारा शरीर छोड़ना सुख से, लेना सुख में, पलना सुख में, शरीर में होते भी सुख, छोड़ते भी सुख, लेते भी सुख , सुख ही सुख है फिर तो कोई दुखी नहीं होगा ना तो इसलिए कहते हैं कि फिर तुम्हारा मैं ऐसा बनाता हूं तो उसको कहेंगे अमर तो अभी बैठकर के बाप हमको अमर पद अर्थात यह सिखलाते हैं कि कैसे, मरो तो किससे मरो तो अभी देखो मरना जीना और जीवन में रहना कैसे चाहिए यह सभी बाप बैठकर के सिखलाते हैं क्योंकि जीवन की सारी फिलॉसफी की नॉलेज यथार्थ बाप बैठकर के समझाते हैं कि जीवन कैसी होती है और जीवन लेकर के जीवन को कैसे रखना है और कैसी जीवन की प्रालब्ध पानी है वह अपनी कैसी बनानी है इन सभी बातों की अभी बाप रोशनी देते हैं तो उसी रोशनी को पाकर के ऐसा बनने का है । इसके लिए कहते हैं अभी यह एक जन्म सिर्फ यह जन्म अब पूरा मेरे हवाले कर दो, मैं तुमको इस जन्म में बिल्कुल कंप्लीट तैयार कर दूंगा और यह तुम्हारा जन्म है भी छोटा क्योंकि छोटे का मतलब है अभी लास्ट निशानियां आ गई है ना मृत्यु की, वर्ल्ड के डिस्ट्रक्शन की बस इसी टाइम के अंदर मैं आकर के तुमको इतना सभी जन्मों का तुमको यह सिखाता हूं , तुम्हारा खाता ठीक करता हूं इसीलिए कहते हैं कि बस यह थोड़ा ही

टाइम मेरे प्रति करदो, मेरे हवाले कर दो जैसे कहूं वैसे चलो बाकी मैं तुमको रॉन्ग तो डायरेक्शन नहीं दूंगा, रॉन्ग तो नहीं चलाऊंगा, कोई ऐसी भी बात नहीं जिससे तुम्हें उल्टा या दुख का कारण बने, सुख का ही बनाऊंगा लेकिन करोगे तो तुम ना । तो बाप बैठकर समझाते हैं कि बच्चे मेरे हवाले करने से तेरा कल्याण होगा , तो अभी ये जीवन तन मन धन से मेरे हवाले हो जा। हवाले का मतलब यह नहीं मुझे दे दो, नहीं मेरी डायरेक्शंस पर, मेरी मत पर जिस की मत पर कोई रहते हैं तो वो उसका ही हो जाते हैं ना, बाकी हो जाने का मतलब यह नहीं देखी दे दो बाकी मैं क्या करूंगा तेरा तुम्हारे शरीर को लेकर बैठूंगा क्या, यहां तेरा तन मन धन मैं क्या करूंगा। तुम्हारे से ही बैठ कर के मत दे करके तुमको राय दे करके डायरेक्शंस दे करके तुम्हारे से राइटियस कर्म करवाउगा तो उसी से तुम्हारे कर्म अच्छे बनते जाएंगे मत दूंगा राय दूंगा डायरेक्शन दूंगा क्योंकि तुम्हारी बुद्धि की मत जो है ना, वह तो मत मारी गई है। माया ने तुम्हारी मत को मार डाला है यानी तुम्हारी मत खराब कर दी है तमोप्रधान इसीलिए तुम्हारी बुद्धि में अच्छे विचार नहीं आएंगे। मैं तुमको वह शक्ति दूंगा, बल दूंगा, राइटियस वे बताऊंगा कि ऐसे चलो ऐसे करो, तुम्हारी कहीं उल्टी हो सकती है। हां जितना जितना फिर उस पर चलते रहेंगे उससे तुम्हारी बुद्धि स्वच्छ होती जाएगी, फिर तुम अपनी मत का भी स्वच्छ चलने का ताकत रख सकेंगे। इसीलिए कहते हैं कि अभी तो फकंप्लीट ऐसे तो नहीं हो ना कि फ्री हो जैसे

चाहो वैसे चलते रहो, देखो अर्जुन को भी कहा ना आखिर में उसने पूछा की नष्टोमोहा? तो उसने कहा हां बाबा नष्टोमोहा तो कहा हां बच्चे अभी जो चाहो सो करो, अभी फ्री हो, अभी मेरी मत कि तुम्हें दरकार नहीं है। अभी तुम नष्टोमोहा विकारों से सब छूट गया, अभी तुम बालिग हो गए अब तुम फ्री हो अब जैसे चाहो वैसे करो । परंतु अभी हमको बाप नहीं कहते तुम बालिग हो गए, कहते हैं तुम अभी मेरे अंडर हो क्योंकि अभी तक तुम्हारी वह बुद्धि इतनी नहीं बनी है जो तुमको हम कहे कि अभी नष्टोमोहा फ्री हो, जो चाहो करो फ्री हो, नहीं फिर कहीं तुम्हारी उल्टी बुद्धि चल पड़े फिर कोई विकार काम क्रोध लोभ मोह अहंकार फिर घसीट लेवे इसीलिए अभी फ्री नहीं हूं, अभी तो गीता चल रही है ना, अभी तो हमको सुनाए रहें है जैसे अर्जुन सुन रहा था न, फिर पिछाड़ी में कहा नष्टोमोहा पीछे गीता समाप्त हुई है तो वो स्टेज पिछाड़ी में ना। अभी तो बाप गीता पढ़ा रहा है ना , अभी तो पाठ पढ़ रहे हों अभी तो सुन रहे हैंअभी तो गीता चल रही है अभी तो नॉलेज हमको बाप दे रहे हैं अभी जब वो अवस्था आएगी न पीछे बाप कहेंगे बच्चे अभी सब समझ लिया अब मेरा भी काम पूरा हुआ तुम भी अभी ठीक रहे तो बाप भी कहेंगे अभी टाइम भी पूरा हुआ पूरा डिस्ट्रक्शन का भी टाइम पूरा हो जाएगा और इधर अवस्थाओं का भी ऊंची ही रहेंगे फिर काम पूरा हो जाएगा तो कहते हैं हां इतने तक मेरे डायरेक्शंस पर अपने को चलाना है, यह तुमको अपने से ही पता चलेगा ना मेरी अवस्था कहां तक है, मैं कहां

तक बाप के फरमान पर आज्ञा पर पूरा चलता हूं, नहीं चलता हूं यह तो तेरे चलने से ही तुमको पता चलता है यह तो ऐसे ही बातें है ही नहीं कि छिपा हो, प्रत्यक्ष है। मनुष्य अपने कर्तव्य से देख सकता है कि मेरी धारणा कहां तक है । तो यह सभी बातों को बैठकर के बाप समझाते हैं और अभी प्रैक्टिकल उनके द्वारा समझ रहे हैं तो अभी ऐसे बाप के मत पर जिसको ही श्रीमत, श्रीमद् एक ही है यानी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। तो श्रेष्ठ जो है उसकी ही तो श्रेष्ठ मत होगी ना तो सबसे श्रेष्ठ कौन है? एक ही है इसीलिए बाप कहते हैं अभी उसी की मत पर चलो। मनुष्य मत जो भी सब है ना , शास्त्र मत भी तो मनुष्य मत हो गई ना, गुरु की मत भी लौकिक का वह भी तो मनुष्य मत हो गई, अपनी मन मत वह भी तो मनुष्य मत हो गई तो कहते हैं बाकी सब हैं मनुष्य मत अभी परमात्मा की मत जो है वह एक की ही है मत वह है सबसे श्रेष्ठ इसीलिए सभी मनुष्य मत अभी छोड़ो शास्त्रमत, गुरु मत, मनमत, सब मत अभी छोड़ो, सब मनुष्य मत में आ गई । यह मनुष्य मत तो सब जितना काम तुम्हारा उस मत से चलना था वह तो चल करके अभी उसका भी टाइम पूरा हुआ और उससे तुमको वो मेरी चीज जो है गति सद्गति वह नहीं मिलती है वह मेरी मत से मिलेगी, वह अभी मैं देता हूं तो अभी मेरी मत लो, तो लेनी चाहिए ना । तो अभी बाप की मत लेकर के और बाप से जो श्रेष्ठ मत है उसी श्रेष्ठ मत से श्रेष्ठ कर्म करने हैं तो श्रेष्ठ कीमत श्रेष्ठ बनाएगी ना । तो अभी बाप कहते हैं देखो मेरी

मत तुमको अभी ऊंचा बनाती है इसीलिए देखो देवताओं को भी श्री कहते हैं क्योंकि श्रेष्ठ ने बनाया है ना, उसी की मत से ऐसे बने । देवताओं को किसने बनाया है परमात्मा ने, तो परमात्मा ने मत दे करके बनाया , बाकी ऐसे नहीं कि उसके बोते बनाएं, उसमें सांसो फूंका ऐसा तो नहीं बनाया न, कैसे बनाया वह तो अभी समझते हो ऐसे बनाया। तो ये ज्ञान से उनके कर्म को श्रेष्ठ बनाया उससे फिर इंसान और मनुष्य ऐसे बने तो अभी देखो हम बन रहे हैं इसलिए बाप के फरमान और आज्ञा का पूरा पालन करते और बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने का पूरा पुरुषार्थ रखना है तो अभी एम एंड ऑब्जेक्ट बुद्धि में है ना । तो देखो कितनी सहज है, बाप ने बैठकर के सहज बातें सुनाई है इसीलिए अभी वह टेंप्टेशन है बुद्धि में इसीलिए पुरुषार्थ अवश्य उसी प्राप्ति को प्राप्त करने के लिए करना ही चाहिए बाकी मनुष्य तो इतनी टेम्पटेशन दे ही नहीं सकते हैं ना। मनुष्य तो बस जैसे भी तू मुक्त हो जाएगा, तू ये कर, तेरा मुक्ति हो गया तू चले जाएंगे, बहुत गए हैं, ऐसे ऐसे सुनाते आए हैं परन्तु बस वो इतना ही नहीं, बाप तो साथ ले चलते हैं, प्रैक्टिकल दुनिया को बदलाते हैं। प्रैक्टिकल है ना, वह तो सुनाते सुनाते खुद ही बिचारे चले गए और सुनाते सुनाते सुनने वाले भी चले गए, यह तो होता ही आया है बहुत जन्मों से लेकिन दुनिया तो हमारी ऊंची चली नहीं। दुनिया तो और ही नीचे गिरती जा रही है यह तो देखते ही जा रहे हैं। सुनाते तो रहते ही हैं कोई आज के थोड़ी ही सुनाते हैं, यह तो

वेद, शास्त्र, ग्रंथ वाले बहुत काल से हैं, शास्त्र बहुत काल से हैं, बहुत काल से सुनाते आए हैं तो सुनाने का कुछ इफ़ेक्ट तो दुनिया के ऊपर आना चाहिए ना। जो अगर हम ऊंचे जाते रहे तो उसका कुछ दुनिया को भी फल मिलना चाहिए ना, परंतु नहीं दुनिया नीचे ही चलती जा रही है उसका मतलब है कि हम नीचे ही बढ़ते जा रहे हैं ऊंचा उठने का कुछ और तरीका है इसीलिए बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है और ऊंचा उठने का मैं तो प्रैक्टिकल दुनिया को ऊंचा कर जाता हूं, वह तो प्रैक्टिकल। तो जो चीज प्रैक्टिकल है उसको तो कोई छुपाए रखने की बात ही नहीं है, वह तो छिपने वाली बात ही नहीं है । तो अभी-अभी यह सभी बातें प्रत्यक्ष होती रहेंगी परंतु कहते हैं मैं काम आ करके बड़ा गुप्त तरीके से करता हूं, मेरे काम का तरीका बड़ा गुप्त है क्योंकि मैं भी हूं ही गुप्त मैं पहले से ही निराकार हूं, जो इन आंखों से पहले से ही देखने में नहीं आता हूं बाकी जो काम करता हूं ना बड़ा साधारण तरीके से इसीलिए मेरा काम बहुत साधारण है, देखो किसको बैठकर पढ़ाता हूं, अबलाएं, कन्याएं, माताएं, कहा भी है ना अबलाओं को बल देने वाला तो नाम कोई ऐसा नहीं है बलवानों को बल देने वाला, नहीं अबलाओं को। देखो अबला कहा है , अबला किसको कहा जाता है, निर्बल को बल देने वाला तो ये सभी चीजें । देखो गायन कैसे कैसे हैं अबला को बल देना निर्बल को बल देना । कईयों को खुद में विश्वास नहीं बैठता है कि हम कैसे ऐसे हो सकते हैं ऐसे समझते हैं परंतु नहीं बाप कहते हैं मैं आता हूं अजामिल जैसा

कोई पापी भी हो न तो ऐसा पापी भी क्षण में पुण्य आत्मा हो सकता ही क्योंकि बाप मिला है न इसलिए अपने में हिम्मत नहीं हारो हम कैसे ऐसे हो सकते हैं हिम्मत रखो अपने में और ऐसे हिम्मत रखने वाले को ही कहा हुआ है हिम्मत ए मर्दा मदद ए खुदा तो जरूर है अभी खुदा, खुदा दोस्त बनकर आया है। दोस्त बन कर आया है ना अभी, तो अभी बाप कहते हैं अभी मेरे से दोस्ती रखो, तुम माता पिता तुम विद्याद्रविणं, तुम सखा, सखा भी कहते हैं, सखा किसको कहा जाता है दोस्तों को, सखा हिंदी वर्ड है, अंग्रेजी में फ्रेंड कहते हैं, उर्दू शायद दोस्त हैं, दोस्त कहो, फ्रेंड कहो, सखा कहो बात तो एक ही है ना तो गाते हैं ना तू सखा, सखा किसको कहा जाता है सखी सखा फ्रेंड को, तो फ्रेड सखा दोस्त खुद परमात्मा दोस्त बन कर आते हैं कहते हैं अभी मेरे से दोस्ती रखो तो मेरे द्वारा तुम को देखो कितनी सुख की प्राप्ति रहेगी तो अभी उससे ठीक से अपना अटेंशन ऐसा न हो कहीं माया फिर आँख हटा देवे, आँख पूरी रखना एकदम टिकटिकी जरा भी नजर वहां से न हटे, परंतु नजर कोई यह नजर नहीं, बुद्धि से। इस नजरों से तो काम करना है न , उधर दूसरे काम जाना पड़ेगा तो आँखों से फिर उधर भी काम करना पड़ेगा, तो इन आंखों को भले हिलाओ परंतु वो बुद्धि को मत हिलाओ, बुद्धि स्थेरियम किसमें बाप में, हम उनके हैं चलो तो बाप कहते हैं फिर मेरे हो करके हर बात में रहेंगे ना, हम बाबा के हैं बाप के हैं, उसके बच्चे हैं हम इससे बुद्धि हिले नहीं तो ऐसी जो स्थेरियम बुद्धि धारणा वाले हैं वह अपना हर

कर्तव्य में मेरा ही कर्तव्य का पालन करते चलेंगे। वो समझेंगे हर कर्तव्य में कि हम बाप के हैं और बाप की आज्ञा और फरमान के ऊपर रह करके हर कर्तव्य का पालन करना है तो ऐसे चलने वाले जो बच्चे हैं वह सदा सुखदाई और सुख को पाएंगे, ठीक है न । ठीक है ना तो ऐसे सुख पाने के लिए अपना पुरुषार्थ अच्छा रखते रहो और बाप से सदा सुख का वर्सा पाने में अपने को तेज चलाओ, तेज रफ्तार, तेज पुरुषार्थ । तो ऐसे तेज पुरुषार्थ करने वाले ज़रूर है की आगे भी तेज आएँगे, तेज का मतलब है आगे आएंगे नई दुनिया में। अभी फिर तेज पुरुषार्थ की प्रारब्ध नई दुनिया में आगे आने की, पहले नंबर । ऐसा होता है न, पढ़ाई में मनुष्य तेज होते हैं उसका मतलब ही क्या है, नंबर आगे आएंगे, नंबर आगे आएंगे तो फिर स्कॉलरशिप फिर आगे स्टेटस में उनका फायदा उनको मिलेगा यह तो कायदा ही है ना, तो इसमें तेज होना माना हम आगे अपनी प्रालब्ध में नंबर आगे, अपना बड़ा स्टेटस पाएंगे । तो ऐसे स्टेटस पाने वाले जो होते हैं वह पुरुषार्थ का पूरा अटेंशन रखते हैं, ऐसे नहीं है कि चलो थोड़ा बहुत किया, क्या किसी ने दे,खा क्या होगा चलो जो मिलेगा ले लेंगे, ऐसे ऐसे डल पुरुषार्थ नहीं, तीव्र, तेज तो ऐसे तेज पुर साथ में चलते रहो। अच्छा टाइम हुआ है, आज छुट्टी तो नहीं है इसीलिए अपने टाइम पर आप लोगों को छोड़ना है, फिर आप लोगों को अपना अपना भी काम है, किसीकी नौकरी दफ्तर आदि। अच्छा, कैसे? सब अच्छे हो? सब अच्छे हो, अच्छा का मतलब अच्छा, अच्छा किसको कहा जाता है

अभी अच्छा का अर्थ तो जान गए हो ना अच्छी तरह से । अच्छा किसने नहीं खिलाया है? सब ने खिलाया है? इसने नहीं खिलाया है? ओ....देव कैसा है? गारंटी पक्की ? देखना , जब कहेंगे गारेंटी पक्की माया ही तभी आएगी लड़ने के लिए, उसके पहले कहेंगे यह तो शांत स्वरूप है, कहां गारंटी, वो कहेगी ये कहते है गारंटी? मेरा ग्राहक उससे गारंटी करता है, दूसरे से, भगवान से तो पकड़ो फिर पकड़ेंगी । फिर आएगा तूफान आएगा, युद्ध होगा लड़ेंगे सब, सगे वाले, इधर के उधर के, सब दुश्मन बनेंगे बता देते हैं, हाँ? भले बनें ? परवाह नहीं है ? हिम्मत है ? चलो देखो, हम क्यों आपमें अशुभ भावना उठाएँ, हम तो शुभ भावना रखेंगे फिर देखेंगे। ये हम डराते हैं देखें कि डरता तो नहीं है। शिव बाबा को याद करते हो? करके देते जाओ । याद करो भी और देते भी जाओ दोनों काम करो बुद्धि से याद करो, हाथ से काम करो। कहा जाता है दिल यार डे कम कार डे यानी हाथों से काम, इसका मतलब है दिल यार, यार माना दोस्त, फ्रेंड दिल उसकी तरफ और काम हाथ से, हाथ से काम करो दिल उसको दो इसमें क्या भारी लगता है हां ? यह भी आता है कुछ टाइम से, कुछ समझ में आती है बाते ? इसका नाम क्या है, आपका शुभ नाम क्या है? देव? देवराज? ओ....हो..! नाम तो पहले से ही देवराज है, देखो श्री नारायण को कहेंगे ना देवराज, वह देवता राजा था, महाराजा था देवराज महाराज, बहुत अच्छा अभी देवराज से देव महाराज बनने का है, महाराजा, ऐसा पुरुषार्थ करने का है। अभी नाम है फिर काम करने है

ऐसा, प्रैक्टिकल एक्शंस में अपने को ऐसा बनाना है, समझा । तो एक्शंस में कैसे बनना है वो तो समझते जाते हो ना, अपने एक्शंस को प्योर करना है । प्योर कैसे करना है, वो भी समझते हो ना? पांच विकार जो है उसको छोड़ना है, उसको छोड़ने से प्योर हो जाएंगे । तो अभी छोड़ते जाते हो ना विकारों को? कौन से विकार छोड़े हैं? कौन से छूटे हैं विकार? अभी छोड़े नहीं है? ओहो ! यह बिचारा सच कहता है, देखो यह भी इसका गुण अच्छा है । देखो साफ कहा नहीं छोड़ा है तो कहा, यह फिर भी सच कह रहा है । तो हां सच बोलना है फिर अच्छा बोला सच, परंतु इसको भी छोड़ना है । अपनी लाइफ की स्टेज की सत्यता को जानना है और प्रैक्टिकल हम जैसे सच्चे हैं, (इसको डबल देना है ना) तो ऐसा प्रैक्टिकल सच्चे बनना है तो अभी फाइव वॉइसेज को छोड़ना है । वॉइसेज का मालूम है कौन से हैं, कौन से हैं बताइए । काम, हां काम और दूसरा? क्रोध, तीसरा मोह, अच्छा चलो फिर लोभ, फिर? पांचवा कौन सा ? अहंकार, तो पहला पहला है देह अभिमान, अहंकार, बॉडी कॉन्शियस, यही पहला शत्रु है उसके बाद सब शत्रु आते हैं । काम क्यों आता है, काम तभी आता है जब हम सोल कॉन्शियस छोड़ करके बॉडी कॉन्शियस यानी देह का अहंकार में आते हैं, मैं फलाना हूं यह मेरी स्त्री है, मैं पति हूं, हमारा विकार का ही संबंध है, तब तो फिर विकारी दृष्टि, क्रिमिनल आई लगती है तो क्रिमिनल आई तब लगती है जब हम पहले पहले देह अभिमानी, बॉडी कॉन्शियस होते हैं । तो बॉडी कॉन्शियस वाला विकार तो पहले छोड़ना

है यानी पहले सौल कॉन्शियस आई एम सोल, नॉट बॉडी, आई एम सोल, सन ऑफ़ सुप्रीम सोल समझा ? तो आई ऍम सोल, सन ऑफ़ सुप्रीम सोल, तो आई एम प्योर सोल । सन ऑफ़ सुप्रीम सोल तो प्योर सोल होगा ना, सन ऑफ सुप्रीम सोल इम्प्योर थोड़े ही होगा, नहीं आई एम सोल, सन ऑफ सुप्रीम सौल, प्योर सौल तो प्योर रहना है समझा । पीछे आएगा, जब सोल रियलाइज करेंगे और गॉड रियलाइज करेंगे तब फिर तुमको आएगा कि अभी हम प्योर रहें तो यह हो गया पहला देही अभिमानी बनना, तो देहि अभिमानी बनना माना अपने को बाप को समझना । देह का अभिमान नहीं, देही, देही कहा जाता है आत्मा को, देह कहा जाता है शरीर को, यह सब समझने की बात है । तो अभी पहले वह ठीक करने से फिर काम नहीं आएगा, फिर क्रोध नहीं आएगा, फिर लोभ नहीं आएगा, फिर मोह नहीं आएगा, अभी समझा? अच्छा । अभी हमारे होते ही बाकि एक सप्ताह भर हैं कुछ तो उसके अंदर अंदर फिर हम पूंछे तो आप कहो अभी छोड़ा है, शुरू किया है छोड़ना, ठीक है ना । शाबाश! कोई शुभ कार्य में देरी थोड़ी ही लगानी चाहिए, नहीं शुभ कार्य में तो जहात से खड़े हो जाना चाहिए कि आज से प्राण करता हूँ, आज से बस अभी विकारों का हम अपना उससे संग नहीं रखेंगे । ठीक है? शादीशुदा हो? बाल बच्चे हैं? कितने बच्चे हैं? पाँच, ओहोहो! बाकी क्या रहा, पाँच बच्चे अभी क्या बाकी, अभी बर्थ कंट्रोल गवर्नमेंट भी कहती है और आलमाइटी गवर्नमेंट भी कहती है बर्थ कंट्रोल । विकारों

को कंट्रोल ठीक है न । ऐसे चलने से अपना सौभाग्य पाएंगे । तो ऐसा बाप और दादा, जानते जाते हो ना और मां की मीठे-मीठे बहुत ही अच्छे सपूत समझदार बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग । अच्छा, अच्छे हैं बच्चे, कैसा है बैकुंठ वासी? वासी है या नाथ है? वासी है, नाम ऐसा है । वैकुंठ में वासी होना? शाबाश! हां, याद करो अपना वैकुंठधाम और अपना मुक्तिधाम । जीवन मुक्तिधाम और मुक्तिधाम बस दो याद रखो बस और कोई बात नहीं, ठीक है ना । यह दुःख धाम तो भूलना ही है, अभी चलना है अपने घर शांति और सुख धाम । अच्छा, सब ठीक हो ? ओके ? चार्ट, दिनचर्या, सब ठीक है? अच्छा शाबाश, ठीक है तो शाबाश, करो करो कौन बात करता है । है कोई करने वाला, बस ? बोलो, बोलो, और कोई बोलने वाला है बोलो, क्या बोलते हो, नमस्ते शिव बाबा ।

049. बाप शिक्षक और सद्गुरु से वर्ष लेने की विधि

ओम शांति, सत बाप, सत टीचर और सतगुरु, अभी जानते हो ना? एक ही है जिसको सत कहने में आता है । बाकी तो सभी बाप, टीचर, गुरु जन्म मरण में आने वाले हैं इसीलिए उनको सत नहीं कह सकते हैं । सत बाप, सत टीचर, सतगुरु एक ही है जो सभी गुरुओं का गुरु, पिताओं का पिता, जिसकी महिमा सबसे ऊपर की है और सबका वह एक ही है और दुनिया भी कहती है परमात्मा एक है, यह तो सब मानेंगे। तो यह अभी अपनी बुद्धि में है तो जो एक है वह एक अपने को मिला है, नशा बैठता है कि हम किसके बने हैं? यह कौन हमारा टीचर बना है? हमको अभी कौन पढ़ा रहा है? यह पढ़ाई किसकी है? अभी उसकी स्वयं, वह नशा बैठना चाहिए अच्छी तरह से तो ऐसे बेहद बाप से अभी हम पढ़ रहे हैं । उसकी पढ़ाई की स्टेटस जरूर है कि ऊंची रहेगी तो पढ़ने वालों को कितना नशा रहना चाहिए, कितना फखुर रहना चाहिए और उस पढ़ाई के लिए कितना पुरुषार्थ रहना चाहिए। तो ऐसे पुरुषार्थी भी होना चाहिए क्योंकि वो तो पढ़ाई, चलो न पढ़ी इधर-उधर से पढ़ भी ली जाए परंतु यह पढ़ाई का चांस अभी ही है इसीलिए इस पढ़ाई का चांस अभी खोया तो मानो सदा के लिए खोया, खोया रहेगा। यह चांस अभी लिया तो सदा के लिए हो जाएगा और अभी नहीं लिया तो फिर सदा के लिए खोए खोए रहेंगे

तो खोना तो अच्छा नहीं है ना। अनेक जन्म तो दुःख पाते आए हैं, उसे तो अनुभव किया, अभी जब बाप मिला है और जिसको पुकारते आए थे, भक्ति मार्ग में पुकारते थे ना, अभी मिला है तो मिला है तो बाप से ले लेना चाहिए ना । ना मिला था, ना आया था तो पुकारते रहते थे, अभी आया है, बाप स्वयं कह रहा है कि बच्चे मैं आया हुआ हूं और अभी मेरे से क्या चाहते हो, जो चाहते हो वह देने के लिए अभी उपस्थित हूं अभी लो । लो तो कोई ऐसी चीज तो नहीं है कि बनी बनाई चीज ऐसे ही दे देंगे । वह फिर हमारे कर्म से हम से ही बनवाते हैं तो फिर हमको अपने कर्मों का और अपने पुरुषार्थ का पूरा अटेंशन होना चाहिए, तब तो हम बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पूरा पा सकेंगे तो इसके ऊपर पूरा अटेंशन । यह पढ़ाई मानो सभी पढ़ाइयों का सार है और इसी पढ़ाई से ही हम मानो सभी पढ़ाइयों का बल ले लेते हैं ना, इसमें सब कुछ आ जाता है । तो जब ऐसी चीज मिली है, सो भी ऐसे भी नहीं है कुछ छोड़ना पड़ता है । कोई ऐसे भी नहीं है कि काम धंधे का टाइम निकालना पड़ता है, नहीं वह तो करना ही है । सिर्फ हां, थोड़ा टाइम जो भी सहज बनता है इसीलिए देखो सुबह का अमृतवेला, उस टाइम पर तो भगवान का नाम लेने का ही टाइम है या तो मनुष्य सोते और खोते हैं, दो बातें हैं । तो यही है, जब कमाई का दिन है तो फिर उसमें थोड़ा चुस्त होना अच्छा ही है तो उससे क्या होगा, कमाई है । इस कमाई पर अभी हमारे सारे जीवन और सभी जन्मों का आधार है इसके ऊपर तो हमको सोचना

चाहिए कि इसके लिए कितना हमारा होना चाहिए नहीं तो टोटा भी पड़ेगा न सभी जन्मों का टोटा, फायदा तो सभी जन्मों का फायदा, तो अगर अभी हम इसमें नुकसान करते हैं तो नुकसान भी भारी है तो इसका नुकसान भी सोचना है । तो ऐसा अभी अपना थोड़ा अटेंशन रखते और पुरुषार्थ को आगे करते रहेंगे और अपना हर बात के ऊपर ध्यान रखते रहेंगे तो फिर सत बाप, सत टीचर और सतगुरु से अपना पूरा-पूरा अधिकार पाते पाने का लायक बनेंगे । बाप तो देखेंगे ना बच्चे लायक कौन है, किस तरह से अपना पा रहे हैं, तो वह देखे ना देखे लेकिन जो करता है सो तो पाता ही है ना । उसके भी देखने की कोई बात नहीं, यह तो जो करेगा यह अपने को देखना है । अपने को भी कोई देखे ना देखे परंतु जो करेगा सो पाएगा तो जरूर ना । तो अगर हम रॉन्ग करते हैं तो रॉन्ग पाएंगे, राइट करते हैं तो राइट पाएंगे, जितना करेंगे उतने का एक का दस गुना सौ गुना तो हमको अपने पर ऐसा अटेंशन होना चाहिए । ऐसा भी नहीं है फलाना देखेगा या दूसरे देखेंगे, दूसरे को दिखाऊ कुछ यह पुरुषार्थ तो नहीं है ना, यह तो अपने लिए हैं । तो जो अपने पर हैं वह तो समझेंगे कि यह हमारे लिए है तो हमारे लिए जो समझते हैं वो तो अपना जी जान लगा करके उसके लिए कुछ भी हो जाए वह अपना पुरुषार्थ पूरा रखेंगे । तो उसके लिए थोड़ी तकलीफ लेनी पड़े थोड़ा कुछ तो इन बातों में वो तकलीफ कोई तकलीफ नहीं । वैसे भी तकलीफ के बिना तो कुछ काम होता भी नहीं है । सारा दिन धंधा धोरी करते हो फिर काहे के

लिए, करते हो ना? तो जैसे वह भी सब कुछ करने का होता ही है, तो यह भी पुरुषार्थ ही है । इसी पुरुषार्थ में अपना अच्छी तरीके से अपना अटेंशन देते और अपने को आगे बढ़ाना चाहिए क्योंकि अभी बाप मिला है । इतना समय भक्ति मार्ग में तो मनुष्यों के द्वारा भक्ति करते कराते चलता आया । अभी स्वयं परमपिता परमात्मा आ करके अभी यह सिखा रहे हैं । अभी हम उनका सीखा हुआ अभी करते हैं । तो उनके सिखाए हुए में से तो हमारा गफलत नहीं होनी चाहिए न । उसके सिखाएं हुए में गफलत का फिर नुकसान है क्योंकि डायरेक्ट शिक्षा दे रहे हैं ना । तो अभी हम उसके डायरेक्ट सन्मुख वह हमारे सम्मुख हुए हैं हम उनके सम्मुख होकर के बाप से अपना बाप का, टीचर का, सतगुरु का ले रहे हैं तो कोई मनुष्य की बात तो नहीं है ना । मनुष्य के साथ हमारी कोई गफलत चल भी जाए लेकिन यह है अभी डायरेक्ट स्वयं परमपिता परमात्मा तो उसके साथ तो हमारा बहुत अटेंशन होना चाहिए और उसी अटेंशन से हम अपना सौभाग्य पा सकेंगे और चांस भी अभी है । देखते हैं कि बाप कहता है कि मैं आता भी हूं तो वृद्ध तन में आता हूं तो उससे भी अंदाजा लगाओ कि हमारा रहने का कितना टाइम होगा, थोड़ा टाइम होगा । अगर हमको बहुत टाइम होता तो मैं फिर शरीर कोई यंग लेता या कोई छोटा लेता । नहीं, मेरा मीटर भी समझ सकते हो, मैं लेता ही हूं आता ही हूं उस तन में जिसकी आयु साथ बरस, उसी आयु वाले मनुष्य तन में तो आता हूँ । तो साठ बरस की आयु वाले का बाकी

कितना होगा तो मुझे उसी शरीर में ही काम करना है । ऐसे भी नहीं एक शरीर छोड़ूंगा फिर दूसरा शरीर ले लूंगा, फिर दूसरे शरीर में बैठ करके काम करूंगा । नहीं, इसी एक ही शरीर में मुझे विनाश और स्थापना और पालना के लिए लायक बना करके जाना ही है । तो इतना काम करना ही है तो इसके लिए मैं आता ही हूं ऐसे टाइम पर ही समझ सकते हो कि अब कितना थोड़ा टाइम मैं होउंगा । और काम कितना भारी है परंतु काम कोई मेरा तो नहीं है ना । बिगड़ा तेरा है और तुम्हे ही सुधारना है इसीलिए उसी सुधार के लिए तुम्हें इतनी मेहनत करनी चाहिए । देखो संस्कार कितने बहुत जन्मों के पुराने हैं, कड़े हैं तो उन्हीं सभी बातों के ऊपर भी अपना अटेंशन पूरा होना चाहिए । यह भी तो बहुत बारी समझाया हुआ है कि कोई भी कर्म करते हो संभलना कर्म को है । भले कोई संकल्प, विकल्प, माया के तूफान आएंगे परंतु उनकी इतनी परवाह नहीं है जितनी कर्म की है । कोई कर्म अगर उल्टा हो गया, रॉन्ग एक्शंस हुआ तो एक्शंस का बनता है, बुरे का चाहे अच्छे का, लेकिन मन से कोई संकल्प हुआ या कोई स्वप्न उल्टा आया या कोई भी ऐसी बातें तो वह तो मन की हो गई ना तो उनका इतना नहीं है । हां वह भी छूटेगी तभी, जब' जितना जितना तुम्हारे एक्शंस राइटियस होते जाएंगे तो फिर यह संकल्प आदि उल्टे सब हैं, वह भी राइटियस होते जाएंगे क्योंकि वह ज्ञान की पराकाष्ठा और योग की पराकाष्ठा जितनी बढ़ती जाएगी ना तो उनका प्रभाव माइंड के ऊपर, फिर वह भी स्थेरियम होती जाएंगी

और फिर सारा दिन इन विचारों में भी रहने से ज्ञान के किसी को समझाना, करना, जितना इसमें बिजी रहेंगे, नेचुरल है सारा दिन जो मनुष्य काम करते हैं बुद्धि उधर जरूर जाएगी, फिर कैसा भी करें । देखो धंधा करते हो यह बनाना है, वह बनाना है, जैसा जिसका बिजनेस है न तो नेचुरल है बुद्धि उसमें भी चली जाएगी न । बैठे होंगे इधर बुद्धि उधर भागती रहेगी क्योंकि सारा दिन जो बहुत समय जो काम करने का होता है तो उसमें बुद्धि चली जाएगी । तो इसीलिए बाप कहते हैं जितना, बहुत समय का मतलब यह नहीं है, अगर समझो आपको धंधा 8 घंटे करना पड़ता है लेकिन करना पड़ता है, परंतु अगर बुद्धि की उसी तरफ है तो फिर लग्न की और बुद्धि मन भागेगा । भले आठ घंटे उसमें देते हो तो उसका मतलब यह नहीं की टाइम उसमें देते हो इतना इसीलिए परंतु हाँ जितना तुम्हारी लगन उस तरफ होगी, हां वह तो करना ही है, निमित्य हो करके करना है परंतु जिस तरफ लगन होगी बुद्धि उधर खींची जाएगी । इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे जितना-जितना अपना इस बात का महत्व अपने में रखेंगे और अपना पुरुषार्थ उसी तरह करेंगे तो उस पुरुषार्थ की ऐसी प्रालब्ध भी ऐसी बनाएंगे और अपने कर्मों की संभाल रखते रहो । कोई भी ऐसा एक्शन या कोई ऐसा कर्म उल्टा ना हो जिसके भागी बनें, फिर उसकी चोंट भारी लगती है क्योंकि ज्ञान में आकर के समझ करके कोई उल्टा करता है ना तो उसके फिर दोष के भागी भी बहुत बनते हैं और फिर उसकी सूक्ष्म अपने आप में ही सजा फिर कई

प्रकार की । ऐसे भी नहीं हैं जो हम अभी करते हैं उसकी भोगना अभी भी पाते हैं, ऐसे नहीं है कि अभी जो करेंगे वह पीछे ही पाएंगे, नहीं बहुत कुछ हम अभी भी पाते हैं, बहुत कुछ रह जाता है तो पीछे भी पाते हैं । तो जो करते हैं वह पाते भी है ना तो यहां की यहां भी सजा हो सकती है इसीलिए संभलना है सभी बातों में संभलना है । और बाकी भी यह जानते हैं यह तो है ही अंतिम जन्म, हमको सब कुछ हिसाब किताब को यहां ही चुकाना है इसीलिए यह सभी बातें जब नॉलेज है सभी कर्मों का तो उसको अच्छी तरह से बुद्धि में रखते अपने कर्मों को संभालना है और बाकी भी अपना ज्ञान और योग ये अंदर-अंदर का पुरुषार्थ है ना, बाहर से तो कुछ करने का है नहीं कि भाई जाओ, तुम आठ बार यह माला सिमरो या यह करो या यह मंत्र जाप करो । कोई बाहर की तो आपको कुछ देने की बात ही नहीं है । बाप कहते हैं बस निरंतर मेरे हो करके रहो । मेरे होकर के रहने से तुम्हारे कर्म अच्छे रहेंगे और मेरी ही याद रहेगी और मेरे होकर रहने से जिनके होते हैं तो उनका ही तो सारा रहता है ना तो बस मेरे सारे होकर के रहो बस बाकी क्या है । मैं कहूं नहीं थोड़ा टाइम दो, आठ माला फेरो, पचास यह करो या मंत्र जाप करो, सौ बार यह मंत्र का जाप करो, ऐसी भी बातें नहीं है, मेरे सारे होकर के रहो । सारे का मतलब है कि मेरी ही हो करके, जैसे जिसके प्रति जीवन होती है, बच्चों के प्रति जीवन है तो जीवन का सारा ही उनके प्रति चलता है, स्त्री पति का हो जाती है तो फिर जीवन ही सारी एक-दो के लिए हो

जाती है, पति की स्त्री के लिए स्त्री की पति के लिए, बाप बनता है तो फिर बच्चों के लिए तो जीवन सारी हो जाती है ना । तन से, धन से, मन से समझते हैं यही अपना जीवन है परंतु अभी बाप कहते हैं मेरे हो जा, मेरे हो करके फिर यह करो ट्रस्टी होकर के, जिसको बाप कहते हैं ट्रस्टी हो करके रहो । तो ऐसे नहीं अपनी आशक्ति, फिर मैं कहता हूं जो अपनी क्रिएशन रची है उसको संभालना है परंतु ट्रस्टी होकर के । ट्रस्टी की अपनी आसक्ति नहीं होती है ममत्व नहीं होता है । तो उसी तरीके से रहकर के और मेरे बन करके चलने से फिर तुम्हारी तकरीर ऊंची बनती जाएगी । तो ऐसी अपनी तकदीर को बनाने के लिए पूरा पुरुषार्थ रखना और पुरुषार्थ को अच्छी तरह से अटेंशन में रखना और चलना यही कमाई है । नहीं, तो फिर कमाई को खोते रहना । कमाई का चांस भी बहुत हो और फिर उसमें से हम थोड़ा लें तो वह भी कहेंगे कमबख्त । मिले चीज बहुत और लें उसमें से थोड़ा, तू भी क्या कहेंगे, भाई तुम्हारी किस्मत में नहीं है शायद, फिर ऐसा कहने में आएगा तो फिर ऐसा थोड़ी ही बनना चाहिए । ऐसा पुरुषार्थ करने के लिए अपना पुरुषार्थ आगे करते रहो क्योंकि देखो बेंगलुर वासी हो ना, रहतेतो बहुत सेंटर से दूर हो, किनारे पर हो इसीलिए आप लोगों को बहुत देरी-देरी से यह संग अथवा यह सभी बातों का मिलता है तो उसका लाभ भी आप लोगों को लेना ही चाहिए । ऐसे भी नहीं है जल्दी-जल्दी कोई कोई महारथी या बाबा या मम्मा इधर जल्दी-जल्दी आते हैं तो इसलिए आप लोगों को जो चांस मिलता

है उस चांस का भी अच्छी तरह से ध्यान देकर के लेना चाहिए, फिर जैसे गाय होती है ना, गाय समझते हो, गाय घास ले लेती है पीछे बैठ के उगारती रहती है । उगारती समझते हो न फिर घास को उगारती है, आपकी भाषा में कुछ और कहते होंगे, हाँ थोड़ा-थोड़ा खाती है । तो अभी तो आप लोगों को मिलता है यह डोज तो यह डोज ले लो । पीछे हां, इसको उगारना भी है अच्छी तरह से, तो पहले तो डोज ले लो ना । अभी घास का टाइम मिला है तो ज्ञान घास है ना यह भी । वह है ना कृष्ण की गऊ दिखलाते हैं ना, वह गौएँ नहीं है इनह्यूमन, यह ह्यूमन की बात है कि परमात्मा आए हैं तो आ करके यह ज्ञान का घास कहो या इसको अमृत कहो, इनको यह सभी बातें नाम दिया हुआ है तो यह अभी की बातें हैं ना । यह मिलता है तो इसको खाना है, देखो बहुत जन्मों की प्यासी है ना, यह मिला नहीं था, यह खुराक नहीं मिली थी इतना समय, तो आत्मा बिरा खुराक के वीक हो गई थी । वीक हो गई ना? इंप्योरिटी में वीक हो गई, अभी इनको यह विटामिन कहो, या खुराक कहो, मिलती है तो यह है विटामिन पूरा । आत्मा का विटामिन क्या है, आत्मा की खुराक क्या है, वह तो अभी बाप आ करके समझाते हैं ना क्योंकि उनकी खुराक वही जानता है और वही दे सकता है । उनकी खुराक और कोई आत्मा आत्मा को नहीं दे सकती है । मनुष्य मनुष्य को एक्यूरेट वह पूरी खुराक जो है तो पूरी खुराक वो कहते हैं मैं जानता हूं ना की आत्मा की खुराक क्या है, उसको चाहिए क्या । वह तो अभी मैं ही

समझाता हूं और मैं ही आ करके देता हूं । तो बाप कहते हैं मेरे से योग रखो, मेरे से संबंध रखो तो मेरे से तुमको वह मिलेगी, बल मिलेगा और उसी बल से फिर तुम ताकत वाले बनते जाएंगे और आत्मा ताकत वाली रही तो फिर शरीर, फिर सब रुष्ट पुष्ट । आत्मा रुष्ट पुष्ट तो शरीर भी रुष्ट पुष्ट सब रुष्ट पुष्ट मिलेगी यानी सब तंदुरुस्त और मन दुरुस्त । अभी तो देखो सब मन भी दुरुस्त नहीं, तन भी दुरुस्त नहीं, कुछ दुरुस्त नहीं है, पीछे फिर दुरुस्त सब मिलेगा । तो यह सभी चीजें हैं जिसको अच्छी तरह से अपने में समझ करके और बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने का पूरा पूरा ख्याल रखना है । उसमें भी यह जो टाइम है आप लोगों का ये एक घंटा सारे दिन का यह खुराक समझो । जैसे खाना जरूरी है ना, आप अगर दो-चार दिन खाना ना खाओ तो क्या हो जाएगा, कमजोर पड़ जाएंगे ना तो जैसे खाना जरूरी है शरीर के लिए वैसे ही यह खाना । तो यह सुबह का ज्ञान स्नान एक बार दिन में जरूर होना चाहिए, कम से कम तो एक बार जरूर । दो बार हो तो बहुत अच्छा ही है परंतु हां बिचारे धंधे धोरी वाले, कई काम वाले हैं तो उनको थोड़ा हल्का छोड़ा जाता है परंतु एक बार तो जरूर, उसमें भी सुबह का टाइम ये ऐसा है जिसमें कोई बिजी होने का कारण नहीं है । बहुत थोड़े ऐसे होंगे जो मुश्किल से सवेर जाते होंगे कहां सर्विस पर । कोई-कोई की है, कोई छह, साढ़े छः बजे जाना पड़ता है उनके लिए हो जाता है तो भी अगर कोई शौकीन है ना वह समझे हमारा क्लास

सवेल हो परंतु हां शायद आप लोग दूर हैं, कहां बस वस् में आने के कारण से कुछ होता होगा परंतु फिर भी जितना बन सके जितना टाइम है तो उतना टाइम का फायदा ले लेना चाहिए । बहुत जन्म सोए और खोए, अभी तो बाप आया है कुछ दिन तो थोड़े, उसके दिन जितने हैं उतने तो थोड़ा जाग और चुस्ती से अपना कमाई ले लियो न । वह सोते खोते तो आए बहुत जन्म जन्मांतर सोते खोते आए, अभी बाप कहते हैं अभी मैं आया हूँ तो भी सोते खोते रहेंगे तो काम कैसे बनेगा । मैं कोई बहुत समय थोड़ी बैठा हूं मैं चला जाऊंगा । मैं अपना अभी ऐसा नहीं है कि अभी बाप आया है बैठा ही रहेगा, हमारा करता रहेगा, भले अभी हमने नहीं किया कभी करेंगे । नहीं, उनका चांस बहुत थोड़ा है इसीलिए जैसे सीजन होती है ना कमाई की, कमाई कोई सीजन पर होती है तो सीजन के तीन मास कमाई होती है, फिर हां हमको नौ मास बैठकर के खाना है तो फिर तीन मास में वह समझेंगे बारह मास का स्टॉक हमको जमा करना है ना फिर तो हमको खाना ही है उसमें तो यह भी सीजन की कमाई है । यह अभी सीजन में कमाया, कमाया फिर तो हमको खाना ही है तो अगर अभी नहीं कमाई की तो फिर खाएंगे कहां से । फिर खाएंगे नहीं, तो फिर यह सीजन की कमाई है ना इसलिए अपने सीजन को अच्छी तरह से समझते और पुरुषार्थ रखते चलो तो अपना सौभाग्य ऊंचा बनाओ । हम तो आपके प्रति शुभचिंतक ही रहेंगे ना की कमाई करे, बहुत कमाई करे, बहुत सहूकार बने, बैंगलोर वाले बहुत साहूकार बने ।

बेंगलुरु वाले पता नहीं क्यों साहूकार नहीं बनते हैं । साहूकार समझते हो ना? सब कुछ प्राप्त, सच्ची कमाई की सच्ची साहूकारी, जिसमें सब आता है फिर संपत्ति भी आ जाती है, सब प्राप्त होता है ना सदा सुख मिल जाता है । तो क्यों नहीं हम बाप से ऐसी प्राप्ति के लिए अपना पूरा बल लगाएं । इसीलिए थको मत, चलते-चलते थको मत, आएंगे विघ्न आएंगे, कभी कभी सुस्तीपन आएगा, कभी कभी कई गफलतें में भी रहेंगी परंतु नहीं, खबरदार रहना है ना । अब का टोटा बहुत टोटा इसीलिए संभलते रहो । अच्छा आज कुछ लोग भी हैं इसीलिए उनको भी टाइम देना है । तो इन सब बातों को अच्छी तरह से समझते अपने पुरुषार्थ को आगे रखो । बाप आया है और बाप से पुरा ना ले तो फिर बाकी क्या किया, तो कुछ भी नहीं किया समझो । यह जन्म खोया ना बाप से लेने का तो मानो सभी जन्म वैसे तो खोए हुए हैं परंतु बाकी सदा के लिए खो गए । अभी फिर भी चांस है ना, बाप कहते हैं यही तो चांस है अभी तो उसी एक ही जन्म का तो अपना चांस बना लो ना, उसमें देखो तुम्हारी प्रालब्ध का सारा चांस है । भविष्य अनेक जन्मों की प्रालब्ध इसी से तो बनती है ना । इस जन्म के लिए कहा हुआ है दुर्लभ है, कहते हैं ना मनुष्य जन्म दुर्लभ । मनुष्य जन्म तो बहुत हैं लेकिन बहुत जन्मों में भी कौन-सा दुर्लभ क्यों कहा हुआ है यह जन्म क्योंकि इस जन्म में हम अपने भविष्य अनेक जन्मों का ऊँच बनाते हैं, पिछले भी जन्मों का जो बुरा किया है उस बिगड़ी को भी अभी संवारते हैं । तो हमारे पिछले बिगड़े हुए

जन्मों का भी अभी संवारने का चांस है, आगे भविष्य ऊँच जन्मों के बनाने का भी अभी चांस है इसीलिए मानो सभी जन्मों का आधार इसी एक जन्म के के ऊपर है तो क्यों नहीं हम अपने इस एक जन्म को ठीक कर देवें । इसको ठीक करना माना हमारे सभी जन्मों का ठीक हो जाने का चांस है परंतु ऐसा जब कोई करें, इतना पुरुषार्थ रखें । तो ऐसे पुरुषार्थ को अच्छी तरह से अपने में लगाते और करते रहो । (अच्छा, किसको बैठना है?) तो हमको तो बाप देखो दोनों के मालिक बनाते हैं और बाप एक का मालिक, ब्रह्मांड का । विश्व का तो बनता ही नहीं है इसलिए कहते हैं देखो तुम मेरे से भी ऊँचे, देखो मैं तुमको इतना ऊंचा बनाता हूं कि तुम मेरे से भी ऊंचे बन जाते हो, तुम दो के मालिक मैं एक का । मैं खाली निरंकारी दुनिया का और फिर तुम यहां विश्व का भी मालिक तो यह सभी चीजें बैठकर के बाप समझाते हैं कि बच्चों को मैं कितना ऊँच बनाता हूं तो इतना नशा रहना चाहिए ना । यह खुशी है अंदर की, यह अंदर की खुशी रखनी चाहिए उस खुशी से अपनी एक्टिविटी रॉयल रखनी चाहिए क्योंकि अपने खानदान और अपने कुल की रॉयल्टी का अभी मालूम है ना तो यह सभी अपना कुल और खानदान की रॉयल्टी बुद्धि में होनी चाहिए अच्छी तरह से, तब फिर एक्टिविटी एक्शंस रॉयल रहेंगे । रॉयल मनोर पवित्र, पवित्रता ही तो ऊंच रॉयलिटी है ना । वह देवताएं देखो रॉयल है तभी तो सब उनको नमन करते हैं ना । भले कितना डॉक्टर, इंजीनियर, बैरिस्टर बड़े-बड़े हो परंतु एक बार उसके आगे तो

फिर भी नमन करते हैं, उसकी माना है कि वह रॉयलिटी, उस रॉयल्टी से बड़ी है इसीलिए देखो इनके स्टेच्यूज अथवा इनके जो कुछ चित्र हैं वो मंदिरों में रहते हैं और पूजे जाते हैं और दूसरे जो बड़े-बड़े, बतलाया था ना उस दिन दूसरे जो बड़े मिलते हैं उनके स्टेच्यूज बाहर खड़े करते हैं और इनके मंदिर बनते हैं, उनके बाहर रखते हैं, भले बड़े बड़े आदमी हो गए फलाना फलाना इतने मर्तबे वाले ये वो परंतु उनके स्टेच्यूज बाहर रहते हैं, यह मंदिर बनते हैं इनकी पूजा होती है तो फर्क है ना उस मर्तबा में इस मर्तबा में । इस मर्तबे की ज्यादा सेवा इसको प्योरिटी के कारण । भले किंग एंड क्वीन यह भी है परंतु वह किंग क्वीन देखो है ना एलिजाबेथ या वो अपनी कौन सी क्वीन हो गई है विक्टोरिया, देखो विक्टोरिया क्वीन के वो तो बाहर रखते हैं कोई मंदिरों में थोड़ी पूजे जाते हैं और यह लक्ष्मी क्वीन और श्री नारायण इनके देखो मंदिर हैं न । क्यों हैं क्योंकि उनके अंदर प्योरिटी थी उनमें सिर्फ वह किंगडम पावर रही लेकिन प्योरिटी नहीं । अभी भी देखो एलिजाबेथ है तो पॉपकॉर्न नमन करेगी, करेंगे ना? भाई जीते जागते भी वह क्वीन है लेकिन पोप के आगे झुकेगी क्यों झुकेंगी क्योंकि वह प्योरिटी है तो प्योरिटी को अभी भी, जीते भी मान करते हैं ना । तो देखो क्वीन को भी झुकना पड़ेगा तो उसका मतलब है मनुष्य तो वह भी है, नहीं तो क्वीन है, अभी अथॉरिटी है दुनिया के अपने राज्य में परंतु फिर भी उसको ब्लेसिंग्स लेने के लिए उनको नमन करना पड़ेगा । तो क्यों पोप को नमन करती है? उसने क्या

अधिक है? यह अधिक है कि प्योरिटी है । तो प्योरिटी की इज्जत है ना, मान है तो इस प्योरिटी को लेना चाहिए इसीलिए बाप हमको डबल प्योरिटी रिलीजो पॉलीटिकल दोनों पावर्स दे रहे हैं तो यह दोनों पावर्स को लेकर करके बाप से अपना अधिकार पाना चाहिए । तो रिलीजो पॉलीटिकल दोनों पावर अभी बाप देते हैं इसीलिए देखो देवताओं को दोनों पावर की निशानी दिखाते हैं । लक्ष्मी नारायण को देखो तो टाज भी है किंगडम की निशानी और लाइट का भी है इसको कहा जाता है डबल क्राउन किंगडम, रिलीज ओं पॉलीटिकल दोनों पावर तो यह अभी बाप हमको दोनों पावर का यह देता है । तो इतना पाने के लिए उठाना चाहिए । शायद उठा नहीं सकते हो, बहुत मिला है ना और ऐसे ही मिला है ना बहुत सहज तो बहुत कोई चीज ऐसी मिल जाएगा तो उसका कदर कम हो जाता है तो शायद और अच्छी ऐसे-ऐसे होकर के मिले तो शायद कद्र और बढे । नहीं, उठाओ अच्छी तरह से, उनके लेने के लिए अपना दिमाग और जो कुछ है वह अच्छी तरह से दो और प्रैक्टिकल में लाओ । अच्छा, बाबा खातिरी तो बहुत करता है लेकिन बच्चे अपनी खातिरी अपने आप करने में पता नहीं ढीले क्यों रहते हैं । बाबा कहते हैं कि बच्चे बेंगलुरु वालों की खातिरी करो । बाबा ने फल दिया है भेजे हैं परंतु बच्चे तो अभी पूरे पूरे सच्चे फल बनते नहीं हैं मतलब सच्चा फल माना कौन सा है? यह फल देखो यह फल है ना, जो अभी पुरुषार्थ करते हैं उसका फल तो सच्चे हैं ना ये, तो अभी ऐसा सच्चा बनना इसके लिए अपना पूरा पुरुषार्थ

करना है । तो बाप से ऐसी प्राप्ति के लिए पूरा पूरा पुरुषार्थ रखो । अच्छा, यह किसका है मास्टर? इनका है? अच्छा, आइए, आते जाइए, आते जाइए, वाह! करुणा । करुणा तो, नाम ही है करुणा । अच्छा है यह बच्चा, सर्विस का शौक है इसको यह किसका बच्चा है?

050. भक्ति और ज्ञान

ओम शांति ।

भक्ति और ज्ञान, दो शब्द तो सुने होंगे। इनको भी यथार्थ समझना है। भगत तो हम सब हैं ही, किसके ? भगवान के । भगत कहा ही उसको जाता है जो हम याद करते हैं भगवान को अथवा परमात्मा को, परमपिता को । तो जो याद करते हैं तो याद करने वाले हो गए भगत और जिसको याद करते हैं वह है भगवान, परमपिता परमात्मा। अभी इसमें एक बात समझने की है फिर जो कहा जाता है भक्ति और ज्ञान तो उसका फर्क क्या है। ज्ञान का मतलब है कॉमन तौर में ज्ञान शब्द का अर्थ है समझ, तो समझ बहुत प्रकार की है जैसे डॉक्टरी नॉलेज, डॉक्टरी की समझ है यानी शरीर की, जिस्म की, इसको कैसे बनाना है, कहां से बिगड़ता है, क्या करना है यह है डॉक्टरी ज्ञान और जैसे बैरिस्टरी नॉलेज को बैरिस्टरी ज्ञान कहेंगे, भाई लॉ पॉइंट्स को जानता है, किसको फांसी से कैसे उतारे, किसको फांसी कैसे चढ़ाएं। यह लॉ पॉइंट्स का नॉलेज, ज्ञान तो इसको कहेंगे भाई लॉ का ज्ञान यानी लॉ पॉइंट्स का ज्ञान । इसी तरह से जो जो चीज का जिसके पास नॉलेज है तो नॉलेज कहो या ज्ञान कहो परंतु जिसको जिस चीज का ज्ञान है उसको कहेंगे उसी चीज का ज्ञान, परंतु यह जो

मशहूर नाम है कि भाई ज्ञान बिना गति नहीं है तो उसका मतलब यह नहीं है कि डॉक्टरी के ज्ञान के बिना गति नहीं है या बैरिस्टरी के ज्ञान के बिना गति नहीं है। वह कौन सा ज्ञान है जिसके लिए गाते आते हैं कि ज्ञान के बिना गति नहीं है। वह ज्ञान उसी की समझ यानी उसी का नॉलेज तो परमात्मा क्या है, और हम जो याद करने वाले हैं वह कौन हैं और क्यों करते हैं उसको याद, उससे हमें क्या प्राप्त होना है, इन्हीं सब बातों की यथार्थ नॉलेज को फिर ज्ञान कहा जाता है, इस ज्ञान के बिना गति नहीं है । तो गति सद्गति का जो ज्ञान है ना, उसको ही कहा जाता है ज्ञान बिना गति नहीं है । तो वो जो ज्ञान है ना उसी का हमको यथार्थ नॉलेज चाहिए कि हम जिसको याद करते हैं वह लगता है क्या है हमारा । हमारा और उनका आपस में रिलेशन क्या है । हम क्यों उसको याद करते हैं । उससे हमें क्या मिलने का है । खाली याद ही करना है या याद से हमको कुछ प्राप्त होना है । जो प्राप्त होना है वह क्या प्राप्त होना है, उस प्राप्ति का भी तो हमको नॉलेज होना चाहिए ना । तो इन्हीं सभी बातों के नॉलेज को ही ज्ञान कहा जाता है । तो यह ज्ञान सहित भक्ति हो गई तो इसको कहा जाएगा यथार्थ भक्ति । ये तो गीता में भी है वर्शंस भगवान के कि जो मुझे यथार्थ रीति से जानते हैं अथवा जो मुझे यथार्थ रीती से जान करके और मुझे याद रखते हैं, उनको मैं यथार्थ प्राप्त होता हूं । तो इसको, ये ज्ञान सहित भक्ति को ज्ञान कहेंगे। वैसे ऐसे भक्ति तो बहुत हैं जिसको जो आया, जिसको जैसे आया,

वह वैसी मानता को मानते चले आए हैं तो उसको कहा जाएगा अयथार्थ भक्ति, यथार्थ भक्ति को ज्ञान कहेंगे। अयथार्थ भक्ति को अयथार्थ भक्ति कहेंगे यानी अंधविश्वास में यानी जहां विश्वास हो जिसमें विश्वास हो तेरा उसको ही परमात्मा मान या जिसमें तुम्हारा प्रेम हो । ऐसे कई गुरु भी हैं जो ऐसे मंत्र भी दे देंगे या कहेंगे जिसमें तुम्हारा प्रेम है, जैसे तुम्हारा बच्चे में प्रेम है ना तू उसको भगवान समझ, तुम्हारा इसमें प्रेम है ना इस मूर्ति में तुम इसको भगवान समझ, जिसमें तुम्हारा प्रेम है वह तेरा भगवान, परंतु नहीं इधर परमात्मा कहते हैं कि मुझे यथार्थ रीति से जान करके तू मेरे से प्रेम लगा। ऐसे नहीं जिसके साथ तेरा प्रेम है वह तेरा भगवान है, नहीं मैं जो हूं, जैसा हूं मुझे यथार्थ रीति से जान करके तू मेरे से प्रेम अथवा मुझे याद कर, तब मेरे द्वारा तुमको बल मिलेगा, शक्ति मिलेगी बाकी ऐसे नहीं कि तू किसी को भी याद करो तो तुमको शक्ति मिलेगी, नहीं शक्ति मिलेगी मेरे को याद करने से परंतु मेरे को जान करके, ऐसे नहीं किसी को भी समझ भगवान, यह पत्थर रखा है इसको भी भगवान समझे, नहीं। भगवान कहते हैं यथार्थ मैं क्या हूं, जो हूं जैसा हूं, वो भी जानना है इसीलिए तो परमात्मा ने अर्जुन को भी कहा ना, मेरे को यथार्थ रीती से समझ तो अपना बैठ करके के परिचय दिया न, नहीं तो अगर कह देते तू जिसको भी समझ, उसको समझ करके तू मेरे को ही समझ, सब यह मेरे ही हैं, तू किसी को भी याद कर, नहीं, उसको अपना परिचय देना पड़ा न, मैं क्या हूं,

कौन हूं, बैठकर समझाया ना, तू क्या है, कौन है, तू आत्मा है, तो उनको अपना परिचय और परमात्मा ने फिर अपना परिचय दोनों का दिया ना । अर्जुन को अपना भी दिया तू मेरी संतान, तुम क्या हो और मैं क्या हूं वह बैठ करके उनको समझाया और समझा करके फिर कहा अभी इसी समझ से, इसी ज्ञान से तू मुझे याद कर, तब तो कहा न मामेकम, फिर कहा ना मुझ एक को याद कर, "मनमनाभव", यह गीता के वर्शंस हैं। तो मनमनाभव अथवा मन को अथवा बुद्धि को मेरे में लगा और मुझ एक को "मामेकम" और मुझ एक को याद कर । तो ऐसे तो नहीं कहा ना कि तू किसी में भी मन लगा, कहा मुझमें और उसको अपना बैठकर के परिचय दिया, समझाया, तो यह समझने की बात है ना कुछ। समझाने के लिए ही तो परमात्मा को आना पड़ा और उसको बैठ के समझाना पड़ा। वैसे तो अर्जुन बड़ा विद्वान था, बड़े वेद शास्त्र ग्रंथ आदि पढ़े हुए थे परंतु उसको कहा ना यह सब तू भूल । अब मैं जो यथार्थ नॉलेज समझा रहा हूं ना, उसी बातों को समझ करके तू मुझे जान करके अपने को भी रियलाइज कर कि तू कौन है, मैं कौन हूं तेरा और मेरा रिलेशन क्या है, इन्हीं सभी बातों को समझ कर के अभी प्रैक्टिकल मेरे साथ रिलेशन में आ। ऐसे नहीं है कि तू कोई भी, किसी को भी समझे कि यह परमात्मा है या यह सब रूप मेरे हैं। नहीं, मेरा अपना रूप है, मेरा अपना निवास स्थान है, मेरा अपना जो कुछ क्वालीफिकेशंस मेरी है, वह मेरी यथार्थ बातों को तू समझ । ऐसा नहीं है सब मैं हूं, फिर

तो चोर भी मैं हूं, डाकू भी मैं हूं, खूनी भी मैं हूं, सब मैं हूं तो उसकी माना चोरी भी मैं करता हूं, खून भी मैं करता हूं, सब मैं करता हूं, तो ऐसी तो बात ही नहीं है ना। सबमें हूं, फिर सब कुछ करता कराता मैं हूं तो फिर यह काम भी मैं करता कराता हूं, फिर बुरा भी मैं कराता हूं तो अच्छा भी मैं कराता हूं तो फिर तो किसी के कर्म की कोई रिस्पांसिबिलिटी नहीं रही ना, फिर तो अच्छा बुरा कर्म का कुछ रहा ही नहीं। तो ऐसी बात नहीं है कि यह सब कुछ परमात्मा ही कराता है या यह सब कुछ परमात्मा ही है । अगर यह मानता रखी जाए ना तो सारी दुनिया में इतना नाश के लिए यह सब, इतना खून खराबा, आज इतनी सब यह बातें हैं तो यह सब कुछ परमात्मा ही कराता है? तो कराता वह है तो फिर भोगते हम क्यों हैं, फिर भोगे भी वह न। जो करे सो पाए न, करे वो कराए वो और पाएं हम, काहे के लिए ? यह तो जुल्म की बात हो जाए। नहीं, ऐसी बात नहीं है। हम करते हैं हम पाते हैं, वह हमसे यह नहीं कराता है । तो यह समझना है कि वह हमसे क्या कराता है। इसी के लिए उसने कहा है कि मैं आता हूं । आ करके मैं शिक्षा देता हूं । वह शिक्षा देकर के जो मैंने बैठकर कर्म कराया है ना, वह मैंने कराया है बस, यह जो तुम कर रहे हो यह मेरी शिक्षा से या मेरे डायरेक्शंस पर या मेरी मत पर या मैं नहीं कराता हूं, यह तो तू आत्मा अपनी रिस्पांसिबल है तभी तो गीता में भी कहा ना जीवात्मा अपना शत्रु, अपना मित्र है, ऐसे नहीं कहा है कि जीवात्मा का शत्रु और मित्र मैं हूं, ऐसे तो नहीं कहा

ना , अपना मित्र अपना शत्रु है क्योंकि तुम जो करते हो उसके रिस्पॉन्सिबल तुम हो, यह तुम कर रहे हो, यह मैं नहीं कराता हूं तुमसे, यह तू कर रही है, हे आत्मा, आत्मा से बात करता है ना, देखो यह आत्मा से हम बात कर रहे हैं, यह आत्मा ऑर्गन से सुन रही है । कानों से सुनती कौन है? आत्मा, अभी आत्मा निकल जाती है शरीर से फिर तो शरीर पड़ा है ना , बॉडी पड़ी है तो आत्मा नहीं है, फिर देखो आत्मा नहीं है फिर सुनते ही नहीं है, अभी आत्मा है तो देखो यह सुनती है, यह सुनती कौन है , आत्मा । अभी यह सुन रही है कि इसको बाप सुनाता है की हे आत्मा तू अपना शत्रु अपना मित्र तू है । जो तू करेंगे तो तू उसका रिस्पॉन्सिबल हो, यह मैं नहीं कराता हूं अभी तू कोई बुरा करता हो या अच्छा भी करता हो वो तेरा कर्म का फल बनेगा ना, इसीलिए बाप कहते हैं मैं तुमको आता हूं शिक्षा देने के लिए, बैठकर समझाता हूं कि तू कर्म अच्छे कैसे कर और अच्छा कर्म कौन सा है, वह बैठ करके समझाता हूं, उसी को ही यथार्थ जानने को ही ज्ञान कहा जाता है । इसीलिए कहते हैं मुझे आना पड़ता है, उन यथार्थ बातों को समझाने के लिए इसीलिए ही मुझे नॉलेजफुल, ओशियन ऑफ नॉलेज, पतित पावन ये सब, कहते हो ना। महिमा करते हो कि पतित पावन करने वाला माना पतितों को पावन बनाने वाला, तो पतित बने हो ना, मैंने थोड़ी ही बनाया है। मैंने बनाया है तो फिर मैं पावन बनाने वाला कैसे हुआ? फिर तो कहो पतित करने वाला, फिर तो ऐसे कहो ना। नहीं, कहते हो पतितो से

पावन करने वाला तो मैं पावन बनाने वाला हूं, ना कि मैं पतित बनाने वाला हूं, नहीं। तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए कैसे बनाने वाला हूं वह आ करके शिक्षा देता हूं। उसी शिक्षा को फिर जो धारण करके चलते हैं, वह पावन बनते हैं। तो मेरी शिक्षा मैं आकर के देता हूं जो पावन बनाने की यथार्थ नॉलेज है ना वह मैं देता हूं। पावन बनाने की पवित्र बनाने की यथार्थ नॉलेज और कोई मनुष्य नहीं दे सकता है इसीलिए मुझे गाते हो कि तू ही पतितो को पावन करने वाला है क्योंकि पावन का नॉलेज तेरे पास है । हम कैसे पावन बने उसका नॉलेज तेरे पास है इसीलिए कहते हैं तू ओशियन ऑफ नॉलेज आ अभी, ज्ञान का सागर आ, आ करके ये नॉलेज दे, तभी मैंनेभी कहा है कि यदा यदा ही धर्मस्य जब जब अधर्म का टाइम आता है, मेरा रेस्पोंड है मैने कहा है , प्रॉमिस है मेरा और मैंने रिस्पॉन्ड किया है कि यदा यदा ही जब जब अधर्म होता है मैं तब तब आता हूं तो अभी यह टाइम है वही, इसीलिए बाप कहते हैं मैं अभी आकर के विद्यालय अर्थात स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी जो कुछ कहो वो खोलता हूं और उसमें बैठ करके मैं समझाता हूं । तो एक अर्जुन की तो बात नहीं है ना, इसमें है जो औटे सो अर्जुन, नर नारी बहुत हैं जिन्हों को में आ करके मैं सुनाता हूं और वह सुनकर के इस नॉलेज को धारण कर करके और फिर यथार्थ नॉलेज से अपनी यथार्थ प्रालब्ध पाते हैं, उसको कहा जाएगा ज्ञान। बाकी ज्ञान कोई यह नहीं कि वेद, शास्त्र, ग्रंथ पढ़ना या पढ़ाना उसको ज्ञान कहना या पठन-पाठन, कई समझते

हैं पूजन आदि करना यह शायद भक्ति है, नहीं । याद तो करते हैं ऐसे तो हम हैं ही भगत । अभी भी देखो बाप कहते हैं तू तो है ना, तुम तो हां मेरे द्वारा लेने वाले हो न, परंतु लेना कैसे हैं, क्या लेना है, जिनसे लेना है उनका भी परिचय होना चाहिए तो इन सब बातों को यथार्थ समझना इन्हीं का नाम ज्ञान है। तो यह ज्ञान यथार्थ भक्ति का भी ज्ञान मैं आकर के देता हूं कि तू मुझे कैसे याद कर इसीलिए कहा है मैं अपनी याद खुद आ करके सिखाता हूं इसीलिए योग सिखाना योगेश्वर परमात्मा का काम है इसीलिए उसको कहते हैं योगेश्वर यानी कि योग सिखाने वाला भी स्वयं ईश्वर ही है । जिससे योग लगाना है वही सिखाता है, ऐसे नहीं है लगाना उससे है सिखाएंगे दूसरे, नहीं, मनुष्य नहीं सिखा सकते। मनुष्य मनुष्य को परमात्मा के साथ कैसे योग लगाया जाए वह नहीं सिखा सकते इसलिए परमात्मा कहे इसी योग और ज्ञान के लिए मुझे आना पड़ता है, तभी तो वो गीता के भगवान ने बैठ करके यह योग और ज्ञान यह नॉलेज अर्जुन के सामने रखी है, वह तो एक स्टोरी रूप में शास्त्र बनाया है तो एक अर्जुन एक भगवान का नाम रख करके बना दिया है, नहीं तो है तो उसने बैठकर के समझाया है ये सब। तो हमको अभी पढ़ाने वाला कौन है, हम भी सब स्टूडेंट्स है ना। अब यह नॉलेज कौन दे रहा है? वह दे रहा है जिसको नॉलेज फुल सुप्रीम सोल कहा जाता है। अभी वह बैठ करके समझा रहे हैं, यह नॉलेज यथार्थ मैं क्या हूं, कौन सी चीज हूं और तू क्या है और मुझे कैसे याद करो और याद करो तो

उससे तुमको क्या बल मिलेगा, तुम्हारे पास जो है ना बहुत जन्मों के किए हुए उसको जलाने की शक्ति मिलेगी, इसको कहा है योगाग्नि, गीता में भी है इस योग से, ये योग अग्नि का काम करेगा जिससे तुम्हारे पाप दग्ध होंगे, नाश होंगे तो इसको कहा है यह योग अग्नि तो इसीलिए कहा है मुझे याद करो और फिर तुम्हारे जो कर्म हैं उनको भी श्रेष्ठ करो तो फिर उससे तुम्हारा प्रालब्ध आगे के लिए अच्छी बनती चलेगी । तो उससे आगे के लिए भी अच्छी बनेगी और जो किया हुआ है उल्टा खाता उसको भी इस योग से, वह अग्नि का काम करेगी यानी भस्म होंगे। इससे तुम स्वच्छ बनते जाएंगे और फिर तुम स्वच्छ जेनरेशंस को प्राप्त करते रहेंगे । तो यह है यथार्थ नॉलेज और परमात्मा अपने साथ प्रैक्टिकल रिलेशन अथवा संबंध आ करके जुटवाते हैं और वह प्रैक्टिकल लाइफ में अपने साथ संबंध जुटवाके और कहते हैं मेरे बच्चे हो ना, कहते हो ना पिता हो तुम, तो मैं पिता हूं तुम पुत्र हो तो फिर मेरे साथ पिता और पुत्र का पूरा रिलेशन रखकर के और मेरे से जो तुमको हक मिलना है उसका पूरा अपना फॉलो करो अर्थात जो मैं कहता हूं उसी प्रमाण चल करके अपने को पवित्र बना करके मेरे से वह अपना बर्थ राइट ले ले, बर्थ राइट कहो या वर्सा कहो । तो बाप बैठ करके डायरेक्ट समझाते हैं ना, तो यह सभी चीजें समझने की है । बाकी जो मनुष्य के द्वारा हम सुनते आए न वह तो सब बातें बाप कहते हैं तभी तो अर्जुन को भी कहा ना यह मामा काका चाचा बाबा... उसने ऐसा नहीं कहा

जिसमें तुम्हारा प्रेम है उसमें मन लगा, उसने कहा मेरे में लगा, कहा है मामेकम, मुझ एक में, उसको तो कहा और सब भुला, कहा ना मामा काका बाबा चाचा अथवा गुरु जिन्होंने तुमको पढ़ाया, सिखाया सबका नाम लेकर के कहा ना अभी उन सबको भूलो क्योंकि अभी मैं गुरुओं का गुरु मिला हूं ना तुमको इसीलिए कहा कि उनकी भी गति सद्‌गति करने वाला मैं हूं इसीलिए मैं सबका गुरु हूं। गुरुओं का भी उद्धार करने वाला, साधुओं का भी उद्धार करने वाला, सब की गति सद्‌गति करने वाला एक ही मैं सद्‌गुरु हूं। सतगुरु एक ही है इसलिए उसको कहते हैं गॉड इस ट्रुथ। क्यों ट्रुथ है क्योंकि वही सच्ची बात बतलाता है बाकी सब जो कुछ सुनाने वाले हैं ना जरूर है कि वह अनट्रुथ । उसके ट्रुथ के कंट्रास्ट में क्या हो गया, झूठ कहेंगे ना, सच और झूठ तो इसीलिए बाप कहते हैं ना कि सच बात यथार्थ क्या है, वह जानता ही मैं हूं इसीलिए यथार्थ नॉलेज मैं ही आ करके सुनाता हूं इसलिए तो तुम गाते हो कि गॉड इज ट्रुथ। क्यों कहते हो ट्रुथ का मतलब ही क्या है, ऐसे तो कोई कहे कि नहीं वह अजर अमर है, कई इस ट्रुथ का ये अर्थ निकालते हैं कि वह अजर अमर है यानी काटे काटा नहीं जा सकता, ऐसे तो आत्मा भी अजर अमर है, उसको भी काटे काटा नहीं जा सकता है, जलाए जल नहीं सकती है इस तरह तो आत्मां हम भी ट्रुथ हैं, वह तो बात ही नहीं परंतु उसको खास क्यों कहते हो गॉड इज ट्रुथ । ट्रुथ उसी नॉलेज के भेंट में है। ट्रुथ बात तो नॉलेज से लगती है कि सत्यता को तुम जानते हो इसीलिए सत्यता

तुम बता सकते हो जो जानेगा वही बताएगा न। हम इन्हीं बातों की जानकारी सत्यता की जानते नहीं है कि व्हाट एम आई और तुम कौन हो, हम कौन हैं और हमारा यह सारे जन्मों का चक्कर कैसे चलता है इन सभी बातों का जो यथार्थ नॉलेज है वह हम नहीं जानते, तुम जानते हो इसीलिए कहते हो गॉड इज ट्रुथ बाकी ट्रुथ का अर्थ इससे नहीं लगता है कि वह अमर अजर है वैसे तो आत्मा भी अमर अजर है । वह भी तो काटे काटी नहीं जा सकती, जलाए जल नहीं सकती, एक शरीर लेती है फिर लेती है आत्मा थोड़े ही जलती है, शरीर जलाते हो तो आत्मा थोड़ी ही जलती है। आत्मा तो अपने कर्म के हिसाब से जा करके दूसरा शरीर लेती है तो वैसे तो वह भी अमर अजर है यानी उनको भी कोई काटे काटा नहीं जा सकता तो उसकी भेंट में तो फिर आत्मा भी ट्रुथ, फिर खाली गॉड ही ट्रुथ क्यों परंतु खास गॉड के लिए कहते हैं तो उसका संबंध नॉलेज के साथ है कि यथार्थ जानकारी जो है ना, वह जानकारी वह जानता है, कौन सी जानकारी? उसको कहते हैं ना जानी जाननहार, परमात्मा के लिए कहते हैं कि जानी जाननहार, नॉलेज फुल तो इन्हीं सभी बातों के लिए है कि कौन सी जानी जाननहार, क्या जानता है, जाननहार का भी बहुत से अर्थ नहीं समझते हैं कई ऐसे समझते हैं कि वह जानते हैं इसके अंदर में क्या है, वो परमात्मा सबके अंदर का जानता है कि भाई इसके अंदर में क्या अभी विचार चल रहे हैं, इस चोर के अंदर क्या कोई चोरी करने का ख्याल है, उस खूनी को खून करने का

ख्याल है, कोई को अच्छा विचार है कोई को बुरा विचार है वो रीड कर लेता है, अरे वह तो थॉट रीडर्स का काम है। वह जाननहार का मतलब यह नहीं है कि खाली थॉट बैठकर के रीड करना, वह बातें नहीं है। उसके रीड करने से मतलब ही क्या है । अच्छा अभी किसी के अंदर बुरा ख्याल चल रहा है, उसको कोई रीड भी करें तो चलो परमात्मा उसको जाना, फिर क्या हुआ उसमें ऐसा थोड़ी है, फिर भी जाकर के चोर तो चोरी कर लेता है उसको जाना तो क्या हुआ, परंतु नहीं हमारी सारी कर्म गति को वह जानता है। जाननहार का मतलब ही है कि वह हमारी जो कुछ कर्म की गति है, उन सभी बातों को जानता है कि यह कर्मों से कैसे गिरा है, कैसे फिर यह चढ़ सकता है, इन सभी बातों को वह जानता है इसीलिए जानने वाला फिर आता है और आ करके हमको चढ़ाता है। हमारी करम गति कहां से गिरी है, क्यों गिरे हैं, क्या कारण हुआ, कैसे गिरे उन सभी बातों को वह जानता है और आकर के समझाते हैं कि अरे तुम्हारा संग जाकर के माया से हुआ न, पांच विकारों से इसीलिए तुम गिरे हो । अभी इसे समझो और इन विकारों का संग छोड़ो तो फिर तुम्हारे कर्म श्रेष्ठ हो जाएंगे और तुम फिर चढ़ जाएंगे और इसी चढ़ने का ही अभी फिर बल भी मैं देता हूं क्योंकि मेरा पावर चाहिए ना तुमको इसीलिए कहते हैं मुझे याद करो तो मेरे से तुमको शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा इसीलिए ही मेरे साथ योग अथवा यह जो मैंने कहा है कि मुझे निरंतर याद रखो इसीलिए कि तुमको ताकत मिलेगी, शक्ति मिलेगी।

तो यह सभी चीजें समझने की है बाकी ऐसे नहीं कि वह थॉट खाली रीड करता है, थॉट रीडर ऐसे तो थॉट रीडर्स तो बहुत हैं जो थॉट रीड करना जानते हैं, वह भी एक विद्या है। उसे सीखते हैं और थॉट रीड करते हैं वो भी होते हैं परंतु नहीं, जानी जाननहार उसको इसी अर्थ में कहते हैं कि वह हमारे सारे कर्म गति को जानता है और हमारे कर्मों को चेंज कराता है अर्थात श्रेष्ठ बनाता है और बुरे कर्मों का नाश कराता है इसीलिए उनको कहा जाता है जाननहार। तो यह सभी चीजों को भी समझना है ना तो उनकी महिमा उनका कर्तव्य और वह कैसे कर्तव्य करता है तो इन सभी बातों को यथार्थ समझना इसी का नाम ज्ञान है। तो यह भी सभी बातों का नॉलेज होना चाहिए न। तो हम जिसको याद करते हैं तो याद करने का भी हमको ज्ञान होना चाहिए, बाकी ज्ञान कोई ऐसी चीज नहीं है बाकी जो कुछ हम करते आए ना वह अयथार्थ था इसीलिए कहते हैं वह अयथार्थ से तुमको जो पूर्ण फल मिलना चाहिए ना वह नहीं मिलता है अल्पकाल का । हां चलो तुमने उल्टा सीधा फिर भी भगवान को याद किया है ना तो थोड़ा बहुत उसका तुमको मिल जाता है परंतु मेरी यथार्थ जो प्राप्ति है ना वह नहीं है। वह तो जब मुझे यथार्थ जानेंगे तब मेरे द्वारा होगी बाकी यह तो तुम थोड़ा बहुत तुमको किसी ने कह दिया तू इसको ही भगवान समझ करके याद कर , यही तेरा भगवान है समझो, चलो तुमने उसको याद तो किया भगवान को उल्टा कि सीधा जान करके तुमने भगवान को ही याद रखा, चलो तुमको थोड़े टाइम का कुछ ना

कुछ मिल जाएगा । थोड़ा बहुत कुछ तो तुम पा लेंगे, बस ना, परंतु नहीं मेरे द्वारा जो तुमको सदा का सुख जिसमें कोई दुःख की बात ना हो, एवर हेल्दी, एवर वेल्थी, एवर हैप्पी यह है सदा का सुख। वो जो लाइफ है ना, उस लाइफ का तो फिर मेरे को यथार्थ जानने से और मेरे द्वारा यथार्थ प्राप्ति तब होगी, जब मुझे यथार्थ रीति से जान करके यथार्थ याद रखेंगे। तो अयथार्थ और यथार्थ का भी अर्थ समझना है ना कि पूरी तरह से और वह न पूरी तरह से यानी जैसे आया वैसे, तो जैसे आया वैसे वह तो चलाते आए हैं ना उससे तो जो पाते आए हो वो देख रहे हो यहां। कोई मर्तबा पाते हो, कोई धनवान हो, किसी को थोड़ा बहुत सुख है, कोई बिचारे कैसे हैं तो यह सब क्या है यह थोड़े कर्मों का फल मिला है, वह फल खा रहे हो ना परंतु उस फल में पेट नहीं भरता है। वह खाते भी मनुष्य अशांत और दुःख में है ना, धन वालों से पूछो फिर भी दुखी हैं बेचारे । सब मर्तबे वालों से पूछो जितना बड़ा होना आज की दुनिया में उतना ही दुखी होता है, कहते हैं बड़ा होना तो बड़ा दुःख पाना क्योंकि आज की संसार है ही दुःख, अशांति की। तो दुःख अशांति की दुनिया में दुःख बड़ा होना तो बड़ा दुःख पाना। दुःख अशांति की दुनिया में धनवान होना और ही मुसीबतें उठाना इसलिए बाप कहते हैं यह यहां का सुख तो अल्पकाल के लिए है, इस सुख में सार नहीं है इसीलिए मैं तुमको वह संसार बना कर देता हूं जिसको हेवेन कहा जाता है इसीलिए मुझे कहते हैं हेवेनली गॉडफादर यानी हमारा जीवन हेवेनली बनाता है। हेवनली का

मतलब है सदा काल के सुख हों, बाकी हेवेन कोई और दुनिया नहीं है, ना कोई और चीज है। यही दुनिया है, हेवेन भी इधर ही थी हेल भी इधर ही थी लेकिन ऐसे नहीं कहेंगे अभी दोनों है, नहीं। अभी हेल है, जब हेवेन है तो हेल नहीं है, जब हेल है तो हेवेन नहीं है यह कंट्रास्ट समझना है। जैसे रात है तो अभी दिन नहीं है फिर दिन होगा तो रात नहीं, ऐसे नहीं दिन रात इकट्ठी होती है या सर्दी गर्मी होती है । कई ऐसे समझते हैं हेवेन भी इधर ही है हेल भी इधर ही है क्योंकि जो साहूकार है बड़े मजे में बैठे हैं, समझते हैं हेवेन में हैं परंतु पूछो उसको हेवेन में है, नहीं, वह भी दुःख अशांति में है इसीलिए यह संसार ही दुःख और अशांति का है। हेवेन, जिधर कोई भी दुःख ना हो, जब सुख है तो कोई दुःख नहीं, जब दुःख है तो कोई भी सुख नहीं तो अभी की दुनिया में सुख है ही नहीं वह जो सुख जिसको कहा जाता है । इसको कहेंगे अल्पकाल का, वह सदा काल के सुख की जो प्राप्ति है ना, उसको हेवेन कहेंगे फॉर जेनरेशंस में, शरीर छोड़ना, शरीर लेना, शरीर में रहना सदा का सुख। अभी तो देखो मरते हैं तो भी बिचारे दुखी हो करके, यहां से जाते हैं तो भी दूसरे भी रोते ही हैं। कहते भले हैं कि स्वर्गवासी हुआ, हेवेनली एबोड में गया, अरे भाई हेवेनली एबोड गया तो फिर काहे के लिए रोते हो और खुशी करनी चाहिए। अच्छा हुआ, हेवन में गया ना, नर्क से हेवेन में गया तो फिर रोने की क्या बात है । एक तरफ तो रोते हैं दूसरी तरफ कहते हैं हेवेनली अबोड में गया, देखो आश्चर्य की बात है ना। इसीलिए बाप

कहते हैं कि सच सच तो गया ही नहीं ना। रोते तो सच है ना क्योंकि गया नहीं है । हेवन तो अभी मैं बनता हूँ न, हेवन है ही कहां, वह तो अभी ही मैं बनाता हूं । तो हेवेनली एबोड में गया वह कोई दूसरी दुनिया थोड़े ही है पहले मैं हेवन बनाऊँ तो सही ना । जब मैं हेवन इस वर्ल्ड को बनाऊं तभी तो हेवेनली एबोड में जाए । पहले मैं अबोड बनाऊँ न हेवन का, दुनिया बनाऊँ न तो वह तो अभी आया हूं बनाने के लिए । जब बनाउंगा तो फिर तुम्हारे जेनरेशंस सदाकाल का, तुम्हारे जो पुनर्जन्म है न वह उसी में रहेगा । अभी है ही हेल तो तुम्हारा पुनर्जन्म कहां होगा, हेल में ही होगा, तो शरीर छोड़ेंगे कहां जाएंगे, फिर हेल में ही आएँगे और कहाँ जाएंगे इसीलिए बाप कहते हैं ऐसे नहीं कोई गए हैं, बहुत गए हैं, पहुंचे हुए हैं, वह कहते हैं नहीं वर्ल्ड तो यही है ना । वर्ल्ड इज वन, गॉड इज वन, क्रिएशन इज वन बाकी ऐसे नहीं है कि कोई बहुत दुनियाए हैं, नहीं दुनिया एक है मनुष्य की कॉरपोरियल, बाकी है सोल्स की इनकॉरपोरियल जहां से हम आत्माएं उतरती हैं तो वह तो साइलेंस वर्ल्ड, जहां आत्माओं का स्टॉक है फिर वहां से हम आते हैं हम नंबरवार, यह संख्या कहां से बढ़ती है । इतनी सोल्स कहां से आती हैं, कोई तो सोल्स का स्टॉक है, क्योंकि सोल्स तो इम्मोर्टल है न, तो इम्मोर्टल् सोल्स कहां से तो आती है ना, तो यह सभी इतनी संख्या कहां बढ़ती जा रही है, यह कहां से बढ़ती है इतनी सोल्स कहां से आती हैं तो यह भी सभी चीजों को समझना है । तो सोल्स वर्ल्ड, जिसको इनकॉरपोरियल वर्ल्ड कहा

जाता है दूसरी यह कॉरपोरियल इसीलिए बाप कहते हैं अभी बहुत हो गया यहां स्टॉक, नीचे इसीलिए यह लड़ना-झगड़ना दुःख-अशांति यह सब हो रहा है । फिर यहां संख्या कम करनी है फिर उधर स्टॉक भेजना है इसीलिए अभी कहते हैं यहां के स्टॉक को अभी कम करना है इसीलिए डिस्ट्रक्शन की तैयारियां हैं और कंस्ट्रक्शन । कंस्ट्रक्शन भी साथ चाहिए, क्योंकि यह अनादि है, ऐसे तो नहीं हो जाएगी तो डिस्ट्रक्शन के साथ कंस्ट्रक्शन भी चाहिए । तो पहले कंस्ट्रक्शन फिर डिस्ट्रक्शन, ऐसे नहीं डिस्ट्रक्शन करके फिर कंस्ट्रक्शन करेंगे, नहीं दोनों चाहिए, जिसको संगम कहो, कनफ्लुएंस पीरियड कही जाती है । तो इसीलिए कहता हूं अभी कर रहा हूं, कैसे यह प्योरिटी कंस्ट्रक्शन का अभी फाउंडेशन लगा रहा हूं और इधर यह डिस्ट्रक्शन की तैयारियां हैं तो यह कंस्ट्रक्शन मजबूत हो जाएगा तो डिस्ट्रक्शन काम अपना करेगा । अभी वह भी तैयारियां है, इधर भी तैयारियां हैं यह भी तैयार हो रहे हैं प्योरिटी का फाउंडेशन पड़ रहा है, यह भी मजबूत हो जाए अच्छी तरह से, इधर भी तैयारी है वह भी तैयारी हो रहे हैं । जब यह कंप्लीट तैयार हो जाएंगे तो डिस्ट्रक्शन होगा । इसीलिए कहते हैं यह दोनों का कनेक्शन है । वह गीता में भी है कि इसी ज्ञान यज्ञ से यह विनाश ज्वाला प्रज्वलित होती है जितना-जितना हम बनते जाएंगे प्योरिटी में तो उतना उतना वह विनाश ज्वाला प्रज्वलित हो करके अपना काम करेगी । तो यह सभी चीजें हैं जिसको अच्छी तरह से समझना है, यह अभी वही टाइम है जिसको कहा जाता है

महाभारी महाभारत समय । इसी टाइम पर ही परमात्मा ने कहा है कि यदा यदा ही वह अभी यदा यदा वाला टाइम आया है । तो अभी आया है वह अपना काम कर रहा है अब उससे क्या अपना लेना है, वो तो जो लेंगे, हम भी उनके पीछे लगे हैं । अभी ऑफर भी करते हैं कि आओ, अभी बाप से लो, रिलेशन जोड़ो । आपका भी पिता है ना? खाली हमारा थोड़ी ही है, सारी दुनिया का पिता है ना, वह कहते हैं ना गॉड इज वन, तो गॉड ही तो पिता है न, अभी वह पिता आया है । कहते हैं अभी मेरे से अपना जन्म सिद्ध अधिकार लो और जो लेंगे वो लेंगे और जो ना लेंगे तो फिर डिस्ट्रक्शन तैयार है । या उधर होना है या उधर होना है, अभी क्या करना है वह समझो । तो यह तो हर एक को अपना समझ करके बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाना है, अच्छा ।

मम्मा मुरली मधुबन

051. ब्राह्मणों का कर्तव्य

रिकॉर्ड :

इक बात बताएं तुम्हें... ये जोगन कब तेरी होगी.....

ये जो गीत में सुना कि यह योगिनी कब तेरी होगी, क्या अभी होगी या हो चुकी है, क्या कहेंगे आप? हो चुके हो उनके या अभी होंगे? हमारे आशुतोष? हो चुके हो? हो चुके, हां यही ठीक है कि होंगे नहीं अभी, हो चुके। हो चुकने में फिर प्राप्ति भी अधिक रहेगी । अभी होंगे तो प्राप्ति तो पीछे रह गई, और अगर होंगे, होंगे कहते स्वांस छूट जाए तो क्या होगा? होंगे होंगे, यह करेंगे, वह करेंगे, करेंगे, होंगे , तो स्वांस अगर छूट जाए तो रह जाएंगे, और अगर हो चुके तो हां, उसके ऊपर दाव लग चुका । तो बाप कहते हैं बच्चे अभी मेरे पर दाव तो जल्दी लगा दो । कोई स्वांस के ऊपर भरोसा तो नहीं ना, अभी आज दांव लगाया और समझो स्वांस निकल भी जाए ना तो दाव का मिल तो जाएगा ना, कितना फायदा हो गया । और अगर होंगे, करेंगे, यह होंगे करेंगे कहते कहते और स्वांस निकल जाए तो भरोसा नहीं है। सांस निकल गया तो रह जाएंगे ना तो फायदे की बात वह हुई ना की हो तो जाएं । हो तो क्या जाएं, बाप कहते हैं, देखो पुरुषार्थी तो हम भी हैं, ऐसे थोड़ी कहेंगे कि नहीं, परंतु उसके हो गए हैं ना। ऐसे तो

कह दिया हम उसके तो हो चुके हैं, अभी और किसी के थोड़ी ही हैं अभी उसके हैं , तो उसके तो हो चुके न बाकी उसका हो करके फिर पुरुषार्थ कर रहे हैं । उसका होने के बाद ऐसे नहीं पुरुषार्थ करना ही नहीं है, नहीं उनके बाद पुरुषार्थ करना है क्योंकि वही बाप फिर वही टीचर बनता है तो पहले बाप के तो बन जाए ना। बच्चे उनके प्रैक्टिकल हो करके पीछे फिर बाप बैठकर के बच्चों को अपनी नई राजधानी जो स्थापन कर रहा है स्वर्ग की उसमें ऊंच स्टेटस दिलाने के लिए पढ़ाता है कि हां बच्चे स्वर्ग में तो अधिकार कर दिया, मेरे हो चुके माना स्वर्ग के तो अधिकारी हो चुके, उसके ऊपर तो अपना हक लगाया, अभी उसमें फिर ऊंचा पद प्राप्त करो, उसके लिए फिर यह पढो तो इस पढ़ाई से फिर तुमको उसी नई दुनिया में भी स्वर्ग में भी ऊंचा पद मिलेगा क्योंकि वहां भी तो राजा प्रजा होगी ना स्वर्ग में भी ऐसे तो नहीं ना होगी, स्वर्ग में भी राजा प्रजा सब है तो कहते हैं कि फिर उसमें भी फिर तुमको ऊँच पद प्राप्त रहे उसके लिए फिर ये पढ़ाई पढ़ाता हूं । लेकिन मेरे तो बन जाओ यानी स्वर्ग के ऊपर अपना अधिकार तो लगा दो । इसीलिए कहते हैं मेरे तो जल्दी हो जाओ और उस होने में कोई ऐसी भी बात नहीं है कि क्या करना है, कैसे वैसे नहीं, कहते हैं बस जैसे कोई साहूकार गोद का बच्चा लेते हैं, किसी को बच्चा ना होवे तो किसी गरीब का बच्चा ले लेवे, गोद का बच्चा तो कोई साहूकार का बच्चा थोड़ी ही आ करके बच्चा बनेगा गोद का , जरूर गरीब का बच्चा ही आ करके गोद का बच्चा बनेगा,

हाँ कोई गरीब बच्चा बन सकता है बाकी ऐसे नहीं है कि कोई साहूकार का बच्चा किसी गरीब का जाके गोद का बच्चा बने, ऐसा नहीं है। तो हां, बाप कहते हैं अभी मैं तो शहं का शाह, मैं तो देने वाला दाता ही हूं, अभी मेरे गोद के बच्चे बनो, अडॉप्टेड चिल्ड्रन, तो अभी कहते हैं मेरे बनो, कैसे बनो वह बैठ करके बताते हैं। अभी कहते हैं मेरे बनो, बनो का मतलब ही है खाली शूद्रपन का जो है वह छोड़ करके अभी ब्राह्मण हो जाओ यानी पवित्रता का अपने में धारणा को ले आओ तो उसका मतलब हुआ हो जाओ कि बस, हमको अभी जैसे यह कहेंगे वैसे मैं करूंगा, वैसा हो करके चलूंगा, अभी उनके फरमान पर ही रहूंगा, बस यही तो संकल्प अथवा दृढ़ता अपने दिल के अंदर रख लो बाकी है कि वह जैसे डायरेक्शंस देते जाएं, चलाते जाएं उसमें तो चलते ही चलना है, वह तो अभी भी हम उनके डायरेक्शंस पर उनकी मत पर, उनकी राय पर कदम कदम चलाते रहते हैं परंतु उसके तो हो गए हैं ना, भाई उनके हैं तो हां उनके हैं वह तो हो जाओ । जो कहते हैं ना हो चुके हैं वह ठीक है परंतु हो चुके हैं सच क्या वह तो हर एक को अपने आप ही पता है । वह कहते हैं ना ब्राह्मणों का काम है पढ़ना पढ़ाना परंतु क्या पढ़ना क्या पढ़ाना, वह भी तो समझना है ना । वह तो जाकर के शास्त्र पढ़ते हैं और पढ़ाते हैं तो समझते हैं ब्राह्मणों का काम यह है, क्योंकि वो भक्ति मार्ग उन्होंने फिर ऐसा उठा दिया परंतु असल में बात यह है कि ब्राह्मणों को तो खुद परमात्मा ने बैठकर के पढ़ाया है । वह

जिस्मानी ब्राह्मण नहीं, सच्चे ब्राह्मण तो यह है ना मुख वंशावली तो ब्राह्मणों को देखो हमको खुद बैठकर के परमात्मा पढ़ाई पढ़ाते हैं। क्या पढ़ाई पढ़ाते हैं आ जाती है, आ जाती है ना? तो इसीलिए कहते हैं बाप इसमें सब आ जाती है, सबसे ऊंचे स्टेटस की पढ़ाई है, इसके ऊपर कोई स्टेटस है ही नहीं तो तुमको बाकी क्या चाहिए । यह स्टेटस मिल जाए देवी देवता तो अभी सूर्यवंशी और उसी के राजे महाराजे अगर यह स्टेटस की पढ़ाई तुमको मिले फिर क्या डॉक्टर बनना है? इंजीनियर बनना है? बैरिस्टर बनना है? अरे! डॉक्टर क्यों बनेंगे, रोग ही न होगा तो कहे के लिए बनेंगे, सब पढ़ाई आ गई । बैरिस्टर क्यों बनेंगे, इस पढ़ाई की स्टेटस उसके आगे क्या है, कुछ नहीं है ही नहीं इसीलिए कहते हैं ऐसे स्टेटस स्वर्ग में है ही नहीं, इधर तो कोई डॉक्टर बनता है तो कहते हैं, भाई डॉक्टर है बड़ा है यह बैरिस्टर है बड़ी बात है, बीएएलएलबी बड़ी बात है, बड़ा उनका रखते हैं इधर उसका मान है, सतयुग में तो कहते हैं वह है ही नहीं । चोर चकार ही ना होगा तो बैरिस्टर क्या करेगा, दरकार ही नहीं है इन डिग्रियों की वहां कुछ वैल्यू नहीं है, वो डिग्रियां ही नहीं है, क्यों ? चोर चकार हो, कोर्ट हो तो हां बीएएलएलबी भी हो, वहां यह है ही नहीं तो यह डिग्री ही नहीं है । वहां रोग है ही नहीं तो डॉक्टरी ही नहीं है तो यह वहां यह डिग्रियां है ही नहीं, कुछ काम की नहीं है । इधर देखो वह डिग्री है, कोई पढ़ा लिखा है तो हां भाई ये डॉक्टर, बरिस्टर फलाना यह पास है, उधर कहते हैं यह सब इनकी दरकार ही

नहीं है यह चीजें ही मैं नहीं रखता हूं, ना रोग रखता हूं कि तू उनके लिए तो डॉक्टर बन तो इसीलिए कहते हैं कि यह पढ़ाई जो मैं पढ़ाता हूं उसकी स्टेटस इतनी ऊंची है जिसके ऊपर तुमको कोई स्टेटस लेने की बात ही नहीं है, सब कुछ तुम को प्राप्त हो जाता है । तो यह मेरी विद्या सब विद्याओं की राजा, कहा है ना गीता में मैं वह विद्या पढ़ाता हूं जो सब विद्याओं की राजा है तो देखो यह सभी विद्याओं की सबका मुख्य है ना । तो बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसी नॉलेज पढ़ाता हूं, मैं ऐसा स्कूल खोलता हूं, ऐसी कॉलेज कहो, यूनिवर्सिटी कहो खोलता हूं जो मैं वह पढ़ाई पढ़ाता हूं जिसके ऊपर फिर कोई पढ़ाई की स्टेज ही नहीं है । पढ़ करके देखो तुम क्या बनते हो जिसमें ऊपर फिर कुछ बनने की मार्जिन ही नहीं है, जो तुम इच्छा रखो कि नहीं इससे डिग्री ये ऊपर है, इससे डिग्री यह ऊपर है हम अगर यह पढ़ें यह पढ़ें होता है ना, परंतु नहीं उसमें कहते हैं तुमको इससे ऊपर कोई है ही नहीं, मार्जिन ही नहीं है आगे कुछ, ऊंचे में ऊंचा मनुष्य बनाता हूं तुमको क्योंकि बाप भी ऊंचे में ऊंचा है ना, जैसे मैं हूं ऊंचे में ऊंचा हूं तो तुम को भी ऊंचे में ऊंचा बनाता हूं । क्यों मैं ऊँचे में ऊंचा, मेरा गायन ही क्यों है क्योंकि मनुष्य को मैं ऊंचे में ऊंचा बनाता हूं जिसके ऊपर मनुष्य के लिए कुछ और है ही नहीं बनने का । देवी देवता से ऊपर क्या बनेगा, मनुष्य को परमात्मा तो बनना ही नहीं है, वह तो परमात्मा तो एक ही है बाकी मनुष्य के लिए ऊंचे में ऊंचा में है ही क्या, बस यही देवी देवता, देवी देवताओं

के ऊपर कोई है ही नहीं । मनुष्य के लिए जो ऊंचे में ऊंचा पद है, स्टेटस है वह यह है और देवी-देवताओं में भले सबको कहेंगे ना वहां सतयुग में, सबको देवी देवता कहेंगे राजा रानी प्रजा सब परंतु हाँ फिर भी उनमें राजा रानी ऊँच पद इसीलिए कहते हैं मैं तुमको वह बैठ करके पढ़ाता हूं जो सतयुग में भी तेरा ऊँच पद रहे फिर उसके ऊपर क्या रहा । तो ऐसी पढ़ाई बैठकर के बाप पढ़ाते हैं परंतु कहते हैं बाप पढ़ाता है ना, तो बाप के तो बन जाओ जल्दी, उसमें तो देरी नहीं लगाओ बाकी टीचर से पढ़ाई में जरा टाइम लगता है, तो टीचर से पढ़ाई में जरा टाइम लगता है लेकिन बाप का हो जाने में देरी नहीं लगती, वह तो बस हम तुम्हारे हैं और बस अभी तुम्हारे हो करके रहेंगे, वह कहते हैं बस यह जीवन मेरे हवाले कर दो मेरे हो जाओ तो जैसे मैं चलाऊं क्योंकि अभी शगीर हो, बालिग नहीं हुए हो जैसे चाहो वैसे जाकर के करो । वह तो देखो अर्जुन को भी कहा ना पिछाड़ी में कि अभी तुम नष्टोमोहा, पूँछा उससे तो जब उसने कहा कि हां नष्टोमोहा, अभी मेरा मोह नष्ट हुआ तब उसको कहा कि अब तुमको जो चाहे सो कर, यह है ना गीता में भी ऐसा है, परंतु वह तभी जब वह बालिग बना, कहा कि हां अभी मेरा नष्टोमोहा, अभी कोई विकार सताता नहीं है तब, अभी तो विकारों का वार हो जाता है ना इसीलिए कहते हैं अभी शगीर हो, छोटे हो तो अभी तो मेरे डायरेक्शन पर, शरीर का काम है बाप के पर डायरेक्शंस पर, और उस पर वह बाप का फर्ज है कि बाप को संभालना ही है, जभी बालीग हो जाए तो फिर

अपने पांव पर, बॉडी को अपने पांव पर, ये नहीं है न अभी कहते हैं मेरी मत पर, अभी कहते हैं तेरी मत पर अभी वो तमोप्रधानता का बैठा है वह भूत यह पांच विकारों का तो कभी फिर वो तेरी मत तेरे को कहाँ उल्टा ना ले जाए इसीलिए मेरी राय, मेरी मत, मेरी आज्ञा मेरा फरमान जो कुछ है सभी बातों का लेते और उसी पर चलते रहो तो उसमें तुम्हारा कल्याण है । तो अभी बाप का तो बन जाओ बाकी टीचर की पढ़ाई के लिए तो पढ़ ही रहे हैं वह तो हम सब देखो अठाईस वर्ष हुआ है पढ़ते रहते हैं, पढ़ते रहते हैं । यह पढ़ाना भी पढ़ना है ना । दूसरों को पढ़ाते हैं यह भी अपनी पढ़ाई है । दूसरों को हम कहते हैं पहले तो अपने के ऊपर अटेंशन रखेंगे ना भाई हम कहते हैं दूसरों को यह मत करो पहले हमारे में देखें, हम अगर करते हैं तो दूसरों को कहने का वो असर नहीं पड़ेगा, हक नहीं क्योंकि पहले तो अपना है ना, तो यह पढ़ाई हो गई ना ये तो अपनी पढ़ाई है । तो बाप बैठकर कहते हैं कि पढ़ो-पढ़ाओ यह भी पढ़ाई जो है उसी तरह से तो यह ब्राह्मणों का काम है तो सच्चे ब्राह्मण बनना चाहिए ना । तो अभी ब्राह्मण और ब्राह्मणियां सच्चे हो ना? कहते हैं ना हो चुके हैं, यह तो फिर सबने कहा ना? हाँ सब हो चुके हो ना उनके, तो अभी उनके तो हो चुके हो, अभी है पढ़ करके पढ़ाना, तो अभी सच्चे ब्राह्मणों का काम क्या है । ब्राह्मण देखो रोज कथा करते हैं, कहते हैं ना जाएंगे कथा सुनाएंगे तो अभी ब्राह्मणों और ब्राह्मनियों का काम क्या है कथा सुनाते हो? खाली सुनते हो, नहीं, सुनाओ ब्राह्मणों

का काम है कथा सुनाना क्योंकि ऐसे बहुत निकलेंगे, देखो अभी निकले हो ना, कथा सुनने वाले आप भी निकले हो, निकलेंगे भले सौ को सुनाएंगे ना एक निकले ना उससे तो भी समझो बहुत हुआ क्योंकि है ही अपना लास्ट कोटो में कोऊ । कोट सुनेंगे निकलेगा कोई एक इसीलिए इसमें थको नहीं । कोई सुनता नहीं है, कोई ऐसा करता है, कोई ऐसा करता है, इसमें देह अभिमान भी नहीं होना चाहिए कोई क्या करें, कोई हमारी ग्लानी करते हैं, कोई यह नहीं, वह तो बिचारे जानते नहीं हैं ना, वह बिचारे जानते नहीं है, वह तो ऐसे कहेंगे, करेंगे परंतु हां फिर भी देख करके नब्ज ताकत, कहते हैं ज्ञान भी उसको दो जो सत्कार से सुने, ऐसे नहीं ज्ञान का तिरस्कार करें । अगर तिरस्कार करते हैं तो फिर सुनाने वाले के ऊपर भी, ऐसे को न सुनाओ जो खाली तिरस्कार करें, हाँ परंतु हां किसको समझना भी है ना कि हाँ बिचारे की जागृति जगानी भी है परंतु ऐसे बिचारे सोए पड़े हैं उनको पता ही नहीं है क्या करना है, क्या नहीं करना है तो उनको जगाना भी है । तो यह सब सौख रखना चाहिए और जा करके किसी को कथा सुनाना और यह सेवा करना अच्छी है । हो सकता है सुनने से किसी का भाग्य जग जाए तो उसके भाग्य जगने का हिस्सा उसको भी मिल जाएगा न तो उसका सौख रखना चाहिए जैसे देखो कल भी वो आई थी ना एक वह माताजी, वह बेचारी कहती थी भले कोई कैसे भी हो परंतु अपना काम है ना हो सकता है कभी उसकी आत्मा जागृति हो जाए तो हाँ एक के द्वारा बहुतों का कल्याण हो

जाए, तो ऐसे ऐसे वो कहती थी वो आवे हमारे पास, हम कुछ सुनें तो ऐसे । ऐसे भी नहीं है कि सर्विस यहां नहीं हैं, काफी ढंग से सर्विस कर सकते हो । देखो उस दिन भी हमारा कहता था यह हमारा यह क्या नाम है सिद्धार्थ तो उसकी भी शायद घरवाली कुछ है, भले कुछ हो उनका कैसा जैसे यह हमारी है पंजाब की तो इनका है आपस में क्योंकि आपस में पंजाबी पंजाबी तो जाना चाहिए शौक है जैसे हमारी माताजी है बुजुर्ग है जाए या जो भी जिसका असर पड़े तो जाना चाहिए, ऐसी ऐसी सर्विस अगर कोई निकाले ना, यह हमारी शीला है क्या बैठकर करती है इनका काम है ऐसी ऐसी माताएं जो हैं हाँ छोटी की जगह कोई बड़ी बुजुर्ग होंगी ना तो जरा सुनने में कहेंगे कि हां यह आज की सुनाती है तो हो सकता है कि बुजुर्ग है, अनुभवी है उन्होंने कुछ गँवा के अपना सुधारा है तो वो अपना सुनाएंगे ना मैंने कैसे समय गंवाया क्या हम भक्ति मार्ग में क्या करते थे, कैसा होता था, अभी हमको क्या शांति मिली है क्या सुख मिला है अपना अनुभव सुनाएंगे तो वह तो कहेंगे ना कि भाई सुनाते हैं तो झूठ थोड़े ही बनाकर सुनाएगा । नहीं, तो हो सकता है कभी किसी को तीर लग जाए तो ऐसी ऐसी भी बहुत सर्विस अपने आपस में भी हो सकती है और ऐसे कई स्थान भी हों ढूँढने में ऐसे नहीं है कि नहीं हों तो जाकर के कहां सुनाना, करना तो जरा यह शौक रखना चाहिए । बाकी दो-तीन दिन आकर सुना और गया और घर को गया और घर का ही फिर धंधा और यह सब और उसमें ही बस खाया पिया सोया टाइम

गया बस उसमें, नहीं थोड़ा सौख रखना चाहिए, कुछ सर्विस को भी अपना देना चाहिए तो इससे क्या होगा अपने को खुशी आएंगी और अपने को ही बल आएगा कि हां हमारे में भी कुछ है दम जो हम किसी को दम भर सकते हैं, किसी में तो भर सकते हैं तो ये है कि अपने का भी होस उनमें से दिखाई पड़ेगा कि हमारे में भी कुछ है तो उसका रिटर्न मिलेगा । कहते हैं ना धन दान करने से तो उसका मिलता है तो यह भी धन दान है ना, धन दान है तो यह देखो यह दान करना चाहिए । इसी इसी तरीके से देखो क्लास में भी है, कोई वीक है क्लास में तो हाँ जो अच्छा है उसका काम है, आपस में भी आप सब कर सकते हो कि उनको जाकरके घंटा आधा घंटा समझाना, जो भी आगे हो जा करके उसको उठाना चाहिए, उनको खड़ा करना चाहिए, वह सौख रखना चाहिए । ऐसे नहीं कोई सुनता नहीं है जाएं पता नहीं क्या, कोई ऐसा ऐसा करता है तो देह अभिमान आ जाता है । कोई सुनता नहीं है यह भी देह अभिमान है ना, वह तो बेचारों को किसको जगाना भी पड़ता है ना । तो यह सभी बातें अपने पास होनी चाहिए तो यह ब्राह्मणों का काम तभी कहेंगे सच्चे ब्राह्मण । तो कथा रोज, रोज समझो बाबा कहते हैं ना कभी-कभी मुरलीयों में बाबा भी समझाते हैं कि हां नहीं तो खाना नहीं खाना चाहिए, एक कथा रोज जरूर सुनानी चाहिए तो समझो आज हमने कथा सुनाई किसको, नहीं तो खाना अच्छा नहीं लगना, भाई कथा सुनाई नहीं तो फिर बिना कथा सुनाएं कैसे खाएं । तो ऐसा होना चाहिए जैसे खाना रोज

खाते हो ना, दो बारी, तीन बारी जो भी नियम खाने का है तो यह भी कथा भी सुनाने का रखना चाहिए तो ये शौक होना चाहिए । जो क्लास में ढीले , कभी आते हैं कभी देखो कोई कभी-कभी आते हैं तो हां कम से कम उनको जा करके सुनाना करना आपस में भी बहुत कर सकते हो और बाहर भी बहुत सर्विस है । जाते हैं आप लोगों का मुझे यहां का मालूम नहीं होते होंगे कोई सत्संग, कोई कुछ इधर, जिन्हों को है, फिर भी टीचर है पूँछ करके तो जा करके सुनाना चाहिए, तो कुछ शौक रखने से फिर क्या है थोड़ा खुलेंगे और खिलेंगे, नहीं तो फिर तो देखो जैसे हो जाते हैं ना खाली बस खाया, खाया, नहीं कुछ उसको दान भी करो ना तो फिर अपना भी देखेंगे कि हम भी कुछ करने वाले हैं, हम भी कुछ कर सकते हैं तो अपने करने का भी पता पड़ेगा कि हमारे में भी दम कितना है, हमारे में भी ताकत कितनी है तो उससे पता चलेगा ना तो यह सभी थोड़े सौख रखना चाहिए । तो यह भी दान करने का दानी बनो, खाली खाने वाले नहीं, दानी भी बनो तो दान करो और भी बहुत तरीके से हो सकते हैं । कहां जो थोड़े थोड़े स्वतंत्र हैं वह कहां जा करके मास, आधा मास चक्कर भी लगा सकती हैं, ऐसी बहुत जगह हैं जहां जरूरत भी रहती है, जो जो थोड़ा टाइम दे सकते हैं तो ऐसे ऐसे भी थोड़ा ट्राई करना चाहिए । तो इससे क्या होगा अपनी अवस्था में भी बहुत फर्क पड़ेगा और बहुत कुछ आप में परिवर्तन भी आएगा और यह सेवा करने का फल भी मिलेगा सो जो करता है सो पाएगा यह भी एक्स्ट्रा सेवा हो

गई ना । करते हैं ना ये कर्म श्रेष्ठ, यही तो श्रेष्ठ कर्म हुआ ना तो यह कर्म करने का भी तो फल मिलेगा ना । तो अभी फल अपना कैसे बढ़ाएं, किस तरह बढ़ाए तो उसके लिए ये होनी चाहिए अपने में शौक होना चाहिए तो शौक से चलना चाहिए तो क्या होगा तो फिर अपनी अवस्था में बहुत आएगा । तो अभी जो अवस्था में उमंग उल्लास जो उठना चाहिए यह तभी उठेगा जब उसी तरीके से कुछ अपने को कर्म श्रेष्ठ में लगाओ, कर्म करने में । बाकी हां आया, सुना, गया बस इसी से कुछ इतना नहीं होगा, उसको फिर दो । देने के भी बहुत तरीके हैं जिस तरह से कर सकते हो । तो यह सभी बातें समझ करके अपने को चलाने से कुछ अपना जीवन और अपना तकदीर ऊंचा बना सकते हैं यह है तदबीर की बातें, तकदीर समझते हो ना-पुरुषार्थ की, तो अपने पुरुषार्थ में क्या-क्या करें, कैसे कैसे बढ़ाएं तो यह सब हैं तरीके जिस तरह से अपने को आगे पुरुषार्थ में बढ़ाते और फिर अपना जो कुछ हक है बाप से लेना है । बाकी वह तो बात समझ लो कि बाप के तो हो ही जाओ । उसमें ऐसा नहीं है अभी कोशिश कर रहा हूं, अभी उसका बनूंगा । बनूंगा, बनूंगा, बनूंगा, बनूंगा कह कर के फिर ना मालूम कुछ स्वांस का थोड़ी ही है, समझो चला जाए, फिर तो रह गया ना । उसका बना ही नहीं तो हक थोड़ी ही लगा । नहीं, इसलिए बाप कहते हैं बच्चे मेरे तो बन जाओ इसीलिए मेरे बन करके फिर वह पुरुषार्थ रखो तो अभी बाप के बनने में तो कोई देरी नहीं डालें । कोई अगर यह सोचता हो कोशिश करूंगा,

बनूंगा, नहीं उसके तो हो जाओ । बाकी है जो उसकी पढ़ाई मिल रही है, उनकी सब बातें हैं उसी को धारण करके आगे बढ़ने का बाकी जो उनका है वह तो रख करके जैसे वह चलाएं जैसे कहेगा वैसे करूंगा । ऐसे जो तीव्र पुरुषार्थ वाले हैं ना देखो जैसे यह हमारे जीवनलाल है आते हैं अभी, उनके अंदर में है कि हां अभी तो उनका हो करके बस चलेंगे, अभी बाकी क्या करने का है । अभी यह ऐसे ही ऐसे कीचड़ में रह करके कीचड़ वाला बनना कोई अच्छा थोड़े ही लगता है । अभी जीवन का कुछ करना चाहिए । अभी तो देखो छोटा बच्चा है ना वह भी वानप्रस्थी है, वह बच्चा छोटा अभी वह भी वानप्रस्थी है । वानप्रस्थ का मतलब है अभी आत्माएं सब जो हैं ना जन्म लेती लेती लेती लेती अभी उसकी ओल्ड जेनरेशंस की भी लास्ट जन्म है, समझा । तो अभी सब आत्माओं को वापस जाना है इसीलिए अभी कोई छोटा बच्चा है ना वह भी वानप्रस्थी है, बड़ा जो है वह भी वानप्रस्थी । भले इनका शरीर छोटा है लेकिन आत्मा पुरानी है । अभी सभी पुरानी आत्माओं को जाना है वाणी से परे स्थान पर इसीलिए तो देखो अभी मौत भी परमात्मा ने ऐसा खड़ा किया है जिसमें छोटे, बड़े, बूढ़े सब मरे, ऐसे थोड़े ही खाली बूढ़े मरेंगे, नहीं छोटे-बड़े सब । तो अभी बाप कहते हैं कि समय आया है वाणी से परे स्थान जाने का इसीलिए अभी सभी को हक है, छोटे बच्चे को भी हक है तो बुड्ढे को भी हक है हर एक को हक है बाप से अपना यह वर्सा लेने के लिए तो अभी उससे प्राप्ति के लिए पूरा रखना चाहिए ना कनेक्शन । तो अभी बाप

से पूरा कनेक्शन रख करके और ऐसा पुरुषार्थ करने से ही फिर आगे कुछ पा सकेंगे । तो यह रखना चाहिए अपने दिल के अंदर कि अभी हम कुछ करके रहेंगे । अभी हम आज से अपना, तो ये भी एक दृढ़ता अपनी धारणा है, ये होनी चाहिए, ऐसे नहीं चलते रहें हाँ, कोशिश करते रहे, करेंगे, करेंगे, कहते हैं ना करेंगे करेंगे कहते कहते और फिर काल' खा जाए तो । तो इसीलिए यह ख्याल रखने का है नहीं, जो करना है वह कर दो लेवें । हां बाकी तो जहां जीए है, वहां पिए वह तो है ही ना । वह तो हम भी कहते हैं जहां तक जीते हैं वहां तक ज्ञान का अमृत पीते ही रहना है । तो ऐसा मतलब नहीं है कि हां वह तो रखना ही है पुरुषार्थ बाकी ऐसे तो नहीं कहेंगे ना अभी उसके नहीं है, उसके होने की कोशिश करेंगे नहीं, वह तो हो जाए । तो उनके तो होकर बैठे हैं ना? हां अपने में भी देखना है कि हमारी अभी समझो स्वांस निकल जाए तो हमारे में क्या है, हम क्या भर के ले जाएंगे । तो अपना देखना चाहिए हमारे में स्टॉक अच्छा है, हमने अपने पास अच्छा जमा किया है, हमारे में कमाई अच्छी रखी है अपने में । तो यह देखना चाहिए हर एक को अपनी अवस्था भी । अगर हममें कोई ऐसी खामी है कोई मोह की कोई क्रोध की कोई लोभ की, जो भी जिसकी खामी है अगर कोई ऐसी खामी है तो निकाल देनी चाहिए क्योंकि वह अगर रही हुई होगी तो अंत मति सो गति, यह होता है ना तो इसीलिए जबकि अभी पता चला है तो अपनी जांच रखनी चाहिए कि ऐसी तो कोई हमारे में नहीं है जो फिर हम वो ले

जाएं इसलिए अपने को हमेशा तैयार रखो जिससे कि हमारे में कोई ऐसी खामी रहे नहीं जितने तक हमारे नजर में है । यह मोटी चीज हमारे में दिखाई पड़ता है यह मोह, यह लोभ, यह क्रोध तो वह चीजें निकाल देनी चाहिए । बाकी हां सूक्ष्म थोड़ा-थोड़ा यह उनको तो जितना जितना बाप की याद में रहेंगे उतना उतना वह भी कटते जाएंगे । तो यह सभी बातों को ख्याल में रखना है और कर्म से कोई विकर्म ना होवे उसको तो झट से खत्म कर देना चाहिए । देखो वाचा से हम कुछ बुरा बोलते हैं या क्रोध की जिसमें है उसमें आ करके तो यह तो हमारा कर्म हो गया ना, तो ऐसे भी कोई आदत हो कुछ बोलने करने की उलटे तथा उसमें झट से करेक्शन ले आनी चाहिए । जो हमारे कर्म की बात हो तो कर्मों में तो झट से संभल जाना चाहिए इसीलिए देखो हम यहाँ ब्रहमचर्य के ऊपर बाप का बहुत फोर्स रहता है कि उसकी पालना तो झट से क्योंकि वह तो हमारा कर्म अगर चलेगा, खाता विकर्म का हो जाएगा ना विक्रम वह तो है ही कर्म सीधा ही सीधा तो इसीलिए ऐसे नहीं आस्ते आस्ते जैसे कई समझते हैं आस्ते आस्ते, थोड़ा-थोड़ा करके छोड़ना है, नहीं थोड़ा थोड़ा उसमें होता ही नहीं है । अगर इन विकारों में रहते शरीर छूट जाए तो क्या होगा, रिजल्ट में तो विकारी हुआ ना, वह थोड़ा-थोड़ा की रिजल्ट नहीं होगी । उसमें थोड़ा बहुत होता ही नहीं है, विकार तो विकार ना, न विकार तो न विकार । कर्म तो हुआ ना विकर्म तो बन गया ना तो हम विक्रमी तो होके जाएंगे ना तो विकर्मी का नतीजा क्या पाएंगे जरूर

विकर्मी नतीजा पाएंगे इसीलिए बाप कहते हैं कर्मों में जो तुम्हारे विकारों का चलता है, वह तो एकदम कंट्रोल कर दो बाकी अगर मनसा, मन में अगर कोई संकल्प विकारों के या कोई बात होती भी है, हां वह तो बहुत काल से संस्कार बने हुए हैं ना तो उसको भी कहते हैं कि फालतू जब बुद्धि देखो इधर उधर तो मेरी याद में लगाओ तो वैसे भी, लगाए रखो तो तुम्हारे पास फालतू आवे ही नहीं परंतु देखो फिर भी कभी चली जाती है उधर तो झट से ब्रेक दे करके मन को मेरे में स्थित करो फिर मेरी बातों में, मेरे ज्ञान के उसमें बुद्धि को लगा दो फिर उसी रफ्तार में बुद्धि चली जाएगी ना तो वह फालतू निकल जाएगा । तो यह फिर युक्तियां हैं जिसके आधार से हम फालतू संकल्पों से भी अपना टाइम वेस्ट ना करें परंतु उसमें भी विकर्म नहीं बनता है संकल्प से । हां कर्म से तो बन जाएगा ना क्योंकि हमने कर्म किया बुरा और हमारा विकर्म बना इसीलिए कर्मों में तो फौरन अपना कंट्रोल डाल देना चाहिए तो अभी कंट्रोल डाल दो कर्मों में तो । बाकी हां संकल्प के लिए भी रास्ता है बाप ने बैठकर समझाया है कि हां निरंतर मुझे याद रखने से, यह तो याद रखने की चीज का तो तुम्हारे को काम मिला ही हुआ है, जब देखो फालतू बुद्धि इधर उधर जाती है झट वहां से ब्रेक ले करके बंद करके बाप की याद में और नहीं तो यह ज्ञान का है बैठ करके पढ़ो, मुरलिया हैं इतना लिटरेचर है उसमें मन लगाओ तो फिर क्या है उसी रफ्तार में बुद्धि जाने से ना फिर फालतू जो है बातें वह निकल जाएंगे बुद्धि से तो वह

आदत बन जाएगी फिर शुद्ध विचार चलने का तो उसी में बुद्धि चल जाएगी । तो यह सब युक्तियां है जिसके आधार से अपने मन को भी सेफ रखना है अपने कर्म को भी सेफ रखना है परंतु पहले कर्म को, ऐसे नहीं है पहले मन को । कई ऐसे समझते हैं मन अगर चलता है ना उससे तो अच्छा कर्म कर दें तो अच्छा ही है ना । मन में जो चलता है पाप तो ऐसे ही बनता है तो वह समझते हैं कि मन में तो विकारों के संकल्प चलते ही रहते हैं इसी से तो कर देते तो अच्छा ही है तो फिर वह विकारों में चले जाते हैं क्योंकि समझते हैं मन तो चलता ही है ना, परंतु नहीं मन अगर चलता है तो मन में कोई विकर्म नहीं बनता है । यह समझने की बात है कि मन से मैंने कोई कर्म तो नहीं किया ना, खाली मन चला, संकल्प चला तो संकल्प का कोई विकर्म नहीं बनता है खाली उसमें टाइम वेस्ट हो जाता है यानी वही टाइम अगर हम बाप की याद में अपना मन लगाए तो फायदा निकाल सकते हैं तो फायदा नहीं निकलता है वह हमारा टाइम वेस्ट जाता है । बाकी हमारा विकर्म नहीं बनता है, विकर्म तभी बनते हैं जब भी हम कर्म में आते हैं । अभी समझो कोई चोर है, उसको चोरी का ख्याल आया तो ख्याल आया ना तो अभी कर्म तो नहीं किया ना। हां चोरी किया तो भी कम हो गया। तो ऐसे नहीं संकल्प आया तो उससे तो कर ही देवें चोरी या संकल्प आया मन तो चलता ही है ना, तो मन चलता है हम कोई बुरा काम कर ही देवें, नहीं करने से तो फिर खाता जमा हो जाएगा ना। हम करते हैं और खाता हो गया

इसीलिए खाते को बंद करना है अभी उल्टा खाता हमारा बने नहीं, जुटे नहीं तो खाते को हमारा कंट्रोल करना है तो उल्टा खाता बने नहीं। बाकी हां मन के बहुत काल के पुराने उल्टे संस्कार पड़े हुए हैं वो चलेंगे तो उसको भी कंट्रोल करने के लिए बाप ने रास्ता दे दिया है कि उसका कंट्रोल मन को मेरे में लगाओ, मेरी याद रखो हां हम कौन, किसकी संतान है, अभी हम उसकी संतान हमको क्या करना है, फिर बाप ने जो नॉलेज सुनाया है उसी चक्कर को घुमाओ जोर से। देखो कितना ज्ञान है विस्तार है सारा तो घुमाओ अन्दर से बुद्धि को उसमें ले जाओ उसमे ले जाने से वह चक्कर घुमाएंगे ना तो स्वदर्शन चक्र जो है ना वह यह विकारों से काट देंगे। वह कहते हैं ना जब दुश्मन आता था तो वह स्वदर्शन चक्र फिराते थे तो उसका गला काट लेते थे, ऐसे शास्त्रों में सुनाया है। तो दुश्मन कौन से हैं यही विकार । तो जब यह कोई भी विकार दुश्मन आए तो यह स्वदर्शन चक्र घुमाओ। घुमाओ तो फिर हाँ उसके गले कट जाएंगे अर्थात वह जो भी है मर जाएंगे। तो असल में यह बात बाकी वह कोई चक्र वक्र नहीं था। यह जो अलंकार भी दिया है ना चतुर्भुज को अपने यहां भी दिया है परंतु वास्तव में ये अलंकार कोई चीजें थोड़ी ही है। कोई शंख गदा पदम तो यह थोड़ी ही जिससे कुछ हम..नहीं यह जो हम ज्ञान सुनाते हैं यह शंख है । अभी वह शंख कोई बजाने का थोड़ी है वह तो भक्ति मार्ग में रखा है मंदिरों में बजाते हैं परंतु उन बिचारों के पास वह ज्ञान की बातें तो है ही नहीं ना तो उन्होंने वह शंख रख दिया, नहीं

तो असल में शंख ध्वनि यानी यह ज्ञान । यह देखो ज्ञान सुना रहे हैं यह तो सुनाने की बात है। वह देखो गदा, गदा कोई हाथ में थोड़ी कुछ है मारने के लिए , यही हम जो बैठ कर के यह जो ज्ञान और योग के बल से यह विकारों को मारते हैं तो कोई वो चीज थोड़ी ही है हाथ में, तो यह सभी हैं। कमल का फूल दिया है हाथ में भई यह है कि घर गृहस्थ में रहते प्रवृत्ति का है कि उसमें रहते भी पवित्र रहना जैसे कमल का फूल पानी में रहते पानी के स्पर्श से अलग रहता है, उसी तरह से। तो यह सभी हमारे जीवन की धारणाओं के अलंकार है बाकी ऐसे नहीं कोई चीजें हैं या यह चक्र भी कोई अस्त्र-शस्त्र है, नहीं यह अस्त्र-शस्त्र की भई अपनी बुद्धि को इसी अस्त्र शस्त्र की धारणा से फिर हमारी बुद्धि स्थिर हो जाएगी और उसी से फिर वो जो भी विकार के तूफान आएंगे ना कुछ भी वह मिट जाएंगे तो देखो गला कट गया ना, मर गए ना दुश्मन तो यह है स्वदर्शन चक्र फिराना। तो इसको कहा है कि स्वदर्शन चक्र बुद्धि में फिराते रहो । जितना-जितना फिराते रहेंगे ना उतने उतने तुम्हारे फालतू संकल्प विकल्प जो भी फालतू है ना, वह कटते जाएंगे तो कटते जाएंगे दुश्मन कटते जाएंगे, खत्म होते जाएंगे। तो यह सभी बातें हैं जो बुद्धि में अच्छी तरह से रखकर के चलना है । तो यह अपने अंदर की धारणा रखनी है फिर दूसरों को भी धारण कराना है। दूसरे के पीछे भी यह स्वदर्शन चक्र घुमाना है, लगाना है ना यानी यह ज्ञान का, तो यानी यह ज्ञान का सुना करके दूसरे का भी बुद्धि योग ठीक करना है। उसका भी जो

आसुरी सिर है ना वह कट करके डेम सिर रखने का है समझा, तो उनको भी ऐसा बनाना है। तो यही हमारा काम है स्वदर्शन चक्र फिराना और दूसरे को भी स्वदर्शन चक्रधारी बनाना समझा । तो अभी तुम सब स्वदर्शन चक्रधारी हो ना? सब हो ना? यह शंख, चक्र, गदा, पदमधारी हर एक हो, यह हर एक का अलंकार है वो कुछ नहीं है ये हम है और हमारा है अभी का । देवताओं को ये नहीं है , देवताएं वो क्या करेंगे , वह थोड़ी ज्ञान बैठकर सुनाएंगे । देवताओं के जमाने में तो कोई अज्ञानी है ही नहीं जहां ज्ञान सुनने की दरकार हो अज्ञान तो अभी है ना। वहां तो कोई गदा वदा या यह विकारों को नाश करने की इन सभी बातों की दरकार नहीं है क्योंकि वहां तो देवताओं की दुनिया में है ही देवताएें सब तो देवताओं के पास में तो कोई यह विकारों की बात है ही नहीं ना जहां इन सब चीजों से काम लेना पड़े परंतु हां चित्रों में वह देवता का रूप दे करके उनको दिया है। अगर इसी समय तुम्हें दे दे देवें न शंख चक्र तो वो पहले ही कहते हैं दादा को ब्रह्मा बनाया है बाकी भी स्वदर्शन चक्रधारी बनाकर इन्हों को चक्र गदा पदम दे देवें तो कहेंगे देखो यह ब्रम्हाकुमारीयां अपने को भी समझने लगी है चक्रधारी, स्वदर्शन चक्रधारी और गदा पदम यह देवताओं के अलंकार खुद को दे दिए हैं। तो बिचारे समझते नहीं है ना, नहीं तो वास्तव में यह सब हमारे हैं यानी हम ब्राह्मणों का जो अभी हम बैठकर के यह पुरुषार्थ अभी करते हैं ना परंतु यह शरीर में। देवता बनेंगे फिर थोड़ी पुरुषार्थ करेंगे तो करते अभी हैं तो होना तो अभी है

ना, है तो यह सब अलंकार अभी ना, परंतु अगर चित्रों में ऐसा दें ना करेक्ट करके तो लोग बेचारे मूंझ जाएंगे। अभी देखो जैसे यह सत्या है अभी यह पुरुषार्थ कर रही है। इसको चार अलंकार है । इसको देखकर के इसका चित्र बनाएं समझो, वो कहेंगे देखो यह अपने को चतुर्भुज समझने लगी है वह तो उल्टा समझ लेंगे ना । वह तो नहीं समझते ना इन बातों का परंतु है तो हमारे लिए तो शरीर तो यह है ना परंतु चित्रकारों ने शरीर वह देवताओं को रख करके उसका दे दिया है नहीं तो देवताओं को क्या ऐसी बातों की दरकार है मेहनत करने की। मेहनत तो अभी है ना वह तो प्रालब्ध है। तो यह सभी चीजें अभी अपन जानते हैं इसीलिए हम हैं स्वदर्शन चक्रधारी या शंख, चक्र, गदा, पद्म धारी यह सब हमारे लिए हैं तो अभी सबको अपना अलंकार देखना है हमारे पास है शंख है, चक्र है, गदा है, पदम है, सब है ? ऐसे भी नहीं है एक अलंकार हो दूसरा हो ही ना, सब होने चाहिए ना नहीं तो फिर कैसा हो जाएगा, एक हो दो ना हो फिर कैसे काम चलेगा तो देखना है कि अपने पास सब है, तो हम ऐसे चक्रधारी और चक्रधारी गदा पदम सब तो यह सभी चीजें अपनी संभालनी है समझा। ऐसे भी नहीं शंख हो , कैसे सिद्धार्थ? खाली शंख हो और चक्र ना हो तो भी काम कैसे चलेगा, तो भी नहीं है। शंख चक्र गदा पदम सब हो । पवित्र प्रवृत्ति का भी अपना बनाना है और गदा भी हो , पूरा माया के ऊपर विकारों के ऊपर अपना भी हो। ऐसे नहीं गदा ही ना हो केवल शंख हो तो कहेंगे हो ही फिर पंडित । दूसरों को कहते

रहते हो अपना कुछ है नहीं फिर ऐसी बात हो जाएगी तो वह भी तो बात नहीं बनेगी । तो एक अलंकार से भी काम नहीं चलता है चारों ही होने चाहिए जिससे बुद्धि में यह स्वदर्शन चक्र भी घूमता रहे यानी यह हो कि मैं सो तो ऐसी फिर अपनी धारणा भी हो ना। सो खाली कहने की थोड़ी बात है । सो तो सो, तो फिर उसमें स्थित रहना है ना तो यह सभी चीजें होनी चाहिए । तो बाकी एक से काम नहीं चलता है तो देखो चारों है। है चारों तो फिर शंख भी अच्छा बजेगा, गदा भी अच्छी रहेगी फिर सब अच्छे चलेंगे तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझते फिर अपना ऐसा पुरुषार्थ रखने का है। पीछे ऐसे पुरुषार्थी जो तदबीर करने वाले हैं उसकी तकदीर क्या होगी , वह तो बहुत ऊंची तकदीर और उस तकदीर का तो साक्षात्कार बाप करा ही रहे हैं कि तुम्हारी तकदीर कितनी ऊंची मैं बनाता हूं और ऐसे भी नहीं है कि यह बैठे हैं, ऐसे तो नहीं समझते हो न । ये तो मनुष्य से देवता हो चुके हुए हैं , वही बात फिर बाप समझाते हैं कि अभी फिर होने की है। जो हो चुकी है वह होगी ना । ऐसे कोई समझते हैं क्या कि ये देवताएं थे ही नहीं। नहीं, यह देवताएं थे परंतु उन देवताओं की जो बायोग्राफी बैठकर के सुनाइए ना उसमें बहुत बातें मिक्सअप हो गई है परंतु देवताएं थे जरूर । देवता का मतलब ही है दैवीय लाइफ वाले मनुष्य, तो खाली क्या आसुरी लाइफ वाले मनुष्य थे क्या? संसार क्या आसुरी आसुरी है ? आसुरी कंट्रास्ट रखता है दैवीय से तो जरूर आसुरी हैं तो दैवीय भी होंगे । ऐसे है नहीं की दैवीय थे ही नहीं

खाली आसुरी हैं । तो आसुरी भी नहीं कहो ना फिर तो कहो बस खाली ये ही है । ऐसे ना कहो कि यह दुःख अशांति है । दुःख अशांति भी दुनिया ना कहो ना कहो बस दुनिया यही है। नहीं, परंतु है नहीं, यह दुःख अशांति की भी बरोबर है तो जरूर फिर कोई सुख शांति भी तो दुनिया होनी चाहिए ना । कंट्रास्ट कोई चीज का होता है तो दो का होता है। हम कहे भाई ये रात है , अगर रात है तो कोई दिन के भेंट में रात है ना । हम कहे कि सर्दी है अभी तो भाई सर्दी कोई गर्मी के भेंट में है तो जरूर कभी गर्मी भी होगी ना । तो हो चुकी है गर्मी, फिर भी आएगी सर्दी के बाद गर्मी आएगी ऐसे भी तो मानना पड़ेगा ना । तो यह सभी चीजें समझने की है इसीलिए ऐसे नहीं कहेंगे अभी खाली सर्दी है, सर्दी है तो भाई गर्मी के भेंट में है ना। नहीं तो उसको सर्दी भी नहीं कहो बस यह है । जो है वही है बस उसका कुछ कहने का बात ही नहीं है । परंतु नहीं, कंट्रास्ट वाली चीजें इस चक्र में चलती हैं तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए दुःख अशांति की दुनिया है तो सुख शांति की भी दुनिया है । जब पावन दुनिया है तो उसमें कोई पतित नहीं, अभी पति तो दुनिया है तो उसमें कोई पावन है ही नहीं। भले कोई साधु, सन्यासी कितने भी हैं लेकिन उनको पावन नहीं कहेंगे । भले आज की पतित दुनिया की भेंट में, पतित मनुष्यों की भेंट में, वह उनके भेंट में थोड़ा पावन है लेकिन पावन दुनिया की भेंट में पतित हैं क्योंकि वह पावन तो फिर पावन थे ना। वह शरीर छोड़ते, शरीर में रहते, शरीर लेते सदा पावन थे

यानी उनमें कोई विकार का वह नहीं था, यह तो शरीर छोड़ेंगे तो कहां जाएंगे सन्यासी । विकारों से जन्मेंगे, विकारी घर गृहस्थ में जाएंगे फिर उसमें थोड़ा छोटेपन की पालना ले कर के फिर उनको सन्यास का संस्कार आएगा फिर चले जाएंगे सन्यास में परंतु विकारी दुनिया में तो उनका सब कनेक्शन चला ना । कोई रोग होता है कोई दुःख होता है कर्मों का सभी हिसाब तो है ना लगा हुआ इसीलिए बाप कहते हैं वहां कोई हिसाब ही नहीं है तुम्हारा इस दुनिया का । उसको कहा जाता है पावन दुनिया। तो इसीलिए कहते हैं पावन दुनिया बना रहा हूं जिसमें कोई पतितपने का खाता नहीं । अभी पतित दुनिया है तो उसमें पावनपन की कोई निशानी है ही नहीं तो इसीलिए कहते हैं अभी उसका ख्याल रखो और ऐसा अपने को बनाने के लायक बनाओ। तो अभी पुरुषार्थ समझा ना, क्या करने का है और पहले पहले तो क्या अपने को उसका तो बना लेना है इसीलिए उसका तो अभी हो ही जाओ। इसके लिए ऐसे नहीं ख्याल करो कल होंगे, कभी होंगे, नहीं बाप का बच्चा बनने के लिए तो बच्चा बनना माना समझो आज बना कोई साहूकार का गोद का बच्चा आज बना कल मर जाता है परंतु हां समझो बाप मर जाता है तो उसका हक तो हो गया ना। हक तो लग गया क्योंकि बच्चा जो बना तो उसकी प्रॉपर्टी का वह हकदार हो ही गया। हो जाता है ना, तो देखो हक लगा दिया । अगर बने ही न, जब तलक बना नहीं है तब तलक तो उसका हक हो भी नहीं सकता है ना । तो बच्चे तो बन जाओ अपना हक तो लगा लो तो उसकी

प्रॉपर्टी के ऊपर दाव तो लग जाएगा ना। बाकी हां है उसके लिए अपने को लायक बनाना बाकी पुरुषार्थ करना ऊंच दुनिया में अपनी ऊंची स्टेटस बनाना उन्हीं सभी बातों के लिए फिर पुरुषार्थ करना वह तो फिर हम भी कहते हैं हम सब पुरुषार्थी हैं कर रहे हैं, वो तो जहां जीय तहां पीय तो उसके लिए तो कोई बात ही नहीं है । परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि पुरुषार्थ चलना ही है इसीलिए हम ठंडे ठंडे चलें क्योंकि चलना ही है ना। बाबा मम्मा भी कहते हैं हमको हम पुरुषार्थी हैं तो हम तो जरूर पुरुषार्थी रहेंगे ना, हम तो भूलें करते ही रहेंगे ना , ऐसा तो ख्याल नहीं है ना ? नहीं, जो करेगा तो पाएगा । भूले करेंगे तो विकर्म तो बन ही जाएंगे ना, तो विकर्म थोड़ी बनाना है, नहीं। इसीलिए ऐसा भी ख्याल नहीं रखना है अपने पुरुषार्थ को आगे करते चलने का है। अपनी जो देखने में आती है कि यह भूल है, यह विकार है, यह मोह है, यह फलाना है, यह क्रोध है, यह भूत है, यह भूत कोई अपने में मत रखो। यह भूत है ना सब, भूतों को भगाओ। तो अपने में देखो हमारे में कोई भूत है तो नहीं है तो इन भूतों को भगाओ, निकालो। तो निकालते जाने का है। कैसा अर्जुन ? तो अभी सच्चा सच्चा अर्जुन बनना है , समझा। अच्छा , यह मोहन है । मोहन है ना नाम ? तो कैसा, इसका क्या है ऑक्यूपेशन , यह भी चलता है कुछ । चलते रहो, चलते का अर्थ समझते हो ना , पुरुषार्थ में आगे बढ़ते रहो। अपनी तकदीर को ऊंचा करते रहो । उसके लिए तदबीर अर्थात पुरुषार्थ करते रहो। तो अपने को चलाओ

अच्छी तरह से तो बाप से अपना पूरा पूरा अधिकार पा सको सब । अभी कुछ थोड़ा-थोड़ा पुणे वालों का परिचय रहा है । हम जब जाते हैं ना तब परिचय पूरा होता है फिर चले जाते हैं । फिर तो जो जीते रहते हैं वह याद रहते हैं। जो हो जाते हैं उधर तो वो फिर भूल ही जाते हैं। वो भुलाते हैं मेरे बाप को तो हमारे को भी भूल ही जाएंगे । जो मेरे बाप को याद रखते हैं अर्थात अपने बाप को तो हां वह बाप वाले बच्चे , भाई बहने क्यों नहीं याद रहेंगे । सो भी जो अच्छे अच्छे होंगे वह जरूर रहेंगे । भाई यह अच्छा सर्विसेबल है, यह अच्छा काम कर रहा है, यह अच्छा मददगार है तो वह क्यों नहीं याद रहेगा जरूर रहेंगे। बाकी जो मददगार भी नहीं होंगे और है ही नहीं कुछ पुरुषार्थ तो वह कैसे रहेंगे वो याद नहीं रह सकते । अज्ञान में भी ऐसा ही होता है जो सपूत बच्चे होते हैं , अच्छे बच्चे होते हैं उनके प्रति मां-बाप का लाड प्यार रहता ही है वह तो नेचुरल है तो इसीलिए अपने को देखो कि मैं कैसा हूं , मैं कितना अच्छा हूं , बाप का लायक बच्चा हूं? लायक हूं या ना लायक और सीधा अगर कहेंगे तो नालायक , तो नालायक किसको कहेंगे तो गाली हो जाएगी। बाप कहेंगे भाई यह ना लायक है तो ना लायक कहने से वह जरा कोडेड है क्योंकि कोडेड होती है ना कॉइनेन। तो वो जरा कोटेट, कॉइनेन हो जाती है और कहने से नालायक तो गाली हो जाती है , परंतु है यही तो है न। तो अपने को क्या बनाना है लायक, बाप के लायक बच्चे बनो । तो अभी हर एक देखे कि हम लायक हैं ? लायकी क्या है, सो

तो अभी पता है अच्छी तरह से, लायकी आदर्श कौन सा है वह तो अभी अच्छी तरह से साक्षात्कार पूरा-पूरा बुद्धि में हर एक के हैं । कैसा प्रत्युषण? तो अभी क्या बनना है ? लायक बच्चा । अगर लायक बच्चा ना हुआ तो क्या हुआ, कुछ नहीं। कुछ नहीं क्या? लायक के बदले में अल्टरनेटिव क्या हुआ? नालायक, हां, तो अभी बनना है लायक बच्चा। तो ऐसा अभी अपने को लायक बनाने का और लायक रखने का ख्याल रखने का है तभी बख्तावर बाप से पूरा पूरा बख्त लेंगे तो बख्तावर बाप का बख्तावर बच्चा बनना है। अगर ना बनेंगे तो क्या होगा, कमबख्त । कमबख्त, नालायक तुम बोलो हम लायक और बख्तावर बोले क्योंकि वो निकालना है। अच्छा, इसीलिए अपने इन बातों को समझते और अपना ऐसा पुरुषार्थ रखो । अच्छा। कैसा है, बाप की ओर से की याद में ठीक है ना । अभी उससे पूरा-पूरा लेने का है तो ऐसा पुरुषार्थ रखते रहना । उसके लिए क्या करना है सब बुद्धि में है । खाली बुद्धि में रखना नहीं है, कर्मों में लाना है तो उसी को अच्छी तरह से लाते रहना है । सभी धर्म वाले निराकार परमात्मा को मानते हैं। ये शिवलिंग को शिव की प्रतिमा को, शिवलिंग को, भले ही इसके कई शेप हैं, शिवलिंग के भी बहुत शेप बनाते हैं, उनका किताब मिलता है बड़ा क्योंकि हम तो इन बातों के पीछे रहते हैं ना तो मंगाया था किताब। शिवलिंग की भी बहुत-बहुत शेप है कहां कैसा कहां कैसा। तो यह मुसलमान लोग भी इनके मक्के मदीने में भी शिवलिंग का है। उनको भी पता नहीं क्या नाम

देते हैं। क्या कहते हैं आप? संग ए मकसद, हां कुछ ऐसा है बाकी कुछ और भी नाम है। आप क्या कहते हो हाजिर ए आलम, हां होगा कुछ नाम इनके तो देखो यह कहते हैं ये शिवलिंग को कहते हैं। इनके में भी शिवलिंग के प्रतिमा की मान्यता है। इनके मक्के मदीने में भी हैं और वहां क्रिश्चियन लोग में भी इस चीज की मान्यता है । तो अपना अपना नाम देते हैं तो देखो हैं न परंतु बिचारों को उनको पता नहीं है कि निराकार परमात्मा की प्रतिमा है, जो सबका पिता है । तो मानते सब हैं परंतु हां यहां शिव कहते हैं वो उधर देखो दूसरा नाम देते हैं तो अपने अपने नाम दे दिया है। तो यह सभी चीजें हैं इसीलिए यह बाप अभी सबका पिता है वो आ करके अभी अपना भी परिचय देकर के अभी कहते हैं सबको ले जाना है हिंदुओं को, मुसलमानों को, सबको अभी वापस ले जाना है तो इसीलिए फिर कहते हैं अभी सबको मुक्तिधाम और फिर जो जीवन अपना पवित्र बना रहे हैं उसको फिर जीवन मुक्तिधाम। यह दुनिया भी रखनी है ना तो इस दुनिया को फिर जीवन में बाकी तो मुक्त। तो अभी ऐसे बाप को समझा हैं ना कि वह काम करने वाला बेहद का बाप आया है। यह वह पढ़ा रहा है यह बुद्धि में अच्छी तरह से लाना चाहिए। अच्छा ऐसा बाप और दादा, हां बापदादा को समझती जाते हो ना । दादा मैं भी मूंझते तो नहीं हो ना। अभी बाप और दादा, दादा क्या है, बाप कौन है, बाप दादा का क्या बना रहा है, दादा क्या बनता है, यह सभी चीजें समझने की है । यह कोई एक दादा नहीं है उसके साथ में

हम भी सब, सब पुरुषार्थ कर रहे हैं, जो करेंगे सो पाएंगे। तो बापदादा और माँ के मीठे मीठे और बहुत अच्छे ऐसे समझदार, लायक, बख्तावर ऐसे जो बच्चे हैं ऐसे बच्चों के प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग। गुड मॉर्निंग।

मम्मा मुरली मधुबन

052. दुखों का कारण क्या है - 1

गुड इवनिंग, आज दिसम्बर की पंद्रह तारीख है, शाम को राजौरी गार्डन की सभा में आइये तो आपको मम्माजान की लास्ट मुरली सभा में सुनाएं क्योंकि कल प्रात: आठ बजे माँ की सवारी मेरठ में जा रही है तो अब सुनिए मम्मा जान की मुरली

रिकॉर्ड :

पितु मात सहायक स्वामी सखा तुम ही सबके रखवारे हो......

ओम शांति। इस जीवन से तो मनुष्य जानते हैं कि यह सुख की और दुःख की प्रालब्ध जीवन में कर्म के आधार से चलती है तो जरूर पहले कर्म है, उसकी जो प्रालब्ध है वह दुःख के या सुख के रूप से भोगनी होती है। तो सुख और दुःख का संबंध हो गया कर्म से। कर्म कोई ऐसी भी चीज नहीं है कि कर्म को कोई किस्मत कहेंगे। कई ऐसे समझते हैं कि जो किस्मत में होगा वह मिलेगा, इसीलिए यह सुख और दुःख को किस्मत समझ लेते हैं जैसे कि यह किस्मत कोई भगवान ने बनाई है या किसी और ने बनाई है इसी तरह से समझते हैं कि यह किस्मत में जो होगा। लेकिन यह भी समझना बहुत जरूरी है कि किस्मत भी किसने बनाई । किस्मत कोई परमात्मा ने या

किस्मत कोई पहले से बनी पड़ी है नहीं, इनको ही तो मैंने बनाई ना। जिस सुख और दुःख को भोगता है मनुष्य उसी दुःख-सुख को बनाने वाला भी मनुष्य अपने को समझे, मैं मनुष्य। दुःख और सुख को बनाने वाला कोई परमात्मा तो नहीं कहेंगे ना। अपने कर्म और कर्म करने वाला भी मनुष्य इसीलिए यह हो गई रिस्पांसिबिलिटी अपनी। अपनी भी हर एक मनुष्य की अपनी। ऐसे नहीं कहेंगे किसी एक मनुष्य के कर्म की दूसरे पर रिस्पांसिबिलिटी नहीं, जो करनी सो भरनी यह तो कॉमन कहावत भी है और जो करेगा सो पाएगा। और गीता में भी वर्णन है की जीवात्मा, भगवान ने भी खुद कहा है जीवात्मा, ऐसे नहीं कहा है कि मैं तुम्हारा शत्रु हूं मैं तुम्हारा मित्र हूं ऐसे थोड़े ही कहा है, कहा है कि जीवात्मा अपना शत्रु अपना मित्र इसीलिए अपने साथ मित्रता और अपने साथ ही यह शत्रुता दुःख और सुख की करने वाला कौन हुआ, खुद अपने आप मनुष्य। इसीलिए जब यह बात इतनी सीधी और साफ है कि दुःख और सुख की रिस्पांसिबिलिटी भी मनुष्य खुद अपने आप है तो क्यों नहीं, कोई चाहते तो नहीं है कि हमें दुःख हो कोई चाहते हैं? चाहते ही नहीं है, दुःख आता है, जिस भी रुप में आता है उसको भगाने की कोशिश करते हैं, करते हैं ना। कोई लड़ाई झगड़ा खड़ा हो जाता है तो उसको निकालने कि मनुष्य कोशिश करते हैं। देखो हो रहे हैं ना, कोई रोग आता है देखो तो भी निकालने की कोशिश करते हैं कि यह निकले, कोई ऐसी तो चीज नहीं है कि कोई कहे आ,ए आए, रोग बैठे, बड़ा

अच्छा है, इसमें कोई आनंद है। ऐसी चीजें आती है तो उनको खत्म करने की कोशिश की रखी जाती है, कोशिश उसी चीज की कि जो चाहिए कि नहीं। लगती है तो समझते हैं निकले। कोई ऐसी अकाले मृत्यु भी हो जाता है तो भी दुःख होता है, तो समझते हैं कि पता नहीं यह क्या, तभी तो देखो मनुष्य उसी आवेश में आकर के भगवान को भी गाली देने लग पड़ते हैं कि यह क्या कर दिया, भगवान ने किया। अभी किया किसने यह तुम्हारे आगे यह सब जो बातें आई तो यह भी तो समझे ना मनुष्य यह भी अकाले जो मृत्यु आया वह क्या जो भगवान ने किया? मेरे सामने जो रोग के रूप में दुख आया क्या भगवान ने किया? मेरे सामने ये जो लड़ाई झगड़े संसार के जितने भी दुःख के कारण है क्या भगवान ने किया? अरे! भगवान जिसको कहते हैं, देखो जब कोई भी दुःख आता है तो याद भी तो उसको करते हैं। कोई भी दुःख आता है, शरीर का रोग लगता है तो भी कहते हैं हे भगवान, यह दुःख को नाश करने के लिए याद भी उनको ही करते हैं। तो जब दुःख उसी ने दिया है तो जो दुःख देने वाला है उसको तो क्या करना चाहिए, बताओ...! जो अगर कोई दुःख देने वाला हो क्या उसको याद करना चाहिए? भला यह भी तो सोचना चाहिए जिसकी दुःख के समय ही याद आती है तो उनके लिए तो यह कह भी नहीं सकते हैं कि यह दुःख उसने दिया, यह भी तो समझने की बात है। याद भी उन्हीं को करते हैं तो जरूर है कि उनका संबंध हमारे साथ कोई दूसरी बात का है ना कि दुःख का। इस दुःख का कारण और

उसकी रिस्पांसिबिलिटी की ये दुःख का जो कुछ है वह कोई और है ना, तो और तो कोई तीसरा तो है नहीं। एक मैं और दूसरा मेरा रचता, बस दो ही तो चीज है ना, एक मैं उनकी रचना या उनकी संतान कहो और दूसरा ठहरा बाप या तो बाप रिस्पांसिबल या तो मैं रिस्पांसिबल, लेकिन आता है जब मेरे पास दुःख तो मुझे दिखाइ ऐसे पड़ता है, दिखाई ऐसे पड़ता है, मैं भी जानता हूं लेकिन उसको पता है आत्मा को कि मेरा सुखदाता वह है, सुख के लिए उससे सहारा मांगते हैं हे भगवान, यह दुःख दूर करना भगवान, मरते हैं तो भी कहते हैं भगवान आयु बड़ी करन, देखो आयु के लिए भी मांग तो उनसे करते हैं ना तो आयु की भी, दुःख की भी, शरीर के रोग की भी और जो भी लड़ाई झगड़े कोई भी अशांति का कारण आता है तो भगवान् से , देखो कोई बच्चा ऐसा होता है थोड़ा तो भी उनको कहते हैं भगवान इसको सुमत देना, तो मत भी उनसे मांगते हैं, हर तरह की जो भी कुछ दुःख की जिससे कष्ट होता है तो कष्ट में याद भी उसको करते हैं और उनकी मांग भी उससे करते हैं। भला मांग करते हैं तो उसकी माना वही उसका दाता है ना और वही हमको सुख देने वाला है तभी मांग उससे करते हैं। तो उसकी माना कि उसकी निवृत्ति का भी जो इलाज है वह भी उनके पास है, ऐसे नहीं है कि सिर्फ ऐसे ही याद करते हैं, उसके पास इलाज है ज़रूर कुछ । तो यह सारी हमारी जो हैबिट भी चलती है, भले जानते हैं कि नहीं जानते हैं परन्तु तो भी देखो यह तो चलता है ना भगवान को दुःख के समय को याद जरूर

करेंगे, ऐसे करे ना करे कोई लेकिन कभी भी देखो वो कहते थे उनको अपना वो जो गहने दिया वो मरी तो उसकी याद में वो भी मरी यही निकल न की हे गॉड ये क्या किया भगवान् ने किया तो समझो भगवान् याद आया किसी तरह से तो दुःख कोई भी आता है तो उनका नाम आता है, भले जाने ना जाने भाई गॉड है वह कौन है, क्या है पर निकलता है । तो यह भी समझने की बातें हैं कि आखिर भी जिसको हम याद करते हैं तो क्या उनका हमारे इन सभी दुखों से कौन सा, क्या वह दुःख का दाता है या उनका कोई कनेक्शन हमसे सुख का है यह तो हमारी याद से भी सिद्ध हो जाता है कि उनका कोई हमको दुःख देने का तो काम है ही नहीं । अगर देता तो याद क्यों करते हैं, जो दुःख देने वाला होता है उसके लिए क्या होता है, उसको कोई याद करना होता है? नहीं, उनके लिए तो आता है कि उनको तो पता नहीं क्या करें परंतु नहीं, भगवान के प्रति तो सदा और दुःख के समय तो खास प्रेम और वह बात उठती है कि जैसे वह हमारे बड़े मित्र कहें, क्या कहें, कह भी नहीं सकते हैं कि उनकी तो इतनी आती है दिल के अंदर । तो यह सब दिखलाते हैं कि उनका हमारे साथ सुख का संबंध जरूर है लेकिन यह दुःख के कारण कोई और है । अभी और तो कोई तीसरा तो है नहीं एक मैं और दूसरा वह तो जरूर मैं ही रिस्पांसिबल हुआ । तो जिस चीज के लिए मैं निमित्त हूं और मैं ही दुःख में दुखी होता हूं और पैदा भी मैं अपने से दुःख अपने आप करता हूं तो यह देखो कितनी बेसमझी । जिस चीज

से चाहते हैं छुटकारा वह चीज में अपने लिए ही बनाता हूं, आश्चर्य की बात है ना? तो यह भी तो समझने की बात है कि जब मैं ही निमित्त हूं तो मैं अभी उनको भी क्यों मैं चाहता भी नहीं हूं कि मैं कोई दुखी होऊं, चाहना भी मेरी नहीं है लेकिन मैंने बनाया है तो जरूर मेरे बनाने में कहीं कोई भी बेसमझी है, उसका मुझे तरीके का पता नहीं है । एक तरफ चाहता नहीं हूं, दूसरी तरफ दुःख बनता भी जाता है तो यह भी तो मेरे पास कोई अनजानाई है मैं बेसमझ हूं किसी बात में जिस बात का मुझे पता नहीं लगता है । अभी ऐसी चीज का तो कैसे भी पता निकालना चाहिए ना, पहले क्या करना चाहिए? ऐसी चीज का जिसकोमैं कहता हूँ, ऐसी भी नहीं है कि मैं कहता हूं भले दुःख बैठा रहे, चाहता नहीं हूं और बनाने वाला भी मैं हूं तो भला यह कौन सी ऐसी बात है जिसको बनाता हूं, चाहता नहीं हूं तो भला क्या, वह भी तो मेरे से कुछ, मुझे नॉलेज होनी चाहिए मुझे समझ होनी चाहिए तो इसी समझ की तो पहले उनकी खोजना करनी चाहिए ना, परंतु आश्चर्य है कि आज तो देखो ऐसी बात की समझ में भी देखो कई बेचारे कितने बहाने देते हैं, फुर्सत नहीं है, समय नहीं है, टाइम नहीं है और क्या करें गृहस्थ संभालें, यह संभालें यह करें वह करें क्या करें इसीलिए वह देखते भी रहते हैं कि उसको ही संभालते ही तो उसी में तो दुखी हुए पड़े हैं और उधर जब चाहते भी हैं तो क्या उसी चीज की क्यों न खोजना करें, जिस चीज के लिए मैं ही रिस्पांसिबल हूं और मैंने ही यह अपना ये दुःख का रूप बना दिया,

मेरा गृहस्थ, मेरा यह सब । तो मैंने ही अपने आप को दुःख के रूप में लाया है तो पहले तो उनकी खोजना होनी चाहिए पहले । बनाने के पहले तो उनकी जानकारी रखनी चाहिए कि यह जो चीज में बना करके जिसमें दुखी होता हूं उसके पहले मुझे उनकी समझ तो होनी चाहिए कि क्या यह बनाने से दुखी हैं सुखी है या इनमें भी कोई सुख की बात है या सुख हमारे लिए होता ही नहीं है या क्या इनका भी तो पता निकालना चाहिए ना । तो इसकी जानकारी के लिए तो हां अगर अपने आप को बिचारे जानते नहीं हैं परंतु जब भी बताया भी जाता है ना तो भाई यह चीज जो अपने दुःख का ही कारण है और दुःख मिटाने का कौन सा इलाज है, क्यों हुआ है, उस बात को जानना भी जीवन के लिए बड़ा आश्चर्य की बात है सुनाते भी, बिचारे देखो कितने अनजान, कोई भी, क्या करें, कैसे करें, तो इसी बात में क्या अपना गृहस्थ व्यवहार वगैरह फलाने ये कई फिर बहाने निकाल बैठते हैं । तो आश्चर्य लगता है कि देखो मनुष्य की बुद्धि और इतना दुखी होते भी कितनी बुद्धि एकदम इन बातों से हट गई हुई है जो समझ मिलते भी और दिखलाते भी हैं कि अपना अनुभव है, हमारा अनुभव है, हम अनुभव से उसी बात को समझ करके और धारण करके और अनुभव पा करके बतलाते हैं कि भाई ये अनुभव की चीज है । जरूर अनुभव हुआ है तब तो इतना कहने में भी आता है तो इन बात का प्रैक्टिकल में किस तरह से सुख की प्राप्ति हो सकती है जो बहुत काल की आस रखते आए हो अभी वह जानने वाला है, जो

सुखदाता है वह स्वयं हमको अपना यह परिचय दे रहा है कि हे बच्चे तुम दुखी हुई हुए क्यों हो, कारण तो तुम्हारा यही है लेकिन तुम्हारे में ऐसी कौन सी ऐसी बात जिस बात का तुमको पता नहीं चलता है, जिससे तुम दुःख उठा रहे हो और तुम्हारे कर्म में दुःख का कारण बनता जा रहा है, वह कौन सी बात है वह आकर के समझो । देखो, इतनी तो ऑफर करते हैं, इतना हमको कहते हैं तो भी आश्चर्य देखो कि यह सुनते भी बिचारे कई तो ऐसे हैं कि जैसे बस यही चलना है । तो देखो यही बातें हैं जिसको कहा जाता है अहो! मम माया , देखो माया कितनी दुस्तर है जो एकदम पकड़ बैठती है और फिर चाहते भी और जिस चीज के लिए बिचारे इतना सारा दिन माथा खोटी भी करते हैं और वह चीज आ करके बाप सामने बतलाते हैं, सामने देते हैं कि बच्चे तुम्हारे सुख का कारण कैसा है और दुःख का कारण क्या है, यह सभी बातें बैठ कर करके समझाते हैं और अभी मैं आया हूँ तुम्हारे सभी दुःख को हरने और तुम को सुख प्राप्त कराने क्योंकि गाते भी उसको ऐसे ही है ना दुःखहर्ता सुखकर्ता । कभी ऐसे नहीं कहते हैं कि दुःखकरता सुखहरता नहीं, दुःखहर्ता तो जिस चीज को वह हरता है तो जबकि बाप कहते हैं कि बच्चे में आया हुआ हूं तुम्हारे दुःख हरने के लिए और हराऊंगा तो भी तो तुम्हारे से ही वह कर्म कराऊंगा ना जिससे तुम्हारे दुःख नष्ट हो जाएँ सिर्फ वो जो मैं समझाता हूँ, सिखाता हूं उसको समझ करके वह पुरुषार्थ रखो और उसी से अपने दुःख को नष्ट करो तो तुम्हारे दुःख को नष्ट करने की

मैं बैठ करके शिक्षा देता हूं जिसको धारण करो तो तेरी चीज है ना, कोई मेरे लिए थोड़ी ही करते हो । तो कई तो बेचारे ऐसे कारण देते हैं जैसे कि उनके लिए करते हैं । जैसे कि भगवान के लिए करते हैं, तो भगवान के ऊपर मेहरबानी है कि कोई समय मिल गया तो कर लेंगे, कुछ टाइम निकल आया बाकि वह तो जरूर करना है ना । अरे! भाई खिलाना, पिलाना, यह सब जो बातें हैं उसी कर्म के बनाए हुए खाते में ही तो तुम मूंझ पड़े हो, उसमें ही तो दुःखी हुए पड़े हो, जबकि एक तरफ कहते भी वह दुःख से छूटे और दूसरी तरफ बच्चे जब दुःख से छूटने का तुम्हें मार्ग, रास्ता और यह सब बाप खुद बाप बैठ करके समझा रहे हैं तो भी देखो कोई की बुद्धि में बैठता है , इसी पर कहा जाता है देखो माया । ये पाँच विकार, माया भी बिचारे कई समझते नहीं हैं, वह समझते हैं यह धन, यह संपत्ति यह शरीर यह माया है इसलिए बिचारे कई समझते हैं चलो यहाँ आये ही नहीं, फिर ऐसे ऐसे उपाय परंतु बाप कहते हैं ऐसे नहीं है कि कुछ शरीर के कारण है तुम्हारा दुःख, या ये जो मेरी रचना यह तो अनादि है, वह कोई दुःख का कारण नहीं है । तुम्हारे में एक एक्स्ट्रा, अलग कोई चीज आई है जिनको ही पांच विकार, माया को कहा जाता है । माया विकारों को कहीं जाती है, कोई शरीर कोई विकार नहीं है, संसार विकार नहीं है, धन-संपत्ति विकार नहीं है, विकार एक अलग चीज है जिसके आने से फिर यह सभी चीजें जो हैं ना, वह दुःख के कारण बन चुकी हैं । नहीं तो यह सब पदार्थ, शरीर का यह पदार्थ, आत्मा

के सुख के कारण है । उनके लिए संपत्ति, धन आदि यह जो संबंध आदि सब सुख के कारण हैं लेकिन उन सभी बातों का पूर्ण नॉलेज और ज्ञान ना होने के कारण यह सब चीजें दुःख में आ गई है इसीलिए बाप कहते हैं कि यह ऐसा नहीं है कि मैंने कोई ये रचना जो रची हुई है अनादि वो कोई दुःख के ही कारण है, नहीं, यह दुःख के कारण नहीं है, दुःख के कारण तुम बने हो तुम्हारे में कोई और अलग चीज आई । वह अलग चीज है यह माया पांच विकार, अभी उसी को तू निकाल तो फिर तुम्हारे यह सब कुछ जो कुछ दिया हुआ है या कहते भी हैं भाई भगवान ने दिया तो भगवान ने जो दिया वह तो सुख की चीजें दी ना । इसमें तुमने विकार डाल करके इन सभी चीजों को खराब कर दिया हैं इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे अभी उस चीज को निकाल तो फिर तुम्हारा सुख का कारण हो जाएगा तो अभी यह हैं सारी बातें समझने की और इसके लिए तो फिर कोई फुर्सत कोई टाइम जो अपने लिए ही है अपना ही है कारण और अपने ही मिटाने की चीज है, कोई उनके लिए या कोई दूसरे के लिए तो नहीं है ना । अपना दुःख नाश करने की पूरी जड़ की बात और किस तरह से उसका नाश हो उनके लिए कहते भी हैं बार बार भाई आओ कुछ समझो तो भी, आज भी आए होंगे कोई नए, तो उन्हों को फिर भी देखो कहते हैं देखो कल भी आए थे, आते तो रहते ही हैं, कहते भी हैं फिर भी देखो बिचारे बस यहाँ से सुने और बात खत्म । ये नहीं जानते हैं की जिस चीज में हम छूटने के लिए सारा दिन माथा खोटी

भी करते रहते हैं, काहे के लिए? सुख के पीछे तो सारा दिन, दिन रात यह सब लगे पड़े हो परंतु वह चीज हो नहीं पा रही है और अभी जबकि वह चीज है और देखते भी हैं अनुभव में, हाँ किन्हों के आ रही है चीज और वह पा रहे हैं तो भी देखो यही कहेंगे ना इसीलिए फिर भी यह इतना होते भी, आज भी फिर कह देते हैं, जो नए कोई आए हुए हों, उन्हों को खास कहते हैं क्योंकि फिर भी आए हैं ना, बाकी तो जो हैं सुनने वाले हैं, समझते रहे हैं, वह तो समझते रहे हैं तो उनको इतना जरूर कहेंगे कि कुछ अपने जीवन के लिए और अपने पूर्ण जो कुछ चाहना करते आए हो, उसी का कारण कौन सा है और किस तरह से उसका नाश हो उनके लिए कुछ आ करके अपना करो । ऐसे नहीं है कि क्या करें वह करें या यह करें, यह करना उन्हीं के लिए बिलकुल जरूरी है और उन्हीं के लिए ही है इसलिए इस करने को अलग मत समझो । यह समझते हो कि टाइम मिला, कुछ फुर्सत मिले या कुछ समझते हैं कि अभी थोड़े ही है, यह तो कोई बड़े बुड्ढे का काम है, यह खाली बूढ़ों के लिए ही है यह सब सत्संग आदि में कुछ अपना जीवन बनाने का । जीवन बनाने का बूढ़े का क्यों, जीवन तो चलती है, वो तो जो उल्टी- सीढ़ी चढ़ जाते हैं वह फिर दौड़ करके उतरे उससे अच्छा पहले ही क्यों नहीं सीढ़ी चढ़लें, पहले ही क्यों नहीं संभल जाए कि हमको जीवन कैसे चलानी चाहिए यह भी तो समझने की बात है ना । तो यह सभी बातें हैं इसीलिए उनको राय देंगे कि कुछ इस बातों को समझ करके अपने जीवन का, दुःख की जो जड़ है,

दुःख का जो कारण है, उसको मिटाने का पूरा पूरा करना है । वह अभी बाप जो सबका पिता है । भगवान को तो सब अब बाप तो कहते ही है ना, अभी बाप है तो बाप के पास भी हमारा क्या है हक़ उसको भी समझना है । उनसे हक लेना है ना, खाली ऐसे ही थोड़ी ही उनको बस बाप कहने का बात है तो उससे हमको क्या हक़ मिलता है और उनके द्वारा हमें क्या प्राप्ति करनी है उसको भी तो कोई आ करके सुने और समझे तभी है बात । अभी इतना तो बताते हैं कि हाँ ये ऑफर तो करते ही रहेंगे, अभी भी देखो निमंत्रण और संदेश तो देते ही रहे हैं ना, पर जागते हैं कोटों में कोऊ, आगे भी ऐसे हुआ है तभी तो कहा है ना कोटों में कोऊ मुझे जानते हैं, भगवान ने खुद कहा है कोटों में कोऊ यानी वो आते भी अपने लिए कहता है कि मेरे आते भी मुझे कोटों में कौउ जानते हैं और वही हाल हो रहा है परंतु फिर भी कहते हैं कोई हो ना । कोई उनमें से भी कोटों में कोऊ ना मालूम कोटों में कोऊ हो तो निकल आए, तो हो सकता है कि अपना सौभाग्य बना ले । क्योंकि उनको कहते हैं कि कुछ आ करके इस चीज को समझते धारण करो । हाँ बाकी क्या समझना है क्या धारण करना है वह तो फिर आने से सभी बातों को विस्तार से समझने की है इतने थोड़े समय में तो यह सब बातें नहीं समझाने में आ सकती हैं । अच्छा अभी बहुत सुना भी है और कुछ बैठे भी हैं थोड़ा इनका टाइम भी हुआ है इसलिए अभी दो मिनट साइलेंस करके इसी बाप की याद में बैठ करके फिर भले समाप्त करो ।

मम्मा मुरली मधुबन

053. गृहस्थ में रहते कमलपुष्प समान जीवन

हेलो, आज रविवार है, जून की सात तारीख है । प्रातः क्लास में मम्मा की मुरली सुनते हैं ।

रिकॉर्ड:

माता माता माता तू सबकी भाग्य विधाता

ओम शांति, जब अपने परम पूज्य बाप की महिमा को जाना है तो साथ-साथ अपने भी महत्व को समझा है, समझा है ना हर एक ने अपने अपने महत्व को? ऐसे नहीं है कि जिस बाप के अभी हम बने हैं उनकी महिमा और साथ-साथ अपने महत्व को भी हम उनकी महिमा के साथ-साथ जानते हैं । तो अपना भी नशा चढ़ना चाहिए कि हम भी ऐसे बाप से अपना हक लेने वाले वंशावली हैं । उनकी वंशावली है तो उनकी वंशावली को कम नशा होना चाहिए? तो वंशावली, हम किसकी वंशावली हैं तो हम वंशावली को भी अपना नशा रहना चाहिए कि हम उस बाप के हैं जिसके द्वारा सर्व प्राप्तियां अभी प्राप्त करते हैं फिर कोई भी प्राप्ति की आवश्यकता नहीं रहती है । ऐसी कोई भी प्राप्त वस्तु नहीं रहती जिसको फिर प्राप्त करने के लिए कुछ ख्वाहिश भी रहे । भगवान को भी याद करने की जरूरत

नहीं रहती है । तो इतना हम इस बाप से अपना हक कहें, अपना वर्सा कहें, पा करके ऐसे हम ऊँच बनते हैं । तो अपना भी नशा दिमाग में रहना चाहिए कि हम इस बाप के द्वारा अपना इतना ऊंचा हक पाने वाली वंशावली है तो कम नहीं है । सब जितने भी वंशावली आए हैं, जितनी भी होती आई हैं उनमें सबमें अभी हम ऊँचे क्योंकि ऊँचे ते ऊँच भगवन की हम वंशावली तो हम भी तो ऊँच हो गए ना । तो ऊंचे ते ऊँच भगवन सिर्फ यह बैठकर महिमा नहीं गानी है सुननी है लेकिन साथ-साथ अपने भी महत्व को समझना है लेकिन महत्त्व समझने के पहले अपने को देखना भी है की बरोबर हम उनके फरमान और आज्ञाओं के ऊपर पालन करने वाले हैं तभी तो नशा चढ़ेगा ना । अगर हम प्रैक्टिकली जो आपका फरमान है और जो उसकी आज्ञाए हैं उनका पालन करते रहते होंगे तो नशा बैठेगा और वंशावली कहने का भी हक भी तभी रहेगा । बाकी ऐसे ही नहीं है कि खाली यहां बैठे तो बस हो गए । नहीं, प्रैक्टिकल चाहिए ना । हम हैं सच्चे बादशाह के सच्चे बच्चे तो हमारी फिर प्रैक्टिकल जीवन भी उनके फरमान और आज्ञा के अनुसार प्रैक्टिकल चाहिए । तो प्रैक्टिकल जो होंगे उन्हों को अंदर से लगेगा और नशा भी उनको बैठेगा की सच-सच हम उस बाप के अभी सच्चे हैं, उनके पूरे फरमान और आज्ञाओं के ऊपर चल रहे हैं । तो यह तो हर एक के दिल की शायदी हर एक को अपने से आती होगी और हर एक को अपने से पूछना है, लगती है कि बरोबर जो बाप के फरमान और अज्ञाएं हैं

उनके ऊपर हम अपना पूरा पूरा अटेंशन दे करके अपनी पैरवी करने का पूरा प्रयत्न रख रहे हैं और रखना चाहिए । और ऐसा भी नहीं है कि कोई डिफिकल्ट है, कोई मुश्किल है? बहुत मुश्किल क्या है बताओ । क्या कहता है कोई मुसीबत की बातें थोड़े ही कहता है । उनकी महिमा ही है मुश्किल को आसान करने वाला ऐसे गाते थे ना भक्ति मार्ग में । जबकि वह मुश्किल को आसान करने वाला है तो फिर वह क्या हमको मुश्किल देगा कि मुश्किल ऐसे करो । कोई मुश्किल बात नहीं है बिल्कुल आसान और कमल फूल समान, यही है बाप जो हमको बिल्कुल घर गृहस्थ में रहकर के और हम अपना इतना ऊँच स्टेटस बनाएं उसकी बैठकर के युक्ति बतलाते हैं । ऐसी किसी ने नहीं बतलाई, बतलाई? जो भी मार्ग बतलाने वाले हैं देखो सन्यास मार्ग है तो भी घरबार छोड़ने की बात रही लेकिन इसमें तो कोई ऐसी बात नहीं है । इसमें हमको कंप्लीट भी बनाते हैं बाप और फिर सहज ही सहज, कुछ छोड़ने का नहीं है । बाकी छोड़ना, गंदगी छोड़ना, कोई छोड़ना थोड़ी ही कहा जाता है । पांचों विकारों को छोड़ना गंदगी छोड़ना तो गंद किचड़ा तो घर से बाहर निकाला जाता है ना, रोज सफाई नहीं करते हो घर की? किचड़ा निकालते हो, घर का किचड़ा गंद जो होता है साफ सूफ करना उनको थोड़ी ही कहेंगे कि ये चीज हमने कोई बहुत अच्छी खोई या हमने कोई छोड़ी, उसको छोड़ना तो कहेंगे नहीं, तो यह भी तो एक्स्ट्रा चीज हमारे में गंदगी आई हुई है ना । तो अगर बाप भी कहते हैं हमको निकालने के लिए अथवा

छुटकारा पाने के लिए तो हमारी कोई काम की चीज या हमारी कोई ऐसी चीज है जिसके बिना हमारा गुजारा नहीं हो सकता है ऐसी तो बातें है ही नहीं । यह तो एक्स्ट्रा आई, थी नहीं । हम बड़े स्वच्छ थे और यह चीजें हमारे में थी ही नहीं । ऐसे नहीं कहेंगे कि यह अनादि थे, सदा से चले आए हैं आज कैसे छूटेंगे ऐसे भी नहीं कोई सोचे । कई सोचते हैं यह तो सदा से ही, यह तो देवताओं में भी चली आई तो आज कैसे छूटेगी परंतु यह बड़ी मूर्खता हो जाएगी अगर कोई अभी भी ऐसे समझते हैं तो ऐसा नहीं था । यह हमारे जीवन में, मनुष्य जीवन में जिन्हों का नाम देवता था, देवता कोई खास तो नहीं थे ना, हम ही मनुष्य थे । कोई तीन आंखों वाले, या अठारह भुजाओं वाले मनुष्य नहीं थे जिन्हों को देवता कहने में आता था नहीं, हम ही मनुष्य देवता कहलाते तब जब यह विकार नहीं थे, स्वच्छ थे हम । स्वच्छ थे तो देवता कहलाते थे अभी स्वच्छ नहीं तो असुर कहलाते हैं बस फर्क है ना इसी का । तो यह तो एक्स्ट्रा चीज़ आई ना हमारे में, तो आई अभी उसी को निकालना है । तो कोई काम की चीज नहीं निकालते हैं, कोई काम की चीज छोड़ते नहीं है, न बाप का फरमान कोई काम की चीज को छोड़ने का है । वह तो कहते हैं घर गृहस्थ, यह तो अनादि हैं । घर गृहस्थ में तो देवताएं भी थे, वो तो मैं छुड़ाता भी नहीं हूं । अगर छुड़ाता हूं तो उसमें जो गंद किचड़ा आया ना उसकी मैं स्वच्छता ले आने के लिए फरमान करता हूं । यह जो गंद किचड़ा एक्स्ट्रा है इसी से तुम्हारा घर गृहस्थ बिगड़ा है, नहीं तो

तुम्हारा घर गृहस्थ तो बहुत अच्छा था, उनका नाम ही गृहस्थ था । उनका नाम ही गृहस्थ व्यवहार प्रवृत्ति जिसका नाम था तो प्रवृत्ति में पवित्रता थी तभी प्रवृत्ति नाम था । अभी प्रवृत्ति थोड़ी ही है, ऐसी प्रवृत्ति तो जनावर भी चलाते हैं । बच्चे पैदा करना, उसको खिलाना पिलाना, बिजनेस धंधा करना, वह चिड़िया नहीं करती है, देखी है ना । जाएगी, ले आएगी, अपने बच्चों को खिलाएगी, सब करेगी इतना काम धंधे तो वह भी जानते हैं । अपने बच्चों की पालना करना, यह करना, वह करना इतना काम तो जनावर, पशु-पक्षी भी कर देते हैं । तो यही प्रवृत्ति समझते हो कि बच्चे पैदा करना, उनको खिलाना-पिलाना, उनकी पालन करके बस जीवन निभाई, बस इतना ही हमने काम किया तो यह प्रवृत्ति का फर्ज अदा किया । ऐसे समझते हैं ना कि यह फर्ज है । बाप कहते हैं बच्चे इतना ही थोड़ी ही फर्ज है, इतना फर्क तो पशु पक्षी जानवर भी कर लेते हैं फिर क्यों उनका गाया नहीं करते हो कि वह फर्ज अदा करते हैं, यह तो सब करते हैं । यह तो हर एक चीज का चलता ही है तो तुमने भी इतना ही काम किया तो इन्हों को ही थोड़ी समझना है कि फर्ज अदा । फर्ज अदा तब थे जब प्रवृत्ति की लॉ मुजीम जिसको ईश्वरीय नियम कहा जाए और प्रवृत्ति का जो आदर्श था, उसी के लॉ मुजीम जो तुम फर्ज अदा करते थे ना वह फर्ज अदा था । जभी तो तुम सदा सुखी भी थे । अभी फर्ज अदा पूरा नहीं करते हो तो दुखी हो, अशांत हो और कई बातें जो हमारी प्रवृत्ति में होनी चाहिए ना होने के कारण दु:ख और

अशांति आता है । तो यह सभी कारण है इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं तुम्हारी प्रवृत्ति को ही बनाने की युक्ति बतलाता हूं और प्रवृत्ति का ही आदर्श क्या है, वही बनाने का में लक्ष्य देता हूं इसलिए मैं कुछ बिगड़ता थोड़ी हूं । कुछ बिगाड़ा है? कुछ नहीं, लेकिन वही चीज हमारी लायक बनाता है जो हमारी अभी लायक नहीं है, गिर चुकी हुई है, उसको बैठकर के बाप अभी लायक बनाता है तो ऐसे बाप के द्वारा अपनी प्रवृत्ति का आदर्श ऊँच बनाना और उनकी पूरी जो कुछ है आज्ञा या फरमान उसी को ही पूरा पालन करना । हमारी प्रवृत्ति बिगड़ी है कोई उसकी प्रवृत्ति नहीं बिगड़ी है । बिगड़ी भी हमारी है, हमारी ही बिगड़ी को संवारने के लिए वो बैठ करके यह यत्न बतलाते हैं इसीलिए कहते हैं आप अपने बनाने के लिए क्यों नहीं कोशिश रखते हो । बिगड़ी भी आपकी ही है, मैं तो और आया हुआ हूं तुम्हारी बनाने के लिए, कोई मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ा है । मेरे में तो कोई फर्क नहीं पड़ता है । ना मैं बिगड़ी में आता हूं ना संवरी में मुझे आना है । बिगड़ा भी तेरा है, संवरना भी तेरा ही है और मैं हूं सवारने वाला इसीलिए तू ही जो बिगड़ी है जिसकी वह अपने संवारने के लिए क्यों नहीं यह ऊँच पुरुषार्थ करते हो तो करना चाहिए ना और बड़ी सहज बातें हैं इसीलिए ऐसी सहज बातों को अच्छी तरह से प्रैक्टिकल में लाने के लिए पूरा चलना चाहिए । बाकी इतना ही समझना कि बस हमने बच्चे पैदा किया, उनको खिलाया पिलाया, लायक किया, शादी किया फलाना किया, उनको लायक लगाया बस यह तो सबके

लग जाते हैं । जानवर, पशु-पक्षी सब लग जाते हैं तो यह कोई फर्ज अदा थोड़े ही है । इसमें अपना मान या इसी में ही अपना यह समझना कि हमने बहुत कुछ कर लिया, हमने सब कुछ अदा किया या हमने सब कुछ गृहस्थ की पालना पूरी की, इन्हीं को ही थोड़ी कहा जाता है । नहीं, वह तो तभी थी जब उनमें कोई भी ऐसी दुःख और अशांति की या कोई भी हमारी जो ईश्वरीय नियम के मुताबिक हमारे में पूर्ण होना चाहिए, उनमें कोई ऐसी बातें नहीं होती इसीलिए बाप कहते हैं अभी वह चीज बनाने के लिए अभी मैं प्रयत्न बतलाता हूं । तो मैंने कंप्लीट जो तुमको बनाया, तुम्हारी प्रवृत्ति अथवा तुम्हारा गृहस्थी व्यवहार जिसको कहा जाता है वह जो मैंने आदर्श रूप में पूर्ण बनाया था, वह कैसे बनाया था उसकी बैठ करके अभी शिक्षा दे रहे हैं और उसको ही बनाना है, तभी हम भी अपने प्रवृत्ति में पूर्ण सेटिस्फाई रहेंगे । अभी सेटिस्फाई नहीं है ना? हैं ? कोई ना कोई बातों की अशांति और दुःख आता ही है इसीलिए बाप कहते हैं कि कंप्लीट यथा राजा रानी तथा प्रजा सब, सारे संसार की तत्व आदि भी, जानवर पशु-पक्षी किसका भी हम दुःख कभी ना सुने, ना देखें ऐसा संसार मैं बनाता हूं और ऐसे संसार में ही तुम सदा सुखी कैसे रहो उन्हीं की ही मैं बैठ करके यह यत्न दे रहा हूं । तो यह लगता है ना, कुछ आता है ना ख्याल में अच्छी तरह से? भूलते तो नहीं हो? ऐसे तो नहीं कि अभी तक किन्हों को कोई संशय हो ऐसी बातों में कि यह इंपॉसिबल है, जैसे कई समझते हैं कि यह तो कभी ऐसा

संसार, दुनिया हो ही नहीं सकती है जिसमें पूर्ण, सदा के लिए सुख हो । ऐसे कई समझते हैं कि यह इंपॉसिबल है लेकिन इंपॉसिबल अगर है तो फिर ऐसी आशा क्यों रखते आते हैं कि हम सदा सुखी हैं । फिर तो समझना चाहिए ये आस भी फिजूल है । जो चीज इंपॉसिबल है, कभी हुई नहीं है तो फिर आज भी हम होने के लिए ऐसी आस क्यों रखते हैं । इतने बिचारे माथा खोटी करते हैं, दुनिया के इतने नेताए, दुनिया के इतने बड़े-बड़े यह सब, इतनी माथा खुटी करते चले जा रहे हैं तो उसी आस में जा रहे हैं ना कि विश्व की शांति हो, विश्व पर सुख हो, विश्व पर सब कुछ अच्छी तरह से हो, सब खाने-पीने रहने, चलने में सब में सुख ही हों, यह सब प्रयत्न काहे के लिए हैं जिसके ही प्रयत्नों में ही सब चले जा रहे हैं लेकिन कभी तो कंप्लीट भी होनी चाहिए न कि खाली करते-करते ही चले जाएंगे यही दुनिया होगी । कभी दुनिया कंप्लीट भी होनी चाहिए जिसमें फिर हमको इन बातों के यत्न करने की आवश्यकता ही ना हो, ऐसी भी कभी दुनिया की स्टेज होनी चाहिए ना । तो बाप कहते हैं का है, ऐसे नहीं कहेंगे नहीं है । इन्हीं का नाम हेवन, इन्हीं का नाम स्वर्ग, सभी भाषाओं में कहते हैं ना । हेवन कहते हैं, स्वर्ग कहते हैं, विश्व कहते हैं सभी भाषा वाले अपने अपने भाषा में कहते हैं तो चीज है जरूर ओई लेकिन कब, कैसे, किसने बनाई, किस तरह से बनती है, वह अभी अपन जानते हैं और उसका प्रेक्टिकल अभी अनुभव करते जा रहे हैं और उसी के लिए अपना पुरुषार्थ रखते हैं । तो नई बात है ना, भले सब कहते आते हैं

उसी के भेंट में नई नहीं हैं लेकिन वह प्रैक्टिकल चीज किसी ने नहीं बनाई इसीलिए कहते हैं अभी यह बनाने वाला स्वयं सर्व समर्थ बाप आया हुआ है इसीलिए कहते हैं ऐसा काम और किसी नें नहीं किया इसीलिए उसके भेंट में कहते हैं कि ये अलग है । ऐसे मत समझो जो दुनिया काम करती आई है या जो दुनिया में कई करते आए हैं ये भी उन्हीं में से ही एक है, ऐसा ख्याल ना करें कोई । यह बिल्कुल नई बात है और नया बनाने वाला है । वह आया ही अभी है बनाने के लिए, आया ही नहीं था आज से पहले कभी बनाने के लिए । आया था तो इसी टाइम पर कल्प पहले ही आया था और ऐसे ही उसने, जब आता है तब ऐसे बनाता है उनका और कोई तरीका है ही नहीं । इसलिए कहते हैं मैं जब-जब आता हूं, तब-तब ऐसा ही बनाता हूं मेरे बनाने का तरीका यही है और इसी तरीके के कारण ही मेरा यह तरीका गुप्त रहता है । गुप्त है ना, अभी बनाते प्रैक्टिकल भी कोई जान नहीं सकता है । परंतु मैं जब आता हूं तभी ऐसा ही काम करता हूं इसीलिए मेरा यह काम का पार्ट ही गुप्त रहता है इसलिए कोई शास्त्रकार भी इस चीज को प्रेक्टिकल में कैसे रखें और क्या करें उन्हें आती ही नहीं है तो फिर जो शास्त्र पढ़ते हैं ना तो वह भी ऐसे ही ऐसे पढ़ते आते हैं । तो प्रैक्टिकल तो कोई इस चीज को जानते ही नहीं है कि मैंने कैसे प्रैक्टिकल चीज बनाई थी वह तो मैंने ही बनाई मैंने ही देखी, मैंने ही समझी और मेरे पास ही रहती है इसीलिए और कोई इस चीज को जानते ही नहीं हैं । तो ऐसे ही बनाते हैं उनका

और कोई नमूना नहीं है । उनका और क्या नमूना हो सकता है । बनाना मनुष्य को है, उनको खुद अपने को नहीं बनाना है, बनाना हमको है, हमारे लिए ही उनको इतना तरीके यह सब लेने पड़ते हैं इसीलिए उनको तरीका लेना है हमारे को बनाने के लिए तो हमारे नमूने से बनाएंगे ना । अपने नमूने से, सर्व समर्थ है तो अपने शक्ति या अपने तरीके से थोड़े ही बनाएंगे, बनाएंगे हमारे तरीके से क्योंकि हमको कर्मों से ही बनना है इसीलिए उनको हमारे नमूने से बनाना पड़ता है कि कैसे, मनुष्य कैसे बनता है तो हमारे नमूने से बनाते हैं क्योंकि हम तो कर्म के आधार पर बनने वाली चीज है, हम दूसरे तरीके से बन ही नहीं सकते हैं । ऊपर से ऐसे ही बनके आएं या कहां से कैसे ही बन जाए, नहीं हमारा नमूना ही ऐसे बनने का है कर्मों से क्योंकि हम कर्म क्षेत्र पर आने वाली आत्माएं जो जीव के साथ संबंध रखती है, जीवात्माएं, वो बनती ही कर्मों से हैं । वह बिगडती भी कर्म से हैं, बनती भी कर्म से ही हैं, हमारा है ही कर्म का चक्कर इसीलिए हम कर्म के चक्कर में आने वाली आत्माओं अथवा जीवात्माओं को बनाने के लिए उसको उसी नमूने से बनाना पड़ेगा और कोई तो तरीका है नहीं । इसीलिए कहते हैं कि यही नमूना है मेरा और यही तरीका है और कोई तरीका है ही नहीं और उसी में ही जो जानते हैं जो समझते हैं जो मेरे द्वारा बनते हैं, वही बन करके अपना सौभाग्य लेते हैं । तो लेने वाले हो ना सौभाग्य, भूलते तो नहीं हो न ? देखना, यहां तो हां हां करते हो, फिर यहां से बाहर थोड़ा जूता पहनेंगे न, बस

वहां तक वो नशा गिरने लग जाएगा, सीढ़ी की जितनी- जितनी वो उतरते जाएंगे, वह नशा भी उतना उतना कम होता जाएगा । ऐसा होता है बहुतों का बतलाते हैं । ऐसे नहीं कहते हैं खास कोई किसी के लिए लेकिन ऐसा होता है कि हां बैठते हैं, सुनते हैं, तब तो जरा पारा चढ़ता है फिर पारा उतरता भी जल्दी ही है परंतु ऐसा होना नहीं चाहिए । होता है, क्यों होता है क्योंकि ये माया का भी थोड़ा है ना अभी । अभी तो माया के बीच में बैठे हैं इसीलिए माया जरा वो पारा चढ़ा रहने में जरा अपोजिशन करती है और करना उनका भी फर्ज है जरूर । वह ना करें तो फिर युद्ध कैसी गाई जाए हमारी भी युद्ध, हम किसके साथ हैं तो भी हमारी अपोजीशन तो जरूर होगी, लेकिन इसका मतलब होगी तो हम हारते ही रहे यह भी बात नहीं है ना, हमको उससे ऊपर अभी विन भी करनी है । यह ख्याल रखना है कि जितना भी अभी है, अगर हम हार खाते रहेंगे तो हारे ही जाएंगे इसीलिए जीतने की बाजी भी अभी ही लगानी है तो अपनी जीत प्राप्त करने के लिए पूरा पूरा पुरुषार्थ रखना है, समझा । इसलिए ऐसा यत्न करते हिम्मत रखते कुछ भी आए विघ्न उनकी कोई परवाह न करते अपना चलते चलना । एक भरोसा एक बल गाया हुआ है ना इसीलिए अपना ऐसी रफ्तार से चलते चलने में ही कल्याण है । अच्छा, कल्याणकारी बाप को याद करते, सदा आशिक रहते हो ना? खुश और राजी रहते हो ना? बताओ । सब राजी खुशी में हो ना, खुश शराफत पूछते हैं । अच्छा, मुंबई की फुलवारी । यह तो हमारे लखनऊ के हैं ।

अच्छा, सब राजी खुशी में हो गोप और गोपियां, नहीं तो गोपियां कहेंगी क्यों मम्मा खाली एक तरफ देखती है । नहीं, आपसे पूछते हैं, हमजींस से, तो देखो अभी बेहद बाप से अपना पूरा-पूरा हक लेने के लिए पूरा पुरुषार्थ रखते रहो और रखते चलो । ऐसा बाप फिर नहीं मिलेगा । ये प्राप्ति फिर नहीं होगी, होने का टाइम अभी है इसीलिए अपना लगाते चलो । नुकसान क्या पड़ता है यह तो बताओ भला । नुकसान ही क्या पड़ता है, फायदे की ही बातें ही मिलती हैं फिर क्यों अपना उसमें क्यों अपना वहम संशय लाते अपना क्यों टाइम वेस्ट करना चाहिए इसीलिए जब आया है बाप तो उससे अपना लेने में पूरा पुरुषार्थ रखते रहो । कहीं बिचारे मूंझते हैं, पता नहीं कहते हैं परमात्मा आया है, कैसे समझे क्या है, शक्ल वकल क्या है, क्या है, शक्ल तो मनुष्य की उसमें आता भी साधारण अति साधारण तन में है इसीलिए बेचारे मूंझते हैं, हमतो उनको कहते हैं चलो समझो परमात्मा आया है नहीं आया है, चलो विनाश होगा या नहीं होगा, चलो जो कुछ होने का है या नहीं होने का है लेकिन तुम्हारा बिगड़ता क्या है? जो कुछ तुमको मिलता है उसमें ही तो बताओ तुम्हारा बिगड़ता क्या है? अगर कुछ बिगड़ती हो तो ख्याल करो कि पता नहीं परमात्मा है या वह बोलता है या नहीं, फिर हम माने उसकी या ना माने । वो इतना विचार भी उसमें किया जाता है जिसमें हमारा नुकसान भी कुछ होता हो लेकिन हमारा बिगड़ता क्या है । हम अपने प्रैक्टिकल जीवन को देखें तो हमारा बिगड़ा क्या है बताओ कोई ।

किसी ने भी बनाई है, जिसकी भी नॉलेज से बनी है, जिससे भी हमारी जीवन बनी है अच्छी बनी है ना, फायदा हुआ है ना, अच्छी बातें मिली है ना, लाइफ अच्छी रही है ना, तो नुकसान क्या पड़ा है । किसी ने भी बनाई है, चलो परमात्मा है या नहीं है, किसी ने भी बनाई है हमारा बिगड़ा ही क्या है, तो अभी इस पर तुम्हें मूंझने की क्या बात है । इसी में ही मूंझ करके हट जाना यह तो बड़ा महामूर्ख गिना जाएगा । भाई तुम्हारा बिगड़ता क्या है यह तो कोई बतलाए । हम अपने जीवन को देखें तो हमारा बिगड़ा ही क्या है तो हम हटे ही क्यों । कौन भी हो, चलो परमात्मा नहीं है, थोड़े समय के लिए सारा ज्ञान भुला दो, ना परमात्मा है, ना विनाश होगा, ना कुछ होगा कुछ नहीं है, चलो थोड़े समय के लिए सब ज्ञान भूल जाओ फिर देखो क्या रहता है, जो रहता है वह खोने की चीज है? जो बाकी जा करके रहता है, चलो परमात्मा नहीं है, विनाश नहीं होगा, कुछ नहीं, यह सब बातें झूठी है, चलो थोड़े समय के लिए एक सेकंड सारा ज्ञान भुलाके फिर भी देखो तो ज्यादा क्या है? मिलता ही है, लाइफ कितनी अच्छी बन गई है, लाइफ में क्या मिला है, लाइफ हमारी जरूर इसी जीवन में अगर इतना है और इसी जीवन में हमको इतना आधार और सहारा मिला है जिस चीज से तो इसका जरूर है कि हम जो करते हैं उसका भविष्य भी जरूर होगा । चलो हम भविष्य में वह ना माने की देवता होंगे, लक्ष्मी होंगे, नारायण होंगे ना होंगे, कुछ नहीं, चलो लेकिन जो करते हैं उसकी रिजल्ट तो जरूर होगी ना । तो भी हमारा बिगड़ता

क्या है । हमें तो आश्चर्य लगता है जब इसी तरह की छोटी-छोटी बातों में कि पता नहीं कैसे समझे, यह होगा, विनाश होगा, परमात्मा है या नहीं है इसी बातों से अपने को क्यों हटाते हैं यह मुझे आश्चर्य लगता है । हमारा बिगड़ा ही क्या है? हमारा जाता ही क्या है? हमें तो और ही मिलता है ना, तो जो चीज मिलती है जो प्रैक्टिकल लाइफ में चीज आती है उसमें तो हमको दृढ़ रहना चाहिए ना । उसी के कारण हम हट जाए तो उसको क्या कहेंगे महामूर्ख । मूर्ख तो पहले ही हैं लेकिन फिर भी इतना प्रैक्टिकल चीज देखते, कहते हैं कुछ आंखों से देखें, कुछ प्रैक्टिकल देखें तो प्रैक्टिकल देखो ना, प्रैक्टिकल जो जीवन में चीज आती है, आप हरेक अपने अनुभव से पूछो, कुछ तो जीवन में समझते हो ना पहले क्या कहते थे अभी क्या हैं, देख लो फलाने फलाने फलाने किसके नाम कितने लें तो देख लो जो जो जिन्हों के जीवन में परिवर्तन आए हैं और सच सच आए हैं वो अपना देखें, जिन्होंने सच पाया है बाकी तो जो आते हैं खाली ऐसे ही थोड़ा बहुत उसकी तो बात ही नहीं है लेकिन सच सच । हम तो अपने अनुभव के आधार से कहेंगे ना तो हमारा क्या बिगड़ा है, हम अपने से पूछते हैं कि हमारा गया ही क्या है, हमारा बिगड़ा ही क्या है । बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे जीवन, बहुत अच्छे जीवन में रोशनी मिली है, अच्छी जीवन बनी है, उसका असर आया है और प्रैक्टिकल आया है तो हमारा बिगड़ा ही क्या है । तो क्यों हम फिर ऐसी बातों से फिर हटने की कोई बात आती है? चलो भगवान ने ना बनाई किसी ने भी

बनाई, बनाई ना? बनाई ना मतलब बनाई फिर बनाई तो फिर बाकी क्या है । उसी में मूंझना या फिर उसी में हटना या उसी में थकना या उसी पुरुषार्थ ढीला करना ऐसी बातें क्यों होनी चाहिए । इसी पर आश्चर्य लगता है जब कई ऐसे हट जाते हैं न चलते चलते तभी उसी के ऊपर तरस पड़ता है कि हाय, ऐसी अपनी ऊँच में ऊँच तकदीर बनाने का यह सब तरीका जो मिल रहा है इससे ऐसे क्यों हटते हैं । कौन भी हो बनाने वाला, कुछ हो न हो लेकिन हमारी जीवन तो बनती जा रही है और बनती है उसका यह तो जरूर है कि जो हम करते हैं सो पाएंगे भी जरूर, इसमें हमारा जाता ही क्या है । तो भी पता नहीं क्यों हट जाते हैं, ठंडे हो जाते हैं, कभी यह हो जाते हैं, हाँ, होते हैं ना? कैसे? ठंडे होने वाले जरा सोच लो, थकने वाले जरा सोच लो, संशय में आने वाले जरा सोच लो, मूंझने वाले जरा सोच लो तो इसमें क्या बिगड़ता है इसीलिए जरा सावधान हो जाओ और अपने बाप से पूरा-पूरा लेने में पूरा रहो । अच्छा, अभी टाइम हुआ है आप लोग भी सवेर में आते हो बहुत बैठते हो, थक जाते हो, जाने में भी तेरी पड़ती होंगी । अगर कोई ऐसी दिक्कत हो, टाइम वाईम कुछ हो तो सवेर कर सकते हो, हम तो सवेरे आ सकते हैं कोई ऐसी बात नहीं है इसलिए जिसको जिस तरह से क्योंकि अपना है ही सहज मार्ग और घर गृहस्थ में रहते सब, तू भी सबकी क्योंकि मेजॉरिटी होती है ना इन सब बात में । एक दो की तो बात को तो , सो भी जो सहज सबकी बने, ऐसा कुछ हो तो बताओ बाकी यह पढ़ाई बड़ी अच्छी है ।

इसकी स्टेटस बड़ी अच्छी है, इससे बड़ा बल यह अच्छा मिलता है यह तो अनुभव के आधार से देखते जा रहे हैं । देखने वाले आते हैं दिखाई ना? बाबूराम नाम है न ? अच्छा यह बाबुराम, यह तो हमारा फूल राम है ये जयपुर ये लखनऊ । बोम्बे भी ऐसा स्थान है जहां कहां से कुछ ना कुछ आते जाते रहते हैं यह भी बड़ा स्थान है, आना जाना बहुत करके होता है । यह भी अच्छा है एक दो के भाई बहनों से यह देवी परिवार हो गया ना, उन्हों के द्‌वारा एक दो का अनुभव लेना देना, यह अच्छा है । इससे और भी तरक्की होती है फिर आते हो कुछ सुनते कुछ सुनाते भी होगे है ना? अच्छा, हम बहुत राजी खुशी में है । खुश, खैराफत सुनाने के लिए आते हैं कि कहीं इंतजार ना करें, हम बहुत राजी खुशी में हैं, अपनी नब्ज सबको दिखाने के लिए आते हैं । देखने भी आते हैं, दिखाने भी आते हैं कि हम बहुत खुशराजी में हैं कोई फिक्र नहीं और आप सब राजी खुशी में रहते चलते अपना कदम आगे बढ़ाते चलो । बाकी तो यह सब खाता भी तो चुक्तू करते ही चलना है कुछ योगबल से कुछ कर्म भोग से, कुछ किसी तरीके से किसी तरीके से कई जन्मों का खाता है इसीलिए उनको चुकाने में हर तरह से कोशिश करनी है इसीलिए कोशिश करते अपना खाता चुकाते क्योंकि आगे खाता ले ना जाए । वो डंडों से चुकाना वो बड़ा इंसल्ट की बात है इसीलिए यह विचार है कि डाँडो से ना चुकाएं , यह भोगना भी अच्छी है बजाय डंडों के । डंडा तो इंसल्ट है न, इन्सल्ट से अचा है ये भोगें क्योंकि भोगने में फिर भी सहारा

बल उसमें हिम्मत आती है भोगने में तो नहीं आएगी ना, सजाओ से भोगने में तो जरा कठिन होता है और इंसल्ट फील तो इसीलिए समझते हैं कि कुछ योग बल से कुछ पुरुषार्थ से मतलब यहां ही चुकाएं तो इसीलिए यहां चुकाने में अच्छा है बजाय आगे ले जाने से । ले जाने में फिर इंसल्ट, डंडों से फिर डंडे खाना और मारपीट से अच्छी बातें थोड़े ही हैं इसीलिए इंसल्ट कभी अच्छी थोड़ी ही होती है । उसको कहेंगे इन्सल्ट, यह है विद ऑनर, चलते अपना चुकाते रहना तो ऐसा चुकाते आगे बढ़ते रहना है इसीलिए कुछ है समझानी तो सब मिलती रहती है । जितना जितना योग को बढ़ाते रहेंगे तो योग का भी बल मिलता जाएगा । ज्ञान का भी बल, योग का भी पल, प्रैक्टिकल धारणाओं का भी सब बल यह सब जमा होते फिर जमा करना है । अभी जमा करते रहो, जमा का भी ख्याल अच्छा रखो कि हर तरफ से जमा होता जाता है , खाली बैठा हूं तो भी याद से सहज है ना तरीका, उससे भी कमाई है जमा करो । ज्ञान से भी किसी को धन दान करते हो, ये सेवा करते हो, सर्विस करते हो तो भी कमाई, जितनी कमाई कमाई कमाई और कमाई अभी सहज है । अपना खाली अटेंशन रखना है और कुछ बात नहीं है अच्छा ।

मम्मा मुरली मधुबन

054. गृहस्थ में रहते कर्मों को अच्छा बनाने की विधि

रिकॉर्ड:

माता माता माता तू सबकी भाग्य विधाता

ओम शांति, कई मनुष्य समझते हैं, क्योंकि घर गृहस्थ का है ना, यह तो जरूरी है लेकिन हां भगवान का कुछ भी करना, जानना यह तो थोड़ा बहुत कर दिया तो कर दिया, इसी तरीके से कि हां अगर भगवान को भी राजी ना करेंगे तो कहीं नाराज होकर के हमारे घर गृहस्थी में कुछ अशांति, दुःख ना आवे इसीलिए भगवान को मेहरबानी कहो, थोड़ा बहुत कुछ उनको भी राजी रखें इसीलिए कुछ ना कुछ थोड़ा बहुत कर लेते हैं ऐसे कई समझते हैं। वह भी अपने घर गृहस्थ की लालसा के लिए कि हमारे घर गृहस्थ में कोई रोड़ा न डाले भगवान, कोई ऐसी अशांति और दुःख की बात ना आवे इसलिए थोड़ा बहुत भगवान को भी राजी करते रहें तो हमारे घर में कोई अशांति और दुःख की बात ना लावे बाकी घर गृहस्थ का तो बहुत जरूरी ही है । लेकिन यह तो बात ठीक की घर गृहस्थी का तो बहुत जरूरी ही है लेकिन यह तो है कि वह कोई हम भगवान के लिए तो नहीं करते हैं ना, जो कुछ करते हैं तो अपने लिए करते हैं, अपने घर गृहस्थ के लिए करते हैं तो यह तो बात है कि घर गृहस्थ का बनना बिगड़ना

कहां से है, पहले तो उसका भी पता होना चाहिए ना । यह तो कॉमन सभी जानते हैं, जो कर्म की फिलॉसफी को मानने वाले हैं वह इतना तो जानते हैं कि जो मनुष्य कर्म करते हैं सो पाता है तो माना हमारे घर गृहस्थ में दुःख अशांति या जो भी बातें आती हैं वह हमारे कर्म का ही फल है । तो जब कर्म का फल है और वही हम खाते हैं फिर चाहे दुःख अशांति में खाएं और चाहे सुख और शांति में खाएं तो हमको पहले उस चीज का भी ज्ञान होना जरूरी है ना कि जो हम गृहस्थ में अथवा प्रवृत्ति में खाते हैं अथवा भोगते हैं उनको बनाने की जो चीज है पहली पहली कर्म उसके ऊपर भी अटेंशन और उसका नॉलेज होना जरूरी है कि हमारी गृहस्थी हमारा यह सब संसार की जो भी बनावट है वह बनती है कर्मों से तो जिस चीज से बनती है उसको पहले बनाने में क्या साधन चाहिए जिस साधन से हमारी प्रवृत्ति अच्छी बने, सदा सुख की बने तो उसी चीज को जानना और उसको बनाने का प्रयत्न भी लेना चाहिए ना क्योंकि यह चीज कोई भगवान को जानना या आत्मा को जानना या यह सृष्टि चक्र को जानना कोई अलग चीजें नहीं है यह हमारी कर्म की गति है चलने की उसी के ऊपर ही तो इन सब बातों का भी आधार है ना। भगवान का आधार भी हमारे कर्म बनाने में है उसका हाथ हमारे कर्म बनाने में है। अगर उसको ना समझे और उसको ना जाने और उससे बल न ले तो हमारे कर्म कैसे बने । तो हमको जो मदद करने वाला है उससे तो हमको मिलना है, उसे नहीं कुछ मिलना है, हमको मिलना है उससे । तो

उससे हमको प्राप्त करना है कुछ बाकी हमारे से थोड़ी ही कुछ उसको प्राप्त होने का है जो हम उसकी तरह से उनसे चलें कि जैसे कि भाई हम उसके ऊपर कोई मेहरबानी करते हैं । नहीं, उससे हमको प्राप्त करना है और अपनी आत्मा यानी खुद को जानना यह भी हम अपने को जानेंगे तभी तो हमें क्या करना है, क्या ना करना है, हम हैं कौन सी चीज तब तो हमको अपने चलने में अथवा कर्म करने में राइट अथवा रॉन्ग का पता पड़ेगा ना। तो आत्मा को जानना या परमात्मा को जानना और यह सारी सृष्टि चक्र की बातों को जानना ये ऐसे ही आवश्यक है जैसे गृहस्थी समझते हैं ना गृहस्थी में चलने में हमारा कर्म का है सारा तो अगर इन बातों को ना जाने की कर्म करने वाला कौन है और हमारे कर्म की निर्बलता क्यों आई है हमारे में और अच्छा भला अब आ चुकी है तो उसको मिटाए कैसे , निर्बलता को निकाल करके अपने कर्मों में ताकत लाए कैसे, उसके लिए भला अभी क्या करें तो उसका बल चाहिए अभी तो जरूर है कि उसको भी जाना पड़े जिससे लेना है अभी क्योंकि परमात्मा को भी जानना पड़ेगा ना। तो यह सभी जानने की बातें इतनी ही जरूरी हैं जैसे कोई समझता है ना गृहस्थी जरूरी है बच्चे संभालना उसको खिलाना पिलाना इनका यह सब कुछ करना जैसे वह जरूरी है जैसे तो क्या बल्कि उनसे पहले जरूरी है क्योंकि इन्हीं के बल के बिना और इन बातों की जानकारी के बिना हमारा गृहस्थ नहीं चल सकता है । तो इन सभी बातों का ताल्लुक परमात्मा को जानना, आत्मा को जानना, यह सृष्टि

चक्र को जानना, इन सब बातों को समझना अपने गृहस्थ को ही बनाने की चीज है और इनके बिना ऐसे ही गृहस्थी चलाना वह तो जनावर पशु-पक्षी भी चलाते हैं जैसे उसको ज्ञान थोड़ी है परमात्मा क्या मैं क्या, क्या करना है जैसे जानवरों को पता नहीं है लेकिन अपनी गृहस्थी तो चलाते हैं ना । चिड़िया देखो अपना घर बनाती हैं, बच्चे पैदा करती है, उसको खिलाने पिलाने का काम अच्छी तरह से बिजनेस भी करती हैं, जाती हैं वह ले आती हैं खाना और उन बच्चों को आ करके खिलाती है और उनकी पालना पोषणा कर करके जब उनको पंख आ जाते हैं पूरा करके अपनी ड्यूटी पूरी समझती हैं , इतना काम तो वह भी कर लेती हैं फिर मनुष्य ने भी इतना ही किया तो यह कोई समझे कि मैं ड्यूटी पालन करता हूं गृहस्थ या हम... यह फर्ज तो पहले करने हैं ना गृहस्थ के। यह भगवान को जानना ना जानना, जान लेंगे कभी भी। अभी थोड़े ही जब बूढ़े होंगे ना तब जानेंगे या तो कोई आफत आएगी तो कहेंगे हे भगवान अभी खैर करो, भगवान भी कहेगा अभी काहे का खैर करूंगा अभी तो जो तुमने करम बनाए हैं अभी तो तुमको भोगना ही है , क्यों नहीं कर्म करने के पहले ही तुम समझ लेते हो कि हमको कर्म ही कौन से करने हैं जिससे तुम्हारी ऐसी दुःख भोगने की तुम्हारी घड़ी ही ना आवे ना । तो बाप तो ऐसे कहेंगे ना कि बच्चे पहले उन्हीं बातों को पहले समझो और अपने कर्म को उसी श्रेष्ठता से बनाओ जिसमें तुमको सदा सुख प्राप्त रहे इसीलिए तो कहते हैं ना मेरी जरूरत है , मैं आता हूं वह

समझ देने के लिए और मैंने खुद भी कहा है कि जब जब ऐसा अज्ञान अंधेरा हो जाता है जिसको ही अधर्म कहा है, जब जब मनुष्य से यह सारी समझ निकल जाती है तब तक तो मैं आकर के यह समझ देता हूं तो मेरा देखा जरूरी काम है ना । इसीलिए तो मुझे भी जानना पड़ेगा ना कि मैं हूं कौन और तेरा और मेरा क्या रिलेशन है, मेरे से तुम को मिलना क्या है । तो मेरे से तो मिलना ही है , तेरे से मुझे नहीं मिलना है कुछ , बाप तो ऐसे कहेगा ना। तेरे से क्या मिलेगा मुझे, तेरे पास है ही क्या , क्या देंगे मुझे। तो तेरे से मुझे कुछ नहीं मिलने का है, मेरे से तुमको सब कुछ मिलना है इसीलिए मुझे ना जानेंगे तो दूंगा कैसे, ऐसे ही थोड़ी मुफ्त में दूंगा । ना, जब जानेंगे, समझेंगे, मुझे भी और अपने को भी तभी समझेंगे कि मैं कौन हूं । जब तलक मुझे ना जानो तब तलक अपने को भी ना जानो क्योंकि मेरे द्‌वारा ही तो तुमको अपना भी पता चलेगा ना कि तू चीज क्या है। यह तुम्हारा गृहस्थ वगैरह जो प्रवृत्ति बनी है वह कैसे बनी है । इसमें जो भी दुःख आया या कुछ भी बात आई वह कैसे आई । अभी इसमें सुख कैसे आवे । इन सभी बातों की जानकारी सिवाय मेरे और तो कोई दे भी नहीं सकता है इसीलिए तो मेरे से तुमको अपना संबंध जोड़ना ही पड़ेगा कैसे भी। तो इन सब बातों को समझना बिल्कुल जरूरी है। बाकी है ऐसे नहीं है कि यह गृहस्थ से अलग चीज है, कभी समझ लिया समझ लिया या बूढ़े होंगे फिर पीछे समझ लेंगे या कभी इस जन्म में ना समझे तो कोई दूसरे जन्म में

समझ लेंगे। नहीं, बाप कहते हैं यह भी समझने की बात है कि मैं जो समझाने के लिए आता हूं वह आता ही हूं उस जन्म पर हूं जिस जन्म पर ही समझने का टाइम है। उसके बाद कोई टाइम ही नहीं है, मैं इसके पहले इसीलिए तो नहीं आता हूं। इतना टाइम तो तुम मनुष्यों की सुनते थे, मेरी थोड़ी ही सुनते थे। मैं आया ही अभी हूं सुनाने वाला तो आप इसके पहले मेरी बातें कहां सुनते थे । मेरे नाम पर दूसरे मनुष्यों ने बैठकर जो शास्त्र, ग्रंथ आदि यह सभी यादगारो की बनाई है उन्हीं की बातें सुनते आए लेकिन अभी डायरेक्ट मेरी बात , मैं क्या समझाता हूं, मैं हूं क्या और तुम क्या हो और तेरी यह कर्म का सारा चक्कर कैसे चलता है, इन सब बातों की यथार्थ जो नॉलेज है वह तो अभी मैं आया हुआ हूं अभी मैं समझाता हूं। मैं आया ही अभी हूं समझाने के लिए । इतना समय मैं आया ही नहीं था समझाने के लिए तो मैं आया ही नहीं तो तुम को समझ कहां से मिली । तो इसीलिए कहते हैं अभी मैं समझाता हूं, अगर अब भी नहीं समझेंगे तो फिर सदा के लिए बेसमझ भी रह जाएंगे और बेसमझ रहने के कारण तुम्हारे को वह जो समझ की प्राप्ति मिले, वह नहीं मिलेगी इसीलिए बाप कहते हैं यह टाइम है, यह समय है, जो कुछ अभी मैं बतला रहा हूं और उसी को समझ करके अपने गृहस्थ को ही तो बनाना है । यह तुम्हारे ही घर गृहस्थ को बल देने के लिए और तुम्हारे ही गृहस्थ को ऊंच आदर्श पर लाने के लिए, तुम्हारे ही संसार को ऊंच बनाने के लिए , स्वर्ग बनाने के लिए ही तो

मैं भी माथा खोटी करता हूं, नहीं तो मुझे भी क्या पड़ी है । मैं तो तुम बच्चों को दुखी देख करके और अशांत देख करके तभी तो मैं आता हूं और आकर के तुम बच्चे जिस राह पर भूले हो और तुमने क्या भूल की है वह भूल आ करके करेक्ट कराता हूं और बतलाता हूं कि किस तरह से अपनी भूल को करेक्ट करके और अपने को उसी चीज पर ले आओ तो फिर तुम सदा सुखी रहेंगे। कैसे सुखी रहेंगे वह भी बतलाते हैं तुम सुखी रहेंगे कैसे लेकिन भूल गए हो इसीलिए तुमने आस ही छोड़ दी है । तुम समझते हो मनुष्य जीवन में कभी मनुष्य सुखी होता ही नहीं है इसीलिए तुमको किसी ने बतला दिया कि भाई तुम जाकर के तुम कहां ज्योति ज्योत समाएंगे या वहां कहां जाएंगे जहां से फिर दुनिया में आएंगे नहीं वहां तुमको सुख मिलेगा परंतु ऐसा नहीं है इसी संसार में सुख था । संसार में ही सुख था तो संसार में सुख कैसा था, उसकी क्या बायोग्राफी है और क्या है वह बातें बैठकर के समझाते हैं कि यह जो हमारे पूज्य देवताए थे, उन्हीं के जीवन का ही तो यह आदर्श है ना लेकिन लिखने वालों ने उनकी बायोग्राफी में ऐसी ऐसी बातें लगा दी हैं जो मनुष्यों की श्रद्धा उसमें भी कम पड़ जाती है, समझते हैं भाई राम के जमाने में भी रावण से लड़ाई हुई थी , उसकी भी सीता चुराई गई थी उसके साथ भी ऐसी ऐसी बातें हुई थी । अरे भाई ऐसों से नहीं चली तो हमारे जैसों से क्या बात होगी। हां, तो ऐसी ऐसी बातें रखी है ना और कहीं कहीं बातें शास्त्रों में भी ऐसी रख दी हैं कि हां भाई ब्रहमा भी अपनी बेटी

के ऊपर फिदा हुआ अरे शंकर, महादेव वो भी मोहिनी के ऊपर फिदा हुआ, ऐसी ऐसी शास्त्रों में बातें रखी है तो वह समझते हैं तो वो समझते हैं इन्हों से भी नहीं चली तो आज के मनुष्यों से क्या होगा। वह मनुष्य क्या इस चीज को पाकर के अपना कुछ कर सकेंगे तो वह शास्त्रकारो ने जो अपने बायोग्राफी में ऐसी ऐसी बातें लगा रखी हैं तो और ही उनका मान कम कर दिया है इसीलिए कई समझते हैं कि भाई यह बात हमारे लिए थोड़े ही है। ऐसों ऐसों से नहीं चली तो हम क्या कर सकेंगे। यह हमारे लिए नहीं है, यह तो देवताओं से भी नहीं चली फलानो से भी नहीं हुई तो हम क्या इसको पा सकेंगे तो हमारे लिए इतना ही ठीक है । हमारे लिए यह घर गृहस्थ का चलना यही सब भगवान का है। हां, फिर ऐसी ऐसी बातें मान करके फिर चल पड़ते हैं। परंतु नहीं, यह समझने की बातें हैं बहुत जरूरी कि जिस चीज में हम चल रहे हैं, बिना कर्म के तो चला नहीं जा रहा है । कर्म से सब बंधे हुए हैं और उसमें चल भी रहे हैं तो जब चल रहे हैं तो उस बात की नॉलेज होना भी जरूरी है कि उसका रॉन्ग ओर राइट एक्शंस का नतीजा जो हम भोगते हैं, इसको हम कैसे बनाएं जो हमको दुःख रूप में ना भोगना पड़े और सदा सुख रूप में भोगना पड़े । तो उसके लिए क्या उपाय है , उसके लिए क्या समझ है, उसकी नॉलेज क्या है वह जानना भी जरूरी है। बाकी ऐसे नहीं ऐसी ऐसी बातों में मूंझ करके और हम अपना ऊंच तकदीर जबकि अभी चांस है और बाप आ करके समझा रहा है तो हम उस चांस को खोते रहें और

फिर अपना वही दुःख का दुःख है सदा के लिए दुःख पाते रहें क्योंकि अभी नहीं समझेंगे और अपना यह तकदीर नहीं बनाएंगे तो फिर जब जब दुःख की दुनिया होगी ना, तब तब फिर आकर के दुःख को ही पाएंगे । इसीलिए बाप कहते हैं कि जब अब मैं दुःख की दुनिया बना रहा हूं और तेरा ही संसार स्वर्ग बना रहा हूं तो क्यों नहीं उस बातों को समझ करके और अपने जीवन अथवा गृहस्थी को सुखरूप बनाओ। तो यह है भी गृहस्थी के बनाने की चीज इसीलिए कोई ऐसा समझने में भूल ना करें तो यह बातें भी समझानी पड़ती है कि ईश्वर को समझना या आत्मा को समझना या यह सृष्टि चक्र को समझना यह कोई अलग बातें नहीं है । यह मानो अपने गृहस्थी को समझना है। बाकी नहीं तो गृहस्थी जो चलाते हैं ना, कई तो कहेंगे ना हमको तो गृहस्थी चलानी आती है, भाई कैसे आती है बच्चे नहीं पैदा कर सकता हूं, करने आता है बच्चे पैदा, उसको खिलाना पिलाना आता है, उसके लिए धंधा धोरी करने आता है, उसको कैसे चलाना है, यह तो आता है, इतना तो कोई चिड़ियों को भी आता है ना । तो यही थोड़ी बात है कि यही कोई गृहस्थी है। गृहस्थी तो उसको कहा जाएगा जिस गृहस्थी में कर्म की बल थी। अभी बाप बैठा है, कुछ भी हो जाएगा बच्चे को बाप क्या कर सकेगा। जितना कर्म का हिसाब होगा, भले धनवान होगा, पैसा होगा करके उसके लिए कुछ थोड़ा बहुत उपाय करेगा, जो कुछ करने का है। चलो उसको पढ़ाएगा, लिखाएगा या कोई थोड़ा दुःख सुख होगा उसका थोड़ा इलाज आदि करेगा बस

ना लेकिन कर्म का हिसाब कुछ ऐसा होगा तो उसमें बाप हो कर भी क्या करेगा तो वह निर्बलता है ना। वह कहेंगे ना बाप होते भी कुछ नहीं कर सकता है कोई कर्म की ऐसी बात आ जाती है तो। तो उसका मतलब है कि वो कर्म बलवान है। जो हमने किया है वही पाना पड़ता है फिर चाहे कोई बाप हो, मां हो, क्या भी हो, कुछ भी हो, क्या भी करे, वो हो नहीं पा सकता है । तो जब हम देख रहे हैं कि कोई चीज दूसरी है जो अपने ताकत में चलती है तो उसमें बाप होते भी कुछ नहीं कर सकता है, उसमें मां होते भी कुछ नहीं कर सकता है, कोई होते भी कुछ नहीं कर सकता है , भगवान कहते हैं मैं भी कुछ नहीं कर सकता हूं। तेरे कर्म अगर ऐसे होंगे तो मैं भी क्या करूंगा । भगवान कहते हैं उसमें तो मेरा भी बल नहीं चलेगा तो तेरे बाप का क्या चलेगा। मैं , जो सर्व समर्थ जिसको सर्वशक्तिमान कहते हो तुमने जो अपने कर्म बनाए हैं तुमको ही भोगना है । उसमें मेरा भी अभी काम कुछ नहीं कर सकता है । परंतु तो भी मैं बाप हूं इसीलिए फिर भी अथॉरिटी हूं तो थोड़ी बहुत राय वह भी तरीके से आ करके देता हूं जो कर्म की फिलॉसफी है उसके अनुसार कि हां तुम अपने कर्मों को अभी पापों को भी कैसे नाश करो , चलो मुझे याद करो, मेरे उसने रहो , अपने कर्म पवित्र बनाऊं तो तेरे जो पाप है ना वह दग्ध होते जाएंगे। हां, इसी तरीके से मैं फिर तुमको हेल्प करता हूं । वह भी मुझे तुमसे तुम्हारे कर्मों से कराना पड़ता है ना ऐसे ही थोड़ी तुमको ऐसे ही माफ कर देंगे । तो मैं अथॉरिटी हूं मैं भी नहीं कर

सकता हूं । तेरे कर्म को भी तेरे से बनवा करके तेरे से सुधार करके तेरे से बनवाना पड़ता है। तो भगवान होते भी कुछ नहीं कर सकता है तो मनुष्य क्या करेगा, बताओ। तो इसीलिए भगवान कहते हैं मैं भगवान भी तभी गाया हुआ हूं कि मैं आकर के फिर तुम्हारे कर्म को सुधार करके इसी तरीके से तुम्हारे कर्मों को बलवान बनाता हूं । तो बनाने की नॉलेज और उसका बल देना मेरा काम है इसीलिए मुझे भगवान कहते हैं, बाप कहते हो, सर्वशक्तिमान कहते हो इसीलिए । बाकी मनुष्य तो कुछ नहीं कर सकता है ना । मैं फिर भी यह कर सकता हूं इसी तरीके से क्योंकि इसकी समझ मेरे पास है, तुम तो सभी कर्म के चक्कर में वह भूल गए हो। मेरे पास उसका नॉलेज है इसीलिए मैं तुमको समझाता हूं , उस रोशनी से फिर तुमसे अच्छे काम कराता हूं, उसका तुमको हिम्मत और बल देता हूं, उसी आधार से तुझे चला करके तेरे कर्म अच्छे बना करके फिर तेरा गृहस्थाश्रम या संसार स्वर्ग बनाता हूं इसीलिए फिर तुम मुझे कहते हो हां तू बनाने वाला है तू बिगड़ी को संवारने वाला है तू पतितों को पावन करने वाला है, तू दुःखहर्ता सुखकर्ता है वही मेरी महिमा करते हो, क्यों करते हो इसीलिए करते हो । तो मैं भी तो तुम्हारे कर्मों से ही तेरे कर्म बनाता हूं ना, बाकी ऐसे नहीं ऐसे ही बना लूं बिना कुछ मेहनत के मुझे भी तो आ करके तेरे से कर्म करा करके ही तो बनाना पड़ेगा बाकी ऐसे नहीं भगवान है तो ऐसे ही बना देवें । भगवान के गले थोड़ी ही पड़ना है । कई तो ऐसे ऐसे समझते हैं भगवान है तो

भगवान ऐसे ही कर देवे ना। यह तो है जैसे भगवान के गले पड़ना । कोई किसी के गले पड़ते हैं ना तो उसकी सारी ले लेते हैं कहते हैं कि भगवान है ना अभी हमारा सब कुछ आप ही ठीक कर देवें । अरे भगवान कहते हैं आप ही क्यों करूंगा। इसीलिए ही मैं भगवान थोड़ी हूं आपे ही करूंगा करूंगा । कराऊंगा तेरे से ही, करन करावनहार। मैं कराऊंगा तो तेरे से ही कराऊंगा ना । तेरे ही कर्म से तेरे ही कर्म को सुधार करके उन्हीं कर्म का फिर तुमको फल अच्छा मिलेगा ही । बाकी ऐसे नहीं तेरा कर्म मैं करूंगा या मैं अपने आप करूंगा , नहीं । बाकी हां, उनकी समझ देना, उसको बैठ करके समझा करके फिर उनको हिम्मत देना, बल देना, हर तरह का सहारा देना, तेरा मां-बाप सब मैं बनता हूं इसी लिए कि हां तू मेरा अभी संग पकड़, अभी सब तरफ से अपना बुद्धि हटा, अभी मन को मेरे में लगा, यह सभी मैं इतनी हिम्मत, इतना साहस, इतना यह बल, यह सभी बातें मैं देता हूं। बाकी क्या करूंगा, बाकी तो करना जो कुछ है वह तुमको करना है ना परंतु हां तुमको अभी वह समझ नहीं है इसीलिए मेरे समझ लेने का तुमको सहारा लेना ही पड़ेगा , मेरी मत लेनी पड़ेगी। ऐसे नहीं है यह तो हमको है ज्ञान , अपने ही कर्म को अपने आप ठीक करना , आपे ही करो, देखो । नहीं, इसीलिए कहते हैं मेरी मत लेनी पड़ेगी। बिना मेरी मत लिए अथवा ज्ञान के लिए और मेरे साथ योग रखना ही पड़ेगा, उनके लगाए बिना तुमको बल नहीं मिलेगा इसीलिए तुमको मेरा सहारा पकड़ना ही पड़ेगा। बाकी ऐसे नहीं है अपने आप , नहीं

लेना ही पड़ेगा। तो लेना ही पड़ेगा इसीलिए मैं आकर के समझाता हूं कि कैसे लो, किस तरीके से लो इसीलिए तुमको मुझे जानना पड़ेगा, अपने को जानना पड़ेगा, यह सारा चक्कर को समझना पड़ेगा और समझ करके फिर हम कैसे ऊंचे जा सकते हैं उन्हीं सभी बातों को समझ करके ऊंचा उठना पड़ेगा। पड़ेगा ना , करना पड़ेगा ना। कैसे भी करना पड़ेगा । ना करेंगे तो फिर ना पाएंगे यह तो कॉमन कहावत है। जो करेगा सो पाएगा ना करेगा तो फिर ना पाएगा लेकिन है गृहस्थ के लिए ही, है अपने ही जीवन के बनाने की चीज । गृहस्थ क्या है, प्रवृत्ति क्या है, यह कर्मों का ही तो है ना कोई पति बना , कोई पत्नी बनी, कोई बाप बना, कोई बेटा बना, कोई कुछ बना, कोई कुछ बना, यह क्या बना, काहे से बना यह बनावट कहां से बनी, कर्म के हिसाब से ना। तो यह बनावट भी तो पति पत्नी तो कर्म से ही बने ना । तो जिससे बने हो उसको बनाना सीखो ना । कर्मों से पति-पत्नी बने , पत्नी पति बनाया कर्मों ने, कर्मों ने बाप बेटा बनाया लेकिन कर्म को कैसे बनाया जाए जो अच्छे बाप बेटे बने, जो अच्छे पति पत्नी बने। बने तो ऐसे पति-पत्नी बने, बने तो ऐसे बाप बेटे बने, तो उसको बनाने की तरकीब चाहिए ना । तो पति-पत्नी कर्मों ने बनाया और कर्म को किसने बनाया। तो वो आकर हमारे कर्म को श्रेष्ठ बनाने की नॉलेज देता है, बल देता है इसी कर्म से फिर हम ऐसे पति-पत्नी बनते हैं। ऐसे समझते हो ना सब, सदा सुखदाई इन्हों के पास कभी कोई दुःख नहीं, कभी ऐसे नहीं कि हां स्त्री को छोड़कर पति चला

जाए कभी विडो नहीं, कभी कोई दुःख नहीं, कभी अकाले मृत्यु नहीं, कभी कोई रोग नहीं, कभी कोई बात नहीं सदा सुख की। तो सदा सुख की जो बात है और सदा सुखदाई जो कहा जाए ऐसे सुख की प्रवृत्ति बनाना उसके लिए कहते हैं क्या चीज चाहिए उसको अभी समझो । तो देखो यही प्रवृत्ति गृहस्थ बनाने का ढंग बाप आकर बनाना सिखाते हैं बाकी कोई थोड़ी और कुछ सिखाता है । वो ऐसे नहीं कहते हैं की प्रवृत्ति गृहस्थ तुम्हारा है नही। है, परंतु जिस ढंग से होनी चाहिए अभी तुम्हारी बेढंग सी हो गई है। देखो उसमें अभी मजा नहीं रहा है इसीलिए यह तुम्हारी गृहस्थी अभी बे ढंग की हो गई है । अभी मैं ढंग वाला बनाता हूं अर्थात उसको कायदे से, ईश्वरीय नियम के मुताबिक यह कैसी प्रवृत्ति होनी चाहिए वही तो बनाता हूं ना। तो उसको कैसे बनाओ वही तो बाप समझाते हैं बाकी दूसरी थोड़ी कोई बात है इसलिए उसको दूसरा मत समझो। समझा तो समझा, नहीं समझा तो कोई हर्ज नहीं है । हां, चलो थोड़ा बहुत भगवान को थोड़ा ऐसे ऐसे करते रहेंगे जिससे वह खुश रहे, जिससे कहीं हमारी गृहस्थी में कुछ ना गड़बड़ डाल देवे इसीलिए उसको करते हैं, नहीं हम करते हैं अपने ही लिए। वह नहीं हमारी गृहस्थी में कोई दुःख लाता है तो इसीलिए हमारे में दुःख लाने के हम ही निमित्त है ना, सुख लाने के भी हम ही निमित्त हैं लेकिन किस चीज से, कैसे उसकी सभी बातों को समझो इसलिए यह बड़ी आवश्यकता चीज है । इसी आवश्यक चीज के ऊपर ऐसे अटेंशन देना चाहिए जैसा गृहस्थ की दूसरी बातों

को अटेंशन देते हो । समझते हैं कमाएंगे नहीं तो खाएंगे कहां से, जरूरी समझते हो ना तो जैसे वह जरूरी समझते हो उससे पहले यह जरूरी है क्योंकि कमाते हो कर्म के हिसाब से । अगला किया है वह खा रहे हो ठीक है ना । परंतु कोई कर्म की भी ऊंची नीची है तो फिर नींचा ऊंचा भी है लेकिन हम सदा के लिए निश्चिंत और सुख पाते रहे वह तो चीज नहीं है ना । यह तो पुण्य से सब चलता है । परंतु बाप कहते हैं निश्चिंत तुम्हारी लाइफ और सदा सुख ही चलती रहे, गारंटी से सुख की चलती रहे । ऐसे नहीं जो होना होगा, नहीं। ये ऐसे नहीं कहते जो होना होगा वह गारंटी है कि हमको सुख प्राप्त होना ही है । जो होना होगा, होगा ही नहीं ऐसा कुछ। इसमें तो कोई ऐसी ग्रारंटी नहीं रहती है ना जीवन में। वह कहेंगे कोई भले इसमें भी कुछ ऐसा कुछ रहता, जो होना होगा देख लेंगे, जो होना होगा ऐसी ऐसी भी रख करके बिचारे कई चलते हैं परंतु नहीं, इसमें गारंटी है कि कुछ होना ही नहीं होगा, कोई ऐसी दुःख की बात ही नहीं है तो ऐसी अगर जीवन हो जाए तो अच्छी बात है ना। तो ऐसी जीवन के लिए और ऐसी अपनी प्रवृत्ति और आदर्श बनाने के लिए अगर ये उपाय मिलता है तो उसको आवश्यक समझना चाहिए। बाकी किया ना किया, थोड़ा सुना ना सुना, या कुछ धारण किया ना किया ऐसी बातें नहीं है। उसकी लगन होनी चाहिए और उसी लगन से चलना चाहिए क्योंकि यह अपने बनाने की लगन है । जैसे ये भी लगन रखते हो कमाने की, बच्चों को संभालने की लगन रखते हो ना, लेकिन वह तुम्हारे

बस की नहीं है , कर्म के वश अनुसार है । जितने कर्म किए हैं उसी के अनुसार चलेगा बस, उसमें आप एक जरा सा भी आगे पीछे नहीं हो सकते हो तो कर्म के अंदर हो गए ना। वो है कर्म को अपने बल में ले आना, कर्म हमारे बस में । अभी आप कर्मों के वश हो । कुछ भी हो जाए नीचा ऊंचा कहेंगे हां तकदीर, किस्मत । लेकिन क्यों ना हम वो किस्मत बनाए जिसमें हम सदा निश्चिंत, सदा सुखदाई रहे वह तो लाइफ यह है ना। इसीलिए ऐसी लाइफ के लिए अपना जो कुछ धारण करने का है उसको बराबर जरूरी समझ करके लेना चाहिए और उसके लिए ऐसी लगन रखनी चाहिए और उसी लगन से चलने से ही हम कुछ पा सकेंगे । और हर बात में ही लगन से ही पाना होता है ना ? कमाने के भी लगन है, फलाने का भी है लग्न है, जब लगन है तभी तो कुछ कर सकते हैं ना, बिना लगन के हो नहीं सकता है। तो यह चीज भी लग्न रखनी चाहिए क्योंकि कई जो इसको अलग समझते हैं ना अलग ना समझो, अपना जीवन का पहला पहला इसको साथी समझो, इसकी लगन जरूरी चाहिए। बिना इसकी लगन के फिर वो हम पा भी नहीं सकते हैं। तो यह ऐसी जरूरी चीज को पूरा ध्यान देते और उसके लिए पूरा पुरुषार्थ करते चलना है । अच्छा अभी टाइम हुआ। हां टोली दो । पूरा पूरा ध्यान रखने का है, इसमें गफलत नहीं होनी चाहिए या पुरुषार्थ ठंडा नहीं होना चाहिए या किया ना किया या कुछ ऐसा नहीं। क्योंकि यह कॉमन मत समझो, क्योंकि बहुत सत्संग बहुत बातें चली है ना इसीलिए बेचारे कई समझते हैं यह

तो होता रहते है, यह तो कई कुछ, कोई कुछ कहता है कोई कुछ कहता है। अच्छा यह भी कुछ कहते हैं तो इसी तरीके से यह भी कुछ है ऐसा,नहीं यह तो स्वयं, जो अथॉरिटी है परमपिता परमात्मा वह अभी हमें क्या सुना रहा है, वो सुनाता ही इधर है । उसने मुख का आधार ही जिसका लिया है उसी से सुनाएगा ना, बाकी सबके मुख का आधार नहीं लिया है या सबसे वह सुनाता है ऐसी बात नहीं है। ऐसा अगर कोई मिसअंडरस्टैंड करता हो तो हां उसे यह बात समझनी चाहिए। नहीं, वह कहता है मैं आता हूं और आकर के जिसका आधार लेता हूं वह भी हिसाब किताब समझाते हैं और वहां से ही मैं अपना नॉलेज समझाता हूं। बाकी जो सभी कुछ है वह मनुष्यों की अपनी-अपनी मत है वह भी बैठ करके समझाते हैं कि यह मनुष्य सब समझाते आए हैं यह भी भक्ति मार्ग का सब जलने का था, वह भी अभी पूरा होता है । अभी उसका भी टाइम पूरा हुआ । अब जो मैं कहता हूं मेरी सुनो और मेरी मत पर रहो, मेरी राय पर चलो । मत, श्रीमत कहा हुआ है तो अभी उसकी मत लेकर के चलने का है , जो अपना बेड़ा पार करने का है तो बाकी तो बेड़ा डूबना ही है इसीलिए बाप कहते हैं अभी पार करना है अपने को तो फिर मेरी मत पर रहकर के चलने में ही तेरा पार है अथवा कल्याण है तो कल्याणकारी बाप का पूरी पूरी मत लेनी चाहिए ना। कैसा ? मनोरम? यहां है बी होली एंड बी योगी तो फिर बात तो यही है ना तो इसके लिए हमको उनका संग भी पकड़ना पड़ता है । ऐसे नहीं है कि बस यह समझ

लिया बी होली एंड भी योगी, चलते चलेंगे , नहीं संग चाहिए । जैसा संग वैसा रंग इसलिए तो बाप कहते हैं मैं आकर के ये रोज आकरके पढ़ाता हूं, सुनाता हूं, समझाता हूं, नहीं तो मुझे क्या है आ करके रोज मैं भी एक बार कह दूं बी होली बी योगी बस काम हो गया । बाबादादा, अभी बापदादा को समझते मूंझते तो नहीं हो ना ? तो ऐसा बाप दादा और मां की मीठे-मीठे बहुत सपूत बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

055. जगधम्बा प्यारी - गीत

जगदंबे प्यारी........,

तुम्ही एक थी योग की गरिमा, तुम साकार ज्ञान की प्रतिमा,

तुम थी चेतन धीर धारणा, दैवीय गुण की थी फुलवारी

जाओ माँ जगदम्बे प्यारी,

तेरी महिमा शिव है गाता, तेरे गुणों पर रीझा विधाता,

तेरी महिमा शिव है गाता, तेरे गुणों पर रीझा विधाता,

मां तुम शिव की प्रेम मूर्ति, बच्चों को प्राणों से प्यारी,

जाओ मां जगदंबे प्यारी,

धन्य धन्य मां तेरा जीवन, तूने मन भी किया समर्पण,

जग उपकारी तू दधिची थी, अपनी हड्डी दे दी सारी,

जाओ माँ जाओ........

शिव समान विष दिल में छुपाए, सर्विस में सब कुछ थी भुलाए,

शिव समान विष दिल में छुपाए, सर्विस में सब कुछ थी भुलाए,

रोक रही थी काल चरण को, सहन शक्ति मां धन्य तुम्हारी,

जाओ मां जगदंबे प्यारी.....

सूना था आज तेरा सिघासन, तेरे बिन सूना यह मधुबन

लगती शिव बारात अधूरी, शक्ति सेना सूनी सारी

जाओ, जाओ मां जगदंबे प्यारी,

शिव ने ब्रह्मा पद है बनाया, तूने खुद को खुद ही बनाया,

शिव ने ब्रह्मा पद है बनाया, तूने खुद को खुद ही बनाया,

तू पुरुषार्थ की थी प्रतिमा, जन्म कुमारी जग मेंहतारी,

जाओ मां जगदंबे प्यारी,

कभी ना होगा फिर तेरा आना, इस बार हुआ माँ ऐसा जाना,

कभी ना होगा फिर तेरा आना इस बार हुआ माँ ऐसा जाना

जो बच्चों के बीच सदा थी, आज सदा को होगी न्यारी,

जाओ मां जगदंबे प्यारी,

सर्विस अर्थ गई हो मां तुम, जिसमें तुम खुश उसमें खुश हम,

हे आदर्श रूपिणी, लो अंतिम अलविदा हमारी

जाओ मां जाओ, जाओ मां जगदंबे प्यारी

तुम्हीं एक थी योग की गरिमा, तुम साकार ज्ञान की प्रतिमा

तुम थी चेतन धीर धारणा दैवीयगुण की थी फुलवारी

जाओ माँ जगदम्बे प्यारी,

तेरी महिमा शिव है गाता तेरे गुणों पर रिझा विधाता

तेरी महिमा शिव है गाता तेरे गुणों पर रीझा विधाता

मां तुम शिव की प्रेम मूर्ति, बच्चों को प्राणों से प्यारी,\

जाओ मां जगदंबे प्यारी.......

धन्य धन्य मां तेरा जीवन, तूने मन भी किया समर्पण,

जग उपकारी तू दधीचि थी, अपनी हड्डी दे दी सारी,

जाओ मां जाओ...,

शिव समान विष दिल में छुपाए, सर्विस में सब कुछ भी भुलाए,

शिव समान विष दिल में छुपाए, सर्विस में सब कुछ ही भुलाय

रोक रही थी काल चरण को, सहनशक्ति मां धन्य तुम्हारी,

जाओ मां जगदंबे प्यारी,

सूना था आज तेरा सिंघासन, तेरे बिन सूना यह मधुबन,

लगती शिव बारात अधूरी, शक्ति सेना सूनी सारी,

जाओ, जाओ मां जगदंबे प्यारी,

शिव ने ब्रह्मा पद है बनाया, तूने खुद को खुद ही बनाया,

शिव ने ब्रह्मा पद है बनाया, तूने खुद को खुद ही बनाया

तू पुरुषार्थ की थी प्रतिमा, जन्म कुमारी जग मेंहतारी,

जाओ माँ जगदम्बे प्यारी.....

मम्मा मुरली मधुबन

056. मन की शांति

रिकॉर्ड:

माता माता माता तू जग की भाग्य विधाता.....

कई मनुष्य कहते हैं कि हमको मन की शांति चाहिए , कॉमन आती है ना बात। तो यह कॉमन कहते हैं कि हमको मन की शांति चाहिए, अंग्रेजी में भी कहते हैं पीस ऑफ माइंड। अभी यह भी चीज समझने की है कि कहते हैं पीस ऑफ माइंड तो अभी मन की शांति, तो अभी मन में कोई हमको अशांत किया है या अशांति का कारण कोई और है । क्योंकि मन की शांति के कारण वो समझते हैं कि यह मन जो है ना, मन जो संकल्प चलते हैं इसीलिए कई समझते हैं कि इसी संकल्प को कंट्रोल कर देवें तो फिर वह चलेगा ही नहीं, शांत हो जाएगा तो पीस ऑफ माइंड हो गई इसीलिए वह उपाय करते हैं उस तरीके के कि बैठकर के हठयोग से अथवा हट से मन को जड़ बनाने की कोशिश करते हैं। इसीलिए कई आठ आठ मास वो गड्ढे खोदकर के बैठ जाते हैं या कहीं-कहीं समझते हैं कि ऐसे ही बैठे, कुछ संकल्प ना चलावे तो उसको कहा जाएगा यह पीस ऑफ माइंड हो गई अर्थात मन शांत हुआ इसीलिए मन को कंट्रोल करने की अथवा संकल्प जो चलते हैं उनको बैठकर दमन करने की कोशिश करते हैं । परंतु

वास्तव में कोई हमको संकल्पों को बैठ करके कंट्रोल करना या हमको इसको जड़ बनाना यह कोई पीस ऑफ माइंड का तरीका नहीं है क्योंकि मन का तो काम ही है संकल्प करना । संकल्प तो आत्मा की चैतन्यता है ना। मनुष्य में देखो जब संकल्प नहीं है तो डेड बॉडी है तो उसमें से क्या निकल जाती है वहीं संकल्प सोंच, चैतन्यता जो है। संकल्प और सोच नहीं है डेड बॉडी पड़ी है तो वह तो हमको कोई डेड तो नहीं बनना है ना कि हमारा कोई संकल्प ना चले कोई सोच ना चले बस, हम एकदम रेड हो जाए , जैसे रात को सो जाते हैं एकदम कुछ भी न हो , तो हमारी कोई मन की शांति की स्टेज वह नहीं है। वो इसको नहीं कहेंगे कि हम जड़ हो जाएं जैसे रात को सो जाते हैं तो कोई सोच नहीं, कोई संकल्प नहीं या मनुष्य डेड पड़ा है या कोई संकल्प नहीं कोई सोच नहीं तो ऐसा डेड हो जाना या कुछ रहे ही नहीं संकल्प का तभी कहें कि यह पीस ऑफ माइंड है इसीलिए हठ से कई बैठकर के ये तरीके अपनाते हैं। कोशिश करते हैं कि हम ऐसे हो जाएं तभी हमारा है कि मन शांत हुआ परंतु वह नहीं है। मन शांत के अर्थ को भी समझना है और और मन का मतलब यह नहीं है कि हम खाली संकल्पों को बैठ करके कंट्रोल करें। संकल्प के बिना तो काम ही नहीं चलेगा। हम तो कर्मयोगी है ना। गीता के भगवान ने कहा है कर्मयोगी, संकल्प के बिना कर्म चलेगा ही नहीं । संकल्प ना हो तो कर्म कैसे चलेगा और इधर भगवान ने कहा है कर्मयोग और उधर भगवान के लिए भी स्वयं कहते हैं कि भगवान को भी संकल्प हुआ

कि मैं सृष्टि रचूं तो जब भगवान को भी संकल्प हुआ तो हम संकल्प कैसे दमन करें। भगवान को भी एक तरफ कहते हैं संकल्प हुआ कि सृष्टि रचें तो जब भगवान भी संकल्प में आया सृष्टि रचने के लिए तो हम सृष्टि में चलने वाले वो फिर कैसे संकल्प को दमन करें। तो यह सारी चीजें समझने की है ना कि हमारे को पीस ऑफ माइंड के लिए क्या चाहिए, पीस ऑफ माइंड है कौन सी चीज। तो अभी बाप बैठ करके समझाते हैं कि बच्चे ऐसा नहीं है कि तुमको संकल्प को बैठ कर के जड़ बनाना है परंतु इसी संकल्प में जो तुम्हारे यह माया के, पांच विकारों के जो संकल्प हैं, जिसको कहा जाता है विकल्प यानी संकल्प कहा जाता है संकल्प तो कॉमन है ही । जो भी विचार चलता है उनको कहेंगे संकल्प, अभी संकल्प को चाहे विकल्प बनाओ, चाहे निरसंकल्प अथवा शुद्ध संकल्प बात एक ही है। तो एक है शुद्ध संकल्प दूसरा है विकल्प, जैसे कर्म कॉमन है जनरल ।जनरल हम जो भी कुछ करते हैं वह कर्म । कर्म के बिना मनुष्य एक क्षण भी नहीं रह सकता है तो कर्म तो जनरल है । अभी उसी कर्म को चाहे हम विकर्म बनाएं चाहे शुद्ध कर्म बनाएं अथवा श्रेष्ठ कर्म बनाएं तो एक है श्रेष्ठ कर्म दूसरा है विकर्म । विकर्म माना हम विकारों के संबंध में जो भी कर्म करते हैं वह हमारा विकर्म और उससे हमारा पाप बनता है और शुद्ध कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म जो हमारा कर्म श्रेष्ठ है अथवा विकारों के बिना उनको कहा जाता है श्रेष्ठ कर्म । तो अभी श्रेष्ठ कर्म और विकर्म, कर्म तो जनरल है ही । अभी कर्म को चाहे विकर्म बनाएं

चाहे श्रेष्ठ कर्म बनाए तो यह हुआ जैसे कर्म को चाहे हम विकर्म बनाएं अथवा श्रेष्ठ कर्म बनाए इसी तरह से संकल्प तो जनरल है ही फिर संकल्प को चाहे हम विकल्प बनाएं चाहे उसको शुद्ध संकल्प में लाएं । अभी हमको ऐसा नहीं है कि संकल्प को बंद करना है जैसे ऐसा नहीं है कि हमको कर्म को छोड़ना है लेकिन कर्म को हमको शुद्ध बनाना है अर्थात श्रेष्ठ बनाना है तो हमको श्रेष्ठ कर्म करना है जिसकी प्रालब्ध से फिर हमको उसी की प्रालब्ध प्राप्त होती है । तो अभी हमको कर्म को शुद्ध करना है ना कर्म को तो छोड़ नहीं देना है ना । कर्म को परिवर्तन में लाना है शुद्ध इसी तरह से हमको संकल्प को कंट्रोल नहीं करना है कि उसको दमन कर दो उसको ही खत्म कर दे संकल्प को, नहीं जैसे कर्म को ही खत्म कर दे ऐसा नहीं है, लेकिन कर्म को चेंज करना है शुद्ध में लाना है , इसी तरह से हमको संकल्प को कंट्रोल नहीं करना है परंतु संकल्प को शुद्ध संकल्प में अथवा जिसको हम कहें शुद्ध संकल्प उसी में लाना है तो यह निरसंकल्प । निरसंकल्प का भी अर्थ है कि विकल्पों से मुक्त संकल्प बाकी ऐसे नहीं कोई संकल्प ही ना हो । तो यह सारी चीजें समझने की है इसीलिए इसके लिए हठ बैठकर के हठयोग या बैठकर के कई तरीके अपनाना कि हम अपने को जड़ बना दे , कोई संकल्प ही नहीं चले एकदम उसका ही बैठकर के प्रयत्न करने की कोई दरकार नहीं है। हमको दरकार काहे की है कि हमारे जो संकल्पों में विकल्प है यानी माया के जो विकारों के संकल्प है उसी को कटऑफ करना है तो वह

हमारा कैसे कटऑफ हो अथवा उसी विकल्पों से हम कैसे छुटकारा पाएजभी हम विकारों से छुटकारा पाए ना । विकारों में है तो विकल्प जरूर चलेंगे और विकर्म भी जरूर होंगे । अगर विकारों को ही हम कट कर देवें तो फिर हमारे विकारों के ना संकल्प होंगे और ना हमारी विकर्म ही होंगे । तो हमको अपने विकल्पों से छूटने के लिए जिसको ही विकल्प समाधि कहा जाता है कहते हैं ना निर्विकल्प समाधि, अभी निर्विकल्प समाधि का भी अर्थ क्या है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमारा एकदम संकल्प ही ना चले, हम समाधि में चले जाए जैसे कई कहते हैं कि बस ऐसे चल जाएं उसमें कुछ पता ही नहीं चलता है इसको कोई निर्विकल्प समाधि नहीं कहते। निर्विकल्प है जिसमें कोई माया के विकारों के संकल्प जिसको ही विकल्प कहा जाता है वह विकल्प ना हो बाकी हमको अपने कर्म का अथवा श्रेष्ठ कर्म का संकल्प वो हमारा कर्म चलना ही है ना। बाकी हमको है माया से, जो बुरे विकारों के जो विकल्प हैं उन्हीं से छूटना। तो वह है हमारा भी समझने की बात कि हम विकारों से जब छुटकारा पाएं तभी हमारा विकर्म भी छूटे और विकल्प भी छूटे। तो विकर्म और विकल्पों से छूटने के लिए पहले विकारों से ही छूटना पड़े न फिर हमारे जाकर के शुद्ध संकल्प और शुद्ध कर्म अथवा श्रेष्ठ कर्म रहेंगे , जिसकी आधार से फिर हम श्रेष्ठ कर्म से अपनी ऊंच प्रलब्ध को पाएंगे। तो हमको चेंज करना है, परिवर्तन लाना है बाकी ऐसे नहीं है कि हमको संकल्प को दमन करना है या कर्म को छोड़ देना है, नहीं । ना कर्म

को छोड़ने की बात है कर्म तो छूटा ही नहीं जा सकता है। सन्यासियों के लिए भी जो कहते हैं कर्म सन्यास , वह कर्म का सन्यास तो है ही नहीं, वह तो घर गृहस्थ का संन्यास कर सकते हैं गृहस्थ व्यवहार का लेकिन जाते हैं सन्यास भी एक कर्म है ना । जा करके वेद शास्त्र ग्रंथ पढ़ना और जो भी कुछ है दूसरों को भाषण देना यह शिक्षा देना जो भी कुछ करते हैं वह भी तो कर्म है ना । तो कर्मों से तो मनुष्य छूट नहीं सकता है , हां एक छोड़कर दूसरा कर्म अपनाते हैं परंतु ऐसे थोड़ी है कर्म छोड़ देते हैं , कर्म के बिना तो रह नहीं सकते हैं। तो यह सभी चीजों को समझना है कि कर्म का संन्यास अथवा संकल्पों का एकदम दमन करना यह चीजें तो आर्टिफिशियल और हो भी नहीं सकती हैं लेकिन हमको करना क्या है कि हमारे संकल्प को पवित्र बनाना है और पवित्र तभी बनेंगे जब हम विकारों से छुटकारा पाएंगे तो हमारे संकल्प में भी पवित्र संकल्प रहेंगे और उसी के आधार से हमारा कर्म भी पवित्र रहेगा जिसको फिर कहा जाता है कर्म श्रेष्ठ अथवा हमारा संकल्प शुद्ध। तो यह सभी चीजें हमको समझनी है इसीलिए बाप कहते हैं कि मैं तुमको देखो पहला पहला संकल्प देता हूं शुद्ध बनाने का शुद्ध रहने का वो ये है कि मुझे याद करो । जब खाली होते हो तो मुझे याद करो फालतू बुद्धि इधर-उधर भागे दौड़े उससे मैं काम दे देता हूं बस मुझे याद कर तो देखो बिजी है ना अपने आप ये बुद्धि में है कि बाप को याद करना है । आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल हर वक्त अपने को इसी में बुद्धि में रखना है बाकी काम

की कोई बुद्धि देनी है तो अच्छा वह सरल काम की बुद्धि दे दो। कोई काम है जो अपना शरीर निर्वाह के लिए उसको हमको करना है उसमें कहां जरूरी है तो चलो बुद्धि को दे दो बाकी बुद्धि फालतू इधर उधर इधर उससे फिर झट से इसी काम में लग जाओ आई एम सोल सन ऑफ सुप्रीम सोल उसमें बुद्धि लगा दो तो देखो मन को काम मिल गया ना तो वह उसी में बिजी, तो उसमें तुम्हारा फायदा भी निकलेगा, तुम्हारे शुद्ध कर्म भी रहेंगे और तुम्हारा शुद्ध संकल्प भी रहेगा उससे तुमको पाप को दग्ध करने का बल भी मिलेगा, तुम्हारा काम भी होता रहेगा और तुम्हारी बुद्धि जो है या मन जो है वह उल्टे तरफ कहां इधर उधर नहीं जाएगा उसी से तुम बचे भी रहेंगे तो सेफ़्टी हो गई ना। अभी इसको कहेंगे निर्संकल्प समाधि कहो या निर्विकल्प समाधि कहो यानी इसी में स्थित रहना बाकी ऐसे नहीं है कि संकल्प को बैठ कर के दमन करना या कोई संकल्प चले ही नहीं उससे अपने को जड़ बनाना अपने को जैसे डेड बॉडी पड़ी है अपने को डेड बनाना या जैसे हम रात को नींद में सो जाते हैं संकल्प तो कोई है नहीं ऐसे अपने को बैठकर के जड़ बनाने की कोशिश करनी है नहीं, यह तो फिर हठयोग हो जाता है। यह हठ है , परमात्मा ने भी कहा है इसी हठ से मेरी कोई प्राप्ति का तैल्लुक नहीं है, मैं इसी से नहीं प्राप्त होता हूं । मैं तो प्राप्त होता हूं वह बैठ कर के मैं सिखाता हूं तो मनमनाभव देखो कहा भी है ना गीता में भी मनमनाभव, मन को मेरे में लगाओ, ऐसे थोड़ी कहा मन को जड़ बनाओ । नहीं, कहा है

मन को मेरे में लगाओ कहा ना मनमनाभव, मामेकम मुझे याद करो तो मामेकम मुझ एक को याद करो, कहा है ना याद करो तो वह भी तो बुद्धि का संकल्प हुआ ना । परंतु ऐसा नहीं कहा है कि संकल्पों को जड़ करो डेड करो या एकदम जड़ हो जाओ, नहीं। तो यह जो हठयोग और यह सभी जो बातें हैं इसीलिए कई जो पीस ऑफ माइंड या मन की शांति इसी को समझते हैं कि ये मन का जो संकल्प है उसी को दमन करना और फिर उसमें समाधि अवस्था में चले जाना , जड़ हो जाए कुछ पता ना चले उसको समझते हैं कि समाधि चढ़ गई या इनका ये होता है, नहीं। वह तो जो ट्रांस में भी जाते हैं इसको भी हम नहीं कहते हैं कि यह कोई निर्संकल्प या निर्विकल्प समाधि है यह तो ट्रांस, ट्रांस एक अलग चीज है । वह तो दीदार होता है, देखते हैं, चलो दीदार भी ना हो कुछ देखें भी नहीं ऐसे ही साइलेंस में भी कई चले जाते हैं परंतु उसको भी कोई निरसंकल्प या निर्विकल्प समाधि थोड़े ही कहेंगे वह तो हुआ कि हां शरीर से पार हो गए परंतु हमको तो उसी में रहना है ना, कर्म करना है और कर्म से हमको कर्म श्रेष्ठ बनना है उससे हमको अपनी प्रालब्ध बनानी है इसीलिए हम चुप करके ऐसे जड़ हो करके कितना समय बैठ जाएंगे । और हम को कर्म तो करना ही है हैं सोचें की ऐसे चुप करके बैठ जाएं, तो बैठे-बैठे सब कुछ हो जाएगा क्या, नहीं और भगवान का हुक्म है कर्मयोगी रहो, कर्म करो तो कर्म करने के लिए संकल्प भी तो करना पड़ेगा ना । इसीलिए बाप कहते हैं यह संकल्प श्रेष्ठ कर्म तो अनारी चीजें हैं ।

इसको जड़ बनाना यह तो आर्टिफिशियल है चीज। यह संकल्प भी अनादि है। संकल्प सोच और ये कर्म तो कर्म सृष्टि तो अनादि है ना, इसको कहा ही जाता है कर्म क्षेत्र तो यह कर्म की क्षेत्र भी अनादि है ऐसे नहीं कि कभी यह कर्म की क्षेत्र थी ही नहीं। यह बोना और पाना बोना और पाना यह सृष्टि अनादि है तो कर्म है तो संकल्प भी है, सोच भी है यह दोनों चीजें है ही साथ । कर्म बिना संकल्प सोच के बिना तो हो ही नहीं सकता है तो कर्म क्षेत्र अनादि है तो संकल्प , सोच भी अनादि है इन्हीं अनादि चीजों को बैठकर के जड़ बनाना या डेड करना उनका बैठ करके पुरुषार्थ करना यह तो व्यर्थ पुरुषार्थ है इसीलिए बाप कहते हैं यह हठयोग और यह सभी तरीके जो हैं ये तो नियमों के बरखिलाफ हैं। मेन है ये संकल्प सोंच कर्म अनादि है। अनारी चीजों को बैठ करके खत्म करना या उनके लिए हम डेड बनाएं इसकी तो कोई जरूरत ही नहीं है ना। हमको जरूरत है उसमें हमारे जो विकल्प आएं हैं। विकल्प आए हैं पीछे हमारे जो विकर्म हुए हैं तो विकर्म और विकल्प आने के नतीजे में जो हम दुखी हुए हैं उन्हीं के कारण ही दुखी हुए हैं ना। वह हमारे दुख के कारण बनाने वाली जो चीजें हैं विकर्म और विकल्प वह कैसे छूटे । वह छूटेंगे तभी जब विकार ही निकल जाएंगे । विकार ही निकल जाएंगे तो ना विकल्प होगा ना विकर्म होगा तो हमारा क्या हो जाएगा शुद्ध संकल्प और शुद्ध कर्म रह जाएगा। इसी से फिर हमारी प्रालब्ध भी श्रेष्ठ रहेगी। तो यह तो सीधी बातें हैं ना इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे अपने संकल्प को

शुद्ध बनाना यही निरसंकल्प समाधि है और यही निर्विकल्प समाधि है बाकी ऐसे नहीं इसको जड़ बनाना है। शुद्ध बनाना है ना की जड़ बनाना है यह कंट्रास्ट समझना है । कई समझते हैं कि इनको जड़ बनाना है, जड़ समझते हो ना एकदम इसको डेड कर देना जैसेये जड़ वस्तू है ना, इसको जड़ कहेंगे चैतन्य नहीं है यह जड़ है, तो उसमें अपने को जड़ कर देना यानी कुछ एकदम जैसे कि पता ही ना रहे तो वह तो अपने को जड़ बनाना है ना । आत्मा तो चैतन्य है और मन बुद्धि सहित है, उसमें संकल्प और सोच है तो हमको संकल्प सोच वाली आत्मा को पवित्र बनाना है ना की संकल्प सोच को जड़ बनाना है । तो जड़ बनाने और शुद्ध बनाने का डिफरेंस है तो हमको जड़ नहीं बनना है हमको शुद्ध बनना है तो हमको शुद्ध बनने के लिए हमको परिवर्तन लाना है अपने संकल्प में अपने कर्म में चेंज लाना है , इसके लिए हमको चेंज की जरूरत है ना कि उनको जड़ बनने की जरूरत है तो इसीलिए कई बैठकर के यह हठयोग या प्राणायाम या यह समाधि चढ़ाना या यह सब जो बैठकर के तरीके कई अपनाते हैं पीस ऑफ माइंड के लिए यह कोई पीस ऑफ माइंड का तरीका नहीं है तो यह सभी चीजें भी समझने की है । कई समझते हैं कि देखो अभी ये समाधि में चला गया ये पीस ऑफ माइंड में चला गया परंतु वो पीस ऑफ माइंड नहीं है पीस ऑफ माइंड का भी अर्थ समझना है न। तो यह तभी है जब हमारे को ये अशांति हमको आती कहां से है वह पीस ऑफ माइंड कहा जाता है शांति और अशांति दो

शब्द है ना तो शांति और अशांति का कंट्रास्ट जो है ना वो सारा हमारे कर्म से तैल्लुक है । तो यह सभी चीजों को समझना है हमको शांति भी तब मिलेगी जब हमारे कर्म श्रेष्ठ हैं और उसके अनुसार हमको जो प्रालब्ध प्राप्त होती है उसी में हम सुखी रहते हैं तो शांत हैं , नहीं तो फिर अशांति और दुख के कारण, बाकी ऐसे नहीं है कि मन चलता है उसी से अशांत है मन हमारा विकल्पों में चलता है , विकल्प और विकर्म हमको दुखी करते हैं। तो हमको छुटकारा होना है उन्हीं विकारों से जो हमारे विकल्प और विकर्म बनाते हैं । तो इसीलिए हमको मन को जड़ बनाना या कई समझते हैं शरीर में ही ना आवे, इसी से कई तो समझते हैं शरीर में ही ना आवे, तो शरीर में ना आवे तो यह जो एम है कई ऐसे समझते हैं वह भी रॉन्ग है । तो ना मन में आवे ना शरीर में आवे यह जो विचार करते हैं इसीलिए मन को बैठकर के दमन करना या शरीर से कहीं चले जाना है पार ऐसे ऐसे जो बैठकर के जो साधनाएं करते हैं इन्हीं साधनाऔ की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमको शरीर में आना है, आत्मा मन बुद्धि सहित है इसको शरीर में आना ही है । तो आना है उसमें हमको किस तरह से चलना है किस तरह से हमको रहना है और किस तरह से हमको अपने कर्मों को श्रेष्ठ रखना है उसी चीज को समझना है । तो उसी के लिए बाप कहते हैं कि मैं आकर के वो नॉलेज समझाता हूं कि तुम कौन सी चीज हो और तुमको शरीर में किस तरह से रहना चाहिए और तुम्हारी पवित्र स्टेज क्या है वो चीजें मैं जानता हूं

इसीलिए मैं आकरके तुमको वो समझाता हूं जिसको समझने से फिर तुम सदा सुखी रह सको। तो यह सभी बातें यथार्थ समझने की है बाकी इसके लिए बैठ करके जिसके मन में जो आया किसी ने समझा कि यह मन ही ना हो ना , यह जो संकल्प चलता है कि यह हो वह हो ईसीलिए कई समझते हैं कि हम इच्छाओं को दमन करें, यह इच्छा को दमन करें, कई समझते हैं फिर यह जो इच्छा जो है वही हमको अशांत करती है या कोई इच्छा ही ना करें, समझो जो प्राप्त है वही सब ठीक है फिर चाहे हमको रोग आवे ना तो भी हम समझे यह भी भगवान ने दिया है, यह भी ईश्वर का दिया हुआ यह सब कुछ ईश्वर का दिया हुआ मीठा करके भोगो ऐसे ऐसे बैठ कर के देते हैं फिर हां में हां मिलाते हैं ठीक है ऐसे ऐसे रख करके उसको भोगते हैं, वह तो हुआ टेंपरेरी अपने दिल को तसल्ली देने के लिए हां भाई जो दिया है ईश्वर ने दिया हैं अब इसमें क्या करें। आया है दुख तो उसको किसी तरह से तो अपने मन को शांत रखने के लिए, वो तो है किसी को तसल्ली देना होता है ना उसी तरीके से लेकिन प्रैक्टिकल तो जो चीज है जिससे हमको अशांति दुख होता है वह चीज हमारे से मिटे कैसे, क्या रोग हमसे मिट नहीं सकते हैं, क्या हमारे अशांत और दुख के जितने भी कारण हैं वह क्या मिट नहीं सकते हैं, उसको हम ईश्वर का थाना समझ कर कि मीठा कर करके भोगे कि आया है तो भोगना ही है , मीठा करके भोगो तो भी भोगना पड़ेगा कड़वा करके भोगेंगे तो भी भोगना ही पड़ेगा इससे तो अच्छा मीठा मीठा करके

भोगते हैं वह तो हुआ दिल को तसल्लियां दे करके उसी बात को चलाना परंतु क्या हमारे प्रैक्टिकल कर्मों में ये चीज आती क्यों है। इन्हीं का कौन सा उपाय है जो हम इन चीजों से छुटकारा पावे । तो बाप कहते हैं बच्चे ये चीजें कोई जरूरी नहीं है, ये अशांति रोग अकाले मृत्यु यह सब दुख के जितने भी कारण है यह कोई जरूरी नहीं है जिसको फिर तुम समझो ईश्वर का धाना, ईश्वर ने यह सब दिया है, मैं कोई तुमको बैठकर के रोग दूंगा क्या या अकाले मृत्यु दूंगा क्या , में क्यों तुमको दुख और ये सभी चीजें ये तो तुम्हारे कर्मों से लेकिन कौन से कर्म यही विकर्म, विकार के संग में जो तुमने अपने कर्म बनाए हैं उन्हीं का कारण है उन्हीं का नतीजा यह दुख है । अभी उसी का संग छोड़ फिर तुम्हारा हो जाएगा । तो यह सभी चीजें समझने की है ना तो इसीलिए कई कई तरीके बैठकर के पीछे वालों ने लगाए हैं वह तो दिल को तसल्ली देने के लिए बिचारों को जैसे-जैसे जिसने समझा । ईश्वर का धाना समझेंगे तो मीठा लगेगा । दुख तो आया है परंतु उसको दुखी होकर के भोगे उससे अच्छा ईश्वर का समझेंगे तो थोड़ी तसल्लियां परंतु ऐसे तो नहीं न, कितना काल उसी तसल्लियों में चलेंगे । दुख आता है मनुष्य पीड़ित होते हैं कई बातें होती हैं तो दुख तो दुखी ही करेगा ना , दुख का मतलब है दुखी करना। तो इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे यह दुख जो चीज ही दुख है उसके मिटने का उपाय समझो। बाकी ऐसे नहीं दुख आवे तुम उसको मीठा करके भोगो, नहीं दुख आवे ही क्यों, वह बने ही क्यों, उसको

बनाने वाला कौन , तो तुम ही हो ना उसको बनाने वाले, तुमने बनाया लेकिन किसी रॉन्ग पॉइंट से तुमने जरूर कोई भूल की है, किसी भूलवश बनाया है, वह भूल को समझो , उसी भूल को करेक्ट करो तो फिर तुम्हारा दुख बने ही नहीं और तुम दुख भोगो ही नहीं। बाकी ऐसे नहीं आए फिर उसको मीठा करके भागने के लिए तुम दिल को तसल्ली दो ये जो तरीके बताएं, नहीं यह हो ही ना ना । तो इसीलिए बाप कहते हैं बच्चे वह हो ही ना उनका तरीका कौन सा है वह मैं बतलाता हूं । बाकी तुमको दूसरे जो है ना वह यह तसल्ली के तरीके बताते हैं चलो तुम को मन का पीस ऑफ माइंड चाहिए चलो इसको जड़ बनाने का यह तरीका करो, कहां टेंपररी वो थोड़ा समय , जड़ कितना समय बैठ सकेगा। थोड़ा समय बैठ करके अपने को जड़ भी बनाएं, चलो कोई संकल्प नहीं परंतु कहां तक यह चलेगा , सारा समय तो बात होने की भी नहीं है हो भी नहीं सकता है इसीलिए टेंपररी इसको कहा जाता है टेंपररी, अल्पकाल के लिए तो यह सभी बातें हमको अल्प काल की शांति या अल्प काल का सुख या अल्पकाल का यह सब देते हैं सदा काल का तो नहीं देंगे ना । तो बाप इसीलिए कहते हैं कि मैं आकर के सदा काल की देता हूं और यह मनुष्यों के द्वारा तुमको अल्पकाल का । यह अल्पकाल, प्राणायाम फलाने फलाने जो भी यह समाधि चढ़ाना यह सब जो चीजें हैं यह सब तुमको बैठकर के अल्पकाल की प्राप्ति देने की चीजें हैं तो वह है अल्पकाल और मैं तो सदा काल का देता हूं जिससे तुम सदा

के लिए इन दुखों से छूट जाओ और सदा के लिए सुख पाओ। तो यह सारी चीजों के कंट्रास्ट को भी समझना है इसीलिए बाप कहते हैं कि मेरा काम और कोई नहीं कर सकता है तो मेरा काम नया हो गया ना । मनुष्यों के काम और मेरे काम में रात और दिन का फर्क है । मैं जो सिखाता हूं उसकी जो प्राप्ति है वह सबसे श्रेष्ठ है और मनुष्य जो सिखाते हैं और मनुष्यों से जो प्राप्त होती हैं वो अल्प काल की है इसीलिए मेरे प्राप्ति और उनकी प्राप्तिओं में रात और दिन का फर्क है । तो यह सारी चीजों को अच्छी तरह से समझना है। अच्छा टाइम हुआ है दो मिनट साइलेंस।

057. माया जीत कैसे बने

ओम शांति।

हां, बच्चे ठुकराए देते हैं, होता है ना । लौकिक में भी बच्चे नालायक कहीं निकल पड़ते हैं। कुपूत, बच्चों के लिए कहा हुआ है बाप के लिए तो कभी कुपिता या कुछ ऐसी बातें नहीं आती अलौकिक में भी । बाप तो फिर भी बच्चों के ऊपर कैसा भी बच्चा है फिर भी बाप रहमदिल ही रहते हैं लौकिक में भी। यह तो है ही बेहद का बाप, उसकी तो मशहूर ही है, रहमदिल गाया ही जाता है तो इसीलिए उसकी रहमदिली तो मशहूर है और खुद भी कहता है कि जब जब ऐसे होते हैं तब तब मैं आता हूं और क्या रहम करे। ऐसे बच्चों के पास बाप आते हैं जब पतित बनते हैं दुखी होते हैं तो बाप ही आकर के बच्चों की सहायता करते हैं इसीलिए उनको सहारा,। सहायता देने वाला यह सब नाम दिए हुए हैं ना इसी कारण। तो अभी वह बाप मिला है उसी बाप को फिर ठुकराना तो यह तो उसको कहेंगे कमबख्त। बख्तावर बाप मिला और उस बाप को पाकर के भी हम उनसे प्राप्त न करें तो उसको क्या कहेंगे, ऐसे ही कहेंगे कि बख्तावर बाप का संबंध मिलते भी और उसको ठुकराना तो वह हो गया कमबख्त, तो ऐसा तो नहीं बनना चाहिए ना इसीलिए ऐसा ख्याल रखते रहना माया है बहुत ।

माया का अभी जोर है क्योंकि राज है ना और उनका भी पिछाड़ी का अभी जितना भी ताकत है वह अभी अपनी ताकत पूरी लगाएगी । तो इसीलिए यह है कि जितना जितना बाप के बनते जाएंगे उतना उतना माया भी फोर्स देगी, लड़ेगी। लड़ेगी उनसे ना जो उनसे लड़ेंगे तो अभी हम लड़ना सीखे हैं किससे, माया से । पहले तो पता ही नहीं था ना, पहले तो थे ही माया के अर्थात मायावश थे तो वह काहे के लिए हमारे से लड़ेगी,प्यार करेगी । अभी तो प्यार नहीं करेगी ना अभी दुश्मन बनेगी । प्यार भी करेगी तो दुश्मनी अंदर करके वो टेंप्टेशन अपनी खींचने की। तो जानते हैं अभी कि अभी माया हमारी दुश्मन है इसीलिए यह सभी बातें हमारे सामने आएंगी, हर किस्म की आएंगे , कोई बंधन नहीं होगा तो अंदर से अपना कोई मन के विकल्प, फालतू वो तंग करेंगे, हर किस्म से तंग करने का चलेगा उसका। कभी बाहर से संबंध में कभी शरीर से रोग, रोग नहीं हुआ होगा अभी होगा कहेंगे इतना समय तो हम कभी बीमार नहीं पड़े अभी बीमार पड़ गए हैं , तो अभी होगा। कुछ धन की कमी पड़े, कुछ कही बातें बिजनेस में टोटा पड़े कई बातें होंगी और भी कई किस्म की दोस्त दुश्मन बन जाए, फलाने हो जाएंगे मित्र संबंधी नहीं पूछेंगे, कहीं कुछ ऐसी उलट-पुलट कई बातें आ सकती हैं और आएंगी क्योंकि अपना अभी खाता ही उससे चुकाते हैं ना। बताया ना कि अभी यह सब जो रावण का खाता था अभी उसको हम खत्म करते हैं तो अभी उससे जब हम देह सहित देह के सर्व संबंध से अभी बुद्धि हटाते हैं तो फिर वह फिर अभी

सामना भी होगा ना इसलिए संभलना है । तो ऐसी ऐसी बातों में आकर के मूंझ करके कि अरे भगवान के बने तो और ही मुसीबतें आ गई हैं ऐसे कई सोचेंगे कि जब बना हूं परमात्मा का परमात्मा मिला है मुझे, मैंने उसका सहारा पकड़ा है फिर तो मेरा सब अच्छा हो जाना चाहिए ना परंतु ऐसा नहीं, कई ऐसे ख्याल करते हैं कि भगवान के बने हैं तो सब हमारा अच्छा हो जाना चाहिए, कोई हमारे पास तकलीफ आदि नहीं आनी चाहिए परंतु ऐसा ख्याल नहीं कर बैठना। परीक्षाएं होंगी, इसीलिए उस में बहुत उलट-पुलट बातें भी आएंगी। कोई ऐसा ख्याल ना करें कि उसका मतलब शायद भगवान ही नहीं मिला है या भगवान नहीं है । पता नहीं हमको कोई उल्टे रास्ते लग पड़े हैं तभी भगवान नाराज हुआ है जो हमारे को तकलीफ हो रही है, कई कई ऐसे संकल्प आएंगे। यह सब हम बता देते हैं, क्योंकि चलते हुए सब में हो रहा है ना । ऐसे ऐसे विघ्नों में आकर के बहुत हट गए हैं। कोई मुसीबत आई, कोई बात आई तो समझते हैं शायद बना हुआ है तो शायद भगवान ही नहीं है पता नहीं क्या है। यह तो और बनाऊं शायद भगवान और ही नाराज हो गया है इसीलिए यह सब उल्टी बातें आती हैं इसीलिए बेचारे डर करके फिर किसी ने थोड़ा डराया भी या किसी ने कुछ कह दिया या अपने मन के भी आ गए कुछ संकल्प तो टूट पड़ते हैं । तो यह सब होगा और होता आया है। देखो 28 वर्ष का अनुभव है ना उसमें यह सभी बातें होती आई हैं । तो बतला देते हैं कि कौन से कारणों से जो कई टूटते हैं यह यह

कारण। है तो सब का कारण देह अभिमान, फिर देह अभिमान में कहां काम की गोली, कहां क्रोध की कहां लोभ की, कहां मोह की, कहां फिर यह सभी संशय अनेक प्रकार के, फिर ऐसी ऐसी बातें आ करके फिर माया हटाने की कोशिश करेगी । माया के हटाने के अस्त्र-शस्त्र यही है ना, उल्टी उल्टी बातें बुद्धि में ले आना, उल्टी बुद्धि बनाना तो उसका काम यही है और वह बनाएगी और यह सब होगा इसीलिए इसमें ही तो संभलना है ना । इसमें ही अपनी हिम्मत रखनी है इसीलिए बाप कहते हैं मेरे से बुद्धि योग रखो तो तेरी बुद्धि उल्टी ना बने, झट से उसको चेक कर सको, तो चेक करने की पावर रहे और चेकिंग पावर से अपने को सावधान रखो और सावधानी से फिर अपने को पार करो तो यह सभी बताए जाते हैं कि यह चलते-चलते विघ्न इसको कहा जाता है माया के अनेक प्रकार के विघ्न। तो यह सब होगा, अभी इसी से पार होने का है । बाकी ऐसा नहीं है कि अभी हमारा सब कुछ ठीक हो जाए, नहीं अभी तो पार होना है ना । यह अभी जो जन्म है इसमें तो हमको बदलना है इसीलिए उसमें तो हमको जरा मेहनत की जरूरत है । अगर सब कुछ अभी आराम मिल जाए तो फिर तो हम समझे यही बैकुंठ है, यही स्वर्ग है, फिर तो स्वर्ग को भी याद करना भूल जाए, फिर तो यह सब कुछ हो गया ठीक। नहीं, इसलिए बाप कहते हैं यह थोड़ा मेहनत परंतु है सब अंदर की मेहनत कोई बाहर से कुछ नहीं करना पड़ता है। यह भी विघ्न आते हैं और ऐसी ऐसी बातें आएंगी, इन सब बातों में अपना निश्चय

अटल रख करके और अटल के साथ में अपना पुरुषार्थ चलाना है । तो यह सभी बातों को अच्छी तरह से अपने में रखना है , सावधान करना है ना। कोई ऐसा देखा जाता है तो फिर दूसरों को सावधान किया जाता है कि भाई देखो गिरने वाले इस तरह से फिसलते हैं। उनके पांव कैसे फिसलते हैं ऐसे फिसलते हैं तो सावधान रहना कहीं तेरा भी पांव न फिसल जाए। तो फिर फिसलने से बचाना है ना । तो देखते हैं चलते चलते कईयों के पांव ऐसे फिसले। कहां-कहां से फिसलें, पहला तो बतलाया देह अभिमान, फिर कोई काम से फिसले, कोई क्रोध से फिसले, ये सब फिसलने की है ना यानी गिरने की तो यहां से सब गिरते हैं । तो यह सभी गिरने के इन्हीं से संभलना है कि कहीं ऐसा ना हो कि यह चीजें हमें गिरावट में ले जाएं तो यह सभी बातों का अनेक प्रकार से मन के संशय, संकल्प, विकल्प सभी बातें जिसमें अपने को बहुत सावधान रखने का है और इन सब बातों को यथार्‌थ रीति से समझना भी है कि यह सभी जो बातें हैं वह भी आएंगी क्योंकि यह भी सब खाता हमारा बहुत जन्मों का उल्टा है। बहुत जन्मों का है ना एक जन्म का थोड़ी है बहुत जन्मों का है और हम भी कहते हैं कि यह सभी बहुत जन्मों का जो कुछ है वह अभी चुकाना है, एक ही जन्म में । एक जन्म में हम बहुत जन्मों का खाता चुकाने का पुरुषार्थ रखते हैं तो बहुत जन्मों का खाता एक जन्म में चुकाएंगे तो बहुत जन्मों के कर्जदार भी तो अभी ना आएंगे तो कब आएंगे, बताओ। वह थोड़ी कहेंगे फिर पीछे दूसरे जन्म में

चुका लूंगा थोड़ा। आगे तो था , अच्छा इस जन्म में कुछ , कुछ दूसरे जन्म में, कुछ तीसरे जन्म में क्योंकि जन्म जन्म हम उनके थे तो हमारा ऐसे भी नहीं है कि एक ही जन्म में हम सब चुकाते थे, नहीं कुछ थोड़ा चुकाते थे कुछ रह जाता था फिर कुछ थोड़ा दूसरे जन्म में, फिर तीसरे जन्म में ऐसा हमारा स्टॉक होता आया बहुत खाते का, अभी तो एक ही जन्म है ना तो हम भी दावा रखते हैं कि हम इसी जन्म में पूरा हिसाब किताब चुकाएंगे । तो जब हमने भी इसी जन्म का पूरा रखा है तो माया भी कहेगी कि अब तो एक ये ही जन्म है । अभी इसका हमारा जो सारा कर्ज है बहुत जन्मों का वह भी तो अभी ही चुकाए न तो कब चुकाए, तो वह भी तो अभी घेरा करेगी ना। तो सब आएंगे और जोर से आएंगे । खाली इस जन्म का हिसाब नहीं है बहुत जन्मों का जो भी है वह सब , तो कर्जदार बहुत हो जाएंगे ना कई जन्म के निकल पड़ेंगे। समझ में आएगा कि हमने अभी तो ऐसा कुछ किया ही नहीं है, ऐसा दुश्मन हमारा यह क्यों बना , यह बात ऐसी क्यों आई, हमने इस जन्म में तो, कोई बुरा किया ही नहीं है ऐसा हमारा यह सब क्या हुआ, यह रोग क्यों आया, यह बात क्यों हुई, ऐसा समझेंगे परंतु नहीं है तो कई जन्मों के और चुकाने वाले भी आज ही ना आएंगे तो कब आएंगे, कल को तो तू चला जाएगा ना । उनका हो गया फिर तो ग्राफ ही चला जाएगा तो उनके लिए भी तो अभी है ना इसीलिए वह आएंगी माया हर तरह से , तो उसमें बहुत दिखाई पड़ेगा ना कि हमारे तो और ही भगवान के बने तो और ही

बहुत यह आ गए हैं तो इसलिए वह डर जाएंगे तो यह सभी परीक्षाएं, इसको कहेंगे परीक्षाएं । अभी इन्हीं सभी बातों से अपने को संभालना समझना यह नॉलेज है । ज्ञान तो इसी का नाम है ना कि कर्म की गति क्या है। यह बैठकर के डिटेल से विस्तार से बाप समझाते हैं कि कर्म का हिसाब कैसा होता है, कैसे बिगड़ता है, कैसे संवरता है और संवर करके फिर क्या बनते हो यह सभी बातें तो बाप ही बैठकर के समझाते हैं ना इसलिए यह सभी क्या-क्या होगा , होता है वो सभी बाप समझाते हैं क्योंकि हमारे सारे कर्म की नॉलेज को अथवा करम गति को , दुर्गति कैसे हुई , दुर्गति से अभी छूटें भी कैसे, फिर हमारी गति फिर सद्गति, यह सारा चक्कर का भी नॉलेज है । तो बाप बैठकर समझाते हैं ना इसलिए इसी सभी बातों का जिसके पास पूरा ज्ञान है नॉलेज है वह हिलेगा नहीं । अगर ज्ञान और नॉलेज ना रहा तो फिर हिलेगा उनके पांव फिर ढीले पड़ेंगे , फिर डरेंगे, डर आ गया तो फिर कहां वो टूट पड़ेंगे, जैसे टूटते जाते भी तभी तो हैं न आश्चर्यवत बनंति सुनंती कथंती भागंती , देखो सुनंती, कथांति बोलते बोलते भी, बहुत बोलने वाले भी, और आश्चर्य साक्षात्कार करंती, देखने वाले भी सब तरह के टूट पड़ते हैं ना। तो यह सभी होता भी आया है इसीलिए इन्हीं सभी बातों से संभलने के लिए यह सावधानी भी दी जाती है कि हां अपने पांव कैसे मजबूत रखना है उसी मजबूती के लिए यह सब हिलाने के आएंगे हर किस्म से लेकिन उसमें हिलना नहीं है । अपना जो पांव रखा है उसको मजबूत रख करके और अपना

निभा करके बाप से पूरा पूरा अपना अधिकार पाना है । तो अधिकार पाने वालों का यह बतलाते हैं कि उन्हों को कितना हिम्मत और भरोसे और बल से अपना काम लेना है । देखो यह भी हम वॉरियर्स है ना । यह अपनी है रूहानी लड़ाई, कोई हाथ पांव से तो नहीं है ना। तो हम भी वॉरियर्स हैं परंतु गुप्त हैं, हमारी लड़ाई भी गुप्त हैं । हम हाथ पाव से तो किसी से लड़ते नहीं हैं लेकिन हां हमारी अंदर अंदर की युद्ध है और उससे युद्ध कर करके हम जीत प्राप्त करते हैं तो यह है गुप्त लड़ाई । अपने ही विकारों से, अपने ही विकारी खाते से यह युद्ध है ना तो यह है गुप्त और कराने वाला भी गुप्त है । वह भी तो गुप्त बैठकरके यह सभी गुप्त बल भर रहा है ना और सावधान कर रहा है कि बच्चे सावधान होकर रहना, यह माया की पछाड़, फोर्स तुम्हारे ऊपर आएगा बहुत इसलिए इन सब बातों से हिलना नहीं । तो अभी उन्हीं बातों को समझ करके अपने पुरुषार्थ को बहुत हिम्मत और धारणाओं के साथ चलाना है और उसमें अपना उल्लास उमंग रखते बाप से क्या प्राप्त करना है उसका देखो कितना प्राप्ति का भी उल्लास रहना चाहिए कि हां चीज क्या मिलती है। कोई कम चीज नहीं है , बहुत ऊंची चीज है और ऐसी चीज है जो आराम से चलते रहे कोई कोई दुख और अशांति का बात ही नहीं है। तो ऐसी चीज पाने के लिए तो बहुत उल्लास और उमंग भी रखना चाहिए ना । ऐसे नहीं लाचारी से, चलो अभी यह तो करना ही है ऐसे लाचारी से पुरुषार्थ । कई ऐसे चलते हैं जैसे लाचारी से, उसके ऊपर जैसे

मेहरबानी करते हैं, नहीं किसी के ऊपर या उनके ऊपर कोई हमारी मेहरबानी थोड़ी ही है यह तो अपने ऊपर है ना, अगर मेहरबानी है तो अपने ऊपर करते हैं , अपने लिए है ना तो जो अपने लिए रह करके समझते और चलते, पुरुषार्थ करते हैं ना उन्हों का पुरुषार्थ ठीक रहेगा क्योंकि हम अपने लिए करते हैं और किसी के लिए नहीं करते हैं। अगर हां बिगाड़ते हैं तो भी अपना बिगाड़ते हैं सुधारते हैं तो भी अपना सुधारते हैं तो इसीलिए अपने प्रति जो खड़े हैं ना अच्छी तरह से वह अपने पुरुषार्थ में अच्छे रहेंगे और हर अटेंशन पर अपने पर अटेंशन देंगे दूसरे का नहीं देखेंगे, इसने ऐसा किया उसने ऐसा किया। भाव स्वभाव की भी बहुत बातें आती है, इधर भी दैवीय परिवार का भी, वह बाहर का तो सुनना करना बड़ा सहज है कि इसने ऐसा किया, भई अज्ञानी है वो है ना भाई अज्ञानी है, अभी यहां जो आते हो ब्राह्मण कुल के यहां वालों में से किसी ने कहा एक दो को भाई कहेंगे यह क्या, आपस में यहां भी,.... फिर यहां भी आपस में तो उसका बड़ा लगता है ना परंतु नहीं, यही तो माया है ना। माया इधर भी घुसेगी, कहेंगे देखो तुमने यह साथी बनाया ना अभी उसको छोड़कर अभी इन साथियों में भी इसको टक्कर खिलाए, इसमें टक्कर में आ करके यह छोड़ देंगे ना। जहां बुद्धि जुटाई है उसमें लगाए तो उनमें लगाने की युक्ति करेंगी इधर भी आएंगे क्योंकि हिसाब किताब तो इधर भी होगा ना। देखो यह आया है, यह भी आया है हो सकता है इन दोनों का कोई पिछला हिसाब भी इनके साथ हो ना तो इधर

आ करके कुछ हिसाब किताब टक्कर करेगा परंतु यह नॉलेज है ना कि यह जो हिसाब किताब की टक्कर है यह पिछली है इसीलिए ऐसे नहीं है कि अरे भाई यहां तो यह दोनों कहते हैं हम दोनों भगवान के बच्चे हैं, अभी भगवान के बच्चे हो करके यह क्या है तो उसमें फिर दूसरा देख करके उसमें हिले, नहीं यह हमें ज्ञान है कि हां यह भी इनका हिसाब किताब है परंतु उनको काटना है योग और ज्ञान से । ऐसे नहीं टक्कर खाकरके काटना है नहीं, वह तो हमारा विकर्म बन जाएगा ना तो उसमें संभलना है। परंतु यह ज्ञान देखने वालों में अथवा जो हैं उन्हीं सभी बातों को समझना है , नहीं तो इसमें फिर कई संशय में आ जाते हैं कि भाई देखो क्या ये ज्ञान में आकर के देखो , देखने वालों को भी आ जाएगा , अगर ज्ञान नहीं है तो कहेंगे देखो यह इधर और जो हिसाब किताब में है वह भी अपनी बातों को ना समझ करके उसमें टक्कर खा बैठते हैं तो है तो अज्ञान ना । तो यह सभी अज्ञान निकल जाना चाहिए। यह समझाया क्यों जाता है क्योंकि ऐसी ऐसी बातें हो रही है और होती हैं ना तो इन्हीं सभी बातों में सावधान किया जाता है कि ऐसे ना हो जो कई ऐसी ऐसी बातों से कभी अपना बाप से जो तकदीर लेनी है वह तकदीर लेना भूल जाए और ऐसी बातों में आ करके फिर अपना बेहद बाप से बेहद का वर्सा पाने का वो छोड़ दें है । इसीलिए बाबा हमेशा समझाते हैं न कि भले आपस में कुछ आए लेकिन ऑलवेज सी फादर । तो बाप को देखो और बाप से जो वर्सा लेना है मतलब तो उससे ही है ना इसलिए

जिससे मतलब है उसको तो पकड़ के रखो ना उससे काहे के लिए टक्कर खाते हो । टकरते आपस में हो और छोड़ते उसको हो, उसने क्या कसूर किया। आपस में टकरो और छोड़ो उसका साथ, वह तो तुम्हारा नुकसान है ना । उसको छोड़ेंगे तो तुम क्या पाएंगे नुकसान तेरा होगा। तो टकरते आपस में हो छोड़ते उसको काहे को हो उसमें तो तेरा वर्सा चला जाएगा ना तो यह तो महामूर्खता हो गई ना इसको कहेंगे महामूर्ख, मूर्ख नहीं परंतु महामूर्ख। मूर्ख तो पहले ही है कि पता ही नहीं था, जब पता ही नहीं था तो मूर्ख हो कर के बैठे थे, अभी पता होते और फिर उसको छोड़ना तो उसको क्या कहेंगे अरे महामूर्ख तो ऐसा तो नहीं बनना है ना। तो इसीलिए अपना समझते रहना तो यह सभी चीजें हैं अपने को सावधान रखने की तो इधर भी देखो अभी ब्राह्मण कुल में इधर हो ना तो इधर भी माया घुस आती है। ऐसा नहीं है कि बस यहां गेट के अंदर आए सेफ हो गए, नहीं सेफ्टी तो अपनी अपने पास रखने की है ना। धारणा नहीं है तो फिर इधर भी माया घुस आएगी, इधर भी टक्कर खिलाएगी कोई के भाव से कोई के स्वभाव से ऐसा वैसा तो ऐसी बातों में आकर के फिर कई हिल जाते हैं कि क्या है, इधर भी यही है, ऐसा ही है फिर ऐसा ऐसा,अरे! बाप है इधर, बाप पढ़ाता है, वह भूल जाएगा , यह टक्कर वक्कर की बातों में फिर गिर पड़ेंगे तो इसीलिए सावधान! यह सभी सावधानी दी जाती है। एक को गिरता हुआ देखेंगे तो दूसरों को सावधान करेंगे कि भाई देखना यहां फिसलने का है संभलना , आगे बढ़ो तो देखना, संभलना

सावधान रहना तो यह करना अपना धर्म है ना। तो यह बताते हैं कि कहां-कहां से कौन-कौन कैसे कैसे खिसकते हैं वह आप लोगों को ध्यान में दिया जाता है इन एडवांस कि हां फिर आप चल रहे हो तो खबरदारी से चलना तो खबरदारी रखने की है । तो यह सभी चीजें हैं जिसको बुद्धि में रख कर के और बाप से अपना पूरा पूरा पाना है तो फिर पूरा पूरा पांव दबके दबके चलने का है कि कहां पांव ऐसा ऐसा ना हो। तो दबके , कहते हैं ना पांव दबके और पूरी पूरी जो दृढ़ता है उसी दृढ़ता का पूरा पूरा रखते चलने का है। ऐसा नहीं की क्यों, यही तो मंजिल है, कहां है ना बड़ी मंजिल ऊंची है परमात्मा की ज्ञान की बहुत ऊंची है। ऊंची कोई ऊंची , ऐसी ऊंची थोड़ी सी है , नहीं यह ऊंचाई , यही जो बातें आती हैं इन सभी बातों को तय करना, इससे पार होना और अपना प्राप्त करना यही है, इन्हीं सभी बातों में अपने को संभालना है । तो यह सबके लिए है , देखो सब जो पुराने हैं, जो नए हैं सबके लिए है ना कोई एक के लिए थोड़े ही होती है सबके लिए। तो हर एक को अपने दिल पर रख करके और समझने की बात है सब। देखो यहां पच्चीस अट्ठाइस बरस बीस बरस और नए पुराने सबके ऊपर माया का आता है ना । ऐसे थोड़ी है हम कहेंगे सब हम अभी माया प्रूफ हो गए हैं नहीं माया प्रूफ हो गए हैं तो फिर तो यहां बैठे ही नहीं होते ना फिर तो यह शरीर नहीं फिर तो पवित्र शरीर मिलना चाहिए, हमारा प्रूफ फिर वह है कि अगर हम कंप्लीट हैं, आत्मा कंप्लीट हो गई तो शरीर भी कंप्लीट होना चाहिए परंतु नहीं,

अभी यह अनकंप्लीट शरीर में बैठे हैं उसका मतलब है कुछ आत्मा अनकंप्लीट है तो उसका प्रूफ यही है । तो इसका मतलब यह नहीं है कि कोई अपनी हम बड़ाई करें कि हां हम प्रूफ है, प्रूफ है तो बैठे ही नहीं रहें फिर तो हमको कंप्लीट शरीर कंप्लीट दुनिया सब प्रालब्ध मिलनी चाहिए। उसका मतलब है कुछ मार्जन है पुरुषार्थ की तब तो बैठे हैं ना पुरुषार्थ करने पर। तो क्या करना है, क्या बनने के लिए पुरुषार्थ है वह एम समझाई जाती है पूरी पूरी अपने में रखने की है बुद्धि में । तो भी अपने को संभालना तो है ऐसे नहीं घड़ी-घड़ी माया की अंगुरी खानी है । खाने से तो फिर चोट लगती है ना । फिर घड़ी घड़ी मार्क्स कम पड़े तो उससे तो रजिस्टर अच्छा नहीं रहेगा तो उसकी संभाल रखनी है क्योंकि रजिस्टर में तो नोट होता है ना दो बार गिरा, इस सब्जेक्ट में तो इतना फेल हुआ, यह हुआ वह सब फिर नाम तो खराब रहेगा ना, तो नहीं हमको अपना ठीक रखना है। ऐसे नहीं है कि काम से, क्रोध से या लोभ से या मोह से कोई भी बात से हम किसी भी शत्रु से अंगूरी खाएं। अंगूरी समझते हो ना, वह मल्लयुद्ध वाले होते हैं ना वह लड़ाने का लगाते हैं टांग कि ऐसे पकड़ेंगे ऐसे पकड़ेंगे गिराने के लिए उसको अंगूरी कहते हैं, आप लोगों की भाषा में कुछ और कहते होंगे वह करते हैं,ऐसे रम से पकड़ते हैं जो गिर जाए, पीछे बैठ करके उसको । वो मल्ल युद्ध देखी है बड़े पहलवान लड़ते हैं तो लड़ते हैं पहलवान गिराने के लिए वह ऐसे ऐसे नहीं करेंगे वो ऐसे तरकीब से, युक्ति से उसकी टांग को उसको ऐसे

करेंगे जैसे गिरे फिर बैठ करके उसको दबाने की कोशिश करेंगे तो माया भी ऐसी है पता नहीं लगने देगी तो ऐसे थोड़ा गिराती है तो वह मल युद्ध की तरह से। (परमधाम पहलवान ही है) अच्छा पहलवान है,वह जानता होगा कैसे गिराते हैं। तो पहलवानों की जो लड़ाई होती है मल्ल युद्ध की वह बड़े तरकीब से तो तरकीब लेते हैं युक्ति गिराने की, तो माया भी ऐसी है युक्तिबाज फिर बाबा भी कोई कम थोड़ी ही है युक्तिबाज वह फिर से सिखलाते हैं कि ऐसे से फिर तुम कैसे युक्ति अपनाओ क्योंकि युद्‌ध है ना यही तो लड़ाई है । अभी लड़ाई देखो कैसी है और शास्त्रों में बैठकर के वह कौरव पांडव फलाने फलाने देखो कैसी-कैसी युद्ध का रख दिया है । अभी कौरव पांडव जैसे हम कोई कौरव से लेट थोड़ी हीं है। हमारी कोई गौरव से लड़ाई थोड़े ही है हमारी माया से है । बाकी कौरव पांडव की कोई युद्ध हुई नहीं है यह तो पांडवों ने माया से युद्ध रखी है और कौरव आपस में यह सब यमन आदि , उन्होंने देखो यमन कहा जाता है दूसरी मुसलमानो को यह भी शास्त्रों में है तो देखो यह मुसलमानों का भी तो बना है ना पाकिस्तान और यह सभी। यह पार्टीशन हुआ, यह ना होता तो फिर ये यवनों का लड़ना मरना यह भी बात ना होती । तो देखो है शास्त्रों में तो वह भी सिद्ध है। बाकी होने में तो देरी नहीं है अभी दुश्मन जो बैठे हैं तो दुश्मन बैठे थोड़े ही रहेंगे वह काम करके ही रहेंगे । एक बार बस कोई कहां से थोड़ी चिंगारी लगी ना तो बस अभी तो आग भड़कने में देरी नहीं है। यह लकड़ियां मानो तैयार होती जाती हैं यहां

लोहड़ी कहते हैं ना बनाते हैं तो बनाते हैं , लकड़ियां इकट्ठे रखते हैं फिर थोड़ी चिंगारी होती है तो सब लकड़ी भंबबस हो जाती है तो यह सब लकड़ियां इकट्ठी होती जाती हैं । एक चिंगारी से काम तमाम हो जाने का है । तो यह लकड़ीयां अभी समीप होती जाती है अच्छी तरह से बड़ा भांबट होना तो जल्दी काम करें, ऐसे नहीं एक लकड़ी जले तो फिर दूसरी जले, नहीं एक ही साथ सब काम हो जाए ना, तो यह सभी ऐसी तैयारी में भी तो थोड़ा टाइम तो लगेगा ना । अभी क्योंकि प्रैक्टिकल नाटक है ना कोई आर्टिफिशियल थोड़ी ही है दो घंटे का हो जाएगा। नहीं, यह तो प्रैक्टिकल है, यह दुनिया की सारी हिस्ट्री और ये सभी कैसा चलता है तो यह सभी बातों को भी अच्छी तरह से और समझ करके उसके मुताबिक अभी हमें क्या करना है उसी में अपने को सेफ करते जाओ । अपने को कैसे सेफ रखो और फिर अपना तन मन धन सेफ डिपॉजिट ऑलमाइटी डिपॉजिट कहो, ऑलमाइटी बैंक कहो अब कैसे उधर अपना इंश्योर करते चलो क्योंकि उसके इंश्योरेंस कंपनी जो है ना उनसे तो बहुत कुछ मिलने का है इसीलिए बाप कहते हैं अभी यह सब यहां की बातें जो है यहां की सब कुछ अभी खत्म होने का है और अभी मेरे पास सब जमा करो, जमा का ऐसे नहीं दे दो, अपना कर्म श्रेष्ठ से बनाते चलो । जैसे जिसके तन में आया ना उसने क्या किया, उसने भी अपने हाथों से अपने कर्मों से अपना अपना तन मन धन जो सेवा में लगाया वही उसका फल बना। तो उसके हाथों से कराया ना, मैंने थोड़ी ही लिया उसका लेकर के मैं

कहां, नहीं रखेगा। ना कोई उनके हाथ में रखने की बात है जो करेगा सो पाएगा यह तो फिर कराने का डायरेक्शन सबको है तो जो करेगा । तो जैसे जैसे देखो करते हैं ना तो करते हैं वह अपना बनाते हैं तो यह सभी चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से समझते और बाप से अपना पूरा जन्मसिद्ध अधिकार पाने से उसमें ही कल्याण है। तो अभी बाप से सबको अपना बाप से संबंध पूरा रखने का है इसीलिए हम दूसरे का देख ही क्यों । सब पुरुषार्थी हैं चलो उसने कुछ नहीं सोचा किया, चलो मेरे से ही किया तो अभी क्या हुआ। मेरे से ही किया तो उसने अपना ही कुछ बिगाड़ा, इसमें हमारा क्या हुआ। भले मेरे से उसने कुछ ऐसा ऐसा किया लेकिन बिगड़ा किसका, मेरा थोड़ी ही बिगड़ा उन्हीं का ही जिसने किया इसलिए हम क्यों ऐसा ऐसा करें तो फिर हमारा भी बिगड़ जाएगा इसीलिए ऐसा नहीं । हमको अपना बाप को देखना है हम उसको और भी अच्छी तरह से समझा दे अगर समझाने की हमारे में भी सामर्थ्य है और देखें कुछ समझने वाला भी है तो प्यार से समझा दें कि भाई ऐसा करने से जरा यह जरा ठीक नहीं है, इसीलिए आप जरा रखेंगे तो देखो तुम्हारे विकर्म बनेंगे, फिर यह भी तुम्हारा पाप है इसीलिए ऐसे पापों से ही तो हमको छूटना है, यही तो हमारे सुख के कारण हैं तो प्यार से समझा दो । कोई समझे तो, ना समझे तो ऐसा नहीं है उसके कारण हम अपना बिगाड़े, अपने को तो सावधान रखना ही है। तो यह सब चीजें अपनी बुद्धि में रखने की है जिससे हम अपने को सेफ बनाते चले । कैसा, तो यह हैं

धारणा जो हैं अपने में लगाने के लिए धारणाएं। दूसरी धारणाएं मिलती हैं जो दूसरों को समझाने के लिए मिलती है यह अपने को समझाने के लिए । है तो सब अपने लिए ही, दूसरों को भी हम समझाते हैं तो अपने लिए ही है ना, हम आपको समझाते हैं तो यह कोई हम आपके लिए खाली समझाने के लिए , नहीं । हम दूसरे को कहे बीड़ी मत पियो पहले हम अपनी बीड़ी बंद करेंगे तभी तो कहने का हक है ऐसे नहीं हम बीड़ी पिएं और तुमको कहे बीड़ी मत पियो यह तो कोई लॉ ही नहीं है ना नहीं, वह अंदर खाएगा कॉन्शियस बाइट करेगा। परंतु नहीं , अभी तो मिला है ना । समझ भी मिली है कि क्या रॉन्ग है क्या राइट है तो दूसरों को समझाना माना अपने को समझाना, इसलिए बाबा भी कहते हैं ना बच्चे सर्विस, क्योंकि दूसरे को खबरदार करेंगे तो खुद खबरदार रहेगा तो यह आएगा अंदर में तो उठते चलेंगे। तो यह सभी चीजें हैं इसको अच्छी तरह से रखते अपना पुरुषार्थ रखने का है। कैसा, ऐसी रफ्तार से चलते हो ना ? अच्छा, अभी टाइम हुआ है आजकल छुट्टी तो नहीं है ना तो फिर टाइम पर छुट्टी देनी पड़ती है। बाकी लेसंस तो मिले हुए हैं वह तो पक्के याद रखने हैं, अपना सारा चार्ट, अपना सारे दिन की दिनचर्या, अपने बाबा की याद का वह सब पूरा रखते रहो और बाकी सर्विस करो, बाकी तो अपना धंधा धोरी जो है शरीर निर्वाह का काम वह भी करना है लेकिन हां अभी जैसे वह लोग, लालच बहुत तो नहीं है हम खाएं, बच्चे खाएं, बच्चों के बच्चे, बच्चों के बच्चे, बच्चों के बच्चे इतना

स्टॉक करें अभी वह तो नहीं है। अभी अपने पेट की आजीविका ही जितना काम चलाना है तो अभी वो काम चलाना है बाकी जो टाइम है बाकी जो अपना है बुद्धि बल अपना जितना भी कर सकते हैं तन से धन से मन से वो बाकी अभी उसकी ओर लगाने से फायदा ही है क्योंकि उससे अभी जमा होगा बाकी जो यहां करेंगे वहां सब खोते जाएंगे क्योंकि अभी वह एंड है ना इसीलिए बाप कहते हैं कि बच्चे अभी अपना वहां जमा करो जहां से तुमको सौ गुना, हजार गुना होकर के मिले तो ऐसा करना चाहिए ना । अच्छा कैसा है यह , इसका नाम क्या बताया उस दिन? राजपुत्रा आती है ना बातें, धारणा अच्छी चलती रहती है ना? अच्छा, आजकल कुछ कम दिखाई पड़ते हैं क्लास में, क्या कुछ ठंडे हो गए हैं या ठंडी लग गई है क्या हुआ है? थक गए हैं, आते-आते थक गए । नहीं पूछो , कोई कारण होगा कोई विचारों का क्या है। टाइम बहुत रहते हैं? नहीं कारण। हां कारण तो बहुत है परंतु जो अगर लगन है किसी चीज की तो फिर कारण, थोड़ा सा सुबह का टाइम तो है अगर कोई चाहे तो सवेरे भी क्लास कर सकते हो जो आने वालों को सहल पड़े परंतु कोई कारण हो तो भी पता होने से फिर उनकी सहूलियत कर सकते हैं क्योंकि क्लास तो सवेरे भी कर सकते हो, क्लास तो जैसे भी समझे तो टाइम आगे भी हो सकता है क्योंकि अभी आजकल टाइम चेंज होते हैं ना कोई सर्विस किसी के टाइम का चेंज हुए होंगे , क्या हुआ होगा तो पूछ लेना है उनसे तो फिर उसी सहूलियत से फिर कर सकते हैं। अच्छा, बाकी

यहां वाले बाज़ू वाले क्या कुछ बिजी रहते हैं, पूछना है उन्हों से? अच्छा, अच्छा रोज़ी खिलाएंगी, मेहनत करो हां, रोज फ्लावर । हां बाबा मम्मा कभी बच्चों को देखते हैं अच्छा है बच्चा तो हां खिलाओ उसको,यह तो होता ही है वह तो गीता में भी है ना ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है तो उसका मतलब है हां प्रिय कहा है तो कोई अप्रिय भी है तब तो भेंट में कहा ना प्रिय, तो भगवान को दो आंखें थोड़ी थी लेकिन यह तो जरूर है ना। लौकिक में भी जो सपूत बच्चा होता है तो प्रिय लगता है तो उस बाप को भी जो सपूत है वो प्रिय तो लगेंगे ना , नहीं तो सपूत पन का मान क्या रहा, फिर तो सबूत पन बनने का बाकी क्या रहा। नहीं, जरूर है सपूत का फायदा है तब तो फिर सपूत कुपूत यह सभी बातें आती है ना। उसमें भी कहा ना गीता में आसुरी संप्रदाय दैवी संप्रदाय तो देखो दो का नाम लिया ना। वह संप्रदाय विनाश दैवीय संप्रदाय का स्थापना करता हूं, और ऐसे ही मुझे प्रिय है यह सब बातें क्यों कही। तो यह तो होता ही है। अभी तुमको ज्यादा दें, मेहनत की है तो डबल। जमा करें तुम्हारा? लालच है बहुत? यह कहती है हमारा जमा करो। हम ले लेते हैं ये समझती हैं कि हमारा जमा होगा तो वहां इंटरेस्ट ज्यादा मिलेगा और यहां कम, यहां तो खाली यही मिला, उधर तो फिर जमा करने से एक का सौ गुना, हजार गुना तो यह लालच रखना अच्छी है ना? यह शुद्ध लालच है अच्छी लालच।अच्छा बाप दादा और मां की मीठे-मीठे बहुत

सपूत सपूत बच्चों प्रति और ऐसे सावधान जो अच्छी तरह से रह करके चल रहे हैं ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

058. मुक्ति जीवन मुक्ति

रिकॉर्ड :

चल उड़ जा रे पंछी के अब ये देश हुआ बेगाना....

ओम शांति।

ऐसे गीत हैं पछताने वालों के ना, यहां पछताने वाले हैं क्या ? क्यों, पछताने वाले हो? नहीं, कभी नहीं । अपन तो हैं, हर एक ऐसा कहेंगे ना कि जिसके साथ जोड़ा है संबंध उसी से निभा करके और अपना पूरा लेकर के रहने का ही पुरुषार्थ करेंगे तो अकेले क्यों रह जाएंगे, दूर क्यों रह जाएंगे। दूर के मुसाफिर से दूर क्यों रह जाएंगे। दूर के मुसाफिर से तो जहां वह, वहां उनके साथ जो संबंध जोड़ा है, तो इसीलिए तो जोड़ा है कि उसके धाम जाकर के उसी के ही धाम से फिर सुखधाम में उतरने के लिए । इसीलिए जबकि उसको जाना है कि हां बेहद का मुसाफिर आया ही इसीलिए है तो अभी उससे ऐसा संबंध ना जोड़ें कि दूर के दूर रह जाएं, यह बात कोई शोभा देती है? इसीलिए ऐसे गीत पछताने वाले हैं। हां कोई पछताने वाला हो तो उनके लिए हां ठीक है बाकी अपन तो अभी यही रखेंगे कि क्यूं हम उनसे दूर रहें ही क्यूं । ये तो बुद्धियोग की बात है ऐसे भी नहीं है कि

उनके कोई हमको शरीर से समीप होने की बात है यह तो है बुद्धि योग की बात , वह तो अपने पुरुषार्थ की बात है इसीलिए बुद्धियोग बल से उसके समीप होते जाना है और उसके समीप हो करके उसी के धाम में ही निवास करके फिर अपने सुखधाम में जरूर आएंगे । सिवाय उसके धाम में जाने के सुखधाम में आ भी नहीं सकते हैं इसीलिए अपने सुखधाम आने के लिए उनके धाम चलना तो पड़ेगा ना। तो यहां इसीलिए उनके धाम का ख्याल करना क्योंकि वापस पहले वहां होना है इसीलिए उन्हीं का ख्याल रखना है कि यह दुखधाम पुरानी दुनिया से अपनी बुद्धि हटा करके अभी वह शांतिधाम कहो या परमधाम कहो उसी धाम में अभी जाना है क्योंकि आए थे वहां से अकेले आत्मा और फिर जाना भी है उधर को इसीलिए जिधर जाना है उनको याद करना है । तो जिधर जाना है अभी बुद्धि में वही रखने का है इसीलिए बुद्धि योग की बात है। बुद्धि योग के बल से ही सारा काम होने का है और ऐसे जब बाप बैठ करके समझा रहे हैंऔर इतने सहज तरीके से तो अभी ऐसा पुरुषार्थ ना करेंगे तो कब करेंगे और तो कोई मौका नहीं है और तो कभी करने की बात नहीं। जाने का टाइम अभी है ऐसे नहीं है अच्छा अभी नहीं गए फिर जाएंगे , फिर जाने का टाइम नहीं है ना, जाना अभी है। मुक्ति जीवनमुक्ति, गति सद्गति का टाइम अभी है इसीलिए जाना अभी है वापस घर। कैसे भी जाना है जबरदस्ती भी जाना है लेकिन उसी जाने में जरा कुछ पाके नहीं जाना होगा इसीलिए जब बाप के द्वारा पता चला है

तो यह भी समझने की बात है ना अभी बुद्धि में आई है कि वापस होने का अभी टाइम है तो इसीलिए बाप से वापस होने के लिए अभी यह सब पुरुषार्थ है । समय अभी है ऐसे नहीं है कि कई मुक्त हो चुके हुए हैं, कभी भी हो सकते हैं , जब जो चाहे तब पुरुषार्थ करें तभी तभी होता है यह तो बातें अभी बुद्धि में है ही नहीं ना, नहीं। हां आने का भले सब आत्माओं का अपना अपना नंबरवार और अपना अपना टाइम हो सकते हैं लेकिन जाने का तो जानते हैं कि बाप आता ही है एक बार और ले चलने के लिए इसलिए वापसी का टाइम एक ही है यह ख्याल रखना है। तो अभी है वापसी वाला टाइम की वापस होना है, जाना है इसीलिए जाने के समय पर क्या करना चाहिए उसको बैठ करके पुरुषार्थ को करना है । तो अभी वापसी का सोचना है अर्थात गति सद्गति दाता इसीलिए गाया हुआ है एक बार आकर के वह वापस ले चलते हैं । तो अभी वापसी का टाइम है इसीलिए वापसी के टाइम पर वापसी की सोचनी होती है। उसी टाइम पर यह नहीं सोचेंगे क्या अभी वापस होना है इसीलिए कहां जाना है, किधर जाना है जैसे कहते हैं नंगे आए नंगे जाना है। इन कपड़ों का भी, यह शरीर रूपी, ये कपड़े तो शरीर के ऊपर कपड़ा है, आत्मा का कपड़ा तो यह है ना तो हां यह उन्हीं के लिए कहते हैं कि अभी यह भी कपड़े पहनते पहनते पुराने हो गए हैं, देखो ना टूटे-फूटे चित्ती लगे हुए उनको चलाना पड़ता है इसीलिए बाप कहते हैं अभी यह भी पुराने हो गए हैं। अब फिर एकदम नए आएंगे अपने नए खाते से फिर जो

शरीर भी है ना वह नए-नए मिलेंगे अच्छे-अच्छे जिसको गोरे कहो। तो फिर वही शरीर मिलेंगे इसीलिए बाप बैठकर के अभी नया खाता बनवाते हैं तो मानो अभी यह नाटक पूरा होता है। तो नाटक पूरा होता है तो अभी पूरे होने की बातें सोचनी है ना। तो अभी ऐसे सोचने वाले और ऐसी धारणा वाले ही अपने पुरुषार्थ में ऐसा ख्याल रख करके वापसी का शटर बंद करेंगे कि वापस में क्या करना होता है यह पुराने को समेटना होता है । पुराना समेटना, ऐसे नहीं है छोड़ना है । छोड़ने से समेटा नहीं जा सकता है इसीलिए देखो सन्यासी घर बार छोड़ते हैं उसको समेटा नहीं जाता है तो फिर हिसाब किताब के अनुसार फिर आना पड़ता है। घड़ी घड़ी सन्यास ही करना पड़ता है, गृहस्थी भी बनना पड़ता है फिर सन्यासी भी बनना पड़ता है यानी गृहस्थ घर में ही जन्म पीछे भले कोई तीखे हैं तो ब्रम्हचर्य में ही फिर जाकर सन्यास लेते हैं भाई ब्रह्मचारी जो कहलाते हैं परंतु फिर जन्म तो गृहस्थियों के घर में ही लेंगे, नहीं तो कहां लेंगे। कोई सन्यासी सन्यासियों में थोड़ी ही जन्म लेंगे तो वहां फिर इसीलिए यह सभी बातें अपन जानते हैं कि दोनों हिसाब किताब उनको चलाना पड़ता है । वह तो हो गया जन्म जन्म का खाता अभी अपना तो वह नहीं हैं। अपन तो इसीलिए इसी जन्म में अनेक भविष्य जन्मों का बनाते हैं और अनेक पिछले जन्मों का खाता मिटाते हैं, यह है इस जन्म का पुरुषार्थ इसीलिए ऐसे पुरुषार्थ में अपने को तत्पर रखते और उसका ख्याल रखना है । तो ऐसे है वापसी बातों का ख्याल करना तो

ऐसे ही ख्याल करने वाले क्या, दूर थोड़ी ही रहेंगे। वह इतना दूर से आया है ले जाने के लिए और उनसे फिर हम दूर रहें तो यह तो, वह तो दुनिया बिचारी जो नहीं जानती है उनकी तो बात ही एक अलग है । जानते और फिर उनसे दूर रहें फिर यह तो बड़ी पछताने वाली बातें हैं । ऐसे रहे हैं ना, आगे भी हुआ है कि बहुतों ने आकर के भी और अपना कुछ ना कुछ थोड़ा बहुत करके भी फिर हट गए हैं ना तो जभी फिर वह समय आया हुआ है उन्होंने देखा है कि देखो औरों ने कुछ बना करके अपना जा रहे हैं तो फिर उन्हों को ही जरूर है कि पछताना पड़ा है। तो वो बैठकर के आगे जो हुआ है उसकी बैठकर के ये यादगारो में यह गीता आदि में सब है लेकिन अपना तो कोई ऐसा पुरुषार्थ नहीं है ना। तो यह भी गीत वीत है इसीलिए कि कहीं पछताना ना पड़े इसलिए जरा भाई सावधान हो जाओ कि कहीं पछताना ना पड़े। उनसे दूर मत रहो इतनी दूर से अभी आया है लेने के लिए तो उनके सम्मुख आओ, उनके समीप आओ और ऐसे बाप से अपना हक लेने के लिए पूरा पुरुषार्थ करो। तो यह सावधान करते हैं ऐसे गीत भी और ऊंचा उठाते हैं कि कहीं पछताना ना पड़े इसीलिए खबरदार रहो । माया है , देखते भी रहते हो चलते-चलते कैसे टूटते हैं । देखते तो हो ना, अनुभव तो करते जाते हो कोई छिपी बातें तो है नहीं। सारा सामने है पच्चीस छब्बीस सत्ताइस अट्ठाइस वर्ष का सारा पोतामेल सामने है इसीलिए जो जो जैसा जैसा जो जो करते रहते हैं वह क्या-क्या अपना बनाते रहते हैं आगे आए हुए पीछे आए हुए सब

अपना अपना पुरुषार्थ का तो सामने है कोई भी ऐसी छिपी बातें नहीं है । भले दुनिया से छुपा हुआ है वह तो बेचारे जानते नहीं है लेकिन जो जानते हैं उनको तो सभी बातों की रोशनी होती भी जा रही है लेकिन देखते हो ऐसे ऐसे चलते भी कहां न कहां टांग लटक जाती है तो देखो कैसे फिर बैठ जाते हैं। देखते भी हो ना गिरते कैसे हैं, टूटते कैसे हैं और फिर कैसे माया के विघ्नों से पार ना हो करके फिर बिचारे अपनी तकदीर को लकीर लगा करके बैठे हैं ना । कहेंगे तो ऐसे न बिचारे तकदीर को लकीर लगाते हैं । बिचारे कहना पड़ता है क्योंकि जानते हैं कि इतना तकदीरवान बनने से वंचित रह जाते हैं तो फिर जरूर होगा ना बेचारे, नहीं तो देखो कितनी तकदीर बना सकते हैं परंतु माया के विघ्नों में आकर के अपने को वंचित कर देते हैं तो ऐसा वंचित तो अपना करने का रखना ही नहीं है। हर एक को अपने में यही दृढ़ता रखेंगे की नहीं पक्के रहेंगे, पक्के रहेंगे इसीलिए ऐसे पुरुषार्थ में लगते और अपने पुरुषार्थ को अच्छी तरह से आगे आगे बढ़ाते रहो बाकी तो नॉलेज सब रोज सुनते हो अच्छी तरह से बुद्धि में आती जाती है सब पॉइंट्स है अपनी धारणाओं के लिए भी हैं दूसरों को समझाने के लिए भी हैं और कई बातें जरूर कहीं सरकमस्टेंसस हैं उनमें भी हमें कैसे-कैसे अपना करना अभी ये सभी बातें अभी रोशनी तो मिलती जाती है । तो अभी बाप कहते हैं बच्चे में बैठा हूं अभी और कोई भी श्रीमत लेनी है तो डायरेक्शंस लेते अपना कल्याण करते रहो इन्ही बातों में बाकी मूंझने की है ही नहीं ।

अपने से कुछ नहीं हो सकता अपनी बुद्धि कहां काम नहीं करती है तो इतना तो याद रखो कि हां बाबा बैठा है, मत देने वाला बैठा है, उसकी मत कल्याणकारी है इसीलिए तो आए हैं इसीलिए मनुष्य तन का आधार लिया है, मुख से बोल सकता है अभी कानों से सुन सकता है अभी तो इसीलिए बाप कहते हैं जैसे तू भी आत्मा शरीर का आधार लेकर बोल सकती हो तुम भी आत्मा निराकार हो ना, क्यों तुम नहीं बोलती हो निराकार आत्मा बोलती है ना, सुनती है ना , आत्मा तो निराकार है इसी तरह क्या मैं भी टेंपरेरी करके मुझे अपना कर्मों के हिसाब का शरीर का बंधाए मानी नहीं है इसीलिए तो मैं जन्म मरण रहित गाया हुआ हूं परंतु टेंपरेरी मैं आता हूं और इसीलिए कि मुझे तुम्हें समझाना है इसलिए मैं टेंपरेरी लेता हूं। भले मेरे कर्म का हिसाब का शरीर नहीं है लेकिन लोन पर कहो, टेंपरेरी कहो, बैठ करके उसका सहारा ले करके फिर तुमसे बोलता हूं । तो जब तुम्हारे लिए मैंने यह पार्ट बजाया है और यह ड्रामा में है कल्प कल्प अगर परमात्मा भी कहे ना कि यह पार्ट मैं ऐसा ना बजाऊं तो बदल नहीं सकता। परमात्मा भी कुछ नहीं कर सकता, अरे सर्वशक्तिमान भी कुछ नहीं कर सकता देखो तो सही । तो बाप कहते हैं सर्वशक्तिमान भी कहे कि यह बदली हो जाए, कहने की तो बात है नहीं परंतु समझो तो भी यह बात बदलने की है नहीं। ड्रामा में पार्ट है मेरा भी पार्ट है नूंधा हुआ है । मुझे भी इस नूंध के अनुसार आना है और यह पार्ट ऐसे बजाना है और यह सब बना बनाया इसी तरीके से चलता ही रहता है

इसीलिए इसमें भी बने बनाए के ऊपर भी कोई संशय उठाने की जरूरत नहीं है , नहीं तो कैसे बने । खेल तो है, नहीं तो खेल कैसे बने कोई बताए ना। कोई बताए परमात्मा को खेल बनाना था यह यह था तो ऐसे बनाते। ऐसे बनाते तो फिर खेल ही नहीं होता था ना । खेल में माना दुख सुख , हार जीत दोनो ही है ना तभी तो खेल है ना। तो यह सभी बातें अभी समझ में आई हुई है कि कैसे आधा समय माया का राज है आधा समय फिर बाप आ करके अपना बल दे करके फिर उन्हीं के द्वारा जो स्थापना करते हैं उसकी जो फिर सुख की प्राप्ति रहती है वह कैसे हैं यह सभी बातें अभी बुद्धि में अच्छी तरह से बैठती है ना। कोई शंका हो, कोई संशय हो हो तो पूछो, कोई रोग को छुपाओ मत । कोई बीमारी रखने से या रोग को छुपाने से फिर वह रोग जो है ना वह नासूर बन जाता है या बढ़ जाता है इसलिए कोई भी बात ऐसी हो तो उसे दे करके उसका निवारण करना चाहिए मतलब अपने को साफ करते चलाना चाहिए । उससे क्या होगा कि आगे आगे वृद्धि होती जाएगी इसीलिए कोई भी किसी के दिल के अंदर कोई भी शंका कोई भी बात तो फिर हां पूछ सकते हैं। बाकी यहां ना कोई अपने को छुपाए चल सकते हैं और ना कोई अपने रोगों को इस तरीके से रखकर के चलने से कोई लाभ भी पा सकते हैं इसीलिए अच्छी तरीके से जबकि ऐसा बाप मिला है तो उसके साथ साफ क्योंकि वह तो सच्चा बादशाह है ना तो उसके साथ हमको भी ऐसा ही रह करके चलना है तभी हम उनके द्वारा पूरा-पूरा कुछ पा

सकते हैं। वह भले दाता है परंतु दाता का मतलब यह भी नहीं है उनसे हमें कुछ ऐसे ही करना है। नहीं उनसे हम कुछ उलट-पुलट कर करके क्या पा सकते हैं इसीलिए हमें उनसे सुलझना है। हम अपने लिए करते हैं इसीलिए अपने कर्मों की और अपने सब बातों को अच्छी तरह से समझना है और समझ करके चलना है । इसीलिए अभी कर्मों की गति का नॉलेज तो बहुत क्लियर है । इसमें भी कुछ मूंझने की बात नहीं है कि क्या अच्छा कर्म है, क्या बुरा कर्म है, किस कर्म का क्या है, यह सभी बातें तो अभी, इतनी नॉलेज के बाद तो बुद्धि में यह बात स्पष्ट होनी चाहिए और होगी इसलिए कर्म गति, है ही सारा उसी के ऊपर आधार और अपने जीवन का भी उसके ऊपर आधार है इसलिए अपने करम गति को जानते और अपने कर्म को उसी कर्मगति के आधार पर आगे बढ़ाते चलना है । बाकी तो कई बातें हैं जिसमें चलना पड़ता है, अगर उसको देखेंगे, दुनिया को देखेंगे, यहां कोई भी, कहीं उलट-पुलट बातें भी होती हैं कहीं कलंक भी लगते हैं कई ऐसी भी बातें होती हैं, सब कुछ है, देखो देखो शास्त्रों में थोड़ी थोड़ी हिंट सब बातों की है इसलिए यह सब कुछ होता है। इसलिए नाम उनसे डरना है ना उन बातों में तंग होना है । अपने को क्या करना है बस इसी में ही चलते आगे बढ़ते चलना है। ऐसे चलने वाले जो है ना वह अपनी मंजिल मकसद को पा ही लेंगे इसलिए ऐसे मंजिल मकसद को पाने वाले ऐसे रफ्तार में चलते रहे । वह है ना पांडवों का उन्होंने कहा की बस चलते रहो पीछे मत देखना, पीछे

देखेंगे तो खत्म हो जाएंगे ऐसी ऐसी कुछ लगाई है शास्त्रों में बात । तो पीछे का मतलब है यह दुनिया की आवाज, लोगों की निगाहें, दुनिया की आवाज यह सब बातें हियर नो इविल सी नो इविल टॉक नो इविल ये सब बातें हैं तो इन्ही सभी बातों को, उसमें सब आ जाती हैं। इधर की भी आ जाती है, बाहर की भी आ जाती है सब किस्म की आ जाती है ऑल राउंड इविल तो इविल है ना। तो यह सब बातें हैं , बाप कहते हैं बच्चे इन सब बातों में ना मूंझ करके पीछे मत देखो, आगे बढ़ते चलो, अपना कदम बढ़ाते चलो। कदम बढ़ाते चलो गीत है ना, बढ़ते चलो और कदम बढ़ाते चलो, पीछे मत देखो, सामने देखो, जहां अभी नजर पड़ी है और नजर डालने वाले ने नजर खड़ी कराने का पूरा निशान बता दिया है । बस अपने को उधर रखकर चलते रहो ठीक है ना। पीठ दो पुरानी दुनिया को मुंह दो उधर जिधर कि अभी मरते हैं ना। वो मरते हैं ना तो उनका सिर उधर कर देते हैं और टांगे उधर कर देते हैं वह मरते हैं तो उसको ऐसा बदली कर देते हैं। अपना हम तो जीते जी मरते हैं ना तो अपन अपना आपे ही मुंह फेर लेते हैं । नई दुनिया की तरफ अपना सिर कर लेते हैं और पुरानी दुनिया की तरह अपनी लात कर देते हैं । वह है ना कृष्ण का चित्र भी बनाया है ना लात उधर है कलयुगी पुरानी दुनिया की तरफ और मुंह उधर है सतयुगी सतोप्रधान दुनिया की तरफ तो अभी उधर करना है ना । तो ऐसे चलने वाले अपने पूरे पुरुषार्थ से चलते रहो। अच्छा, बाकी सब राजी खुशी हो ? और अच्छी तरह से अपने

चलने में कोई दिक्कत तो नहीं पड़ती? कुछ ऐसी हो तो हां मम्मा बैठी है। कुछ भी सर्विस हो तो कह भी सकते हो। बाकी मूंझ करके कहीं अपनी तकदीर को लकीर मत लगाओ, इसका अपना ख्याल रखते रहना । किधर भी हो, कहां बिजी हो अपना पूरा ध्यान रखना । अच्छा, बाकी सब राजी खुशी हो तो बहुत अच्छा है। अगर राजी खुशी हो तो बाकी क्या चाहिए, फिर तो यही तो है कि हम सब, बाप यही कहते हैं हम सब चलें, चल करके अपना जो कुछ तकदीर का है वह पाएं , अगर ऐसे पुरुषार्थी चल रहे हो तो बहुत अच्छा है। फिर तो मुंबई से ही काफी है , कैसा। आज सब लोगों को बहुत खुशी है हां जरूर हमें भी बहुत खुशी है। क्यों नहीं, जितना जितना संग रहते हैं, जितना जितना संग होते हैं तो अच्छा ही है, यह तो ठीक है परंतु कारण या अकारणे जो ड्रामा का , बताया था ना उस दिन भी परंतु ड्रामा, ड्रामा तो आगे ढाल रखनी चाहिए तो फिर ड्रामा देखो जो होता है ड्रामा में तो होता वही है फिर कई कारण अकारणे सब तो इसीलिए ड्रामा पर बहुत, यह भी एक अच्छी है पॉइंट। अगर है तो अच्छी है, नहीं है तो फिर ड्रामा के भी राज को कई ना समझ करके उसमें विचलित रहते हैं। वो समझते हैं कि ड्रामा है सब कुछ फिर तो हमारे कर्म का तो कुछ वैल्यू ही नहीं है। फिर हमको क्यों की जाती है ऐसे करो ऐसे ना करो फिर तो हमारा कुछ नहीं है फिर तो ड्रामा ही कराता है और करता है । परंतु नहीं, यह तो ठीक है कि जो होता है देखो अभी-अभी का हम कहते हैं कि ड्रामा था, जो होता है ऐसा कोई बात

में बुद्धि हिले नहीं, यह ऐसा क्यों, ऐसा क्यों, क्यों और क्या है यह सब इसीलिए बाकी ऐसे नहीं है कि ड्रामा में हम कुछ करें और फिर कहे कि ड्रामा में ऐसा रहा होगा या भूल कर के कहे कि यह ड्रामा में था ऐसा तो नहीं ना, उनके लिए तो सोचना है, समझना है अपनी बुद्धि को ठीक रखना है, अपनी धारणाओं में अपने को लाना है तो यह सभी बातें भी अच्छी तरह से समझने की है ना । तो ऐसी बातों को समझते और अपने पुरुषार्थ को आगे करते इसीलिए अभी तो कुछ रोज ठहरे हैं फिर जो ड्रामा होगा। ड्रामा, ड्रामा तो करते रहना है। कहां तक होगा, क्या होगा यह तो हम भी देखते चलेंगे, हर एक अपना देखते चलेंगे इसीलिए ड्रामा पर स्थित रहो । बाकी बाप के फरमानों को अच्छी तरह से पालन करते रहना है । पांचों विकारों को तो अच्छी तरह से समझा है ना? तो उन विकारों की पूरी तरह से संभाल रखना। संभाल रखना ऐसे नहीं बिठाए रखना , ना ना माना उनको निकालते रहना। तो निकालते कि हां कहीं वह हमारे से कुछ ऐसा तो नहीं है कि हमारा कोई विकर्म खाता बनाता है इसीलिए उसी खाते की संभाल करते रहना है । ऐसे संभाल करते रहने वाले जरूर हैं कि अपने बाप से पूरा पूरा हक ले करके ही रहेंगे। अच्छा आजकल छुट्टी के दिन नहीं होते हैं, आप लोगों को देरी दे रहती है इसीलिए जरा टाइम पर ठीक रहता है। अच्छा सदा हर्षित चित्त और हर्षितमुख ऐसे रहते हो ना। भले आते हैं, सब कुछ आएगा लेकिन आते भी, अभी की ही तो बात है ना कि आते भी हर्षित चित्त हर्षित मुख भी अभी है,

पीछे तो बात ही नहीं है जब प्रालब्ध ऊंची होगी । वहां तो कोई ऐसी बातें ही कुछ ना होंगी तो जिसमें कोई ऐसी, अभी के लिए तो सब है ना। इसीलिए उसमें बहुत मजे से चलते रहो। यही अच्छे दिन है जिसमें हम अपने को देखो कितना अच्छा बनाते हैं, तो अच्छे हो गए ना? कैसा हमारे वीर कृष्ण ? कृष्ण वीर हां?कि अभी हम अपना देखो महावीर महावीरनिया बनते हैं क्योंकि पांचों विकारों को जीत पाते हैं ना । उन देवताओं को नहीं कहेंगे महावीर, महावीरनिया कौन थी? महावीरनिया अभी ब्रह्मानिया। ब्राह्मण और ब्राह्मनिया जो अभी हम अपना बनते हैं उन्हीं के लिए कह सकते हैं । वह जिस्मानी ब्राह्मणों की बात नहीं है, यह। यह तो सब बातें अभी बुद्धि में आ गई है परंतु कभी कोई नए आ जाते हैं ना तो फिर समझाना पड़ता है । नयों के लिए फिर नई बातें समझानी पड़ती हैं क्योंकि उन्हों को तो फिर एक एक बात, उनको ब्राह्मण अक्षर कहेंगे तो वह समझेंगे कि कि हां भाई यह शायद इन ब्राह्मणों के लिए कहते हैं। परंतु नहीं, ब्राह्मण ही कौन थे, ब्राह्मण किसको कहा जाता है उनके यथार्थ प्रैक्टिकल अर्थ को अभी जानते हैं। बाकी पुनर्जन्म वाले ब्राह्मण थे ही नहीं, यह तो जिस्मानी नाम रख कर के चले आए हैं और एक अपनी जाति बना दी है वह तो चलते रहते हैं। वह तो नाम दे दिया है, कोई पानी के ऊपर गंगा का नाम पतित पावनी गंगा, पतित पावनी वह पानी थोड़ी ही है, नाम रख दिया है ऐसे ही ब्राह्मण नाम रख दिया है, ऐसे ऐसे कई नाम रख दिए हैं वो तो सब बाप इसी के यादगार में सभी नाम

रखकरके ये काम ऐसे चलते रहें हैं। बाकी असूल में कैसे है , पतित पावनी गंगा कैसे है जिन्होंने पतियों को पावन किया है यही ज्ञान है और इसी पर ही नाम रहा है ये सब बातें हैं । वो कहते हैं भागीरथ में जाता में लाई ये सब ऐसी ऐसी सब बातें बैठ कर के बनाई हैं । लेकिन अभी जानते हैं कि कैसे बैठकर के बाप प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा बैठ करके यह ज्ञान अमृत पिलाते हैं फिर यह ज्ञान गंगाए हैं फिर बैठकरके वो भी करती हैं तो ऐसे ऐसे यह सब बातें। तो यह तो सब समझते जाते हो इन्हीं सभी बातों में तो अभी कोई मूंझने वाली बात नहीं रही होगी। अभी अठारह भुजाएं, चार भुजाएं, तीन आंखें दस सिर रावण के कहां यह सब बातें का तो बुद्धि में अभी फिर न होगा की न ये दस शीश वाले थे ना ये थे न वो थे । यह सब अर्थ क्या इन सब बातों का प्रैक्टिकल कैसे हैं यह सभी बातों को समझते हैं । अच्छा, कैसा , यह भी जानते हो कि परमात्मा को आना है तो कैसे आएंगे , इसी तरीके के सिवाय और कोई तरीका नहीं। अभी यह भी तो बुद्धि में अच्छी तरह से बैठ गई है ना , फिर कैसे आएगा बताएं कोई। आना है तो भी ऐसे ही आएंगे । सिवाय साधारण तन के, सिवाय इस तरीके के और कोई तरीका नहीं। यह सब बातें तो अभी हैं। अच्छा जो है वह दूसरों को समझाओ बाकी अपनी धारणाओं में जहां कमजोर हो वो अपने में धारणा लाओ और दूसरों को फिर धारणा लायक, अपने में होंगी तो दूसरों को भी कह सकेंगे। अपन बीड़ी पीता रहेगा और दूसरों को कहेगा भाई मत पियो तो ? तो

ऐसे थोड़ी काम हो सकता है इसीलिए अपनी बीड़ी बंद करनी है तब फिर दूसरे को कहने का अधिकार हो सकता है । तो हां अपने को भी ठीक रखो और दूसरों को भी ठीक बनाने का काम करते चलो । तो जितना जितना जिससे हो सकता है परंतु अपने लिए तो हो सकता है ना। उसके लिए तो कोई नहीं कहेगा ना फुर्सत नहीं, टाइम नहीं, यह नहीं, वह तो अपने आप से करनी है मेहनत । वह तो ऐसे भी हम काम करते भी कर सकते हैं । ऐसी भी नहीं है कि यह सब छोड़ने के लिए कोई हमको कुछ हाथ पाव से मेहनत करने की है। यह तो अपने निश्चय से, अपनी दृढ़ता से अपने धारणा से, अपने समझ से काम को करना है। इसमें क्या डिफिकल्टी है? पांचों विकारों के लिए कोई ऐसी तो बात नहीं है यह तो अपने से दृढ रह कर के अपने से वह गंदगी निकालनी है बस न। इसके लिए कोई हाथ से थोड़ी कुछ करना है, पांव से थोड़ी कुछ करना है, कुछ नहीं। तो यह सब चीजों को समझते आगे बढ़ते चलो। अच्छा , बाप, बाप को जानते हो ना अभी ? दादा को तो जानते ही हो । दादा को ही जानते बाप को जानना बड़ा आसान है । परमात्मा वह तो कहते भी आते हैं हां करके उनको सर्वव्यापी बना दिया है अब लेकिन फिर भी उसको जानना आसान है लेकिन दादा की आगे तो उसी पर ही तो मूंझ जाते हैं। कोई सर्वव्यापी नहीं है, परमात्मा एक है । दादा में ही क्यूं आते हैं इसी पर ही तो आ करके अटकते हैं कि ऐसा क्या सदा ही उसको मिला , इसी पर अड़ते हैं न, इसी में आकार के मूंझते हैं। अच्छा , ऐसा बाप और

दादा मां के मीठे मीठे बहुत सिकिलधे, बहुत सिकिलधे क्योंकि पांच हजार वर्ष के बाद मिले हुए हैं इसीलिए बहुत सिकिलधे हो गए न, कितने अरसे के बाद। तो ऐसे मिले हुए परंतु हां फिर सपूत भी ख्याल रखना। ऐसे मिले तो सही , सिकिलधे में भी सपूत पन और कपूत पन है। तो अपने में देखो कि हमारे में सपूत पन कितना है, ऐसे जो सपूत हैं ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार गुड मॉर्निंग गुड डे गुड इवनिंग ।

मम्मा मुरली मधुबन

059. परमात्मा का कर्तव्य

आज गुरुवार अप्रैल की 22 तारीख है , प्रात: क्लास में प्राण मां की मुरली सुनते हैं

रिकॉर्ड:

तू प्यार का सागर है

हमारी आत्माओं अथवा हम आत्माओं के साथ क्या निभाया है अर्थात उसने आत्माओं के साथ क्या संबंध में आकर के क्या कर्तव्य किया है जिसके लिए ही उसकी महिमा है और फिर से अभी वही कर्तव्य करने के लिए अभी अपना पार्ट एक्ट कर रहा है तो मानो अभी परमपिता परमात्मा अभी एक्टर भी है। डायरेक्टर, क्रिएटर और एक्टर तो अभी मानो खुद क्रिएट करने का एक्ट अभी प्रैक्टिकल कर रहे हैं । तो क्रिएटर का एक्टिंग अथवा उसका एक्टर बन करके अभी फिर से नई दुनिया को क्रिएट कर रहे हैं । ऐसे नहीं है कि वह अनादि ऐसे ही क्रिएटर है बस, नहीं उसने प्रैक्टिकल कल्प कल्प क्रिएट करता है। वह कैसे करता है उसका पार्ट है। जैसे और सभी आत्माओं का पार्ट है वैसे ही उसी परमपिता परमात्मा का भी पार्ट है तो उसके पार्ट को भी समझना है ना कि वह भी एक बार अपने डायरेक्टरपन का और

क्रिएटरपन का एक्ट करता है। तो अभी इस टाइम वह अपनी नई दुनिया को क्रिएट करने का एक्ट कर रहा है तो उसका भी पार्ट चल रहा है तो इसीलिए वो भी एक्टर बन करके अपना कार्य कर रहा है । तो यह तो बुद्धि में है ना अभी कि किस तरह से दुनिया को क्रिएट करता है। ऐसे नहीं दुनिया कभी क्रिएट हो चुकी हुई है, नहीं। वह अभी कैसे समझाते हैं कि मैं आकर के कैसे यह विनाश और स्थापना इसीलिए स्थापना एस्टेब्लिशमेंट यह अक्षर से सिद्ध करता है कि दुनिया है जिसके ऊपर फिर परमात्मा द्‌वारा नई दुनिया की स्थापना होती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि दुनिया ही नहीं है। जैसे कई समझते हैं दुनिया ही नहीं है वह प्रकट होती है । नहीं, दुनिया है लेकिन वह आकर के पुराने को, तो पुराने किसको, पुरानी दुनिया को फिर नया बनाते हैं तो कैसे नया बनाते हैं तो उसका तरीका फिर खुद ही आकर के समझाते हैं। लेकिन मनुष्य तो समझते हैं कभी दुनिया है ही नहीं उसने शायद ऐसे ही बैठ करके दुनिया को रचा अथवा बनाया है। नहीं, वह कैसे क्रिएटर है, कैसे डायरेक्टर है तो अभी देखो डायरेक्शंस भी देते रहते हैं और क्रिएट भी कैसे करते हैं उसका अभी वह एक्ट बना हुआ है। तो परमात्मा भी अभी एक्टर है। उसका भी अभी पार्ट चल रहा है नई दुनिया रचने का। उस नई दुनिया में पहली पहली जो रचना है ना नई वो अभी हम हैं । समझते हो, नशा बैठा हुआ है ना अच्छी तरह से कि हम उस बाप की डायरेक्ट मुखवंशावली अथवा नई रचना अभी हम उसमें से नई रचना में से हम अभी नई रचना है ।

पहली-पहली जो मुखवंशावली हैं वह हम हैं। पीछे तो देवताऐं होंगे, जेनरेशंस में चलेंगे उसको तो वंशावली तो नहीं कहेंगे ना। अभी हम ब्राम्हण मुखवंशावली हैं और बाप के द्वारा अभी जो नई रचना रची जा रही है उसकी पहली-पहली नई रचना अभी हम हैं । तो अभी बाप ने शुद्र से ब्राम्हण बनाया। ऐसे नहीं नई रचना का मतलब है रचना थी ही नहीं । नहीं , रचना है वह तो अनादि है परंतु उसको शूद्र से अभी ब्राह्मण कैसे बनाया और फिर ब्राह्मण सो देवता बनेंगे । तो यह तो अभी सारा राज अच्छी तरह से बुद्धि में है ना कि कैसे अभी ट्रांसफर अपन को कर रहे हैं। हम आत्माएं अभी ट्रांसफर हो रही हैं बाकी ऐसे नहीं है कि हम आत्माएं हैं नहीं, जिसको बैठकर के परमात्मा ने बनाया है या शरीर कभी है ही नहीं जिसको बैठ करके परमात्मा ने बनाया । आत्मा है तो आत्मा के संस्कारों के अनुसार उनका फिर सब चलता ही है तो यह सभी चीजें अभी बुद्धि में है हर एक बात का इसीलिए अभी बाप भी आकर के कैसे क्रिएट करता है , पुरानी को नई बनाता है वह अभी जानते हैं कि देखो अभी यह नई तो हम हैं उसकी नई दुनिया की नई रचना। तो परमात्मा ने कैसी दुनिया बनाई, कैसे उसने रचा वह भी हम देख रहे हैं इन आंखों से कि भगवान ने दुनिया कैसे रची वह सारा इन आंखों से अभी देखते हैं । कहते हैं ना किसी ने क्या देखा कि भगवान ने कभी दुनिया कैसे रची। अभी हम तो कहते हैं इन आंखों से भगवान ने दुनिया कैसे रची तो जानते भी हैं और इन आंखों से अभी देख भी रहे हैं कि भगवान

दुनिया कैसे रचता है तो यह है उनका फाउंडेशन। फाउंडेशन कहो, सेप्लिंग कहो अभी यह नई दुनिया की लग रही है जिसमें से ये कैसे अभी नई जेनरेशन का ये अभी आरंभ हो रहा है और फिर यही अपना अनेक पुनर्जन्मों में तो अभी इसी तरीके से सदा सुख को पाते चलेंगे । तो भगवान ने दुनिया कैसे रची किसी ने देखी, अपन अभी देख रहे हैं कि भगवान ने दुनिया कैसे रची तो हम कितने सौभाग्यशाली और भाग्यशाली गिने जाएंगे कि हम अभी जानते हैं और देख रहे हैं कि भगवान दुनिया कैसे रच रहे है । तो हां उस दुनिया की पहली पहली रचना में हम हैं तो हां कैसा, यह नशा बैठता है हमारी दिल्ली कि हां हमारी नई दुनिया में अभी आते हैं अर्थात शूद्र से अभी ब्राह्मण बनते हैं सच्चे ब्राह्मण । वो तो नाम रखाऐं है ब्राह्मण जो धामें खाते हैं और यह सब करते हैं, वह तो नाम जात रखा है , अपना नाम रख दिया है जाति का लेकिन अभी अपन प्रैक्टिकल सच-सच पवित्र दुनिया का फाउंडेशन डालने के लिए बाप ने अपनी जो मुख वंशावली रची है अभी मुख से माना मुख से निकलेंगे थोड़े ही , यह बैठकर के नॉलेज जो सुनाया है उसी नॉलेज के बल से अपन प्यूरीफाइड हो करके अभी नई जेनरेसंश में आते हैं तो मानो हम मुख वंशावली हो गए ना । तो अभी उनमें से हम मुख वंशावलियों में से हम मुखवशावली हैं उनकी डायरेक्ट परमात्मा की रचना। तो यह भी एक दिमाग में जैसे कोई पोजीशन का, कोई पढ़ाई का, भाई दिमाग में नशा तो रहता है ना तो अपना भी अभी हम किस पोजीशन वाले हैं, किस खानदान वाले हैं,

हम किसके पैदा किए हुए हैं तो अभी डायरेक्ट परमात्मा की जो मुखवंशावली है वह हम हैं तो अभी उन मुख वंशावलियों को अपना कितना नशा होना चाहिए और उनकी चाल चलन और उनकी रहन-सहन और उनकी सब धारणाओं के ऊपर कितना अटेंशन होना चाहिए कि हमको कोई जैसे वैसे कॉमन जैसे चलते थे वैसे नहीं, अभी हम किसकी संतान है और डायरेक्ट उनकी संतान जो हर्ता और कर्ता, हर्ता भी है और कर्ता भी है तो क्या हर्ता है और क्या करता है वह अभी सब बुद्धि में है । उसकी अभी हम डायरेक्ट मुख वंशावली हैं तो ऐसे मुख वंशावली को भी तो अपना अच्छी तरह से अपने को भी संभालना है ना। ऐसे नहीं है कि बस खाली वह बस हम हैं उनके बस इतना ही काम है। हैं उनके तो अपने में भी तो इतना बल चाहिए ना। अपने जैसे बाप के गुण, बाप के कर्तव्य वैसे हमारे भी गुण और अपने भी कर्तव्य को इतना महान ऊंच बनाने का है। तो अटेंशन रखने का है कि हम भी इतने अपने महान ऊंच कर्तव्य के लायक हैं तब तो हम बाप के बच्चे सपूत अथवा कहलाने वाले की हां हम बाप को फॉलो करते हैं तो ऐसे जो धारणाओं को पकड़ करके चलने वाले हैं तो वही हक रख सकते हैं बाप की प्रॉपर्टी के ऊपर । अगर नहीं जो फिर तो बाप की जो मिलना है वह तो नहीं मिलेगा , फिर तो कोई हक भी नहीं रख सकते हैं जबकि फॉलो नहीं करते हैं या धारणा नहीं है तो बापके द्वारा जो कुछ मिलना है उस मिलने के ऊपर भी कोई कैसे आंख रख सकता है । तो यह भी समझने की बातें हैं इसीलिए

इतना अपना सौभाग्य किसके द्वारा और क्या मिल रहा है वह प्रैक्टिकल अभी चल रहा है तो उसी प्रैक्टिकल चीज को अच्छी तरह से समझ करके और प्रैक्टिकल अपने में अपनाने का पूरा अटेंशन रखने का है तभी हम जो कुछ पाने का है पा सकेंगे तो यह ख्याल रखना और ऐसे पुरुषार्थ करने का अपना पूरा पूरा ध्यान रखते रहना तब अपना जो सौभाग्य है, जो जिस आस में है पुरुषार्थ कर रहे हो ना कोई बड़ी आस है । छोटी आस नहीं है बहुत बढ़िया है इसलिए बहुत बहुत बड़ी आस आ करके बाप ने बताई है इसीलिए कई समझते हैं ऐसे हम कैसे हो सकते हैं चलो कइयों को उसमें भी विश्वास नहीं बैठता है कि ऐसे हम सो देवता और ऐसी दुनिया यह कभी हो नहीं सकती है। वह समझते हैं कि दुनिया तो ऐसी होगी तो करके थोड़ी बहुत अच्छी होगी, करके थोड़ा लड़ाई झगड़ा अभी बहुत है ग्लानि दुख बहुत है करके थोड़ा कम होगा परंतु सदा ही ना हो और सदा सुख हो, सदा शांति हो ऐसा कभी दुनिया में होता ही नहीं है कइयों को तो बिचारों को ऐसा बैठता ही नहीं है लेकिन अभी बाप तो समझाते हैं ना और अभी विवेक में भी आता है ऐसे थोड़ी अंधविश्वास में, नहीं तो बाकी जीवन क्या है। जब रोग और दुख अशांति है तो सुख शांति भी होनी चाहिए नहीं तो उसको शांति वाले कहने की बात ही क्या है । जैसे दुख अशांति भी प्रैक्टिकल है तो सुख शांति भी तो प्रैक्टिकल होनी चाहिए ना। तो प्रैक्टिकल लाइफ होनी चाहिए ना बाकी कहने के लिए थोड़ी है खाली। तो प्रैक्टिकल कैसा होगा, जैसे दुख

अशांति प्रैक्टिकल है रोग आदि फलाना फलाना, यह सब होता है उससे दुख है लेकिन यह ना होवे तभी तो सुख होता है ना। ऐसे थोड़ी है कि थोड़ा कम पड़ेगा तो सुख होगा, नहीं होवे ही ना ना । तो ये ही विवेक कहता है कि होना चाहिए ना तो यह सभी चीजें अभी बैठकर के बाप समझाते हैं और जब भी अभी समझ में आती हैं तो ऐसी प्राप्ति के लिए पूरा पूरा उसके ऊपर अपना लगाना चाहिए। तो यह सभी ध्यान रखने की बातें हैं और ऐसा अटेंशन रखकर के पुरुषार्थ रखने का है । अच्छा आज शायद गुरुवार है । गुरुवार कहो और देखो आज सतगुरु, सत तो है ही एक। वैसे गुरु तो बहुत है लेकिन उन्हों को कहेंगे जन्म मरण में आने वाले असत्य बाकी एक ही सत है जो जन्म मरण रहित है और वही मुक्ति जीवनमुक्ति दाता हो सकता है अथवा गति सद्गति दाता हो सकता है क्योंकि वह आत्मा नहीं परमात्मा है ना । बाकी आत्माएं तो सब गति दुर्गति सद्गति सब इस चक्कर में चलने वाली है ना इसीलिए वह तो जन्म मरण में आने वाली है। तो वह तो जन्म रहित तो गुरु भी उसको ही कहा जा सकता है। जैसे परमात्मा एक वैसे गुरु भी एक, गुरु बहुत नहीं है । जैसे गॉड इज वन गुरु इज वन यानी गुरु भी गति सद्गति दाता एक ही है । तो अभी वह एक जो है सद्गुरु वह अभी बैठ करके अपना हमको गति सद्गति का मार्ग बता रहे हैं तो अभी उनकी हम उनको पकड़ा है तो जैसे वैसे कॉमन मनुष्य की बात नहीं है अभी वह अथॉरिटी, तो उस अथॉरिटी को अच्छी तरह से धारण करके, उसके

द्वारा जो पाना है उसका पुरुषार्थ रखना है। उसको याद रखते रहो और उसके द्वारा जो लेना है वह लेने का भी पुरुषार्थ करते रहना है। अभी ना लेंगे तो फिर कभी ना लेंगे। यह चांस एक ही बार मिलता है, अब नहीं तो कभी नहीं इसीलिए यह भी ध्यान रखना है अच्छी तरह से । जितना अपने में है उतना अपनी समर्थी लगाते चलो। कौन सी समर्थी है तन से करो धन से करो, मन को तो लगाना ही है और धन से है तो धन से करो जितनी है जिसकी उतना अपना करते चलो और करना ही है और करने से ही बनेंगे। यह चीज बहुत अच्छी तरह से बुद्धि में रखने की है । किसी को दिखाना तो नहीं है, ना शो तो नहीं करना है ना। भगवान को दिखाकर कि तेरे लिए हम करते हैं नहीं, यह तो अपने लिए करना है अपने ही करने की बात है। उस चीज को समझने का पुरुषार्थ करने का ऐसा रखो इसलिए ऐसा चांस मिलता है ना सर्विस में तो ठंडे नहीं रहो, यह चांस थोड़ी घड़ी घड़ी आते हैं यह सब इससे भी पूरा अटेंशन देना है। अभी यह एक सप्ताह का चल रहा है प्रोग्राम , चार-पांच रोज थोड़ा अपना जो समझाना जानते हो और जिन्हों को शौख हो और जिन्हों को प्रैक्टिस करनी हो और जो भी अच्छी तरह से सर्विस करने के लायक भी हैं तो उन्हों को जरा अटेंशन ज्यादा देना चाहिए । चार पांच रोज थोड़ा अटेंशन देकर के टाइम दे करके, शाम के टाइम में सर्विस वाले भी कुछ फ्री रहते हैं और माताएं तो फ्री है ही , रसोई वसोई तो पक जाती है सुबह को फिर शाम का भी कुछ पकाया कुछ किया बाकी थोड़ा बहुत

कुछ आ करके अच्छे ढंग से चार पांच दिन का प्रोग्राम रख करके थोड़ा अटेंशन देना। बापदादा और मां की मीठे मीठे सिकिलधे, बहुत अच्छे सपूत बच्चे प्रति और सर्विसेबल, कैसा तुलसीराम? ऐसे बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग ।

060. पुरुषार्थ और प्रालब्ध

ओम शांति।

इसको भी यथार्थ रीति से समझना है कि पुरुषार्थ और प्रालब्ध क्या चीज है । वैसे तो जो कुछ मनुष्य करता है वह उनकी प्रालब्ध बनती ही है लेकिन हमको पुरुषार्थ किस चीज के लिए करना चाहिए और हमारी प्रालब्ध कैसी होनी चाहिए इन सब बातों का भी यथार्थ ज्ञान होना चाहिए । ज्ञान माना समझ और इसी के ही समझ को ज्ञान कहा जाता है। यह जो ज्ञान नाम मशहूर है ना भाई ज्ञान बिना गत नहीं है वह कौन सा ज्ञान है, यही ज्ञान जिस ज्ञान से हम अपने ऊंच प्रालब्ध के पुरुषार्थ को जानें । बाकी वैसे कॉमन तो मनुष्य पुरुषार्थ करते ही रहे हैं । देखो शरीर निर्वाह के लिए, पेट की आजीविका के लिए कोशिश करते ही रहे हैं और जो जो कुछ, कुछ ना कुछ अच्छे काम या जो भी थोड़ा बहुत कुछ करते हैं वह तो करते ही हैं लेकिन यह समझना है कि आखिर भी हमारे जीवन की क्या बस यही प्रालब्ध है जो हम पा रहे हैं। कर्म जो कर रहे हैं उसका भी तो फल हमारे सामने ही है ऐसे नहीं हम जो करते हैं उसका फल कोई और दुनिया में जमा होता जा रहा है नहीं, इसी में ही पा रहे हैं । तो हम देख रहे हैं कि जो हम कर्म करते हैं उसका फल भी हमारे सामने ही

है परंतु इस फल में अथवा प्रालब्ध में होते भी फिर भी हमको इच्छा रहती है कि आगे कुछ सुख शांति प्राप्त करें तो वह उनका पुरुषार्थ क्या है उसकी नॉलेज होनी चाहिए । अभी उसकी नॉलेज सिवाय परमात्मा के जो ही हमारे पुरुषार्थ और प्रालब्ध को यथार्थ जानता है उन्हीं के सिवाय और कोई इस चीज को समझाएं नहीं सकते हैं कि तुमको कौन सा पुरुषार्थ करना है जिस पुरुषार्थ को करके फिर तुमको कोई पुरुषार्थ करने की जरूरत ना पड़े। वह पुरुषार्थ कौन सा है और उसको ही कहा जाता है प्रालब्ध जिसे पा करके फिर हमको कुछ पाने की इच्छा ना रहे । यह गीता में भी, गीता के भगवान के वर्संश से है कि मैं तुमको बैठ कर के वह पुरुषार्थ कराता हूं जिसकी तुमको प्रालब्ध वह मिलेगी जिसको पा करके तुमको फिर पाने के लिए ऐसी कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहेगी तुमको मैं वो प्राप्त कराता हूं। तो वह कौन सी प्राप्ति है जिसको पा करके हा फिर हमको पाने के लिए कुछ इच्छा ना रहे। देखो अभी धन है तो भी इच्छा तो रहती है ना फिर भी सुख और शांति की। फिर भी कुछ ना कुछ करते ही रहेंगे धन है तो तो फिर पुत्र ना होगा, फिर पुत्र की इच्छा या फिर पुत्र होगा तो कोई ऐसा होगा जो धन ही और नीचे ऊंचे कर दे फिर कहेंगे भगवान इसको सुमति दे ये कर, फिर या कोई शरीर का रोग होगा, कई फिर कारण हो जाते हैं ना, परंतु नहीं बाप कहते हैं कि तुम्हारी प्रालब्ध इतनी ऊंची होनी है और हो सकती है और मनुष्य के ही पाने की है जिसमें तुमको कोई अप्राप्त वस्तु ना हो यानी सब कुछ प्राप्त हो

संपत्ति, शारीरिक सुख, हर तरह की जो भी सब है जिसके ही साथ सुख का संबंध है। सुख का संबंध किसके साथ है रोग ना हो, अकाले मृत्यु ना हो, संपत्ति की हीनता ना हो, यह सभी बातें ना हो, लड़ाई झगड़े ना हो , तो फिर तो जीवन ठीक रहे ना। शरीर में रोग होता है, अकाले कोई मरता है तो दुःख होता है, रोग होता है तो दुःख होता है, धन की हीनता है तो दुःख है, लड़ाई झगड़े हैं तो दुःख है लेकिन यह सभी बातें ना हो फिर तो प्रालब्ध ठीक है ना, तो उसी प्रालब्ध का पुरुषार्थ कौन सा । तो इसीलिए बाप कहते हैं वह पुरुषार्थ और वह प्रालब्ध मैं समझाता हूं कि तुमको उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है जिसमें सब कुछ एवर हेल्दी, एवर वेल्थी, एवर हैप्पी यानी सब कुछ साधन जो है सुख के वह तुमको प्राप्त रहे तो उनका पुरुषार्थ बैठ करके बताते हैं। यह देखो उनकी कॉलेज है, स्कूल है, जो बैठकर के इन्हीं सभी बातों के संपूर्ण प्राप्ति का जो प्रालब्ध है उसको कैसे पाएं उसका बैठ करके यह नॉलेज सिखा रहे हैं । अभी वह तो सीखने और समझने की बात है, ऐसी कोई चीज नहीं है बनी बनाई कि दे देवें। ऐसी कोई चीज होती तो अभी दे देते भाई यह चीज है ले लो या यह चीज है खा लो या यह चीज है ऐसे कर लो, नहीं। यह तो समझना है तो समझने के लिए टाइम देना पड़े तो उस बातों को आ करके समझ करके और उसी समझ से अपने कर्मों को राइटियस वे चलाना है क्योंकि हमारा प्रालब्ध का आधार ही कर्म के ऊपर है । जो हम कर्म कर्म करते हैं उससे हमारी प्रालब्ध बनती है । तो जिसके आधार पर

हमारे कर्मों के आधार पर हमारी प्रालब्ध का आधार है तो उसी कर्म का नॉलेज होना चाहिए यथार्थ कि हम क्या करें, क्या करने से हम अपना पूर्ण प्रालब्ध जिसमें हमारी, देखो कोई कुछ होता है शरीर को रोग तो मनुष्य कहते हैं यह भी हमारे कर्म का हिसाब है ।, कोई निर्धनता होती है धन की हीनता तो भी कहते हैं यह भी हमारी किस्मत कर्‍म का है, कोई अकाले मरते हैं तो भी कहते हैं कि यह भी उसके कर्म का हिसाब का किस्मत का है तो फिर भी किस्मत कर्म हर बात में कहने में आता है परंतु उसका ज्ञान होना चाहिए ना कि यह हमारी किस्मत अथवा कर्म कौन से है जिससे यह हमारी उल्टी बातें बनती है। क्यों ना हमको नॉलेज हो तो हम इसका सुलटा बनाए कि हमारे जीवन में ऐसी बातें ना आवे । तो ऐसे नहीं है कि हमारे जीवन में ऐसी जीवन नहीं थी थी, थी परंतु एक ही मनुष्य की नहीं, हमारी दुनिया ही ऐसी थी। दुनिया में कभी रोग नहीं था, ऐसे नहीं है कि अच्छा बेटे को रोग होगा तो बाप को दुःख नहीं होगा ? होगा, अकाले मरेगा तो भी दुःख होगा परंतु नहीं यह तो हर एक चाहिए ना। हर एक ऐसा बलवान चाहिए , हर एक के पास इतनी ऊंच प्रालब्ध चाहिए जो हमारा संसार में सभी सुखी हों तभी तो मनुष्य सुखी हो सकते हैं ना। नहीं तो फिर अगर राजा है प्रजा में कुछ होगा तो दुःख होगा, प्रजा का राजा को कुछ होगा तो दुःख होगा एक दो का संबंध है ना तो हमारे सभी संबंध वालों में सुख की प्राप्ति हो तभी मनुष्य सुखी रह सकता है । तो ऐसी दुनिया थी

जिसको ही कहा जाता था हेवेन। हेवेन माना ही क्या, हेवेन में कोई एक आदमी थोड़ी खाली सुख शांति वाला होगा, हेवेन माना हेवेन वर्ल्ड है ना तो वर्ल्ड में माना जो भी मनुष्य है सभी सुखी थे। उनके पास कभी रोग, कभी अकाले मृत्यु, कभी कोई भी लड़ाई झगड़े, यह सभी दुःख के कारण थे नहीं, तभी तो उसको हेवेन कहते हैं ना तो हेवेन भी तो इसी वर्ल्ड का नाम है ना, जैसे हेल, अभी देखो हेल है , हेल कोई दूसरी दुनिया नहीं है या हेवेन कोई ऊपर दुनिया है, कई समझते हैं हेल शायद नीचे है हेवेन ऊपर है ऐसे समझते हैं परंतु नहीं। हेवेन एंड हेल यही वर्ल्ड है, इस वर्ल्ड की स्टेज लाइफ की जैसी बनती है उनको हेल एंड हेवन कहा जाता है । तो अभी कौन सी लाइफ है इसको हेल कहेंगे रोग, निर्धनता, दुःख, अशांति इसको हेल कहेंगे बाकी कोई ऐसी नीचे कोई दुनिया है जिसमें जाकर के हम जीव जंतु बनते हैं, कई ऐसे समझते हैं और हेवेन में ऊपर जाना है ऐसी कोई बात नहीं है। ना ऊपर कोई दुनिया है ना नीचे की बात है, दुनिया यही है लेकिन इसमें लाइफ। हमारी लाइफ नीचे आई है, ऐसे नहीं हम कोई नीचे कोई दुनिया में हैं, चले गए हैं, नहीं हमारी लाइफ नीचे चली गई है अभी फिर उस लाइफ को ऊंचा करने से फिर हमारी ही दुनिया हेवेन होती है तो वह समझना है । अभी हेवेन नहीं है, ऐसे नहीं है हेवेन हेल अभी है। अभी हेल ही है सारी वर्ल्ड, सब अभी हेल निवासी हैं अर्थात हेल के रहने वाले हैं । बाकी जब हेवेन थी तो फिर हेल का नाम निशान नहीं था जैसे रात है तो दिन का नाम निशान

नहीं है, जब दिन है तो रात का नाम निशान नहीं है, तो हर एक का अपना-अपना टाइम है ना इसी तरह से जब हेवेन था तो फिर यह दुःख और अशांति की बातें नहीं थी। कभी हे भगवान यह दे, हे भगवान रहम कर, हे भगवान यह कहने की भी दरकार नहीं पड़ती थी, क्यों कहे ? सब कुछ प्राप्त था, जीवन में प्रालब्ध ऊंची थी तो यह सभी चीजों को भी समझना है। तो हमारी, मैं जो आत्मा हूं उनके पास इतना बल था तो यह सभी बातें समझने की है ना। बाकी जो कई समझते हैं कि नहीं आत्मा कोई मोक्ष या कहां जाकर के रहेगी। वहां फिर यह शरीर में ही नहीं होगी तो कोई दुःख ही नहीं पाएगी। नहीं, सुख भी कंप्लीट शरीर में ही है और दुःख भी कंप्लीट शरीर में ही है तो यह सारी चीजों को समझना है। ऐसे नहीं है कि शरीर के बिना हम होंगे तभी सुखी होंगे नहीं, वह कोई स्टेज है ही नहीं । हां जब तलक हमारा पार्ट नहीं है तो उसको कहेंगे साइलेंस, नो दुःख न सुख, वह कोई स्टेज नहीं है। जैसे यह जड़ है । इसको न दुःख है ना सुख है, यह जड़ है तो वह एकदम आत्मा साइलेंस बिल्कुल जितना समय पार्ट नहीं है। वह भी ऐसे नहीं है कि हमको सदा ऐसे रहना है, जितना टाइम वहां हैं क्योंकि ये तो संख्या बढ़ती है ना तो जितना टाइम जिसका पार्ट नहीं है तो साइलेंट में है आत्मा यानी आत्मा बॉडी नहीं लिया है तब तलक। परंतु वह कोई स्टेज सुख की या दुःख की दोनों ही नहीं है ना, ना दुःख ना सुख तो वह फीलिंग नहीं कुछ इसीलिए उस स्टेज को कोई बड़ी ऊंची स्टेज नहीं कहेंगे।

स्टेज तब है जब जीवन में मुक्त जिसको जीवनमुक्ति कहा जाता है यानी जीवन में रहते ये सभी दुःख के जो कर्म है इन सबसे मुक्त तो उसको कहेंगे जीवनमुक्त, वह स्टेज तो उसी को हेवेन कहा जाता है। वह साइलेंस में आत्मा बैठी है वह हेवेन नहीं है वह नो हेल नो हेवेन । हेल एंड हेवन नहीं जब तलक पार्ट नहीं है। हेवेन एंड हेल वर्ल्ड का नाम है और वर्ल्ड पर है हेवन एंड हेल। तो इसीलिए कई जो बेचारे मोक्ष का नाम सुना है ना तो वह समझते हैं शरीर से मोक्ष है यानी शरीर से मोक्ष नहीं, हमको दुःख से मुक्ति चाहिए । तो इसका मतलब शरीर कोई हमारे दुःख का ही कारण है ऐसी बात नहीं है इसीलिए कई समझते हैं शरीर से ही मोक्ष ले तो इसका मानो दुःख से ही मोक्ष हो गया परंतु नहीं हम शरीर में होते सदा सुखी थे जिसको जीवनमुक्त कहा जाता है यानी जीवन में दुःख से मोक्ष तो हमको चाहिए दुःख से मोक्ष न ना कि शरीर से मोक्ष। शरीर से भी हम मोक्ष लेना तभी चाहते हैं क्योंकि हमको शरीर में समझते हैं दुखी है ना इसीलिए समझते हैं इसमें रोग, इसमें अकाले मृत्यु इसमें यह, ऐसी ऐसी बातें समझी है तभी समझते हैं इससे मोक्ष हो जाए परंतु मोक्ष कोई हमको शरीर से नहीं होना है और होना भी नहीं है, आत्मा को आना भी है शरीर में परंतु मोक्ष हमको किससे चाहिए दुःख से। तो दुःख से मोक्ष कैसे हो उसी का उपाय समझना हैं । तो राइट बस समझनी है ना, जब तलक बुद्धि में राइट बात ना होवें कि हमको मोक्ष किससे होना है तो कई बिचारे मोक्ष शब्द का भी अर्थ नहीं

समझते हैं कि मोक्ष किससे? क्या शरीर से, दुनिया से या हमको दुःख से तो यह समझना है । तो ऐसे नहीं है कि दुनिया माना दुःख ही है क्योंकि आज दुनिया में देखा ही दुःख है ना तो समझते हैं दुनिया है ही दुःख की , जिसने जो देखा है वह समझते ऐसे हैं परंतु ऐसे नहीं हैं । कभी किसी ने सुख देखा ही नहीं है ना, अभी बहुत जनरेशन से दुःख ही देखते आए हैं ना तो समझते हैं शायद दुनिया में है ही दुःख इसीलिए समझते हैं शरीर में है ही शायद दुःख क्योंकि शरीर दुःख के ही देखे हैं ना। परंतु नहीं हमारे शरीर बड़े अच्छे थे और हमारी दुनिया बहुत अच्छी थी जिन्ही का नाम तो हेवेन था ना । तो वह हमारी जो लाइफ थी ना वह सदा सुख की थी और उसी को ही कहेंगे कि हमारा दुःख से मोक्ष जिसको जीवनमुक्ति कहा जाता है। तो यह सभी चीजें को समझना है इसीलिए आत्मा की कंप्लीट स्टेज क्या है, आत्मा क्या है और मोक्ष क्या है, सभी बातों को भी अच्छी तरह से समझना है कि आत्मा को शरीर से मोक्ष की बात नहीं है, आत्मा को दुःख के इस बंधन से मोक्ष चाहिए, तो वह कैसे छूटे। आत्मा का कोई क्वालिटी दुःख नहीं है, आत्मा प्यूरीफाइड है और प्यूरीफाइड का सुख का ही है परंतु आत्माएं इम्परीफाइड हुई है उसके कारण उसके पास दुखा आया है । अभी इंप्यूरिफिकेशन से आत्मा अपने को अलग कर देवें यानी प्यूरीफाइड हो जावे तो फिर हां आत्मा को सुख प्राप्त रहेगा लेकिन वह कैसे होवे इन सभी बातों को समझना है तो हमको मोक्ष किससे चाहिए इससे इंप्योरीफिकेशन से।

इंप्यूरिफिकेशन ही कारण है दुःख सुख का, प्यूरिफिकेशन सुख का कारण है इसीलिए कहने में भी आता है ना प्योरिटी तो पीस एंड प्रोस्पेरिटी नो प्योरिटी देन नो पीस नो प्रोस्पेरिटी। तो हमको फर्स्ट क्या चाहिए आत्मा में , प्योरिटी तो प्योरिटी के आधार से ही हम सदा सुख को पा सकते हैं । तो अभी हमको मोक्ष किससे चाहिए, आत्मा को शरीर से नहीं, आत्मा को दुःख से । तो हमको दुःख से मोक्ष कैसे मिले, दुःख देने वाला शरीर नहीं है चीज, दुःख किसने दिया है, विकारों ने, इंप्यूरिफिकेशन क्या है ये विकार। तो हमको मोक्ष किससे चाहिए, विकारों से, रावण से । बदलाया ना वह रावण ये जो दस शीश का दिखलाते हैं न यह विकारों का सिंबल है। तो यह सिंबल जो है विकारों का तो इन विकारों से हमको मोक्ष चाहिए परंतु शरीर से मोक्ष की बात नहीं है । इसीलिए कई जो हठयोग, प्राणायाम या कई साधन करते हैं कि हम शरीर से ही निकल जाए, नहीं। हमको शरीर से निकलने की बात नहीं है, हमको है दुखों से छूटना तो दुःख से छूटना माना इंप्यूरिफिकेशन से छूटना । वह कैसे छूटे उसका उपाय चाहिए । अभी उसकी यह कॉलेज है । यह इंप्यूरिफिकेशन को कैसे नाश किया जाए और प्यूरिफिकेशन को कैसे अपने में लाया जाए तो प्यूरिफिकेशन से पावर आएगी और उसी पावर से हम अपनी ऊंच प्रालब्ध को बना सकते हैं तो यह सारी चीजों को समझना है । अभी इसके लिए जरा टाइम चाहिए क्योंकि कभी-कभी नए आते हैं तो जरा यह समझाना होता है एंड ऑब्जेक्ट, कि अपनी लाइफ की ऐम क्या

है लेकिन उसके लिए हमें क्या करना चाहिए वह तो फिर बकायदा आ करके, टाइम दे करके, सुनेंगे, समझेंगे तो काफी अपने जीवन में फर्क महसूस करेंगे, परिवर्तन और समझेंगे कि हमारी लाइफ आगे चलती जा रही है और समझना जरूरी है, अच्छा 2 मिनट साइलेंस।

मम्मा मुरली मधुबन

061. रचना और रचयिता का ज्ञान

रिकॉर्ड:

आने वाले कल की तुम तस्वीर हो.......

ओम शांति।

दुनिया को नाटक भी कहते हैं, खेल फिर ड्रामा कहो, नाटक कहो, खेल कहो बात एक ही है। इसको नाटक क्यों कहते हैं यह भी समझना है और नाटक जो होता है वह एक ही कहानी होती है। खेल देखते हो ना, ड्रामा, पिक्चर पर जाते हो फिर ड्रामा की जो स्टोरी होती है वह एक ही होती है और वह स्टोरी शुरू होती है फिर कैसे पूरा हुआ उसके बीच बीच में क्या हुआ, फिर उसमें बहुत बाय प्लॉट्स बीच-बीच में दिखाते हैं लेकिन स्टोरी एक ही होती है । इसी तरह से यह भी हमारी जो वर्ल्ड है ना, इसको भी नाटक कह सकते हैं जिसमें हम सब एक्टर्स हैं। अभी हम एक्टर्स हैं तो हम एक्टर्स को हमारे इस

नाटक का पता होना चाहिए ना कि यह किस स्टोरी पर शुरू होता है और यह पार्ट कहां से शुरू हुआ और कहां तक यह पूरा होता है और उसमें समय प्रति समय किस किस एक्टर्स का कैसे-कैसे पार्ट होते हैं और यह सभी बातों का और इसका डायरेक्टर, क्रिएटर कौन है और इस नाटक का हीरो एंड हीरोइन पार्ट किसका है इन सब बातों का भी नॉलेज होना चाहिए ना, खाली नाटक कह दिया तो उससे तो काम नहीं होगा ना । नाटक है तो नाटक के हम एक्टर्स भी है, नाटक में तो हम है ना। यह दुनिया कहो या नाटक कहो तो नाटक में कौन है हम एक्टर्स है ना तो हम एक्टर्स हैं तो हम एक्टर्स को पता होना चाहिए न कि इस नाटक के हीरो एंड हीरोइन कौन हैं और इसका डायरेक्टर क्रिएटर कौन है और हम एक्टर्स हैं तो हमारा पार्ट पहले क्या शुरू हुआ, स्टोरी कैसे शुरू हुई, कहां इसकी एंड होती है तो इसके शुरुआत का और इसके अंत का सब मालूम होना चाहिए। तो इन सब बातों की जानकारी होनी चाहिए ना। अगर कोई एक्टर हो ड्रामा का और हम उससे पूछें कि इसकी क्या स्टोरी है, यह कहां से शुरू होता है, कहां पूरा होता है , अगर वह कहे हमें मालूम नहीं है तो उसको क्या कहा जाएगा। कहेंगे यह तो इलिटरेट है । इसको इतना पता नहीं

है कहता है मैं एक्टर हूं इस ड्रामा का इस नाटक का और इससे पूछा जाता है कि तुम एक्टर हो, तेरा पार्ट क्या है, कहां से शुरू हुआ कहां भला पूरा होता है, इस ड्रामा का डायरेक्टर कौन है, क्रिएटर कौन है यानी जिसने बैठ करके यह बनाया और इसमें हीरो एंड हीरोइन पार्ट किसके हैं, क्या-क्या कौन-कौन और एक्टर्स का पार्ट है और क्या है यह बातें अगर उनसे पूछी जाएं और वो कहे हमें मालूम नहीं है तो कहेंगे तुम एक्टर हो करके और तुम्हें मालूम नहीं है, ये तो इलिटरेट है । तो इसी तरह से अभी हम अभी जबकि एक्टर है इस दुनिया के कहो या नाटक के कहो तो हमको इन बातों की जानकारी होनी चाहिए ना कि हम एक्टर्स है तो हमारी एक्टिंग कहां से शुरू हुई, कब से शुरू हुई और कहां इसकी एंड होती है । आखिर नाटक है तो नाटक का शुरू भी होना है और उसकी एंड भी होनी है, और शुरू है तो एंड भी जरूर है । ऐसे भी नहीं है शुरू हुआ है तो चलता ही चलेगा चलता ही चलेगा तो जो चीज शुरू होती है उसकी एंड भी होती है और जिसकी एंड है उसको फिर शुरू भी होना है तो यह सारी चीजों को समझने का है ना । तो अभी बैठ करके देखो जो नाटक का रचता, क्रिएटर डायरेक्टर है, जो जानता है कि किस तरह से हम एक्टर्स, यह हमारी

एक्टिंग कब से शुरू हुई और वह स्टोरी का पहला जो भाग है यानी पहली शुरुआत कहां से हुई वह सभी बातें बैठकर के समझाते हैं परंतु हम एक्टर्स होते यह देखो भूल गए हैं । अभी बाप आ करके बतलाते हैं देखो तुम इलिटरेट हो गए हो, तुमको अपना पता नहीं है। एक्टर्स हो परंतु एक्टर्स होते तुम जानते नहीं हो कि हम कहां से, कब यह खेल शुरू हुआ। अगर कोई पूछे कि भाई शुरू कब हुआ, ये कब पूरा होता है और ना बता सके तो क्या कहेंगे। तो अभी बाप बैठ करके समझाते हैं कि यह शुरू कहां से हुआ, इसमें मुख्य मुख्य एक्टर्स कौन हैं और सभी एक्टर्स में हीरो एंड हीरोइन पार्ट किसका है यह सभी बातें बैठकर के समझाते हैं । तो अभी देखो नॉलेज में है जो रोज आते हो और सुनते हो, समझते हो उन्हों को मालूम है कि हां इसका पहला पहला डायरेक्टर और क्रिएटर कौन है। जानते हो वही क्रिएटर कहेंगे सुप्रीम सोल परमपिता परमात्मा । वह भी एक्टर है परंतु उनकी एक्टिंग कौन सी है डायरेक्टरपन की। वह भी एक बार आता है ना इधर वह भी एक्टर बनता है परंतु उनकी एक्टिंग कौन सी है इस ड्रामा का अथवा खेल का डायरेक्टर । तो देखो अभी डायरेक्टर बन करके अथवा क्रिएटर बन करके वह एक्ट कर रहे हैं । ऐसे कई खेल

होते हैं ना तो उसमें उसके डायरेक्टर भी पार्ट लेते हैं फिर उस खेल में भी डायरेक्टरपन का पार्ट अदा करते हैं। देखो पिक्चर में भी कभी पिक्चर दिखाते हैं देखे हैं, ऐसे खेल बहुत होते हैं तो दिखाते हैं भाई फलाने आदमी पिक्चर देखने गए तो पिक्चर में पिक्चर दिखाते हैं तो फिर हां उसमें दिखलाएंगे ना कि वही पिक्चर का डायरेक्टर फिर डायरेक्टर उसमें भी दिखलाएंगे तो डायरेक्टर होकर के पार्ट अदा कर रहे हैं । हैं एक्टर परंतु उसने डायरेक्टर का पार्ट अदा किया है तो इसी तरह से परमात्मा भी एक्टर है , अभी एक्टिंग पर आया हुआ है परंतु वह एक्टर का कौन सा पार्ट है उसका डायरेक्टर का। वो डायरेक्टर और क्रिएटर का एक्टर बनता है अर्थात उसकी एक्टिंग का पार्ट डायरेक्टर और क्रिएटर का होता है । तो अभी वह बैठकर के डायरेक्टर स्वयं बतलाता है एक्टिंग, पार्ट एक्ट करके और समझाते हैं कि मैं डायरेक्टर हूं इस रचना का। कैसे, वह बैठ करके समझाते हैं कि जो नई पहली-पहली एक्टर की आदि होती है वह मेरे से होती है। ऐसे नहीं एक्टर है ही नहीं, दुनिया तो अनादि है लेकिन इसकी शुरुआत मैं बैठकर के करता हूं कैसे, कि जो प्यूरीफाइड मनुष्य अथवा सतयुगी दुनिया है अथवा जिसको पहली नई दुनिया कहेंगे तो न्यू

वर्ल्ड मैं क्रिएट करता हूं । अभी देखो यह कहानी का पहला पहला जो टाइम है वह कैसे शुरू होता है अभी यहां से शुरू होता है कि डायरेक्टर क्रिएटर कैसे नई रचना, मनुष्य कैसे रचते हैं । अभी देखो यह रच रहे हैं । रचते जा रहे हो ना? अभी आप सब जो भी पवित्रता को धारण करके और प्रैक्टिकल उसके फरमान के ऊपर, डायरेक्टर के डायरेक्शंस के ऊपर चल रहे हैं वह उनकी मुख वंशावली मानो अभी नई दुनिया उसने रची । अभी यह नए एक्टर्स, नई दुनिया के नए एक्टर्स अभी यह रचे हैं जो बैठकर के अभी प्यूरीफाइड बन रहे हैं । तो अभी उन्हीं के द्वारा फिर वह एक्टर्स का फिर कैसे अनेक जन्मों का यह चक्कर चलता है वह बैठकर के बाप समझाते हैं कि यह पवित्र हुए मनुष्य फिर यह जाकर के दूसरे जन्म में इन्हों की फिर किंगडम देवी देवताओं के जेनरेशंस में चलती है । फिर वह किंगडम भी दो युग सूर्यवंशी चंद्रवंशी उसी में चलती है। फिर वह सूर्यवंशी चंद्रवंशीयों का जब एक्टर्स का पार्ट पूरा होता है तब फिर, वह फिर थोड़े नीचे गिरते हैं अथवा वाम मार्ग में देवताऐं जब आते हैं अथवा गिरते हैं तो फिर दूसरे धर्म का फिर आता हैं। इसी तरीके से फिर नंबरवार हर एक फिर इब्राहम फिर बुद्ध फिर क्रिश्चियन यह सभी धर्म

के स्थापक फिर आ करके अपना अपना धर्म स्थापन करते हैं। अभी देखो मुख्य-मुख्य एक्टर्स का बैठकर के समझाते हैं इसी तरह से कि यह होता होता वह जो पहला आदि सनातन धर्म जो परमात्मा ने स्थापन किया उनका वह नीचे गिरते आते हैं और दूसरे भी जो स्थापन हुए हैं, अभी अंत में आ करके उनका भी लास्ट स्टेज सबका होता है तभी फिर मैं आ करके फिर जो पहला आदि सनातनी देवी-देवता धर्म है ना उसकी फिर आकरके सेप्लिंग लगाता हूं । इसी तरह से यह सारा ड्रामा आदि से अंत तक पूरा हो करके फिर आदि, फिर अंत फिर आदि इसी तरह से यह फिर चलता रहता है । अभी यह ऐसा कितना बार चला होगा इसकी कोई गिनती नहीं है । कोई कहे यह पूरा हो करके यह शुरू हुआ फिर पूरा हो करके फिर शुरू हुआ ऐसा कितना बार हुआ है इसकी कोई गिनती नहीं है । इनको कहेंगे हम अनेक बार यानी अनगिनत बार। तो इनकी कोई गिनती नहीं बाकी हां आदि कहां से हुई, शुरू कहां से हुआ, फिर इसकी एंड कहां होती है यह बैठकर के बाप समझाते हैं m तो अभी बैठ करके हम एक्टर्स को यह सारी नॉलेज दे रहे हैं जिससे अभी हम जानते हैं कि हम एक्टर्स हैं। तो पहली एक्टिंग किसकी चलती है हीरो एंड हीरोइन

पार्ट किसका हो गया, जो वो सूर्यवंशी चंद्रवंशी राजे बने और जिनको बैठ करके अभी बना रहे हैं तो मुख्य पार्टधारी तो हो गए ना जिसको एडम एंड ईव कहो, आदम एंड हवा जो अपने-अपने में कहते हैं या ब्रह्मा और सरस्वती फिर वही जा करके लक्ष्मीनारायण बनते हैं तो कहेंगे मुख्य पार्ट फिर वह कैसे नीचे गिरते हैं तो उसकी वंशावली भी नीचे आती है फिर दूसरों को टर्न मिलता है इसी तरीके से यह सब चलते हैं परंतु पहली पहली रचना तो उनको गिनेंगे ना, उसके बाद फिर यह सब दूसरी रचना चली। तो उस रचना के बाद यह दूसरा पीछे नंबर आए सब धर्म इब्राहिम, बुद्ध और यह अब । तो यह सारा वृतांत बैठकर के बाप समझाते हैं कि किस तरह से मैं आ करके यह ह्यूमन वर्ल्ड क्रिएट करता हूं और इसका आदि अथवा शुरुआत कैसे करता हूं तो यह सभी बातें बैठकर के समझाते हैं । तो देखो नाटक की स्टोरी कहां से शुरू हुई, कहां पूरी होती है उसके बीच का दूसरे दूसरे का यह बाय प्लॉट्स कैसे चलते हैं यह सभी वृतांत बैठकर के बाप समझाते हैं। तो अभी देखो बुद्धि में है ना यह सारा नाटक कैसे चलता है। बाकी ऐसे नहीं है कि बस यह नाटक है, ऐसे ही चलता रहता है बस ऐसे ही। नहीं, नाटक है तो नाटक में हम एक्टर्स हैं तो

एक्टर्स को पता होना चाहिए ना कि इसकी आदि, अंत और फिर किस किस एक्टर्स का पार्ट है। इसमें मुख्य मुख्य पार्ट अदा करने वाले कौन हैं, यह सभी बातों का ज्ञान होना चाहिए । वो नहीं लिखते भी हैं मुख्य मुख्य पार्ट में एक्टर्स कौन है, किस किस के द्वारा इसमें एक्टिंग होगी, यह सभी बतलाते हैं तो पता होना चाहिए ना इस नाटक का भी कि उसके मुख्य मुख्य एक्टर्स कौन है और कभी-कभी उनका किस-किस पार्ट में आना होता है तो यह सभी वृतांत अभी बाप बैठकर के समझाते हैं इसलिए अभी सारे नाटक की स्टोरी का अभी मालूम है कि यह कैसे है । अभी आ करके यह नाटक पूरा होने पर है । वह तो तीन घंटे में पूरा होता है इसको तो 5000 वर्ष लगते हैं नाटक को पूरा होने में, तो शुरू हुआ है तो अभी 5000 वर्ष अभी इसके पूरे होने पर हैं तो बाकी उसमें थोड़े बरस हैं तो बस अभी उसकी तैयारी है अभी उसका लास्ट समय आ करके पहुंचा है उसी में अभी ये नाटक पूरा हो करके फिर जो शुरू था जैसे फिर वैसे ही रिपीट होगा। तो यह सारा वृत्तांत बुद्धि में होना चाहिए और इसी को ही फिर कहा जाता है ज्ञान तो अगर हम हैं एक्टर्स तो एक्टर्स को यह नॉलेज अथवा ज्ञान होना चाहिए सारा बुद्धि में और जिसके जानने से

फिर हमको अभी पता चलता है कि हम जो पहले थे ना वैसे फिर बनते हैं । अभी हम आ करके लास्ट स्टेज में पहुंचे हैं तो यह दुनिया का भी सारा यह स्टेजिस का कैसे चलता है फिर नाटक कहो या दुनिया कहो बात तो एक ही है। तो दुनिया की यह लास्ट स्टेज है अब फिर जो उसकी पहली स्टेज थी तो आज की दुनिया और फिर कल की दुनिया, तो कल ही कहेंगे ना अभी निकट आ करके खड़ी हुई है जैसे की अभी कल की दुनिया, कल क्या थे आज क्या हुए हैं फिर कल क्या होंगे अभी जानते हैं कि जो कल थे, देखो कितने ऊंचे थे आज क्या हो गए हैं फिर वह कल को होने वाले हैं तो अभी जैसे आज और कल का दुनिया का सारा नॉलेज हो गया । कि आज दुनिया क्या है, कल क्या थी और फिर कल मैं क्या होने की है उसको हम अभी जानते हैं कि फिर वही होने की है जो थी । तो अभी फिर कैसे होगी और कैसे क्या होगा उनका सारा वृतांत बैठकर के बाप समझा रहे हैं और अपन भी उसी फिर स्टेज पर आने के लिए पुरुषार्थ रखते हैं। है तो हम ही ना, आत्मा का सारा सर्कल हम ही तो आत्माएं पुनर्जन्म के चक्कर में आने वाले जो हैं वही तो इसी चक्कर, एक्टर्स भी तो हम ही बनते हैं ना। ऐसे नहीं है कि अभी की आत्माएं

और वहां की आत्माएं कोई दूसरी थी । आत्माएं अनेक जन्मों का चक्कर लेती नीचे आती हैं, आत्माओं को ही प्यूरीफाइड होकर अपने स्टेज में आने का है बाकी ऐसे नहीं वह फिर नई आत्माएं कोई स्टॉक से आएंगे। यही हम आत्माएं प्यूरीफाइड होती हैं और प्यूरीफाइड हो करके फिर अपनी स्टेज को लेंगे तो यह सभी चीजों को समझने का है जो सारी दुनिया का वृतांत है। तो यह वर्ल्ड हिस्ट्री एंड ज्योग्राफी जैसे कि कौन-कौन आए, किस किस तरह से पार्ट बजाया । जैसे स्कूल में भी बतलाते हैं ना हिस्ट्री भी होती है और जोग्राफी भी होती है । जो ।ग्राफी कहते हैं स्थान और यह सब बतलाते हैं और हिस्ट्री होती है भाई मनुष्य फलाने ने क्या किया, उसने क्या किया उनका, तो बाप भी बैठकर के हिस्ट्री भी और यह सारी कि कैसे यह सब भारत अविनाशी खंड है और कहां पहले कैसे था पीछे देखो अभी उसका अंत कैसे होता है तो यह दूसरे खंड अफ्रीका अमेरिका यह सब पीछे-पीछे हुए हैं। इनके धर्म इनके राज्य भी पीछे-पीछे हुए हैं पहले नहीं थे, यह सब पीछे हुए हैं । पहला कौन सा था, यह भारत का था, प्राचीन भारत को ही कहा जाता है, परंतु प्राचीन का भी कोई अर्थ नहीं समझते हैं। कई समझते हैं प्राचीन का माना पुराना परंतु आज

से जो पुराना था वही तो नया था ना। पुराने का मतलब यह नहीं है कि पुराना, नहीं पुराना मतलब आज से बहुत टाइम, कहते हैं ना लोंग लोंग एगो वो इंग्लिश में भी कहते हैं लोंग लोंग एगो । तो लोंग लोंग एगो क्या था, बहुत बहुत पहले। बहुत बहुत पहले क्या था , दुनिया नई थी या पुरानी थी क्या कहेंगे। आज से लोंग लोंग एगो क्या था, दुनिया बहुत पुरानी थी या नई थी? नई थी क्योंकि यह आज पुरानी है। तो ऐसे नहीं कहेंगे कि बहुत पुराने जमाने में तो माना पहला कोई पुराना जमाना था। आज से भले वो टाइम बहुत आगे का है परंतु दुनिया नई थी इसीलिए ऐसे कहेंगे कि वह प्राचीन माना पुरानी दुनिया नहीं या पुराना भारत नहीं, नया भारत, आज पुराना है यानी ओल्ड है। तो आज के दुनिया को अथवा भारत को ओल्ड कहेंगे और वह जो था प्राचीन तो प्राचीन भारत माना नया भारत । तो कई इस बात को भी नहीं समझते हैं कि प्राचीन भारत का मतलब है नया भारत और आज है पुराना भारत। तो भारत देखो पुराना हो गया है ना तब तो देखो दुःख और अशांत, पुराने में क्या होगा, दुख और अशांति तो नया भारत नई दुनिया । तो अभी देखो बाप आ करके नया भारत और नई दुनिया बना रहे हैं । खाली भारत नहीं, भारत जब नया था तो दुनिया

नई थी, ऐसे नहीं दुनिया पुरानी था भारत नया हो, ऐसा हो ही नहीं सकता । देखो यह पुरानी दुनिया में भारत जो बनाया है नया वो देख लो ना न्यू दिल्ली फलाने फलाने नाम तो रख दिए हैं लेकिन न्यू कहां है, वह दुःख अशांति और वह सब जो नया था वही नया है।आज तो करके इमारतें बनाई हैं, अशोका होटल फलाने, फलाने, तो उसको कहते हैं न्यू दिल्ली, वह तो इमारते बनाई है ना लेकिन लाइफ में वह जो चीजें थीं, भारत हमारे लाइफ में जो ऊंचा था और जिसको ही नया भारत कहा जाता था वह तो चीज नहीं है ना। उसी को नया कहते थे प्राचीन चीज वो थी, तो उसी समय नया भारत तो नई दुनिया थी यानी दुनिया ही नई थी, आज पुराना भारत है तो दुनिया भी पुरानी है । अभी पहले नया भारत तो दुनिया भी नई इसीलिए बाप आ करके भारत जो अविनाशी खंड है और प्राचीन अपना देश है, अभी देश हो गया क्योंकि दूसरे देशों में यह भी एक टुकड़ा हो गया है। लैंड में देखो उसका एक टुकड़ा है ना परंतु वास्तव करके नहीं तो सारी वर्ल्ड, सारी पृथ्वी पर एक भारत का राज्य था जिसको कहा जाता था प्राचीन भारत। ये भारतवासी नहीं जानते हैं कि यह भारत जो प्राचीन तो सारी पृथ्वी के ऊपर एक का ही राज्य था भारत का

उसको प्राचीन भारत कहते थे। ऐसे नहीं दूसरे देशों के बीच में यह भी एक टुकड़ा उसको भारत कहते थे, नहीं। वह जो प्राचीन भारत था तो सारी पृथ्वी के ऊपर उनका पावर था, इतना भारत ऊंचा था और उसी समय भारत को प्राचीन भारत का जो नाम गाया हुआ है, गोल्डन स्पैरो और यह सभी उसको कहते हैं उसी टाइम की बात है जब सारी पृथ्वी और सबके ऊपर उसका कंट्रोल था। एक राज्य एक धर्म था सारी वर्ल्ड के ऊपर तो वो जो दुनिया थी ना, नया भारत और नई दुनिया उसी टाइम पूरा सुख था अभी कहां है इसलिए बाप कहते हैं अभी फिर सब डिस्ट्रक्शन करके फिर एक राज्य एक धर्म और प्राचीन वही नया भारत नई दुनिया बनाता हूं समझा। तो अभी चलेंगे ना उसमें, ऐसे दुनिया और ऐसी भारत जिसको गोल्डन स्पैरो और जिसमें कोई दुःख नहीं, कभी रोग नहीं, कभी कोई अकाल मृत्यु नहीं। अकाले नहीं मरेंगे, अभी तो मर जाते हैं ना , बैठे बैठे चलते कोई एक्सीडेंट हुआ, यहां कोई ठिकाना ही नहीं रहता हैं ना। तो नहीं, मरने का जीने का सबका बल तो उसको कहा जाता है कि वह ताकत थी , तो फिर से वही लाइफ चाहते हो ना? तो अभी उसी लाइफ को पाने के लिए तो फिर पुरुषार्थ रखो । मुफ्त में थोड़ी ही मिलेगी, कुछ तो मेहनत

करनी पड़ेगी ना ऐसे नहीं है कि मुफ्त में मिलेगी। परमात्मा तो आए हैं बनाने के लिए, तो जो डायरेक्टर क्रिएटर है वह तो आया है क्रिएट करने के लिए परंतु फिर भी हमको इंडिविजुअली मेहनत करनी है ना। हम करेंगे तब ऐसी दुनिया में अपना अधिकार लगा सकेंगे, आएंगे, नहीं तो फिर हम करेंगे नहीं तो पाएंगे कैसे, बीज बोएंगे तो पाएंगे । तो जो बोलेंगे वह पाएंगे, बोएंगे नहीं तो पाएंगे कैसे तो इंडिविजुअली बोना है । यह कर्म क्षेत्र है ना इस खेत में कर्मों से बोना। कर्म हमारा बोता है और हम जो कर्म होते हैं वह हम फल पाते हैं इसलिए हमको बाप बैठ करके कर्मों से बोने का सिखला रहे हैं कि कैसे कर्म बो, जैसे वह सिखलाते हैं ना खेत में खेती भी सीख जाते हैं कैसे बीज डालो, कैसे क्या उसका भी ट्रेनिंग देते हैं । तो बाप भी आ कर के हमारे को कर्म की खेत के लिए, कर्मों को कैसे बोए उसकी ट्रेनिंग दे रहे हैं कि अपने कर्मों को ऊंच बनाओ, बीज अच्छा बनाओ, क्योंकि बीज अच्छे डालो तो फल अच्छा मिलेगा इसीलिए अभी इस कर्मों के खेत में कैसे बोए, हम बीज अच्छे कैसे बने यानी कर्म को अच्छा करें ना पहले । जब कर्म अच्छा होगा फिर वो जब बोएंगे तो उसका फल अच्छा मिलेगा अगर बुरा कर्म होगा बीज में ताकत नहीं होगी तो कर्मों में तो

कर्म बुरे बोएंगे तो फल क्या पाएंगे, यह जो खा रहे हो, रो रहे हो । अब जो खाते हो उसमें ही रो रहे हो ना दुःख और अशांति में। देखो रोग हुआ, यह हुआ वह हुआ, सब बातें दुखी करती है ना मनुष्य को इसीलिए बाप कहते हैं अभी तुम्हारे कर्म को मैं ऊंची क्वालिटी का बनाता हूं जैसे बीज भी ऊंची क्वालिटी का होगा तो उस क्वालिटी को बोएंगे तो उसका फल अच्छा निकलेगा, अगर बीज अच्छा नहीं, बीज समझते हो ना सीड, तो सीड अच्छी क्वालिटी का नहीं होगा तो फिर अच्छी क्वालिटी का हमको फल नहीं मिलेगा तो हमारे कर्म की भी अच्छी क्वालिटी चाहिए ना । तो अभी हमको बैठ करके हमारे कर्म को बाप अच्छी क्वालिटी वाला बनाते हैं अथवा क्वालिफाइड बनाते हैं, तो बना करके फिर हमारे कर्म को ऊंच क्वालिटी, श्रेष्ठ क्वालिटी को फिर कहते हैं उसे बोएंगे तो श्रेष्ठ क्वालिटी की श्रेष्ठ फल मिलेगा, फिर ऐसा फल खाना देवी देवता सदा सुख के हो करके सदा सुख पाना तो ऐसा पाना चाहिए ना । तो अपना अभी सीड, कर्मों का सीड जो है, बीज वह अच्छा बनाओ और अच्छा फिर बोना सीखो। बनाओ अच्छा फिर बोना सीखो, वह बैठकरके अभी बाप सीखा रहे हैं, वो अभी बना रहे हैं। आज बद तकदीर है दुनिया कल तकदीर वान बनने

की है। अभी हम इस बद तकदीर वान दुनिया में अभी अपनी तकदीर बना रहे हैं, बना रहे हो ना? प्रालब्ध, तो अभी यह हम कर रहे हैं तदबीर , तदबीर का मतलब है पुरुषार्थ। इस तस्वीर से फिर हमारी तकदीर, प्रालब्ध कैसी बनेगी वह तो अभी जानते हो ना। तो यह तदबीर अपनी तकदीर बनाएगी तो आज जो तदबीर कर रहे हो यानी पुरुषार्थ कर कर रहे हो वो कल तुम्हारी तकदीर बनेगी तो तस्वीर अच्छी करनी है ना। अच्छा कर्म श्रेष्ठ करेंगे तो फिर तकदीर अच्छी बनेगी । स्वर्ग नाम देखो सब नाम तो कहते हैं परंतु जानते नहीं है ना वो बिचारे नाम बस ऐसे ही। वह दुनिया कैसी थी, हम ही उसी दुनिया में थे, हमारी ही दुनिया थी और हमने किस पुरुषार्थ से वह पाई थी किस तदबीर से वह पाई थी वह नहीं जानते हैं खाली ऐसे ही नाम रखे हैं बस। हेवेन हेवेन कोई मरता है तो भी कहते हैं हेवन गयाहेवनली अबोड में गया, गया नहीं गया खाली है हेवन को याद करते हैं तो क्या हुआ तो अभी तो प्रैक्टिकल हम प्रैक्टिकल स्वर्गवासी बनते हैं। पृथ्वी की सबकी वागे हाथ में यानी यह तत्व आदि भी हमारे कंट्रोल में होंगे, डिसऑर्डर में काम नहीं करेंगे अर्थक्वेक और यह सभी आदि यह सब नहीं होंगे , आर्डर में चलेंगे क्योंकि हम खुद

आर्डर में होंगे ना मनुष्य इसीलिए कहते हैं एक दिन यह सब वागें तुम्हारे हाथ में होंगी तो वह वागें ले रहे हो ना? वागें कैसे लेनी है यही तदबीर से कर्म श्रेष्ठ से, कर्म ही अच्छे ना होंगे तो कहां से मिलेगी, कभी नहीं मिलेगी । (रिकॉर्ड: इक दिन होंगे जमी आसमा चांद सितारे हाथों में, होगी उस दिन बागडोर भारत की तुम्हारे हाथों में) लड़ते झगड़ते रहते हैं यह बागडोर है ? ये लड़ना झगड़ना जमीन का टुकड़ा वो ले गया, यह ले गया लड़ते रहते हैं यह बागडोर है, जमीन आसमान चांद सितारे इसकी वागें तुम्हारे हाथ में होंगी अभी कहां है हाथ में, जमीन के ऊपर लड़ते रहते हैं वागें हैं हाथ में? वह मिलिट्री वाला , नहीं कहां है वह लड़ते रहते हैं देखो । तो कहते हैं अभी इस तरीके से ही हम जमीन आसमान, सारा आसमान और सारी जमीन के मालिक बनेंगे। अभी कहां है, जमीन टुकड़े-टुकड़े हुई पड़ी है , पार्टीशन पाकिस्तान नजदीक बैठा है एकदम टुकड़ा टुकड़ा परंतु एक टुकड़ा थोड़े ही है ये तो सारी पृथ्वी सब तो सारी पृथ्वी हमारे हाथ थी भारत वो था असुल, प्राचीन भारत वह चीज थी परंतु भारतवासी थोड़े ही जानते हैं वह तो थोड़े टुकड़े के ऊपर ही लड़ रहे हैं वह नहीं

समझते हैं हमारे को सारी पृथ्वी ही मिलने की है परंतु मिलेगी इस पावर से ।

मम्मा मुरली मधुबन

062. सद्गुरु से वर्ष लेने की विधि

रिकॉर्ड:

तुम ही हो माता पिता तुम्हीं हो तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो.......

ओम शांति।

ऐसी महिमा कोई मनुष्य की नहीं होती है। गीत में सुना ना कि त्वमेव माता च पिता त्वमेव अर्थात तुम मात पिता बंधु सखा सब तुम हो तो यह कोई मनुष्य की महिमा नहीं है। ऐसी महिमा कोई भी मनुष्य को नहीं दी जा सकती भले देवता हो ना तो देवता की भी ऐसी महिमा नहीं की जा सकती है क्योंकि देवता भी समझो श्रीनारायण है तो उनका बच्चा तो वह भी उसकी महिमा ऐसे थोड़ी ही तू ही माता-पिता या ऐसे कुछ जैसे हर एक के अपने मां-बाप होते हैं वैसे देवताओं के भी बच्चे वो उनके मां-बाप परंतु इस किस्म की महिमा एक ही परमात्मा की है । कोई भी देवता की या कोई मनुष्य

की यह महिमा नहीं की जा सकती है । परंतु परमात्मा की भी क्यों महिमा है, किसलिए महिमा है वह समझना है । उसको हम क्यों कहते हैं तुम माता-पिता हम बालक तेरे ऐसी ऐसी महिमा क्यों देते हैं, कभी तो हमारे जरूर है कि माता पिता बंधु सखा सबका आ करके उसने संबंध का साथ दिया है तब तो गाते हैं ना बाकी ऐसे नहीं परमात्मा की कोई ऐसी ही महिमा है खाली। महिमा का भी कोई अर्थ चाहिए ना, बिना अर्थ के तो मतलब गाते रहें और बोलते रहें कोई मीनिंग नहीं हो तो उसमें भी कोई रहस्य तो रहा ही नहीं । तो जो भी हम परमात्मा की महिमा भी गाते हैं तो यह भी हमें मालूम होना चाहिए कि उसकी महिमा किस आधार पर है । कोई मनुष्य की भी महिमा होती है तो भी.., भई गांधी है उसकी महिमा है, भाई क्यों है उसने ऐसा अच्छा काम किया कि हां भई ब्रिटिश गवर्नमेंट से यह भारत को स्वतंत्र बनाया तो अच्छा काम किया जनता के लिए भारत के लिए तो चलो भाई हां भाई उसकी तभी ऐसी महिमा है, नेहरु था फलाना था जिसने भी जो जो काम किए। इसी तरह से परमात्मा की भी जो हम महिमा गाते हैं तो उनका भी तो हमें ज्ञान होना चाहिए कि क्यों उसकी महिमा किस आधार पर है, उसने हमारे लिए क्या

किया है । जरूर हमारे लिए कुछ किया हो तब तो हम उसकी भी महिमा गाए तो हम परमात्मा की भी इस तरीके से जो महिमा गाते हैं तुम माता तुम पिता तुम बंधु तुम सखा तुम सब तो क्यों उनको तुम सब क्यों कहा है उसने हमारे तुम सब बन के यानी सभी संबंध का हमको क्या उसने फायदा दिया है तब तो हम उसकी महिमा भी यथार्थ समझे ना। तो अभी देखो अर्थ से अपन जानते हैं तो यह तो महिमा भक्ति मार्ग में ऐसे करते आए हैं लेकिन अपने पास अभी इसका ज्ञान है यथार्थ कि उनकी महिमा क्यों है क्योंकि उसने आ करके अभी इस टाइम पर यह जो प्रेजेंट टाइम है जिसको ही कहा जाता है कलयुग दुनिया के अंत का समय और सत्य की नई दुनिया की आदि का समय जिसको संगम का टाइम कहा जाता है तो उसी टाइम पर आ करके उसने हम आत्माओं मनुष्य आत्माओं को यह सहारा दिया है दुःख के टाइम पर इसीलिए उसका गायन है पतितो को पावन करने वाला आदि आदि तो उसने आकर के प्रैक्टिकल में यह सहारा दिया है तब कहते हैं ना तू सबका माता पिता बंधु सखा सबका तू एक सहारा । तो एक सहारा तो जरूर कोई सहायता की है ना किसी बात में सहारा दिया है । सहारा किसमें दिया है जो हम यह

दुःख अशांति की दुनिया में जो माता-पिता लौकिक और कोई भी संबंध को सहारा नहीं दे सकता है वह तो जो जिसने जो कर्म किया है वह पाता है उसमें मां भी क्या करेगी पिता भी क्या करेगा, पति भी क्या करेगा, पत्नी भी क्या करेंगे, राजा क्या करेगा, प्रजा क्या करेगी देखो करते हैं कुछ? कोई किसी का क्या कर सकते हैं, वह तो सबको अपने अपने कर्म का खाता भोगना ही है। इसी में हां भले एक दो का मां-बाप है बच्चे का, अच्छा पढ़ाएंगे लिखाएंगे तो उसको लाइक बनाने के लिए परंतु कोई कर्म की ऐसी बात हो जाती है तो बाप होते भी क्या करेंगे, तो वो कहेंगे ना तकदीर, किस्मत तो यह सभी बातें फिर भी किस्मत और तकदीर के ऊपर आती है लेकिन यही एक बाप है जो हमारी तकदीर और किस्मत को बदला करके पल्टा करके ऊंच भी बना सकते हैं और हमारी ऊंच प्रैक्टिकल में आ करके बनाते हैं। तो उसने जो काम किया है वह किसी ने नहीं किया है , मनुष्य आत्मा के करने का नहीं है इसीलिए उसकी महिमा है कि ऐसे टाइम पर जबकि हम दुःख और अशांति में गिर चुके हैं और अभी हमारी तकदीर फूटी हुई है एकदम यानी दुःख अशांति में पड़े हैं जिसमें कोई भी हमारा अपना सहारा नहीं है उस टाइम पर आ करके तुम सहारा

बनते हो कि हमारे कर्म की तकदीर जो फूटी हुई है उसको आ करके फिर जगाते हो अर्थात ऊंची तकदीर बनाते हो। तो तकदीर बनाने वाला हो गया ना, इसलिए उसकी महिमा कि तुम हमारे सब कुछ हो। माता-पिता यह सभी रिलेशंस जो है वह सभी रिलेशन अभी तुम्हारे से ही, तुम्हारे से ही हमको सभी रिलेशंश का सहारा पूरा मिलता है इसीलिए उसका गायन है । तो उनका गायन भी किसी कर्तव्य और हमारे से रिलेशन निभाने के ऊपर है बाकी ऐसे ही मुफ्त में नहीं है कि ऐसे ही उसकी महिमा करते रहें या गाते रहें तो कोई अर्थ है। अर्थ भी कैसे हैं, उसने कभी हमारा आ करके ऐसा कर्तव्य किया है वो बैठकर समझाते हैं कि ऐसे टाइम पर जैसे अभी आया हुआ हूं तो यह मैं आकर के जो कर्तव्य किया है यह उसकी यादगार है फिर अभी मेरा टाइम आया हुआ है मैं आया हूं, यह कहा है कि जब जब ऐसा टाइम होता है तब तब मैं आता हूं तो कोई कर्तव्य का संबंध रहा ना। तो देखो अभी वह संबंध प्रैक्टिकल में हम लेते भी हैं उसका जानते भी हैं और फिर इन्हीं सभी बातों के अर्थ को भी अभी समझते हैं। तो बाप बैठकर के इन्हीं का ही अर्थ बाप बैठकर के समझाते हैं की देखो भक्ति मार्ग में तुम यह जो गाते आए हो तो खाली बिना अर्थ के

गाते हो। अभी प्रैक्टिकल में आते भी हो और प्रैक्टिकल में इन बातों को जानते भी हो । तो अभी देखो हम जानते भी हैं की भक्ति मार्ग में भी प्रेक्टिकल जो हम गाते आए उनका अर्थ क्या था वह भी जानते हैं और अभी प्रैक्टिकल में फिर उनके संबंध में भी आते हैं तो वह हमारे बाप भी और टीचर भी और सतगुरु भी और वही धर्मराज भी है। वही जानते भी हैं ना कि जो भी कुछ हमारे पाप कर्म है उनकी सजा आदि की भी अथॉरिटी तो वही है ना भले ही करन करावनहार है जैसे विनाश शंकर द्वारा, स्थापना ब्रहमा द्वारा, पालना विष्णु के द्वारा यह सभी है करन करावनहार है इसी तरह धर्मराज के द्वारा सजाएं परंतु अथॉरिटी तो वही है ना । तो अथॉरिटी तो उसको ही कहेंगे कि वही एक अथॉरिटी है जो हमारे सभी बातों के अथॉरिटी वाला उनको ही कहा जाता है इसीलिए कहा जाता है मैं वो अथॉरिटी अभी स्वयं आ करके तुम्हारा बाप भी बनता हूं और टीचर अभी देखो शिक्षा दे करके ये देखो अभी शिक्षक भी बनता हूं। मैंने कॉलेज अथवा स्कूल यूनिवर्सिटी कहो ये खोला है इस नॉलेज के लिए तो मैं टीचर भी हो गया ना इस विद्या को देने वाला। तो शिक्षक भी हूं और बाप भी हूं और सद्गुरु तो हूं ही गति सदगति तुम्हारे को पूरा माया से

लिब्रेट करके लिब्रेटर तो देखो मैं बनता हूं ना, तो गुरु भी गति सद्गति दाता उसको ही कहा जाता है जो माया की बॉन्डेज से छुडावे। तो माया की बॉन्डेज यानी विकारों का यह जो बंधन चढ़ा है उससे छुड़ाने वाला एक ही है ना उनको ही गुरु कहते हैं। गुरु का अर्थ ही है गति सद्गति करने वाला । गुरु का और कोई मीनिंग ही नहीं है । वैसे तो बहुत गुरु हैं, डॉक्टर भी डॉक्टरी का गुरु है, इंजीनियर भी इंजीनियरी का गुरु है क्योंकि इंजीनियरी नॉलेज देता है, भाई काहे का गुरु, किसका देने वाला है भई..... ऐसे गुरु कहें तो बल्कि भारत में तो हिंदू नारी का पति भी गुरु है। भई कहते हैं ना, नारी को कहते हैं भाई तेरा पति गुरु भी है, परमेश्वर है, परमात्मा है, सब कुछ है तुम्हारा सब कुछ है । हिंदू नारी के लिए तो सब पति गुरु ही हो गया गुरुओं की तो ऐसे कमी नहीं है। परंतु नहीं गुरु नाम जिसका है ना गति सद्गति दाता जिसको कहा जाता है वह एक ही है और गुरु कहना अर्थ भी उसको ही है, जैसे परमात्मा एक को ही कहा जा सकता है कोई मनुष्य को परमात्मा कहने का हक नहीं है और कह भी नहीं सकते हैं और ना परमात्मा कोई मनुष्य है, नहीं परमात्मा तो एक ही है ना इसी तरह से गुरु भी वही है। किसी को हक नहीं है

गति सद्गति का गुरु कहलाने का परंतु आज कहलाने वाले बहुत हैं । भाई कॉमन भी कई गुरु करते हैं तो समझते हैं कि भाई गति सद्गति के लिए करते हैं । काहे के लिए गुरु करते हैं भाई गति सद्गति के लिए नहीं तो हमारा मोक्ष कैसे होगा। वह समझते हैं खाली नाम मात्र गुरु कर देने से हमारा मोक्ष हो जाएगा , रास्ता क्लियर हो जाएगा , मरेंगे तो ठीक चले जाएंगे उधर वह ऐसे समझते हैं इसीलिए गुरु कर लेते हैं। परंतु नहीं, गुरु खाली नाम मात्र करने की तो कोई बात ही नहीं है ना। गुरु तो वही है जो हमको गति सद्गति का मार्ग प्रैक्टिकल बतलाते हैं, नॉलेज देते हैं और जिस पर फिर प्रैक्टिकल हम चपकरके और अपनी गति सद्गति हम करते हैं तो उनको ही कहा जाएगा ना गति सद्गति दाता । तो यह चीजें समझने की है इसलिए परमात्मा भी एक है तो गुरु भी एक है यानी वही परमात्मा ही गुरु है और फिर हमारे को भी जो सारी नॉलेज है उसको देने वाला भी वही है, दूसरा कोई यह ज्ञान दे नहीं सकता। ज्ञानदाता जो है वही गति सद्गति दाता है , ऐसे नहीं ज्ञान दूसरे देंगे और गति सद्गति वो करेंगे , नहीं ज्ञान भी वही देता है उसकी नॉलेज भी वही समझाएगा तो ज्ञान दाता भी वो और गति सद्गति दाता भी वही ।

तो यह सभी चीजें हैं जिसको बुद्धि में रखना है अच्छी तरह से और उसी को ही हमने पाया है अर्थात हमारा संबंध अभी उनके साथ हुआ है कोई कॉमन मनुष्य के साथ नहीं है अभी उनके द्‌वारा हम ये नॉलेज को पा करके अपना प्रेक्टिकल गति सद्‌गति प्राप्त करने का ये यत्न रख रहे हैं। तो यह सभी चीजें बुद्धि में होनी चाहिए कि जैसे कॉमन गुरु हम करते हैं या कॉमन सत्संगों में जाते हैं बहुत तो यह कोई उसी तरीके से भी कोमल आश्रम है या कोई संस्था है या यह भी कोई अपना धर्म प्रचार करने वाली एक संस्था निकली है जैसे कई ऐसे समझते हैं तो यह कोई हमको अपने धर्म का प्रचार करना है या कोई ये एक धर्म कोई नया निकला है ऐसी भी बात नहीं है । यह तो परमात्मा अपना आकर के नई दुनिया स्थापन करने का काम कर रहा है। इसमें कोई नए धर्म जैसे कई धर्म ये आर्य समाज धर्म, राधास्वामी धर्म पिता काशी धर्म बहुत अनेकानेक नाम है ना वह समझते हैं यह भी एक धर्म ब्रम्हाकुमारीयों का एक धर्म निकला है। तो ऐसा नहीं कि ब्रह्‌माकुमारियों का कोई धर्म अपना निकला है या जैसे और कॉमन सत्संग या और भी कई बातें निकलती हैं या कई आश्रम खुलते हैं तो यह भी एक नया आश्रम खुला है या कोई धर्म

निकला है या कोई ऐसी बात नहीं , यह तो स्वयं परमात्मा जो हमारे रचता हैं और जिसने ही कहा है कि मैं आता हूं जब अधर्म विनाश करने का टाइम है और तब आ करके मैं अपना सत धर्म स्थापन करता हूं तो यह इनका कार्य हो गया ना । बाकी ये कोई कॉमन संस्था या आश्रम मत समझना । तो यह भी चीजें बुद्धि में होनी चाहिए क्योंकि कई बिचारे ऐसे समझ करके आते हैं परंतु नहीं यह कोई कॉमन आश्रम नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का कर्तव्य है और परमात्मा का बहुत थोड़ा टाइम विजिट है । तो वह हमारे विजिट पर आए हुए हैं यानी भारत में पधारे हैं परमात्मा अपना उसका जन्म स्थान भारत है। वह अपना अवतरण कहते हैं ना "यदा यदा ही धर्मस्य... कहा हैं ना गीता में भी, जब जब अधर्म होता है तब मैं आता हूं, कहां आता है? तो यह भी समझना है कि उनका आने का है ही भारत में क्योंकि वह आते ही है भारत का आदि सनातनी धर्म स्थापन करने बाकी कोई क्रिश्चियन धर्म या बुद्धिज्म धर्म या इस्लामी धर्म नहीं बनाने आते हैं वह आता ही है भारत का आदि सनातनी धर्म स्थापन करने जिस धर्म को ही कहा है सत धर्म यानी वही धर्म श्रेष्ठ था सबसे तो परमात्मा श्रेष्ठ काम करने आएंगे ना, वो क्रिश्चियन

धर्म तो क्राइस्ट से होगा ना वह तो क्राइस्ट के द्वारा स्थापन हुआ है उसका अभी एंड हो करके फिर भी स्थापन होगा तो क्राइस्ट आकर के करेंगे बाकी उन धर्मों के लिए नहीं कहा है । उन्होंने कहा है वह जो दुनिया में एक धर्म और एक राज्य वाला जो धर्म था वह कौन सा था, यह देवी-देवता धर्म तो इसीलिए बाप कहते हैं मैं आता ही हूं उसके लिए । तो यह अभी उनका काम है तो यह उनकी कोई ये आश्रम कॉमन नहीं है, ना कोई बहुत टाइम जैसे आश्रम चलते रहते हैं सत्संग बहुत काल से चलते रहते हैं यह कोई बहुत काल चलने वाली है नहीं। कहें तो अगर एक ही सत्संग है, सत का संग, सत कहा ही जाता है परमात्मा को बाकी तो सब मनुष्य असत्य ही हैं ना फिर उसमें गुरु भी आ गए, सब आ गए क्योंकि वह भी तो जन्म मरण में आने वाले हैं ना, वह गुरु तो जन्म मरण में नहीं आने वाला है ना तो वह सतगुरु, तो सतगुरु का ही सत्संग एक ही बार होता है तो वास्तव में सत्संग एक बार होता है बाकी सत्संग है ही नहीं। वह तो है ही बाकी जन्म मरण में आने वालों का संग उसको कहेंगे असत्य संग बाकी सत का संग तो मिलता ही एक बार है । तो अगर सत्संग कहें ना तो एक ही बार होता है । अभी बस यही सत्संग है बाकी तो कोई

सत्संग है ही नहीं ना। सत का संग ही अभी मिलता है , सत बाप, सत टीचर सतगुरु तो मिलता ही अभी है। वह कहते हैं मैं आता ही अपने टाइम पर हूं मैं कोई आगे आता ही थोड़ी रहा हूं नहीं, मैं आया ही अभी हूं तो तुमको मिला कहां से इसीलिए कोई सतगुरु मिला ही नहीं ना तुमको, मैं ही अभी आया हुआ हूं और मैं मिलता ही अभी हूं इसीलिए सत्संग भी अभी होता है । नहीं तो इतना समय यह जो भक्ति मार्ग के जो भी नाम सत्संग देते आए हैं वह तो असत्य संग है यानी मनुष्य का थोड़ा कुछ ना कुछ शास्त्र का फलाने का फलाने का कुछ ना कुछ सहारा कोई रामायण सुनाएगा कोई गीता सुनाएगा कोई वेद सुनाएगा चलो कुछ ना कुछ यह करते आए वह तो सब अल्प काल की ये तो भक्ति मार्ग का है लेकिन सत जो बाप है जब उनका संग मिलता है वह तो बेड़ा पार कर देते हैं ना वह तो एकदम पार गति सद्गति में ले ही जाता है। बाकी मनुष्य जो है वह कोई गति सद्गति में ले नहीं जाते हैं इसीलिए उनको सत्संग नहीं कहेंगे। तो यह सभी चीजें समझने की है कि सत्संग होता ही एक बार है। तो अभी यह है सत का संग। सतगुरु आया है, जब सतगुरु आवे तभी सत्संग होवे, सतगुरु के बिना सत्संग किसका होगा हां? बाकियों का

तो सत्संग नहीं है ना। वह तो कुछ ना कुछ जैसे कोई कुछ पढ़ाते हैं वैसे ही yah शास्त्र ग्रंथ थोड़ा बहुत पढ़ाते हैं लेकिन उनको कोई सत संग, सत्य का कोई प्रैक्टिकल संग हो जाए और उससे प्राप्त हो जाए वह चीज नहीं है । तो इसीलिए सत का संग सत खुद ही आ करके कराता है जो सतगुरु है इसीलिए सतगुरु ही अभी आया है और ये उसने अपना सत का भी संग दे रहा है तो उनके ही सत के संग को सत्संग कहेंगे। तो यह सभी चीजों को भी समझना है इसलिए बाप कहते हैं यह बहुत टाइम नहीं चलने का है। मैं आता हूं तो बस एक ही बार उसमें सब प्राप्ति करा करके फिर सदा के लिए तुमको सुख रहता है, फिर तो तुमको बैठकर सत्संग करना या यह माथा खोटी करने की दरकार नहीं है । मुझे भी याद करने कि फिर तुम्हें जरूरत नहीं है क्योंकि मुझे याद करना ही तब पड़ता है जब दुःख और अशांति में हो तभी हे भगवान कहते हो। फिर तुमको सदा सुख होगा तो कहते हैं ना सुख में सिमरन करने की दरकार ही नहीं रहती है। दुःख में फिर याद करते हो, सुख में मुझे जरूरत नहीं है तो इसीलिए मैं आता हूं तुमको सदा सुखी बना करके और सदा सुख में रहते हो। ऐसे कर्म बुरे करते ही नहीं हो फिर जो तुमको कुछ बुराई का दंड

पाना पड़े और जो दुःखी हो और फिर चिल्लाओ तो फिर चिल्लाने की बात रहेगी ही नहीं। तो यह सभी चीजें हैं जिसको अच्छी तरह से समझ करके अभी उसी चीज का लाभ लेना है तो बाप की भी महिमा को यथार्थ समझने का है ना। तो ऐसे बाप की महिमा को खाली समझना नहीं है, बाप से संबंध रखने का है और उसका प्रैक्टिकल बनकरके सपूत बच्चा बनकर के प्रैक्टिकल एक्शंस में अथवा कर्म में आने का है अथवा अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है। तो अभी बना रहे हो ना अच्छी तरह से, ध्यान देते हो ना अपने पर क्योंकि यह खाली ऐसे ऐसे सुनने का नहीं है, प्रैक्टिकल आने का है ना तो अपना सारा दिन अपने प्रैक्टिकल कर्म के ऊपर अटेंशन रखना है कि आज मैंने सारे दिन में क्या किया, अच्छा बिताया ? कोई लोभवश कोई मोहवश, कोई कामवश, कोई क्रोधवश ऐसा तो कोई उल्टा काम नहीं किया? तो सारा दिन का अपना रखना है पोता मेल, हिसाब किताब, चार्ट, दिनचर्या पूरा हिसाब अपने पास तभी हमारी जीवन आगे बढ़ती चलेगी । अच्छा 2 मिनट साइलेंस । यह तो हम अपने कर्म को बुरे बनाते हैं तो उसकी पनिशमेंट तो जरूर मिलेगी ना। तो अपने पर दया करने की है ना उससे दया मांगने की तो वह तो है ही दयालु उसको

कहते ही है। वह कोई हमारे से या ऐसे ही थोड़ी कुछ करता है, वह तो हम अपने बुरे कर्म बनाते हैं तो उनकी सजा पानी ही है। तो इसीलिए उनको कहना कि तू हमारे पर दया की दृष्टि, वो कोई हमारे पर दया थोड़े ही करते हैं, उनकी तो है ही दया परंतु यह भक्ति मार्ग में बेचारे दया करो कृपा करो, जाएंगे ना किसी गुरु संत महात्मा के पास तो भी कहेंगे दया करो कृपा करो, बस वो हिरे हुए हैं ना तो दया करो, दया करो की तो बात ही नहीं है। वह तो है ही दयालु, उसको कहना दया करो तो क्या अदया करते हैं क्या जो दया करें। किसके ऊपर अकृपा करता हो तो कहे भाई मेरे पर कृपा करो, वह तो है ही कृपालु ना, उसके लिए तो जनरली और सबके लिए है ही वह, उनके लिए ऐसा कहना कि करो तो उसकी माना किसीके ऊपर अकृपा करता हो तभी तो कहते हो ना मेरे पर कृपा करो , नहीं वह तो है ही । वह कहते हैं अपने पर कृपा करो। तू अपना कर्म अच्छा बना तो तेरा उससे ही तो यही कृपा है ना, तो कृपा भी कोई ऐसा नहीं आशीर्वाद दया कृपा उसका ऐसा अर्थ नहीं है। यह दया कृपा भी यही पुरुषार्थ है । अपने को भी पुरुषार्थ करना है और दूसरा भी तो पुरुषार्थ ही कराएगा ना बाकी दया करो, क्या करें? वह भी कहेगा भई पुरुषार्थ

करो, अच्छे कर्म बनाओ बस यही दया है ना और क्या? बाकी क्या और कोई हाथ फिराना कुछ उसकी तो बात ही नहीं है। पुरुषार्थ करना वह अपनी दया है और कराने वाला भी पुरुषार्थ कराएगा वह उसकी दया है । तो यह सभी अर्थ को समझने का है । अच्छा। जिनको दो आंखें हैं वह होते भी जैसे अंधे हैं हम तो ना होते हम सब जानते हैं तो उनको खुशी रहती है कि हम सब नॉलेज को जानते हैं । बाप को याद तो बुद्धि से करना है ना कोई आंखों से तो देखने की बात नहीं है तो यह सभी चीजें समझने की है। तो अपना थर्ड आई ऑफ विजडम जिसको है उसको ज्ञान नेत्र वह सज्जा है। यह नेत्र होते भी जो जानते नहीं तो होते भी अंधकार में है । तो कहेंगे होते भी अंधे हैं इसीलिए सारी दुनिया अभी ब्लाइंड है क्योंकि यह जानती नहीं है ना और जो जानते हैं वह तो, उनको तो यह थर्ड आई ऑफ विजडम के ऊपर ही मदार है । तो ज्ञान नेत्र तो मिला है ना अच्छी तरह से, उसको पकड़ के रखो अच्छी तरह से। यह तो कर्म के हिसाब से है कोई हिसाब किताब से यह सभी कर्म का आंख के ऊपर, कान के ऊपर, नाक के ऊपर, कान के ऊपर आता है। इसीलिए तो यह कर्मों के खाते को भी अच्छा बना रहे हैं ना फिर हम को सब प्रूफ मिलेगा यानी कभी

किसमें खराबी नहीं होगी ना आंख में न कान में किसी में नहीं सब रूष्ट पुष्ट, तंदुरुस्त। शरीर भी अच्छा कभी कोई रोग नहीं, कोई तकलीफ नहीं सब कंप्लीट। तो यह कंप्लीट सब तब होगा जब पहले हम आत्मा कंप्लीट प्यूरीफाइड बन जाएंगे । अच्छा। अच्छा, कैसे हैं माताजी? माताजी आ गए हैं हां, कभी-कभी आते हैं । अभी यह भी आती है शायद दो-तीन है तभी आज एक दिखाई पड़ती हैं । अच्छा।अरे किसी चीज का शौक होता है ना तो कितनी भी दूर हो ना तो भागेंगे, ऐसा है ना । कभी कोई चीज का लगन होता है , शौक होता है तो कितना भी दूर हो , लंदन में देखो तो कोई पढ़ाई पढ़नी है तो फिर लंदन भी चली जाएंगे , दूर है ? सीखना है, कुछ पाना है तो फिर तो कोई बड़ी बात नहीं है।

मम्मा मुरली मधुबन

063. श्रेष्ठ चारे बन्ने का ज्ञान - 1

रिकॉर्ड:

आज के इस इंसान को यह क्या हो गया.....

ओम शांति ।

यह जो गीत सुना अपने भारत के अभी के हाल का कि आज हमारा भारत जिस भारत का नाम बड़ा ऊंचा है प्राचीन भारत और आज का भारत । प्राचीन भारत की बहुत ऊंची महिमा है। यह क्यों महिमा है, अपने प्राचीन भारत की स्थिति अथवा जो हालत थी और आज की जो भारत की दशा है उसमें जैसे रात और दिन का फर्क है ना वैसा फर्क है । हमारा यही देश जिसको कहा जाता था सोने की चिड़िया, नाम है ना और उसी टाइम ही कहा जाता था बिचारा गांधीजी भी गाते थे और उसी की भावना थी यह राज रामराज्य बनाने की, जिसका आज दिन तक भी मनाते हैं ना जब भारत स्वतंत्र हुआ है तो

उसका चिन्ह है इसीलिए परंतु उसने भी गीता से स्वराज्य, स्वतंत्रता यह सभी बातें निकाली थी परंतु वह स्वराज्य अथवा स्वतंत्रता जो प्राप्त करी थी, जिसकी भावना थी उसकी रामराज्य बनाने की वह चीज जिस आधार से बनी थी वह आधार प्रैक्टिकल उसके लिए कोई मनुष्य का काम नहीं है। मनुष्य बिचारा जितना काम कर सका इतना तो किया, भारत को स्वतंत्र किया या इतना भारत का जो कुछ चला रहे हैं वो चला रहे हैं लेकिन यह जो प्राचीन भारत की महिमा है जिसमें हम सब सुखी थे और उसी समय की बात है कि राम राजा राम प्रजा राम साहुकार है, बसे नगरी जिए दाता धर्म का उपकार है, महिमा है ना यह तो वो जो प्राचीन भारत की स्थिति थी और जिस तरह से बनाई गई थी वह किसने बनाई थी और वह जो स्वतंत्रता और वह जो हमारी जीवन की लाइफ थी वो कैसे बनी थी इन बातों को समझना है, यह इसी तरीके से नहीं है। यह स्वतंत्रता या यह आजादी या यह हमारा स्वराज, यह स्वराज वह स्वराज नहीं है जो भारत का प्राचीन स्वराज गया हुआ है जिसको याद करते हैं । आज तो देखो भारत के हाल पर रोते हैं ना कि आज देखो क्या स्थिति है । तो यह भारत का हाल आज रोने का है, दुःख का है, अशांति का है

परंतु हमारे भारत की प्राचीन जो गाई हुई है वो बहुत ऊंची और सुख की लाइफ थी लेकिन वह बनी थी कैसे उसका अर्थ भी पहले समझना है कि वह बनी थी उसी आधार पर कि पहली-पहली जो स्वतंत्रता चाहिए ना अथवा आजादी चाहिए वह कौन सी चाहिए। यह तो हुआ ब्रिटिश गवर्नमेंट से, फैलाने से, दूसरे से दूसरे देश का आजाद होना लेकिन पहले पहले तो हम अपने कर्मों से आजाद कहां हुए हैं । हमारे कर्म का खाता जो है वह बड़ा हमने खाता दुख का बनाया हुआ है, जिसके के कारण हमको दुख भोगना ही पड़ता है तो फिर भारत स्वतंत्र होकर के क्या भी हो परंतु वह सुख हम पा भी कैसे सकते हैं । स्वतंत्र होते भी आज देखो हम दुःख को पा रहे हैं क्योंकि हम कर्मों से स्वतंत्र नहीं हुए हैं इसीलिए हमारे कर्म की आज गिरावट है । ये तो इसी पर ही नाम कहते हैं ना भ्रष्टाचार फलाने फलाने हमारा आचरण गिरा हुआ है इसीलिए आचरण गिरने वालों को सुख कैसे प्राप्त हो सकता है जब तक लगा आचरण कड़े नहीं है हमारे कर्म श्रेष्ठ नहीं बने हैं तो कर्म श्रेष्ठ का भोग अथवा सुख का भोग हम पा कैसे सकते हैं। जब हमारे कर्म श्रेष्ठ हो हमारा आचरण श्रेष्ठ हो तभी तो हम श्रेष्ठ प्राप्ति अथवा सुख की प्राप्ति कर सकते हैं ना। आचरण

गिरा हुआ है, कर्म गिरे हुए हैं तो उस गिरे हुए कर्मों का नतीजा तो दुखी पाना पड़ेगा तो पहले स्वतंत्र किससे होना है इन्हीं कर्म के जो हम भ्रष्ट कर्मों के कारण हम दुःखी हुए हैं जब तलक उस दुख के आचरण से यानी भ्रष्ट आचरण से हम स्वतंत्र नहीं हुए हैं तब तलक हम तो सुख और शांति पा ही नहीं सकते हैं । तो पहले पहले स्वतंत्र होना है , आजाद होना है उनसे जो हमको भ्रष्टाचारी बना रहा है । यह कौन बनाते हैं, यह पांच विकार । विकार है जो मनुष्य को भ्रष्ट बनाता है और जब विकार नहीं था तब आचरण अथवा कर्म श्रेष्ठ थे । तो जब तलक मनुष्य इन पांच विकारों से स्वतंत्र नहीं हुआ है ना तब तलक मानो भ्रष्टाचार से स्वतंत्र नहीं हुआ है । तो भ्रष्टाचार से स्वतंत्र नहीं हुआ तो दुख और अशांति से कैसे स्वतंत्र होगा । तो दुःख और अशांति पा करके रहना इसको थोड़े ही स्वतंत्रता कहेंगे । स्वतंत्रता जो गांधी जी ने नाम उठाया था वह गीता के आधार पर परंतु वह गीता के भगवान ने जो स्वतंत्रता दी थी ना वह विकारों से दी थी लेकिन वह चीज तो प्रैक्टिकल बन नहीं पाई ना इसीलिए अभी वह चीज कैसे बने और किसने बनाई इन्हीं सभी बातों को समझना भी है और उसी चीज को पाना है। तो आप लोगों को यह खुशखबरी

सुनाते हैं कि हां अभी वो टाइम आया हुआ है, जो बापूजी की इच्छा थी ना कि अपना भारत रामराज्य बने, स्वतंत्र होते भी वह चीज नहीं बनी रामराज्य । तो वो रामराज तो बनाएगा राम ना, निराकार परमात्मा । उसको बनाने वाला वह चाहिए कोई मनुष्य का वो काम नहीं है । इसीलिए वो अभी आ करके अभी रामराज्य कहो या हमारा संसार जो स्वर्ग था या भारत जो प्राचीन श्रेष्ठ था वह क्या था कैसे था उसी कर्म श्रेष्ठ की नॉलेज अभी परमात्मा दे रहा है । यह इसी की कॉलेज है जिसमें बैठे हो, आए हो , परंतु अभी तो आए हो ना । परंतु कहा स्टूडेंट बनना है , यह स्टडी करनी है, ये समझने की है प्रैक्टिकल में और इस नॉलेज को धारण करके इस नॉलेज की स्टेटस पानी है। जैसे डॉक्टरी नॉलेज से डॉक्टर बनते हैं ना इंजीनियरी नॉलेज इंजीनियरी स्टेटस होती है इसी तरह से यह भी नॉलेज है जिसको धारण करके उसकी स्टेटस वो जो रामराज की थी ना देवी देवता पद वह प्राप्त रहेगा परंतु उससे पहले समझे ना । तो यह है वह कॉलेज, कॉलेज समझो, स्कूल समझो, यूनिवर्सिटी समझो जो भी देखो इसका नाम पढ़ते हैं न ईश्वरीय विश्व विद्यालय तो ये है ईश्वरीय, ईश्वरीय का मतलब है जहां ईश्वर है पढ़ाने वाला, यह विद्यालय उसको है

कोई मनुष्य का नहीं है । यह आप सबका जो पिता है ना परमपिता जो सबका पिता भी है और फिर टीचर भी है, शिक्षक भी है, तो वह शिक्षक स्वयं परमात्मा एक अर्जुन के लिए तो नहीं आया था ना, वह तो दुनिया के नर और नारी के लिए शिक्षक बन करके आया था शिक्षा देने के लिए कि जब तलक तुम अपने भ्रष्ट आचरण से ना हटे हो और इन विकारों से नहीं हटे हो तब तलक तुम सुख शांति पा नहीं सकते हो, तो पहले पहले स्वतंत्र बनो, आजाद बनो किससे, इस भ्रष्ट आचरण से अर्थात यह पांच विकार जो भ्रष्ट बनाने वाले हैं उन्हों से । तो अभी वह कैसे हो वह बैठ करके सिखा रहे हैं । तो यह है कॉलेज अपने उन विकारों से छुटकारा पा करके अपनी प्योर जीवन बना करके फिर प्योरिटी के बाद पीस एंड प्रोस्पेरिटी। फर्स्ट प्योरिटी चाहिए ना, नो प्योरिटी नो पीस एंड प्रोस्पेरिटी। तो फर्स्ट प्योरिटी चाहिए न तो यह है प्योरिटी को धारण कराने की कॉलेज और वह पढ़ा रहा है परमपिता परमात्मा, जिसने कहा है कि जब जब ऐसी भ्रष्टाचारी दुनिया बनती है तब तब मैं आता हूं। अधर्म कहा है ना, जब जब अधर्मी दुनिया होती है तब तब तो अधर्मी कहो या भ्रष्टाचारी कहो बात तो एक ही है ना तो भ्रष्टाचारी कहो अधर्मी कहो बात एक ही है

। तो अभी अधर्मी अथवा भ्रष्टाचारी दुनिया का अभी यह अंत का समय है इसीलिए परमात्मा ने कहा है जब ऐसी दुनिया होती है तब मैं आता हूं और आ करके फिर आकर के सत धर्म अथवा श्रेष्ठाचार अथवा स्वर्ग कहो, हेवन कहो बात एक ही है ऐसी दुनिया बनाता हूं परंतु बनेगी हमारे कर्म श्रेष्ठ से ना ऐसे थोड़े ही बन जाएगी नहीं, कर्म श्रेष्ठ से । तो हम क्या कर्म करें, कर्म श्रेष्ठ किसको कहा जाता है उन्हीं सभी बातों को समझना है। यह जो कई समझते हैं कि हां इतना तो हमको मालूम है कि भाई सच बोलना, झूठ ना बोलना, किसी को धोखा ना देना, किसी का गला ना काटना, खून ना करना, चोरी ना करना यह काम नहीं करना यह बुरे हैं परंतु नहीं पहले पहले यह बुराई आती कहां से है, हम बुरे कैसे बनते हैं वह भी तो चीजें समझने की है ना कि जब तलक मनुष्य को सेल्फ रियलाइजेशन नहीं है व्हाट एम आई, अपना पता नहीं है मेरा क्रिएटर कौन है, अपने पिता का पता नहीं है जब तलक इन बातों का नॉलेज नहीं है ना तो उससे भ्रष्टाचार होता ही रहेगा । तो पहले पहले तो इसका नॉलेज होना चाहिए कि व्हाट एम आई। आई का पता होना चाहिए कि आई एम कौन , तो यह सभी बातों को समझना चाहिए। यह न जानने के

कारण ही मनुष्य देखो विकारवश यह सब जो कर्म करते आते हैं तो भ्रष्ट ही बनते हैं तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए इन बातों को जानना, अपने को यानी स्व को तो पहले सेल्फ को जानना चाहिए तभी हमको सेल्फ पावर मिलेगी जिसको फिर कहा जाता है सेल्फ रूल । तो सेल्फ रूल वह नहीं है कि स्वतंत्र हो करके सेल्फ रूल परंतु पहले तो सेल्फ रूल चाहिए ना। आत्मा को अपने कर्म श्रेष्ठ के बल से पहले तो यहां सेल्फ रूल चाहिए। सेल्फ रूल कहां है, मरो तो मरो, रोगी बनो तो रोगी बनो , मनुष्य कुछ कर सकता है ? नो पावर। तो ये सब चीजें समझने की है ना, नहीं तो मनुष्य के पास वह पावर था जिसको स्पिरिचुअल पावर कहा जाता था, मनुष्य के पास यह बल था तो अभी तो वह बल नहीं है ना । तो इन्हीं सभी बातों को समझना है कि वह हमारी पावर जो हमारे पास एवर हेल्थी एवर वेल्थी और एवर हैप्पी रहने की पावर थी, हमारे पास कभी अकाले मृत्यु नहीं आता था। समझते हो , अकाले समझते हो ना, बिगर टाइम। हमारा शरीर छोड़ना, शरीर लेना अपने टाइम पर, जब टाइम होता था, पता चलता था, और बाल, युवा, वृद्ध स्टेज टाइम पर आती थी तब हम शरीर को ऐसे उतारते थे जैसे पुराने कपड़े उतारे

जाते हैं ना, जैसे सांप का भी मिसाल दिया जाता है सांप एक खाल उतार करके दूसरी खाल चढ़ाते हैं ना इसी तरह से जैसे कि एक खाल उतारी और दूसरा शरीर लिया। इतना बल था लेकिन आज मरे तो मनुष्य चल सकता है बेबस है तो यह कहां है सेल्फ रूल? अपने पास वह पावर कहां है सेल्फ रूल जो अपने कर्म श्रेष्ठ का अपने पर रूल चला सके । तो अपना अपना ही पावर नहीं है तो जब हम कर्म श्रेष्ठ में ही नहीं है तो हम संसार का सुख कहां से पा सकते हैं। पहले तो यहां चाहिए ना ये पावर जिसको स्प्रिचुअल पावर कहा जाता है। तो यह सारी चीजें समझने की है कि जब तलक हमारे पास अपने सेल्फ रूल करने की पावर नहीं है और वह आएगी जब तलक हम अपने इन्हीं कर्मों से जो हमारे कर्म विकर्म बनते हैं इसी से हम स्वतंत्र नहीं हुए हैं तब तलक हम सेल्फ रूल नहीं कर सकते हैं । तो इधर सेल्फ रूल नहीं है तो हम सांसारिक सेल्फ रूल पा करके सदा सुख कैसे पा सकते हैं। हो ही नहीं सकता है क्योंकि कर्म के आधार पर ही सब है ना। सुख को पाना दु:ख को पाना यह राजा प्रजा सबका संबंध कर्मों के आधार पर है । तो हम एक दो से सुख तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हमारे कर्म श्रेष्ठ हो । अगर कर्म श्रेष्ठ ही नहीं है तो हम सुख

कहां से पा सकते हैं। तो कोई का किसी से सुख पाना हो ही नहीं सकता है जब तलक एक दो के संबंध में हमारे कर्म श्रेष्ठ हो इसीलिए उसको श्रेष्ठ बना करके उसी को हम कैसे ऊंच बनाएं तब हम सदा संसार में सुखी बन सकते हैं । तो उसके लिए ही परमात्मा ने जो गीता के भगवान ने कहा है ना सर्व शास्त्र शिरोमणि गीता में कि जब ऐसा टाइम आता है तब मैं आता हूं कर्म श्रेष्ठ की नॉलेज सिखाने के लिए। तो गीता के भगवान ने अर्जुन को भी तो बैठकर की यही कर्मों की फिलॉसफी के ऊपर ही तो सारा समझाया ना । कर्म की गति समझा करके उसको कहा कि अभी तू मेरे से मन लगा और मेरे द्वारा वह बल ले करके तू अपने कर्म को यह पांच विकार मोह आदि यह सब कहां ना इनको छोड़ो । तो यह सारी चीजों को समझना है कि यह पांच विकार जो है जिसके कारण ही मनुष्य के कर्म भ्रष्ट होते हैं और उसी से कैसे छुटकारा हो उन्हीं सभी बातों की नॉलेज और उसके लिए बल चाहिए । इसके लिए ही बैठ कर के परमात्मा ने वह राजयोग सिखलाया अथवा कर्मयोग कहा है ना तो यह कर्मयोग अथवा राजयोग सिखलाने की कॉलेज है, जो बैठ करके परमात्मा प्रैक्टिकली अभी सिखा रहे हैं कि जब प्रैक्टिकल में वही स्वर्ग की दुनिया आने

की है परंतु आने की है तो कोई ऊपर से ऐसे ही नहीं आएगी। नहीं, यह तो हमारी कर्म से बनेगी ना, यहां ही बनेगी लेकिन कर्मों से जैसे कर्मों से ये हेल बनी है यानी दुःख और अशांति की दुनिया बनी है परंतु हमारे भ्रष्ट कर्मों के कारण बनी है फिर हमारे श्रेष्ठ कर्मों से यही दुनिया हेवन बनेगी m बाकी कोई हेवेन ऊपर नहीं है ना ऊपर से कोई इधर आएगी ना हेवेन या कोई ऐसी चीज नहीं है। यही दुनिया पलटती है, चेंज होती है तो हमारी चेंज ऑफ लाइफ, लाइफ की चेंज तो हमारी देखो यह लाइफ जो है इसको कहा जाता है दुःख और अशांति की इसको कहेंगे हेल की लाइफ फिर हमारी लाइफ की चेंज तो फिर हेवेन की लाइफ जिसमें हम सदा काल से सुख को पाते हैं। जिसने कभी रोग नहीं, कभी अकाले मृत्यु नहीं, कभी लड़ाई झगड़े नहीं । अगर आज हमारे संसार में यह लड़ाई झगड़े ना होते, हमारे पास हेल्थ का पूरा बल होता, कभी कोई डॉक्टर हॉस्पिटल ये कुछ ना होता, रोग ही नहीं होगा तो फिर काहे के लिए होंगे , रोग है तभी यह सब चीजें हैं । तो हमारे पास रोग ही ना हो , हमारे पास ऐसी कोई बातें ही ना हो तो फिर तो संसार सुखी है ना इसीलिए बाप कहते हैं मैंने जो संसार बनाया था और गीता के आधार पर परमात्मा ने जो

आकर के काम किया था वह यह काम किया था । उसने संसार को रामराज्य बनाया था अर्थात हेवेन बनाया था । तो संसार अथवा दुनिया को हेवेन बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा है जिसने बैठ करके समझाया है कि उसके लिए चाहिए प्योरिटी का फर्स्ट बल। जब तलक मनुष्य के पास वह बल नहीं है ना तो आप लोग जो शांति और सुख और आजादी और यह सभी चाहते है तो वह सच्ची आजादी और सच्ची स्वतंत्रता और सच्चा सुख तभी पा सकते हो जब तलक आप अपने इन पांच विकारों से छुटकारा नहीं पा सकते । तो पहले छुटकारा पाने का उपाय इसका चाहिए । भले गांधी जी ने भी पवित्रता के नाम पर बहुत अपनी संस्थाएं वगैरह खोली थी, इन सब बातों का लगाया था परंतु वो काम उसका उतना चल नहीं पाया क्योंकि उसमें बल चाहिए परमपिता परमात्मा का। वह काम कोई मनुष्य के करने का नहीं है इसीलिए परमात्मा ने कहा कि मैं आता हूं इस काम के लिए मैं आता हूं। यदा यदा, जब-जब ऐसा अधर्म का टाइम आता है तब तब मैं आता हूं तो ये अभी यह वो टाइम है और यही अभी डिस्ट्रक्शन और कंस्ट्रक्शन का कॉफल्यूएंस युग है जिसको कहा जाता है संगम यानी एक चक्कर पूरा होता है अभी नया चक्कर शुरू होता

है इसीलिए यह हमारी इंप्योरिटी की जेनरेशंस की एंड है और फिर प्योरिटी की जेनरेशंस का अभी आदि होने का है इसीलिए परमात्मा के द्वारा यह प्योरिटी का जेनरेशंस का आरंभ होने के लिए ये प्योरिटी का फाउंडेशन पड़ रहा है अथवा सेपलिंग लग रहा है तो यह सभी चीजों को समझना है अच्छी तरह से। यह इंडिविजुअली सेपलिंग लगानी है। भगवान तो परमात्मा के द्वारा तो अपना वर्ल्ड का कार्य हो रहा है लेकिन इंडिविजुअली जो हरेक अपना-अपना प्योरिटी का सेप्लिंग लगाएंगे वह फिर प्योर वर्ल्ड में अथवा पवित्र स्वर्ग वाली दुनिया में अथवा सुख शांति वाली दुनिया में सदा सुख को पाएंगे, तो गीता के भगवान ने यह कार्य किया था। यह कोई नहीं जानता है कि गीता अथवा नॉलेज सुनाया उसी नॉलेज से दुनिया को क्या लाभ हुआ। दुनिया को यह लाभ हुआ कि दुनिया स्वर्ग बनी और उसने वह दुनिया को स्वर्ग बनाया। वही स्वर्ग जिसकी यादगार चित्रों में और कितने अपने मंदिरों में है यह श्री लक्ष्मी श्री नारायण श्री सीता श्री राम यह वही स्वर्ग के देवी देवताएं यह सूर्यवंशी यह चंद्रवंशी घरानों का नाम है जिन्हों के ये राजे और महाराजे होकर के गए हुए हैं । तो यह राजधानी जिसको कहा है राजयोग यानी इसी योग से ये राजाई

स्थापन हुई है परमात्मा ने । तो यह सभी चीजों को समझना है कि अपना प्राचीन भारत जो था ना वह ऐसा था, जो मनुष्य यह थे एवर हेल्दी एवर वेल्थी एवर हैप्पी जिनके पास पूर्ण सुख था । हम ही थे, कोई दूसरे नहीं थे यह हम ही थे क्योंकि हमारी लाइफ की स्टेज इतनी ऊंची थी । तो अभी फिर से परमात्मा के द्वारा वह हमारी लाइफ की स्टेज ऊंची बनने का यह अभी काम हो रहा है लेकिन इसका लाभ जो इंडिविजुअली लेगा वही लेगा तब तो अपना प्राप्त कर सकेगा ना । तो इसीलिए आप लोगों को ऑफर करते हैं, खुशखबरी भी सुनाते हैं कि परमात्मा आया है वह अपना कार्य कर रहा है और आपको ऑफर भी करते हैं आप भी आकर के इसी चीज को समझो और समझ कर के अपने जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार जो है ना बर्थ राइट उस पिता से लेने का वह आकर के लो क्योंकि हर एक को हक है क्योंकि बाप है ना पिता है ना, तो पिता से अपना जो बर्थ राइट है यह सदा सुख का वह प्राप्त करना हर एक बच्चे का धर्म है परंतु हर एक अपने को समझे ना उनका बच्चा । उनका बच्चा समझे और बाप अभी आया है उसको समझे और समझ कर के उससे अपना बर्थ राइट लेने के लिए जो बाप फरमान करता है उसका पालन करें

ना। उसका फरमान है कि अभी बी प्योर एंड बी योगी तो यह फरमान पालन करना है ना । तो उसको पालन भी करना है तभी हम फिर उस प्योर वर्ल्ड का अथवा हेवेन का सुख प्राप्त कर सकते हैं बाकी सुख ऐसे ही थोड़ी मिलेगा । कितने हजार दुनिया अपने को समझे या कितना भी कुछ और प्रयत्न लेकिन देखो सब प्रयत्न से फिर भी लाइक तो दुःख अशांति की और ही चलती जा रही है ना । तो यह सभी बातों को समझना है इसीलिए आप लोगों को क्योंकि आज कुछ नए भी शायद आए हुए होंगे तो आप लोगों को बतलाते हैं कि आप लोग इन चीजों को आ करके कुछ टाइम दे करके सुनो और समझो और सच्ची-सच्ची स्वतंत्रता अथवा सच्ची सच्ची आजादी का पूर्ण पूर्ण सुख प्राप्त करने का क्या साधन है उसको जान करके उसको प्रैक्टिकल अपनाओ । तभी फिर हमारा संसार बर्थ आजादी का पूरा सुख पा सकेगा । बाकी यह तो आजादी ब्रिटिश गवर्नमेंट से भले आजाद हैं लेकिन अपने कर्मों से तो आजाद है ही नहीं इसीलिए हम दुःख और अशांति को पाते ही रह रहे हैं । तो अभी हमको चाहिए सुख शांति वह सुख शांति वाली चीज तभी मिलेगी जब इन विकारों से छूटेंगे. अभी विकारों से कैसे छूटे यह चीज समझना है। ऐसा नहीं

है कि कोई समझे कि हम किसी का खून थोड़ी ही करते हैं, हम गला नहीं काटते हैं, चोरी नहीं करते हैं तो हमारे पास तो कोई भी कार है ही नहीं। नहीं, विकार तो मनुष्य में है ही , मनुष्य इसीलिए पाप करता ही रहता है जब तलक , मोह से भी पाप होता है, काम से ही पाप होता है, क्रोध से भी पाप होता है लेकिन इन सभी बातों को समझना है कि ये चीज हमारे से कैसे निकले और इनके सिवाय ऐसे भी नहीं है कि हमारा काम नहीं चलेगा, हमारा गृहस्थी व्यवहार रुक जाएगा, या वह चलेगा। नहीं, गृह व्यवहार को चलाने के लिए कोई पांच विकार जरूरी थोड़े ही है। नहीं, पांच विकारों से दुनिया , हमारा जो गृहस्थ व्यवहार चला है उनका आधार हमारी यादगार में है। मंदिरों में देखते हो ना वह भी गृहस्थ ही थे ना देवी देवताऐं। लक्ष्मीनारायण क्या थे, दोनों कपल थे न। तो देखो राजा थे, राजा रानी होकर के गए लेकिन उन्होंने इतनी राजधानी चला के, बाल बच्चे भी थे लेकिन वह पवित्र क्यों गिने जाते हैं, जरूर है उनकी लाइफ में और आज की हमारी लाइफ में कोई डिफरेंस तो है ना तभी तो हम उनको पूजते हैं न। तो वह क्या, वह भी गृहस्थी थे ना लेकिन गृहस्थ में रहते हुए निर्विकारी गिने जाते हैं कैसे और दुनिया चली है ना। तो

ऐसा नहीं समझना उन विकारों की बिना दुनिया कैसे चलेगी, यह समझना रॉन्ग है। इसीलिए यह सब बातों को समझना है और इन्हीं के कारण ही दुःख है। तो दुःख से छूटना है तो पहले इन विकारों से आजाद होना है और इसी की आजादी के लिए कौन सा उपाय है , उसे कैसे हम नाश करें, उनसे कैसे छूटे उसके लिए उपाय कि यह कॉलेज है । यह कॉलेज परमात्मा की खोली हुई है जिसमें हम सभी स्टूडेंट्स हैं। अभी जो स्टूडेंट बनेगा वही तो स्टेटस पाएगा न । हम भी देखो अपनी स्टेटस पाने के लिए पुरुषार्थ में लगे हुए हैं, आप लोगों को भी ऑफर करते हैं कि आ करके इस चीज को समझो और इसको अच्छी तरह से जान करके प्रैक्टिकल लाइफ बनाओ और इसी के आधार पर आप भी अपना बर्थ राइट उस फादर का, गॉड का जो है ही सर्व समर्थ उन्हीं का जो बर्थ राइट है अथवा पिता, अपना परमपिता है उसका ही जो बर्थ राइट है उसको प्राप्त करो । तो उसमें देखो कितनी भारी ऑफर करते हैं तो अभी ऑफर भी देखो लेने वालों में कोटो में कोई भगवान ने पहले भी कहा है ना गीता में, गीता के भगवान ने देखो मैं आया हुआ हूं, सुनाया तो बहुतों को लेकिन निकलते ही कोटों में कोई मुझे कोटों कोऊ जानते हैं , तो बाप ने भी

ऐसा कहा है परंतु हम तो कहेंगे ना अधिकार पाने के लिए तो हर एक को अपना रखना ही चाहिए । इसीलिए आप लोगों को अपने अनुभव और विवेक में जो चीज आई है उसी के आधार पर ऑफर करते हैं। तो यह गुड ऑफर है और गुड ऑफर को लेना चाहिए बाकी जो लेंगे वह पाएंगे ना लेंगे तो फिर कैसे पाएंगे । इसीलिए अगर चाहते हो पूर्ण सुख शांति तो फिर उसका आकर के साधन पूरा समझो । और बहुत सहज है कोई ऐसी डिफिकल्ट नहीं है, हमारे जैसे क्या डिफिकल्ट करेंगे। अगर कोई डिफिकल्ट हो तो देखो जो इतना इजी है तभी तो देखो माताएं और यह सब कर सकती हैं, बच्चे भी कर सकते हैं इतना, बच्चे को कहो बाप को याद करो यह इतना कोई डिफिकल्ट बात है ? नहीं। छोटे बच्चे को भी कहो ये डैडी है ये मम्मी है तो हां बुद्धि से यह भी बाप को याद करना है और उसको याद रख करके उसके फरमान पर चलना है । तो ये उसी का फरमान है कि बच्चे पवित्र रहो ये विकारों का अभी संग छोड़ो । तो यह सभी बातें सिखाई जाएंगी इसमें तो कोई छोटा बच्चा भी बड़ा कोई सबके लिए बड़ा इजी है । कोई बुड्ढा हो, कैसा भी हो, ऐसा नहीं है कि इसके लिए कोई जवान चाहिए या कोई पढ़े-लिखे चाहिए, विद्वान, पंडित चाहिए नहीं

ऐसी कोई बात नहीं। बाप ने कहा, देखो अर्जुन को भी कहा है न जो भी कुछ पढ़ा है वह भूलो। अभी मैं तुमको ईजी बात बतलाता हूं, यह सब भूल जाओ । जिन्होंने पढ़ाया है उनको भी भूलो जो पढ़े हो वो भी भूलो, सब भूलो। कहा न इन गुरुओं इनको ved शास्त्र, ग्रंथ सब भूलो, अभी मैं जो कहता हूं वह सब सुनो । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए आप लोगों का ऑफर करते हैं बाकी करना ना करना यह तो आप लोगों का काम है । अच्छा दो मिनट साइलेंस। साइलेंस का मतलब है बाप को याद करो अथवा आई एम सोल फर्स्ट साइलेंट, फिर इधर टॉकी में आएं हैं ना, तो अभी फिर साइलेंस में जाना है इसीलिए बाप कहते हैं अभी साइलेंस वर्ल्ड में अपने को याद रखो और मुझे याद करो, जहां का मैं भी निवासी हूं क्योंकि फिर वहां से तुमको टॉकी में भेजूंगा तो फिर वह प्योर वर्ल्ड होगी । अभी इंप्योर वर्ल्ड का डिस्ट्रक्शन करता हूं इसीलिए तुम अपना अभी ध्यान अथवा अपना अटेंशन उस तरफ लगाओ और अपने को पवित्र रखो । पवित्र रखेंगे तो सेप्लिंग लगेगी पवित्र वर्ल्ड में आने के लिए, नहीं तो नहीं लगेगी। तो अगर पवित्र वर्ल्ड में आना है अथवा सुख शांति वाली दुनिया में आना है तो पवित्रता का सेप्लिंग लगाओ तभी प्योरिटी

जनरेशन में जो करेंगे तब तो पाएंगे तो उसके लिए कहते हैं अभी वह पुरुषार्थ करो।

मम्मा मुरली मधुबन

064. श्रेष्ठाचारी बनने का ज्ञान - 2

रिकॉर्ड :

आज के इस इंसान को यह क्या हो गया....

ओम शांति।

अपने देश का, यह भारत देश, इसको कहा ही जाता है प्राचीन देश । प्राचीन, यह आदि सनातनी, शुरू से लेकर, तो शुरू से भारत ऐसा नहीं था जैसा आज है। बड़ा ऊंचा, ऊंचा का मतलब है लाइफ मनुष्य की बहुत ऊंची थी। ऊंची लाइफ का मतलब है कि मनुष्य को अपने लाइफ के सुख के साधन सब थे, आज तो नहीं है ना। नो हेल्थ, नो वेल्थ, एवरीथिंग में कोई हैप्पीनेस का नहीं है यह लड़ाई झगड़े ये सब देखो, तो यही अभी अभी की ही बातें, जो ब्रिटिश गवर्नमेंट के आदि के समय की बातें हैं तब का हाल, फिर अभी भले स्वतंत्र हुआ लेकिन फिर भी जो चीज बनने की थी वह तो नहीं बन पाई है ना । तो यह

सभी बातें दिखाती हैं कि अपना देश दिन-ब-दिन नीचे पड़ता जा रहा है । तो आगे ऊंचा था, मनुष्य की लाइफ क्या थी इन सब बातों को भी समझना है और वह बना था तो कैसे बना था वह भी समझना है, वह कैसे बनेगा क्योंकि बनाने की तो बिचारे कोशिश तो बहुत ही करते हैं लेकिन इन बिचारों को पता नहीं है कि वह जो प्राचीन भारत जिसका नाम है और जिसमें सब बल था और हम सब सुखी थे तो वह कैसे थे, ऐसा भारत किसने बनाया अथवा जिस समय सुखी भारत था, सारी दुनिया सुखी थी, खाली भारत की बात नहीं है सारी दुनिया। तो यह भी सभी समझने की बातें हैं कि ऐसी दुनिया को सुखी किसने बनाया तो वह भी समझना है ना बातें। अभी वह बाप बैठकर के परमात्मा समझा भी रहे हैं और प्रैक्टिकल में वह चीज कैसे बनी थी, वह बना रहा है क्योंकि वह बनाई थी परमात्मा ने मनुष्य के बनाने की नहीं है । यह तो अभी सब उपाय मनुष्य के हैं ना तो वह मनुष्य नहीं कर सकेंगे । मनुष्य में सब आ गए साधु, संत, पंडित विद्वान सब आ गए , बिचारे सब तो कोशिश करते हैं ना। कोई ईश्वरीय मार्ग खोल कर बैठे हैं, कोई सांसारिक पदार्थों की और अच्छी तरह से कोशिश कर रहे हैं आज देखो ये साइंस कितनी जोर से जा रही है।

चंद्रमा, सूर्य आदि बहुत ऊंचे ऊंचे जाने के सब यह प्रयास कर रहे हैं। तो मनुष्य हर तरह की कोशिशों में अपना लगा तो रहे हैं कि संसार के लिए कोई कुछ मिल जाए जिससे मनुष्य की लाइफ में कुछ आ जाए लेकिन वह चीज दिन-ब-दिन लाइफ गिरती जा रही है तो इससे सिद्ध होता है कि उसके बनाने की अथॉरिटी कोई और है । अभी और कौन सिवाय हमारे परमपिता के और कोई तो हो भी नहीं सकता इसीलिए तो उसको कहा न वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी । अभी वह अथॉरिटी बैठ करके समझा रहे हैं हम सबको और फिर वह अथॉरिटी बल दे रहा है कि किस तरह से तुम लायक बनो । तुम लायक बनो ना ऐसे सर्व सुखों को पाने के तब तो तुम्हारे पास सुख भी आए ना, अभी लायक कहां हो। नालायक बच्चे थोड़ी ही सुख पा सकेंगे इसीलिए कहते हैं पहले तुम लायक बनो तो प्रकृति अथवा सभी सुख के साधन तुम्हारे को सुख देने में आ भी सके ना। अभी तो तुम लायक नहीं हो, काहे के लिए लायक नहीं हो कि तुम्हारे कर्म भ्रष्ट हैं, जिसको कहा जाता है कर्म भ्रष्ट, भ्रष्टाचारी कहते हैं ना दुनिया को तो आज सारी दुनिया की हालत है ना । तो हां यह है भ्रष्टाचारी दुनिया, तो भ्रष्टाचारी दुनिया कहो, कर्म भ्रष्ट दुनिया कहो चाहे इनको रावण

राज्य कहो बात एक ही है । रावण का मतलब ही है विकारों की दुनिया इसीलिए मानो अभी विकारों का राज्य है। मनुष्य के ऊपर अभी पावर किसकी है विकारों की, पांच विकारों पावर रख बैठे हैं मनुष्य आत्मा के ऊपर इसीलिए अभी विकारों का राज्य यानी उसके बस है मनुष्य, इसलिए जो भी काम चल रहा है संसार का विकारों से इसीलिए मानो यह रावण का राज्य हो गया ना विकारों का । तो बाप कहते हैं अभी जब तलक इन विकारों का राज्य है तब तलक तुम सुखी कैसे रह सकेंगे। यह विकार तुमको सुखी रहने नहीं देंगे और यही है तुमसे पाप कराने वाले, यही है तुमसे भ्रष्ट कर्म कराने वाले तो भ्रष्ट बनाते हैं यह विकार। अभी इसीलिए बाप कहते हैं जो चीज तुमको भ्रष्ट बना रही है, ऐसे नहीं है कि तुम सदा भ्रष्ट थे या सदा भ्रष्टाचारी हो, यह तुमको भ्रष्ट बनाया है इन विकारों ने , अभी इनको निकालो तो फिर तुम्हारे से यह भ्रष्टपन निकल जाएगा तो तुम श्रेष्ठ हो जाएंगे ना फिर श्रेष्ठ को ही तो सदा सुख मिलेगा ना । भ्रष्टाचारी को कैसे सदा सुख मिलेगा, मिल ही नहीं सकता। तो आज तुम दुःखी हो, अशांत हो, तुमको पूरा अपना मिलता ही नहीं है शरीर के जो सुख के साधन है, इसी का कारण यही है कि तुम अपने कर्मों में भ्रष्ट हो

तो ऐसे के लिए तो दुःख ही रहेगा ना । इसलिए बाप कहते हैं अभी जब तलक उस चीज को अच्छी तरह से निकाला नहीं है, अभी इसी निकालने की पावर जो है ना शक्ति, वह मनुष्य नहीं दे सकेगा। भले इसके लिए आज हमारी दुनिया में वेद, शास्त्र, ग्रंथ, पुराण यह गंगा नहाना फलाना फलाना कई आधार रखे हैं कि इनसे तुम्हारे पाप साफ होंगे परंतु यह कोई आज के थोड़े ही हैं यह तो बहुत काल से चले हैं। वेद आज के हैं? बहुत काल से चले आए हैं, यह गंगा नहाना, यह सब मेले फलाने आदि जो भी होते हैं त्रिवेणी पर यह सभी बातें करते हैं ना किंतु यह सभी बातें आज की थोड़े ही हैं । यह बहुत काल से चली आई हैं लेकिन यह करते-करते देखो ये कितना यह कीर्तन, गीत आदि सब कुछ, कई त्यौहार आते हैं कितने यह सब बिचारे खर्च करते हैं। देखो दशहरा होता है वह रावण का बुत बना करके उनको बैठकरके कितने यह सब करते हैं और मैसूर में तो बहुत अच्छी तरह से उनका मनाया जाता है ना वह मैसूर का राजा भी बड़ा शौक से मनाता था लेकिन कितना देखो बरस बरस रावण को जलाते हैं लेकिन रावण जलता ही नहीं है । विकार कहां जलते हैं ? जलाते तो है लेकिन और ही दिन-ब-दिन, अभी तो और भी बड़े-बड़े बनाते जाते हैं क्योंकि

विकार और ही बढ़ते जाते हैं ना सौ सौ फुट के ये बड़े इनके एफईजी, एफीजी कहते हैं ना कुछ, तो बनाते हैं इनके बड़े बड़े सौ फुट के लंबे क्योंकि अभी विकार लंबे होते जाते हैं ना, बड़े-बड़े होते जाते हैं ना ऊंचे ऊंचे तो बनाते बड़े बड़े हैं जलाते तो बरस बरस है लेकिन जलते ही नहीं है क्योंकि यह कोई इससे जलाने से थोड़े ही जल जाएंगे। तो जलाते क्यों हैं, और तो देखो देवताओं का उनका पूजन करते हैं, भले उनको है तो भी जाकर के देवियों के भी पूजन करते हैं ना तो जा करके फिर उनको भी डुबोते हैं। मालूम है ना उनमें बंगाल तरफ में बहुत अच्छी-अच्छी देवियां बनाते हैं । जब नवरात्रे होते हैं ना, नवरात्रि समझते हो ना? नौ दिन देवियों का पूजन करते हैं बहुत जो देवियों को मानने वाले होंगे उनको बहुत अच्छी तरह से श्रृंगारते हैं, बनाते हैं उनको कपड़े वपड़े पहनाते हैं, खिलाते पिलाते हैं भोग वोग लगाते हैं, फिर हां जब उनका पूरा होता है नो दिन या कुछ जो भी है फिर जाकरके "हरि बोल" डुबो देते हैं। तो यह तो है इसको कहा जाता है गुड़ियों का खेल । गुड़ियों समझते हैं, गुड़िया होते हैं ना, बच्चे होते हैं छोटे,. हां डॉल, तो बच्चे होते हैं गुड़िया बनाते हैं शादी भी कर आते हैं आपस में फिर खेल वेल करके फिर खत्म , तो इनको कहा जाता है

यह अंधश्रद्धा में, यह सब तो बहुत काल से ही सब चीजें चली आई है परंतु इन्हीं सब बातों से कोई हमारे पाप दग्ध का या इन सभी बातों से कुछ नहीं है। यह तो है कि जाकर के कोई बुरे कर्म करे ना उससे अच्छा है यह गुड़ियों से खेल कर ले तो भी ठीक है। कोई बुरे काम जाकरके करें, कोई विकारों के तरफ जा करके कोई गंदे काम करें उससे अच्छा है। कहते हैं ना कि बिल्कुल नास्तिक से भगत अच्छा परंतु भगत से फिर ज्ञानी श्रेष्ठ गिना हुआ है ना, ज्ञान श्रेष्ठ रखा हुआ है। तो ज्ञानी भगत से श्रेष्ठ है और फिर नास्तिक से भगत अच्छा है, फिर भी जाकर के कोई बुरा काम करें उससे तो अच्छा है फिर भी उल्टा की सीधा, जैसा कि वैसा, कुछ ना कुछ भगवान को तो करते रहते हैं न फिर किसी भी तरीके से। हां फिर भी कम से कम थोड़ा अच्छा तो सोच रहेगा ना कि हमको बुरा कुछ न करना है,कुछ ना कुछ तो अच्छाई आती है परंतु एक यथार्थ रीति की अच्छाई और किस तरह से हम अपने पापों को नाश करें और किस तरह से हम इन विकारों से छुटकारा पाएं यह विकार ही है हमारे हानिकारक इन बातों के लिए तो कोई परमात्मा कहते हैं वह यथार्थ ज्ञान जो है उस चीज का मैं देता हूं और उसके लिए बल भी मैं देता हूं, नहीं तो कोई

मनुष्य का बल थोड़े ही। देखो बहुत साधु सन्यासी हैं, ऐसे नहीं है कि विकारों के लिए वह नहीं कहते हैं। कहते हैं , आप जाएंगे तो कहेंगे भले भाई निर्विकारी रहो, क्योंकि खुद भी सन्यासी तो विकारों से छूट करके चले जाते हैं ना परंतु बल थोड़े ही है उन्हों को कि ऐसे निर्विकारी बनाए। बना नहीं सकते वह कहेंगे भले परंतु हां बिचारे बने ना बने बस आए सुने, बस उनका भी काम चल गया, उन्हों का भी काम होता रहता है बस ऐसे ही काम चलता रहता है । देखो उनके भी आजीविका का काम निपट जाता है और वह लोग भी समझते हैं कि हम घंटे आधे घंटे गए, दो वचन सुने, साधु जी की कथा सुना, साधु जी का दर्शन किया बस हमारा यह एक घंटा सफल हुआ ऐसे समझते हैं इसीलिए वह समझते हैं हमारा इसी से काम निपटा और वह समझता है हमारा भी काम हो गया है, हमारे भी आजीविका का कुछ बेटा भोग चढ़ा उससे हमारा भी काम निपट जाता है तो दोनों का काम वो समझते हैं ऐसे निपट गया परंतु इससे कुछ निपटता थोड़े ही है । यह तो प्रैक्टिकल लाइफ, अभी यह प्रैक्टिकल लाइफ बनाने के लिए तो कोई बलवान चाहिए ना, यह मनुष्य नहीं काम कर सकते । वह हिम्मत से नहीं कहेंगे कि ऐसे बनो क्योंकि इसमें तो बनने में

बड़ा हिम्मत का काम है ना तो कराएगा भी बड़ा बलवान। इसीमें तो देख रहे हो ना, देखो उसमें स्त्री पति दोनों पवित्र चाहिए और फिर दोनों पवित्र में अगर एक पवित्र रहे दूसरा ना चाहे तो फिर देखो उसमें हो जाती है ना तो इसमें तो बहुत बातें हैं ,इसमें बड़ी हिम्मत की और साहस की इसमें चाहिए बड़े का बल। तो इसीलिए बाप कहते हैं इस काम के लिए मुझे ही आना पड़ता है तब तो मैंने कहा है ना अधर्म विनाश और धर्म स्थापना के लिए मैं आता हूं क्योंकि उसमें यह प्योरिटी का बल चाहिए । इसीलिए प्योरिटी धारण कराना और फिर तुम्हारे पापों को भी नाश करने की जो ताकत है ना वह मेरे योग में है अर्थात मेरी याद में है। मेरी याद से तुम्हारे पास जो है ना वह अग्नि की तरह से नष्ट होंगे जैसे अग्नि जलाती है ना हर चीज को, इसी तरह से यह योग भी एक अग्नि का काम करता है अर्थात तुम्हारे पापों का नाश करना, भस्म करना परंतु वह किसका योग, कोई देवता का योग नहीं, कोई देवता की याद नहीं, कोई मनुष्य की याद नहीं, कोई साधु की याद नहीं, कोई संत की याद नहीं, कोई भी मनुष्य की नहीं। तो कहते हैं मनुष्य की याद से तुम्हारे पाप नहीं दग्ध होंगे। कई होते हैं ना गुरु की जाकर के फोटो देते हैं कि तुम

मेरा ध्यान करते रहो, यह करते रहो तो बाप कहते हैं हां अब उनसे तो चलो तुम्हारी कोई बुराई की तरफ ना चले तो चलो तुम फिर भी उसमें अपना लगाकर बैठो लेकिन उनसे तुम्हारे पाप नहीं दग्ध होंगे। पाप नाश करने का जो पावर है, शक्ति है वह मेरे से मिलेगी इसीलिए यथार्थ रीति से तुम मुझे जान करके मुझे याद रखेंगे ना तो पापों को नाश करने का बल मेरे से रहेगा इसलिए पाप को नाश करने का भी बल और विकारों को भी निवृत्त विकारों से करने का जो बल है वह दोनों मेरे से मिलता है। इसी कारण से इन्हीं सभी बातों से लिब्रेट करने वाला लिब्रेटर जो हूं ना मैं हूं तो यह बल सिवाय मेरे और कोई नहीं दे सकता। अभी यह बल के सिवाय फिर तुम्हारा काम नहीं बनेगा । सदा सुख का जो जीवन है ना बिना इस प्योरिटी के काम नहीं बन सकता है इसीलिए यह चीज जरूरी चाहिए तो इसीलिए बाप बैठकर के समझाते हैं कि इसका गाइड भी मैं हूं। देखो इसकी नॉलेज, समझ वह भी तो देता हूं और फिर उससे मुक्त करके विकारों से अथवा पापों से मुक्त करके मैं तुमको सदा पवित्र जीवन का अधिकारी भी मैं बनाता हूं इसीलिए यह सभी बातें सिवाय मेरे और कोई ना समझा जा सकेगा, ना ऐसा बना सकेंगे इसीलिए मेरा बल

चाहिए। तो अभी बैठ करके वह अपना बल अथवा ये अपनी नॉलेज दे करके अब अपना साथ संबंध जुटवाय रहा है। तो अभी जोड़ना है ना, उससे रिलेशन जोड़ना है । वैसे तो हां हम सब उसकी संतान है ही परंतु खाली कहने से मुंह मीठा थोड़ी हो जाएगा, प्रैक्टिकल चाहिए ना। प्रैक्टिकल उसकी संतान हैं तो फिर बच्चे भी तो ऐसे होना चाहिए ना। देखो मां-बाप है, अगर बच्चे लायक नहीं है तो फिर क्या है मां-बाप कहेंगे देखो हमारी ग्लानि कराएंगे ना , वह बच्चे बच्चे नहीं हैं । जो अच्छे बाप होते हैं ना , अगर सपूत बच्चा नहीं होगा तो कहेंगे सपूत बच्चे के सिवाय और मेरे बच्चे... बताया था ना एक कथा भी कि एक बाप था उसको चार बच्चे थे । किसी ने पूछा कि तुम को कितने बच्चे हैं तो उसने कहा हमको एक बच्चा है । उसने कहा भाई आपको तो चार बच्चे हैं, आप एक बच्चे कैसे कहते हो। तो कहा जो मेरा आज्ञाकारी बच्चा है ना वह मेरा बच्चा है बाकी मेरे आज्ञाकारी बच्चे नहीं हैं तो वह मेरे बच्चे ही नहीं हैं । तो वह बाप भी ऐसा कहेगा ना जो सपूत है, जो मेरी आज्ञा का पालन करने वाले हैं वह मेरे बच्चे हैं । तो बच्चे बनने का मतलब यह नहीं है, उनसे पूरा आज्ञाकारी, फरमानबरदार और उनके कहे फरमान चलना है ना तो वह बच्चे, जो

नहीं चलते हैं वह बच्चे थोड़े ही है। ऐसे तो परमात्मा को सब कहते हैं हमारे पिता है , हम उसकी संतान है परंतु वह कहने का खाली मुंह मीठा थोड़े ही, कहने से थोड़े ही मुंह मीठा हो जाएगा खाने से होगा ना। खाएंगे, मीठा खाएंगे, पेट भरेगा तभी उसके स्वाद का पता चलेगा । खाएंगे नहीं खाली कहेंगे यह बहुत मीठा है, बहुत स्वादिष्ट है बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा अच्छा कहने से हो जाएगा ? नहीं। तो खाली कहने की बातें नहीं है, करने की बातें हैं । हां फादर, आई एम फादर नो रिलेशन, नो इन्हेरिटेंस तो वो योग कटता है योग लगता नहीं है वह कटता है, तो वह कटिंग है और वह योग लगाना है उससे माइट लेनी है ,वह मिलेगी , वह ऐसे पावर आएंगे । वैसे पावर निकल जाएगी तो और ही बेमुख बनेंगे कहेंगे आई एम क्योंकि यह कायदा है यह सभी सूक्ष्म बातें हैं । ये सूक्ष्म जो बुद्धि वाले होंगे ना वह समझेंगे, उन्हों को बुद्धि में आएगा । वह पावर निकल जाती है तो उससे बेमुख हो जाते हैं कि आई एम फादर तो बस उसमें कहां से मिलेगी, नहीं वो लेना है आनी है किसीसे तो आनी है, इसमें ऐसा नहीं है कि हम वेट करते हैं पावर लेते हैं ना । तो पावर लेने वाला और कोई देने वाला भी तो चाहिए ना । अगर हम ही लेने देने वाले

तो फिर काम कैसे होगा, फिर तो मिलेगा ही नहीं ना। देने वाला भी हम तो लेने वाला भी हम ऐसे कैसे होगा, यह बात नहीं बनती है । तो यह सारी चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से यह संबंध का भी ड्रामा है ना देखो राजा प्रजा बाप बेटा हर चीज स्त्री पति संसार की बनावट में भी संबंध है और संबंध से ही तो लाइफ का सुख का सबका यह संबंध है ना। सब एक ही है, सब एक ही एक ऐसे तो फिर कोई किसी को ना पूछे , किसी की कुछ बात रहेगी ही नहीं। रिश्ते में भी घर पर भी एक छोटा घर है यह बाप है यह मां है यह बच्चे हैं अगर ऐसे ना हो तो सब कहे हम, हम ही बाप हैं, हम ही बाप हैं, तो सब बाप ही बाप , बाप ही बाप तो कैसे काम चलेगा । कौन किसकी देखें ,कौन किसकी रेखे कौन किसकी कुछ करें कुछ होगा ही नहीं । फिर हर एक बाप ही बाप तो चलो बाप ही बाप फिर क्या होगा नथिंग कुछ उससे..., नहीं यह सब, हम हद में भी देखते हैं तो हर एक का स्टेज है, रिश्ता है यह सब है इनका बनावट फिर वो भी तो हमारे फादर है ना सुप्रीम सौल, अभी उनसे लेना है। बस एक रिश्ता फादर एंड सन। सन, हम सब आत्माएं आई एम सन, नोट डॉटर क्योंकि आत्मा है ना तो आई एम सन यू आर भी सन । सन ऐसे

नहीं बॉडी के हिसाब से, बॉडी तो आपकी मेल है हमारी भले फीमेल है लेकिन आत्मा जो है ना तो आई एम सन, तो सन को तो हक मिलेगा ना, हक लेना है । तो सन को मिलेगा प्रॉपर्टी का तो आई एम सन, नॉट डॉटर । परंतु हां फिर आते हैं ब्रह्मा तन में आते हैं ना तो फिर ब्रह्मा के द्वारा बैठ कर के यह रचना रची है तो फिर दादा, तो फिर दादे की तो जरूर मिलेगी। फिर ग्रैंडफादर हो गया अर्थात बाप को याद करो । आई एम सोल , साइलेंस और फिर टॉकी में आते हैं। तो अभी बाप कहते हैं फिर चलना है साइलेंस वर्ल्ड में तो अभी साइलेंस वर्ल्ड को याद करो, जहां से आए हो । अब उसको याद करो और अपना कर्म को भी पवित्र बनाते रहो जिससे तुम्हारे फिर पवित्र कर्म की प्रालब्ध तुमको मिलेगी । तो दोनों काम को अच्छी तरह से समझो। बतलाया ना बी प्योर एंड बी योगी। अच्छा। नहीं तो हम बच्चे आपस में समझ भी नहीं सके ना । बच्चे समझते हैं किसीको भाई यह भी आत्मा है तो आत्मा किसका , परमात्मा का तो आत्मा के साथ परमात्मा जरूर आता है कि परमात्मा की हम आत्माएं संतान, क्रिएशन हैं । अच्छा। अच्छा, ऐसा बाप दादा, दादा को जानते

हो ना अभी? बापदादा और मां के मीठे मीठे सिकिलधे, बहुत सपूत बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।

मम्मा मुरली मधुबन

065. सुख और शांति

ओम शांति ।

मनुष्य जीवन मैं क्या चाहते हैं। यह तो सब मानेंगे की हर एक मनुष्य जीवन में सुख और शांति चाहते ही हैं और उसी सुख और शांति के लिए ही संसार के इतने पुरुषार्थ हैं। जितने भी हैं, चाहे सांसारिक पदार्थों के चाहे ईश्वरीय मार्ग के, जितने भी सब कोशिशें हैं अनेकानेक। कोई समझते हैं सांसारिक पदार्थों से कुछ सुख मिलेगा इसीलिए उसी की कोशिश करते रहते हैं, कोई कोई समझते हैं कि नहीं ईश्वरीय कुछ मार्ग अपनाने से उनसे कुछ प्राप्ति होगी तो अनेकानेक कोशिश करते ही रहते हैं । लेकिन यह सब होते हुए भी आज नहीं हुई है होती आई है बहुत काल से लेकिन हमारे जीवन की जो सुख शांति की प्राप्ति कहें वह हमारे को मिल नहीं पा सकी है जो हम चाहते हैं । तो यह समझना है कि वह चीज मिलने की कोई और तरीके से है और उसे देने वाला भी कोई जरूर कोई और ही होगा।

अभी और कौन? मनुष्य तो जो कुछ पुरुषार्थ और कोशिश कर रहे हैं उनका तो हम संसार देख रहे हैं कैसा संसार हुआ है लेकिन उसी संसार में कोई कहा जाता है अशांत और दुःख का । अशांत और दुःख है तभी तो चाहते हैं ना सुख शांति अगर सुख शांति होती तो फिर संसार ऐसे क्यों कहते वर्ल्ड पीस चाहिए विश्व शांति चाहिए, फिर तो विश्व शांति और विश्व वर्ल्ड पीस यह सभी शब्द आते ही नहीं। उसकी माना है कि वर्ल्ड में पीस नहीं है, विश्व अशांत है, विश्व, एक मनुष्य की बात नहीं है दो चार आदमियों की या लाखों आदमियों की बात नहीं है यह सारे विश्व की बात है । तो उसकी माना विश्व अशांत है तभी तो कहते हैं ना विश्व शांति चाहिए तो उसकी माना विश्व अशांत है । तो अभी विश्व की शांति और विश्व का सुख देने वाला तो विश्व का मालिक ही रहेगा ना । विश्व को सुख और विश्व को शांति देना कोई मनुष्य का काम नहीं है उसका काम है जो विश्व का मालिक है। मालिक तो एक ही है जो क्रिएटर है। अभी वह क्रिएटर फिर कैसे देता है कब देता है इन्हीं बातों को भी सबको समझना है । जो फिर स्वयं ही मालिक जो क्रिएटर है ना वो आ करके समझाता है । यह समझाए भी कौन कि तुमको कैसे मिलेगा।

वह कहता है इसीलिए मुझे यही समझाने के लिए मुझे आना पड़ता है और मेरे आने का समय है यह संगम । संगम समझते हो ना, कॉन्फ्लूएंट युग जिसको कहा जाता है कॉन्फ्लूएंस युग का मतलब ही है जबकि हमारा यह चक्कर उसका अंत और फिर नए चक्कर का आदि, गोल्डन एज का आदि और कलयुग का अंत, आयरन एज की एंड और गोल्डन एज की आदि तो उसको कहा जाएगा संगम। अभी ये संगम के बात का भी बहुतों को मालूम नहीं है । चार युग तो बहुत बताएंगे, पूछेंगे कितने युग हैं तो शायद जो कुछ इन्हीं बातों में है वह बता देंगे कि भाई चार युग है। कौन से, सतयुग त्रेता द्वापर कलयुग यह भी बता देंगे। अंग्रजी में भी कहते हैं गोल्डन सिल्वर कॉपर एंड आयरन लेकिन यह कॉन्फ्लूएंस युग अथवा कॉन्फ्लूएंस टाइम जिसके लिए ही परमात्मा ने कहा है कि मैं युगे युगे आता हूं वो गीता में है ना कि तो कइयों ने उसका अर्थ ऐसे समझ लिया है कि युगे युगे माना सतयुग में भी आता है त्रेता युग में भी आता है कलयुग द्वापर युग में हर एक युग में आता है तो इसलिए समझते हैं युगे युगे का मतलब है हर एक युग में आता है लेकिन हर एक युग में क्या करेगा आ करके। युग में हर एक युग में तो काम ही

नहीं है ना सतयुग में क्या करेगा । सतयुग में तो है ही सतयुग उसमें क्या आकर के बनाएगा। वह आता ही है अधर्म विनाश और धर्म की स्थापना के लिए तो सतयुग तो है ही धर्म आत्माओं का युग तभी तो उनको सतयुग, गोल्डन एज कहते हैं ना । और सिल्वर एज में भी दरकार नहीं है उसमें भी चंद्रवंशी राजाओं का राज्य है जिसके लिए गांधीजी कहते थे रामराज्य बने तो उसमें भी तो दरकार नहीं थी । द्वापर काल में भी दरकार नहीं है क्योंकि द्वापर के बाद तो कलयुग आने का है ना इसीलिए आना है उनको कलयुग के एंड में और सतयुग के आदि में वो उसको कहा है संगम युग यानी संगम युगे युगे यानी संगम संगम का जब टाइम होता है यानी चक्कर के एंड और आदि का जब संगम का टाइम है तो मैं संगम संगम पर आता हूं तो कहने का भाव ऐसा है लेकिन गीता में युगे यूगे खाली अक्षर डाला है संगम युगे न डालने के कारण तो संगम नाम ना होने के कारण वो युगे युगे का अर्थ बहुत ले गए हैं कि सतयुग और त्रेता सभी युगों में आते हैं । अभी सभी युगों में तो जरूरत ही नहीं है ना, देखो चार युग का इसीलिए यह दिखलाया हुआ है इसमें । अभी सतयुग में क्या करेगा आ करके, वह तो है ही उसी समय देवताओं

का राज्य तो आना है उसमें भई कलयुग एंड और सतयुग आदि के संगम कॉन्फ्लूएंस टाइम जिसको कहा जाता है । तो यह अभी वो टाइम है, अभी का समय, जो अभी प्रेजेंट समय है इनको कहा जाएगा संगम युग तो अभी पांच युग हो गए ना एक सतयुग त्रेता द्वापर कलयुग और संगम युग। तो चार युग तो सभी बताएंगे पांचवा युग कोई नहीं बताएंगे भाई पांच युग। तो यह जो पीरियड है अभी का इसीलिए ही परमात्मा ने कहा है कि मैं आता हूं और इसी को ही कहा है ना रात ना दिन यानी हमारी गीता में भी है ना ब्रह्मा की रात ब्रह्मा का दिन तो दो युग है ब्रह्मा की रात है दो युग है ब्रह्मा के दिन । दिन कौन सा है सतयुग और त्रेता ब्रह्मा का दिन और द्वापर और कलयुग ब्रह्मा की रात तो कहते हैं ना मैं ब्रह्मा की रात में आता हूं ना ब्रह्मा के दिन में आता हूं मैं संगम में यानी रात की एंड और दिन का आरंभ का टाइम तो उसका हुआ संगम इसीलिए मैं संगम पर आता हूं । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए यह अभी वो टाइम है और इसको ही कहा जाता है औसपीसिएस युग।जैसे तीन बरस के बाद में एक मंथ आता है ना इसको कहते हैं क्या कहते हैं उसको लीप युग परंतु उसको हिंदी में भी कहते हैं पुरुषोत्तम,

उसको पुरुषोत्तम नाम से हिंदी में कहते हैं और उसको लीप मंथ कुछ ऐसा देते हैं अंग्रेजी में कुछ कहते हैं। तो इसी तरह से यह चार युगों में यह छोटा सा टाइम का जो है जिसमे परमात्मा आते हैं इसको कहेंगे औस्पीशीयस युग इसमें परमात्मा आते हैं । अभी यह संगम का टाइम है, अभी संगम। अभी यह इसका अभी जो टाइम चल रहा है इसको संगम कहेंगे क्योंकि नई दुनिया का अथवा हमारी गोल्डन एज के आरंभ का अभी यह फाउंडेशन अथवा कलम कहो सेपलिंग कहो अभी यह लग रहा है और उधर यह डिस्ट्रक्शन की तैयारियां हो रही है इसको कहेंगे कॉन्फ्लूएंस टाइम। तो यह बात परमात्मा बैठ करके समझाते हैं कि इसी अपने आने के टाइम भी मैं समझाता हूं । मेरे आने का टाइम भी कौन सा है वह भी मैं जानता हूं इसीलिए आ करके समझाता हूं तो देखो नई बात है ना। तुम समझ बैठे हो कि सतयुग में आएगा, त्रेता में आया, द्वापर में आया, यह आता ही आता है युग युग में परंतु नहीं मैं कोई भी युग में नहीं आता हूं आता ही संगम पर हूं क्योंकि मेरा काम हो अभी होगा ना, मेरा काम सतयुग में है ही नहीं क्यों आऊंगा । वहां तो बैठे हैं, वह तो है ही सुख शांति उधर क्या है मैं आता ही हूं अधर्म के टाइम पर । अधर्म

का भी जब एंड हो न। अधर्म शुरू हो तभी आऊं तो फिर क्या है, अधर्म के बीच में भी नहीं आ सकता हूं, अधर्म की जब एंड हो तो जब एंड हो तभी तो आकर के अधर्म नाश करूं तो इसीलिए मैं आता ही उसी टाइम पर हूं। तो यह सभी चीजें समझने की है और अपना भारतवासियों का भी जो वर्ण है ना वह भी समझने का है कि हां जो कहते हैं चार वर्ण, कहते हैं ना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अभी अपने भारतवासियों के भी जो वर्ण है ना यह चार जो वर्ण कहे हैं वास्तव कर करके उसको भी कहेंगे पांच वर्ण, कौन से? सतयुग में देवता, पीछे त्रेता में क्षत्रिय फिर वैश्य फिर शूद्र फिर ब्राम्हण, अभी ब्राम्हण यह संगम में जो है ना तो संगम पर आ करके परमात्मा यह ब्रह्मा तन से यह मुख वंशावली जो बैठकर के नॉलेज सुनाते हैं तो वह जो प्योरिटी को धारण करते हैं उन्हों को कहेंगे ब्राम्हण । वह तो एक ब्राह्मण जाति है वह जो अपने को ब्राह्मण नाम से कहलाते रहते हैं तो वह तो अपना लगा रखा है एक जात के ऊपर परंतु नहीं, ब्राह्मण जिसका महत्व है वह ब्राह्मण है जो परमात्मा ने आकर के नई दुनिया जब रची है ब्रह्मा दी क्रिएटर भी कहा हुआ है ना तो उनके द्वारा वह जो मुख वंशावली रची है यानी मुख से नॉलेज सुना करके

जो प्योरिटी की जेनरेशंस की सेप्लिंग लगाई है तो जिन्हों से सेप्लिंग लगाई है उन्हीं सेपलिंग लगाने वालों को ब्राह्मण कहा जाता है तो यह अभी की बात है। अभी वह जो सेप्लिंग प्योरिटी की जो लगाते हैं वह ब्राम्हण हो गए तो अभी हम कौन हैं? हम ब्रह्माणिया और ब्राह्मण ऐसे कहेंगे यानी जो प्योरिटी को अपना रहे हैं नई जेनरेशंश के लिए। तो यह बैठकर के बाप समझाते हैं कि ब्राह्मण फिर जाकर के सतयुग में देवता बनेंगे, ब्राह्मण सो देवता इसीलिए कहते हैं ब्राह्मण देवताए नमः , कहते हैं ना इकट्ठे कहते हैं ब्राह्मण देवताए नमः तो अभी यह ब्राह्मण अभी जाकर के देवता बनते हैं तो ब्राह्मण देवताए नमः क्योंकि यह ब्राह्मण बनने से फिर हम देवता जाकर के बनते हैं । तो यह सारी चीजें समझने की है इसीलिए बाप कहते हैं कि यह सच सच जो ब्राह्मण हैं सच्चे ब्राह्मण, वो तो नाम रख दिया उन्होंने परंतु सच्चे ब्राम्हण तो मैं आ करके रचता हूं ना। कैसे रखता हूं, इसी तरीके से कि मैं जो बैठकर के मुख से नॉलेज सुनाता हूं उसी नॉलेज अथवा ज्ञान और योग से यह है वह राजयोग जिससे बैठ करके इस योग और ज्ञान से मैं यह राजाई देवताओं वाली सूर्यवंशी चंद्रवंशी स्थापन करता हूं इसी को कहा है राजयोग । तो इस योग से

अथवा इस योगबल से हम यह राजाई प्राप्त करते हैं । तो यह है वह सूर्यवंशी चंद्रवंशी राजाई प्राप्त करने का योग जिसमें हम सदा सुखी थे अर्थात पूर्ण सुख थे, उसी समय विश्व सुखी था। उसमें पूर्ण सुख था हेल्थ, वेल्थ एवरीथिंग सब एवर थी, कोई दुख नहीं था इसीलिए कहते हैं जब विश्व शांति विश्व का सुख पूरा था तो उसी समय यही देवी देवताओं का राज्य था तो अभी फिर से जब वह राज्य अथवा वो धर्म हो तभी तो विश्व शांति हो न विश्व सुख हो ना । अभी अनेक धर्म है अनेक राज्य हैं उसके होते विश्व शांति और विश्व सुख कैसे होगा, नहीं हो सकता इसीलिए कहते हैं यह अनेक धर्म का नाश और एक आदि सनातनी देवी-देवता धर्म का स्थापना करता हूं तभी फिर विश्वशांति अथवा विश्वकप वाला रहेगा । तो अभी विश्व को सुखी बनाने के लिए परमात्मा अभी वह उपाय अर्थात फिर वही देवी देवताओं का राज्य अथवा देवी देवताओं का धर्म की स्थापना करते हैं। देवी देवताओं का मतलब ही है मनुष्य प्यूरीफाइड जो थे उन्हों का नाम देवी-देवता धर्म था, राज्य था जिसमें सदा मनुष्य प्योर थे और प्योर होने के कारण सुखी भी थे । प्योरिटी है तो पीस एंड प्रोस्पेरिटी भी है, नो प्योरिटी नो पीस एंड प्रोस्पेरिटी तो अभी ऐसी जब प्योरिटी

अपनाएं तब तो न सेप्लिंग लग रहा है इसीलिए अभी ब्राह्मण फिर वो जेनरेशंस में फिर तो आत्मा भी पवित्र और शरीर भी पवित्र मिलेगा ना, अभी तो पवित्र हो रहे हैं इसलिए अभी ब्राम्हण पीछे देवता । तो यह सभी चीजों को समझना है इसीलिए बाप बैठकर के अभी जो बेहद का बाप है जो इसी सभी नॉलेज को जानता है वह बैठ करके हमको अपने वर्णों का और अपने यह युग आदि का भी नॉलेज समझाते हैं, अभी कौन सा टाइम है वह बतला करके अभी कहते हैं उसी टाइम का फायदा लो । तो अभी कौन सा समय है, इसी समय अभी क्या करना चाहिए, उसके मुताबिक अपना पुरुषार्थ रख करके आने वाले नई दुनिया के लिए तैयार हो जाओ । अभी आने वाली नई दुनिया, क्या आने की है, कैसी है, तो उसमें भी हम उस जैसे लायक बनेंगे तब तो नई दुनिया की प्रालब्ध पा सकेंगे ना। कर्म के आधार पर मनुष्य के जीवन का आधार है ना, तो हमारा जब जीवन का आधार कर्मों के ऊपर है तो हमको अपने कर्म से श्रेष्ठ बन करके अभी ऐसे जीवन का अथवा जैनरेशंस का प्रालब्ध पाने का अपने को लायक बनाना है तो उसके लिए अभी प्रिपेयर होना है। किसमें प्रिपेयर होना है क्या करना है वह यह सिखाया जा रहा है। उसका तो कॉलेज

है, स्कूल है तो यह सब समझना है। अच्छा अभी टाइम हुआ है इसलिए दो मिनट साइलेंस।

066. विनाश से पहले पूरा वर्षा लेन की विधि और भगवान की श्रीमत क्या है

सतगुरु के मत पर। धन के बच्चे हैं ना, अब धनी मिला है आगे तो निधनके थे । धनी के बिना बुद्धि भटकती थी तो सबकुछ भटकता था ना । अभी तो नॉलेज है, रोशनी है बुद्धि धन की है अभी । अभी मालूम है धनी कौन है, किसको याद करने का है। तो अभी धनी के तरफ बुद्धि को रखने का है और धनी के आर्डर पर, हुकुम पर, कहते हैं ना "हुकुमी हुकुम चला रहा" अभी चलाता है, अभी उसके हुकुम पर चलते हैं । इसके पहले नहीं थे हुकुमी हुकुम चला रहा है। वह तो कहते हैं पत्ता भी हिलता है ना उसके हुकुम से हिलता है। वो पत्ते को हुकुम करने वाला थोड़ी ही है, पत्ते को तो हवा चलाती है, पत्ते को कोई वो थोड़ी कहेगा भत्ता हिलो, भगवान का काम यही है पत्ता हिलो, फलाना ये करो, यह करो, यह करो वह थोड़ी बैठ करके यह आर्डर करेंगे, फिर तो चोर को कहेगा चोरी करो तो वह भी आर्डर

उसका हो जाएगा। नहीं, यह ऑर्डर्स नहीं है उसके, उसका आर्डर अभी यह जो हमको मत मिलती है अभी कि कैसे अपने को पवित्र रखो और किस तरह से अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाओ यह है उसका हुकुम तो अभी हुकुम हुकुम चला रहा है, अभी वह बुक अपना हुकुम दे रहा है और हमको कैरी आउट करना है, उसके मत पर रहना है और मत पर चलना है । तो अभी बाप कहते हैं कि अभी मेरा हुकुम जो है उसको मानो और अभी के लिए क्योंकि अभी दुनिया का अंत है और नई दुनिया बनाता हूं उसके लिए अपना ये अभी फाउंडेशन डालो तो अभी फाउंडेशन डालने का टाइम है ना तो अभी उसमें अपने इस प्योरिटी को धारण करने का अच्छा ख्याल रखो और प्रैक्टिकल में। तो इसीलिए बाप का जो मत मिल रही है और जो भी उसकी फरमान है उसी पर रहकरके बाप कहते हैं फरमान है मुझे याद करो और अपने कर्म को पवित्र रखो अथवा विकारों के संग में कोई काम मत करो तो इसका भी पालन करो और फिर भी कहते हैं पिछला तुम्हारा खाता तुमको कहां-कहां रुकावट डालेंगे कोई कर्म बंधन के रूप में तो भी कहते हैं तुम्हारे को भी अपना ज्ञान योग तो मिला है उसके आधार से उसको, रास्ते को साफ करते आगे बढ़ते चलो परंतु कहां

मूंझो तो फिर भी मैं बैठा हूं ना , अभी हूं हाजरा हजूर हूं अभी। अभी वह ओमनीप्रेजेंट, ऐसे नहीं है ओमनीप्रेजेंट है ही है , नहीं अभी हुआ हूं , अभी प्रेजेंट हूं। तू अभी जब मैं प्रजेंट हूं तो मेरी हाजिरी में अभी मेरे से तुम राय भी ले सकते हो । अभी आता हूं, मैं बोलता हूं मैं देखो मैंने तुम्हारे लिए ये लोन लिया है, किराए पर मकान लिया है, इसको बहुत किराया देता हूं। ऐसा नहीं है मुफ्त में, तुम बच्चों के लिए मैंने किराए पर मकान लिया है, मनुष्य का तन लिया है तो उसको मैं किराया देता हूं बहुत भारी, देखो कितना किराया दिया है, ऐसा बनाया है उसको यह कम किराया थोड़े ही है। वैकुंठ का महाराजा उसको बनाया भले उसका अपना भी पुरुषार्थ रहा, परंतु हां मैं आया हुआ हूं पुरुषार्थ भी तो तभी रहा ना । मैं तो कहूंगा ना देखो उनको क्या मिला तो बाप कहते हैं बच्चे इसीलिए मैं कोई मुफ्त में नहीं आया हुआ हूं मैं बहुत किराया देता हूं । सारे विश्व का मालिक बनाता हूं तुम बच्चों को इसीलिए उसके लिए मैंने तन लिया है तो फिर तुम बच्चों के लिए ही तो सही ना फिर कोई भी राय है कोई भी सलाह है पूछ सकते हो कोई उसमें नहीं । भले दूर हो कोई कहां है कोई कहां है तो चिट्ठी पत्र के जरिए भी हो सकता है और कोई ऐसी बातें भी होती

हैं तो देखो कोई लंदन में काम चलते हैं कभी कोई ऐसी बात होती है समझते हैं इससे नुकसान पड़ेगा चढ़ जाएंगे । तो यह भारी नुकसान है ना हमारे जीवन का कुछ नीचा ऊंचा हो और हमारे इतने जन्मों की कमाई चली जाए यह सबसे बड़े नुकसान ना हुआ? सबसे बड़ा नुकसान हुआ, तो देखे कोई ऐसी बात है तो चढ़ भी आ जाना चाहिए परंतु हां कोई ऐसी बात पड़ती नहीं है जो चढ़ आओ क्योंकि यह तो अपना ज्ञान ऐसा है जिससे समझ इतनी मिली है कि हमको करना क्या है कि वह हम अपने बुद्धि से भी समझ सकते हैं क्योंकि बुद्धि मिली है ना अभी। तो अभी बाप कहते हैं इतना अपनी संभाल रखनी चाहिए, इन बातों में गफलत नहीं रखना चाहिए कुछ नीचे ऊंचे हुआ तो होने दो, नहीं । यह अपने को संभालते और अपना पुरुषार्थ आगे रखो, जितना जितना रखेंगे अच्छा ही है और अच्छी तरह सभी बातें बुद्धि में रखो। यह नॉट्स लेते हैं कोई कोई यह भी अच्छा ही है । नोट्स रहेगा, याद रहेगा, उसमें नोट करेंगे फिर हां जिस समय बैठेंगे , फिर खोल कर देखेंगे रिमाइंड रहेगा, याद रहेगा तो यह पॉइंट्स लेना, नोट करना यह सब पढ़ाने वाले जो स्टूडेंट तीखे होते हैं ना वह सारा अपना पढ़ाई में अटेंशन, वह समझेंगे यह पॉइंट अच्छी है, दूसरे

किसी को समझाने के लिए अच्छी है नोट करेगा, फिर अपनी भी बुद्धि में रखेगा अपने भी समझने के लिए दूसरों को भी इस तरीके के से, ये तरीके हैं, भिन्न-भिन्न तरीके होते हैं ना, आज यह तरीका समझाने का बहुत अच्छा रहा, बाबा की मुरली में यह पॉइंट अच्छी थी इस तरीके से, मम्मा की मुरली में ऐसी पॉइंट अच्छी थी दूसरे को इस तरीके से समझाने के लिए तो यह भिन्न-भिन्न तरीके होते हैं तो जो अच्छे होंगे वह पकड़ेंगे, वह समझेंगे मिस नहीं करें । कभी भी मुरली मिस नहीं करेंगे क्योंकि मुरली में भले पॉइंट्स रोज तो वही आती है परंतु यह कई कई तरीके नए होते हैं ना, कोई ना कोई तरीका नया रोज, जरूर रोज की मुरली में से मिलेगा जो अटेंशन से सुनेंगे । तो कोई तो समझेंगे की बातें तो वही है इन्हों का मतलब यही है कि निर्विकारी रहो और परमात्मा को याद करो बस। वह दो अक्षर पकड़ लेते हैं बी होली बी योगी बस इनका मतलब यही है ना। वह तो अभी हम घर बैठे भी कर सकते हैं परंतु नहीं, यह जो यह रोज जो पढ़ाई मिलती है उसमें तरीके मिलते हैं कई अच्छी तरीके से। अपनी बुद्धि में भी कभी वह बात अच्छे तरह से बैठ जाती है । पहले भले सुनी होगी परंतु कोई दिन ऐसा होगा कहेंगे आज मेरी बुद्धि में यह बैठी है यह

पॉइंट ऐसी है हां तो ऐसे बैठेगा और फिर दूसरे को समझाने के भी कई तरीके मिलते हैं । तो जो पूरा अच्छा नॉलेज के ऊपर अटेंशन देने वाले हैं वह सुनने में और सुनाने में पूरा ध्यान देंगे । देखो हम भी अभी अठाईस बरस हो गए हैं, हम भी अभी बाबा की टेप नहीं सुनते हैं? मुरली सुनते हैं, अटेंशन क्योंकि कभी कोई पॉइंट ऐसी अच्छी मिल जाती है जो दूसरों को समझाने के लिए काम में आती है क्योंकि कई प्रकार के मनुष्य है ना , संस्कार है । कभी किसको कैसी बात जांचेंगी लगेगी तो तीर मारने का है ना। तो जो तीर प्रैक्टिस करते हैं ना देखो वो गन लिया था न तो यह प्रैक्टिस होती है भाई कहां निशाना लगाना है तो कैसे वह निशाना पर लगेगा तो यह भी निशान मारना है कि इसके संस्कार में यह मेरा ज्ञान का कैसे निशान लगेगा। जिसको तीर लग गई ना तो तीर लगाने की भी प्रेक्टिस चाहिए ना । अगर हमको प्रेक्टिस नहीं होगा , हम मारेंगे तो उधर गोली चली जाएगी , उधर के बदले उधर चली जाएगी। नहीं, जिसको प्रैक्टिस होगी वह पूरा तीर मारेंगे, निशान मारेंगे तो निशान मारने की भी प्रेक्टिस चाहिए न, तो हमारा भी ये निशान मारना है ना । दूसरे को कोई भी पॉइंट जंचाना तो यह भी प्रेक्टिस चाहिए। तो जितना

जितना इस ज्ञान में चलेंगे तो दूसरे को प्वाइंट समझाने का वो आएगा कि यह आदमी इस प्रकार का है, इसको इसी रग से पकड़ना चाहिए क्योंकि हमको तो कल्याण करना है ना, हमको किसी को पकड़ करके कुछ और थोड़ी और करना है । हम समझते हैं बिचारी आत्मा का कल्याण हो जाए, नहीं तो बेचारा समझेगा कि नहीं, कुछ नहीं आया बुद्धि में, कहेंगे कुछ नहीं, कुछ नहीं हां चला जाएगा। हमारा काम तो है ना जहां तक हमसे हो सके उसको निशान मारना तो हम अपने तन मन धन से हर हालत में कोशिश करेंगे तो कोशिश करना अपना धर्म है बाकी तो जिसका जितना तकदीर होगा वह तो अपना अपना हर एक बनाएगा लेकिन हमारा तो काम है ना। हमारी मेहनत तो पूरी होनी चाहिए न, नहीं तो हमारा क्या है आप लोगों से माथा खोटी करने की। हमको कहे कि हमको बनना है ना, अच्छा हम बाबा की याद में बैठ जाते हैं, हम अपना जीवन पवित्र रखें बाकी इन्हों की माथा खोटी हम क्यों करें, बैठ जाए परंतु नहीं ड्यूटी है, फर्ज है, मिली है चीज तो दूसरों को दान करना है,यह भी दान करना है ना । मनुष्य दान क्यों करते हैं? नहीं, वो कहें बस हम ही बस खाते रहें, नहीं ये भी दान करना है ना दूसरों को तो यह भी शौक

होना चाहिए कि दूसरे आत्मा को बनाए इसीलिए बाबा हमेशा मुरली में कहते हैं ना कि हां शौक रखो, रोज पांच सात को यह कथा सुनाओ। यह भी प्रैक्टिस होनी चाहिए पांच सात को कथा सुनाओ, जैसे ब्राह्मण लोग होते हैं ना, जाएंगे पांच सात घर में कथा करेंगे तो यह भी हमको रोज पांच सात, कम से कम एक तो भला रोज करो । कम से कम एक को कथा जरूर सुनाओ रोज यानी एक को अपना बनाओ । तो ऐसा भी अगर कोई नियम रखे ना जैसे सुबह को रोज कोई नियमी होते हैं ना भक्ति मार्ग में पाठ करते हैं, कोई पूजन करते हैं, करते हैं ना, तो अपना भी पाठ कौन सा है यह पाठ है ना , जो हम सुन रहे हैं यही पाठ दूसरों को पढ़ाना है। बाकी ये पुस्तक,ये शास्त्र लेकरके बड़े-बड़े आवाजों से खाली बैठकर के पढ़ने की थोड़ी ही बात है। नहीं, यह है कि सच्चा बच्चा किसको सत्यनारायण की कथा सुना करके उनको सच-सच नर से नारायण बनाना तो सबसे श्रेष्ठ खता हो गई ना । प्रैक्टिकल में किसी को नर से नारायण बनाना, किसी नारी को लक्ष्मी बनाना, उस स्टेटस में ले आना यह सबसे ऊंचा सच्ची कथा । कथा हो गई न प्रेक्टिकल में किसी नर को नारायण बनाना, किसी नारी को लक्ष्मी बनाना उस स्टेटस में ले आना यह

सबसे ऊंचा सच्ची कथा तो यह रोज कम से कम एक को तो सुना नहीं चाहिए और बनाना चाहिए तो ऐसी कोशिश रखने की चाहिए ,यह भी शौक है । तो ऐसे करने वाले अपना भी उन्नति करेंगे दूसरों का भी उन्नति करेंगे तो यह अपना रखो। और अभी देखेंगे बैंगलोर वाले देखो अच्छे-अच्छे हमारे पास अभी बुजुर्ग जैसे हमारा यह राजगोपाल है, भाई नाम तो बहुत है, थोड़े नहीं है। यह हमारा कृष्णमूर्ति है, बुजुर्ग बुजुर्ग हैं, दूसरे यह हमारे इसका क्या नाम था हमारे पुरुषोत्तम... देखो नाम देखो कितना अच्छा है । अभी वह भी दूसरे आ रहे हैं कुछ अच्छे-अच्छे रिटायर्ड है। यह हमारा इसका क्या नाम कल सुनाया था... (राजशेखर) हां राजशेखर तो देखो ऐसे ऐसे आए और तो फिर इन्हों को पुरुषार्थ में। यह भी कोई कोई आते हैं दूसरा यह भी अभी नए-नए.... आपका शुभ नाम क्या है? देवराज? वाह! हां यह भी हमारे बुजुर्ग बुजुर्ग और दूसरे भी देखो यंग भी हैं, यह अच्छे-अच्छे यह भी जवान पट्ठे ऐसे काम कर सकते हैं । तो हां सबको अपना-अपना जो जो कुछ है बल, लगाओ । लगाओ का मतलब है लड़ना नहीं है, नहीं यह समझाना है और अच्छी तरह से कोशिश रखने की है । तो अच्छा है किसको अटेंशन है ऐसे दूसरों को बनाने

पर परंतु ऐसा पुरुषार्थ रखना है इसीलिए ऐसे पुरुषार्थ रखते और अपने को आगे बढ़ाते रहो । कैसा धर्मराज? अच्छा, बहुत अच्छा । कैसा है पपैया? ठीक है ना? हां, यह भी अच्छा है पपैया। अपनी भाषाओं में आप लोगों को बहुत अच्छी तरह से क्योंकी भाषा जानते हो आप लोग। अपनी भाषा से बहुत अच्छी सर्विस कर सकते हैं। तो अभी हम लोग तो इतनी अच्छी भाषा तो नहीं बोल सकते इसीलिए भाषा के कारण भी बिचारे बहुत नहीं आते हैं तो आप लोगों को खड़े हो जाना चाहिए। आप लोगों को भी समझाने का रखना चाहिए ऐसे नहीं खाली बहने। भले माताओं को आधा रखा है बाप ने इसीलिए क्योंकि माताओं के सामने कोई इतना बोल नहीं सकेगा। पुरुष पुरुष में है ना तो कभी टक्कर खा लेंगे इसीलिए जरा माताओं को फिर भी रिस्पेक्ट रखते हैं ना तो इसीलिए । परंतु फिर भी कहा ना कहा कुछ कम से कम उसको रेफरेंस तो दे सकते हो ना कि भाई हमारा जीवन का अच्छा ऐसा अनुभव है, हमने कहां से पाया है, आप भी चलो, आपको भी वहां समझाया जाएगा, आपकी जीवन अच्छी हो जाए की तो उसको जगाना चाहिए । कुछ तो देनी चाहिए ना रोशनी । तो कम से कम इतना अपने अनुभव से भी उनको जागृति दे सकते हो ना।

तो ऐसी ऐसी बातों से दूसरे को जागृति देना यह भी महापुण्य का काम है, सच्ची राह पर किसको लगाना तो ऐसा अपना पुरुषार्थ करो अच्छी तरह से। अच्छा, अभी लास्ट दिन है आज हम भी खिला दें। कहेंगे हां कहेंगे कोई दिन तो हमें भी । आज लास्ट दिन है, हां कल भी विदाई का है, कल तो विदाई का हो जाएगा ना। आज तो खिला दे हम , कल तो विदाई का रहेगा । बैठे रहो , बैठे रहो, आप बैठे रहो । बच्चों को तो, हां दादा से शुरू, यह हमारा अनुभव , यह शांत स्वरूप है । यह हमारी धनलक्ष्मी कैसा? आप तो आएंगे ना आबू में । यह तो हमारे मीठे, यह तो तैयार है ना? हां , यह हमारा जयकिशन । आज हमारी लक्ष्मी नहीं दिखाई पड़ती कहां है? मम्मा जा भी रही है तो भी नहीं दिखाई पड़ती। हां, देखा है परमधाम? परमधाम में हो ना, लगता है ना। अच्छा , यह हमारा रामकृष्ण। यह दोनों नाम रख दिया है । वह तो राम त्रेतावशी और कृष्ण सूर्यवंशी यह तो दोनों ही नाम लगा दिया, देखो तो सही। देखो पहला राम रखा पीछे कृष्ण, पहले सूर्यवंशी पीछे त्रेतावंशी। क्या करें, सतयुग में तो अकेले-अकेले कलयुग में तो दोनों ही नाम। कैसा पपैया? याद है ना, अच्छा है बच्चा यह भी । ये श्री राम, बहुत अच्छे होंगे तो अपना अच्छा बनाएंगे। यह

हमारे... इधर पुरुषोत्तम। हां पुरुषोत्तम को भी देंगे, किसी को भूलेंगे नहीं। भूलेंगे नहीं, तुम ना छोड़ना, हम तो नहीं छोड़ेंगे। अच्छा, अच्छा यह हमारा राजगोपाल, यह भी अच्छा है। यह तो है ही धर्मराज, कैसा है ? यह श्याम , देखा तो है मेरे ख्याल में, अच्छा इसको यह चांस दिया क्या? बेंगलुरु में यह मम्मा को ले आएगा। ओहो। कैसा है नागराज, ऐसा बैठा हुआ है ना। अच्छा । ठीक है? ठीक है ना ? अच्छे रहना अभी। ऐसे नहीं हम जाएं आप गुल हो जाओ। हां जागे हो तो चलते ही रहना, यह बहुत कमाई अच्छी है यह कमाई तो करते ही रहना। फिर कैंटोंमेंट भी अभी रहेगा, आप कैंटोंमेंट रहते हो ना ? उधर ही क्लास होगा फिर उधर ही जाना जहां आपको नजदीक पड़े परंतु हां अच्छी तरह से इन बातों का ध्यान रखना। हां कैसे हैं? चलते हो ना? हां, चलने का फिर इससे सारा चार्ट वार्ट पूछते रहना । अभी हां सबकी संभाल रखना दादी । ऐसे ना हो कि हमारे बच्चों को फिर माता खा जाए। संभाल रखना। मम्मा का बच्चा गुम हो जावे, गुम नहीं करना, इनकी संभाल करना। अगर कोई गुम हो जाए, माया खा जावे तो उसका कान पकड़कर बुलाना । उनको बच्चों को जगाना कि कहां हो , किधर सोए पड़े हो। सुलाने नहीं देना है । कैसा? हां

पक्का पक्का । यह हमारे इंजीनियर जी । समझते अपने को चलाते रहना बहुत अच्छे ऐसे लाइफ अच्छी बनेगी । पीछे आप कहेंगे ओहो हम कहां थे अभी क्या मिल गया है आपको ऐसा लगेगा। आप अपनी लाइफ में महसूस करेंगे हम क्या थे अभी क्या बन गए हैं । ऐसा महसूस होगा, यह हम अपने अनुभव के आधार पर आप को कहते हैं तो हमारा फर्ज है ना आपको बतला देना। तरुण आज आप बैठा है। बेचारा बैठा है आज। बहुत अच्छा है जो रोज रोज मिस करता है उसका ख्याल किया । आज डबल खाया तो फिर ....रोज लेता है वो फिर, जो रोज मिस करता है। अच्छा, यह भी अच्छा है। इस बच्चे को भी संभालना, इसकी पालना तो यह इम्तिहान देवे तो फिर इसका कुछ सर्विस वरविस का, यहां देखो तो इसको थोड़ा हेल्प करना । थोड़ा अच्छा बच्चा है बेचारे को कोई इसका..... मम्मा ही मां है इसकी, दूसरी बिचारे की लौकिक में नहीं है, ये ही मां है । (एक साल पूरा रह कर जाना) लो, यह सीताराम की है। सबको देते हैं। यह भी अच्छी है उसकी राम की । दुर्गा , हैं दुर्गा का रखा है अष्ट भुजाओं की, हां अच्छा। यह हमारी पार्वती , हां अच्छे । यह हमारी ज्ञानेश्वर आओ, कैसा? ज्ञान के उसमें खुशबू होती है ना तो अभी ज्ञान की

खुशबू भरनी है । अच्छा , इसको मालती का दिया? मालती बेबी का ? वो बेबी हमको याद पड़ती है ना। इनको माताजी का दो। हां माताजी हीरालाल का। देखो हमें भले आप भूल जाओ, मम्मा भूलती है? न। हीरालाल और हीरालाल की माता जी का। क्या करें हमें एकली बड़ी गुजराती नहीं आवे छे । थोड़ी-थोड़ी आवे छे इसीलिए हम आटे थोड़ी थोड़ी बात करे छे। देखो मम्मा को भी प्रेम के आंसू आते हैं। यह भी तो देखो शुद्ध मोह है ना । नहीं, बेंगलुरु वाले बहुत मीठे हैं ना। अच्छा बाप दादा और मां के मीठे मीठे बहुत अच्छे सपूत बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग, गुड डे गुड इवनिंग एवरी टाइम गुड रखना क्योंकि बेड माया बैठी है इसीलिए जरा संभल के रहना। वहां भी बैठी है, बढ़िया बनाने की कोशिश करती है। अच्छा आपका शुभ नाम क्या है? अच्छा यह भी अच्छा है कुछ हां अच्छी तरह से उठाते , समझाते और सबकी अभी संभाल रखनी है । बड़ी दिल, छोटी कहे की, हम तो बड़े बाप की बड़े बड़े हैं ना । रिकॉर्ड : रुक जा रात ठहर जा रे चंदा।

मम्मा मुरली मधुबन

067. याद की यात्रा - यज्ञ इतिहास

पहले प्योर हैं ना और सन ऑफ सुप्रीम सोल। प्योर सौल सन ऑफ सुप्रीम सोल, ऐसे नहीं आई एम देट प्योर, उसका मतलब है कि आई एम सुप्रीम सौल , नो यह रॉन्ग हो जाएगा । आई एम देट...अभी तो इंप्योर है ना तो इसीलिए इंप्योर आई एम देट यानी असुल हम प्योर, तो आई एम देट जो लगता है ना वह अपने लिए ही लगता है लेकिन प्योर स्टेज पर तो प्योर स्टेज हो गई ना । तो अभी इंप्योर स्टेज है फिर हमको प्योर स्टेज पकड़नी है बाकी आई एम देट नोट सुप्रीम सौल, नहीं । आई एम देट मींस और हम सो , हम सो का भी अर्थ है कि हम सो का अर्थ यह नहीं है कि आई एम सो सुप्रीम सौल , नो आई एम सो प्योर सौल, देट आई एम फर्स्ट प्योर तो इसीलिए अपनी बुद्धि को अपनी प्योर स्टेज पर रख करके और फिर हम सन ऑफ सुप्रीम सौल , यह बुद्धि की स्थिति हर वक्त बनाने का प्रयत्न रखना है । उससे हमारे हर एक्शंस में हमारे प्योर एक्शंस चलेंगे

क्योंकि आई एम फर्स्ट प्योर न तो अपनी देट बुद्धि उसमें रखनी है कि आई एम प्योर सोल । और असूल प्योर हैं और सन ऑफ सुप्रीम सौल बाप, तो इसी तरह से ही याद में रहने से फिर हमारे एक्शंस भी प्योर रहेंगे कि आई एम प्योर सौल नॉट इंप्योर तो यह ख्याल रहने से हम अपने एक्शंस में संभलेंगे जल्दी कोई रॉन्ग एक्शन नहीं होगा । और जो भी देखते हैं यह भी तो सोल है, यह भी तो फर्स्ट प्योर है लेकिन अभी... ऐसे तो इंप्योरिटी के किसी से भी एक्शंस होंगे मानो हमसे ही किसी ने कुछ दो गाली करी या कोई ऐसी बात करी तो भले उसकी इंप्योर एक्शंस हैं परंतु हम समझते हैं कि है तो ये भी फर्स्ट प्योर परंतु यह जानता नहीं है बेचारा। वो आएगा न कि बेचारा जानता नहीं है तो इनको पता दे दें, इसमें इसने कहा तो इससे हम थोड़े ही कुछ कि इसने कहा तो हम भी इंप्योर के साथ इंप्योर हो जाएं। नहीं, हम अपनी प्योरिटी की स्टेज नहीं छोड़ेंगे। ऐसे नहीं इसके कारण हम भी इंप्योर एक्शंस में आ जाए। नहीं, इसने करा इस बिचारे को पता नहीं इसको पता देना चाहिए कि नहीं इससे तुम्हारे विकर्म बनेंगे, अगर दे सकते हैं, उस पर हम चला सकते हैं जैसे देखते हैं देने का है तो, अगर समझे कि नहीं हमारा कुछ कहना या

कुछ इसको और ही तो चलो हम तो अपने स्टेज पर रहे ना। परंतु फर्ज है कि उनको भी प्यार से, ढंग से अगर हम उसी स्थिति में होंगे तो उसको असर बैठेगा। अगर हम अपने उस पोजीशन पर होंगे ना तो वह पोजीशन उसको पकड़ाएंगी कि नहीं वह समझेगा , वो सुनेगा तो यह सभी चीजें हैं जिसमें हमको अपनी स्टेज वह प्योर आई एम फर्स्ट प्योर तो अभी हमें प्योर तो प्योर याद रखने से हमारे एक्शन प्योर रहेंगे नहीं तो फिर बॉडी कॉन्शियस होने से फिर इंप्योरिटी आएगी तो इंप्योरिटी की एक्शंस। अभी जो भी काम क्रोध लोभ मोह आदि का भी पकड़ाव भी हो जाता है, नहीं तो उससे हम छूटे रहते हैं ना तो यह है युक्ति और प्रैक्टिकल अपनी स्टेज की धारणा जिससे हम अपने को आगे बढ़ा सकते हैं तो अभी यह अभ्यास अपना हर वक्त रखने का है। ये ऐसी चीज नहीं है कि किसी समय कोई खास बैठ करके करना, यह भी कईयों को जो नेष्ठा में बिठाया जाता है ना तो वह भी जब तलक कच्ची अवस्था है यानी अभी कच्चे हैं। कच्चे का मतलब है अभी पहली पहली है स्टेज तभी भाई उनको पहले जरा प्रैक्टिस बैठ जाए ,रस बैठ जाए परंतु वास्तव करके नहीं तो बैठाने की दरकार नहीं है। यह तो चलते फिरते खाते पीते अपना रखने का है

परंतु उसको टेस्ट जरा बिठाने की और उसको जरा प्रैक्टिस इसीलिए बिठाते हैं परंतु नहीं तो वास्तव करके इसकी दरकार नहीं है क्योंकि जरूरत नहीं है । जरूरत तो बस समझा आई एम प्योर सौल, सन ऑफ सुप्रीम सोल बस इसी में स्थित रहना है और उसी स्थिति से अपना काम काज करते जो भी करते कामकाज का भी क्या करेगा जरूरी ही करेगा । ऐसा जो होगा स्थिति वाला वह जो अपना जरूरी है वह अपना शरीर निर्वाह का अथवा दूसरे के भी बनाने का , उनको भी अपनी स्टेज में लाने का बस उसी से वही काम होगा, वह तो इंप्योर एक्शंस फिर नहीं होगा, होगा ही नहीं । पता रहेगा ना आई एम, हम क्या है तो ये रहने से, तो यह है अपनी स्मृति, याद । तो अपनी भी याद और अपने बाप की भी याद तो इसको कहेंगे कि याद, रिलेशन सहित याद। इसको कहेंगे रिलेशन सहित याद, है एक ही याद परंतु रिलेशन सहित कि आई एम सोल, अपनी भी कि मैं क्या हूं और सन ऑफ सुप्रीम सौल तो रिलेशन क्या है रिलेशन से हमको उनकी माइट वर्सा जिसको कहते हैं वह प्राप्त रहेगा इसलिए वह रिलेशन भी पकड़ना है । अगर रिलेशन नहीं पकड़ेंगे तो वर्सा नहीं मिलेगा। आई एम देट माना आई एम सुप्रीम सोल तो कहां से वर्सा मिलेगा । यू

आर सुप्रीम सोल तो भाई नो इन्हेरिटेंस। कहां से मिलेगा फादर रखेंगे तो फिर फादर से मिलेगा तो रिलेशन । वैसे तो यह भी मनुष्य यह भी मनुष्य है,आपका बच्चा भी तो मनुष्य है परंतु रिलेशन से आपकी प्रॉपर्टी के ऊपर हक लगेगा, लगेगा ना, जो भी प्रॉपर्टी होगी लेकिन रिलेशन नहीं है तो वह भी मैन है वह भी मैंन है, फिर तो कोई बात ही नहीं है ना तो फिर क्या होगा । परंतु नहीं, रिलेशन जायदाद के ऊपर हक कोर्ट भी दिलाएगी । दादा का वह पोत्रा होता है तो ग्रैंडफादर के ऊपर हक हो जाता है तो ग्रैंड फादर एंड पोत्रा, ग्रैंडसन तब तो रिलेशन है ना । तो रिलेशन प्रॉपर्टी के ऊपर हक लगाता है तो रिलेशन का भी बड़ा संबंधित चीज ये भी बड़ी बात है । तो खाली आई एम सोल उससे भी काम नहीं चलेगा। सन ऑफ, तो सन ऑफ तो रिलेशन की पावर जो है ना वह भी काम करती है , जैसे यह भी मैंने यह भी मैन चलो फिर तो कोई बात नहीं न परंतु देखो ग्रैंडसन एंड ग्रैंडफादर तो रिलेशन भी पावर है ना तो यह रिलेशन माइट तो यह रिलेशन से हम उनसे अपनी पावर लेते हैं, हमारा उसकी जायदाद के ऊपर हाथ लगता है । तो देखो कोर्ट भी रिलेशन लेगी, उनकी दिखेंगी, कोई झूठा बना है रिलेशन तो वह जांच करेगी, ये करेंगी,

ब्लड देखेगी यह देखेगी कई होते हैं ना कोर्ट वगैरह तो भाई इनके लड़का है, यह है तो देखो ब्लड कनेक्शन रिलेशन उसको भी कोर्ट भी अपना दावा रखेगी कि नहीं यह इनकी जायदाद है। हमारा भी तो कनेक्शन हम आई एम सन ऑफ सुप्रीम सौल तो हम भी उसकी जायदाद के ऊपर रिलेशन से अपना हक रखते हैं तो रखना है ना। यह पावर है ये माइट है और दुनिया का भी फिर देखो राजा प्रजा, राजा क्या है यह नेताएं बने यह क्या है, अरे है तो यह भी मैन वह भी मैन परंतु क्या रिलेशन पावर ले आती है ना तो उससे करते हैं, है तो वह भी मनुष्य वह भी मनुष्य जो भी मनुष्य एक एक के ऊपर चलता है तो ये भी तो माइट मिलती है ना। तो यह सब है माइट लेने का अभी इसी से हम उससे वो कंप्लीट ताकत लेते हैं जिससे फिर मनुष्य ऊंचा बनता है फिर ऊंची धारणाओं से हम भी अपने पावर में रहते हैं मनुष्य होकर के पावर में रहते हैं जिससे हमको यह पावर आती है हेल्थ वेल्थ एवरीथिंग प्राप्त होती है। तो यह माइट लेनी है ना तो माइट लेने के लिए हमको उसके साथ रिलेशन रखना है बाकी आई एम देट रहें तो माइट कहां से ले किससे लें, वो नहीं मिलेगी ऐसे । तो यह सभी चीजें हैं, कहेंगे आई एम फादर, तो फादर तो नो सन

नो इन्हेरिटेंस तो वो खत्म हो जाती है ना नो सन नो इन्हेरिटेंस । आई एम फादर तो नो इनहेरिटेंस , आई एम दैट, आई एम दैट, आई एम दैट करेंगे तो आई एम फादर आई एम फादर नो रिलेशन नो इन्हेरिटेंस कट ऑफ हो जाएगा तो वह योग कटता है वो योग लगता नहीं है योग कटता है तो वह कटिंग है और यह योग लगाना है उससे माइट लेनी है तो मिलेगी तो ऐसे पावर आएगी वैसे पावर निकल जाएगी तो और ही बेमुख बनेंगे । तो यह कायदा है यह सभी सूक्ष्म बातें हैं जो सूक्ष्म बुद्धि वाले होंगे ना वह समझेंगे, उनकी बुद्धि में आएगा। वो पावर निकल जाती है तो उसे बेमुख हो जाते हैं ना, आई एम फादर तो बस उसमें तो वो पावर कहां से मिलेगी, नहीं वो लेना है, आनी है किससे। तो आनी है तो इसमें ऐसा नहीं है हम वेट करते हैं। पावर लेते हैं ना तो पावर लेने वाला और कोई देने वाला भी तो चाहिए ना । अगर हम ही लेने देने वाले तो काम कैसे होगा फिर तो मिलेगा ही नहीं ना । देने वाला भी हम तो लेने वाला भी हम ऐसे कैसे होगा ये बात नहीं बनती है । तो यह सारी चीजें हैं जिसको बहुत अच्छी तरह से यह संबंध का ड्रामा है ना देखो राजा प्रजा बाप बेटा हर चीज है स्त्री पति संसार की बनावट में भी संबंध है और संबंध से

ही तो लाइफ का सुख का सबका यह संबंध है ना । सभी एक ही है सभी एक ही एक ऐसे तो कोई किसी को ना पूछें किसी की कुछ बात रहे ही नहीं। रिश्तों में भी घर में एक छोटा घर है यह बाप है यह मां है यह बच्चे हैं अगर ऐसे ना हो तो फिर सब कहे हम तो फिर ऐसा कैसे चलेगा। कौन किसकी देखें, कौन किसकी रेखे, कौन किसकी कुछ करें तो कुछ होगा ही नहीं तो सब बाप ही बाप तो चलो बाप ही बाप , फिर क्या होगा नथिंग कुछ उससे नहीं होगा । हम हद में भी देखते हैं तो हर एक का स्टेज है, रिश्ता है यह सब है सब बनावट तो वह भी तो हमारे फादर है ना, सुप्रीम सौल तो अभी उससे लेना है । बस एक रिश्ता फादर एंड सन। हम सभी आत्माएं आई एम सन, नॉट डॉटर आई एम सन क्योंकि आत्मा है ना तो आई एम सन यू आर भी सन । सन ऐसे नहीं बॉडी के हिसाब से, बॉडी तो आपकी मेल है हमारी भले फीमेल है लेकिन आत्मा जो है ना तो आई एम सन तो सन को तो हक मिलेगा ना हक लेना है । तो सन को मिलेगा प्रॉपर्टी का तो आई एम सन नॉट डॉटर परंतु हां फिर आते हैं ब्रह्मा तक में आते हैं ना तो फिर ब्रह्मा के द्वारा बैठ करके यह रचना रची है तो फिर दादा तो दादा की तो जरूर मिलेगी। वह ग्रैंडफादर हो गया ना ।

किसके ग्रैंडसन है सुप्रीम सोल, हेवेनली गॉड फादर तो हेवन के हैं तो फिर हम हेवन के हकदार हो जाते हैं ना । तो बाप कहते हैं बच्चे अभी देखो तुमको वो हक दे रहा हूं तो यह अंदर में खुशी रहनी चाहिए कि हम फादर से ग्रैंडफादर से क्या हासिल करते हैं। ये अंदर की बातें हैं अपने से और उस खुशी में उस नशे में और उसमें रहते कहां फिर कोई दुख की बात आएगी न इधर, लगेंगी नहीं, फील नहीं होगी, महसूस नहीं होगी । समझेंगे चलो कोई रोग आया समझेंगे ये कर्म भोग है पिछले खाते का है ना वो तो मैने उल्टा बनाया है ना ।बाप को छोड़ करके रिलेशन छोड़ करके हम माया के रिलेशन में चले गए तो हमने उल्टा बनाया तो भोगेंगे नहीं तो क्या करेंगे, चलो अभी यह चुकाना है तो खुशी में वह इतना फील नहीं होगा क्योंकि अभी ये इसका लास्ट है अब तो नहीं बनाना है ना तो फिर हां इसको समझेंगे कर्म भोग है। कोई ऐसी बात आ गई चलो इसका भी लेना-देना हिसाब किताब है, तो क्या है उसकी फीलिंग्स और उसकी महसूस नहीं रहेगी। मेहसूस्ता वो जोर से बैठती है ना खुशी की महसूसता । वह खुशी की महसूसता जोर से है इसीलिए फिर यह महसूसता जो है ना वह इतनी लगेगी नहीं तो ऐसे रहने से अंत मति सो गति। ऐसी ऐसी अवस्था

खड़ी रहने से फिर हम उसी अवस्था को पाते हैं। तो यह अपनी-अपनी बनाने की कि हम किस अवस्था में है । अभी कहते हैं ना हां मम्मा अनुभव सुनाओ तो ये अपना अनुभव बस कि बस किसमें रहना है कैसे रहना है तो हां इसी तरीके से । यह अंदर अंदर का बाहर से तो कुछ कहने की या करने की तो बात नहीं है ना यह अंदर की, अभी अंदर की यह अपनी रखने की है और उसी में रह करके काम तो करना ही है यह भी तो हम काम ही करते है ना। आप लोगों को सुनाना, करना जो भी है देखो कितने सब हैं, उन्हों की सबकी संभाल तो रखनी पड़ती है ना । उनके कपड़े की भी तो उनके बीमारी की भी उनके सबकी । आप दो चार बच्चे संभालते हो बाबा मम्मा के कितने बच्चे हैं, सब की देखरेख जिस्मानी, रुहानी दोनो रेखदेख करनी है। आप तो खाली जिस्मानी करते हो, शरीर की किसके रूह की क्या संभाल करते हो । वो बिचारा मरता है गिरता है क्या करता है उसका तो पता भी नहीं की उनकी आत्मा की कोई हानि हो रही है । उसकी आप रिस्पांसिबिलिटी नहीं पकड़ते हो । बहुत करके जिस्म की, बीमार होगा डॉक्टर के पास इलाज करा देंगे , उसकी पढ़ाई लिखाई का , इधर तो देखो इनकी जिस्मानी कि हां यह स्टेटस पाने के लिए अपनी

धारणा बना रहे हैं तो रूहानी और जिस्मानी भी रखनी पड़ती है। उनको कपड़ा लत्ता, बीमार कुछ होगा तो ऐसे थोड़ी छोड़ देंगे, उनका इलाज दवा क्योंकि समझते हैं ना पिछले खाते का है तो उनकी संभाल करनी है तो उनकी जिस्मानी भी चलती है रूहानी भी चलती है डबल काम है । आप लोगों को तो सिंगल काम और सो भी दो चार बच्चे, करके बहुत में बहुत किसी को छः होगा आठ होगा, बारह होगा बस ना और क्या? इधर तो देखो कितने बच्चों का रेखदेख। तो अपनी भी तो प्रवृत्ति है ना ऐसे नहीं है कि हम प्रवृत्ति को छोड़ देते हैं। वह दो चार बच्चों की प्रवृत्ति है और यहां सैकड़ों की बैठकरके संभाल होती है। तो इसमें तो ऐसे नहीं ना बुद्धि हिले, नहीं मिलने की कोई बात नहीं है । आप आएंगे ना माउंट आबू देखना, जब एक एक सौ दो दो सौ इकट्ठे होते हैं, उनकी संभाल करना, सबको खिलाना पिलाना कोई बीमार पड़ जाएगा कोई कुछ होगा , आगे तो रहते थे अपने पास। शुरू शुरू में तो कई बरस पौने चार सौ रहते थे, पौने चार सौ एक ही में रहते थे लेकिन मकान इतना बड़ा नहीं था कराची में । पाकिस्तान में थे ना पहले तो कराची में इतना मकान नहीं था जो हम उसमें, एक ही में रहे लेकिन आठ मकान थे। आठ मकान

और खाना एक स्थान पर बनता था, आठों को पहुंचाना परंतु प्रबंध था सारा, मोटर बक्से सब था । दो बसेस थीं छः मोटर थीं छः कार्स थीं तो सब प्रबंध था तो देखो कितना। तो उस समय ऐसा था खाना एक स्थान पर बनता था और सबके पास जाता था। पीछे फिर खाना भी अपना-अपना सबका कर दिया था परंतु नहीं तो वह भी टाइम था । तो सबका वहां देखरेख करना, बच्चों का अलग बच्चियों का अलग , छोटी-छोटी आई थीं ना इनकी सब , कोई बच्चे भी ले आई । हां ये सब लबाहुत छोटे छोटे छोटे छोटे थे, अठाईस बरस हो गए ना। इतने इतने आए तो छोटे-छोटे थे तो इन सबकी संभाल होती थी ना कितना, पौने चार सौ की संभाल तो यह सब की देखरेख । आप दो चार बच्चे संभालते हो बिजी हैं, क्या करें, बच्चे हैं यह है वह है देखो कितना बहाने लगाते हो और इधर पौने चार सौ की रेखदेख उनके दुःख की उनके कपड़े की उनके सबकी हर तरह से और सो भी रूहानी जिस्मानी, कोई मन में संकल्प तो नहीं है। ऐसे तो नहीं माया कहां इनको हैरान कर रही है सबकी देखरेख। रोज कचहरी रात को। रात को सबको से पूछते हैं, कोई सेलवेशन किसीको, ऐसे ना हो थोड़ी किसी को चीज ना मिले किसी कारण बिचारे का माइंड डिस्टर्ब रहे

और योग टूट जाए तो सबसे पूछना क्योंकि चार्जेस पर तो दूसरे मुकर्रर भी रहते हैं ना परंतु कहां कोई चार्ज वाला नीचा ऊंचा कर देवे तो फिर भाई बहनें हैं ना तो आपस में कभी हो जाती है तो ना मालूम किसी ने किसी चीज पर पूरा अटेंशन ना दिया हो तो फिर रोज रात को पूछना और उसकी रेख देख करना । कोई भी बात है तो हर तरह से किसी ने भूल की तो हां कचहरी। कचहरी समझते हो ना ? उनका भूल का क्लास होता था सब से पूछते थे फिर उन्हों को सजा भी मिलती थी । और हां सजाएं फिर कोई दूसरी नहीं, फिर हां मुरली बंद। यह ज्ञान क्लास खाना तुम्हारा बंद । तो यह खाना ना मिले तो फिर देखो कितना उसका दंड है। यहां ऐसे नहीं कि बस ऐसे ही कॉमन चलने का है ये तो पढ़ाई है ना इसमें तो पूरा बनने का है तो ऐसी कोई भी मिस्टेक करे तो बहुत उन्हों की संभाल भी रहती थी और कचहरी, सेलवेशन अभी तक भी, आप आएंगे माउंट आबू ना तो हां जब आकरके कट्ठे होते हैं तो रोज पूछते हैं रात को कोई किसी को दिक्कत तो नहीं पड़ी, किसीने किसीको ऐसा तो नहीं कि आपस में किसी का हो जाए कुछ तो, नहीं सब संभाल, अच्छी तरह से तो यह सभी रखना होता है । तो देखो इतने बच्चों की संभाल करते कोई

बाबा तो कहते नहीं न हमारे क्या करें बिजी हैं, कैसे करें, नहीं वह भी करना ही है ना तो काम तो हम भी करते हैं, कर्मयोगी तो हम भी हैं ना । ऐसे थोड़ी हम छोड़ कर बैठे हुए हैं हां दो चार का नहीं है तो बहुतों का है । वो भी तो बहुतों की है जिसमें सब तरह से अपनी जीवन बनावे । तो यह सभी चीजें अपने प्रैक्टिस की हैं और अपनी धारणा में ले आने की है । तो फिर अपनी धारणाएं ऐसे बनाने से ही तभी तो हम अपना सौभाग्य पा सकेंगे ना। सब काम अपना हम सब अपने हाथ से ही करते थे। कपड़ा भी जो अपने है ना सब, धोबी को नहीं देते थे क्योंकि पता नहींगंडे बिचारे किन्हों के कपड़े कैसे होंगे क्या होंगे सब । अपने घर में भट्टी थी धोबी हम थे सब, अपन धोते थे । तो इतनी काशमोटे थी वो हम सब वो क्या कहते हैं क्लीन हम सब करते थे सब । चप्पल पहने का है ना वो चप्पल हम अपने बनाते थे , सह अपना अंदर था सब । (पूछते हैं कि कोई अब्सेंट होता था तो पनिशमेंट दी जाती थी?) अब्सेंट तो वह तो रहते साथ थे न, भले अब्सेंट होंगे कारण से कभी कोई बीमार हो परंतु हमारा है बीमार हो तो भी भले खाट पर लेटे रहो, तो हां भले लेटे रहो सुनो भी । उनको आराम से ईजी चेयर पर बिठाएंगे कोई ऐसा होगा तो लेटे

रहेंगे बाकी कोई कारण से हुआ तो कारण होंगा ना बाकी ऐसे ही कोई करेंगे तो हां उनको कहेंगे की ये सुस्ती लेज़ी अभी क्या ये माया खा गई, देखो तुमको माया ने लगाया ये भी एक छठा विकार है हां सुस्तपना । ये पांच विकार ये छठा विकार, उसको हम छठा विकार कहते हैं, लेजीपना सुस्तपना तो फिर हां उनको भी तो ठीक करना है ना। वो तो कोई रॉन्ग है उनका कारण तो फिर उन्हें समझाना भी है । तो यह सभी चीजें हैं तो यह अपना सब है स्कूल में बोर्डिंग था ना जैसे बोर्डिंग होता है सब अपना था अंदर। तो इतना समय यह सभी कामकाज चलते तो ऐसे नहीं खाली ऐसे ही यह सब चल रहे हैं नहीं, यह सब। तो उन्हीं में अपना योग अपना ज्ञान अपनी धारणाएं और प्रेक्टिकल संगठन में ही फिर चलना देखो, माताओं को संभालना बड़ा मुश्किल है उनके बीच में रह करके यह सभी इतना सब बातों का तो यह सभी चला हुआ है। अभी तो सब सर्विस में निकल गई है ना । अभी तो कोई किधर कोई किधर देखो दो चार इधर है दो चार किधर है दो चार किधर, अब तो सब फैल गई हैं सर्विस में अपना-अपना कहां सर्विस में लगे हैं। पाकिस्तान में तो सब एक ही जगह पर थे ना वो भट्ठी में पक रहे थे अब तो सब सर्विस में गए इधर उधर तो सब

फैल गई हैं । फिर भी अभी सीजन होती है ना तो माउंट आबू कराते हैं सभी इकट्ठे होते हैं, तभी आप लोगों को भी कहते हैं आप आएंगे ना बेंगलुरु वाले, भूपालम, आएंगे ना? हां आएंगे, हां आएंगे तो दिखाएंगे तो सब इकट्ठे रहते हैं और कैसे, किस तरह से। परंतु हां आने वाले भी बड़े अच्छे चाहिए ना। बी प्योर एंड भी योगी ऐसे चाहिए तब उन्हों को आनंद आएगा । तो यह सभी धारणाएं हैं बाकी अपना कोई ऐसा ही नहीं है बस, यह प्रैक्टिस है प्रैक्टिकल किस तरह से अपने उसी प्रैक्टिस में रहे । ऐसी बहुत सी अपने अनुभव की बातें हैं उसी अनुभव में रह करके और उसी अनुभव के साथ अपना जीवन चलाने का है तो यह सभी प्रैक्टिकल जीवन बनाने की बात है यह सिर्फ ऐसे कॉमन आया गया सुना बस उसी की ही चीज नहीं है। यह तो अपना उससे संबंध है, अपना जो बाप बेहद का कैसे हम बच्चों को यह नॉलेज भी दे रहे हैं, हमारा बाप भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी वही है ना। गति सद्गति दाता भी वही है इसीलिए अभी बाप कहते हैं मैं बाप टीचर और सतगुरु कैसे प्रैक्टिकल बनता हूं वह बन करके अभी, हम क्या कहेंगे हमारी पालना कौन करता है , डायरेक्ट उनसे तो हमको खिलाने वाला कौन ? वह तो ऐसे भक्ति मार्ग में तो

ऐसे सब कहते हैं परंतु वह तो अपने कर्म का है ना, खिलाने वाला वह है तो किसी को अच्छा किसी को बिचारा खा भी नहीं सकते हैं तो यह तो अपने कर्म का हिसाब है ना, हम तो सच-सच अभी परमात्मा के क्योंकि अभी हम उनके हैं प्रैक्टिकल इसीलिए प्रैक्टिकल उनके होकर के अभी उनके द्वारा अपना लेते हैं तो याद कौन रहेगा? बाप रहेंगे । हमें कौन खिला रहा है बाप का खा रहे हैं, पढ़ाता कौन हैं बाप पढ़ाता है तो हमारी बुद्धि में एक की ही याद रहेगी। ऐसे नहीं जैसे लौकिक तरह से टीचर एक रहेगा, बाप दूसरा रहेगा, गुरु तीसरा रहेगा , तीसरे मनुष्य को याद रखना पड़ेगा ना परंतु इधर तो एक ही को और एक भी कौन जो है ही एक, वह उसकी याद। अभी हमको यह नॉलेज सुना रहा है कौन , डायरेक्ट उनकी याद आती है ना , हमको कोई शास्त्र थोड़ी कोई गीता थोड़ी ही याद रखनी पड़ती है । गीता शास्त्र नहीं, वेद शास्त्र नहीं या कोई भी शास्त्र नहीं। गीता पाठी बैठकर सुनाएगा तो उसको क्या याद आएगा यह गीता सुनाने वाले हैं ना बहुत, हां भाई फलाने फलाने सुनाते हैं तो उनको क्या याद आएगा उनको गीता याद आएगी और फिर कृष्ण भगवान, अभी कृष्ण को तो भगवान तो देखो बुद्धि उल्टी जाती है ना । अभी अपनी बुद्धि किसके

पास जाएगी परमपिता परमात्मा के पास, सुनाने वाला कौन है। भले मम्मा सुनाती है परंतु मम्मा भी कहां से सुनकर सुनाती है, सुना तो उसका है ना, नॉलेज तो उसका है ना तो बुद्धि में कौन आएगा यह बाप की नॉलेज फिर जिसने धारण किया है वह धारण किया हुआ फिर बतलाते हैं परंतु है तो उनकी ना, हमने कहा अपना थोड़े ही कोई वेद, शास्त्र या अपने-अपने कोई भी अंदर से, नहीं उनका सुन कर के उनका धारण कर रखा है तो बुद्धि में क्या आएगा कि हां बाबा का नॉलेज सुनते हैं । जिन्होंने उस पॉइंट को धारण किया है या कुछ किया है तो वह फिर बतलाते हैं बाबा का यह है समझाना, बाबा ऐसा समझाता है, बाबा ऐसा बताया है परंतु बताया तो बाबा है ना, नॉलेज दी तो उसने है ना तो बुद्धि में याद सबको क्या आएगा, बाप आएगा तो। इसमें बाप ही याद रहेगा, उसमें कोई मनुष्य की या किसी के याद की बात नहीं है । तो उसमें है मन वचन कर्म से अभी जैसे कि हम उनके हैं और उनका ही हमारे से मन वचन कर्म का चल रहा है तो यह सभी चीजें समझने की है। तो यह है बाप का अच्छी तरह से समझ करके और बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार लेना तो अधिकार लेने वाले भी अच्छे चाहिए ना बाकी ऐसे थोड़ी बस ऐसे ही,

नहीं वह अपने ऊपर धारणा रखना, वो संबंध रखना और उसी सभी में आनाz उसके मत पर चलना। अभी हम किसकी मत पर हैं उन्हीं के । कोई भी कार्य करेंगे, कुछ भी करेंगे कुछ भी होगा उसी के डायरेक्शन पर उसकी मत पर , तो क्या हमारे बुद्धि में वही याद रहेगी ना, उनकी ही याद रहेगी दूसरे किसी की नहीं । कोई मनुष्य की याद नहीं, बस उनकी याद क्योंकि उनके डायरेक्शंस पर हैं उनकी मत पर है । तो इनकी इतनी बुद्धि उसके लगन चाहिए तब हमारा योगी, याद और रिलेशन और वो लव वो सभी लगेगा बाकी खाली थोड़ी बैठ करके बस कहने की कुछ है या बैठकर के रहना हैं, नहीं । तो यह सभी कहने करने वाली सिर्फ बातें नहीं है यह प्रैक्टिकल रिलेशनशिप प्रैक्टिकल चाहिए ना संबंध में तभी हमको वह सुख और वह आनंद और शांति और उसी के आधार पर फिर हम भविष्य भी अपना प्रालब्ध बनाते हैं तो अभी इतना है ईश्वरीय संबंध पीछे तो देवता संबंध हो जाएगा देवताओं का आपस का, अभी ईश्वरीय तो यह रिलेशन श्रेष्ठ है। इन्हीं को ही कहा जाता है ब्राह्मण वो देवता। तो ब्राह्मणों का देवताओं से ऊंचा पद है क्योंकि हम ब्राम्हण अभी ऊंचे हैं क्योंकि हमारा रिलेशन डायरेक्ट ईश्वर से संबंध में रिलेशन है और

वह देवता तो फिर देखो लक्ष्मीनारायण फिर अपना अपना देवी देवताओं का आपस में रहा न। यह तो अभी हमारा ब्राह्मणों का हम मुख वंशावली किसके रिलेशन में है डायरेक्ट उनके । तो वह नशा है वह खुशी है और इस जन्म को महत्व इसीलिए कहते हैं यह जन्म जो है ना सब जन्मों से देवताओं से भी, कहते हैं ना देवताए भी इच्छा रखते हैं मनुष्य जन्म में आने की, वह कौन सा जन्म ? यह जन्म कि हम यहां से ही तो ब्राह्मण से ही तो देवता बने हैं वो याद रखेंगे ना कि भाई यहां से ही हम ऐसे बने हैं। तो जहां से बना जाता है तो उसको याद रखा जाता है ना असुल यही हमारी स्टेज लाइफ की जिसमें से हम ऐसे बने तो इसीलिए बलिहारी इस जन्म की। कहते हैं ना सबसे यही मनुष्य जन्म जो है वह दुर्लभ है , ऐसे कहते हैं मनुष्य जन्म दुर्लभ है परंतु वह समझते हैं चौरासी लाख योनियों से पशु पक्षी जनावर बन करके पीछे आ करके मनुष्य बने हैं , नहीं मनुष्य अपने बहुत नीचे के जन्मों से फिर यह जो जन्म है ना श्रेष्ठ, इससे हम श्रेष्ठ बनते हैं ना। वह तो प्रालब्ध हो गई, उसमें तो हम प्रालब्ध खाते हैं, बनते यहां हैं। यह मेहनत का है तो यह मेहनत की लाइफ है जिसमें हम इंप्योरिटी से प्योरिटी में आते हैं इसीलिए ब्राह्मणों का

महत्व है। तो यह सभी चीजें समझने की है ना तो हम डायरेक्ट अभी ईश्वरीय संतान और अभी कहने में नहीं सिर्फ प्रैक्टिकल है संबंध में तो अपना संबंध चाहिए ना प्रैक्टिकल, खानी कहने में नहीं भगवान का बच्चे हैं या हम उसकी संतान हैं , वह फिका फिका नहीं प्रैक्टिकल चाहिए ना। संबंध है तो संबंध चाहिए प्रैक्टिकल तो अभी अपन प्रैक्टिकल चलते हैं । तो यह सभी चीजों को अच्छी तरह से समझ करके और उसी बाप से अपना बेहद का वर्सा लेना है । कैसा, एक पॉइंट सुनाई है परंतु यह पॉइंट बहुत बड़ी है। इसको अगर कोई प्रैक्टिकल में लाए ना तो बेड़ा पार हो जाए उसका । तो यह है प्रैक्टिकल में लाने की खाली सुनने की नहीं है। अच्छा, आप लोगों का टाइम जरा होता है इसीलिए टाइम को भी देखना होता है क्योंकि काम धंधे पर आप लोगों को जाना होता है। अच्छा दो टोली दो । बाकी है अच्छे बैंगलोर के जरूर है कि बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार लेने के लिए पूरा पूरा प्रयत्न रखेंगे । कैसे भूपालम ? कुछ आता है समझ में ना? कुछ ना आए समझ में तो पूछो, डायरी रखो, नोट करो, पूछो भाई यह बात कैसी है और अच्छी तरह से सभी बातों को समझना। ऐसे नहीं अंधविश्वास में हां हां करना है , ना कुछ बात

समझ में नहीं आती है तो पूछना है समझना है। कैसा है श्यामसुंदर ? इसीलिए अपना एक पूछेगा और बहुतों का शंका निवारण होगी इसमें कोई हर्ज नहीं है। हम खुश होते हैं, जब कोई पूछते हैं परंतु हां समझने के ख्याल से। फालतू कोई....(कौन से सीजन में जाने का प्रोग्राम है) क्या? कौन से सीजन में ? पूछते हैं जाने का प्रोग्राम है क्या। सीजन में ? देखो वहां जब होती है ना गर्मी होती है ना बच्चों की छुट्टी में बहुत आते हैं। अप्रैल से आते हैं अप्रैल मई जून। अभी मार्च भी अच्छा है उधर का। मार्च भी अच्छा है क्योंकि सीजन अच्छी होती है वहां तो मार्च-अप्रैल मई जून, जुलाई में बारिश चालू हो जाती है फिर जुलाई-अगस्त यह जरा थोड़ा बाकी फ्रेश मार्च-अप्रैल मई ठीक है, तो आते हैं इनमें। हां हां सब आते हैं, सब सेंटर्स हैं न है सबके तो छुट्टियां होती हैं तो काफी आकर के वहां इकट्ठे होते हैं, आते हैं । तो अभी मार्च-अप्रैल मई में आते हैं । अब हम जाएंगे यहां से हम भी अप्रैल तक पहुंच जाएंगे, अप्रैल एंड में । परंतु हां बी प्योर बी योगी ऐसा जो आएगा उसको आनंद आएगा। फिर कोई नो प्यार नो योगी तो उसको आनंद नहीं आएगा वह तो कहेंगे यह क्या, वह क्या, वो क्या फिर उल्टा उठा उठाते रहेंगे परंतु जो रहेंगे पवित्रता की धारणा में

होंगे उनको रस बैठेगा, जो योगी होंगे उनको रस बैठेगा तो प्रैक्टिकल लाइफ होनी चाहिए ना क्योंकि यह तो अपना संबंध है, रियल है ना, कोई आर्टिफिशियल तो नहीं है ना तो उसी संबंध का लव, उसी संबंध में सुख वो ईश्वरीय सुख की भी भासना उन्हों को आएगी फीलिंग जिन्हों को अपना होगा संबंध, होगा नहीं तो वह उनको वह मजा नहीं आएगा । यह तो फिर आते हैं सब तो अच्छा ही होता क्योंकि इकट्ठे होते हैं ना फिर सब कोई इधर उधर से आते हैं न तो एक दो का अनुभव सुनना करना कॉन्टेस्ट होता है ना तो पता चलता है भाई कैसा देखो भाई ऐसा, इनकी कैसे पहले पास्ट लाइफ थी तो ऐसे ऐसे अनुभव सुनने से आता है कि नहीं कुछ तो है ना , नहीं तो कोई ऐसी चीज छूटना बड़ा मुश्किल है। कोई आदत पक्की हो जाती है ना छूटना परंतु कोई तो ताकत है या किसी के आधार से ऐसी कोई चीज मिलती है तब तो होता है ना, तो कई ऐसे अनुभव एक दो के सुनने से बहुत ही बढ़ता है और इजी लगता है कि सहज है । वह तो मनुष्य समझते हैं बहुत डिफिकल्ट है, बहुत डिफिकल्ट है । डिफिकल्ट, डिफिकल्ट करते बैठ ही जाते हैं। नहीं, ये ईजी है ईजी कहते हैं क्योंकि बाप का पता चला ना तो फिर बाप मिला तो बाकी

फूंक मारो सबको, फिर तो निकल जाता है ना यानी कोई बड़ी बात नहीं है जबकि इतनी बड़ी चीज , कोई बड़ी चीज मिलती है, दो पैसा मिलता है तभी एक पैसा छूटेगा ऐसे तो नहीं ना । ऐसे नहीं है कि बस हम आए एक पैसा ऐसे ही छूट जाए मिले कुछ नहीं। जरूर कुछ मिलता है तब तो छूट सकता है तो जरूर है कि कुछ मिलता है तभी छूटता है तो जरूर है कि उनके अनुभव से कुछ उसको मिला है । ज्यादा कुछ मिला है जिसके आधार पर वह फूंक मारो इसको क्या यह छोटी मोटी चीज है, गंदगी क्या लगा बैठे है तभी तो छूटता है ना । तो जरूर है कोई अनुभव में ऐसी चीजें आई है तो अनुभव सुनना है एक दो का। उससे भी अपनी लाइफ में बहुत कुछ मिलता है। तो यहां तो खाली आप बैंगलोर वाले ही आपस में हो ना थोड़े बहुत ,वहां आने से और और भी सब तरह के देखेंगे मिलेंगे तो क्या-क्या अपनी कैसे-कैसे लाइफ बनाई है । कैसे देखो यंग रह करके अपना पवित्र रहते हैं तो कोई बुड्ढा होगा तो उसको आएगा ना कि मैं नहीं रह सकता हूं । तो इतने यह रह रह रहे हैं क्या लज्जा आएगी न । देखेंगे ना हमारे जैसा कोई कर सकता है हम क्यों नहीं कर सकते हैं तो आएगा तो एक दो को देख करके होता है ना जो इंपॉसिबल मनुष्य समझते हैं

वह पॉसिबल है तो यह कर सकता है हम क्यों नहीं कर सकते हैं, इतना छोटा कर सकते हैं हम नहीं कर सकते हैं तो आएगा ना । तो यह एक दो के अनुभव से अच्छी अच्छी बातें हैं मिलती है तो यह कांटेस्ट में आना, कांटेक्ट रखना हम तो कहते हैं बहुतों को कि आप आओ, मिलो सब से पूछो अनुभव आप लोगों को देखो पेशेंट्स को किसको शफा होती है तो उससे पता चलता है भाई हां इससे बहुतों को फायदा मिला है डॉक्टर से, ये डॉक्टर कुछ अच्छी दवा देता है । तो ऐसे होता है ना भाई तुमको फायदा पड़ा, तुमको ऐसा रोग तुम्हारा भी मिट गया तो हां उनसे होता है। तो हां पूंछों उन पेशेंट्स से पेशेंट्स शो डॉक्टर ऐसा होगा ना तो डॉक्टर का शो निकलेगा । पेशेंट्स शो डॉक्टर तो उससे पता चलेगा देखो अगर पेशेंट्स को कोई सफा मिली है तब तो डॉक्टर समझो नहीं तो ना समझो, चलो उसमें क्या है । हां तो वह अपने अनुभव से भी हर एक का होता ही है ना और यह प्रैक्टिकल है इसमें तो और कोई बात ही नहीं है यहां कोई गुप्त या छिपाने की । बाकी उनका काम कैसे चलता है, गुप्त चलता है । जितना है सर्व समर्थ वह अपनी प्रत्यक्ष ताकत नहीं दिखाएगा, प्रत्यक्ष क्या दिखाएगा मुर्दा पड़ा हो जिंदा कर दे तभी तो हां भगवान

है, ऐसी तो बात नहीं है ना । नहीं, यही मुर्दे, लाइफ मुर्दा हुई पड़ी थी ना उस लाइफ को आ करके जिंदा किया है तो यह है मुर्दे को जिंदा बनाना बाकी उस मुर्दे को जिंदा करेगा तो फिर मुर्दा नहीं बनेगा? बनना तो है ना शरीर को तो छोड़ेंगे तो वह बात नहीं है यह है कि हमारी लाइफ जो मुर्दाबाद हुई पड़ी है उस लाइफ को आ करके वह जिंदाबाद करते हैं तो यह है मुर्दे को जिंदा बनाने का ऐसा । अच्छा आज दादा को तकलीफ देते हैं....मम्मा आज....कहां (मधुबन में) अरे ठहरो तो सही पहले तो बी प्योर बी योगी में हाथ उठाए पीछे तो, मधुबन में कोई ऐसा थोड़ी, नोट अलाउड। (इनमें तो भले जाए कोई ये पवित्र हैं) हम जो अभी जो नए आते हैं न उसको मंगाएंगे, किसी दिन मंगाएंगे सबको फिर पूछेंगे हाल चाल अच्छी तरह से । कौन प्योरिटी में अच्छी तरह से अभी चला है, किस तरह से वो सब पूछेंगे, ये तो हाल चाल तोड़ अकेला पूछना चाहिए न, मन में कोई बिचारे सुनने में करेंगे। हां तो फिर पूछेंगे(मम्मा अभी अपने बताया ब्रहमा बाबा हमेशा शिव बाबा बाबा करता था हमें शिव दादा कहना चाहिए ?) हां शिव दादा। दादा ग्रैंड फादर को कहते हैं वो तो ठीक है । जब बाप के संबंध में इनके आते हैं तो उसको दादा ही कहना है, ग्रैंड फादर वो तो

ठीक है, कहते हैं, ऐसे भी कहते हैं परंतु हमको बाप याद रखने का है इसीलिए बाबा भी कहते हैं और बड़े बाप को भी दादा कहते हैं ना तो बाबा माना बाबा ग्रैंडफादर, याद उसको रखना है। याद उसको रखना है नॉट ब्रह्मा को, याद उसको बाकी हां इसका भी तो बीच में है ना यह ना होता तो हम कहां से बच्चे होते, फिर हम कहां से हमारा हक कहां से लगता। इनके बिना भगवान हमको भी पोत्रे भी पैदा नहीं कर सकता बाप के बिना। तो पहले बाप हो तब तो हम पोत्रे भी बने ना। हम पोत्रे पैदा नहीं हो सकते इनके बिना, ब्रह्मा के बिना। ब्रह्मा ना हो तो हमको पोत्रे भी ना हो क्योंकि कोई मनुष्य के द्वारा ही तो मनुष्यों की रचना बनाएगा ना। तो वह कैसे रचते हैं, परमात्मा कैसे रहते हैं तो वो आ करके उस मनुष्य का आधार लेकरके करते हैं । अच्छा, बाबा तो बीज रूप है हम तो कहेंगे ना यह परिवार है सारा देखो दैवीय है। शिव बाबा की सर्विस में है तो दादा को तो सर्टिफिकेट देना ही पड़ेगा। अच्छा हां फिर उधर आएंगे और सबको देखो जो पवित्र रहते हैं ना उससे खाना बनवाते हैं, मेल से भी बनाते हैं उधर, एक दिन उसका रखते हैं फिर सब मिलकर के बनाते हैं एक सौ का सौ का खाना बनाना, रोटी बनाना करना तो सब प्रैक्टिस उधर

कराएंगे । तो अपने हाथ से योग में रह करके फिर प्रैक्टिस करेंगे । बाबा की याद में रहकर के काम करो देखें कैसे करते हो, आता है । प्रैक्टिस कराते हैं, खाना बनवाते हैं और काम भी कराते हैं। ऐसे नहीं काम करे तो बाबा की याद भूल जाए , ना प्रैक्टिस कराते हैं फिर वहां आएंगे आप तो आपकी प्रैक्टिस देखेंगे उठते बैठते खेलते। हां खेलते भी ऐसे नहीं खेल करे तो याद भूल जाए। खेलते हैं बैडमिंटन करते हैं, क्रिकेट खेलते हैं , खेल करते भी उसकी याद। ऐसे ना हो खेल करें तो उसके याद भूल जाए । हां, बॉल कैच करें तो जैसे बाबा का वर्सा कैच करते हैं। यह बॉल देखो बॉल टाइप है ना दुनिया का गोला तो बुद्धि में भी एक बाबा की याद तो वह खुशी भी रहती है। स्टूडेंट इज बेस्ट वैसे भी कहा जाता है, उसमें भी यह गॉडली स्टूडेंट्स लाइफ इज द बेस्ट। गोडली स्टूडेंट वैसे भी कहा जाता है स्टूडेंट लाइफ इज द बेस्ट परंतु उसने भी यह बेस्ट क्योंकि यह गॉडली लाइफ है ना यह स्टूडेंट लाइफ है। स्टूडेंट वैसे भी बिचारे है खुश होते हैं, घूमना फिरना पढ़ना तो इसलिए स्टूडेंट लाइफ को बेस्ट कहा जाता है। यह तो गॉडली स्टूडेंट्स है ना तो गॉडली स्टूडेंट बनना कोई कम थोड़ी है अभी आपका। अच्छा, बाप दादा और मां की मीठे मीठे बहुत अच्छे और ऐसी गोडली

स्टूडेंट लाइफ में चलते रहने वाले बच्चों प्रति याद प्यार और गुड मॉर्निंग।